Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

110544

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

110544

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बचो धोखेबाज़ नक्कालों के मायाजालों से !!!

110544

महान् हिमालय की संजीवनी रोग मुक्त करने के लिये रसायन बल वीर्य बढ़ाने की एक ही स्वदेशी औषधि अक्सीर बहुमूत्रादि गुर्दे के रोगों को तथा उदर छाती दिलोदिमाग के बिकारों के लिये महाराज अंबिकादत्त पंत का असली शिलाजतु सत्त (शिलाजीत) माननीय नेता श्रीमदनमोहन मालवीयजी आदि महानुभावों द्वारा सेवित व प्रशंसित, भारतीय व यूनानी वैद्यक संघों से अनेक सोने चाँदी के पदक प्राप्त, सुप्रसिद्ध वैद्य, हकीम, डाक्टरों के प्रमाणपत्रों, व राजा रईस विद्वानों के हज़ारों प्रशंसा-पत्रों और ५० वर्षीय अनुभव से सर्वोत्तम प्रसिद्ध। मूल्य ५), ३), २) व १) रु० फ्री तोला कविराज रामदत्त पंत A. M. B. आयुर्वेद शास्त्री मैनेजर

हिमालयन स्टोर्स रानीखेत--(अल्मोड़ा)

"प्रवृत्ति निवृत्ति" स्वास्थ्य-रक्षा निबंध ≥) भेजने से मिलता है।

केवल ४) में
M. B. का डिप्लोमा।
परीक्षा की आवश्यकता नहीं
एक आना का टिकट भेजकर नियमावली मँगाएँ।
पता—प्रिंसिपल, ढाका मेडिकल कॉलेज

फैंसी कटार
आत्मरक्षा के लिये स्टील का लोहा
अब आपको दुश्म
घात
कार बहुत ही मनोहर है इसके काम में ऐसी कारीगरी की हुई है जिसकी मनोहरता देखने ही से सम्बन्ध रखती है। दूर से देखने में एक ऐसी जगमगाहट दीख पड़ती है जो आंखों को बड़ी सुन्दर मालूम पड़ती है। इसके अक्षर ऐसे सुन्दर और निराली बनावट के हैं। जिनसे चित्त प्रसन्न होता है यह सब घड़ियां सुन्हरी गिल्ट की हुई ही होती हैं सुनहरी गिल्ट की सिलैंडर दाम ५॥) यही रोल्ड गोल्ड की लीवर दाम १५) यही चांदी की लीवर दाम १५) यही ९ केरेट सोने की लीवर दाम २०) रु. यही १४ केरेट सोने की लीवर दाम २६) रु.

चांदी के केस की सिलैंडर अंधेरे समय बताने वाली दाम ८॥) रु यही चांदी लीवर दाम १३) रु. यही रोल्ड गोल्ड लीवर ३) रु.

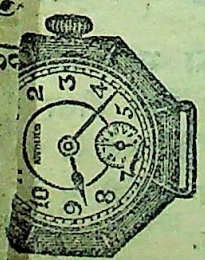

नं. ५१२ अठपहलू रिष्टवाच.
सफेद धातु का केस, लीवर सैकिंडकी सुई सहित दाम १३) रु.
ही चांदी का केस लीवर १५) रु.

माल मंगाने का पता—सुख संचारक कम्पनी मथुरा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्मन बग़ारज़ इनफ़िसाल मुक़दमा

मुक़दमा नं० ६२ स० १९२८

बअदालत जनाब मुनसिफ़ साहब बहादुर डलमऊ, ज़िला रायबरेली

मुद्दई शिवकुमार वल्द बिंदाप्रसाद क़ौम ब्राह्मण साकिन कूरमदी मिर्ज़ाअली कटरा परगना सहनी

बनाम

महावीरप्रसाद

मुद्दाअले । महावीरप्रसाद वल्द रामनारायण साकिन कुरमदी मिर्ज़ाअली कटरा परगना सहनी हाल मुक़ीम लाला बलभद्र लाल का तालाब सुख़रवाड़ी नागपूर

हरगाह मुद्दई ने तुम्हारे नाम एक नालिश बाबत ५७३ के दायर की है लिहाज़ा तुमको हुक्म होता है कि तुम बतारीख़ २१ मई स० १९२८ ६ बजे असालतन या बज़रिए वकील के जो मुक़दमे के हाल से क़रार वाक़ई [illegible] किया गया हो और जो कुल उमूर अहम मुतालक़े मुक़दमा का जवाब दे सके या जिसके साथ कोई और [illegible] जो जवाब ऐसे सवालात का दे सके हाज़िर हो और जवाबदिही दावा मुद्दई मज़कूर की करो और हरगाह वही तारीख़ जो तुम्हारे इज़हार के लिये मुक़र्रर है वास्ते इनफ़िसाल क़तई मुक़दमे की तजवीज़ हुई है पस तुमको लाज़िम है कि अपने जवाब दावे की ताईद में जिन गवाहों की शहादत पर या जिन दस्तावेज़ात पर तुम इस्तदलाल करना चाहते हो उसी रोज़ उनको पेश करो ।

[illegible] अगर बरोज़ मज़कूर तुम हाज़िर न होगे [illegible] मसमू और फ़ैसल

समन बग़ारज़ तनकीह

मुक़द्दमा नंबर २३ सन् १९२८ ई०

बअदालत बाबू शिवचरन साहेब मुंसिफ़ रामसनेह बाराबंकी ठाकुर द्वारकाप्रसादसिंह साकिन सरायसैफ़

मुद्दई

बनाम पडित रामसरन

बनाम पंडित रामसरन वल्द पं० शिवशंकर ब्राह्मण [illegible] हाल असिस्टेंट मैनेजर कोर्ट आफ़ वाड्स क़िला [illegible] ज़िला बुलंदशहर ।

हरगाह [illegible] ने तुम्हारे नाम एक नालिश [illegible] की है लिहाज़ा तुमको हुक्म होता है कि तुम बतारीख़ [illegible] माह मई सन् १९२८ ई० बवक्त असालतन् या [illegible] वकील के जो मुक़द्दमे के हाल से क़रार वाक़ई वाक़िफ़ [illegible] गया हो और जो कुल उमूर अहम मुतअल्लिक़े मुक़द्दमे [illegible] जवाब दे सके या जिसके साथ कोई और शख़्स [illegible] जवाब ऐसे सवालात का दे सके हाज़िर हो और जवाब [illegible] वे मुद्दई मज़कूर की करो और हरगाह वही तारीख़ [illegible] तुम्हारे इहज़ार के लिये मुक़र्रर है वास्ते इनफ़िसाल [illegible] मुक़द्दमे के तजवीज़ हुई है पस तुमको लाज़िम है कि [illegible] जवाब दावा की ताईद में जिन गवाहों की शहादत पर [illegible] जिन दस्तावेज़ात पर तुम इस्तदलाल करना चाहते हो [illegible] रोज़ उनको पेश करो ।

मुत्तिला रहो कि अगर बरोज़ मज़कूर तुम हाज़िर न [illegible] तो मुक़द्दमा [illegible] और हाज़िरी तुम्हारे मसमू और फ़ैसल हो [illegible] [illegible] सन् १९२८ ई० मेरे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यही सुनहरी गिल्ट की लीवर दाम ६॥) रु. यही चांदी की लीवर दाम १९) रु. यही रोल्ड गोल्ड की दाम १९) रु. यही १४ केरेट सोने की दाम ४६ रु. यही १८ केरेट सोने की दाम ५२) रु. यही घडियां यदि अंधेरे में समय दिखाने वाली चाहिये तो १) रु. अधिक लगेगा.

नं. ५१० मेटेल डायल रिष्टवाच.

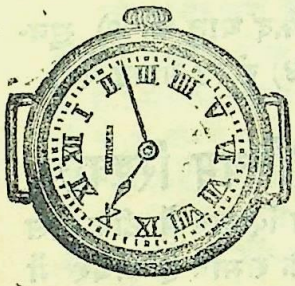

इस घडी का डायल धातुका बना होने से बडी ही सुन्दर दीखती हैं। इसमें विशेषता यह है कि इस पर सोने की गिल्ट होने से बहुत ही सुन्दर दीखती है कीमत ५॥) रु.

नं. ५११क ले डायल की रोडियम रिष्टवाच

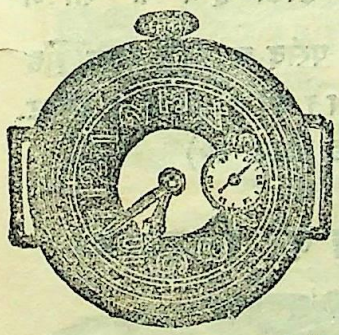

यह घडी काले डायल की होने से इसमें सफेद अक्षर बहुत ही सुन्दर मालूम होते हैं चित्र ही में नमूना देखिये। सफेद धातुका केस सिलेंडर दाम ५॥ रु. यही चांदी के केसकी सिलेंडर अंधेरे में भी समय बताने वाली दाम ८॥) रु यही चांदी की लीवर दाम १३) रु. यही रोल्ड गोल्ड लीवर दाम १३) रु.

नं. ५१२ अठपहलू रिष्टवाच.

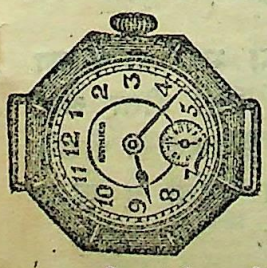

सफेद धातु का केस, लीवर सैकिंडकी सुई सहित दाम १३) रु.

यही चांदी का केस लीवर १५) रु.

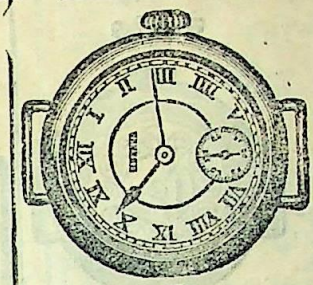

नं. ५१३ सादा सेकेंडवाली रिष्टवाच

सफेद धातु का केस की ५) यही सुनहरी गिल्ट की ५॥)

नं. ५१४ टोनोशेप रिष्टवाच.

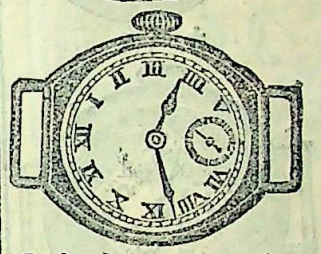

यह हाथ में बांधने की एक नयी ही फैशन की घडी निकली है जिसे लोग बहुत पसंद करते हैं।

सफेद धातु की सिलेंडर दाम ५॥) यही सुनहरी गिल्ट की सिलेंडर दाम ६) यही चांदी की लीवर दाम १४) यही रोल्ड गोल्ड लीवर १४) रु. यही ९ केरेट सोने की २२) रु. यही १४ केरेट सोने की २७) रु.

नं. ५१५ मीराज बेजल रिष्टवाच

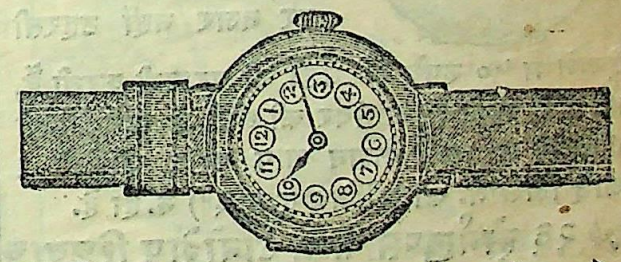

इस घडी का आकार बहुत ही मनोहर है इसके काम में एसी कारीगरी की हुई है जिसकी मनोहरता देखने ही से सम्बन्ध रखती है। दूर से देखने में एक एसी जगमगाहट दीख पडती है जो आंखों को बडी सुन्दर मालूम पडती है। इसके अक्षर एसे सुन्दर और निराली बनावट के हैं। जिनसे चित्त प्रसन्न होता है यह सब घडियां सुनहरी गिल्ट की हुई ही होती हैं सुनहरी गिल्ट की सिलेंडर दाम ५॥) यही रोल्ड गोल्ड की लीवर दाम १५) यही चांदी की लीवर दाम १५) यही ९ केरेट सोने की लीवर दाम २०) रु. यही १४ केरेट सोने की लीवर दाम २६) रु.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुनहरी फैंसी रिस्टवाचें,

नं. ५१६

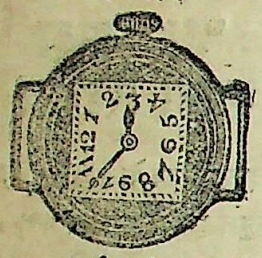

नं. ५१७

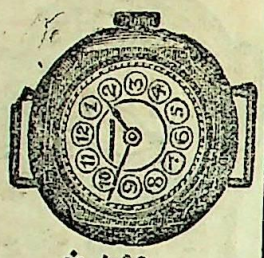

नं. ५१८

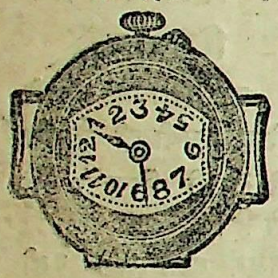

नं. ५१९

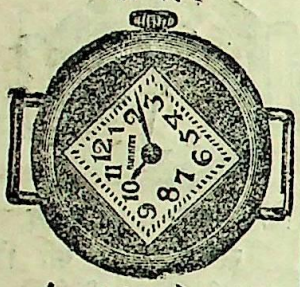

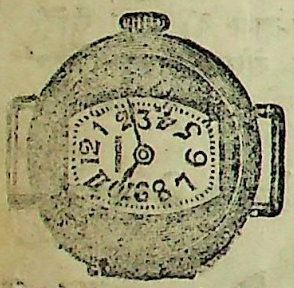

नं. ५१६ से ५२० तक की घड़ियां सुनहरी गिल्ट की हुई हैं। इन की बनावट और पालिस ऐसी बढ़िया है कि इन पर नजर नहीं ठहरती देखने में ५० रुपये की घड़ी की बराबरी करती हैं, इनमें से चाहे जिस नंबर की घड़ी मंगाइये कीमतें सब की समान हैं फैशन आप पसंद कीजिये। चाहे जिस नं. की लीजिये दाम ६॥) रु. हा हैं.

नं. २५ हार्नलुप्स फैंसी टानोशेप रिष्टवाच

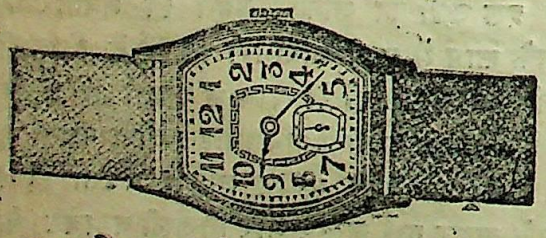

यह लीवर घड़ी है इसका डायल बहुत ही सुन्दर है चलने में बहुत मज़बूत वर्षों तक घड़ी साज़ के पास नहीं भेजनी पड़ती सैकेंड की सुई सहित चांदी के केस की २०) सफेद धातु का केस १५) रोल्ड गोल्ड केस २०) १४ केरेट सोने की ४५) रु.

नं. २०४ अठपहल्ल रेडियम रिष्टवाच

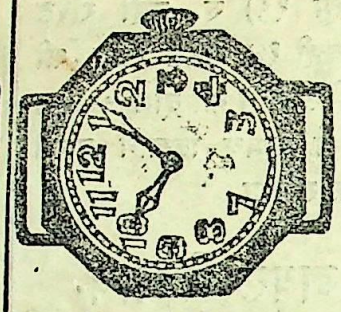

यह देखने में बड़ी ही सुन्दर और मजबूत घड़ी है फैशनेबिल शौकीन इसे बहुत ही पसंद करते हैं खुला मुंह, सिरे पर चाबी की अंधेरे में भी समय दिखाने वाली है कीमत सफेद धातु की ७) सुनहरी गिल्ट ८) चांदी की १४) रोल्ड गोल्ड २०)

नं. २०५ चौकोर रेडियम रिष्टवाच

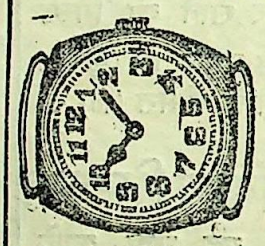

जो दिखाव में ठीक इस चित्र के समान है अंधेरे में भी समय दिखाती है इसकी क्या तारीफ करें साइज बहुत ही छोटा होने के कारण स्त्रियां भी इसे बहुत ही पसंद करती हैं खुला मुंह सिरे पर चाबी सफेद धातु की ७) सुनहरी गिल्ट १०) चांदी की १४) रोल्ड गोल्ड २०)

नं. १०२० सीप की रिष्टवाच

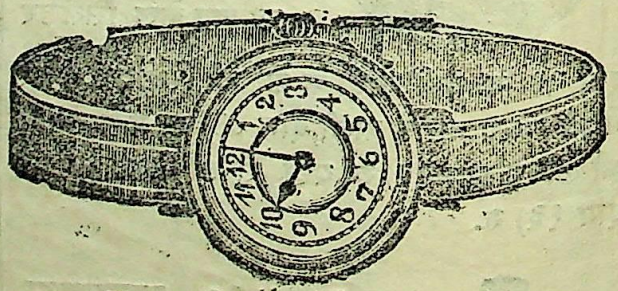

इस रिष्टवाच में ऊपर का भाग सीप का बनाया गया है जो कभी मैला नहीं होता और न कभी गिल्ट बिगड़ने का डर है कपड़े से पोंछते ही हमेशा नयी घड़ी सी दीख पड़ती है खुला मुंह सिरेपर चाबी कीमत ७) रु.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नं. १०२१ वीकली रिष्टवाच

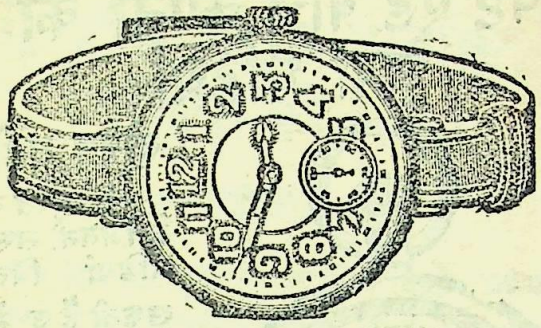

यह घडी एक बार चाबी देने से १ हफ्ते तक चलती है रोज रोज चाबी देने की दिक्कत नहीं उठानी पडती स्कूल कचहरी तथा और २ ऐसे ही काम करने वाले लोगों के लिये बडे ही काम की चीज है लीवर सैंडिक की सुई लगी हुई अंधेरे में भी समय बताने वाली कीमत सफेद धातु की १५) चांदी या रोल्ड गोल्ड की २२)

नं. १०२२ ब्रासलेट वाच.

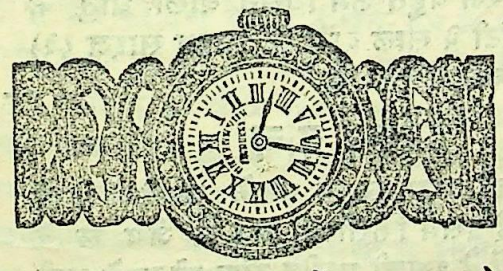

यह घडी खासकर स्त्रियों के हाथ में पहरनेकी है स्त्रियां इसे बहुत पसंद करती हैं कारण यह है कि स्प्रिंग लगी होने से चाहे जैसे छोटे बडे हाथ में पहनी जासकती है कीमत जिस पर नकली रत्न जडे हैं ८) यही बिना रत्न जडी सादा ७) रु.

वेष्टएंड वाच कम्पनी की रिष्टवाचें।

कोई भी रिष्टवाच रेडियम डायल की चाहिये तो ५) रु. फी घडी अधिक देना होगा।

सिलीदार रिष्टवाच.

यह रिष्टवाच खासकर फौज के सिपाहियों के लिये बनाई गई हैं जोकि दौडने कूदने आदि किसी कारण से बंद नहीं हो सकती इसलिये इसको नाम मात्र के नफे पर वेष्टएंड वाच कम्पनी बेचता है इसके पुरजों पर गिल्ट होरही है लीवर मशीन १५ जुएल लगे हैं दाम २८) रु. चांदी का केस ३३) रु. यही रोल्ड गोल्ड ३८) रु.

क्वीन रिष्टवाच।

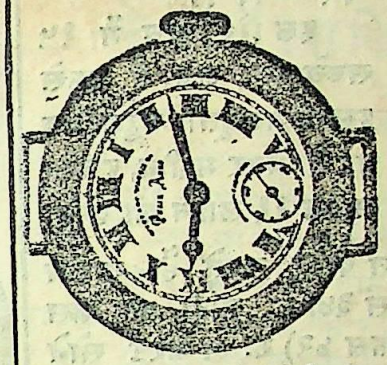

इस रिष्टवाच की बनावट इतनी मजबूत है कि आप इसे किसी हालत (घोडे की सवारी आदि) में इस्तैमाल कीजिये बिगडने का डर नहीं इसकी उत्तमता इससे ही समझ लीजिये कि गवर्नमेंट ने पिछली लडाई में अपने अफसरों के लिये ५०००० पचास हजार घडियां खरीदी थीं। सिरे पर चाबी, लीवर सैकिंड की सुई १५ लाइन साइज, गारंटी ५ वर्ष दाम २१) रु. यही रोल्ड गोल्ड की ३२) रु.

फिलोज रिष्टवाच।

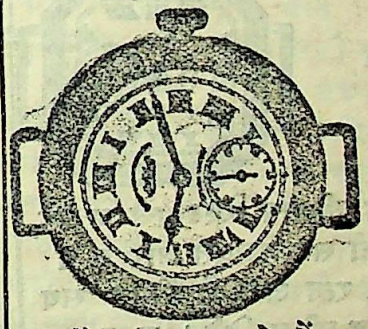

यह रिष्टवाच देखने में खूबसूरत और वजन में हलकी होती है मोटी कम और मजबूत अधिक होने से लोग इसे बहुत पसंद करते हैं इसमें १३ जुएल लगे हैं इनामेल डायल, सैकिंड की सुई, लीवर गारंटी ६ वर्ष दाम २३) रु. यही चांदी की २८) रु. रोल्ड गोल्ड ३५) रु.

मैचलैस रिष्टवाच।

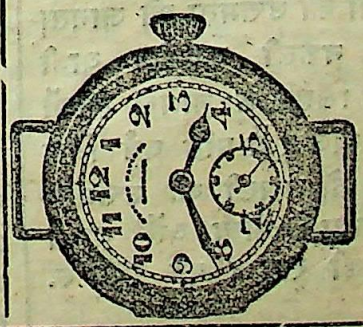

इस रिष्टवाच के पुरजे ठीक जेबी मैचलैस घडी के माफिक हैं ७ जुएल लगे हैं १३ लाइन साइज, लीवर, सैकिंड की सुई सहित छोटा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साइज मजबूत और दाम कम होने के कारण लोग इसे बहुत पसंद करते हैं। गारंटी ६ वर्ष दाम २४) यही चांदी की २८) रु. यही रोल्ड गोल्ड ३४) रु.

कीपसेक रिस्टवाच.

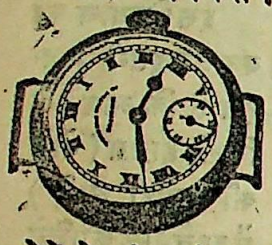

इस रिस्टवाच में १५ सच्चे रत्न जडे हैं इससे इसकी मजबूती बहुत बढ गई है लीवर मशीन, इसका साइज ११ लाइन का छोटा होने से लोग इसे बहुत पसंद करते हैं, गारंटी ८ वर्ष दाम निकेल केस ३४) रु. चांदी का केस ३८) रु. रोल्ड गोल्ड केस ४२) रु. ९ केरेट सोने की ५०) रु. १४ केरेट असली सोने की ६०) रु.

वेस्ट ऐंड वाच कम्पनी की फैंसी चांदी की रिष्टवाचें।

अठपहलू नं. जी.

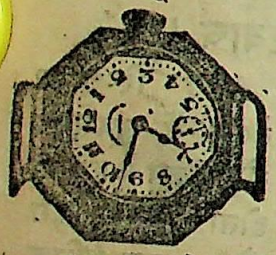

चौकोर नं. एल

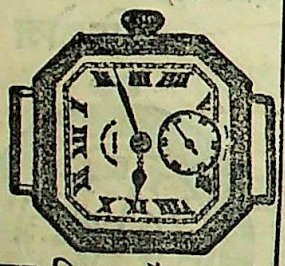

यह ऊपर के चित्रों की सब रिस्टवाचें असल चांदी की बनी हैं सबकी सब मजबूत और लीवर हैं फुल जुएल यानी पूरे रत्न जडे हैं कीमत सब की बराबर है जिस तरह की चाहिये। ऊपर का नंबर लिखिये दाम ४०) रु. गारंटी ५ साल

रास्कोप पेटेंट वाच.

भारत का एक बालक भी इस घडी की उत्तमता को जानता है जब नकली रास्कोप यानी रास्कोप सिष्टम के नामसे लाखों घडियां बाजार में प्रति वर्ष बिक जाती हैं तो असली की उत्तमता आप समझ सकते हैं 'बाबा ले पोता वर्ते' वाली यही घडी है कीमत बडी साइज की १२) रु. छोटा साइज १४) रुपया

वेष्ट ऐंड वाच कंपनी की जेबी घडियां.

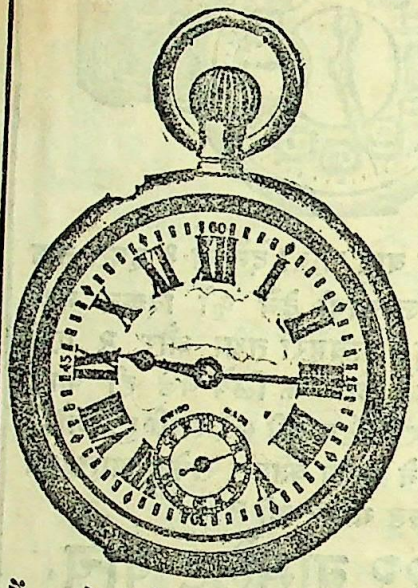

दोस्त घडी

हिन्दुस्तान में जितनी सस्ती घडियां मिल सकती हैं उनमें दोस्त सबसे सस्ती और मजबूत घडी है। यह वर्षों तक बिना किसी दिक्कत के ठीक टाइम देती है। लीवर मशीन, ४ रत्न जडे हुए हैं इसके पुरजे बहुत कम घिसने वाली धातु के बने हैं गारंटी ३ साल दाम १६ लाइन साइज १३) १८ लाइन साइज १२॥) रु.

इंडैक्स वाच.

यह घडी उत्तम समय बताने वाली घडियों में अग्रणी है इसमें किसी भी ऋतु में जंग लगने का डर नहीं है इसकी मशीन ठीक कीमतवाली घडी के समान है। इसकी मशीन लीवर और ७ जुएल लगे हैं गारंटी ४ साल दाम १६) रु.

मैचलेस—छोटा साइज दाम २०) रु. बडा साइज १८) रु.

सस्ती घडियां

जर्मन लीवर वाच—कीमत ३॥≡) रु.
रास्कोप सिष्टम—६ ज्वेल की दाम ६) रु.
रास्कोप सिष्टम मामूली—कीमत ३।) रु.
सस्ती रेलवे रेगूलेटर वाच-दाम २॥)

इनके सिवाय और सब तरह की घडियां टाइमपीस आफिस क्लाक हमारे यहां मौजूद हैं पूरा हाल जानने के लिये बडा सूचीपत्र मंगाकर देखिये मंगाने से सूचीपत्र मुफ्त भेजते हैं। नये साल का कलैंडर मंगाने से हर एक को मुफ्त मिलेगा.

माल मंगाने का पता—सुख संचारक कम्पनी मथुरा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देखिये हमारे विषयमें बम्बई के तीन महान् प्रतिष्ठित व्यक्तियों की राय।

बड़े दिन की छुट्टी में हम लोग दिल्ली जा रहे थे रास्ते में संयोगवश मथुरा में उतर गये और प्रसिद्ध सुख संचारक कंपनी के ऑफिस के परिदर्शन का सौभाग्य प्राप्त हुआ सुख संचारक कंपनी के प्रबंध और भिन्न २ विभाग के कार्य संपादन जिनका हमने अच्छी तरह निरीक्षण किया जिसको देखकर अत्यन्त आनन्द हुआ खासकर आयुर्वेदिक औषधि प्रस्तुत गृह और विद्युत चिकित्सा विभाग उल्लेखनीय हैं। हमने देखा कि आयुर्वेदिक औषधियां विद्वान तथा सुदक्ष वैद्य की देख रेख में उचित रूप से मशीनों के द्वारा प्रस्तुत की जाती हैं ये मशीनरियां ऐसी हैं जो अबतक की खोज बीनके बाद उत्तम और उपयोगी प्रमाणित हुई हैं। इनके रेकर्डस (हिसाब विभाग) तथा अनुसन्धान विभाग के काम को देखकर आश्चर्य करना पडता था ये इतने उत्तम और सन्तोषप्रद थे कि भूल की सम्भावना ही नहीं दिखाई पडती है हमने गौर से देखा कि उन की वस्तुएँ तथा औषधियां सब वैसी ही हैं जैसी कि विज्ञापन में उनकी तारीफ की गई है। प्रति दिन सैकडों प्रशंसापत्र आते हैं कि इनकी औषधियां विशुद्ध तथा लाभदायक हैं इनसे यह प्रमाणित होता है कि यह कम्पनी जनता की प्रियपात्र तथा विश्वासपात्र है।

हम इसके अध्यक्ष पं० क्षेत्रपाल शर्मा को इस महान उन्नति के लिये बधाई देते हैं हस्ताक्षर—

१-दामोदर सावलाराम येदं मालिक इन्दुप्रकाश प्रेस बंबई.

२-पांडुरंग जावजी मालिक निर्णयसागर प्रेस बम्बई.

३-के. डबल्यू. मलेकर जमीदार (लैडलोर्ड) बम्बई

देखिये हमारे लिये कलकत्ते के प्रसिद्ध अखबार हिन्दू पंच ने ता. १०-१-२८ के अंक में क्या लिखा है।

सुख संचारक कम्पनी मथुरा—हमें मथुरा की उक्त कंपनी से नये वर्ष का उपहार "श्रीकृष्ण भगवान का बहुरंगा चित्र" तथा उन्हीं मुरलीधर श्याम की भव्य मूर्तिका जर्मनी का बना हुआ एक बडा ही सुन्दर एल्बमेनक प्राप्त हुआ है। उक्त कम्पनी ने अपने एजंटों को दीपावली के उपलक्ष में उक्त दोनों चित्र उपहार दिये हैं।

इन दोनों की सुन्दरता देखते ही बनती है. सुख संचारक कम्पनी के अध्यक्ष श्रीयुत पं० क्षेत्रपालजी शर्मा ने व्यापार में जो उन्नति की है वह प्रत्येक भारतवासी भली भांति जानता है। इनकी अनेक रोगों पर चलने वाली एकमात्र औषधि "सुधासिंधु" दाद की अपूर्व दवा "दद्रुगज केसरी" और बालकों की अपूर्व गुणकारी दवा "बाल-सुधा" से कोइ घर खाली नहीं है। आयुर्वेदीय तेल, आसव, अरिष्ट, अर्क, वटिका आदि सुगमता पूर्वक तयार करने के लिये आपने बहुतसा धन खर्च करके विलायत से कितनी ही मैशीनें मंगायी हैं। अपने अधिक परिश्रम और आदर्श व्यवसाय-कुशलता के कारण इस समय पण्डितजी बीस लाख रुपये की हैसियत रखते हैं और मथुरा-प्रान्त में सबसे अधिक इनकम टैक्स देते हैं। इतना होते हुए भी आपको अभिमान छू तक नहीं गया है। दवाओं के अतिरिक्त सुख संचारक कम्पनी घडियां, ग्रामोफोन, हारमोनियम, रामलीला के सामान, मुकुट-शृंगार और सीन सीनरी आदि का भी भारी स्टाक रखती और सबसे सस्ते मूल्य में बेचती है। मथुरा में इसके मुकाबिले की दूसरी कम्पनी नहीं है। हम शीघ्र ही इस कम्पनी के अध्यक्ष श्रीयुत पं० क्षेत्रपाल जी शर्मा का चित्र और चरित्र "हिन्दू पंच" में प्रकाशित करेंगे, जिससे पाठकों को मालूम होगा, कि सत्यता साहस और परिश्रम पूर्वक व्यवसाय करने से मनुष्य कितनी उन्नति कर सकता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रबर की मुहरें.

हमारे यहां हिन्दी, उर्दू, अंगरेजी, गुजराती सब प्रकार की रबर की मुहरें व पीतल की सील मुहर व चपरास हर किस्म की बडी ही मजबूत और खूबसूरत तयार होती हैं, जिनके कुछ नमूने नीचे दिये जाते हैं, जो महाशय जिस नमूने की मुहर बनवाना चाहें वह बजरिये डाकके आर्डर भेजदें, हम बडी शीघ्रता से रबर की मुहर तयार करके भेजदेंगे, आर्डरके साथ १) रु. पेशगी भेजना जरूरी है, नामके मोनोग्राम भी नमूने के माफिक बनाकर भेज सकते हैं। प्रत्येक मुहर वी. पी. से मंगाने से ॥) डाक महसूल आदि के कीमत के अलावा और पडजाते हैं।

मंगाते समय मुहर का नम्बर और कीमत अवश्य लिखिये, हर मुहर का नम्बर मुहर के ऊपर लिखा है।

नं. १११ कीमत १) रु.

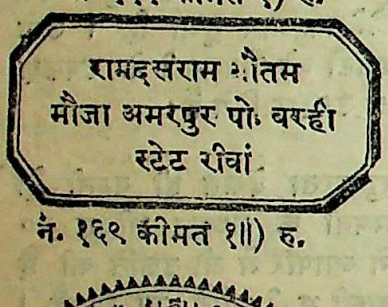

नं. ११२ कीमत १) रु.

नं. १८६ कीमत १) रु.

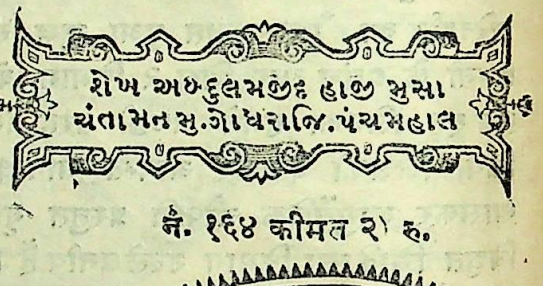

नं. १६९ कीमत १॥) रु.

नं. १२२ कीमत २) रु.

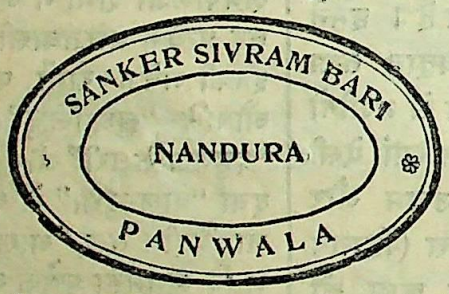

नं. १६४ कीमत २) रु.

नं. १५१ कीमत १॥) रु.

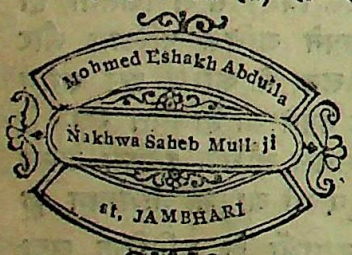

नं. १७४ की. १) रु.

नं. १२७ कीमत १॥) रु.

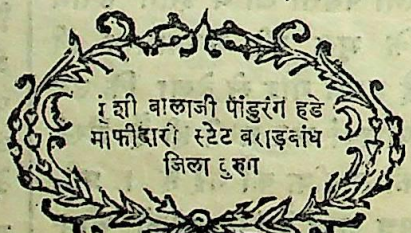

नं. १७६ कीमत १) रु

नं. १६६ कीमत २॥) रु.

बीमा पर लाख लगानेकी पीतल की मुहर की. २) रु.

मोनोग्राम की. ३) रु.

सिगनेचर की मुहरें की. ३) रु.

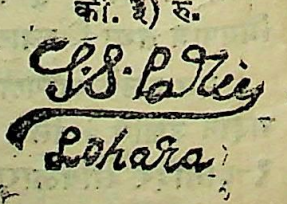

इनके सिवाय और बहुत तरह के मुहराँके नमूने हैं और डिजायन के माफिक सब प्रकार की मुहरें तथा चपरास भी बन सकती हैं। पूरा हाल जाननेके लिये बडा सूचीपत्र मंगाकर देखिये।

मुहर बनवाने का पता- सुख संचारक कम्पनी, मथुरा.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समन बग़रज़ इनफ़िसाल मुक़द्दमा

मुक़द्दमा नंबर १२०० सन् १९२८ ई०

बअदालत बाबू शिवचरण साहब मुंसिफ़ मुक़ाम रामसनेहीघाट मुक़ाम बाराबंकी कप्तान बिश्वेश्वर तिवारी सूबेदार मेजर सरदार बहादुर वल्द शिवप्रसाद क़ौम ब्राह्मण साकिन मौज़ा मवइया परगना सूरजपुर मुद्दई

बनाम जानकी

बनाम जानकी वल्द ईश्वरदीन क़ौम ब्राह्मण साकिन मौज़ा सलीमपुर परगना सूरजपुर तहसील सनेहीघाट ज़िला बाराबंकी। मुद्दाअलेह

हरगाह मुद्दई ने तुम्हारे नाम एक नालिश बाबत ९६॥=) के दायर की है लिहाज़ा तुमको हुक्म होता है कि तुम बतारीख़ तीस माह अप्रैल सन् १९२८ ई० बवक्त १० बजे असालतन् या मार्फ़त वकील के जो मुक़द्दमे के हाल से क़रार वाक़ई वाक़िफ़ किया गया हो और जो कुल उमूर अहम मुतअल्लिक़ै मुक़द्दमा का जवाब दे सके या जिसके साथ कोई और शख़्स हो जो जवाब ऐसे सवालात का दे सके हाज़िर हो और जवाबदिही दावै मुद्दई मज़कूर की करो और हरगाह वही तारीख़ जो तुम्हारे अहज़ार के लिये मुक़र्रर है वास्ते इनफ़िसाल क़तई मुक़द्दमे के तजवीज़ हुई है पस तुमको लाज़िम है कि अपने जवाब दावा की ताईद में जिन गवाहों की शहादत पर या जिन दस्तावेज़ात पर तुम इस्तदलाल करना चाहते हो उसी रोज़ उनको पेश करो।

मुत्तिला रहो कि अगर बरोज़ मज़कूर तुम हाज़िर न होगे तो मुक़द्दमा बग़ैर हाज़िरी तुम्हारे मसमू और फ़ैसल होगा—आज बतारीख़ १४ माह अप्रैल सन् १९२८ ई० मेरे दस्तख़त और मुहर अदालत से जारी किया गया।

विद्याप्रसाद सकसेना

जज

सम्मन वास्ते क़रारदाद उमूर तनकीह तलब नं० मु० ४१

इबतिदाई मामूली

पेशी १२ मई

तनकी १६ मई

बअदालत जनाब मुंसिफ़ साहब बहादुर उतरौला ज़िला गोंडा।

मुद्दई दामादीन वग़ैरह बनाम महावीर उम्र ५० साल, पिसर लालबिहारी साकिन मौजे खवरिया, प्रयाग। परगना बबनीपायर तहसील उतरौला ज़िला गोंडा।

जमना उम्र २० साल, पिसर शिवनारायण, साकिन मौज़े.....परगना.....तहसील उतरौला, ज़ि० गोंडा, मुद्दालेह

हरगाह के मुद्दइयान ने तुम्हारे नाम एक नालिश बाबत् २५०॥=)२ बाबत् ख़र्चा डिगरी के दायर की है। लिहाज़ा तुमको हुक्म होता है कि तुम बतारीख़ १२ और १६ माह मई सन् १९२८ ई० बवक्त १० बजे दिन बमुक़ाम अदालत असालतन या मारफ़त वकील के जो मुक़दमे के हालात से क़रार वाक़ई वाक़िफ़ किया गया हो और उन उमूरात अहम मुतालिक मुकदमा का जवाब दे सके या जिसके साथ कोई और शख़्स जो के जवाब ऐसे सवालात का दे सके हाज़िर हो और जवाबदेही दावे की करो। और तुमको लाज़िम है कि उसी रोज़ जुमला दस्तावेज़ात पेश करो, जिन पर तुम बताईद अपनी जवाबदेही के इस्दतलाल करना चाहते हो। तुमको इत्तिला दी जाती है कि अगर बरोज़ मज़कूर हाज़िर न होगे तो मुक़द्दमा बग़ैर हाज़िरी तुम्हारे मसमू और फ़ैसल होगा। बसब्त मेरे दस्तख़त और मोहर अदालत आज बतारीख़ १९ अपरैल सन् १९२८ ई० जारी किया गया।

बहुक्म

द० ग़ुलाममुस्तफ़ा

मुंसरिम

समन बग़रज़ इनफ़िसाल मुक़द्दमा

मुक़दमा नंबर ३९५५ सन् १९२७ ई०

बअदालत बा० गंगाशंकर साहब सेकंड, एडिशनल जज ख़फ़ीफ़ा लखनऊ

मुक़ाम

१. मैकूलाल वल्द मंगूमल } रस्तोगी साकिनान रस्तोगी
२. राधेश्याम वल्द मैकूलाल } टोला, लखनऊ।

मुद्दई

बनाम

निरंजन वग़ैरह

बनाम १. निरंजन वल्द लालता
२. मुसम्मात कुशाला बितडाल बेवा लालता

मुद्दाअलेह

अक़वाम तेली साकिनान मौज़ा शमशेरगंज परगना मनका तहसील सिधौली ज़िला सीतापुर

हरगाह मुद्दइयान ने तुम्हारे नाम एक नालिश बाबत् बतारीख़ १५ मई सन् १९२८ ई० बवक्त १० बजे असालतन् या मार्फ़त वकील के जो मुक़द्दमे के हाल से क़रार वाक़ई वाक़िफ़ किया गया हो और जो कुल उमूर अहम मुतअल्लिक़ै मुक़दमा का जवाब दे सके या जिसके साथ कोई और शख़्स हो जो जवाब ऐसे सवालात का दे सके हाज़िर हो और जवाबदिही दावै मुद्दई मज़कूर की करो और हरगाह वही तारीख़ जो तुम्हारे अहज़ार के लिये मुक़र्रर है वास्ते इनफ़िसाल क़तई मुक़द्दमे के तजवीज़ हुई है पस तुमको लाज़िम हैं कि अपने जवाब दावा की ताईद में जिन गवाहों की शहादत पर या जिन दस्तावेज़ात पर तुम इस्तदलाल करना चाहते हो उसी रोज़ उनको पेश करो।

मुत्तिला रहो कि अगर बरोज़ मज़कूर तुम हाज़िर न होगे तो मुक़द्दमा बग़ैरहाजिरी तुम्हारे मसमू और फ़ैसल होगा—आज बतारीख़ १७ माह अप्रैल सन् १९२८ ई० मेरे दस्तख़त और मुहर अदालत से जारी किया गया।

बहुक्म जदितनारायण

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इजलास बाबू छैलविहारीलाल माथुर साहब बहादुर एम, ए०, एल्-एल्० बी० मुंसिफ़ रसड़ा ज़िला बलिया

(नमूना क़ाबिल फ़रोख़्त)

सम्मन बिनावर इनफ़िसाल मुक़द्दमा

(आर्डर ५ क़ायदा १ व ५)

नंबर मुक़दमा ८१ सन् १९२६ ई०

ब अदालत दीवानी मुंसफ़ी रसड़ा ज़िला बलिया

सीताराम पिसर सवामर राम सा० क़स्बा रसड़ा परगना लखनेसर ज़िला बलिया.....

मुद्दई

बनाम

कामताप्रसाद पिसर राजनरायन राड़ा उर्फ़ राजनराय साकिन करकटपुर मुतअल्लिके भखली परगना डेहमा ज़िला गाज़ीपुर इलाका मुंसफी मुहमदाबाद परहाखारी—

साकिन मुद्दाअलेह

हरगाह मुद्दई ने तुम्हारे नाम एक नालिश बाबत् मुबलिग़ १६१।=)॥ के दायर की है लिहाज़ा तुमको हुक्म होता है कि तुम बतारीख़ ८ माह जून सन् १९२८ ई० बवक्त १० बजे दिन के असालतन या मारफ़त वकील के जो मुक़द्दमे के हालात से क़रार वाक़ई वाक़िफ़ किया गया हो और जो कुल अमूर अहम मुतअल्लिक़े मुक़दमा का जवाब दे सके या जिसके साथ कोई और शख़्स हो कि जवाब ऐसे सवालात का दे सके हाज़िर हो और जवाबदिही दावा की करो। और हरगाह वही तारीख़ जो तुम्हारे इहज़ार के लिये मुक़र्रर है वास्ते इनफ़िसाल क़तई मुक़दमा के तजवीज़ हुई है पस तुमको लाज़िम है कि उसी रोज़ अपने जुमला गवाहों को जिनकी शहादत पर वो नीज़ तमाम दस्तावेज़ात जिन पर तुम अपनी जवाबदेही के ताईद में इस्तदलाल करना चाहते हो उसी रोज़ पेश करो—तुमको इत्तिला दी जाती है कि अगर बरोज़ मज़कूर तुम हाज़िर न होगे तो मुक़द्दमा बग़ैर हाज़िरी तुम्हारे मसमू और फ़ैसल होगा।

ब-सब्त मेरे दस्तख़त और मोहर अदालत के और बतारीख़ २८ माह अपरैल सन् १९२८ ई० जारी किया गया।

बहुक्म

नंदकिशोरलाल

मुंसरिम

क्या आप

१००) प्रति मास

कमाना चाहते हैं ?

तो आइए, हमारे ट्रैवलिंग एजेंट बन जाइए।

गंगा-पुस्तकमाला का प्रचार कीजिए।

प्रति मास ६०-७० सुधा के ग्राहक बना लेना और गंगा-पुस्तकमाला की २००) की पुस्तकें बेच लेना कोई मुश्किल बात नहीं।

एजेंटों के नियम मँगाइए।

मैनेजर सुधा, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

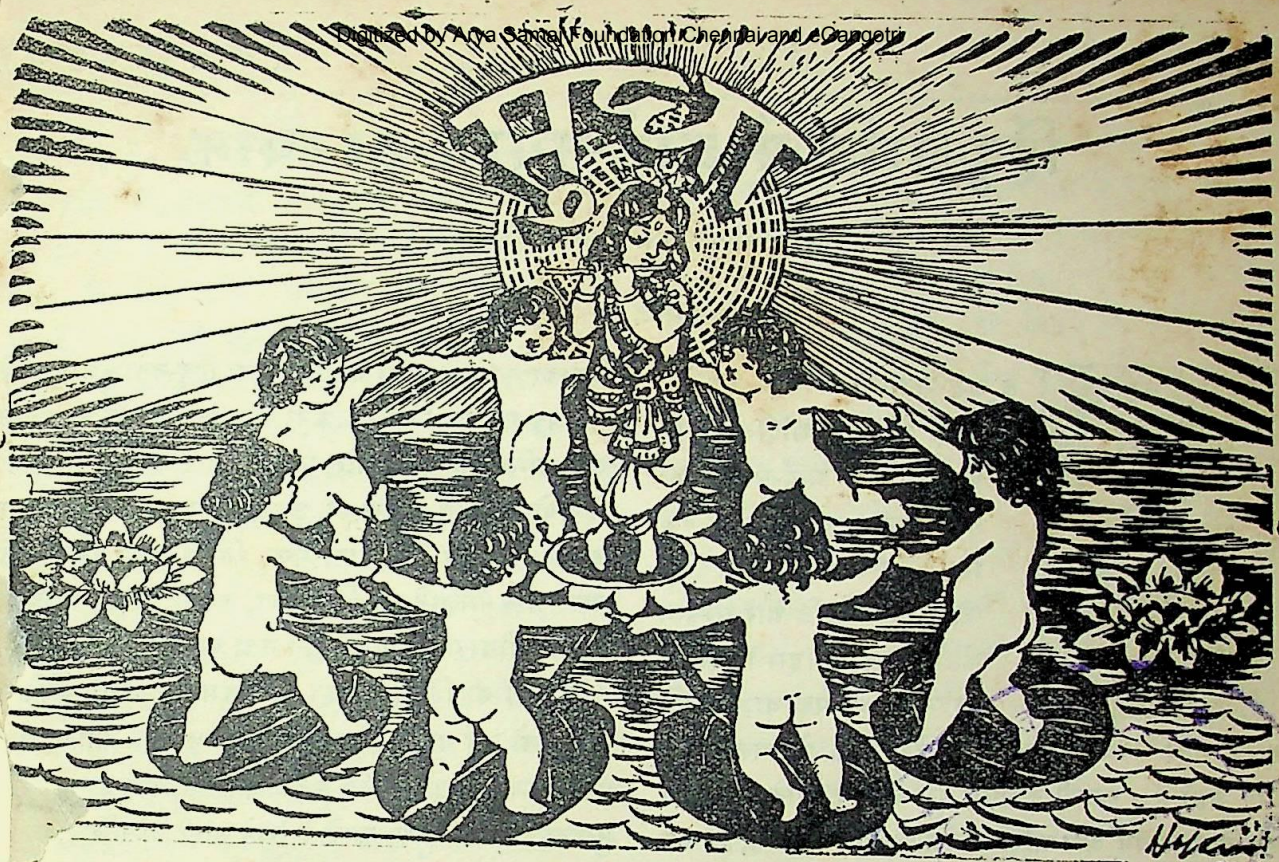

"कीन्हेहु सुलभ सुधा बसुधा हू।"
(गो० तुलसीदास)

110544

वर्ष १ खंड २ | वैशाख, ३०५ तुलसी-संवत् (१९८५ वि०)— मई, १९२८ | संख्या ४ पूर्ण संख्या १०

पृच्छा

[लेखक, कविवर पं० श्रीधर पाठक]

सर्वोपरि पूज्य तेरा कौन जग-भर में है,
सर्वाधिक श्रद्धा का है कौन अधिकारी रे ?
किसने दिया है पूरा हरदम साथ तेरा,
किसको है बात तेरी सर्वोपरि प्यारी रे ?
कुशलात तेरी सोचता है सब काल,
किससे मिली हैं तुझे संपदाएँ सारी रे ?
कौन तेरी एक बार सुघर बिलोकन पै,
देता वार सरबस, जाता बलिहारी रे ?

श्रीपद्मकोट,
१९-१२-२७

तुम्हारी ज्योत्स्ना

[लेखक, कविवर श्रीयुत राय कृष्णदास]

इस चकोर ने चंद्र, तुम्हारी
छटा निरख ली है जब से,
भूल गया है और सभी कुछ,
तव अनन्य जन यह तब से।
अंगोर चुगता है देखो,
तिस पर भी है नाच रहा;
उसमें भी इसने ज्योत्स्नाकर,
पाई तेरी झलक अहा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिंदू-जाति में आर्य-समाज का स्थान

[लेखक, श्रीयुत भाई परमानंद एम्० ए०]

आर्य-समाज और कांग्रेस

त अर्द्ध-शताब्दी के अंदर इस देश में दो बड़े भारी आंदोलन हुए। एक आंदोलन आर्य-समाज का है, जिसका चलानेवाला एक हिंदू संन्यासी था, जो देश की पुरानी संस्कृति और सभ्यता की नींव पर था। इस आंदोलन का रूप धार्मिक था, यद्यपि इसके अंदर सच्चे देश-प्रेम और देश-भक्ति के प्रबल अंकुर पाए जाते हैं। स्वामी दयानंद इस देश में जाति के अंदर एक नया जीवन और अग्नि उत्पन्न करना चाहते थे, जिससे हिंदू-जाति अपनी पुरानी नींव पर खड़ी होकर अपनी रक्षा करने के योग्य बन सके। इसके मुक़ाबले पर दूसरा बड़ा आंदोलन कांग्रेस का था, जो आर्य-समाज के कुछ वर्ष बाद शुरू किया गया। उसका स्वरूप बिलकुल राजनीतिक था, और उसका उद्देश्य यह था कि मज़हब को जड़ से उखाड़कर इस देश में एक नई जातीयता पैदा की जाय। इस कांग्रेस के जन्मदाता एक-दो अँगरेज़, एक-दो पारसी, एक-दो ईसाई और कुछ ब्रह्म-समाजी हिंदू थे। दूसरे शब्दों में यह कहा जा सकता है कि इनके दिलों में हिंदुत्व का भाव लेश-मात्र भी न था। ये लोग अँगरेज़ी-शिक्षा और सभ्यता-काल में पैदा हुए थे। इनका स्वभाव से ही हिंदू-जाति और धर्म से प्रेम होना असंभव था। इन्होंने देश में एक नई लहर पैदा करने का प्रयत्न किया। ये दो परस्पर भिन्न-भिन्न उद्देश्य रखनेवाले आंदोलन हैं, जिनका भारतवासियों के ऊपर गहरा प्रभाव पड़ा है, और जिनके संबंध में मैं अपने विचार उपस्थित करने का प्रयत्न करता हूँ।

मुसलमानों की पृथक् मनोवृत्ति

कांग्रेस ने अपने जन्म-दिन से ही हमें एक नए चक्कर में डाल दिया है, जिससे अभी तक बाहर निकलना संभव नहीं दिखाई देता। वह चक्कर यह है कि हमारे अंदर यह भाव बहुत ज़ोर से भर दिया गया है कि हम मुसलमानों के साथ मिलकर एक नई जाति बनावें। अतः हिंदू-नेता इस बात के पीछे पड़ गए कि किसी-न-किसी तरह मुसलमानों को अपने साथ सम्मिलित करें। और, जितना ही उन्होंने मुसलमानों को संबोधन करके अपीलें कीं, उतना ही मुसलमानों में अलग व्यक्तित्व का भाव पैदा होता गया, जितने प्रयत्न हमने उन्हें अपने साथ मिलाने के लिये किए, उतना ही वह व्यक्तित्व और दृढ़ होता गया। मुसलमान-नेता बराबर मुसलमानों को पृथक् रहने की शिक्षा देते ही रहे। हमारे नेताओं के लिये उचित तो यह था कि 'मुसलिम लीग' को एक सांप्रदायिक संस्था समझकर उससे कोई संबंध न रखते; परंतु हमारे नेता मुसलमानों को ख़ुश करने के लिये उलटे 'मुसलिम लीग' की ख़ुशामद करने में लग गए। लखनऊ का समझौता एक भारी भूल थी, एक प्रकार का पाप और राष्ट्र के साथ द्रोह था, जिसने मुसलमानों की एक दृढ़, पृथक् जाति बनाकर खड़ी कर दी, और इसी को हमने अपनी भारी विजय समझ लिया। वही भ्रामक भाव आज भी हमारे राजनीतिक नेताओं के हृदयों में काम कर रहा है, और वे नई-नई संधियाँ करके हिंदू-हितों की हत्या कर रहे हैं। हमारी इसी राजनीतिक ग़लती ने मुसलमानों की नई मनोवृत्ति को जन्म दिया है। हमारी यह ग़लती उस दशा में अज्ञता की परा काष्ठा को पहुँच गई, जब हमने इस देश में ख़िलाफ़त-आंदोलन उठाकर प्रत्येक स्थान पर ख़िलाफ़त संस्थाएँ खड़ी कर दीं। यह ख़िलाफ़त क्या थी? यह मुसलमानों के सामने उनके मज़हबी ख़तरे को रखकर और अँगरेज़-जाति के विरुद्ध जोश पैदा करके उन्हें स्वराज्य-संग्राम में हिंदुओं के साथ मिलाने का प्रयत्न था। उक्त संग्राम में हिंदू-मुसलमान मिले तो सही, पर मिलाप ने मुसलमानों में एक नई मज़हबी आग भड़का दी। ख़िलाफ़त का मामला तो ख़तम हो गया, पर वह पैदा की हुई आग आज हिंदुओं को जलाने के लिये जल ही रही है। इस स्वराज्य-संग्राम में मुसलमानों का हमारे साथ क्या सहयोग था? हमने एक जातीय झंडा बनाया। मुसलमानों ने कहा, हम इस झंडे को तब स्वीकार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करेंगे, जब इस झंडे पर 'हिलाल'—'अर्द्धचंद्र'—का चिह्न हो। हमने 'वंदे मातरम्' का राष्ट्रीय जय-घोष निकाला। मुसलमानों ने इस जय-घोष को इस शर्त पर स्वीकार किया कि हिंदू लोग 'अल्लाहोअकबर' का नारा भी लगावें। अस्तु, 'वंदे मातरम्' के साथ हर जगह 'अल्लाहो-अकबर' की बाँग दी जाने लगी। हमने ऐसा करके हिंदुओं को मजबूर किया कि वे इस्लामी नारे को स्वीकार करें, जिससे मुसलमान राष्ट्रीय कार्य में सम्मिलित रहें। यह एक ऐसा सौदा था, जो हिंदुओं को बहुत ही महँगा पड़ा। परिणाम यह हुआ कि हिंदुओं के हिंदुत्व की हत्या हुई, मुसलमानों में एक नया मज़हबी जोश पैदा हो गया, हमीं ने उनमें यह नई मनोवृत्ति पैदा कर दी। जितना अधिक हिंदू-नेता 'हिंदू-मुसलिम-एकता' के लिये चिल्लाते हैं, जितनी अधिक ऐक्य-सभाएँ वे करते हैं, उतना ही वे अपने को उस भ्रम-चक्रव्यूह में फँसाकर हिंदू-जाति को निर्बलता और सर्वनाश की ओर ढकेल रहे हैं।

नया क़ानून

अभी हमारे सामने मज़हब की रक्षा का नया क़ानून पास हुआ है, इस क़ानून का रूप तो विशेष आपत्तिजनक नहीं है, परंतु हिंदू-नेताओं का इसका साथ देना क्या प्रकट करता है? केवल इतना ही कि यदि सरकार मुसलमानों के आंदोलन से दबकर उन्हें ख़ुश करने के लिये क़ानून बनाती है, तो हिंदुओं को भी उस आंदोलन से अवश्य दबकर सरकार से पूरा सहयोग करना—अर्थात् मुसलमानों से दबना—चाहिए। कौन नहीं जानता कि इस नए क़ानून का उद्देश्य केवल हिंदुओं को दबाना और मुसलमानों की इच्छा के अनुसार धार्मिक स्वतंत्रता को कम करना था। यदि असेंबली के हिंदू-सभासद इसका विरोध नहीं कर सकते थे, तो इसमें सहयोग तो न देते। भले ही सरकार मुसलमानों की सहायता से इस अनुचित क़ानून को पास कर लेती! मुसलमानों की इस मनोवृत्ति का उत्तरदायित्व सरकार पर भी अवश्य आता है। देश में क़ानून को अपने हाथ में लेकर दंगा-फ़साद करने या जिन लोगों को मज़हबी तौहीन करनेवाला समझा जाता है, उन्हें क़त्ल कराने या क़त्ल की धमकियाँ देने की उद्दंड प्रवृत्ति जो मुसलमानों में बढ़ती जा रही है, इसका निवारण हिंदू-मुसलमानों की पंचायतों द्वारा नहीं हो सकता। ये तो ऐसे घोर अपराध हैं, जिन्हें सरकार को अपने दंड-शासन और क़ानून द्वारा रोकना चाहिए। जहाँ कहीं गोवध के संबंध में विवश होकर हिंदुओं ने दंगा किया है, वहाँ सरकार ने सख़्त कड़ाई से हिंदुओं को दबाने का यत्न किया है। आरा और कटारपुर में ऐसा ही किया गया था। दानापुर में हिंदू-मुसलिम दंगा होने पर कितने ही प्रतिष्ठित हिंदू गिरफ़्तार किए गए। इनमें से एक-दो लखपती भी हैं। इसी के विरुद्ध हिंदू लोग बड़े आश्चर्य से देखते हैं कि मुसलमान दंगा करके कैसा ही हत्याकांड रचें, कितने ही अत्याचार हिंदुओं पर करें, उनके साथ नरम क़ानून बर्ते जाते हैं। जिस प्रकार के लेखों और भाषणों पर हिंदुओं को पकड़कर कठिन दंड दिए जाते हैं, वैसे ही अपराध पर मुसलमानों से कुछ भी पूछ-ताछ नहीं की जाती, और यदि कुछ पूछ-ताछ की भी गई, तो वे चेतावनी देकर अथवा थोड़ा-बहुत जुर्माना करके छोड़ दिए जाते हैं।

इस नई मनोवृत्ति का अभिप्राय

आइए, थोड़ी देर के लिये देखें कि यहाँ के मुसलमान चाहते क्या हैं। यद्यपि मुसलमान इस देश में रहते हैं, उनकी सब प्रकार की भलाई इस देश की उन्नति में पाई जाती है, उनका शरीर इसी देश की मिट्टी से बनता है, उनके पूर्वज इसी देश में पैदा हुए, उनका इतिहास देश के कष्टों और दुःखों के साथ अभिन्न रूप से मिला हुआ है, फिर भी मुसलमानों पर इन बातों का कुछ असर नहीं है। उनके दिलों में बस यही धुन समाई है कि वे दीन मोहम्मदी के बेड़े को, जो एक बार गंगा के दहाने पर आकर डूब गया, फिर से निकालकर उसी रूप में फिर से चला दें। वे चाहते हैं कि अरब का मज़हब और तहज़ीब (सभ्यता) ही इस देश में हर जगह दिखाई दे। वह अरब की सभ्यता क्या है? यही, जिसका उद्देश्य यह है कि संसार-भर से ललित कलाओं, संगीत और मूर्ति-निर्माण-कला को मिटा दिया जाय। ऐसा मालूम होता है कि जब अरब में इस्लाम ने जन्म लिया, तो वहाँ के लोगों में इन सुंदर कलाओं के महत्त्व को समझने की शक्ति ही पैदा न हुई थी। उनमें वही पुरानी बर्बरता के भाव भरे थे।

इस कारण भारत के मुसलमान भी बाजे अथवा संगीत को सह नहीं सकते। पिछले तीन-चार सालों में देश में जितने दंगे-फ़साद हुए हैं, उनमें बहुतों का कारण यही है कि मसजिद के आगे कोई भी बाजा बजाता अथवा गाता हुआ न निकले। कहा जाता है, इससे मसजिदों की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तौहीन और नमाज़ की बेइज़्ज़ती होती है। मुलतान में इस्लाम की तौहीन इसलिये हुई थी कि मुहर्रम के दिनों में ताज़िए की चोटी किसी हिंदू के मकान के पास, बिजली के खंभे से अड़कर, गिर गई। इसी तौहीन के कारण मुलतान में हिंदुओं का क़त्ल और लूट-मार की गई।

उधर सहारनपुर में मज़हब की तौहीन इसलिये हो गई कि एक मुहर्रम के ताज़िए की चोटी, जो जान-बूझकर बहुत ऊँची बना दी गई थी, एक हिंदू-मंदिर के पीपल के साथ अड़ती थी, और हिंदुओं ने उस पीपल को काटने से रोका। बस, इसी बात पर सहारनपुर में लूट-मार जारी हो गई। परंतु फ़सादों का मुख्य कारण बाजों का बजाना और जलूसों का निकालना है। मुसलमानों का यह यत्न है कि इस देश से संगीत की जड़ उखाड़ फेंकें। परंतु यहाँ अधिकार की तो बात ही कहाँ है? यहाँ तो ऐसी मनोवृत्ति पैदा हो चुकी है, जिसके सामने मनुष्यों के अधिकार, न्याय और क़ानून कोई असलियत ही नहीं रखते। मुसलमान जो कुछ कराना चाहते हैं, अपनी सांप्रदायिक-शक्ति के बल-बूते पर ज़बरदस्ती कराना चाहते हैं। इसी शक्ति के संगठन और प्रदर्शन के लिये वे अपनी मसजिदों को छावनियों और क़िलों के रूप में परिणत कर रहे हैं। यदि उनके हृदयों में न्याय और मनुष्यता का भाव हो, तो उनके लिये सीधा मार्ग यह है कि वे सरकार के सामने अपना मामला रखकर इसका निर्णय करा लें, और उसी के अनुसार आचरण करें। हिंदुओं ने जहाँ कहीं अपना कोई उत्सव किया या जलूस निकाले, प्रायः उन पर सरकारी अफ़सरों को कोई आपत्ति नहीं हुई। उधर जहाँ कहीं सरकार की ओर से आपत्ति उठाई गई, हिंदुओं ने अपने जुलूस निकालने ही बंद कर दिए, और जब जहाँ कहीं ये जुलूस सरकार की अनुमति से निकले, वहाँ भी मुसलमानों ने मसजिदों में इकट्ठे होकर लाठियों और दूसरे शस्त्रों से हिंदुओं पर आक्रमण किए। यह तो हिंदुओं और सरकारी क़ानून को चैलेंज देना है। मैं तो समझता हूँ, हिंदू-मुसलिम झगड़े को मिटाने के लिये सबसे पहले हिंदू-नेताओं को सरकार से फ़ैसला करना होगा। अन्यथा जो प्रतिनिधि हिंदुओं की ओर से असेंबली में गए हैं, उनका कर्तव्य है कि वे सरकार से फ़ैसला करावें कि सरकारी क़ानून और परंपरागत प्रथा या न्याय के अनुसार हिंदू लोगों को सड़कों पर बाजा बजाने का अधिकार है या नहीं। यदि नहीं है, तो हिंदुओं को समझ लेना होगा की अँगरेज़ी राज्य की नीति का झुकाव किधर है। और, यदि अधिकार है, तो सरकार का कर्तव्य है कि जो लोग देश के क़ानून को तोड़ने के लिये कहीं किसी जगह पर इकट्ठे हों, वहाँ उनके ऐसे जमघटों को क़ानून के विरुद्ध बतलाकर उन्हें रोकने का समुचित प्रबंध करे। किसी समुदाय के जोश और उपद्रव करने की धमकी से डर जाने का अर्थ यही समझा जायगा कि सरकार अपने क़ानून की पूरी रक्षा नहीं कर सकती। ऐसी अवस्था में सरकार को चाहिए कि निर्बलता से काम न लेकर, हिंदुओं का विरोध करने के स्थान पर, उनकी सहायता करे, जिससे हिंदू सरकारी क़ानून के अनुसार अपने जन्मसिद्ध अधिकारों की रक्षा कर सकें। इस प्रश्न के हल हो जाने के साथ ही आर्य-समाजों के नगर-कीर्तनों का प्रश्न भी स्वयमेव हल हो जायगा। अतः आर्य-समाज को दूसरे हिंदुओं और अन्य ग़ैरमुसलिम लोगों के साथ मिलकर इस प्रश्न का फ़ैसला कराना चाहिए।

कोहाट का अत्याचार

इस नई मुसलिम-मनोवृत्ति के एक-दो रूप ही हमने ऊपर के दृश्यों में देखे हैं। इसका एक और विचित्र रूप हमें कोहाट के हिंदुओं के सर्वनाश में देख पड़ता है। देश में यों तो ऐसे अगणित झगड़े हुए हैं, जिनमें सैकड़ों मनुष्य हताहत हुए, लेकिन उन सबको हम छोड़ देते हैं। कोहाट का वर्णन इसलिये किया जाता है कि कोहाट-कांड में हमें एक विशेष बात दिखाई देती है। इसका संबंध न तो ताज़िए से था, और न मसजिदों के आगे बाजा बजाने के सवाल से। कोहाट में इस मनोवृत्ति का वह विचित्र रूप पहली बार प्रकट हुआ था, जिसकी भयानकता का दृश्य गत वर्ष लाहौर में देखकर मुझे बड़ा आश्चर्य और दुःख हुआ। कोहाट में पहली बार मैंने 'इस्लामी-तौहीन' की चर्चा सुनी, और वहीं पहली बार यह देखा कि जो कोई इस्लाम की तौहीन करे, उसको दंड देने का काम अँगरेज़ी सरकार के हाथ में न रहकर मुसलमानों के हाथ में आ जाना चाहिए। सीमा-प्रांत के अँगरेज़-अफ़सरों ने ये सब बातें सुनीं। असल में ये बातें वहाँ की सरकार के लिये एक सख़्त चुनौती थीं; परंतु वहाँ के अफ़सरों को बताया गया कि यदि वे हिंदुओं की हक़रसी (स्वत्वरक्षा) करेंगे, तो ग़ैर-इलाक़े में दंगा हो जायगा, और सरकार को युद्ध की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तैयारी करनी पड़ेगी। सीमा-प्रांत के अफ़सर डर गए। उन्होंने वहाँ के हिंदुओं को मुसलमानों की कृपा पर छोड़ दिया। यदि मामला यहीं समाप्त हो गया होता, तो भी सरकार का काफ़ी अपमान था। परंतु दुःख का विषय है कि आज लाहौर में भी वही ग़ैर-इलाक़े की धमकियाँ दी जाती हैं, और सरकारी क़ानून का निरादर करके मज़हबी तौहीन के लिये इस्लामी शरअ के अनुसार दंड देने का काम अपने हाथ में ले लिया जाता है। कोहाट के हिंदू क्यों नष्ट हुए? उनके मकानों और दूकानों में आग क्यों लगा दी गई? उन्हें अपनी जन्मभूमि से क्यों खदेड़ा गया? इसलिये कि—जैसा वहाँ के मुसलमान कहते हैं—एक हिंदू ने एक पद्य लिखकर इस्लाम की तौहीन कर दी, जिससे कोहाट और ग़ैर-इलाक़े के पठानों में हिंदुओं के विरुद्ध जोश फैल गया। वह तौहीन क्या थी? कोहाट के किसी मुसलमान ने एक विज्ञापन छाप कर लगा दिया, जिसमें एक ग़ज़ल थी, जिसका एक पद्य यह था—

"तुझे तेग़े-मुसलिम उठानी पड़ेगी;
किशन (कृष्ण) तेरी गीता जलानी पड़ेगी।"

मुसलमानों से कहा गया कि तुम्हें तलवार हाथ में लेकर कृष्ण की गीता को भस्मसात् करना होगा।

इसके उत्तर में वहीं की सनातनधर्म-सभा के मंत्री ने भजनों की एक पुस्तक मुद्रित कराई, जिसकी एक ग़ज़ल का एक पद्य इस्लाम के विरुद्ध इन शब्दों में था—

"बनाएँगे क़ाबे में विष्णू का मंदिर;
नमाज़ी की हस्ती मिटानी पड़ेगी।"

अर्थात्, हिंदुओं को भी नमाज़ का अस्तित्व मिटाकर क़ाबे तक में विष्णु का मंदिर खड़ा करना होगा। यह पद्य किसी आर्य-समाजी का लिखा हुआ नहीं था, और न आर्य-समाज का इससे कोई संबंध था। इस पद्य से, कहते हैं, इस्लाम की तौहीन हो गई, और इसी का बहाना लेकर कोहाट के हिंदुओं को नष्ट कर दिया गया। मुसलमानों की तो क्या कहें, हमारे हिंदू-नेताओं तक ने व्यवस्था दे दी कि लाला जीवनदास ने यह पद्य प्रकाशित करके भारी मूर्खता की। मैं भी इन हिंदू-नेताओं की इस सम्मति को स्वीकार कर लेता हूँ। जब दो मनुष्य लड़ते हैं, मूर्खता थोड़ी-बहुत दोनों की होती है; परंतु देखना यह होता है कि शरारत का आरंभ कौन करता है। और, वही अपराधी समझा जाता है, जो दूसरे पर पहले आक्रमण करे या ऐसा करने की उत्तेजना दे। कोहाट में जब मुसलमानों ने उपर्युक्त विज्ञापन लगाया था, तो उन्हें शांति से उसका उत्तर भी सहन कर लेना चाहिए था। किंतु नहीं, कहा जाता है, कोहाट के मुसलमान बड़े जोशीले और बेसमझ हैं, वे यह तौहीन कैसे सह सकते थे? मैं निवेदन करता हूँ कि यह युक्ति बिलकुल ग़लत और झूठी है। कोहाट में इस पुस्तक की दो ही चार प्रतियाँ बिकी थीं, और उनका ज्ञान किसी मुसलमान को था ही नहीं। जहाँ तक पता लगा है, जीवनदास के एक हिंदू-शत्रु ने ही एक प्रति एक मुसलमान ख़िलाफ़ती को दे दी। कोहाट के पठानों में तो उर्दू का समझनेवाला भी कोई नहीं था। इस ख़िलाफ़ती मुसलमान ने मसजिद में पठानों को इकट्ठा किया, और घंटों इस पद्य की व्याख्या करके उन्हें जोश दिलाया, तथा इस बात के लिये तैयार किया कि वे सहस्रों की संख्या में इकट्ठे होकर डिपुटीकमिश्नर से यह मतालबा करें कि वह जीवनदास को इस्लामी शरअ के अनुसार भूमि में गाड़कर पत्थरों से जान निकालने का दंड दें। मैं पूछता हूँ, यहाँ इश्तिआल दिलाने का ज़िम्मेदार कौन है? जीवनदास अथवा ख़िलाफ़त कमेटी का मंत्री? मेरी समझ में तो कोहाट में जो अत्याचार हुए, उनका सारा दायित्व ख़िलाफ़त कमेटी के ऊपर है। फिर अपढ़ मुसलमानों को 'काफ़िरों' के विरुद्ध जोश दिलाकर इस्लामी शरअ को बीच में ले आना कहाँ का न्याय है? अच्छा, जब सरकार ने जीवनदास पर अभियोग चला दिया, तो कोहाट के बाक़ी हिंदुओं का क्या अपराध था, जिसके लिये उन्हें लूटा और क़त्ल किया गया, और उनके घर जला डाले गए? यह है इस्लामी मनोवृत्ति का विचित्र रूप।

लाहौर की घटना

कोहाट तो ज़रा एक कोने में पड़ा है, वहाँ के मुसलमानों ने प्रसिद्ध कर दिया कि किसी हिंदू ने पहले गोली चलाई थी; परंतु लाहौर पंजाब की राजधानी है, वहाँ हम सबने अपनी आँखों से स्पष्ट देखा कि कहाँ क्या कुछ होता रहा। लाहौर में भी उसी मज़हबी तौहीन की कथा छेड़ दी गई। यह ठीक है कि महा० राजपाल ने एक छोटी-सी पुस्तक निकाली। वह इस्लाम के विरुद्ध कही जा सकती है। क्या मुसलमान और क्या हिंदू-नेता सबने इस पुस्तक को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बुरा कहा। मैं भी मान लेता हूँ कि एक दूसरे के मज़हब पर आक्षेप करना अच्छा नहीं। परंतु यहाँ भी वही प्रश्न उठता है कि शुरू किसने किया। महा० राजपाल की ओर से कहा जाता है कि यह एक मुसलमान की पुस्तक के उत्तर में लिखी गई थी। दूसरे यह कि इससे पहले कई मुसलमानों ने आर्य-समाज और हिंदू-धर्म के विरुद्ध उत्तेजनापूर्ण पुस्तकें लिखी थीं। उनका उत्तर भी यथोचित दिया जाता रहा है। सो इस बार भी ऐसी पुस्तक का निकालना कोई नई बात न थी। यदि हम मान भी लें कि महा० राजपाल ने ग़लती की, तो क्या यह पर्याप्त नहीं था कि महा० राजपाल पर सरकार की ओर से अभियोग चलाया गया? दो वर्ष तक महाशयजी को इस मुक़दमे की चिंता बनी रही, उनके काम-काज को बहुत हानि पहुँची, और हज़ारों रुपए वकीलों ने ऐंठ लिए। इन सबसे बढ़कर महा० राजपालजी न्यायालय की सब शर्तें मानने के लिये तैयार थे, उन्होंने पुस्तक का बेचना और छपवाना बंद भी कर दिया। एक और बात भी हमें ध्यान में रख लेनी चाहिए कि किसी मुसलमान ने मुक़दमा चल जाने के बहुत समय पीछे तक इस पुस्तक का ख़याल भी न किया, और न उनमें से किसी को इस पुस्तक का ही पता था। दूसरे यह कि मुक़दमा चलने से पहले एक महात्मा गांधी ही थे, जिन्होंने इस पुस्तक की घोर निंदा की थी। मुक़दमे के बीच में एक समय आया, जब कि लाहौर में इसके संबंध में एक विशेष आंदोलन खड़ा करके लाहौर के मुसलमानों का ध्यान इस मज़हबी तौहीन की ओर दिलाया गया। इस पुस्तक द्वारा मज़हबी तौहीन हुई हो या न हुई हो, लेकिन एक पक्ष के लोगों को उकसाकर दूसरों के विरुद्ध खड़ा कर देना इस देश के कुछ लोगों के बाएँ हाथ का खेल है।

मुसलिम-मनोवृत्ति का लाहौर में विशेष रूप से प्रादुर्भाव उस समय हुआ, जब जस्टिस कुँअर दिलीपसिंह ने महाशय राजपाल को छोड़ दिया। इस पर जो आंदोलन पंजाब में और पंजाब के बाहर दूसरे प्रांतों में पैदा किया गया, उसके वास्तविक कारणों को समझना कठिन है। इस आंदोलन पर अधिक आश्चर्य इसलिये होता है कि पंजाब-सरकार ने स्वयं मुसलिम डेपुटेशन को विश्वास दिला दिया था कि एक मुक़दमा करके अपने क़ानून की पड़ताल की जायगी। हम जानते हैं, किस प्रकार दूसरे मुक़दमे में पंजाब-हाईकोर्ट ने दो अभियुक्तों को दंड देकर इस क़ानून का फ़ैसला सरकार के पक्ष में कर दिया। इससे भी बढ़कर भारत-सरकार ने असेंबली में वह क़ानून पास कराया, जिससे मज़हबी तौहीन करनेवाले को दंडित किया जा सके।

मज़हबी जोश

लेकिन मुसलिम मनोवृत्ति फिर भी शांत नहीं हुई। वह महाशय राजपाल को स्वतंत्र फिरते हुए देख नहीं सकी। उसे सरकार की इन सब कारवाइयों से संतोष नहीं हुआ। इस मनोवृत्ति के उत्पादक मुसलिम नेता अपने लेखों और भाषणों में खुला प्रचार करने लगे कि मज़हबी तौहीन के लिये तो इस्लामी शरअ को ही बर्तना होगा। यह अनुमान करना कठिन नहीं कि साधारण वार्तालाप में वे अपने अनुयायियों को कहाँ तक भड़काते होंगे। लेकिन परिणाम हमें दिखाई दे रहा है। हम क़त्ल की धमकियाँ ही नहीं सुनते, किंतु क़त्ल के इरादे से एक दूसरे के पीछे बराबर आक्रमण किए जा रहे हैं। ये ख़ूनी आक्रमण मुसलमानों की ओर से सरकारी क़ानून को सबसे पहले और हिंदुओं को उसके पीछे करारी चुनौती है। मैं मानता हूँ कि दिल्ली के दो बड़े मुसलमान-नेताओं (हकीम अजमलख़ाँ और डॉ० अंसारी साहब) ने इन घातक आक्रमणों की तीव्र निंदा की है, उनका इस नई मनोवृत्ति के पैदा होने में कोई हाथ भी नहीं कहा जा सकता। परंतु उनके मुक़ाबले में सैकड़ों मौलवी और नेता हैं, जो इस मनोवृत्ति को पैदा करते और इसे बढ़ाते हैं। हमारे कई मुसलमान-नेता इस बात को बुरा समझते हैं, जब यह कहा जाता है कि इन घटनाओं का उत्तरदायित्व मुसलमानों के सिर पर है। मैं स्वीकार करता हूँ कि इन घटनाओं के लिये सब मुसलमानों को दोषी ठहराना भारी ग़लती है। परंतु इन घटनाओं के पीछे कोई षड्यंत्र है या नहीं, यह कहना भी बहुत कठिन है, जब तक इसका कुछ निश्चय न हो जाय। हम नहीं कह सकते कि कोई षड्यंत्र है, और न मुसलमान ही यह कह सकते हैं कि कोई षड्यंत्र नहीं है। परंतु जो बात निश्चित रूप से कही जा सकती है, वह यह है कि अब्दुलरशीद, ख़ुदाबख़्श या अब्दुलअज़ीज़-जैसे लोगों को अपने-आप किसी को क़त्ल करने का ख़याल तक नहीं आ सकता, जब तक उन्हें लेख या भाषण द्वारा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भड़काकर उनके मन में जोश न भर दिया जाय। वे लोग ऐसे लेखों के लिखनेवाले और ऐसे खुले भाषण करनेवाले ही हैं, जो मज़हबी तौहीन करनेवालों को क़त्ल कर देना मज़हबी काम बताते हैं। वे ही लोग हैं, जिनके सिर पर इन दुर्घटनाओं का सारा उत्तरदायित्व है। कहा जाता है, मुसलमानों का दोष नहीं; हिंदू लोग उन्हें गुस्सा दिलाते हैं, इससे मुसलमान जोश में आकर आक्रमण कर बैठते हैं। मुसलमान हिंदुओं पर कोई आक्षेप नहीं करते, इसीलिये हिंदू उन पर हमला नहीं करते। यह बात हिंदुओं की शांति-प्रियता का स्पष्ट प्रमाण है। इस युक्ति से तो संसार-भर के क़त्ल न्यायोचित ठहराए जा सकते हैं। मैं पूछता हूँ, इन घातकों को किसने इश्तिआल या उत्तेजना दिलाई? इन्होंने तो क्या, एक-दो को छोड़कर महाशय राजपाल की पुस्तक किसी मुसलमान ने भी न पढ़ी होगी। इन्हें भड़कानेवाले वे लोग हैं, जो कोहाट के ख़िलाफ़ती मंत्री की तरह प्रचार करते हैं कि अमुक मनुष्य ने अमुक कार्य किया है, अतः उसे क़त्ल करना प्रत्येक मुसलमान का कर्तव्य है। अस्तु, अब प्रश्न यह है कि इन बातों को रोकने का उपाय क्या है।

शुद्धि प्राचीन है

कुछ मुसलमान जैसा कुछ कर रहे हैं, उसका प्रतिकार हिंदू लोग भी उसी ढंग से करना आरंभ कर दें, तो इस देश में क़त्ल और रक्तपात का भयानक युद्ध आरंभ हो जायगा। इसके प्रतिकार का वास्तविक उपाय तो एक यही हो सकता है कि देश की जो शासन-संस्था है, वही इस रोग का उपाय करे। हिंदुओं के जो नेता हों, उन्हें सरकार के सामने सारी स्थिति रख देनी चाहिए। सरकार का हित भी इसी में है कि इस देश में मज़हबी आज़ादी या धार्मिक स्वतंत्रता पूर्ण रूप में क़ायम रहे। न्याय भी यही चाहता है कि प्रत्येक धर्म के अनुयायियों को अपने धर्म का प्रचार करने की स्वतंत्रता प्राप्त हो। यदि मुसलमान और ईसाई हिंदुओं को अपने मज़हब में ले सकते हैं, तो उन्हें तनिक भी दुःख न होना चाहिए, यदि हिंदू भी उन्हें अपने धर्म में लें। मुसलमान कहते हैं कि शुद्धि एक नई बात है। उनको याद रखना चाहिए कि मुसलमानी आक्रमण से पूर्व हिंदू विदेश से आई हुई जातियों को अपने में हज़म कर लेते थे, और उनके संस्कारों, आचारों और व्यवहारों को परिवर्तित करके अपना-जैसा बना लेते थे। वे लोग इसी जाति के हो जाते थे, और उनका प्रेम इस देश से हो जाता था। इस प्रकार संस्कार, आचार तथा व्यवहार का परिवर्तन ही शुद्धि है। मुसलमानी आक्रमण और शासन के समय में हिंदुओं के लिये शुद्धि करना संभव ही न था। जो हिंदू नंगे पैर और हाथ जोड़े हुए जज़िया लाकर देने को विवश थे, उनके लिये अपने धर्म की रक्षा ही बड़ी बात थी। वे बेचारे कैसे किसी को शुद्ध कर सकते थे! इस परिस्थिति में बहुत काल तक रहने के कारण हिंदुओं में शुद्धि की प्रथा ही जाती रही। अँगरेज़ी सरकार इस बात के लिये हमारे धन्यवाद की पात्र है कि उसने फिर से धार्मिक स्वतंत्रता दी, जिससे स्वामी दयानंद ने फिर से शुद्धि का प्रचार किया। तो भी हिंदू लोग माननेवाले कब थे! वे इस बीच में बनी हुई अपनी आदत को सहसा कैसे छोड़ सकते? इस समय शुद्धि का प्रेरक मालाबार का वह हत्याकांड है, जिसमें हज़ारों हिंदू-पुरुष और स्त्रियाँ ज़बर्दस्ती मुसलमान बनाई गईं। इससे सारी हिंदू-जाति चौंक पड़ी। इस नृशंस कांड से पुराने नमूने के पंडित और संन्यासी भी चिल्ला उठे। कहने लगे कि इन सब लोगों को हिंदू-धर्म में फिर वापस ले लेना चाहिए। मुसलमानों को याद रखना चाहिए कि शुद्धि-चक्र चलाने में स्वामी श्रद्धानंद का कोई दोष नहीं था। हिंदू शुद्धि को कभी इस प्रकार स्वीकार न करते, यदि मालाबार के मोपले हिंदुओं पर इतना अत्याचार न करते। अतएव शुद्धि की ज़िम्मेदारी मोपलों के सिर पर है।

हिंदुओं के इन सामान्य न्यायानुकूल अधिकारों को कुचलने का यत्न किया जा रहा है, और सरकार की ओर से भी इन अधिकारों की रक्षा नहीं की जा रही है। सरकार की इस नीति को देखकर हिंदुओं का यह ख़याल हो रहा है कि सरकार की इस नीति का एक बड़ा कारण यह है कि हर एक प्रांत में सरकार को ख़बर पहुँचानेवाले पुलीस-अफ़सर प्रायः मुसलमान हैं। इस दशा में जहाँ हिंदुओं का यह कर्तव्य है कि इस समय वे अपने पक्ष को हर मामलों में सरकार के सामने रक्खें, वहाँ सरकार के लिये भी आवश्यक है कि वह निडर हिंदुओं द्वारा पहुँचाए गए सच्चे समाचारों से अपरिचित न रहे।

आर्य-समाज की स्थिति

मुसलमान यह कहते हैं कि आर्य-समाज ही झगड़े की जड़ है। वे आर्य-समाज को एक काँटा समझते हैं। उनके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दृष्टिकोण से यह बात ठीक भी है । सारी हिंदू-जाति में आर्य-समाज ही एक ऐसी जीवित और जाग्रत् संस्था है, जो केवल अपनी रक्षा ही नहीं करती, बरन् सारी हिंदू-जाति के हित के लिये सदा सन्नद्ध रहती है । इसका काम हिंदुओं को जगाए रखना है । आज आर्य-समाज को कुचल दिया जाय, तो आर्य-जाति को हड़प कर जाना सुगम हो जाय । आर्य-समाज ने अपने उत्साह और शक्ति के कारण अपने शत्रु बढ़ा लिए हैं । अब देखना यह है कि आर्य-समाज को अपनी शक्ति बढ़ाने के लिये क्या उपाय करना होगा । आर्य-समाज के कार्य के तीन बड़े अंग हैं ।

सबसे पहले आर्य-समाज के उद्देश्य में सच्ची देश-भक्ति पाई जाती है । देश-भक्ति इन अर्थों में नहीं कि हम वर्तमान राजनीति की छोटी-छोटी बातों की निरर्थक चर्चा करते रहें । आर्य-समाज की देश-भक्ति वेदों, शास्त्रों तथा संस्कृत और आर्य-भाषा के अगाध प्रेम में पाई जाती है । हमारी दृष्टि में वेद ईश्वरीय ज्ञान है । परंतु वेद का ज्ञान सिद्धांत-रूप में तभी गौरव-संपन्न हो सकता है, जब इसको माननेवाला और इसकी रक्षा करनेवाला कोई मनुष्य-समुदाय हो । अतः आर्य-समाज को देश के इतिहास में प्रसिद्ध उन सब लोगों को श्रद्धा और भक्ति से देखना पड़ता है, जिन्होंने वैदिक धर्म और वैदिक सभ्यता की रक्षा के लिये समय-समय पर अपने प्राण तक न्योछावर कर दिए हैं । अपने इतिहास में ऐसे महापुरुषों को पूज्य-दृष्टि से देखने में ही आर्य-समाज की देश-भक्ति प्रकट होती है । मेरी सम्मति में आर्य-समाज की भावना उस देश-भक्त की आज्ञा नहीं हो सकती, जिसमें उपर्युक्त भाव न पाया जाता हो । अतः आर्य-समाज के ऐसे सब कार्य—यथा, वेद और संस्कृत की रक्षा, आर्य-भाषा का प्रचार, दलितोद्धार—देश-भक्ति के महाकार्य हैं ।

आर्य-समाज के कार्य का दूसरा अंग अपने सिद्धांतों के प्रचार में पाया जाता है । जहाँ पर आर्य-समाज को अपने सिद्धांतों का प्रचार करने की आवश्यकता पड़ी है, वहाँ निस्संदेह उसने दूसरे मत-मतांतरों के ग़लत सिद्धांतों का खंडन भी किया है । महात्मा गांधी आर्य-समाज की इस भावना से असंतुष्ट हैं, और इसकी निंदा करते हैं । किंतु उनकी-सी मनोवृत्ति के पुरुष भले ही आर्य-समाज की निंदा करें, संसार का काम उनकी मनोवृत्ति के पीछे चलने से नहीं चलता । स्वामी शंकराचार्यजी को भी तो खंडन का काम करना पड़ा था ।

जब मुसलमानों ने हिंदू-धर्म पर आक्रमण किए, तो कबीर-जैसे संत आदमी को भी खंडन का काम करना पड़ा था । वर्तमान समय में मुसलमानों और ईसाइयों ने हिंदू-धर्म पर चोटें करना साधारण बात समझ रक्खी थी; परंतु महर्षि दयानंद ने उन्हें बता दिया कि शीशे के महलों में बैठकर दूसरे पर पत्थर न फेंको ! संसार में असत्य का खंडन करना उतना ही पवित्र काम है, जितना सत्य का प्रकाश करना । यह ठीक है कि हिंदुओं में दूसरों का खंडन करने का स्वभाव नहीं है, सहिष्णुता में ही हिंदू-जाति का सबसे बड़ा महत्त्व है; परंतु साथ ही यह भी समझना चाहिए कि इस सहिष्णुता में हिंदुओं की भारी निर्बलता भी छिपी हुई है । मुसलमानों ने ६०० वर्ष तक हिंदुओं को मुसलमान बनाया । आज ईसाई लाखों हिंदुओं को ईसाई बना रहे हैं । तब क्या यह सहिष्णुता प्रशंसनीय है कि हम अपने लाखों-करोड़ों भाइयों के विचार, आचार और संस्कार अपने धर्म और जाति के विरुद्ध होते हुए देखा करें और हाथ-पर-हाथ धरकर बैठे रहें ? इसे मैं तो सहिष्णुता का दुरुपयोग समझता हूँ । परंतु मुझे इतना ही कहना है कि आर्य-समाज ने अपना सारा बल और समय सामाजिक क्रांति के आवश्यक सिद्धांतों पर ख़र्च कर दिया, और जिसकी ओर आर्य-समाज ने ध्यान दिया, उसे एक पग आगे बढ़ाया ।

सामाजिक क्रांति की आवश्यकता

आर्य-समाज के काम का तीसरा अंग समाज-सुधार है । सिद्धांतों द्वारा निस्संदेह धर्म फैलता है; परंतु धर्म-प्रचार का सबसे बड़ा साधन नया सामाजिक जीवन पैदा करना है । हमने सिद्धांतों का प्रचार तो किया, परंतु नया सामाजिक जीवन पैदा करने में हम असमर्थ रहे । सामाजिक दृष्टि से आर्य-समाज के सदस्य पुराने हिंदू-समाज से बढ़कर कोई अधिक विशेषता नहीं रखते ।

मैं मानता हूँ कि एक-दो बार समाज में सामाजिक परिवर्तन करने की चेष्टा की गई, परंतु वह सफल नहीं हो सकी । इसका परिणाम यह है कि समाज के नेताओं और पुराने सभासदों की संतानें भी प्रायः आर्य-समाजी नहीं हैं । जिस संस्था को अपनी संतानों में धर्म-प्रचार के लिये विशेष चेष्टा करनी पड़े, उसका धर्म दूसरों में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कैसे फैल सकता है ? एक और बात देखिए। एक व्यक्ति आज मुसलमान होता है, उसमें उसी समय एक परिवर्तन आ जाता है। वह मुसलमान-समाज का एक अंग बन जाता है, और उसमें मुसलमान-समाज के गए मज़हबी जोश और उत्साह पैदा हो जाते हैं। लेकिन आर्य-समाज में प्रविष्ट होने पर कोई ऐसा नया सामाजिक जीवन नहीं पैदा होता। यदि आर्य-समाज में अपना समाजिक जीवन होता, और हिंदू-समाज के सामाजिक बंधनों का दास न बनकर सामाजिक एकता और भ्रातृभाव का प्रचार किया जाता, तो मैं कह सकता हूँ कि हमारे करोड़ों दलित भाइयों के हृदय और उनकी सहानुभूति आर्य-समाज के साथ होती। आर्य-समाज ने आरंभ से ही दलितोद्धार, शुद्धि, गुण-कर्मानुसार वर्ण-व्यवस्था आदि का प्रचार करके समाज और उसकी बिरादरियों की रचना जो की, वह आर्य-समाज के लिये बहुत बलवान् सिद्ध हुई। स्वर्गीय स्वामी श्रद्धानंदजी ने वैदिक सिद्धांत पर विश्वास रखते हुए जाति-बंधन को तोड़ा। परंतु २५-३० वर्ष बीत गए, और आर्य-समाज के अंदर इस संबंध में कोई परिवर्तन न हुआ। उसके सभासद जाति-पाँतियों के दास, बिरादरियों के ग़ुलाम और पुरानी हिंदू-रीतियों और रूढ़ियों में जकड़े हुए हैं। वे किसी प्रकार का नवीन सामाजिक जीवन पैदा नहीं कर सके। परिणाम यह है कि हमारे दलितोद्धार और शुद्धि की सब चेष्टाएँ सर्वथा असफल रह गईं।

हमारा दलितोद्धार क्या है ? हमने शुद्ध हुए दलित लोगों का एक नया दल बना दिया है। इसके अतिरिक्त न उनकी आर्य-समाज में कोई विशेष स्थिति है, और न हिंदू-समाज में उनका स्थान ही। शुद्धि को ही लीजिए। मेरे सामने कई ऐसे उदाहरण हैं, जब कि मुसलमान या ईसाई शुद्ध होकर आर्य-समाज में आए और फिर आर्य-समाज से बाहर निकलकर वापस लौट गए। बात यह है कि हिंदू-समाज में दूसरों को अपने अंदर पचाने की शक्ति नहीं रही। क्या यह दुःख की बात नहीं कि जो थोड़े-बहुत विधर्मी आर्य-समाज में आए, वे हमारे अंदर भी एक विदेशी तत्त्व के समान रहे ? कारण यह कि आर्य-समाजियों के तो सारे सामाजिक संबंध अपनी जाति-बिरादरियों के साथ हैं, और ये जाति-बिरादरियाँ किसी और को लेने के लिये तैयार नहीं। अतः हमारी शुद्धि केवल एक सिद्धांत का प्रचार-मात्र है। मैं मानता हूँ कि हमारी शिथिलता का कारण यह है कि हमें यह भय लगा रहा है, कहीं हम हिंदुओं में से निकलकर एक पृथक् संस्था न बन जायँ। परंतु मुझे यह भय काल्पनिक-सा प्रतीत होता है; क्योंकि जातीय दृष्टि से हमारा हिंदू होना या न होना हमारे अपने हाथ में है। जब तक हम अपने को हिंदू कहते हैं और समझते रहेंगे, हमें कोई हिंदू-जाति से नहीं निकाल सकता। हमारे सामने सिखों का उदाहरण उपस्थित है। वे अपने को हिंदू कहना पसंद नहीं करते, तथापि हिंदू लोग उन्हें अपने साथ रखने के लिये हिंदू ही कहते हैं। सामाजिक दृष्टि से हिंदू-समाज के अंदर रहकर आर्य-समाज ने सारी उन्नति को रोक रक्खा है। न आर्य-समाज दूसरों को शुद्ध और उनके साथ खान-पान तथा शादी-ब्याह का पूरा प्रबंध करके उन्हें अपने अंदर खपा सकता है, और न करोड़ों दलित लोगों को अपने अंदर समानता के अधिकार दे सकता है। जिस दलितोद्धार और शुद्धि को आर्य-समाज ५० साल से ठीक बताता आ रहा है, आज उसे हिंदू-सभा ने, जिसमें सब विचारों के हिंदू शामिल हैं, स्वीकार कर लिया है। परंतु जिस कारण से आर्य-समाज को शुद्धि और दलितोद्धार में सफलता नहीं हुई, उसी कारण से हिंदू-सभा को भी सफलता की आशा नहीं है। जब तक हमारा समाज सात हज़ार और कई सौ जाति-बिरादरियों में बँटा हुआ है, तब तक न दलितों को उठने का अवसर है, और न किसी को शुद्ध होने के लिये आकर्षण है। किंतु इस जाति-पाँति का संबंध जन्म से है, और इसकी संख्या अगणित है। वर्ण केवल ४ हैं, और उनका आधार गुण, कर्म, स्वभाव पर है।

यदि शुद्धि और दलितोद्धार हमारे धर्म की उन्नति की जड़ हैं, यदि इनसे हमारा जीवन और इनके विना हमारी मृत्यु है, तो मैं निवेदन करता हूँ कि इनमें सफलता प्राप्त करने के लिये हमें सामाजिक क्रांति करनी पड़ेगी। जिससे हम अपने पुराने संबंध तोड़कर कम-से-कम आर्य-समाज की नींव समानता और भ्रातृभाव पर रख सकेंगे।

आर्य-समाज से आशाएँ

मैं अभी पूर्व-बंगाल, आसाम और बर्मा में देख आया हूँ कि सब लोगों की आँखें आर्य-समाज की ओर लगी हैं। कई प्रसिद्ध बंगाली महानुभावों ने मुझसे कहा कि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक आर्य-समाज ही ऐसा है, जो नया सामाजिक जीवन पैदा करके आर्य-जाति को बचा सकता है। आर्य-समाज ही ऐसा है, जो दलितों का उद्धार कर सकता और शुद्धि को सफल बना सकता है। यह आर्य लोगों के हाथ में है कि हिंदू-जाति की आशाएँ पूर्ण करें। उत्तर में इतना तो मैंने कह दिया कि मेरी सम्मति में आर्य-समाज का भविष्य इस बात पर निर्भर है कि हम एक महाक्रांति द्वारा समाज-सुधार कर सकते हैं या नहीं, और यह सामाजिक क्रांति हमारे अंदर नवजीवन का संचार करे, इसका उपाय यही है कि हम इसके महत्त्व को भली भाँति समझ लें। गत ५० वर्षों तक हम इस प्रचार के लिये संस्थाओं पर अवलंबित रहे हैं, जो हमारे लिये लँगड़े की टेक के समान था। हमने अपनी सारी शक्ति और धन संस्थाओं पर लगा दिया। आशा यह थी कि इनके द्वारा प्रचार आप-से-आप हो जायगा। लेकिन याद रखना, जब तक हमारे हृदयों में प्रचार का जोश नहीं भर जाता, तब तक कोई भी हमारे लिये प्रचार का साधन नहीं बन सकता। इस विषय में हमें अपने पड़ोसी मुसलमान भाइयों से शिक्षा लेनी चाहिए, जिनका प्रत्येक पुरुष, स्त्री, बालक और बालिका एक-एक प्रचारक का काम करता है। यहाँ तक कि वेश्याओं की भी यह धुन है कि जिन हिंदुओं का उनसे संबंध है, उन्हें अपने मज़हब में ले जायँ। मैं तो समझता हूँ कि इस समय सब काम गौण बना देने चाहिए, और प्रत्येक आर्य-समाजी को प्रचार के कार्य में लग जाना चाहिए। हमारा धर्म-प्रेम पतिव्रता स्त्री का-सा होना चाहिए। जो घर का सब काम-काज करती है, परंतु उसका चित्त सदा पति में लगा रहता है। हम भी संसार के सब काम करें—नौकरी, व्यापार, विद्याध्ययन सभी कुछ करें—परंतु हमारा मन धर्म के प्रचार में लगा रहे। इस समय आर्य-समाज के ऊपर भारी संकट आ रहा है, उसके लिये इस समय जीवन और मृत्यु का प्रश्न है। जो कोई धर्म का झंडा लेकर आगे बढ़ता है, उसे मिटाने के लिये पिस्तौल और छुरे तैयार हैं। क्या आर्य-समाज इस समय एक कड़ी परीक्षा में से नहीं निकल रहा है? पर ऐसी कड़ी परीक्षाएँ प्रत्येक नई संस्था और आंदोलन पर आती हैं। यह परीक्षा आर्य-समाजियों के आत्मिक बल की है। प्रत्येक आर्य-समाजी को समझ लेना चाहिए कि वह अर्जुन के समान कुरुक्षेत्र के मैदान में खड़ा है, और श्रीकृष्ण भगवान् उसे अपने कर्तव्य कर्म का उपदेश कर रहे हैं। वह भगवद्गीता का एक बार ध्यान करते हुए इस बात का उत्तर दे कि धर्म की वेदी पर बलिदान होने को तैयार है या नहीं? यदि इसका उत्तर 'हाँ' है, तो याद रखना चाहिए कि एक-एक पिस्तौल और चाकू के लिये एक-एक सौ समाजियों को आगे आना पड़ेगा।

जीवन और मृत्यु

[लेखक, श्रीयुत सुदर्शन]

(१)

हसन-इक़बाल—

कितना ज़माना गुज़र गया, आज भी वे दिन याद आते हैं, तो कलेजे पर छुरियाँ चल जाती हैं। जवानी के वे सुनहरे दिन, बहार के वे ख़ुशरंग फूल, उम्मीदों के वे दिलकश नज़ारे आज क्या जाने, कहाँ छिप गए। दुनिया के तौर-तरीक़े उसी तरह जारी हैं, लुत्फ़ोकरम के बाग़ आज भी अपनी जादू-भरी हवाओं से जवानी के ख़ून को गर्मा रहे हैं। मगर मेरे लिये, और मेरे दिल के लिये उनमें कोई गर्मी, कोई संदेसा नहीं, जैसे लाश को दुनिया-भर की हरारत भी ज़िंदा नहीं कर सकती।

मैं और जहानआरा बचपन में एकसाथ खेले हैं। कैसे अजीब दिन थे, जब शर्म-हया की बेड़ियाँ पाँव में न पड़ी थीं। जहानआरा हुस्न और नज़ाकत की पुतली थी; उसे देखकर मेरा दिल ख़ुशी से नाचने लग जाता था, जैसे चकोर को चाँद नज़र आ जाय। मेरा जी चाहता था, उसे कलेजे में बिठा लूँ। मैं उसे सदा देखना और देखते रहना चाहता था। अकेला होता, तब भी उसी का ध्यान रहता। मुझे उससे मुहब्बत थी। यह मुहब्बत दुनिया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की हिर्स और हवा की मुहब्बत न थी, न यह मुहब्बत कुछ दिनों के बाद बदल जानेवाली, मिट जानेवाली मुहब्बत थी, जो बर्सातो नाले की तरह कभी ठाठें मारती है, कभी बिलकुल ख़ुश्क हो जाती है। यह असली, सच्ची, खरी मुहब्बत थी, जिसके चश्मे बारह महीने जारी रहते हैं, और जिसे सूरज की सारी गर्मी भी सुखाना चाहे, तो नहीं सुखा सकती। यही सबब है कि जहानआरा आज भी, जब कि दुनिया की अनजान आँखें उसे देखने से क़ासिर हैं, अपने जोबन की पूरी शान-शौकत से मेरे सामने है, और मेरी नींद और मेरी बेदारी दोनों पर हुकूमत कर रही है।

(२)

मगर सिर्फ़ मैं ही जहानआरा को न चाहता था; वह भी मुझे प्यार करती थी। बचपन का ज़माना था, दुनियादारी की दोनों को ख़बर न थी। इर्द-गिर्द के हालात से बेख़बर, मा-बाप की मर्ज़ी से बेपरवा प्यार-मुहब्बत की घाटियों में बढ़े जाते थे, और हमें इस बात का ज़रा ध्यान भी न था कि यह यात्रा कहाँ ख़तम होगी। उस मुसाफ़िर की तरह, जो आँखों पर पट्टी बाँधकर दौड़ता जाय, और यह न सोचे, न सोचने की ज़रूरत समझे कि रास्ते में नदी-नाले पड़ते हैं, या काँटोंवाली झाड़ियाँ खड़ी हैं। हमें सिर्फ़ एक दूसरे का ख़याल था। मगर मैं ग़रीब था, और मेरी जहानआरा अमीर बाप की बेटी थी। ज्यों-ज्यों उम्र बढ़ने लगी, यह ख़लीज, जो बचपन के पहाड़ों में पानी की पतली-सी लकीर थी, फैलने लगी। यहाँ तक कि जवानी के मैदान में पहुँचते-पहुँचते यही पानी की मामूली धार एक दरिया की सूरत में तबदील हो गई। इधर मैं खड़ा था, उधर जहानआरा खड़ी थी, और बीच में गहरे पानी की ख़ौफ़नाक मौजें गरजती थीं। अब हमारी आँखें खुलीं, अपनी हिमाक़त पर पछताने लगे। पहले पता होता, तो यहाँ तक नौबत न पहुँचती। क्या करें, क्या न करें। पहले प्यार बढ़ा था, अब प्यार की चिंता बढ़ने लगी।

प्यार और खाँसी छिपाए नहीं छिपते। जब तक बच्चे थे, किसी ने ख़याल न किया। जवान हुए, तो हमारी अपनी ही आँखों ने राज़ खोल दिया। कुछ दिनों यह मज़मून लड़के-लड़कियों का दिलपसंद मशग़ला बना रहा, इसके बाद बड़े-बूढ़ों के कानों तक जा पहुँचा। नतीजा यह हुआ कि जहानआरा का बाहर निकलना बंद हो गया। मुझ पर पहाड़ टूट पड़ा। चारों तरफ़ घबराया-घबराया फिरता था, जैसे किसी ग़रीब बेवा का इकलौता बेटा खो जाय, उस वक़्त उसके दिलोजिगर पर क्या गुज़रती है, मन में मायूसी के कैसे-कैसे ख़याल आते हैं, यही हालत मेरी थी। न दिन का आराम रहा, न रात की नींद। अब यास थी, या सर्द आहें थीं, या गरम आँसू थे। चंद ही दिन में सेहत ख़राब होने लगी। जैसे पानी न मिलने से पौदे मुरझा जाते हैं।

मेरे मा-बाप मुझसे नाख़ुश थे। कहते, तूने हमें कहीं मुँह दिखाने के लायक़ नहीं रक्खा। हुस्न देखा, अपनी हैसियत न देखी। ब्याह-शादियों के रिश्ते बराबरवालों में हुआ करते हैं। हमारा उनका क्या मेल ? इसलिये जब मेरी सेहत बिगड़ने लगी, तो उन्होंने परवा न की। मगर जब हालत ज़्यादा ख़राब होने लगी, तो उनको भी फ़िक्र हुई। मा-बाप बच्चे के रोने और रूठने की परवा करें या न करें, लेकिन उसे घर से बाहर निकलते देखकर उनका दिल ठिकाने नहीं रहता। एक दिन मेरा बाप बहुत देर तक मुझे समझाता रहा, मगर पागल और प्रेमी को कौन समझावे ? मेरे दिल पर ज़रा भी असर न हुआ। आख़िर हारकर बोले—"अच्छा, तू यह मानता है या नहीं कि हम ग़रीब हैं ?"

मैंने आहिस्ता से सिर झुकाकर जवाब दिया—"हाँ, मानता हूँ।"

बाप—"और उसका बाप अमीर है, चाहे, तो हमें नौकर रख ले।"

मैं—"पता नहीं।"

बाप—"पता नहीं का बच्चा ! देखता है, और फिर भी अंधा बन रहा है ? हमारी उनके रूबरू हक़ीक़त ही क्या है ? अपनी तरफ़ नहीं देखता चला है इश्क़ करने। नासिरअली बड़ा ज़ालिम आदमी है। अगर उसे गुस्सा चढ़ आया, तो कोई इलज़ाम लगाकर सारे घर को बँधवा देगा। वह तो जानो, पड़ोसी होने का लिहाज़ कर रहा है। भला चाहे, तो उसका ध्यान छोड़ दे।"

मैं—"आप तो यों ही गुस्से में आ जाते हैं। मुझे उसका ज़रा भी ख़याल नहीं।"

बाप—"ख़याल कैसे नहीं ? सारे शहर में धूल उड़ रही है। बेईमान कहीं का ! कहता है, मुझे उसका ख़याल नहीं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मैं—"अब आप न मानें, तो मैं क्या कर सकता हूँ?"

बाप—"उसका ख़याल दिल से निकाल दे, और समझ ले कि यह रिश्ता कभी न होगा, झगड़ा ख़तम। (पुचकारकर) बेटा, तूने मेरा कहा आज तक नहीं टाला। मुझे तुझ पर हमेशा फ़ख़्र रहा है। तू यह झगड़ा क्या ले बैठा?"

मैं—"बहुत बेहतर! मैं आज से उसका नाम भी लूँ, तो जूते मारकर घर से निकाल देना।"

बाप—"शाबाश! मुझे यही उम्मीद थी। मगर कोई ख़त-वत न लिख बैठना। पकड़ा गया, तो बड़ी बुरी बात होगी। उसका बाप बड़ा मुहतात है।"

मैं—"हुआ करे। यहाँ फ़ैसला कर चुके कि उसका नाम भी न लेंगे।"

बाप—"तो मैं अब बेफ़िक्र हो जाऊँ?"

मैं—"पूरे तौर पर।"

बाप—"बेटा, ऐसे कामों में हमेशा बदनामी होती है।"

मैं—"आप बजा फ़र्माते हैं।"

बाप—"ख़ुदा तुझे हिदायत दे।"

मैं—"अब आपको शिकायत का मौक़ा न मिलेगा।"

मेरे बाप ने मुझे गले से लगा लिया, और रोने लगा। मेरी आँखों में भी आँसू आ गए; मगर जहानआरा का ख़याल दिल में उसी तरह मौजूद था।

(३)

जहानआरा—

क्या सोचा था, क्या हो गया? अब कई-कई दिन बीत जाते हैं, और मुलाक़ात ही नहीं होती। ख़ुदा इस दौलत को ग़ारत करे, मुहब्बत के बीच में खड़ी है, और हँसती है। मगर मुझे इस पर रोना आता है। मैं चाहती हूँ, कोई इस रुपए-पैसे को आग लगा दे, फिर तो अमीरी-ग़रीबी का सवाल ही न उठेगा। अम्माजान ने भी ग़ज़ब किया, अब्बाजान से साफ़-साफ़ ही कह दिया, अब वह उनकी जान के दुश्मन बने फिरते हैं। मालूम होता है, उनको भी ख़बर मिल गई है, जभी इधर से गुज़रना छोड़ दिया है। पहले हर रोज़ आते थे, अब कई दिन से नहीं आए। सोचते होंगे, कहीं बात न बढ़ जाय, थुड़ी-थुड़ी होने लगेगी।

लेकिन यह जुदाई कैसे सहूँ? मुहब्बत और सब कुछ सह सकती है, पर जुदाई सहनी मुशकिल है। मेरी आँखों में दुनिया तारीक हो गई। कोई भी चीज़ अच्छी मालूम न होती थी, न मीठी, न नमकीन। बीमारी में मुँह का ज़ायक़ा ही बदल जाता है।

सोच-सोचकर मैंने चोरी से मिलने का इरादा किया। कोई मुझे बुरा-भला न कहे! यह क़ुदरती था, पानी सीधा रास्ता बंद पाता है, तो इधर-उधर का रुख़ अख़्तियार कर लेता है। मैंने अपने दिल के साथ कई दिन तक कशमकश की, मगर मुहब्बत ने मा-बाप के ख़ौफ़ और बदनामी के भूत, दोनों को पछाड़ दिया। मैंने अपनी सहेली ख़दीजा से कहा—"जैसे भी हो, अपने यहाँ मुलाक़ात करा दो; नहीं मैं मर जाऊँगी।"

ख़दीजा के ख़ाविंद मियाँ हलीम और मेरे बाप से बहुत अच्छे ताल्लुक़ात थे। ख़दीजा का भी हमारे यहाँ बहुत आना-जाना था। उस पर हमारे घरवालों को कभी शक न हो सकता था। ख़दीजा ने मेरी तजवीज़ सुनी, तो डर गई। उसे अंदेशा था कि अगर किसी को इस मुलाक़ात का हाल मालूम हो गया, तो मैं भी बदनाम हो जाऊँगी। लेकिन मेरी आहोज़ारियों ने उसका मुँह बंद कर दिया, हारकर रज़ामंद हो गई। दूसरे दिन उसके मकान पर हमारी मुलाक़ात हुई।

मैंने उन्हें देखा, और डर गई। आदमी इतनी जल्दी इतना बदल सकता है, यह मैंने कभी न सोचा था। न आँखों में वह शोख़ी थी, न होठों पर हँसी। ऐसा मालूम होता था, जैसे मुद्दतों के बीमार हों। उन्होंने आते ही मुझे गले से लगा लिया, और फूट-फूटकर रोने लगे। मेरा दिल बे-अख़्तियार हो गया; मगर मैंने अपनी आँखों को बे-अख़्तियार न होने दिया, और प्यार-भरे लहज़े में कहा—"वाह! क्या शक्ल-सूरत निकाली है।" उन्होंने मेरी तरफ़ देखा, और ठंडी आह भरकर जवाब दिया—"जहानआरा! यह सवाल मुझसे न करो, अपने दिल से करो। मुझे ख़्वाब में भी ख़याल न था कि हम इस तरह बेगाने हो जायँगे। शुकर है, तुम्हारी सूरत तो नज़र आई।"

मैं—"बड़ी दिक़्क़तों से आई हूँ। अगर अब्बाजान को मालूम हो जाय, तो गरदन ही उड़ा दें।"

इक़बाल—"बस-बस, ऐसी मनहूस बात मुँह से न निकालो। मैंने भी बाप से वादा किया है कि इधर को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रुख़ भी न करूँगा। और देख लो (हँसकर) वादा पूरा कर रहा हूँ। तुम्हारा रुख़ देखकर दिल क़ाबू में न रहा।"

मैं—"तुम्हारा रंग-रूप ही बदल गया, पहचाने नहीं जाते। कुछ बीमार हो क्या ? किसी हकीम को दिखाओ, बेपरवाही ठीक नहीं।"

इक़बाल—"मेरी दवा सिर्फ़ एक आदमी के पास है; मगर वह दवा देता नहीं।"

मैं—"अरे ऐसा संगदिल कौन है ?"

इक़बाल—"ख़ानसाहब नासिरअली का नाम तो तुमने सुना ही होगा।"

मैं—"(शर्माकर) जाओ तुम तो मज़ाक़ करते हो ! मैं कहती हूँ, तुम्हें हो क्या गया है ?"

इक़बाल—"पहले अपना मुँह शीशे में देख लो, फिर मुझे कहना।"

मैं—"तुम इतनी फ़िक्र काहे को करते हो ?"

इक़बाल—"यही सोचता हूँ कि अब क्या होगा ?"

मैं—"जो ख़ुदा को मंज़ूर है, हो जायगा। इस तरह रोने-धोने से हासिल ख़ाक न होगा, सेहत भी खो बैठोगे।

इक़बाल—"जहानआरा ! मुझे अपना आइंदा ज़माना बिलकुल तारीक दिखाई देता है। मेरे दिल में कोई कह रहा है, हमारी मुहब्बत का अंजाम अच्छा न होगा। तुम अमीर बाप की बेटी हो, मैं ग़रीब आदमी का लड़का हूँ।"

मैं—"अगर कोई मुझसे पूछे, तो साफ़ कह दूँ कि मुझे रुपए-पैसे की ज़रा भी परवा नहीं, मुझे तुम्हारी परवा है।"

इक़बाल—"और तुम्हारे बाप का बस चले, तो मुझे आज ही गोली से उड़ा दे।"

मैं—"दुनिया अंधी है, रुपया-पैसा देखती है, मुहब्बत नहीं देखती। अच्छा, मुझे यह तो बताओ, क्या बूढ़े कभी जवान न थे, जो जवानों के जज़बात नहीं समझते ?"

इक़बाल ने बेबसी से कहा—"जहानआरा ! तुम मुझसे छीनी जा रही हो ! मैं सामने खड़ा अपने दिल की यह बरबादी देखता हूँ, और कुछ कह नहीं सकता। जी चाहता है, ज़हर खा लूँ।" मेरे सीने में जैसे किसी ने तीर मार दिया, आँखों में पानी आ गया। लेकिन मैंने हौसले से कहा—"तुम मर्द होकर ऐसी बातें करोगे, तो मेरा क्या हाल होगा ? यों जान देना बुज़दिली है। बहादुर बनो।"

उन्होंने मेरी तरफ़ हैरत से देखा, और कहा—"जहानआरा ! तुम्हारा क्या मतलब है ?"

मैं—"कमर कसो, रुपया पैदा करो, फिर देखती हूँ, हमारे रास्ते में कौन खड़ा होता है ?"

इक़बाल—"मगर तुम्हारा बाप मेरा इंतज़ार न करेगा। तुम जवान हो, तुम्हारा बाप अमीर है, और दुनिया में अमीर बाप की ख़ूबसूरत बेटी से ब्याह करनेवालों की कमी नहीं।"

मैं—"मैं साफ़ कह दूँगी कि मुझे यह ब्याह मंज़ूर नहीं। कोई बाँध के थोड़े ही कर देगा।"

इक़बाल—"तुम बड़ी भोली हो ! क्या तुम्हारा ख़याल है कि तुम्हारा बाप यह बर्दाश्त करेगा कि वह तुम्हारा ब्याह करना चाहे, और तुम इनकार कर दो।"

मैंने आँसू-भरी आँखों से उनकी तरफ़ देखा, और पूछा—'क्या ज़बरदस्ती ब्याह देंगे ?"

इक़बाल—"अगर ब्याह दें, तो उनको कौन रोक सकता है ? कोई भी नहीं।"

मैं रोने लगी। मैं चारों तरफ़ देखती थी, मगर मुझे बचाव का कोई तरीक़ा नज़र न आता था। इस अथाह तारीकी में रोशनी की किरन कहाँ थी ? मैंने उनकी तरफ़ देखा, वह भी रो रहे थे। मेरा रहा-सहा सब्र-क़रार भी जाता रहा।

(४)

इतने में दरवाज़ा खुला, और ख़दीजा और उसका शौहर हलीम अंदर आए। हम दोनों घबरा गए, जैसे किसी ने चोरी करते देख लिया हो। मैं बुर्क़ा ओढ़कर एक कोने में दबक गई, उनके चेहरे पर पसीना आ गया। मगर हलीम ने हमें तसल्ली देते हुए कहा—"मैं तुम्हारा ख़ैरख़्वाह हूँ, दुश्मन नहीं। हौसला रक्खो।"

हमारी जान में जान आई। हलीम ने उनके कंधे पर हाथ रखकर कहा—"औरतों के मानिंद रोना बेफ़ायदा है। तुम इधर रोते रह जाओगे, उधर ब्याह हो जायगा इश्क़बाज़ी बच्चों का खेल नहीं, जानबाज़ी का मैदान है कोशिश करो, कुछ करके दिखाओ, फिर देखता हूँ, किसमें हिम्मत है कि जहानआरा की तरफ़ आँख उठाकर भी देख जाय।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मायूसी में उम्मीद का नाम भी बहुत कुछ होता है। मियाँ हलीम की बात सुनकर उनका चेहरा चमकने लगा। बोले—"क्या करके दिखाऊँ ?"

हलीम ने मुसकिराकर कहा—"अमीर बाप अपनी बेटी किसी ग़रीब को बिला वजह क्यों दे ? ब्याह-शादियों के रिश्ते बराबरवालों में होते हैं। इस वक़्त दो सूरतें तुम्हारी शादी की हैं। एक तो यह कि नासिरअली ग़रीब हो जाय, दूसरी यह कि तुम भी अमीर हो जाओ। पहली सूरत तुम भी पसंद न करोगे, दूसरी सूरत का तुम पर दार-मदार है। जहानआरा हसीन लड़की है, उसके हाथ का हक़दार वही हो सकता है, जो बहादुर हो, और कुछ करके दिखा सके। क्या तुममें हिम्मत है ?"

उन्होंने सिर ऊँचा करके जवाब दिया—"हिम्मत तो है, मगर ख़तरा यह है कि कहीं ख़ानसाहब ब्याह ही न दें। सारी उम्र रोता रहूँगा। कैसी आफ़त है, मैं मौक़ा चाहता हूँ, मुझे मौक़ा नहीं मिलता।"

हलीम—"मौक़ा मैं दिला दूँगा।"

इक़बाल—"क्या मतलब ?"

हलीम—"वह मेरा कहना कभी न टालेंगे। मैं रज़ामंद कर लूँगा।"

उम्मीद के ख़याल ने उनका चेहरा रोशन कर दिया, जैसे अँधेरे में किसी ने दिया जला दिया हो। बेसब्री से बोले—"कितनी मुद्दत के लिये ?"

हलीम—"अब यह क्या कह सकता हूँ ? दो-तीन साल से ज़्यादा न मानेंगे। तुम कितनी मोहलत चाहते हो ?"

इक़बाल—"तीन साल दिला दीजिए, इस दौरान में कुछ करके दिखा दूँगा।"

हलीम—"मगर तुमने कुछ सोचा भी है, या योंही पागलों की तरह हवा में क़िले बना रहे हो ? फिर कहोगे, तीन साल में होता ही क्या है। पहले सोच लो, फिर बोलो। मैं अभी जाकर फ़ैसला किए आता हूँ।"

उनका चेहरा उम्मीद की रोशनी से रोशन था, बोले—"जो सोचना था, सोच चुका। तीन साल बहुत हैं, आदमी चाहे, तो पहाड़ उलट दे। आप इतनी मोहलत दिला दें, तो सारी उम्र दुआएँ देता रहूँगा।"

हलीम चला गया। थोड़ी देर बाद लौटा, तो चेहरा कामयाबी की ख़ुशी से चमक रहा था। आते ही बोला—"ख़ाँसाहब बड़े ग़ुस्से में थे। कुछ मानते ही न थे। पर मैंने रज़ामंद कर लिया। कहते हैं, तीन साल तक शादी न करेंगे।"

ख़दीजा ने झुककर मेरे कान में कहा—"शीरीनी खिलाकर जाना। काम फ़तह हो गया।"

मैंने दोनों हाथ उसकी पीठ पर मारे, और कहा—"बड़ी बुरी हो ! मज़ाक़ करते शर्म नहीं आती ?"

हलीम—"मगर एक शर्त भी है।"

इक़बाल—"फ़रमाइए।"

हलीम—"ख़त-किताबत न हो सकेगी।"

इक़बाल—"बड़ी टेढ़ी शर्त है। मेरा दिल न मानेगा। ख़त आता-जाता रहता, तो हिम्मत बनी रहती। मगर ख़ैर, यह भी मंज़ूर।"

हलीम—"कहते हैं, अगर मेरे कान में भनक भी पड़ गई कि यह शर्त टूटी है, तो मैं जहानआरा को फ़ौरन् ब्याह दूँगा।"

इक़बाल—"बहुत अच्छा ! न लिखेंगे। जहाँ और सदमे हैं, एक यह भी सही।"

मगर मुझे पूरी उम्मीद थी कि वह ख़त लिखना कभी बंद न करेंगे।

(५)

दूसरे दिन वह चले गए। कहाँ, यह किसी को भी मालूम न था। मुझ पर पहाड़ टूट पड़ा। अब दुनिया में मेरा कोई भी न था। यहाँ तक कि मेरे मा-बाप भी अपने न थे। अकेली बैठी रोया करती थी, जैसे दुनिया की तमाम दिलचस्पियाँ उनके साथ ही चली गई हों। शबाब के वे रंगीन नग़मे, बहार के वे क़हक़हे न-मालूम नाउम्मीदी के किस गोशए-तारीक में गुम हो गए। मेरे लिये गर्मी की दुपहरें और सर्दी की रातें थीं, जो काटे नहीं कटतीं। इनके सिवा मेरे लिये कुछ भी न था। इस उम्र में लड़कियों को कितनी ही ख़ुशियाँ होती हैं, मुझे एक भी न थी। अक्सर सोचा करती, वह कहाँ होंगे, क्या करते होंगे। इस लंबी-चौड़ी दुनिया में उनका अपना कौन है ? कब लौटेंगे, और किस हाल में लौटेंगे ? अपने अज़ीज़ों के बारे में हमारे दिल में बुरे-बुरे ख़याल आते रहते हैं। मेरे दिल में ख़याल आता, परदेस में बीमार न हो जायँ, कौन इलाज करेगा, कौन दवा देगा ? बेपरवा हैं, अपना ख़याल ही नहीं किया करते। फिर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्या होगा ? इससे आगे मैं न सोच सकती। नाउम्मीदी के अँधेरे में ख़याल की आँखें भी नहीं देख सकतीं।

इसी तरह फ़िक्रोतरद्दुद के छः महीने बीत गए, उनका कोई ख़त न आया। न-मालूम हुआ कि कहाँ हैं, और क्या करते हैं ? उनके वालदैन भी रोया करते थे; मगर मैं तो पागल-सी हो गई। हर वक़्त सोचती, अभी ख़त आवेगा, मगर कोई ख़त न आता। ख़दीजा कहती थी, तू तो पागल हो गई है। अगर चिट्ठी नहीं आई, तो क्या हुआ, तुझे भूल थोड़े गया है। सोचता होगा, चिट्ठी पकड़ी गई, तो सारी मेहनत पर पानी फिर जायगा। मगर इन बातों से मुझे इतमीनान न होता था। अंदर-ही-अंदर घुलने लगी, जैसे लकड़ी को घुन लग जाय।

यरक़ान की तरह इश्क़ भी पोशीदा नहीं रहता। उसका रंग बोलता है। मेरी हालत भी किसी से पोशीदा न थी। मा-बाप दोनों देखते थे, और कुढ़ते थे; पर मुझसे कुछ कहते न थे। शायद डरते थे कि कुछ कहा, तो सामने बोलने लगेगी। जवान लड़की है, कहीं आँखों का पानी न मर जाय। मगर वे ग़ाफ़िल न थे। एक दिन मालूम हुआ, मेरे निकाह का फ़ैसला हो गया है ; कोई इंजीनियर हैं, उनके साथ। मैं सन्नाटे में आ गई। मुझे यह गुमान भी न था कि मेरे मा-बाप मुझसे दग़ा करेंगे। मैं चारपाई पर लेट गई, और फूट-फूटकर रोने लगी।

लेकिन रोने से क्या होता था ? मैं दौड़ी-दौड़ी ख़दीजा के घर गई, और उससे बोली—"देखती हो, क्या अंधेर होनेवाला है। वह कहीं दुनिया के धक्के खाते फिरते होंगे, यहाँ निकाह की तैयारियाँ हो रही हैं ! तीन साल का इक़रार किया था, अभी तो छः ही महीने गुज़रे हैं।"

ख़दीजा ने ठंडी आह भरकर सिर झुका लिया।

मेरी आँखों से आग के शरारे निकलने लगे, तलमलाकर बोली—"तो क्या तुम बिलकुल ही चुप रहोगी ? जाकर उनसे कहो, अब्बाजान से मिलें और इस फ़ितना को यहीं दबा दें।"

ख़दीजा ने मेरी तरफ़ ऐसी निगाहों से देखा, जो पत्थरों में भी सूराख़ कर सकतीं, और कहा—"उन्होंने सब कुछ कहा है, मगर तुम्हारा बाप नहीं मानता। कहता है, मैंने इक़रार न किया था, उसे टाला था। अब यह मौक़ा मिला है, इसे न खोऊँगा।"

मैं तीर की तरह तनकर खड़ी हो गई, और बोली—"तो अब मुझे ही बोलना पड़ेगा। निकाह के वक़्त मुँह फाड़कर कह दूँगी, मुझे यह रिश्ता मंज़ूर नहीं। समझते होंगे, लड़की है, क्या कर लेगी। यह मालूम नहीं, मुहब्बत और मायूसी सब कुछ कर सकते हैं। किसी को मुँह दिखाने के क़ाबिल न रहेंगे।"

मगर कहने और करने में बड़ा फ़र्क़ है, मुझसे कुछ भी न हो सका। वह नाज़ुक वक़्त आया और चला गया। मगर मेरी ज़बान न खुल सकी।

निकाह हो गया।

(६)

हसन-इक़बाल—

मैं कलकत्ते पहुँचा। इस वक़्त तक मैंने ज़रा भी न सोचा था कि वहाँ जाकर क्या करूँगा। सोचता था, पहले कलकत्ते पहुँच लें, फिर देखेंगे, क्या होता है। इतना बड़ा शहर है, क्या मेरे ही नसीबों को आग लगी है। मैं नहीं कह सकता; इसकी वजह क्या थी, मगर मेरा दिल उम्मीदों से भरा था। मुझे यक़ीन हो गया था कि मैं कामयाबी के रास्ते पर चल रहा हूँ; पर कलकत्ते पहुँचकर दिल बैठ गया—जैसे कोई मुलाज़मत का उम्मीदवार उम्मीदें लेकर साहब तक पहुँचे, और वहाँ पहुँचकर मायूस हो जाय। ख़याल आया, इस पुर-रौनक़ शहर में सभी बेगाने हैं, अपना कोई भी नहीं। सारे दिन शहर में घूमता रहा, जैसे यास उम्मीद को ढूँढती फिरे। पर बिजलियों और रोशनियों के इस बड़े शहर में मेरे लिये तारीक गोशे के सिवा कहीं जगह न थी। यहाँ तक कि रात के नौ बज गए। अब मैं घबराने लगा, कहाँ जाऊँगा, रात को कहाँ रहूँगा। मेरा दिमाग़ काम न करता था। परदेस में सबसे परेशानी की चीज़ रात होती है, और ख़ासकर एक बे-ज़र, बे-घर के लिये, जिसे पड़ रहने को ठिकाना न हो। दिन इधर-उधर चल-फिरकर भी गुज़र जाता है, मगर रात कैसे कटे ? मैंने जेब में हाथ डाला, सिर्फ़ पौने दो रुपए थे, और यह वह असासा था, जिसके बल-बूते पर मैं कलकत्ते के बाज़ारों में कामयाबी जीतने आया था।

यकायक मेरे हाथ पर किसी ने एक इश्तिहार रख दिया। मैंने एक दूकान के सामने खड़े होकर देखा, खापरडे-सरकस-कंपनी का इश्तिहार था, जिसमें एक ऐक्टर शेरों को खुला छोड़कर उनके साथ खेलनेवाला था। मैं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परेशान था। मेरे पास खाने-पीने को सिवा ग़म के कुछ न था। लेकिन तफ़रीह की ख़्वाहिश आदमी को हमेशा रहती है। मैं सरकस देखने चला गया। सुबह क्या होगा, यह ख़याल न था, ख़याल यह था, इस वक़्त तमाशा देख लो। यह कंपनी बड़ी भारी कंपनी थी; बंदरों, रीछों, कुत्तों, घोड़ों, हाथियों के तमाशे देखकर लोग वाह-वाह करते थे। मगर जब एक नौजवान मरहठा ख़ूँख़्वार और वहशी शेरों को खुला छोड़कर उनके साथ खेलने लगा, तो तमाम तमाशाइयों के रोंगटे खड़े हो गए। शेर ग़ुर्राते थे, और नौजवान मुसकिरा-मुसकिराकर उनको छेड़ता था, गोया वे शेर न थे, हिरन के बच्चे थे। और तुर्रा यह कि नौजवान के पास सिवा होश-हवास के कुछ भी न था। देखते-देखते नौजवान ने अपना सिर एक शेर के मुँह में दे दिया। लोगों के दम रुक गए। चारों तरफ़ सन्नाटा छाया हुआ था। किसी तरफ़ से भी आवाज़ सुनाई न देती थी। यह जिस्म की चुस्ती-चालाकी का नज़ारा न था, मौत और ज़िंदगी का होश-रुबा तमाशा था। लोग समझते थे, शेर इसे चबा जायगा। मगर शेर ने उसे ज़रा भी नुक़सान न पहुँचाया। ज़िंदगी मौत के मुँह से बचकर लौट आई। नौजवान ने शेरों को इशारा किया, वे पालतू कुत्तों की तरह पींजरे में दाख़िल हो गए। लोगों ने तालियों से आसमान सिर पर उठा लिया।

अब सबकी ज़बान पर उसी का ज़िक्र था। लोग कहते थे, टिकट के दाम वसूल हो गए। वाह-वाह! कैसा जाँबाज़ है, शेर के मुँह में सिर दे दिया। एक पुराने ख़याल का आदमी बोला, सब जादू का खेल है, शेर-वेर कुछ भी न थे, ख़याली तसवीरें थीं; इसी को नज़रबंदी का तमाशा कहते हैं। जादू न था, मगर ये शेर भी न थे, शेर की खाल में आदमी थे। तीसरा बोला, वाह जनाब! आदमी हों, तो इतनी तनख़्वाह कौन दे? कुछ मालूम भी है, इसकी तनख़्वाह तीन हज़ार है, तीन हज़ार! आज नौकरी छोड़ दे, कल कंपनी में उल्लू बोलने लगें। ये कुत्तों और बिल्लियों के तमाशे कौन देखने आता है, सब इसी की दिलावरी देखने आते हैं। ग़र्ज़े कि जितने मुँह थे, उतनी बातें थीं।

तमाशा ख़तम हुआ, तो मैं भी लोगों के साथ बाहर निकला; पर अब मैं वह शिकस्ता-दिल, मायूस परदेसी न था, मुझे नौजवान मरहठा ने कामयाबी की राह दिखा दी थी। ख़याल आया, रुपया कमाने का यही तरीक़ा है। आदमी जान की परवा न करे, तो दौलत पैरों में लोटती है। लोग अपने-अपने घरों को चले गए; मगर मैं कहाँ जाता? मेरा कोई घर न था। मैंने सरकस के गिर्द फिरकर रात गुज़ार दी, और सुबह को नौजवान मरहठा से मिलने चला।

उसने मेरी कहानी बड़े ग़ौर से सुनी, और फिर मुसकिराकर कहा—"मेरी भी यही जीवनी है। लड़की सुंदरी थी, और उसका पिता अमीर था। परंतु हमने इन बातों का ध्यान न किया। परिणाम वही हुआ, जो हुआ करता है। परंतु मैंने प्रतिज्ञा की, मैं रुपया कमाऊँगा, और मैंने कमाकर दिखा दिया—अब वह मेरी स्त्री है।"

मैंने लजाजत से कहा—"मैं परदेसी हूँ, मेरा यहाँ सिवा परमेश्वर के और कोई नहीं। अगर आप दस्तगीरी करें, तो शायद मुझे भी कामयाबी हो जाय।"

मरहठा मेरी बात काटकर बोला—"भगवान् पर भरोसा रक्खो, वह सब कुछ कर देगा। परंतु एक बात हृदय में बाँध लो। रुपया कमाना सुगम नहीं। जोखम में पड़ना होगा।"

मैं—"मैं आग में कूदने को भी तैयार हूँ।"

मरहठा—"तुमने देखा, मैं मृत्यु के मुँह में जाता हूँ। तब जाकर रुपया मिलता है।"

मैं—"ख़ूब देखा, देखकर रोंगटे खड़े हो जाते हैं।"

मरहठा—"लोग तनख़्वाह देखते हैं, काम नहीं देखते। सिंह का नाम सुनकर मृत्यु का चित्र सामने आ जाता है, मैं उसके मुँह में सिर दे देता हूँ।"

मैं—"मैं सुनकर कभी विश्वास न करता कि आदमी यह भी कर सकता है।"

मरहठा—"परंतु मेरी स्त्री कहती है, अब यह धंधा छोड़ दो। शेर फिर भी शेर है, राम जाने, किस समय आँखें बदल ले। स्त्री है, डर जाती है। बड़ी कठिनाई से आता हूँ। मगर अब ज़्यादा दिन यह काम न कर सकूँगा। मुझे भय है, कहीं कंपनी को नुक़सान न पहुँच जाय। इसलिये मैं चाहता हूँ कि कोई मन-चला मुझसे यह सिंह-विद्या सीख ले; मगर प्राण हर एक को प्यारे हैं, सब कानों पर हाथ धरते हैं।"

मैं—"मैं तैयार हूँ। मुझे प्राण प्यारे नहीं हैं। शायद मैं—"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्या है?

समय का सदुपयोग

और

बुद्धि का विकास

कैसे हो?

सुंदर, सरल, सुबोध साहित्य के पढ़ने से समय का सदुपयोग और बुद्धि का विकास दोनों होगा।

ऐसा साहित्य कहाँ मिलेगा?

इधर-उधर भटकने की ज़रूरत नहीं!

फ़ौरन्

गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय,

लखनऊ

को

डाक-ख़र्च के लिये एक आना का टिकट भेजकर

नया सूचीपत्र मुफ्त मँगाइए।

मैनेजर गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आप निराश क्यों हैं?

क्या रोज़गार में लाभ नहीं होता ?

फिर आप चुपचाप क्यों बैठे हैं ?

धन कमाने की कुंजी

तो आपके हाथ ही में है।

क्या ?

हिंदी की सर्वश्रेष्ठ पत्रिका

सुधा

में

विज्ञापन छपाइए।

फिर देखिए, कैसे धड़ाधड़ आर्डर आपके पास आते हैं। जिसने एक बार विज्ञापन छपाया, उसको फिर दूसरे पत्रों में विज्ञापन देने की आवश्यकता नहीं रही।

कारण

सुधा की प्रत्येक संख्या कम-से-कम १,००,००० पाठकों के हाथ में जाती है। सभी बड़े चाव से इसके प्रत्येक पृष्ठ को पढ़ते हैं।

मैनेजर सुधा, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सर्वश्रेष्ठ पत्रिका क्यों है ?

इसका कारण ढूँढ़ने दूर नहीं जाना पड़ेगा। किसी बड़े स्टेशन पर, ह्वीलर के बुकस्टाल पर, या अपने शहर या गाँव की किसी लाइब्रेरी में जाकर सुधा की कोई भी संख्या उठाकर आप देखेंगे, तो आपको मालूम हो जायगा—

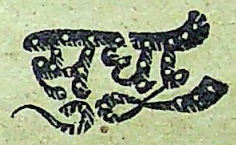

ही हिंदी की सर्वोत्तम पत्रिका है।

क्योंकि

सुधा—साहित्य और कला की अभूतपूर्व प्रदर्शिनी है।
सुधा—के सभी लेख मौलिक और सुप्रसिद्ध विद्वानों के लिखे होते हैं।
सुधा—में सभी विषयों पर उत्तमोत्तम लेख निकलते हैं।
सुधा—ही बराबर ललित कला पर लेख निकालती है। जैसा कि हिंदी की किसी पत्रिक में नहीं होता।
सुधा—का प्रत्येक चित्र भावपूर्ण मनोहर और कला की दृष्टि से उत्तम होता है।
सुधा—में मोटाई बढ़ाने को भर्ती के लेख और चित्र नहीं दिए जाते।
सुधा—के कार्टून सामयिक और व्यंग्यपूर्ण होते हैं।
सुधा—काग़ज़, छपाई, रूप-रंग, गेट-अप आदि में आदर्श है।
सुधा—हिंदुस्तान के कोने-कोने और प्रत्येक गाँव में पढ़ी जाती है।
सुधा—हिंदुस्तान के बाहर सभी मुल्कों में सुधा पढ़ी जाती है।
सुधा—विज्ञापन का सबसे अच्छा साधन है।
सुधा—को सभी विद्वानों और कलाकारों ने सर्वश्रेष्ठ बनाया है।
सुधा—ही एक ऐसी पत्रिका है जो अँगरेज़ी की पत्रिकाओं से टक्कर ले सकती है।
सुधा—का प्रत्येक अंक स्थायी साहित्य की सर्वोत्तम सामग्री है।
सुधा—पहली ही संख्या से ७२०० छपती, जैसा सौभाग्य हिंदी की किसी भी पत्रिका को आज तक प्राप्त नहीं हुआ है।

अगर आप अभी तक सुधा के ग्राहक न हुए हों, तो शीघ्र ६॥) मनीआर्डर भेजकर ग्राहक हो जाइए। विलंब मत कीजिए। नहीं, तो इसके पिछले अंक फिर दुर्लभ हो जायँगे।

मैनेजर सुधा, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साहित्य-प्रेमियो, सावधान !

शीघ्रता कीजिए !! शीघ्रता कीजिए !!!

किसलिये ?

सर्वश्रेष्ठ, सुप्रसिद्ध और सर्व-प्रिय

सचित्र मासिक पत्रिका

के ग्राहक बनने में।

क्यों ?

सुधा की पहली छः संख्याएँ **अब** बहुत थोड़ी रह गई हैं। इस महीने में जो ग्राहक बनेंगे, उन्हीं को सुधा पहली संख्या से मिल सकेगी।

कारण ?

सुधा की ग्राहक-संख्या जिस तेज़ी से बढ़ रही है, उसे देखकर यही अनुमान होता है कि महीने-भर बाद आपको सुधा की पिछली संख्याओं के लिये

हताश होना पड़ेगा !

अतः आप शीघ्र, पहली संख्या से, ग्राहक बन जायँ।

मैनेजर 'सुधा', लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मरहठा—"नहीं, तुम सीख लोगे। प्रेम बुरा होता है। जो पुरुष से कभी न हो, वह इस समय हो जाता है।"

मैं—"मैं आपकी जान को सारी उम्र दुआएँ देता रहूँगा।"

मरहठा—"मुझे अब रुपए की भी चाह नहीं। बहुत कमा लिया; और कमा कर क्या करूँगा? अब तुम आगे आओ, और धन और यश की प्राप्ति करो।"

मेरी ख़ुशी का ठिकाना न था। कामयाबी की सरज़मीन बहुत क़रीब, बिलकुल पास, दिखाई देती थी। कैसी अच्छी साइत घर से निकला था, आते ही काम बन गया! मैं ऐसा ख़ुश था, जैसे किसी को दो जहान की दौलत मिल जाय।

(७)

छः महीने बाद कंपनी में मेरे नाम के डंके बजने लगे। कंपनी वही थी, कंपनी की शोहरत वही थी, सिर्फ़ शेरों का महबूब बदल गया था। पहले मरहठा नौजवान था, अब पंजाबी मुसलमान! इश्तिहार निकलते, प्रोफ़ेसर इक़बाल की जाँबाज़ी के लासानी कर्तब जिसने न देखे, उसने कुछ न देखा। मैं यह पढ़ता था, और ख़ुश होता था। मैं वही था, जो आज से छः महीने पहले शेरों का यही तमाशा देखकर दंग रह गया था; आज ख़ुद मुझे देखकर लोग सरगोशियाँ करते थे। जब मैं अपनी चमकीली वरदी पहनकर शेरों के सामने जाता था, तो लोग मुझे कैसी मुहब्बत, कैसी अक़ीदत से देखते थे। कई दफ़ा मुझे अंदेशा होता था कि शायद आज रात मेरा आख़री तमाशा हो। अगर शेर ने ज़रा भी मुँह दबा लिया, तो क्या होगा! मैं सहम जाता। मेरी रगों का ख़ून सर्द हो जाता। मेरा दिल मौत के ख़ौफ़ से काँप उठता था। मैं चाहता था, नौकरी छोड़ दूँ, और घर लौट जाऊँ। मगर जहानआरा की मुहब्बत गिरे हुए हौसले सँभाल लेती। दुनिया में हुस्न और इश्क़ कितना काम करते हैं, इसका अंदाज़ लगाना भी आसान नहीं।

इस दौरान में हमारी कंपनी कई रियासतों में भी गई। वहाँ मुझे राजों-महाराजों से बड़ी-बड़ी रक़में मिलीं। महाराजा सतगढ़ ने दस हज़ार दिया, महाराज छतियाला ने आठ हज़ार। मेरी तनख़्वाह इसके अलावा थी। मगर मैं ख़र्च न करता था, रुपया सँभाल-सँभालकर रखता था। यह रुपया मेरे लिये न था, मेरी जहानआरा के लिये था, जिसका बाप चाँदी का भूखा था।

ख़ुदा-ख़ुदा करके दो साल ख़तम हुए, और मैं अस्सी हज़ार के क़रीब रुपया लेकर अपने वतन को रवाना हुआ। इस वक़्त मेरे पाँव ज़मीन पर न पड़ते थे। पुर-लुत्फ़ उम्मीदों के ख़याल में महव उड़ा चला जाता था। मैंने हलीम को सब कुछ लिख दिया था। सोचता था, शहर के लोग सुनेंगे, तो हैरान रह जायँगे। और, जहानआरा के तो जान में जान आ जायगी। मेरी आमद का हाल सुनेगी, तो उछल पड़ेगी। पता नहीं, हिज्र-मलाल का यह ज़माना ग़रीब दुखिया ने कैसे गुज़ारा है? रो-रोकर आधी भी न रही होगी, चेहरे का रंग बदल गया होगा। पर अब ख़ुश हो जायगी। जाकर हलीम से कहूँगा, उसके बाप से कहे, इक़बाल कुछ बन गया है। अब आपको क्या एतराज़ है?

पंजाब-मेल अपनी पूरी रफ़्तार से उड़ा चला जाता था; मगर मुझे ऐसा मालूम होता था, जैसे उसकी रफ़्तार बहुत ही सुस्त हो। मैं बार-बार झुँझला उठता था कि गाड़ी जल्द-से-जल्द रावलपिंडी क्यों नहीं पहुँच जाती। मैं चाहता था, उसका तमाम फ़ासिला आन वाहिद में तय हो जाय। इंतिज़ार की आख़री घड़ियाँ बहुत लंबी होती हैं, उनका गुज़रना मुशकिल हो जाता है। लेकिन वक़्त ने किसी की परवा कब की है? गाड़ी अपनी रफ़्तार से चलती रही। रफ़्ता-रफ़्ता रावलपिंडी का स्टेशन आ गया। मैं स्टेशन से बाहर निकला, स्टेशन पर कोई भी न था। न हलीम न कोई और। मैं स्टेशन से बाहर निकला, और मोटर लेकर घर पहुँचा। इस वक़्त मेरे दिल की जो कैफ़ियत थी, उसे बयान नहीं किया जा सकता। मेरी मा को बेहद ख़ुशी हुई। बार-बार मेरी बलाएँ लेती थी, और पूछती थी—बेटा! तूने हमें एक ख़त भी न लिखा; मैं तो रो-रोकर अंधी हो गई। मैं हँसता था, और कहता था—मा, मैंने अस्सी हज़ार रुपया कमा लिया। अब हम बड़े अमीर हैं।

मेरी मा की आँखें ख़ुशी से चमकने लगीं। मेरे सिर पर हाथ फेरकर बोली—"नासिरअली कहता था, परदेस गया है, तो क्या हो जायगा? क्या परदेस में रुपया लुटता है, जो उठा लावेगा।"

मैं—"मा, लुटता ही है, वर्ना मैं इतना रुपया कहाँ से उठा लाता?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मा—"मगर बेटा, तू शेर के मुँह में सिर कैसे दे देता था ? क्या तुझे मा का ख़याल न आता था।"

मैं—"शेर सधे हुए थे।"

मा—"पर शेर तो थे, मैं अब न जाने दूँगी।"

मैं—"मेरा अपना भी इरादा जाने का नहीं है। ख़ान-साहब का क्या हाल है ?"

मा—"मेरे सामने उसका नाम न लो, बड़ा बेईमान है।"

मेरे दिल में यकायक अंदेशा पैदा हुआ। क्या कहीं... मेरा दिमाग़ खौलने लगा। शाम का वक़्त था, अँधेरे में मेरी मा ने मेरे चेहरे की कैफ़ियत न देखी, और बोली—"उसने इक़रार करके पूरा न किया, और तुम्हारे जाने के छः माह बाद बेटी का ब्याह कर दिया।"

मेरा सिर घूमने लगा। आँखों के सामने शाम के वक़्त आधीरात का अँधेरा छा गया। अब मेरे लिये दुनिया में कोई कशिश, कोई रंगीनी न थी। मैं कैसा बद-क़िस्मत था ! मैंने बाज़ी जीतकर हार दी। मुझे नासिरअली पर ग़ुस्सा था; मगर इससे भी ज़्यादा ग़ुस्सा जहानआरा पर था। मैंने सर्द आह भरी, और पूछा—"जहानआरा का क्या हाल है ?"

मा—"उस बद-नसीब का हाल क्या बताऊँ ! जब तक ब्याही रही, उसके होठों पर किसी ने हँसी नहीं देखी, हर घड़ी रोती रहती थी। आख़िर आज उसके दुखों का ख़ातमा हो गया। तुम्हारा बाप और हलीम उसी के जनाज़े के साथ गए हैं।"

मैं जहाँ बैठा था, वहीं बैठा रह गया। पहले बाज़ी हारी थी, अब उम्मीद भी हार गया। मेरे मुँह से कोई आवाज़ न निकली, न आँख से पानी निकला; मगर दिल में आग लग गई। मैं जोश से उठ खड़ा हुआ। मा की ममता रोकती ही रह गई; मगर मेरे पागलपन के कान न थे। थोड़ी देर बाद मैं क़ब्रस्तान में जहानआरा की क़ब्र उखाड़ रहा था। अब मैं ख़ुद नहीं बता सकता कि उस वक़्त मेरे सिर पर कौन-सा भूत सवार था, न मुझे मालूम था कि मैं क्या कर रहा हूँ। दीन-दुनिया से बेख़बर, क़ानून-इख़लाक़ से बेपरवा। रात के अँधेरे में एक पागल क़ब्र खोद रहा था, और उसे देखनेवाला सिवा आसमान के तारों के और कोई न था।

मैंने लाश बाहर निकाली, उसका मुँह चूमकर कहा—"जहानआरा ! तूने यह बेवफ़ाई क्यों की ? तूने तो मुझसे वादा किया था कि तुम्हारा रास्ता देखूँगी ? अब वह प्यार-मुहब्बत के क़ौल-क़रार क्या हुए ? देख, तेरा प्यारा इक़बाल रुपया कमाकर लाया है। मगर तू यहाँ अँधेरे में आ लेटी है।"

यकायक मुझे लाश में हरकत-सी मालूम हुई। मैंने सीने पर हाथ रखकर देखा, वह गर्म था, नब्ज़ टटोली, वह चल रही थी। मैं डर गया। मौत से पागल भी डरता है। मैंने लाश को ज़मीन पर रख दिया, और आप दूर भाग गया। सरकस-कंपनी में शेरों के साथ हँस-हँसकर खेलनेवाला बहादुर इस वक़्त एक औरत की लाश से डर रहा था। हम ज़िंदों की निसबत मुर्दों से कहीं ज़्यादा डरते हैं। इतने में जैसे तारीकी में बिजली कौंद गई। ख़याल आया, मुमकिन है, इसके दिल की हरकत थोड़ी देर के लिये बंद हो गई हो, मरी न हो, और अब फिर वह हरकत शुरू हो गई हो। हिकमत की किताबों में ऐसे बीमारों का ज़िकर आया है। अब मेरी ख़ुशी का ठिकाना न था। मैंने जल्दी से आगे बढ़कर जहानआरा को गोद में उठाया, और सड़क पर आकर खड़ा हो गया। इतने में उधर से एक मोटर गुज़री, मेरी मुशकिल हल हो गई। चंद दिन के बाद मैं और जहानआरा काबुल चले गए।

(८)

राहतहुसैन—

जहानआरा की मौत एक ऐसा दिल-ख़राश हादिसा है, जिसने मेरी ज़िंदगी तबाह कर दी है। दुनिया में सब कुछ है, मगर मेरे लिये कुछ नहीं है। हर घड़ी उसी का हसीन चेहरा आँखों में फिरा करता है। क्या ख़बर थी कि क़ज़ाके-अज़ल इतनी जल्दी उसकी ज़िंदगी पर छापा मार लेगा। सुबह दफ़्तर गया, तो बिलकुल तंदुरुस्त थी; शाम को लौटा, तो घर में वह न थी, उसकी लाश थी। इतना भी तो न हुआ कि मरते वक़्त दो बातें ही कर लूँ। उसके दिल में कोई ग़म था, हर वक़्त सहमी रहती थी; लेकिन मेरे सामने अपना ग़म उसने कभी ज़ाहिर नहीं किया। ऐसी वफ़ा-शुआर, ऐसी नेकनीयत, ऐसी ख़ूबसूरत औरत और कहाँ पाऊँगा ? जब याद आती है, आँखों में आँसू आ जाते हैं। अलबत्ता उसकी बेटी इसमतआरा को देखकर दिल बहल जाता है। वह न सही, उसकी निशानी ही सही। यही बहुत है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१९२० का सन् हिंदोस्तान की तारीख़ में ख़ास साल है। यह वह साल है, जब हिंदोस्तान के मुसलमानों में हिजरत की तहरीक शुरू हुई। हज़ारों मुसलमान अपना वतन छोड़कर अफ़ग़ानिस्तान चले गए। मैं पहले ही रंजीदा था, नौकरी छोड़ दी, और हिजरत की तैयारियाँ करने लगा। ख़ानसाहब को मुझसे बहुत मुहब्बत हो गई थी। मेरा इरादा सुनकर उनके होश-हवास उड़ गए। कई दिन तक समझाते रहे कि यह जोश सोडावाटर का उबाल है। तुमको क्या हो गया? भले-चंगे बैठो, ख़ुदा जाने, वहाँ कैसी पटे, कैसी न पटे। होशमंद आदमी ऐसी ग़लती कभी नहीं करते। बुढ़ापे में जहानआरा की मौत ने कमर तोड़ दी है, और कोई लड़का है, न लड़की। अब तुम भी छोड़ जाओगे, तो हम बे-मौत मर जायँगे। और कुछ नहीं, तो इसमतआरा का ही ख़याल करो, परदेस में जाकर उदास हो जायगी।

मगर जब मेरे इरादे में ज़रा फ़र्क़ न आया, तो हारकर वह भी तैयार हो गए। शहर में शोर मच गया, लोग हैरान रह गए। उनको कभी ख़याल भी न हो सकता था, ख़ानसाहब-जैसा चापलूस और पस्त-हिम्मत आदमी भी हिजरत-जैसी तहरीक में शरीक हो जायगा। लेकिन असली राज़ की किसी को भी ख़बर न थी। रुपयों का माल कौड़ियों में निकल गया; पर हमने परवा न की, और काबुल जा बसे। वहाँ सैकड़ों हिंदोस्तानी थे। उनको उम्मीद थी कि हुकूमत हमें सिर-आँखों पर उठा लेगी। हुकूमत ने उनकी मेहमान-नवाज़ी की; मगर महाजनों का इतमीनान न हुआ। अलबत्ता हमारे साथ ख़ास सुलूक रक्खा गया। दौलत घर में भी काम आती है, बाहर भी। ग़रीब को कोई भी नहीं पूछता।

वहाँ रहते हुए अभी तीन या चार ही महीने गुज़रे थे कि एक दिन क़ुदरत का हैरतअंगेज़ करश्मा देखने में आया। शाम हो गई थी, मैं असमतआरा के लिये मिठाई लिए घर को लौट रहा था। एक मकान की खिड़की में एक चेहरा दिखाई दिया। मैं चौंक पड़ा। मेरे बदन का बाल-बाल काँप गया—यह जहानआरा का चेहरा था, वही रंग, वही आँखें, वही नक़्श-निगार। उसने मुझे देखा, और फ़ौरन् ही पीछे हट गई। मगर मेरे पाँव वहीं गड़ गए। दिमाग़ मानता न था, अक़्ल तस्लीम न करती थी। वह मर चुकी थी। मेरे सामने दफ़न हुई। मैंने अपने हाथ से मिट्टी दी। रावलपिंडी में आज भी उसकी क़ब्र पर पक्की क़ब्र बनी है, और यह इस जगह ज़िंदा मौजूद है। नहीं मुझे मुग़ालता हुआ है। यह वह न होगी, उसकी कोई हमशक्ल होगी। मैं घर लौट गया; मगर इस वाक़ये का ख़याल ज़हन से न उतरा। सारी रात परेशान रहा, ज़रा नींद न आई। दूसरे दिन मैं फिर उधर से गुज़रा; लेकिन आज झरोका बंद था। मैंने कई चक्कर काटे; मगर झरोका मेरी क़िस्मत की तरह बंद था। मेरा शुबह बढ़ने लगा। शायद सचमुच जहानआरा हो, जो मुझे देखकर चौंक पड़ी थी। उसका रंग बदल गया था। उसके मुँह से, याद पड़ता है, हलकी-सी चीख़ भी निकल गई थी। कपड़े भी पंजाबियों के थे, अफ़ग़ानों के न थे। फिर ख़याल आता, तेरा दिमाग़ चल गया है, वर्ना तुझे यह ख़याल भी न आता। मुहब्बत ने तेरी निगाहों को धोका दिया है, जैसे सहरा में प्यासे हिरन को रेत के जलते हुए थालों में सर्द पानी का चश्मा नज़र आवे। जहानआरा तेरे घर में मरी, तेरे सामने मरी, और आज तू कहता है, वह ज़िंदा है। यह जनून नहीं, तो और क्या है? दिमाग़ का इलाज कर।

चंद दिन इसी ज़हनी कशमकश में गुज़रे। इसके बाद एक दिन फिर वह झरोका खुला, और मैंने उसे देखा। वह शायद किसी की राह देख रही थी। उसे मालूम न था कि कोई मुझे देख रहा है। मैं उसे जितना देखता था, मेरा शुबहा बढ़ता जाता था। यकायक मेरी आँखें उसकी तरफ़ उठ गईं। ख़ौफ़, हैरत और शर्मिंदगी की ग़ैर-मामूल लहर-सी पैदा हुई, और वह बिजली की तेज़ी से पीछे हट गई। अब मुझे यक़ीन हो गया कि यह वही है, कोई दूसरी नहीं। मैं एक दूकानदार के पास गया, और उससे पूछा—"क्यों बिरादर! यह मकान किसका है?"

दूकानदार ने मुझे सिर से पाँव तक देखा, और फिर बोला—"तेरा हिंदोस्तानी भाई है, रावलपिंडी का रहनेवाला। मुहम्मद-इक़बाल या हसन-इक़बाल नाम है।"

(९)

अब शक की ज़रा भी गुंजायश न थी। मैंने उसी वक़्त जाकर ख़ानसाहब से कहा—"एक अजीब ख़बर सुनाऊँ।"

ख़ानसाहब—"ज़रूर सुनाओ।"

मैं—"आप हैरान रह जायँगे।"

ख़ानसाहब—"ऐसी ख़बर है वह?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

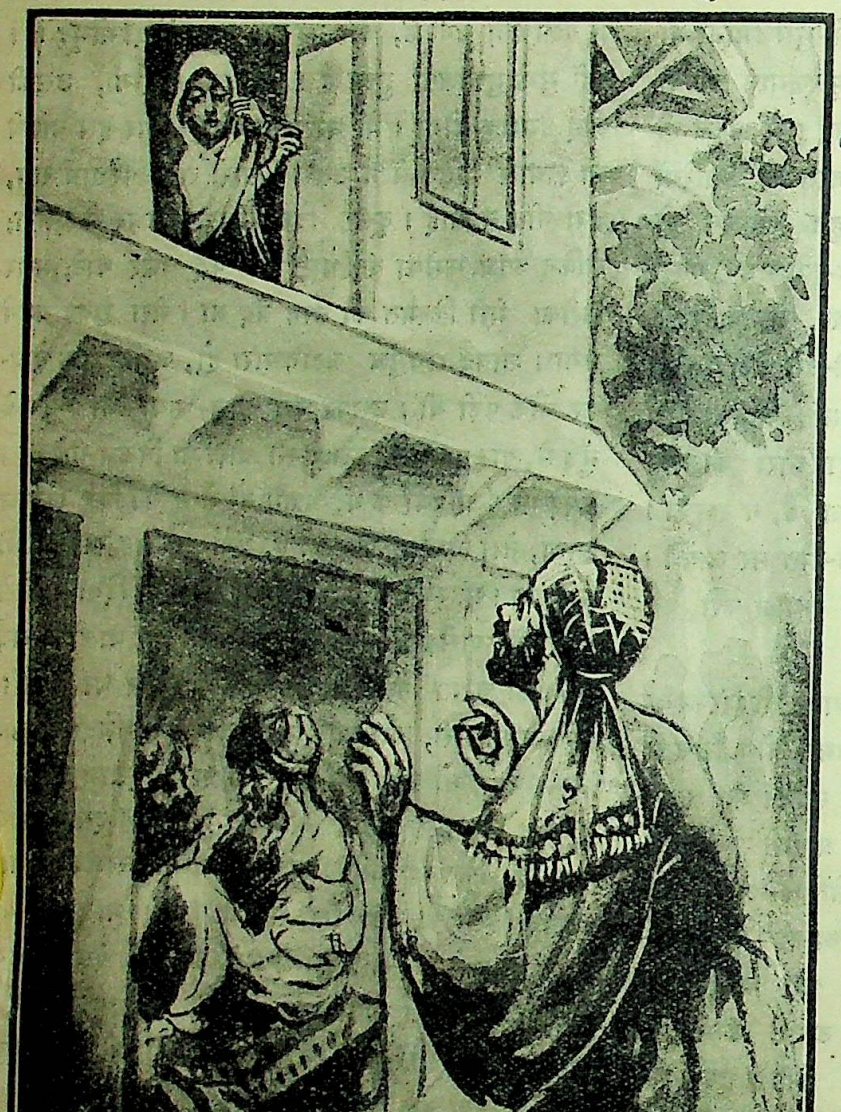

"वह शायद किसी की राह देख रही थी।.....यकाएक मेरी आँखें उसकी तरफ़ उठ गईं।"

मैं—"आप यक़ीन ही न करेंगे। कहेंगे, तुम पागल हो गए हो।"

ख़ानसाहब—"अच्छा! तो तमहीद रहने दो, पहले ख़बर सुनाओ।"

मैं—"मुझे अंदेशा है, आप बाबर न करेंगे।"

ख़ानसाहब—"अरे भई, बात क्या है, कुछ कहो तो सही।"

मैं—"जहानआरा ज़िंदा है।"

ख़ानसाहब चौंककर खड़े हो गए। उनको यक़ीन हो गया कि यह पागल हो चुका है। मेरी तरफ़ आँखें फाड़-फाड़कर देखने लगे।

मैं—"ख़ुदाए-बरतर की क़सम मैंने उसे अपनी आँखों से देखा है।"

ख़ानसाहब—"अरे मियाँ! मुर्दे क़यामत से पहले कभी न उठेंगे।"

मैं—"मगर वह ज़िंदा है।"

ख़ानसाहब—"मालूम होता है, तुम्हारा सिर फिर गया है।"

मैं—"अगर आप देख लें, तो आपका सिर भी फिर जाय।"

ख़ानसाहब—"मैंने अपने हाथ से दफ़न किया, तुम्हारी बात कैसे मान लूँ? तुमने ख़्वाब तो नहीं देखा है? कहाँ से आ रहे हो?"

मैं—"बाज़ार से आ रहा हूँ। आह, ज़रा मेरी आँखें देखिए, पागल नहीं हूँ।"

ख़ानसाहब—'मगर तुम्हारी बातें पागलों से भी बढ़कर हैं, जानते हो, क्या कह रहे हो?"

मैं—"ख़ूब जानता हूँ।"

ख़ानसाहब—"क्या?"

मैं—"यह कि जहानआरा ज़िंदा है, और उसे मैंने अपनी इन दोनों आँखों से, अभी आधघंटे से ज़्यादा नहीं गुज़रा, देखा है। रावलपिंडी के किसी मुहम्मद इक़बाल या हसन-इक़बाल के पास है।"

ख़ानसाहब चौंक पड़े—"हसन इक़बाल! वही हमारे पड़ोसी रहीमबख़्श का बेटा!"

मैं—"यह ख़ुदा जाने! नाम कुछ ऐसा ही है।"

ख़ानसाहब किसी गहरे ख़याल में ग़र्क़ हो गए। मैंने कहा—"मेरी राय में वह मरी न थी, यह गहरी चाल थी। क्या अजब कोई दवा देकर बेहोश कर दिया गया हो, और दफ़न होने के बाद फ़ौरन् उड़ा लिया गया हो।"

ख़ानसाहब—"यह तो अलिफ़लैला के क़िस्सों की-सी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बात है। मगर मुझे अब भी यक़ीन नहीं आता। वह कोई उसकी हमशक्ल होगी। तुमने दूर से देखा है।"

मैं—"अपने दूर ही से पहचाने जाते हैं। मुझे ज़रा भी शुबह नहीं। एक दिन पहले भी देखा था; मगर आज तो पूरा यक़ीन हो गया। आख़िर उसके चेहरे का रंग क्यों उड़ गया? ज़रूर वही है।"

ख़ानसाहब—"(सोच-सोचकर) बड़े ही ताज्जुब का मामला है।"

मैं—"अब आपकी क्या राय है?"

ख़ानसाहब—"मैं क्या कहूँ? मेरी तो अक़्ल काम नहीं करती! मगर जहानआरा ऐसी लड़की न थी।"

मैं—"क़ाज़ी साहब के पास जाऊँ। जैसा कहेंगे, वैसा करूँगा।"

ख़ानसाहब ने ठंडी आह भरी, और हवा में देखने लगे।

(१०)

मैं भागाभाग क़ाज़ी साहब के मकान पर पहुँचा। वह बहुत हमदर्दी से पेश आए। हिंदोस्तानी हाकिमों में ऐसी मुहब्बत और ख़ुलूसदिली मैंने कम देखी है। मेरा क़िस्सा सुनकर उनको भी हैरानी हुई। बहुत देर सोचते रहे, इसके बाद बोले—"नामूस का सवाल है। मैं नहीं चाहता कि यह मुक़दमा खुली अदालत में पेश हो, बड़ी बदनामी होगी। अगर तुम चाहो, तो घर पर बुलाकर फ़ैसला कर दिया जाय। तुम्हारी क्या राय है?"

मैंने सिर झुकाकर जवाब दिया—"आपका ख़याल बजा है।"

क़ाज़ी साहब ने पहले ख़ानसाहब और उनकी बीबी को बुलाकर एक कमरे में बिठा दिया। इसके बाद हसन-इक़बाल और उसकी बीबी के लिये आदमी भेजे।

थोड़ी देर बाद दोनों आ गए। हसन-इक़बाल निहायत ख़ूबसूरत और ख़ुशवज़ा नौजवान था। चेहरे से शराफ़त टपकती थी। उस पर किसी साज़िश का गुमान भी न होता था। उसने तपाक से हम दोनों को सलाम किया, और बैठ गया। औरत बुर्क़ा ओढ़े हुए थी। वह सिमटकर एक कोने में बैठ गई।

क़ाज़ी साहब ने कहा—"यह साहब कहते हैं, यह ख़ातून मेरी बीबी हैं। आपके पास इसका क्या जवाब है?"

हसन-इक़बाल के चेहरे पर ख़फ़गी के आसार ज़ाहिर हुए। उसने मेरी तरफ़ ऐसी निगाहों से देखा, जिनका मतलब यह था कि तुम्हें यह हिम्मत कैसे हो गई? इसके बाद क़ाज़ी साहब से कहा—"बिलकुल नहीं, यह एक शरीफ़ मुसलमान और उसकी बीबी की बदतरीन तौहीन है, और मुझे अफ़सोस है कि यह तौहीन करनेवाला एक मुसलमान है।"

मैं घबरा गया। हसन-इक़बाल ऐसी दिलेरी से जवाब देगा, यह मुझे ख़याल न था। मगर क़ाज़ी साहब ने इसकी परवा न की, और उस औरत से पूछा—"क्यों बेटी, क्या मामला है?"

औरत ने मुँह से जवाब न दिया, सिर्फ़ सिर हिला दिया।

क़ाज़ी साहब फिर बोले—"जवाब दो।"

आहिस्ता से एक बारीक आवाज़ आई—"मैं इनको नहीं जानती, यह कौन हैं।"

आवाज़ बारीक थी; मगर मैंने पहचान ली। यह वही थी। आदमी शक्ल बदल सकता है; मगर आवाज़ नहीं बदली जा सकती। मेरे बदन से पसीना छूटने लगा। मैंने जोश से चिल्लाकर कहा—"क़ाज़ी साहब! मेरा ख़ुदा गवाह है, यह वही है। मैं आवाज़ पहचानता हूँ।"

क़ाज़ी साहब—"मगर कोई सुबूत! दोनों इनकार करते हैं।"

मैं—"(औरत से) क्या तुम जहानआरा नहीं हो? क्यों झूठ बोलती हो?"

औरत—"(जल्दी से) मैं तो रूहा हूँ। जहानआरा नहीं।"

क़ाज़ी साहब—"बुर्क़ा उतार दो। अभी मालूम हुआ जाता है।"

हसन-इक़बाल के चेहरे पर हवाइयाँ छूटने लगीं। घबराकर बोला—"क़ाज़ी साहब! एक शरीफ़ की औरत किसी ग़ैर मर्द के सामने मुँह कैसे खोलेगी?"

क़ाज़ी साहब—"मैं मजबूर हूँ। बुर्क़ा उतारना होगा।"

औरत ने बुर्क़ा उतार दिया, मैं चौंककर पीछे हट गया। अब ज़रा भी शक न था, यह वही थी। वही जहान-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आरा, जो मर चुकी थी, और जिसकी ज़िंदगी का राज़ हमारी समझ से बाहर था। पर उसके चेहरे पर कोई घबराहट न थी। औरत ऐसे मौक़े पर अपने दिल पर ऐसा क़ाबू रख सकती है, यह मेरे लिये नया तजुर्बा था। मैं समझता था, बुर्क़ा उतरते ही राज़ फ़ाश हो जायगा। जहानआरा मेरे सामने सिर न उठा सकेगी। मगर ऐसा न हुआ। वह मेरी तरफ़ देख रही थी, और इस तरह, जैसे वह मुझे जानती भी न हो। मेरा दिल धड़कने लगा। क्या मैंने दो साल में अपनी औरत को भी नहीं पहचाना?

इस मौक़े पर ख़ानसाहब बाहर आ गए। वह रो रहे थे। उनकी दाढ़ी उनके आँसुओं से तर थी। उन्होंने आगे बढ़कर उसके सिर पर हाथ रख दिया, और कहा—"बेटी! तू जहान-आरा है। झूठ न बोल, हम तेरी ख़ता माफ़ कर देंगे। यह राज़ हम नहीं जानते। लेकिन तू मेरी बेटी है। तू बाप की आँखों को धोका नहीं दे सकती। वह देख, तेरी मा है, जो रो-रोकर आधी भी नहीं रही।"

औरत ने पहले ख़ानसाहब की तरफ़ देखा, फिर उनकी बीबी की तरफ़, और इसके बाद मिन्नतें करके बोली—"ख़ुदा के लिये मुझे पागल न कर दो। मैं तुम्हारी बेटी हूँ, मगर जहानआरा नहीं।"

और, उसके चेहरे पर इस वक़्त भी कोई जज़्बा न था। अब मुझे भी शुबह होने लगा कि शायद यह जहानआरा न हो, कोई और ही हो। मैं अपनी जल्दबाज़ी और हिमाक़त पर पछता रहा था, और न जानता था कि उनसे किन लफ़्ज़ों में माफ़ी माँगूँ?

इसमतआरा नई जगह और नए आदमियों को देखकर कुछ सहम-सी गई थी, इसलिये नानी के पीछे छिपी खड़ी थी। ख़ानसाहब और उनकी बीबी को रोते देखकर वह आगे बढ़ी। शायद सोचती हो कि यह रोते हैं, मैं चुप करा दूँगी। इतने में उसकी निगाह उस औरत के चेहरे पर पड़ी, जिसे हम सब जहानआरा समझ रहे थे। इसमतआरा वहीं रुक गई। उसने बड़े ग़ौर से उसकी तरफ़ देखना शुरू किया। तब उसकी आँखों में एक ग़ैरमामूली चमक पैदा हो गई। उसका चेहरा ख़ुशी से तमतमाने लगा। उसने अपने माथे पर बिखरे हुए लंबे बालों को हाथ से पीछे हटाया, और लपककर उसकी तरफ़ बढ़ी।

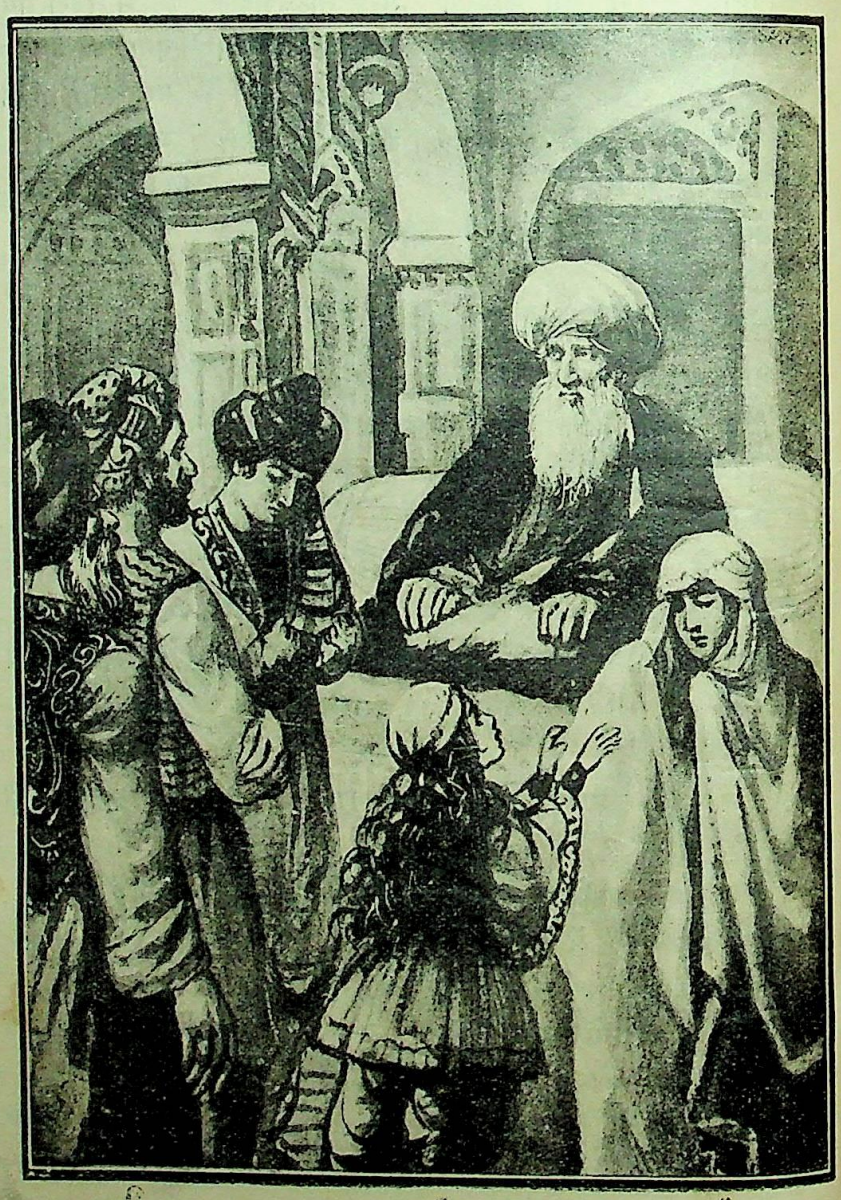

"उसने अपने माथे पर बिखरे हुए लंबे बालों को हाथ से पीछे हटाया और लपककर उसकी तरफ़ बढ़ी।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अब उस औरत से ज़ब्त न हो सका। देखते-देखते उसके चेहरे पर सुर्ख़ी दौड़ गई, और आँखों से आँसू बहने लगे। जैसे किसी ने पानी का 'बाँध' खोल दिया हो। उसने इसमत को उठाकर गले से लगा लिया, और उसके मुँह को, गालों को, आँखों को, सिर के बालों को चूमने लगी। इसमत मा के वहशियाना प्यार से घबरा गई, और उसके मुँह को अपने नन्हे-नन्हे हाथों से पकड़कर अलग हटाने की कोशिश करने लगी।

क़ाज़ी साहब मा की मुहब्बत का यह पाक नज़ारा देखकर बहुत मुतासर हुए, और भर्राई हुई आवाज़ में बोले—"जिस सचाई को हम मालूम न कर सके थे, वह इस लड़की ने कर ली। अल्लाहतआला का शुक्र है कि मेरी छत तले बेइंसाफ़ी का फ़ैसला नहीं हुआ, वर्ना क़यामत के रोज़ मेरा दामन मज़लूमों के हाथ में होता।"

(११)

हसन-इक़बाल—

अब हमारे लिये सिवा इक़बाल-जुर्म के कोई रास्ता न था। जहानआरा को मैंने जैसा समझाया था, उसने वैसा ही किया। उसने शौहर की तेज़ निगाहों का मुक़ाबिला किया, और झिझकी नहीं। उसने मा-बाप की आँखों के आँसू देखे, और अपने आपको सँभाले रही। मगर बेटी को देखकर बेक़ाबू हो गई। वह अब रो रही थी। क़ाज़ी साहब सब कुछ समझ गए। उन्होंने मेरी तरफ़ क़हर-भरी निगाहों से देखा, और कहा—"ख़ुदा ने फ़ैसला कर दिया कि तू झूठा है, और उसका इलज़ाम ठीक है। अब ख़ुदा और उसके ग़ज़ब से डर, और जो कुछ बीती है, साफ़-साफ़ कह दे।"

मैं इनकार न कर सका। मैंने तमाम वाक़यात सिलसिलेवार बयान कर दिए, और आख़िर में कहा—"क़ाज़ी साहब! मा-बाप, शौहर और दुनिया के लिये यह मर चुकी। उन्होंने इसे दबा दिया था, वह इसका मातम कर चुके थे। अगर मैं जुनून की हालत में जाकर क़ब्र न उखाड़ लेता, तो यह दुनिया की हवा और रोशनी में कभी साँस न ले सकती। इसे मैंने ज़िंदा किया है। लाश इनकी थी, ज़िंदा जहानआरा पर मेरा हक़ है।"

मगर क़ाज़ी साहब ने सिर के इशारे से कहा—"नहीं।"

मैं—"तो अब मुझे एक बात और कहना है। जब यह होश में आई, तो मुझे देखकर बहुत घबराई। यह मुझे चाहती थी, मेरे आने की ख़बर सुनकर ही इसके दिल की धड़कन बंद हो गई थी। मगर इसके बावजूद कहती थी, मेरे लिये दुनिया तुम्हारे वजूद से ख़ाली है, मेरा निकाह हो चुका है, और मेरा शौहर ज़िंदा है। लेकिन इसके साथ ही शौहर के यहाँ जाते हुए उसकी रूह काँपती थी। उसका दिल एक तरफ़ जाता था, दिमाग़ दूसरी तरफ़। वह बैज़बज़ब में थी। उसे दोनों तरफ़ तबाही नज़र आती थी, एक तरफ़ दीन की, दूसरी तरफ़ दुनिया की। आख़िर हमने फ़ैसला किया, वह मेरे पास रहे, मगर हम अपने आपे से बाहर कभी न हों। मैं ख़ुदा की और उसके रसूलपाक की क़सम खाकर कह सकता हूँ कि हम आज तक अपने इक़रार पर क़ायम हैं, और जहानआरा आज भी वैसी ही पाक-साफ़ है, जैसी क़ब्र में थी।"

मेरी तक़रीर सुनकर सबके चेहरे ख़ुशी से चमकने लगे, जैसे दिल का बोझ हलका हो गया हो। क़ाज़ी साहब ने इतमीनान की साँस लेकर कहा—"तू गुनाहगार है, मगर तू फ़रिश्ता है। किसी की क़ब्र उखाड़ना शरियत की रू से गुनाह है, और इसकी सज़ा बड़ी सख़्त है। लेकिन चूँकि तू जनून की हालत में था, और इससे एक औरत की ज़िंदगी बच गई है, इसलिये मैं इससे दरगुज़र करता हूँ। मगर तुझे औरत नहीं मिल सकती। यह इनकी है (राहतहुसैन की तरफ़ इशारा करके) इनको मिलेगी।"

ख़ानसाहब और राहतहुसैन ने मेरी मदद और शराफ़त का शुकरिया अदा किया, और जहानआरा को अपने साथ ले गए। उसके क़दम सुस्त थे, मगर वह जा रही थी, उसी दुनिया में, जहाँ फ़र्ज़ की पाबंदियाँ थीं; पर मुहब्बत की रोशनी न थी। मैं देखता रह गया। कितनी दूर भागकर आए थे, मगर बद-क़िस्मती ने यहाँ भी पीछा न छोड़ा।

वह अब राहतहुसैन की थी। मेरा उससे कोई वास्ता न था। मगर मेरे दिल ने न माना, और मैं उनके पीछे-पीछे चला, जैसे साया जिस्म के साथ रहता है। यहाँ तक कि वे अपने मकान के पास पहुँच गए। मैंने ठंडी आह भरी, और वापस मुड़ा। अँधेरे में साया भी साथ छोड़ देता है। यकायक मुझे कुछ शोर-सा सुनाई दिया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मैंने पीछे मुड़कर देखा, जहानआरा दर्वाज़े में गिर पड़ी थी, और राहतहुसैन उसके ऊपर झुककर उसे सँभाल रहा था।

मैं दौड़कर उनके क़रीब चला गया, और घबराकर बोला—"क्यों, क्या हुआ?"

राहतहुसैन—"इक़बाल! दौड़कर किसी हकीम को बुलाओ। जहानआरा बेहोश हो गई है।"

हकीम ने आकर देखा, और मायूसी से सिर हिला दिया। जहानआरा मर गई, मगर उसने दीन और दुनिया, दोनों बचा लिए। लड़की रोती थी, मा का पता न था।

राहतहुसैन ने मुझसे मुख़ातिब होकर कहा—"तुमने लाश ली थी, लाश ही दी। तुमने कहा था, इसका हक़ जहानआरा पर नहीं, जहानआरा की लाश पर है, तुम्हारा कहा पूरा हो गया।"

मैंने सिर झुका लिया, और आँखों के आँसू पोछने लगा।

सोलन की पहाड़ी

[लेखक, श्रीयुत शिवनारायण टंडन]

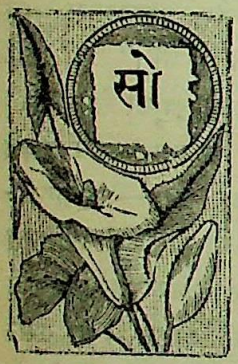

लन कालका-स्टेशन से २७ और शिमले के शैल-शिखर से ३१ मील दूर है। कहना चाहिए कि सोलन कालका और शिमला के बीच का मध्यस्थल है। मेरे ज्येष्ठ भाई लगातार कई महीनों से ज्वर एवं क्रूप के प्रकोप से पीड़ित रहा करते थे। ग्रीष्म-ऋतु का आगमन देख चिकित्सकों ने वायु-परिवर्तन का परामर्श दिया। उसी परामर्श के अनुसार बहुत छान-बीन के पश्चात् सोलन जाना निश्चित हुआ। सोलन का जल-वायु शुष्क एवं ज्वर के रोगियों के लिये विशेष स्वास्थ्यप्रद बतलाया गया। रुग्ण भाई के साथ लेखक को भी वहाँ जाने का संयोग प्राप्त हुआ। आजकल हमारा देश रोगों का अड्डा-सा बन गया है; क्षय, दमा और ज्वर का भरपूर दौर-दौरा रहा करता है। पाचन-शक्ति की शिकायत तो प्रायः नगरों में रहनेवाले ९० प्रति शत लोगों को रहती है। वैसे तो शहरों का गंदा वायुमंडल त्याग कर ग्राम-निवास करना ही हित-साधक सिद्ध होता है, पर इन स्थितियों में समुद्री तट की अथवा पहाड़ की आब-हवा ही विशेष लाभप्रद सिद्ध होती है। बहुत-से पहाड़ी प्रदेश अतिवृष्टि के कारण बहुत सर्द होते हैं; वहाँ पर रोगाक्रांत मनुष्य की तो बात ही दूर रही, स्वस्थ पुरुष भी सुस्थ नहीं रह सकता। कुछ दूसरे प्रदेश ऐसे हैं, जो अनावृष्टि के कारण तपा करते हैं। कहने का तात्पर्य यह कि ऐसे स्थानों में रहने से लाभ की अपेक्षा हानि की ही विशेष संभावना रहती है। अतएव ये दोनों ही त्याज्य हैं। सोलन वास्तव में एक उत्तम स्थान है। वहाँ जाकर लोग लाभ उठा सकते हैं। इस लेख में सोलन और सोलन के आसपास के उल्लेखनीय स्थानों का उल्लेख किया जायगा।

मैं ता० ३० जून को पंजाब-मेल से कानपुर से रवाना होकर दूसरे दिन प्रातःकाल ठीक ७½ बजे कालका-स्टेशन पर पहुँच गया। डाकगाड़ी रास्ते में कहीं बदलती नहीं, कलकत्ते से सीधे भक-भक करती हुई कालका चली जाती है। सोलन अथवा शिमला जाने के लिये यह गाड़ी कलकत्ता, पटना, बनारस, प्रयाग, कानपुर अथवा देहलीवालों के लिये बड़े सुबीते की है। कालका किसी ज़माने में वाणिज्य का प्रमुख केंद्र था। फ़ारस, अफ़ग़ानिस्तान और सीमाप्रांत के लोग फल, मेवा और ऊनी वस्त्र ऊँटों में लादकर बेचने के लिये यहाँ लाया करते थे, उनके कारवाँ कालका ही में उतरा करते थे; कालका में इन सबकी बड़ी भारी मंडी लगा करती थी। लौटते समय लोग यहाँ से सूत, कपास और नाज वग़ैरह ले जाया करते थे। इस तरह कालका आवागमन का एक मुख्य केंद्र था। पर जब से रेलवे-लाइन बनी और उसका विस्तार शिमला तक हो गया है, कालका के व्यवसाय को बड़ा धक्का पहुँचा है। कालका ही से पहाड़ी प्रदेश में जाने के लिये टट्टू, ताँगे वग़ैरह सवारियाँ मिला करती थीं। रेल के कारण अब उनका भी चलन बहुत कुछ बंद हो गया है। आने-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

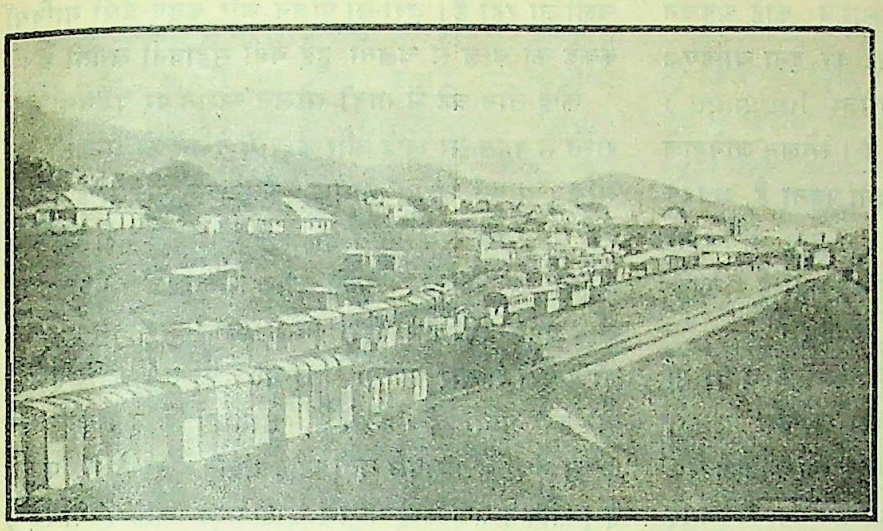

कालका-स्टेशन का दृश्य

वाले यात्री एक गाड़ी से उतरकर दूसरी गाड़ी में सवार हो जाते हैं। पाठकों को एक बात बतला देना आवश्यक जान पड़ता है कि कालका-जैसे प्रसिद्ध स्टेशन में क़ुली पर्याप्त संख्या में नहीं हैं, जिससे कभी-कभी यात्रियों को बड़ी असुविधा उठानी पड़ती है। यदि यात्री गाड़ी के रुकते ही तत्काल क़ुली लाने का प्रबंध न कर लें, तो प्रायः उन्हें शिमला जानेवाली गाड़ी से हाथ धोना पड़ता है। हाँ, इतना अवश्य है कि कालका से शिमला के लिये दो-दो तीन-तीन घंटे बाद लोकल गाड़ियाँ छूटा करती हैं, जिससे विशेष असुविधा नहीं होती। अगर भीड़ ज़्यादा हुई, तो स्पेशल ट्रेनों के छोड़ने का प्रबंध भी प्रायः हो जाया करता है। इस बात का विशेष प्रबंध रक्खा गया है कि कोई भी यात्री, चाहे जिस किसी दर्जे का हो, रात को वहाँ नहीं पड़ा रहने पाता। मेरा मतलब शिमला की ओर जानेवाले यात्रियों से है। ऐसे अवसर पर एक ही डब्बा (बोगी) लगाकर यात्रियों को शिमले पहुँचा दिया जाता है। इस प्रबंध के लिये रेलवे-अधिकारी धन्यवाद के पात्र हैं।

कालका में सामान तौलने की असुविधा

कालका-शिमला-रेलवे की गाड़ियाँ बहुत छोटी होती हैं। रेलवे-लाइन भी बहुत कम चौड़ी बनाई गई है, और वैसे ही गाड़ियों का आकार-प्रकार भी छोटा है। यात्री अपने साथ गाड़ी में सामान रखकर नहीं ले जाने पाते; केवल मामूली चीज़ें—जैसे, छाता, छड़ी, हैंडबैग, पोटली वग़ैरह—साथ रख सकते हैं। बिस्तरा तक ब्रेक में दे देना पड़ता है। कालका में सब सामान तौला लेना पड़ता है। तौलने के लिये इतने बड़े स्टेशन पर केवल एक ही बड़ा काँटा है, और दो क्लर्क, जिसके कारण मुसाफ़िरों को माल तौलाने में बड़ी असुविधा होती है। और स्टेशनों की तरह यहाँ भी काले और गोरे का भेद पाया जाता है। हमारे क्लर्क भाई गौरांग महाप्रभुओं की ओर ख़ास तवज्जह करते हैं। हमेशा उन्हें इस बात का ख़याल रहता है कि कहीं उन्हें कष्ट न मिलने पावे। हिंदोस्तानी चाहे फ़र्स्ट क्लास ही का यात्री क्यों न हो, पर एक अँगरेज़ का, जो चाहे दूसरे दर्जे का यात्री हो चाहे इंटर-क्लास का, उसके मुक़ाबिले ज़्यादा ख़याल किया जाता है। ऐसे मौक़ों पर यात्रियों को दबाना नहीं चाहिए। एक अँगरेज़ और एक हिंदोस्तानी, दोनों ही रेलवे-कंपनी को समान किराया देते हैं; फिर यह भेदभाव क्यों? हिंदोस्तानी को

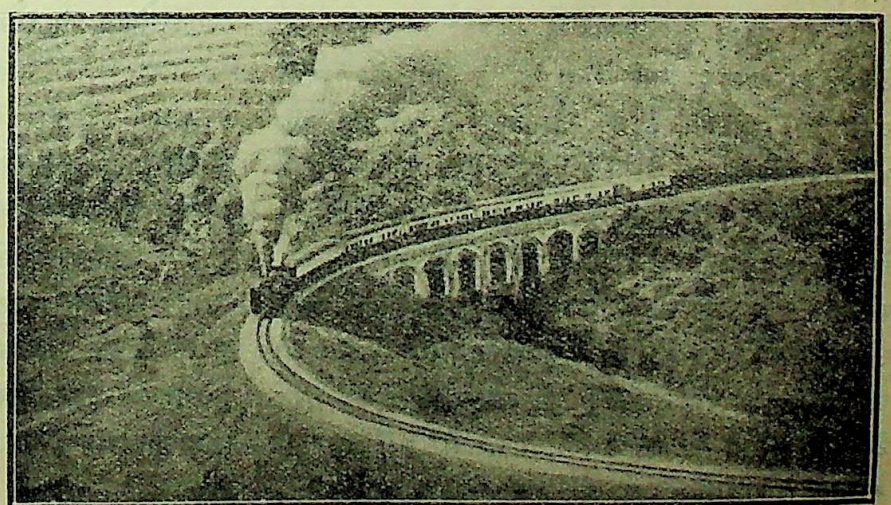

कालका-शिमला-रेलवे का दृश्य

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तकलीफ़ क्यों ? अस्तु, जब यात्री के सामने कोई अड़चन आवे, तब उसे स्टेशन-मास्टर से रिपोर्ट कर देना चाहिए। एक बात तो कहना ही भूल गया। लगेज(luggage) का महसूल बहुत ज़्यादा रक्खा गया है। सोलन जानेवाले यात्रियों को १॥) मन के हिसाब से देना पड़ता है, जब कि सोलन कालका से सिर्फ़ २७ मील है। अतः लगेज पर डेढ़ रुपए मन का महसूल बहुत ही ज़्यादा है। रेलवे-अधिकारियों को इस ओर ध्यान देना चाहिए।

अब आप एक हाथ में हैंडबैग और दूसरे में छाता या छड़ी लेकर गाड़ी के समीप आइए। गाड़ी ठसाठस भरी है, बैठने की जगह मिलना मुश्किल है! दूसरे दरजे की एक सीट रिज़र्व करानेवाले को एक आदमी के बैठने-भर की जगह मिलती है। ऐसा नहीं कि ई० आई० आर० की तरह पूरी सीट रिज़र्व हो सके। गाड़ियाँ बहुत हलकी लकड़ी की बनी हुई हैं। ज़्यादा मोटे-ताज़े आदमी की तो मौत ही समझनी चाहिए; गाड़ी के दरवाज़े के अंदर घुसना मोटे, भारी-भरकमों के लिये दूभर है। ख़ैर, किसी तरह कशमकश से थोड़ी भी जगह बैठने को मिलजाय, तो समझिए, तक़दीर अच्छी है।

देखने लायक़ मार्ग का दृश्य दाहनी ओर है। बाईं ओर रेलवे-लाइन के समीप ही पहाड़ की ऊँची-ऊँची दीवारें खड़ी हैं, अतएव जो लोग दाहनी ओर बैठते हैं, उन्हीं को दृश्यों के देखने का आनंद प्राप्त होता है। निस्संदेह मार्ग बहुत ही रमणीय है। वर्षा-ऋतु में तो यह और भी नयनाभिराम हो जाता है। चारों ओर ऊँचे-नीचे मार्ग हरी पोशाक पहने आकाश-चुंबन करते हुए दिखलाई देते हैं। तरह-तरह के रंग-बिरंगे पक्षी मधुर स्वर से कल-रव करते इधर-उधर उड़ रहे हैं। स्वच्छ निर्मल जल के झरने स्थान-स्थान पर प्रवाहित हो दृश्य की सुंदरता को और भी अधिक मनोरम बना देते हैं। रेलवे-लाइन साँप की तरह टेढ़ी-मेढ़ी घूमती हुई गई है। गाड़ी घंटे में १० मील की रफ़्तार से चलती है; पर बैठे हुए यात्री को ऐसा बोध होता है, जैसे ५० मील प्रति घंटे के हिसाब से गाड़ी उड़ी चली जा रही है। ज़रा-सा एंजिन और कछुए-जैसी गाड़ियाँ केकड़े की चाल से चलती हुई बड़ी सुहावनी लगती हैं।

कोई तीन घंटे में गाड़ी सोलन स्टेशन पर पहुँचती है। रास्ते में बहुत-सी खोहें और कंदराएँ देखने को मिलती हैं। सोलन से पूर्व 'बरोग'-नामक एक स्टेशन मिलता है। यहाँ का प्राकृतिक दृश्य बहुत ही सुहावना है। जल भी और स्थानों से विशेष शीतल और मीठा है। बरोग की खोह बहुत बड़ी है। यहाँ क़रीब तीन-चार मिनट तक गाड़ी पूरी रफ़्तार से दौड़ लगाती है, तब कहीं इसको पार कर पाती है। कहते हैं, भारतवर्ष में इस खोह का दूसरा नंबर है। सबसे बड़ी खोह बंबई के रास्ते में पड़ती है। सोलन तक कोई पचास छोटी-बड़ी खोहें (बोगदे) पड़ती हैं। सोलन का स्टेशन एक खोह से निकलने के बाद ही पड़ता है।

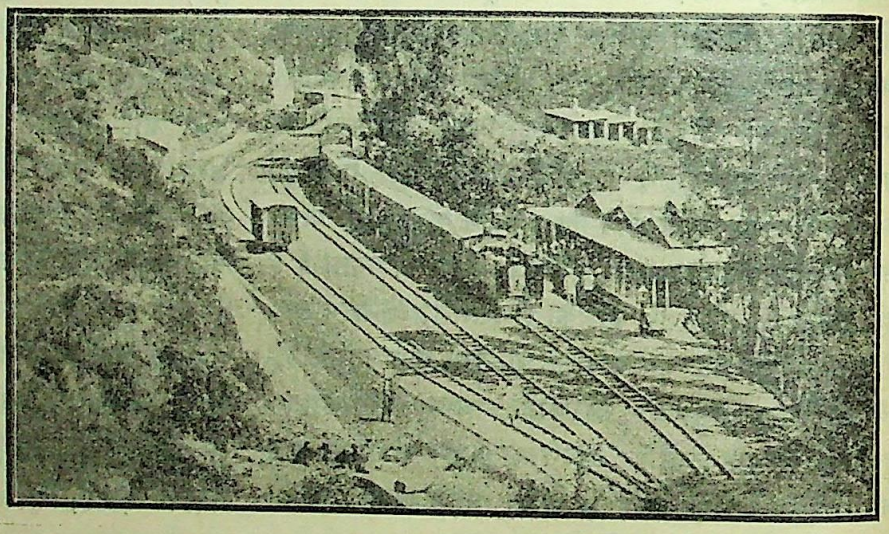

सोलन का स्टेशन

सोलन

सोलन की पहाड़ी समुद्र की सतह से ठीक ४,६०० फ़ीट ऊँची है। स्टेशन से थोड़ी-सी चढ़ाई पार कर यात्री अपने को कालका से शिमला जानेवाली सड़क पर पाता है। यह राजपथ इतना चौड़ा है कि आने-जानेवाली सवारियाँ बराबर गुज़रती रहती हैं। सड़क बहुत ही साफ़-सुथरी, महीन कंकड़ों से बनाई गई है, कीचड़ का कहीं नाम-निशान भी नहीं दिखलाई देता, इसका कारण यह है कि वायसराय प्रायः मोटर द्वारा आया-जाया करते हैं। सड़क ठीक सोलन के बाज़ार से होकर गुज़रती है। आप कोई पंद्रह मिनट चल चुकने के बाद अपने को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सोलन के बाज़ार में पावेंगे। यहाँ का बाज़ार कलकत्ते, बंबई और कानपूर की तरह विशाल अट्टालिकाओं से सुशोभित नहीं है; पर हाँ, छोटे-छोटे पहाड़ी मकानात बाज़ार की रौनक़ बढ़ा रहे हैं। यहाँ प्रायः सभी वस्तुएँ उपलब्ध हो जाती हैं, यद्यपि मूल्य कुछ अवश्य अधिक देना पड़ता है। लेकिन यहाँ पुस्तक-भंडार कोई नहीं है। अगर कोई प्रकाशक या उनका एजेंट ग्रीष्म-ऋतु में चार-पाँच महीनों के लिये यहाँ पुस्तकों की दूकान खोल दिया करे, तो उसको तो अच्छा लाभ होगा ही, साथ-ही-साथ एक बड़े अभाव की भी पूर्ति हो जायगी। आनेवाले यात्रियों का मनोरंजन हो और हिंदी का प्रचार बढ़े! आशा है, कोई महाशय इस अभाव की पूर्ति करने का प्रयत्न करेंगे। पहले एक-दो वर्ष प्रयत्न करके देखा जाय, यदि उसमें कुछ लाभ दिखलाई पड़े, तो उस क्रम को और कुछ न सही तो, अपने लाभ ही के ख़याल से जारी रक्खा जाय। यह बात यों ही प्रसंगवश लिख दी गई है। कारण, लेखक को यह अभाव ऐसे स्थान में बहुत ही खटका है।

आनेवाले यात्री को पहले रहने के सुबीते की तलाश होती है। मेरे एक भाई एक सप्ताह पहले ही आकर एक उत्तम कोठी का प्रबंध कर गए थे, इसलिये हम लोग तो सीधे उसी मकान की ओर चले गए। यहाँ के 'राना' का जिस पहाड़ी टीले पर निवासस्थान है, वही सोलन-भर में सर्वोत्तम है। शहर की गंदी आबादी से अलग होने के कारण वह बहुत ही साफ़-सुथरा है। इस टीले पर सब मिलाकर कोई पंद्रह-बीस कोठियाँ हैं, जिनमें अधिकतर मकान के मालिक ही गरमी में वायु-परिवर्तन के लिये आया करते हैं। हाँ, कुछ किराए पर भी उठती हैं। जो कोठी हम लोगों ने किराए पर ली थी, वह सबसे अंत में एक ऊँचे-से टीले पर बनी है। उसके समीप ही पानी की टंकियाँ हैं, जिनके द्वारा नगर-भर में पानी पहुँचता है। सब मिलाकर ऐसी कोई बीस-पचीस टंकियाँ होंगी। इन टंकियों में बहुत-से झरनों का पानी आ-आकर एकत्रित हुआ करता है, और वही कलों के द्वारा सब स्थानों पर पहुँचा दिया जाता है। टंकियाँ ऊँचे-ऊँचे टीलों पर बनाई गई हैं, जिससे पानी उतार पाकर सरलतापूर्वक यथास्थान स्वतः पहुँच जाता है। पानी पहुँचाने के लिये कल का प्रयोग नहीं किया जाता।

हम लोगों के लिये तो रहने का स्थान, जैसा कि पहले ही लिखा जा चुका है, ठीक हो चुका था। अतएव कुछ कष्ट न हुआ; पर अन्यान्य यात्रियों को रहने के लिये स्थान बहुत समझ-बूझकर और भली भाँति देख-भाल-कर लेना चाहिए। जिन कोठियों में क्षय के रोगियों की मृत्यु हो चुकी हो, उन्हें न लेना चाहिए। स्टेशन पर आपको गयाजी के पंडों की तरह हाउस-एजंटों के दर्शन होंगे। इन एजंटों में 'शालिगराम' और 'गोकुलचंद' विशेष उल्लेखनीय हैं। किराए पर उठनेवाले बँगले प्रायः इन्हीं लोगों की देख-रेख में रहते हैं। तार द्वारा यही लोग आपके मकान पसंद करने पर किराया ठीक करा देते हैं। कोठियाँ आम तौर से सीज़न-भर के लिये ही उठती हैं। मासिक किराए पर कोई देने को राज़ी नहीं होता। तीन सौ, चार सौ, पाँच सौ, आठ सौ रुपए, यही प्रायः सीज़न-भर का किराया है। सीज़न एप्रिल से नवंबर के अंत तक माना जाता है। आप दिसंबर तक भी रहें, तो भी कोई आपत्ति नहीं।

जल का प्रबंध

मई-जून के महीनों में जब भगवान् भास्कर अपनी पूर्ण प्रखर रश्मियों से देदीप्यमान होते हैं, तब जल का विशेष कष्ट हो जाता है। बड़े-बड़े वेगशाली झरने, जिनकी जल-धारा वर्षा-ऋतु में घनघोर शब्द करती हुई बड़े वेग से प्रवाहित होती रहती है, ग्रीष्म-ऋतु में बड़ी मंद गति से बहने लगते हैं। तभी जल का कष्ट होता है। गरमी में वैसे ही जल का विशेष रूप से ख़र्च है, तिस पर ग्रीष्म की भीषणता के कारण बहुत-सा सूख जाता है। आय कम और व्यय ज़्यादा। कष्ट का होना तो अवश्यं-भावी ही है। दिन में केवल एक या डेढ़ घंटे के लिये जल की कल खोली जाती है। इसी बीच में अपने व्यवहार करने-भर को जल भर लिया जाता है। बस, यह कष्ट महीना-डेढ़ महीना ही रहता है। १५वीं जून से वृष्टि प्रारंभ हो जाती है। जुलाई के महीने से बराबर चौबीसों घंटे नल में जल रहा करता है। अगर यहाँ के सब पानी के सोते इन टंकियों में मिला दिए जायँ, तो फिर कोई कष्ट न हो। पर वैसा करने से आस-पास के गाँववालों को बड़ी असुविधा हो जाय। यही समझकर उन जल-राशियों को सबके व्यवहार करने के लिये स्वतंत्र छोड़ दिया गया है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राना दुर्गासिंह

आप यहाँ के वर्तमान राना हैं। सोलन बघाट-रियासत के अंतर्गत है। राना साहब अत्यंत सज्जन पुरुष हैं। यद्यपि आप किसी महाविद्यालय के उपाधिधारी नहीं हैं, तथापि आपके विचार अन्यान्य देशी राज्यों के कर्णधारों की तरह नहीं हैं। आपमें विलासिता का लवलेश भी नहीं है। टिहरी-गढ़वाल के महाराज के यहाँ आपका विवाह हुआ है, और वही आपकी एक ही रानी हैं। राना दुर्गासिंह उदार, धार्मिक पुरुष हैं। आपकी आयु अभी कोई तीस वर्ष के लगभग है। आपके पिता के समय में राज्य पर कोई तीन-चार लाख रुपए का क़र्ज़ चढ़ गया था, वह सब आपने अपनी मितव्ययिता के कारण पटा दिया है। बघाट-राज्य फलती-फूलती हुई छोटी-सी रियासत है। राना की आय कोई सवाडेढ़ लाख वार्षिक कही जाती है। प्रजा आपसे बहुत प्रसन्न है।

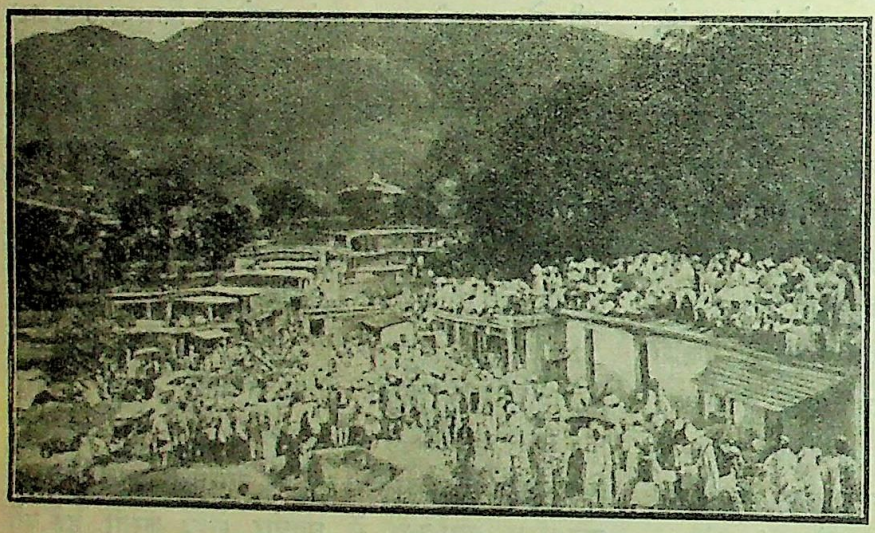

सोलन में मेले का एक दृश्य

डॉक्टरों का दौरदौरा

सोलन में ख़ास दो ही डॉक्टर हैं। एक तो यहाँ के हेल्थ-आफ़िसर डॉ० भैरोंदयाल, और दूसरे एक सिख महाशय डॉ० आत्मासिंह। डॉ० आत्मासिंह बड़े योग्य, मिलनसार और अपने कार्य में दक्ष हैं। पर इतने ही से डॉक्टरों का दौरदौरा नहीं कहा जा सकता। बाहर से डॉ० नानावती, डॉ० द्वारकानाथ और डॉ० फ़ाक्स प्रति दूसरे-तीसरे दिन चक्कर लगा जाया करते हैं। डॉ० नानावती क्षय-रोग के विशेषज्ञ समझे जाते हैं। धर्मपुर के आगे दो-तीन मील एकांत, शांत स्थल में उन्होंने अपना सेनीटोरियम (स्वास्थ्य-भवन) बना रक्खा है। पहले यह महाशय धर्मपुर के सुप्रसिद्ध सेनीटोरियम के अध्यक्ष थे; पर कुछ कारणों से आप वहाँ से अलग होकर अब अपना निजी व्यवसाय करने लगे हैं। दूसरे डॉ० द्वारकानाथ हैं। आप इन तीनों सज्जनों में से विशेष योग्य समझे जाते हैं। तीसरे फ़ॉक्स साहब हैं। लेखक ने इनकी बड़ी ख्याति सुनी थी। आपकी योग्यता में तो संदेह नहीं करना चाहिए, पर श्रीमान् परले सिरे के लालची हैं। आप कोई २५ वर्षों से शिमला-देहली के बीच अपना व्यवसाय चला रहे हैं। शिमले में निवास-स्थान है। आपका आगमन सोलन में सप्ताह में एक-दो बार हो जाया करता है। जो महाशय सोलन में आकर डॉक्टर की सहायता लेना ही चाहें, वे इन महाशय से बचे रहें। वैसे लोभ किसके नहीं होता, पर इनका लोभ परा काष्ठा को पहुँच गया है। प्रायः यहाँ का जल-वायु

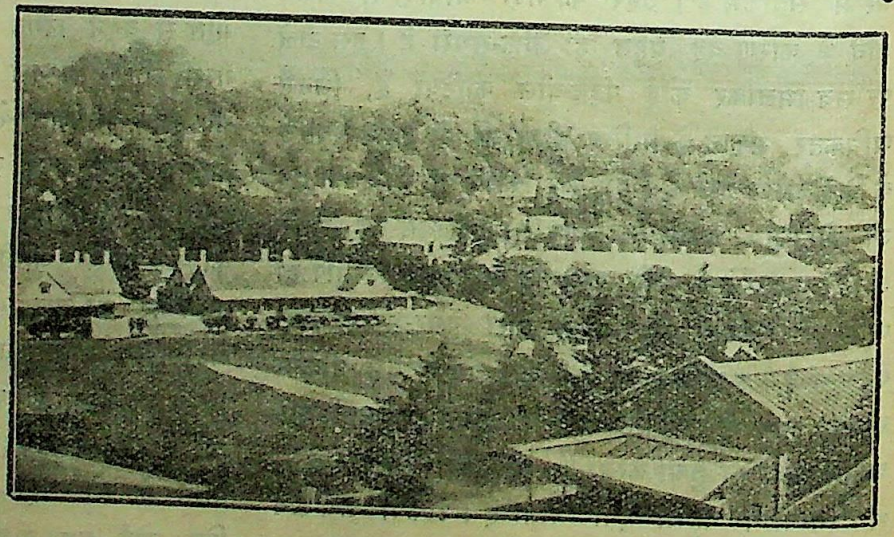

शिमले का एक दृश्य

ही लाभप्रद होता है। जब तक अत्यंत आवश्यकता न आ पड़े, तब तक डॉक्टरों की सहायता न लेनी चाहिए। प्रकृति

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वयं रोग को धीरे-धीरे समूल नष्ट कर देती है। स्वस्थ मनुष्य भी यहाँ आकर पूरा लाभ उठा सकता है। मेरे भाई को यहाँ जाने से बहुत लाभ हुआ। ज्वर तो कोई महीने-डेढ़ महीने में ही समूल नष्ट हो गया था। श्वास की शिकायत भी धीरे-धीरे तीन-चार महीनों में जाती रही। स्वास्थ अच्छा हो गया, और अब वह बिलकुल आरोग्य-से समझे जाते हैं। प्रकृति के ऊपर छोड़ देने से ही उनको यह लाभ हुआ; डॉक्टरों की औषधियों से तो बराबर हानि ही होती जा रही थी। कहने का तात्पर्य यह कि सोलन का जल वायु रोगी और स्वस्थ, दोनों के लिये लाभप्रद है।

कसौली

अब संक्षेप में आस-पास के दर्शनीय स्थानों का उल्लेख कर देना आवश्यक जान पड़ता है। कसौली सोलन से कोई २८ मील है। या तो आप मोटर पर जाइए, जो सीधा आपको कसौली में जाकर उतार देगी; और यदि रेल द्वारा गए, तो धर्मपुर से ताँगे, घोड़े या मोटर-लॉरी में जाना पड़ेगा। तीन-चार आदमी एक साथ के होने से सोलन ही से मोटर द्वारा जाना चाहिए। इससे समय की बड़ी बचत हो जाती है। कसौली फ़ौज़ी छावनी है। यहाँ रेलवे-लाइन नहीं है। कसौली की उँचाई कोई ६,२०० फ़ीट के लगभग है। बड़ी रमणीय जगह है। कसौली सोलन से अच्छा बसा हुआ है। बाज़ार भी यहाँ का बड़ा है। यहाँ एक Medical Research Institute है। इस संस्था ने खोज द्वारा बहुत-सी नवीन बातों का आविष्कार किया है। बड़ी प्रसिद्ध संस्था है। कसौली में पागल कुत्तों के काटे का इलाज होता है। भारतवर्ष-भर में जिन्हें कुत्ते काटते हैं, वे कसौली आते हैं। इन्हीं कारणों से यहाँ ज़्यादा चहल-पहल रहती है।

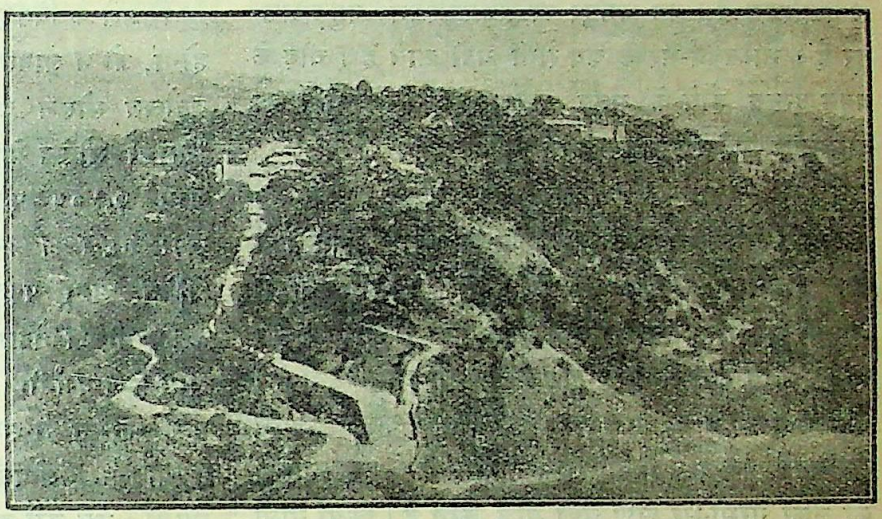

सनावर का सुप्रसिद्ध स्कूल

कसौली के समीप ही सनावर का सुप्रसिद्ध अँगरेज़ी-स्कूल है। यह स्कूल अपनी प्रारंभिक शिक्षा की विशेषता के लिये समस्त भारतवर्ष-भर में प्रख्यात है। लड़के और लड़कियाँ साथ पढ़ते हैं। नवीन-से-नवीन शैली द्वारा शिक्षकों ने शिक्षा देने का प्रबंध किया है। जो महाशय कसौली तक जाने का कष्ट उठावें, उन्हें 'सनावर-स्कूल' अवश्य देखना चाहिए।

डिकशई

सोलन से कसौली जाने के रास्ते से, डिकशई जाने के लिये, एक सड़क धर्मपुर के आगे से घूमती है। डिकशई

डिकशई का पहाड़ी दृश्य

फ़ौज़ी छावनी है। इसके सिवा कोई ख़ास बात यहाँ देखने या सुनने में नहीं आई।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धर्मपुर

सोलन से कोई आठ मील कालका-शिमला रेलवे-लाइन पर धर्मपुर रेलवे-स्टेशन बना है। यह वैसे तो सोलन से भी छोटी जगह है, पर यहाँ तपेदिक़ के रोगियों के लिये सेनीटोरियम है। यह धर्मपुर का सेनीटोरियम बहुत मशहूर है। भारतवर्ष-भर के क्षय-रोगी यहाँ आते हैं। चीड़ के बहुत दरख़्त होने के सबब क्षयवालों के लिये यहाँ का वायुमंडल विशेष अनुकूल होता है।

चाइल

चाइल पटियाला-नरेश का ग्रीष्म-निवास है। चाइल में सिर्फ़ महाराना साहब की कोठियाँ हैं। किसी बाहरी आदमी को निजी मकान बनवाने की यहाँ आज्ञा नहीं है। चाइल बहुत ठंडी जगह है। शिमले से भी अधिक ठंडी है। महाराजा साहब की प्रायः तीन सौ रानियाँ बतलाई जाती हैं, जिनमें केवल ६ विवाहिता हैं। रानियों के इस क़ाफिले को लेकर गरमी-भर आप यहीं मौज करते हैं। किसी यात्री को विना आज्ञा 'चाइल' जाने की इज़ाज़त नहीं है। वहाँ जाने के लिये महाराजा के प्राइवेट सेक्रेटरी से आज्ञा लेनी पड़ती है। चाइल के लिये आज्ञा कठिनता से मिलती है। कंडेघाट से चाइल तक महाराजा ने अपनी निजी सड़क बनवाई है, जहाँ सिर्फ़ मोटर ही जा सकती है। चाइल का प्राकृतिक दृश्य बहुत ही सुंदर है। वह रात्रि में बिजली की छटा के कारण और भी जगमगा उठता है। बिजली, टेलीफ़ोन वग़ैरह का महाराजा की ओर से ख़ास प्रबंध है।

पटियाला-नरेश कुत्ता-प्रिय नरेश कहे जाते हैं। आपने कुत्तों के लिये अलग एक भवन बनवाया है। कहा जाता है, आपके पास हज़ारों कुत्ते हैं। गत वर्ष जब आप विलायत तशरीफ़ ले गए थे, तब वहाँ से एक लाख रुपए का एक कुत्ते का जोड़ा ख़रीद लाए थे।

शिमला

शिमले के विषय में कौन-सा ऐसा शिक्षित भारतवासी होगा, जो न जानता हो। सच पूछो, तो शिमले ही की बदौलत सोलन वग़ैरह स्थानों की भी उन्नति हुई है। शिमला सोलन से ठीक ३१ मील दूर है। शिमले की उँचाई ७,५०० फ़ीट के लगभग है। इतने ऊँचे पहाड़ के ऊपर शिमले का अनुपम एवं विचित्र दृश्य देखकर आश्चर्य-चकित होना पड़ता है। कौंसिल-भवन, वाइसराय की कोठी, सीसल-होटल, बड़ा पोस्ट ऑफ़िस, माल-रोड और समर-हिल दर्शनीय स्थान हैं। यहाँ जैकू की पहाड़ी भी एक अद्भुत ही स्थान है। ऐसी कहावत प्रसिद्ध है कि हनुमान्‌जी संजीवनी-बूटी लेने के लिये इधर ही से होकर गए थे। उस बूटी का कुछ हिस्सा इस पहाड़ पर गिर पड़ा था, जो अब भी यहाँ पर पाई जाती है। लेकिन यह सब कहने ही-भर को है; क्योंकि आज तक किसी को वह बूटी प्राप्त होते सुनाई नहीं पड़ा। जो कुछ भी हो, यहाँ लंगूर बहुत हैं। शिमले में और कहीं उनका नाम-निशान भी नहीं पाया जाता। किंतु केवल जैकू की पहाड़ी ही पर उनको देखकर आश्चर्य होता है। शिमला ऐसा स्थान है, जिसके विषय में लिखने से पूरी एक पोथी तैयार हो सकती है। हिंदू-यात्रियों के लिये, पंजाब-हिंदू-होटल और हिंदू-होटल, दो ही सुबीते के स्थान हैं। यहाँ एक धर्मशाला भी है; पर पर्यटक के लिये होटल ही सुबीते की जगह है।

घर बैठे लीजिए

सच्चा बनारसी माल

काशी-सिल्क की धोतियाँ, डुपट्टे, साफ़े, कोट-कमीज़ के रेशमी कपड़े, सच्ची ज़री की साड़ियाँ, साफ़े, डुपट्टे और हर तरह के बनारसी ज़रीदार कपड़े। आपके शहर के भाव से फ़ी रुपया चार आने किफ़ायत की गारंटी। विशेष जानकारी के लिये हमसे लिखा-पढ़ी कीजिए।

बनारस-शिल्प-व्यापार-कार्यालय, नं० १०१ (S), बनारस-सिटी

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिंदोस्तान की रेलगाड़ी का तीसरा दर्जा

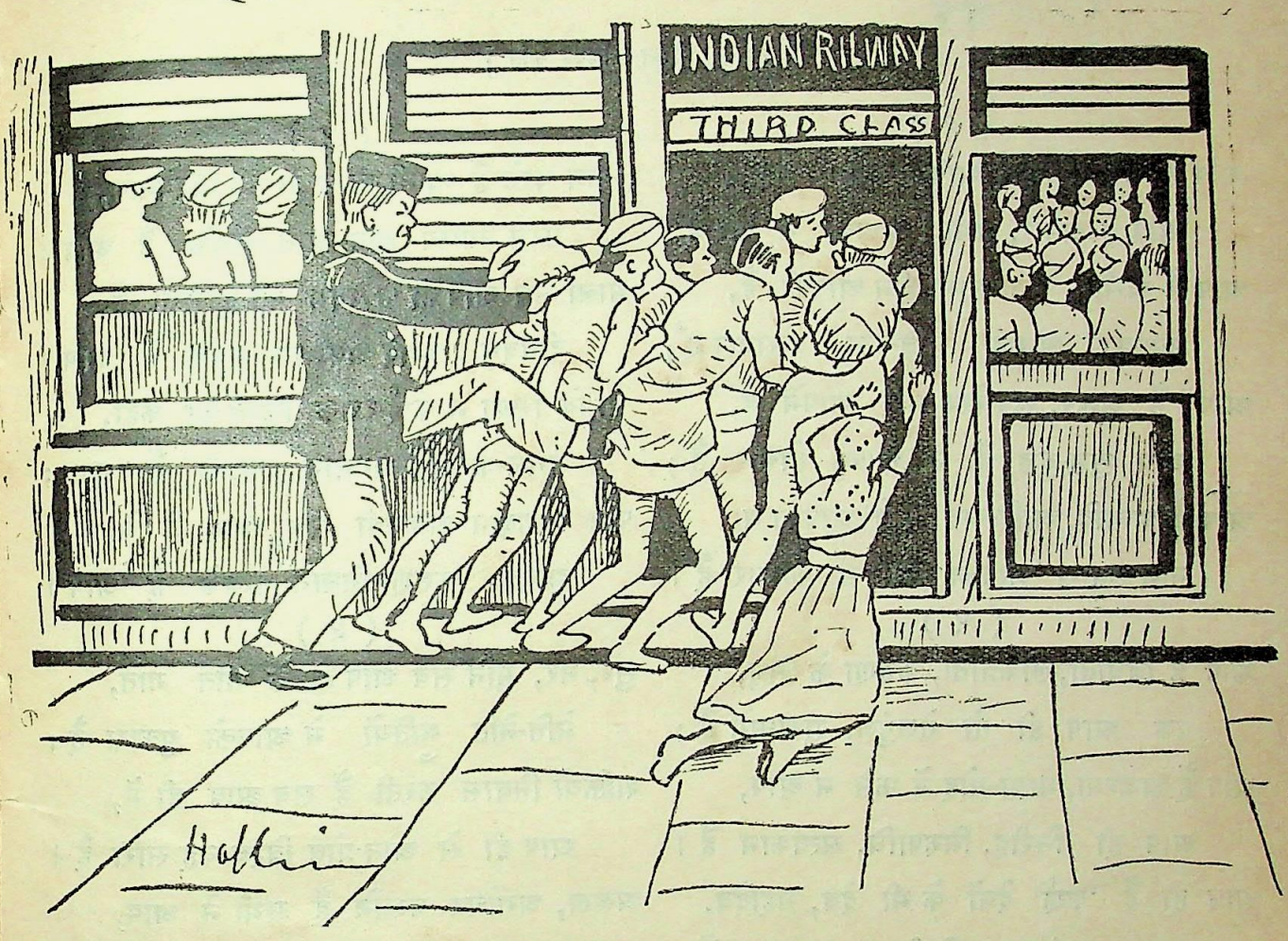

भारतीय कारीगरी का अनुपम दृश्य

इटावा भारतीय सिल्क

हमारे इस सिल्क के बनते ही काशी सिल्क, भागलपुरी, मद्रासी, चाइना आदि सभी सिल्क शर्मिंदा हो गए।

इसकी अनेक विशेषताएँ

यह काशी सिल्क से ज़्यादा सुंदर व मुलायम होने पर भी धुलने से चटकता या खिलता नहीं है। इसका बनवाया हुआ कपड़ा १० वर्ष तक ख़ूब इस्तेमाल करने से भी ख़राब न होकर जितना धुलता है, उतना ही फ़ैशनेबिल मुलायम सुंदर बहार दिखलाता है। इसका प्राकृतिक हलका रंग सोफ़ियाना मनोहर पहनने से ५००) रु० की पोशाक को भी लज्जित करता है। यह हर फ़ैशन, तथा हर ऋतु में एकसा काम देता है।

इतना मज़बूत होने के कारण ही यह सूती कपड़ों से सस्ता पड़ता है।

यह सूट तथा कोट के लिये सर्वांगसुंदर होते हुए भी इसके बंगाली काट के कुरते, कमीज़, दुपट्टे, चादरें, अचकन, जामा आदि भी बहुत सुंदर बनते हैं, तिस पर भी—

७ गज़ लंबे ३२ इंच चौड़े थान का दाम २५), प्रति गज़ ३।॥)

नापसंद होने से मूल्य वापिस

पता—दि स्वदेशी क्लाथ सप्लाई स्टोर, नं० २७, इटावा (यू० पी०)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गरिमा-गान

[लेखक, श्रीयुत कविवर कर्ण]

(१)

आप हैं महान, कोई आपके समान नहीं,
आप हैं अपार, प्रभो ! आपका न पार है ;
आप हैं असीम, सत्ता सीमा-हीन आपकी है,
आपका अथाह श्रुति-रत्न पारावार है।
आप हैं अरूप, रूप-रेख नहीं आपमें है,
आप शुद्ध-बुद्ध हैं, न आपमें विकार है ;
आप हैं अनादि, आदि-अंत 'कर्ण' आपका न,
नाम प्यारा आपका सदा से करतार है।

(२)

आप हैं विधाता, लोकत्राता, करुणा के सिंधु,
एक आप ही तो तेजपुंज, सुखधाम हैं ;
आप हैं अजन्मा, माया-मोह में फसे न आप,
आप ही निरीह, निरुपाधि, सत्यकाम हैं।
आप ही हैं 'कर्ण' देवों के भी देव, महादेव,
आप अकलंक, अद्वितीय, गुणग्राम हैं ;
आप हैं समीप, दूर वास नहीं आपका है,
आप मनोमंदिरों के बासी आठो याम हैं।

(३)

खेलते हैं खेल निशि-बासर निराले आप,
आज तक आप एक भी न दाँव हारे हैं ;
आपकी रुचिर रचना पर विमुग्ध सब,
रच-रच लोक तीनों आप ही ने धारे हैं।
आपके प्रकाश से प्रकाशित हैं सूर्य-चंद्र,
आप ही के तेज से चमक रहे तारे हैं ;
आपसे न भिन्न कुछ, कर्ण जड़-चेतनादि,
आप ही की सत्ता में समाए हुए सारे हैं।

(४)

ध्यान धरते हैं ध्यानी आप ही का विश्वनाथ,
परम उपास्य ज्ञान-ध्यान सबके हैं आप ;
माला सब आप ही के नाम की सुमिरते हैं,
दीनबंधु ! आदि-अवसान सबके हैं आप।
आपके सिवा न कोई रक्षक किसी का कहीं,
मंगल-करण भगवान सबके हैं आप ;
पाते क्षमादान अपराधी सब आप ही से,
इष्टदेव, करुणा-निधान सबके हैं आप।

(५)

सुर, नर, मुनि सब आप ही के गीत गाते,
नेति-नेति श्रुतियों ने आपको पुकारा है ;
शक्तियाँ निवास करती हैं सब आप ही में,
आप ही से ओत-प्रोत विश्व यह सारा है।
अलख, अगोचर बखाने हैं सभी ने आप,
व्यापक सभी में, कोई आपसे न न्यारा है ;
आप ही की सत्ता काम कर रही सब ठौर ;
'कर्ण' कब किसको न आपका सहारा है।

(६)

आशा रखते हैं सब आप ही की दीनानाथ,
कर सुख-दान तीनों ताप हरते हैं आप ;
आप ही हैं बल निबलों के, निधनों के धन,
हाथ किस पर न दया का धरते हैं आप।
आपके गुणों को चारों श्रुतियाँ बखान रहीं,
ज्ञान का समुज्ज्वल प्रकाश करते हैं आप ;
'कर्ण' के समान दीन भावुकों के जीवन में,
शुद्ध समुचित भक्ति-भाव भरते हैं आप।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

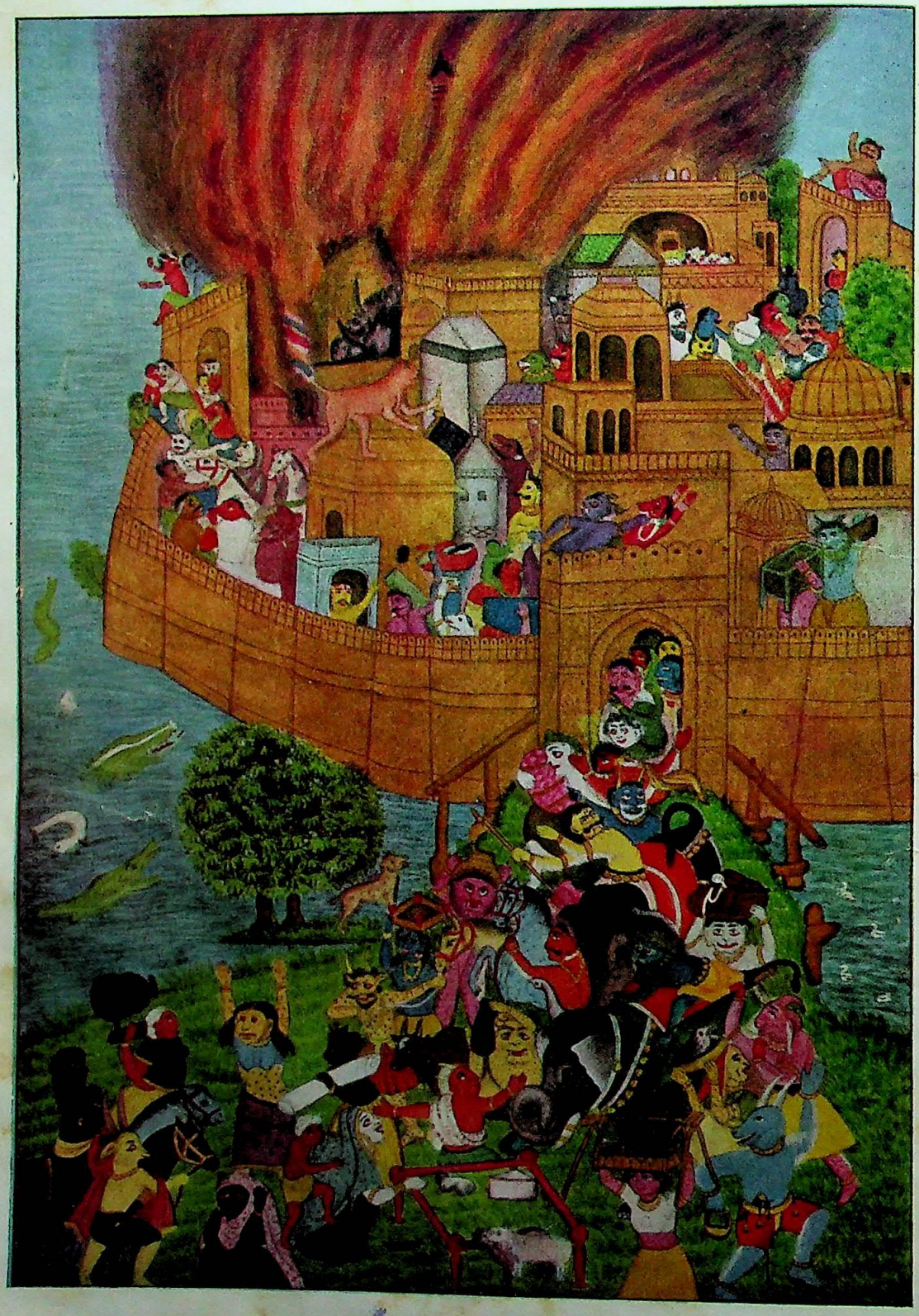

लंका-दहन

[श्रीयुत हनूमान शर्मा की कृपा से प्राप्त]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(७)

काम बन जाते हैं बनाए सब आप ही के,
याद बिगड़ी में सदा आप ही तो आते हैं ;
सच्चा उपकारी सब मानते हैं आप ही को,
आप ही के विमल विरद सब गाते हैं।
आप ही के फेरे फिर जाते हैं सभी के दिन,
बादल विपत्तियों के आप ही हटाते हैं ;
आप दयावान हैं, प्रदान कर बोध-बल,
'कर्ण'-से गिरे हुओं को आप ही उठाते हैं।

(८)

अटकी में आप कब किसके न आते काम,
बन कर्णधार नैया आप ही लगाते पार ;
धीरज अधीरों के, निराशों की हैं आशा आप,
खोलते सभी के लिये आप ही दया का द्वार।
दीनबंधु सच्चे तो हैं आप ही बखाने गए,
आप ही का अतएव नाम जपना है सार ;
आपके समान दाता दूसरा न पाया कोई,
आप ही के हाथ सुने जीवन के फल चार।

ईश्वरीय ज्ञान—'वेद'

[लेखक, प्रो० सत्यव्रत सिद्धांतालंकार 'अलंकार'-संपादक]

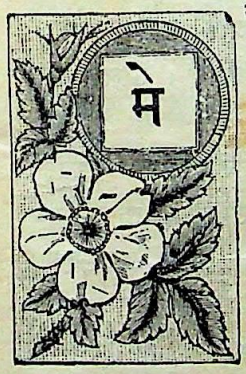

मेरे सामने पानी की एक बूँद है। मैं उससे पूछता हूँ, अरी बूँद, तू कहाँ से आई ? बूँद कहती है समुद्र से, जो बूँदों का भांडार है ! मेरे सामने एक बीज है। मैं उससे पूछता हूँ, ऐ बीज, तू कहाँ से आया ? बीज कहता है वृक्ष से, जो बीजों का भांडार है ! मेरे सामने एक पैसा है। मैं उससे पूछता हूँ, ऐ पैसे ! तू कहाँ से आया ? पैसा कहता है, टकसाल से, जो सिक्कों का भांडार है ! मैं जिस चीज़ की तरफ़ नज़र उठाता हूँ, वह स्वयं शर्माकर पीछे हट जाती और कहती है कि वह स्वयं कुछ नहीं है; उसकी सत्ता का झरना किसी अदृश्य, अक्षय कोश से फूटकर निकला है। बूँद के पीछे असीम समुद्र है; बीज के पीछे विशाल वृक्ष है; एक सिक्के के पीछे सरकार की टकसाल है—प्रत्येक छोटी चीज़ के पीछे कोई महान् भांडार है ! तो क्या मेरा 'ज्ञान' लावारिस है ? यदि एक बूँद के पीछे समुद्र लहरा रहा है, तो क्या मेरे ज्ञान-रूपी बूँद के पीछे कोई समुद्र नहीं है ? यदि एक बीज के पीछे विशाल वृक्ष की गगन-भेदी शाखाएँ हिल-हिलकर अपनी सत्ता जतला रही हैं, तो क्या मेरे ज्ञान-रूपी बीज के पीछे कोई वृक्ष नहीं है ? बुद्धि का तक़ाज़ा है कि ज्ञान का एक अक्षय समुद्र, विशाल कल्पतरु, असीम भांडार होना चाहिए। बस, इसी को मैं ईश्वरीय ज्ञान कहता हूँ। बिना समुद्र की सत्ता को माने हम संसार में पानी की एक बूँद को भी नहीं समझ सकते; बिना वृक्ष की कल्पना किए बीज का मानना असंभव हो जायगा। और, यदि इन दोनों बातों को बुद्धि स्वीकार करने के लिये तैयार है, तो मैं कहना चाहता हूँ कि बिना 'अखंड ईश्वरीय ज्ञान' की कल्पना किए ज्ञान की एक बात का भी हो सकना असंभव है। ज्ञान की छोटी-सी भी किरण ज्ञान के भांडार अक्षय सूर्य की तरफ़ संकेत करती है।

धर्म में विश्वास न करनेवाले नास्तिकों के लिये इतना ही पर्याप्त है। बौद्ध-धर्म के अनेक अनुयायी, भूल से बुद्ध को नास्तिक समझते हुए, बुद्ध के प्रतिनिधि होकर ईश्वरीय ज्ञान के खंडन का दुस्साहस करते हैं; परंतु ऐसे महानुभावों के समाधान के लिये यहाँ यह कह देना उचित होगा कि बुद्ध ने ईश्वर तथा वेद के खंडन में कुछ नहीं कहा। इसके विपरीत 'सुत्तनिपात' के 'महावग्ग' के 'सुंदरिक भारद्वाज-सुत्त' में वह अपने को 'ब्राह्मण' कहते हैं। महावग्ग के 'वसिष्ठसुत्त' में वह ब्राह्मण का लक्षण बताते हुए, उसका त्रिविद्या का ज्ञाता होना आवश्यक बतलाते हैं। सुंदरिक-भारद्वाजसुत्त में बुद्ध कहते हैं—"तं सावित्तिं पुच्छामि तिपदां चतुविसत्तक्खराम्।" अर्थात् चौबीस अक्षरोंवाली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सावित्री को सुनाओ ! अंत में सुंदरिक भारद्वाज ने बुद्ध का ब्राह्मण होना स्वीकार किया है। ऐसे व्यक्ति को नास्तिक या निरीश्वरज्ञानवादी कहना अत्यंत असंगत है। इसके अतिरिक्त बुद्ध के समकालीन साहित्य का अवलोकन करने से ज्ञात होता है कि उस समय के लोगों के सम्मुख वह नास्तिक के तौर पर प्रकट नहीं हुए। बुद्ध के समय में भिक्षुकों के ६४ संप्रदाय थे। बुद्ध के समकालीन साहित्य को पढ़ने से स्पष्ट विदित होता है कि उनकी संख्या इन्हीं 'भिक्षुओं' में से थी। यदि वह नास्तिक होते, तो आस्तिक भारत में उन्हीं के समय इतना शोर होता कि वह अपनी मृत्यु से पहले पहले बहुत कुछ सुन लेते !

ईश्वरीय ज्ञान को माननेवाले संसार के आस्तिक धर्मों में हिंदू, पारसी, यहूदी, ईसाई तथा मुसलमान मुख्य हैं। पारसियों की धर्म-पुस्तक 'ज़ेंदावस्ता' है, और यह बाइबिल तथा क़ुरान से बहुत पुरानी है। ज़ेंदावस्ता के मित्र, वरुण, अर्यमा, नासत्य आदि देवता वेदों से लिए हुए हैं, उसकी भाषा वेदों की भाषा का अपभ्रंश है, उसके गायत्री-उष्णिक् आदि छंद वेदों के ही हैं। संक्षेप में ज़ेंदावस्ता वेदों की कॉपी है। यहाँ तक कि उसमें "शन्नोदेवीरभिष्टये-आपोभवन्तु पीतये" मंत्र का वर्णन भी है। ज़ेंदावस्ता पर वेदों की ऐसी छाप पड़ी हुई है कि यदि ज़ेंदावस्ता से ही पूछा जाय कि वेद और तुममें कौन-सा ईश्वरीय ज्ञान है, तो वह स्वयं वेद की तरफ़ उँगली उठा देगा !

योरपियन विद्वानों की सम्मति के अनुसार ज़ेंदावस्ता ४ या ६ हज़ार वर्ष का पुराना है। बाइबिल को १६०० से और क़ुरान को १३०० से कुछ अधिक वर्ष ही हुए हैं। ज़ेंदावस्ता की मौजूदगी में बाइबिल और क़ुरान को ईश्वरीय ज्ञान तभी माना जा सकता है, जब यह मान लिया जाय कि ईश्वरीय ज्ञान समय-समय पर होता रहता है। सबसे पहले वेद का हुआ, फिर ज़ेंदावस्ता का, फिर बाइबिल का, फिर क़ुरान का, और अब श्रीमती बीसेंट के कलियुगावतार कृष्णमूर्ति का हो गया है। परंतु मज़ा यह है कि पारसी लोग ज़ेंदावस्ता पर अटक जाते हैं, ईसाई लोग बाइबिल पर आकर अटक जाते हैं, और मुसलमान लोग क़ुरान पर अटक जाते हैं ! यदि यह युक्ति मान ली जाय कि ज़ेंदावस्ता की कमियों को पूरा करने के लिये बाइबिल दी गई, तो मैं ईसाइयों से पूछना चाहता हूँ कि मुसलमान यह क्यों न कहें कि बाइबिल की कमियों को पूरा करने के लिये क़ुरान दिया गया ? और यदि मुसलमानों के कथनानुसार इस बात को मान लिया जाय कि बाइबिल की कमियों को पूरा करने के लिये क़ुरान दिया गया, तो मैं मुसलमानों से पूछना चाहता हूँ कि वे इस बात का क्या जवाब देंगे कि अब क़ुरान की कमियों को पूरा करने के लिये एक और इल्हाम की ज़रूरत है ? लेकिन मुसलमान कहते हैं कि क़ुरान मुकम्मिल है। क्या इसी प्रकार ईसाई, यहूदी और पारसी भी अपनी-अपनी धर्म-पुस्तकों को मुकम्मिल नहीं कहते ? विचारपूर्वक देखा जाय, तो कहना पड़ेगा कि जो धर्म-पुस्तकें आसमान का ज़मीन पर पहाड़ों के खूटों से थमी हुई छत बतलावें, कौंरी के पेट से पैदायश का ज़िक्र करें, वे विज्ञान के इस युग में किसी प्रकार भी मुकम्मिल नहीं कही जा सकतीं। उनमें तरमीम की काफ़ी से भी ज़्यादह ज़रूरत है। लेकिन मैं इस समय इस बहस में पड़ना नहीं चाहता। मैं केवल यही बतलाना चाहता हूँ कि ईश्वरीय ज्ञान के विषय में दो ही बातें मानी जा सकती हैं। या तो वह प्रारंभ में मुकम्मिल दे दिया गया, और या वह मौक़े-मौक़े पर जैसी ज़रूरत पड़े, दिया जाता है। तीसरी बात यह कि बीच में दिया गया और फिर नहीं दिया जायगा, एक ऐसी कल्पना है, जिसे बुद्धि स्वीकार नहीं कर सकती। यदि ईश्वरीय ज्ञान मौक़े-मौक़े पर होता ही रहता है, तब तो मैत्रेय के अवतार कृष्णमूर्ति का ही सबसे बड़ा दावा रह जाता है; और यदि मेरे ईसाई तथा मुसलमान भाई कृष्णमूर्ति के दावे को मानने को तैयार नहीं, तो ईश्वरीय ज्ञान होने के लिये केवल वेद का दावा रह जाता है। जिस युक्ति से ईसाई और मुसलमान भाई चलते हैं, उससे चुनाव वेद और कृष्णमूर्ति, इन दो में ही रह जाता है। यदि आप ज़ेंदावस्ता, बाइबिल या क़ुरान किसी पर ठहरना चाहते हों, तो वेद पर ही ठहरना पड़ेगा; क्योंकि आपकी तरह हिंदुओं का भी दावा है कि वेद मुकम्मिल है। और, यदि आप फिसलते हों, तो फिसलते-फिसलते कृष्णमूर्ति तक फिसलना पड़ेगा; क्योंकि आज वह आप सबके ईश्वरीय ज्ञानों में तरमीम करने के लिये अपने को आया बतलाता है, और उसने थोड़े दिन हुए अपने 'अवतार' होने का आम ऐलान भी कर दिया है !

इसके अतिरिक्त संसार का इतिहास साक्षी है कि जब ज़ेंदावस्ता, बाइबिल और क़ुरान का किसी को ख़्वाब

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भी न था, उस समय ही संसार भौतिक तथा आध्यात्मिक दृष्टि से इतना बढ़ चुका था कि उन इल्हामों की कोई ज़रूरत न थी।

भूगर्भ-विद्या-विशारद जॉन रीड को ज़मीन में गड़ा हुआ एक ऐसा जूता मिला है, जो ५० लाख साल का पुराना है। इन जूतों को देखकर कहा जाता है कि लिन, ब्रौकटंम और मैसेचसट्स में जूतों को बनाने में जितनी उच्च बुद्धि की आवश्यकता है, उतनी इनमें प्रदर्शित है।

जो लोग कहते हैं कि १६०० या १३०० वर्ष हुए, जब ईश्वरीय ज्ञान दिया गया था, उनके कहने का क्या यह अभिप्राय है कि ५० लाख साल पहले जो बुद्धि इस पृथ्वी पर दिखाई देती थी, वह स्वयं विकसित हुई थी? यदि उसे ईश्वरीय ज्ञान की आवश्यकता न रही, तो पिछले थोड़े-से सालों से क्या ज़रूरत पड़ने लगी? मेरे कहने का यह मतलब हर्गिज़ नहीं कि अच्छा जूता बनाने में ईश्वर का इल्हाम होता है। यह दृष्टांत केवल इसलिये दिया गया है कि इस उच्च कोटि की बुद्धि इतने पुराने ज़माने में मौजूद थी। क्या ऐसी बुद्धि के लोग तो ईश्वरीय ज्ञान के योग्य न थे, और गैलिली तथा अरब के लोग ही इसके उचित पात्र समझे गए?

कहा जा सकता है कि भौतिक दृष्टि से अत्युन्नत होते हुए भी, आध्यात्मिक दृष्टि से समाज अवनत अवस्था में हो सकता है, और क़ुरान तथा बाइबिल का उद्देश्य मनुष्य को आध्यात्मिक दृष्टि देना ही है।

इतिहास इस बात का साक्षी है कि आध्यात्मिक दृष्टि से भी दूसरे सब धर्म-ग्रंथों की अपेक्षा उच्च विचार संसार में मौजूद थे।

विकासवाद के अद्वितीय पंडित डार्विन के साथ ही विकासवाद के आविष्कारक डॉ० वालेस अपनी पुस्तक 'Social Environment and Moral Progress' में लिखते हैं—

"The wonderful collection of hymns known as the Vedas is a vast system of religious teaching as pure and lofty as those of the finest portions of the Hebrew Scriptures....., its various writers were fully our equals in their conceptions of the Universe, and of the Deity, expressed in the finest poetic language..... In this we find many of the essential teachings of the most advanced religious thinkers—the immediate entrance to a higher life.....If we make allowance for the very limited knowledge of Nature at this early period, we must admit that the mind which conceived and expressed in appropriate language, such ideas as are everywhere present in these Vedic hymns, could not have been in any way inferior to those of the best of our religious teachers and poets—to our Miltons and our Tennysons."

वालेस महाशय मुक्तकंठ से स्वीकार करते हैं कि वेदों की शिक्षाएँ प्रकृति तथा परमात्मा-संबंधी उन विचारों से भरी हुई हैं, जो इस युग में भी उच्चतम कहे जा सकते हैं। जकालियट महोदय अपनी पुस्तक 'Bible in India' में लिखते हैं—

"Astonishing fact! the Hindu Revelation (Veda) which proclaims the slow and gradual formation of world is of all Revelations the only one whose ideas are in complete harmony with the Modern Science."

अर्थात् संसार-भर के ईश्वरीय ज्ञानों में केवल वेद ही ऐसा है, जिसके सृष्ट्युत्पत्ति-संबंधी विचार वर्तमान विज्ञान के साथ मेल खाते हैं।

वेद के उच्च विचारों को सिद्ध करने के लिये केवल विदेशी विद्वानों की सम्मतियाँ पर्याप्त नहीं। इसलिये मैं कुछ मंत्रों को विद्वानों के सम्मुख रखना चाहता हूँ—

(१) परमात्मा—

न द्वितीयो न तृतीयश्चतुर्थो नाप्युच्यते,
न पञ्चमो न षष्ठः सप्तमो नाप्युच्यते,
नाष्टमो न नवमो दशमो नाप्युच्यते,
स एक एव एकवृदेक एव।

इंद्रं, मित्रं वरुणमग्निमाहुरथो दिव्यः स सुपर्णो गरुत्मान्,
एकं सद्विप्रा बहुधा वदन्ति अग्निं यमं मातरिश्वानमाहुः।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(२) मनुष्य-समाज—

समानो मन्त्रः समितिः समानी समानं मनः सहचित्तमेषाम्;
समानं मन्त्रं अभिमन्त्रये वः समानेन वो हविषा जुहोमि ।

(३) विश्व-बंधुत्व—

दृते दृंह्महमा मित्रस्य मा चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षन्ताम्;
मित्रस्याहं चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षे मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे

परमात्मा एक है, अमूर्त है और मनुष्य-समाज भ्रातृभाव के बंधन से बँधा हुआ है—इन दो सचाइयों को लेकर संसार के धर्म उठे, और इन्हें भुलाकर गिरे । इनका जैसा उच्च वर्णन वेदों में पाया जाता है, वैसा अन्यत्र कहीं नहीं। फिर समझ में नहीं आता कि किस नई सचाई को लेकर बाइबिल, क़ुरान या किसी अन्य धर्म-पुस्तक का प्रादुर्भाव हुआ !

हाँ, यदि यह मान लिया जाय कि वेद ईश्वरीय ज्ञान है, तो एक बात बड़ी आसानी से समझ में आ जाती है । हम जितने भी धर्मों का अनुशीलन करते हैं, उनमें सर्वत्र एक बड़ी ऊँची आवाज़ सुनाई देती है । वे एक-स्वर होकर किसी पुराने ईश्वरीय ज्ञान की तरफ़ संकेत करते हैं । उनसे स्पष्ट विदित होता है कि वे किसी नवीन संप्रदाय के उठानेवाले नहीं; परंतु किसी लुप्त ज्ञान के उद्धारक हैं । उनका स्वर्णीय काल भूत में है । जब तक वेद सब-से पुराना ठहरता है, जब तक उसकी शिक्षा अन्य सब ईश्वरीय ज्ञानों से ऊँची है, तब तक वही यथार्थ में ईश्वरीय ज्ञान समझा जा सकता है ।

वेद की प्राचीनता के विषय में इससे बढ़कर क्या कहा जा सकता है कि अब तक कोई भी विद्वान् ऐसा नहीं, जिसने वेदों को संसार की किसी भी धर्म-पुस्तक से पीछे रक्खा हो । प्रो० मैक्समूलर लिखते हैं—

"The Veda.....will take and maintain for ever its position as the most ancient of books in the library of mankind."

अर्थात् मानव-जाति के पुस्तकालय में वेद सदा ही सबसे प्राचीन ग्रंथ माने जाते रहेंगे ।

बाल-गंगाधर तिलक, पावगी तथा ए० सी० दास महोदय ने वेद को बहुत पुराना बताया है । अविनाशचंद्रदास महोदय वेदों का समय ३० हज़ार वर्ष पीछे तक ले गए हैं, और अभी कल मुझसे बात करते हुए उन्होंने कहा था कि वेदों के समय का पता लगाना चट्टान से टक्कर लगाना है । उसे ढूँढ़ते हुए हम प्राचीन काल के उस अंधकारमय समय में गुम हो जाते हैं, जहाँ कुछ नहीं सूझता । ऐसे दावे की मौजूदगी में मैं अपने भाइयों से पूछना चाहता हूँ कि किस पुस्तक को ईश्वरीय ज्ञान कहा जा सकता है ?

हमारे मुसलमान भाई क़ुरान की बहुत-सी आयतें इसलिये पेश किया करते हैं; क्योंकि उनमें लिखा है कि क़ुरान ख़ुदा का इल्हाम है । वास्तव में क़ुरान के इल्हाम होने की बाबत क़ुरान में इतनी बार कहा गया है कि यदि और कुछ नहीं, तो इतनी बार कहना ही हमें संदेह में डालने के लिये काफ़ी है । सच्चे आदमी को अपनी सफ़ाई इतनी बार पेश करते देखकर हर एक को संदेह हो जाता है । वेद में उसके ईश्वरीय ज्ञान होने को इतनी बार तो नहीं दोहराया गया, जिसकी ज़रूरत भी नहीं थी; परंतु हाँ, इतना कहा गया है—

"अपूर्वेणेषिता वाचस्ता वदन्ति यथायथम् ।"

अर्थात् परमात्मा ने वेद-वाणी को सत्य का प्रकाश करने को प्रेरित किया ।

वह वाणी कैसे प्रकट हुई ? इसका उत्तर ऋग्वेद ने यह दिया है—

"यज्ञेन वाचः पदवीयमायन् तामन्वाविंदन् ऋषिषु प्रविष्टाम्;"

वह वाणी ऋषियों में प्रविष्ट हुई । कितने ऋषियों में ? इसका उत्तर है—

"ऋचां त्वः पोषमास्ते पुपुष्वान्
गायत्रं त्वो गायति शकरीषु;
ब्रह्मा त्वो वदति जातविद्याम्
यज्ञस्य मात्रां विमिमीत उत्वः ।"

इसी भाव को—अर्थात् ऋक्, यजुः, साम, अथर्व ये चार ऋषियों पर प्रकट हुए—निम्न-लिखित मंत्रों में कहा गया है—

तस्माद्यज्ञात्सर्वहुत ऋचः सामानि जज्ञिरे;
छंदाꣳसि जज्ञिरे तस्माद्यजुरजायत् ।
यस्मादृचो अपातक्षन् यजुः यस्मादपाकषन् ;
सामानि यस्य लोमानि अथर्वाङ्गिरसो मुखम् ।

वैसे तो ईश्वरीय ज्ञान का प्रश्न अत्यंत विस्तृत है, इसलिये इस पर इतनी शंकाएँ उठ सकती हैं, जिनका थोड़े-से समय में समाधान नहीं दिया जा सकता ; परंतु समाप्त करते हुए एक प्रश्न का उत्तर देना आवश्यक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समझता हूँ। पूछा जाता है कि परमात्मा जब तक शरीर आदि धारण न करे, तब तक वह मनुष्य को अपना ज्ञान कैसे दे सकता है?

यह प्रश्न तभी किया जा सकता है, जब हम परमात्मा को आँख-नाक-कानवाला बड़ा भारी आदमी मानें। वेद का तो कथन है—

"सपर्यगाच्छुक्रमकायमव्रणमस्नाविरꣳ शुद्धमपापविद्धम्।"

परमात्मा सर्वव्यापक है। आवाज़ की ज़रूरत दूरी में होती है। मैं आप लोगों से दूर खड़ा हूँ, इसलिये ऊँचे बोल रहा हूँ। यदि मुझसे १०० क़दम पर बैठा हुआ भाई ५० क़दम की दूरी पर आ जाय, तो मुझे आवाज़ की ज़रूरत भी आधी रह जाय। यदि वह बिलकुल मेरे कान के पास आ खड़ा हो, तो केवल धीरे से कान में कह देने की आवश्यकता हो—अर्थात् मुझमें और सुननेवाले में जितनी दूरी बढ़ती जाती है, उतनी आवाज़ की ज़रूरत भी बढ़ती जाती है। जितनी दूरी घटती जाती है, उतनी आवाज़ की ज़रूरत भी घटती जाती है। ऐसी अवस्था में जब दूरी शून्य हो जायगी, तब आवाज़ की ज़रूरत भी शून्य हो जायगी; क्योंकि मेरा परमात्मा सातवें आसमान पर बैठा हुआ नहीं है। अतः उसमें और मुझमें दूरी शून्य है। इसलिये मेरे परमात्मा को आवाज़ की ज़रूरत भी शून्य है, बिलकुल नहीं।

मैं जिन बातों का अभी ज़िक्र कर चुका हूँ, उनके आधार पर कहता हूँ कि वेद ईश्वरीय ज्ञान है।

पं० लज्जाशंकर झा

[लेखक, रायसाहब पं० रघुवरप्रसाद द्विवेदी बी० ए०, साहित्यरत्न]

गुणिगणगणनारम्भे न पतति कठिनी सुसम्भ्रमाद्यस्य;
तेनाम्बा यदि सुतिनी वद वन्ध्या कीदृशी भवति।

सत्य है, यदि इस संसार में जन्म लेकर मनुष्य ने पशु-तुल्य रहकर आहार, निद्रा आदि इंद्रियों को सनाथ करने में ही अपना जीवन व्यतीत कर दिया और योग्य पुरुषों में उसकी गणना न हुई, तो माता ने ऐसे पुच्छ-विषाणहीन नर-पशु को उत्पन्न कर निरी प्रसव-वेदना ही सही। गुणी भी कई प्रकार के होते हैं; पर सच्चे गुणी अपने-अपने कार्य-क्षेत्र में यशस्वी हुए विना नहीं रहते। कीर्ति-रूपी पर्वत की सीढ़ियों को पार करते हुए वे अंत में उसके शिखर पर पहुँच ही जाते हैं। इन भिन्न-भिन्न कार्य-क्षेत्रों में कार्य करनेवालों की कीर्ति भी भिन्न-भिन्न प्रकार की होती है। कोई तो अपने गुणों तथा चरित्र-बल से थोड़े ही काल में प्रसिद्धि पा जाते हैं, और कोई-कोई आजीवन परिश्रम करने पर भी अपने समान गुणी पुरुषों में ही ख्याति उपलब्ध करते हैं, साधारण जनता उन्हें देख जय-ध्वनि नहीं करने लगती। इसका अर्थ यह नहीं कि थोड़े, पर विद्वान् और सच्चरित्र पुरुषों में यश पाना इतना उपादेय नहीं। बहुधा ऐसी कीर्ति ही सच्ची कीर्ति है; क्योंकि वह वास्तव में इने-गिने सज्जनों को ही प्राप्त होती है।

हमारा अभिप्राय यह है कि यदि मध्यप्रांत के शिक्षा-विभाग के कार्य-कर्ताओं की नामावली तैयार की जाय, तो हमारे चरित्र-नायक पं० लज्जाशंकर झा का स्थान बहुत ऊँचा निकलेगा। आज राय-साहब शिक्षा-विभाग के महारथियों में समझे जाते

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हैं। यह उच्चपद आपने अपने चरित्र-बल द्वारा ही प्राप्त किया है। जिस दिन से आपने मध्यप्रदेशीय शिक्षा-विभाग में पदार्पण किया है, उसी दिन से अपना कार्य बड़ी कर्तव्य-निष्ठा के साथ किया है, और उसके संपादन में न तो कभी आलस्य किया और न असावधानी। आपकी वर्तमान ख्याति, इसी कर्तव्य-निष्ठा का फल है। आप स्वयं कर्तव्य-

पं० लज्जाशंकर झा

निष्ठ हैं और अपने मातहतों को भी ऐसा ही कर्तव्य-निष्ठ देखना चाहते हैं। जो कामचोर हैं और निरी ठकुरसुहाती से अधिकारियों को प्रसन्न रखने की आशा करते हैं, उन्हें झा साहब की मातहती में आने पर शीघ्र ही हताश होना पड़ता है।

वैसे तो झा साहब का स्वभाव बहुत ही सरल है, छोटे-बड़े सभी आपके पास आते और आपके सौजन्य से प्रसन्न होते हैं, पर जो लोग स्वार्थवश इस प्रकार की सहायता चाहते हैं, जिसके कर देने से झा महोदय को कर्तव्य-विमुख होना पड़े, उन्हें निराश ही लौटना पड़ता है। कामचोर मातहत और न्यायान्याय का विचार न रखकर अपने हित-साधन की इच्छा से आनेवाले प्रार्थियों को आपसे आशा न करनी चाहिए।

हमारे समाज में अभी कर्तव्य-निष्ठा का मूल्य बहुत लोग नहीं समझते। अधिकारीगण भी कभी-कभी वाह-वाह की आशा से नियम-विरुद्ध कार्य कर बैठते हैं। इस प्रकार का संकोच हमारे हृदय-दौर्बल्य का ही परिणाम होता है, अतएव वे सब कर्मचारी, जो कर्तव्य-पालन को निरी वाहवाही से कहीं अधिक उपादेय समझते हैं, सर्वप्रिय नहीं बन सकते। तो भी अपने सौजन्य के कारण रायसाहब किसी को ऐसे अप्रिय भी नहीं हैं। उच्च अधिकारियों तथा सहकारी कर्मचारियों में आपका अच्छा मान और विश्वास है। इस छोटी-सी जीवनी में हम अपने चरित्र-नायक का चरित्र-चित्रण करने नहीं बैठे, केवल उपयोगी लेख लिखनेवाले और हिंदी मातृ-भाषा न होने पर भी उसके साहित्य के प्रति सच्ची श्रद्धा रखनेवाले एक मध्यप्रदेशीय शिक्षा-विभाग के प्रसिद्ध कर्मचारी का परिचय करा देना ही हमारा अभीष्ट है।

आरंभिक जीवन और शिक्षा

रायसाहब लज्जाशंकर झा एक योग्य पिता के योग्य पुत्र हैं। आपके पिता रायसाहब कृपाशंकर झा जीवन-पर्यंत इस प्रांत में शिक्षक और जिला-इंसपेक्टर थे। आप भी इस योग्यता के कर्मचारी थे कि सरकार ने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रायसाहब की उपाधि से आपको विभूषित कर अपनी गुणग्राहकता प्रदर्शित की थी। यह गुजराती नागर-ब्राह्मण-वंश किसी समय गुजरात से उठकर पंजाब के नारनौल-नामक स्थान में जा बसा था। किसी कारण ये लोग पहले अलीगढ़ और फिर आगरा तथा मथुरा में रहने लगे थे। वहीं से राय-साहब कृपाशंकर झा मध्यप्रदेश आकर शिक्षा-विभाग के कर्मचारी नियुक्त हुए थे। मध्यप्रदेश के निर्माण के थोड़े ही वर्षों बाद की यह घटना है, अतएव यह कहना न होगा कि स्वर्गीय रायसाहब कृपाशंकर झा ने इस प्रदेश की शिक्षा-प्रगति में पूर्ण भाग लिया था।

इन्हीं पं० कृपाशंकर झा के यहाँ जुलाई, सन् १८७३ में, शुभ मुहूर्त पर, हमारे चरित्र-नायक ने जन्म लिया, और आगरे से १८९०-१८९१ में मैट्रिक परीक्षा, सन् १८९३ में जबलपुर-कॉलेज से एफ़्० ए० और सन् १८९५ में स्योर-सेंट्रल-कॉलेज, इलाहाबाद से बी० ए० परीक्षा पास की। शिक्षा-काल में आपकी उन्नति साधारण रही; पर सच पूछो तो आपने पाठ्य-पुस्तकें रटकर उच्च श्रेणी में उत्तीर्ण होना उतना अभीष्ट नहीं समझा, जितना उपयोगी विषयों की पुस्तकावलोकन द्वारा अपना ज्ञान-भांडार बढ़ाना। इसी से कई विषयों में आपका साधारण ज्ञान बहुत बढ़ गया।

जीवन-प्रवेश

झा साहब के बी० ए० हो जाने पर यह प्रश्न उठा कि आपको अपना जीवन-कार्य कौन-सा चुनना चाहिए। किसी ने कहा, वकालत, किसी ने सरकारी नौकरी, पर हमारे चरित्र-नायक को शिक्षा ही प्रिय थी। इसलिये आपने मध्यप्रदेश के शिक्षा-विभाग में ही प्रवेश किया, और २६ अगस्त, सन् १८९५ में जबलपुर और फिर नरसिंहपुर में डिपुटी-इंसपेक्टरी करने लगे। सन् १८९७ में आप मिडिल स्कूलों की हेडमास्टरी करके सन् १९०० में जबलपुर नॉर्मल-स्कूल में शिक्षक नियुक्त हुए। उन्हीं दिनों सन् १९०२ में नागपुर ट्रेनिंग इंसटीट्यूशन उठकर जब जबलपुर आया, तो आप उसमें शिक्षक बनकर आ गए। यहीं से आपकी उत्तरोत्तर उन्नति का सूत्र-पात हुआ। एप्रिल, सन् १९०४ में आप सबार्डिनेट सर्विस में उठा लिए गए, और उस संस्था के माध्य-मिक विभाग (Secondary Dept.) में उपाध्यक्ष का कार्य करने लगे। पहले भी आप अपने सद्गुणों के कारण अपने बड़े अफ़सर के दाहने हाथ रहा करते थे। अब मि० स्पेंस-जैसे सुयोग्य सुपरिंटेंडेंट को पाकर आपने बहुत उच्च कोटि का काम कर दिखाया। कार्य-प्रिय स्पेंस आपकी योग्यता देख मुग्ध हो गए। ट्रेनिंग इंसटीट्यूशन की उत्तरोत्तर उन्नति और विकास के कारण जैसे मि० स्पेंस थे, उसी तरह उनके सहायक पं० लज्जाशंकर झा। इन्हीं दोनों महोदयों के अहर्निश उद्योग से यह संस्था कॉलेज बना दी गई।

सन् १९१० में जबलपुर-आर्ट-कॉलेज में आप अँगरेज़ी और गणित के अध्यापक नियत हुए, और इस तरह प्राविंशल रिसर्च में आपने प्रवेश किया। सन् १९११ में आप ट्रेनिंग कॉलेज के प्रोफ़ेसर बन-कर फिर अपने कार्य-क्षेत्र में लौट आए, और उस नई संस्था के विकास में दत्त-चित्त हुए। ट्रेनिंग-कॉलेज खुलने पर आपको उपाध्यक्ष का पद न्यायतः मिलना चाहिए था, पर उस समय यह कहा गया कि यह पद आई० ई० एस्० कर्मचारी के लिये रक्खा गया है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निदान सन् १९१८ तक आप प्रोफ़ेसर ही बने रहे। बीच-बीच में दो बार आपने उपाध्यक्ष (Vice Principal) का काम बड़ी योग्यता से किया, और आपको आई० ई० एस्० में लेना अनिवार्य देख आप रायपुर-सर्किल के इंसपेक्टर बनाकर भेज दिए गए। आपने यह कार्य तो अच्छी योग्यता के साथ किया, पर इसमें अपनी हानि देखकर उसे अधिक काल तक नहीं करना चाहा।

रायसाहब ने नव महीने इंसपेक्टरी की थी कि ट्रेनिंग-कॉलेज से लगे हुए मॉडलहाईस्कूल की हेडमास्टरी, जिस पर एक अँगरेज़ आई० ई० एस्० नियुक्त था, ख़ाली हुई, और आप उस दायित्वपूर्ण पद पर हेडमास्टर बना दिए गए। कुछ ही दिन बाद आप स्पेंस ट्रेनिंग-कॉलेज के स्थानापन्न अध्यक्ष कई मास रहे, और फिर अपनी मुस्तक़िल जगह पर लौट आए। सच पूछो तो यह संस्था आप ही की बनाई हुई थी। मास्टर होने पर आपके निरंतर परिश्रम से अब यह हाईस्कूल उन्नति के शिखर को पहुँच चुका है। प्रबंध, शिक्षा आदि सभी बातें प्रशंसनीय हैं, और छात्र-संख्या भी ६०० के लगभग है। वही विद्यार्थी दूसरे हाईस्कूल में भर्ती होता है, जिसे इसमें स्थान नहीं मिलता। हर्ष की बात है कि अब मॉडल हाई-स्कूल ने रायसाहब झा के समय में व्यायामिक खेलों में भी अपूर्व उन्नति कर दिखाई है, और क्रिकेट, हाकी आदि के वार्षिक दंगलों में गोरे स्कूलों को भी मात करना शुरू किया है। कई शील्ड, कप और पदक इसी स्कूल के विद्यार्थी ले जाते हैं। यह उन्नति हेडमास्टर साहब झा की कर्तव्य-निष्ठा का फल है, जिसमें उनके सहायक शिक्षकों का भाग भी अवश्य है।

आई० ई० एस्० में प्रविष्ट होने के लगभग सन् १९२० में सरकार ने आपकी इस योग्यता की क़दर करते हुए आपको रायसाहब की पदवी से विभूषित किया। रायसाहब झा-जैसे कार्यकर्ताओं को मिलने-वाली उपाधियाँ वास्तव में भूषण हैं—सच्ची कर्तव्य-निष्ठा और कार्य-परायणता का फल-स्वरूप हैं।

मॉडलस्कूल की हेडमास्टरी के अतिरिक्त राय-साहब झा को और भी कई कार्य करने पड़ते हैं। आप मध्यप्रदेशीय हाईस्कूल शिक्षा-बोर्ड के तथा विश्व-विद्यालय की फ़ेकल्टी ऑफ़् आर्ट्स और फ़ेकल्टी ऑफ़् एजुकेशन के सदस्य, बोर्ड की हिंदी-पाठ्य-पुस्तक-समिति के कनवीनर, विश्वविद्यालय के देशी भाषा-विभाग के अध्यक्ष और टेक्स्टबुक-कमेटी के सदस्य हैं। कई वर्ष तक आप बनारस हिंदू-युनिवर्सिटी की एम्० ए० परीक्षा में हिंदी के परीक्षक भी थे। इस वर्ष से आपने यह कार्य त्याग दिया है।

सन् १९०४ में जब प्रथम बार जबलपुर में प्लेग का प्रकोप हुआ था, तब आप प्लेग-ऑफ़िसर नियुक्त हुए थे। वह कैसा भयंकर समय था, सो वही जानते हैं, जिन्होंने यह कार्य किया था। यह बात हम अपने अनुभव से कह रहे हैं; क्योंकि हमने भी यह कार्य स्वयंसेवक बनकर किया था।

मूर्खतावश लोग अपने घर नहीं छोड़ते। एक-एक दिन में सवा सौ तक मृत्यु-संख्या होती थी। कुल ८-१० हज़ार मनुष्य इस प्लेग में नष्ट हुए थे। रायसाहब झा नगर के एक विभाग में प्रधान कार्य-कर्ता थे और हम दूसरे कार्य-कर्ताओं के साथ रहते थे। प्रति दिन छः बजे से हम लोग जाकर डॉक्टर के साथ बीमारों को देखते, मुर्दे उठवाने का प्रबंध करते, राज़ी होने पर रोग-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पीड़ितों को अस्पताल भेजते, मुर्दों के कपड़े जलवाकर उनके दाम दिलाते, कहाँ तक कहा जाय, मृत्यु से खम ठोककर युद्ध करते थे। बराबर ४ मास से ऊपर हम लोगों ने यह कार्य किया। झा साहब के यहाँ प्लेग से बहनोई की मृत्यु हुई, कई लोग बीमार हुए, और हमारे घर एक विद्यार्थी की मातामही स्वर्गवासिनी हुई। हमें भी छोटे प्लेग (Nimor Pestis) ने सताया। पर हम लोगों ने यह कार्य नहीं छोड़ा।

हमारे रायसाहब हिंदी-प्रेमी हैं, और जहाँ तक बन पड़ता है, हिंदी की सेवा अवश्य करते हैं। आपके स्वर्गीय लघु भ्राता पं० दयाशंकर झा बी० एस्-सी०, एल्-एल्० बी० भी अच्छे हिंदी-प्रेमी थे, और जबलपुर-साहित्य-सम्मेलन के समय उन्होंने मंत्री रहकर अच्छा परिश्रम किया था। तभी से उनका स्वास्थ्य बिगड़ा और कुछ वर्षों बाद उन्होंने अपनी जीवन-लीला का संवरण किया। पं० दयाशंकरजी ने गुजराती के प्रसिद्ध उपन्यास चंद्रकांत का अनुवाद भी कर डाला था; पर प्रकाशित नहीं कर सके थे। रायसाहब झा भी सामयिक पत्र-पत्रिकाओं में कभी-कभी लेख देते हैं। आपकी लिखी हुई तथा संपादित पाँचवीं, छठवीं और सातवीं पुस्तकें तथा साहित्य-सरोज-नामक संकलन मध्यप्रांत के मिडिल और हाई स्कूलों में पाठ्य-पुस्तकों के रूप से प्रचलित है। हमें आशा है कि अवकाश मिलने पर झा महोदय शिक्षा-विषयक पुस्तकें लिखकर हिंदी-भांडार के एक छूछे अंग की पूर्ति करेंगे।

रायसाहब एक सच्चे कुटुंब-पालक हैं। पूज्य पिता के स्वर्गवास होने पर कुटुंब-पालन का सब भार आप ही पर आ पड़ा था। आपने अपने दोनों लघु भ्राताओं को उच्च शिक्षा देकर एल-एल० बी० कराया, कनिष्ठ भ्राता दयाशंकरजी झा तो वकालत करने लगे, और मँझले भाई यमुनाशंकर झा आजकल नरसिंहपुर में एडिशनल डिस्ट्रिक जज हैं। अपने भाइयों का परलोकवास हो जाने पर उनकी गृहस्थी का सारा भार आप ही को झेलना पड़ा। आप उन कुटुंबों का निर्वाह प्रशंसनीय रीति से कर रहे हैं। आपके भ्राता पं० यमुनाशंकरजी भी आपका हाथ बटाते हैं। आपके ज्येष्ठ पुत्र पं० वेणीशंकर झा लंदन-विश्वविद्यालय की पी-एच्० डी० डिगरी के लिये अध्ययन कर रहे हैं और शीघ्र ही लौटनेवाले हैं। श्री झा महोदय की सर्विस पूरी होने को अब केवल एक वर्ष रह गया है। आगामी जुलाई में आपकी अवस्था ५४ वर्ष की हो जायगी, पर अभी तक ढलती उमर के चिह्न आपमें एक भी नहीं दीखते। इसका कारण आपका संयम तथा व्यायाम का अभ्यास है। आप पहले क्रिकेट और हाकी खेलते थे, पर अब टेनिस ही प्रतिदिन खेलते हैं, या तीन-चार मील टहला करते हैं। आप कभी बीमार भी हुए हैं, सो हमें स्मरण नहीं, यद्यपि हम विद्यार्थी दशा से ही आपको जानते हैं, और आज २५ वर्ष से तो हमारी अच्छी घनिष्ठता है।

अब भी रायसाहब गृहस्थी के भार से मुक्त नहीं हुए। ज्येष्ठ पुत्र को अभी व्यवसाय से लगाना है, और उनसे छोटे दो भ्राताओं की शिक्षा पूरी कराना है। कनिष्ठ पुत्र का विवाह भी करना है। आशा है, आप सर्विस से निकलकर जब स्वतंत्रता प्राप्त करेंगे, तो अपना अवकाश हिंदी की सेवा में व्यतीत करेंगे। और नहीं तो शिक्षा-शास्त्र पर अनेक ग्रंथ लिखकर तथा गुजराती के ग्रंथ-रत्नों का अनुवाद करके आप हिंदी-ग्रंथ-भांडार की वृद्धि ही करेंगे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वाराह-क्षेत्र की यात्रा

[लेखक, श्रीलक्ष्मीनारायणसिंह "सुधांशु" बी० ए०]

परमात्मा की स्थावर-जंगम सृष्टि की अगर कुछ भी विचित्रता देखनी हो, तो मनुष्य भ्रमण द्वारा सहज में ही देख सकता है। प्रकृति के ललाम लीला-क्षेत्र में कितने ही ऐसे कौतूहलवर्द्धक दृश्य हैं, जिन्हें देखते ही हृदय प्रफुल्लित हो जाता है। हमारे पड़ोस में ही बहुत-से ऐसे दृश्य हैं, जिनसे प्रकृति-देवी के विराट् वैभव के सिद्धहस्त रचयिता की चातुरी का पता चलता है। पर हम उन्हें उपेक्षा की दृष्टि से देखते हैं; क्योंकि हमारी आँखें नित्य उनसे लड़ती हैं। गगनांगण में नक्षत्रों का उदय होना कम आश्चर्य की बात नहीं है; पर उन्हें देखकर हमें कुछ भी कौतूहल नहीं होता।

पाश्चात्य देशों में भ्रमण की बड़ी महिमा गाई गई है। वहाँ भ्रमण के विना शिक्षा अपूर्ण समझी जाती है। अँगरेज़ी में एक कहावत है—"Travelling forms a part of education." अर्थात् भ्रमण शिक्षा का एक अंग है। भ्रमण मस्तिष्क को उर्वर करने की एक अमोघ शक्ति है, कूपमंडूकता से बचने का एक दिव्य साधन है।

किंतु भारतीय विद्यार्थी भ्रमण को महत्त्व की दृष्टि से नहीं देखते। जो उसे महत्त्व की दृष्टि से देखते भी हैं, उनमें से अधिकांश आर्थिक अभाव के कारण उसे कार्य-रूप में परिणत नहीं कर सकते। भारत की आधुनिक सांपत्तिक अवस्था ही बीच में अपनी टाँग अड़ाकर एक बाधा खड़ी कर देती है।

बहुत दिनों से हमारा विचार एक लंबी यात्रा करने का था; पर सुयोग न मिलने से उस यात्रा से हम बहुत समय तक वंचित रहे। ता० २६ ऑक्टोबर, सन् १९२५ ई० को हम लोगों ने वाराह-क्षेत्र के दर्शनार्थ रूपसपुर से प्रस्थान किया। वाराह-क्षेत्र को पुरनियाँ से ई० बी० रेलवे द्वारा जाना पड़ता है। लगभग दस स्टेशनों को पार कर तीन बजे गाड़ी जोगवनी पहुँची। जोगवनी उत्तर की ओर का अंतिम स्टेशन है। गाड़ी से उतरते ही हमारी दृष्टि नेपाल-राज्य की सीमा पर पड़ी। सीमांचल पर एक ईंट का खंभा नेपाल-राज्य को अँगरेज़ी राज्य से विभक्त कर रहा है। रेलवे-लाइन ठीक नेपाल-राज्य की सीमा तक पहुँच गई है। गाड़ी से उतरकर हम लोगों ने नेपाल-राज्य में प्रवेश किया। यहाँ सवारी का कोई उत्तम प्रबंध नहीं। रास्ता भी ठीक नहीं है, इसलिये बैलगाड़ियों को बड़ी असुविधाएँ होती हैं। रास्ते में टूटे-फूटे अनेकों काठ के पुल हैं। यहाँ के मनुष्य विशेषतः पैदल ही चलते हैं। हम तीर्थ-यात्री लोगों को भी पैदल ही चलना पड़ा; किंतु अभ्यास न होने के कारण बड़ी कठिनाइयों का सामना करना पड़ा।

चार मील उत्तर को चलने के पश्चात् हम लोग विराट्-नगर * पहुँचे। यह नगर एक बड़ा व्यापारिक-केंद्र है। यहाँ भी मारवाड़ी लोगों ने अपना अड्डा जमाया है। यहाँ नेपालियों के भी दर्शन हुए। नई सभ्यता की बू-बास की रंजाइश इन लोगों में भी देख पड़ी। पर मज़दूर-दल उसे अपने पास फटकने नहीं देता। वे सब बड़े परिश्रमी हैं। हर समय कोई-न-कोई काम किया ही करते हैं। स्त्रियाँ पुरुषों के प्रत्येक काम में पूरी सहायता देती हैं। हर एक स्त्री-पुरुष की पीठ पर एक-एक बेत वा बाँस की डाली रहती है। उसी में वे अपने बच्चे या वस्तुओं को लाद लेते हैं।

संध्या यहीं हो गई। चाँदनी रात थी। कार्त्तिक-पूर्णिमा समीप थी, अतः रहना युक्तियुक्त नहीं जान पड़ा। यहाँ

---

* लोग कहते हैं, यह वही विराट्-नगर है, जहाँ पांडवों ने अपना अज्ञातवास बिताया था। एक बड़े मैदान में विराट् राजा के प्रासाद के खँडहर जहाँ-तहाँ मिलते हैं। नेपाल-नरेश की आज्ञा से यदि यह स्थान खुदाया जाय, तो बहुत कुछ हमारी प्राचीन सभ्यता के सबूत मिल सकते हैं। इसे कुछ लोग दूसरे स्थान में भी बताते हैं; पर इतना ज़रूर है कि विराट्-नगर बिहार में ही था।—लेखक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से कूच कर दिया। दस मील चलकर हम लोग 'दोहवी-सोहवी' पहुँचे, और ब्यालू करके फिर चल पड़े। तीन मील पहुँचते-पहुँचते हम लोग निद्रा-देवी की गोद में अवश हो झूमने लगे। पग-पग पर झपकियाँ आने लगीं। आगे बढ़ना दुस्तर हो गया। अतः सब कोई एक पहाड़िए की दूकान में सो रहे। लेटते ही खर्राटे लेने लगे। लगभग चार घंटे विश्राम कर वहाँ से चल पड़े।

अनेक कठिनाइयों को झेलते हुए हम लोग जल्दी-जल्दी रास्ता नापने लगे। प्रातःकाल हमलोग सुरसरी-नदी के किनारे नित्य-क्रिया से निवृत्त हुए। वहाँ से चलते-चलते हम लोगों ने एक बड़े विकट साखू के जंगल में प्रवेश किया। इस जंगल को पार करने में हम लोगों को क़रीब तीन घंटे लगे। थोड़ी-थोड़ी दूर पर कौशिका की वक्र-धारा मिलती थी। मार्ग में ही एक स्थान पर हम लोगों ने भोजन किया। पाँच बजे संध्या को हमलोग चतरागढ़ी पहुँचे। यह बस्ती पहाड़ के नीचे कौशिका के किनारे ही बसी हुई है। दोहवी-सोहवी से यह बत्तीस मील है। सड़क रास्ता पहाड़ी होने के कारण बारह मील का चक्कर पड़ता है। वाराह-क्षेत्र कौशिका के किनारे ही है, अतः यहाँ से नाव की भी सवारी मिलती है। अधिकांश यात्री पहाड़ी रास्ते से ही जाते हैं। नाव डूबने की बड़ी आशंका बनी रहती है; क्योंकि मल्लाह धारा के प्रतिकूल नाव को खींच-कर ले जाते हैं। पर लौटते समय धारा की गति इतनी प्रबल रहती है कि नाव प्रायः चट्टानों से टक्कर खाकर डूब जाती है। इसी भय से बहुत कम यात्री नाव पर चढ़ते हैं। सुना जाता है, कुछ मल्लाह जान-बूझकर भी नाव को डुबा देते हैं, आप किसी भाँति तैरकर पार निकल जाते हैं, और मृत यात्रियों के वस्त्राभूषणों को हथिया लेते हैं।

दस बजे रात से हम लोगों ने पहाड़ पर चढ़ना आरंभ किया। रास्ता ऐसा विकट है कि स्वामी सत्यदेव की कैलाश-यात्रा का स्मरण हो आता है। यहाँ छः मील ऊपर चढ़ना और छः मील नीचे उतरना पड़ता है। कहीं-कहीं पर रास्ता इतना तंग है कि छः इंच के तलवे के लिये भी स्थान कठिनता से मिलता है। उस पर भी ख़ूबी

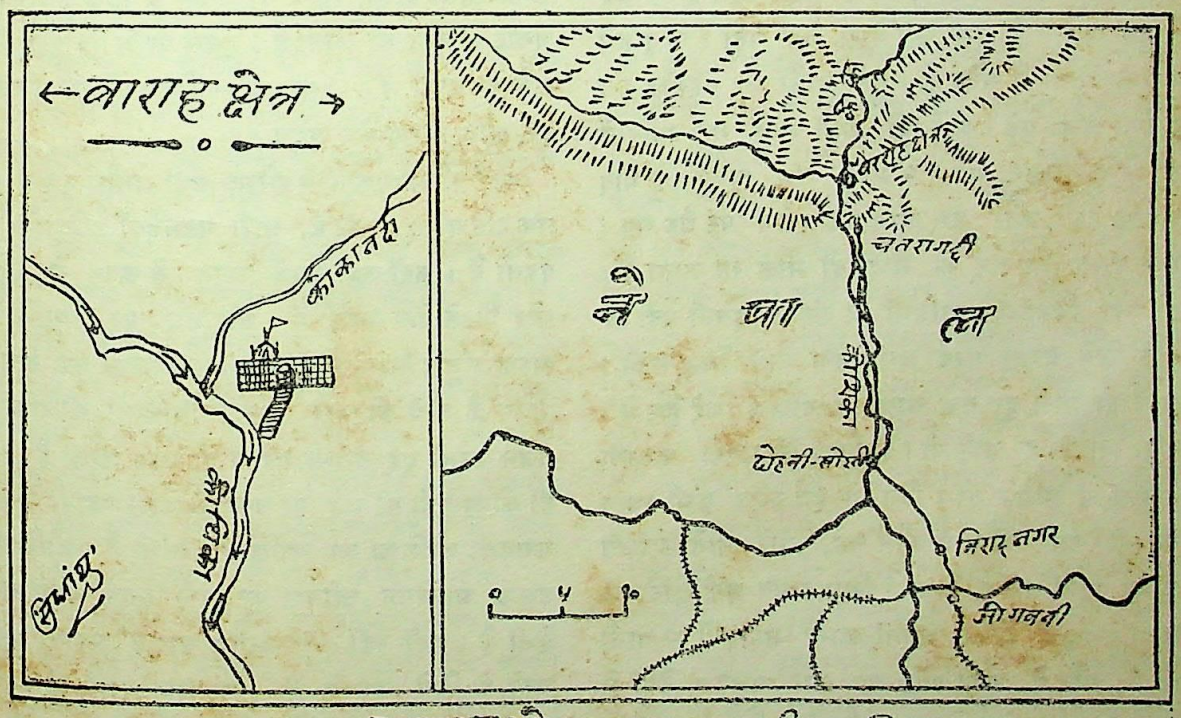

वाराह क्षेत्र-एवं-प्रकृति-चित्र।

अच्छी नहीं है। यात्रियों की भीड़ इतनी अधिक थी कि सब किसी को पूरा भोजन नहीं मिल सका। दूकानदारों की ख़ूब बन पड़ी।

यहाँ से वाराह-क्षेत्र पाँच मील की दूरी पर स्थित है। यह कि कहीं-कहीं दोनों ओर अगम्य खाई हैं। ज़रा-सा पैर फिसलने से जीवन से हाथ धोना पड़ता है। यात्रियों के धक्कम-धक्के से कितनों के तो मिज़ाज ठंडे हो जाते हैं। परंतु कहीं-कहीं पहाड़ पर इतनी समतल भूमि मिलती है कि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक बड़ी भारी सेना समा जाय। पहाड़ पर चारों ओर जंगल-ही-जंगल हैं। विशेषतः साखू के पेड़ हैं। एक-एक साखू इतना ऊँचा है कि आँख उठाकर देखने से सिर की टोपी पृथ्वी छू लेती है। कहीं-कहीं पर सेमर के वृक्ष भी प्रतिस्पर्द्धावश हो साखू से होड़ लगाकर बढ़ने की कोशिश कर रहे हैं। यहाँ एक बात बड़े मार्के की देखने में आई। वह यह कि सभी प्रकार के पेड़ प्रायः सीधे ही बढ़ते हैं। छोटे-छोटे वृक्ष भी सीधे बढ़ने में अपना सानी नहीं रखते। समतल भूमि पर गृहस्थ-पहाड़ियों की बस्तियाँ भी हैं। वे लोग पहाड़ पर ही खेती-किसानी कर अपनी जीविका-निर्वाह करते हैं। गाय-बैल भी पालते हैं। यहाँ के पहाड़ी घोड़े इतनी फुर्ती से पहाड़ पर चढ़ते हैं कि मुँह से आप-ही-आप वाह-वाह निकल पड़ती है।

पाँच घंटे में छः मील पहाड़ पर चढ़कर हम लोग तीन बजे रात को 'युग-पाखर' पहुँचे। यहाँ एक पाखर का पेड़ है। इसमें दो बड़ी डालें हैं। यात्री लोग इससे गले मिलते हैं। कोई कहते हैं कि इसमें दो बड़ी डालें होने के कारण इसका युग-पाखर नाम पड़ा, और कोई कहते हैं कि यह पेड़ बहुत प्राचीन है, इसीलिये ऐसा नाम पड़ा। परंतु हमें इसकी प्राचीनता में संदेह है। यहाँ थोड़ी देर ठहरकर हम लोग फिर चल पड़े। ज्यों-ज्यों आगे बढ़ते गए, त्यों-त्यों ख़ासी भीड़ मिलती गई। ४ मील चल चुकने के बाद प्रातःकाल हुआ, और हम लोग एक स्थान पर बैठ गए। यहाँ से वाराह भगवान् का मंदिर दो मील रह जाता है। रास्ता बड़ा विकट है। यात्रियों की संख्या इतनी बढ़ी कि बैठने के लिये अच्छी तरह जगह तक नहीं मिल सकी। मंदिर से दो मील दूर तक यात्री खचाखच भरे हुए थे। तिल-भर भी जगह नहीं थी। यात्रियों की संख्या लगभग एक लाख से अधिक थी। दिन-भर हम लोग उसी स्थान पर बैठे रहे। खाने की बात कौन कहे, आँखें धोने के लिये चुल्लू-भर पानी तक न मिला! जिस समय छोटे-छोटे बच्चे प्यास से व्याकुल होकर अपनी-अपनी माताओं से पानी माँगते थे, और वे उनकी ओर एक बार अश्रुपूर्ण नेत्रों से निहारकर निरुपाय हो चुप रह जाती थीं, उस समय कलेजा मुँह को आ जाता था। कहीं-कहीं नारंगियाँ भी मिलती थीं, पर वे भी उतने यात्रियों के लिये 'ऊँट के मुँह में ज़ीरा' के बराबर थीं। एक दूसरे का मुँह ताकते हुए सबने सारा दिन बिता दिया। भूख-प्यास से प्राण निकले जाते थे।

संध्या समय यात्रियों की भीड़ कुछ कम पड़ी। हृदय में आशा का अंकुर फूट निकला। हम लोग भी धीरे-धीरे आगे बढ़ने लगे। एक तो भीड़ से जान निकली जाती थी, उस पर भी पहाड़ियों की यह बदमाशी कि दोनों ओर से धक्के देते, यात्रियों के सिर पर लाठियाँ ठोकते और 'हटो-हटो' चिल्लाते हुए आगे बढ़ते जाते थे। कोई मरे या जिए, उन्हें इसकी कुछ परवा न थी। परतंत्र देश के यात्री चूँ तक नहीं करते थे। चुपचाप उनका प्रहार सहन कर अपनी सहनशीलता का परिचय देते थे। उन लोगों में इतना ऐक्य-बल रहता है कि एक के स्थान पर दस लठैत तैयार हो जाते हैं। फिर भला उनसे बैर-फूट के मेवे खानेवाले कैसे जीत सकते।

मंदिर के निकट ही एक स्थान पर रास्ता बड़ा भयंकर है। रास्ते की चौड़ाई छः इंच से अधिक नहीं होगी, लंबाई क़रीब दस गज़ होगी। रास्ते के दोनों ओर अगम्य खाई है। इस रास्ते को बैठकर धीरे-धीरे सरक-सरककर पार करना पड़ता है। प्रत्येक यात्री के हाथ में एक-एक लाठी रहती है, जो पहाड़ पर चढ़ने के पहले ही साखू के जंगल से काट ली जाती है। इससे पहाड़ पर चढ़ने में बड़ी सुविधा होती है। किसी प्रकार कठिनाइयों को झेलते हुए हम लोग वाराह-क्षेत्र पहुँचे।

यहाँ की प्रातःकालीन शोभा बड़ी मनोमोहक है। जहाँ तक दृष्टि पहुँच सकती है, सारी पहाड़ियाँ हरिद्वर्ण ही देख पड़ती हैं। कहीं-कहीं झरने पहाड़ के ऊपर से नीचे की ओर गिरते देख पड़ते हैं, और उस पर बाल-रवि की अरुण मंजुल किरणें सुंदरता की परा काष्ठा कर देती हैं। पहाड़ के नीचे की ओर प्रखर स्रोतस्विनी कौशिका घोर गर्जन करती हुई उत्ताल तरंगों के साथ बहती है। समीप ही कोका-नदी की क्षुद्र, पर बलवती धारा चट्टानों से लड़ती-झगड़ती कौशिका का आलिंगन करती है। कौशिका भी उसका आलिंगन स्वीकार कर उसे सहर्ष हृदय से लगा लेती है। कहीं-कहीं झुंड-के-झुंड बादल पहाड़ी वृक्षों पर चरने के लिये उतरते हैं। वे सब वृक्षों के पत्तों को 'चट-चट' कर खा जाते हैं। पत्तों का हरापन उड़ जाता है, और केवल रेशा रह जाता है। बादल के समीप जाने से शरीर पर जलकण के नन्ही-नन्ही छींटें पड़ जाती हैं। बादल-दल, जो केवल भाप का समूह है, वायु के इशारे पर इधर-उधर नाचता रहता है। किसी-किसी जगह पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कोयले की खानें मिलती हैं। उच्चतम शिखर पर चढ़कर देखने से हिमालय का प्रकृत दर्शन होता है। कोई-कोई गिरि-शिखर सूर्य की उज्ज्वल आभा से रजतवत् चमकता है, और जब सूर्य की रक्त-रंजित रश्मियाँ उस पर नृत्य करने लगती हैं, तब वही स्वर्णवत् देदीप्यमान भासित होता है। कहीं-कहीं केले और जंगली बाँस वायु के झकोरों से हिल-हिलकर अस्तित्व की घोषणा कर रहे हैं। परंतु इतनी सुंदरता होते हुए भी भयंकरता कम नहीं है।

वाराह भगवान् के मंदिर के समीप चार-पाँच मंदिर और भी हैं। मंदिर सब बड़े नहीं हैं, प्रायः सँझोले आकार के मंदिर हैं, सभी मंदिर ईंट और पत्थर से बने हैं। वाराह भगवान् का मंदिर एक बड़ी दीवाल से घिरा हुआ है। मंदिर में एक ही प्रवेश-द्वार है, खिड़कियाँ भी नहीं हैं। भीड़ के कारण न-जाने कितने यात्री मंदिर में दबकर प्राण-त्याग कर चुके हैं। एक-एक बार में मंदिर में बलात् इतने मनुष्य घुस जाते हैं कि वहाँ उनका समाना मुश्किल हो जाता है। कुशल इतनी ही है कि दो नेपाली सिपाही बाहर खड़े-खड़े लाठियों की अजस्र-वर्षा करते रहते हैं, नहीं तो कितने ही यात्रियों को अपने प्राणों से हाथ धोना पड़े। मंदिर में एक पत्थर की छोटी-सी वाराह भगवान् की मूर्ति है। वह पृथ्वी पर अपने दोनों दाँतों को टेके हुए खड़ी है। ऊपर चाँदी का छत्र है।

रास्ते की विकटता के कारण यहाँ बहुत कम दूकानें आती हैं। प्रायः सभी दूकानें पहाड़ियों की ही रहती हैं। यहाँ यात्रियों के लिये नारंगी और केला ही प्रधान भोज्य है। मिठाई बहुत कम यात्री खाते हैं; क्योंकि उसमें बड़ी दुर्गंध रहती है। क्षेत्र के चारों ओर मल-मूत्र की बड़ी अधिकता रहती है। कोई मना करनेवाला नहीं। वाराह भगवान् की अशेष महिमा विश्व-विदित है। विष्णु भगवान् के दशावतारों में एक वाराह-अवतार भी है। दैत्यों के बसुधा चुरा लेने पर उसका उद्धार वाराह भगवान् ने किया था। न-जाने कहाँ-से-कहाँ आप आकर इस गिरि-कंदरा में आ छिपे, परंतु भक्तों ने वहाँ से भी ढूँढ निकाला। हम लोग भी उनका दर्शन कर वहाँ से लौट पड़े।

लौटते समय हम लोग श्रीबनखंडी बाबा की धूनी जाने लगे। रास्ते की कठिनाइयों का क्या कहना! सखुए के जंगल के किनारे ही सूर्यास्त हो गया। रास्ता कभी का देखा-सुना नहीं था। दो घंटे की अँधेरी रात थी। हम लोग दस-बारह आदमी थे। धीरे-धीरे रात्रि का अधिकार बढ़ता जाता था। हम लोग भी सिर पर पैर रखकर भागे जा रहे थे। रास्ते की लंबाई बढ़ती ही जाती थी। समय-समय पर झींगुरों की तीखी झनकार से जी दहल उठता था। उस अँधेरी रात में जुगनू की चमक तो और भी डरा रही थी। हाथी और बाघों का डर अलग ही समाया हुआ था। पग-पग पर चित्त शंकित हो उठता था। पत्तों के गिरने की आवाज़ सुनकर कलेजा हाथ से निकल जाता था। उस समय केवल एक तारा अपनी क्षुद्र शक्ति-भर साहाय्य-प्रदान कर रहा था। चार मील चल चुकने पर सब की राय आग जलाकर डेरा डालने की हुई; क्योंकि जंगल का अंत ही नहीं मिलता था। डर के मारे सबके देह का ख़ून सूखा जाता था। इतने ही में हमारे एक साथी धड़ाम-से एक खाईं में गिर पड़े! भाग्यवश खाईं बड़ी नहीं थी, पेड़ों की जड़ पकड़कर वह बाहर निकल आए। अधिक चोट नहीं लगी।

चंद्रदेव से हम लोगों की दयनीय दशा नहीं देखी गई। वह दुःख-निवारण के लिये बाहर निकल आए; पर हम लोगों को डर से चुपचाप बैठे देखकर खिल-खिलाकर हँसने लगे। बादलों से यह उपहास नहीं देखा गया। उन्होंने चंद्रदेव के गाल पर ऐसी चपत जमाई कि आधे घंटे तक चंद्रदेव आँसू ही बहाते रहे। हम लोगों के कपड़े भी भीग गए। इसी अवसर में एक और यात्रियों की भूलती-भटकती मंडली अपनी अलबेली तान अलापती हुई वहीं आ धमकी। इस सम्मिलन से दोनों के जी-में-जी आया। रात्रि में अनशन व्रत ही रहा। आग जलाकर कुछ सो गए और कुछ बैठे रहे। उस समय जिसको जितने देवतों के नाम याद थे, उसने सभी का सुमिरन किया।

राम-राम करके प्रातःकाल हम लोग श्रीबनखंडी-धूनी पहुँचे। किंवदंती है कि यहाँ सखुए के पेड़ में आम फलते हैं। आश्चर्य! आम खाने की लालसा से जिन-जिन सखुए के पेड़ों में उक्त बाबाजी की आज्ञा से उनके शिष्यों ने चिमटा मारा था, उन्हीं पेड़ों में आम फलने लगे हैं। धूनी के निकट दस-पंद्रह आम के पेड़ हैं। जब हम लोगों ने वहाँ के साधुओं से उन सखुए के पेड़ों के विषय में पूछा, जिनमें आम फलते हैं, तो उन्होंने कहा कि वे सब सखुए यहाँ से एक मील पर हैं। घने जंगल के कारण हम लोग वहाँ तक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहीं पहुँच सके। श्रीबनखंडी बाबा की धूनी अब तक जलती है। उसमें नेपाल-नरेश की ओर से ३६० लकड़ियाँ एक बार काटी जाती हैं, और वे ही लकड़ियाँ बारी-बारी से जलाई जाती हैं। प्रसाद में उसी धूनी की भस्म मिलती है। यहाँ सदावर्त बँटता है। श्रीबनखंडी बाबा का पलँग ज्यों-का-त्यों रक्खा हुआ है। ऊपर एक मसहरी टँगी हुई है। पूजन-सामग्री भी प्रस्तुत है। मकान बहुत पुराना है। धुएँ से छत काली हो गई है। ख़र्च के लिये एक छोटी-मोटी ज़मींदारी है। कहा जाता है कि उक्त महात्मा की धूनी यहाँ थी और गद्दी थी चतरा में, जिसका परिचय पाठकों को पहले ही दिया जा चुका है। आप लँगोटा-घाट में स्नान करते थे; ये सब स्थान एक दूसरे से सात-आठ मील के फासले पर हैं। इस संप्रदाय के आचार्य हैं श्रीचंद्र-बाबाजी। धूनी के दर्शन कर हम लोग वहाँ से लौट पड़े। रास्ते में जोगवनी स्टेशन पर हमारी सरकार के आबकारी-विभाग की पुलीस रहती है। जो यात्री नेपाल से गाँजा-भाँग ले जाते हैं, उन्हें वह गिरफ़्तार कर लेती है। इसका कारण यह है कि नेपाल में गाँजा-भाँग बहुत सस्ता है। अतएव यदि वहाँ से इस प्रकार गाँजा-भाँग आने लग जाय, तो सरकार को आबकारी महकमे की आय में बड़ा भारी घाटा सहना पड़े। यही कारण है, जो सरकार ने वहाँ पर आबकारी पुलीस का अड्डा बनाया है। वाराह-क्षेत्र की तरफ़ नेपाल-नरेश का कुछ भी ध्यान नहीं है। ज़रा-सा ध्यान देने से प्रायः सारी कठिनाइयाँ सहज में दूर हो सकती हैं। मंदिर का भी प्रबंध अच्छा नहीं। यहाँ विशेषतः उपाध्याय-ब्राह्मण और क्षत्रियों ही की आबादी ज़्यादातर है। वाराह भगवान् की पूजा के लिये एक पुरोहित रहता है। यात्री सब वर्ष-भर में एक ही बार कार्त्तिक-पूर्णिमा के अवसर पर दर्शन करने के लिये जाया करते हैं।

मराठी और हिंदी का साहित्य

[लेखक, श्रीयुत नरदेव शास्त्री, वेदतीर्थ]

(१)

महाराष्ट्र-वाङ्मय प्रत्येक विषय से परिपूर्ण है। उसके साहित्य को ठोस साहित्य कह सकते हैं। ज्ञानेश्वर, तुकाराम, समर्थ रामदास मोरो पंत, वामन पंडित आदि प्राचीन महाराष्ट्र-ग्रंथकारों ने महाराष्ट्र-वाङ्मय को इतना ज्ञान-भक्ति-रस-परिप्लुत कर रक्खा है कि केवल उतने से ही महाराष्ट्र-वाङ्मय का सिर सदैव ऊँचा रह सकता है। ज्ञानेश्वर, तुकाराम तथा महाराष्ट्र के अन्य संत-मंडल के भक्ति-रस-परिप्लुत ग्रंथों के परिशीलन से यह बात स्पष्ट हो जाती है कि इस विषय में महाराष्ट्र को अन्य भाषाओं के साहित्य से कुछ भी सीखने की आवश्यकता नहीं।

(२)

धर्म और राष्ट्र-धर्म (जिसको रामदास स्वामी महाराष्ट्र-धर्म कहते हैं) का तत्त्व तो समर्थ रामदास स्वामी ने अपने दासबोध-नामक प्रसिद्ध ग्रंथ में इस सुंदरता से समझाया है कि इस प्रकार का ग्रंथ अन्य भाषा के साहित्य में मिल सकेगा या नहीं, इसमें संदेह है। मोरो पंत, वामन पंडित आदि कवियों की कृतियों को देखकर महाराष्ट्र-साहित्य अपने कवियों के लिये गर्वित हो सकता है। प्राचीन महाराष्ट्र-वाङ्मय में एक गुरु समर्थ रामदास को छोड़कर संत-मंडल के भक्ति-रस-प्रधान ग्रंथ मिलते हैं। धर्म और राष्ट्र-धर्म, दूसरे शब्दों में कहना हो तो—धर्म और राजनीति का मेल डालनेवाले—धर्म के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साथ राष्ट्र-धर्म का प्रसार करनेवाले—भक्ति-प्रधान मार्ग का रुख़ बदलकर धर्म के साथ संसार को न भूलने-देनेवाले अकेले—अपने ढंग के एक समर्थ रामदास ही हुए। अर्वाचीन महाराष्ट्र-वाङ्मय पर गुरु समर्थ रामदास के विचारों की छाप है। अर्वाचीन महाराष्ट्र-लेखकों में कैलासवासी विष्णुशास्त्री चिपलूनकर आदि की शाखा समर्थ रामदास की ही अनुयायी रही है। तिलक-शाखा के लोग भी समर्थ रामदास के ही अनुयायी हैं। यही कारण है कि महाराष्ट्र में राष्ट्र-धर्म का अत्यधिक प्रचार है।

(३)

महाराष्ट्र-वाङ्मय को देखने से यह भी विदित होता है कि महाराष्ट्र-इतिहासकारों को बखारी (राजघरानों का इतिहास) लिखने की भी रुचि थी, और यह अभिरुचि न होती, तो आज महाराष्ट्र स्वाभिमान-शून्य हो गया होता। इन्हीं इतिहासकारों की कृपा से आज महाराष्ट्र-इतिहास-संशोधक-मंडल के पास इतनी अधिक ऐतिहासिक सामग्री एकत्रित है कि कदाचित् ही एतद्देशीय किसी अन्य भाषा के साहित्य में स्वदेश-विषयक इतनी सामग्री होगी। महाराष्ट्र के भाटों ने भी अपने स्फूर्ति-जनक पोवाड़ों (पद्यमय इतिवृत्तों) में आर्वाचीनों के लिये बहुत कुछ सामग्री छोड़ रक्खी है। यह पोवाड़ों की पद्धति अब नष्ट हो गई, यह खेद का विषय है। इस प्रकार महाराष्ट्र-साहित्य भक्ति, ज्ञान, राष्ट्र-धर्म, उच्च कोटि के काव्य, गद्य-पद्य-नाटक, कथा, गाथा इत्यादि से परिपूर्ण है। अभाव है, तो एक विषय का। हिंदी-साहित्य में जैसा शृंगार का आधिक्य है, वैसा महाराष्ट्र-वाङ्मय में नहीं।

(४)

महाराष्ट्र-प्रदेश में जब से पाश्चात्य शिक्षा-दीक्षा का प्रचार हुआ, तब से आर्वाचीन महाराष्ट्र-ग्रंथकारों की रुचि और मनोवृत्ति पाश्चात्य-साहित्य को स्वभाषा में लाने की ओर हुई, और इस विषय में आर्वाचीन ग्रंथकारों ने इतना अधिक स्तुत्य प्रयत्न किया है, इतनी अधिक सामग्री एकत्रित कर छोड़ी है कि एक महाराष्ट्र-बालक अँगरेज़ी का एक अक्षर पढ़े विना पाश्चात्य साहित्य के मर्म को स्वभाषा में जान सकता है। महाराष्ट्र-ग्रंथकारों की मनोवृत्ति की प्रशंसा करनी पड़ती है कि उन्होंने पाश्चात्य-साहित्य को स्वभाषा में उल्था तो किया, किंतु उन ग्रंथों पर छाप रक्खी अपने ही विचारों की। इससे महाराष्ट्र-बालक उस साहित्य का अध्ययन करने पर भी न तो अंध अनुकरण-प्रिय होता है, और न स्वाभिमान-शून्य ही बनता है। उदाहरणार्थ शेक्सपियर के समस्त नाटक महाराष्ट्र में अनुवादित हुए हैं, किंतु अब उनके नाम देखिए 'त्राटिका' 'झुंझाररात्र' 'सगलाचा घोटाला' इत्यादि। जिन्होंने इन नाटकों को महाराष्ट्र रंग-मंच पर देखा है, वे जानते हैं कि महाराष्ट्र-निवासी इन नाटकों को देखकर महाकवि शेक्सपियर के काव्यों का रसास्वाद भी लेते हैं, और स्वत्व भी नहीं खोते। महाराष्ट्र के वर्तमान पत्रकारों अर्थात् संपादकों की शैली भी प्रशंसनीय है। वे नवीन शब्दों द्वारा अपने वाङ्मय की अभिवृद्धि कर रहे हैं। किसी भी भाषा का कोई नया शब्द देखते ही महाराष्ट्र-भाषा में उसके लिये नए प्रतिशब्द को गढ़कर उसको स्वभाषा में मिला लेने की चिंता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महाराष्ट्र-विद्वानों को रहती है। उपन्यासों में महाराष्ट्र-वाङ्मय किसी अन्य भाषा से न्यून नहीं; किंतु इस विषय में यदि महाराष्ट्र ने किसी अंश में किसी का अनुकरण किया है, तो वह बंग-भाषा के उपन्यासों का। महाराष्ट्र के उपन्यास अधिकतर ऐतिहासिक रहे हैं; किंतु अब इधर बीस वर्ष में सामाजिक उपन्यासों में आशातीत वृद्धि हुई है। अनुवादात्मक तथा छायात्मक ग्रंथों में समाज-शास्त्र, इतिहास-शास्त्र, अर्थशास्त्र, विज्ञान आदि की विशेषता है। कला-कौशल-विषयक ग्रंथ बहुत कम देखने को मिलेंगे—इसका कारण यह है कि महाराष्ट्र में व्यापार-बुद्धि नहीं है। उधर उसकी प्रवृत्ति ही नहीं है। महाराष्ट्र के पास जितनी बुद्धि की अधिकता है, उतनी ही धन की न्यूनता अथवा शून्यता। महाराष्ट्र-विद्वानों में उत्तम-से-उत्तम विषयों के निष्णात पंडित आपको मिलेंगे, लेखक, अध्यापक, प्रोफ़ेसर, राष्ट्र-धर्म-प्रसारक मिलेंगे।

(५)

अब हम अपने अनुभव से हिंदी के विषय में कुछ लिखेंगे। हिंदी वाङ्मय में आशातीत परिवर्तन तथा अभिवृद्धि हो रही है, यह बात तो अब किसी से भी छिपी नहीं। जबसे राष्ट्र-भाषा का प्रश्न राष्ट्र के सम्मुख आया और हिंदी को राष्ट्र-भाषा का सम्मान मिलने लगा, तब से इसके साहित्य में सर्वतोमुखी उन्नति होने लगी है। हिंदी का प्राचीन साहित्य अधिकतर भक्ति और शृंगार से परिप्लुत है। प्राचीन व्रजभाषा के साहित्य में भक्ति और शृंगार, दोनों साथ-साथ चलते हैं। इसीलिये वह जन-साधारण के लिये भी मनोहारी, अतएव प्रिय हो रहा है और रहेगा। महाराष्ट्र में भक्ति शृंगार-रस-विहीन है, इस बात को मानना पड़ेगा। गोस्वामी तुलसीदास ही प्रथम महाकवि हुए हैं, जिन्होंने भक्ति-मार्ग को शुद्ध भक्ति-मार्ग बनाने के हेतु उसको शृंगार-विहीन कर दिया। उनकी तुलसी-रामायण इस बात का उज्ज्वल प्रमाण है। महाराष्ट्र-वासियों को तुलसी-रामायण जो इतनी प्रिय है, उसका मुख्य कारण यही है। वीर-भूमि महाराष्ट्र को या तो भक्ति-रस चाहिए, अथवा वीररस। यह भूमि शृंगार के लिये नहीं है। हिंदी-साहित्य में गद्य-पद्य नाटकों, काव्यों की अभिवृद्धि हो रही है। किंतु उनमें छायात्मक, अनुवादात्मक रचनाओं की भरमार है। ऐतिहासिक साहित्य का अत्यंताभाव तो नहीं, किंतु प्रध्वंसाभाव अवश्य है। राष्ट्र-धर्म के विषय में हिंदी-साहित्य पर-मुखापेक्षी हो रहा है। हिंदी-भाषा-भाषियों में महत्त्वाकांक्षा की अभिवृद्धि है; किंतु स्वाभिमान-शून्यता खटकती है। किंतु इस वर्तमान शतक के अंत तक इस राष्ट्र-भाषा के साहित्य-भांडार में इतनी अधिक अभिवृद्धि होगी कि उसकी कल्पना इस समय नहीं की जा सकती। हम हिंदी तथा महाराष्ट्र-साहित्य की तुलना संक्षेप से इस प्रकार कर सकते हैं—

महाराष्ट्र-साहित्य	हिंदी-साहित्य
१—प्राचीन साहित्य, भक्ति-रस-प्रधान।	१—प्राचीन साहित्य, भक्ति तथा शृंगार-रस-प्रधान।
२—समर्थ रामदास स्वामी ने रुख़ फेरा और उसको राष्ट्र-धर्म-प्रधान बनाया।	२—गोस्वामी तुलसीदासजी ने भक्ति को शुद्ध भक्ति का स्वरूप दिया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

३—इतिहास-परिपूर्ण।

४—अर्वाचीन साहित्य—अपने ढंग का।

५—राष्ट्र-धर्म की छाप।

६—महाराष्ट्र विद्वान् साहित्याभिमानी होते हैं।

७—महाराष्ट्र-साहित्य पर संस्कृत का प्रभाव अधिक रहता है।

८—यदि उर्दू का अधिक संसर्ग रहा, तो महाराष्ट्र-साहित्य हिंदी-साहित्य से बिछड़ा ही रहेगा।

९—महाराष्ट्र-साहित्य व्यंग्य-पूर्ण है।

१०—महाराष्ट्र-साहित्य महाराष्ट्र-भाषा-भाषियों में सीमित रहेगा; किंतु अपना प्रभाव अन्य भाषाओं पर डालता रहेगा।

३—इतिहास-विहीन।

४—अर्वाचीन साहित्य—केवल अनुकरण, छायात्मक ग्रंथों की अधिकता।

५—राष्ट्र-धर्म की छाप अब कहीं पड़ने लगी है।

६—हिंदी-साहित्य-सेवियों में अब स्वाभिमान जाग्रत् होने लगा है।

७—हिंदी-साहित्य पर संस्कृत और उर्दू-साहित्य, दोनों का प्रभाव है। अर्वाचीन साहित्य पर वंग-साहित्य का भी प्रभाव पड़ रहा है।

८—हिंदी-साहित्य पर महाराष्ट्र के राष्ट्र-धर्म का प्रभाव पड़े विना न रहेगा।

९—इसमें अन्य प्रकार की मधुरताएँ हैं।

१०—किसी समय समस्त राष्ट्र-भाषा का साहित्य होगा।

थोड़े शब्दों में इन दो बहनों के विषय में मैं इतना ही लिख सकता हूँ। ये दोनों बहनें परस्पर के गुणों से लाभ उठाकर राष्ट्र-भाषा तथा राष्ट्र-धर्म द्वारा भारत का कल्याण-संपादन करने में सर्वथा समर्थ हैं। आशा है, दोनों भाषा-भाषी इस विषय में गंभीर विचार करेंगे। इस संक्षिप्त सिंहावलोकन में इससे अधिक कुछ भी नहीं लिखा जा सकता।

भारत-गवर्नमेंट से रजिस्ट्री किया हुआ, बड़े-बड़े राजों-महाराजों तथा अनेक प्रतिष्ठित अनुभवी सज्जनों द्वारा परीक्षित; शरीर के बाहर भीतर होनेवाले सैकड़ों रोगों की एक ही अचूक औषधिः—

पीयूषधारा

मूल्य प्रति शीशी १॥) दर्जन का १५)

पी० एस० वर्मन पो० जम्होर, (गया)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्या 'पालिया'-ग्राम पाली है?

[लेखक, पं० लोचनप्रसाद पांडेय]

बलपुर ज़िले के बिलहरी (Bilahari)-नामक स्थान में एक शिलालेख पाया गया था। आजकल वह शिलालेख नागपुर के 'अजायबघर' (Museum) में है। उसमें चेदि-नरेश केयूरवर्ष (युवराजदेव) की महिषी नोहला द्वारा एक शिवमंदिर के निर्माण का वर्णन है। उस शिलालेख से विदित होता है कि केयूरवर्ष (युवराजदेव) के पिता का नाम था मुग्धतुंग, और मुग्धतुंग के पिता थे कोकल्लदेव। कोकल्लदेव तथा मुग्धतुंग, दोनों बड़े प्रतापी और वीर नरेश थे—

Of Kokalladeva, it is recorded that he put up two unprecedented columns of his fame (*i. e.* he supported Krishna Raj in the south and Bhojdeva in the north) and Mugdhtunga is eulogised as having conquered the lines of the country by the shore of the eastern sea and wrested *Pali* from the lord of Kosala.

"C. P. Inscriptions."

कोकल्लदेव ने दो कीर्तिस्तंभ स्थापित किए थे—दक्षिण में कृष्णराज को सहायता पहुँचाकर तथा उत्तर में भोजदेव को बल देकर। मुग्धतुंग ने 'पूर्वांबुधिकूल' के 'पाली'-नामक स्थान को कोसलेंद्र से छीनकर आसमुद्र अपना अधिकार जमाया था। मुग्धतुंग के समय में कोसलेंद्र के अधीन समुद्र के तटवर्ती देश भी थे। संभवतः उन्होंने उन्हें ओढ्र या उत्कल-नरेश से प्राप्त किया था। मुग्धतुंग के पौत्र, केयूरवर्ष (युवराजदेव) के पुत्र, लक्ष्मणराज ने 'कोसल-नरेंद्र' को पराजित कर उनसे 'कालिय' की मूर्ति छीन ली थी। कालिय की मूर्ति कोसल-नरेंद्र ने ओढ्र-नरेश से प्राप्त की थी। यथा—

"On his warlike expeditions he is said to have reached the shores of the western ocean and to have worshipped *Siva* at the famous templeof Someswara or Somanath in Gujrat and he (लक्ष्मणराज) is also reported to have defeated the ruler of Kosala and to have despoiled him of a valuable effigy of Kaliya which had been obtained from the lord of Odra and which had been subsequently dedicated to *Someshwar* by Lakshman Raja."

"C. P. Inscriptions."

'मुकुर'-नामक उड़िया मासिक पत्र के भाग ७, संख्या २-३ (सन् १९१२) में 'पालिआर विरंचि-मंदिर'-नामक एक लेख श्रीगोविंदचंद्र मिश्र ने प्रकाशित कराया था। हम उसी का सारांश यहाँ देते हैं—

बालेश्वर ज़िले का प्राकृतिक दृश्य बड़ा ही मनोमोहक है। उसके पूर्व दिशा में वंगोपसागर प्रशांत भाव से स्थित है, और पश्चिम की ओर नीलगिरि, मयूरभंज और केंउझर राज्य की पर्वतमाला क्रमशः निम्नोच्चरूप में प्राचीर की समता करती है। उत्तर में सुवर्णरेखा नदी और दक्षिण में वैतरणी नदी प्रवाहित हो रही हैं।

इस ज़िले की 'भद्रक' तहसील या सब-डिवीज़न में 'दोलसाही' एक बड़ा जनपद है। उसके निकट ही 'पालिया'-नामक एक बड़ा ग्राम है। पालिया में विरंचि का मंदिर है। भद्रक-रेल-स्टेशन से पालिया जाने के लिये 'दोलसाही' तक पक्की सड़क है। आगे कच्ची सड़क है। भद्रक-स्टेशन से पालिया केवल ६ कोस है। भद्रक-तहसील की प्रसिद्ध नदी सालंदी की एक शाखा नदी का नाम कुंडी है। यह कुंडी नदी 'पालिया'-ग्राम को चारों ओर से घेरे हुए है। वर्षा-ऋतु में यहाँ जल-ही-जल दिखलाई पड़ता है। यह भूखंड 'तलमाल' अर्थात् 'तलहटी' की श्रेणी में है। लोग कहते हैं, पहले यह भूखंड समुद्र का एक अंश था। कभी-कभी समुद्री जीवों के अस्थि-कंकाल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यहाँ की मिट्टी में निकला करते हैं। आजकल समुद्र यहाँ से केवल २½ या ३ कोस पर है।

पालिया के विरंचि-मंदिर का जीर्ण-संस्कार बर्गी या मराठा लोगों ने, आज से १००-१५० वर्ष पूर्व, कराया था। यह मंदिर, बृहदाकार न होने पर भी, बहुत छोटा नहीं है। भुवनेश्वरस्थ 'केदारेश्वर' के मंदिर से यह मंदिर उच्चता में न्यून नहीं। मेघेश्वर और अनंत वासुदेव के देवालय जिस माल-मसाले से और जिन कारीगरों द्वारा निर्मित हुए हैं, यह मंदिर भी उसी ढंग की सामग्री और उन्हीं कारीगरों के हाथों बना है, ऐसा अनुमान किया जा सकता है। प्रस्तर-खोदित कारु-कार्य प्रशंसनीय है; पर वह जीर्ण-संस्कार के समय बहुत कुछ नष्ट हो गया है। मंदिर के पूर्व-द्वार में नवग्रहों की मूर्तियाँ हैं। मंदिर में चार दरवाज़े हैं। मंदिर के मध्य में दुर्गाजी की मूर्ति है। विरंचि (ब्रह्मा) एक प्रस्तर-स्तंभ के शिरोभाग में अवस्थित हैं। उनके चार मुख स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होते हैं। पर उनकी अवस्थिति देखने से ज्ञात होता है कि वह सर्वप्रथम उस मंदिर में वर्तमान रूप में न थे। अनुसंधान से जाना जाता है कि यह मूर्ति समुद्र-कूल से लाई जाकर मंदिर में स्थापित की गई है। कोई-कोई इस मूर्ति को 'चतुर्वेद' कहा करते हैं। प्रवाद है कि ब्रह्मा सृष्टि-कार्य समाप्त कर समुद्र-कूल में तपस्या करने में व्रती हुए थे।

जिस दुर्गा की मूर्ति का उल्लेख आगे किया गया है, वह मूर्ति तथा मंदिर में जो शिव तथा पार्वती की मूर्तियाँ हैं, वे चिकने तथा निलाई लिए हुए काले रंग के पत्थरों की बनी हैं। भुवनेश्वर में जो मूर्तियाँ पाई जाती हैं, उनके समान ये भी हैं। किंतु 'विरंचि' की मूर्ति वैसे पत्थर की या उस समय की नहीं जान पड़ती।

मंदिर के गात्र पर पाली-भाषा के कई लेख देख पड़ते हैं। पर उनका अर्थ अप्रकाशित है। मंदिर का हाता ख़ूब लंबा-चौड़ा है। उसके भीतर एक चौकोन बावली (वापी) है। भुवनेश्वर में जैसी बावलियाँ देखने में आती हैं, यह ठीक उसी आकार-प्रकार की है। निर्माण-प्रणाली भी ठीक वैसी ही है।

'विरंचि' का विग्रह विकलांग नहीं है; पर मंदिर के अन्यान्य देव-देवीगण पूर्णावयव में नहीं पाए जाते। अनेकों खंडित हैं। हाते के आस-पास कई कूप हैं। एक कूप को निकट के मुसलमान-पुरे के लोग काम में लाते हैं। जब काला पहाड़ ने उड़ीसा पर चढ़ाई की थी, तब इन लोगों के पूर्वजों को उसने मुसलमान बनाकर हिंदू-धर्म और हिंदू-जाति से अपना द्रोह व्यक्त किया था।

पहले पालिया के इस मंदिर में 'अन्न-महाप्रसाद' भोग लगाने की व्यवस्था थी, ऐसा जान पड़ता है; क्योंकि मंदिर के चारों ओर आध मील तक मिट्टी की हाँडियों के टुकड़े अत्यधिक परिमाण में पड़े मिलते हैं।

यहाँ नारियल, बाँस (करील), सुपारी, ताल, आम आदि सब श्रेणी के वृक्ष हैं।

अब भी मंदिर के नाम पर 'भूमि' है। दैनिक सेवा के लिये ब्राह्मण नियुक्त है। उत्तम खिचड़ी का भोग लगा करता है। पालिया के निकट गुप्त-गंगा-नामक एक स्थान है, जहाँ मेला लगा करता है। इस स्थान को लोग अत्यंत पवित्र मानते हैं।

विचार करने पर ज्ञात होता है कि उक्त कीर्ति का निर्माण शैव राजों के राजत्वकाल में हुआ था। उस समय पालिया एक समृद्धिशाली राज्य था। काला पहाड़ के अत्याचार से इस मंदिर और स्थान को विशेष क्षतिग्रस्त होना पड़ा। मंदिर को मूर्ति से रहित देखकर किसी भक्त ने समुद्र-कूल से वर्तमान विरंचि-मूर्ति को लाकर वहाँ स्थापित कर दिया है। आजकल यह स्थान—'पालिया'—सरकार अँगरेज़ के ख़ास दख़ल में है।

यही मिश्र महाशय के उड़िया लेख का सारांश है। रायबहादुर हीरालाल साहब लिखते हैं—

कोकल्ल के १८ पुत्र थे। ज्येष्ठ का नाम मुग्धतुंग (प्रसिद्ध धवल) था। वह त्रिपुरी के सिंहासन पर सन् ९०० ई० के लगभग बैठा, और उसके भाई अनेक मंडलों के मांडलिक बना दिए गए। उनमें से एक लाफा ज़मींदारी के अंतर्गत 'तुम्माण' में जाकर जम गया।

❀ ❀ ❀

तुम्माण की शाखा महाकोसल और त्रिकलिंग अपने को स्वाधीन करने में दत्त-चित्त हुए, और त्रिपुरी की मूल गद्दी ने अपना विस्तार उत्तर में नेपाल तक, पूर्व में बंगाल तक; पश्चिम में गुजरात तक और दक्षिण में कर्णाटक-निकटस्थ कुंतल-देश तक कर दिखाया।

मुग्धतुंग ने कोसल के राजा से लड़ाई की थी, और उससे पूर्व-समुद्र की ओर की प्रधान पुरी 'पाली' छीन ली थी—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"विजित्य पूर्व्वाम्बुधि कूलपालीःपालीस्समादाय च कोसलेन्द्रात्;
निरन्तरोद्वासितवैरिधारया धामाधिकः खड्गपतिर्य आसीत्।"
("श्रीशारदा" से)

मैं सोचता हूँ, समुद्र-तटवर्ती इसी 'पालिया'-नामक नगरी को मुग्धतुंग ने कोशलेंद्र से छीना था। काल-क्रम से 'पाली' का नाम बदलकर 'पालिया' हो गया। ऊपर के दिए हुए वर्णन से स्पष्ट है कि एक समय 'पालिया' समृद्धि-शाली स्थान था।

हमें ज्ञात नहीं कि 'पालिया' के 'विरंचि-मंदिर' के शिलालेखों की ओर पुरातत्त्व-विभाग का ध्यान आकृष्ट हुआ है या नहीं?

वीरभूमि ज़िले में चेदि के राजा कर्णदेव का एक शिला-लेख मिला है। यह भी इस बात का समर्थन करता है कि चेदि के राजों ने बंगाल में भी विजय-पताका फहराई थी—

"Of greater interest is the Cheli inscription of the 11th Century A. D., of the time of king *karna* discovered on a small decorative pillar at Paikore (in Birbhum District). Its main interest lie in the fact that it confirms the conjectural invasion of Bengal by the powerful ruler of the Central India, gathered from references in Chedi inscriptions and in the Tibetan life of the Buddhist *Atisa* or *Dipaukara*."*

अनेक पुरातत्त्व-प्रेमी, विलासपुर-ज़िले के पाली-नामक स्थान का श्लोक में वर्णित 'पाली' होना अनुमान करते थे; पर विलासपुर से तो समुद्र सैकड़ों मील दूर है। यद्यपि विलासपुर के पाली में एक अतीव प्राचीन तथा शिल्पकला-समन्वित शिव-मंदिर है, और कई शिला-लेख भी हैं; पर वह 'पूर्वांबुधिकूल' पर नहीं है। उसका दूसरा नाम 'झाझनगर-पाली' भी है। श्लोक में वर्णित पाली ज़िला बालेश्वर या बालासोर (कटक-कमिश्नरी) के पालिया स्थान से अन्य नहीं, ऐसी मेरी धारणा है।

इस लेख में 'कालिय' का उल्लेख है। रायबहादुर हीरालाल साहब की कृपा से हमें वह श्लोक, जिसमें 'कालिय' का वर्णन किया गया है, प्राप्त हुआ, जो नीचे उद्धृत किया जाता है—

जित्वा कोसलनाथमोड्रनृपेतराप्तस्तु यः कालियो
रत्नस्वर्णमयः स येन विहितस्सोमेश्वराभ्यर्च्चनम्।

"After defeating the Lord of Kosala he made the (effigy of) Kaliya wrought of jewels and gold which was obtained from the prince of Odra a reverencial offering to Somesvara." †

तपस्वी

[लेखक, कविवर गुलाब]

(१)

इस सुंदर तप-कानन में,
हे ऋषि, हे बल्कलधारी!
यह फैल रही है कैसी,
आनंद-ज्योति अति प्यारी?

(२)

आश्चर्य-भाव में भूले,
अनुराग-बाग़ के माली;
क्यों ध्यान-मग्न तुम बैठे,
भरकर फूलों से डाली।

(३)

आकाश ओऽम् से झंकृत,
अलि-दल पराग-रस पीता;

---

* Annual Report of the Archaeological Survey of India 1921-1922. Page 115.

† अँगरेज़ी-अनुवाद के लिये हम मॉरिस-कॉलेज, नागपुर के छात्र प्रिय बाबू रामसेवक अग्रवाल के कृतज्ञ हैं।—लेखक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है गूँज रही त्रिभुवन में,
ऋषिराज ! तुम्हारी गीता ।

(४)

सुंदर फूलों की फुहियाँ,
झर-झर तुम पर झरती हैं ;
नत-मस्तक वृक्ष खड़े हैं,
पत्तियाँ पवन करती हैं ।

(५)

यह भक्ति, मुक्ति की पूजा !
हैं सूर्य-चंद्रमा किंकर ;
आरती प्रकृति करती है,
गोधूलि रूप धारण कर ।

(६)

हैं खेल रहे बालक-सा,
मृग-शिष्य विनोद-खिलौना ;
आकाश श्वेत अंबर है,
दूर्वा-दल दिव्य बिछौना ।

(७)

फिर जटा जाल फैलाकर,
भगवान, भक्त हुलसाओ ;
हम लोट रहे चरणों पर,
गुरुवर, गुरु-मंत्र सुनाओ ।

(८)

वह सत्य-प्रदीप जला दो,
हो अंत न कविता-'लौ' का ;
भिड़ जाय सिंधु के तट पर,
कवि को सोने की नौका ।

मा

(उपन्यास)

[लेखक, पं० विश्वंभरनाथ शर्मा कौशिक]

सातवाँ परिच्छेद

सरे दिन सबेरे सात बजे के पश्चात् पुरोहित लालताप्रसाद घासीराम के घर पर पहुँचे । घासीराम उस समय ठंडाई छान रहे थे । पुरोहितजी को देखकर उन्होंने प्रणाम किया, और एक चटाई पर बिठाया । पुरोहितजी कुछ मुसकिराकर बोले—"विजया छन रही है ?"

घासीराम हँसकर बोले—"और क्या, इसके विना तो मुझे एक क्षण भी चैन नहीं ।"

"अच्छा है, आजकल तो इसकी बहार ही है । बहू कहाँ है ?"

"रसोई की तरफ़ होगी ।"

"कहो, कुछ ज़िकर आया था ?"

"हाँ आया था, मैंने ही ज़िकर उठाया था ।"

"अच्छा फिर ?"

"मैंने तो आपसे कहा ही था कि वह न मानेगी । वही बात हुई ।"

पुरोहितजी कुछ गंभीर होकर बोले—"तो क्या उसने नाहीं कर दी ?"

"बिलकुल ! पर उसकी नाहीं से क्या आता जाता है—मैं तो राज़ी हूँ ।"

पुरोहितजी कुछ क्षण तक चुपचाप बैठे रहे । इतनी देर में घासीराम ने ठंडाई तैयार करके पुरोहितजी से पूछा—"लीजिएगा थोड़ी-सी ?"

"मैं बहुत कम पीता हूँ ।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"अजी थोड़ा-सी ले लीजिए । थोड़ी-सी में क्या होगा ।"

पुरोहितजी ने भी थोड़ी-सी लेकर पी । घासीराम भी पीकर उठे और हुक़्क़ा लेकर पुरोहितजी के पास बैठ गए ।

पुरोहितजी बोले—"तो फिर क्या सलाह है ?"

"सलाह क्या, मैं तो राज़ी हूँ, श्यामू की मा को आप समझा-बुझाकर देखिए, मान जाय तो अच्छा ही, नहीं तो फिर देखा जायगा ।"

इतना कहकर घासीराम ने चिल्लाकर कहा—"श्यामू की मा, ज़रा-सी आग तो दे जाओ ।"

श्यामू की मा तवे में आग लेकर आई । पुरोहितजी पर दृष्टि पड़ते ही उसके मुख की रंगत बदल गई । माथे पर बल पड़ गए । पुरोहितजी ने पूछा—"कहो बहू, अच्छी तरह ?"

सुलोचना ने कुछ रुखाई से उत्तर दिया—"हाँ, अच्छी ही-सी हूँ ।"

घासीराम चिलम भरते हुए बोले—"यह शंभुआ आज सबेरे ही से कहाँ उड़ गया ?"

"क्या जानूँ, कहीं गया होगा ।"

पुरोहितजी बोले—"आज यहाँ लड़के नहीं दिखाई पड़ते ।"

घासीराम बोल उठे—"शंभुआ तो आज सबेरे ही से ग़ायब है । वे दोनों उधर रसोई की तरफ़ खेल रहे हैं ।"

सुलोचना तवा लेकर जाने लगी । उसी समय पुरोहितजी बोले—"बहू, तुमसे कुछ काम था । क्या रोटी चढ़ाने जा रही हो ?"

सुलोचना के कुछ उत्तर देने के पूर्व ही घासीराम बोल उठे—"अजी, अभी तो रोटी में देर है । अभी सात ही तो बजे हैं ।"

पुरोहितजी ने कहा—"अच्छा, तो थोड़ी देर बैठकर मेरी दो-दो बातें सुन लो ।"

"उधर मे जाकर श्यामू को ले आऊँ, तो फिर बैठूँ—" यह कहकर सुलोचना चली गई ।

इधर पुरोहितजी ने घासीराम से कहा—" भई, किस तरह बात उठाऊँ । मुझे तो डर लगता है कि कहीं बहू अप्रसन्न....."

"अजी नहीं, अप्रसन्न होने की क्या बात है ? अच्छा आप न कहिएगा ; मैं ही कहूँगा ।"

उसी समय सुलोचना श्यामू को गोद में लिए आ पहुँची । साथ-साथ लड़की भी आई ।

सुलोचना कुछ दूर पर सामने बैठ गई, और बोली—"कहो, क्या कहना है ।"

घासीराम बोले—"कहना-सुनना क्या है, वही कल वाली बात तय करने के लिये आए हैं ।"

सुलोचना ने रात को जो कुछ स्थिर किया था, वह सब स्वप्नवत् हो गया । सबेरे उठते ही श्यामू की मीठी-मीठी बातें सुनकर उसका विचार फिर बदल गया, और उसने सोच लिया था कि चाहे जो हो, मैं श्यामू को अपनी आँखों की ओट कभी न होने दूँगी ।

पुरोहितजी कहने लगे—"बहू, तुमने घासीराम से सब सुन ही लिया होगा, मुझे उन बातों के दुहराने की कोई आवश्यकता नहीं । अब मैं केवल यह जानना चाहता हूँ कि तुम्हारी क्या इच्छा है ?"

पुरोहितजी पर एक तीव्र दृष्टि डालकर सुलोचना बोली—"मेरी इच्छा पूछते हो ? पुरोहितजी, भगवान की दया से तुम्हारे भी एक लड़का है । मेरी इच्छा जानना चाहते हो, तो अपने उस लड़के की मा से पूछो । अपनी घरवाली से पूछो ; देखो, वह क्या कहती है ।"

पुरोहितजी सन्न हो गए । वह नहीं समझ सके कि इसका क्या उत्तर दें ।

सुलोचना फिर कहने लगी—"मा के जी को मा ही समझ सकती है, बाप कभी नहीं समझ सकता । माँ के जी को तुम नहीं समझ सकते । मा का जी पत्थर का होता है; इसीलिये कहती हूँ कि अपनी घरवाली से पूछो ।"

पुरोहितजी सिर खुजलाते हुए बोले—"बहू, यह तो तुम्हारा कहना सब ठीक है; परंतु बात यह है कि पिता का जी इतना कड़ा भी नहीं होता कि अपने पुत्र के दुख-सुख का ध्यान न रक्खे ।"

सुलोचना बोली—"सुख-दुख की तो बात ही नहीं है । बात तो यह है कि मा की इच्छा लड़के को अपने से अलग करने की हो सकती है, या नहीं ! सुख-दुख तो दूसरी बात है ।"

अब पुरोहितजी का साहस कुछ बढ़ा । बोले—"मैं तो केवल सुख-दुख की बात कह रहा हूँ । यह भी मानता हूँ कि मा लड़के को कभी अलग न करना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चाहेगी ; पर साथ ही मा को यह भी तो देखना चाहिए कि अलग करने में लड़के को सुख मिलता है, या पास रखने में ? मेरी समझ में तो मा का कर्तव्य यह है कि लड़के के सुख पर दृष्टि रक्खे, चाहे लड़का पास रहे, चाहे दूर। यह मैं तुम्हें विश्वास दिलाता हूँ कि इसे किसी प्रकार का दुख मिलना तो दूर रहा, अनेकों प्रकार के सुख मिलेंगे। पढ़ेगा, लिखेगा, खानेप-हनने को कुछ कमी न रहेगी और अंत में सारी संपत्ति का मालिक होगा। प्रेम की जो कहो, तो तुम यह बात आप सोच सकती हो कि जिसका हृदय लड़के के लिये व्याकुल रहता है, वह एक लड़का पाकर उससे कितना प्रेम करेगी। ब्रजमोहन की स्त्री इस समय लड़के के लिये अधीर हो रही है। इस समय यदि उसे मिट्टी का लड़का भी दिया जाय, तो वह उससे प्रेम करे। फिर जब वह स्वजाति का सुंदर बालक पावेगी, तो कितना प्रेम करेगी।"

सुलोचना हँसी। उस हँसी में घृणा थी, अविश्वास था। उसने कहा—"प्रेम करेगी! मैं मानती हूँ, प्रेम करेगी; पर उसी तरह, जैसे एक बालक अपने खिलौने से प्रेम करता है। मा अपने बच्चे को खिलौना नहीं समझती, वह उसे अपनी आत्मा समझती है, अपना प्राण समझती है। ऐसा प्रेम वह कहाँ से लावेगी। कोई भी नहीं ला सकता, उसी पर क्या है ?"

पुरोहितजी हँसकर बोले—"यह तो न कहो, मैंने ऐसी-ऐसी स्त्रियाँ देखी हैं, जो पराए लड़के को अपने पेट के लड़के से अधिक चाहती हैं।"

सुलोचना—"चाहती होंगी।"

पुरोहितजी सोचने लगे कि यह गाँठ सुलझती नहीं दिखाई पड़ती। सुलोचना किसी प्रकार यह बात स्वीकार न करेगी। यद्यपि वह स्वयं मन में सुलोचना की बातों को बहुत कुछ ठीक मान रहे थे, किंतु स्वार्थभाव ने हृदय को इतना घेर लिया था कि उस पर सुलोचना के हृदयोद्गारों की पूरी चोट नहीं पड़ती थी।

अंत को पुरोहितजी बोले—"ख़ैर, तुम्हारी ख़ुशी, यदि तुम्हारी इच्छा नहीं है, तो जाने दो, और कहीं देखूँगा। मैं उनसे वादा कर आया हूँ कि कोई-न-कोई लड़का अवश्य ढूँढूँगा। मैंने तो सोचा था कि अपने मित्र ही की संतान मिले ; क्योंकि इस समय उनकी संपत्ति डेढ़-दो लाख के लगभग है। पुरोहितजी ने यह अंतिम तीर छोड़ा था। घासीराम तो इसकी चोट से तड़प गए ; किंतु सुलोचना के हृदय में पुत्र-प्रेम की इतनी गर्मी थी कि यह तीर वहाँ तक पहुँचते-पहुँचते ठंडा हो गया।

सुलोचना उठकर जाने लगी। पुरोहितजी ने साहस करके फिर कहा—"बहू, इसे ज़रा फिर सोच लेना, कोई जल्दी नहीं है। अभी मैं चार-छः दिन ठहरा रहूँगा। मैं ईश्वर को साक्षी देकर कहता हूँ कि मेरी यह हार्दिक इच्छा है कि यह लाभ तुम्हें ही हो। तुम्हारी ही संतान इसका सुख भोगे।"

सुलोचना ने इसका कोई उत्तर न दिया, चुपचाप चली गई। पुरोहितजी घासीराम से बोले—"भाई, बहू तो मानेगी नहीं, यह निश्चय है।"

घासीराम बिगड़कर बोले—"न मानेगी, तो सिर पर हाथ धरकर रोवेगी भी—मैं और तरह का आदमी हूँ। भई, मेरी तो राय है कि तुम उनसे जाकर ठीक-ठाक कर लो। इस झोल में न पड़ो। अरे हाँ, जितना ही छानोगे, उतना ही किरकिरापन निकलेगा।"

पुरोहित—"अजी ठीक क्या करना है ? ठीक तो हई है। मुझे केवल यह सोच-विचार है कि अगर बहू का जी दुखा, तो मैं उनको मुँह दिखाने लायक़ न रहूँगा।"

घासीराम नाक-भौं चढ़ाकर बोले—"अजी बैठो भी। कहने लगे मुँह दिखाने लायक़ न रहूँगा। इसमें मुँह न दिखाने की कौन बात है ? कुछ तुम इसका बाप मार रहे हो। सच पूछो, तो तुम इसके साथ बड़ा उपकार कर रहे हो; पर यह न-जाने कैसी औंधी खोपड़ी की स्त्री है कि समझती ही नहीं।"

पुरोहित—"हाँ, यह बात तो ठीक ही है, मैं तो तुम्हारे भले ही की कह रहा हूँ। एक लाख की संपत्ति कुछ थोड़ी नहीं होती।"

घासीराम तिलमिलाकर बोले—"भाई, तुम आज ही जाकर उनसे ठीक कर लो। समझे, ऐसा न हो कि कोई दूसरा खड़ा हो जाय।"

पुरोहित—अरे राम कहो—"यह काम तो मेरे ही हाथों होगा। बिना मेरी सलाह कुछ नहीं हो सकता।"

घासीराम प्रसन्न होकर बोले—"तो फिर क्या डर है। रही शंभू की मा की बात सो उससे तुम बेफ़िक्र रहो। मैं उसे किसी-न-किसी प्रकार राज़ी कर लूँगा।"

"अच्छा, तो मैं चलता हूँ", यह कहकर पुरोहितजी उठ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खड़े हुए। चलते-चलते उन्होंने कहा—"तो मैं ठीक करूँगा?"

घासीराम—"हाँ-हाँ, ठीक कर लो।"

पुरोहित—"ऐसा न हो कि पीछे नाहीं कर दो, और मेरी बात जाय।"

घासीराम—"नहीं गुरू, भला ऐसा हो सकता है?"

पुरोहितजी चल दिए।

पुरोहितजी के चले जाने के पश्चात् घासीराम बड़-बड़ाते हुए सुलोचना के पास पहुँचे। उस समय सुलोचना आटा गूँद रही थी। दोनों भाई-बहन रसोई के सामने थोड़ी दूर पर खेल रहे थे।

घासीराम हुक्क़ा लेकर रसोई के पास जा बैठे, और बोले—"देखो शंभू की मा, तुम्हारी ये बातें अच्छी नहीं हैं। कहा मानो हठ न करो। हठ करने से कोई लाभ न होगा। समझीं?"

सुलोचना ने उत्तर दिया—"क्या कहूँ तुम तो कुछ सोचते-समझते नहीं, तुम्हें तो इस समय...क्या कहूँ कुछ कहते नहीं बनता।"

घासीराम बिगड़कर बोले—"हाँ-हाँ, मैं तो नासमझ हूँ, उल्लू हूँ। तुम्हीं तो एक बड़ी समझदार हो। तुम्हें अपने बाल-बच्चों का भी कुछ ध्यान है? ऐसा अच्छा अवसर मिल रहा है, तुम उसे हाथ से खो रही हो और उलटा मुझी को उल्लू बनाती हो। वाह! यह अच्छी रही। याद रक्खो, तुम न मानीं, तो अच्छा न होगा। मैं तो यह काम करूँगा ही।"

सुलोचना की आँखों में आँसू आ गए। करुण स्वर में बोली—"तो कर लो, मैं क्या मना करती हूँ? तुमने तो आँखों पर ठीकरी रख ली। इतना भी नहीं सोचते कि नाते-रिश्तेदार सुनेंगे, तो क्या कहेंगे?"

घासीराम—"नाते-रिश्तेदार भला क्या कह सकते हैं? मैं कोई ऐसा काम तो कर ही नहीं रहा हूँ कि जो आज तक किसी ने न किया हो। दुनिया में न-जाने कितने लड़के गोद लिए जाते, और कितने दिए जाते है।"

सुलोचना—"दुनिया की भली चलाई। दुनिया में चोरी भी तो होती है, पाप भी तो होता है। फिर इसमें क्या?"

घासीराम—"तो लड़का गोद देना चोरी है, पाप है—क्यों?"

सुलोचना—"चोरी-पाप नहीं है, तो कोई भला काम भी नहीं है।"

घासीराम—"क्या कहूँ, न-जाने तुम्हारी कैसी उलटी समझ है। अपनी क़सम, कभी-कभी तुम्हारी समझ पर मुझे बड़ा क्रोध आता है। तुम इतना नहीं सोचतीं कि हमारा लड़का लाखों की संपत्ति का मालिक होगा। हमारे दुख-दलिद्दर भी दूर हो जायँगे, और हमारे दूसरे लड़के भी पढ़-लिख जायँगे।"

घासीराम के हठ और दुख-दरिद्र दूर हो जाने की बात ने सुलोचना को फिर कुछ डगमगाया। वह इस पर फिर विचार करने लगी।

घासीराम कहने लगे—"लड़का भी कहीं सात समुंदर पार नहीं जाता, जो देखने को तरस जायँगे। एक शहर—एक जगह, जब चाहे देखा करना, और जब उनसे हमारा यह संबंध हो जायगा, तो आना-जाना भी रहेगा ही। फिर न-जाने तुम क्यों हिचकती हो?"

सुलोचना एक ठंडी साँस भरके बोली—"यह तो सब ठीक है, पर—"

घासीराम—"पर क्या?"

सुलोचना—"क्या कहूँ, मेरा जी किसी तरह नहीं मानता कि श्यामू को अपने से जुदा करूँ।"

घासीराम ताड़ गए कि सुलोचना कुछ-कुछ राह पर आ रही है। उन्होंने बड़े स्नेहपूर्वक कहा—"देखो, सोच लो। तुम्हारी 'हाँ' पर सब अच्छा-ही-अच्छा है, और 'नहीं' पर सब बुरा-ही-बुरा। भला जी भी कोई ऐसी चीज़ है, जो क़ाबू में न आवे। अपने जी के पीछे तुम सब गुड़ गोबर किए डाल रही हो। ऐसा जी भला किस काम का? अच्छा, तुम इस पर सोच लो। शाम को बातचीत होगी। तुम रोटी बनाओ, तब तक मैं ज़रा शंभू को देखूँ, न-जाने पाजी आज सबेरे से कहाँ चला गया। इसके मारे और भी नाक में दम है।"

यह कहकर घासीराम सुलोचना के पास से चले आए।

आठवाँ परिच्छेद

उसी दिन शाम को लालताप्रसाद व्रजमोहनलाल के घर पहुँचे। व्रजमोहनलाल तो उस समय दूकान पर थे। उन्होंने सावित्री को अलग ले जाकर कहा—"बहू, लड़का तो एक मिला है, और ऐसा मिला कि देखकर तुम्हारा चित्त प्रसन्न हो जायगा। चाँद का टुकड़ा है।"

सावित्री प्रसन्न होकर बोली—"इसीलिये तो मैंने यह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साहित्य-संसार के दिग्गज विद्वानों द्वारा प्रशंसित

सुप्रसिद्ध

गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय, लखनऊ

की उत्कृष्ट और सचित्र पुस्तकें

गंगा-पुस्तकमाला की उत्तमोत्तम पुस्तकें

१. उपन्यास

हृदय की प्यास (सचित्र)—लेखक, हिंदी के सुप्रसिद्ध लेखक आयुर्वेदाचार्य पं० चतुरसेन शास्त्री; मूल्य १॥), २)

रंगभूमि (दो भाग)—लेखक, श्रीयुत प्रेमचंदजी मूल्य ५), ६)

विजया (सचित्र)—मूल-लेखक, श्री० शरच्चंद्र चट्टोपाध्याय; अनुवादक, सुधा-संपादक पं० रूपनारायण पांडेय कविरत्न; मूल्य १॥), २)

बहता हुआ फूल (सचित्र)—मूल लेखक, बाबू चारुचंद्र बंद्योपाध्याय बी० ए०; अनुवादक, सुधा-संपादक पं० रूपनारायण पांडेय कविरत्न; मूल्य २॥), ३)

पवित्र पापी (सचित्र) (एक रूसी उपन्यास का अनुवाद)—अनुवादक, पं० व्रजकृष्ण गुर्टू बी० ए०, एल्-एल्० बी० और कविराज विद्याधर विद्यालंकार; मूल्य ३), ३॥)

विचित्र योगी—लेखक, श्रीद्वारकाप्रसाद मौर्य बी० ए०, एल्-एल्० बी; मूल्य १), १॥)

मा—लेखक, पं० विश्वंभरनाथ शर्मा कौशिक; मूल्य लगभग ३)

संसार-रहस्य अथवा अधःपतन—लेखक, ठाकुर प्रसिद्धनारायणसिंह बी० ए०; मूल्य १॥), २)

सीधे पंडित—लेखक, ठाकुर प्रसिद्धनारायणसिंह बी० ए०; मूल्य १॥)

२. गल्प और कहानियाँ

चित्रशाला (सचित्र)—लेखक, विश्वंभरनाथ शर्मा कौशिक; मूल्य २), २॥)

अद्भुत आलाप—लेखक, हिंदी-साहित्य-संसार के सर्वमान्य महारथी पं० महावीरप्रसादजी द्विवेदी; मूल्य १), १॥)

जातक-कथा-माला—अनुवादक, बाबू रामचंद्र वर्मा। मूल्य १), १॥)

नंदन-निकुंज—लेखक, स्व० श्रीचंडीप्रसादजी बी० ए० 'हृदयेश'; मूल्य १), १॥)

अश्रुपात (सचित्र)—लेखक, ख्वाजा हसन निज़ामी; अनुवादक, पं० श्रीराम शर्मा बी० ए०; मूल्य १॥), १॥)

जासूस की डाली (सचित्र)—लेखक, बाबू गोपालराम गहमरी, जासूस-संपादक; मूल्य १), १॥)

नाट्यकथाऽमृत—लेखक, प्रिंसिपल चंद्रमौलि शुक्ल एम्० ए०, एल्० टी०; मूल्य १), १॥)

प्रेम-गंगा—अनुवादक, स्व० पं० ईश्वरीप्रसाद शर्मा, संपादक "हिंदूपंच"; मूल्य १), १॥)

प्रेम-प्रसून—लेखक, श्रीप्रेमचंदजी; मूल्य १॥), १॥)

प्रेम-द्वादशी (सचित्र)—लेखक, श्रीप्रेमचंदजी; मूल्य १), १॥)

मंजरी (सचित्र)—अनुवादक, सुधा-संपादक पं० रूपनारायणजी पांडेय कविरत्न; मूल्य १), १॥)

३. नाटक

कर्बला—लेखक, श्रीप्रेमचंदजी; मूल्य १॥), २)

कीचक—लेखक, श्रीभगवन्नारायण भार्गव बी० ए०, एम्० एल्० सी०; मूल्य १), १॥)

कृष्णकुमारी (सचित्र)—लेखक, सुधा-संपादक पं० रूपनारायणजी पांडेय कविरत्न; मूल्य १), १॥)

प्राँजहाँ (सचित्र)—लेखक, सुधा-संपादक पं० रूपनारायणजी पांडेय कविरत्न; मूल्य १॥), १॥)

जयद्रथ-वध—लेखक, पं० गोकुलचंद्र शर्मा बी० ए०; मूल्य १॥), १॥)

संचालक गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय, २६-३०, अमीनाबाद-पार्क, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दुर्गावती (सचित्र)—लेखक, लखनऊ-युनिवर्सिटी के हिंदी-लेक्चरार पं० बदरीनाथजी भट्ट बी० ए०; मूल्य १), १॥)

बुद्ध-चरित्र (सचित्र)—अनुवादक, सुधा-संपादक पं० रूपनारायणजी पांडेय कविरत्न ; मूल्य ॥।), १।)

वीर भारत—लेखक, पं० भवानीदत्त जोशी बी० ए०, एल्-एल्० बी० ; मूल्य ॥।), १।)

वेणी-संहार नाटक—लेखक, पं० महावीरप्रसादजी द्विवेदी ; मूल्य ॥=), १=)

वरमाला (सचित्र)—लेखक, श्रीयुत गोविंदवल्लभ पंत ; मूल्य ॥।), १।)

पूर्व-भारत—लेखक, हिंदी के धुरंधर विद्वान् "मिश्रबंधु" ; मूल्य ॥।=), १।=)

४. व्यंग्य, हास्य और प्रहसन

अचलायतन—मूल-लेखक, श्रीरवींद्रनाथ ठाकुर; अनुवादक, सुधा-संपादक पं० रूपनारायण पांडेय कविरत्न ; मूल्य ।)

ईश्वरीय न्याय—लेखक, प्रोफ़ेसर श्रीरामदास गौड़ एम्० ए० ; मूल्य ॥)

मूर्ख-मंडली—लेखक, सुधा-संपादक पं० रूपनारायण पांडेय कविरत्न ; मूल्य ॥=), १=)

मिस्टर व्यास की कथा—लेखक, स्वर्गीय पंडित शिवनाथजी शर्मा बी० ए० ; मूल्य २॥), ३)

रायबहादुर—मूल-लेखक, मौ० मौलियर ; अनुवादक, पं० लल्लीप्रसाद पांडेय ; मूल्य ॥।), १।)

लबड़धोंधों—लेखक, लखनऊ-युनिवर्सिटी के हिंदी-लेक्चरार पं० बदरीनाथ भट्ट बी० ए० ; मूल्य ॥।), १।=)

५. काव्य

आत्मार्पण—लेखक, द्वारकाप्रसाद गुप्त "रसिकेंद्र"; मूल्य लगभग ॥)

उषा—लेखक, स्व० श्रीशिवदास गुप्त "कुसुम"; मूल्य ॥=)

पराग—लेखक, सुधा-संपादक पं० रूपनारायण पांडेय कविरत्न ; मूल्य ॥), १)

पुष्पांजलि—लेखक, आनरेबुल श्यामविहारी मिश्र एम्० ए० और रायबहादुर पं० शुकदेवविहारी मिश्र बी० ए०; मूल्य १॥)

भारत-गीत—लेखक, कवि-सम्राट् पं० श्रीधर पाठक ; मूल्य ॥), १)

मानस-मुक्तावली—संग्रहकर्ता, रायबहादुर बाबू मुकुंदलालजी गुप्त ; मूल्य ।=)

६. गद्य-साहित्य

निबंध-निचय—लेखक, हिंदी के उत्कृष्ट समालोचक पं० जगन्नाथप्रसाद चतुर्वेदी ; मूल्य १।), १॥।)

विश्व-साहित्य—लेखक, सरस्वती-संपादक श्रीपदुमलाल-पुन्नालाल बख़्शी बी० ए० ; मूल्य १॥), २)

साहित्य-सुमन—लेखक, स्व० पं० बालकृष्ण भट्ट ; मूल्य ॥=), १=)

हिंदी—लेखक, लखनऊ-विश्वविद्यालय के हिंदी-लेक्चरार पं० बदरीनाथ भट्ट बी० ए० ; मूल्य ॥=), १=)

७. समालोचनाएँ

देव और बिहारी—लेखक, पं० कृष्णविहारी मिश्र बी० ए०, एल्-एल्० बी० ; १॥।), २।)

भवभूति—अनुवादक, हिंदी-संसार के सुप्रसिद्ध विद्वान् पं० ज्वालादत्त शर्मा ; मूल्य ॥=), १=)

हिंदी-नवरत्न—लेखक, हिंदी-संसार के धुंरधर समालोचक "मिश्रबंधु" ; मूल्य ४॥)

८. जीवन-चरित्र

कारनेगी और उसके विचार—लेखक, श्रीउमरावसिंह कारुणिक ; मूल्य ॥=)

केशवचंद्र सेन—लेखक, भारतीय हृदय ; मूल्य १), १॥)

प्रभु-चरित्र—लेखक, पं० शिवराम शुक्ल ; मूल्य ॥।)

प्राचीन पंडित और कवि—लेखक, आचार्य पं० महावीरप्रसाद द्विवेदी ; मूल्य ॥।=), १।=)

बंकिमचंद्र चटर्जी—लेखक, सुधा-संपादक पं० रूपनारायण पांडेय कविरत्न ; मूल्य १), १॥)

सुकवि-संकीर्तन (सचित्र)—लेखक, साहित्य-महारथी पं० महावीरप्रसादजी द्विवेदी ; मूल्य १।), १॥।)

९. इतिहास

इँगलैंड का इतिहास (तीन भाग)—लेखक, डॉ० प्राणनाथजी विद्यालंकार पी०-एच्० डी० ; मूल्य ३), ४)

संचालक गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय, २९-३०, अमीनाबाद-पार्क, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जापान का इतिहास—लेखक, ऑनरेबुल पं० श्याम-विहारी मिश्र एम्० ए०, रायबहादुर पं० शुकदेवविहारी मिश्र बी० ए० ; मूल्य ॥।=)

स्पेन का इतिहास—लेखक, ऑनरेबुल पं० श्यामविहारी मिश्र एम्० ए०, रायबहादुर पं० शुकदेवविहारी मिश्र बी० ए० ; मूल्य ॥।=)

१०. अर्थशास्त्र और व्यापार

भारतीय अर्थशास्त्र—लेखक, भूतपूर्व प्रेम-संपादक बाबू भगवानदासजी केला ; मूल्य २॥), ३॥)

विदेशी विनिमय—लेखक, प्रयाग-विश्वविद्यालय के अर्थ-शास्त्र अध्यापक श्रीदयाशंकर दुबे एम्० ए०, एल्-एल्० बी० ; मूल्य १), १॥)

११. कृषि

उद्यान (सचित्र)—लेखक, श्रीशंकरराव जोशी एग्रिकल्चरल ऑफ़िसर ; मूल्य १=), १॥=)

किसानों की कामधेनु (सचित्र)—लेखक, हिंदी के सुप्र-सिद्ध लेखक पं० गंगाप्रसाद अग्निहोत्री ; मूल्य ।=)

कृषि-मित्र—लेखक, पं० गंगाप्रसाद पांडेय L. A. G. सुपरिंटेंडेंट एग्रिकल्चर ; मूल्य ।-)

कृषि-विद्या—लेखक, पं० अश्विनीकुमार शुक्ल; मूल्य ॥), १)

तरु-जीवन—लेखक, पं० गंगाशंकर पंचोली; छप रहा है।

१२. स्वास्थ्य और चिकित्सा

तात्कालिक चिकित्सा (सचित्र)—लेखक, बाबू लालबहादुरलाल; मूल्य १), १॥)

संक्षिप्त शरीर-विज्ञान—लेखिका, श्रीमती हेमंतकुमारी भट्टाचार्य; मूल्य ॥=)

संक्षिप्त स्वास्थ्य-रक्षा—लेखिका, श्रीमती हेमंतकुमारी भट्टाचार्य; मूल्य ॥=)

स्वास्थ्य की कुंजी—लेखक, डॉ० बाबूराम गर्ग ; मूल्य १), १॥)

१३. वैज्ञानिक

भूकंप—लेखक, सुप्रसिद्ध विद्वान् बाबू रामचंद्र वर्मा; मूल्य १)

मनोविज्ञान—लेखक, प्रिंसिपल पं० चंद्रमौलि शुक्ल एम्० ए०, एल्० टी० ; मूल्य ॥), १)

१४. नवयुवकोपयोगी

जीवन का सदुपयोग—अनुवादक, श्रीहरिभाऊ उपाध्याय, संपादक हिंदी नवजीवन ; मूल्य १), १॥)

एशिया में प्रभात—मूल लेखक, पाल रिचर्ड ; अनुवादक, श्रीठाकुर कल्यानसिंह शेखावत बी० ए० ; मूल्य ॥), १)

भिखारी से भगवान्—अनुवादक, ठाकुर बाबू नंदनसिंह बी० ए० ; मूल्य १), १॥)

सुख तथा सफलता मूल्य १)

१५. योग

प्राणायाम—लेखक, ठाकुर प्रसिद्धनारायणसिंह बी० ए० ; मूल्य ॥।=), १।=)

कर्मयोग—लेखक, श्रीसंतराम बी० ए ; मूल्य ॥), १)

हठयोग—लेखक, ठाकुर प्रसिद्धनारायणसिंह बी० ए० ; मूल्य लगभग २)

योग-शास्त्रांतर्गत धर्म—लेखक, ठाकुर प्रसिद्धनारायणसिंह बी० ए० ; मूल्य ॥)

योगत्रयी—लेखक, ठा० प्रसिद्धनारायणसिंह बी०ए०; मूल्य॥)

राजयोग—लेखक, ठा० प्रसिद्धनारायणसिंह बी०ए०; मूल्य १॥)

योग की कुछ विभूतियाँ—लेखक, ठाकुर प्रसिद्धनारायणसिंह बी० ए० ; मूल्य ॥)

जीवन-मरण-रहस्य—लेखक, ठाकुर प्रसिद्धनारायणसिंह बी० ए० ; मूल्य ।=)

योग-दर्पण—लेखक, बाबा कमलाकमल एम्० ए० ; मूल्य लगभग १)

१६. महिला-माला की मनोहर मणियाँ

कमला-कुसुम (सचित्र)—लेखिका, श्रीमती गिरिजा देवी मूल्य १)

क्षमा—लेखक, कविराज श्रीप्रतापसिंह वैद्य, हिंदू विश्वविद्यालय के आयुर्वेद विभाग के सुपरिंटेंडेंट ; मूल्य ॥।=)

गुप्त-संदेश (दो भाग)—लेखक, श्री डॉक्टर युद्धवीर-सिंह ; मूल्य १=)

देवी पार्वती (सचित्र)—लेखक, मुं० बहरामजी मूल्य १)

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वी द्रौपदी (सचित्र)—लेखक, कविवर श्रीरामचरितजी उपाध्याय ; मूल्य ॥)

नारी-उपदेश—लेखक, श्रीगिरिजाकुमार घोष ; मूल्य ॥)

पत्रांजलि—मूल-लेखक, श्रीसतीशचंद्र चक्रवर्ती ; अनुवादक पं० कात्यायनीदत्त त्रिवेदी ; मूल्य ॥)

भारत की विदुषी नारियाँ—संपादिका, श्रीमती कृष्णकुमारी; मूल्य ॥)

भारतीय स्त्रियाँ—अनुवादक, बाबू रामचंद्र वर्मा; मूल्य १॥), २)

महिला-मोद—लेखक, साहित्य-महारथी पं० महावीरप्रसादजी द्विवेदी ; मूल्य ॥)

लक्ष्मी (सचित्र) लेखक, श्रीगिरिजाकुमार घोष; मूल्य ॥=)

वनिता-विलास (सचित्र)—लेखक, भूतपूर्व सरस्वती-संपादक पं० महावीरप्रसादजी द्विवेदी ; मूल्य ॥)

१७. बालविनोद-वाटिका के सुंदर सुमन

इतिहास की कहानियाँ (सचित्र)—लेखक, मुं० जहूरबख़्श हिंदी-कोविद ; मूल्य ॥=)

कीड़े-मकोड़े (सचित्र)—लेखक, पं० भूपनारायणजी दीक्षित बी० ए०, एल्० टी० ; मूल्य ॥=)

खिलवाड़—लेखक, पं० भूपनारायणजी दीक्षित बी० ए०, एल्० टी० ; मूल्य ।)

खेल-पचीसी—लेखक, श्रीप्रतिपालसिंहजी ; मूल्य ।=)

गधे की कहानी (सचित्र)—लेखक, पं० भूपनारायणजी दीक्षित बी० ए०, एल्० टी० ; मूल्य ॥), १)

नटखट पाँड़े (सचित्र)—लेखक, श्री पं० भूपनारायणजी दीक्षित बी० ए०, एल्० टी० ; मूल्य १॥), २)

परोपकारी हातिम (सचित्र)—लेखक, मुं० जहूरबख़्श हिंदी-कोविद ; मूल्य १), १॥)

बालनीति-कथा (दो भाग)—मूल-लेखक, हिंदू विश्वविद्यालय, काशी के प्रिंसिपल और प्रो-वाइस-चांसलर श्रीयुत ए० बी० ध्रुव एम्० ए० एल्-एल्० बी० ; अनुवादक, लखनऊ-विश्वविद्यालय के हिंदी-लेक्चरार श्रीपं० बदरीनाथ भट्ट बी० ए०; मूल्य २), ३)

भगिनी-भूषण—लेखक, स्व० श्रीबा० गोपालनारायणसेनसिंह बी० ए० ; मूल्य =)

भारत के सपूत (सचित्र)—लेखक, मुं० जहूरबख़्श हिंदी-कोविद ; मूल्य ॥=)

लड़कियों का खेल (सचित्र)—लेखक, स्व० श्रीगिरिजाकुमार घोष ; मूल्य ॥)

सुघड़ चमेली—लेखक, श्रीयुत रामजीदास भार्गव ; मूल्य=)

हँसी-खेल—लेखक, श्रीजगमोहन 'विकसित'; मूल्य लगभग ॥)

१८. सुकवि-माधुरी-माला के अनुपम रत्न

बिहारी-रत्नाकर—प्रणेता, व्रजभाषा-साहित्य के पारदर्शी विद्वान् बाबू जगन्नाथदास "रत्नाकर" बी० ए०; मूल्य ५)

मतिराम-ग्रंथावली—संपादक, पं० कृष्णविहारी मिश्र बी० ए०, एल्-एल्० बी ; मूल्य २॥), ३)

मिश्रबंधु-विनोद (दो खंड)—लेखक, पं० गणेशविहारी मिश्र, माननीय पं० श्यामविहारी मिश्र एम्० ए० और रा० ब० पं० शुकदेवबिहारी मिश्र बी० ए० ; मूल्य

प्रथम खंड २), २॥)

द्वितीय खंड ३), ३॥)

१९. प्रकीर्णक पुस्तकें

अयोध्यासिंह उपाध्याय— मूल्य =)

देशहितैषी श्रीकृष्ण—लेखक, स्वर्गीय स्वनाम-धन्य पं० राधाचरण गोस्वामी ; मूल्य =)

द्विजेंद्रलाल राय—लेखक, सुधा-संपादक पं० दुलारेलाल भार्गव और पं० रूपनारायण पांडेय कविरत्न ; मूल्य =)

पूर्ण-संग्रह—संपादक, पं० कृष्णविहारी मिश्र बी० ए०, एल्-एल्० बी० ; मूल्य १॥), २)

प्रायश्चित्त-प्रहसन—लेखक, सुधा-संपादक पं० रूपनारायण पांडेय कविरत्न ; मूल्य ।)

मध्यम व्यायोग—लेखिका, श्रीमती सुशीलादेवी जायसवाल; मूल्य =)

स्काउट-मार्चिंग (सचित्र)—लेखक, पं० मनोहरप्रसाद त्रिपाठी ; मूल्य ॥)

सम्राट्-चंद्रगुप्त—लेखक, पं० बालमुकुंद वाजपेयी भूतपूर्व लक्ष्मण-संपादक ; मूल्य ।)

Hindi in Thirty days—लेखक, श्रीरामस्वरूप कौशल एम्० ए०, एम्० आर० ए० एस्० विद्याभूषण; मूल्य ॥)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

काम तुम्हें सौंपा है। तुमसे अच्छा और कोई इसे कर भी नहीं सकता था।"

पुरोहित—"उसका पिता तो बिलकुल राज़ी है; पर..."

सावित्री कुछ हतोत्साह-सी होकर बोली—"पर क्या?"

पुरोहित—"पर उसकी मा राज़ी नहीं होती। वह उसे बड़ा प्यार करती है; क्योंकि सबसे छोटा वही है।"

यद्यपि इस समय स्वार्थ ने सावित्री के हृदय को अंधा कर दिया था, उसमें किसी बात को स्वयं देखने की शक्ति बहुत कम हो गई थी; किंतु जब कोई बात उसके हृदय से टकराती थी, तो उसे थोड़ी देर के लिये कुछ ज्ञान हो आता था। सावित्री स्त्री थी, उसका हृदय भी उतना ही कमज़ोर था, जितना कि स्त्रियों का होता है। यद्यपि वह स्वयं माता न थी, परंतु उसका हृदय एक माता का हृदय बनने की योग्यता रखता था। उसमें वे भाव अंतर्निहित थे, जो एक माता के हृदय में हुआ करते हैं, केवल उनका विकास नहीं हुआ था। पुरोहितजी की बात सुनकर उसके हृदय ने तुरंत कहा—निस्संदेह कोई सच्ची माता अपना पुत्र बेचना स्वीकार न करेगी। यदि उसकी माता ऐसा करती है, तो कोई पाप नहीं करती।

अंतःकरण सदैव न्याय की ओर झुकने के लिये तैयार रहता है, किंतु स्वार्थ उसे ऐसा करने से रोकता है। सावित्री ने अंतःकरण की बात पर कुछ ध्यान न दिया। वह पुरोहितजी से बोली—"जान पड़ता है, उसे यह पता नहीं कि हम....."

पुरोहितजी शीघ्रतापूर्वक बोले—"नहीं, यह तो मैंनेसब बता दिया। उसे तुम्हारी संपत्ति तथा वैभव का सब हाल मालूम हो गया; पर, फिर भी, वह राज़ी नहीं होती।"

सावित्री—"बस, इतनी ही उसकी भूल है। अच्छा फिर?"

पुरोहित—"अभी तो कुछ-कुछ आशा है। लड़के के बाप ने कहा है कि मैं राज़ी कर लूँगा।"

सावित्री—"उसके कोई भाई-बहन भी है?"

पुरोहित—"हाँ, एक बड़ी बहन तथा एक बड़ा भाई है।"

सावित्री—"बड़े की उमर क्या है?"

पुरोहित—"बड़ा तो सात-आठ बरस का होगा। दूसरे वह बिगड़ा हुआ है, अभी से दिन-दिन-भर ग़ायब रहता है। तुम्हारे लायक़ तो छोटा ही है।"

सावित्री उत्सुक होकर बोली—"क्या कहूँ, मैं किसी प्रकार उसे देख सकती, तो अच्छा होता।"

पुरोहित—"यह क्या बड़ी बात है। जब चाहो, देख लो।"

सावित्री—"उसे यहाँ ला सकते हो?"

पुरोहित—"लाने को क्या हुआ?"

सावित्री—"एक बात और है। यदि उसकी मा से मेरी बातचीत हो सकती, तो मैं उसे चुटकी बजाते राज़ी कर लेती। स्त्री को स्त्री जल्दी राह पर ला सकती है।"

पुरोहित—"तुम्हारा यह कहना भी ठीक है। पर वह भला यहाँ काहे को आने लगी। हाँ, यदि तुम्हीं उसके यहाँ जाओ, तो हो सकता है। पर वे हैं बड़े ग़रीब। बाप एक दूकान पर २५) का नौकर है।"

सावित्री ने सोचा, मैं और उसके यहाँ जाऊँ! यह बात मेरी मर्यादा के प्रतिकूल है। उसने पुरोहितजी से कहा—"भला मैं उसके यहाँ कैसे जा सकती हूँ? बाबूजी इस पर कभी राज़ी न होंगे।"

पुरोहित—"मेरी समझ में तो कोई अनुचित बात नहीं; क्योंकि जब तुम उसका लड़का गोद लेने को तैयार हो, उससे संबंध जोड़ना चाहती हो, तो ऐसी दशा में जाना कोई बुरी बात नहीं।"

सावित्री—"हाँ, यह बात भी तुम्हारी ठीक ही है। अच्छा, आज रात को बाबूजी से पूछूँगी। देखूँ, वह क्या कहते हैं।"

पुरोहित—"मुझे पूरा भरोसा है कि यदि तुम उससे मिलोगी, तो वह राज़ी हो जायगी। और सुनो, जब जाना, तो उसके बच्चों के लिये कुछ मिठाई, कुछ खिलौने लेती जाना। इससे उसको राज़ी करने में सहायता मिलेगी।"

सावित्री—"जाना क्या, क्या मैं अकेली जाऊँगी? तुम्हें भी साथ चलना पड़ेगा। आख़िर उसका घर कौन बतावेगा?"

पुरोहित—"हाँ-हाँ, लो यह मुझे ध्यान ही न रहा। अच्छा, मैं चलूँगा, जब जाने का विचार हो, मुझे बुलवा लेना।"

सावित्री—"जो बाबूजी राज़ी हो गए, तो कल ही चली चलूँगी। भला किस समय चलना ठीक होगा?"

पुरोहित—"मेरी समझ में तो दोपहर ही में चलना ठीक है। सबेरे तो वह बेचारी रोटी-पानी में लगी रहती है। दोपहर को एक सुविधा यह भी रहेगी कि लड़के का बाप दूकान चला जाता है। वह अकेली रहती है, तुम्हें बात-चीत करने, उठने-बैठने की स्वतंत्रता रहेगी।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सावित्री—"अच्छा, तो कल बारह बजे घर आ जाना।"

पुरोहित—"पहले बाबूजी से तो पूछ लो।"

सावित्री—"वह सब पूछा हुआ ही-सा है। मेरी बात वह टाल नहीं सकते। कल मैं ज़रूर-ज़रूर चलूँगी।"

पुरोहित—"अच्छा, तो कल बारह बजे आ जाऊँगा।"

यह कहकर पुरोहितजी चले गए।

रात को सावित्री ने व्रजमोहनलाल से सारा हाल कहा, और घासीराम की स्त्री से मिलने की आवश्यकता भी समझा दी। व्रजमोहनलाल के हृदय में भी वही प्रश्न उठा, जो पहले सावित्री के मन में उठा था। उन्होंने कहा—"एक साधारण आदमी के घर पर विना जान-पहचान के दौड़े जाना तुम्हें शोभा न देगा। उसी को बुलाने की चेष्टा क्यों नहीं करतीं?"

सावित्री—"वह भला क्यों आने लगी। उसे क्या पड़ी है? हाँ, जो वह लड़का देने पर राज़ी होती, तब तो चली आती। पर जब राज़ी ही नहीं, तो काहे को आवेगी? भला जो मैं ही चली जाऊँ, तो क्या बुराई है? अपना काम है, जाना ही चाहिए। दूसरे, जब हम उसका लड़का ले रहे हैं, उससे नाता जोड़ रहे हैं, तो फिर जाने में कौन बुराई है? मेरी समझ में तो कोई बुराई नहीं। पुरोहितजी भी यही बात कहते थे।"

स्वार्थ में पड़कर मनुष्य प्रायः वह काम कर बैठता है, जो विना स्वार्थ के वह कभी न करता। व्रजमोहन अथवा सावित्री से ऐसी आशा कभी नहीं हो सकती थी कि वे एक सामान्य आदमी के घर पर जायँ, चाहे इसके लिये स्वयं वह आदमी ही प्रार्थना करे। परंतु आज अपने काम के लिये—स्वार्थ के लिये—विना बुलाए ही जाने के लिये तैयार हैं।

व्रजमोहनलाल भी अंत को राज़ी हो गए, और उन्होंने सावित्री को जाने की आज्ञा दे दी।

दूसरे दिन सवेरे ही से सावित्री जाने की तैयारी करने लगी। दो रुपए की बढ़िया पँचमेल मिठाई मँगवाई, दो-तीन रुपए के अच्छे-अच्छे खिलौने मँगवाए। शान जमाने के लिये अपने बढ़िया कपड़े निकाले। ज़ेवरों से अपने को गोंदनी के वृक्ष की तरह लादा। अपनी दासी को भी साफ़-सुथरे कपड़े पहनाए। ठीक साढ़े ग्यारह बजे सज-सजाकर तैयार हो गईं। अब उन्हें एक-एक पल भारी हो गया। जब तक पुरोहितजी आवें-आवें, तब तक तीन बेर बुलावा भेजा। बारह बजे के पश्चात् पुरोहितजी आए। पालकी गाड़ी पहले ही से जुती खड़ी थी। सावित्री अपनी दासी-सहित गाड़ी में बैठी। पुरोहितजी कोचवान के पास बैठे।

जिस समय ये लोग घासीराम के घर पर पहुँचे, उस समय सुलोचना खा-पी चुकने के पश्चात् बर्तन इत्यादि माँजकर उठी थी। पुरोहितजी ने जाकर सावित्री के आने की सूचना दी। सुलोचना ने पुरोहितजी पर एक तीव्र दृष्टि डालकर ठंडी साँस खींची। परंतु मुँह से कुछ न कहा। उसने शीघ्रतापूर्वक एक सफ़ेद धोती निकालकर पहन ली, और सावित्री के बैठने के लिये एक गद्दा बिछाकर उस पर एक चादर बिछा दी। इसके पश्चात् पुरोहितजी से सावित्री को बुला लाने के लिये कहा।

सावित्री देवी नाक पर सुगंधित रूमाल रक्खे हुए पहुँचीं। सावित्री को यह विश्वास था कि सुलोचना उनकी तड़क-भड़क देखकर स्तंभित हो जायगी, उससे कुछ कहते-सुनते बन न पड़ेगा, और अंत को वह बड़ी ख़ुशी से अपना लड़का देने को तैयार हो जायगी। इस विचार ने सावित्री के मुख पर अभिमान का गहरा रंग फेर दिया था; परंतु जिस समय सुलोचना से उसकी चार आँखें हुईं, उसका सारा अभिमान काफ़ूर हो गया। वह बुरी तरह झेपी। उसके हृदय में यह विचार आया कि कहीं सुलोचना अपने जी में यह न कहे कि जान न पहचान, अपने मतलब के लिये दौड़ी चली आईं। याचना करनेवाला चाहे जितना अभिमानी हो, उसके हृदय में चाहे कितना ही आत्म-गौरव हो, कम-से-कम याचना करते समय वह उस व्यक्ति के सामने, जिससे वह याचना करता है, अपनी लघुता का अवश्य अनुभव करता है।

सावित्री अपनी झेप मिटाने के लिये बोली—"बहन, मेरे आने से तुम्हें कोई कष्ट तो नहीं हुआ?"

इसमें संदेह नहीं कि सुलोचना सावित्री के आने की सूचना पाकर प्रसन्न नहीं हुई थी; क्योंकि उसने उसके आने का तात्पर्य समझ लिया था। किंतु शिष्टाचार के नाते उसे यह कहना ही पड़ा—"नहीं बहन, भला यह भी कोई बात है? तुम्हारे आने से तो मेरा घर पवित्र हो गया। हमारे ऐसे भाग कहाँ, जो तुम-सरीखी हमारे घर आवें।"

इन शब्दों ने सावित्री की झेप मिटाने में बहुत कुछ सहायता दी। उसने समझा, सुलोचना ने ये शब्द शुद्ध हृदय से कहे हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुलोचना ने सावित्री को आदरपूर्वक बैठाया और स्वयं सामने एक चटाई पर बैठ गई।

सुलोचना के दोनों छोटे बच्चे भी वहीं आ गए और मा के कंधे पर हाथ रखकर तथा मुँह में उँगली डालकर कौतूहल-पूर्ण नेत्रों से सावित्री को देखने लगे। सावित्री के इशारे से दासी ने मिठाई की चंगेर सुलोचना के सामने रख दी। सुलोचना बोली—"ओः, इसकी क्या ज़रूरत थी? तुमने नाहक़ फ़िक्र करी।"

सावित्री—"नहीं बहन, इसमें फ़िक्र की क्या बात थी।"

मिठाई देखते ही दोनों बच्चे चंगेर की ओर बढ़े।

लड़की बोली—"अम्मा, लड्डू।"

श्यामू बोला—"अम्मा, बलफी।"

सुलोचना ने उन दोनों को एक-एक चीज़ दे दी, दोनों प्रसन्न होकर खाने लगे। सावित्री ने बच्चों की ओर देखकर कहा—"आओ मुन्ने, यहाँ आओ। यह देखो, आओ हमारे पास आओ, तो दें।" यह कहकर सावित्री ने श्यामू को खिलौने दिखाए। श्यामू खिलौना देखकर ख़ूब हँसा, और धीरे-धीरे सावित्री की ओर चला। कुछ दूर चलकर ठिठक गया, और सुलोचना के मुख की ओर देखने लगा। सावित्री ने फिर कहा—"आ मुन्ने, दौड़ आ। बड़ा राजा बेटा है। आ, यह खिलौना ले।" श्यामू फिर चला; किंतु थोड़ी दूर चलकर फिर ठिठक गया। श्यामू की बहन ने जो यह सब देखा, तो तुरंत दौड़कर सावित्री के पास पहुँच गई, और बोली—"लाओ, हमें गुड़िया लाओ।" सावित्री ने उसे एक खिलौना दिया। यह देखकर श्यामू का साहस भी बढ़ा, वह भी दौड़कर सावित्री के पास आ गया। सावित्री ने गोद में लेकर उसके हाथ में एक खिलौना दिया। श्यामू को देखकर सावित्री मुग्ध हो गई। उसने मन-ही-मन सोचा—पुरोहितजी सच कहते थे, यह लड़का मेरे ही योग्य है।

सावित्री ने पूछा—"क्यों बहन, कोई और लड़का भी है?"

सुलोचना—"हाँ, एक इन दोनों का बड़ा भाई है। बड़ा खिलाड़ी है। दिन-भर पड़ोस के घरों में खेला करता है। आज सबेरे तो था, अभी खा-पीकर चला गया है।"

सावित्री—"उसे कहीं पढ़ने-लिखने क्यों नहीं भेजतीं?"

सुलोचना एक ठंडी साँस भरके बोली—"क्या करें बहन! पेट ही से नहीं बचता, पढ़ावें-लिखावें कहाँ से?"

सावित्री सोचने लगी कि किस प्रकार बात उठानी चाहिए? वह इसी चक्कर में पड़ी थी, कुछ कहने के लिये उसका साहस नहीं होता था। अंत को बहुत कुछ सोच-विचारकर उसने कहा—"बहन, क्या कहूँ, कहते लाज लगती है। तुम कहोगी, अपने मतलब की बात कहती हैं, पुरोहितजी ने तुमसे कुछ कहा था?"

सुलोचना—"हाँ, कहा तो था।"

सावित्री—"हाँ, मुझसे वह कहते थे कि तुम यह समझती हो कि लड़के को किसी प्रकार का कष्ट....."

सुलोचना—"नहीं बहू, यह तो कोई बात नहीं। तुम्हारे यहाँ कष्ट होगा, तो सुख कहाँ होगा? सच पूछो, तो मेरे घर से अधिक सुख मिलेगा। पर बात यह है कि मेरा तो यही एक खिलौना है, इसी से दिन-रात जी बहलाया करती हूँ। बड़ा लड़का जो है, वह घर में बैठता नहीं। बाप दूकान गए नहीं कि वह भी निकल जाता है। बहन, तुम समझ सकती हो, हम ग़रीबों के जी बहलाने को और क्या रक्खा है। इन्हीं से जी बहलाया करती हैं।"

सावित्री—"हाँ बहन, यह बात तो तुम्हारी ठीक ही है। बहन ग़रीबी-अमीरी तो चली ही जाती है। अमीर भी पाव-भर आटा खाता है और ग़रीब भी। सच पूछो, तो तुम बड़ी भागवान हो। जिसके घर में बच्चे हैं, उससे बढ़कर कोई भागवान नहीं। वह अमीर ही हुए, तो क्या हुआ। बच्चों की लालसा रुपयों से तो पूरी नहीं होती। क्या कहूँ बहन, भगवान् हमारी सुनता ही नहीं। जो आज हमारे कोई लड़का-बच्चा होता, तो हम दूसरों के बच्चे लेने के लिये क्यों तरसते। बहन, तुम्हारी राज़ी से हमारी राज़ी है। हमारा कुछ ज़ोर तो है नहीं।"

यह कहकर सावित्री लगी आँसू बहाने। आँसू बहाते हुए बोली—"बहन, तुम्हारी बदौलत हमारे घर में भी चाँदना हो जाता, तो अच्छा था। जी बहलाने की जो कहो, तो यह कहीं चला तो जायगा ही नहीं। तुम्हारा जब जी चाहे, बुला लिया करना। जब तक चाहना, अपने पास रखना, वह भी तुम्हारा ही घर है। वहीं चली आया करना। जब तक जी चाहे, मेरे पास रहना।"

सावित्री की दशा पर सुलोचना को बड़ी दया आई। उसका हृदय पहले ही से डगमगा रहा था। गत रात्रि को घासीराम ने भी बहुत कुछ समझाया-बुझाया था,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बड़े-बड़े सब्ज़बाग़ दिखाए थे। अब इस समय सावित्री की दशा देखकर उसका हृदय पसीजने लगा।

सावित्री फिर बोली—"एक बात और है। मैं तुमसे कहती हूँ, मैंने तो आज से तुम्हें अपनी बहन समझ ही लिया। लड़का दो, चाहे न दो, तुम्हारी ख़ुशी है। पर अब यह नाता नहीं टूटेगा। हाँ तो एक बात और है—ज़रा मेरे पास आ जाओ।"

सुलोचना सावित्री के पास आ बैठी। अशिक्षित स्त्रियाँ प्रायः पेट की हलकी होती हैं। थोड़ी-सी जान-पहचान ही में अपने जी की सारी बातें कह डालती हैं। सावित्री ने भी सुलोचना से अपने घर का सारा कच्चा चिट्ठा कह सुनाया। तत्पश्चात् बोली—"अब तुम्हीं बताओ, क्या तुम यह बात चाहोगी कि तुम्हारी जोड़ी-सँगोड़ी गृहस्थी तुम्हारे देवर-जेठ ले जायँ?"

सुलोचना बोली—"नहीं बहन, अपनी गृहस्थी कौन लुटाना चाहेगा?"

सावित्री—"भगवान् तुम्हारा भला करे। मैं जो रोती हूँ, तो किसलिये? सारा रोना तो इसी का है। अब जो तुम लड़का दे दोगी, तो उससे यह होगा कि उनका (व्रजमोहन का) नाम भी चलेगा और, भगवान् वह दिन न दिखावें—वह दिन देखने के पहले ही मैं मर जाऊँ—जो कहीं उनको कुछ हो गया, तो मेरी गृहस्थी तो बच जायगी।"

सुनने की अपेक्षा देखने का प्रभाव अधिक पड़ता है। अभी तक तो सुलोचना व्रजमोहनलाल के वैभव का हाल सुन ही रही थी, अब सावित्री के आने से उसने अपनी आँखों से देख लिया। इसके अतिरिक्त सावित्री ने घुल-घुलकर ऐसी मीठी बातें कीं कि सरल-हृदया सुलोचना पूर्णतः पसीज गई। उसने कई बार चाहा कि सावित्री से कह दे—अच्छा, ले जाओ। तुम्हारा ही होकर जी जाय। परंतु यह बात मुँह तक आकर रह जाती थी, कहने का साहस नहीं होता था। उसे मालूम होता था कि कोई भीतरी शक्ति उसकी जिह्वा पकड़ लेती है। सुलोचना सावित्री द्वारा परास्त की जा रही थी। उसके पुत्र-प्रेम की शक्ति, जिसका निवासस्थान एक कमज़ोर हृदय था, अनेक बाहरी प्रतिकूल शक्तियों द्वारा दबाई जा रही थी। उसकी यह शक्ति बहुत कुछ दब गई थी, उसके दबाए जाने का काम पहले ही से आरंभ हो चुका था। अब केवल मुख से 'हाँ' न निकलने देना यही उस शक्ति का सँभाल लेना-मात्र था।

बातें करते-करते सावित्री ने पूछा—"क्यों बहन, श्यामू के बाप क्या महीना पाते हैं?"

सुलोचना—"पचीस रुपए पाते हैं।"

सावित्री—"ओहो! बहुत कम पाते हैं। हमारी दूकान पर तो मुनीम पचास-साठ रुपए तक पाते हैं।"

उसी समय श्यामू का बड़ा भाई शंभू हाँफता हुआ आ पहुँचा। उसके कपड़े धूल में भरे हुए थे। उसने आकर पहले तो सावित्री को सिर से पैर तक देखा, देखकर कुछ सोचता रहा, इसके पश्चात् अपने छोटे भाई और बहन को मिठाई खाते देख अपनी माता से बोला—"अम्मा, मुझे भी मिठाई दो।"

सुलोचना बोली—"बस, मिठाई खाने के लिये आ पहुँचा। यों तो दिन-दिन-भर पता नहीं लगता।"

सावित्री बोली—"दे दो, बच्चे हैं।" (शंभू से) बेटा, थोड़ी देर मा के पास भी बैठा करो। दिन-दिन-भर बाहर रहना अच्छा नहीं होता। देखो तो, कुरते में कितनी मट्टी भरी है। भला कोई धूल में खेलता है।

शंभू ने सावित्री की ओर फिर उसी प्रकार ताका; परंतु मुँह से कुछ न कहा। उसकी मा ने मिठाई की दो-तीन चीज़ें उसके हाथ में रख दीं। शंभू लेकर बाहर की ओर चल दिया। सुलोचना ने कहा—"क्यों रे, फिर बाहर चला!"

शंभू "अभी आ जाऊँगा" कहता मिठाई खाता हुआ चला गया।

सावित्री बोली—"इसे पढ़ने बिठा दो, नहीं यह बिगड़ जायगा।"

सुलोचना ठंडी साँस लेकर बोली—"देखो, अब कुछ-न-कुछ करना ही पड़ेगा।"

सावित्री कुछ क्षण तक ठहरकर बोली—"बहन, बुरा न मानो, तो एक बात कहूँ।"

सुलोचना विस्मित होकर बोली—"कौन बात?"

सावित्री—"तुम इसे पढ़ने बिठा दो, इसकी पढ़ाई का ख़र्च मैं दूँगी।"

सुलोचना मन-ही-मन प्रसन्न हुई। परंतु इस प्रसन्नता में कुछ अंश संकोच का भी था। संकोच इसलिये था कि उसका हृदय किसी का एहसान लेने का अभ्यस्त न था। उसने सावित्री की बात का कोई उत्तर न दिया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सावित्री ने उसे चुप देखकर कहा—"क्यों बहन, क्या बुरा मान गईं ?"

सुलोचना हँसकर बोली—"नहीं, बुरा क्यों मानूँगी, इसमें बुरा मानने की क्या बात है ? मैं यह सोचती थी कि अभी यह क्या पढ़ेगा। साल-छः महीने और ठहर जाओ।"

सावित्री—"देर करने ही में तो बुराई है। बस, तुम इसे आज ही कल में बिठा दो। कोई सोच-विचार न करो।"

सुलोचना का संकोच उलटी साँसें लेने लगा—उसने दबी ज़बान से कहा—"अच्छा, बिठा दूँगी।"

कुछ देर तक और बातचीत करने के पश्चात् सावित्री ने कहा—"अच्छा बहन, अब मैं जाऊँगी। हाँ, तो क्या इच्छा है ? मेरा दुःख तो तुम सुन ही चुकीं, अब उसे दूर करना न करना तुम्हारे हाथ है।" यह कहकर सावित्री ने अपनी जाकट की जेब से २५) रु० निकाले, और सुलोचना के सामने रखकर बोली—"ये रुपए रख लो, शंभू को जल्दी ही कोई अच्छा महूरत देखकर पढ़ने बिठा देना।"

सुलोचना की आँखों में आँसू छलछला आए। उसी समय सावित्री बोली—"हाँ तो, बहन, एक बात कह दो 'हाँ' या 'नहीं'।"

"अच्छा बहन, तुम्हीं रक्खो, तुम्हारा ही होकर जी जाय"—इधर तो सुलोचना के मुँह से यह वाक्य निकला, और उधर आँखों से आँसुओं की धारा फूट निकली।

अमौलिक कवि

[लेखक, कविवर जगन्नाथप्रसाद खत्री 'मिलिंद']

(१)

चुराकर कुसुमों की मुसकान,
छिपा लेता उर में अनजान;
विश्व-अधरों को लखकर म्लान,
उसी क्षण कर देता हूँ दान।
अमौलिक है मेरी मुसकान !!

(२)

चाँदनी में फैला आँचल,
माँग लाता निधियाँ निर्मल;
लगाता पथ-पथ में फेरी,
लुटाता घर-घर में ढेरी !!
अमौलिक हैं निधियाँ मेरी।

(३)

मधुर, मादक, मोहक, सुकुमार,
विहग से लेकर स्वर-उपहार;
विश्व-वीणा के निःस्वन तार,
गुँजाया करता कितनी बार !
अमौलिक मेरा स्वर-संसार !!

(४)

निर्झरी से ले मृदु नर्तन,
बुद्बुदों से उत्थान-पतन,
विश्व-पलकों पर पागल बन,
थिरकता मेरा हृत्-स्पंदन !
अमौलिक है मेरा नर्तन !

(५)

व्यथित विश्व के कण-कण से करुणा की कोमल धार,
सागर की लहरों से लेता हूँ उन्माद उधार;
आत्मोत्सर्ग ओस से, ऊषा से सुवर्ण उपहार,
प्यार पतंगों से, रजनी से नीरव हाहाकार !
अमौलिक है मेरा जीवन !
अमौलिक है संगीत-सृजन !
अमौलिक कवि हूँ मैं नूतन !

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ख़ूब मिले !

[चित्रकार—श्रीयुत उत्तमसिंह तोमर बी० ए०]

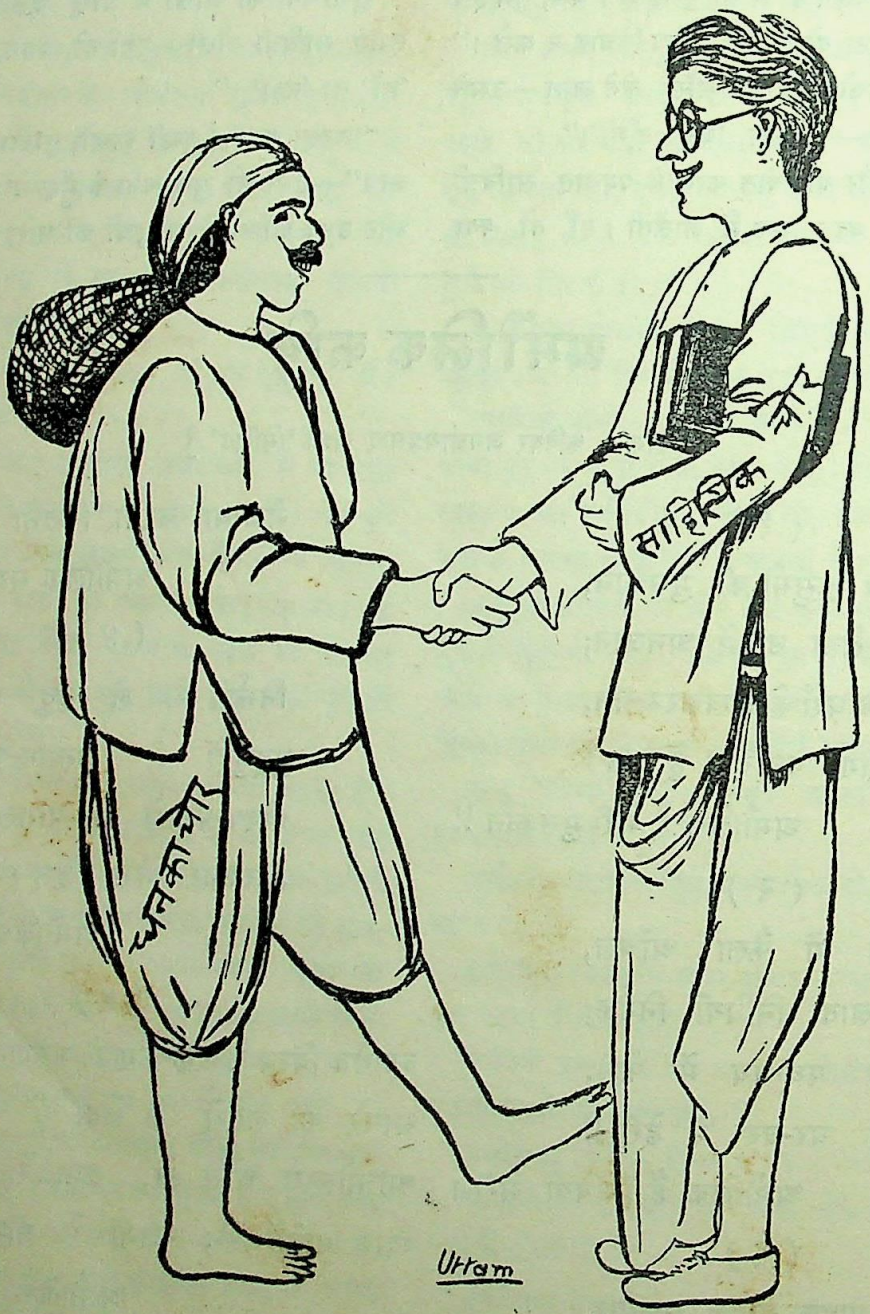

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शब्दकार—श्रीयुत मैथिलीशरण गुप्त] [स्वरकार—श्रीयुत लक्ष्मणदास मुनीब

हमीर—तीन ताल

गीत

जय गणेश, जय सिद्ध गणेश ।
रहे न भय-संशय का लेश ;
जय गणेश, जय सिद्ध गणेश ।

करो आर्य, गणराज-विधान ,
जयति विनायक बुद्धि-निधान ।
मिटे विघन, बाधा व्यवधान ,
धारण करो अखिल अवधान ;
सिद्ध लाभ शुभ भावावेश ,
जय गणेश, जय सिद्ध गणेश ।

स्थायी

०			३				×				२			
नी	ध	प	म	प	प	ग	म	ध	—	ध	नी	सं	नी	ध	प
ज	य	ग	णे	ऽ	श	ज	य	सि	ऽ	द्ध	ग	णे	ऽ	ऽ	श
प	म	प	प	ध	ध	प	—	ग	म	प	—	ग	म	रे	स
र	हे	ऽ	न	भ	य	सं	श	का	ऽ	ऽ	ऽ	ले	ऽ	ऽ	श

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

				प											
म	प	ध	नी	म	प	म	प	ग	म	ध	—	ध	नी	सं	नी	ध	प
जै	ऽ	ऽ	ऽ	ग	णे	ऽ	श	ज	य	सि	ऽ	द्ध	ग	णे	ऽ	ऽ	श

अंतरा

०					३			×				२			
म			नी												
प	प	—	सं	—	सं	सं	सं	ध	नी	सं	रें	नी	सं	ध	प
क	रो	ऽ	आ	ऽ	र्य	ग	ण	रा	ऽ	ज	वि	धा	ऽ	ऽ	न
प	प	गं	गं	मं	रें	सं	सं	ध	नी	सं	रें	नी	सं	ध	नी	प	प
ज	य	ति	वि	ना	ऽ	य	क	बु	ऽ	ऽ	ऽ	द्धि	नि	धा	ऽ	ऽ	न
प	ग	—	ग	—	म	प	—	ग	म	रे	स	रे	—	स	स
मि	टें	ऽ	वि	ऽ	घ्न	बा	ऽ	धा	ऽ	व्य	व	धा	ऽ	ऽ	न
स	—	म	ग	प	प	—	ध	म	प	ग	म	ध	—	—	ध
धा	ऽ	र	ण	क	रो	ऽ	आ	खि	ल	आ	व	धा	ऽ	ऽ	न
सं	—	गं	मं	रें	सं	नी	सं	ध	नी	सं	रें	नी	सं	ध	प	म	प
सि	ऽ	द्ध	ला	ऽ	भ	शु	भ	भा	ऽ	ऽ	ऽ	वा	ऽ	वे	ऽ	ऽ	श
				प											
म	प	ध	नी	म	प	म	प	ग	म	ध	—	ध	नी	सं	नी	ध	प
जै	ऽ	ऽ	ऽ	ग	णे	ऽ	श	ज	य	सि	ऽ	द्ध	ग	णे	ऽ	ऽ	श

संकेत

१. जिन स्वरों के नीचे बिंदु हो वे मंद सप्तक के, जिनमें कोई बिंदु न हो वे मध्य सप्तक के तथा जिनके शीर्ष में बिंदु हो, वे तार सप्तक के हैं। जैसे—सा, सा, सां।

२. जिन स्वरों के नीचे लकीर हो वे कोमल हैं। जैसे रे, ग, ध, नि। जिनमें कोई चिह्न न हो, वे तीव्र हैं। जैसे—रे, ग, ध, नि।

३. शुद्ध मध्यम का चिह्न "म" और तीव्र मध्यम का चिह्न "म" है।

४. यह चिह्न ⌒ मींड का प्रदर्शक है।

५. सम का चिह्न ×, ताल के लिये अंक और ख़ाली का द्योतक ० है।

६. ⌣ इस चिह्न में जितने स्वर रहें, वे एक मात्रा में गाए या बजाए जायँगे। जैसे—सा रे

७.—यह दीर्घ मात्रा का चिह्न है।

यह ❀ विश्रांति का चिह्न है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हारमोनियम

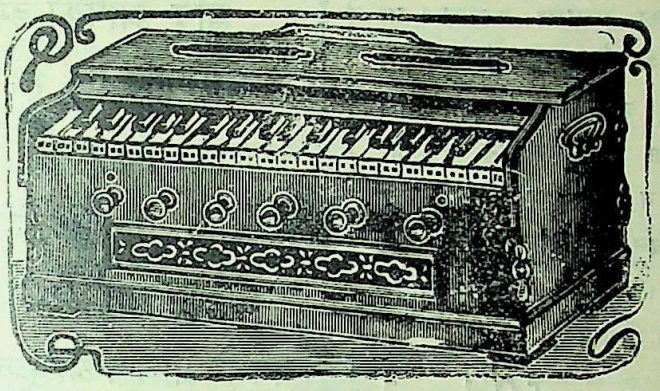

हमारी कंपनी का बना हुआ मशहूर बाजा मँगाइए। इस हारमोनियम में इँगलैंड का बढ़िया काठ लगाया गया है, जो सड़ता गलता नहीं। जर्मनी की बढ़िया और पक्के रंग की ऐसी ज़ोरदार पालिश की गई है जिसकी चमक में मुँह का बाल-बाल देख लें फ़र्स्ट क्लास के बढ़िया रीड लगाए गए हैं, जो संसार में सर्वश्रेष्ठ प्रसिद्ध हैं। इसको सुंदर और फ़ैशनेबुल बनाने में हमारे कारीगरों ने कमाल किया है। दाम—डबल २८) ३०) ३५) से ५००) सिंगल १८) २०) २२) २५) आर्डर के साथ चौथाई दाम पेशगी भेजिए। माल नापसंद होने से बदल देंगे।

इनाम ! इनाम !! इनाम !!!

कोई भी एक हारमोनियम मँगाने से यही हारमोनियम सिखानेवाली मशहूर पुस्तक इनाम में मिलेगी। सिर्फ़ पुस्तक मँगानेवालों को अजिल्द का १।) सजिल्द का १॥) देना होगा।

विश्वसनीय कंपनी से माल मँगाने का पता—

गुप्ता ब्रादर्स, ३९१ बी अपरचितपुर रोड, कलकत्ता।

संसार के कुल केश-तैलों का एकमात्र

चक्रवर्ती सम्राट्

रजिस्टर्ड] **'दूतनाथ'** [रजिस्टर्ड

मूल्य प्रति शी० १) तीन का २।) छः का ४) एक दर्जन का ७॥)

"दूतनाथ परफ़्युमरी वर्क्स"

पो० जम्होर, (गया)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

घर बैठे सीखिए ! घर बैठे सीखिए !!

❀ केवल २॥=) में ❀

सहस्रों क्या ! लाखों रुपया कमाने का हुनर "मुखविलास" यानी पान का मसाला बनाना। जो कि पान को स्वादिष्ट बनाने में और मुख को सुगंधित करने में अद्वितीय है। ज़्यादा क्या लिखें पं० प्यारेलाल शुक्ल का ज्वलंत उदाहरण आपके सामने है। जो लाखों रुपया कमा रहा है। न इसमें अधिक मेहनत की ज़रूरत है। न विशेष धन की आवश्यकता है। सीखिए और लाभ उठाइए। सिर्फ़ २॥=) मनीआर्डर से भेजिए। या वी० पी० से मँगाइए।

पता:—दी चौहान कार्यालय, [S.L. १]

बनखेड़ी G. I. P. R.

२२०० वर्ष का पुराना, आचार्य वात्स्यायन-कृत

असली कामसूत्र

(हिंदी-अनुवाद-सहित)

यदि आपको इसके पढ़ने की इच्छा है तो शीघ्र ५) रु० मनीआर्डर द्वारा भेजकर मँगाइए।

वी० पी० किसी दशा में भी नहीं भेजी जायगी और पुस्तक केवल ३० वर्ष से अधिक आयुवालों को दी जायगी।

मिलने का पता—

रामसिंहासन तिवारी

मैनेजर डायमंड-जुबली प्रेस, (सु) अजमेर

सचित्र रत्नाकर-ग्रंथ-माला

चित्रमय-सती-संसार ! सचित्र-बाल-तरुण-साहित्य।

हिंदी में युगांतर

सर्वांग-सुंदर ! सर्वसुलभ मूल्य !!

हिंदी में सर्वसुलभ और सर्वांगसुंदर सचित्र सती एवं बाल और तरुण साहित्य। बढ़िया छपाई, ऐंटिक पेपर और एक सौ से अधिक नयनाभिराम रंग-बिरंगे चित्र। कन्याओं, बहनों, बालकों और प्रियजनों को उपहार में देने के लिये सर्वश्रेष्ठ। कन्या-विद्यालयों तथा बालक पाठशाला स्कूलों में प्राइज़ तथा लायब्रेरियों के लिये गवर्नमेंट के शिक्षा-विभागों द्वारा स्वीकृत।

चित्रमय-सती-संसार

१—सावित्री-सत्यवान	॥)	६—शकुंतला	॥=)
२—नल-दमयंती	॥)	७—देवी-द्रौपदी	॥=)
३—शैव्या-हरिश्चंद्र	॥)	८—शर्मिष्ठा-देवयानी	॥)
४—सीता-देवी	॥=)	९—सुभद्रा	॥=)
५—सती-पार्वती	॥)	१०—संयुक्ता	॥=)

सचित्र बाल-तरुण-साहित्य

११—भक्त-ध्रुव	॥=)	१६—पृथ्वीराज	१)
१२—भक्त-प्रह्लाद	॥=)	१७—महाराणा प्रताप	१)
१३—वीर-अभिमन्यु	॥=)	१८—छत्रपति शिवाजी	१॥)
१४—वीर-लव-कुश	॥=)	१९—श्रीशंकराचार्य	१॥)
१५—भीष्म	॥=)	२०—श्रीकृष्ण	१॥)

२१—मेवाड़-गौरव। १)

दी पोपुलर ट्रेडिंग कंपनी, ११५, हरीसन रोड, कलकत्ता।

मोटरकार, मोटर साइकिल,

पुर्जे, टायर, ट्यूब, मोबिल आयल, पेट्रोल, मोटर आयल्स, लुब्रीकेटिंग और किरोसिन इत्यादि आप हमारे भाव से कम दाम में अच्छा माल कहीं न पाइएगा।

Phones B. B. 2118,
B. B. 1361
South 408 Cal. 1832.

Telegrams :
BENAUTO.

गनेसदास रामगोपाल

(एजेंट्स दी इंडो बर्मा पेट्रोलियम् कंपनी लि०)

४९, मुक्ताराम बाबू स्ट्रीट, कलकत्ता

शाखाएँ—रानीगंज, पटना, मुज़फ़्फ़रपुर, इलाहाबाद और लखनऊ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

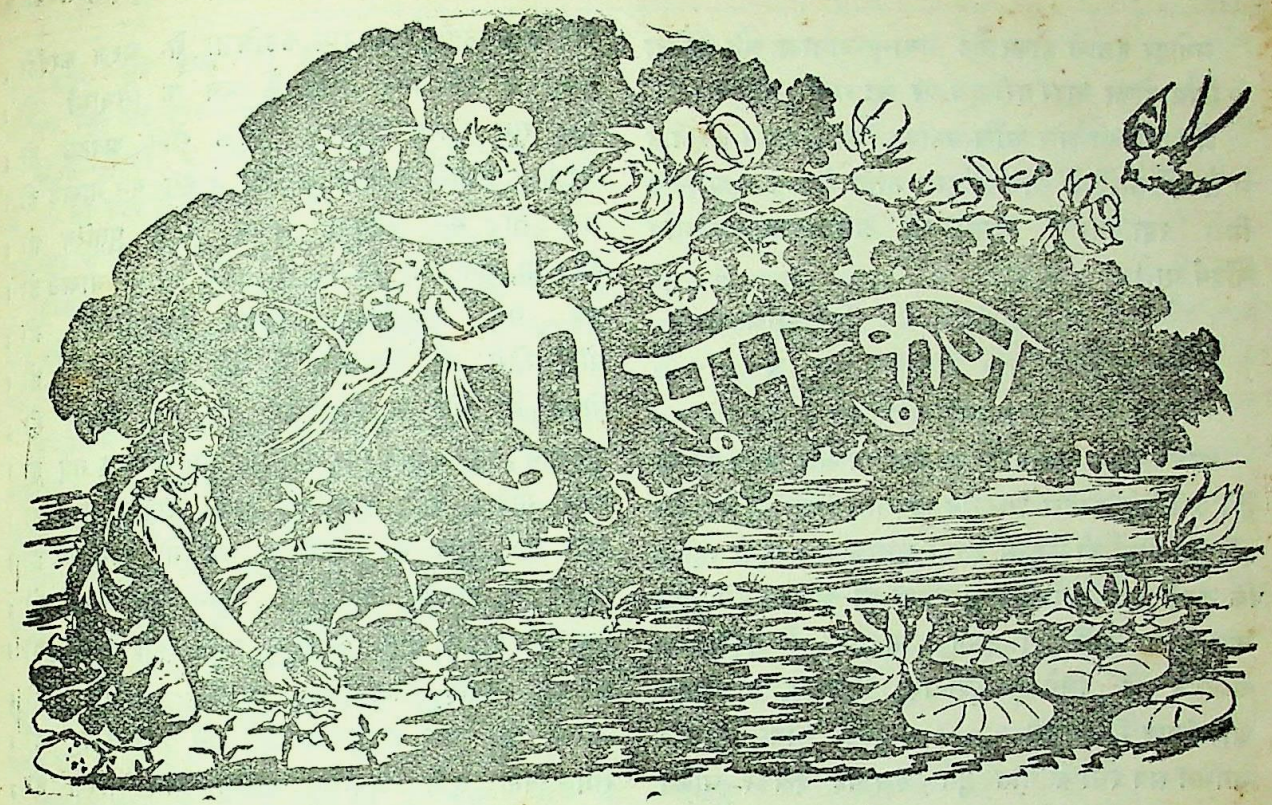

१. स्वर्ग

"वा टिका में सैकड़ों फूल झूम रहे हों, सौरभ के भार से लदी हुई वायु धीरे-धीरे बह रही हो, चारो तरफ़ चाँदनी छिटकी हुई हो; उस समय मैं अपने सजीले भवन में गद्दे की स्प्रिंगदार शय्या पर लेटे हुए, अधखुली आँखों से स्वर्णकांतिमयी सुंदरियों का दल देखूँ।—और? और देखूँ रुनझुन करते हुए उनका चंचल थिरकना। यही मेरी सौंदर्योपासना है।"

मैंने कहा—भाई मनोहर, यह सब धन की लीला है!

उसने कहा—हृदय का खेल है।

२

उस दिन पूर्णिमा थी। आकाश के नीले सरोवर में पूर्णचंद्र विकसित कमल की भाँति खिले हुए थे।

महीनों बाद मैं मनोहर से मिलने गया।

उसने स्वागत करते हुए कहा—अहा, आज बहुत दिनों पर आ तो गए।

"हाँ"—कहकर मैं बैठ गया।

थोड़ी देर तक बैठे रहने के बाद मनोहर ने सामने के कमरे का रंगीन पर्दा धीरे से हटा दिया। आश्चर्य, उसकी पूर्व-कल्पना सचमुच आँखों के सामने प्रत्यक्ष हो गई।

बिजली की रोशनी से कमरा जगमगा रहा था। चारो तरफ़ सुगंध उड़ रही थी। कितनी ही षोडश-वर्षीया कामिनियाँ नाच-गान की तैयारी कर रही थीं। कमरा अभी तक सजाया जा रहा था।

मनोहर ने कहा—देखो, यही स्वर्ग है। यही सुंदरियों का प्यारा देश है।

मैंने कहा—हाँ, यह स्वर्ग हो सकता है? यहाँ स्वर्गीय सुंदरता भी है। परंतु शांति?

मैं बाहर से बैठा हुआ उनका बिजलियों की तरह नाचना देखता रहा—रात-भर मदिरा और नृत्य का समारोह चलता रहा।

चार बज रहा था—कामिनी की भीनी-भीनी महक से मस्तक भर रहा था—नूपुरों की झनकार पास में सुनाई पड़ी। मैंने देखा—तरला जाने के लिये तैयार थी, और मनोहर उसकी विनती कर रहा था।

मद-विह्वल मनोहर मान छुड़ाने में असमर्थ हुआ।

तरला चली गई।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मनोहर हताश होकर बैठ गया—जागरण और मदिरा से खिन्न होकर बाहर हरी दूब पर लेट गया—बेसुध !

मैंने ऊपर की ओर आँख उठाकर देखा—अनंत की गोद में सैकड़ों तारों के साथ चंद्रमा शांति से अपना अस्तित्व मिटा रहा था। उसमें भी प्रभात का स्वर्गीय सौंदर्य था।

विनोदशंकर व्यास

× × ×

२. ग्राम-गीत

आजकल हम ग्राम-गीतों का अध्ययन और संग्रह कर रहे हैं। जैसे-जैसे हमारा अध्ययन बढ़ता जा रहा है, वैसे-वैसे हमें ग्राम-गीतों की मिठास इतनी अधिक मालूम हो रही है कि उनके आगे हिंदी के महाकवियों की कविता हमें तुच्छ जान पड़ने लगी है। हमने ग्राम-गीतों के तुलनात्मक अध्ययन के लिये काठियावाड़, गुजरात, राजपूताने और पंजाब में लगभग ५,००० मील की यात्रा की, और लगभग सब रसों के गीत सुने। हम यह देखकर चकित हुए कि ग्राम-गीतों में कविता का सर्वत्र एक-सा विकास हुआ है। मनोभावों का स्पष्टीकरण जैसा ग्राम-गीतों में हुआ है, वैसा छंद और अलंकार-शास्त्र से मर्यादित कविता में नहीं। हमारे इस कथन को, संभव है, बहुत-से काव्य-कलाभिज्ञ सज्जन अत्युक्ति समझें; पर हम अपने निर्णय के समर्थन में कितने ही ऐसे देशी-विदेशी विद्वानों की सम्मतियाँ उपस्थित कर सकते हैं, जिनकी सम्मति की उपेक्षा कोई कर नहीं सकता।

ग्राम-गीतों का महत्त्व अभी हमारे देश-वासियों ने नहीं समझा है। पर योरप ने आज से सैकड़ों वर्ष पहले अपने Ballods की महत्ता समझ ली थी। आज तो उनकी खोज में कितने विद्वान् भेस बदले घूमा करते हैं। राज्य और साहित्य-रसिकों से इस काम के लिये उनको वांछित धन मिलता है। योरप की युनिवर्सिटियों ने इस लोक-साहित्य को अपने शिक्षा-क्रम में स्थान दिया है।

यहाँ हम एक गीत देते हैं—यह सोहर है, जो लड़का पैदा होने के समय गाया जाता है। इसे आटा पीसते समय तथा अन्य गृह-कार्य के अवसर पर भी स्त्रियाँ गाती हैं। यह गीत जौनपुर ज़िले का है।

इस गीत में राम के वन जाते समय तथा उनके वन जाने के बाद कौशल्या की वेदना का वर्णन है—

सोने के खरउवाँ राजा राम कउसिला से अरज करइँहो;
हुकुम न देउ मोरी मैया मैं बन क सिधारउँ हो।
जौने राम दुधवा पिआयउँ घिऊ सेनिं अवटेउँ हो;
अरे मोरा भितराँ से बिहरै करेजवा मैं कैसे बन भाखउँ हो।
राम तो मोर करेजवा लखन मोरी पुतरिंव हो;
अरे रामा, सीता रानी हाथे कर चुरिया मैं कैसे बन भाखउँ हो।
राम गए दुपहरिया, लखन तिजहरियउँ हो;
सीता मोरी गईं सँझलौके मैं कैसे जियरा बोधउँ हो।
पोयउँ मैं घिये क सोहरिया, दुधे कर जाउरि हो;
अरे रामा, यतना जेंवन मोर बिस भा राम मोर बन गए हो।
चारि मँदिल चारि दीप बरैं हमरा अकेल बरइ हो;
रामा मोरे लेखे जग आँधियार राम मोर बन गए हो।
भितराँ से निकसीं कउसिला नैनन नीर बहइ हो;
रामा राम लखन सीता जोड़िया कवने बन होइहैं हो।
घर-घर फिरहिं कउसिला लरिका बटोरहिं हो;
लरिकौ छन एक रचहु धमारि राम बिसरावहु हो।
राम बिना सूनि अयोध्या लखन बिन मंदिल हो;
मोरी सीता बिन सूनि रसोइयाँ कइसे जिअरा बोधब हो।
मंदिल दीप जरइबै औ सेजिया लगइबै हो;
रामा आधी रात होरिला दुलरबै जनुक राम घरहिन हो।
सवना-भदवना क दिनवा घुमरि घन बरसइँ हो;
रामा राम लखन दूनों भइया कतहुँ होइहैं भीजत हो।
रिमिकि-झिमिकि दयू बरसइ मोरे नाहीं भावइ हो;
दैवा वोहि वन जाइ जनि बरिसहु जहाँ मोर लरिकन हो।
राम क भीजै मटुकवा लखन सिर पटुका हो;
मोरी सीता क भीजै सेंदुरवा लवटि घर आवउ हो।

अर्थ—

सोने के खड़ाऊँ पर चढ़े हुए रामचंद्र अपनी माता कौशल्या से निवेदन कर रहे हैं कि हे मा ! आज्ञा दो न ? मैं वन को जाऊँ।

कौशल्या कहती हैं—जिस राम को मैंने दूध में घी औटकर पिलाया, उसे वन जाने की आज्ञा कैसे दूँ ? मेरा भीतर-भीतर कलेजा फटा जा रहा है।

राम तो मेरे प्राण हैं, लक्ष्मण आँख की पुतली और सीता मेरे हाथ की चूड़ी। मैं इन्हें वन जाने को कैसे कहूँ ?

राम दोपहर को, लक्ष्मण तीसरे पहर को और मेरी सीता रानी गोधूलि-वेला में वन को गईं। मैं कैसे धीरज धरूँ ?

मैंने घी की पूड़ी पोई थी और दूध की खीर पकाई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

थी। हाय! मेरे राम वन को चले गए। मुझे सारा भोजन विष-सा लगता है।

चारों मंदिरों में चार दीपक जल रहे हैं। मेरे मंदिर में एक ही जल रहा है। पर मेरे लेखे सारा संसार अंधकारमय लगता है; क्योंकि मेरे राम वन को चले गए।

कौशल्या भीतर से निकलीं। उनकी आँखों से आँसू बह रहे हैं। वह बिसूर रही हैं कि हाय! राम, लक्ष्मण और सीता किस वन में होंगे?

कौशल्या घर-घर फिरकर लड़के जमा करती और कहती हैं कि हे लड़को! तुम हिल-मिलकर कुछ देर खेलो-कूदो, जिससे मैं थोड़ी देर के लिये राम को भूल जाऊँ।

राम के विना मेरी अयोध्या सूनी है, लक्ष्मण के विना महल और सीता के विना रसोई। मैं कैसे धीरज धरूँ?।

रात को मैं दीपक जलाऊँगी, सेज बिछाऊँगी, और आधी रात को अपने पुत्र को प्यार करूँगी। मानो मेरे राम घर में ही हैं।

सावन भादों के दिन हैं। बादल घूम-घूमकर बरस रहे हैं। हाय! राम, लक्ष्मण दोनों भाई कहीं भीगते होंगे।

यह बादल रिम-झिम बरस रहा है। मुझे अच्छा नहीं लगता। हे बादल! तुम उस वन में मत जाकर बरसो, जहाँ मेरे लड़के हैं।

राम का मुकुट भीग रहा है, लक्ष्मण का दुपट्टा, और मेरी सीता की माँग का सिंदूर भीग रहा है। तुम तीनों घर लौट आओ।

यह गीत करुण-रस से ओतप्रोत है। ऐसा हृदय-द्रावक वर्णन न तो वाल्मीकि ने किया है, न कालिदास और भवभूति ने, और तुलसी न सूरदास ने ही। तभी तो बाबू भगवानदास-जैसे संस्कृत के उद्भट विद्वान् और विरक्त पुरुष इन गीतों पर मुग्ध हैं, और इनकी सरसता के आगे उन महाकवियों की कविता को घटकर बतलाते हैं। ये गीत न तो हिंदी के किसी महाकवि के बनाए हैं और न छंद और अलंकारशास्त्र के किसी पंडित के। ये गीत स्त्रियों के बनाए हुए हैं, जो कविता की देवी हैं। कौशल्या के दुःख का स्त्रियों ने जिस गहराई से अनुभव किया है, पुरुष कवि शायद ही वैसा कर सकें। यही कारण है कि इस कविता में स्वाभाविकता यथेष्ट मात्रा में है; कोरी कवि की कल्पना नहीं है। हिंदी में इस प्रकार का वर्णन हमें केवल प्रियप्रवास में मिलता है।

ऐसे अमूल्य रत्न देहात में बिखरे पड़े हैं। यदि ये बटोर न लिए गए, तो काल इन्हें खा जायगा। यह मौखिक साहित्य हमारे लिखित और मुद्रित साहित्य से कई सौ गुना बड़ा होगा। एक-एक ज़िले में गीतों का एक-एक महाभारत मनुष्यों के कंठ-कंठ में विराजमान है। हम सुधा के सहृदय पाठकों से आग्रहपूर्वक कहते हैं कि वे इस गीत-संग्रह के काम में हमारी सहायता करें, और अपने घर, पड़ोस तथा गाँव में गाए जानेवाले गीतों को सुपाठ्य देवनागराक्षरों में लिखवाकर हमारे पास भिजवा दें। समय पाकर वे स्वयं अपने कार्य की महिमा समझेंगे और संतुष्ट होंगे। गीत चाहे किसी रस और किसी विषय के हों, लिख लिए जायँ। आटा पीसते और खेत निराते समय जो गीत गाए जाते हैं, वे विशेष सरस होते हैं। उनका संग्रह अवश्य कर लेना चाहिए। उनके सिवा विवाह के गीत, बेटी की बिदा के गीत, मेले के गीत, चनैनी, कहरवा, बिरहा, सोहर आदि भी संग्रह कर लेने चाहिए। गीत यथासंभव शीघ्र हिंदी-मंदिर, प्रयाग के पते पर हमारे पास भेज दिए जायँ।

रामनरेश त्रिपाठी

× × ×

३. विरही के आँसू

हृदय-कुसुम के मधु मकरंद!
हुआ प्रवाह तुम्हारा बंद;
जीवन-ज्योति इसी से मेरी,
अहा! हो चली मंद।
कुसुमाकर का नया आगमन
मधुपों के भी फुल्लित मन;
फूल-फूलकर फूल चाहते,
तव मधुमय-निष्पंद *।
तरंगिणी के निर्जन कूल,
खिली चाँदनी, बिछा दुकूल,
सिकता कुंकुम लेकर बिधु से

* विरह में कुसुम, चंद्र आदि कामोद्दीपक पदार्थों के दर्शन से 'आँसू' का निष्पंद स्वाभाविक ही है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लहरों का रति-रंग।
कुमुदिनियों के विकच-वदन,
स्नेह-सिक्त वन, पत्र-नयन,
निशानाथ का स्वागत करते,
घोल हृदय का रंग।
कुंज-मालती में छिपकर,
लतिकाओं से हिल-मिलकर,
मलयानिल जब सुरभित करता
उपवन का उत्संग।
सुनाते थे तब तुम वह छंद !!
बंद कर हृद्वेदना प्रवाह ;
पिलाते मादकता की भंग,
मंद पड़ जाती 'उसकी' चाह।
गगन में उनए हों घन श्याम,
पड़ रही पावन प्रेम-फुहार ;
देख जब चपला का अभिसार,
विरह-वारिधि में आता ज्वार।
गूँथते थे तब नलिन-नयन,
तुम्हारा वह मुक्तामय हार;
बुझा देता जो उर की आग,
बहाकर सरस शांति की धार।
निठुर के दिए हुए ये चिह्न !
विरह के मर्म-निकृंतन घाव;
प्रकृति-सुषमा का पा आघात,
लगाते गले मृत्यु का भाव।
इन्हीं 'रस-बूँदों' का आष्पंद,
बंद करता तब दारुण द्वंद्व;
हाय ! पर होकर तुमसे दीन,
सूख अब चला हृदय का फूल।
लिए जाता वेदना प्रवाह,
कहाँ मेरे जीवन का कूल ?

श्रीहरिश्चंद्रपति त्रिपाठी "कवींद्र" (साहित्य-रत्न)

× × ×

४. साक़ी

(१)

प्रभात-पवन के झोंके न-जाने मेरे कानों में क्या कह गए। मैं उसी शून्य क्षितिज और उसी शुष्क प्रकृति पर, जिन्हें मैं अब तक केवल व्यर्थ समझा करता था, मुग्ध हो गया। कुछ देर संज्ञाहीन रहा। आँख खुलने पर मैंने अपने सामने केवल तीन वस्तुएँ देखीं। एक तूलिका, एक पत्र और कल्पनाओं का एक विशाल पारावार! नीली-नीली लहरियों में मैंने अपने को भुला दिया। मेरी आत्मविस्मृति देखकर सागर में उथल-पुथल मच गई। उत्कट तरंग-मालाएँ उठीं—उफ़् ! उनमें कितना मद था ! नीचे गिरते ही वे फेनिल हो गईं। मेरी आँखें झूमने लगीं। इस नील मद्य को देखकर मैं चौंका; क्योंकि मैं अब तक सुनता आता था कि मद्य सुनहला होता है। मैं आँखें फाड़-फाड़कर इधर-उधर देखने लगा। मेरा साक़ी दूर खड़ा था। मेरा मोह देखकर वह मन-ही-मन मुसकिरा रहा था।

(२)

अब तो छक गए होगे ?
अभी से ?
क्या अब मद्य नहीं मिलता ?
मिलता है; परंतु वह नील मद्य नहीं मिलता।

वह कल्पनाओं का प्रभात था। अब धूसर संध्या अपने काले केश-पाश बिखेरे इतने समीप आ गई है कि स्मृतियों के अंतराल से आनेवाली प्रभात-छाया की रेखाएँ भी धुँधली हो गई हैं। अब न वैसा मद्य मिलता है, और न वैसा मद आता है। तुमने बहुत बुरी चाट लगा दी साक़ी ! दया करो, अपने सुनहले मद्य के सागर समेट लो, और विनिमय में उसी नील मद्य के एक-दो घूँट दे दो।

इस समय भी मेरा साक़ी मुसकिरा रहा था।

(३)

यामिनी के काले अंचल में सहसा चंद्रोदय हुआ। चारों ओर सफ़ेदी दौड़ गई। सारा संसार उसी रंग में रँगा दिखाई देता था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अब न वह नील मद्य था, और न वह सुनहला मद्य। चाँदनी में दोनों रंग छिप गए। प्रकृति की गोद में कृति छिप गई। रँगा हुआ संसार बे-रंग हो गया।

प्रकाश की शुभ्र शलाकाओं ने मुझे अधर में उठा लिया। मैं उसी हिंडोले में एक अनंत निद्रा की कल्पना करने लगा था कि मेरा साक़ी आया।

उसने पूछा—अब तो छक गए?

मैंने कहा—हाँ।

यह वही मद्य था; परंतु इसमें राग-रंग न था। मैंने जी भरकर पिया। एक बार फिर अपना आपा भूल गया।

इस समय मेरा साक़ी मौन था, और एक गंभीर मुद्रा से मेरी ओर देख रहा था।

दुर्गादत्त त्रिपाठी

× × ×

५. नवीनता के प्रवाह में कुछ प्राचीन शास्त्रों का ह्रास

कुछ समय हुआ, 'सरस्वती' में ला० कन्नोमलजी एम्० ए० का एक लेख इसी विषय पर निकल चुका है। आपने दिखलाया था कि आधुनिक विद्याओं की चकाचौंध में हम कितनी ही प्राचीन विद्याओं को प्रायः भूल गए हैं। जैसे—स्वप्न देखकर ही शुभाशुभ जान लेना, ज़मीन देखकर ही पानी के मीठे-खारी होने का अनुमान कर लेना इत्यादि विद्याओं का ह्रास एक प्रकार से पाया जाता है। कहीं-कहीं अब भी ऐसे ग्राम-निवासी पाए जाते हैं, जो इन विषयों को भली भाँति जानते हैं; परंतु उनमें आधुनिक शिक्षा के न होने से वे विद्याएँ दिन-दिन नष्ट होती जा रही हैं।

मुझे भी एक हस्त-लिखित प्राचीन जैन-शास्त्र से निम्न-लिखित बातें ज्ञात हुई हैं, जिन्हें मैं पाठकों के सम्मुख रखता हूँ। पहले समय में व्यावहारिक ज्ञान के लिये ये शास्त्र हमारे यहाँ प्रचलित थे, जिनमें से दो-एक अब भी टूटी-फूटी हालत में प्रकाशित हो चुके हैं, और अधिकांश भाग एक प्रकार से नष्ट हो गया है। उनके नष्ट हो जाने का कारण हमारी ही अज्ञता है। हम उन्हें प्रकाशित करना पाप समझने लगे। जो विद्या बाप को आती है, वह बेटा नहीं जान सकता, चाहे विद्या ही नष्ट क्यों न हो जाय। अब भी प्राचीन जैन-भांडारों में—जैसे पाटन (गुजरात), जैसलमेर (मारवाड़) इत्यादि शहरों के भांडारों में—कई ग्रंथ-रत्न पड़े हुए हैं, जिन्हें दीमकें चाटे जा रही हैं। पर अज्ञता के कारण हम उन्हें प्रकाशित करके विद्वानों के सम्मुख लाना प्रायः अपना कर्तव्य नहीं मानते। कैसी शोचनीय अवस्था है। क्या हमारे जैन भाई वर्तमान योरप के ढंग से शिक्षा लेने का प्रयत्न करेंगे?

कुछ दिन हुए, महाराज गायकवाड़ ने अपने राज्य में ऐसे अप्रकाशित ग्रंथों को प्रकाशित करने के लिये विद्वानों की एक कमेटी बना दी थी, जिसने संस्कृत के कई अमूल्य ग्रंथ प्रकाशित भी किए हैं। परंतु यह कार्य एक हाथ के भरोसे पर छोड़ने का नहीं; प्रत्युत सभी को मिलकर करना चाहिए। वे कौन-से शास्त्र प्रचलित थे? अच्छा सुनिए—

भौम-शास्त्र—जिसके द्वारा भूचाल इत्यादि का पता चल जाय। मिट्टी देखकर कौन वस्तु उत्पन्न हो सकती है, मालूम हो जाय—अर्थात् भू-संबंधी प्रत्येक बात का संपूर्ण शास्त्र।

उत्पात-शास्त्र—आकाश से पानी बरसाया जाय। वर्षा को रोक भी दिया जाय। रुधिर आदि की वृष्टि होने लगे।

शुभाशुभ-स्वप्न-फल-शास्त्र—शुभ और अशुभ स्वप्नों द्वारा प्रत्येक होनेवाली बात का ज्ञान लगा लेना। इस विषय के एक-दो ग्रंथ अब भी प्रकाशित हैं; परंतु वे संपूर्ण नहीं कहे जा सकते।

अंतरिक्ष-शास्त्र—आकाश-स्थित ग्रहों द्वारा प्रत्येक वस्तु की तेज़ी-मंदी का ज्ञान करानेवाला शास्त्र। ग्रहों की चाल से वर्षा आदि का हाल जान लेना। इसी विषय पर 'वृष्टि-प्रबोध' नाम का ग्रंथ ब्यावर (राजपूताना) के पं० मीठालालजी व्यास ने प्रकाशित भी कराया है, जिसकी हिंदी-संसार में बड़ी प्रशंसा हुई है।

अंग-स्फुरण-विचार-शास्त्र—अंगों, प्रत्यंगों के स्फुरण अर्थात् फड़कने से अपना शुभाशुभ जान लेना।

स्वर-शास्त्र—जिसके द्वारा इड़ा, पिंगला, सुषुम्णा नाम की नाड़ियों से भूत, भविष्य, वर्तमान का ज्ञान हो जाय। इस विषय पर अधूरे दो-एक ग्रंथ मेरे भी देखने में आए हैं।

व्यंजन-शास्त्र—जिससे भोजनोपयोगी संपूर्ण वस्तुओं के बनाने का ज्ञान हो जाय। भोजन के गुण-दोषों का विवेचन। किस नक्षत्र में कौन-सी वस्तु खाने से कार्य-सिद्धि होती है इत्यादि।

सामुद्रिक शास्त्र—हस्त-रेखा-विज्ञान, मसे-तिल आदि चिह्नों द्वारा तथा शरीर की आकृति से मनुष्य के स्वभाव

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का हाल मालूम कर लेना। इस विषय में अँगरेज़ी में अच्छे-अच्छे ग्रंथ दिन-दिन बढ़ते चले जा रहे हैं; परंतु हिंदी में हाल ही में दो ग्रंथ रतलाम-निवासी श्रीमहादेव पाठक और बंबई, लखनऊ के कुछ प्रेसों ने भी प्रकाशित किए हैं। यह विद्या हमारे ही देश की है; परंतु हम तो भूल गए, योरप इनमें उन्नति कर रहा है। ठीक है, जिन खोजा, तिन पाइयाँ।

विकथा-शास्त्र अर्थात् काम-शास्त्र। स्त्री-पुरुषों के समस्त लक्षण। स्त्री को वश करने, पुरुष को वशीभूत करने तथा मन-मानी संतान पैदा करने एवं ओषधि द्वारा शरीर को पुष्ट करने का संपूर्ण ज्ञान। यानी काम-कला का पांडित्य प्राप्त करानेवाला शास्त्र। इस विषय पर भद्दी और थोथी, तथा कुछ अच्छी भी पुस्तकें, बहुत प्रकाशित हुई हैं। योरप भी इसके पीछे पड़ा हुआ है; परंतु नहीं कहा जा सकता कि हमारे यहाँ यह विद्या किस रूप में थी। आजकल तो स्वार्थी लोग इसी के द्वारा पाठकों को अनेक प्रकार से लूट रहे हैं। वात्स्यायन का काम-सूत्र भी अजमेर से प्रकाशित हुआ है।

विद्यानुयोग-शास्त्र—रोहिणी, प्रज्ञप्ति इत्यादि विद्याओं की सिद्धि। इसके द्वारा मन-माना कार्य हो सकता है। जैसे आकाश में उड़ जाना, बहुत बड़ी सेना को नष्ट कर देना, सरस्वती को सिद्ध कर लेना। यह प्राकृत भाषा में लिखा हुआ है, इसलिये संभव है, इस विषय में मुझसे कुछ भूल हो गई हो; क्योंकि जो चीज़ है ही नहीं, उसका निर्णय करना बड़ी ही कठिन बात है। कोई जैन विद्वान् साधु इस विषय पर सुधा में प्रकाश डालेंगे, तो मैं बड़ा प्रसन्न होऊँगा।

मंत्रानुयोगमंत्र-शास्त्र—देव-सिद्धि। मंत्रों द्वारा देवता से काम लेना। इस विषय को समझा सकना भी अशक्य है। इस विद्या को जाननेवाले बंगाल में हों तो हों, अन्य स्थानों पर धीरे-धीरे घटते ही जा रहे हैं। ढोंगियों की कमी नहीं; परंतु सचाई कितनी है, इस विषय का लेखक को संपूर्ण ज्ञान नहीं। अच्छा हो, कोई पाठक लिखने की कृपा करें।

योगानुयोग—मंत्र-शास्त्र—अर्थात् मारण, मोहन, वशीकरण तथा उच्चाटन आदि। इस विषय पर भी धूर्तों ने जाल बिछाकर लूटना जारी कर रक्खा है। परंतु सत्य सिद्ध कोई है या नहीं, लेखक ने प्रत्यक्ष नहीं देखा। हाँ, मन-गढ़ंत या कपोल-कल्पित बहुत-से क़िस्से सुने हैं। यह विषय भी कोई सज्जन प्रकाश में लाने की कृपा करेंगे, तो हिंदी-संसार उनका ऋणी रहेगा।

अन्यतीर्थप्रवृत्तानुयोग—यानी सब धर्मों का सार जानना। उनमें पारंगत होकर विपक्षी के मत का खंडन करना।

अन्य कुछ शास्त्रों के नाम भी लिखे हैं; परंतु उन्हें सब कोई जानता है, इसलिये नहीं लिखे गए। जैसे नृत्य-शास्त्र, गंधर्व-कला-शास्त्र, औषध-शास्त्र, धनुर्विद्या-शास्त्र। इन शास्त्रों का वर्णन प्राकृत भाषा में है, जिसमें जैनों के ग्रंथ हैं। संभव है, मेरी अल्पज्ञता से कुछ त्रुटियाँ रह गई हों। विद्वानों का कार्य है कि वे इन शास्त्रों को खोजकर हिंदी-संसार को इनसे परिचित करावें।

गुलाबचंद्र दरड़ा

× × ×

६. प्रेम और तर्क

इस समय मेरे हृदय में कितने ज़ोर का ज्वार-भाटा हो रहा है! मेरी स्वल्प जीवन-यात्रा में इस प्रकार का ज्वार-भाटा कितनी ही बार आ चुका है! अमुक व्यक्ति के प्रेम को उपलब्ध कर शीघ्र ही उसकी हृदय-तंत्री के साथ अपनी वर्जित हृत्तंत्री की मधुर ध्वनि निकालने तथा अद्वैत जीवन-संगीत का अबाध प्रवाह बहाने का विचार कर मेरे हृदय में कितनी ही बार गुदगुदी हो चुकी है! मैंने कितनी ही बार अपने हृदय-रत्न को सादर समर्पण कर, अपनी श्रद्धा और स्नेह का अधिकार देकर, जीवन की पहेली को सिद्ध करने की, पैरों में सुख की बेड़ियाँ डालने की चेष्टा की है! प्रायः प्रत्येक बार कैसे मेरे हृदय पर तीर चल गया है, मेरे जीवन के स्वच्छ आकाश में सहसा अंधकार छा गया है!

पर वाह रे हृदय, तू भी ख़ूब है! कई बार तिरस्कृत होने पर भी, लाखों लांछनों का लक्ष्य होने पर भी, तूने अपनी आदत नहीं छोड़ी! इस बार भी तुझसे मैंने कितनी लड़ाई लड़ी, तुझे बहुत कुछ समझाया; पर इतने दुःखद अनुभव के बाद भी तूने अपनी गति नहीं बदली! जिस पौदे से तेरा कोई संपर्क नहीं, आशा नहीं, उसे सींचने के लिये अपने शोणित-कणों को ढालता है, उसके तनिक पनपने से अपने को बड़भागी समझता है! वही पौदा, जिसके विहँसने से तू फूल उठता है, किंचित् काल के बाद तुझे देखकर संकुचित होने लगेगा, तुझे देखते ही अपने प्रसून

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को मुकुलित कर लेगा, और तेरे जाते ही खुलकर दूसरे नवागंतुक मधुपों से मिलेगा, उन पर अपने को न्योछावर करेगा ! तेरी समस्त आकांक्षाओं की वह जड़, जिसका देखना आज तुझे सुधा-सा प्रतीत होता है, जिसके दर्शनों के लिये तू सदैव तृषित रहता है, उसी का देखना तेरे लिये काँटा हो जायगा, तुझे संसार से घृणा मालूम होगी !

हृदय का क्या ही विचित्र निवेदन है ! तू बड़ा अधीर है ! प्रेम की हाट में कृपण को कोई नहीं पूछता। वहाँ मोल कभी सस्ता नहीं होता। जिसकी प्राप्ति के प्रयत्न में अपना सर्वस्व समर्पण करने पर भी, अपना जी होमने पर भी, कहीं हज़ारों में एक सफल-मनोरथ होता है, उसे तू सहज ही पाना चाहता है, प्रसव-वेदना को बिना झेले ही तू लाल देखने की लालसा रखता है, आतुर प्रतीक्षा की सुखद पीड़ा बिना सहे ही तू अपने प्रेमास्पद के पाने की कांक्षा करता है ! प्रेम और तर्क के बीच बड़ा विरोध है। जहाँ तर्कदर्शी के लिये केवल निराशा की काली घटा है, वहाँ प्रेमी के लिये मधुर चंद्रिका छिटक रही है। वास्तव में जो प्रेम स्फटिक के समान शुभ्र, हीरे की भाँति ठोस और हिमालय के सदृश दृढ़ है, उसकी आह का असर अमोघ होता है।

साँच को आँच कभी नहीं लग सकती। प्रत्येक साधना की परीक्षा हुआ करती है। प्रेम की परीक्षा सबसे कठिन होती है। इस परीक्षा में तुम्हें कष्ट हो सकता है; पर अंत में निस्संदेह असीम आनंद होगा। जब तुम दिखला दोगे कि तुम्हारे हृदय में प्रेम का समुज्ज्वल समुद्र उबल रहा है, इस संबंध-बिंब पर लेश-मात्र भी कलंक-कालिमा नहीं, इसमें केवल त्याग और अक्षुण्ण अनुराग है, तब निश्चय ही तुम्हारी साधना सिद्ध होगी, घृणा भी श्रद्धा में अंतर्लीन हो जायगी, प्रेम-पथिकों के लिये एक सहकारी आदर्श उपस्थित हो जायगा।

तिरस्कार के विषय में मुझे बहुत थोड़ा कहना है। तिरस्कृत होने में तो मुझे सुख ही मिलता है। भला तिरस्कार कहाँ का कम है ! तिरस्कार ही तो प्रेम का अभिभावक है।

रामरुद्रप्रसादसिंह
(एम्० ए०, बी० एल्०, डिपुटी-मैजिस्ट्रेट)

× × ×

७. महात्मा सदासुख चोपड़ा

संसार में अपने कर्तव्य का पालन करनेवाले मनुष्यों की संख्या बहुत थोड़ी है। परोपकार और दानवीरता का हृदय की विशालता के साथ गहरा संबंध है। 'परोपकाराय सतां विभूतयः' ऐसे उदार व्यक्तियों का जीवन संसार के लिये अनुकरणीय है। धन्य हैं ऐसे दानी पुरुष, जिन्होंने अपना सर्वस्व जाति और देश पर न्योछावर किया है, कर्तव्य निभाते हुए भी जिन्होंने कभी ख्याति की इच्छा नहीं की। जालंधर के सदासुख चोपड़ा ऐसे ही उदाराशय महान् थे। उनके काम पर जालंधर के प्रत्येक हिंदू और मुसलमान तक को भी गर्व हो सकता है। यहाँ के नर-नारी, बाल-वृद्ध उनके ऋण से उऋण नहीं हो सकते।

बात आज की नहीं, पुरानी है। लगभग डेढ़ सौ वर्ष हुए, देहली से एक ईरानियों का जत्था देश को विध्वंस करता हुआ जालंधर पहुँचा। उन्होंने अपनी नीच प्रकृति का यहाँ की आर्य-जाति को भी परिचय दिया। सारे शहर में लूट मचा दी गई। राह-चलते निरपराध मनुष्यों को सताना आरंभ कर दिया। चारों ओर हाहाकार मच गया। ऐसे समय में न तो जनता में ही संगठन का बल था, और न कोई राज्य की ओर से सुप्रबंध था। इस दुष्ट-दल को रोके कौन ? हत्यारों को रोकने की किसी में शक्ति न थी। बहुत सोच-विचार के बाद शहर के बड़े चौधरियों ने ईरानी दलपति के पास जाकर दया के लिये प्रार्थना की, और कहा—"आप जो भी भेंट माँगें, हम देने को तैयार हैं।" इस दलपति ने कहा—"हाँ, सूर्योदय से पूर्व सवा दो लाख रुपए मुझे मिल जायँ, तो तुम बच सकते हो। नहीं तो नगर के एक-एक व्यक्ति, क्या पुरुष क्या स्त्री, सबको दास और दासी बनाकर ईरान में बेच दूँगा। या सबेरे व्यास नदी के किनारे तुम्हें क़त्ल कर डालूँगा।" इतनी बड़ी रक़म सुनकर चौधरी चुप हो गए। निराश होकर वह घर लौट आए।

शहर-भर में ऐसा कोई आदमी नज़र नहीं आता था, जो इतनी धन-राशि भेंट दे सके। न वहाँ परस्पर कोई सहानुभूति ही थी, जिससे सबकी रक्षा हो सके। सब अपने-अपने भाग्य के ही भरोसे बैठ गए।

इधर दलपति ने सेना को पकड़-धकड़ के लिये आज्ञा दे दी। रक्त-पिपासु सिपाहियों ने अपना काम शुरू कर दिया। सहस्रों नर-नारी पकड़ लिए गए। शहर श्मशान-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सा दीखने लगा। डर के मारे पक्षी भी मानो घोसलों में जा छिपे। किसी को चूँ तक भी करने का साहस न हुआ। दलपति ने कह दिया कि इन सबको पकड़कर व्यास पर ले चलो। यदि कल सूर्योदय से पूर्व भेंट मिल गई, तो अच्छा है, नहीं तो मा के सामने उसके प्यारे लाल का, पति के सामने उसकी स्त्री का, भाई के सामने बहन का वध कर दिया जायगा।

किसी का इकलौता पुत्र, किसी की बहन किसी का प्यारा भाई, सब प्रकार के लोग पकड़े गए। चारों ओर हाहाकार मच गया। कितने घरों के दीपक बुझ गए। रमणियों के करुण क्रंदन से उस दलपति का हृदय न पसीजा!! नन्हे-नन्हे बच्चों की तोतली बातों से भी वह द्रवित न हुआ। भेड़-बकरियों की तरह निर्दयतापूर्वक एक ही रस्से में सब बाँधे गए, और व्यास पहुँचा दिए गए। कोई भूखा था, कोई प्यासा था, किसी का बच्चा कोमल स्वर में अपनी मा को पुकार रहा था, कोई पूछता था अम्मा, हमें कहाँ लिए जा रहे हैं? इसी दयनीय अवस्था में वे सबको घसीट के ले गए। शहर में जो बच रहे, उनकी अवस्था और भी अधिक शोचनीय थी। अपने-अपने बंधुओं को याद करके कोई मंदिरों में रोता था, कोई मसजिद में माथा रगड़ता था, कोई ज़मीन पर ही लोट-पोट हो रहा था। शहर में मानो प्रलय उपस्थित था!!

ऐसे संकट के समय एक व्यक्ति तीर्थ-यात्रा करके जालंधर पहुँचा। लोगों की यह दुःखद घटना सुनकर उससे न रहा गया! उसने चट पट घर पहुँचकर ख़च्चरों पर सवा लाख रुपए लादे, और व्यास की ओर चल दिया। अभी पौ फटने न पाई थी कि वह व्यास पर गया। दलपति की आज्ञा के अनुसार सब नगर-निवासी वध किए जाने के लिये एक पंक्ति में खड़े थे। बिगुल बजनेर सबका सिर धड़ से अलग होने को था। इतने में एक आदमी ने दलपति से आकर कहा, श्रीमान् से एक घुड़सवार मिलना चाहता है। वह कहता है, इस वध करने के पहले मेरी एक बात सुन लीजिए। दलपति गया। उस व्यक्ति ने कहा—अपने रुपए गिन लीजिए।

तब उसने एक आदमी के पास 'रिहा बिकुनद' अर्थात् 'छोड़ दो' का संदेश भेज दिया। वह अश्वारोही दौड़ता हुआ वहाँ पहुँचा, जहाँ नगर-निवासी बँधे हुए मृत्यु की प्रतीक्षा कर रहे थे। उसने जाते ही कहा, शर्त पूरी हो गई है, सबको छोड़ दिया जाय। काल साक्षात् सामने खड़ा था। ऐसे विकराल समय में इस संदेश से वध्य और वधक, दोनों के लिये बड़ा आश्चर्य हुआ। संदेश-वाहक ने कहा—तुम स्वतंत्र हो गए हो, जाओ, अपने-अपने घर लौट जाओ।

लोग हैरान थे कि इस काल-बंधन से मुक्ति दिलाने हमारा जीवन-दाता कौन है? किसने हमारे प्राणों की रक्षा की है? कौन जानता था कि दया के अवतार, दानवीर, महात्मा सदासुख चोपड़े का हृदय इतना विशाल होगा।

पर सदासुख लौकिक ख्याति की इच्छा न रखते थे। वह अपना कर्तव्य-पालन करके चुपचाप लोगों की आँख बचाकर दूसरी ओर से चल दिए।

वर्षों तक यह भेद छिपा रहा। किसी को कुछ पता न लगा कि किसने हमें छुड़ाया? अंत में एक पीढ़ी के पश्चात् बहीखाते की अकस्मात् खोज करते हुए इन शब्दों पर दृष्टि पड़ी—"सवा लाख रुपया व्यास में आदमियों के छुड़ाने के लिये दिया गया।" आज दानवीर सदासुख के उपकार को स्मरण करके मस्तक झुकता है। संसार में ऐसे व्यक्तियों का जीवन धन्य है।

जालंधर-नगर में चोपड़ा-समाधि है। चोपड़ा-बिरादरी ने उसके पास यज्ञशाला और कुँआ खुदवा दिया है। चोपड़ा-बिरादरी अपने बच्चों के संस्कार वहीं जाकर करती है। ऐसे पुण्यात्माओं का जो भी स्मारक बने, थोड़ा है।

श्रीगोपालदेवी (हिंदी-प्रभाकर)

रबर की थैलियाँ

दूषित रोगों से बचने के लिये तथा संतान इच्छानुसार होने के लिये इसका उपयोग कीजिए, सालों ख़राब न होंगी। मूल्य फ़ी थैली १।) रु० डाक-ख़र्च १ से तीन तक ।=) आना।

मिलने का पता—मेहता ब्रादर्स, ८/० पोस्टबक्स नं० ११४४४, कलकत्ता।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१. "फ़ूट-फ़िंस" अर्थात् कृत्रिम मछली की दुम

य दि तैरने का शौक़ ही है, तो फिर जगन्नियंता की नैसर्गिक विधियों से भरसक लाभ उठाने में क्यों संकोच किया जाय? जैसा कि चित्र में दिया हुआ है, जल में कूदने के लिये तैयार बैठी हुई, जल-शूर मेम साहबा की भाँति मोमजामे के जूतों के तलों में "फ़ूट-फ़िंस" लगाकर तैर जाय, तो तैरने में बड़ी सहायता मिलेगी। स्वभावतः मछलियों के इसी प्रकार की दुम होती है। चित्र में दी हुई पट्टियाँ तैरने में आगे बढ़ते हुए पैरों के खिंचने पर बंद हो जाती हैं, और जब पैर से पीछे की ओर पानी ठेला जाता है, उस समय खुलकर चौड़ी हो जाती हैं। इनसे पानी सहज ही में पीछे की ओर ठेला जा सकता है।

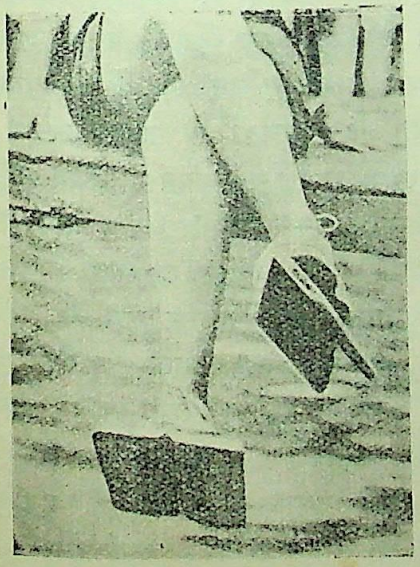

"फ़ूट-फ़िंस"

× × ×

२. अनोखी सूझ

पाश्चात्य देशों में जब से वायुयानों का प्रचार हुआ है, तब से न-जाने कितने उड़ाके वीर काम आ चुके हैं। वायुयानों के अकस्मात् असामयिक फ़ेल होने तथा जलकर भयंकर स्थानों में गिरने की रोमांचकारिणी घटनाएँ प्रायः सुनने में आती हैं। इनसे बचने के लिये उड़नेवालों ने

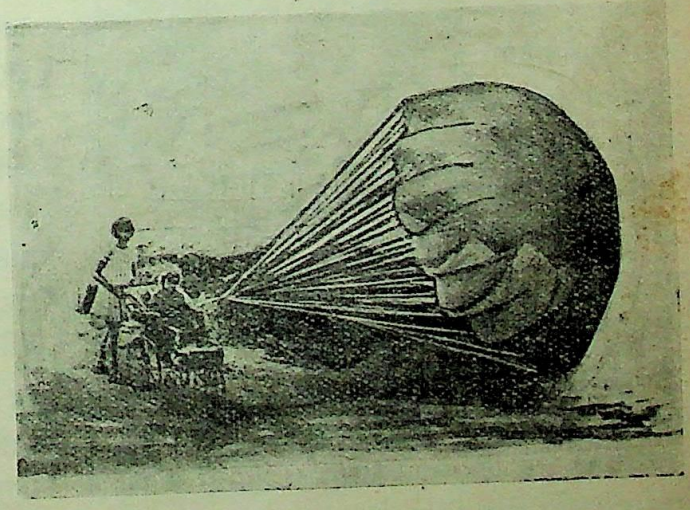

"पैराशूट"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपने शरीर में एक बड़ा छाता बाँधना शुरू किया है। इसे "पैराशूट" कहते हैं। यह बहुत मज़बूत होता है। जब कोई वायुयान अचानक फ़ेल होकर गिरने लगता है, तो उड़नेवाला "पैराशूट" बाँधे हुए वायुयान पर से कूद पड़ता है। हवा में पैराशूट खुल जाता है, उसके पेंदे के छेद से हवा धीरे-धीरे निकलती है, और उड़नेवाला शनैः-शनैः पृथ्वी पर सुरक्षित उतर आता है।

एक चतुर अँगरेज़ ने अपने बच्चे की गाड़ी के सामने, सैर के समय, एक पैराशूट लगाकर देखा है। इससे बच्चे का मनोरंजन तो होता ही है, साथ ही गाड़ी ठेलने-वाली नौकरनी को बड़ा आराम मिलता है। ज़रा सहारा देने से हवा के झोंके से ही गाड़ी चली जाती है।

× × ×

३. हकलाने का इलाज

अभी तक डॉक्टरों का यह मत था कि बातचीत करने में हकलानेवालों की व्याधि जिह्वा में होती है। पर अभी हाल में यह पता लगा है कि यह व्याधि जिह्वा में नहीं होती। यह रोग उसी प्राणी को होता है, जिसके फेफड़े साँस के साथ खींची हुई वायु में से ऑक्सिजन काफ़ी मात्रा में खींच नहीं सकते। इस चित्र में पेंसिलवेनिया-विश्वविद्यालय के दो अध्यापक रोगी को बिठाकर उसके शरीर में नलिकाओं द्वारा ऑक्सिजन का प्रवेश करा रहे हैं। रोगी को कितना ऑक्सिजन दिया गया, और उसमें से वह कितना काम में ला सका, इसी का प्रयोग डॉक्टर ई० बी० ट्विमयर और प्रो० एच्० ई० स्टार मिलकर कर रहे हैं। इसी प्रकार के प्रयोगों से इन्होंने उपर्युक्त सिद्धांत स्थिर किया है।

डॉ० ई० बी० ट्विमयर और प्रो० एच्० ई० स्टार ऑक्सिजन की जाँच कर रहे हैं

× × ×

४. गद्दीदार कुर्सियों तथा और सामान को कीड़ों से बचाना

निरंतर तप्रयोगों से यह मालूम किया गया है कि सिन-कोना का घोल तैयार करके पिचकारी द्वारा गद्दियों के मख़मल और फ़लालैनों पर छिड़क देने से फिर अर्से तक उनमें कीड़े नहीं लगते। इस चित्र में कुनैन के घोल का छिड़काव किया जा रहा है।

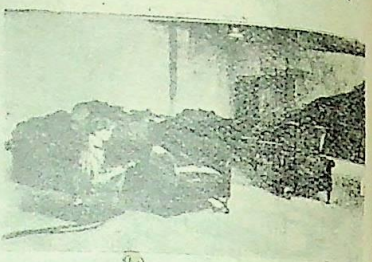

कुनैन का घोल छिड़का जा रहा है

रामनारायण कायस्थ
(एस्० एस्-सी०, बी० ए-जी०)
रामनारायण मिश्र (एम्० एस्-सी०)

× × ×

५. प्रयोगशाला में जीवों की उत्पत्ति

कुछ ही वर्ष पहले प्रकृति में पाए जानेवाले पदार्थों का प्रयोगशाला में तैयार होना असंभव और काल्पनिक समझा जाता था। किंतु आज प्रयोगशालाओं में ऐसे-ऐसे पदार्थ बनने लगे हैं, जिन्हें देखकर कोई भी यह नहीं कह सकता कि वे प्रकृति में पैदा होनेवाले पदार्थों से गुण में किसी प्रकार कम हैं। इसके बाद प्राणियों के शरीर में बननेवाले पदार्थों को प्रयोगशालाओं में बनाने की चेष्टा होने लगी, और आज दिन हम देखते हैं कि प्रयोग-शालाओं में माँड (Starch), शक्कर, यूरिया आदि कितने ही पदार्थ बन रहे हैं। पर्याप्त ज्ञान और कार्य-कुशलता से मनुष्य उन पदार्थों को बनाने में सक्षम हुए हैं, जो प्राणियों के शरीर-गठन में लगते हैं। तब प्रश्न होता है कि रसायन-शास्त्री या भौतिक विज्ञान-शास्त्री क्यों नहीं एक पग और अग्रसर हो सकते और प्रयोग-शालाओं में जीव तैयार कर सकते? इस पर आज के प्रसिद्ध अँगरेज़ वैज्ञानिक सर ऑलिवर लॉज का विचार पाठकों के सामने रक्खा जाता है। विषय बड़ा महत्व-पूर्ण है। इस पर संसार के सभी बड़े-बड़े वैज्ञानिक विचार कर रहे हैं। साधारण मनुष्य भी इस विषय में जानने के लिये काफ़ी उत्सुकता दिखलाते हैं। इसलिये मैं ज़रा विस्तृत रूप से इस पर प्रकाश डालूँगा।

सर लॉज का कहना है कि प्रयोगशालाओं में जीव तैयार करना संभव है। जो वैज्ञानिक जीव की भित्ति

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'प्रोटोप्लाज़्म' का अध्ययन कर रहे हैं, वे कहते हैं कि यदि हम लोग शरीरस्थ पदार्थों को बनावट को और विस्तृत रूप देने में सक्षम हुए, कुछ थोड़ा-सा 'प्रोटोप्लाज़्म' तैयार कर लिया और उस पर उपर्युक्त क्रिया की गई, तो उसमें जीवन-ज्योति दिखलाई दे सकती है, और निम्न श्रेणी का कोई प्राणी बन सकता है। सर ऑलिवर इस क्रिया को संभव बतलाते हैं। इसके कारण ये हैं—यह बात निश्चित रूप से सिद्ध हो चुकी है कि पृथ्वी आरंभ-काल में एक जलता हुआ अग्नि-पिंड थी। उस काल में पृथ्वी पर किसी प्रकार के प्राणी का रहना असंभव था। तो भी इस ग्रह पर जीव पैदा हुए और अभी तक रहते हैं। इसलिये हम अनुमान करते हैं कि इसी पृथ्वी पर के पदार्थों में कोई विशेष क्रिया हुई होगी, जिससे प्राणी बने। इसमें भी संदेह नहीं कि पहले 'प्रोटोप्लाज़्म' बना होगा; क्योंकि प्राणियों की जड़—निम्नतम श्रेणी का प्राणी—वही है, और उसी से भिन्न-भिन्न प्रकार के प्राणी पैदा हुए। जो बात पहले हुई, वह इस समय भी हो सकती है। इस प्राकृतिक क्रिया के सहायक मनुष्य और उनकी अपरिमित बुद्धि है। फिर ऐसा क्यों न अनुमान किया जाय कि भविष्य में मनुष्य प्रयोगशालाओं में प्राणी पैदा कर सकेंगे।

किंतु इस लक्ष्य पर पहुँचने के पहले हमें जीव की विशेषताओं और विचित्रताओं का ज्ञान बढ़ाना पड़ेगा। जीव का सबसे निकट-संबंधी पदार्थ (Matter) है। किंतु यह अभी तक प्राण-रहित माना जाता है। इसका ज्ञानार्जन भी जीव के रहस्यों को जानने में सहायक होगा। निम्न श्रेणी के जीव को लीजिए। एक बीज या उसका हर एक जीवित कोष बहुत-से परमाणुओं का समष्टि-रूप है। ये परमाणु सूक्ष्म विद्युत्कणों से बने हुए माने जाते हैं, जो एक दूसरी विद्युत्-नीहारिका (Neccleus) के चारों ओर घूमते हैं। ये विद्युत्कण इस प्रकार एक दूसरे से मिले हुए हैं कि उनके मिलने से 'प्रोटोप्लाज़्म-' नामक पदार्थ बन जाता है। यदि इस 'प्रोटोप्लाज़्म' का हम लोग अनुचित रूप से व्यवहार करें, तो उसके जीव का लोप हो जाता है। किंतु इसके विपरीत यदि हम लोग उसे सुरक्षित रक्खें, तो बीज अपने आसपास से अणुओं और शक्ति को संचित कर अंकुरित होता और आगे चलकर महान् वृक्ष या प्राणी का आकार ग्रहण करता है। इसमें भी आश्चर्य-जनक व्यापार है उनका जनन-कार्य, अपनी संतति उत्पन्न करना—सो भी पुश्त-दर-पुश्त। किंतु बीज की परीक्षा करने से उसकी इस शक्ति का पता नहीं लग सकता। इसमें कोई शक्ति ऐसी छिपी हुई है, जो आसपास के अन्य पदार्थों से अपना ढाँचा तैयार करती है। यह ढाँचा कैसा होगा, यह उस बीज के बनानेवाले पदार्थों पर नहीं, किंतु उसमें निहित उस शक्ति पर, जिसके सहारे वे पदार्थ हैं, निर्भर करता है। इस शक्ति—जीव—को नष्ट कर देना आसान है। हम लोग इस शक्ति की रक्षा करना या उसे बढ़ने में सहायता करना भी जानते हैं; किंतु इसके सिवा न तो हम लोगों का उस पर अधिकार है, और न उसका कुछ ज्ञान ही। जीव का सत (Essence) हमारी कल्पना के बाहर की बात है। हम नहीं जानते कि वह कहाँ से आता और फिर कहाँ को चला जाता है। इस समय हमारा ज्ञान परिमित है, और हम लोग इतना ही जानते हैं कि बिना पूर्व-जीव के जीव नहीं हो सकता। जीवित पदार्थ के शरीर से जीव निकलकर ही स्वतंत्र जीव बनता है।

जीव के इस आश्चर्य-जनक कार्य को समझने के लिये हमें अपने आसपास के जीवित पदार्थों पर विचार करना पड़ेगा। एक छोटे-से बीज से महत् वट-वृक्ष उत्पन्न हो जाता है, एक अंडे को कुछ हफ़्ते गर्म रखने से उससे अस्थि-मांस-युक्त चिड़िया निकल आती है। निम्न श्रेणी के प्रोटोप्लाज़्म ऐमोइबा को देखिए। वह भी पुष्टिकारक भोजन पाकर बढ़ता, कई हिस्सों में बँटता और संतति पैदा करता है। इसका कारण जड़ पदार्थों का गुण-विशेष नहीं जान पड़ता।

जब हम मनुष्य को देखते हैं, तो इस शक्ति की विचित्रता और भी अधिक देख पड़ती है। मनुष्य में एक ऐसा पदार्थ है, जो अन्य प्राणियों में नहीं के बराबर है। यह है उनका मस्तिष्क। सर ऑलिवर प्राण और मस्तिष्क में कोई फ़रक़ नहीं पाते। मस्तिष्क सचेतन है; किंतु प्राण शायद ऐसा नहीं है। वह प्राण को मस्तिष्क की आरंभिक अवस्था समझते हैं, और मस्तिष्क को प्राण का सचेतन हिस्सा। दरअसल ये दोनों एक ही पदार्थ हैं, किंतु इनका विकास भिन्न-भिन्न अवस्था में है।

हमारा शारीरिक यंत्र केवल पुट्ठों (Muscles) से ही नहीं बना है, किंतु इसमें मस्तिष्क और स्नायुएँ भी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हैं, जो इन पुट्ठों को चलाती और उस पर अपना अधिकार रखती हैं। ये इंद्रियों से संकेत भी ग्रहण करते हैं। मस्तिष्क ही प्रधान यंत्र है, जिसके द्वारा सारा कार्य सधता है। जीव की कार्यवाहियों पर उसका पूरा अधिकार रहता है। यदि मस्तिष्क विकृत हो जाता है, तो प्राणी के कार्य सुचारु रूप से नहीं होते।

अस्तु, यह तो मनुष्य और अन्य प्राणियों की थोड़ी-सी विभिन्नता हुई। अब हम फिर जीवों की ओर लौटते हैं। सभी लोग यह बात मानते हैं कि पदार्थों की उत्पत्ति किसी एक ही पदार्थ से हुई है। उसे आजकल के वैज्ञानिक 'ईथर' कहते हैं। नाम चाहे जो कुछ हो, किंतु इस विषय पर दो मत नहीं हो सकते। ईथर को वैज्ञानिक कल्पनातीत शक्ति का भांडार मानते हैं। पदार्थों में जो शक्ति हमें देख पड़ती है, वह और कुछ नहीं, इस कल्पना-

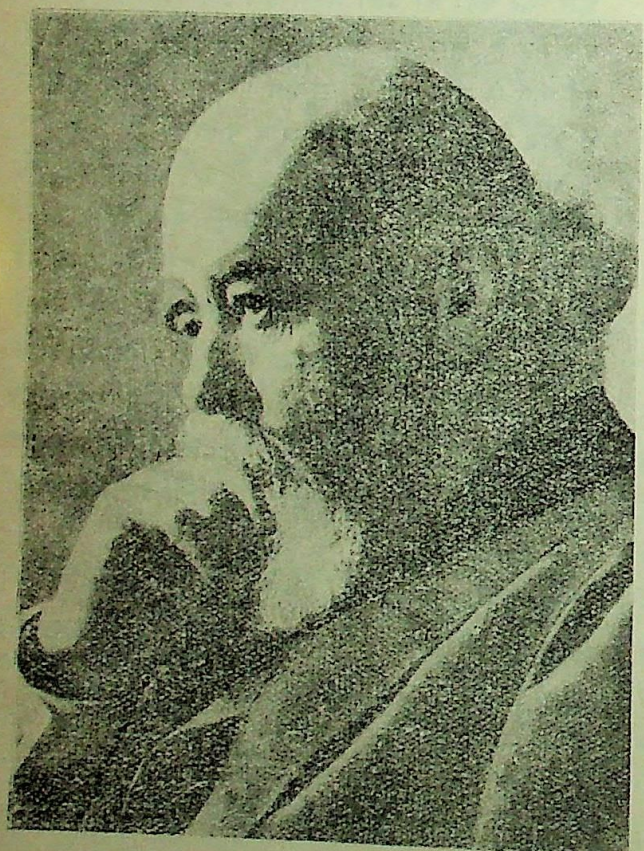

प्रसिद्ध अँगरेज़ वैज्ञानिक सर ऑलिवर लॉज, जो प्रयोगशाला में जीवों का बनना अनिवार्य मानते हैं

तीत शक्ति का थोड़ा-सा अंश-मात्र है। सर ऑलिवर लॉज का विचार है कि शक्ति-संपन्न अनंत 'ईथर' ही प्राण की सृष्टि में व्यवहृत हुआ है। इसी 'ईथर' के द्वारा पृथ्वी के सारे प्राणी बने हैं। वह ईथर को मस्तिष्क की बनावट का भी कारण मानते हैं। ईथर जब प्राणी का आकार ग्रहण कर लेता है, तब हम उसे 'जीवात्मा' या 'प्राणात्मा' कहने लगते हैं। यही जीवात्मा सभी पदार्थों में प्रवेश करता, उन्हें पकड़े रहता, उन पर अपना आधिपत्य जमाए रहता और पदार्थों को वह शकल दे देता है, जिसमें हम उसे देखते हैं। उनका यह भी विश्वास है कि भौतिक ईथर प्राण और मस्तिष्क को चलाता रहता है। इसे ही हम लोग जीव का अनंत भांडार मान सकते हैं, जिससे समय-समय पर जीव-रूपी पदार्थ निकलकर प्राणियों की सृष्टि करता है। जीवात्मा तैयार नहीं होते, किंतु वे पदार्थों से बँधे (Entrapped) रहते हैं। इसलिये संभव है, भविष्य में हम लोग भी उपयुक्त बंधन तैयार कर, ईथरीय' प्राण को बाँधकर प्राणी तैयार करने में सक्षम हों। तथास्तु।

रमेशप्रसाद (बी० एस्-सी०, केमिस्ट)

× × ×

६. नवीन पारद-यंत्र

आयुर्वेदोक्त रीति से शुद्ध पारा निकालने के तरीक़ों में सबसे श्रेष्ठ तरीक़ा डमरू-यंत्र का है; पर डमरू-यंत्र में समय और द्रव्य का अधिक अपव्यय होता है। इस नवीन यंत्र के विषय में हिंदू-विश्वविद्यालय के रसायन-शास्त्र-विभाग के मुख्य अध्यापक प्रो० एम्० वी० राणे महोदय लिखते हैं—"इस यंत्र के तैयार करने में पं० श्रीनिवास शास्त्री वैद्य (रतनफाटक, काशी) ने जिस बुद्धिमत्ता और कौशल का परिचय दिया है, उसके लिये उनका अभिनंदन करना होगा। यह एक छोटा-सा सुडौल यंत्र है, जिसके बनाने में धातु के कोई पुर्ज़े ऐसे नहीं लगाए गए हैं, जिनसे पारे का स्पर्श हो। इससे जो पारा तैयार होता है, उसमें बाहरी धातु की अशुद्धता का योग होने की कोई संभावना नहीं। हिंदोस्तान में सर्वत्र पारा निकालने के लिये सामान्यतः डमरू-यंत्र का उपयोग किया जाता है, पर यह यंत्र डमरू-यंत्र से निश्चय अधिक सुबीते का है। .....इससे समय, परिश्रम और ख़र्च की बचत होती है। आयुर्वेदोक्त ओषधियों के तैयार करने की कठिन क्रियाओं को सुलभ करने के लिये वैद्यों द्वारा नए-नए यंत्रों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के आविष्कार के ऐसे प्रयत्न विशेष प्रोत्साहन और समर्थन के पात्र हैं।

"इस यंत्र से शास्त्रीजी ने जो पारा निकाला है, उसे मैंने देखा है। वह बिलकुल शुद्ध है। टिन, सीसा, विसमथ, लोहा अथवा ज़िंक तो कहीं से इसमें नहीं मिला है। इसकी विशेष रूप से जाँच की गई; पर ऐसी कोई धातु नहीं मिली। इसलिये निस्संकोच इस यंत्र के व्यवहार की सिफ़ारिश करता हूँ।"

बड़े-से-बड़े डमरू-यंत्र में आधपाव से अधिक हिंगुल जलाने की व्यवस्था नहीं की जा सकती, और आधपाव हिंगुल जलाकर उससे पारा निकालने में ३ घंटे लग जाते हैं। पारा भी ७ भरी से अधिक नहीं निकलता। इस नवीन यंत्र में आधपाव हिंगुल आधघंटे में जलाकर उससे ८ भरी से भी अधिक पारा निकाला जा सकता है। परंतु ऐसे प्रयोग करने की ओर सद्वैद्य प्रवृत्त हों, यह देखना देश के धनी स्वाभिमानी पुरुषों का काम है। आशा है, इस अभिनंदनीय प्रयत्न का गुणग्राही समाज आदर करेगा।

वैद्यनाथ मिश्र

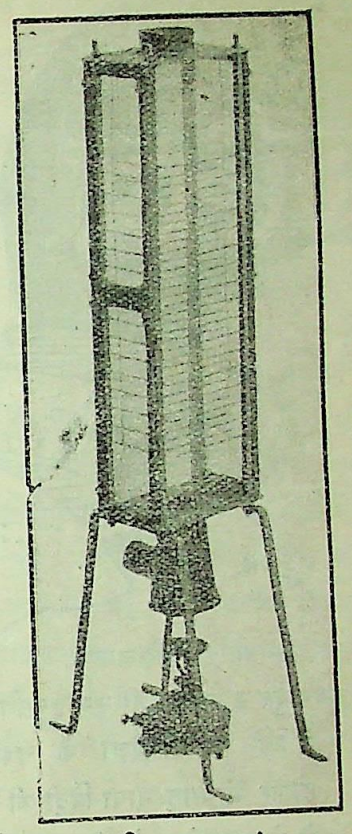

नवीन पारद-यंत्र

सस्ता-मंडल, अजमेर की सस्ती और उपयोगी पुस्तकें

पुस्तकों का विषय, उनकी पृष्ठ-संख्या और मूल्य पर विचार कीजिए

अन्य प्रकाशक प्रायः १०० पृष्ठों की पुस्तक के लगभग ।।) या ॥=) मूल्य रखते हैं

पर मंडल इतने ही पृष्ठों का मूल्य केवल ।) रखता है

म० गांधीजी के आत्मचरित्र पृष्ठ ४१६ का मूल्य तो केवल ॥=) रक्खा गया है।

कुछ पुस्तकों के नाम ये हैं—(१) दक्षिण अफ्रिका का सत्याग्रह (दो भाग) ले० महात्मा गांधी पृष्ठ ५०८ मूल्य १।) (जो भाई आत्मचरित्र मँगावें उन्हें यह पुस्तक ज़रूर मँगाना चाहिए।) (२) गोरों का प्रभुत्व ले० रामचंद्र वर्मा पृ० २७४ मू० ॥=) (३) अनोखा (सामाजिक उपन्यास) पृष्ठ ४७४ मू० १॥=) (४) भारत के स्त्री-रत्न (दो भाग) पृष्ठ ७३८ मू० १॥-) (५) जीवन-साहित्य (दो भाग) पृ० ४१८ मूल्य १) (६) ब्रह्मचर्य-विज्ञान (ब्रह्मचर्य विषय की सर्वोत्तम पुस्तक) पृष्ठ ३७४ मू० ॥-) (७) क्या करें? (टाल्स्टाय) पृष्ठ २६६ मू० ॥=) (८) तामील वेद (धर्म और नीति पर अमृतमय उपदेश) पृष्ठ २४८ मू० ॥=) (९) दिव्य जीवन पृष्ठ १३६ मू० ।=) (१०) व्यावहारिक सभ्यता (बालकों और बालिकाओं के लिये) पृष्ठ १२८ मू० ।)॥ (११) स्त्री और पुरुष (टाल्स्टाय) पृष्ठ १५४ मू० ।=) (१२) हाथ की कताई-बुनाई (अनु० रामदास गौड़ एम्० ए०) पृ० २६७ मू० ॥=) (१३) चीन की आवाज़, पृष्ठ १३० मू० ।-) (१४) योरप का संपूर्ण इतिहास (मौलिक ग्रंथ) पृष्ठ ८३० मू० २) (१५) स्वाधीनता के सिद्धांत (टिरेंस मेक्सविनी) पृष्ठ २०८ मू० ॥) (१६) तरंगित हृदय (भू० ले० पं० पद्मसिंह शर्मा) पृष्ठ १७६ मू० ।=)

अन्य पुस्तकों के लिये बड़ा सूचीपत्र मँगाइए

पता—सस्ता-मंडल, अजमेर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१. रायबहादुर हीरालालजी

रायबहादुर हीरालालजी उन इन-गिने विद्वानों में हैं, जो अँगरेज़ी के चूड़ांत पंडित होकर भी मातृ-भाषा हिंदी की सब प्रकार से सेवा करते रहते हैं। मध्यप्रदेश के तो आप गौरव ही हैं। हिंदी-संसार का कोई विरला ही व्यक्ति होगा, जो आपके कीर्ति-कलाप से परिचित न हो। सुधा के पाठकों को आपका परिचय देते हुए हमें बड़ा हर्ष हो रहा है। गौरव की बात तो यह है कि जिस विद्वान् की विद्वत्ता के क़ायल बड़े-बड़े अँगरेज़ मनीषी, संपादक और संवाददाता हैं, वह सुधा के अनन्य प्रेमी हैं, और अपनी रचनाओं से बहुधा सुधा के कलेवर को भी अलंकृत किया करते हैं।

रायबहादुर हीरालालजी का जन्म जबलपुर-ज़िले के कटनी-मुरवाड़ा क़स्बे में, सन् १८६७ के ऑक्टोबर-महीने में, हुआ था। प्रारंभिक शिक्षा आपने मुरवाड़ा और जबलपुर में पाई, और जबलपुर ही से आप सन् १८८८ में ग्रेजुएट हुए। पहले कुछ दिनों तक आप शिक्षक रहे। फिर शिक्षकों के पढ़ाने के लिये साइंस इंस्ट्रक्टर नियुक्त हुए। इसके बाद बहुत दिनों तक आप स्कूलों के डिपुटी इंस्पेक्टर और इंस्पेक्टर भी रहे, और जहाँ-जहाँ रहे, वहाँ-वहाँ आपने अनेकों नई कन्या-पाठशालाएँ तथा प्राइमरी स्कूल खुलवाकर शिक्षा-प्रचार में सहायता पहुँचाई।

आपके कार्य से संतुष्ट होकर सरकार ने आपको एक्ज़ीक्यूटिव लाइन में ले लिया, और बहुत दिनों तक आप एक्स्ट्रा असिस्टेंट कमिश्नर रहे। अंत में डिपुटी कमिश्नर होकर सरकारी नौकरी से पेंशन ली। किंतु अपने कार्य-काल में आपने ऐसे काम कर दिखलाए हैं कि बड़े-बड़े अँगरेज़-कर्मचारियों को आपका लोहा मानना पड़ा है। अकाल-पीड़ितों की सहायता का कार्य, मर्दुमशुमारी का कार्य तथा मध्यप्रांत के भिन्न-भिन्न ज़िलों के गज़ेटियर तैयार करने का कार्य आदि सभी ऐसे हैं, जहाँ रायबहादुर साहब ने प्रशंसनीय उद्योग करके प्रांत की बहुत-सी कठिनाइयाँ दूर कर दीं। पुरातत्त्व-विषयक आपकी कीर्ति हिंदी-प्रेमियों से छिपी नहीं। सरकारी पुरातत्त्व-विभाग में आपने जिस ख़ूबी से काम किया और देश की इतिहास-प्रिय जनता के लिये जैसी सामग्री ढूँढ़ दी है, वह बहुत क़ीमती है।

सन् १९१० में आप रायबहादुर की उपाधि से विभूषित किए गए। आप इसके योग्य ही थे। इसके बाद आपने अवकाश लेकर भारत-भ्रमण किया, और पुरातत्त्व-विषयक सामग्री एकत्र की। इसी के बाद आपने "मध्यप्रांत व बरार में प्राप्त शिलालेखों की वर्णनात्मक सूची" तैयार की। यह कितना महत्त्वपूर्ण कार्य है, इसका केवल अनुमान ही किया जा सकता है। इसके अतिरिक्त आपने हस्तलिखित संस्कृत एवं प्राकृत पुस्तकों की भी एक सूची तैयार की थी। इस सूची में लगभग १०,००० ग्रंथों का उल्लेख

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है। इनमें से कुछ तो अब मिलती ही नहीं—ख़ासकर जैन-धर्म-संबंधी। उपर्युक्त वर्णनात्मक सूची छपने पर आपकी बहुत प्रशंसा हुई थी।

सरकारी नौकरी पर रहते हुए आपने सहयोग-समितियाँ यत्र-तत्र खुलवाकर ग्राम्य जनता को जो लाभ पहुँचाए हैं, उनकी बात हम विशेष रूप से नहीं कहते। हमें आपके साहित्यिक जीवन से मतलब है, और इस दिशा में हम देखते हैं कि हीरालालजी ने जो ठोस कार्य किए हैं, वे बहुत उपयोगी हैं। मध्यप्रांतीय भाषाओं और बोलियों को ग्रामोफ़ोन में भरने के संबंध का जो कार्य आपने किया है, वह आपकी विद्वत्ता पर विशेष प्रकाश डालता है। १७-१८ प्रकार की विचित्र-विचित्र बोलियों का अक्षरशः अनुवाद और लिपि-अंकन इस कार्य की विशेषता है। हमें अभिमान के साथ कहना पड़ता है कि हमारे हीरालालजी दर्जनों भाषाएँ जाननेवाले हैं।

यों तो प्रारंभ ही से आपको हिंदी से अनुराग है, और अपने डिपुटी इंस्पेक्टरी-काल से ही आप उर्दू-रहित हिंदी-स्टाइल के पक्षपाती तथा प्रचारक रहे हैं. पर इधर जो पुरातत्त्व-विषयक लेख तथा ज़िलों के गज़ेटियर आपने तैयार किए हैं, वे हिंदी-इतिहास में अपना विशेष स्थान रखते हैं। स्कूली रीडरों तथा पत्र-पत्रिकाओं में आपके गद्य-पद्य लेख छपते ही रहते हैं। उड़िया-भाषा की रीडरें भी कभी आपके निरीक्षण में तैयार हुई थीं। कई पुस्तकें आपने हिंदी में लिखी हैं, जिनमें से कुछ ये हैं—मध्यप्रदेशीय भौगोलिक नामार्थ परिचय, दमोह-दीपक, जबलपुर-ज्योति, सागर-सरोज आदि। आपने मध्यप्रांत के प्रत्येक ज़िले का गज़ेटियर बनाने का भार अपने ऊपर लिया है। कई ज़िलों के तो बन भी गए हैं। हर्ष की बात है कि आपके गज़ेटियरों का अच्छा स्वागत हो रहा है।

रायबहादुर साहब बहुभाषाभिज्ञ होकर भी हिंदी के पक्के हिमायती हैं। अँगरेज़ी के इतने प्रकांड विद्वान् संस्कृत, प्राकृत और पाली के इतने ज़बर्दस्त ज्ञाता होकर भी आप हिंदी पर लट्टू हैं, यह हिंदी-भाषा-भाषी-मात्र के लिये गौरव की बात है। आपके अँगरेज़ी-लेख बहुधा 'Epigraphica Indica' में छपते ही रहते हैं। किंतु 'The Tribes and Castes of the Central Provinces of India' नाम की जो पुस्तक आपने लिखी है, वह आपकी विद्वत्ता की परिचायक है। यह पुस्तक आपने मि० आर० वी० रसल आई० सी० एस० के साथ लिखी है, और लंदन में छपी है। इसके संबंध में 'वेस्ट मिनिस्टर गज़ट' में छपा था—"यह ऐसा ग्रंथ है कि कहीं फ़्रांस में लिखा गया होता, तो कदाचित् साहित्यिक एकेडेमी की ओर से सर्वोच्च सम्मान इसके लेखकों को प्राप्त होता।" इसी प्रकार अन्य विदेशी पत्रों ने भी इसकी प्रशंसा की थी।

हीरालालजी "सादा जीवन, उच्च विचार" का सिद्धांत माननेवाले व्यक्तियों की श्रेणी में हैं। आप बहुत ही मिलनसार तथा उच्चचरित्र हैं। ३२ वर्ष की अवस्था में आपको पत्नी-वियोग हो चुका था, लेकिन दूसरी शादी आपने नहीं की। आपके एक पुत्र भी थे; लेकिन विलायत में जब वह पढ़ रहे थे, तभी उन्हें राज्ययक्ष्मा हो गया, और हीरालालजी को पुत्र-वियोग का दारुण दुःख सहना पड़ा। आपके भाई रा० सा० बाबू गोकुलप्रसादजी भी हिंदी के बड़े प्रेमी जीव थे। उन्होंने कई पुस्तकें भी लिखी थीं।

यद्यपि हीरालालजी ने सरकारी नौकरी से अब पेंशन ले ली है, फिर भी साहित्यिक कार्य उनका यथावत् जारी है। पेंशन लेने के बाद आपने अँगरेज़ी में 'मध्य-प्रांत के हस्तलिखित संस्कृत और प्राकृत ग्रंथों का कैटलाग' तैयार किया है। संयुक्तप्रांत में हस्तलिखित हिंदी-पुस्तकों की खोज पर आपकी रिपोर्ट देखने लायक़ है। 'वैराग्य-लहरी' (हिंदी-अनुवाद) एक निराली ही पुस्तक है।

भारत-सरकार के पुरातत्त्व-विभाग के आप अवैतनिक संवाददाता हैं। केवल चार ही भारतीय ऐसे हैं, जिन्हें यह सम्मान प्राप्त है, और हीरालालजी उनमें से एक हैं। इसी प्रकार संयुक्तप्रांत में हिंदी-पुस्तकों का जो खोज-विभाग है, उसके आप अवैतनिक मंत्री हैं। रॉयल एशियाटिक सोसाइटी (ग्रेट ब्रिटेन ऐंड आयर्लैंड), एशियाटिक सोसाइटी (बंगाल), रिसर्च-सोसाइटी (बिहार और उड़ीसा) के सदस्य हैं। काशी-नागरी-प्रचारिणी सभा के प्रेसिडेंट और नागपुर-विश्वविद्यालय की कितनी ही कमेटियों—जैसे एकेडेमिक कौंसिल, इतिहास, संस्कृत, पाली प्राकृत और वर्नाक्यूलर्स आदि—के ख्यातनामा सदस्य हैं।

इतने उच्च सरकारी पद पर रहकर भी मातृभाषा के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रति आपका जो अखंड अनुराग है, वह अवश्य ही अन्य लोगों के लिये अनुकरणीय है। हमें विश्वास है, रायबहादुर साहब का यह दृष्टांत बहुतों में हिंदी-प्रेम जाग्रत करेगा।

× × ×

२. कुमारी सत्यवतीजी डलहौज़ी स्नातिका

कुमारी सत्यवतीजी का जन्म उच्च सारस्वत-ब्राह्मण-कुल में हुआ है। आपके पिता पं० बख़्शीशसिंहजी (लाहौर-छावनी-निवासी) कोयले का व्यापार तथा सरकारी ठेकेदारी करते हैं। आप दो बहन और चार भाइयों में सबसे बड़ी हैं।

आपका जन्म सन् १९०४ फ़रवरी मासमें हुआ। प्रारंभिक शिक्षा आपने घर ही पर पाई। सन् १९१६ में, १२ वर्ष की अवस्था में, आपके सुयोग्य पिता ने आपको कन्या-महा-विद्यालय में दाख़िल करवा दिया। उस समय आपकी योग्यता विद्यालय की अष्टम श्रेणी के बराबर थी। ५ वर्ष के अध्ययन के पश्चात्, १७ वर्ष की अवस्था में, आपने विद्यालय की सर्वोच्च स्नातिका-परीक्षा पास की। आप सदैव अपनी कक्षा में अच्छे नंबर लेती रहीं। सन् १९२० में आप ग्यारहवीं श्रेणी में प्रथम रहीं। साधारण ज्ञान, वक्तृता, सुशीलता तथा श्रेणी में भी प्रथम रहने के कारण आपने ४ स्वर्ण तथा रजत-पदक प्राप्त किए। १९२१ में स्नातिका की उपाधि प्राप्त कर लेने के पश्चात्, अपने पूज्य पिता के इच्छानुसार, आपका विचार यथा-संभव समय तक विद्यालय की अवैतनिक सेवा करने का हुआ।

वक्तृता तथा लेखन में आप शुरू ही से दिलचस्पी लेती रही हैं। आपकी स्पीचें बहुत सुंदर, जोशीली और भावुकता से भरी होती हैं। वक्तृता देते-देते आप तन्मय हो जाती हैं। इसके लिये आप कई पदक भी प्राप्त कर चुकी हैं। सन् १९२४ में जब कन्या-महाविद्यालय का डेपुटेशन, विद्यालय के आचार्य श्रद्धेय ला० देवराजजी के साथ, ब्रह्मदेश गया, तब कुमारीजी भी साथ थीं। उस समय वहाँ के प्रसिद्ध नगर रंगून में ब्राह्मण-सभा का सम्मेलन था। सभा की ओर से सर्वोत्तम वक्ता के लिये एक ५०) का स्वर्ण-पदक घोषित हो चुका था। हर्ष की बात है कि इस पदक को भी कुमारीजी ने अपनी वक्तृत्व-शक्ति के द्वारा प्राप्त किया। इस अवसर पर पंजाब की प्रायः सब पत्रिकाओं ने आपको बधाई दी थी। अभी गत वर्ष, कन्या-महा-विद्यालय के वार्षिक उत्सव पर, सुधा-संपादक द्वारा भी आपको एक स्वर्ण-पदक अपनी वक्तृत्व-शक्ति के लिये मिला था।

सन् १९२१ से आज तक विद्यालय में धर्म ग्रंथों के अध्यापन के साथ-साथ अपनी वक्तृता तथा लेखनी से भी आप जनता की सेवा कर रही हैं। पंजाब-प्रांत की सभी आर्य-संस्थाएँ आपसे तथा आपके कार्य से भली भाँति परिचित हैं। आपके स्वभाव और सौजन्य से विद्यालय के अधिकारी तथा आपकी छात्राएँ बहुत प्रसन्न रहती हैं। आपका हृदय बहुत ही कोमल तथा सरल है। किसी व्यथित हृदय की दारुण वेदना का अनुभव कर आपकी आँखों से अश्रुधारा प्रवाहित हो जाती है।

१९२५ में विद्यालय की ४ वर्ष की अवैतनिक सेवा के पश्चात् आपका विचार मेडिकल शिक्षा प्राप्त कर, अपनी ग़रीब बहनों की सेवा करने का हुआ। अपनी सम्मति में आप इस प्रकार से, समाज-सेवा के लिये, अधिक उपयुक्त हो सकती थीं। लेकिन दुर्भाग्य या सौभाग्य से आपकी यह इच्छा पूर्ण न हो सकी; क्योंकि कन्या-महाविद्यालय के संचालक पिता देवराजजी, श्रद्धेय स्वामी सत्यानंदजी महाराज तथा समाज के कई एक अधिकारियों ने उस कार्य की अपेक्षा आपका विद्यालय में रहना ही अधिक अच्छा समझा। और, अध्यापन के साथ, समाज की जो सेवा आप कर रही हैं, वही उनका पथ है। उनका कहना है कि यदि इस कार्य से मुझे अलग कर लिया जाय, तो मेरा जीवन बिलकुल नीरस तथा निकम्मा हो जाय। बाजों में सितार से कुमारीजी को विशेष प्रेम है। सितार बजाने का आपको अच्छा अभ्यास है।

आपकी धारणा है कि उन्नति के लिये, राजनीतिक विप्लवों की अपेक्षा, पहले सामाजिक क्रांतियों की आवश्यकता है, और उनका होना अनिवार्य है। परमात्मा करे, समाज-सेवा की यह सदभिलाषा और निष्ठा सदा साथ-साथ जीवित रहें, और कुमारीजी अपने उद्देश्य में सदैव सफलता प्राप्त करें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

76023

सुधा

कुमारी सत्यवतीजी स्नातिका

Ganga Fine Art Press, Lucknow

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रायबहादुर हीरालालजी बी० ए०, एम्० आर० ए० एस्०.

(रिटायर्ड डिप्टी कमिश्नर)

Ganga Fine Art Press, Lucknow.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१. हिंदी में स्त्रियों के लिये उपयोगी साहित्य

यद्यपि इस देश में पुत्री के जन्म पर लोग उतना हर्ष नहीं मनाते, जितना पुत्र-जन्म पर, तो भी राष्ट्र की दृष्टि से लड़की का महत्त्व लड़के से कुछ कम नहीं। राष्ट्र और जाति का मंगल एवं अभ्युदय वस्तुतः उसकी पुत्रियों पर निर्भर है। माता के मूर्ख और दुर्बल होने से संतान कभी सुशिक्षित और बलवान् नहीं हो सकती। वह जाति कभी फूलती-फलती नहीं, जिसकी स्त्रियाँ सुखी, विदुषी और तंदुरुस्त न हों। कौंसिल का मेंबर बनकर वहाँ अँगरेज़ी में धुआँधार भाषण देना या सेना में भरती होकर मर मिटना ही देश-सेवा नहीं। मनुष्य किसी भी स्थिति में हो, उसका अपने कर्तव्य को भली भाँति पहचानना और उसे अपनी पूर्ण सामर्थ्य तथा शक्ति के साथ पूरा करना ही सच्ची जाति-सेवा है। जो माता अपनी संतान को सच्चरित्र और नीरोग बनाती है, जो अध्यापिका अपनी शिष्याओं को सुयोग्य बनाती है, जो नर्स अपने रोगियों की भली भाँति सेवा करती है, वह वास्तव में जाति की उतनी ही सेवा करती है, जितना कि एक सेनापति युद्ध में लड़कर करता है। इसलिये स्त्री-जाति के उद्धार पर जितना भी ज़ोर दिया जाय, थोड़ा है। और, उद्धार का सर्वोत्तम उपाय शिक्षा-प्रसार है। शिक्षा से आत्मज्ञान उत्पन्न होता है, और आत्मज्ञान को प्राप्त कर मनुष्य अपनी अच्छी प्रवृत्तियों का विकास और बुरी वृत्तियों का दमन कर सकता है।

प्राचीन काल में इस देश में स्त्री-शिक्षा का ख़ूब प्रचार था। गार्गी, मैत्रेयी और सुलभा आदि अनेक ब्रह्मवादिनी और मंत्र-दर्शिनी देवियाँ भारत-जननी के मुख को उज्ज्वल कर गई हैं। परंतु यह बात भी अस्वीकार नहीं की जा सकती कि पौराणिक काल में यहाँ घोर अविद्यांधकार फैला रहा। उस समय स्त्री को शूद्र ठहराकर उससे विद्याध्ययन का अधिकार छीन लिया गया। भारत के लिये यह घोर पतन का युग था। परंतु जगदीश्वर को धन्यवाद है कि भारत उस अंधकारमय युग से बाहर निकल रहा है। स्त्री-जाति को विद्या-प्राप्ति का अधिकार पुनः मिल रहा है। स्त्रियाँ भी देर के प्यासे व्यक्ति की तरह ख़ूब कटिबद्ध होकर विद्यामृत पान कर रही हैं।

स्त्री-शिक्षा के प्रचार के साथ स्त्रियों के लिये उपयोगी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साहित्य की उत्पत्ति अवश्यंभावी थी। इसलिये हिंदी में सैकड़ों पुस्तकें केवल स्त्रियों के ही लिये निकल चुकी हैं। पुस्तकों के अतिरिक्त तीन-चार पत्रिकाएँ भी उनके लिये निकलती हैं। फिर ऐसी पत्रिका तो शायद ही कोई हो, जिसमें स्त्री-पाठ्य विषयों को विशेष रूप से स्थान न दिया जाता हो।

सबसे पहले हम स्त्री-पाठ्य पुस्तकों को लेते हैं। इनकी संख्या सैकड़ों तक पहुँचने पर भी खेद से कहना पड़ता है कि इनमें ऐसी बहुत कम हैं, जो स्त्रियों के लिये वस्तुतः उपयोगी कही जा सकें। स्त्रियों के लिये सबसे उपयोगी पुस्तक जो मेरी दृष्टि से गुज़री हैं, वह नवलकिशोर-प्रेस की 'स्त्री-सुबोधिनी' है। इस पुस्तक की भाषा और शैली पुराने ढंग की होने पर भी इसमें स्त्रियों के काम की बहुत-सी बातें हैं। यदि इस पुस्तक का संशोधन होकर, इसमें पश्चिमी स्वास्थ्य-विज्ञान की नई खोजों का भी समावेश कर दिया जाय, तो यह और भी उपयोगी बन सकती है। 'नारायणी शिक्षा' का कलेवर बहुत बड़ा है; उसमें बातें भी बहुत-सी घुसेड़ने का यत्न किया गया है। परंतु मेरी तुच्छ समझ में वह 'स्त्री-सुबोधिनी' के समान उपयोगी नहीं बन सकी। लखनऊ की गंगा-पुस्तकमाला की 'ज़च्चा' और 'सुत संदेश' जनन-विद्या और प्रसूति-शास्त्र की बहुत अच्छी पुस्तकें हैं। इनसे स्त्रियों की अवश्य ज्ञान-वृद्धि होगी। सरस्वती-आश्रम, लाहौर की 'आदर्श पत्नी', 'विवाहित प्रेम' और 'दंपति-मित्र' भी बड़े काम की हैं। नारियों को गार्हस्थ्य-जीवन में जो कठिनाइयाँ पेश आया करती हैं, और जिनको दूर करने के लिये वे किसी दूसरे से परामर्श लेते भी शरमाती हैं, उनका समाधान इन पुस्तकों में देने का यत्न किया गया है।

काम-शास्त्र का नाम आजकल बड़ा बदनाम है। कुछ अशिक्षित लोगों ने कोक-शास्त्र और असली काश्मीरी कोक-शास्त्र के नाम पर गंदगी-सी फैला दी है। इधर-उधर की निकम्मी और कामोत्तेजक बातें लिखकर और अश्लील चित्र छापकर इस शास्त्र की मिट्टी पलीद की जा रही है। परंतु योरपियन विद्वानों की कृपा से सच्चे काम-शास्त्र का भारत में भी फिर से प्रकाश होने लगा है। कोई चाहे पवित्रता और सभ्यता की कितनी ही डींग क्यों न मारे, परंतु सचाई यह है कि प्रत्येक नर-नारी की आत्मा काम-कला-संबंधी ज्ञान के लिये लालायित रहती है। जब उसको इस ज्ञान के देनेवाले अच्छे मनुष्य नहीं मिलते, तो वह बुरों के पास जाकर अपनी ज्ञान-पिपासा बुझाती है। इससे उसे बहुधा हानि भी उठानी पड़ती है। आचार्यों ने स्त्रियों के लिये काम-शास्त्र का जानना आवश्यक ठहराया है। प्रसन्नता की बात है कि हिंदी में भी इस विषय की अब कुछ अच्छी पुस्तकें निकलने लगी हैं। कलकत्ते से 'काम-विज्ञान', 'दंपति-विज्ञान', 'स्त्री की चिट्ठी' आदि कई पुस्तकें निकली हैं। परंतु इनका जितना नाम है, उतना इनमें गुण नहीं। हाल में अभ्युदय प्रेस से पं० कृष्णकांत मालवीय की 'सोहाग रात' अच्छी निकली है। मैंने स्वयं काम-शास्त्र पर संस्कृत के प्राचीन ग्रंथों का सार लिखा है। इसका नाम 'रति-विज्ञान' है। साहित्य-सदन, लाहौर ने इसे प्रकाशित किया है। मैं समझता हूँ, विवाहिता स्त्रियों को झूठी लज्जा छोड़कर इस विज्ञान का अवश्य अध्ययन करना चाहिए। इसमें उन्हें अवश्य ही बहुत-सी वस्तुतः उपयोगी बातें मिलेंगी। मतिराम और बिहारी की कविताएँ पढ़ने से जितनी कामोत्तेजना होती है, उससे कम ही इसके पाठ से होगी।

परिकथा (Fiction) साहित्य का एक आवश्यक अंग है। उपन्यास और नाटक के बिना कोई साहित्य पूर्ण नहीं। हिंदी में भी अच्छे-अच्छे स्त्री-पाठ्य उपन्यास और नाटक निकल चुके हैं। इनमें बंबई के हिंदी-ग्रंथ-रत्नाकर-कार्यालय के बँगला से अनूदित उपन्यास बहुत अच्छे हैं। इनके लेखक उच्च कोटि के विद्वान् हैं। इसलिये इनमें सुरुचि का अच्छा ध्यान रक्खा गया है। श्री० प्रेमचंदजी की गल्पें भी अच्छी हैं। जीवन-चरितों में 'राजपूताने की वीर रानियाँ', 'वीर माताएँ' और इंडियन प्रेस, प्रयाग का 'सीता-चरित', 'भारत की विदुषी स्त्रियाँ' आदि अच्छी पुस्तकें हैं। श्रीहेमंतकुमारी चौधरानी की 'आदर्श माता' थोड़ी पढ़ी स्त्रियों के लिये बड़ी लाभदायक है। गंगा-पुस्तकमाला की पुस्तकों में 'भारत की विदुषी नारियाँ', 'महिला-मोद', 'देवी पार्वती', 'वनिता-विलास', 'भारतीय स्त्रियाँ', 'नारी-उपदेश', 'नल-दमयंती', 'देवी सती', 'पत्रांजलि' आदि स्त्रियों के लिये मनोरंजक, साथ ही किसी क़दर ज्ञानवर्द्धक भी, सिद्ध होंगी।

शिशु-पालन और शिशु-सुधार स्त्रियों की शिक्षा का एक आवश्यक अंग होना चाहिए। अँगरेज़ी में इन विषयों पर अनेक उत्तमोत्तम पुस्तकें हैं; परंतु हिंदी में इन विषयों की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अच्छी और प्रामाणिक पुस्तकें बहुत थोड़ी हैं। शिशु-सुधार पर, कई वर्ष हुए, मैंने 'बालक' नाम की एक पुस्तक लिखी थी। उस पर मेरठ के प्रयागनारायण-ट्रस्ट ने प्रसन्न होकर मुझे एक स्वर्ण-पदक दिया था।

यद्यपि सुधा, माधुरी, ज्योति और मनोरमा आदि पत्रिकाओं में स्त्रियोपयोगी स्तंभ रहते हैं, तथापि केवल स्त्रियों के लिये इस समय शायद केवल दो ही अच्छी पत्रिकाएँ निकलती हैं। उनमें से एक तो प्रयाग का 'चाँद' है, और दूसरी वहीं की 'गृहलक्ष्मी'। 'चाँद' की सज-धज बहुत बढ़िया है। छपाई-सफ़ाई और चित्रों से यह एकदम मनोमोहक है। इसका प्रचार भी यथेष्ट है। अनेक लेख भी अच्छे निकल चुके हैं। परंतु नहीं कह सकते, इसके लेखों से कितनी स्त्रियाँ लाभ उठाती हैं। हमारी तुच्छ सम्मति में यदि इसको इतना अधिक साहित्यिक न बनाकर इसमें, सरल भाषा में, ऐसे विषयों पर लेख छापे जायँ, जो सचमुच प्रतिदिन के काम-काज के लिये उपयोगी हों, तो इस पत्रिका से स्त्रियों को बहुत लाभ हो सकता है। उपन्यास और नाटक जीवन के लिये चटनी के समान हैं। ये रोटी का स्थान नहीं ले सकते। हर वक़्त कहानियाँ और मनोरंजन की बातें पढ़ते रहने से मनुष्य निकम्मा हो जाता है। उसमें भावुकता बढ़ जाती है, और वह वास्तविक जगत् को छोड़कर सदा कल्पना के संसार ही में विचरण करता है। वह किसी भी उपयोगी और ठोस विषय पर ध्यान देना पसंद ही नहीं करता। मैंने अनेक पुरुषों को अपनी लड़कियों के संबंध में ऐसी शिकायत करते सुना है। 'गृहलक्ष्मी' 'चाँद' के समान चटक-मटकवाली नहीं है; परंतु लेखों की दृष्टि से यह अच्छी और उपयोगी है।

इस समय हमारी पढ़ी-लिखी स्त्रियों का स्वास्थ्य बहुत गिरा हुआ है। उनकी मृत्यु का औसत बहुत बढ़ रहा है। इसलिये उनमें स्वास्थ्य-रक्षा-संबंधी ज्ञान के प्रचार की बड़ी आवश्यकता है। चिट्ठियों में उपन्यास लिखने और गल्पें पढ़ते रहने से जाति का हित नहीं हो सकता। सच्ची माताएँ ही देश का उद्धार कर सकती हैं, और नीरोग और साहसी संतान पैदा करने के लिये माता का स्वयं नीरोग और बलवती होना आवश्यक है। अँगरेज़ी में लड़कियों के लिये स्वास्थ्य-रक्षा पर सैकड़ों उत्तमोत्तम पुस्तकें हैं। परंतु हिंदी में हमने इस विषय की एक भी अच्छी पुस्तक नहीं देखी। इस समय गल्पों, उपन्यासों और नाटकों की हिंदी में बाढ़-सी आ रही है। कलकत्ते के कई प्रकाशकों ने स्त्रियों की शृंगार-प्रियता का अनुचित लाभ उठाकर सीता, दमयंती, विदुला, सावित्री आदि नाम से बीसियों पुस्तकें स्त्रियों के लिये निकाल डाली हैं। इन पुस्तकों की न तो भाषा अच्छी है, और न इनमें कुछ मतलब की बातें ही हैं। केवल सुंदर सुनहली जिल्द बाँधकर कई रंगीन, परंतु भद्दे चित्रों से इनको सजाया गया है। बस, भोली-भाली स्त्रियाँ उनकी चटक-मटक में फँसकर पैसे नष्ट करती हैं। पत्र और पत्रिकाओं का यह कर्तव्य है कि वे समालोचना द्वारा ऐसी घास-फूस की बाढ़ को रोक दिया करें।

संतराम (बी० ए०)

× × ×

२. सप्त-स्वर

प्रकृति-नटी यह सात रँगों से करती है नित नव शृंगार;
सप्त-स्वरों से यह जग-वीणा करती है मुदमय झंकार।
सूर्य-रूप में सप्त-रंग ये करते जग-जीवन-संचार;
सात वर्ष की अभिव्यक्ति में भूल रहा सारा संसार।
उसी सप्त-स्वर-लहरी में मुझको निमग्न हो जाने दो;
विश्व चित्र के चतुर चितेरे प्रेम-सुधा-रस पाने दो।

पुरुषार्थवती आर्य

× × ×

३. खोलो द्वार

काले बादल घिरे हुए थे, काली थी यह कैसी रात;
बिजली कैसी कड़क रही थी महाभयानक झंझा बात।
खड़-खड़ सूखे पत्ते करते, झंझा का झोंका खाकर;
दुर्दिन थे मेरे आए, मैं निकल पड़ी घर से बाहर।

❀ ❀ ❀

घोर निशा में विजन विपिन में निद्रित था जब सब संसार;
एकाकी मैं दौड़ी आई, खोलो प्रियतम, खोलो द्वार।

चंद्रनाथ मालवीय "वारीश"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

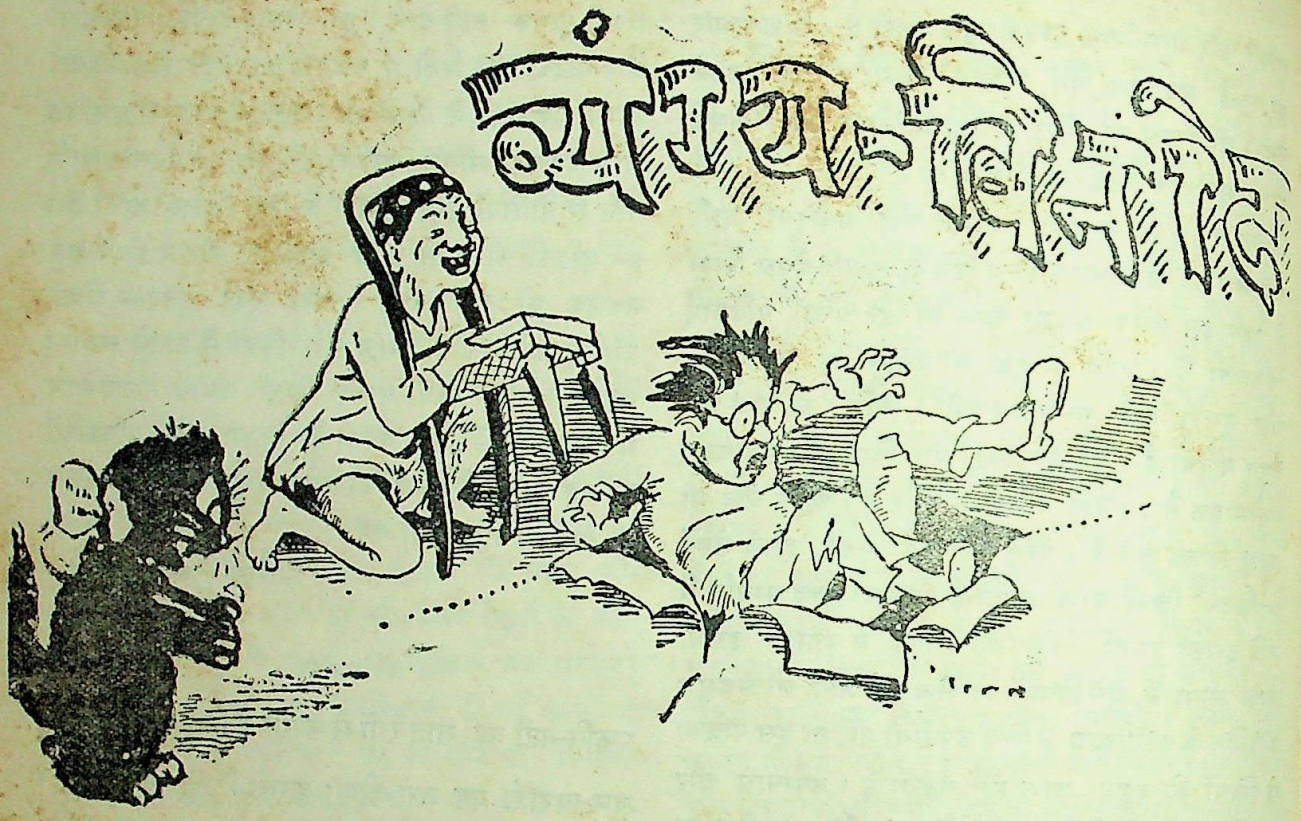

१. दोनों के मध्य का मार्ग

साधुओं के विषय में एक पक्ष का मत है—"सब साधु ढोंगी हैं, देश के भार हैं, और हैं समाज के संक्रामक शत्रु ! इनकी सहायता करना अपने पैरों पर कुल्हाड़ी मारना है।"

दूसरा पक्ष कहता है—"वे महात्मा हैं, विरक्त हैं। उनकी तन, मन, धन से सेवा करना गृहस्थों का अनिवार्य कर्तव्य है।"

दोनों पक्षों का नेतृत्व क्रमशः पुराण-प्रिय पंडित-पुंज और नवीनता-भक्त 'बाबू-दल' के हाथों में है।

परंतु सत् असत् की परीक्षा के लिये न पूर्व पक्ष प्रस्तुत है, न उत्तर ही।

❀ ❀ ❀

समालोचकों में इधर एक पक्ष प्रत्येक पुस्तक के लिये "युगांतरकारी, संग्राह्य और पठनीय" के प्रमाण-पत्र दे रहा है, तो उधर दूसरा पक्ष "कुरुचि-संचारक, जला देने योग्य और प्रचार के नाक़ाबिल" के 'मुल्ला-शाही' फ़तवे शादिर कर रहा है। पूर्व पक्ष के संचालन की बागडोर अनेक महारथियों के हाथों मे है, और उत्तर-पक्ष की स्वयंभू नेत्री हैं श्रीमती गोष्ठी बेगम साहबा। परंतु नीर-क्षीर-विवेचन से दोनों की 'तनातनी' है।

❀ ❀ ❀

परदे के विषय में एक पक्ष की राय है—"यह मुसलमान-काल की उपज है। यह अमानुषिक, अतएव भारत का कलंक, है। इसको दूर करो; क्योंकि स्त्रियों को साइकिल पर सवार हो, खुलेआम घूमने का अधिकार दिए बिना उन्नति हो ही नहीं सकती।" दूसरे पक्ष का 'अर्जेंट ऑर्डर' है—"परदा सृष्टि के आदि काल से है, और भारत की एक विशेषता है। स्त्रियों को महलों के अंदर व गिरह ३ इंच के घूँघट से आच्छादित रक्खो, और पुरुषों की दृष्टि से बचाओ। अन्यथा धर्म की नाक कट जायगी।"

पूर्व-पक्ष की नेतागिरी सुधारक-दल ने 'इंडिया ऐक्ट' के अनुसार रिज़र्व करा ली है, और उत्तर-पक्ष को पंडित-वर्ग अपनी स्वायत्त 'बपौती' समझे हुए हैं। परंतु वास्तविकता से दोनों ही दो-दो 'चोंच' करते हैं।

❀ ❀ ❀

पाश्चात्य अनुकरण के विषय में सोसाइटी के मेंबरों की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राय है—"पाश्चात्यों के समान शिक्षित, सभ्य और सुसंस्कृत जाति भू-मंडल में अन्य नहीं है। 'गैस-होल्डर' में गैस के समान इनमें भलाई भरी हुई है। इनके खान, पान, वेश-भूषा, रंग-ढंग का अनुकरण करना उन्नति का 'गुट' है।"

पर पंचायत के पंचों का मत इनके बिलकुल प्रतिकूल है। वे कहते हैं—"पाश्चात्य सभ्यता बुराई की खान है। इसका अनुकरण करना देश को पाताल भेजने का 'पास-पोर्ट' है।"

पूर्व-पक्ष के हिमायती हैं कॉलेज-लोक के देवदूत और उत्तर-पक्ष की सरदारी सवा करोड़ के सुलफ़ा-पियक्कड़ों के नाम रजिस्टर्ड है।

परंतु "सारं ततो ग्राह्यमपास्य फल्गुम्" के सिद्धांत से दोनों का ३ और ६ का संबंध है।

❀ ❀ ❀

विधवा-विवाह के विषय में 'बिरादरी' का मत है—"विधवा-विवाह धर्म-शास्त्रों के विरुद्ध है। इसका प्रचार होते ही धर्म एकदम 'बिदाउट् टिकट' रसातल चला जायगा। इसलिये चाहे जो कुछ हो जाय, यह न होना चाहिए।"

किरस्तान-पार्टी (बिरादरी के शब्दों में) का मत है—"सतीत्व सिर पर पैर रखकर सातवें आसमान पर चढ़ गया है। इसलिये प्रत्येक विधवा को किसी-न-किसी पुरुष से अवश्य बाँध दो।"

बिरादरी की नकेल आदर्शवादियों के हाथ में है, और किरस्तान-पार्टी के महारथी 'समय की चाल परखनेवाले' व्यवहारवादी के नाम से प्रसिद्ध हैं।

अपनी-अपनी समझ-शरीफ़ा में दोनों ही ठीक से एक-एक इंच आगे हैं; परंतु आदर्श और व्यवहारवाद का समन्वय दोनों के 'बूते' से बाहर है।

❀ ❀ ❀

अब किंकर्तव्य-विमूढ़ नवयुवकों के सामने प्रश्न है—"दोनों में कौन मार्ग ठीक है, और हमें किसका अनुसरण करना चाहिए।" मैं इसके उत्तर में कहता हूँ—"दोनों के मध्य का मार्ग।"

कन्हैयालाल मिश्र "प्रभाकर" (विद्यालंकार)

× × ×

२. द्विधा

तुरग की चाल नहिं रासभ सकत चलि,
बोली पिक की न बोलि काग सुधरत है;
बगुला मराल कहौ कवि कैसे बनि सकै,
जनि सकै बाँझ पूत, गर्भ ना धरत है।
चातक सुनायो श्वेत बादरन दीन बानी,
पायो नहिं पानी बूँद एक ना झरत है;
ऐरे गुनवान जाय सेवै गुन-गाहक कौं,
जनखा जनानन सों पूरी ना परत है।

शिवरत्न शुक्ल

× × ×

३. आफ़त का मारा दार्शनिक

(ठलुवा-क्लब की तीसरी बैठक में पढ़ा हुआ लेख *)

श्रद्धेय सभापति महोदय एवं प्रिय ठलुवा-वृंद,

मुझे आप लोगों की सभा के सदस्य होने का एक नैसर्गिक अधिकार है। दार्शनिकों का काम सोच-विचार का है, और सोच-विचार के लिये ठलुवा-पंथी से बढ़कर कोई उपजाऊ भूमि नहीं।

इस नैसर्गिक अधिकार के अतिरिक्त मैंने अपने सुकार्यों द्वारा, जिनको कि मैं आपके सम्मुख प्रकट करने के लिये उपस्थित हुआ हूँ, अपने को ऐसा बना लिया है कि इस क्लब से मैं बाहर हो ही नहीं सकता।

यद्यपि मुझको ब्रिटिश-बॉर्न होने का गौरव प्राप्त है, तथापि मैं अपना मरण भारतवर्ष में ही चाहता हूँ; क्योंकि यहाँ के अनेक नगर ऐसे हैं, जहाँ मरने से इस लोक में गौरव और परलोक में स्वर्ग प्राप्त होता है।

जन्म का गौरव तो मुझे सहज ही प्राप्त था। और, मरण का गौरव मैंने आपके क्लब की मेंबरी कर अपने लिये पक्का कर लिया है। इसलिये मै अब यहाँ से बाहर नहीं जाता।

गत योरप के महासंग्राम से पूर्व मैं इँगलिस्तान के एक बड़े विश्वविद्यालय में दर्शन-शास्त्र का प्रोफ़ेसर था। संग्राम के शुरू होते ही साम्राज्य-रक्षा की लहर मेरे मन में उठी, और मैं टेरीटोरियल फ़ोर्स में भर्ती होकर भारतवर्ष आया।

एक वर्ष टेरीटोरियल्स सेना भारतवर्ष में ही रही। इस समय में मैंने आगरा, इलाहाबाद, बनारस आदि सब विद्या-केंद्रों में भ्रमण किया, और मुझे अनेक दार्शनिक विद्वानों से मिलने तथा दार्शनिक सभाओं में वाद-विवाद

* इस लेखमाला के पहले दो लेख अन्यत्र छप चुके हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुनने का अवसर मिला। दर्शन-शास्त्र में भारतवासियों की गति देखकर आश्चर्य हुआ। आश्चर्य की कोई बात न थी; क्योंकि यहाँ पर निर्धनता के होते हुए भी जीवन-संग्राम इतना घोर नहीं है, जितना कि अन्य देशों में। मैंने भी सोचा, मैं यदि न मरा, तो समझ लूँगा कि भारतवर्ष में मरने के लिये बच गया हूँ, और फिर शेष जीवन बनारस में ही बिताऊँगा, तथा 'चना-चबेना और गंग-जल' पर निर्भर रहकर विश्वनाथ-दरबार में पड़ा-पड़ा जीव, ईश्वर और संसार की समस्याओं के हल करने का भार अपने सिर पर ले लूँगा। आख़िर हम लोगों का भी नंबर फ्रांस के रणक्षेत्र में जाने का आ पहुँचा। कई दिनों के बाद एक बड़े हमले में सम्मिलित होने की नौबत आई। सब प्रकार युद्ध-संबंधी शिक्षा-दीक्षा मिलने पर भी दार्शनिक संस्कारों का अंकुर नष्ट नहीं हुआ था। मृत्यु दार्शनिक विचारों की उत्तेजक समझी गई है। रणांगण में, जहाँ कि चारों ओर मृत्यु का ही सामना है, दार्शनिक विचारों की लहर उठते क्या देर लगती है। मैं तो स्वभाव से ही दार्शनिक था, फिर भारतवर्ष में रहकर वहाँ अर्जुन और कृष्ण के संवाद की कथा सुन और समझ भी चुका था; फिर क्या है "करेला और नीम चढ़ा" की लोकोक्ति चरितार्थ हो गई। मुझे भी अर्जुन का-सा मोह उठ खड़ा हुआ।

दुर्भाग्य से मेरे पास जो एक और लेफ़्टीनेंट थे, वह भी पूरे दार्शनिक तो न थे, किंतु दार्शनिक विषयों में थोड़ी बहुत टाँग अड़ा सकते थे, और कुछ नहीं, तो दार्शनिक बनने की इच्छा ही रखते थे। अब तो दो दीवाने मिल गए। प्रश्न उठा कि यदि सामने की फ़ौज में जर्मनी की ओर से आइकिन (Oecken) नाम का जर्मन दार्शनिक आया हो, तो उस पर गोली चलाना धर्म होगा या पाप? आइकिन दार्शनिक है, तो क्या उसके वध से संसार के भावी ज्ञान-क्षेत्र को संकुचित करने का अपराध हम पर न लगेगा? "ज्ञान-साम्राज्य" के बंधन को माना जाय, या "ब्रिटिश साम्राज्य" के बंधन को? पिछला बंधन निकटतर है; किंतु उसी के साथ पहला बंधन विश्व-व्यापी और चिरस्थायी है। मनुष्य-समाज और भावी दार्शनिक इतिहास के सामने जातीय इतिहास का विचार एक संकुचित ध्येय है। यदि ऐसा ही था, तो इस युद्धस्थल तक आए ही क्यों? यदि न आता, तो यह समझा जाता कि देश की रक्षा से अपनी रक्षा को मैं प्रधानता देता हूँ, और देश के लिये बुरा नमूना समझा जाता। मेरे मित्र ने कहा कि इस कार्य को अच्छा समझा, तभी तो आए। नहीं, ठीक ऐसा तो नहीं है। कुछ जेल जाने के भय से भी चला आया। तो अब यह विचार क्यों? ख़ैर, एक बार ग़लती हो गई, सो दो बार ग़लती करना आवश्यक नहीं। दो "नहीं" की एक "हाँ" हो जाती है; लेकिन दो "ग़लतियों" की एक "सही" नहीं होती। चढ़ाई में आने से पूर्व आइकिन का ख़याल नहीं आया था। यह तो नई स्थिति है, इसके अनुकूल विचार करना चाहिए। इस स्थिति के संबंध में पहला विचार तो यह है—"क्या वह इँगलिश जाति का हनन करने के लिये स्वयं अपनी इच्छा से इस संग्राम में सम्मिलित हुआ, या अपने राज्य के दबाव से? यदि वह स्वयं आया है, तो अवश्य वध के योग्य है, और यदि मज-बूरन आया है, तो उसके मारने का पाप होगा। लेकिन यदि स्वयं अपनी इच्छा से आया, तो उसने अपने देश की सहायता करने को धर्म समझा और धर्म करनेवाले मनुष्य को मारना पाप है। किंतु हम भी अपनी जाति की रक्षा के लिये यहाँ उपस्थित हैं, और इस धर्म-कार्य को करते हुए कोई पाप हो जाय, तो क्षम्य है। यदि यह सब भी मान लें कि वह इच्छा से यहाँ आया और इस कारण वध के योग्य है, किंतु जिस समय देशवाले संग्राम में सम्मिलित होने की अपील करते हैं, उस समय क्या मनुष्य की बुद्धि ठिकाने रहती है? भावोत्तेजन होने पर बुद्धि का ह्रास हो जाता है। मनुष्य मनुष्य नहीं रहता। क्या ऐसी अवस्था में आए हुए मनुष्य को अपने कार्य का उत्तरदायी ठहरा सकते हैं, और जो अपने कार्य का उत्तरदायी नहीं, उसका वध करना कहाँ तक उचित है? इसके साथ यह भी विचार करना चाहिए कि जो लड़ाई में आता है, वह अपने व्यक्तित्व को छोड़ राज्य के व्यक्तित्व में शामिल हो जाता है। मेरी विचार-शृंखला कुछ धीरे कुछ ज़ोर से चली ही थी। कभी-कभी मेरे मित्र की हाँ-ना अथवा एक-आधे छोटे प्रश्न से भंग हो जाती थी, किंतु इस स्थान में सामने से एक गोली ने आकर बड़ी भारी "ना" कर दी। गोली मेरी बाँह में ही लगी थी। मैं मूर्च्छागत हो गया। जागा तो मैंने अपने को एक अस्पताल में पाया। वहाँ दो-एक दिन की सेवा-शुश्रूषा के पश्चात् जब स्थिति का पूर्ण पता लगा, तो लोगों से मैंने अपने मित्र के विषय में पूछा। मुझे बड़े

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खेद के साथ सुनना पड़ा कि उनके भी गोली लगी थी, किंतु उनकी वहीं पर मृत्यु हो गई। उनकी मृत्यु का भार एक प्रकार से मेरे सिर पर ही रहा, और सोते-जागते उनका चित्र मेरे सामने रहने लगा। इस बात ने मेरे शीघ्र अच्छे होने में बहुत बाधा डाली। फिर मैं विलायत भेज दिया गया। वहाँ एक मनोविश्लेषण-शास्त्री (Psycho-analysist) ने मेरी मानसिक चिकित्सा की। उससे मेरा दुःस्वप्न नष्ट हुआ। मेरी बाँह तो बेकाम हो गई, लेकिन वैसे मैं स्वस्थ हो गया। लड़ाई के बाद टैक्सों के कारण विलायत का जीवन बहुत महँगा हो गया था। भारतवर्ष में शेष जीवन बिताने का संकल्प कर ही चुका था; किंतु मेरे पास भारतवर्ष आने के साधन न थे। इतने ही में एक ईसाई-कॉलेज में दार्शनिक की माँग हुई। दर्शन-शास्त्र के संबंध में जो कुछ मैं पहले काम कर चुका था, वह कॉलेज में मेरी स्वीकृति के लिये पर्याप्त था। भारतवर्ष आया, कॉलेज में पढ़ाना शुरू किया; किंतु मैं यहाँ की पाठन-पद्धति से परिचित न था। परिचित हुआ, तो वह मेरे विचारों के अनुकूल न पड़ा। सुक़रातो पद्धति से ज्ञान उत्पन्न करना मेरा लक्ष्य था। यहाँ लोग पुस्तकों के दास बनकर परीक्षोत्तीर्ण होना अपना परम श्रेय समझते थे। साल भर में एक किताब भी ख़तम न हुई। लड़के धड़ाधड़ फ़ेल हुए। मेरी शिकायतें हुईं, प्रिंसिपल ने कहा-सुना, वह मुझ-ऐसे पंडित को असह्य हुआ। नौकरी छोड़ काशी चला आया हूँ। कभी-कभी विश्वविद्यालय में लेक्चर दे आता हूँ, और दिन-भर आपके ठलुवा-क्लब में अपना समय बिताता हूँ। यहाँ के श्लाघनीय अवकाश में दार्शनिक विचारों की धारा दिवस-निशि अकुंठित गति से बहती रहती है। इसलिये मैं आप लोगों का हृदय से आभारी हूँ, और ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ कि इस ठलुवा-क्लब के मेंबरों की संख्या दिन-दूनी और रात-चौगुनी बढ़ती रहे। आमीन।

गुलाबराय (एम्० ए०)

सेठ घनश्यामदासजी बिड़ला, सेठ जमनालालजी बजाज आदि द्वारा स्थापित सस्ता-मंडल, अजमेर से प्रकाशित

भारतवर्ष में सबसे सस्ती, सचित्र उच्चकोटि की

त्याग-भूमि

जीवन, जागृति, बल और बलिदान की मासिक पत्रिका

संपादक—श्रीहरिभाऊ उपाध्याय, श्रीक्षेमानंद राहत

पृष्ठ-संख्या १२०, दो रंगीन और कई सादे चित्र

स्त्रियों और युवकों के लिये ४० पृष्ठ सुरक्षित

वार्षिक मूल्य केवल ४)

हिंदी व अँगरेज़ी की पत्र-पत्रिकाओं ने जिन शब्दों में इसका स्वागत किया है, वह तो पाठकों ने पढ़ा ही होगा।

नमूने की प्रति के लिये ।।) के टिकट भेजिए।

सूचना—इतने ही पृष्ठों और लगभग इतने ही चित्रों सहित अन्य पत्र-पत्रिकाओं का मूल्य ६) या ६।।) है। पर प्रचार के लिये इसका मूल्य लागत से भी कम रक्खा गया है। इसके अलावा इसमें बाहरी किसी भी तरह के विज्ञापन नहीं छापे जाते, जिससे कि अन्य पत्रों को हज़ारों रुपयों की आमदनी हो जाती है। इसमें चित्र भी बहुत उच्च कोटि के तथा ज्ञानप्रद छापे जाते हैं।

आशा है, पाठक ग्राहक बनकर मंडल के शुद्ध सेवा-भाव की क़दर करेंगे।

पता—'त्याग भूमि', सस्ता-मंडल, अजमेर

(मंडल की पुस्तकों की सूची अन्यत्र देखिए)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

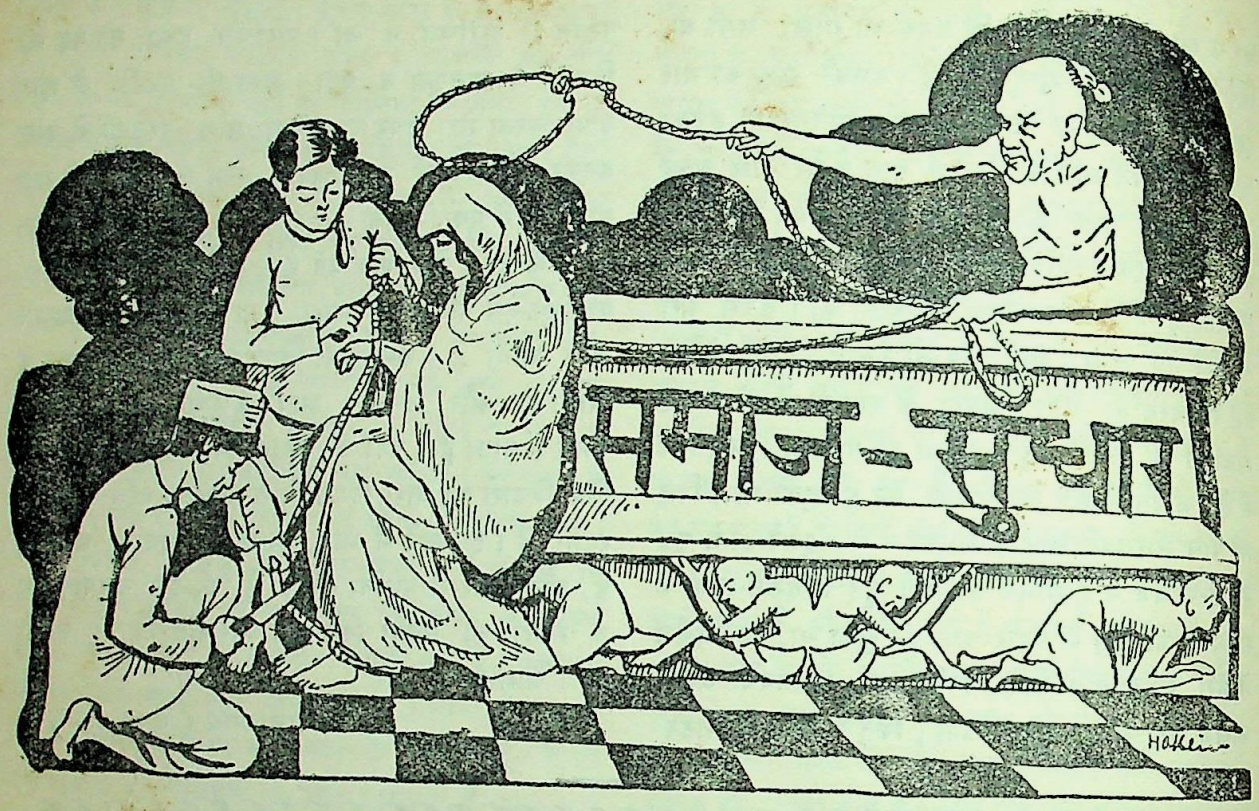

१. वेद में विधवा-विवाह

फ़ेसर मैक्समूलर ने India what Can it Teach us ? (भारत हमें क्या शिक्षा दे सकता है ?) नाम की प्रसिद्ध पुस्तक में संस्कृत के 'सत्य'-शब्द की अर्थ सूचकता की महिमा इस प्रकार वर्णन की है, मानो वह इस 'सत्य'-शब्द के मूल-अर्थ पर मुग्ध हो रहे हैं। उनका कथन है कि किसी अन्य भाषा में ऐसा भावपूर्ण तथा उत्तम शब्द सचाई के लिये नहीं, जिसके मूल या धातु के अंदर ही उत्तम भाव या व्याख्या भरी पड़ी हो।

जिस प्रकार एक सत्य-शब्द की महिमा मैक्समूलर को मुग्ध कर रही है, उसी प्रकार वैदिक संस्कृत में अनेक शब्द ऐसे हैं, जिनकी महिमा का हम वर्णन नहीं कर सकते। इस लेख में हम वेद में आया हुआ एक 'दिधिषु' शब्द लेना चाहते हैं। यदि कोई जिज्ञासु आप्टे-कृत अँगरेज़ी-संस्कृत-शब्द-कोष को उठाकर इस शब्द के अर्थ उसमें देखे, तो उसे "Second husband of a widow" अर्थात् विधवा का दूसरा पति, यही अर्थ मिलेगा। यदि वह केवल अमरकोष को देखना चाहे, तो उस प्राचीन संस्कृत-शब्द-कोष में भी 'विधवा का दूसरा पति' यही अर्थ मिलेगा। फिर वेदमंत्र में जो पुनर्विवाह या नियोग-परक "उदीर्ष्व नारि" इत्यादि मंत्र हैं, उनमें भी जब यही शब्द मौजूद है, तो इसके अर्थ वहाँ विधवा के दूसरे पति के क्यों नहीं हो सकते? ऋषि दयानंद तथा पंडित श्रीईश्वरचंद्र विद्यासागर ने जब वेदमंत्र में उक्त शब्द देखा, तो हिंदू-संसार को दिखा दिया कि वैदिक काल में विधवाओं का पुनर्विवाह या नियोग होता था।

यदि क़ुरानशरीफ़ में एक स्थल पर लिखा है कि शराब हराम है, तो सब मुसलमान हराम मान लेते हैं। पर जिन्हें हराम नहीं मानना है, वे कह सकते हैं कि केवल एक ही जगह ज़िक्र आया है।

पूरा मंत्र यह है—

उदीर्ष्व नार्य्यभिजीवलोकमितासुमेतमुपशेष एहि ;
हस्तग्राभस्य दिधिषोस्त्वमेतत् पत्युर्जनित्वमभिसम्बभूथ।

सायणाचार्य ने जो इस मंत्र का संस्कृत-भाष्य किया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है, वह आप उनके तैत्तिरीय आरण्यक के ६ प्रपाठ के १ अनुवाक में देख सकते हैं। उसका नागरी-भाषा में अनुवाद हम नीचे देते हैं—

"हे नारी! तू इस मृतक पति के समीप सोती है, सो उठ! और इस जीवलोक के आगे आ! पुनर्विवाह की इच्छा करनेवाले पाणिग्राही पति के इस पत्नीत्व को प्राप्त हो।"

ऋषि दयानंद के भाष्यानुसार हम उक्त मंत्र की सरल भाषा नीचे लिखते हैं—

(नारि) हे स्त्री! (एतम्) इस (गतासुम्) गत-प्राणं अर्थात् मरे हुए पति के (उपशेषे) पास रह चुकी है। (जीवलोकम्-अभि-एहि) जीवित मनुष्य अर्थात् पति को प्राप्त हो। (उदीर्ष्व) निश्चय रख कि (दिधिषोः पत्युः) दूसरे पति से (इदं जनित्वम्) यह संतान (तव हस्तग्राभस्य) तेरे पाणिग्रहण करनेवाले पति की (अभिसंबभूथ) होगी।

अतः दोनों भाष्यों के आधार से सिद्ध हो गया कि वेद में विधवा-विवाह का विधान है।

वेद में अनेक मंत्रों में विधवा के दूसरे विवाह या नियोग का आदेश है; पर जिज्ञासु के लिये वेद का एक मंत्र, नहीं-नहीं एक शब्द ही पर्याप्त है। इसलिये इस समय हिंदू-समाज के अनेक भारी पुरोहित, जो रात-दिन ज़बानी कहा करते हैं कि विधवा का दूसरा विवाह नहीं हो सकता; कारण, वेद में निषेध है, उनके लिये हम उक्त एक शब्द ही पर्याप्त समझते हैं। हम चाहते हैं, हिंदू-जनता विधवा-विवाह को बहुत जल्द जारी कर दे। सृष्टि का नियम बतलाता है कि जब तक नारी रजोधर्म से युक्त होती रहती है, तब तक वह संतान पैदा करने के योग्य है। यदि ईश्वर या प्रकृति को यह मंज़ूर होता कि कोई विधवा फिर विवाह न करे, तो विधवा होने पर रजोधर्म या मासिक धर्म से कभी वह युक्त न होती। संसार में जो लोग सृष्टि-नियमों पर चलते हैं, वे ही सुखी हैं। हिंदू-समाज प्रायः न सृष्टि के नियमों का आदर करता है, न वेद पर ध्यान देता है। इसीलिये उसकी यह अधोगति हो रही है। भंगिन विधवा होने पर दूसरा विवाह कर सकती है और सुखी है। कुलीन हिंदू-विधवा भंगिन से भी बढ़कर दुखी है। मार्शल-लॉ का युग किसी देश के लिये सुख का युग नहीं हो सकता। कुलीन हिंदू-विधवाओं पर रूढ़ि-रूपी मार्शल-लॉ का युग हम चला रहे हैं, इसलिये जो कर्मवीर विधवा-विवाह के प्रचारक हैं, उनसे बढ़कर देश-भक्त मैं किसी को नहीं समझता।

आत्माराम अमृतसरी

× × ×

२. हमारा संस्कार

असभ्य जातियों में अपना संस्कार या अपनी शिक्षा नहीं रहती। अपना कोई धर्म भी नहीं रहता, और अपनी शिल्पकला उनके वंशजों की निकाली हुई नहीं होती। इसलिये वे दूसरे देशवालों की शिक्षा आदि लेकर सभ्य बनने का यत्न करते हैं। इनका रहन, सहन, बोल, चाल, वेश, वस्त्र आदि देशांतर की नक़ल पर अवलंबित रहता है। परंतु भारत की ऐसी दशा नहीं। हमारा संस्कार, हमारा धर्म, हमारी शिक्षा और हमारा वेश, वस्त्र आदि अनादि काल से अपना ही चला आ रहा है। दूसरे देशों के गुणों के हम क़ायल हैं। उनकी अच्छी बातें हम न लें, यह हमारा तात्पर्य नहीं। लेकिन केवल उन्हीं की नक़ल पर हम सब काम किया करें, अपनी देश-कालानुकूल बातों को भी सर्वथा छोड़ दें, यह कभी उचित नहीं, और ऐसा कभी नहीं हो सकेगा। अँगरेज़ी-शिक्षा के द्वारा सरकार ने हमारा बड़ा उपकार किया है। इस शिक्षा के कारण हमें देश-देशांतर की बहुत-सी ख़बरें मिलती हैं। छोटी-बड़ी नौकरियाँ मिल रही हैं, जिससे हज़ारों कुटुंब आराम में पड़े-पड़े अपना निर्वाह कर रहे हैं। परंतु द्रव्य और समय आदि के अभाव से सैकड़े पीछे एकआध के सिवा बहुतेरे ही इस शिक्षा से वंचित हैं। जो लोग इस शिक्षा में जाते भी हैं, वे जितना ख़र्च करते हैं, उसका आठ आने सैकड़ा सूद भी मिलना दुस्तर है। पाँच हज़ार ख़र्च करके जो बी० ए०, एम्० ए०, बी० एल्० आदि होते हैं, उन्हें पचीस रुपए की नौकरी भी सुलभ नहीं। नौकरी और वकील आदि के स्थान बहुत कम हैं, और पढ़नेवालों की संख्या हर साल बढ़ती जा रही है। जिन्हें 'स्कॉलरशिप', पद की गारंटी आदि मिले, या घर में रुपए बहुत हों, वे ऐसी पढ़ाई पढ़ सकते हैं। पर जिन ग़रीबों को, बढ़ई, लोहार, चमार आदि को, या कथक, पुरोहित आदि को पंद्रह वर्ष की उमर से बूढ़े मा-बाप आदि कुटुंब का पालन करना है, वे इस शिक्षा में नहीं आ सकते। इसके अतिरिक्त हमें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देखना है कि इस देश में शंकर, भास्कर, अमरसिंह आदि के समान पुरुष होते थे, और देशांतरों में आज भी होते हैं। जर्मनी के डॉक्टर आइन्सटाइन आज भास्कर और न्यूटन के उत्तराधिकारी हैं। उनकी शिक्षा अपनी भाषा में हुई है, विदेश की भाषा में नहीं हुई। वैदेशिक शिक्षा से ऐसे आचार्य या उन आचार्यों के संग्राहक नहीं हो सकते।

संक्षेप से सब स्त्री-पुरुष यह समझ सकते हैं कि जैसे उदार भाव से, बड़ी आयोजना से और बड़ी बुद्धिमानी के साथ कचहरी, पुलीस आदि के काम के लिये सरकार हमारे उपकार के हेतु तथा अपना साम्राज्य चलाने के लिये अँगरेज़ी शिक्षा देकर अपना कर्तव्य कर रही है, उसी प्रकार देशीय रीति पर, देश की भाषा में शिक्षा का प्रचार कर इस देश की प्रजा को भी बड़े-बड़े आचार्य और बड़े-बड़े शिल्पकलाभिज्ञों के आविर्भाव के लिये जातीय विद्या-केंद्र स्थापित करने चाहिए। इस देश के लोग कुछ समय से विद्या-बुद्धि-हीन होने के कारण केवल नक़ल करने में प्रवीण हैं। देश के लोग उदार हैं। इनके सूराख़दार पाकेटों में से हज़ार और लाख नहीं, करोड़ों रुपए ऐसे लोगों के व्यर्थ बक-बक पर पानी के समान बहा करते हैं, और देश की दशा दिन-दिन हीन होती जाती है। हमारे रुपए भी चले जा रहे हैं, और सरकारी तथा पूज्य मालवीयजी महाराज आदि के सरकार की नक़ल में बने हुए करोड़ों के मकानातवाले विद्यालयों में से अब हज़ारों ऐसे ही आदमी निकल रहे हैं, जो बी० ए०, एम्० ए० पास कर नौकरी न मिलने के कारण और अन्य किसी काम के योग्य न होने से भिक्षा, आत्मघात, परद्रोह आदि की शरण ले रहे हैं, और विज्ञ श्रमजीवियों तथा असली विद्वानों के अभाव से देश रसातल को चला जा रहा है। ऐसी संस्थाओं में हमारे करोड़ों रुपए लग चुके, और अब करोड़ों के लिये लोग फिर अपील कर रहे हैं। जब सरकारी काम के लिये जितने अफ़सर अपेक्षित हैं, उनसे हज़ारगुने अधिक सरकारी विश्वविद्यालयों ही से निकल रहे हैं, तो फिर हज़ारों-लाखों बी० ए०, एम्० ए० * भिक्षुक, आत्मघाती, परद्रोही देशनाशक, विद्या-विलोपक उत्पन्न करने के लिये हम अपने पाकेट से और सहायता क्यों दें! अब बहुत हुआ, अब देशवालों को चेत जाना चाहिए।

अब हमें तो सरकार की व्यर्थ नक़ल करनेवाली संस्थाओं को अपनी वर्तमान स्थिति में रखकर ऐसे विद्या-केंद्र अपने तन, मन, धन की सहायता से स्थापित करना चाहिए, जिससे फिर देश में प्राचीन भारतीयों के सदृश तथा नूतन योरप आदि देशों के समान अच्छे ग्रंथकार और अच्छे शिल्प-कलाभिज्ञ उत्पन्न हों, जो किसी नौकरी का उद्देश्य न रखकर, अपने पैरों पर खड़े होकर, देश-देशांतर से धन-मान पावें। अपनी रीति पर शिक्षा पाकर बी० ए० आदि डिग्री न लेने से ये स्वयं नौकरी नहीं पावेंगे, और सर्वात्मना ज्ञान-विज्ञान की उन्नति में और नए आविष्कारों में लगे रहेंगे।

इस कार्य के लिये भारत में एक-एक करोड़ के पचीस-तीस केंद्र अपेक्षित हैं। पहले हम लोग वहाँ एक आदर्श केंद्र स्थापित करना चाहते हैं। इस केंद्र में चारों ओर क्रोटन और पान के गमले रखकर बड़े-बड़े खिलान, मेहराब और मंदिरद्वारों बरसातियों के बीच और पढ़ाई का प्रबंध नहीं होगा। औषधोद्यान में प्राणरक्षोपयुक्त लता-वृक्षादि का अपनी भाषा में (न कि बड़े-बड़े लैटिन, ग्रीक के शब्दों में) परिचय करते हुए, चरक और सुश्रुत आदि की विद्याओं की रक्षा करते हुए, देश की अनादिकालिक विद्या की पुस्तकों के बीच में रहकर, सैकड़ों विद्वान् देश की भाषाओं में यहाँ ग्रंथों का निर्माण किया करेंगे, और जो ज्ञान-विज्ञान का अन्वेषण करेंगे, वह सब स्त्री-पुरुषों को सुलभ रहा करेगा। आजकल के नए ढंग के विद्वानों की क्या दशा है, उनके कुछ उदाहरण आप देख सकते हैं, और ख़याल कर सकते हैं। मैं कई एम्० ए० पास विद्यार्थियों का पालन कर रही हूँ। इनका पालन छोड़ दूँ, तो कल से इनको फ़ाक़ा करना पड़े। कहिए, एम्० ए० होकर प्राण-रक्षा के लिये इस प्रकार दुर्दशा में रहना कैसी निंदा की बात है। और देखिए, इन बेचारों की शिक्षा ही क्या होती है। मुझे ऐसे एम्० ए० लोगों की ख़बर है, जो कैथा (कपित्थ) और बड़हल नहीं पहचानते। उनका जन्म और जीवन इसी देश में हुआ है। ये कैथे का अर्थ बेल कहते हैं, और बड़हल का

* अब से जो बी०ए०, एम्०ए० हों, वे स्वतंत्र जीविका योग्य थोड़ी संख्या में हों, और देश के भारभूत न हों, यही मेरा तात्पर्य है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तो कुछ अर्थ ही नहीं समझते ❀। क्रोटन के बाग़ों में बिजली के पंखेवाले आधुनिक विश्वविद्यालयों के उन्नतिशील विद्यार्थियों में से बहुतेरों की यही गति रहा करेगी। इन्हें न खाने को मिलेगा, और न इनमें निरीक्षा और परीक्षा की शक्ति होगी, न ये किसी स्वतंत्र जीविका के योग्य ही रहेंगे। हमारे नवीन विद्या-केंद्रों में ऐसी बातें नहीं होंगी। आँख और स्वास्थ्य विना खोए, फ़ीस में विना हज़ारों लगाए, सांप्रतिक जर्मन, जापानी बालकों के सदृश हमारे ग़रीब बालक यहाँ स्वतंत्र जीविका योग्य विद्या पढ़ सकेंगे। चंदे से आश्रम चलेगा। विद्यार्थियों से कुछ नहीं लिया जायगा। सबको इस आश्रम से लाभ होगा। परंतु आधुनिक शिक्षा का एक और उदाहरण देखिए। हमारे आधुनिक विश्वविद्यालयों में बड़ी-बड़ी वैज्ञानिक गप्पें छाँटी जाती हैं। परंतु यदि कोई चमार चमड़ा साफ़ करने का मसाला जानने के लिये सायंस-कॉलेजों के किसी अध्यापक के पास जाय, तो क्या उसे विना गर्दनियाँ दिए वे रहेंगे? ये तो चमड़ा साफ़ करने का मसाला बा० एस्-सी० करके एम्० एस्-सी०-वाले छात्रों को बतलावेंगे, जिन्हें कभी चमड़ा छूने का अवसर ही नहीं आवेगा, और पुलीस या कचहरी की नौकरी ही खोजते जन्म बीतेगा।

इसलिये मेरा प्रस्ताव है कि आधुनिक शिक्षा की पूर्ति के लिये देश-भाषा में सब ज्ञान-विज्ञान आदि सर्व-साधारण को सिखानेवाले विद्या-कद्र स्थापित किए जायँ, और सब देश-प्रेमी स्त्री-पुरुषों के पाकेट से निकलती हुई धन-धारा इन्हीं केंद्रों में लगे।

मैंने अपने धन से प्रति मास सैकड़ों रुपए ख़र्च कर ऐसा एक छोटा विश्वविद्या-केंद्र स्थापित किया है। कहा जा चुका है कि इसमें कई विद्वानों का पालन हो रहा है। जिनमें कितने ही एम्० ए० हैं। कुछ पुस्तक आदि का प्रबंध हमारे कुटुंब के व्यय से हो रहा है। कुछ पुस्तक आदि की सहायता विद्या में प्रायः सर्वस्व व्यय करनेवाले श्रीमान् शिवप्रसादजी के द्वारा मिल रही है। परंतु इस केंद्र में एक बड़े देशीय औषधोद्यान की अपेक्षा पड़ रही है, जिससे हमारे यहाँ जो महानिधान आदि का संग्रह हो रहा है, उसका वनौषधिवर्ग आदि पूर्ण उपयोगी रूप में परिणत हो। यहाँ काम करनेवाले विद्वानों के लिये एक बड़े पुस्तकालय की भी अपेक्षा है। अभी दो-तीन विभागों का कार्य हो रहा है। परंतु पूर्ण प्रबंध के लिये बीस विभागों की अपेक्षा है। प्रत्येक विभाग में पाँच-पाँच कार्य-कर्ता यदि रहेंगे, तो सौ अधिकारियों के लिये प्रबंध करना पड़ेगा। लगभग बीस वर्ष से संक्षिप्त रूप से कार्य हो रहा है। इधर दस वर्षों से बड़े ज़ोर-शोर से काम हो रहा है। तथापि प्रायः विना बाहरी सहायता के एक साधारण कुटुंब अपने व्यय से देश-भर में कोष, काव्य, दर्शन आदि के उत्तमोत्तम प्रचार के कार्य में कहाँ तक प्रयत्न कर सकता है। इसलिये अब देश को चाहिए कि जगत् के अन्य प्रदेशों की तरह अपना मुख उज्ज्वल करने के लिये रस्म-संहिता के कार्यों से तथा बकबकी लोगों के निरात्मक इष्ट कालमों से कुछ धन, शक्ति, समय आदि बचाकर अब इन कार्यों को अपनावें, और इस महायज्ञ के लिये विशाल देश-व्यापक आयोजन करें। ठीक से इसका प्रबंध होगा, तो हमारा कुटुंब तन, मन, धन से पूर्ववत् सहायता करता रहेगा। मैं अपने कुटुंब की कमाई से सैकड़ों की सहायता करती रहूँगी, और मेरे कुटुंब के लोग शरीर, विद्या, बुद्धि आदि से भी अमूल्य सहायता देते रहेंगे।

रत्नावतीदेवी
(सा० पांडेय रामावतारजी शर्मा
एम्० ए० की धर्मपत्नी)

❀ अमरकोष सामान्यतः यहाँ के सब विद्यार्थी पढ़ते हैं। प्रथमा का यह कोर्स है। पर निरीक्षक, परीक्षक और अध्यापक, कोई इसका वनौषधिवर्ग नहीं समझता। जैसे एम्० ए०, वैसे आचार्य। फिर ऐसी पढ़ाई से क्या फल?

आँवले का तेल दिमाग़ और बालों के लिये बड़ा लाभदायक है और बाज़ार में सर्वत्र असली मिलता नहीं, यद्यपि दाम पूरे देना पड़ते हैं

आँवला-तेल बनाने का मसाला

हमारे यहाँ हमेशा तैयार मिलता है। एक पैकेट में १५ भरी मसाला रहता है। इससे डेढ़ सेर के लगभग तेल तैयार होगा। तेल बनाने की विधि पैकेट के साथ मिलगी। एक पैकेट का दाम ॥≡), तीन का २॥); तेल को सुगंधित बनाने के लिये ।) की सुगंधित द्रव्य की शीशी मिलती है। ३ शाशा सुगंधित द्रव्य का दाम ॥≡) आना।

मिलने का पता—एल० के० सेठनी, ९५ अमरतल्लास्ट्रीट, कलकत्ता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस कॉलम में हम हिंदी-प्रेमियों की जानकारी और सुबीते के लिये प्रतिमास नई-नई पुस्तकों के नाम देते हैं। पिछले महीने में नीचे-लिखी पुस्तकें प्रकाशित हुईं—

(१) 'साहित्य-संदर्भ'—लेखक, पं० महावीरप्रसाद-जी द्विवेद; संपादक, श्रीदुलारेलाल भार्गव; मूल्य १॥), सजिल्द २)

(२) 'सौंदरनंद-महाकाव्य' (महाकवि अश्वघोष-कृत काव्य का कथा-सार)—प्रणेता, अध्यापक श्रीरामदान पांडेय एम्० ए०, बी० एड्० ; संपादक, श्रीदुलारेलाल भार्गव; मूल्य ॥), सजिल्द १)

(३) 'हठयोग' (योगी रामचारक-लिखित 'हठयोग'-नामक अँगरेज़ी ग्रंथ का हिंदी-रूपांतर)—अनुवादक, ठा० प्रसिद्धनारायणसिंह बी० ए० ; संपादक, श्रीदुलारेलाल भार्गव मूल्य १।=), सजिल्द १॥।=)

(४) 'गोरों का प्रभुत्व' (The rising tide of colour-नामक पुस्तक के आधार पर लिखित)—लेखक, बाबू रामचंद्र वर्मा; मूल्य ॥।=)

(५) 'अनोखा' (Victor Hugo के प्रसिद्ध उपन्यास "The Laughing man" का हिंदी-अनुवाद)—अनुवादक, ठा० लक्ष्मणसिंह बी० ए०, एल्-एल् बी० ; मूल्य १।=)

(६) 'भारत के स्त्री-रत्न' (दूसरा भाग)—मूल लेखक, श्रीयुत पंडित शिवप्रसाद-दलपतराम ; अनुवादक, श्रीरामचंद्र वर्मा और शंकरलाल वर्मा; मूल्य ॥।-)

(७) 'शुद्धि-चंद्रोदय'—लेखक, कुँअर चाँदकरण शारदा एम्० ए०, एल्-एल्० बी०; मूल्य १॥)

(८) 'जीवन-साहित्य' (दो भाग) अर्थात् आचार्य कालेलकर का लेख-संग्रह—अनुवादक, शास्त्र-निष्णात, कलाभूषण पं० श्रीनिवासाचार्य द्विवेदी ; मूल्य ॥) प्रतिभाग।

(९) 'मीठी हँसी'—लेखक, हास्य-सम्राट् श्रीयुत जी० पी० श्रीवास्तव बी० ए०, एल्-एल् बी०; मूल्य १॥)

(१०) 'बच्चों के सुधारने के उपाय' (सुप्रसिद्ध आध्यात्मिक लेखक स्व० छोटेलाल-जीवनलाल शाह की गुजराती-पुस्तक का अनुवाद)—अनुवादक, श्रीशिवसहाय चतुर्वेदी; द्वितीयावृत्ति; मूल्य ॥=)

(११) 'उपयोगी खेती' (प्रथम भाग)—लेखक, श्रीचंद्रकुमार ठाकुर, डाइरेक्टर अमहिया एग्रीकलचर फ़ार्म, गोरखपुर; मूल्य २)

(१२) 'शिवा-बावनी'—टीका-टिप्पणी, अलंकार तथा प्रस्तावना-सहित; संपादक, पं० हरिशंकर शर्मा कविरत्न; मूल्य ।)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१. साहित्य

'नवीन बीन' या नदीमे दीन—लेखक, लाला भगवानदीन ; संपादक, श्रीरामलोचनशरण बिहारी ; भूमिका-लेखक, श्रयुित शिवपूजनसहायजी ; प्रकाशक, हिंदी-पुस्तक-भांडार, लहेरियासराय ; पृष्ठ-संख्या १३० ; सचित्र और सजिल्द ; मूल्य २) ; छपाई-सफ़ाई सुंदर ।

यह "सुंदर साहित्य-माला" का नवाँ पुष्प है, जिसमें लालाजी की ४२ स्फुट कविताओं का संग्रह है । पुस्तक के उपनाम का अर्थ यदि छायावादी हो, तो हम नहीं कह सकते । हमारी समझ में 'दीन' कवि कविता की नदी में अपने को बहते हुए दिखला रहे हैं, जैसा कि प्रस्तुत पुस्तक में संगृहीत काव्य-प्रकाश से अनायास ही पता चल जायगा । वस्तुतः 'मेंहदी' तथा 'चाँदनी'-सी मनमोहक एवं 'सेतुआ-पंचक' तथा 'मोटर-पंचक' प्रभृति फड़कती हुई रचनाओं को देखकर सारी पुस्तक एक ही साँस में सुड़ुक जाने को जी चाहता है । परंतु जिस प्रकार मेंहदी की ललाई में कालापन भी आ ही जाता है, चाँदनी के उत्पादक चाँद में कलंक है ही, उसी प्रकार शायद प्रकाशन की शीघ्रता, दुहराने की शिथिलता अथवा छापेख़ानेवालों की लापरवाही के कारण कुछ छोटी-मोटी त्रुटियाँ भी रह गई हैं, जिनकी ओर मैं लेखक का ध्यान आकर्षित करता हूँ । जिससे पुस्तक के दूसरे संस्करण में इन त्रुटियों का सुधार कर दिया जाय—

(१) व्रज-भाषा की रचनाओं में संस्कृत शब्दों को हिंदी का जामा पहनाने के लक्ष्य से 'व'कार के स्थान में प्रायः 'ब'कार कर दिया जाता है ; परंतु खड़ी बोली की कविताओं में नहीं । इसके विपरीत इस पुस्तक की 'बिस्मिल्ला' से लेकर 'तमामशुद' तक 'वकार' के स्थान में 'बकार की बीमारी' सर्वत्र देखी गई । जैसे—सेव्य, बिमल, बर, बिलास, बिलंबित, अबिचारी, सुकबि, सर्बत्र, बृथा, बच्छ आदि ।

इसी प्रकार कहीं-कहीं 'बकार' के स्थान में 'वकार' भी लिखा गया है । जैसे—अवाधा, विहाग, विसराते, वढ़ती, विया इत्यादि ।

(२) 'अहिल्योद्धार' एवं 'विनय'-शीर्षक पद्यों की रचना यदि 'हरिगीतिका' छंदों में है, तो उनमें मात्रा की अनेकों अशुद्धियों के अतिरिक्त विराम पर पद-भंग हो जाता है । उचित स्थान पर विराम न लेने से आपकी 'मनहर' कविताओं में भी कहीं-कहीं पद-भंग दोष रह गया है, यद्यपि मात्रा-गणना में छंद शुद्ध है । इसी प्रकार 'विषपान-व्याख्या'-शीर्षक रचना में कहीं तो २६ और कहीं २७ मात्राएँ हैं ।

(३) 'आपकी आँखों को क्या समझें'-शीर्षक कविता में 'समझें' की जगह सर्वत्र 'समझे' छप गया है । यह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रूफ़ की ग़लती कही जा सकती है। इसमें संदेह नहीं कि कविता उत्तम है। प्रूफ़ की और भी अनेकों ग़लतियाँ हैं।

(४) 'वनवासिनी सीता' कविता खड़ी बोली की है, जिसमें 'उये' शब्द व्रजभाषा का आया है। इसके अतिरिक्त अन्य कतिपय कविताओं में व्रजभाषा और खड़ी बोली की खिचड़ी पकाई गई है।

(५) कुछ अप्रचलित शब्दों का प्रयोग, जैसे—दुःखित के स्थान में 'खेदित', थम्हाया के स्थान में 'गहाया', बौराई के स्थान में 'भोराई', 'महा' के स्थान में 'महाना', आदर करूँगा के स्थान में 'आदरूँगा', कलोल करती के स्थान में 'कलोलती', रजनीचर के स्थान में 'तमचर', काट के स्थान में 'कटा', अंदर के स्थान में अंतस्, तुलना के स्थान में 'तुल्यता', उत्कंठा के स्थान में 'उत्कंठता', अनुसरण करना के स्थान में 'अनुसारना' आदि। इस प्रकार जान पड़ता है कि तुकबंदी की मौज़ूनियत के लिहाज़ से शब्दों का तोड़-मरोड़कर प्रयोग करके हिंदी-भाषा को लाभ पहुँचाने के विचार से आपने होनहार लेखकों को सुलभ मार्ग खोल दिया है!

(६) कहीं-कहीं आपने भाषा की स्वाभाविकता भी दिखलाई है। जैसे—

(क) क्यों दंड है उआए ?

(ख) गुर्राती मुँह को बाए !

(ग) मद सरिस चुआते !

इसके और भी ऐसे ही प्रयोग हैं। जैसे—उज्जल मुंडेर, पिछौरी, पछारत ठौरी, बैठारै, कसमसे, भाव के बारे, खारे आँसू, कटहे कोश, कोह खनना, भ्रम में सनना, स्वाती का आसरा इत्यादि।

(७) फ़ुटनोट की गूढ़ार्थ-भूमिका में कुछ कठिन शब्दों का अर्थ लिखना रह गया है। यथा—चिकुर, उमंडा, अक्रम, बघूर, अघीतर, शहगाम, फक्किका आदि। आशा है, 'नवीन बीन' के लेखक 'दीन'जी 'बीन' के नवीन संस्करण में इन पर भी प्रकाश डालेंगे।

वैद्यनाथ मिश्र 'विह्वल'

× × ×

त्रिपथगा—लेखक, श्रीमैथिलीशरण गुप्त; प्रकाशक, साहित्य-सदन, चिरगाव, झाँसी; सजिल्द का मूल्य १॥)

गुप्तजी ने समय-समय पर 'बक-संहार', 'वन-वैभव' और 'सैरंध्री' नाम देकर जो कविताएँ लिखी थीं, उन्हीं का इसमें संग्रह है, और 'त्रिपथगा' नाम को सार्थक कर रहा है। ये तीनों ही 'खंड काव्य' के रूप में अलग-अलग भी छः-छः आने को मिलती हैं। गुप्तजी की कविताओं के संबंध में क्या लिखा जाय; प्रायः प्रत्येक हिंदी-पाठक उनसे भली भाँति परिचित है। आशा है, इस पुस्तक का भी ख़ूब आदर होगा।

× × ×

श्रीसीताराम-चरितायन—रचयिता, श्रीशीतलसिंह गहरवार; संपादक व प्रकाशक, बाबू जयप्रकाशसिंह, मख-लौटगंज, गया; बाल, अयोध्या, आरण्य, किष्किंधा और सुंदरकांड का मूल्य २॥=)

संपादक की सम्मति में "यह सप्तकांडात्मक पद्यात्मक ग्रंथ मौलिक है, किसी ग्रंथ से अनुवादित या अनेक ग्रंथों से संकलित नहीं। तथापि इसके कथा-विभाग अनेक ग्रंथों के मत लेकर मनमाने तौर से लिखे गए हैं। यह स्वतंत्र रामायण ग्रंथ है, जिसमें सीताराम के अद्भुत चरित्रों का अद्भुत वर्णन है, जो आज तक हिंदी-भाषा में प्रकाशित नहीं हुए हैं। श्रीमद्गोस्वामी तुलसीदास-कृत मानसरामायण में वर्णित कथाओं से सभी कथाएँ इस ग्रंथ में विभिन्न हैं। इत्यादि"

अस्तु, है तो यह नए ढंग की रामायण, लेकिन चमत्कार-पूर्ण भी है। भावों की भव्यता और अलंकारों की छटा देखते बनती है। यह ग्रंथ लेखक के प्रगाढ़ पांडित्य का परिचायक है? अलंकार-शास्त्र के प्रेमियों को एक बार इसका अवलोकन करना चाहिए। हमें आशा है, 'श्रीसीता-रामचरितायन' आदर की दृष्टि से देखा जायगा।

× × ×

वीरांगना—अनुवादक, 'मधुप'; प्रकाशक, साहित्य-सदन, चिरगाँव, झाँसी; पृष्ठ-संख्या १३०; मूल्य सजिल्द १)

यह बँगला के प्रसिद्ध कवि स्व० माइकेल मधुसूदन दत्त-प्रणीत 'वीरांगना'-काव्य का हिंदी-कविता-बद्ध अनुवाद है। मूल-कवि की भाँति अनुवादक 'मधुप'-जी ने भी अपनी अलौकिक काव्य-रचना का इसमें परिचय दिया है। पुस्तक ११ सर्गों में विभक्त है, प्रत्येक सर्ग में भिन्न-भिन्न कथाएँ वर्णित हैं। विशेषता यह है कि जो कथा जिस सर्ग में वर्णित है, उसका सारांश ऊपर गद्य में दे दिया गया है, जिससे पाठक को कविता-पाठ में बड़ी सहूलियत हो जाती है। कविता भी बड़ी रोचक एवं हृदय-ग्राही है। अंत में एक शब्द-कोष और एक बंगाली विद्वान् की लिखी आलोचना भी दी है, जो पुस्तक के महत्त्व पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भी प्रकाश डालती है। पाठकों को चाहिए कि पुस्तक को एक बार अवश्य पढ़ें, और गद्य-पद्य, दोनों का आनंद एकसाथ ही प्राप्त करें। "कोई नहीं"

× × ×

२. जीवन-चरित्र

श्रीमीराबाईजी—लेखक, श्रीसीतारामशरण-भगवान-प्रसादजी रूपकला; प्रकाशक, श्रीबाबू गणेशप्रसाद, वकील हाई-कोर्ट अयोध्या; मूल्य ॥=)

श्री१०८रूपकलाजी-रचित श्रीमीराबाईजी की जीवनी हिंदी-भाषा में एक अमूल्य पुस्तक है। इसकी विशेषता इस बात से और भी अधिक बढ़ जाती है कि रचयिता स्वयं चरित-नायिका की भाँति एक अनुभवी, भावुक, सिद्धहस्त और पहुँचे हुए व्यक्ति हैं। आप श्रीमीराबाईजी की भाँति प्रातःस्मरणीय कोटि के पुरुष हैं। मुमुक्षुओं के लिये तो यह अत्यंत लाभप्रद है।

भक्तशिरोमणि श्रीसमर्थरामदासजी, श्रीतुकारामजी, श्रीगोस्वामी तुलसीदासजी, श्रीसूरदासजी, श्रीनरसी मेहता और श्रीकबीरदासजी-जैसे असाधारण और अनन्य भक्तों की श्रेणी ही में श्रीमीराबाईजी की भी गणना की जाती है। उनके काम अनुकरणीय भले ही न हों, किंतु वे इसमें ऐसी ओजस्वी और भावपूर्ण भाषा में चित्रित किए गए हैं कि जो कोई भी व्यक्ति निष्पक्ष होकर इसे पढ़ेगा, वह बिना उनसे प्रभावित हुए नहीं रह सकता। वर्णन-शैली ऐसी सुंदर और भावुक है कि पढ़ते ही मनुष्य के हृदय-स्रोत में उस परम पिता परमेश्वर के अद्भुत प्रेम की एक बलवती धारा बह निकलती है। इसकी शिक्षा साधारण गृहस्थों को अनन्य भक्तों की श्रेणी में पहुँचाने में जादू का-सा काम करती है।

यह एक मार्के की बात है कि लेखक ने, दूसरे स्वनाम-धन्य और प्रतिष्ठित लेखकों की तरह, राम-कृष्ण और ख़ुदा में कोई भेद नहीं माना।

हिंदुओं के लिये यह अत्यंत लाभप्रद और पढ़ने लायक़ पुस्तक है। आशा है, अधिकांश हिंदू इसे पढ़कर इससे लाभ उठावेंगे।

ब्रजेंद्रप्रसाद

× × ×

३. नाटक

प्रह्लाद नाटक—लेखक, स्वामी बुधचंद्रपुरी; प्राप्ति-स्थान, श्रीरामेश्वर-पुस्तकालय, ऊबाबड़ा, पो० गवें, तहसील शुजाबाद, ज़िला मुल्तान; मूल्य ।-)

इस पुस्तक में भक्तवर प्रह्लाद की कथा नाटक-रूप में दी है। भाषा साधारण है, भाव पौराणिक।

× × ×

श्रीसूरदास—लेखक तथा प्राप्तिस्थान उपर्युक्त; मूल्य ॥)

यह भी एक पौराणिक नाटक है। और भक्त सूरदास-नाटक के आधार पर शायद इसकी रचना हुई है। भाषा और भाव साधारण हैं।

× × ×

श्रीपूर्णभक्त नाटक—लेखक व प्रकाशक उपर्युक्त; मूल्य ॥)

उपर्युक्त दोनों की अपेक्षा इस नाटक में कुछ नवीनता है। लेकिन भाव और भाषा, दोनों वैसे ही हैं। एक पुराने ऐतिहासिक आख्यान पर यह नाटक लिखा गया है।

× × ×

४. बालोपयोगी

आदर्श पद्मावती—लेखक व प्रकाशक उपर्युक्त; मूल्य ॥)

यह नाटक एक घटना के आधार पर लिखा गया मालूम होता है, जैसा कि इसमें दिए गए 'पुस्तक-परिचय' से जान पड़ता है। भूमिका-भाग में पाठकों को उपदेश दिए गए हैं, जो नाटक-रचना के बिलकुल विपरीत है। तथापि यह लेखक के अन्य नाटकों से अच्छा है।

× × ×

रसाल—रचयिता, श्रीयुत दामोदरसहाय एल्० टी०, 'कविकिंकर'; प्रकाशक, हिंदी-मंदिर, शीतलपुर, पोस्ट एकमा, ज़िला सारन; मूल्य ≡)

यह बाल-विलासोद्यान का तीसरा पुष्प है। इसमें लेखक की कुछ कविताओं का संग्रह किया गया है। भाषा बालकों के योग्य है।

× × ×

मोदक—लेखक, श्रीरामलोचनशरण शर्मा 'कंटक'; प्रकाशक, हिंदी-मंदिर, शीतलपुर (सारन); मूल्य ≡)

यह बाल-विलासोद्यान का प्रथम पुष्प है। इसमें लेखक की कई कविताओं का संग्रह है। बालकोपयोगी भाषा में कविताएँ की गई हैं।

× × ×

मोहनभोग—लेखक और प्रकाशक उपर्युक्त; मूल्य ≡)

यह उपर्युक्त उद्यान का द्वितीय पुष्प है। बालोपयोगी है। पद्य में है।

× × ×

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

घरौंदा—लेखक, श्रीजगन्नाथप्रसादसिंह ; प्रकाशक, उपर्युक्त संस्था ; मूल्य ।-)

यह उपर्युक्त उद्यान का २वाँ पुष्प है, और गद्य में है। इसमें कई छोटी-छोटी कहानियाँ हैं। लेकिन पुस्तक बालकों के लिये है, इसलिये बड़े टाइप में छपनी चाहिए थी।

× × ×

चमचम—लेखक, श्रीकंटक; प्रकाशक, उपर्युक्त संस्था; मूल्य =)

यह उसी उद्यान का चौथा पुष्प है। पद्य में यह भी है। यह भी बालोपयोगी है।

× × ×

तीसरी पाठावली—लेखक, लाला श्रद्धेय देवराजजी; प्रकाशक, कन्या-महाविद्यालय-पुस्तकालय, जालंधर शहर ; मूल्य ॥) ; पृष्ठ-संख्या २००

यह पुस्तक कन्या-महाविद्यालय-ग्रंथमाला का प्रथम पुष्प है, और चतुर्थ श्रेणी के लिये लिखी गई है। पुस्तक ६ खंडों में विभक्त है। जो पाठ भिन्न-भिन्न खंडों में दिए गए हैं, वे श्रेणी के उपयुक्त ही जान पड़ते हैं। पाठों के नीचे अभ्यास के लिये प्रश्न तथा नीति-शिक्षा भी दी गई है। 'पाठावली' अच्छी है। खेद इतना ही है कि यह छपी अच्छी नहीं। इसका दूसरा संस्करण अच्छा छपना चाहिए।

रसिकरंजन रतूड़ी

× × ×

५. फुटकल

निर्वाचन-नियम—लेखक, प्रो० दयाशंकर दुबे एम्० ए०, एल्-एल्० बी० और श्रीयुत भगवानदास केला; प्रकाशक, भारतीय ग्रंथमाला, वृंदावन; मूल्य ॥-)

यह एक ऐसी पुस्तक है, जिसे प्रत्येक मतदाता को वास्तव में पढ़ना चाहिए। निर्वाचन-संबंधी प्रायः सभी बातें इसमें आ गई हैं। अँगरेज़ी न पढ़े होने के कारण देहातों के लोग मेंबरी के लिये खड़े होते समय प्रायः कठिनाइयाँ उठाते हैं। ऐसे सज्जन यह पुस्तक पढ़कर बहुत लाभ उठा सकते हैं। आजकल, जब कि आए दिन निर्वाचनों की धूम ही मची रहती है, यह पुस्तक 'मार्ग-प्रदर्शक' का काम दे सकती है। इसकी एक प्रति अवश्य रखनी चाहिए।

× × ×

"कान्यकुब्ज" (मासिक); पृष्ठ-संख्या ४० ; संपादक, श्री० पं० रामशंकर शुक्ल 'रसाल' एम्० ए०; प्रकाशक, पं० रामनिवास शुक्ल बी० ए०, एल्-एल्० बी०, प्रयाग; वार्षिक मूल्य विद्यार्थियों से १॥), सर्व-साधारण से २), विदेशवालों से ५), प्रति अंक का =); छपाई-सफ़ाई उत्तम।

यह 'कान्यकुब्ज-प्रतिनिधि-सभा' का वही प्राचीन पत्र है, जो किसी समय पं० जगन्नारायणजी मिश्र के संपादन में फ़तेहगढ़ से, पं० रूपनारायणजी पांडेय के संपादन-काल में लखनऊ से तथा पं० चंद्रमौलिजी शुक्ल एम्० ए०, एल्० टी० के संपादकत्व में काशी से निकलता था। कहना व्यर्थ है कि काशी में आकर पत्र की दशा अत्यंत शोचनीय हो गई थी। श्रेय प्राप्त है का० कु० प्र० सभा के प्रधान मंत्री रायसाहब पं० राजनारायणजी मिश्र बी० ए० को, जिन्होंने इसकी तात्कालिक अवस्था पर विचार कर प्रयाग में सुरंत इसे नवजीवन प्राप्त करने का अवसर दिया। अस्तु। समालोच्यांक २३वें वर्ष का प्रवेशांक है। जनवरी, १९२८ से पत्र अपने नवीन वर्ष में पदार्पण करता है। आरंभ में, "सुधानिधि"-संपादक, प्रयाग-निवासी आयुर्वेद-पंचानन पं० जगन्नाथप्रसादजी शुक्ल भिषङ्मणि का एक-रंगा चित्र है। प्रस्तुत अंक में ४ कविताओं के अतिरिक्त श्रीमान् न्याय-मूर्ति पं० गोकरणनाथजी मिश्र एम्० ए०, एल्-एल्० बी०, पं० उमाशंकरजी वाजपेयी एम्० ए०, एल्-एल्० बी०, रायबहादुर पं० शुकदेवबिहारीजी मिश्र, रायसाहब पं० रघुवरप्रसादजी द्विवेदी बी० ए०, डॉ० रामप्रसादजी त्रिपाठी एम्० ए०, डी० एम्-सी०, पं० मातादीनजी शुक्ल साहित्य-शास्त्री, श्रीमती गौरादेवीजी तिवारी-प्रभृति कान्यकुब्ज-रत्नों द्वारा लिखित जाति-भाइयों के लिये शुभ संदेशों का संग्रह है, जिससे पत्र का उज्ज्वल भविष्य दृष्टिगोचर होता है। यह कविवर रसालजी की अनुकरणीय एवं अभूतपूर्व संपादकीय नीति, निःस्वार्थ सेवा तथा परिश्रम का फल है, जिसने "कान्यकुब्ज"-कलेवर को अलंकृत करने के लिये संदेश मँगाने के बहाने उन महानुभावों से भी लेखनी उठवा ली है, जिनके लिये स्वप्न में भी लेख लिखना असंभव था—वह भी एक जातीय पत्र के लिये। अस्तु। हम हृदय से पत्र की उत्तरोत्तर उन्नति ही चाहते हैं।

"विह्वल"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

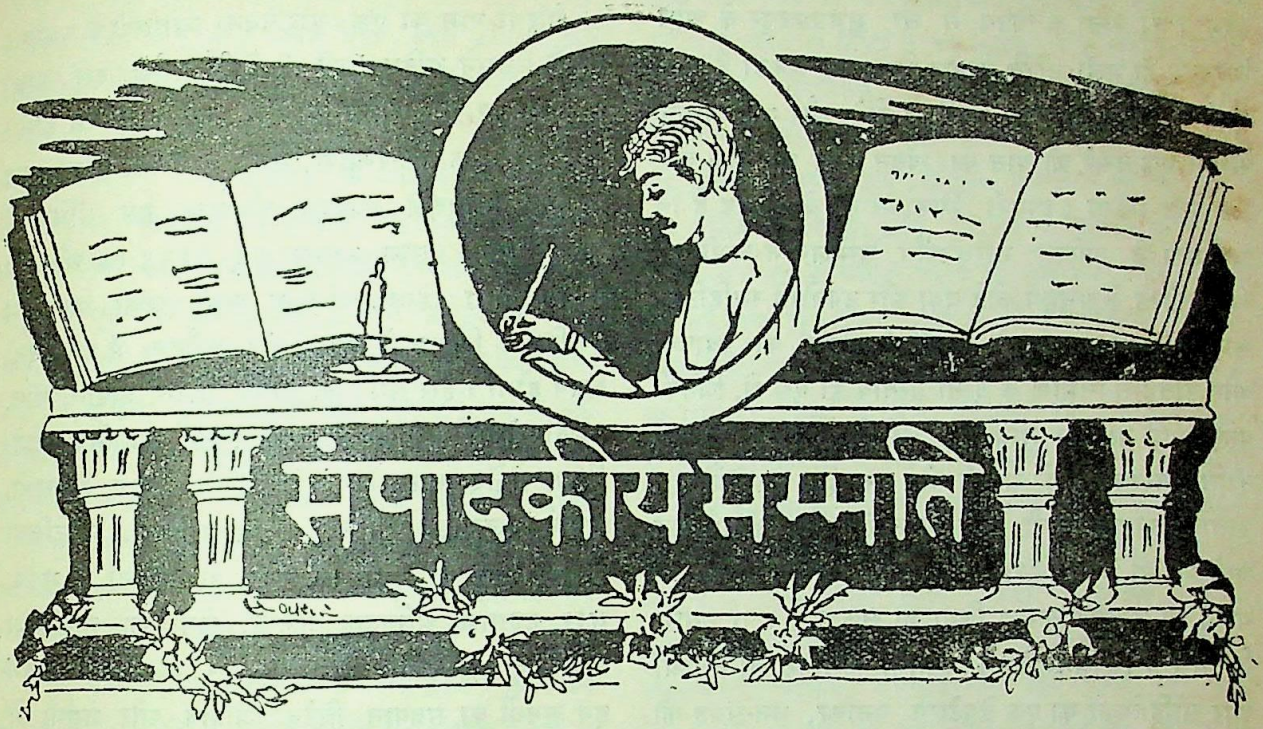

१. हिंदी-साहित्य-सम्मेलन में सुधार

हिंदी-साहित्य-सम्मेलन के प्रबंध के संबंध में, वर्तमान मंत्रिमंडल के विरुद्ध, एक अर्से से हम शिकायत सुनते आ रहे हैं। अनेक प्रतिष्ठित-अप्रतिष्ठित, छोटे और बड़े लोगों के मुख से हमने सम्मेलन के वर्तमान कर्णधारों की शिकायतें सुनीं, और उन पर विचार भी किया है। पर अब तक हम चुप थे। इसका कारण यही था कि हमें भय था, कहीं हमारे विरुद्ध लिखने से सम्मेलन के कार्य को हानि न पहुँचे, कहीं उसके कार्य में बाधा न पहुँचे और हमें अपयश का भागी बनना पड़े। पर अब यह विषय प्रकट रूप से सर्वसाधारण के सामने आ गया है। अतएव आज हम इस पर विचार करना और इसके संबंध में अपने विचार स्पष्ट रूप से सबके सामने रखना चाहते हैं। साधारणतः सबकी शिकायत यह है कि वर्तमान मंत्रिमंडल में प्रभुत्व की स्पृहा अधिक है, अपव्यय की मात्रा अधिक है। वर्तमान प्रबंध-मंत्री और प्रधान मंत्री के कार्य-परिचालन के बारे में लोग अधिक असंतोष प्रकट करते हैं। लोगों का कहना है कि वर्तमान प्रधान मंत्री महाशय सम्मेलन के कार्य को सुचारु रूप से आगे बढ़ाने में विशेष भाग नहीं लेते। वह अपने पुस्तक-विक्रय और पुस्तक-प्रकाशन के व्यवसाय को बढ़ाने में ही संलग्न रहते हैं। प्रबंध-मंत्री का व्यवहार कार्यालय के कर्मचारियों से बुरा रहता है। वह अपव्यय भी अधिक करते हैं। लोगों की इसी प्रकार की शिकायतें हैं। इनमें सचाई का अंश कितना है, यह तो ख़ास तौर से जाँच किए विना कोई नहीं कह सकता, किंतु इतना अवश्य कहा जा सकता है कि वर्तमान मंत्रिमंडल की कार्य-पद्धति संतोषजनक नहीं है, और उसके कार्य विशेष उल्लेख के योग्य नहीं हैं। सम्मेलन के पास धन की बेहद कमी है। वह संग्रहालय और इतिहास-निर्माण के प्रस्तावों को कार्य-रूप में परिणत नहीं कर पाया। सम्मेलन की ओर से साहित्य-निर्माण का कार्य कुछ भी नहीं हुआ। मदरास में हिंदी-प्रचार का कार्य जो कुछ हुआ है, उसका भी श्रेय पूरा-पूरा सम्मेलन को नहीं दिया जा सकता। सब मिलाकर देखने से हमें तो यही कहना पड़ता है कि हिंदी-प्रचार और साहित्य-निर्माण का कार्य एकप्रांतीय काशी-नागरीप्रचारिणी सभा ने जितना किया है, उसके देखते अखिल भारतवर्षीय संस्था हिंदी-साहित्य-सम्मेलन का तत्संबंधी कार्य नगण्य है। हमारे पास भी प्रधान मंत्रीजी की ओर से एक छपी हुई विज्ञप्ति आई है, जिसमें उन्होंने विरोधियों की बातों का खंडन करने की चेष्टा की है। यहाँ पर इतना स्थान नहीं कि हम उसमें से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रत्येक पैरा उद्धृत करके उसका खंडन-मंडन करें। इस विज्ञप्ति की बातों के विषय में तो मुज़फ़्फ़रपुर के अधिवेशन में ही भली भाँति विचार किया जा सकता है, जहाँ दोनों पक्ष के लोग प्रायः उपस्थित होंगे, और उन्हें आमने-सामने एक दूसरे की बात का खंडन करने का यथेष्ट अवसर मिल सकेगा। हमारी शिकायत तो केवल यह है कि राष्ट्रभाषा के अखिल भारतवर्षीय सम्मेलन ने अभी तक अपने गौरव के अनुरूप कोई बड़ा और उपयोगी साहित्यिक कार्य नहीं कर दिखाया। केवल संग्रहालय की स्थापना और इतिहास-निर्माण के दोनों प्रस्ताव ही ऐसे थे, जिनकी पूर्ति अगर वर्तमान मंत्रिमंडल कर दिखाता, तो उसकी कीर्ति चिरस्थायी हो सकती थी। पर हम देखते हैं, इन प्रस्तावों की पूर्ति कैसी, कार्य का आरंभ भी, कई वर्ष बीत जाने पर भी, नहीं किया जा सका। हाँ, धन के अभाव की बाधा का उल्लेख अवश्य किया जा सकता है। पर हमारा विश्वास है कि अगर लगन के साथ, प्रभावशाली नेताओं और साहित्यिकों का एक डेपुटेशन बनाकर, धन-संग्रह की चेष्टा की जाय, तो इन दोनों उपयोगी प्रस्तावों की पूर्ति के लिये धन का अभाव कदापि नहीं हो सकता। अस्तु, वर्तमान मंत्रिमंडल के सभी पदाधिकारी हमारे परिचित और मित्र हैं। हमारा उनसे किसी प्रकार का मनोमालिन्य नहीं। न हम यही चाहते हैं कि वे अकारण बदनाम किए जायँ, या उन्हें उनके पद से हटा दिया जाय। हमारा वक्तव्य केवल इतना ही है कि सम्मेलन के मुज़फ़्फ़रपुर के अधिवेशन में इस 'असंतोष' पर ध्यान देकर सम्मेलन को अधिक कार्यक्षम बनाया जाय। बहुमत के अनुसार मंत्रिमंडल का पुनः संगठन किया जाय। धींगाधींगी या दलबंदी से काम न लिया जाय। वर्तमान मंत्रियों को भी अपनी सफ़ाई देकर, अपने ऊपर लगाए गए अपवादों का निराकरण कर, स्वयं हट जाना चाहिए। अगर बहुमत उन्हें नहीं चाहता, तो कोई कारण नहीं कि वे डटे ही रहें। यदि बहुमत उन्हें रखना चाहे, या उन्हें ही फिर चुने, तो वे निर्लिप्त भाव से, राग-द्वेषहीन होकर, पुनः कार्यक्षेत्र में अवतीर्ण होकर अपने कर्तव्य का पालन करें। और, यदि बहुमत उन्हें न रखकर अन्य सज्जनों को कार्य-भार सौंपना चाहे, तो वे सहर्ष अपने पदों को छोड़ दें। आशा है, हमारी इन पंक्तियों से किसी को दुःख न होगा।

× × ×

२. भीषण भविष्यवाणी

शेरियो नाम का एक योरपियन ज्योतिषी है। प्रसिद्ध भी है। उसने भविष्यवाणी की है कि अगले दस सालों में संसार पर बड़ी आफ़त आवेगी, घोर परिवर्तन होंगे। जल्द ही एक संसारव्यापी भारी महासमर होगा। यह महायुद्ध भी पिछले महायुद्ध की तरह गुप्त संधियों के कारण होगा। इसका मसाला सन् १९२६,२७ और २८ में जमा होता रहेगा; पर आग आगे जाकर भड़केगी। ज्योतिष के हिसाब से मंगल और शनैश्चर में इन दिनों संघर्ष होगा। इस संघर्ष का प्रभाव ब्रिटेन, जापान, चीन, जर्मनी, मेसीडोनिया, रूस, फ़्रांस, इटली, रूमानिया, बोहेमिया, पोलैंड, अलबानिया, बलगेरिया, यूनान, मैक्सिको, सुडान, पैलस्टाइन, भारत, दक्षिण आफ़्रिका, आस्ट्रेलिया इत्यादि देशों पर पड़ेगा। अतएव इन स्थानों में भूकंप, ग़दर, हड़ताल, अग्निदाह, तूफ़ान, खेतों का नाश तथा अर्थाभाव आदि अनर्थ होंगे। सबसे जल्दी और प्रथम इन अनर्थों का सूत्रपात ब्रिटेन, जापान और जर्मनी में होगा। सन् १९२८ से लेकर १९३८ तक दस वर्षों में पूर्वोक्त सभी देशों में भयानकता का साम्राज्य फैल जायगा। जापान, भारत और चीन में समुद्र, तूफ़ान और भूकंप के द्वारा धन-जन की बड़ी भारी हानि होने की संभावना है। भारत में भारी भयानक दुर्भिक्ष देख पड़ेगा। दंगे और सांप्रदायिक उपद्रव बढ़ेंगे। सन् २६ से २८ तक ब्रिटेन के व्यापार की जड़ हिल जायगी। उसकी शिल्प-सामग्री की खपत विदेशों में नाम-मात्र को रह जायगी। विलायत में बेकारी से हाहाकार मच जायगा। यह स्थिति अभूतपूर्व होगी। विदेशों के संबंध के मामलों में भी ब्रिटेन की शान को गहरा धक्का लगेगा। उसके कई उपनिवेश उसके लिये संकट उपस्थित करेंगे। चीन, भारत, पर्शिया, अफ़ग़ानिस्तान, तिब्बत में ब्रिटेन के विरुद्ध रूसियों का प्रभाव बढ़ेगा। देखें, इस ज्योतिषी की बातें कहाँ तक सच निकलती हैं। घटनाएँ चाहे जब हों, पर अभी से सुनकर हृत्कंप होता है।

× × ×

३. "भारतमाता" के बाद "भारत-कन्या"

स्वतंत्र देशों के सभी लोग परतंत्र देशों को स्वतंत्र बनाने के बदले और भी अधिक परतंत्र बनाने या सदैव परतंत्र बनाए रखने के लिये आजकल जो घृणित षड्यंत्र

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रच रहे हैं, उसे देखकर वास्तव में उनके इस नैतिक पतन पर घोर दुःख होता है। भारत आज जाग उठा है, अब वह अपने कंधे से परतंत्रता का जुआँ उतारकर फेकना चाहता है, यह देखकर साम्राज्यवादी लोगों के पेट में चूहे उछलने लगे हैं। वे तरह-तरह के उपायों से जगत् को यह दिखाना चाहते हैं कि भारत महाबर्बर देश है, वह स्वराज्य पाने की योग्यता ही नहीं रखता। संसार की आँखों में धूल झोंकने के लिये, इसी उद्देश्य से, अभी कुछ दिन हुए, मिस मेयो ने भारत-भ्रमण कर मदर-इंडिया नाम की घृणित पुस्तक लिखी है, जिसके विषय में पत्रों में यथेष्ट चर्चा हो चुकी है। अब ख़बर मिली है कि मदर इंडिया को प्रकाशित करनेवाली मेसर्स जोनाथन कंपनी ने भारत-कन्याएँ नाम की और एक वैसी ही भारत को बदनाम करनेवाली पुस्तक प्रकाशित की है। इसे भी एक अमेरिकन मिस ने लिखा है। उसका नाम है मिस मार्गरेट विल्सन। यह एक मिशनरी है। यह पुस्तक उपन्यास के रूप में लिखी गई है। किंतु इसमें भी मदर इंडिया के समान ही भारतीय नर-नारियों की हीनता दिखलाई गई है। इसमें भी पूर्व पुस्तक के समान ही अतिरंजन, झूठ, अर्द्धसत्य और भ्रांतिजनक बातें लिखकर भारतीय नर-नारियों की मानहानि की गई है। उपन्यास होने के कारण इसमें कल्पना के घोड़े दौड़ाए गए हैं। इस उपन्यास का आरंभ पंजाब में होता है, और अस्पृश्यों की जीवनचर्या का विवरण इसमें दिया गया है। इसमें ऐसी अनेक घटनाएँ और बातें लिखी गई हैं, जो मिस मेयो की मदर इंडिया से मिल जाती हैं। पुस्तक में दिखलाया गया है कि भारतीयों में जितने दोष हैं, उनका मूल-कारण उनकी कामुकता ही है। मिस मेयो ने अपनी पुस्तक में बंगाली वैप्लविकों के वर्णनवाले अध्याय में लिखा है—भारत-वासियों के सब दोषों का कारण उनकी अत्यधिक कामुकता ही है। मिस विल्सन भी इसी कथन की पुनरुक्ति अपने उपन्यास में करती है। उसने लिखा है—भारतवर्ष का आकाश भयानक कामुकता के वायुमंडल से आच्छन्न है। बहुत दिन पहले ही इस कामुकता के फल-स्वरूप भारत की मृत्यु हो गई है। धर्म इसे बाधा नहीं दे सका। उलटे देश के जल-वायु ने इसे और भी प्रश्रय दिया है। भारत के नर-नारियों की इससे बढ़कर निंदा नहीं हो सकती। हम ज़ोर देकर कह सकते हैं कि इस विषय में भारत योरप से कहीं अधिक संयमी है। अमेरिका के निर्लज्ज लेखक चाहे जो कुछ स्वार्थ से प्रेरित होकर लिखें, कोई भी समझदार अमेरिकन, योरपियन या एशियाई इस बात पर कभी विश्वास न करेगा, और ख़ास अमेरिका में ही मिस मेयो की पुस्तक के समान इस घृणित उपन्यास का भी ज़ोरदार प्रतिवाद होगा। मिस विल्सन ने अपनी अल्पज्ञता अथवा पक्षपात के कारण भारत के धर्म और दर्शन-शास्त्रों की भी निंदा ख़ूब नीच भाषा में की है। अवश्य ही इस पुस्तक से भारत में फिर भारी हलचल मच जायगी। पर हमारी समझ में ऐसे आक्षेपों और आक्रमणों से अधिक विचलित होने की आवश्यकता नहीं है। सत्य के सूर्य को असत्य का आवरण कभी ढक नहीं सकता। सूर्य पर थूकनेवाले का ही मुख लांछित होता है। हाँ, यह अवश्य है कि हमारे नेताओं तथा राष्ट्रीय महासभा के कर्णधारों को विदेशों में ऐसा प्रचार अवश्य करने की चेष्टा करनी चाहिए, जिससे वहाँ की जनता को ऐसे मिथ्यावादी लेखकों की असलियत मालूम हो जाय; वे समझ लें कि ये भाड़े के टट्टू लेखक किसी ख़ास उद्देश्य से ही ऐसी गंदी पुस्तकें लिख रहे हैं, और वास्तव में भारत बर्बरों की बस्ती नहीं है। इसमें संदेह नहीं कि भारत अवश्य स्वतंत्र होगा, इन हीन चेष्टाओं से उसकी स्वतंत्रता रुक नहीं सकती। उस समय ऐसे निर्लज्ज लेखक स्वयं विवेक के कशाघात से जर्जरित होंगे, और अपने असफल प्रयत्न के अपराध को सोचकर हाथ मलेंगे।

× × ×

४. निरस्त्रीकरण का प्रहसन

जनेवा के राष्ट्रसंघ में अस्त्र-शस्त्र घटाने और शांति स्थापित करने का प्रस्ताव तो मुख से किया जाता है, किंतु कार्यतः सभी राष्ट्र अपने यहाँ अस्त्र-शस्त्र बढ़ाने की ही चेष्टा करते देख पड़ते हैं। सबके मुँह में राम और बग़ल में छुरी है। राष्ट्रसंघ के अधिवेशन होते हैं, शांति-स्थापना के उद्देश्य से राष्ट्रों के प्रतिनिधि एकत्र होते हैं, और अंत को सब टायँ-टायँ फिस हो जाता है। जान पड़ता है, इधर ये बैठकें होती ही रहेंगी, और उधर किसी दिन कहीं कोई चिनगारी उड़कर अग्निकांड मचा देगी। फ़्रांस के तत्कालीन महामंत्री क्लेमेंशो ने सन् १९१५ में कहा था—वर्तमान में युद्ध ऐसी गहरी चिंता का विषय हो पड़ा है कि उसे देश के सेनापति के हाथ में छोड़कर निश्चिंत नहीं रहा जा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सकता। वर्तमान समय में जगत् में दिन-दिन युद्ध की विभीषिका जैसी बढ़ती जा रही है, उससे निस्संदेह कहा जा सकता है कि युद्ध को रोकने के समान महासमस्या को इस समय राष्ट्रसंघ या शांति की बैठक के ऊपर नहीं छोड़ा जा सकता। १२-१३ वर्ष के बाद आज यह बात और भी ज़ोर के साथ कही जा सकती है। यह स्पष्ट विदित होता है कि राष्ट्रों में से कोई किसी की बात पर विश्वास नहीं करता। सभी एक दूसरे को संदेह की दृष्टि से देखते हैं। हर एक वचन देने को तैयार देख पड़ता है; पर यह स्पष्ट है और सभी जानते हैं कि समय पड़ने पर उस प्रतिज्ञा की कोई रत्ती-भर भी पर्वा नहीं करेगा। इसका कारण यही है कि सभी स्वार्थ से अंधे हो रहे हैं, सभी अपनी शक्ति और राज्य बढ़ाने के साथ ही अपने देश के व्यापार को संसार में व्याप्त देखना चाहते हैं। इसका फल यह देख पड़ता है कि मुख से तो सभी अस्त्र-शस्त्र घटाने के प्रस्ताव का समर्थन करते हैं, किंतु अपने यहाँ के अस्त्र-शस्त्र घटाने में आनाकानी करते हैं। इस समय सैनिक शक्ति में अग्रणी फ्रांस और ब्रिटेन, ये ही दो हैं। पहले जर्मनी शक्ति में इनका प्रतिद्वंद्वी, इनकी आँखों का काँटा था। इस समय छल-बल-कौशल से ये दोनों मिलकर उसे धराशायी कर चुके हैं। किंतु इस समय एक और प्रबल प्रतिद्वंद्वी सिर उठा रहा है, और उसे परास्त करना सहज नहीं। यह है अमेरिका। धन-बल में तो वह सबसे बढ़ा-चढ़ा है ही, अब जन-बल में भी वह किसी से कम रहना नहीं चाहता। अँगरेज़ स्थल-सेना में नहीं, जल-सेना में सबसे प्रबल हैं। इस समय ब्रिटेन के साम्राज्यवादी राजनीतिकों का लक्ष्य यह है कि जल, स्थल और आकाश की सेना ब्रिटेन ही की सबसे प्रबल और अधिक रहे, और इस प्रकार संसार-भर पर ब्रिटेन का आतंक जमा रहे। ब्रिटेन संसार की किन्हीं दो महाशक्तियों की सम्मिलित जल-सेना से अधिक अपनी जल-सेना रखना चाहता है। वह क्यों ऐसा करना चाहता है, इसका कारण यह बतलाया जाता है कि अँगरेज़ एक टापू में रहते हैं। उस टापू के चारों ओर जल से आक्रमण होने का भय है। इसके सिवा जल-मार्ग से ही संसार के सभी देशों से उसका वाणिज्य-संबंध है। अतएव आत्मरक्षा और व्यापार की रक्षा के लिये उसे इतनी अधिक जल-सेना रखनी ही चाहिए। अब अमेरिका को लीजिए। अमेरिका को ब्रिटेन की इस युक्ति पर यह आपत्ति है कि जगत् में किसी राष्ट्र की प्रधानता न रहनी चाहिए। जल, स्थल या आकाश की सेना में सबकी शक्ति समान रहने से शांति रह सकती है। यही कारण है कि अमेरिका ब्रिटेन को अधिक जल-सेना नहीं रखने देना चाहता। किंतु अँगरेज़ इस प्रस्ताव को कभी स्वीकार नहीं कर सकते। इसी बात को लेकर अमेरिका और ब्रिटेन का मनोमालिन्य हो सकता है। उधर जर्मनी अभी दबा हुआ है। उसके हाथ-पैर अभी अच्छी तरह खुल नहीं पाए हैं। उसकी यह शिकायत है कि उसे सबके बराबर सेना नहीं रखने दी जाती, जिससे उसको अपने परोसी राष्ट्रों की दया पर निर्भर रहना पड़ रहा है। उसका यह असंतोष भी किसी दिन रंग ला सकता है। इधर फ्रांस और इटली में भी तनातनी चल रही है। इटली के कर्ता-धर्ता मुसोलिनी की दृष्टि आफ्रिका और बालकन की ओर है। एक फ्रेंच राजनीतिज्ञ का कहना है—मुसोलिनी हर एक इटलियन युवक के हाथ में शस्त्र देकर उसे सिखाते हैं कि परोसी पर प्रहार करने के लिये तैयार रहो; वह अवसर सामने ही है। अतएव फ्रांस भी चुप नहीं रह सकता। उसने भी बालकन में इटली के विरुद्ध चाल चलना शुरू कर दिया है। मुसोलिनी ने अलबेनिया का पक्ष लेकर जुगोस्लाविया को आँख दिखाई, तो फ्रांस ने चट जुगोस्लाविया को शह दे दी। मतलब यह कि फ्रांस भी शांति नहीं चाहता। वह युद्ध के लिये नित्य अपनी शक्ति बढ़ाने में तत्पर है। इस समय उसकी स्थल-सेना और आकाश-सेना संसार के सभी राष्ट्रों की स्थल-सेना और आकाश सेना से बड़ी और प्रबल है। आर्थिक स्थिति अच्छी न होने पर भी वह जो यह घर-फूँक तमाशा देख रहा है, सो केवल शांति-स्थापन के लिये नहीं। जर्मनी को सिर न उठाने देने के लिये फ्रांस उसके परोसी पोलैंड, लिथुनिया, जेकोस्लाविया आदि क्षुद्र-क्षुद्र राज्यों की सहायता भी करता रहता है। अब बड़ी शक्तियों में रह गया रूस। बोलशेविक रूस सभी पाश्चात्य राष्ट्रों की आँखों में खटकता है। उसके उद्योग को सभी साम्राज्यवादी शंका की दृष्टि से देखते हैं। उसे सबने गुट से अलग कर रक्खा है। पर रूस के राजनीतिज्ञों को इसकी कुछ पर्वा नहीं। रूस योरप को छोड़कर एशिया से सहानुभूति दिखाने और एशिया की शक्तियों को उठाने की चेष्टा कर रहा है। रूस ही की सहानुभूति से आज तुर्की, पर्शिया, अफ़ग़ा-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निस्तान, चीन वग़ैरह का पुनरुत्थान हो सका है। इस प्रकार एशिया और योरप में संघर्ष होने की संपूर्ण संभावना देख पड़ती है। देखिए, अंत में क्या होता है। इसमें संदेह नहीं कि किसी देश की जनता यह नहीं चाहती कि फिर कोई युद्ध हो। किंतु उसके चाहने या न चाहने से क्या होता है। जिनके हाथ में शक्ति है, जिनके हाथ में व्यापार है, जिनके हाथ में धन-बल है, उनकी कूट चालें बंद हुए विना भावी महासमर किसी तरह नहीं रुक सकता। यह निरस्त्रीकरण की चेष्टा एक दिन व्यर्थ ही सिद्ध होगी। अब की जो युद्ध होगा, वह महाभयंकर होगा। हमारी ईश्वर से यही प्रार्थना है कि वह इन साम्राज्यवादियों को सुमति दे, जिसमें भावी महायुद्ध रुक जाय। पर यदि युद्ध से ही सदा के लिये साम्राज्यवाद का अंत और चिरस्थायिनी शांति का स्थापित होना ईश्वर को मंज़ूर है, तो वह अवश्य ही होगा, किसी के रोके नहीं रुकेगा।

× × ×

५. हिंदू-महासभा

जबलपुर में, श्रीयुत नरसिंहचिंतामणि केलकर के सभापतित्व में, बड़ी धूमधाम से हिंदू-महासभा का अधिवेशन हो गया। केलकरजी का भाषण बहुत सुंदर और समयोचित हुआ। आपने उन लोगों को ज़ोरदार उत्तर दिया, जो हिंदू-महासभा के कार्यकर्ताओं पर सांप्रदायिकता का दोष लगाते हैं। आपने कहा—"यह बहुत कठिन है कि किसी समुदाय-विशेष का और सारी जाति का हित सदा एक ही हो। पर हम हिंदुओं ने बहुत अनुभव से हिंदू-महासभा के काम को सारी जाति के हित के काम के साथ मिलाने का अनुभव कर लिया है, और मुझे यह देखकर प्रसन्नता होती है कि धीरे-धीरे उन लोगों की संख्या घट रही है, जो समझते हैं कि प्रत्येक सांप्रदायिक हित का काम अवश्य ही राष्ट्र-हित का विरोधी है।··· राष्ट्रीय मामलों में महासभा का कट्टर-से-कट्टर सदस्य भी यह कह सकता है कि वह भारतीय है। पर वास्तव में किसी मनुष्य का सांप्रदायिक जीवन केवल राष्ट्रीय राजनीतिक जीवन नहीं हो सकता। जब तक कोई व्यक्ति अपने को हिंदू कहता है, तब तक उसके लिये यह स्वाभाविक है कि वह हिंदू-जाति के हित और अहित का अनुभव करे, और उसके हित के कामों में भाग ले।" आगे चलकर शुद्धि के विषय में आपने जो कुछ कहा है, वह प्रत्येक हिंदू के लिये ध्यान देने योग्य है। शुद्धि का प्रसंग प्राचीन है, और वास्तव में जो हृदय से, धर्म की प्रेरणा से, शुद्ध होना चाहता हो, अथवा हिंदू-धर्म में प्रविष्ट होना चाहता हो, उसके लिये कोई रुकावट न रहनी चाहिए। हाँ, ऐसे लोगों पर अवश्य दृष्टि रखनी चाहिए, जो स्वार्थ-साधन के उद्देश्य से आज हिंदू, कल मुसलमान और परसों ईसाई होने को तैयार रहते हैं। संगठन पर भी केलकरजी ने बड़ा ज़ोर दिया है। हिंदू-जाति के जाति-विभाग को तोड़कर केवल वर्ण-विभाग रखना चाहिए। कृत्रिम उपायों से बढ़े हुए जातियों और उपजातियों के भेद को मिटा देना चाहिए। बालकों और बालिकाओं की शारीरिक उन्नति और उनके अंदर वीर योद्धा के गुणों का समावेश करने की भी आपने सलाह दी है। उसके बाद आपने हिंदू-मुसलिम समझौते के सौदे की टीका-टिप्पणी की है। आप दोनों जातियों के हित के लिये विना किसी शर्त के संयुक्त निर्वाचन की प्रथा का होना आवश्यक बतलाते और इसे समय-सापेक्ष समझते हैं। आप सिंध को अलग प्रांत बनाने के विपक्ष में थे, और मालवीयजी के विरोध करने पर भी महासभा में यही प्रस्ताव पास हुआ। मतलब यह कि केलकरजी का भाषण बहुत उपयुक्त और उत्तम हुआ है। केलकरजी-जैसे विद्वान् और बहुदर्शी के सभापतित्व में महासभा को जैसी सफलता होनी चाहिए थी, वैसी ही हुई है। कुछ लोग महासभा के प्रस्तावों को असामयिक बतलाते हैं, और असंतुष्ट हैं। पर जब तक मुसलमानों की मनोवृत्ति नहीं बदलती, और हिंदू सबल, सुसंगठित नहीं हो पाते, तब तक ऐसा होना अनिवार्य है। इस वर्ष के लिये निम्न-लिखित कार्यकर्ता चुने गए हैं—प्रेसीडेंट डॉक्टर मुंजे। वाइस प्रेसीडेंट एन्० सी० केलकर, पंडित मदनमोहन मालवीय, लाला लाजपतराय और सर राजा रामपालसिंह। मंत्री—पंडित देवरत्न शर्मा, पं० नेकीराम शर्मा, बाबू जगत्नारायणलाल, बाबू पद्मराज जैन। कार्य-कारिणी समिति के सदस्य—राजा नरेंद्रनाथ, भाई परमानंद एम्० ए०, डॉ० गोकुलचंद नारंग, मि० जयकर, राजनारायणलाल पिट्टी, मि० जयरामदास दौलतराय, डॉ० चौथराम, पं० चित्रराव शास्त्री, मि० अन्नदाप्रियलाल, श्रीदेशबंधु तुस, प्रो० छबलानी, राय हरविलस शारदा, सेठ श्यामसुंदर भार्गव, मि० अणे, सेठ घनश्याम दास बिडला, स्वामी सत्यानंद, डॉ० सुनीतिकुमार चपर्जी, कुमार गंगानंदसिंह, बाबू सिद्धेश्वरप्रसादसिंह, पं० गौरीशंकर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मिश्र, सरदार नर्मदाप्रसादसिंह, पं० हरिश्चंद्र वाजपेयी, बाबू मुकुटविहारीलाल भार्गव, चौधरी विहारीलाल । हमें आशा है, इस बार महासभा का कार्य सुचारु रूप से संचालित होगा, जिससे शीघ्र ही हिंदू-जाति की उन्नति के साथ देश का भी कल्याण साधित होगा । तथास्तु ।

× × ×

६. अलीगढ़-युनिवर्सिटी

अलीगढ़-युनिवर्सिटी सर सैयद अहमद का कीर्तिस्तंभ है । मुसलमान-बालकों के लिये मुसलमानों द्वारा परिचालित इससे अच्छी और शिक्षा-संस्था नहीं है, यह कहना भी कुछ अत्युक्ति न होगा । यहाँ के प्रबंध की गड़बड़ी के बारे में बहुत दिनों से बहुत तरह की बातें सुनाई पड़ रही थीं । हाल में इस विश्वविद्यालय की परिचालक-सभा ने जाँच करके यहाँ के प्रबंध में परिवर्तन किया है । इस युनिवर्सिटी के प्रो-वाइसचांसलर डॉ० ज़ियाउद्दीन अहमद साहब थे । आपने इस्तीफ़ा दे दिया, और वह मंज़ूर कर लिया गया । महमूदाबाद के राजा, मौलवी महम्मदयाक़ूब और यामिनख़ाँ ने प्रस्ताव किया कि तीन साल के लिये प्रो-वाइसचांसलर की जगह कोई योरपियन स्पेशल कर्मचारी नियुक्त किया जाय । इस पर बहुत बहस हुई । अंत को 'योरपियन स्पेशल कर्मचारी' की जगह 'शिक्षा-विशेषज्ञ' शब्द प्रस्ताव में पास हुआ । यह विशेषज्ञ ढूँढने के लिये एक कमेटी नियुक्त हुई है । हमें शंका होती है कि यह कमेटी किसी योरपियन ही को चुनेगी । वास्तव में हममें ऐसी परतंत्रता समा गई है कि हम आत्मविश्वास खो बैठे हैं । बहुत लोगों की तो धारणा यह देखी जाती है कि योग्य-से-योग्य भारतीय की अपेक्षा अयोग्य योरपियन हर एक कार्य को सुचारु रूप से चला सकता है । यह कितनी भ्रांत धारणा है । एक भारतीय शिक्षा-संस्था के लिये एक विदेशी की शरण लेना और स्वदेश में किसी योग्य पुरुष को न ढूँढ पाना वास्तव में खेद और लज्जा की बात है । हमारा विश्वास है कि पहले तो ढूँढने से मुसलमानों में ही कोई ऐसा योग्य व्यक्ति मिल सकता है । और, अगर, मुसलमानों में शिक्षा-प्रचार की कमी के कारण, कोई योग्य मुसलमान न भी मिले, तो किसी योग्य भारतीय का मिलना तो सर्वथा संभव है । अगर उक्त युनिवर्सिटी के संचालकों में सांप्रदायिकता का विष नहीं फैला, तो उन्हें ऐसे योग्य हिंदू दर्जनों मिल सकते हैं ।

× × ×

७. बाल-विवाह का मूलोच्छेद

बाल-विवाह की अपकारिता को अब अधिकांश जनता समझने लगी है । पर कुछ प्राचीन संस्कार के कारण और कुछ धर्म-नाश के भय से लोग इस घातक प्रथा को छोड़ने में आना-कानी करते देख पड़ते हैं । तथापि यह ज़ोर देकर कहा जा सकता है कि ५०-६० प्रतिशत आदमी बाल-विवाह के विरोधी अवश्य हैं । पाठकों को मालूम ही होगा कि भारतीय व्यवस्था-परिषद् में श्रीयुत हरविलास शारदा बाल-विवाह को रोकने के क़ानून का एक मसौदा पेश कर चुके हैं । सिलेक्ट कमेटी उसका संशोधन कर चुकी है । शीघ्र ही वह क़ानून का रूप धारण करने के लिये असेंबली में पेश होगा । इस आईन का विरोध करनेवाले या तो वे लोग हैं, जो कट्टर कहलाते हैं और अपने को सनातनधर्मी कहते हैं (यहाँ पर हम यह कह देना चाहते हैं कि हम भी सनातनधर्मी हैं; पर आँख मूँद सभी रूढ़ियों को सनातनधर्म नहीं मानते), या वे लोग हैं, जो सुधार या संस्कार तो चाहते हैं, पर राजशक्ति के बनाए क़ानून के द्वारा नहीं । हम भी यह मानते हैं कि अगर समाज की चेष्टा से ही, जनमत को सुधार कर ही, बाल-विवाह का प्रचार रोका जा सकता, तो बहुत अच्छा होता । पर इसके शीघ्र होने की कोई संभावना नहीं देख पड़ती । जितनी ही देर होती है, उतनी ही हिंदू-जाति की हानि हो रही है । इसका शीघ्र निराकरण होना आवश्यक है । फिर क़ानून का रूप बहुत कुछ सुधार दिया गया है । जेल की सज़ा की जगह केवल आर्थिक दंड ही रक्खा गया है । अगर कोई बाल-विवाह करेगा, तो वह रद्द न समझा जायगा, केवल दंड दे दिया जायगा । बरोदा और मैसूर राज्यों में तो पहले ही बाल-विवाह क़ानून से रोक दिया गया था । मंडी के राजा ने भी अपने यहाँ क़ानून बनाकर बाल-विवाह का निषेध कर दिया है । वहाँ १८ वर्ष से कम अवस्था में बालक का और १३ वर्ष से कम अवस्था में लड़की का व्याह करनेवाले अभिभावकों, उस विवाह में शामिल होनेवाले पुरोहित तथा अन्य मनुष्यों को भी दंड मिलने की व्यवस्था की गई है । यहाँ तक कि इस राज्य की प्रजा राज्य के बाहर जाकर भी बाल-विवाह नहीं कर सकेगी । पर इस मसौदे में तो ऐसी कड़ाई भी नहीं है । आशा है, इस पर विरोधी लोग भी विचार करेंगे । देश और जाति की भलाई के लिये इस बिल का समर्थन करना चाहिए ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जब मालवीयजी के समान कट्टर सनातनधर्मी इसका अनुमोदन करते हैं, तब सनातनधर्म के नाम पर किसी को इसका विरोध करने की गुंजाइश भी नहीं रहती।

× × ×

८. उत्तर-मेरु की यात्रा

ख़बर मिली है कि इटली के मिलान नगर से इटालिया नाम के एक हवाई जहाज़ पर जनरल नोबाइल ने उत्तरमेरु की यात्रा की थी। किंतु कार्पेथियंस नाँघने के बाद ही आँधी के बीच पड़कर हवाई जहाज़ ख़राब हो गया। अंत को किसी तरह जर्मनी—प्रशिया—के सेडिन-नामकस्थान में जहाज़ पहुँच सका, और वहीं कुछ जल गया। मिलान से सेडिन ७०० मील है। इतना रास्ता व्योमयान ने केवल ३० घंटे में तय किया। जनरल नोबाइल स्वयं व्योमयान का संचालन करते थे। साइलेशिया में वह भटक गए थे। सेडिन में दो सप्ताह रहकर जनरल ने अपना यान दुरुस्त किया है। अब वहाँ से वह स्पिज-बर्जेन स्थान की ओर यात्रा करेंगे। इस यात्रा का उद्देश्य उत्तर-मेरु में जाकर वैज्ञानिक देख-भाल और जाँच करना है। जनरल के साथ कई ख़ास-ख़ास वैज्ञानिक विद्वान् भी हैं। इसका नाम है उद्योग और विद्याभिरुचि। प्राणों की ममता छोड़कर ऐसे कामों में लगने से ही सफलता और कीर्ति मिलती है।

× × ×

९. स्व० रायसाहब द्विवेदी

हमें यह जानकर अत्यंत दुःख हुआ कि गत २४ एप्रिल को जबलपुर के हिंदी के अनन्य भक्त, सुलेखक तथा सत्समालोचक, वयोवृद्ध रायसाहब पं० रघुवरप्रसादजी द्विवेदी ने अपनी इह लोक-लीला समाप्त कर दी। आपकी मृत्यु से हिंदी-संसार को—विशेषतः मध्यप्रांत की साहित्यिक जनता को—गहरा धक्का पहुँचा है। शिक्षा-विभाग का तो एक रत्न ही उठ गया। ईश्वरेच्छा!

द्विवेदीजी गुदड़ी के लाल थे। अपने बाहु-बल से ही आपने इतनी कीर्ति प्राप्त की। २०-२२ वर्ष की अवस्था से लेकर इधर मरणासन्न काल तक निरंतर हिंदी की सेवा करते रहे। हिंदी-संसार में बहुत कम साहित्य-सेवी ऐसे होंगे, जो द्विवेदीजी की तरह साहित्य-सेवा के पीछे पड़े हों—हिंदी की सेवा में निरत रहे हों। किंतु खेद है, हम उनको उचित सम्मान न दे सके। 'हिंदी-भक्त' कहलानेवालों के लिये यह बड़ी लज्जा की बात है।

स्वर्गवासी पं० रघुवरप्रसाद द्विवेदी

ईश्वर उनकी आत्मा को शांति दे। किसी आगामी संख्या में उनका विस्तृत परिचय दिया जायगा।

× × ×

१०. मराठी-साहित्य-सम्मेलन

मराठी भाषा एक समृद्ध भाषा है। उसमें अच्छे-अच्छे चिंताशील लेखक हो गए हैं, और अब भी हैं। मराठी-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साहित्य ज्ञान-गर्भ है। गत ७, ८, ९ एप्रिल को ग्वालियर में, श्रीयुत एम्० एस्० अणे के सभापतित्व में, मराठी-साहित्य-सम्मेलन का प्रभावशाली अधिवेशन हुआ। अनेक साहित्य-सेवी और प्रतिनिधि आए थे। ३७ प्रस्ताव पास हुए। मोड़ी लिपि में मराठी लिखने का प्रस्ताव भी पास किया गया। परीक्षा के तौर पर एक मराठी-परिषद् स्थापित करने का आयोजन हुआ है। ग्वालियर और इंदौर राज्यों की ओर से मराठी-साहित्य की उन्नति के लिये ५-५ हज़ार रुपए देने की भी घोषणा की गई। हम मराठी-साहित्य की श्रीवृद्धि हृदय से चाहते हैं।

× × ×

११. चित्र-परिचय

वनदेवी—यह बंगाली कला की वर्तमान कारीगरी का नमूना है। इसमें पुरानी अजंटा-चित्रकला की नक़ल करने की प्रायः कोशिश की जाती है। अजंटा-कला में शारीरक अथवा दूरस्थ एवं निकटस्थ दृष्टि-बिंदु का ख़याल बहुधा नहीं रक्खा जाता था, किंतु ग्रूप में पात्रों का चुनाव बहुत अच्छा होता था। जैसे मनुष्य-समुदाय के चित्र में—जिसमें एक हाथी का भी चित्र हो—हाथी की आकृति मनुष्य की आकृति की तरह ही लंबी चौड़ी होगी; लेकिन एक ही धरातल पर होने—उँचाई में कुछ फ़र्क़ न होने—पर भी उनमें से कोई सरसरी नज़र देखने से ग़लत न जान पड़ेंगे। चित्रकला के विशेषज्ञ ही इस बारीकी को ताड़ सकते हैं। लेकिन बंगाली कला के जो चित्रकार केवल अजंटा को ही हिंदू-आर्ट का उत्कृष्ट नमूना समझ उसका अनुसरण करते हैं, वे, इस शैली को ज्यों-का-त्यों ग्रहण कर लेने के कारण, बहुधा चित्र को कविता के पद बना देते हैं। उदाहरणार्थ, कमल की-सी आँख दिखाने के लिये ये चित्रकार कमल ही की-सी आँख बनावेंगे। किंतु प्रकृति में यह कैसा मालूम होगा—यह अंतर दिखाना उन्हें अच्छा नहीं जान पड़ता। इस चित्र में भी बिलकुल यही बात है। यद्यपि हिरन की बनावट—गर्दन का भाग छोड़कर—घोड़े की-सी जान पड़ती है, तो भी विशेषता यह है कि दर्शक को यह हिरन ही जान पड़ता है। चित्र-पात्र के आंतरिक प्रेम की भावना के प्रभाव ने मानो हिरन की गर्दन और मुँह को ज़ुर्राफ़े की गर्दन और मुँह के मानिंद बनवा दिया है! स्त्री के खड़े होने के भाव में नृत्य की उमंग है। एक हाथ का ख़ुद-बख़ुद टेढ़ा होकर रह जाना और दूसरे हाथ के फूल का नज़ाकत के साथ हिरन की पीठ पर पड़ना तथा चेहरे का एकरुख़ा होकर सामने की फ़ीगर में टेढ़ा होना—यह सब अस्वाभाविक होकर भी प्रेम की स्थिति का पूर्ण परिचायक है। जान पड़ता है, चित्रकार की दृष्टि में हाथ-पैरों का दुबला-पतला होना ही सुकुमारता का प्रदर्शन है। बैकग्राउंड चित्र के अनुकूल ही है, हालाँकि कमल के फूलों के चित्रण को ठीक मानने का आधार केवल जलाशय के अस्तित्व की कल्पना ही है। यह चित्र हमें उद्देशी महाशय की कृपा से प्राप्त हुआ है।

लंका-दहन—यह चित्र अपने नाम को सार्थक कर रहा है। भगदड़ का दृश्य अच्छा खींचा गया है। जिसके हाथ जो पड़ा, उसी को लेकर उसका भागना, किसी का घबराहट से समुद्र में कूदना, अग्नि की ज्वालाएँ आदि दृश्य बहुत अच्छी तरह दिखलाए गए हैं। यद्यपि चित्र में दूरस्थ अथवा निकटस्थ दृष्टि-बिंदु का ख़याल नहीं रक्खा गया है, तो भी घटना ख़ूब दिखलाई गई है। लंका के निवासियों की सूरतें जानवरों की-सी होने पर भी उनके मनोभावों का प्रदर्शन मार्के का है। यह वर्तमान जयपुरी आर्ट का नमूना है, तथा इसमें पुराने जयपुरी आर्ट का अनुसरण किया गया है। मूल-चित्र ४ रंगों में है, जिसमें सोने का नगर दिखलाया गया है। यह चित्र हमें श्रीयुत हनूमान शर्मा की कृपा से प्राप्त हुआ है।

स्वर्ग—यह चित्र श्रीयुत विनोदशंकरजी व्यास ने अपनी 'स्वर्ग'-कहानी के लिये बनवाकर भेजा है। कहानी अन्यत्र इसी संख्या में प्रकाशित है। परिचय स्पष्ट है। कहानी के अनुसार चित्र अच्छा बना है।

ग्रामोफ़ोन

यह बाजा निहायत नफ़ीस, बेहद मज़बूत और आवाज़ में बड़े-बड़े बाजों को मात करता है। रेकार्ड ऐसी मधुर तर्ज़ से बजते हैं कि दिल क़ाबू में नहीं रहता। फ़ौरन मँगाइए। साथ में एक बायस्कोप मुफ़्त। मूल्य केवल ७॥) रु०, दोनों तरफ़ गाने भरे रेकार्ड, फ़ी ॥) । एशियाटिक ट्रेडिंग को०,

पो० बक्स नं० ६७२०, कलकत्ता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ब्रह्मशक्ति ! ब्रह्मशक्ति !! ब्रह्मशक्ति !!!

सुधा है, अमृत है, अगर फ़ायदा न हो तो चौगुने दाम

नमूना की शीशी **मय ख़र्च के वापस दूँगा** का मूल्य १=)

यह ब्रह्मशक्ति सुधा—क्या है ? श्रीमान् महानुभाव योगेश्वर राघवानंदजी की कृपा-कटाक्ष और असह्य परिश्रम का अनुपम लाभदायक जीवरक्षक अमृत का पूर्ण कलश है, पीने में मीठा है, देखने में शुभ्र है, गुणों में अद्वितीय है। यह ब्रह्मशक्ति सुधा न तो आज तक कहीं बना है न कहीं बनेगा। योगेश्वर महाराज ने मेरे ऊपर कृपा-कटाक्ष कर जगत्-कल्याण के हेतु बतला दिया है। इसके पीने से सुस्ती, नामर्दी, प्रमेह, निर्बलता दूर होती है ; धातु पुष्ट होता है ; रक्त साफ़ होता है ; ख़ून बढ़ने लगता है ; शिथिलता तरलता और धातु की कमज़ोरी दूर होती है, दिल दिमाग़ को पूरी ताक़त पहुँचाती है, दुबला आदमी मोटा होता है और मोटा बलवान् बनता है। जिनके लड़के नहीं होते उनका घर पुत्ररूपी दीपक से उजियाला होता है, गर्मी, सूज़ाक, कम दिखाई देना, भूख न लगना, ख़ून का ख़राब होना, दाद, कोढ़, फोड़े, घाव, गठिया और कच्चे पारे के खाने से उत्पन्न विकार ; बातों का भूलना मगज की नाताक़ती अनेक प्रकार से पैदा हुई सुस्ती और भी शरीर के भीतर-बाहर होनेवाले संपूर्ण रोग दूर करता है। इसके सेवन से १ मास में बीमार के शरीर में कई सेर ख़ून बढ़ता है और आरोग्य शरीरवाले का तो कहना ही क्या है। ऐसा अनुभव हुआ जो लोग बीमार नहीं हैं वे अगर इसको पिएँगे तो दिन दूना रात चौगुना बल बढ़ेगा, शरीर का फीकापन दूर होकर एकदम तप्तकंचन व चंद्रमा के समान सुंदर हो जायगा। इसके सेवन से अनेक प्रकार की खाँसी, कफ, क्षयो, जीर्ण-ज्वर-मंदाग्नि, हाड़ फूटना, शरीर का आलस्यग्रसित रहना और फ़िक्रमंद तथा उदास रहनेवाले आदमियों को एकदम लाल गुलाब-सा बना देता है। दाँत मज़बूत होते हैं आँख की कुल बीमारी दूर होती है ; बवासीर भाग जाती है ; मनमाना बल बढ़ता है ; बस ज़्यादा क्या कहें योग की करामात से इस महौषधि में अमृत का गुण आ गया है, जो लोग इसको सेवन करेंगे उन्हें अवश्य फ़ायदा होता है। यही योगेश्वर महात्मा का आशीर्वाद है। यह महौषधि अनेक वनौषधियों द्वारा बनाई गई है इसके मुख्य अंग ऐसे हैं, जिनके हलक़ से उतरने पर ख़ून-ही-ख़ून बन जाता है, यह अमृत है, जिसकी चाह में सिकंदर खाक़ छानता फिरा, रावण ने अपना सिर हवन किया और महात्माओं ने अपने शरीर के रुधिर को तृणवत् समझकर अनेक कष्ट सहन किए और मुश्किलों से पाया था। वही आपको योगेश्वर की कृपा-कटाक्ष और दयालुता के कारण हम घर-घर में पहुँचाने में समर्थ हुए। बोतल खोलते ही केवड़ा, गुलाब, ख़सख़स, सौंफ़, अनार, अंगूर, बनस्पती, आनंदलता, जगमोहनीलता, सोमलता आदि की सुगंधि से दिमाग़ भर जायगा।

इसमें पड़ा क्या-क्या है ?

इसमें जीवनीगण की अनेक महौषधि अनार, अंगूर, (सोमवल्ली) सारवन, पिठवन और अनेक कंदमूल फल फूल बल पुष्टि तुष्टि सुंदरता-वर्द्धक औषधियों का समावेश है। हम बड़े ज़ोर से कहते हैं कि जिनके संतान नहीं है या न होती हो, जिनका धन दूसरों के हाथ में जाना चाहता है, जो मोटे-ताज़े होने पर भी आलस्य, सुस्ती से भरे मुंजी बन रहे हों ; जो नशे में फँसे हों ; जिनका शरार भंग अफ़यून शराब ने बेकार कर डाला हो ; वह इस महा-अमृत को पीकर अफ़ीम, भंग, शराब से छूट जायँ। इसके सेवन से हर तरह की नशों की आदत छूट जाती है ; शरीर सबल होता है ; बिगड़ा ख़ून साफ़ होता है; यहाँ तक कि अठारह प्रकार के कुष्ठ आराम होते हैं, बल में भीमसेन के तुल्य, वेग में घोड़े के तुल्य, देखने में गीध के नेत्रों की समता और बहुबलशाली बन जाता है। जन्म का सुस्त भी मर्द होकर सुस्ती से अल्पकाल में दूर हो जाता है। इसका रंग अनार के रंग के मानिंद है, पीने में बहुत मीठा है, ज़ायक़ा अमृत के तुल्य है, सुगंधित ऐसा है कि पीते ही मन, तन, प्राण एकदम प्रसन्न हो जाते हैं, चाहे कितना ही चित्त उचाटन हो १ ख़ुराक पीने से दिल बाग़-बाग़ हो जाता है ; काम करने का हौसिला होता है। चाहे जितना काम करते-करते शरीर थकावट से चूर-चूर हो एक ही ख़ुराक में सब थकावट दूर, आलस्य चकनाचूर होता है। बाँझ स्त्रियों के ५० वर्ष की उमर में भी संतान होने का दावा रखती है। देश-विदेश की जलवायु के विकारों को दूर करने में महाबलशाली वज्र है, विचाराधीश, हाकिम, एडीटर, पढ़नेवाले नवयुवक, बालक-बालिकाएँ, वृद्ध, युवती, बच्चे, वकील बैरिस्टर मगज से काम करनेवाले ; बहुत दिन ज़िंदा रहने की इच्छा रखनेवाले ; संतान से घर भरा देखने के अभिलाषी, हमेशा रोग-रहित बलवान बने रहने के इच्छुक और बदन को गोरा गुलाबी रंग का बनाने की कामना रखनेवाले, स्त्री, पुरुष, बूढ़े से जवान और पहलवान् बन के अपने को सदैव युवा बनाए रखने की उम्मेद रखनेवाले ज़्यादा नहीं, केवल १ शीशी परीक्षा के हेतु मँगाकर पी देखें। यदि पहली ख़ुराक से लाभ न हो, तो धर्मपूर्वक लिखने से क़ीमत वापस देंगे ; मूल्य बहुत बड़ी शीशी का २॥) डाक ख़र्च ।॥=) ; २ शीशी का ४॥॥) डाक ख़र्च १।=) ; ३ शीशी ६॥) डाकख़र्च १।॥=) ; ४ शीशी ८॥) डाकख़र्च २) ; ६ शीशी १२) डाकख़र्च २।॥) ; १२ शीशी २२) डाकख़र्च ४॥) ।

एस० सिंह प्रोप्राइटर, घहरामघाट, बाराबंकी, ब्रांच सत्यसुखसंचारक ब्रह्मशक्ति, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

टानिक पिल्स याने "सुधाशक्ति" ग़ज़ीब ताक़त पैदा करनेवाली दवा

इसने दस लाख बीमारों को मुर्दा से ज़िंदा किया है।

यह गोलिया तमाम दुनियाँ में अपने गुणों से मशहूर हो गई हैं; क्योंकि दस लाख से अधिक आदमियों को यह गोलियाँ इस्तेमाल कराई जा चुकी हैं और सभी को पूरा-पूरा फ़ायदा हुआ है। इसी से दुनिया में प्रसिद्ध हो गई है, जो नीचे लिखी हुई बीमारियों को अति शीघ्र दूर करके आदमी को बलवान् और ताक़तवर बनाती है। टानिक पिल्स के इस्तेमाल से प्रमेह याने जिरयान वग़ैरह रोग को जड़ से दूर करके पानी के समान धातु भी गाढ़ा और मज़बूत हो जाता है। टानिक पिल्स के इस्तेमाल से वीर्य के विकार से नामर्द हुआ आदमी मर्द हो जाता है। टानिक पिल्स के इस्तेमाल से भूख ख़ूब खुलकर लगती है। दस्त साफ़ होता है। पाचक-शक्ति ठीक हो जाती है। बदन का बिगड़ा हुआ ख़ून साफ़ हो जाता है। वीर्य, ताक़त और ख़ून बढ़ता है। बदन में नया ख़ून पैदा करना तो इन गोलियों का मुख्य कार्य है। बदन में नई ताक़त पैदा हो जाती है। टानिक पिल्स के इस्तेमाल से चेहरे का पीलापन, जवानी में बुढ़ापा-सा मालूम होना. हाथ पैर कमर में दर्द होना, हर वक़्त आलस रहना, बदन की कमज़ोरी दूर होकर शरीर हट्टा-कट्टा हो जाता है। टानिक पिल्स के इस्तेमाल से पेशाब के समय पहले या पीछे धातु का निकलना या तार-सा मालूम होना या दस्त के वक़्त धातु का निकलना या बग़ैर इच्छा के वीर्य का बूँद टपक पड़ना या सोते वक़्त वीर्य का बेजाने निकल जाना या समय आते ही वीर्य का निकल जाना वग़ैरह-वग़ैरह शिकायतें एकदम दूर हो जाती हैं और आदमी जवानी का सुख भोगने लग जाता है। टानिक पिल्स के इस्तेमाल से वीर्य ठीक होकर संतान पैदा करने की ताक़त आ जाती है। और जैसे आदमियों के धातु को ठीक करके ताक़तवर जवान कर देती है, वैसे स्त्रियों के प्रदर आदि रोग को दूर करके कमर में ताक़त पैदा करती है। ऐसी बशुमार ताक़त की ४० गोलियों का दाम केवल २) रु० है। डाक-ख़र्च ।=) तंदुरुस्त आदमी भी इसे इस्तेमाल करे, तो दूनी ताक़त हो जाती है। टानिक पिल्स के इस्तेमाल से हर क़िस्म की कमज़ोरी दूर होकर आँखों की रोशनी बढ़ती है। स्मरण-शक्ति बहुत अधिक हो जाती है। दिमाग़ में सोचने की ताक़त पैदा होती है। सिर का दर्द भी दूर हो जाता है। बुख़ार के बाद की नाताक़ती के लिये बहुत जल्द ताक़त पैदा करती है।

टानिक पिल्स ख़रीदो चाहे गामजंग आयल ख़रीदो। इनाम दोनों के ख़रीदारों को मिलेगा।

नोट—२५ बीमारियों की एक दवा गामजंग आयल सिर का दर्द, चक्कर, निगाह की कमज़ोरी, बालों का गिरना, सर की फुंसी, गंज, लिखने पढ़ने की थकावट, दिमाग़ की कमज़ोरी, कान का दर्द, दाँत का दर्द, ज़बान के छाले, पेट का दर्द, बदहज़मी, पीनस जिससे नाक में कीड़े पड़ जाते हैं, हर क़िस्म के ज़ख़्म मसूढ़ों का सूजन, सूज़ाक, बवासीर, भगंदर, मिर्गी, या नशे की बेहोशी, हुचकी, आग से जल जाना हर क़िस्म की बीमारियों में फ़ौरन् अपना जादू का असर दिखाती है। ख़ुशबू तो ऐसी मनोहर है कि शीशी को हाथ से छोड़ने को जी नहीं चाहता। एक शीशी की क़ीमत १।) रुपया है, डाक ख़र्च ।-) फ़ी शीशी। तीन शीशी की क़ीमत ३), डाकख़र्च माफ़।

दस हज़ार रुपया इनाम टानिक पिल्स 'सुधाशक्ति' और गामजंग आयल के ख़रीदारों को

पहला इनाम ३०००), दूसरा इनाम २०००) तीसरा इनाम १०००), और इसी तरह पर तक़दीर की आज़माइश करने का पूरा मौक़ा। क़िस्मत की आज़माइश करने का अजीब वक़्त। बेशुमार ताक़त की गोलियाँ टानिकपिल्स और गामजंग आयल के ख़रीदार इस कंपनी से दस हज़ार-रुपया महीना जल्द हासिल कर सकते हैं। यह इनाम की रक़म उन्हीं साहबों को मिलेगी, जो टानिक पिल्स या गामजंग आयल की शीशी ख़रीदेंगे। उनका नाम हमारे यहाँ दफ़्तर में लिख लिया जायगा। टानिक पिल्स याने निहायत ताक़तवर गोलियाँ दुनिया-भर में बेमिसाल साबित हो चुकी हैं, दस लाख से अधिक आदमियों को इस्तेमाल कराई जा चुकी हैं। सबको पूरा-पूरा फ़ायदा हुआ है। हज़ारों सार्टीफ़िकेट मिले हैं। बस इन दवाइयों की ४० हज़ार डिबिया फ़रोख़्त होते ही इनाम तक़सीम कर दिया जायगा। दस हज़ार रुपए पर सब ख़रीदारों के नाम की चिट्ठियाँ डाली जायँगी। जिसके नाम जो इनाम निकलेगा, फ़ौरन् उनको भेज दिया जायगा। तारीख़ १० मई सन् २८ ई० तक बिक्री पूरी हो जायगी। बराबर कोशिश की जा रही है। तक़दीर की आज़माइश करने का अच्छा मौक़ा हाथ आया है, क्योंकि आम के आम गुठलियों के दाम। २) रुपया जो आप देंगे इसकी तो दुनिया-भर की मशहूर ताक़त की गोलियाँ मिल जायँगी और ऊपर से हज़ारों रुपए का इनाम घाते में। अगर तक़दीर लड़ गई, तो घर-बैठे हज़ारों रुपया मिल जायगा। जिस पर भी शर्त यह है कि अगर दवा फ़ायदा न करे, तो ५ भले आदमियों के दस्तख़त कराके लिख भेजिए, तो डाक का ख़र्च काटकर दाम वापस कर दिए जायँगे। इनाम का टिकट पार्सल के साथ भेजा जाता है, जो साहब घर-बैठे तक़दीर की आज़माइश करना चाहते हैं, तो नीचे लिखे पते पर ख़त भेजकर डिबिया मँगा लीजिए। घर-बैठे आपको दवा मिल जायगी और आपका नाम इनाम में शामिल कर लिया जायगा। फिर १० हज़ार रुपए पर आपके नाम चिट्ठी डाली जायगी।

नोट—कोई ख़रीदार इस इनाम को लाटरी न समझें, क्योंकि लाटरीवाले सिर्फ़ काग़ज़ का टिकट फ़रोख़्त करके रुपया लेते हैं। यह कंपनी तो अपने दवा के दाम लेती है। और सिर्फ़ अपनी दवा की तरक्की के लिये यह कंपनी अपने मुनाफ़े में उपहार के तौर पर इनाम तक़सीम करती है। दूसरे एक डिबिया या शीशी ख़रीदनेवाले के नाम एक चिट्ठी और दस डिबिया या शीशी ख़रीदेंगे, तो इनके नाम की दस चिट्ठियाँ डाली जायँगी। तारीख़ १० मई सन् २८ से आगे की तारीख़ नहीं बढ़ाई जायगी याने १० मई सन् २८ को चिट्ठी डाल दी जावेगी। अगर ख़रीदारों की तादाद पूरी न हुई, तो जितने ख़रीदार होंगे उसी के मुताबिक़ चिट्ठी डाल दी जायगी जैसे आधे ख़रीदारों में आधा इनाम और पूरे ख़रीदारों में पूरा इनाम। जो इनाम निकलेगा, भेज दिया जायगा।

विज्ञापक—टी० के० पी० मालिक टानिक पिल्स "सुधा" एजेंसियाँ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

घर बैठे सौ रुपए मासिक कमाइए

इसमें कोई संदेह नहीं कि आप हकीम तुलसीप्रसाद अग्रवाल की बनाई हुई "तुलसी अनुभवसार" पुस्तक पढ़कर अपनी और दूसरों की प्रत्येक बीमारी का इलाज बड़ी उत्तमता क साथ कर सकते और इसमें अनेक रोगों की चमत्कारी औषधियाँ बनाकर बड़ा सुगमता के साथ सैकड़ों रुपया कमा सकते हैं। मूल्य प्रति पुस्तक सजिल्द १।); डाक व्यय पृथक्।

बाल-जीवन-घुट्टी

हकीम तुलसीप्रसाद अग्रवाल की भारत-सरकार द्वारा रजिस्ट्री हुई बालकों के बुख़ार, खाँसी, अजीर्ण, दूध डालना, पेट फूलना, दस्त होना आदि प्रत्येक रोग को दूर करने और दुबले-पतले बालकों को मोटा-ताज़ा, बलवान् बनाने के लिये प्रसिद्ध महौषधि है। मीठी होने से बालक इसको प्रसन्न होकर पी लेते हैं। सब जगह सौदागरों के यहाँ मिलता है। मूल्य प्रति शीशी ।-), डाक-व्यय ४ शीशी तक ।), सौदागरों से १२ शीशी अर्थात् एक दर्जन का मूल्य २॥), १२ दर्जन २४), महसूल अलग।

मुफ़्त लो

जो सज्जन दस हिंदी पढ़े प्रतिष्ठित लोगों के नाम पूरे पते-सहित लिखकर भेजेंगे, उनको "आरोग्यदीपक" पुस्तक मुफ़्त भेजी जावेगी।

बाल-जीवन कार्यालय, नं० १५, अलीगढ़

हिंदी-साहित्य में एक महत्त्व-पूर्ण नई पुस्तक

भाषा-विज्ञान

लेखक

कलकत्ता-विश्वविद्यालय के हिंदी-भाषा तथा साहित्य के अध्यापक और बंगाल-प्रांत के विद्यालयों के भूतपूर्व परिदर्शक

श्रीयुक्त नलिनीमोहन सान्याल, "मोहन"

भाषा-तत्त्व-रत्न, एम्० ए०

इस मौलिक ग्रंथ में योरपीय तथा भारतीय दोनों मतों का उपयोग किया गया है। पुस्तक पढ़ने से भिन्न-भिन्न भाषाओं के स्वरूप तथा संबंध का ज्ञान होता है। इसमें भाषा की उत्पत्ति, लक्षण, परिवर्तन, विकास, ध्वनि तथा शब्दार्थ तत्त्व इत्यादि की आलोचना है।

मूल्य कपड़े की जिल्द ४)

काग़ज़ की जिल्द २॥)

प्राप्ति-स्थान

गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय, लखनऊ

दो अमूल्य पुस्तकें

(१) आदर्शगीतांजलि—देश-भक्ति, धर्म-प्रेम, जातीयता, समाज-सुधार, शुद्धि-संगठन, अछूतोद्धार, ईश-प्रार्थना, संकीर्तन आदि विषयों की भजन-पुस्तक, पाँच एकरंगे तिरंगे चित्रों से सुशोभित, मूल्य ॥=); पृष्ठ-संख्या १५०

(२) वीर क्षत्राणियाँ—भारतवर्ष की बीस 'वीर क्षत्राणियों' का जीता-जागता और फड़कता हुआ जीवन-वृत्तांत, सात एकरंगे और तिरंगे चित्रों से सुशोभित; २०० पृष्ठों की पुस्तक का मूल्य १)

पता—आदर्श पुस्तक-भंडार

नीची बाग़, बनारस सिटी

रजिस्टर्ड 'कामधेनु' रजिस्टर्ड

आपके स्वास्थ्य, जीवन और धन की रक्षिका है।

आरोग्यता के लिये सदा पास रखिए।

कोई बाल-बच्चोंवाला घर इससे ख़ाली न रहना चाहिए। न-जाने कौन समय कष्ट हो जावे। उस समय पूरी रक्षा करेगी।

मूल्य बड़ी शीशी २॥), आधी १), नमूना ।=) में वी० पी० ख़र्चा कारख़ाने से दिया जाता है। विवरण पुस्तक बिना मूल्य मँगाइए।

पत्र तथा तार का पता:—

'कामधेनु' (सु) देहली.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

BUDDHIST INDIA

The premeir Illustrated Buddhist Quarterly in India&Buddhist Gazette.

Also a Journal of Buddhist Researches Dealing with Buddhism, Buddhist History, Literature, Religion, Philosophy, Science, Art, Archæology, Iconology, Travels, Researches, Etc.

Editors:—Dharma Aditya Dharmacharyya B.M. Barua, M.A. D.Lit.(Lond.)

Published and Managed by a Board of Buddhist Indians.

The aims and objects of Buddhist India are:—

1. To be purely representative of Buddhism in India and its wide expersion abroad.
2. To protect and publish Buddhism, Buddhist Literature, Art, Culture etc. in India.
3. To be an organ for preaching Buddhism to the teeming Millions of India who merely worship Buddha as a Vishnu Avatara.
4. To promote the forgotten position of Buddhism as one of the luring religions of India.
5. To properly represent Buddhist religious and cultural problems in India.

Illustrated. Double Crown 8 Vo, 80 pages in each Issue.

Original Articles, Translations, and Illustrations a speciality.

Yearly Rs. 4. 4 Yen, 6 Shillings or. 2 Dollars. Single Copy Rs. 1-4 or 1-10 d.

Post Box 7894
CALCUTTA.

Managing Editor,
Buddhist India Office

हिंदुस्थान का मशहूर

पापुलर फुलुट हारमोनियम

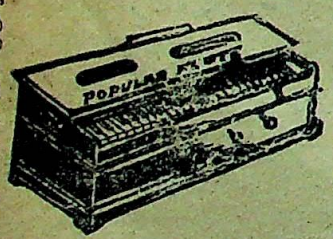

सागौन लकड़ी का बना है और हिंदुस्थान की आबहवा के लिये एकमात्र उपयोगी। गारंटी ३ साल। नापसंद होने से बदल देते है।

जर्मनरीड ३ गे ६ सिंगलरीड—२०), १२), २४)
पैरिसरीड ,, ,, ,,—२१), २८) ३२)
जर्मनरीड ,, डबलरीड—३०), ३२), ३६
पैरिसरोड ,, ,, ,,—४२), ४४), ४८)

आर्डर के साथ ५) पेशगी—

और अपने कट के स्टेशन का नाम लिखिए।

कोम्पाइटर पि० एन्० पाल

पापुलर हारमोनियम कं०
पोस्ट बक्स नं० १२ (सी) कलकत्ता

शक्तिका ख़ज़ाना यानी धातु पुष्टिके लिये

मदनमंजरी गोलियां

यह दिव्य गोलियां दस्त साफ़ लाती है, पेशाब और स्वप्नमें जाते वीर्य्यको बन्द करके वीर्य्य पुष्ट करती हैं, और प्रत्येक प्रकारको कमज़ोरीको नष्ट करके अटूट बल और नया जीवन देती हैं। क़ीमत ४० गोलीको डिब्बी १) रु०

रमण विलासिनी वटिका।

स्थम्भन करनेवाली अक्सीर दवा। फ़ी डिब्बी १) रु०

मू. फ़ी डि. १) **नपुंसकत्वारि घृत।** मू. फ़ी डि. १)

पुरुषके गुह्य भागकी प्रत्येक प्रकारकी कमज़ोरी यह लेप लगानेसे नष्ट होकर सच्चा पुरुषत्व प्राप्त होता है।

राजवैद्य नारायणजी वशवजी, १७७, हरिसन रोड, कलकत्ता।

प्रत्येक शहरके लिये एजेण्टकी ज़रूरत है। नियम बहुत आसान है

लखनऊ एजेंट:—

निगम मेडिकल हाल

फ़तेगंज.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

५००) पाँच सौ रुपए नक़द इनाम अगर नक़ली हो !

असली ! सचित्र !! प्राचीन !!!

काश्मीरी कोकशास्त्र

श्रीमान् पंडित कोकाजी महामंत्री महाराजा कशमीर-रचित

जिसमें पद्मिनी, चित्रिणी, शंखिनी और हस्तिनी, चारों प्रकार की स्त्री व पुरुषों की पहचान, स्त्री व पुरुषों की ८४ रंगीन तसवीरें (फ़ोटो) तथा ८४ आसनों का अति मनोहर [दिलचस्प] हाल, गर्भ में पुत्र और पुत्री की पहचान, बाँझ स्त्रियों का इलाज, अपनी स्त्री और अपने आपको आयु-भर सुंदर, तंदुरुस्त और जवान बनाए रखना, तमाम क़िस्म की नामर्दियों का इलाज, संतान न होती हो तो ज़रूर हो, स्त्री और पुरुषों की गुप्त बीमारियाँ और उनका शर्तिया इलाज, वशीकरण मंत्र और बहुत-सी ऐसी-ऐसी बातें हमारे "असली कशमीरी कोकशास्त्र" में दर्ज हैं, जिनका यहाँ लिखना उचित नहीं, हज़ारों रुपए ख़र्च करने पर भी जिस कोकशास्त्र का मिलना कठिन था, वही असली कोकशास्त्र हमारे यहाँ सरल हिंदी भाषा में असली ८४ रंगीन चित्रों सहित बड़ी सजधज के साथ छपकर तैयार है। और धड़ाधड़ बिक रहा है। यदि आपने अभी तक इसे नहीं देखा है, तो आज ही मँगाकर देखिए, ऐसी पुस्तक हिंदी में आज तक कहीं नहीं छपी, हर एक आदमी को इस पुस्तक की एक प्रति मँगवाकर अवश्य ही लाभ उठाना चाहिए। मूल्य सिर्फ़ ३) रुपए; यदि लिखे अनुसार न हो, तो दाम वापिस।

मिलने का पता—

मैनेजर—असली कोकशास्त्र हाउस नं० ६५, लुधियाना (पंजाब)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बाजे की पेटियाँ

तबले, डुग्गी वग़ैरह गाने-बजाने और नाटक का सामान आला दर्जे का हमारे यहाँ से मँगवाइए! विशेष जानकारी के लिये नया कैटलॉग (सूचीपत्र) मुफ़्त मँगवाइए।

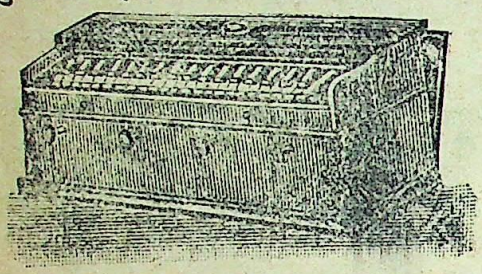

हिंदी हार्मोनियम गाइड

अर्थात् हार्मोनियम आसानी से सिखलानेवाली पुस्तक! इस पुस्तक में स्वर-व्यवस्था, ताल का स्वरूप, प्रचलित ३६ रागों के लक्षण, स्वरूप और विस्तार आदि जानकारी के साथ, उन रागों की प्रसिद्ध चीज़ों (गायनों) का सशास्त्र नोटेशन भी दिया गया है। पृष्ठ-संख्या २००; क़ीमत १॥); डाक-महसूल ।=) आना

पता—गोपाल सखाराम ऐंड कंपनी,
बिट्ठलवाड़ी के सामने, कालबादेवी रोड, बंबई नं० २

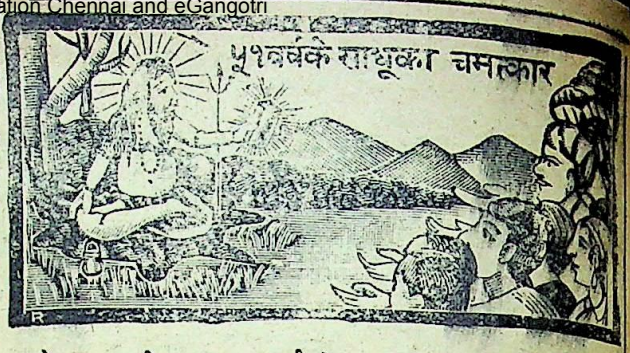

कैलास पर्वत पर ५१ वर्ष से तपस्या करनेवाले इन्हीं ऋषि द्वारा यह तांत्रिक कवच प्राप्त हुआ है। इसके धारण करने से हर प्रकार का काम सिद्ध हो जाता है। जैसे रोज़गार में लाभ, मुक़द्दमा में विजय, संतान होना, हर क़िस्म की आफ़त से छूट जाना, इमतहान में पास होना, किसी को वश में करना, इच्छानुसार नौकरी मिलना, हर प्रकार रोग वग़ैरा सब ही अच्छे सुंदर एक तावीज़ में मढ़ा हुआ है। जो काम सिद्ध न होगा उसे स्वप्न में बता देगा और उसके सिद्ध होने का तरीक़ा कह देगा। मूल्य एक तंत्र का २) और तीन का ५॥) इसी के साथ एक विधिपत्र रहता है। उसी के अनुसार करने से अगर ऊपर लिखी बातें पूरी न हों, तो १०) इनाम देंगे।

पता—जे० पी० साहा ऐंड को० १५५।३
शोभाबाज़ार अपरचितपुर रोड, कलकत्ता।

"नपुंसकता, स्वप्नदोष और ताक़त की अपूर्व औषधि"

वह मनुष्य जिनको नपुंसकता, स्वप्नदोष, धातुक्षीणता, शीघ्रपतन की बीमारी हो या युवावस्था ही में बुढ़ापे की दशा हो गई हो या दिमाग़ी कमज़ोरी हो, सर और कमर में दर्द हो, चक्कर आता हो, आँखों के आगे चिनगारियाँ नज़र आती हों, कलेजा धड़कता हो, भूख कम या स्मरण-शक्ति न हो तो शीघ्र ही काम विलास चूर्ण और तिला मँगाकर ४० रोज़ सेवन करें। ये दोनों औषधियाँ नस-नस पट्ठे-पट्ठे के अंदर नया जीवन संचार कर देंगी। दोनों औषधियों का मूल्य ८)

"काम विकास बटिका"

ये गोलियाँ शीघ्रपतन नाशक हैं। इनसे शीघ्रपतन रोग शर्तिया जाता रहता है। मूल्य फ़ी दर्जन ५) रु०, आधा दर्जन ३) रु०।

"सूज़ाक नाशक"

सूज़ाक नया हो या पुराना २ सप्ताह में बिना पिचकारी के जड़ से आराम हो जाने की गारंटी है। पहले ही दिन से टीस, पीब का आना बंद, और दर्द व जलन का कम होना आरंभ हो जाता है। मूल्य ५) रु०।

पता—तिब्बी मेडिकल वर्क्स
दरभंगा (बिहार)
Tibbi Medical Works,
Darbhanga (Behar)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रोग शत्रु पर विजय का डंका

हिन्दुस्तान और विदेशों की रिपोर्ट से साबित

सरकार से रजिस्टर्ड

पीयूषसिन्धु

कफ, खांसी हैज़ा, दमा पेंचश, पेटदर्द, नज़ला बुख़ार, बालकोंके हरे पीले दस्त, आदि रोगों की स्वादिष्ट और बिना अनोपान की अचूक दवा है। क़ीमत फ़ी शीशी ॥) आठ आ. घी. पी. ख़रच एक से ३ तक ।≈) आना १२ शीशी का दाम सिर्फ़ ४≋) चार रु. तीन आना डांक ख़रच माफ़

हाय! खुजाते खुजाते मर चले

तो हम क्या करें हमने तो पहिले ही कहा था कि दादपर 'दादका काल' लगादो वरना रोओगे।

दाद का काल

पुरानेसे पुराने व कठिनसे कठिन दादको बिना किसी कष्ट व जलन के २४ घंटे में जड़से खोने वाली मशहूर दवा है फ़ी. फ़ी शी. ।) ख़र्च १से३ तक ।≈) १२ शी.का मू. १॥–) ख़र्च माफ़

पता ☛ सुन्दर शृङ्गार महौषधालय मथुरा।

हर प्रकार की उत्तम रबर की मुहर

ऐसी २॥) रु०

सूची मुफ़्त

जी. सी. खत्री, रबर स्टाम्प कारी

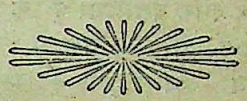

सीधी लाइन की सादी मुहर (केवल अक्षरों की २ लाइनें, २ इंच लंबी, और आधा इंच चौड़ी तक) छापने का सामान-सहित। मूल्य १), डाक-ख़र्च ।≋) ; बड़ी होने से दाम अधिक होगा। हिंदी, अँगरेज़ी, उर्दू तथा बँगला, कोई भाषा हो। अंडाकार मुहर, जैसा ऊपर नमूना है, २॥) मय सामान। डाक-ख़र्च एक मुहर ।≋), दो का ॥) और तीन का ॥≋); काम देखकर ख़ुश होंगे।

पता—जी० सी० खत्री,

रबर-स्टांप-मेकर

(सु) बनारस (सिटी)

मुफ़्त ! मुफ़्त !! मुफ़्त !!!

कोढ़ और श्वेत कुष्ठ

को

जड़ से दूर करने के लिये

हमारी पुस्तक मुफ़्त मँगाकर पढ़िए।

मिलने का पता—

Great Bengal Pharmacy,

Mihijam, E. I. R.

लिक्सिन

(LEXIN)

साँप-काटे की दवा

मूल्य १), दर्जन १०॥)

मिलने का पता—

P. Banerji, Mihijam

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

केवल पतियों के लिये

मनोरमा के पत्र या पतियों को सीख

लेखक—पं० कृष्णकांतजी मालवीय

जिस तरह से "सोहागरात" को पंडितजी ने अपनी पुत्र-वधू के लिये लिखा था उसी तरह से इस पुस्तक को पंडितजी ने अपने पुत्र के लिये लिखा है। पुत्र ही को यह पुस्तक समर्पित भी है। पुस्तक में मनोरमा के अपने प्रेमियों के नाम लिखे हुए पत्रों का संग्रह है। इन पत्रों में मनोरमा ने स्त्री-हृदय का सुंदर फ़ोटो खींच दिया है और बतलाया है कि पतियों में स्त्रियाँ चाहती क्या हैं और पति किन उपायों से पत्नी का प्रेम प्राप्त कर सकता है और उसे वश में कर सकता है। वैवाहिक जीवन को सुखमय बनाने के लिये जितनी बातें हो सकती हैं, प्राय उन सबका ही पुस्तक में समावेश है, साथ ही पुस्तक में वे बातें भी दे दी गई हैं जिनका ज्ञान वैवाहिक जीवन में नितांत आवश्यक है। विषय-सूची इस प्रकार है:—(१) प्रियतमा को प्रसन्न करने के उपाय; (२) संतान-निग्रह; (३) प्रेम का नशा उतर जाता है; (४) पति-पत्नी के झगड़े; (५) झगड़ों का अंत करने की कला; (६) तलाक़; (७) प्रेम में धोखा विश्वासघात है; (८) प्रेम स्थायी हो नहीं सकता; (९) विवाह का उद्देश्य और इंद्रिय-निग्रह।

परिशिष्ट भाग में

(१) रजिया की समस्या; (२) समस्या का हल; (३) विवाह के सात नियम; (४) स्त्री, पुरुष और प्रेम; (५) प्रेम और संपत्ति; (६) प्रेम के विवाह से कर्तव्य का विवाह श्रेष्ठ है; (७) विवाह के प्राचीन क्रम; (८) स्त्री-धन; (९) विधवा-विवाह; (१०) विवाह-विच्छेद; (११) काम-वासना के दमन के उपाय; (१२) विवाह के अनंतर शय्या-विधान; प्रथम, दूसरी, तीसरी रात्रि के कर्म, सोहागरात संबंधी भारतीय और विदेशी विशेषज्ञों की शिक्षाएँ; (१३) चंद्रकलानिरूपणम्; (१४) स्त्रीद्रावणोपायः; (१५) मदनोदय; (१६) स्त्री-शरीर की नाड़ियों से पुत्र तथा पुत्री; (१७) संतान प्राप्ति के उपाय; (१८) बाँझ की परीक्षा; (१९) पुत्र कैसे हो; (२०) गर्भधारणोपायः; (२१) वाजीकरण; (२२) नारीवशीकरण; (२३) स्त्रियों के विराग के कारण; (२४) रतिमल्लता प्राप्ति का उपाय; (२५) स्वरोदय और स्वास्थ्य; (२६) पतियों को आदेश; (२७) दीर्घ-जीवी होने का उपाय।

इन सबके साथ ही ग्रंथकर्ता का बड़ा ही अनोखा, पांडित्यपूर्ण प्रायः ११० पृष्ठ का "हमारा निवेदन" और समर्पण है। पुस्तक में "कामसूत्र", "रति-रहस्य", "अनंग-रंग", "नागर-सर्वस्व", "कंदर्प-चूड़ामणि", "कौटिल्य अर्थशास्त्र" आदि ग्रंथों के उपदेश भरे पड़े हैं। प्रत्येक पति को इस पुस्तक को शीघ्र ही पढ़ना चाहिए, साथ ही प्रत्येक पत्नी को भी "मनोरमा" की शिक्षाओं से लाभ उठाना चाहिए। मूल्य सजिल्द पुस्तक का ३॥) है। पोस्टेज पैकिंग अलग। शीघ्र ही मँगाइए, देर करने से पछताना और दूसरे संस्करण की बाट जोहना पड़ेगा। "सोहागरात" का दो हज़ार का प्रथम संस्करण प्रायः एक महीने में बिक गया था, जिन लोगों ने देर की अब पछता रहे हैं, अब इस पुस्तक के संबंध में भी पछताना न पड़े इसलिये तुरंत ही आर्डर भेजकर पुस्तक मँगा लीजिए।

"सोहागरात" छप रही है और प्रायः बीस दिनों में प्रकाशित हो जायगी।

मैनेजर अभ्युदय, प्रयाग।

एक मास तक १) तोला वाली ॥) तो०

सत-शिलाजीत

पानी समान पतले वीर्य को अत्यंत गाढ़ा तथा शुद्ध कर संतानोत्पत्ति के योग्य बनाती है। ४० दिन सेवन करने से हर प्रकार के प्रमेह, स्वप्नदोष, धातुस्राव, धातुपात, धातुनाश, धातुक्षीण अनेक प्रकार के बात बवासीर वग़ैरः को दूर कर अपरिमित बल-वीर्य, ओज और शक्ति बढ़ाने में अद्वितीय है। अत्यंत वाजीकरण है। हज़ारों रोगियों पर अनुभूत है। ग़ज़ब का फ़ायदा करती है। मूल्य ४० दिन की ख़राक ५ तो० २॥) रु०, १० तो० ५) रु०, डाक-ख़र्च पृथक्।

मैनेजर शिलाजीत कंपनी नं० १३, कनखल (यू० पी०)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकाशित हो गया ! जल्द मँगाइए !! ग्राहक बनिए !!!

"विशाल-भारत"

संपादक—श्रीबनारसीदास चतुर्वेदी

संचालक—श्रीरामानंद चट्टोपाध्याय (संपादक 'माडर्न रिव्यू')

वार्षिक मूल्य ६) छः माह का ३) विदेश में ७॥) एक अंक का ॥)

देखिए, अन्य समाचारपत्र और लेखक इसके विषय में क्या कहते हैं ?

"प्रताप" [१६ फ़रवरी]—

"चतुर्वेदीजी ने इस प्रथमांक में जिस चातुरी और योग्यता का परिचय दिया है, वह दर्शनीय है। चार-चार रंगीन चित्र और कई सादे चित्रों से पत्र विभूषित है। लेखों का क्या कहना? सभी एक-से-एक बढ़कर हैं। कहने का तात्पर्य यह कि 'विशाल-भारत' हिंदी के वर्तमान मासिक पत्रों में सबसे निराला निकला। हमारा पुस्तकालय, प्रवासी भारतीय, हमारे सहयोगी आदि नए-नए स्तंभ निर्माण करके पं० बनारसीदासजी ने इस पत्र में बहुत रोचक और ज्ञान-वर्धक सामग्री उपस्थित करने का आयोजन किया है। लेखों का चयन और संपादकीय विचार सुंदर और विद्वत्तापूर्ण हैं। हिंदी में राजनीति प्रधान एक ऐसे मासिक पत्र की आवश्यकता थी और वह आवश्यकता इस पत्र ने पूरी कर दी।"

"स्वतंत्र" [२२ जनवरी]—

"विशाल-भारत' को सर्वांग-सुंदर बनाने में उसके संपादक पं० बनारसीदासजी चतुर्वेदी ने जो परिश्रम किया है, 'विशाल-भारत' देखे बिना उसका ज्ञान किसी को नहीं हो सकता। यह मासिक पत्र हिंदी का गौरव बढ़ानेवाला है और इसने कलकत्ते की नाक रख ली है। पाठ्य विषयों की प्रचुरता और चित्रों की बहुलता में 'विशाल-भारत' पुराने-से-पुराने हिंदी मासिक पत्र से पीछे रहनेवाला नहीं है। इसके ज्ञान-वयोवृद्ध संचालक बाबू रामानंदजी चटर्जी को इस आयोजन के लिये और पंडित बनारसीदासजी चतुर्वेदी को इतनी अच्छी सामग्री इतने अच्छे रूप में हिंदी-भाषियों के सामने रखने के लिये हम बधाई देते हैं।"

सुप्रसिद्ध हिंदी-लेखक श्रीलक्ष्मीधर वाजपेयी अपने २४ जनवरी के पत्र में लिखते हैं—"हमें तो यह पत्र हिंदी के अन्य सभी सामयिक पत्र-पत्रिकाओं से अनूठा मालूम होता है। हमारे अन्य मित्र भी इसको देखकर बहुत प्रसन्न हुए हैं। छपाई, सफ़ाई, काग़ज़, लेख, चित्र इत्यादि सभी बातों में 'विशाल-भारत' हिंदी-संसार में अद्वितीय है। हमें तो यह भी विश्वास है कि यह पत्र दिन-पर-दिन उन्नति ही करता जायगा।"

"माधुरी"-संपादक श्रीप्रेमचंद लिखते हैं—

"I congratulate you on this very excellent first number. It has surpassed all expectations."

Indian Daily Mail (26th Feb).—

"The paper has several very interesting features and counts amongst its writers foremost men. The illustrations provided too are very nice. If the same standard of articles and pictures is maintained in its future issues we are sure the paper will become very popular."

"वीर-संदेश" [जनवरी, फ़रवरी]—

"हिंदी मासिक पत्रिकाएँ सब एक ही ढंग पर निकल रही हैं, पर 'विशाल-भारत' का अपना ढंग है, नया ढंग है, अनुपम ढंग है। हमें विश्वास है कि शीघ्र ही यह पत्र उन्नति करेगा और हिंदी का सर्व-सम्मत सर्वश्रेष्ठ राजनैतिक और साहित्यिक मासिक पत्र हो जायगा।"

"लीडर" [१५ फ़रवरी]—

"We congratulate Babu Ramanand Chatterji, the proprietor, and Pandit Benarsidas Chaturvedi, the editor, on the excellence of the first number of their Hindi magazine, "*Vishal Bharat*" The articles cover a wide range of subjects and among the contributors are several well known writers of Hindi. Among other features are poems by almost all the famous poets, short stories including one from the pen of Babu Premchand and a good number of illustrations, coloured as well as plain. If the high standard of the first number is maintained, *Vishal Bharat* will soon come to occupy a high place among Hindi magazines."

मैनेजर—विशाल-भारत, ९१, अपर सरक्यूलर रोड, कलकत्ता।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जगत् विख्यात मुरादाबाद की चमकदार पक्की—

कलई के बर्तन

हमारे यहाँ के बने कलई और हाथ की नकाशी (स्याह कलम) के बर्तन संसार में प्रसिद्ध हैं। यह पीतल के बनाकर इन पर पक्की कलई की जाती है, जो वर्षों नित्य के व्यवहार करने पर भी शीशे के समान चमकती रहती है। प्रतिष्ठा की चीज़ है। चाहे नित्य के व्यवहार में रखकर घर की शोभा को बढ़ाइए, चाहे विवाह-शादी आदि उत्सवों पर दान-दहेज़ में देकर यश कमाइए। अधिक प्रशंसा व्यर्थ है, जिन विदेशों की बनी चीज़ों को देखकर आप उनके वशीभूत हो जाते हैं और उनके ख़रीदने को लालायित हो उठते हैं; परंतु हमारे यहाँ के बने बर्तनों पर उन्हें भी अचंभित होना पड़ा है। यही कारण है कि प्रति दिन हज़ारों रुपए का माल हमारे यहाँ से अमरीका, जापान, जर्मनी, फ्रांस, बेलजियम, योरप आदि विदेशों को जाता है। जिसने एक बार भी इन बर्तनों का व्यवहार किया है, वह सदैव के लिये इन्हीं का भक्त हो गया है। बड़े-बड़े मूल्यवान् बर्तन भी इनके सामने तुच्छ प्रतीत होते हैं। सर्वसाधारण व्यवहार में ला सकें, इस कारण मूल्य भी कम रक्खा है। दो-चार बर्तन मँगाकर अवश्य परीक्षा करें।

मूल्य प्रत्येक बर्तन का इस प्रकार है—

गिलास—॥), ।=), ।।), १), १॥), २)
लोटा—१), १॥), २), २॥), ३), ४)
थाल—१॥), २), २॥), ३), ३॥), ४)
थाली—।), ।=), ॥), ॥=), ।॥), १)
कटोरे—॥), ।॥), १), १॥), २), २॥)
कटोरी—।), ।=), ॥), ॥=), ।॥), १)
चम्मच—=), ≡), ।), ।=), ॥), ॥।)
फरसी—१॥), २), २॥), ३), ४), ५), ६)
हुक्का—१), १॥), २), २॥), ३), ४), ५)
पानदान—२), २॥), ३), ४), ५), ६)
पीकदान—२), २॥), ३), ४), ५), ६)
चौकी—३), ४), ५), ८), १०), १२)
चाय पीने का सेट—२), ३), ४), ५), ६)
पान की डिबिया—॥), १), १॥), २)

इसके अलावा जिस बर्तन की आवश्यकता हो, निस्संकोच मँगाइए, बर्तन का नाम और मूल्य अवश्य लिखना चाहिए।

सूचना

हमारे यहाँ हर प्रकार की सुंदर और मज़बूत हिंदी, उर्दू, अँगरेज़ी में रबर की मोहरें बनती हैं, जिसके सैकड़ों प्रशंसापत्र हमारे पास मौजूद हैं। बड़ा सूचीपत्र मँगाने से मुफ़्त भेजा जाता है।

अपने नाम और पूरे पते की मोहर हिंदी, उर्दू, अँगरेज़ी के सुंदर अक्षरों में केवल १) रु० में बनाकर भेजी जाती है।

नोट—१) से कम का पार्सल नहीं भेजा जायगा। अधिक चाहे जितना मँगावें। २५) से अधिक के ख़रीदार को २०) सैकड़ा पेशगी भेजना चाहिए।

मँगाने का पता—

जैन-ब्रादर ऐंड कंपनी, मुरादाबाद

(U. P. India)

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छप गई ! प्रकाशित हो गई !!

मुग़ल-दर्बार-रहस्य

अथवा

क्रां ति का री

अमृत और विष

उ प न्या स

[ले० प्रोफ़ेसर रामकृष्णजी शुक्ल, एम्० ए०]

यह ऐतिहासिक उपन्यास मुग़ल-दरबार-रहस्य के आधार पर लिखा गया है। यदि नूरजहाँ के शासन-काल के दाँव-पेंच देखना हो; यदि देखना हो कि हिंदुओं के ख़िलाफ़ मुसलमानों के शासन-काल में कैसे-कैसे भीषण षड्यंत्र रचे जाते थे; यदि मुसलमान-बादशाहों की काम-पिपासा, उनकी प्रेम-लीला और विलासिता का नग्नचित्र देखना हो, तो इस महत्त्वपूर्ण ऐतिहासिक उपन्यास को अवश्य पढ़िए। बहादुर राजपूत नवयुवकों की वीरता का भी आदर्श-नमूना आपको इसमें मिलेगा। जुलेख़ा नामधारिणी एक हिंदू-महिला की वीरता, साहस और राजनीतिक दाँव-पेंच की सत्य घटनाएँ पढ़कर आपको दाँतों तले उँगली दबानी पड़ेगी, उस समय का सारा इतिहास बाइस्कोप के तमाशे की तरह आपकी आँखों के सामने नाचने लगेगा। यह एक ऐतिहासिक महत्त्वपूर्ण ग्रंथ है, जिसे एक मनोरंजक उपन्यास के आवरण में पढ़कर प्रत्येक स्त्री-पुरुष, बच्चा और बूढ़ा अपनी ज्ञान-वृद्धि कर सकता है। पुस्तक की भाषा बड़ी ललित, सुंदर और मुहावरेदार है। इतनी अधिक खोज से लिखी हुई मोती के समान साफ़ अक्षरों में छपी हुई, समस्त कपड़े की जिल्द से मंडित, स्वर्ण-अक्षरों से अंकित, लगभग ७०० पृष्ठ की इस अमूल्य पुस्तक का मूल्य केवल ४); स्थायी ग्राहकों के लिये ३) मात्र !

☞ व्यवस्थापिका 'चाँद' कार्यालय, इलाहाबाद

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Research Collection, Kurukshetra University, Kurukshetra

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निर्मला

[ले० सुप्रसिद्ध उपन्यासकार श्रीयुत प्रेमचंदजी]

इस मौलिक उपन्यास में लब्धप्रतिष्ठ लेखक ने समाज में बहुलता से होनेवाले वृद्ध-विवाहों के भयंकर परिणामों का एक बीभत्स एवं रोमांचकारी दृश्य समुपस्थित किया है। जीर्ण-काय वृद्ध अपनी उन्मत्त काम-पिपासा के वशीभूत होकर किस प्रकार प्रचुर धन व्यय करते हैं; किस प्रकार वे अपनी वामांगना षोड़शी नवयुवती नवल-लावण्य-संपन्ना के कोमल अरुणवर्ण अधरों का सुधा-रस शोषण करने की उद्भ्रांत चेष्टा में अपना विष उसमें प्रविष्ट करके, उस युवती का नाश करते हैं; किस प्रकार गृहस्थी के परम पुनीत प्रांगण में रौरव-कांड प्रारंभ हो जाता है, और किस प्रकार ये वृद्ध अपने साथ-ही-साथ दूसरों को लेकर डूब मरते हैं; किस प्रकार उद्भ्रांति की प्रमत्त सुखद कल्पना में उनका अवशेष ध्वंस हो जाता है—यह सब इस उपन्यास में बड़े मार्मिक ढंग से अंकित किया गया है। यह वही क्रांतिकारी उपन्यास है, जो गत वर्ष धारावाही रूप से 'चाँद' में प्रकाशित हो चुका है और जिसने एकबार ही समाज में खलबली पैदा कर दी है। पुस्तक बहुत साफ़ छपी है, सुंदर जिल्द से मंडित है; फिर भी प्रचार की दृष्टि से इसका मूल्य केवल २॥) रक्खा गया है; स्थायी ग्राहकों से १॥।=)

उपयोगी चिकित्सा

[ले० प्रोफ़ेसर कविराज पंडित धर्मानंदजी शास्त्री, आयुर्वेदाचार्य]

इस महत्त्वपूर्ण पुस्तक की एक प्रति प्रत्येक सद्गृहस्थ के यहाँ होनी चाहिए। इस पुस्तक को आद्योपांत एक बार पढ़ लेने से फिर आपको डॉक्टरों की ख़ुशामदें न करनी होंगी—आपके घर के पास तक बीमारियाँ न फटक सकेंगी। इस पुस्तक में रोगों की उत्पत्ति का कारण, उसकी पूरी व्याख्या, उससे बचने के उपाय तथा उसके इलाज दिए गए हैं। रोगी की परिचर्या किस प्रकार करनी चाहिए, इसकी भी भरपूर व्याख्या आपको मिलेगी। पुस्तक की भाषा इतनी सरल है कि ज़रा-सा बच्चा भी आसानी से समझ सकता है। स्त्रियों के लिये तो यह पुस्तक वास्तव में बड़े काम की है। पृष्ठ-संख्या लगभग २२५; सजिल्द पुस्तक का मूल्य केवल १॥) रु०; स्थायी ग्राहकों के लिये १=)

व्यवस्थापिका 'चाँद' कार्यालय, इलाहाबाद

CC-0.In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अनूठे चित्रों से सुशोभित !

नवीन
संवत् १९८५

सचित्र !
सर्वांग-सुंदर !!

लीजिए ! छपकर तैयार हो गया ! अवश्य मँगा लीजिए ! देखकर नेत्रों को अकथनीय तृप्ति होगी। लाखों स्त्री-पुरुष इसे मँगाकर साल-भर तक लाभ उठाते हैं। यों तो अनेक पंचांग प्रचलित हैं, किंतु यह अपने ढंग में विशेष महत्त्व रखता है। छपाई शुद्ध और स्वच्छ, काग़ज़ बढ़िया, चित्र अनूठे और दर्शनीय हैं। आप एक पत्र लिखकर डाल दीजिए। घर बैठे बिठाए आपको मिल जायगा।

तत्काल परिचय देनेवाला

निराली पुष्टई !] "कोला-टानिक" [मनमोदक !

अनेकों बार परीक्षा करके देखा जा चुका है ! शक्तिहीनता की ऐसी कोई भी शिकायत नहीं जो इससे दूर न हो ! यदि आपकी स्मरण-शक्ति कम हो गई हो, अगर आप ज़रा से परिश्रम से थक जाते हों, दिल धड़कता रहता हो, किसी काम-काज में मन न लगता हो तो "कोला" पीजिए।

हम स्वयं क्या लिखें ? आप ही खुद परीक्षा कीजिए और लाभ उठाइए।

प्रति शीशी १=) डा० म० ।=) ; तीन शीशी ३।) डा० म० ॥)

डॉक्टर एस्० के बर्मन (विभाग नं० ४६) पोस्ट बक्स ५५४, कलकत्ता।

एजेंट—लखनऊ (चौक) में हमारे एजेंट मेसर्स दूबे ब्रादर्स।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नोटिस निस्बत दिखाने वजह के (नमूना समेत)

बअदालत दीवानी जनाब पंडित प्यारेलाल साहब भार्गव मुंसिफ़ जनूबी हरदोई

मुक़ाम हरदोई

मुक़द्दमा नंबर १०७७ सन् १९२७ ई०

ख़ैराती वग़ैरा पिसरान गंगादीन ब्रहमनान साकिन मौज़ा भगहर परगना सांडी तहसील बिलग्राम ज़िला हरदोई डिगरीदार बनाम

ललतू मदयून

बनाम ललतू बेटा रघुनाथ क़ौम ब्रहमन साकिन मौज़ा भगहर परगना सांडी तहसील बिलग्राम ज़िला हरदोई

हरगाह मुसम्मे ख़ैराती वग़ैरा ने दरख़्वास्त इस अदालत में गुज़रानी है कि तुमको जायदाद नीलाम तलब मौरूसी है या मक़सूबा जो कुछ उज़र हो बतारीख़ मोयना पेश करो।

लिहाज़ा तुमको इत्तिला दी जाती है कि तुम असालतन या मार्फ़त किसी वकील के जो हालात मुक़द्दमे से बख़ूबी वाकिफ़ है बवक्त १० बजे बतारीख़ १७, माह मई सन् १९२८ ई० इस अदालत में हाज़िर होकर दरख़्वास्त के ख़िलाफ़ वजह दिखाओ अगर ऐसा न करोगे तो दरख़्वास्त मज़कूर तुम्हारी ग़ैर हाज़िरी में समाअत की जावेगी।

आज बतारीख़ ५ माह अपरैल सन् १९२८ ई० मेरे दस्तख़त और मुहर अदालत से जारी किया गया।

जज

नोटिस बग़रज़ ज़ाहिर करने वजह के कि इजरा क्यों न किया जाए

बअदालत ख़लीफ़ा जनाब बाबू अवधबिहारीलाल साहब बहादुर मुंसिफ़ कुंडा मुक़ाम परतापगढ़

मुक़द्दमा दीवानी नंबर ४९० बाबत सन् १९२२ ई०

मुक़द्दमा इजराय डिगरी नंबर २१ बाबत सन् १९२८ ई०

विजयसिंह वल्द रामसिंह बछगोती सा० लखनूडीह परगना पट्टी ज़िला परतापगढ़

डिगरीदार

बनाम शेरख़ां वग़ैरह

मदयून डिगरी

बनाम शेरख़ां व बुद्धूख़ां पिसरान शिवमरखां अक़वाम खानजादा सा० ततये मुरैनी परगना चांदा तहसील काशीपूर ज़िला सुलतानपुर

हरगाह डिगरीदार ने अदालत हाज़ा में दरख़्वास्त इजराय डिगरी बमुक़द्दमा नंबर १३५ सन् १९२२ ई० इस बयान से गुज़रानी है कि डिगरी मज़कूर उसके हक़ में मुंतक़िल हो गई है लिहाज़ा तुमको इत्तिला दी जाती है कि तुम बतारीख २ माह मई सन् १९२८ ई० इस अदालत में हाज़िर होकर वजह जाहिर करो कि इजरा क्यों न किया जाए।

आज बतारीख़ १३ माह अप्रैल सन् १९२८ ई० मेरे दस्तख़त और मोहर अदालत से जारी किया गया।

अगर तुम लोगों को शिवमरखां मुतवफ़्फ़ी के क़ायम मुक़ाम होने में कोई उज़र हो तो पेश करो।

जज

(नमूना क़ाबिल फ़रोख़्त)

समन बिनावर इनफ़िसाल मुक़द्दमा

(आर्डर ५ क़ायदा १ व ५)

नंबर मुक़द्दमा १९९५ सन् १९२७

बअदालत ऐडिशनल ख़लीफ़ा सबजजी बुलंदशहर

पं० दौलतराम मुद्दई

बनाम

घासीराम मुद्दाअलेह

साकिन

हरगाह मुद्दई ने तुम्हारे नाम एक नालिश बाबत १६२) के दायर की है लिहाज़ा तुमको हुक्म होता है कि तुम बतारीख़ २८ माह अप्रैल सन् १९२८ ई० बवक्त १० बजे दिन के असालतन या मारफ़त वकील के जो मुक़द्दमे के हालात से क़रार वाक़ई वाक़िफ़ किया गया हो और जो कुल अमूर अहम मुतअल्लिक़ै मुक़द्दमा का जवाब दे सके या जिसके साथ कोई और शख़्स हो कि जवाब ऐसे सवालात का दे सके हाज़िर हो और जवाबदिही दावा की करो। और हरगाह वही तारीख़ जो तुम्हारे इहज़ार के लिये मुक़र्रर है वास्ते इनफ़िसाल क़तई मुक़द्दमा के तजवीज़ हुई है पस तुमको लाज़िम है कि उसी रोज़ अपने जुमला गवाहों को जिनकी शहादत पर वो नीज़ तमाम दस्तावेज़ात जिन पर तुम अपनी जवाबदेही के ताईद में इस्तदलाल करना चाहते हो उसी रोज़ पेश करो—तुमको इत्तिला दी जाती है कि अगर बरोज़ मज़कूर तुम हाज़िर न होगे तो मुक़द्दमा बग़ैर हाज़िरी तुम्हारे मसमू और फ़ैसल होगा।

बसन्त मेरे दस्तख़त और मोहर अदालत के आज बतारीख़ ११ माह ४ सन् १९२८ ई० जारी किया गया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समन बग़रज़ इनफ़िसाल मुक़द्दमा

(आर्डर ५ क़वायद १ व ५ मजमूआ ज़ाबिता दीवानी सन् १९०८ ई०)

नंबर मुक़द्दमा ६६७ स० २७

बअदालत मुंसफ़ी फ़र्रुख़ाबाद फ़तेहगढ़ ज़िला फ़र्रुख़ाबाद

महाराज सिंह वग़ैरह मुद्दई

गंगाप्रसाद वग़ैरह मुद्दाअलेह

बनाम गंगाप्रसाद साकिन

वाज़ेह हो कि मुद्दई ने तुम्हारे नाम एक नालिश बाबत दस्तावेज़ात के दायर की है लिहाज़ा तुमको हुक्म होता है कि तुम बतारीख़ २१ माह अप्रैल सन् १९२८ ई० वक़्त १० बजे बमुक़ाम फ़तेहगढ़ असालतन या मार्फ़त वकील के जो मुक़द्दमा के हालात से क़रार वाक़ई वाक़िफ़ किया गया हो और जो कुल उमूर अहम मुतअल्लिक़ा मुक़द्दमा का जवाब दे सके या जिसके साथ कोई और शख़्स हो कि जवाब ऐसे सवालात का दे सके हाज़िर हो और जवाब दिही दावा की करो ; और हरगाह वही तारीख़ जो तुम्हारी हाज़िरी के लिये मुक़र्रर है वास्ते इनफ़िसाल क़तई मुक़द्दमा के तजवीज़ हुई है पस तुमको लाज़िम है कि उसी रोज़ अपने जुमला गवाहों को जिनकी शहादत पर नीज़ जुमला दस्तावेज़ात जिन पर तुम बताईद अपनी जवाबदिही के इस्तदलाल करना चाहते हो उसी रोज़ पेश करो।

और तुमको इत्तिला दी जाती है कि अगर बरोज़ मज़कूर तुम हाज़िर न होगे तो मुक़द्दमा बग़ैर हाज़िरी तुम्हारे मसमू और फ़ैसल होगा।

बसब्त मेरे दस्तख़त और मुहर अदालत के आज बतारीख़ ३० माह मार्च सन् १९२८ ई० जारी किया गया।

(दस्तख़त) मुंसफ़ी फ़र्रुख़ाबाद

औरों की तरह आप भी लाभ उठाइए !

निःसंतान स्त्रियाँ और हमारा चैलेंज

जिन्हें संतान नहीं होती, उन्हें अब इधर-उधर न भटकना चाहिए। कई वर्ष के अनवरत परिश्रम और खोज (रिसर्च) करने पर यह अमृत-समान ओषधि तैयार हुई है। इसका अद्भुत और रामबाण प्रभाव देखकर लोग चकित हो जाते हैं। जिसके संतान नहीं होती, उसे इसके सेवन से अवश्य संतान होगी। इसकी हम गारंटी करते हैं। गारंटी से इलाज (दोनों का) क़ीमत २५), और जगह आपको, संभव है, सैकड़ों रुपए ख़र्च करने पड़े हों और वे भी व्यर्थ। एक बक्स जिसमें स्त्री के लिये दो मास की दवाई है, क़ीमत ५) डाक ख़र्च माफ़।

मिलने का पता—

डॉक्टर कुशल, बी० ए०

फ़िरोज़पुर, (पंजाब)

(नमूना क़ाबिल फ़रोख़्त)

सम्मन बिनावर इनफ़िसाल मुक़द्दमा

(आर्डर ५ क़ायदा १, ५)

नं० मुक़दमा ६७०, स० १९२७ ब इजलास बाबू हरी शंकर साहब

मुनसिफ़ दर्जा अव्वल एटा।

बअदालत मुनसिफ़ एटा ज़िला अलीगढ़।

मुद्दई बाबू उलफतराय व बाबू तिरबेनीसरन पिसरान मुंशी लछमनदास क़ौम कायस्थ साकिन वाईस कसबा एटा

मुद्दाअले मुसम्मात फतेकुँवर वेबा लाला दर्गवकशि सिंह क़ौम ठाकुर साकिन क़सबा रामपूर हाल मौजूद मौजा कुठार तहसील पोयावन ज़िला शहारनपूर वरमकान राजा फ़तेहसिंह मर्हूम।

मुसम्मात टेककुँवर बेवा लाला तिरलोकीनाथसिंह क़ौम ठाकुर साकिन क़सबा रामपूर हाल मौजूद मौजा विदैही तहसील पुराठी जिला फ़र्रुख़ाबाद डाकख़ाना खास बरमकान ठाकुर टेकसिंह

हरगाह मुद्दैयान ने तुम्हारे नाम एक नालिश की है बाबत रहननामा तादाद २००० रुपए के दायर की है लिहाज़ा तुमको हुक्म होता है कि तुम बतारीख ३० माह अपरैल स० १९२८ वक़्त १० बजे दिन के असालतन या मारफत वकील के जो मुकदमे के हालात से करार वाकई वाकिफ किया गया हो और जो कुल अमूर अहेम मुतालके मुकदमे का जवाब दे सके या जिसके साथ कोई और शख़्स हो कि जवाब ऐसे सवालात का दे सके हाज़िर हो और जवाबदिही दावा की करो। और हरगाह वही तारीख जो तुम्हारे इहज़ार के लिये मुकर्रर है वास्ते इनफिसाल क़तई मुकदमे के तजवीज़ हुई है पस तुमको लाज़िम है कि उसी रोज अपने जुमला गवाहों को जिनकी शहादत पर नीज तमाम दस्तावेज़ात जिन पर तुम अपनी जवाबदिही की ताईद में इस्तदलाल करना चाहते हो उसी रोज़ पेश करो। तुमको इत्तिला दी जाती है कि अगर बरोज़ मज़कूर तुम हाज़िर न होगे तो मुकदमा बग़ैर हाजिरी तुम्हारे मसमू और फैसल होगा ब सब्त मेरे दस्तख़त और मोहर अदालत के आज बतारीख १६ माह अपरैल स० १९२८ जारी किया गया।

मुंसरिम

महताबराय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्त्री और पुरुष के लिये शक्ति की अद्भुत रामबाण गोली

हरक्युलीस-टॉनिक पिल्स

यह गोली नूतन जीवन देनेवाली, धातुपुष्ट करनेवाली और विद्युत्-शक्ति उत्पन्न करनेवाली है। इस औषध के सेवन से मनुष्य घोड़े के समान बलवान् होता है। बुड्ढा जवान बनता है। जवान अपनी खोई हुई शक्ति पाता है और नई ज़िंदगी प्राप्त करता है। स्वप्न और पेशाब में धातु का बहना, छाती का दुखना, शरीर का पीला पड़ना, जठराग्नि का मंद होना इत्यादि सर्व रोग, और स्त्रियों के प्रदर-पांडु और गर्भाशय का दर्द कुछ ही दिनों के सेवन से दूर होता है। शरीर में नया ख़ून, शक्ति, उत्साह और संतानोत्पत्ति की संपूर्ण योग्यता थोड़े ही समय में पैदा होती है।

क़ीमत २४ गोलियों की १ शीशी का २) रुपया डाक-ख़र्च अलग

मिलने का पता—

यादव फ़ार्मेसी जामनगर

(काठियावाड़)

हिंदी की सर्वश्रेष्ठ पत्रिका

में विज्ञापन छपाइए और पूरा लाभ उठाइए। विज्ञापन की दर जानने के लिये आज ही एक कार्ड डाल दीजिए—

मैनेजर सुधा, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सब कठिनाइयाँ दूर हो गईं!!

देश-देशांतर

के

सभी

कला-प्रिय प्रकाशक और व्यापारी

छपाई का काम

हमारे यहाँ क्यों भेजते हैं ?

का काम सुंदर और सस्ता छपता है।

र सब प्रकार की छपाई का काम यहाँ होता है।

ण काम ठीक वक़्त पर दिया जाता है।

काम संतोष-प्रद होने की गैरंटी

सब प्रकार की

हिंदी-अँगरेज़ी छपाई,
रंगीन-तिरंगे चित्र,
सोने की छपाई,
सर्वश्रेष्ठ जिल्द-बँधाई,
चिट्ठी के काग़ज़,
लिफ़ाफ़े, पोस्टकार्ड,
विज़िटिंग कार्ड,
बिल, मिमो, रसीद-बुक,
कैलेंडर, नोटिस,
निमंत्रण-पत्र,
अभिनंदन-पत्र,
पुस्तक आदि—

आपका छोटा-मोटा, सुंदर, सस्ता, किसी प्रकार का भी छपाई का काम कराना हो, तो तुरंत हमारे पास भेजिए।

अब इधर-उधर भटकने की जरूरत नहीं!

मैनेजर— गंगा-फाइन आर्ट-प्रेस,
लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Registered No. A. 1712.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

न्यू फ़ैशन बनारसी साड़ी

सात रुपया में

सस्तेपन का कमाल

लंबाई ५ गज़, चौड़ाई १। गज़

नया आविष्कार, अत्यंत सुंदर, आम-पसंद बनावट, सुशिक्षित गृह-देवियों के बर्तने और उपहार में देने योग्य, टिकाऊ, पक्का रंग, काडी रेशम या ज़री के काम-वाली जिस रंग की दरकार हो मँगाइए !

Rs. 7.

देखने में १००) की साड़ी जँचती है। मशहूर करने की ग़रज़ से लागत से भी कम दाम (Sample Price) केवल ७), डाक-ख़र्च ॥-), व्यापारियों का ज़्यादा तादाद का आर्डर न लिया जायगा। नापसंद होने से पूरे ख़र्च सहित दाम फेरकर वापिस लेने की गारंटी !

पता—स्वदेशी सिल्क साड़ी स्टोर

२५२, बलदेव-बिल्डिंग, झाँसी JHANSI, U. P.

प्रकाशक—श्रीदुलारेलाल मार्गव, अध्यक्ष गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेख-सूची

		पृष्ठ
१.	मानिनी (कविता)—[लेखक, कविवर ठाकुर गोपालशरणसिंह	१२१
२.	प्रस्ताव (कविता)—[लेखक, कविवर श्रीयुत राय कृष्णदास	१२१
३.	मुद्रा—[लेखक, पं० देवव्रत शास्त्री, सह० संपा० "प्रताप"	१२२
४.	जयपुर का ज्योतिषालय (साचित्र)—[लेखक, श्रीयुत श्यामाचरण एम्० एस्-सी०, प्रोफ़ेसर आगरा-कॉलेज	१२७
५.	एकाकी (कहानी)—[लेखक, पं० इलाचंद्र जोशी	१३७
६.	फूल (कविता)—[लेखक, कविवर पं० अयोध्यासिंह उपाध्याय "हरिऔध" ...	१४५
७.	रहस्यवादियों की कुछ विशेषताएँ (पूर्वार्द्ध)—[लेखक, प्रो० अवध उपाध्याय, हिंदी-विद्यापीठ	१४६
८.	अछूत (कविता)—[लेखक, सुकवि श्रीयुत जगन्नाथप्रसाद खत्री "मिलिंद" ...	१५०
९.	संगीत और मनोविज्ञान—[लेखक, पं० भगवन्नारायण भार्गव बी० ए०, मेंबर लेजिसलेटिव काउंसिल	१५१

साहित्य-रत्नाकर

गंग, अकबर, अनन्य, केशव, किशोर, जमाल, जसु, नवनीति, नाथ, बिहारी, बीरबल आदि ३०० कवियों की मनोरंजक काव्य-माला। कवि-परिचय-सहित। सुनहरी जिल्द। पृष्ठ ६००। मूल्य ४॥) रु० डाक-व्यय ॥)

चौरासी आसन (हठयोग)

अवांतर भेद, मंत्र-प्रक्रियादि-युक्त। ९८ चित्रों से अलंकृत सरल विवरण-सहित। मूल्य १॥) रु० डाक-व्यय ।)

मिलने का पता—

कवि कहानजी धर्मसिंह, राजकोट, काठियावाड़

श्वेतकुष्ठ की अद्भुत जड़ी

प्रिय पाठकगण! औरों की भाँति मैं प्रशंसा करना नहीं चाहता। यदि इसके तीन बार के लेप से इस रोग की सफ़ेदी जड़ से आराम न हो, तो दूना मूल्य वापस दूँगा, जो चाहें -) का टिकट भेजकर प्रतिज्ञापत्र लिखा लें। मूल्य ३)

वैद्यराज पं० महावीर पाठक, नं० ३०, दरभंगा।

३६ साल का परीक्षित

भारत-सरकार तथा जर्मन गवर्नमेंट से रजिस्टर्ड

९३,००० एजेंटों द्वारा बिकना दवा की सफलता का सबसे बड़ा प्रमाण है।

विना अनुपान की दवा

यह एक स्वादिष्ट और सुगंधित दवा है, जिसके सेवन करने से कफ़, खाँसी, हैज़ा, दमा, शूल, संग्रहणी, अतिसार, पेट का दर्द, बालकों के हरे-पीले दस्त, इन्फ़्लुएंज़ा इत्यादि रोगों को शर्तिया फ़ायदा होता है। मूल्य ॥) ; डाक-ख़र्च १ से २ तक ।=)

दाद की दवा

विना जलन और तकलीफ़ के दाद को २४ घंटे में आराम दिखानेवाली सिर्फ़ यही एक दवा है। मूल्य फ़ी शीशी ।) ; डाक-ख़र्च १ से २ तक ।=), १२ लेने से २।) में घर बैठे देंगे।

दुबले-पतले और सदैव रोगी रहनेवाले बच्चों को मोटा और तंदुरुस्त बनाना हो, तो इस मीठी दवा को मँगाकर पिलाइए। बच्चे इसे ख़ुशी से पीते हैं। दाम फ़ी शीशी ॥।) ; डाक-ख़र्च ॥)

पूरा हाल जानने के लिये सूचीपत्र मँगाकर देखिए। मुफ़्त मिलेगा।

ये दवाइयाँ सब दवा बेचनेवालों के पास भी मिलती हैं।

सुख-संचारक कंपनी, (सु) मथुरा

CC-0. In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection. Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१०. ज़ेकोस्लोवाकिया और राष्ट्रपति मसारिक—[लेखक, प्रो० चंद्रदत्त शास्त्री, काशी-विद्यापीठ १५४

११. लोल लोचन (कविता)—[लेखक, कविवर पं० जगदंबाप्रसाद मिश्र "हितैषी" ... १५६

१२. रामानुज (उत्तरार्द्ध)—[लेखक, श्रीनलिनीमोहन सान्याल भाषा-तत्त्वरत्न, एम्० ए०... १५७

१३. धन की दुर्दशा (कविता)—[लेखक, कविवर पं० कामताप्रसाद गुरु ... १६०

१४. उद्योग-धंधों में भारतीय स्त्रियों का स्थान—[लेखक, श्रीउमेशप्रसादसिंह बख़्शी बी० ए० और श्रीहरिहरशरणदत्त बी० ए० १६१

१५. ज़मींदार साहब (व्यंग्य-चित्र) ... १६५

१६. बाबर की मृत्यु—[लेखक, श्रीअवधवासी लाला सीताराम बी० ए० ... १६६

१७. चीन में अन्य राष्ट्रों का स्वार्थ—[लेखक, प्रो० चंद्रभाल जौहरी बी० ए०, एम्० आर० ए० एस्०, गुजरात-विद्यापीठ १६८

१८. मीराँबाई—[लेखक, ठाकुर गोपालसिंह राठौड़ मेड़तिया १७१

१९. चिंता (कविता)—[लेखक, कविवर कौशलेंद्र राठौर १७३

२०. मा (उपन्यास)—[लेखक, पं० विश्वंभरनाथ शर्मा कौशिक १७३

प्रकाशित हो गया ! प्रकाशित हो गया !!

हिंदी-संसार में हलचल मचा देनेवाला, उपन्यास, कहानी, कविता और संसार-भर के अनूठे समाचारों का सुंदर और सचित्र, मासिक पत्र

वार्षिक मूल्य ४) छमाही ,, २) एक प्रति का ,, ।=) — उपन्यास कुसुम — पृष्ठ-संख्या १३० चित्र-संख्या २

यदि आप प्रतिमास उपन्यास, छोटे-छोटे हँसी-मज़ाक़ के चुटकुले, संसार-भर के अनूठे समाचार और युग-परिवर्तनकारी धार्मिक कविताएँ पढ़कर आनंद लेना चाहते हों, तो आज ही ४) भेजकर इसके ग्राहक हो जाइए। नमूने के लिये ।=) के टिकट भेजिए।

प्रत्येक शहर में स्थायी और ट्रैवलिंग ऐजेंटों की ज़रूरत है। एजेंसी के नियम बहुत ही सरल हैं, जो मँगाने पर भेजे जाते हैं।

पत्र-व्यवहार का पता—मैनेजर, "उपन्यास-कुसुम"

सिद्धेश्वरी (S), काशी

मोहनी मंत्र

न जोगियों की तलाश में मारे-मारे फिरिए, न स्यानों और भगतों के नख़रे सहिए, न चढ़ावे चढ़ाइए, न टोटके के चिराग़ जलाइए, अगर किसी को अपने वश में करना है, अगर मुक़दमे के जीतने की आरज़ू है, अगर तिजारत में नफ़ा उठाने की तमन्ना है, अगर किसी हाकिम को अपने ऊपर मिहरबान बनाना है, अगर कोई भारी-से-भारी काम करना है, तो जल्द-से-जल्द लौंग पर पढ़ा हुआ मोहनी मंत्र मँगाइए। न खाइए न पिलाइए न लगाइए। जो तर्कीब का पर्चा साथ होगा उस पर अमल कीजिए और दो ही दिन में अपने भारी-से-भारी मक़सद में कामियाब हो जाइए। सैकड़ों मँगा चुके, आज़मा चुके, इसका फल पा चुके। बहुत-से मँगा रहे हैं और फ़ायदा उठा रहे हैं। २॥) भेजिए या वी० पी० से मँगाइए।

मैनेजर जनरल सप्लाई कंपनी

नं० २८ (S), लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पृष्ठ

२१. प्रतीक्षा (सचित्र)—[लेखिका, कुमारी कौशल्यादेवी गोरोवाला ... १८०

२२. "दुखवा मैं कासे कहूँ मोरी सजनी ?" (आलोचना)—[लेखक, श्रीयुत महादेव-प्रसाद त्रिपाठी और आयुर्वेदाचार्य श्रीचतुरसेन शास्त्री १८२

२३. साहित्य की शक्ति—[लेखिका, कुमारी गार्गी जलविद्-स्नातिका १८४

२४. हिंदी-कविता-साहित्य की प्रगति—[लेखक, पं० सूर्यकांत त्रिपाठी "निराला" १८६

२५. पाखंड-परिच्छेद (कविता)—[लेखक, काव्यभूषण पं० मातादीन शुक्ल "सुकवि नरेश" १९१

२६. मेल (व्यंग्य-चित्र) १९३

RAMLAL
DENTIST
27, AMINABAD PARK, LUCKNOW.

All Sorts of Dental Works
ARE EXECUTED PROMPTLY
- AT -
Reasonable Rates.

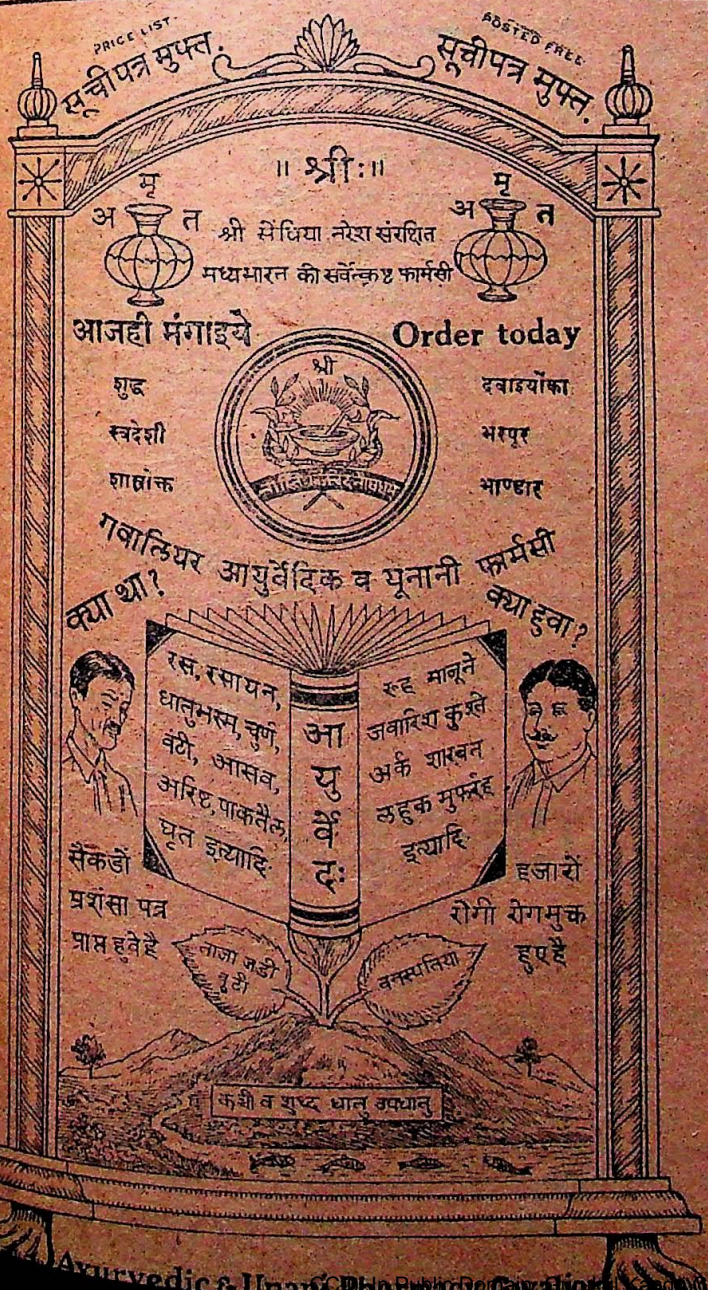

भारत-सरकार से रजिस्टर्ड

"नमक पचलोना"

तंदुरुस्ती के बीमा हाज़मा स्वादिष्ट के लिये आला मसाला है। फ़क़त तजुरबा कर देखिए। मूल्य ६ औंस के बोतल का ॥।) ख़र्च ॥=) तीन बोतल के २॥=) ख़र्च माफ़।

एजेंट चाहिए।

पता—मेसर्स अमृतलहरी ट्रेडिंग कंपनी,
(सु) पो० कुरथा (ज़िला गया)

सूचना

सुधा की तीसरी और छठी संख्या में—सुधा के पाठकों को एक आना डाक-व्यय भेजने पर "प्रेमी" महाशय की ओर से जो मान-विजय और गीता आदि देने की सूचना दी गई थी—तदनुसार वे पुस्तकें सुधा के १७७६ से ६२३१ तक के पाठकों में से जिनके पत्र आए उन सबको यथाक्रम भेज दी गईं। अब वे पुस्तकें नहीं रही हैं। अतः पाठकवर्ग उनके लिये पत्र भेजने का कष्ट न करें।

पाठकों की इस ओर अभिरुचि देखकर अब एक "अद्भुत चित्र" बाँटने का विचार किया है। उस चित्र में १५ नरमुंड और कई एक पशु-पक्षी इस प्रकार छपे हुए हैं जो बड़ी कोशिश करने से मिलते हैं। एक आने का टिकट भेजने पर उक्त चित्र सुधा के पाठकों को प्राप्त होगा। परंतु विना महसूल भेजे नहीं भेजा जायगा। बैरंग भेजने में वापस आ जाने पर उलटे दो आने दंड और होता है, अतः पाठक इसका ध्यान रक्खें।

पता—प्रेमी-महाशय पो० चौमूँ-जैपुर स्टेट

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२७. संगीत-साधना—[शब्दकार, श्रीयुत गोविंदवल्लभ पंत; स्वरकार, श्रीयुत नारायण-मोरेश्वर खरे १९४

२८. कुसुम-कुंज—[लेखकगण, श्रीमदनप्रसाद कपूर बी० ए० ऑनर्स, श्रीमोहनलाल महतो "वियोगी" साहित्यालंकार, श्रीलक्ष्मीनारायण पचीसिया, श्रीकेदारनाथ मिश्र गौड़ "प्रभात", श्रीमथुराप्रसाद, अध्या० ट्रेनिंग स्कूल, श्रीगुरुभक्तसिंह "भक्त" बी० ए०, एल्-एल्० बी०, मेहता लज्जाराम शर्मा और महंत स्वामी हरिनामदास उदासीन १९६

२९. विज्ञान-वैचित्र्य—[लेखकगण, श्रीरमेशप्रसाद बी० एस्-सी०, केमिस्ट, श्रीरामनारायण कायस्थ एम्० एस्-सी०, बी० ए० जी०, एफ़्० सी० एस्० और पं० रामनारायण मिश्र एम्०एस्-सी० २०५

३०. ललित कला—[लेखक, श्रीयुत हनूमान शर्मा २०९

३१. स्त्री-समाज—[लेखकगण, पं० आनंदीप्रसाद मिश्र "निर्द्वंद्व", श्रीगोपीनाथ वर्मा और श्रीबदरीप्रसाद जैन २१५

३२. व्यंग्य-विनोद—[लेखकगण, श्रीविनोदलाल गुप्त, श्रीयुत "रंगी" और "गौरांग-भक्त" २१९

३३. समाज-सुधार—[लेखक, पं० गंगाप्रसाद उपाध्याय एम्० ए० ... ... २२१

३४. साहित्य-सूची २२६

३५. पुस्तक-परीक्षा २२७

३६. संपादकीय सम्मति २३०

सच्चे गोटे-पट्टे की नामी दूकान

हमारे यहाँ हर क़िस्म का गोटा-पट्टा गोखरू सलमा सितारा व सूती व मख़मली कामदार फ़ीते व मख़मली कामदार टोपियाँ, साड़ी, हार हर क़िस्म के तैयार रहते हैं, ज़रदोज़ी व कामदानी का काम हर क़िस्म का आर्डर पर जल्द तैयार हो सकता है।

इसके अलावा चाँदी सोने का ज़ेवर व चाँदी के बर्तन वग़ैरह का भी काम बहुत सुबीते से होता है। एक मर्तबा अवश्य आर्डर भेजकर परीक्षा कीजिए, आपको खुद परीक्षा हो जायगी कि और देसावरों अथवा दूसरी दूकानों से सस्ता व सच्चा काम है या नहीं। इसके अलावा लखनऊ की मशहूर चीज़ें बाज़ार भाव पर भेजी जाती हैं।

जानकीप्रसाद अग्रवाल, गोटा मर्चेंट,
चौक (सु), लखनऊ

मुफ्त

देव-मूर्ति, रास, रामलीला, नाटक आदि के लिये शृंगार, बाल, सामान ड्रेस, परदे, चेहरे और ज़ेवर, सौदागरी सामान, पेटेंट दवाइयों का सचित्र सूचीपत्र।

शृंगार-कार्यालय नं० ५,
विश्रामघाट, मथुरा (यू०पी०)

भारतवर्ष के रजतकिरीटी पर्वत-राज हिमालय ने अपने हृदय से जिस कृष्ण वर्ण अमृत-निधि को जन्म दिया, आयुर्वेद के आचार्यों ने उसका नामकरण किया:—

शिलाजतु [शिलाजीत]

इसके गुणों पर मुग्ध होकर चरक-सुश्रुत आदि प्रधान आचार्य एक स्वर से कहते हैं—
"ऐसा कोई रोग ही नहीं, जो शिलाजीत से अच्छा न हो।"
समस्त भारतीय आयुर्वेद प्रदर्शिनियों, तिब्बी-यूनानी कानफ्रेंसों तथा अनेक देश-विख्यात महानुभावों की मंडली में परीक्षित और सम्मानित।

मूल्य २) रु० तोला

इसके अतिरिक्त प्रत्येक प्रकार की आयुर्वेदोक्त रसादि तथा काष्ठादि औषधियाँ भी प्रस्तुत रहती हैं।

पता—अंबिकादत्तजी पंत हिमालयन स्टोर्स, (सु) रानीखेत, (कुमाऊँ)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चित्र-सूची

पृष्ठ

(क) रंगीन

१. महाराज पृथ्वीराज (चार रंग में)—[श्री-हनूमान शर्मा की कृपा से प्राप्त... ... १२१

२. वन-विहार—[श्रीदुलारेलाल भार्गव के चित्रशाला से १५३

३. राजा दुर्लभराव—[श्रीहनूमान शर्मा की कृपा से प्राप्त १८४

(ख) व्यंग्य

१. ज़मींदार साहब १६५

२. मेल १६३

(ग) सादे

१. महाराज सवाई जयसिंह १३०

२. यंत्रालय का एक संपूर्ण दृश्य १३१

३. राम-यंत्र १३१

भारत गवर्नमेन्ट से रजिस्ट्री किया हुवा
२५ वर्ष का आजमूदा

चन्द्रामृत

बालक वृद्ध, युवा, स्त्री, पुरुषों के शिर से लेकर पैर तक के सब रोगों की अचूक दवा।

मूल्य ॥) ३ सी सी ३) खरचा अलग

पता:-चन्द्रसेन जैन वैद्य-इटावा

सचित्र रत्नाकर-ग्रंथ-माला

चित्रमय-सती-संसार ! सचित्र-बाल-तरुण-साहित्य ।

हिंदी में युगांतर

सर्वांग-सुंदर ! सर्वसुलभ मूल्य !!

हिंदी में सर्वसुलभ और सर्वांगसुंदर सचित्र सती एवं बाल और तरुण साहित्य । बढ़िया छपाई, ऐंटिक पेपर और एक सौ से अधिक नयनाभिराम रंग-बिरंगे चित्र । कन्याओं, बहनों, बालकों और प्रियजनों को उपहार में देने के लिये सर्वश्रेष्ठ । कन्या-विद्यालयों तथा बालक पाठशाला स्कूलों में प्राइज़ तथा लायब्रेरियों के लिये गवर्नमेंट के शिक्षा-विभागों द्वारा स्वीकृत ।

चित्रमय-सती-संसार

१—सावित्री-सत्यवान ॥)	६—शकुंतला ॥=)
२—नल-दमयंती ॥)	७—देवी-द्रौपदी ॥=)
३—शैव्या-हरिश्चंद्र ॥)	८—शर्मिष्ठा-देवयानी ॥)
४—सीता-देवी ॥=)	९—सुभद्रा ॥=)
५—सती-पार्वती ॥)	१०—संयुक्ता ॥=)

सचित्र बाल-तरुण-साहित्य

११—भक्त-ध्रुव ॥=)	१६—पृथ्वीराज १)
१२—भक्त-प्रह्लाद ॥=)	१७—महाराणा प्रताप १)
१३—वीर-अभिमन्यु ॥=)	१८—छत्रपति-शिवाजी १॥)
१४—वीर-लव-कुश ॥=)	१९—श्रीशंकराचार्य १॥)
१५—भीष्म ॥=)	२०—श्रीकृष्ण १॥)

२१—मेवाड़-गौरव । १)

दी पोपुलर ट्रेडिंग कंपनी, ११५, हरीसन रोड, कलकत्ता ।

(पं० राधेश्यामजी की रामायण की तर्ज में)

अमूल्य रत्न महाभारत छप गया

जिसके संपूर्ण २२ भागों के नाम और दाम निम्न प्रकार हैं—

१ भीष्मप्रतिज्ञा)	१२ कुरुओं का गौहरन ।-)
२ पांडवों का जन्म)	१३ पांडवों की सलाह)
३ पांडवों की अस्त्रशि० ।-)	१४ कृष्ण का हस्तिनाग० ।-)
४ पांडवों पर अत्याचार ।-)	१५ युद्ध की तैयारी)
५ द्रौपदी-स्वयंवर)	१६ भीष्म युद्ध ।-)
६ पांडव राज्य)	१७ अभिमन्यु बध ।-)
७ युधिष्ठिर का रा०सू०य०)	१८ जयद्रथ बध ।-)
८ द्रौपदी-चीरहरन)	१९ द्रोण व कर्ण बध ।-)
९ पांडवों का वनवास ।-)	२० दुर्योधन बध ।-)
१० कौरव राज्य ।-)	२१ युधिष्ठिर का अश्व०य०)
११ पांडवों का अज्ञा०वा०)	२२ पांडवों का हिमा०ग०)

पता—

मैनेजर, महाभारत पुस्तकालय

(सु) अजमेर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

	पृष्ठ
४. दिगंश-यंत्र	१३२
५. सम्राट्-यंत्र	१३२
६. नाड़ीवलय-यंत्र	१३३
७. राशिवलय-यंत्र	१३३
८. क्रांतिवृत्त-यंत्र	१३५
९. जयप्रकाश-यंत्र	१३६
१०. एक नव-यौवना बाला, अपने लंबे सुकेशों को पाश-मुक्त कर, मणि-जटित शिला पर विराजमान थी।	१८१
११. बालरूप श्रीगुरु नानकदेवजी ...	२०२
१२. दसो गुरु महाराज	२०३
१३. सर रिचर्ड पेजेट (अपने यंत्र का उपयोग कर रहे हैं)	२०७
१४. टैक्स थार्नटन (एक इंच मोटी ऐस्बेस्टस् की पोशाक पहने हुए)	२०७
१५-१७. नं० १, नं० २ और नं० ३ चित्र ...	२०८
१८. मिस वसुंधराबाई एम्० ए० ...	२१७
१९. विश्व-विजयी पहलवान गामा ...	२३८

रजिस्टर्ड **'कामधेनु'** रजिस्टर्ड

आपके स्वास्थ्य, जीवन और धन की रक्षिका है।

:०:

आरोग्यता के लिये सदा पास रखिए।

कोई बाल-बच्चोंवाला घर इससे ख़ाली न रहना चाहिए। न-जाने कौन समय कष्ट हो जावे। उस समय पूरी रक्षा करेगी।

मूल्य बड़ी शीशी २॥), आधी १), नमूना ॥) में वी० पी० ख़र्चा कारख़ाने से दिया जाता है। विवरण पुस्तक विना मूल्य मँगाइए।

पत्र तथा तार का पता:—

'कामधेनु' (सु), देहली.

घर बैठे **सौ रुपए मासिक** कमाइए

इसमें कोई संदेह नहीं कि आप हकीम तुलसीप्रसाद अग्रवाल की बनाई हुई "तुलसी अनुभवसार" पुस्तक पढ़कर अपनी और दूसरों की प्रत्येक बीमारी का इलाज बड़ी उत्तमता के साथ कर सकते और इससे अनेक रोगों की चमत्कारी औषधियाँ बनाकर बड़ी सुगमता के साथ सैकड़ों रुपया कमा सकते हैं। मूल्य प्रति पुस्तक सजिल्द १) डा० व्य० पृथक्।

बाल-जीवन-बुट्टी

हकीम तुलसीप्रसाद अग्रवाल की भारत-सरकार द्वारा रजिस्ट्री हुई बालकों के बुख़ार, खाँसी, अजीर्ण, दूध डालना, पेट फूलना, दस्त होना आदि प्रत्येक रोग को दूर करने और दुबले पतले बालकों को मोटा ताज़ा बलवान् बनाने के लिये प्रसिद्ध महौषधि है। मीठी होने से बालक इसको प्रसन्न होकर पी लेते हैं। सब जगह सौदागरों के यहाँ मिलती है। मूल्य प्रति शीशी।-) डाक-व्यय ४ शीशी तक ॥) सौदागरों से १२ शीशी अर्थात् एक-दर्जन का मूल्य २॥), १२ दर्जन २४) महसूल अलग।

मुफ्त लो

जो सज्जन दस हिंदी पढ़े प्रतिष्ठित लोगों के नाम पूरे पते सहित लिखकर भेजेंगे उनको "आरोग्यदीपक" पुस्तक मुफ़्त भेजी जावेगी।

बाल-जीवन कार्यालय, नं० १५, अलीगढ़

अनूठे उपहार की अपूर्व लूट

केवल एक मास के लिये १) तोलावाली ॥) तोला में उपहार स्वरूप आधे मूल्य में भेंट करेंगे जो सज्जन पाँच तोले से कमती का आर्डर न भेजेंगे। थोक ख़रीदारों तथा हकीम-वैद्यों को अवश्य ध्यान देना चाहिए।

सत शिलाजीत

पानी समान पतले वीर्य को भी अत्यंत गाढ़ा तथा शुद्ध कर संतानोत्पत्ति के योग्य बनाती है। ४० दिन सेवन करने से हर प्रकार के प्रमेह, स्वप्नदोष, धातुस्राव, धातुपात, धातुनाश, धातुक्षीण अनेक प्रकार के वात बवासीर वग़ैरः को दूर कर अपरिमित बल-वीर्य, ओज और शक्ति बढ़ाने में अद्वितीय है। अत्यंत बाजीकरण है। हज़ारों रोगियों पर अनुभूत है। ग़ज़ब का फ़ायदा करती है। मूल्य ४० दिन की ख़ुराक १ तो० २॥) रु०, १० तो० ५) रु०, २० तो० १०) रु०, ४० तो० २०), ८० तोला ४०) रुपया डाक-ख़र्च पृथक्।

मिलने का पता—

मैनेजर शिलाजीत कंपनी नं० १३,

(सु) कनखल (यू० पी०)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शर्तिया इलाज

हम

जन्म का वंध्यापन—३ खुराक में दूर करते हैं। मूल्य १०)।

बवासीर—ख़ूनी या बादी, ३ सप्ताह में बिलकुल साफ़। मूल्य ५)

शरीर-भर के बाल उम्र-भर के लिये ३ मास में स्याह करते हैं। शरीर की और ख़राबियाँ पहले मास में ही दूर हो जायँगी और शरीर इतना अच्छा हो जायगा कि आप चश्मा तक दूर कर देंगे। मूल्य ३०)

निपट बहरापन की दवाई। मूल्य ५)

आँख के फोले का सुर्मा। मूल्य २)

झूठी बातें बनाना हम पसंद नहीं करते क्योंकि हम दवा का दाम लेते हैं, बातों का नहीं।

मिलने का पता—

संचालक मानसरोवर औषधालय,

(सु) अखनूर, जंबू राज्य, (पंजाब)

बिलकुल मुफ़्त

३ वर्ष बराबर चलनेवाली घड़ियाँ

केशवर्धक हेरआइल निहायत उमदा केशों को काला व बड़ा करनेवाला तैल—मग़ज़ को ठंडा रखता है सुगंध बहुत ही मीठी टिकनेवाली है मूल्य ॥।) ६शीशी पर रास्कोप घड़ी १२ पर रिस्टवाच घड़ी इनाम।

दद्रु विनाशक

दाद, खुजली को २४ घंटे में जड़ से खोनेवाली दवा क़ी० ४ आना १२ डब्बा पर टाइमपीस, २४ पर रास्कोप घड़ी, ३६ पर रिस्टवाच ख़ातिरी के लिये सार्टीफ़िकेट प्राप्त हैंडबिल मँगवा लें।

किंग जॉर्ज कारोनेशन कं०

बंबई नं० ४

कैलास पर्वत पर ५१ वर्ष से तपस्या करनेवाले इन्हीं ऋषि द्वारा यह तांत्रिक कवच प्राप्त हुआ है। इसके धारण करने से हर प्रकार का काम सिद्ध हो जाता है। जैसे रोज़गार में लाभ, मुक़द्दमा में विजय, संतान होना, हर क़िस्म की आफ़त से छूट जाना, इमतहान में पास होना, किसी को वश में करना, इच्छानुसार नौकरी मिलना, हर प्रकार रोग वग़ैरा सब ही अच्छे सुंदर एक तावीज़ में मढ़ा हुआ है। जो काम सिद्ध न होगा उसे स्वप्न में बता देगा और उसके सिद्ध होने का तरीक़ा यह देगा। मूल्य एक तंत्र का २) और तीन का ५॥) इसी के साथ एक विधिपत्र रहता है उसी के अनुसार करने से अगर ऊपर लिखी बातें पूरी न हों तो १०) इनाम देंगे।

पता—जे० पी० साहा ऐंड को० १५५।३

शोभा बाज़ार अपरचितपुर रोड, कलकत्ता।

दो अमूल्य पुस्तकें

(१) **आदर्शगीतांजलि**—देश-भक्ति, धर्म-प्रेम, जातीयता, समाज-सुधार, शुद्धि-संगठन, अछूतोद्धार, ईशप्रार्थना, संकीर्तन आदि विषयों की भजन-पुस्तक, पाँच एकरंगे तिरंगे चित्रों से सुशोभित, मूल्य ॥=); पृष्ठ-संख्या १५०

(२) **वीर क्षत्राणियाँ**—भारतवर्ष की बीस 'वीर क्षत्राणियों' का जीता जागता और फड़कता हुआ जीवन-वृत्तांत, सात एक-रंगे और तिरंगे चित्रों से सुशोभित २०० पृष्ठों की पुस्तक का मूल्य १)

पता—आदर्श पुस्तक-भंडार

नीची बाग, बनारस सिटी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परिणाम में मीठा फल

"हील-एक"

यह प्रभावपूर्ण औषध चर्म-रोगों के लिये संजीवनी है। इस एक ही दवा से सब प्रकार के घाव-वेदना, वात, मोच, गाँठ (गिल्टी), झाईं, मुँहासे, फुंसी, चकत्ते, आग से जलने का घाव, दर्द, खून का बहना आदि सभी तरह के चर्म-रोग व चमड़े पर होनेवाली व्याधियों के लिये "हील-एक" रत्न रूप दवा है।

प्रति डिब्बी ॥=) डा० म० ।=)

तीन डिब्बी १॥।) डा० म० ॥)

कफ खाँसी की दवा

जब सब दवा खाके आराम न हो तो एकबार डॉ० एस्० के० बर्मन की यह दवा खाइए। आज ४४ वर्षों से हज़ारों रोगियों द्वारा परीक्षित होकर दुनिया-भर में अमर नाम पा रही है। एकबार परीक्षा कर देखिए। अवश्य संतुष्ट होंगे।

प्रति शीशी (बड़ी) १) डा० म० ॥)

तीन शीशी (बड़ी) ३॥=) डा० म० ।॥=)

प्रति शीशी (छोटी) ॥=) डा० म० ॥)

तीन शीशी (छोटी) २) डा० म० ॥=)

बहुमूल्य सम्मति

भारत की राष्ट्र पताका

".....श्रीमती सरोजनी नायडू लिखती हैं —

डॉक्टर एस्० के० बर्मन की बनाई सभी ओषधियाँ गुणकारी होती हैं।

इनकी दवाइयों के प्रति मुझे अपना अनुभव व विश्वास प्रकट करने में बड़ी प्रसन्नता होती है।

मुझे यह विश्वास है कि वे अपने उपयोग में देशवासियों द्वारा अवश्य उत्साहित किए जायँगे.....।"

पता—डॉक्टर एस्० के० बर्मन, (विभाग नं० ४६) पोस्ट बक्स नं० ५५४, कलकत्ता।

एजेंटः—लखनऊ (चौक) में डॉक्टर गंगाराम जैतली

CC-0. In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection. eGangotri

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'SANYASI ASHRAM SARGODHA'S

चंद्रावली

रजिस्टर्ड

यह भारत के प्राचीन गौरव की एक स्मारक तथा आश्रम की प्राचीन ऋषियों की मौरूसी संपत्ति है, जो स्त्रियों के भिन्न-भिन्न प्रकार के मासिकधर्म-संबंधी तथा अन्य व्यतिक्रमों से उत्पन्न हुए बंध्यात्व (बाँझपने) को समूल नाश कर देती है। इसका व्यवहार उस उन्नति की आशा की एक शर्तिया झलक दिखाता है, जो भारत के गौरव के दिनों में देशी औषधियों से प्राप्त थी। नीचे लिखे हुए प्रशंसा-पत्रों से हमें आशा है, आप यह मालूम कर सकेंगे कि व्यवहारकर्ताओं को इसका गुण कहाँ तक प्रतीत हुआ है—

डॉ० प्रतापसिंह एम्० बी०, बी०एस्० नौशहरा *Via Khusab, N. W. Ry.* लिखते हैं कि—"जैसा कि आपको मालूम है, मेरे ब्याह के १३ वर्ष बाद तक मेरी स्त्री के मासिकधर्म ठीक नहीं होता था। कभी होता ही न था, और होता भी था, तो असह्य वेदना के साथ। इसी के फल-स्वरूप उसके कोई बच्चा भी नहीं हुआ। इतना अधिक समय हो जाने का मुझे दुःख न था; परंतु सोच था अपने भविष्य के अंधकार का। मेरी स्त्री की बेचैनी की बाबत तो कहना ही व्यर्थ है। ख़ैर, दैव-प्रेषित आपकी चंद्रावली मुझे मिली। पहली बोतल के पीने से ही उसकी मासिकधर्म-संबंधी सभी बीमारियाँ दूर हो गईं, और आश्चर्य तो यह हुआ कि उसके गर्भ के भी लक्षण प्रतीत होने लगे। मैंने इसी सिलसिले में एक बोतल और भी पिलाई, जिससे गर्भ पक्का हो गया।

मैं इसके लिये आपका बड़ा कृतज्ञ हूँ, क्योंकि मैंने अपनी स्त्री की दवा-दारू में कोई बात उठा न रक्खी थी। और, यहाँ तक कि उसके गर्भाशय का ऑपरेशन भी करवाया था। परंतु उससे रत्ती-भर भी फ़ायदा न हुआ। अब तो मैं यही कहता हूँ कि चंद्रावली ने ही मुझे पुत्र-रत्न प्रदान किया है।"

डॉ०ज्ञानसिंह एम्०बी०,बी०एस्० *Incharge Guru Ram Das Hospital* अमृतसर लिखते हैं कि—"सन् १९२४ तक, अर्थात् सन् १९१५ से मेरी शादी के ९ वर्ष बाद, मेरी स्त्री के कोई बच्चा नहीं हुआ। इसका कारण जो हम लोगों को मालूम होता था, मेरी स्त्री की मासिकधर्म की ख़राबी थी। मैंने इसको ठीक करने के लिये अपनी कोई दवा उठा न रक्खी। बाहरी दवाओं का भी ख़ासा प्रयोग किया गया, और यहाँ तक कि लाहौर के सुप्रसिद्ध डॉक्टर कर्नल टेट Col. Godfrey Tate, M. B., Ch. B. (Dub. Univ.), I. M. S., से ऑपरेशन भी करवाया। इससे भी कोई लाभ नहीं हुआ, और दो वर्ष व्यतीत हो गए।

इसी अवसर में आपकी चंद्रावली की प्रशंसा एक मित्र द्वारा मेरे सुनने में आई। मैंने तीन बोतलें मँगाकर सन् १९२३ की अंतिम तिमाही में अपनी स्त्री को इस्तेमाल कराईं। दैव-कृपा से उसी से उसके गर्भ रह गया, और इस समय एक पूर्ण स्वस्थ और सुंदर बालक उत्पन्न हुआ है। मैं चंद्रावली की भूरि-भूरि प्रशंसा करते हुए अपने हताश भाइयों से इसकी सिफ़ारिश करता हूँ।"

[श्रीयुत जे० एस्० बतरा, बैंकर, बखरबार (शाहपुर) से लिखते हैं]

"मेरा प्रथम ब्याह २० वर्ष की अवस्था में, संवत् १९५२ में, हुआ था। मेरी स्त्री ब्याह के उपरांत १९ वर्ष तक जीवित रही। उसके एक बच्चा हुआ था, जो केवल ७ मास तक जीवित रहा। इसके बाद मेरा दूसरा ब्याह संवत् १९६७ में हुआ; लेकिन मेरी यह स्त्री केवल ४ वर्ष तक ही जीवित रहकर संवत् १९७१ में उसका भी प्राणांत हो गया। ४ वर्ष बाद मैंने तीसरी शादी की। इस समय मेरी अवस्था ४४ वर्ष की थी, और मेरी स्त्री युवा होने के साथ ही पूर्णतः स्वस्थ और सुंदर थी। ४ वर्ष आशा करते-करते व्यतीत हो गए, परंतु कोई बच्चा न हुआ। अब मुझे यह शंका हुई कि शायद मेरी स्त्री कोई अंदरूनी मर्ज़ से बीमार है, और तदनुसार हमने उसे दो दाइयों को दिखलाया। अंतिम वर्ष जब भलवाल (*Bhalwal*) के हकीम पंजाबसिंह की दवाइयों से भी कोई लाभ न हुआ, तो हमारी सभी आशाओं पर पानी फिर गया। इसी निराशा की अवस्था में मुझे ख़बर मिली कि आपकी चंद्रावली अनेक स्त्रियों के बाँझपने को नाश कर चुकी है। हमने जहाँ तक जल्दी हो सका, उसकी दो बोतलें ख़रीदीं। मेरी स्त्री एक ही बोतल व्यवहार में लाई थी कि उसके गर्भ रह गया। दूसरी आज भी मेरी अलमारी में उसी तरह रक्षित है। आश्रम के प्रति मेरी तथा मेरी स्त्री की कृतज्ञता का भाव, जिसने चंद्रावली के द्वारा ४१ वर्ष की आयु में पुत्र-रत्न-लाभ कराया है, और फिर भी तीसरी स्त्री से, समझा ही जा सकता है, लिखा नहीं जा सकता।"

मूल्य १ बोतल ५), २ बोतलें ९), तीन बोतलें १३), और ४ बोतलों का दाम १६) है। पैकिंग और वी० पी० ख़र्च अलग। बड़ा सूचीपत्र लिखने पर मुफ़्त भेजा जाता है।

मिलने का पता—संन्यासी आश्रम (S.) Sargodha (India)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुफ्त ! मुफ्त !! मुफ्त !!!

हिंदी की सर्वोत्तम साहित्यि, सामाजिक, सचित्र मासिक पत्रिका

५०० ग्राहकों को

पूरे छ मास तक मुफ्त।

उन ग्राहकों की सेवा में बराबर छ मास तक हिंदी की सर्वोत्तम मासिक पत्रिका सुधा मुफ़्त भेजी जायगी, जो "हरिद्वार के सुविख्यात कार्यालय श्रीवाशिष्ठ डिपो" से नीचे लिखे अनुसार १० तोला "सत्त्व शिलाजीत" एक साथ इसी महीने की आख़िरी तारीख़ तक मँगाने का साहस करेंगे। "सत्त्व शिलाजीत" और "सुधा" मँगाने के लिये आर्डर पत्र सुधा के इस विज्ञापन का हवाला देकर सीधा "श्रीवाशिष्ठ डिपो" हरिद्वार को लिखिए और डाक-व्यय-सहित केवल ६।≡) में घर बैठे १० तोला "सत्त्व शिलाजीत" सेवन करके बल और वीर्य की वृद्धि कीजिए तथा लखनऊ की सर्वोत्तम उच्च कोटि की "श्रीदुलारेलाल भार्गव एवं श्रीरूप-नारायण पांडेय" द्वारा संपादित सुधा छ मास अथवा २० तोला सत्त्व शिलाजीत मँगाकर एक वर्ष बराबर प्रति मास मुफ़्त पढ़कर आनंद उठाइए और साथ ही अपने ज्ञान की उन्नति कीजिए।

"वैद्यक रीति से शुद्ध किया हुआ"

सत्त्व शिलाजीत

सर्व प्रकार के वीर्य-विकार तथा प्रमेह दूर कर शरीर को हृष्ट-पुष्ट तथा बलवान् बनाती है। वैद्यक के चरक सुश्रुतादि ग्रंथों में लिखा है कि शिलाजीत वृद्धावस्था को दूर करने में समर्थ है, छर्दि ८४ प्रकार के वात रोग शरीर में किसी स्थान पर भी दर्द हो, बवासीर, कुष्ठ रोग, मुखरोग, पांडु रोग, उदर रोग, तिल्ली, जिगर, श्वास, खाँसी, क्षय, उन्माद, रक्त दोष, सोज़ा, कफ, कृमि आदि को समूल नष्ट करता है। मूत्रकृच्छ्र, मूत्र-रोग, धातुक्षीणता, नपुंसकता आदि रोगों में अपार गुणदायक है। निर्बलता को दूर कर, शारीरिक बल बढ़ाना, ख़ून साफ़ करना, भूख लगाना, दस्त साफ़ लाना इसके स्वाभाविक गुण हैं। बाल-वृद्ध-युवा स्त्री-पुरुष किसी को किसी समय भी हानिकारक नहीं; स्त्रियों के रजोदोष तथा प्रदर और प्रसूत में भी लाभकारी है।

मूल्य ५ तोला का ५), १० तो० ६), २० तो० १७), ४० तो० ३२) रु० मात्र है; डाक-ख़र्च अलग।

मुफ़्त—१० तोला पर छ मास तक सुधा मुफ़्त, २० तोला मँगाने पर एक वर्ष बराबर सुधा मुफ़्त भेजी जायगी।

नोट—जो सज्जन सुधा के ग्राहक हैं, जिनको 'सुधा' की आवश्यकता नहीं है उनको १० तोला सत्त्व शिलाजीत पर एक सुंदर टिकाऊ जेब-घड़ी इनाम में दी जायगी, २० तोला पर सुनहरी रोल्ड गोल्ड पालिश की फ़ैंसी रिस्टवास (हाथ में बाँधने की घड़ी), ४० तोला पर वेस्टेंडवाच कंपनी की मशहूर दोस्त वाच घड़ी इनाम।

पता—श्रीवाशिष्ठ डिपो नं० १०५, हरिद्वार, यू० पी०

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

५००) पाँच सौ रुपए नक़द इनाम अगर नक़ली हो !

असली ! सचित्र !! प्राचीन !!!

काश्मीरी कोकशास्त्र

श्रीमान् पंडित कोकाजी महामंत्री महाराज काशमीर-रचित, जिसमें पद्मिनी, चित्रिणी, शंखिनी और हस्तिनी चारों प्रकार की स्त्री व पुरुषों की ८४ रंगीन तस्वीरें (फोटो) तथा ८४ आसनों का मनोहर (दिलचस्प) हाल, गर्भ में पुत्र और पुत्री की पहचान, बाँझ स्त्री का इलाज, अपनी स्त्री तथा अपने आपको आयु-भर सुंदर, तंदुरुस्त और जवान बनाए रखना, तमाम क़िस्म की नामर्दियों का इलाज, संतान न होती हो तो ज़रूर हो, स्त्री और पुरुषों की गुप्त बीमारियाँ और उनका इलाज, वशीकरण मंत्र आदि बहुत-सी बातें हमारी असली किताब काश्मीरी कोकशास्त्र में दर्ज हैं, जिनका यहाँ लिखना उचित नहीं। यह वही किताब है, जो १००० रु० ख़र्च करने पर भी नहीं मिल सकती थी। बहुत परिश्रम के साथ हमने इसको संस्कृत से हिंदी में छपवाया है। एक प्रति पुस्तक मँगाकर परीक्षा करें। क़ीमत सिर्फ़ तीन रुपए, अगर असली न हो तो दाम वापिस लो।

मिलने का पता—मैनेजर—असली कोकशास्त्र हाउस,(S.)लुधियाना (पंजाब)

१०००) रुपया माहवार शर्तिया कमा लो !

व्यापार-संग्रह

इस पुस्तक में ५२८ हुनर ऐसे छपे हैं जिनमें से एक भी अपने मतलब का चुन लिया जाय, तो १०००) रुपए महीना कमाए जा सकते हैं। मसलन दंदानसाज़ी, कुश्ते बनाना, बाल उड़ाने का तेल, पाउडर साबुन बाल काले करने का अँगरेज़ी ढंग का ख़िज़ाब, और बाल उमर-भर न पैदा होने का नुसख़ा, मूछ बढ़ाने का तेल, हीरा मूँगे बनाना, शीशा साफ़ करना, पत्थर जोड़ना, मोम-बत्ती, शोरा गंधक के गिलास आतशबाज़ी, हर तरह के साबुन इत्र तेल फुलेल, सब रंगों के कपड़े रँगना, अँगरेज़ी ढंग के खाने डबल रोटी बिस्कुट मिठाई, विलायती पानी, अचार, मुरब्बे, चट-नियाँ तरह-तरह की बीमारियों के इलाज और नुस्ख़े १०८ बीमारियों की एक दवा का नुस्ख़ा, सुरमे दियासलाई बनाना, गुलकंद शर्बत सत तेज़ाब बनाना, सिगरट रबड़ की मुहरें, कपूर रंग, रोशनाई, मृतक दर्शनी अँगूठी, तांबूल बिहार केशर कस्तूरी, पिपरमेंट अर्क कपूर, भीमसेनी कपूर, अगरबत्ती सब प्रकार के सुगंधित तेल व अर्क सोडावाटर बर्फ़ आदि सैकड़ों प्रकार की दस्तकारी सिखाने की तरकीबें और मेस्मरेज़म विद्या की विधि भली भाँति लिखी हैं। इस पुस्तक द्वारा अनेक हुनर प्राप्त कर हज़ारों रुपया पैदा कर सकते हो। ऐसी पुस्तक अभी तक कहीं नहीं छपी है अवश्य मँगाइए। क़ी० ३)

पता—सर्वहितकारक कंपनी (S.) लुधियाना (पंजाब)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बाजे की पेटियां

तबले, डुग्गी वग़ैरह गाने-बजाने और नाटक का सामान आला दर्जे का हमारे यहाँ से मँगवाइए !

विशेष जानकारी के लिये नया कैटलॉग (सूचीपत्र) मुफ़्त मँगवाइए ।

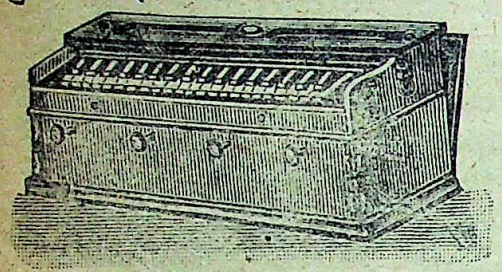

हिंदी हार्मोनियम गाइड

अर्थात् हार्मोनियम आसानी से सिखलानेवाली पुस्तक ! इस पुस्तक में स्वर-व्यवस्था, ताल का स्वरूप, प्रचलित ३६ रागों के लक्षण, स्वरूप और विस्तार आदि जानकारी के साथ, उन रागों की प्रसिद्ध चीज़ों (गायनों) का सशास्त्र नोटेशन भी दिया गया है। पृष्ठ-संख्या २००; क़ीमत १॥); डाक-महसूल ।=) आना

पता:—गोपाल सखाराम ऐंड कंपनी,
बिट्ठलबाड़ी के सामने, कालबादेवी रोड, बंबई नं० २

प्रत्येक पढ़े लिखे मनुष्य के लिये ज़रूरी चीज़
कार्यालयों में हर समय काम आनेवाली

१२ रबर की मोहरें

केवल एक रुपए में

"हेल्पर"

इस बक्स में नीचे लिखी १२ मोहरें हैं, मूल्य १)

REGISTERED. ORIGINAL. COPIED. RECEIVED. BOOK POST. URGENT. REPLIED. STAMPED. CANCELLED. PAID. DUPLICATE. REFUSED.

'सपोर्टर'

इस बक्स में नीचे लिखी १२ मोहरें हैं, मूल्य १॥)
दोनों बक्स एक साथ मँगाने से केवल २) रुपए में

INCHARGE. MANAGER. HEAD CLERK. SECRETARY. ACCOUNTANT. PROPRIETOR. PRESIDENT CASHIER. GENERAL MANAGER. AGENT. DESPATCHER. MANAGING PROPRIETOR.

बड़ा सूचीपत्र मँगाने से मुफ़्त भेजा जाता है।

सुंदर अक्षरों में अपने नाम और पूरे पते की मोहर केवल १) रुपए में बनाई जाती है।

पता—जैन ब्रादर्स ऐंड कंपनी,
रबर स्टांप मेकर्स, इंग्रेवर्स,
मुरादाबाद यू० पी०

सरदार-कंपनी

एजेंट ग्रामोफ़ोन-कंपनी लि०

३१, अमीनाबाद-पार्क

लखनऊ

सूचीपत्र मुफ़्त मँगाइए

CC-0. In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection. Varanasi.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिंदी

लोकोक्ति कोष

मूल्य ३॥), सुनहरी रेशमी जिल्द ४)

[संग्रहकर्ता—बाबू विश्वंभरनाथ खत्री]

हिंदी-साहित्य के महारथी पं० महावीरप्रसादजी द्विवेदी लिखते हैं—लोकोक्ति कोष को देखकर चित्त बहुत प्रसन्न हुआ। उसका विषय और उसमें सन्निविष्ट सामग्री भी विशेष उपादेय और मनोरंजक है। पुस्तक साहित्य के सभी प्रेमियों, अध्यापकों और वक्ताओं के काम की है।

रायबहादुर बाबू जगन्नाथप्रसादजी (भानुकवि)—❀ ❀ ❀ यथार्थ में यह एक अपूर्व संग्रह है और हिंदी-भाषा में एक बड़े भारी अभाव की पूर्ति करता है। आपका उद्योग परम प्रशंसनीय है।

पं० जगन्नाथप्रसादजी चतुर्वेदी—हिंदी की प्रचलित कहावतों के सिवा संस्कृत, फ़ारसी, मारवाड़ी, पंजाबी, पूर्वी, भोजपुरी आदि भाषाओं और बोलियों की प्रसिद्ध-प्रसिद्ध कहावतों का संग्रह बड़ी खोज-ढूँढ़ के साथ किया है। अर्थ के साथ कहावतों से संबंध रखनेवाली कहानियाँ और कविताएँ भी हैं, जिनसे अर्थ और प्रयोग जानने में बड़ी सुगमता हो गई है। सचमुच यह कोष बड़े काम का हुआ है।

पं० रामदहिन मिश्र काव्यतीर्थ—❀ ❀ ❀ आपने लोकोक्तियों के विषय में यथावश्यक सभी ज्ञातव्य विषयों का सुचारु रूप से समावेश कर दिया है।

माधुरी—❀ ❀ ❀ भाषा के वैभव में लोकोक्तियों का शृंगार बड़ा ही सुंदर होता है। उन लोकोक्तियों को ढूँढ़-ढूँढ़कर एक स्थान में जमा करना और फिर अकारादि क्रम से, इस ढंग से सजाना कि जिसको चाहें, सहज में ढूँढ़ लें, बड़ा ही मार्के का काम है। आधुनिक हिंदी-साहित्य में हम इस पुस्तक का सादर स्वागत करते हैं। आशा है, प्रत्येक हिंदी-प्रेमी इसे अपनाकर प्रकाशक का उत्साह बढ़ावेंगे। ❀ ❀ ❀

रायसाहब बाबू श्यामसुंदरदास बी० ए०—❀ ❀ ❀ लोकोक्तियों से अपने पूर्वजों के अनुभव, ज्ञान और चोज-भरे वचनों का ही परिचय नहीं होता, बरन् इनके प्रयोग से भाषा में एक प्रकार का लालित्य और चमत्कार आ जाता है, जो उसे मनोमुग्धकारी बना देता है। इसलिये लोकोक्तियों का संग्रह करना मानो पूर्वजों के ज्ञान और अनुभव के भंडार को संचित और रक्षित करना है।

सरस्वती—संकलन-कर्ता ने अपनी पुस्तक को विशेष उपादेय बनाने में यथाशक्ति कोई कसर नहीं की।

कवि-विनोद

अर्थात् हिंदी-कवियों के अनूठे चुटकुले

(संग्रहकर्ता और संपादक—बाबू विश्वंभरनाथ खत्री)

इस पुस्तक में हिंदी-भाषा के प्राचीन कवियों की विभिन्न अवसरों पर बनाई हुई उक्तियाँ हैं, जिससे विनोद के साथ-साथ अनेकों प्रकार की सुशिक्षाएँ मिलती हैं, कवियों की अनोखी सूझ का पता चलता है, उनके प्रत्युत्पन्न-मतित्व का ज्ञान प्राप्त होता है। आसन्न भूत काल के राजे-महाराजों की उदारता, साहित्य-रसिकता और आमोद-प्रियता का वृत्तांत पढ़कर हृदय गद्गद हो जाता है। इन सभी विषयों का सुरुचिकर वर्णन ऐसी सरल और सुबोध भाषा में किया गया है, जिसे आबाल-वृद्ध-वनिता सभी सहज में ही समझ सकते हैं। ऐसी उपादेय और बालक-बालिकाओं के लिये शिक्षा-प्रद पुस्तक अब तक हिंदी-भाषा में कहीं भी प्रकाशित नहीं हुई थी। मूल्य ॥-) ; सुनहरी रेशमी जिल्द १)

मिलने का पता—गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय, लखनऊ

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्त्रियोपयोगी सुंदर, सचित्र और सरल पुस्तकें

यदि आप संसार
का
सच्चा सुख
लूटना चाहते हैं
तो
अपनी गृह-देवियों
को
अवश्य उचित
शिक्षा दें और
सरल, सुंदर साहित्य की
ये
उपयोगी पुस्तकें
उन्हें पढ़ने को दें।

महिला मालाकी मनोहर मणियाँ

भारत की विदुषी नारियाँ	मूल्य ॥)
नारी-उपदेश	मूल्य ॥)
वनिता-विलास	मूल्य ॥।)
जच्चा	मूल्य ॥।=)
पत्रांजलि	मूल्य ॥)
गुप्त संदेश	मूल्य १=)
महिला-मोद	मूल्य ॥)
भारतीय स्त्रियाँ	मूल्य १॥।)
लक्ष्मी	मूल्य ॥=)
देवी पार्वती	मूल्य १)
देवी द्रौपदी	मूल्य ॥)
कमला-कुसुम	मूल्य १)

मिलने का पता—**गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय, लखनऊ**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बाल-विनोद-वाटिका के सुंदर सुमन

इतिहास की कहानियाँ मू० ॥=)

कीड़े-मकोड़े मू० ॥=)

खिलवाड़ मू० ।)

खेल-पचीसी मू० ।

गधे की कहानी मू० ॥।)

नटखट पाँड़े मू० १॥)

परोपकारी हातिम मू० १।)

भारत के सपूत मू० ॥=)

भगिनी-भूषण मू० =)

सुघड़ चमेली मू० =)

लड़कियों का खेल मू० ॥)

बालनीति-कथा दो भाग मू० २॥)

गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लीजिए ! शीघ्रता कीजिए !! अवसर न चूकिए !!!

सुधा के ग्राहकों के लिये अपूर्व अवसर

केवल एक मास के लिये ! ४) की पुस्तकें ३) में लीजिए ! डाक-खर्च बिलकुल माफ़ केवल एक मास के लिये !!

जो साहित्य-सेवी अभी सुधा के ग्राहक नहीं बने हैं, वह शीघ्र पहली संख्या से ग्राहक बनकर इस अपूर्व उपहार से लाभ उठाएँ। ग्राहक एक से अधिक भी सेट मँगा सकते हैं।

(१)

द्विजेंद्रलाल राय =)
भवभूति (समालोचनात्मक) ॥=)
अकालियों का आदर्श-सत्याग्रह ॥)
असहयोग-दर्शन १)
भारत-सम्राट् (नाटक) १)
मध्यम व्यायोग (महाकवि भास-कृत नाटक का हिंदी-अनुवाद) =)
देश-हितैषी श्रीकृष्ण -)
४)

(२)

हिंदोस्तान का राष्ट्रीय झंडा १)
देव और बिहारी (आलोचनात्मक) १॥)
स्वतंत्रता की झंकार ॥)
उषा (काव्य) ॥=)
मध्यम व्यायोग (महाकवि भास-कृत नाटक का हिंदी-अनुवाद) =)
४)

(३)

असहयोग का इतिहास (राष्ट्रीय) ॥)
विचित्र वीर (जीवनी) १)
सुधार-रहस्य (ऐतिहासिक) ॥)
भूकंप (वैज्ञानिक) १)
एशिया में प्रभात (नवयुवकोपयोगी) ॥)
देवी द्रौपदी (उपाख्यान) ॥)
कर्म-योग (योग-संबंधी) ॥)
४)

(४)

भारत को स्वाधीनता का संदेश (नवयुवकोपयोगी) १)
कर्बला (प्रेमचंद) १॥)
भारतीय किसान =)॥
किसानों का अधिकार ।)॥
वरमाला (नाटक) ॥।)
४)

(५)

संसार-व्यापी असहयोग ॥=)
वीर-पुष्पांजलि ।)
सर्वदेशी वैद्य १)
भारतीय स्त्रियाँ १॥।)
मध्यम व्यायोग =)
४)

(६

नवीन उत्तम व्यवसाय १)
पवित्र पापी (उपन्यास) ३)
४)

(७)

असहयोग (नवयुवकोपयोगी) ॥=)
गांधी-दर्शन (जीवन-चरित्र) १)
श्रीमद्भगवद्गीता ॥।)
विजया (उपन्यास) १॥)
मध्यम व्यायोग (नाटक) =)
४)

(८)

स्वदेशी और स्वराज्य ।=)
ध्रुव तारा =)
दानवी लीला (जासूसी उपन्यास) १)
देश-हितैषी श्रीकृष्ण -)
कीड़े-मकोड़े (बालकोपयोगी) ॥=)
देवी पार्वती (उपाख्यान) १)
कर्म-योग (योग-संबंधी) ॥)
४)

(९)

शर्मिष्ठा (उपाख्यान) ॥=)
उत्सर्ग (नवयुवकोपयोगी) ॥।)
खेल-पचीसी (बालकोपयोगी) ।=)
सिंधबाद जहाजी (,,) ।=)
जयद्रथवध नाटक ॥=)
कमला-कुसुम (स्त्रियोपयोगी उपन्यास) १)
४)

(१०)

क़िस्सा अलादीन =)
लार्ड किचनर १)
प्रभु-भक्ति ॥)
देश-हितैषी श्रीकृष्ण -)
चित्रशाला (कौशिकजी की कहानियों का संग्रह) १॥)
ईश्वरीय न्याय (बा० रामदास गौड़-कृत प्रहसन) ॥)
४)

(११)

गांधीजी का बयान ॥)
श्रीमद्भगवद्गीता-सिद्धांत १)
वस्त्र-कला १)
दुर्गावती (नाटक) १)
सम्राट् चंद्रगुप्त (जीवनी) १)
देवी पार्वती (उपाख्यान) १)
४)

मिलने का पता—संचालक गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्मन वास्ते क़रारदाद अमूर तनक़ीह तलब नंबर मुक़दमा ३७६ सन् १६२७

अदालत मुंसिफ़ साहब बहादुर बस्ती ज़िला बस्ती श्रीराजा लपत प्रतापसिंह मुद्दई साकिन तिरकठा तपा चितरो परगना बस्ती पूरब मुंसिफ़ी बस्ती मुद्दई बनाम उमरावशाह साकिन तकिया तपा हवेली परगना बस्ती पूरब व चिराग़अली साकिन क़स्बा बस्ती ख़ास तपा हवेली परगना बस्ती।

हरगाह कि मुद्दई ने तुम्हारे नाम एक नालिश बाबत इसतक़रार के दायर की है लिहाज़ा तुमको हुक्म होता है कि तुम बतारीख़ ६ मार्च सन् १६२८ समय १०½ बजे दिन के असालतन या मारफ़त वकील के जो मुक़दमे के हालात से क़रार वाक़ई वाक़िफ़ किया गया हो और कुल अमूरात अहम मुताल्लिक़ा मुक़दमा का जवाब दे सके या जिसके साथ कोई और आदमी हो कि जवाब ऐसे सवालात का दे सके हाज़िर हो और जवाबदिही दावा की करो और तुम को लाज़िम है कि उसी रोज़ जुमला दस्तावेज़ात पेश करो जिन पर तुम बताईद अपनी जवाबदिही के इस्तदलाल करना चाहते हो।

तुमको इत्तिला दी जाती है कि अगर बरोज़ मज़कूर तुम हाज़िर न होगे तो मुक़दमा बग़ैर हाज़िरी मस्मूअ और फ़ैसल होगा।

यह सबत मेरे दस्तख़त और मुहर अदालत के आज बतारीख़ ८ माह फ़रवरी जारी किया गया है।

बअदालत जनाब हवाली मुंसिफ़ साहब बहादुर फ़ैज़ाबाद मुक़ाम फ़ैज़ाबाद

मुक़दमा नं० १६१ सन् १६२७

भगवानदीन नाबालिग़ बलायद उज़रदार

सीतल पनवारी वल्द प्राग पनवारी डिग्रीदार (१) बनाम सीतल पनवारी वल्द प्राग पनवारी साकिन मौज़ा धौरेरा कालीचरन— ज़िला फ़ैज़ाबाद।

(२) पाटन वल्द सज्जूसिंह साकिन मौज़ा चिरोई परगना खड़ाला तहसील मनकापूर ज़िला फ़ैज़ाबाद।

हरगाह मुस्मा उज़रदार ने दरख़्वास्त इस अदालत में गुज़रानी है कि दरख़्वास्त मुशतहरी...दी है लिहाज़ा तुमको इत्तिला दी जाती है कि तुम असालतन या मार्फ़त किसी वकील के जो हालात मुक़दमा से बख़ूबी वाक़िफ़ हो १० बजे बतारीख़ ३ माह मार्च सन् १६२८ इस अदालत में हाज़िर होकर दरख़्वास्त के ख़िलाफ़ वजह दिखलाओ। अगर ऐसा न करोगे तो दरख़्वास्त मज़कूर तुम्हारी ग़ैरहाज़िरी में समाअत की जावेगी।

बतारीख़ ४ माह फ़रवरी सन् १६२८ मेरे दस्तख़त और मुहर अदालत से जारी किया गया।

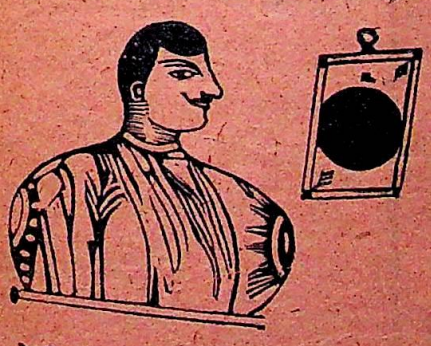

त्रिकाल दर्शी-मैस्मरेज़ी आइना यह आइना हिंदुस्तान के मैस्मरेज़रों के दिमाग़ का निचोड़ है, जिसे हर शख़्स विना क़ैद उमर देख सकता है। इसके ज़रिए ग़ायब और गुमशुदा का पता, बीमार के सेहतयाब होने व न होने का हाल, आनेवाले और गुज़रे हुए हालात, किसी मुश्किल का हल होना या न होना, मरे हुए दरवेशों और शहीदों, अज़ीज़ों व दोस्तों की रूहों से मुलाक़ात हो सकती है। जिसे कभी न देखा हो उसे आइना में देख सकेंगे। ग़रज़े कि यह आइना अपने असर से सब कुछ बता सकता है। क़ीमत मय परचा तरकीब बड़ा साइज़ २।≡), डाक-ख़र्च-सहित।

गृह-लक्ष्मी हैंड ऐंब्रायडरी मशीन

कसीदा काढ़ने की मशीन—इस मशीन से स्त्री, पुरुष, बाल-वृद्ध रूमाल, साड़ियाँ टोपियाँ, शाल, आसन, स्लीपर और परदे व हर प्रकार के कपड़े पर चिकन और कसीदाकारी का व भाँति-भति के रंग-बिरंगे फूल, पत्ते, बेल, बूटे, अक्षर और मोर, तोते, मृग, हस्ती, सिंह आदि बनाने का घंटों का काम मिनटों में कर लेती हैं। क़ीमत रिआयती असल मैशीन ४) व दर्जा दोम नक़ली २।), सचित्र विधि-पुस्तक मुफ़्त। हर रंग के रेशमी लच्छे फ़ी दर्जन १।≡), घटिया मेल दाम १।)

पता—लक्ष्मणदास आहूजा ऐंड संस, आहूजा बिल्डिंग्स S. L. 2 ब्रांडर्थ रोड लाहौर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रोग शत्रु पर विजय का डंका

हिन्दुस्तान और विदेशों की रिपोर्ट से साबित

सरकार से रजिस्टर्ड

पीयूषसिन्धु

कफ, खांसी, हैज़ा, दमा पोंचश, पेटदर्द, नज़ला बुख़ार, बालकोंके हरे पीले दस्त, आदि रोगों की स्वादिष्ट और बिना अनोपान की अचूक दवा है। क़ीमत फ़ी शीशी ॥) आठ आ. वी. पी. ख़रच एक से ३ तक ।≈) आना १२ शीशी का दाम सिर्फ़ ४≡) चार रु. तीन आना डांक ख़रच माफ़

हाय! खुजाते खुजाते मर चले

तो हम क्या करें हमने तो पहिले ही कहा था कि दादपर 'दादका काल' लगादो वरना रोओगे।

दाद का काल

पुरानेसे पुराने व कठिनसे कठिन दादको बिना किसी कष्ट व जलन के २४ घंटे में जड़से खोने वाली मशहूर दवा है क़ी. फ़ी शी. ।) ख़र्च १से३ तक ।≈) १२ शी.का मू. १॥–) ख़र्च माफ़

पता ☛ सुन्दर शृङ्गार महौषधालय मथुरा।

मुफ़ ! मुफ़ !! मुफ़ !!!

कोढ़ और श्वेत कुष्ठ

को

जड़ से दूर करने के लिये

हमारी पुस्तक मुफ़ मँगाकर पढ़िए।

मिलने का पता—

Great Bengal Pharmacy,

Mihijam, E. I. R.

लिक्सिन

(LEXIN)

साँप-काटे की दवा

मूल्य १), दर्जन १०॥)

मिलने का पता—

P. Banerji, Mihijam.

हर किस्म की बढ़िया रबरकी मुहर

ऐसी २॥) रु. सूची मुफ्त

जी. सी. खत्री, रबर स्टाम्प, काशी

सीधी लाइन की सादी मुहर (केवल अक्षरों की २ लाइनें, २ इंच लंबी, और आधा इंच चौड़ी तक) छापने का सामान-सहित। मूल्य १), डाक-ख़र्च ।≡); बड़ी होने से दाम अधिक होगा। हिंदी, अँगरेज़ी, उर्दू तथा बँगला, कोई भाषा हो। अंडाकार मुहर, जैसा ऊपर नमूना है, २॥) मय सामान। डाक-ख़र्च एक मुहर ।≡), दो का ॥) और तीन का ॥≡); काम देखकर ख़ुश होंगे।

पता—जी० सी० खत्री,

रबर-स्टांप-मेकर

(सु) बनारस (सिटी)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

केवल ५) में

H. M. D. का डिप्लोमा

परीक्षा की आवश्यकता नहीं

एक आना टिकट भेजकर नियमावली मँगाएँ।

पता—प्रिंसिपल, ढाका मेडिकल कालेज

(रजिस्टर्ड)

८८, रसलामपुर रोड, ढाका

केवल ५) में

L. C. P. S. का डिप्लोमा

एक आना टिकट भेजकर नियमावली मँगाएँ

पता—सेक्रेटरी, कालेज आफ़् फिज़िसियंस ऐंड

डाक्टर्स आफ़् कलकत्ता (रजिस्टर्ड)

c/o सुधा कार्यालय लखनऊ

फ़ैंसी कटार

स्टील का लोहा

हरएक मनुष्य को इस समय अपनी रक्षा के हितार्थ रखनी चाहिए। कटार खटकेदार का म्यान मख़मल का है। पेटी का दाम १॥), गुप्ती का दाम ४) रु०, कटार स्टीप के मूठ की लंबाई इंच ११ का ३॥) रु०, कटार सादा निकिल की मूठ की लंबाई इंच १५ का ३), इंच १२ का २॥), इंच ९ का १॥) रु०; डा० ख़र्च ॥), १) रु० का टिकट लिफ़ाफ़ा में भेजिएगा।

बिजली की (तांत्रिक) अँगूठी

सुनहरी जालीदार पहनने से रोग व दरिद्रनाश शरीर हृष्ट-पुष्ट होकर लक्ष्मी आगमन व वशीकरण व दिल की कमज़ोरी व बवासीरवालों को फ़ायदा होता है। दाम ३ का ॥), ८ का १॥), १४ का २॥); ख़र्चा ।=)

पता—जे० डी० मूँदड़ा बी ७, मथुरा

फ़ोटो उतारने का कैमरा

अद्भुत कैमरा। नया विलायती आविष्कार। निहायत उम्दा, हूबहू तसवीर उतरती है। अपने ढंग का सबसे बढ़िया। काले चमड़े से मढ़ा हुआ। Meniscus-लेंस सहित। क्षण-भर में ३½ × २½ इंच की बढ़िया फ़ोटो उतारने की गारंटी। काम लेने में बिलकुल आसान। आप ख़ुद सब काम कर लेंगे। ड्राइ प्लेट से कोई भी शख़्स इसे इस्तेमाल कर सकता है। सब हिदायतों सहित ४½ इंच लंबे कैमरे की असली क़ीमत ६), घटाई हुई ३)

पता—

The Simplex Novelty House,

Post Box No. 142,

(S) Madras.

हिंदी-साहित्य में एक महत्त्व-पूर्ण नई पुस्तक

भाषा-विज्ञान

लेखक

कलकत्ता-विश्वविद्यालय के हिंदी भाषा तथा साहित्य के अध्यापक और बंगाल-प्रांत के विद्यालयों के भूतपूर्व परिदर्शक

श्रीयुक्त नलिनीमोहन सान्याल, "मोहन"

भाषा-तत्त्व-रत्न, एम्० ए०

इस मौलिक ग्रंथ में योरपीय तथा भारतीय दोनों मतों का उपयोग किया गया है। पुस्तक पढ़ने से भिन्न-भिन्न भाषाओं के स्वरूप तथा संबंध का ज्ञान होता है। इसमें भाषा की उत्पत्ति, लक्षण, परिवर्तन, विकास, ध्वनि तथा शब्दार्थ तत्त्व इत्यादि की आलोचना है।

मूल्य कपड़े की जिल्द ३)

काग़ज़ की जिल्द २॥)

प्राप्ति-स्थान

गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक हज़ार पौंड इनाम !

यदि कोई विज्ञापनदाता अपने "कोकशास्त्र कशमीरी" को स्वर्गवासी श्रीपंडित कोकाजी महामंत्री महाराजा कशमीर-रचित असली साबित कर दें। अन्यथा किसी पत्र-संपादक अथवा बैंक में १५ हज़ार तो नहीं, केवल १०० जमा करा दें। हम अपनी पुस्तक को असली साबित करते हैं।

सचित्र ! [श्रीमान् कोका पंडित-रचित का हिंदी-अनुवाद] पुराना !!!

(असली कशमीरी कामशास्त्र अर्थात् कोकशास्त्र)

कशमीरी कोकसर्वस्व

पद्मिनी, चित्रिणी, शंखिनी, हस्तिनी, और शशक, वृषभ, मृग, अश्व

इन चारों प्रकार की स्त्री तथा पुरुषों की पहिचान। उनका वर्णन, स्त्री को आयु-भर स्वस्थ, सुंदर, सौंदर्य अर्थात् हुस्नो इश्क़ की देवी बनाए रहना। मनचाही सुंदर बलिष्ठ संतान उत्पन्न करना, गर्भ में पुत्र-पुत्री की पहिचान। स्त्री-पुरुष के जोड़े-जोड़ी का मिलान। संतान उत्पन्न न होती हो तो ज़रूर हो। स्वयं पूरे सौ वर्ष तक हृष्ट-पुष्ट सुंदर और स्वस्थ बने रहना। कुमारी-भेद और लक्षण-प्रेम-प्रीति स्त्री-पुरुष का पारस्परिक संबंध स्त्रियों का रजोदर्शन, ऋतु और उसका सामयिक प्रभाव, सहवास-विलासियों के लिये सहवास के नियम। गर्भाधान*चौरासी आसन*गर्भ-परीक्षा, गर्भोत्पत्ति, गर्भ-वृद्धि, प्रसव और शिशुपालन, स्त्रियों के शृंगार, उनके संबंध में समस्त यौवन-वर्द्धक, आनंद-दायक मसाले। स्त्री-पुरुषों के कोकशास्त्र-संबंधी गुप्त रोग और उनका अद्भुत इलाज। कामोपदायक औषधियाँ तथा मसाले। वशीकरण, स्त्री-पुरुषों की चौरासी रंग-बिरंगी तसवीरें, तथा आसनों के दिलचस्प हाल दर्ज हैं। क़ीमत केवल ३)

पता—श्रीगोकुलपुरी भवन, नं० १२, लुधियाना (पंजाब)

मुफ़्त ! मुफ़्त !! मुफ़्त !!!

कैलेंडर सन् १९२८ का मुफ़्त

निहायत ख़ूबसूरत रंगीन कैलेंडर। दो आने का टिकट डाक रजिस्ट्री ख़र्च के लिये भेजकर मुफ़्त मँगाइए।

आयुर्वेदिक, होम्योपैथिक, हिकमत, दंत रचना की वार्षिक परीक्षाएँ २५ फ़रवरी से २५ मार्च सन् १९२८ ई० तक होंगी। परीक्षा देनेवाले शीघ्र प्रविष्ट हो जाएँ।

पूरा विवरण जानने के लिये एक आने का टिकट भेजें। चिकित्सा बक्स मुफ़्त मिलेगा।

प्रिंसिपल,

दी प्रिंस होम्यो ट्रेनिंग कॉलेज

(गवर्नमेंट रजिस्टर्ड नं० १५६)

(सु) मेरठ

भारत का आदि और सर्वश्रेष्ठ

हारमोनियम मोहन फ्लूट

पेरिस-केस रियल रीड युक्त सिंगल ३५), ४०) डबल ६०), ६५), पेशगी ५) के साथ आर्डर भेजिए।

पता—पाल ऐंड संस

९।१।२ अरपुली लेन (सु) कलकत्ता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

डायमण्ड पर्ल्स बिजली की रिस्टवाच

(गारंटी ६ वर्ष)

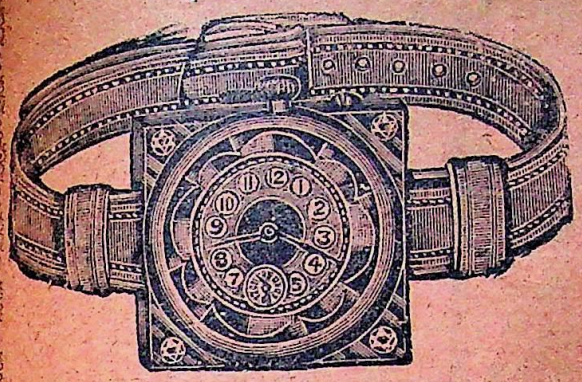

इस बेश क़ीमती घड़ी को बनाकर स्वीज़र लैंड के कारीगरों ने कमाल कर दिया है। इस में बिजली का पावर लगाया है बिना उजाले के घोर अँधेरे में भी बिजली अपनी चमक से ठीक समय बताती है। घड़ियाँ थोड़ी ही आई हैं, जल्दी कीजिए मूल्य ८॥), १०॥) रेलवे रेगूलेटर ३॥=), रास्कोप ३॥), पाकेट वाच ४॥)

पता—दी नरौली ट्रेडिंग कंपनी पो० हाटखोला कलकत्ता।

स्वीट्ज़रलैंड की पाकेटवाच

सिर्फ़ २॥) रुपए में हाथों हाथ लुट गई।

थोक ख़रीदार अब तीसरे चालान का इंतज़ार करें; क्योंकि एक या दो दर्जन से अधिक किसी ख़रीदार को न दी जाएँगी। हाँ, जिन व्यापारियों का आर्डर अभी से आएगा, उन्हें माल आने पर सबसे पहले भेजा जायगा। ख़ुदरा ख़रीदार जल्दी करें, नहीं तो फिर तीसरे चालान का इंतज़ार करना पड़ेगा। एक घड़ी से ३ घड़ी तक डाक-ख़र्च ।=) आना है। गारंटी ५ वर्ष। समय की इतनी सच्ची है कि मजाल नहीं कि एक मिनट का फ़र्क़ पड़े, कल-पुर्ज़े इतने मज़बूत हैं कि दामी-दामी घड़ियों को भी मात करती है। दर्जन का आर्डर १०) रु० पेशगी मनीआर्डर आने से भेजा जायगा।

CHADDHA WATCH AGENCY,

पता—चड्ढा वाच एजेंसी,

पोस्ट बॉक्स नं० ११४४४, कलकत्ता।

दुश्मन, दग़ाबाज़, चोर और हिंसक जानवरों से बचाव करने का बढ़िया साधक

'एयर' पिस्तौल

लैसंस (परवाने) की ज़रूरत नहीं। क़ीमत सिर्फ़ ४) रुपए। ४० गोलियाँ साथ। वी० पी० ख़र्च ६ आने अलग। गोलियाँ ४० का मूल्य १ रुपया।

दी नावेल्टी स्टोर

नं० ३१ बंबई २

सुप्रसिद्ध जी० सी० फ्लूट हारमोनियम

सिंगल रीड ४०), ४५), ५०), अब आधा

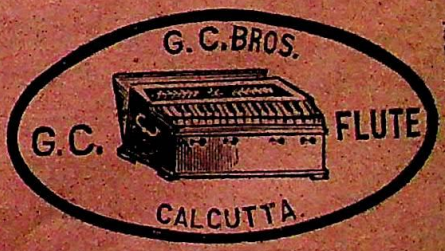

२०), २२॥), २५) डबल ७०), ८०), ९०) आधा ३५), ४०), ४५), पेशगी ५) के साथ शीघ्र आर्डर भेजिए ऐसा अवसर फिर न मिलेगा।

जी० सी० ब्रादर्स, ८ कालेज स्ट्रीट

(सु०) कलकत्ता

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Kanya Collection. Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारी रिसर्च का आश्चर्यजनक आविष्कार

(हमारा विचित्र ठेका)

अमृतोपम, औषधियों के प्रभाव से संतान न होने का ठेका लेते हैं, जब तक गर्भ न हो औषधिएँ भेजते हैं ऐसा सचाई के विना और कौन कर सकता है अवश्य लाभ उठाइए, पेशगी रु० भेजने से केवल चार रु०, और गर्भ रहने के बाद रु० भेजनेवालों से ७ रु०। वैद्य और हकीमों को ख़ास रियायत यह क़ीमत केवल प्रचारार्थ कुछ मासों के लिये है।

नोट—

बी. बी. कुशल बी. ए. शास्त्री

स्कालर आफ़् आयुर्वैदिक साइंस आदि २

हीरामंडी, फ़िरोज़पुर सिटी (पंजाब)

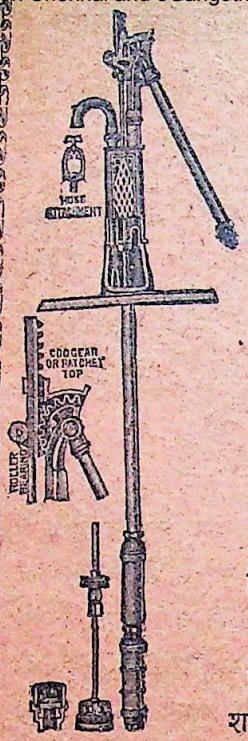

सभी एकमत हैं

कि

मायर्स के पंप सब से अच्छे हैं।

छोटे दस बरस के बच्चे भी २०० फ़ुट गहराई का जल आसानी से उठाते हैं।

मायर्स के

हर क़िस्म के पंपों का स्टाक मौजूद है।

अपनी ज़रूरत लिखिए। भारत के सोल एजेंट—

दि लिमये ब्रादर्स लिमिटेड

नं० ५ पोलक स्ट्रीट,

पो० ब० नं० २०८५, कलकत्ता,

शाखाएँ बंबई, कराँची और मद्रास।

हिंदुस्थान का मशहूर

पापुलर फ़ुलुट हारमोनियम

सागौन लकड़ी का बना है और हिंदुस्थान की आबहवा के लिये एकमात्र उपयोगी। गारंटी ३ साल। नापसंद होने से बदल देते हैं।

जर्मनरीड लगे हुए सिंगलरीड—२०) २२) २४)
पैरिसरीड ,, ,, ,, ,,—२६) २८) ३२)
जर्मनरीड ,, ,, डबलरीड—३०) ३२) ३५)
पैरिसरीड ,, ,, ,, ,,—४२) ४४) ४७)

आर्डर के साथ ५) पेशगी—

और अपने निकट के स्टेशन का नाम लिखिए।

मोथाइटर पि०एन्०पाल

पापुलर हारमोनियम कं०

पोस्ट बक्स नं० १२ (सु) कलकत्ता।

साइकिल

हर क़िस्म का हमारे यहाँ सुभीता में मिलेगा।

दि कलकत्ता मोटर साइकिल कंपनी

११।३ लालबाज़ार स्ट्रीट, कलकत्ता

SELECTIONS FROM HINDI LITERATURE

BY

RAI BAHADUR LALA SITA RAM, B. A.

PRICE RS. 30.

To be had of-

GANGA PUSTAKMALA KARYALAVA,

LUCKNOW.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

कृपया आर्डर देते समय [illegible]

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गवर्नमेंट से रजिस्टर्ड

इसे ज़रूर पास रखिए क्योंकि ये एक ही दवा बालक, जवान, वृद्ध, स्त्री-पुरुष सबके शिर से पैर तक के सर्व रोगों में किसी में खाने और किसी में लगाने की एकमात्र हुक्मी दवा है। क़ीमत बड़ी शीशी १) छोटी ॥) डाक-ख़र्च १ से ३ तक ।=)

❀ दर्द की दवा ❀

सिर-दर्द क्या शरीर के किसी भी भाग में कितना ही कठिन दर्द क्यों न हो, खाने मात्र से ही १० मिनट में आराम। क़ीमत फ़ी शीशी ॥), ३ शीशी २) डाक-ख़र्च १ से ४ तक ।=)

सचित्र कलेंडर बड़ा सूचीपत्र मँगाइए।

मिलने का पता—

रजिस्टर्ड अमृतार्णव औषधालय, इटावा यू० पी०

घड़ियों का नया चालान आ गया अब अच्छी घड़ी सस्ती क़ीमत में मिलेगी

जेबी घड़ियाँ—खुला मुँह सिरे पर चाबी मज़बूत मशीन निकिल केस एक दफ़ा चाबी देने से २४ घंटे चलती है गारंटी ५ वर्ष लीवर चाल मोटा शीशा चढ़ा हुआ बढ़िया पालिश क़ी० ८) रेलवे रेग्यूलेटर क़ी० ३॥) यही सेकंड सहित ४।) रास्कोप सिस्टम ३॥) मय सेकेंड ४।)

कलाई की घड़ियाँ—

ये घड़ियाँ बहुत ही ख़ूबसूरत गोल, चौकोर व अठपहलू फ़ैशन में बड़ी मज़बूत १ दफ़ा चाबी देने से २४ घंटे चलती हैं। गारंटी ५ वर्ष। क़ीमत सफ़ेद धातु की ५) सुनहरी ६)

बड़ा सूचीपत्र मुफ़्त मँगा लीजिए।

पता—आनंद संचारक कंपनी, इटावा (यू०पी०)

"नपुंसकता, स्वप्नदोष और ताक़त की अपूर्व औषधि"

वह मनुष्य जिनको नपुंसकता, स्वप्नदोष, धातुक्षीणता, शीघ्रपतन की बीमारी हो या युवावस्था ही में बुढ़ापे की दशा होगई हो या दिमाग़ी कमज़ोरी हो, सर और कमर में दर्द हो, चक्कर आता हो, आँखों के आगे चिनगारियाँ नज़र आती हों, कलेजा धड़कता हो, भूख कम या स्मरण शक्ति न हो तो शीघ्र ही काम विलास चूर्ण और तिला मंगाकर ४० रोज़ सेवन करें। ये दोनों औषधियाँ नस-नस पट्ठे-पट्ठे के अंदर नया जीवन संचार कर देंगी। दोनों औषधियों का मूल्य ८)

"काम विकास बटिका"

ये गोलियाँ शीघ्रपतन नाशक हैं। इनसे शीघ्रपतन रोग शर्तिया जाता रहता है। मूल्य फ़ी दर्जन ५) रु० आधा दर्जन ३) रु०।

"सूज़ाक नाशक"

सूज़ाक नया हो या पुराना २ सप्ताह में बिना पिचकारी के जड़ से आराम हो जाने की गारंटी है। पहले ही दिन से टीस, पीब का आना बंद, और दर्द व जलन का कम होना आरंभ हो जाता है। मूल्य ५) रु०।

पता—तिब्बी मेडिकल वर्क्स

दरभंगा (बिहार)

Tibbi Medical Works,

Darbhanga (Behar)

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सेठ घनश्यामदासजी बिड़ला, सेठ जमनालालजी बजाज आदि द्वारा स्थापित सस्ता-मंडल, अजमेर से प्रकाशित

भारतवर्ष में सब से सस्ती, सचित्र उच्च कोटि की

☞ त्याग-भूमि

जीवन, जागृति, बल और बलिदान की पत्रिका

संपादक—श्रीहरिभाऊ उपाध्याय, श्रीक्षेमानंद राहत

पृष्ठ-संख्या १२०, दो रंगीन और कई सादे चित्र

स्त्रियों और युवकों के लिए ४० पृष्ठ सुरक्षित

वार्षिक मूल्य केवल ४)

हिंदी संसार ने जिन शब्दों में इसका स्वागत किया है उसमें से कुछ के नमूने देखिए—

"लेख इतने सुंदर और विद्वत्तापूर्ण हैं कि उनका पढ़ना ज्ञानप्रद और हृदय को ऊँचा उठानेवाला होता है।"

"संपादकीय टिप्पणियाँ इतनी नपी तुली विचार और सत्यानुमोदित होती हैं कि एक बार विरुद्ध मत रखनेवाले व्यक्ति भी उन्हें पढ़कर मुग्ध हो जाते हैं।"

"प्रताप" कानपुर

"हाल में जितनी पत्रिकाएँ निकली हैं उनमें प्रत्येक दृष्टि से हम "त्याग-भूमि" को सर्वश्रेष्ठ कह सकते हैं"

"माधुरी"

"त्याग-भूमि" में अच्छी से अच्छी चीज़ कम से कम दामों में देने की प्रवृत्ति है। शुद्ध सात्विक व्यंजनों से शरीर को जो लाभ होता है वह 'त्यागभूमि' के लेखों से उसके पाठकों को होगा!"

पं० बनारसीदास चतुर्वेदी

"इतनी अच्छी पत्रिका मैंने आज तक नहीं पढ़ी"

सरदार० डा० किबे, इंदौर

"पत्रिका सर्वांङ्ग सुंदर है, सौंदर्य में सर्वत्र सादगी की शोभा, उच्च आदर्श की ज्योति तथा त्याग का तेज दृश्यमान है"

"आज" बनारस

"यह नूतन युग का नूतन संदेश लेकर अवतीर्ण हुई है"

पं० लक्ष्मीधर बाजपेई

"त्याग-भूमि" पाकर हृदय नाच उठा। पराजय का वीर तो अनूठा ही है"

पं० लोचनप्रसाद पांडेय

"यह पत्रिका सुमित्रा, विदुला, मदालसा, की कोटि की उपदेशिका जननी है।" श्रीलक्ष्मणाचार्यजी

'इसका आदर्श एक शब्द में आध्यात्मिक राष्ट्रवाद है"

'हिंदी प्रचारक' मदरास

सूचना—पाठक इस बात को ध्यान में रक्खें कि और पत्र-पत्रिकाओं के हिसाब से तो इतने पृष्ठ और चित्रों सहित इस पत्रिका का मूल्य ६) या ६॥) रक्खा जाना चाहिए था पर सस्ता मंडल का उद्देश्य तो सस्ते से सस्ते मूल्य में साहित्य का प्रचार करना है इसलिये मूल्य लागत से भी कम रक्खा गया है। इसके अलावा इसमें दवाइयों व आमोद-प्रमोद आदि के बाहरी कोई भी विज्ञापन नहीं छापे जाते।

आशा है, साहित्य और देश सेवा के इस उद्योग में पाठकगण हमारे साथी बनेंगे और स्वयं ग्राहक—बनकर व अपने मित्रों को बनाकर सहायक होंगे।

जो भाई इस विज्ञापन को पढ़ें उनके लिये एक-एक ग्राहक बनाकर भेजना कोई भी कठिन बात नहीं है

नमूने की प्रति के लिये ।) के टिकट भेजिए।

प्रचारकों व एजेंटों की आवश्यकता है। पत्र भेजकर नियम पूछ लें।

व्यवस्थापक 'त्याग-भूमि' सस्ता-मंडल, अजमेर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुधा के नियम

मूल्य

सुधा का डाक-व्यय-सहित वार्षिक मूल्य ६॥), छः मास का ३॥) और प्रति संख्या का ।।।) है। वी० पी० से मँगाने में =) रजिस्ट्री के और देने पड़ेंगे। इसलिये ग्राहकों को मनीआर्डर से ही चंदा भेज देना चाहिए। भारत के बाहर सर्वत्र वार्षिक मूल्य ७॥), छः महीने का ४) और प्रति संख्या का ।।।=) है। वर्षारंभ श्रावण से होता है, और प्रति मास शुक्ल-पक्ष की सप्तमी को पत्रिका प्रकाशित हो जाती है। लेकिन ग्राहक चाहे जिस संख्या से ग्राहक बन सकते हैं।

अप्राप्त संख्या

अगर कोई संख्या किसी ग्राहक के पास न पहुँचे, तो अगले महीने के कृष्ण-पक्ष की सप्तमी तक कार्यालय को सूचना मिलनी चाहिए। लेकिन हमें सूचना देने के पहले स्थानीय पोस्ट-ऑफ़िस में उसकी जाँच करके डाकख़ाने का दिया हुआ उत्तर सूचना के साथ आना चाहिए। उनको उस संख्या की दूसरी प्रति भेज दी जायगी। लेकिन उक्त तिथि के बाद सूचना मिलने से उस पर ध्यान नहीं दिया जायगा, और उस संख्या को ग्राहक ।।।) के टिकट भेजने पर ही पा सकेंगे।

पत्र-व्यवहार

उत्तर के लिये जवाबी कार्ड या टिकट आना चाहिए। अन्यथा पत्र का उत्तर नहीं दिया जा सकेगा। पत्र के साथ ग्राहक-नंबर का भी उल्लेख होना चाहिए। मूल्य या ग्राहक होने की सूचना मैनेजर सुधा, लखनऊ या मैनेजर गंगा-पुस्तकमाला, लखनऊ के पते से आनी चाहिए।

पता

ग्राहक होते समय अपना नाम और पता बहुत साफ़ अक्षरों में लिखना चाहिए। दो-एक महीने के लिये पता बदलवाना हो, तो उसका प्रबंध डाक-घर से ही कर लेना ठीक होगा। अधिक दिन के लिये बदलवाना हो, तो संख्या निकलने के १५ दिन पेश्तर उसकी सूचना देनी चाहिए।

लेख आदि

लेख या कविता स्पष्ट अक्षरों में, काग़ज़ की एक ओर, संशोधन के लिये इधर-उधर जगह छोड़कर, लिखी होनी चाहिए। क्रमशः प्रकाशित होने लायक़ बड़े लेख संपूर्ण आने चाहिए। किसी लेख अथवा कविता के प्रकाशित करने या न करने का, उसे घटाने-बढ़ाने का, तथा उसे लौटाने या न लौटाने का सारा अधिकार संपादक को है। जो नापसंद लेख संपादक लौटाना मंज़ूर करें, वे टिकट भेजने पर ही वापस किए जा सकते हैं। यदि लेखक लेना स्वीकार करते हैं, तो उपयोगी और उत्तम लेखों पर पुरस्कार भी दिया जाता है। सुधा में प्रकाशित पुरस्कृत लेखों और कविताओं को पुस्तकाकार या किसी संग्रह में निकालने का अधिकार सुधा के अध्यक्ष को रहेगा। अपुरस्कृत रचनाओं पर लेखकों और सुधा-अध्यक्ष, दोनों का अधिकार होगा। सचित्र लेखों के चित्रों का प्रबंध लेखकों को करना चाहिए। चित्र प्राप्त करने के लिये आवश्यक ख़र्च प्रकाशक देंगे।

लेख, कविता, समालोचना के लिये पुस्तकें और बदले के पत्र इस पते से भेजने चाहिए—

पं० दुलारेलाल भार्गव

गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय,

२६-३०, अमीनाबाद-पार्क, लखनऊ

विज्ञापन

किसी महीने में विज्ञापन बंद करना या बदलवाना हो, तो एक महीने पहले सूचना देनी चाहिए।

अश्लील विज्ञापन नहीं छपते। छपाई पेशगी ली जाती है। विज्ञापन की दर नीचे प्रकाशित है—

साधारण १ पृष्ठ या २ कालम की छपाई ४०) प्रति मास

„ ½ „ या १ „ „ „ २२) „ „

„ ¼ „ या ½ „ „ „ १२) „ „

„ ⅛ „ या ¼ „ „ „ ७) „ „

कम-से-कम आधा कालम विज्ञापन छपानेवालों को सुधा मुफ़्त मिलती है। साल-भर के विज्ञापनों पर =) रुपया कमीशन दे दिया जाता है।

सुधा में विज्ञापन छपाने से बड़ा लाभ रहता है। कारण, इसका प्रत्येक विज्ञापन लाखों पढ़े-लिखे, धनी-मानी और सभ्य स्त्री-पुरुषों की नज़र से गुज़र जाता है। सब बातों में हिंदी की सर्वश्रेष्ठ पत्रिका होने के कारण इसका प्रचार उत्तरोत्तर बढ़ रहा है।

कृपया शीघ्र ही अपना विज्ञापन सुधा में छपाकर लाभ उठाइए। कम-से-कम एक बार परीक्षा तो कर लीजिए।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्मन बनाम मुद्दालय बिनाबर हाज़िरी असालतन बग़ारज़ इनफ़िसाल मुक़दमा बअदालत ख़फ़ीफ़ा सबजजी दोयम सहारनपुर ज़िला सहारनपुर

मुक़दमा नंबर ३०७७ सन् १९२८ ई०

फ़र्म बनवारीलाल मुद्दई

चेतनसिंह वग़ैरह मुद्दालय

बनाम मनीलाल पानीपत साकिन मुहल्ला शेख़बाड़ा ज़िला करनाल डाकख़ाना ख़ास

हरगाह मुद्दई ने आपके नाम एक सादा नालिशबाबत क़र्ज़ा के दायर की है। लिहाज़ा आप को हुक्म दिया जाता है कि आप बतारीख़ १२ मार्च सन् १९२८ दस बजे दिन के अदालत हाज़ा में असालतन हाज़िर हों और जवाबदिही दावा की करें। और हरगाह वही तारीख़ जो आपकी हाज़िरी के लिये मुक़र्रर है वास्ते इन्फ़िसाल क़तई मुक़दमा के तजवीज़ हुई है। पस आपको लाज़िम है कि उसी रोज़ अपने जुमला गवाहों को हाज़िर करें। नीज़ जुमला दस्तावेज़ात जिन पर आप बताईद अपनी जवाबदिही के इस्तदलाल करना चाहते हों उसी रोज़ पेश करें।

आपको इत्तिला दी जाती है कि बरोज़ मज़कूर आप हाज़िर न होंगे तो मुक़दमा बग़ैर हाज़िरी आपके मस्मू और फ़ैसल होगा।

यह सबत मेरे दस्तख़त और मुहर अदालत के आज बतारीख़ २० माह फ़रवरी सन् १९२८ जारी किया गया है।

बहुक्म मुंसरिम

सम्मन बग़ारज़ क़रारदाद उमूर तनक़ीह तलब

मुक़दमा नंबर ३६१ सन् १९२७ ई०

बअदालत दीवानी श्रीमान् पं० प्यारेलाल भार्गव साहब बहादुर मुंसिफ़ जनूबी हरदोई मुक़ाम हरदोई मु० बेटी वग़ैरा मुद्दईयान झमले वग़ैरह बनाम मुद्दाअलेह

(१) झमले वल्द छेदनलाल ब्राह्मण साकिन मौज़ा भदैचा परगना बँगूर
(२) शिवदत्त शर्मा वल्द बनवारीलाल क़ौम ब्राह्मण साकिन कुरापुर परगना शरह जनूबी।

तहसील व ज़िला हरदोई

वाज़े हो कि मुद्दईयान ने तुम्हारे नाम एक नालिश बाबत हस्तेक़रार हक़ के दायर की है। लिहाज़ा तुमको हुक्म होता है कि तुम बतारीख़ १५ माह मार्च सन् १९२८ ई० वक़्त १० बजे पर असालतन या मारफ़त वकील के जो मुक़दमे के हाल से क़रार वाक़ई वाक़िफ़ किया गया हो और जो कुल उमूरात अहम मुतअल्लिक़े मुक़दमा का जवाब दे सके या जिसके साथ कोई और शख़्स हो जो जवाब ऐसे सवालात का दे सके हाज़िर हो और जवाबदिही दावा मुद्दई मज़कूर की करो और तुम को हिदायत की जाती है कि जुमला दस्तावेज़ात को जिन पर तुम बताईद अपनी जवाबदिही के इस्तदलाल करना चाहते हो पेश करो।

मुत्तिला रहो कि अगर बरोज़ मज़कूर तुम हाज़िर न होगे तो मुक़दमा तुम्हारी ग़ैरहाज़िरी में मस्मू और फ़ैसल होगा।

आज बतारीख़ १८ माह फ़रवरी सन् १९२८ ई० मेरे [illegible] और मोहर अदालत से जारी किया गया।

बहुक्म जनाब जज ख़फ़ीफ़ा साहब बहादुर सहारनपुर

सम्मन बनाम मुद्दाअले हाज़िरी इसहालतन बग़ारज़ इनफ़िसाल मुक़दमा। (आर्डर ५ क़ायदा ३)

बअदालत हाज़ा जज ख़फ़ीफ़ा मुक़ाम सहारनपुर ज़िला सहारनपुर मुक़दमा नंबर ३०७७ बाबत सन् १९२८

मुद्दई बनवारीलाल बनाम मुद्दाअले सीतलसिंह बनाम रामचंद्र शास्त्री। साकिन हाल हरद्वार सुभ्भायत्ती

हरगाह मुद्दई ने आपके नाम एक नालिश बाबत क़रज़ा के दायर की है लिहाज़ा आपको हुक्म दिया जाता है कि आप बतारीख़ १२ माह मार्च सन् १९२८ बवक़्त १० बजे दिन के अदालत हाज़ा में इसहालतन हाज़िर हों और जवाबदही दावा की करें और हरगाह वही तारीख़ जो आपकी हाज़िरी के लिये मुक़र्रर है वास्ते इनफ़िसाल क़तई मुक़दमा के तजवीज़ हुई है पस आपको लाज़िम है कि उस रोज़ अपने जुमला गवाहों को हाज़िर करें नीज़ जुमला दस्तावेज़ात जिन पर आप बताईद अपनी जवाबदिही के इसतदलाल करना चाहते हों उस रोज़ पेश करें

आपको इत्तिला दी जाती है कि अगर बरोज़ा मज़कूर आप हाज़िर न होंगे तो मुक़दमा बग़ैर हाज़िरी आपके मसमूअ और फ़ैसल होगा।

यह सबत मेरे दस्तख़त और मोहर अदालत के आज बतारीख़ २२ माह फ़रवरी १९२८ जारी किया गया।

द० दिलीपसिंह
मुंसरिम

बअदालत जनाब बाबू अवधबिहारीलाल साहब बहादुर मुंसिफ़ कुंडा ज़िला परतापगढ़।

मुक़दमा नंबर ३५४ सन् १९२६ ई०

मुक़दमा इजराय डिगरी नंबर ५२३ सन् १९२७

पंडित कुंजबिहारी वल्द पंडित लालराम क़ौम ब्राह्मण दुबे साकिन मौज़ा घाटमपुर तालुक़ा पृथ्वीगंज परगना व तहसील व ज़िला परतापगढ़ डिगरीदार

ज़हूराबख़्शसिंह वल्द राय बिशेशुरबख़्शसिंह साकिन डेलघोट परगना व तहसील पट्टी ज़िला परतापगढ़

बनाम ज़हूराबख़्श वल्द राय बिशेशुरबख़्शसिंह साकिन डेलघोट परगना व तहसील पट्टी ज़िला परतापगढ़ मदयून

हरगाह कि मुक़दमा मुंदरजा बाला में डिगरीदार ने नीलाम जायदाद मक़सूबा की दरख़्वास्त की है। तुमको इत्तलानामा के ज़रिए मुत्तिला किया जाता है कि तारीख़ १२ मार्च सन् १९२८ वास्ते तै करने मरातिब दरितहार नीलाम के मुक़र्रर की गई है।

आज बतारीख़ २३ माह जनवरी सन् १९२८ मेरे दस्तख़त और मुहर अदालत से जारी किया गया।

बहुक्म

द० नामालूम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्मन बनाम मुद्दालय बिनावर हाज़िरी असालतन बग़रज़ इन्फ़िसाल मुक़दमा

(आर्डर ५—क़ायदा ३)

बअदालत ख़फ़ीफ़ा सबजजी दोयम मुक़ाम सहारनपुर ज़िला सहारनपुर

मुक़दमा नंबर ३०७७ बाबत सन् १९२८

फ़र्म बनवारीलाल मुद्दई

बनाम चेतनसिंह वग़ैरह मुद्दालय

बनाम चुन्नीलाल पिसर नामालूम भैरों का घर फ़िरोज़ाबाद ज़िला आगरा डाकख़ाना ख़ास

हरगाह मुद्दई ने आपके नाम एक नालिश सादा बाबत क़र्ज़ा के दायर की है। लिहाज़ा आपको हुक्म दिया जाता है कि आप बतारीख़ १२ माह मार्च सन् १९२८ दस बजे दिन के अदालत हाज़ा में असालतन हाज़िर हों और जवाबदिही दावा की करें। और हरगाह वही तारीख़ जो आपकी हाज़िरी के लिये मुक़र्रर है वास्ते इन्फ़िसाल मुक़दमा के तजवीज़ हुई है। पस आपको लाज़िम है कि उसी रोज़ अपने जुमला गवाहों को हाज़िर करें। नीज़ जुमला दस्तावेज़ात जिन पर आप बताईद अपनी जवाबदिही के इस्तदलाल करना चाहते हों उसी रोज़ पेश करें।

आपको इत्तिला दी जाती है कि बरोज़ मज़कूर आप हाज़िर न होंगे तो मुक़दमा बग़ैर हाज़िरी आपके मस्मूअ फ़ैसल होगा।

यह सबत मेरे दस्तख़त और मुहर अदालत से आज बतारीख़ २१ फ़रवरी सन् १९२८ जारी किया गया।

बहुक्म

मुंसरिम

सम्मन बग़रज़ क़रारदाद उमूर तनक़ीह तलब

नंबर मुक़दमा ३७५ सन् १९२८ ई०

अदालत जनाब पंडित ब्रजकिशन टोपा बी० ए० एल्-एल्० बी० मुंसिफ़ साहब बहादुर अकबरपूर ज़िला फ़ैज़ाबाद

विद्यासागर वग़ैरह मुद्दइयान, बनाम

मुसम्मात राजदेई वग़ैरह मुद्दाअलेह

बनाम मुसम्मात राजदेई बेवह सतदेव बर मकान लाला शिवचरनलाल मुहल्ला घमनीबाज़ार शहर कानपूर मुद्दाअलेह

वाज़े हो कि मुद्दैयान ने तुम्हारे नाम एक नालिश बाबत अस्तवार हक़ के दायर की है लिहाज़ा तुमको हुक्म होता है कि तुम बतारीख़ ८ माह मार्च सन् १९२८ ई० वक्त १० बजे पर असालतन या मारफ़त वकील के जो मुक़दमे के हाल से क़रार वाक़ई वाक़िफ़ किया गया हो और जो कुल उमूरात अहम मुताल्लिक़ा मुक़दमे का जवाब दे सके या जिसके साथ कोई और शख़्स हो जो जवाब ऐसे सवालात का दे सके हाज़िर हो और जवाबदिही दावा मुद्दई मज़कूर की करो और तुमको हिदायत की जाती है कि जुमला दस्तावेज़ात को जिन पर तुम बताईद अपनी जवाबदिही के इस्तदलाल करना चाहते हो पेश करो। मुत्तिला रहो कि अगर बरोज़ मज़कूर तुम हाज़िर न होगे तो मुक़दमा तुम्हारी ग़ैरहाज़िरी में मस्मू और फ़ैसल होगा।

आज बतारीख़ २१ फ़रवरी सन् १९२८ ई० मेरे दस्तख़त और मुहर अदालत से जारी किया गया।

बहुक्म जनाब बाबू हरबिहारीलाल साहब मुंसिफ़ बहादुर मैनपुरी हुक्म इम्तिनाई दरहालिके जायदाद ग़ैर मनकूला क़ाबिल कुरक़ी हो। तलबाना दाख़िल है।

(आर्डर २१ क़ायदा ५४)

बअदालत मुंसिफ़ी मैनपुरी मुक़ाम मैनपुरी ज़िला मैनपुरी

मुक़दमा नं० ५६० ने अर्ज़ी २१ बाबत सन् १९२७ ई० १४६ नं० इब्तिदाई सन् १९२० ई० लाखनसिंह वल्द जोधाबलीसिंह उर्फ़ लल्लूसिंह ठाकुर साकिन मौज़ा सहारा तहसील मन्नूघाम ज़ि० मैनपुरी मुद्दई बनाम

रामलाल वल्द सालिकराम क़ौम बरहमन साकिन इब्दालनगर मुंसिफ़ी व ज़िला एटा मदयून। मुद्दाअलेह

बनाम रामलाल मदयून मुद्दाअलेह

हरगाह तुमने इज़ाफ़ा उस डिगरी का नहीं किया जो तुम पर बतारीख़ २७ माह जून सन् १९२१ मुक़दमा नं० १४६ सन् १९२० ई० बहक़ डिगरीदार बाबत मुबलिग़ १२२) रु० साढ़े सात आने हुई थी। लिहाज़ा हुक्म दिया जाता है कि तुम मदयून मज़कूर तावक्ते कि हुक्म सानी सादिर न हो जायदाद मसरहा फ़र्द तालिका मुनसलिके को बज़रिये बै या हिबा के या और तौर पर मुनतक़िल करने से ममनूअ और बाज़ रक्खे गए हो और तमाम अशख़ास जायदाद मज़कूर बज़रिये ख़रीद या हिबा के या और तौर पर लेने से ममनूअ और बाज़ रक्खे गए हैं तारीख़ पेशी मुक़दमा १० मार्च सन् १९२८ मुक़र्रर है

आज बतारीख़ २२ माह फ़रवरी सन् १९२८ ई० मेरे दस्तख़त और मुहर अदालत से जारी किया गया फ़र्द तालिका

बाग़ नंबरी २९००/७४—०, २९००/२—० वाक़े मौज़ा सहारा तहसील मन्नूघाम ज़िला मैनपुरी

द० आर० भरोसे मुंसरिम

बहुक्म जनाब बाबू ब्रजबिहारीलाल साहिब मुंसिफ़ बहादुर मैनपुरी नोटिस तारीख़ मुक़र्ररा निसबत तसफ़िया (शरायत) इश्तहार नीलाम (आर्डर २१—क़ायदा ६६)

बअदालत मुंसफ़ी मैनपुरी मुक़ाम मैनपुरी ज़िला मैनपुरी

मुक़दमा नंबर ५६० बाबत सन् १९२७

लाखनसिंह वल्द जोधाबलीसिंह उर्फ़ लल्लूसिंह ठाकुर साकिन मौज़ा सहारा तहसील भोगाम ज़िला मैनपुरी डिगरीदार मुद्दई बनाम

रामलाल वल्द सालिकराम ब्राह्मण साकिन मौज़ा एदालनगर मुंसफ़ी व ज़िला एटा मदयून मुद्दालय

बनाम रामलाल मदयून

चूँकि बमुक़दमा मुंदरजा उनवान डिग्रीदार लाखनसिंह ने वास्ते नीलाम जायदाद मक़रोना की दरख़्वास्त गुज़रानी है। लिहाज़ा तुमको इत्तिला दी जाती है कि तारीख़ १० मार्च सन् १९२८ वास्ते तै करने शरायत इश्तहार नीलाम के मुक़र्रर हुई है।

आज बतारीख़ २२ माह फ़रवरी सन् १९२८ को मेरे दस्तख़त और मुहर अदालत के जारी किया गया।

[illegible] मुंसरिम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आप बीती अमृत सखा

मैं न तो कोई डॉक्टर हूँ न हकीम हूँ और न वैद्य हूँ। मैं केवल रेलवे में स्टेशन-मास्टर हूँ। सन् १९०७ ई० में मैं धातु की बीमारी में फँस गया। पहले तो मैंने कोई फ़िकर न की, मगर कुछ दिनों के बाद जब रोग ने धीरे-धीरे अपना भीषण रूप धारण किया तब मेरी आँखें खुलीं और तब मैंने दवा करना शुरू किया। आप लोगों से कहाँ तक बताऊँ कि मैंने बहुत-सी दवाएँ कर डालीं और जिसने जो बताया वही किया, मगर रोग अच्छा होने की जगह बढ़ता ही गया और अब मैं अपनी ज़िंदगी से हाथ धो बैठा और मुझे अपनी हालत पर बहुत ही अफ़सोस होने लगा। यही सोचता था कि अगर शुरू-शुरू में ही इसकी दवा कर डालता तो मुझे यह दिन न देखना पड़ता। परमात्मा की कुछ ऐसी ही कृपा कि एक दिन मैं अपने दफ़्तर में बैठा था, इत्तिफ़ाक़ से एक दिहाती से बातचीत होने पर उसने मुझे दिलासा दिया। और मुझे जंगली चीज़ों का एक नुसख़ा बताया। भगवान् की दया से मैं उसी दवा से बिलकुल अच्छा हो गया। यहाँ तक कि अर्सा बीस साल का हुआ, मुझे फिर ज़रा भी शिकायत नहीं हुई और पाँच बच्चे भी उसी दयामय ने दिए जो कि बिलकुल नीरोग और तंदुरुस्त पैदा हुए। उस समय से अब तक मैं यह नुसख़ा लोगों को तैयार करके देता रहा। कहना अकारथ न होगा कि तमाम रेलवे, भारत के हर कोने व दूसरे मुलकों में मेरी दवा का इस्तेमाल हो रहा है। कुछ लोगों ने मुझे अख़बार में छपवाने को कहा, मगर सुस्ती के कारण मैंने कुछ न किया और साथ-साथ मुझे यह भी ख़्याल होता रहा कि जब बड़े-बड़े हकीम और वैद्यों ने इसे छपवाया मगर लोग उनके इश्तहारों को झूठा समझकर कुछ ध्यान नहीं देते, तो मैं ही क्या कर सकता हूँ, मगर लोगों के बहुत कहने से मैंने छपवा दिया, जिसे चलते हुए ढाई साल हुए और इस दवा से हज़ारों मरीज़ अच्छे हुए। इस कारण हमने इन अख़बारों को हर एक जगह में भी बटवा देने का थोड़ा बंदोबस्त कर दिया जिसमें हमारे हरएक भाई इस दवा से फ़ायदा उठावें और इधर-उधर की दवा करने में अपना धन व समय न ख़राब करें। बस, जो लोग ख़ुद या औरतों में शिकायत सुनते हों यानी धातु का पतला होना या पेशाब के साथ चूने की तरह निकलता हो या चलते-फिरते वक़्त, पायख़ाना के वक़्त या सोते वक़्त ख़्वाब हो जाता हो या स्त्री-संग करने से वीर्य जल्दी निकल जाता हो चाहे किसी सूरत में वीर्य ख़राब हो गया हो हम इस दवा से बहुत जल्द अच्छा कर देंगे। नई ज़िंदगी आ जायगी और उमर-भर के लिये धातुक्षीण की शिकायत जाती रहेगी। क़ीमत २।=) दो रुपया छे आना ; डाक-ख़र्च माफ़। दूसरे देश के ग्राहकों से चार आने ज़्यादा हैं। यह दवा दवा भी है और सबेरे का जलपान भी है।

दवा बनाने या भेजने का कुल भार मेरे बड़े लड़के को है } निवेदक—छेदीलाल
स्टेशन-मास्टर

दवा मँगाने का पता } प्रो० श्यामसुंदरलाल पन
५५७, फ़ेथफुलगंज, कानपुर (छावनी)

CC-0. In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection. Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुक़दमा नंबर ४०२ सन् १९२८

बअदालत बाबू अवधविहारीलाल साहब बहादुर मुंसिफ़ कंडा मुक़ाम परतापगढ़ ।

महराजबख़्शसिंह वल्द नंदेशुरीबख़्शसिंह क़ौम ··· साकिन मौज़ा डिगरारा परगना रामपूर तहसील कंडा ज़िला परतापगढ़ ।

बनाम शिवमंगलसिंह वल्द देवीबख़्शसिंह क़ौम ··· साकिन मौज़ा टिंगरी परगना बिहार तहसील कंडा ज़िला परतापगढ़ ।

हरगाह मुद्दई ने तुम्हारे नाम एक नालिश ५४४) के दायर की है लिहाज़ा तुमको हुक्म होता है कि तुम बतारीख़ ८ मार्च सन् १९२८ १० बजे दिन असालतन या मारफ़त वकील के जो मुक़दमा के हाल से क़रार वाक़ई वाक़िफ़ किया गया हो और जो कुल अमूर अहम मुतल्लिक़ा मुक़दमा का जवाब दे सके या जिसके साथ कोई और आदमी हो जो जवाब ऐसे सवालात के दे सके हाज़िर हो और जवाबदिही दावा मुद्दई मज़कूर की करो और हरगाह वही तारीख़ जो तुम्हारे अहज़ार के लिये मुक़र्रर है वास्ते इनफ़िसाल क़तई मुक़दमा के तजवीज़ हुई है । पस तुमको लाज़िम है कि अपने जवाब दावा की ताईद में जिन गवाहों की शहादत पर या जिन दस्तावेज़ात पर तुम इस्तदलाल करना चाहते हो उसी रोज़ उनको पेश करो ।

आज बतारीख़ ११ माह फ़रवरी सन् १९२८ मेरे दस्तख़त और मुहर अदालत से जारी किया गया ।

बहुक्म मुंसरिम दः नामालूम

सम्मन बग़रज़ इनफ़िसाल मुक़दमा

मुक़दमा नंबर ८३१ सन् १९२७

बअदालत जनाब मुंसिफ़ साहब बहादुर फ़ैज़ाबाद मुक़ाम फ़ैज़ाबाद बाबू रामलाल गोठया व गुरप्रसाद साकिन मुहल्ला न्यानवान शहर फ़ैज़ाबाद मुद्दई

बनाम मिठाईलाल गौड़ वल्द नामालूम साकिन मुहल्ला रायगंज गौड़याना शहर अवध ज़िला फ़ैज़ाबाद ।

हरगाह मुद्दई ने तुम्हारे नाम एक नालिश बाबत मुबलिग़ ६०) के दायर की है लिहाज़ा तुमको हुक्म होता है कि तुम बतारीख़ २० फ़रवरी सन् १९२८ समय १० बजे असालतन या मारफ़त वकील के जो मुक़दमा के हाल से क़रार वाक़ई वाक़िफ़ किया गया हो और जो कुल अमूर अहम मुतल्लिक़ा मुक़दमा का जवाब दे सके या जिसके साथ कोई और आदमी हो जो जवाब ऐसे सवालात का दे सके हाज़िर हो और जवाबदिही दावा मुद्दई मज़कूर की करो और हरगाह वही तारीख़ जो तुहमरे अहज़ार के लिये मुक़र्रर है वास्ते इनफ़िसाल क़तई मुक़दमा के तजवीज़ हुई है पस तुमको लाज़िम है कि अपने जवाब दावा की ताईद में जिन गवाहों की शहादत पर या जिन दस्तावेज़ात पर तुम इस्तदलाल करना चाहते हो उसी रोज़ उनको पेश करो ।

मुत्तला रहो कि बरोज़ मज़कूर तुम हाज़िर न होगे तो मुक़दमा बग़ैर हाज़िरी तुम्हारे मस्मूअ और फ़ैसल होगा ।

आज बतारीख़ १० माह फ़रवरी सन् १९२८ मेरे दस्तख़त और मुहर अदालत से जारी किया गया ।

सम्मन बिनाबर इनफ़िसाल मुक़दमा

(आर्डर ५ क़ायदा १, ५)

नंबर मुक़दमा ७८८ सन् १९२७ ई०

बअदालत एडीशनल मुंसिफ़ साहब आज़मगढ़ ज़िला आज़मगढ़ ।

बइजलास मिस्टर बाबूराम वर्मा साहब बहादुर एम्० ए० एल्-ऐल्० बी एडीशनल मुंसिफ़ आज़मगढ़ ।

बाबू राधेराय मुद्दई बनाम बाबू लछमनसिंह पिसर सीतलसिंह साकिन छपरा हाल वारिद साकिन उसहिसार परगना गोहनी ज़िला आज़मगढ़ ।

हरगाह कि मुद्दई ने तुम्हारे नाम एक नालिश बाबत नक़दी के दायर की है लिहाज़ा तुमको हुक्म होता है कि तुम बतारीख़ ५ माह मार्च सन् १९२८ई० वक़्त १० बजे दिन के असालतन या मारफ़त वकील के जो मुक़दमे के हालात से क़रार वाक़ई वाक़िफ़ किया गया हो और जो कुल अमूर अहम मुतालिक़ा मुक़दमे का जवाब दे सके या जिसके साथ कोई और शख़्स हो कि जवाब ऐसे सवालात का दे सके हाज़िर हो और जवाबदिही दावा की करो । और हरगाह वही तारीख़ जो तुम्हारे अहज़ार के लिये मुक़र्रर है वास्ते इनफ़िसाल क़तई मुक़दमे के तजवीज़ हुई है पस तुमको लाज़िम है कि उसी रोज़ अपने जुमला गवाहों को जिन की शहादत पर नीज़ तमाम दस्तावेज़ात जिन पर तुम अपनी जवाबदिही के ताईद में इस्तदलाल करना चाहते हो उसी रोज़ पेश करो तुमको इत्तिला दी जाती है कि अगर बरोज़ मज़कूर तुम हाज़िर न होगे तो मुक़दमा बग़ैर हाज़िरी तुम्हारे मसमूअ और फ़ैसल होगा ।

बसब्त मेरे दस्तख़त और मुहर अदालत के आज बतारीख़ १४ माह फ़रवरी सन् १९२८ जारी किया गया ।

बहुक्म

द० राजाराम

मुंसरिम

CC-0. Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिंदी-संसार में एकदम नई बात !

संस्कृत न जाननेवाली जनता और वैद्यों के लिये ख़ुशक़िस्मती !

नितांत सरल हिंदी में समस्त आयुर्वेद ।

केवल हिंदी जाननेवाला बच्चा भी विना उस्ताद के वैद्यक सीख सकता है ।

चिकित्सा-चंद्रोदय

सात भाग ।

लेखक

बाबू हरिदास वैद्य ।

मूल्य अजिल्द सातों भाग का ३५।) | सजिल्द सातों का ४०॥)
एक साथ ख़रीदने से कमीशन ५॥) | एक साथ लेने से कमीशन ६॥)

सूचना—सातों भाग मँगानेवाले सज्जनों को आर्डर के साथ १०) रुपया पेशगी भेजना और अपने नज़दीकी रेलवे स्टेशन का नाम लिखना परमावश्यक है ।

सातों भागों की संक्षिप्त सूची

पहला भाग

चार सौ परमोपयोगी परिभाषाएँ—हृदय, फेफड़े और मस्तिष्क आदि का सचित्र वर्णन—त्रिदोष—धातुओं की क्षय वृद्धि—प्रकृति-परीक्षा—निदानपंचक या रोग-परीक्षा-विधि—आँख, नाक, कान, जीभ आदि से रोग पहचानने की तरकीबें—नाड़ी देखने की तरकीबें—असाध्य रोगों के लक्षण, छै-छै महीने पहले मरने-वालों की पहचान, जुलाब-संबंधी नियम और नुसख़े वग़ैरह-वग़ैरह । पृष्ठ-संख्या ३४०; मूल्य ३॥)

दूसरा भाग

ज्वर-चिकित्सा पर इससे बड़ी और उत्तम पुस्तक हिंदी में और नहीं है । सब तरह के ज्वरों के कारण, लक्षण और चिकित्सा बड़ी ही ख़ूबी से लिखी गई है । हर तरह के ज्वर पर अनेकों तत्काल फलदायी परीक्षित नुसख़े लिखे गए हैं । ज्वर के लिये आपको वैद्यक का और ग्रंथ देखने की दरकार न होगी । न्यू-मोनिया, टाईफ़ोइड प्रभृति पर भी प्रकाश डाला गया है । बालकों के रोगों की पहचान और चिकित्सा विस्तार से लिखी है । पातालयंत्र आदि यंत्रों की विधि सचित्र दी गई है । पृष्ठ-संख्या ६००; मूल्य ४॥)

तीसरा भाग

इस हिस्से में अतिसार, संग्रहणी, बवासीर, मंदाग्नि, अजीर्ण, हैज़ा, कृमिरोग (पेट में कीड़े), पांडुरोग, उपदंश-आतशक और सोज़ाक आदि रोगों की चिकित्सा विस्तार से लिखी गई है । सभी रोगों पर परीक्षित अपरीक्षित अमीरी और ग़रीबी नुसख़े लिखे हैं । इस भाग में यूनानी हिकमत के नुसख़े भी लिखे हैं । उप-युक्त रोगों पर और ग्रंथ देखने की ज़रूरत नहीं । पृष्ठ-संख्या ५००; मूल्य ५)

आगे देखिए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चौथा भाग

इस भाग में प्रमेह, स्वप्नमेह, स्वप्नदोष और नपुंसकता, नामर्दी आदि पर इतना लिखा गया है, जितना भारतीय किसी भी भाषा के ग्रंथ में नहीं लिखा गया है। यह पुस्तक नहीं—आबेहयात या अमृत का समुद्र है। इस भाग में अमीरी-ग़रीबी प्रमेह-नाशक, धातु-पौष्टिक, वाजीकरण, स्तंभनशक्तिवर्द्धक, लिंगेंद्रिय-दोष-नाशक बेहद नुसख़े हैं। इतने आज़मूदा पाक, मोदक, चूर्ण, माजून और तिले किसी भी ग्रंथ में नहीं हैं। अभ्रक, बंग, सोना, चाँदी, लोहा, ताँबा, मोती, मूँगा, हरताल प्रभृत की भस्में बनाने की बहुत ही आसान-आसान तरकीबें लिखी गई हैं। इस भाग को पास रखकर, हर कोई अपने प्रमेह, धातु-रोग, नामर्दी, स्वप्नदोष आदि का इलाज स्वयं कर सकता है। यह इसका दूसरा संस्करण है। इसी से साबित होता है कि यह कैसा ग्रंथ है और इसकी कैसी क़दर है। जो वैद्यक सीखना नहीं चाहते, वे भी इस भाग को ख़रीदते हैं, तभी तो इसके तीन-तीन हज़ारी दो एडीशन हो गए। पृष्ठ-संख्या ६२० ; मूल्य ५)

पाँचवाँ भाग

इस भाग में स्त्रियों के प्रदर रोग, सोम रोग, योनि रोग, मासिकधर्म के रोग, गर्भ न रहने के रोग, कन्या ही कन्या होने के रोग, गर्भ गिरने के रोग, गर्भवती के रोग, प्रसूता के रोग प्रभृति स्त्रियों के सभी रोगों की चिकित्सा विस्तार से लिखी है। साथ ही सुख से बच्चा जनने के उपाय, गर्भ गिराने के उपाय, गर्भ-रक्षा के उपाय, बाँझ को पुत्रवती बनाने के उपाय, बाँझ बनाने के उपाय भी लिखे हैं। इनके सिवा राजयक्ष्मा और उरःक्षत की चिकित्सा विस्तार से लिखी है। एक और बड़ी बात इसमें यह है कि इसमें साँप-बिच्छू, पागल कुत्ता आदि के काटे का इलाज विस्तार से लिखा है। संखिया, कुचला, अफ़ीम वग़ैरह ज़हर उतारने के उपाय भी लिखे हैं। पृष्ठ-संख्या ६३० ; मूल्य ५।॥)

छठा भाग

इस भाग में खाँसी, ज़ुकाम, श्वास-दमा, हिचकी, रक्तपित्त, अम्लपित्त-स्वरभंग, अरुचि, वमन या क़य, प्यास वग़ैरह रोगों की चिकित्सा बड़े विस्तार से लिखी है। २०० सफ़ों में तो एक खाँसी का इलाज है। इन रोगों पर इससे अच्छा ग्रंथ और नहीं है। पृष्ठ-संख्या ४१६ ; मूल्य ४)

सातवाँ भाग

यह भाग सबसे बड़ा है, क्योंकि इसमें बाक़ी रहे हुए सभी रोगों की चिकित्सा लिखी गई है। तभी तो इस भाग में १२१६ सफ़े हैं। मूर्च्छा रोग, मदात्यय, दाह, उन्माद, पागलपन, अपस्मार—मृगी, हिस्टीरिया—योषापस्मार, ८० वात रोग—लकवा, फ़ालिज, अर्द्धांगवात, सर्वांगवात, संधिवात, गठिया वग़ैरह-वग़ैरह—वातरक्त—ख़ूनख़राबी के रोग—उरु स्तंभ—जाँघों का रह जाना, आमवात, शूल—पेट का दर्द वग़ैरह—गुल्म या गोला, प्लीहा, तिल्ली, मूत्रकृच्छ्र-पेशाब के रोग, मूत्राघात, पथरी, मेदरोग—मोटे होने का रोग—दुबले होने का रोग—अंडवृद्धि, उदर रोग, हाथीपाँव, फोड़े, नासूर, भगंदर, कोढ़, दाद, खुजली, नहरू या वाला, विस्फोटक रोग, सिर के रोग, आँखों के रोग, कान के रोग, नाक के रोग और मुँह के रोग वग़ैरह पर इस भाग में विस्तार से लिखा है। इस एक भाग के पास रखने से कोई ४० रोगों का इलाज हो सकता है। इस भाग में कठिन से समझ में आनेवाले रोगों के चित्र भी दिए गए हैं। पृष्ठ-संख्या १२१६ मूल्य ११।)

पता—हरिदास ऐंड कंपनी, २०१ हरीसन रोड, बड़ा बाज़ार, कलकत्ता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दुनिया-भर की सर्व ज्योतिष संबंधी पुस्तकों का मुकुट-शिरोमणि

चशमा ज्योतिष

या ख़ुफ़िया राज़दान, अर्थात् ज्योतिष-सागर तथा गुप्त प्रश्नप्रदीपिका संपूर्ण चारों भाग।

इसे पुस्तक नहीं बल्कि दुनिया की क़िस्मत का ख़ज़ाना समझें, क्योंकि इसमें आदि से अंत तक ज्योतिष के वह गुप्त भेद संपूर्णतया अंकित कर दिए हैं, जो भारी रक़म लेकर भी ज्योतिषी लोग नहीं बताते। "चशमा ज्योतिष" का कर्ता ख़ांदानी ज्योतिषी है, जिसकी मशहूरी दूर देशांतरों में हो चुकी है, भला इसकी रची पुस्तक जो इसकी ज़ाती क़ाबिलियत का फ़ोटो है, क्यों माननीय न होगी? ज्योतिष विद्या के माननेवाले सज्जनों से हम अनुरोध करते हैं कि इस अनुपम पुस्तक को शीघ्र ही मँगाकर लाभ उठावें; क्योंकि इससे पूर्व की सर्व पुस्तकें अधूरी हैं। इस पुस्तक को पढ़नेवाले सब सज्जन केवल १ मास में पूरे ज्योतिषी बनकर सर्व गुप्त भेद बता सकते हैं, और हर स्त्री-पुरुष की तक़दीर व उनके सुख-दुःख का हाल, ग्रहों की चाल, जन्मकुंडली, लग्न बनाकर फलादेश बताना, हर प्रकार के सच्चे मुहूर्त तथा सट्टा का ठीक परिणाम बताना, जन्मपत्री बनाना, नजूम व प्रश्न, और सर्व प्रकार की ज्योतिष विद्याएँ इसमें दर्ज हैं। हम डंके की चोट से कहते हैं कि यदि इसके पढ़नेवाले सच्चे हालात व प्रश्नों के जवाबात न बता सकें, तो हम इसकी १०गुनी क़ीमत लौटावेंगे। हमने इसके रचयिता को बड़ी मुश्किल से रज़ामंद किया है कि वह अपने कमालात को पुस्तक रूप में लाकर जनता को लाभ पहुँचावें। बड़े आकार के सफ़ों की संख्या २२०, काग़ज़ व छपाई उत्तम और अति सुंदर जिल्द बँधी हुई दाम केवल डाक-ख़र्च समेत ३)

बहुत सावधानी से ख़रीदें कम क़ीमत में बढ़िया माल; पसंद न हो तो वापिस दाम। **१०) सैकड़ा कमीशन**

उम्दा व मज़बूत बक्स मुफ़्त] सच्चाई मुक़ाबला करने से ही प्रकट होगी [हार्मोनियम सीखने की बड़ी पुस्तक साथ

आजकल हारमोनियम की बहुत-सी दुकानें हो गई हैं, लेकिन "एल्० डी० आहूजा लाहौर के कारख़ाने का बना बाजा उन सबमें श्रेष्ठ है"—यह जिन लोगों ने हमारा बाजा बजाया है, उनका मत है। इसका कारण यह है कि सुंदरता, पायदारी व सुरीलेपन में संसार-भर के बाजे इनसे हेच हैं। सर्व सभा-सोसाइटी, राग-विद्यालय, देवालय, नाटक, क्लब इत्यादि स्थान हमारे ही बाजों से सुशोभित हैं। और अनेकों प्रशंसापत्र प्राप्त हो चुके हैं।

१. सिंगल स्वर जर्मन रीड्स ४ स्टाप ३५), २५), २३), २०), २१); कैसरील रीड्स ३५), ३७), ४०),

२. डबल स्वर सिर्फ़ हाथ से बजानेवाला ५-६ स्टाप ५०), ४५), ४३), ४०), ३५), ३२),

३. डबल स्वर कैसरील रीड्स ६५), ६०), ८५), ८०), ७५); पेरिस रीड्स ७५), ७०), ६५), ६०),

४. डबल रीड्स हाथ व पैर से बजानेवाला जर्मन रीड्स ६ स्टाप ७५), ७०); ६५), पेरिस रीड्स ११०), १००), ६५), कैसरील रीड्स १२५), १२०), १००)

५. डबल रीड्स नालीदार पेटी ६ यह जर्मन रीड्स सिर्फ़ पैर से बजानेवाली १२५), ११०) १००), ६०), ८५), ८०), ७५), ७०)

६. डबल रीड्स नालीदार पेटी सिर्फ़ पैर से बजानेवाला ६ स्टाप पेरिस रीड्स १५०), १४०), १३०); कैसरील रीड्स १७५), १६०), १५५)

७. कैपलर हार्मोनियम सिर्फ़ एक हाथ से बजाने से दोहरे स्वरों की आवाज़ देनेवाला ६ स्टाप ६०), ५५), ५०); पेरिस रीड्स ६०), ८५), ८०); कैसरील रीड्स १२०), ११५), ११०) दूसरी जगह रद्दी माल पर पैसा बरबाद न करें।

८. सफ़री हार्मोनियम ज़ाहिरा बक्स की शक्ल, आवाज़ बढ़िया पेटी भी अधिक। वज़न ८ सेर, सफ़र के लिये अत्युत्तम है। दाम ८०), ७५), ७०), ६५), ६०), ५५), ५०); पेरिस रीड्स १२०), ११०); कैसरील १४०), १३०), नक़्क़ालों से सदा सावधान रहें।

नोट—१०) मनीआर्डर द्वारा पेशगी भेजें, अपना नाम, पता, रेलवे स्टेशन आदि साफ़ लिखिए। पूरी क़ीमत पेशगी आने पर रेल-भाड़ा माफ़। १००) से अधिक के बाजे के साथ बढ़िया सुनहरी घड़ी मय पट्टा मुफ़्त इनाम।

मँगाने का पता—एल० डी० आहूजा ऐंड संस आहूजा बिल्डिंग्ज़ (S.L.2) ब्रांडर्थ रोड, लाहौर

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection. Digitized by eGangotri

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

असली पुस्तक अन्यत्र न मिलेगी

काश्मीरी कोकशास्त्र

५००) उस सज्जन को इनाम देंगे जो यह असली साबित करे कि यह पुराना पुस्तक असली नहीं।

(श्रीमान् कोका पं० महामंत्री काश्मीर की असली पुस्तक का अनुवाद)

नक़ली पुस्तक को लोग भारी दामों पर बेच रहे हैं। उनकी चिकनी-चुपड़ी बातों में पड़कर धोखे में न पड़ें।

पद्मिनी, चित्रिणी, शांखिनी और हस्तिनी तथा शशक, वृषभ, मृग और अश्व इन चारों प्रकार की स्त्रियों तथा पुरुषों की पहचान, उनका वर्णन, स्त्री-पुरुष का जोड़ा, स्त्री को आयु-भर स्वस्थ, सुंदर, सौंदर्य की देवी और अपनी आज्ञा माननेवाली बनाए रखना, मन-चाही सुंदर तथा बलिष्ठ संतान उत्पन्न करना, गर्भ में पुत्र-पुत्री की अथवा नेक व बद की पहचान, स्त्री-पुरुषों के जोड़ों का मिलान, संतान उत्पन्न न होती हो तो ज़रूर हो, पूरे सौ वर्ष तक हृष्ट-पुष्ट, सुंदर और स्वस्थ बने रहना, कुमारी भेद और लक्षण, प्रेम, प्रीति, परदा, स्त्री-पुरुष का परस्पर संबंध, स्त्रियों का रजोदर्शन अर्थात् ऋतु, उसका सामयिक प्रभाव, सहवास, विलासियों के लिये सहवास के नियम, गर्भाधान, चौरासी आसन, गर्भ-परीक्षा, गर्भोत्पत्ति, गर्भ-वृद्धि, गर्भ रोकना, प्रसव और शिशुपालन, स्त्रियों के शृंगार, उनके संबंध में समस्त यौवन-वर्द्धक आनंद-दायक मसाले, स्त्री-पुरुषों के कोकशास्त्र-संबंधी रोग और उनकी अद्भुत गुणकारी औषधियाँ, कामोद्दीपक दवाएँ, वशीकरण, स्त्री-पुरुषों की १३२ तसवीरें तथा ८४ आसनों के दिल-चस्प हालात दर्ज हैं। यही नहीं, स्त्री तथा पुरुषों की गुप्त बीमारियाँ आदि कई एक ऐसी दर्ज हैं, जो यहाँ लिखना उचित नहीं; पाठक समझ लें। इसके १३२ चित्र कानपुर, कलकत्ता वग़ैरह के मशहूर कारीगरों से बनवाए हुए हैं। क़ीमत उत्तम सुनहरी जिल्द, डाक-ख़र्च सहित २॥), रेशमी सुंदर जिल्द ३)

केवल १०) में ४ बढ़िया घड़ियाँ व १ फौंटेनपेन

१—जर्मनी बी० टाइमपीस, २—रेलवेरेगूलेटर वाच, ३—बढ़िया फ़ैंसी सुंदर रिस्टवाच, ४—बच्चों के लिये अति सुंदर बेबीज़ ट्वाय रिस्ट वाच मय चेन व तस्मों के, ५—एक बढ़िया फ़ौंटेनपेन।

एक दम ३ सेट लेने से डाक-खर्च माफ़

२०) की घड़ी से अकेली ही मुक़ाबिला करेगी

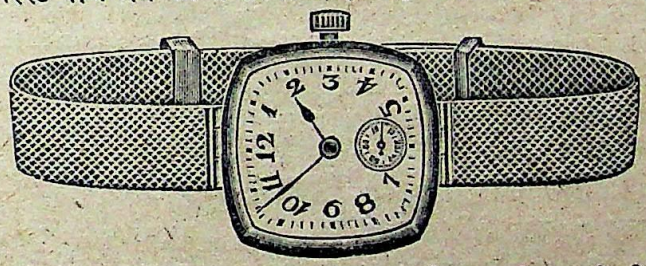

यह घड़ियाँ अति सुंदर मज़बूत फ़ैंसी और सच्चा समय देनेवाली हैं। इनकी असली क़ीमत २०) है, मगर विज्ञापत से ६ हज़ार की तादाद में इकट्ठी मँगाने की वजह से सस्ती पड़ी हैं; इस कारण हम भी सस्ते दामों बेच रहे हैं। इसलिये मँगाने में शीघ्रता करें और अपने इष्ट-मित्रों को भी इस विज्ञापन की सूचना दे दें, देर करने से यह सुअवसर जाता रहेगा, बिक जाने पर २०) में भी ऐसी उत्तम घड़ियाँ न मिलेंगी। ५ वर्ष की गारंटी का फ़ारम साथ मिलेगा। यह घड़ियाँ ३६ घंटे की चाबीवाली हैं। डाक-ख़र्च ॥।=) अलग।

सफ़ाई का ठेकेदार—नाज़ुक-से-नाज़ुक गुप्त जगह पर इस तेल को लगाने से वहाँ उमर-भर बाल पैदा न होंगे, दाग़-धब्बा न पड़ेगा, सबके काम की वस्तु है। फ़ी औंस २)

करामाती अँगूठी—

इसको विधि-अनुसार देखने से मृत आत्माओं के दर्शन व प्रवासी मित्रों से मुलाक़ात, चोरी का पता, मुक़द्दमा व इम्तहान की सफलता का हाल, रोगी का परिणाम आदि जो चाहें मालूम कर लें। मू० १) डा० ख़० ।=)

रबड़ की तिलस्मी थैलियाँ असली

शारीरिक रक्षा और आनंद प्राप्त करने की सरल और सुंदर युक्ति और कई प्रकार की शारीरिक व्याधियों से बचानेवाली यह वस्तु है। इनको धारण करने से आतशक, सुज़ाक आदि रोग नहीं होते। १ थैली मुद्दतों काम देती है। बड़े मज़े की चीज़ है। दाम मरदानी थैली ३), २॥), २), १॥) नक़ली थैली १॥), १), ॥), ॥) ज़नानी थैलियाँ जिनको धारण करने से बढ़ती औलाद पर क़ाबू रहता है और न होगी ३), ४), ५)

पता—मैनेजर दी अमरीकन मैजिक हाउस, (S. L.) पारसन रोड, लाहौर।

CC-0. In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रोतों को हँसाने और मुरदादिलों को ज़िंदादिल बनानेवाली अद्वितीय पुस्तक

यदि हँसते-हँसते पेट में बल न पड़ जायँ तो कहना

हँसी का गोलगप्पा

यह अनुपम पुस्तक चटकीले, चुलबुले मज़मून से भरी हुई है। इसकी एक कहानी पढ़ने से हँसते-हँसते पेट में बल पड़ जाते हैं। आदमी ख़्वाह कितना ही उदास क्यों न हो, इसकी एक ही मनोरंजक कथा पढ़ने से दुःख दूर हो जाते हैं। इस पुस्तक में कई प्रकार की हास्य-रस से भरपूर कहावतें, पहेलियाँ और विचित्र-विचित्र दोहे-श्लोक आदि-आदि हर प्रकार के लोगों के लिये ऐसे अनोखे, अनूठे लतीफ़े बड़े परिश्रम से संपादन करके अंकित किए गए हैं, जिनसे पढ़नेवालों के दिल-दिमाग़ के कपाट खुल जाते हैं। इस पुस्तक ने इस विषय की सब पुस्तकों को मात कर दिया है। अर्थात् इस पुस्तक को अद्वितीय बनाने में कोई न्यूनता बाक़ी नहीं छोड़ी। शीघ्र मँगवाकर आनंद उठाइए। बड़े आकार के २०४ सफ़े। मूल्य उत्तम जिल्दवाली १॥), डाक-ख़र्च ॥) अलग।

यक्षिणी-भैरव साधनम्

इस पुस्तक में नाना प्रकार के चमत्कार यंत्र-मंत्र आदि विषय सरल हिंदी-भाषा में लिखे गए हैं। जिनसे विद्वान् तथा अल्पपठित पुरुष भी अपनी मनोकामना पूर्ण कर सकते हैं। योग-विद्यावर्णन, यक्षिणी तथा शिव, विष्णु, ब्रह्मा, सूर्य, चंद्र, भैरव, महावीर देवतों की सिद्धि प्राप्त करके अपनी आशाएँ पूर्ण होती हैं। क़ीमत २॥), डाक-ख़र्च-सहित।

बंगाल देश का जादू—बंगाल देश जादू में बड़ा मशहूर है। आपने कहानियों में पढ़ा होगा कि एक आदमी बंगाल देश में चला गया और उस देश की स्त्रियों ने उसको पकड़कर भेड़ या बकरा बनाकर अपने पास रख लिया। यह बातें बिलकुल ठीक हैं और उन्हीं कहानियों को पढ़कर कई महाशयों का जी यही चाहता है कि हम भी वैसे ही जादूगर बन जावें। इसी वास्ते यह पुस्तक तैयार की है। इसमें सब प्रकार के सहज रीतिवाले तंत्र, मंत्र, यंत्र अंकित कर दिए हैं कि सर्व साधारण इसे पढ़कर अपनी इच्छा पूर्ण कर लें। कई रोगों के यंत्र, सर्प आदि जीवों को वश करना, आमदनी बढ़ाने के मंत्र, भूत-प्रेत को दूर करना आदि विषय भी दर्ज हैं। मूल्य १), डाक-ख़र्च-सहित।

फ़रंगी और हिंदुस्तानी मदारी अर्थात् भानमती का पिटारा

यह पुस्तक योरप और हिंदुस्तानी मदारियों का पिटारा है। इसमें अंडे, बोतल, गिलास, फुलझड़ी, रुपया, ताश के हर प्रकार के खेल, भूत-प्रेत, जिन्न उतारना, अँधेरे में रोशनी कर देना, मुँह से आग निकालना, हाथ पर आग रक्खें तो हाथ न जले, मनुष्य को क़त्ल करके ज़िंदा कर देना, आम का बूटा, सरसों हाथ पर जमाना, बिना भट्टी जुआर-चने भून लेना, आग पर खाना न पके, बँधे मनुष्य को छुड़ाना, क़ैदी की बेड़ी खुल जावें, काग़ज़ की कढ़ाई में पकौड़ी तलना, कमरे में हर रंग की रोशनी कर देना, जादू की स्याहियों के नुस्ख़े जिनसे लिखा हुआ अन्य मनुष्य पढ़ न सके और सैकड़ों तमाशे बहुत ही सरल रीति से लिखे हैं। मूल्य १॥), डाक-महसूल-सहित।

असली पुराना मिस्र का जादू सचित्र रंगीन संपूर्ण (दसवाँ एडीशन)

(मिस्र-देश के प्रचलित जादू-विद्या की एक हस्त-लिखित पुस्तक का तर्जुमा)। अपनी छाया, सूर्य, शनि, चंद्रमा, मंगल आदि ग्रहों को सिद्ध करना (मूसा फ़रऊन के समय की विचित्र बातें आप मँगा करके देख लो)। (१) वशीकरण, (२) सूर्यवशीकरण, (३) चंद्रवशीकरण, (४) मंगलवशीकरण, (५) शनिवशीकरण, आदि प्रत्येक ग्रह का वशीकरण और इसके सिवा अन्य कई चीज़ों के वशीकरण करने के लिये पूर्ण विधियों से युक्त चकित करनेवाले नुस्ख़े दर्ज किए हैं। इसके सिवा हर तरह के साधन रोगों पर करना, घर बैठे और देशों की सैर करना, हवा में उड़ते फिरना, जिस को चाहना वश कर लेना, दृष्टि से गुप्त हो जाना, दूसरे रूप में प्रकट होना, दूर-दराज़ की वस्तु मँगवा लेना, देव, परी, जिन्नों को अपने अधिकार में रखना और इच्छानुसार उनसे काम लेना इत्यादि—यदि यह पुस्तक लिखे-अनुसार न हो, तो वापस कर दो, क़ीमत सजिल्द सिर्फ़ २), डाक-महसूल-सहित।

१,०००) रुपया माहवार शर्तिया कमा लो (चौथा एडीशन)

इस पुस्तक में ५२८ हुनर ऐसे छपे हैं, जिनमें से एक भी अपने मतलब का चुन लिया जाय, तो १,०००) रु० महीना कमाए जा सकते हैं। मसलन् गिलटसाज़ी, फ़ोटोग्राफ़ी, दंदानसाज़ी, कुश्ते बनाना, बाल उड़ाने का तेल, पाउडर, साबुन, बाल काले करने का अँगरेज़ी ढंग का ख़िज़ाब और बाल उम्र-भर न पैदा होने का नुस्ख़ा, मूछ बढ़ाने का तेल, हीरा-मूँगे बनाना, शीशा साफ़ करना, पत्थर जोड़ना, मोमबत्ती, शोरा गंधक के गिलास, आतश-बाज़ी हर तरह के साबुन, इत्र, तेल, फुलेल, सब रंगों के कपड़े रँगना, अँगरेज़ी ढंग के खाने, डबल रोटी, बिस-कुट, मिठाई विलायती सोडावाटर, अचार, मुरब्बे, चटनियाँ, तरह-तरह की बीमारियों के इलाज और नुस्ख़े, १०८ बीमारियों की एक दवा का नुस्ख़ा, आदि ५२८ हुनर दर्ज हैं। मूल्य डाक-महसूल-सहित सजिल्द १॥=) ४७४

पता—लक्ष्मणदास आहूजा ऐंड संस, आहूजा बिल्डिंगस S.L.2 ब्रांडर्थ रोड, लाहौर

CC-0. In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जादू की चकित करनेवाला खेलें !

ये वह खेल हैं जिन्हें देखकर राजे, महाराजे, रईस और अमीर चकित होकर खेलाड़ी को रुपयों से भरपूर कर देते हैं। आप ये खेल-कूद करना चाहते हैं, तो शीघ्र मँगाइए। इनके भेद भी अन्य मनुष्य नहीं जान सकते। जिस सभा में आप ये खेल दिखावेंगे, देखनेवाले अति प्रसन्न होंगे। खेल करने की विधि छपी हुई हरएक खेल के साथ भेजेंगे, जिसे पढ़कर आप उसी समय सीख जाएँगे। २) से कम क़ीमत का कोई पार्सल न भेजेंगे। हरएक ग्राहक से डाक-व्यय माफ़। सब मँगाने से १०) सै० कमीशन। तमाम खेलों के आर्डर के साथ १०) मनीऑर्डर द्वारा पेशगी भेजें। अपना नाम पता डाकख़ाना ज़िला साफ़ लिखें।

खेल-नं० १—यह एक रूमाल है, जिसमें सबके सामने ग्लास रखकर झटका देने से गुम हो जाता है, फिर उसी से निकलता है। मूल्य १॥)

खेल-नं० ३—यह ताश का नहला है। सबको दिखला दो। उसी वक्त नहले का पंजा बन जायगा। मूल्य ॥)

खेल-नं० ४—यह दियासलाई की डिब्बी भरी हुई है। तमाशा करनेवाला इसको भरी हुई दिखलाकर उसी वक्त खाली दिखाता है। मूल्य ॥।)

खेल-नं० ५—यह पत्ते तीन हालतें बदलते हैं। पहली बार हाथ फेरने से इक्के, दूसरी बार ख़ाली और तीसरी बार पंजे बन जायँगे। मूल्य ॥)

खेल-नं० ६—सबको अट्ठे दिखाकर हाथ फेरो, सफेद पत्ते हो जायँगे। फिर हाथ फेरने से अट्ठे बन जायँगे। मूल्य ॥)

खेल-नं० ७—यह एक टीन की मेज़ है एक ताश का पत्ता जलाकर या फाड़कर उसमें रख दें, फ़ौरन् साबुत हो जायगा। मूल्य १॥)

खेल-नं० ८—ताश जिसके अलग पत्ते दिखाकर फेंटना शुरू करें, तो खींचने से बाजे की सूरत बन जायगी। मूल्य ॥)

खेल-नं० १०—खेल करनेवाला ताश के पत्ते दिखाएगा, जो हाथ फेरने से छोटे हो जायँगे। फिर चौथाई, फिर आठवाँ हिस्सा, फिर बिलकुल ग़ायब हो जायँगे। २)

खेल-नं० ११—यह ताश के एक रंग की बेगम है, जो सबके सामने दूसरे रंग की बेगम बन जाती है। मूल्य ॥)

खेल-नं० १२—यह सुर्मेदानी की शक्ल की डिबिया है। इसके भीतर एक गोला है। गोले को हुक्म करने से कभी उसके भीतर से ग़ायब और कभी बरामद हो जाता है। मूल्य १॥)

खेल-नं० १३—यह एक डिबिया है, जिसमें सबके सामने पूरे ताश का बंडल डाल दो और फिर खोलने से ताश की जगह रूमाल निकलेंगे। मूल्य १॥)

खेल-नं० १४—ये दो जुड़े हुए रेशमी रूमाल हैं, जो एक रंग के हैं। इसके ऊपर हाथ फेरें, फ़ौरन् रंग बदल जायँगे। मू० ५)

खेल-नं० १५—समूचा ताश हाथ में है। दूसरा आदमी कोई पत्ता देख ले। फिर वह पत्ता ताश में रख दे और जो कोई आदमी उसी पत्ते को आवाज़ दे पत्ता फ़ौरन् कूदकर बाहर निकल आवेगा। बहुत ही उत्तम खेल है। मू० १)

खेल-नं० १६—यह एक बैल है, जो एक क्षण में कई शक्लें बदलता है। मू० १॥)

खेल-नं० १७—यह लकड़ी का गेंद धागे में पिरोया हुआ है। एक सिरा पैर में और एक हाथ में पकड़कर गेंद को जितना चलने का हुक्म दोगे, चलेगा। मूल्य ॥)

खेल-नं० १८—इस मज़ाकिया खेल को सबके सामने फूँक मारो चक्कर चलेगा दूसरे आदमी को कहो फूँकमारे बजाय चक्कर चलने के उसका मुँह काला हो जावेगा। मू० १॥)

खेल-नं० १९—यह एक कपड़े की थैली है। इसमें जो डालो, फौरन् ग़ायब, फिर हुक्म करने से इसी से निकलेगा। मू० ॥)

खेल-नं० २०—किसी की टोपी लेकर कहो कि तुम्हारी टोपी फटी है। वह कहेगा नहीं, फौरन् उँगली मारकर फाड़दो। मगर जिस वक़्त उँगली निकालोगे, टोपी साबुत होगी। मू० ॥।)

खेल-नं० २१—किसी की टोपी लेकर सबको ख़ाली दिखाओ। फिर बहुत लंबी बेलें निकालते जाओ। मूल्य १॥)

खेल-नं० २२—किसी की टोपी लेकर ख़ाली दिखादो। फिर उसे सामने रखकर उसके अंदरसे मनीबेग निकालकर ढेर लगा दो। देखनेवाले हैरान होंगे। मूल्य १॥)

खेल-नं० २३—यह आश्चर्यकारक बक्स है। सबको खाली दिखाकर झटकादो, तो इसमें से रूमाल, काग़ज़ आदि निकलेंगे और देखनेवाले दंग हो जायँगे। मूल्य २)

खेलनं० २४—पहले काग़ज़ के छोटे-छोटे टुकड़े मुँह में डाले जाते हैं, जो साबुत होकर लंबे बन जाते हैं। मूल्य ॥)

खेल-नं० २५—आप किसी की टोपी लें और सबको ख़ाली दिखाकर बहुत लंबा हंटर टोपी के अंदर से निकालकर दिखाएँ लोग हैरान होंगे। मूल्य ॥।)

खेल-नं० २६—पहले लोगों को कुछ पत्ते दिखाकर और ताश में रखकर ग्लास में रक्खे जाते हैं, जो आवाज देने से बारी-बारी खुद-ब-खुद निकल आते हैं। मू० २॥)

खेल-नं० २७—एक पत्ता सबके सामने बोतल के मुँह पर खड़ाकर दिया जाता है। फिर उस पर ग्लास रखते हैं, जिसे देखकर लोग दंग होते हैं। मू० १)

खेल-नं० २८—ताश फेंटते-फेंटते खेल करनेवाला ताश में से फूल या मेवा निकालता है। अत्यंत अद्भुत खेल है। मू० १॥)

खेल-नं० २९—सबके सामने रुपया हाथ पर नाचने लगता है, जिसे देखकर लोग दंग होते हैं। मूल्य १)

खेल-नं० ३०—इस खेल का नाम फ्री पान है, इसमें अंडे रखकर और ऊपर से बंद करके ढकना उठा लो, तो अंडों की जगह कबूतर बरामद होंगे। मू० २॥)

खेल-नं० ३१—तमाशा करनेवाला एक ख़ाली टोपी दिखाकर रूमाल निकालता है। फिर उसमें से एक-एक करके बहुत-से अंडे निकालकर टोपी में डालता है। लोग टोपी में अंडे समझते हैं, दिखाने से ख़ाली टोपी पाकर हैरान होते हैं। मूल्य ३॥)

खेल-नं० ३२—सबको दिखाकर पूरा ताश का बंडल रखकर खड़े हो। जिस-जिस पत्ते को आवाज दोगे, वह कूदकर बाहर आ जावेगा। मूल्य ३॥)

खेल-नं० ३३—यह राइजिंग कॉर्ड है। किसी के देखे हुए पत्ते ताश में से कूदकर दूसरे हाथ की तरफ दौड़ते हैं। मू० २)

खेल-नं० ३४—१ रूमाल में रु० लपेटकर दूसरे के हाथ में दें रूमाल ख़ालीहोगा १)

खेल-नं० ३५—ये लकड़ी के गोले हैं, पहले १ गोला होता है फिर उसी के दो बनते हैं। फिर ३व४ बनकर फिर घटते-घटते १ रह जाता है। मूल्य २)

पता—मैनेजर दी अमरीकन मैजिक हाउस, (S. L.) पारसन रोड, लाहौर।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निवेदन—स्वयं ग्राहक बनकर व अपने मित्रों को बनाकर साहित्य और देश-सेवा के इस उद्योग में सहायक होइए।

१) में ५०० से ६०० पृष्ठों की उत्तम पुस्तकें

लागत मूल्य में हिंदी-पुस्तकें प्रकाशित करनेवाली भारतवर्ष की एक-मात्र सार्वजनिक संस्था

सस्ता-साहित्य-मंडल, अजमेर

संस्थापक—सेठ घनश्यामदासजी बिड़ला, सेठ जमनालालजी बजाज आदि

अब तक डेढ़ वर्ष में पाँच हज़ार पृष्ठों के ऊपर की २६ पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं

पुस्तकों का पूरा वर्णन बड़ा सूचीपत्र मँगाकर पढ़िए—कुछ पुस्तकों के नाम नीचे लिखे जाते हैं।

सस्ता-साहित्य-माला

(१) दक्षिण आफ्रिका का सत्याग्रह [म० गांधी] (पूर्वार्द्ध) पृष्ठ २७२ मूल्य ।।।)
(२) तामिल-वेद [महर्षि त्रिरुवल्लुवर] पृष्ठ २५० मूल्य ।।=)
(३) स्त्री और पुरुष [टाल्स्टाय] पृष्ठ १६० मू०।=)
(४) हाथ की कताई-बुनाई पृष्ठ २६० मूल्य ।।=)
(५) चीन की आवाज़ पृष्ठ १३० मूल्य ।-)
(६) जीवन साहित्य [कालेलकर] पृष्ठ २१८ मू०।।)

नीचे लिखे ग्रंथ छप रहे हैं

(१) आत्म-कथा [म० गांधी] पृष्ठ लगभग ४५० मूल्य ।।=)
(२) दक्षिण आफ्रिका का सत्याग्रह [म० गांधी] (उत्तरार्द्ध) पृष्ठ २२८ मूल्य ।।)

सस्ती प्रकीर्ण माला

(१) ब्रह्मचर्य-विज्ञान पृष्ठ ३७४ मूल्य ।।।-)
(२) यूरोप का संपूर्ण इतिहास पृष्ठ ८३० मूल्य २)
(३) स्वामीजी का बलिदान और हमारा कर्तव्य (ले० पं० हरिभाऊ उपाध्याय) पृष्ठ १२८ मू०।-)
(४) तरंगित हृदय (गुरुकुल काँगड़ी के आचार्य पं० देवशर्मा विद्यालंकार) पृष्ठ १७५ मू० ।=)
(५) गंगागोविंदसिंह (चंडीचरणसेन) पृ० २८८ मूल्य ।।=)

फ़रवरी सन् १९२८ तक छप जावेंगे

(१) गोरोंका प्रभुत्व (रामचंद्र वर्मा) पृष्ठ २७४ ।।=)
(२) जीवन साहित्य (दूसरा भाग) पृ० २००मू०।।)
(३) अनोखा (विक्टर ह्यूगो का उपन्यास) पृ० ३०० मूल्य लगभग ।।।)

उपर्युक्त मूल्य सर्व साधारण का है। ग्राहकों को पौनी क़ीमत में पुस्तकें मिलती हैं।

नियम—प्रति वर्ष मंडल से ३२०० पृष्ठों की लगभग अठारह-बीस पुस्तकें प्रकाशित होती हैं। स्थायी ग्राहकों से इन पुस्तकों का लागत मूल्य केवल ६) और डाक-व्यय २) इस तरह ८) वार्षिक मूल्य लिया जाता है। स्थायी ग्राहक बनने के लिये केवल एक बार एक रुपया प्रवेश फ़ीस ली जाती है। इस तरह पहले वर्ष ९) भेजना चाहिए। आगामी वर्षों में वही ८) लेने का नियम है। स्वयं ग्राहक बनिए और अपने मित्रों को बनाइए।

प्रचारकों व एजेंटों की आवश्यकता है। पत्र भेजकर नियम पूछ लें।

पता—सस्ता-साहित्य-मंडल, अजमेर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बड़ी विशेषता इनके मूल्य में जल्दी-जल्दी या बहुत अधिक प्रमाण में घटती-बढ़ती का न होना है। इसका एक कारण यह है कि ये ऐसे पदार्थ हैं कि सारा संसार ही इनका ग्राहक है, और, मार्ग-व्यय अधिक न होने के कारण, ये एक देश से दूसरे देश में आसानी से ले जाए जाते हैं। भाव की स्थिरता का मुख्य कारण यह है कि सोना तथा चाँदी ख़र्च तो होती नहीं, बल्कि एक जगह से दूसरी जगह आती-जाती रहती है, और जहाँ कहीं कमी पड़ी, वहाँ, जहाँ इनका आधिक्य है, वहाँ से तब तक आयात होता रहता है, जब तक दोनों जगह के मूल्य में समानता न आ जाय। और, इसके होने में देर भी नहीं लगती। अगर कहीं, किसी देश में, खान से अधिक सोना या चाँदी निकल आई, तो ऐसा न होगा कि इनका भाव एकदम उतर जाय, बल्कि सारे संसार में वे बँट जायँगी, और भाव जैसा-का-तैसा बना रहेगा। परंतु इसका मतलब यह भी नहीं समझ लेना चाहिए कि इनका भाव कभी चढ़ता-उतरता ही नहीं। भाव में कमी-बेशी होती है ; पर बहुत धीरे-धीरे और बहुत थोड़ी। इन्हीं कारणों से सोना और चाँदी माध्यम बने, और अन्य चीज़ें नहीं बन सकीं। अन्य चीज़ें (गऊ, बैल, चावल, तंबाकू, चमड़ा आदि) ऐसी हैं, जिनमें किसी का टुकड़ा नहीं किया जा सकता, तो कोई शीघ्र नष्ट हो जाती है, किसी को लाने-ले जाने में दिक़्क़त है, तो किसी का मूल्य ही सदा घटता-बढ़ता रहता है। धातुओं में भी सोने-चाँदी को ही यह विशेषता इस-लिये मिली कि माध्यम के उपयुक्त अधिक उपयोगी गुण इन्हीं में अधिक-से-अधिक मिले।

पहले लोग सोने के टुकड़े (डली) से ही काम चलाते थे। परंतु उसे बारंबार तौलने की आवश्यकता होती थी; क्योंकि बिना तौले यह पता नहीं चल सकता था कि वह डली वास्तव में कितनी है। इसके लिये लोगों को एक छोटा-सा तराज़ू और बाँट भी सदा अपने पास रखने पड़ते थे। इस तौल-बाँट में बड़ी दिक़्क़त पेश आती थी, और इस कारण धीरे-धीरे लोगों ने सिक्का बनाने की युक्ति सोच निकाली। सोने के चौखूँटे तथा और भी कई प्रकार के टुकड़े काट-काटकर उनका वज़न उन पर लिख दिया करते थे। परंतु धोकेबाज़ और बदमाश लोग ऐसे टुकड़ों से सोना चुरा लेते थे, इस कारण सिक्के के वज़न और उसके मूल्य पर विश्वास ही नहीं होता था। परंतु आगे चलकर राजों ने यह कार्य अपने हाथ में लिया, और इसमें सुधार करने की अनेक युक्तियाँ सोची जाने लगीं। अंत में इन धातुओं को वह रूप प्राप्त हुआ, जिसमें वे आजकल विभिन्न देशों में प्रचलित हैं। आजकल सर्वत्र के सिक्के गोलाकार होते हैं। और, धूर्त एवं धोकेबाज़ों से उनकी रक्षा के लिये एक ओर शासक या शासन-संबंधी संस्था की छाप तथा दूसरी तरफ़ उसका मूल्य तथा कुछ बेल-बूटे बना देते हैं। उनके किनारों को एक विशेष प्रकार से काट भी देते हैं। भिन्न-भिन्न देशों में इसी प्रकार धीरे-धीरे सिक्कों का विकास होता गया, और वहाँ विभिन्न धातुओं के सिक्के चलते गए। लोहा, ताँबा, जस्ता, राँगा, प्लाटिनम्, सोना, चाँदी आदि अनेक अन्य धातुओं के सिक्के बनते रहे, और विभिन्न देशों की उन्नति—समृद्धि—के साथ-साथ उन देशों के सिक्कों में सुधार भी होता गया। आजकल प्रायः सभी समृद्ध, उन्नत और सभ्य देशों में सोने के ही सिक्के मुख्य और आदर्श-रूप से चलते हैं ; केवल भारत-वर्ष और चीन-जैसे दो-एक मुख्य देश हैं, जिन्हें आज-कल अपनी पराधीनता और दीनता के कारण चाँदी के, और वह भी नक़ली, सिक्कों से ही काम चलाना पड़ता है।

मुद्रा मूल्य का मापक, आपस के लेन-देन का माध्यम और विदेशी विनिमय का आधार है। मूल्य स्वतः कोई चीज़ नहीं। वह एक वस्तु से दूसरी वस्तु के संबंध का परिणाम-परिचायक है। वस्तु का गुण उसके अंदर निहित उसका गुण—शक्ति—है, और उस वस्तु का उसकी शक्ति के अनुसार ही मूल्य आँका जाता है, निश्चित किया जाता है। स्पष्ट रूप से समझने के लिये यों कहना चाहिए कि जिसके सहारे या आधार पर परस्पर अदला-बदली हो सके, और विभिन्न वस्तुओं की शक्ति का परिचय एक निश्चित संख्या में दिया जा सके, वही मूल्य है, और मुद्रा ठीक यही कार्य करती है, जिसके कारण उसे मूल्य का मापक कहते हैं। लेन-देन का माध्यम कैसे है, यह ऊपर स्पष्ट किया जा चुका है कि मुद्रा के प्रचार के साथ ही मानव-समाज की लेन-देन-संबंधी कठिनाइयाँ दूर हुईं, इसके द्वारा मनुष्य अपनी पैदावार की एक ही या दो प्रकार की वस्तुओं को बेचकर एक ऐसी चीज़ (मुद्रा) प्राप्त कर लेता है, जिससे वह अपनी सारी आवश्यकताओं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को बड़ी आसानी से पूरा कर लेता है—उसे अपना चावल, कपड़ा, रुई या ऐसी अन्य चीज़ों को लेकर बीसों व्यक्तियों के पास दौड़ना नहीं पड़ता। इसी प्रकार सभ्यता के विकास और मुद्रा की उन्नति के साथ-साथ तीसरा तरीक़ा—अर्थात् मुद्रा का विदेशी विनिमय का आधार होना—भी अधिकता के साथ प्रयोग में आने लगा। वास्तव में जब तक मुद्रा का ख़ूब प्रचार और अधिक विस्तार न हो, तब तक किसी देश के वाणिज्य-व्यवसाय की न समुचित समृद्धि हो सकती है, और न उसका अंतर-जातीय व्यापार ही बढ़ सकता है। इसी कारण मुद्रा विदेशी विनिमय का आधार कहलाती है।

वर्तमान समय में सारे संसार में तीन प्रकार के सिक्के (मुद्रा) प्रचलित हैं—(१) असली या आदर्श सिक्का (Standard money), (२) नक़ली सिक्का (Token money), (३) काग़ज़ी मुद्रा या नोट (Paper money)।

असली सिक्के पर उसकी क़ीमत ठीक उतनी ही लिखी रहती है, जितनी क़ीमत की धातु वास्तव में उस सिक्के में होती है। इस प्रकार के सिक्के अपरिमित संख्या में बनाए जा सकते हैं। कोई भी व्यक्ति सोना लेकर टकसाल में चला जाय, उसे ठीक उसी तौल के सिक्के वहाँ से प्राप्त हो जायँगे। अमेरिका का सिक्का 'डालर' फ़्रांस का 'फ़्रैंफ' और इँगलैंड का 'सावरेन' या 'पौंड' ठीक इसी प्रकार के सिक्के हैं। उनकी धातविक और मौद्रिक क़ीमत समान होती है। उन्हें चाहे हम इन दोनों में किसी भी रूप में एक-सा चला सकते हैं। यह आदर्श मुद्रा ही प्रत्येक देश का क़ानूनी भुगतान (Legal tender) होती है। इस प्रकार की आदर्श मुद्रा से बड़ा भारी लाभ यह होता है कि देश में आवश्यकता से अधिक मुद्रा रहने नहीं पाती। मुद्रा की संख्या बढ़ने से क़ीमत पर असर पड़ता है, वह बढ़ जाती है। पर वस्तुओं की संख्या परिमित रहती है। इस कारण पहले एक चीज़ की क़ीमत जितनी रही होगी, वह अब उससे बढ़ जायगी। फल-स्वरूप सोने की क़ीमत सोने के रूप में अधिक और मुद्रा के रूप में कम हो जायगी। इससे मुद्रा को गला-गलाकर लोग बाज़ार में, सुवर्ण के रूप में, बेचने लगेंगे। इसी प्रकार इसके विपरीत स्थिति में भी होगा, अर्थात् मुद्रा के कम होने की हालत में सभी वस्तुओं के साथ सुवर्ण की भी क़ीमत घटेगी, और होशियार लोग सोने को सिक्के के रूप में परिणत कर लाभ उठाने से बाज़ न आवेंगे। इस प्रकार यह स्पष्ट हो जाता है कि सिक्कों की संख्या सदा ज्यों-की-त्यों बनी रहेगी। इसके माने ये हैं कि वस्तुओं की क़ीमत पर इनका कुछ असर नहीं पड़ेगा, और उसमें 'सिक्के' के कारण कोई चढ़ाव-उतार न होगा, जिससे वाणिज्य-व्यवसाय को लाभ होगा।

भारतवर्ष में ऐसी कोई आदर्श (Standard) मुद्रा नहीं है। यहाँ पर चाँदी का रुपया प्रचलित है, जिसका वास्तविक मूल्य केवल ॥=) के लगभग है। साथ ही, आदर्श मुद्रा की भाँति, उसकी संख्या अपरिमित नहीं, बल्कि परिमित है, और गवर्नमेंट जब जितना चाहती है, ढालती है। इस कारण, मुद्रा की संख्या की घट-बढ़ के समान ही, वस्तुओं के मूल्य भी घटते-बढ़ते रहते हैं, जिसका असर देश के वाणिज्य-व्यवसाय पर भी पड़ता है। यह है हमारे देश की विचित्र मुद्रा-प्रणाली, जिसके कारण आज हिंदोस्तान का सारा सोना बटोर-बटोरकर इँगलैंड में जमा किया जाता और भारतवासियों से ॥=) (दस आने) की जगह १) (सोलह आने) वसूल कर आँखों में ज़बर्दस्ती धूल झोंकी जाती है। हमारी अवस्था ही ऐसी कर दी गई है कि पग-पग पर हमें अपनी पराधीनता का कुफल भोगने को वाध्य होना पड़ता है।

भारत की यह बेढंगी—विचित्र—मुद्रा-प्रणाली 'सुवर्ण-विनिमय-माध्यम' (Gold exchange standard) कहलाती है। किसी भी दूसरे देश से व्यापार करने के लिये, या वहाँ अन्य ही किसी कार्यवश भेजने के लिये, रुपयों को पहले पौंड में बदलना पड़ता है; फिर वे किसी दूसरे सिक्के में बदले जा सकते हैं। इसका कारण यह है कि एक तो दूसरे देशों में आदर्श मुद्रा के रूप में सोने के ही सिक्के चलते हैं, दूसरे हमारा रुपया चाँदी का होने पर भी नक़ली सिक्का है। इस प्रकार इस सोने-चाँदी की अदल-बदल में अकसर भारतवासियों को अपने व्यापार में नुक़सान और गड़-बड़ियों का मुक़ाबला करना पड़ता है; साथ ही भारत-सरकार को भी मौक़े-बे-मौक़े ख़ूब हानि उठानी पड़ती है।

दूसरी प्रकार की मुद्रा नक़ली या कृत्रिम (Token money) मुद्रा है। ये छोटे-छोटे मूल्य की होती हैं,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तथा मनुष्य के रोज़मर्रा के छोटे-मोटे कामों में इस्तेमाल करने के लिये बनाई जाती हैं। इकन्नी, दुअन्नी, चवन्नी आदि या सेंट, पेंस, फ़ार्दिंग आदि ऐसी ही मुद्राएँ हैं। किसी भी कम-क़ीमती धातु का सिक्का बनाकर उस पर कल्पित मूल्य लिख दिया जाता है, और वे उसी मूल्य पर चलने लगती हैं। वास्तव में बहुमूल्य धातुओं (सोने-चाँदी) के छोटे-छोटे सिक्के बनाना न तो लाभदायक ही है और न सुविधाजनक ही ; क्योंकि बहुमूल्य धातु के छोटे सिक्के अगर बनाए जायँगे, तो वे बहुत छोटे होंगे, जिससे उनके खोने आदि का भी सदा भय रहेगा, साथ ही वे एक परिमित संख्या से अधिक क़ानूनन् ग्राह्य (Legal tender) भी नहीं होते कि अधिक संख्या में उनका व्यवहार किया जा सके। किसी के भी पावने में उसे इन नक़ली सिक्कों को एक बड़ी संख्या में लेने के लिये कोई बाध्य नहीं कर सकता। इस काम के लिये तो किसी भी देश का वह आदर्श सिक्का ही होता है, जो क़ानूनन् ग्राह्य तथा इसी कारण उपयुक्त और सुविधाप्रद भी होता है। साथ ही इस प्रकार के सिक्के अपरिमित संख्या में इसलिये भी नहीं चलाए जाते कि ऐसी हालत में लोग इसको एक प्रकार का व्यवसाय ही बना लेंगे ; क्योंकि दुनिया की प्रवृत्ति सदा स्वार्थ-साधन और लाभ की ओर ही होती है, और इस अवस्था में जब नक़ली और असली, दोनों सिक्के समान रूप से अपरिमित संख्या में ढाले जा सकेंगे और चलते रहेंगे (और इस हालत में वे क़ानूनन् ग्राह्य भी होंगे ही), तो लोगों के लिये यह एक बहुत आसान और मामूली बात होगी कि वे किसी का पावना या ऋण चुकाने के लिये नक़ली—कम-क़ीमती—सिक्के ही उसे दें, और बहुमूल्य धातुवाले सिक्कों को गलाकर, धातु के रूप में बेचकर, अधिक मूल्य प्राप्त कर लाभान्वित हों। यह ग्रेशम का सिद्धांत है कि जब दो प्रकार के सिक्के क़ानूनन् ग्राह्य होंगे, तो बुरे—नक़ली, कम-क़ीमती—सिक्के अच्छे सिक्कों का स्थान ले लेंगे, और कुछ ही दिनों में देश में सर्वत्र ख़राब—वे ही, कम-क़ीमती—सिक्के दिखलाई पड़ेंगे, असली—आदर्श, बहुमूल्य—सिक्के बिलकुल अदृश्य हो जायँगे। इसी प्रकार जिन सिक्कों पर बट्टा लगने लगता है (बट्टा उन्हीं सिक्कों पर लगता है, जो कम-क़ीमती या कमज़ोर [Weak money] होते हैं)—जैसे काग़ज़ी सिक्का—वे सिक्के भी, मज़बूत, बहुमूल्य, जिन पर बट्टा नहीं लगता, ऐसे सिक्कों का स्थान ले लेते हैं, उन्हें ग़ायब कर देते हैं। इसका कारण वही उपर्युक्त है कि मनुष्य अपने लाभ की बात सोचता और करता है। अगर ज़रा भी ग़ौर से सिक्कों के चलन की ओर हम ध्यान दें, तो पता चलेगा कि मनुष्य साधारण अवस्था में भी (जब कि कम क़ीमतवाले सिक्के अपरिमित रूप से चालू न हों) सदा मज़बूत (Strong money) सिक्का (ऐसा, जो न घिसा हो, न बहुत पुराना हो और न उस पर बट्टा ही लगता हो) अपने पास रखना चाहता है, और कमज़ोर—कम-क़ीमती—ऐसा, जो घिसा है, पुराना हो गया है और जिस पर बट्टा भी लगने लगा है, उसको पहले खपाना चाहता है। इन्हीं बातों को सोच और जानकर गवर्नमेंट कम-क़ीमती—नक़ली—सिक्कों की संख्या सदा परिमित रखती है, एक निश्चित संख्या—जितने की आवश्यकता है—से आगे बढ़ने नहीं देती।

तीसरा सिक्का काग़ज़ी नोट या पत्र-मुद्रा है। पाठकों को उपर्युक्त बातों से मालूम हो गया होगा कि सिक्कों का काम मूल्य मापकर, वस्तुओं को विनिमय-साध्य बनाकर, मनुष्यों की लेन-देन-संबंधी रोज़मर्रा की कठिनाइयों को दूर करने के सिवा और कुछ नहीं है। साथ ही वे यह भी जानते हैं कि सोने-चाँदी के सिक्के बराबर व्यवहार में आते रहने से बहुत घिस जाते हैं। और, कुछ अंश तक यह बात भी मान्य है ही कि सोने-चाँदी के सिक्के लेने या ले जाने में—अगर अधिक संख्या में ले जाना हो—असुविधा भी होती है। इन्हीं बातों को सोच-कर बुद्धिमानों ने काग़ज़ी सिक्के (नोट) चलाए हैं। काग़ज़ी सिक्का चलानेवाला यह वादा करता है कि यह नोट चाहे जब सोने-चाँदी के सिक्कों में बदल दिया जा सकता है, और उसकी इसी साख—विश्वास—पर ये काग़ज़ी सिक्के सर्वग्राह्य रूप से प्रचलित होते हैं। बड़े-बड़े सेठ, बैंक या सरकार—जो भी नोट निकाले, वह—अपरिमित संख्या में नोट नहीं निकाल सकती; क्योंकि उसे इन बातों का ख़ास तौर से ख़याल रखना पड़ता है कि लोगों की माँग पर धातविक मुद्रा (सिक्का) न दे सकने से उसकी साख मारी न जाय, और नोटों की निकासी कहीं इतनी अधिक न हो जाय कि सभी क़ीमती सिक्के लुप्त हो जायँ—नोट-ही-नोट चलन में रह जायँ और व्यापारिक संसार में इस कारण हाहाकार मच जाय। इसी कारण नोट

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निकालनेवालों के लिये यह आवश्यक होता है कि वे जितने का नोट निकालें, उतने ही या उससे कुछ कम मूल्य का सुवर्ण ज़मानत—प्रतिभू—के तौर पर सदा अपने ख़ज़ाने में जमा रक्खें।

आजकल संसार-भर के सभी राष्ट्रों में सोना, चाँदी, ताँबा, निकेल आदि धातुओं ही के सिक्के प्रचलित हैं। परंतु वे सभी क़ानूनन् ग्राह्य नहीं होते। यहाँ पर इसके विषय में थोड़ा-सा विचार करना अप्रासंगिक न होगा कि किसी भी देश में एक ही धातु के सिक्के क़ानूनन् ग्राह्य होने चाहिए या दो के, अथवा उससे भी अधिक के। आजकल दुनिया की सभी वस्तुओं की क़ीमत सिक्के के रूप में देखी जाती है, और यह ऊपर बतलाया जा चुका है कि धातुओं की तेज़ी-मंदी के असर से वस्तुओं की क़ीमत भी चढ़ती और उतरती है। यदि दो धातुएँ कानूनन् ग्राह्य होंगी, तो क़ीमत में अस्थिरता नहीं आवेगी, और न एकाएक क़ीमत बहुत अधिक बढ़े या घटेगी। दोनों धातुओं के चलने की अवस्था में मुद्रा की धातु का भांडार बड़ा हो जायगा, और ऐसी अवस्था में किसी एक धातु की क़ीमत घटने-बढ़ने से वस्तुओं की क़ीमत पर कोई अधिक असर नहीं पड़ेगा; क्योंकि दूसरी धातु के चलन के कारण स्थिरता बनी रहेगी। परंतु यदि एक ही धातु की मुद्रा होंगी, तो उसका भांडार छोटा होगा, और इस कारण सब चीज़ों की क़ीमत एक ही धातु पर निर्भर रहेगी, जिससे उसका चढ़ना-उतरना अवश्यंभावी है। सारांश यह कि द्वि-धातु-मुद्रा-प्रणाली (Bi-metallism) में क़ीमतों में भयंकर परिवर्तन न होगा, धीरे-धीरे और मामूली परिवर्तन होंगे, जिससे कोई विशेष क्षति नहीं; क्योंकि व्यापार में विशेष हानि एकाएक और बड़े परिवर्तनों से ही होती है। अस्तु, वाणिज्य-व्यवसाय की उन्नति की दृष्टि से क़ीमतों को स्थिर रखना ज़रूरी है, और इसके लिये द्वि-धातु-मुद्रा-प्रणाली ही उपयुक्त है। परंतु दो धातुओं को एक साथ प्रचलित रखने में कठिनता होती है, और एक धातु में सुविधा एवं सरलता। द्वि-धातु-प्रणाली में क़ीमतों का आधार कभी एक धातु की और कभी दूसरी धातु की मुद्रा हो जाती है। अंत में प्रायः यही होता है कि चलन में एक ही धातु के सिक्के रह जाते हैं। विभिन्न देशों के मुद्रा-संबंधी इतिहास से यह भली भाँति प्रमाणित है। इसका स्पष्ट कारण यह है कि जब दो धातुओं की मुद्राएँ चलन में रहेंगी, तो वे क़ानूनन् ग्राह्य भी होंगी, उनकी संख्या भी परिमित नहीं होगी, टकसाल से (धातु देकर) उतने मूल्य की और उसी धातु की मुद्रा सबको सरलता के साथ मिलती रहेगी। ऐसी अवस्था में ऐसे देश के आसपास के किसी देश में सोना या चाँदी—किसी चीज़ की क़ीमत अगर उतर गई, तो बस, उसी दम लोग उतरी हुई क़ीमतवाली धातु के विपरीत (अर्थात् सोने की क़ीमत उतरी, तो चाँदी को, और चाँदी की उतरी, तो सोने को) धातु को गलाकर उस देश में भेजकर लाभ उठावेंगे। फल-स्वरूप उस देश में कुछ ही दिनों बाद एक ही धातु की मुद्रा रह जायगी।

द्वि-धातु-मुद्रा-प्रणाली के सफलतापूर्वक चलने के लिये उसका क्षेत्र विस्तृत होना—उसका कई देशों में प्रचलित होना—आवश्यक है। यदि ऐसा न होगा, तो ग्रेशम के सिद्धांतानुसार देश में एक ही धातु की मुद्रा चलन में रहेगी, और वह भी वह, जो कम-क़ीमती—नक़ली—होगी। कई देशों के द्वि-धातुवादी होने से—अर्थात् क्षेत्र विस्तृत रहने की अवस्था में—क़ीमत में अगर कुछ चढ़ा-उतार होगा भी, तो वह शीघ्र ही, थोड़ा-सा सोना या चाँदी इधर-उधर कर देने से, समान अवस्था को प्राप्त हो जायगी। कई देशों का क्षेत्र रहने से यही तो विशेष लाभ है कि जिस देश में जिस धातु की कमी हुई, या किसी खान के निकल आने से बढ़ती ही हुई, तो एक दूसरे के आदान-प्रदान से (किसी एक धातु की वृद्धि या किसी एक धातु की कमी के कारण) क़ीमत में कोई अंतर नहीं पड़ने पाता। सन् १८६५ ई० में योरप के 'लैटिन यूनियन' (बेलजियम, फ़्रांस, इटली तथा स्विट्ज़रलैंड) ने इस बात की कोशिश की थी। कुछ दिनों तक वे इसे चला भी ले गए। पर इसे स्थायी रूप नहीं दे सके, और बाद को यह यूनियन नाम-मात्र ही को रह गया। दर असल बात तो यह है कि जो देश द्वि-धातुवादी होते हैं, वे सिद्धांत रूप में ही—नाम-मात्र को ही—द्वि-धातुवादी रहते हैं, व्यावहारिक रूप से तो वे भी एक-धातुवादी (Monometallist) ही होते हैं।

द्वि-धातुवादी होने से जो असुविधाएँ और गड़बड़ियाँ होती हैं, उन्हीं को सोच-समझकर संसार के प्रायः सभी प्रमुख देश (दो-एक को छोड़कर) एक-धातुवादी—और वह भी सोने की धातु-प्रणालीवाले—हो गए हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सबसे पहले इँगलैंड ने सुवर्ण को प्रधानता देते हुए अपने को सन् १८१६ ई० से एक-धातुवादी बनाया। इसके बाद सन् १८५४ ई० से पुर्तगाल, १८७३ से जर्मनी, १८७५ से नार्वे-स्वीडेन और डेन्मार्क, १८७८ से फ़िनलैंड, १८९० से रोमानिया, १८९२ से आस्ट्रिया, १८९७ से रूस और १९०१ ई० से पेरू एक-धातुवादी देश बने। शेष अन्य कई देशों में अब भी द्वि-धातु-मुद्रा-प्रणाली का नाम है; परंतु व्यवहार में वहाँ भी एक ही—सुवर्ण की ही—मुद्राओं का चलन है।

सबके बाद मुद्रा-निर्माण का महत्त्व-पूर्ण प्रश्न उपस्थित होता है। वह यह कि मुद्राओं को कौन बनवावे? यह अधिकार सर्वथा देश के शासक के ही हाथ में होना ठीक है या प्रजा के हाथ में? और, अगर शासक को ही यह अधिकार हो, तो उसे मुद्रा-निर्माण के व्यय-स्वरूप कुछ लेना चाहिए या नहीं? अगर लेना चाहिए, तो किस परिमाण में?

आजकल मुद्रा-निर्माण का कार्य राज्य ही का समझा जाता है। राज्य ही की ओर से सब मुद्राएँ निकाली जाती हैं। आरंभिक काल में विभिन्न व्यापारिक संस्थाएँ यह काम करती थीं; पर बाद को यह काम राजों (संभवतः इसमें लाभ देखकर और प्रजा को धोकेबाज़ी से बचाने के लिये) ने अपने हाथ में ले लिया। तब से यही क्रम चला आता है। वास्तव में देश-हित की दृष्टि से मुद्रा-निर्माण का कार्य राज्य के ही हाथ में होना उचित और लाभ-दायक है; क्योंकि ऐसा न होने से जालसाज़ी का बहुत भय रहता है, तथा इससे होनेवाले लाभ जनता को न मिलकर व्यक्तियों (Individuals) को मिलते हैं। राज्य के हाथ में होने से मुनाफ़ा राज्य को होगा, और वह प्रजा-हित के काम में लगाया जा सकेगा।

मुद्रा-निर्माण के कई तरीक़े हैं। जब टकसाल में चाँदी-सोना ले जाकर व्यक्तियों को स्वेच्छानुसार मुद्रा बनाने का अधिकार होता है, तो वह निःशुल्क मुद्रा-निर्माण (Free coinage) कहलाता है। यदि ऐसी ढलाई में सरकार व्यय-स्वरूप कुछ धन न ले, तो वह कृपान्वित मुद्रा-निर्माण (Gratuitous) कहलाता है। इसी प्रकार कुछ व्यय ले, तो व्ययानुकूल मुद्रा-निर्माण (Brassage) और व्यय से अधिक धन ले, तो उसे लाभान्वित मुद्रा-निर्माण (Seigniorage) कहते हैं। विभिन्न देशों में निर्माण-व्यय भिन्न-भिन्न प्रकार का है। पर उन्नत और सभ्य राष्ट्रों में व्ययानुकूल मुद्रा-निर्माण का ही तरीक़ा काम में लाया जाता है। निर्माण-व्यय से अधिक धन लेना शासक का अपने अधिकार का दुरुपयोग और जनता के हित का घातक है। मुद्रा-निर्माण के संबंध में कुछ व्यय लेना चाहिए या नहीं, यह प्रश्न विवाद-ग्रस्त है, और विभिन्न अर्थशास्त्रज्ञ इस पर विभिन्न मत रखते हैं। कोई तो मुद्रा-निर्माण का व्यय लेना अनुचित बतलाते हैं, और कोई व्ययानुकूल मुद्रा-निर्माण का व्यय लेना अनुचित नहीं समझते। उन्नत और सभ्य देशों में व्ययानुकूल मुद्रा-निर्माण लेने ही की प्रथा है, और वास्तव में यही युक्ति-संगत तथा वांछनीय भी प्रतीत होती है।

जयपुर का ज्योतिषालय

[लेखक, श्रीयुत श्यामाचरण एम्० एस्-सी०, प्रोफ़ेसर आगरा-कॉलेज]

महाराज सवाई जयसिंह ने १८-वीं शताब्दी के आदि में दिल्ली, मथुरा, बनारस, उज्जैन और जयपुर में ज्योतिषालय बनवाए थे। इनमें जयपुर ही का ज्योतिषालय सबसे बड़ा है। महाराज जयसिंह ने जयपुर नगर सन् १७२८ ई० में बसाया था। उन्होंने दिल्ली-सम्राट् के लिये जंत्री को ठीक किया, सायनकेंद्र (Equinoxes) को नियत किया, तथा रविपरमा क्रांति (Obliquity of the Ecliptic) निश्चित की। उनको नाना प्रकार की कलाओं तथा विद्याओं से बहुत प्रेम था। इसके अलावा उन्होंने अपने समय की राजनीतिक हलचल में भी भाग लिया था।

महाराज जयसिंह ने चालीस वर्ष तक राज्य किया, और प्रायः संपूर्ण समय रण-क्षेत्र में ही बिताया। उस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समय मुग़लों की शक्ति घट रही थी, और महाराष्ट्रों का भाग्य-चक्र प्रबल हो रहा था। अंत में दिल्ली-नरेश फ़र्रुख़सियर ने जब उनकी सहायता लेना अस्वीकार किया, तो जयपुराधीश अपनी राजधानी को लौट आए। अब वह अपना समय ज्योतिष तथा इतिहास के अध्ययन में व्यतीत करने और अपना जगद्विख्यात ज्योतिषालय बनवाने लगे। महाराज जयसिंह की विलक्षण बुद्धि के विषय में निम्न-लिखित कथा प्रचलित है—

एक समय दिल्ली-सम्राट् ने महाराज जयसिंह को दिल्ली बुलाया। उस समय वह अल्प-वयस्क ही थे। सम्राट् के सामने पहुँचने पर उन्होंने इनके दोनों हाथ पकड़कर, ग़ुस्से में आकर, इनसे कहा—"तुम लोगों के उत्पात से मैं तंग आ गया हूँ। बताओ, तुम्हें क्या दंड दिया जाय?" जयसिंह ने निर्भीक होकर उत्तर दिया—"विवाह के समय पुरुष स्त्री का एक ही हाथ पकड़ता है, और उसकी जन्म-भर की हिफ़ाज़त का ठेका ले लेता है; परंतु सम्राट् ने तो मेरे दोनों हाथ पकड़े हैं। अब मुझे किस बात का डर है?" इस उत्तर को सुनकर दिल्ली-सम्राट् बहुत प्रसन्न हुए, और कहा—"तुम्हारा नाम जयसिंह नहीं, सवाई जयसिंह होना चाहिए।" उसी समय से जयपुराधीश अपने नाम के आगे 'सवाई' शब्द लगाने लगे हैं।

जयसिंह की मृत्यु सन् १८४३ ई० में हुई। रण-क्षेत्र अथवा राज-काज में लगे रहने पर भी उन्होंने ज्योतिष-शास्त्र के अन्वेषण के लिये काफ़ी समय निकाल लिया था। महाराज जयसिंह ने प्रथम पीतल के यंत्र बनवाए थे। परंतु उनसे बहुत संतुष्ट नहीं हुए; क्योंकि उनमें अंशादिक के अति सूक्ष्म विभाग नहीं हो सकते थे, और नक्षत्र आदि के वेध में भी सूक्ष्मता नहीं आ पाती थी। इस कारण उन्होंने ईंट-पत्थर के दीर्घ-काय यंत्र बनवाए। ये यंत्र ५ भिन्न-भिन्न नगरों में स्थित हैं, और इनकी सहायता से महाराज जयसिंह ने नक्षत्र-सारिणियों (Star catalogues) को सन् १७२८ ई० में पूरा किया।

जैसा पहले कहा जा चुका है, महाराज जयसिंह ने पीतल के यंत्रों से काम लिया, और उसके पश्चात् ईंट-पत्थर के यंत्रों से। आधुनिक पाश्चात्य ज्योतिष में केवल दूर-दर्शक (Telescopes) यंत्र द्वारा अंशादिकों के भाग सूक्ष्म रूप से नापे जा सकते हैं। प्राचीन भारतीय और आधुनिक पाश्चात्य ज्योतिष के सिद्धांतों में कोई भिन्नता नहीं है, और इसमें भी कोई संदेह नहीं कि महाराज जयसिंह से सहस्रों वर्ष पूर्व हिंदुओं और मिसर-निवासियों ने भी ऐसे ही यंत्रों तथा विधियों से काम लिया था।

भारत में ज्योतिष-विद्या ईसा की सातवीं शताब्दी से (ब्रह्मगुप्त के समय से) मृत-प्राय हो रही थी। महाराज जयसिंह ने उसमें नया जीवन डाल दिया। उन्होंने गणित, इतिहास तथा अन्य विद्याओं का चलन करने में यथेष्ट प्रयत्न किया था, और एक बृहत् पुस्तकालय भी संगठित कर लिया था। परंतु वहाँ की पुस्तकें अब सब ग़ायब हो गई हैं। उन्होंने ज्योतिष-पत्रे का पुनरुद्धार किया, और चंद्र, सूर्य तथा ग्रह आदि की नई सारिणियाँ तैयार कीं, जो कि पहले से अधिक ठीक थीं, और जिनका व्यवहार हिंदू-पंडित अभी तक करते हैं। परंतु इन सब कार्यों से बढ़कर उन्होंने यह किया कि पत्थर और पीतल के ज्योतिष-यंत्र बनवाए। जयसिंह का ज्योतिषालय इसलिये ज़्यादा महत्त्वपूर्ण है कि वह पत्थर के यंत्रों के अंत-काल में बना था। ईंट-पत्थर के दीर्घ-काय ज्योतिष-यंत्रों के बनने की अब बहुत कम आशा है। आजकल के धातु एवं शीशे के यंत्रों द्वारा उन पुराने यंत्रों से भी अधिक सूक्ष्म वेध हो सकता है।

महाराज सवाई जयसिंह के पीतल के छोटे ज्योतिष-यंत्र आजकल जयपुर में रामनिवास-बाग़ के अंदर बने हुए एलबर्ट हॉल (Albert Hall Museum)-नामक अजायबघर में रक्खे हुए हैं।

सैकड़ों वर्षों तक यहाँ का ज्योतिषालय बेमरम्मत पड़ा रहा। बाद को महाराज सवाई रामसिंह के राज्य में इन यंत्रों का जीर्णोद्धार शुरू हुआ, और महाराज सवाई माधवसिंह के राज्य-काल १९०१ ई० में समाप्त हुआ। प्रत्येक यंत्र के ऊपर एक संगमरमर की शिला पर जीर्णोद्धार करनेवालों के नाम दिए हुए हैं। इनमें राज-ज्योतिषी पं० गोकुलचंद भावन का नाम ही मुख्यतर आता है। इस समय इनकी उम्र क़रीब ७५ वर्ष की है; परंतु तब भी इन्होंने ज्योतिषालय में आने की कृपा की, और दिन-भर यहाँ मेरे साथ घूमते रहे। इनको ज्योतिष-विद्या से अभी तक बहुत प्रेम है। जयपुर, उज्जैन, बनारस आदि के ज्योतिषालयों का आपने ही जीर्णोद्धार करवाया था। आजकल भी वेध-शाला में पं० केदारनाथ राज-ज्योतिषी नई नक्षत्र-सारिणी ठीक कर रहे हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जयपुर की वेध-शाला नगर के सुंदर राज-महलों के पास बनी हुई है। अंदर जाने का रास्ता त्रिपोलिया-दरवाज़े से है, और नगर की प्रधान सड़क से प्रायः १५० गज़ के फ़ासले पर बना हुआ है।

यह जगह २०० गज़ लंबे तथा १३० गज़ चौड़े मैदान के अंदर है। इसके चारों तरफ़ राज-महल और नगर के राज-पथ हैं; परंतु तब भी वेध-शाला के अंदर शांति रहती है। यह स्थान महाराज की ज़नानी ड्योढ़ी से मिला हुआ है। महाराज जयसिंह अवकाश मिलने पर यहाँ चले आते थे, और शांति-पूर्वक अपने राज-ज्योतिषियों के साथ ज्योतिष-शास्त्र का अध्ययन करते थे। यहाँ पर निम्न-लिखित यंत्र हैं—

नं०	यंत्र का नाम	बनावट	उपयोग
१	दक्षिणोत्तर-वृत्त-यंत्र	पत्थर	उन्नतांश
२	षष्ठांश-यंत्र		उन्नतांश
३	राम-यंत्र	पत्थर	उन्नतांश और दिगंश
४	दिगंश-यंत्र	,,	दिगंश-कोटयंश
५	सम्राट्-यंत्र	,,	समय-नत-काल या क्रांति
६	नाड़ीवलय-यंत्र	,,	समय अथवा नत-काल
७	राशिवलय-यंत्र	पत्थर	खगोलीय अक्षांश, भुजांश
८	क्रांतिवृत्त-यंत्र	पत्थरपीतल	खगोलीय अक्षांश तथा भुजांश
९	कपाली-यंत्र	पत्थर	
१०	जयप्रकाश-यंत्र	,,	
११	उन्नतांश-यंत्र	पीतल	उन्नतांश
१२	चक्र-यंत्र	,,	क्रांति-नत-काल
१३	यंत्र-राज	,,	उन्नतांश और गणित
१४	खगोल-यंत्र	,,	

महाराज जयसिंह के समय के राज-ज्योतिषी पं० जगन्नाथ की बनाई हुई पुस्तक 'सम्राट्-सिद्धांत' में ऊपर लिखे यंत्रों का वर्णन दिया हुआ है। इस ग्रंथ के तीन अध्याय हैं। प्रथम अध्याय का नाम यंत्राध्याय है। इसमें ज्योतिष-यंत्रों का वर्णन पूर्ण रीति से दिया गया है। दूसरे अध्याय में त्रिकोण-मिति (Trignometry) का वर्णन है। इसमें महा-राज जयसिंह के आविष्कार किए त्रिकोण-मिति-विषयक कुछ नए सिद्धांत हैं। तीसरे अध्याय में ज्योतिष के विषय में महाराज जयसिंह के मत, सिद्धांत आदि दिए हुए हैं। इस पुस्तक में महाराज जयसिंह इस प्रकार आदेश देते हैं—"भविष्य में जो कोई इस प्रदेश का राजा हो, उसे नक्षत्रादि के भ्रमण का यंत्रों द्वारा अध्ययन करना चाहिए। वेध द्वारा जो फल निकले, उसी को निश्चित जाने; क्योंकि नक्षत्र आदि का भ्रमण एक बात है, और पुस्तकों द्वारा फल निकालना दूसरी बात।" अब यंत्रालय के ज्योतिष-यंत्रों का क्रमानुसार वर्णन किया जाता है—

१—दक्षिणोत्तर-वृत्त-यंत्र। यह दक्षिणोत्तर रेखा में बना हुआ है। पूर्वी दीवार पर दो गोलार्ध २० फ़ुट व्यास के बने हुए हैं, और पश्चिमी दीवार पर एक अर्ध-वृत्त १९ फ़ुट १० इंच व्यास का बना हुआ है। ये तीनों वृत्त-खंड संगमरमर के बने हुए हैं। इनपर अंश आदि की रेखाएँ खुदी हुई हैं। जब कि नक्षत्र आदि मध्याह्न-रेखा (Meridian) पर होते हैं, उस समय इस यंत्र से उनका उन्नतांश (Altitude) मालूम किया जाता है। आधुनिक ट्रानज़िट सरकिल (Transit circle) भी इसी प्रकार का एक यंत्र है।

इसके वेध की रीति यह है—वृत्त-खंड के ऊपर के शंकु में एक डोरा बाँधकर वेध-कर्ता उसको वृत्त-खंड के ऊपर इस तरह से रखता है, जिसमें कि वेध किया हुआ नक्षत्र और डोरा एक ही रेखा में हो जायँ। तत्पश्चात् वृत्त-खंड के अंशांकन से नक्षत्र का उन्नतांश जाना जा सकता है। मध्याह्न के समय सूर्य का उन्नतांश जानने के लिये डोरे की कोई आवश्यकता नहीं पड़ती; क्योंकि सूर्य के मध्याह्न-वृत्त पर होने के कारण शंकु की परछाहीं वृत्त-खंडों के ऊपर पड़ती है। इस यंत्र द्वारा सूर्य का मध्याह्न के समय उन्नतांश तथा नतांश (Zenith Distance) अथवा परमा क्रांति और जयपुर का अक्षांश (Latitude) भी नापा जाता है।

२—षष्ठांश-यंत्र। इस यंत्र का नाम षष्ठांश-यंत्र इस कारण पड़ा है कि इसके वृत्त-खंड ६०-६० अंशों के हैं। इस वेध-शाला में यंत्रों के दो जोड़े हैं। एक जोड़ा सम्राट्-यंत्र के पूर्व ओर और दूसरा जोड़ा पश्चिम ओर है। एक ऊँची, परंतु पतली कोठरी में यह यंत्र बनाया गया है। अंदर जाने का रास्ता सम्राट्-यंत्र के चबूतरे पर से है। इस कोठरी में प्रकाश का प्रवेश सिर्फ़ दक्षिण दीवार के ऊपर के दो छिद्रों से होता है। ये छिद्र कोठरी की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महाराज सवाई जयसिंह

सतह से ३५ फ़ुट ऊपर हैं। प्रत्येक दिन मध्याह्न के समय सूर्य की किरणें इन छिद्रों द्वारा इस कोठरी में प्रवेश करती हैं, और उनका आलोक वृत्त-खंडों पर पड़ता है। इन वृत्त-खंडों पर अंशांकन इस प्रकार का है कि नतांश व क्रांति (Declination) सीधी पढ़ी जा सकती हैं।

इस प्रकार प्रत्येक दिन मध्याह्न काल में सूर्य का मध्याह्न-वृत्त, उन्नतांश, नतांश तथा क्रांति जानी जाती है, और इनसे जयपुर का अक्षांश तथा रवि-परमा क्रांति भी मालूम होती है। तमाम यंत्रालय के यंत्रों में यह यंत्र सबसे ठीक है। इस यंत्र से जाने हुए उन्नतांश वग़ैरह में हमेशा ४ मिनट की ग़लती रहती है, जो कि वृत्त-खंड के अंशांकन की भूल के कारण मालूम होती है।

थोड़ा समय हुआ, ऊपर के छिद्र ताम्र-पत्र से बंद कर दिए गए थे। इन पत्रों में सूक्ष्म छिद्र बनाए गए थे, जिनके द्वारा सूर्य का प्रतिबिंब वृत्त-खंडों पर पड़ता था, जिससे सूर्य का व्यास ठीक जाना जा सकता था। सूर्य के व्यास का जाड़े व गर्मी में अंतर भी नापा जा सकता था। वृत्त-खंडों का अर्धव्यास २८ फ़ुट ४ इंच होने के कारण सूर्य के प्रतिबिंब का व्यास ३ इंच था, और सूर्य-कलंक (Sun spots) साफ़ मालूम होता था। महाराज सवाई जयसिंह के समय से बहुत पहले नसीरउद्दीन तूसी ने भी इसी प्रकार के एक यंत्र का प्रयोग किया था।

३—राम-यंत्र। यह यंत्र नक्षत्र आदिकों के उन्नतांश अथवा भुजांश मालूम करने के काम में आता है। यह दो वृत्ताकार दीवारों का बना हुआ है। इस यंत्र का नाम महाराज रामसिंह के नाम पर रक्खा गया है। हंटर साहब (Dr. Hunter) के कथनानुसार इसी प्रकार के एक यंत्र का अरबवालों ने भी इस्तेमाल किया था। अलबरूनी ने इस यंत्र का नाम उस्तवानी रक्खा था। यद्यपि यह यंत्र अलग-अलग दो यंत्रों के रूप में दिखलाई देता है, परंतु वास्तव में ये दोनों इमारतें मिलकर एक ही यंत्र हैं, अर्थात् जो भाग पहले में आने-जाने के लिये ख़ाली छोड़ दिया गया है, वह दूसरे में भरा हुआ है, और जो दूसरे में ख़ाली है, वह पहले में भरा हुआ है। हर एक इमारत के बीच में एक लोहे का शंकु लगा हुआ है, जिसकी उँचाई दीवारों के बराबर है। इस शंकु से ज़मीन से ३ फ़ुट ऊँचे समतल (Horizontal) वृत्त-खंड दीवार तक बने हुए हैं। ये वृत्त-खंड १२ हैं, और उनका कोण एक यंत्र में १२ अंश और दूसरे में १८ अंश है। इसी प्रकार वृत्त-खंडों के बीच की ख़ाली जगह पहले यंत्र में १२ अंश और दूसरे यंत्र में १८ अंश है।

इन यंत्रों की दीवार १२ खंभों की बनी हुई है। खंभे वृत्त-खंडों से मिले हुए हैं, और वृत्त-खंडों के ऊपर दीवार की उँचाई दीवार के अर्धव्यास के बराबर है। जब सूर्य का उन्नतांश ४५ अंश से ऊँचा होता है, तब शंकु के सिरे की परछाहीं दीवार पर पड़ती है, और जब सूर्य का उन्नतांश ४५ अंश से कम होता है, तो शंकु की परछाहीं वृत्त-खंडों पर पड़ती है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

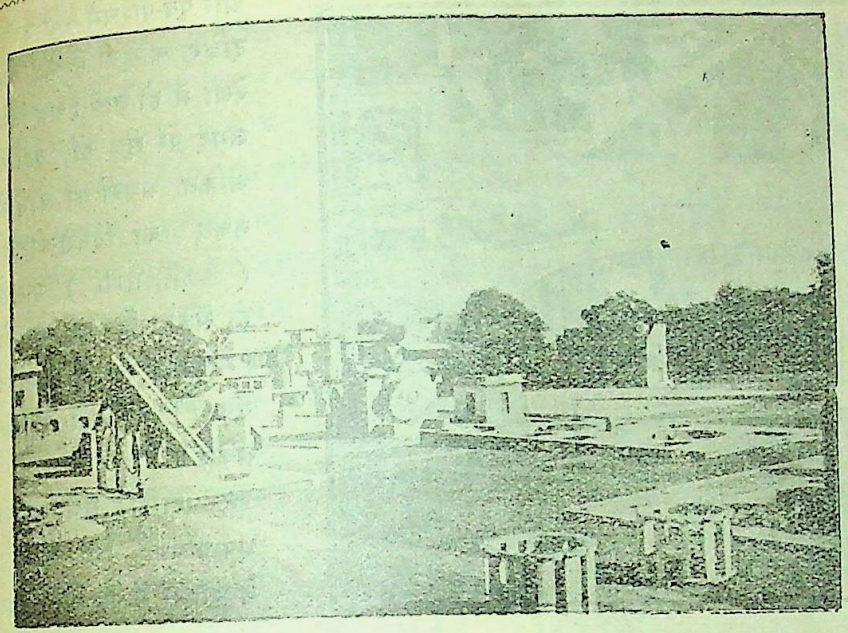

यंत्रालय का एक संपूर्ण दृश्य

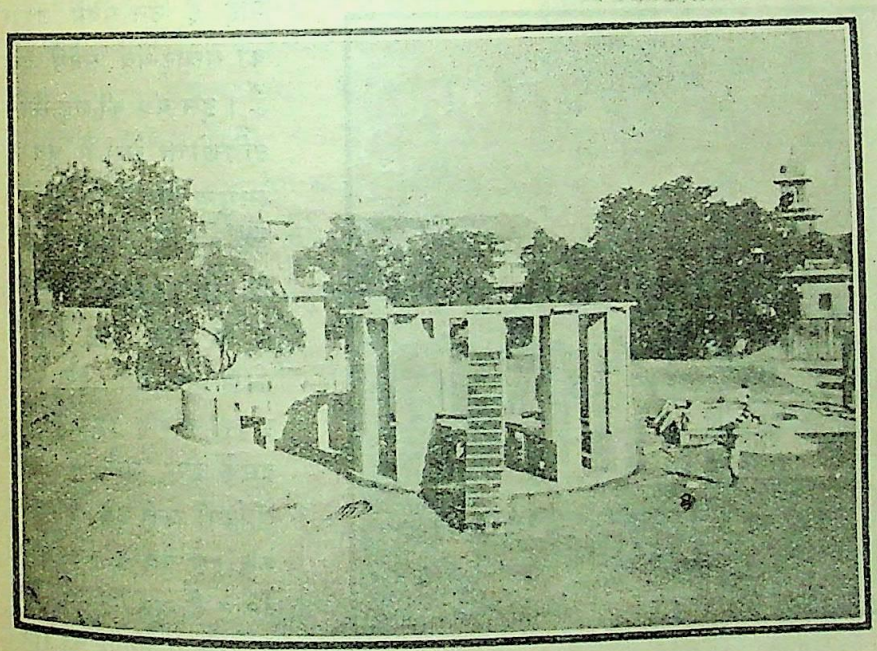

राम-यंत्र

वृत्त-खंडों और दीवारों का अंशांकन इस प्रकार का है कि ग्रह-नक्षत्रादि का उन्नतांश पढ़ा जा सकता है। जबकि शंकु के सिरे की परछाहीं दीवारों पर पड़ती है, तब सूर्य का उन्नतांश मालूम होता है, और जब परछाहीं वृत्त-खंडों पर पड़ती है, तब नतांश मालूम होता है।

वृत्त-खंडों और दीवारों पर दिगंश-कोटयंश (Azimuth) अंकित हैं। रात्रि के समय नक्षत्र आदि का उन्नतांश अथवा दिगंश भी इस यंत्र द्वारा मालूम हो सकता है। यह यंत्र पहले चूने का बना हुआ था; परंतु सन् १८९१ ई० में संगमरमर का बना दिया गया है। इस यंत्र का निर्माण जगन्नाथ ज्योतिषी के ग्रंथों के आधार पर ही हुआ है; परंतु यह यंत्र आधुनिक ही है। पास ही दो छोटे-छोटे राम-यंत्र बने हुए हैं, जो बड़े राम-यंत्रों के बनाने के वास्ते सूक्ष्माकार नमूने बनाए गए थे।

४—दिगंश-यंत्र। यह यंत्र ग्रह-नक्षत्र आदि के दिगंश-कोटयं (Azimuth) जानने के लिये बनाया गया है। यह २७ फ़ुट व्यास का वृत्ताकार यंत्र है। इसके केंद्र में एक ठोस स्तंभ है, जिसके चारों तरफ़ दो वृत्ताकार दीवारें हैं। जगन्नाथ ज्योतिषी ने इस यंत्र का वर्णन इस प्रकार किया है—"पृथ्वी पर एक वृत्त खींचो। इस वृत्त को क्षितिज कहते हैं। यहाँ पर इस प्रकार के तीन क्षितिज बनाने होंगे। पहले वृत्त पर एक ठोस खंभा बनाओ। दूसरे वृत्त पर एक वृत्ताकार दीवार बनाओ, जिसकी उँचाई स्तंभ से दुगनी रहे। इन क्षितिजों पर पूर्व, पश्चिम, उत्तर तथा दक्षिण की रेखाएँ और अंशादि अंकित करो। बाहरी दीवार पर दो डोरे या तार इस प्रकार बाँधो, जिसमें वे पूर्व-पश्चिम तथा उत्तर-दक्षिण की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

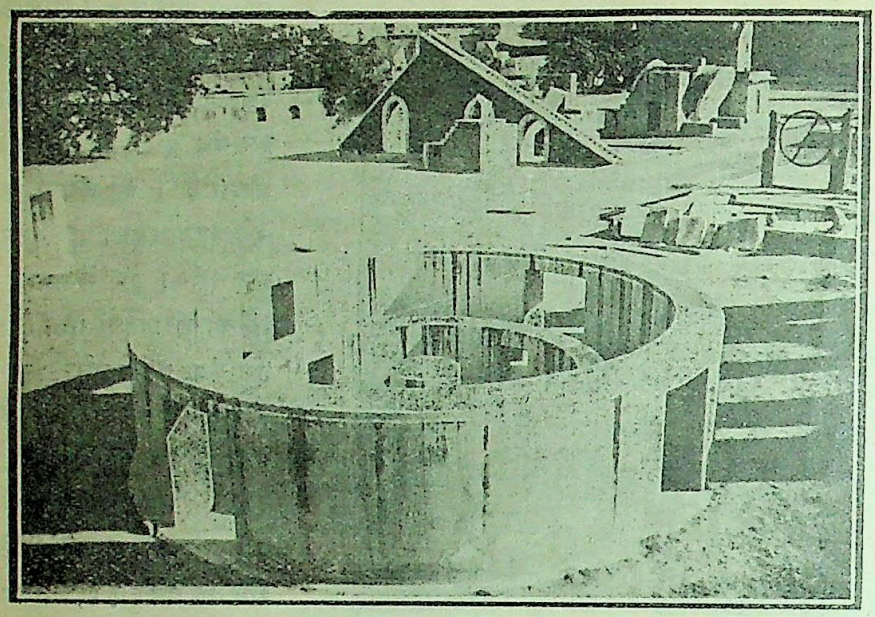

दिगंश-यंत्र

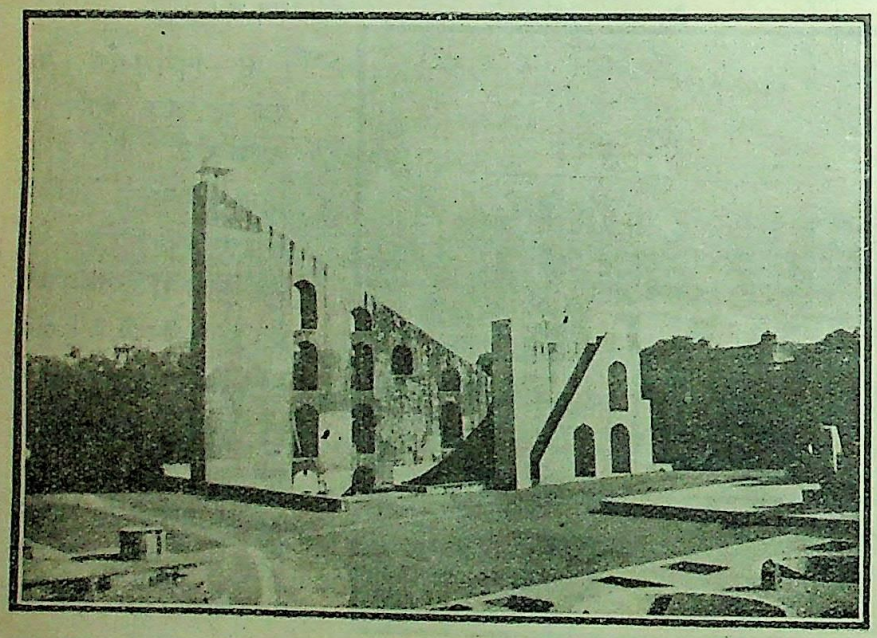

सम्राट्-यंत्र

रेखाओं को सूचित कर सकें, और केंद्र पर आकर मिलें। स्तंभ के मध्य में एक सूत्र का सिरा मज़बूती से बाँधो, और दूसरे सिरे में एक पत्थर बाँधकर बाहरी दीवार के उस पार गिरा दो। इस सूत्र का नाम दृष्टि-वृत्त है। वेध-कर्ता अंदर की दीवार के पास खड़ा होकर इस सूत्र को इस तरह से चलवावे कि सूत्र वेध किए हुए नक्षत्र और पूर्व-पश्चिम तथा उत्तर-दक्षिण के सूत्रों के केंद्र एक रेखा में हो जायँ। अब जिस जगह पर सूत्र हों, वहाँ के अंकित अक्षरों को पढ़ने से नक्षत्र का दिगंश-कोटयंश (Azimuth) मालूम हो सकता है। इस यंत्र को हम एक दीर्घकाय कोणमापक यंत्र (Protractor) कह सकते हैं।"

५—सम्राट्-यंत्र, अथवा धूप-घड़ियों का सम्राट्। वेधशाला में यह सबसे बड़ा यंत्र है। महाराज जयसिंह ने जितनी वेधशालाएँ बनवाई हैं उन सबमें जयपुर का सम्राट्-यंत्र सबसे बड़ा है। इस यंत्र की शंकु-भित्ति दक्षिणोत्तर रेखा में ध्रुव के सम्मुख तिरछी बनी हुई है। इस शंकु की उँचाई ९० फ़ुट है, और यह दक्षिणोत्तर रेखा से २६ अंश ५६ कला के कोण पर बना हुआ है। इसकी लंबाई १४७ फ़ुट है। इसके ऊपर जाने के लिये सीढ़ियाँ बनी हुई हैं। आज कल इस यंत्र के ऊपर जाना वर्जित है; क्योंकि इस यंत्र के ऊपर से जयपुर का रनिवास दिखलाई पड़ता है। मामूली दैनिक वेध के लिये एक छोटा सम्राट्-यंत्र और बना हुआ है। यह छोटा यंत्र लाल पत्थर का है, और वेधशाला के अंदर आते ही देख पड़ता है।

शंकु के दोनों तरफ़ वृत्त-चतुर्थांश बने हैं, जिनका अर्धव्यास ४९ फ़ुट १० इंच है। संपूर्ण यंत्र गारे व ईंटों से बना हुआ है। शंकु की छाया घंटे में तेरह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फ़ुट चलती है, अथवा यों कहिए कि फ़ी मिनट २½ इंच खिसकती जाती है। चतुर्थांश पर समय रेखांकित है। इस यंत्र से सेकिंड का अंदाज़ लगाना ज़रा मुशकिल है; क्योंकि शंकु की परछाहीं का अंत एकदम नहीं हो जाता। परंतु परछाहीं से प्रकाश धीरे-धीरे बढ़ता हुआ पूर्ण रूप में आ जाता है। दक्ष वेधकर्ता १०-१५ सेकिंड के भीतर ठीक-ठीक समय मालूम कर सकता है।

शंकु के दोनों तरफ़ उससे ५० फ़ुट समानांतर पर ऊँची दीवारें बनी हुई हैं। इन्हीं दीवारों के अंदर षष्ठांश-यंत्र बने हुए हैं। सम्राट्-यंत्र ज़मीन की सतह से कुछ नीचा बना हुआ है; परंतु फ़र्श पक्का है, और बरसाती पानी निकलने का प्रबंध ठीक-ठीक किया गया है।

इस यंत्र को बने २०० वर्ष से ज़्यादा हो गए; परंतु अभी तक यह ठीक काम देता है। दोनों वृत्त-चतुर्थांशों के अंशांकन में दो मिनट की ग़लती मालूम होती है। सम्राट्-यंत्र से मुख्यतर समय जाना जाता है। सौर काल (Local solar time) वृत्त-चतुर्थांशों पर शंकु की छाया देखकर मालूम किया जाता है। रात्रि के समय भी किसी नक्षत्र का नत-काल (Hour angle) मालूम किया जा सकता है। तत्पश्चात् ज्योतिष-पुस्तकों से उस नक्षत्र का नत-काल देखकर सौर काल मालूम हो सकता है।

सम्राट्-यंत्र से सूर्य और नक्षत्र आदि का उन्नतांश भी मालूम हो सकता है। उन्नतांश नक्षत्रों का वह कोण है, जो कि वे नाड़ी-मंडल (Equatorial circle) से बनाते हैं। सूर्य का उन्नतांश जानने की विधि यह है कि शंकु के ऊपर एक लकड़ी इस प्रकार रक्खी जाती है, जिसमें उसका छाया-वृत्त चतुर्थांश के किनारे पर पड़े। तत्पश्चात् शंकु पर रेखांकित अंशों को देखने से सूर्य का उन्नतांश

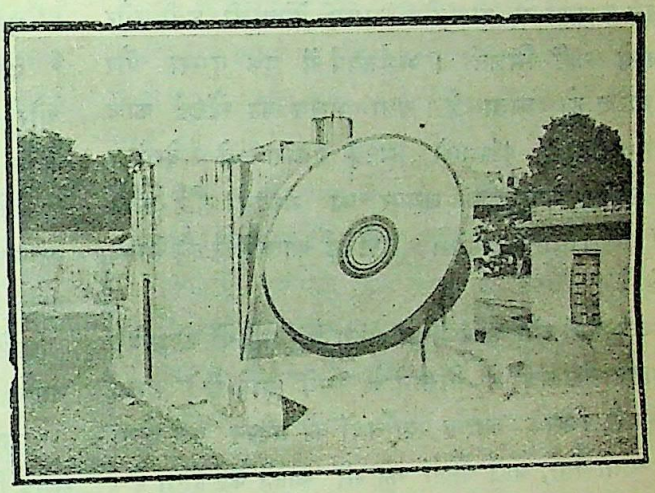

नाड़ीवलय-यंत्र

मालूम हो सकता है। इसी प्रकार रात्रि में भी किसी नक्षत्र का उन्नतांश तथा नत-काल मालूम हो सकता है, परंतु ज़रा ज़्यादा कष्ट करने से।

धूप-घड़ियों से स्पष्ट सौर काल (Apparent solar time) मालूम होता है। यह सौर काल प्रतिदिन बदलता रहता है। कभी दिन-मान छोटा होता है, कभी बड़ा। यहाँ पर दिन-मान का अर्थ सूर्योदय से लेकर सूर्यास्त तक नहीं, बल्कि एक मध्याह्न से लेकर दूसरे मध्याह्न तक है। इस भेद के दो कारण हैं। प्रथम पृथ्वी की कक्षा की

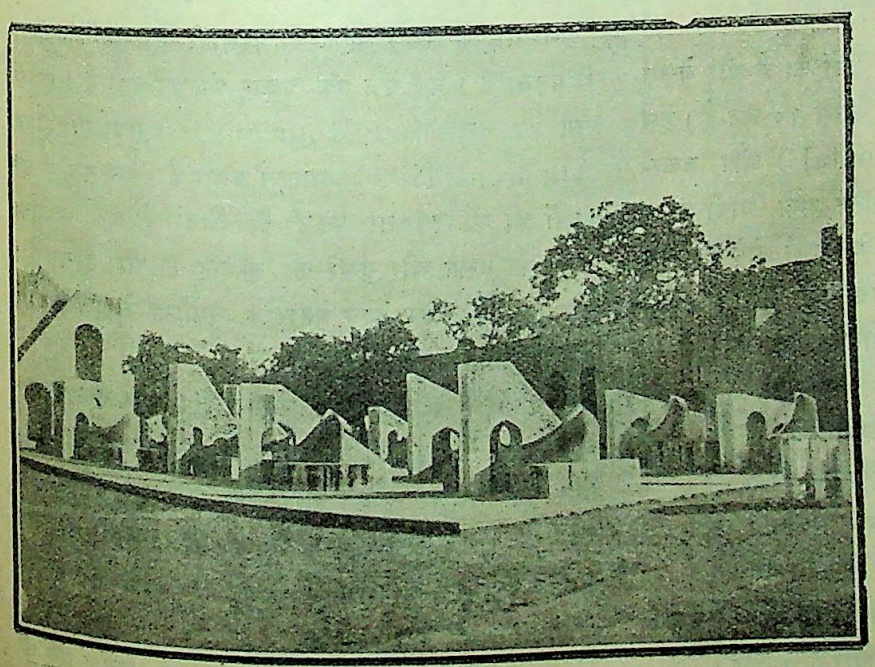

राशिवलय-यंत्र

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उत्केंद्रता (Eccentricity) है, जिसके कारण जाड़े में पृथ्वी की गति बढ़ जाती है; क्योंकि सूर्य निकट आ जाता है, और गर्मी में इसका वेग घट जाता है। कारण, वह सूर्य से ज़्यादा दूर हो जाती है। दूसरा कारण रवि-परमा क्रांति (Obliquity of the ecliptic) है।

इसके सिवा और भी कई कारण हैं; परंतु उनसे दिन-मान में थोड़े ही सेकिंडों का अंतर पड़ता है।

इन कारणों से ठीक-ठीक समय देनेवाली घड़ी सौर काल से नहीं मिलती। भारतवर्ष में एक दूसरा और भी कारण हो जाता है। यथा भारत का स्टैंडर्ड काल (Standard time) ८२½ अंश के देशांतर पर रक्खा गया है। जयपुर का मध्यम सौर काल (Local mean time) स्टैंडर्ड काल से २६½ मिनट पीछे है।

जयपुर में सौर काल माना जाता है। घड़ियों को प्रत्येक सप्ताह सम्राट्-यंत्र से मिलाने के लिये आगे-पीछे करना पड़ता है, जिसके कारण यात्रियों को महान् कष्ट होता है। यात्री क्या, यहाँ वालों को भी काफ़ी कष्ट होता है। इससे तो बेहतर यह होता कि सौरमध्य-काल (Local mean time) रक्खा जाय, जैसा कलकत्ते और बंबई में आजकल किया जाता है।

६—नाड़ीवलय-यंत्र। यह यंत्र ईंटों का है और बेलन के आकार का बना हुआ है। इसका व्यास १० फ़ुट है। इस बेलन का अक्ष समतल (Horizontal) और उत्तर-दक्षिण रेखा में है। इसके समानांतर मुख नाड़ी-मंडल के तल (Plane) में हैं। इन मुखों के केंद्र में लोहे का शंकु समकोण पर है, जोकि ध्रुवों की तरफ़ लगा हुआ है। इस शंकु के चारों तरफ़ निम्न-लिखित सात श्लोक लिखे हैं—

धर्मग्लानिमधर्मवृद्धिमवलोक्यात्मा जगत्तस्थुषो
राजेंद्रो जयसिंह इत्यभिधयाविर्भूय वंशे रघोः;
लुप्त्वा धर्मविरोधिनोध्वरमुखैश्चाचीर्णवेदाध्वभि-
र्धर्मं न्यस्य धरातले रचितवान् यंत्रान् सुबोधान् बहून्।
गोलप्रवृत्तेर्गगनेचराणां जिज्ञासया श्रीजयसिंहदेवः;
आज्ञप्तवान् यन्त्रविदः पुनस्ते चक्रुर्हि याम्योत्तरभित्तिसंज्ञम्।
सवज्रलेपांशुविशुद्धपार्श्वद्वयस्थनाडीवलयैकेकेन्द्रम्;
ध्रुवाभिकेन्द्रश्रुतिमार्गकीलं कीलाग्रभासूचितनाडिकाद्यम्।
पितामहोच्छिष्टमयाश्च भार्कारोहावरोहानवनंदवृत्तान्;
प्रतापसिंहश्च विबुद्धिविद्भ्यस्तान् कारयामास सुपार्श्वयुग्मे।
भारोपमम्लेच्छगणस्यवृद्धभूभारशान्त्यै पुनरादिदेवः;
इत्वाकुवंशेष्यवतीर्य पूर्वावतारितान् देवगणान् नियुङ्क्त।
धर्माधिकारी विधिदेवकृष्णः प्रामुक्तिसरोहितधर्मपादः,
यंत्रेषु वेदाङ्गविभूषणेषद्वितीययंत्रोद्धरणं चकार।
यस्मिन्नन्हि चतुर्षु पक्षतिथिवारर्क्षेषु पक्षोगतिघ्नश्चान्यैस्त्रि-
भिरन्वितः स्मृतिलवः स्यात्सार्क्षसाकस्य सः;
नन्दघ्नस्तिथि रन्ययुक् स च लवो विश्वघ्नवारोन्ययुक्
वातत्वघ्नभमन्ययुक्तमथवैषास्योद्धृतौ स्यान्मितिः।

पहले के तीन श्लोकों में महाराज जयसिंह का वर्णन और उनकी आज्ञा के अनुसार यंत्र की रचना का कथन है।

चौथे तथा पाँचवें श्लोक में जयसिंह के पुत्र प्रतापसिंह का वर्णन और उनकी आज्ञा से यंत्र के जीर्णोद्धार का वर्णन है।

छठे श्लोक में उस समय के पंडित ब्रह्मदेव कृष्ण का वर्णन है।

सातवें श्लोक में जयसिंह के समय में यंत्रोद्धार का समय दिया है।

मुखों पर घंटे-मिनट तथा घड़ी-पल, दोनों ही में अंकित हैं।

मध्याह्न के समय शंकु की परछाहीं उत्तर-दक्षिण रेखा में पड़ती है। यह यंत्र एक प्रकार की धूप-घड़ी है। इससे सूर्य का नत-काल (Hour angle) तथा स्पष्ट-काल Apparent Time) मालूम होता है। इस यंत्र में दो मुखों की आवश्यकता पड़ती है, जिनमें से एक का मुख उत्तर की तरफ़ और दूसरे का दक्षिण की ओर होता है। इस यंत्र का दक्षिण-मुख महाराज जयसिंह के पुत्र प्रताप-सिंह ने बनवाया था।

२१ मार्च से लेकर २१ सितंबर तक, जब सूर्य उत्तरायण रहता है, इसके उत्तर-मुख से काम लिया जाता है, और २१ सितंबर से २१ मार्च तक, जब सूर्य दक्षिणायन होता है, इसके दक्षिण-मुख से काम लिया जाता है। इस यंत्र से सूर्य का सायन (Equinox) अति उत्तमता से जाना जाता है।

७—राशिवलय-यंत्र। इस यंत्र में सम्राट्-यंत्र की तरह १२ छोटे-छोटे यंत्र हैं, अर्थात् एक तिरछा शंकु और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसके दोनों तरफ़ अंशांकित वृत्त-चतुर्थांश हैं। इन यंत्रों से ग्रह-नक्षत्र आदि का खगोलीय अक्षांश व भुजांश (Celestial Latitude and Longitude) मालूम हो सकता है। इन यंत्रों के वृत्त-चतुर्थांशों का व्यास ८ फ़ुट ३ इंच से लेकर ११ फ़ुट तक है। परंतु इस भिन्नता का कारण अभी तक जाना नहीं जा सका है। सब वृत्त-चतुर्थांश अंशांकित हैं, और शंकु भी रेखांकित। इन यंत्रों की वेध की विधि भी सम्राट्-यंत्र ही के समान है।

सम्राट् यंत्र के वृत्त-चतुर्थांश नाड़ी-मंडल (Equatorial Plane) में हैं; परंतु राशि-वलय के वृत्त-चतुर्थांश क्रांति-वृत्त (Plane of the Ecliptic) में हैं। राशि-वलय का प्रत्येक यंत्र एक राशि के नाम पर है। जब उस राशि का लग्नोदय होता है, तब उस समय के क्रांति-वृत्त के मंडल में उस यंत्र के वृत्त-चतुर्थांश रहते हैं, और शंकु की नोक क्रांति-वृत्त के पृष्ठीय केंद्र (Pole of the ecliptic) की तरफ़ रहती है। क्रांति-वृत्त का पृष्ठीय केंद्र आकाश-मंडल में स्थित कोई एक बिंदु नहीं है, परंतु वह नाड़ी-मंडल के ध्रुव के चारों तरफ़ २३ अंश २७ सेकिंड के अर्धव्यास के वृत्त में भ्रमण करता रहता है। इस कारण १२ यंत्रों की आवश्यकता पड़ती है। प्रत्येक यंत्र से दिन-भर में एक ही समय काम लिया जा सकता है। इस प्रकार प्रति २ घंटे के अंतर पर वेध किया जा सकता है। प्रत्येक राशि-वलय के अंदर उस राशि का रंगीन चित्र बना हुआ है; परंतु शहर के बालकों और यात्रियों ने उन पर अपने हस्ताक्षर करके उन्हें बिगाड़ दिया है।

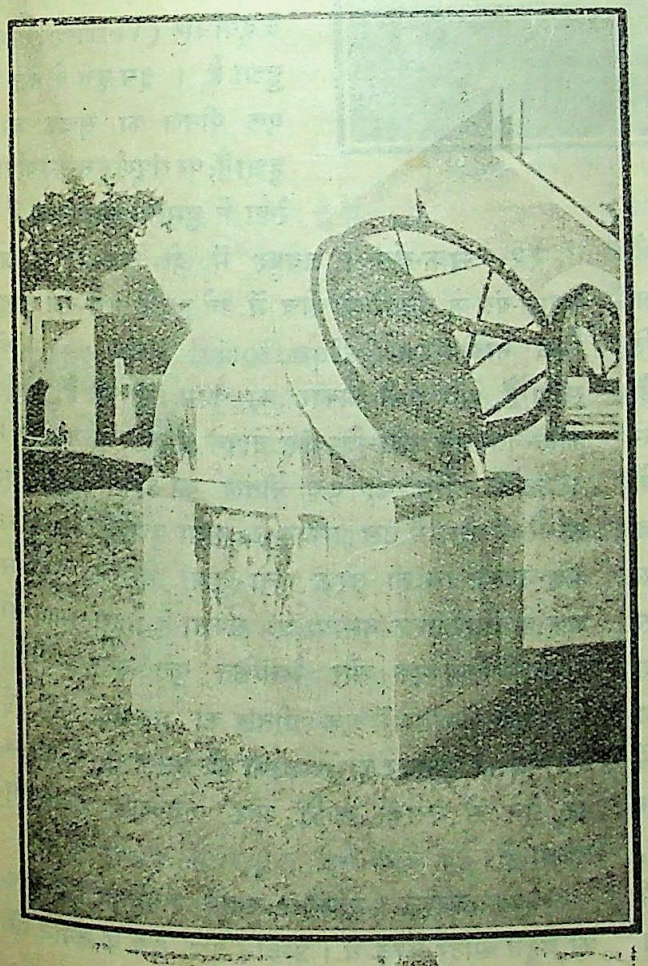

क्रांतिवृत्त-यंत्र

८—क्रांतिवृत्त-यंत्र। इस यंत्र का निर्माण पहले-पहल १० फ़ुट के व्यास का किया गया था; परंतु वह यंत्र पूरा न हो सका, और उसका जीर्णोद्धार करने में पीतल के वृत्तों का दाम बहुत मालूम हुआ। इस कारण यह यंत्र अभी तक अधूरा पड़ा हुआ है। परंतु इसके स्थान पर एक छोटा क्रांति-वृत्त-यंत्र ही हाल में बनवा दिया गया है। इस यंत्र का व्यास ३ फ़ुट है, और इससे खगोलीय अक्षांश तथा भुजांश जाने जाते हैं। वेध-शाला में यह सबसे ठीक और अच्छा यंत्र है; क्योंकि इस से हर समय अक्षांश-भुजांश जाने जा सकते हैं।

एक छोटे स्तंभ पर एक वृत्ताकार पत्थर नाड़ी-मंडल में लगा हुआ है। इसके केंद्र में एक पीतल की कील के ऊपर एक धातु का बना हुआ यंत्र लगा हुआ है। यह यंत्र कील के चारों तरफ़ घूम सकता है। वृत्ताकार पत्थर पर अंश अंकित हैं। यह यंत्र घुमाकर क्रांति-वृत्त (Plane of the ecliptic) में किया जा सकता है, और तत्पश्चात् सूर्य की राशि मालूम की जा सकती है।

९—जयप्रकाश-यंत्र। यह दो खोखले अर्ध-गोले हैं, जो आकाश-मंडल के एक प्रकार के मान चित्र हैं। राम-यंत्र की तरह इसमें भी दो अर्ध-गोलों की इस कारण से आवश्यकता पड़ी है कि एक यंत्र में अंदर जाने के लिये वेध करने के समय जो रास्ते ख़ाली छोड़ दिए गए हैं, वे दूसरे यंत्र में भरे हुए हैं। गोलार्ध की परिधि पर क्षितिज (Horizon) हैं, और उन पर अंश अंकित किए गए हैं। इन यंत्रों का व्यास १७ फ़ुट १० इंच है। जयप्रकाश महाराज

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सवाई जयसिंह का आविष्कार है, जिसको उन्होंने खगोल-यंत्र (Admillary sphere) की न्यूनता पूर्ण करने के लिये बनवाया था। इस यंत्र का वर्णन आगे दिया जाता है।

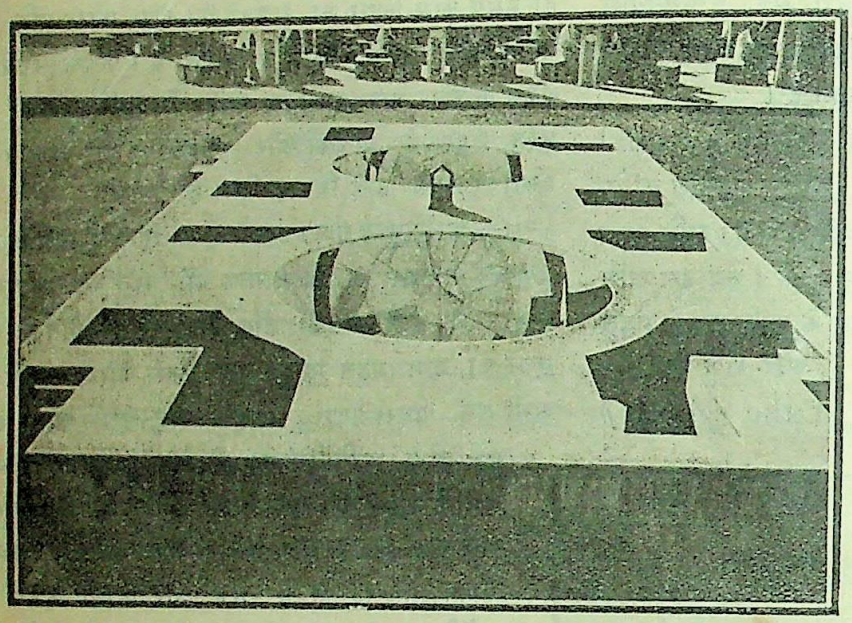

जयप्रकाश-यंत्र

जयप्रकाश-यंत्र नक्षत्र-मंडल का यथार्थ प्रतिबिंब है, इस कारण नक्षत्र आदि की दूरी सुगमता से नापी जा सकती है। यह यंत्र ज्योतिष-सार समझाने के लिये अति उत्तम है। जो इस शास्त्र का अध्ययन शुरू कर रहे हैं, उनके लिये इस यंत्र का ज्ञान परमावश्यक है। इस यंत्र से लग्नोदय भी सुगमता से जाना जा सकता है। इन गोलार्धों में क्रांति-वृत्त के १२ जगहों में १२ वृत्त बने हुए हैं। प्रत्येक वृत्त एक राशि के लग्नोदय के समय काम आता है। इस कारण प्रत्येक वृत्त का नाम उसकी राशि पर है। दिन में जिस वृत्त पर गोलार्ध के केंद्र की छाया पड़े, उसी की राशि का उदय हो रहा है, ऐसा जान लेना चाहिए। इससे सूर्य का उन्नतांश तथा दिगंश भी मालूम हो सकता है। यंत्र में अंदर जाने के लिये ५ सीढ़ियाँ बनी हुई हैं। इस यंत्र का जीर्णोद्धार सफ़ेद संगमरमर से सन् १९०१ ई० में हुआ था, और उसी समय इसके रेखांकित वृत्त भिन्न-भिन्न रंगों में अंकित किए गए थे; परंतु ये रंग अब सब उड़ गए हैं।

१०—कपाल-यंत्र। यह यंत्र भी जयप्रकाश की तरह है। चूने और ईंट का बना हुआ है। परंतु आजकल इस यंत्र का जीर्णोद्धार हो रहा है, और चूने की जगह श्वेत संगमरमर लगाया जा रहा है। इन यंत्रों से भी राशि का उदय मालूम होता है। जयप्रकाश-यंत्रों की तरह इन गोलार्धों की परिधि क्षितिज नहीं है, परंतु खगोलीय अयनांत वृत्त (Celestial Colure) है, अर्थात् वह वृत्त, जो कि ध्रुवों के और अयन-बिंदुओं के अंदर होता हुआ जाता है। ये जयप्रकाश-यंत्र की तरह हैं; परंतु एक समकोण घूमे हुए हैं।

११—उन्नतांश-यंत्र। यह यंत्र एक प्रकार से नाड़ी-मंडल-दर्शक है। यह १७½ फ़ुट व्यास के एक पीतल के वृत्त का बना हुआ है, जो कि खंभों के बीच में ऊर्द्ध्वाधार (Vertical) टँगा हुआ है। इस वृत्त के केंद्र में एक पीतल का सूचक लगा हुआ है; पर संपूर्ण वृत्त ऊर्द्ध्वाधार रेखा में घुमाया जा सकता है।

१२—चक्र-यंत्र। जयपुर में दो चक्र-यंत्र हैं, जो कपाल-यंत्र के चबूतरे के बीच में बने हुए हैं। ये यंत्र आधुनिक नाड़ी-मंडल (Equatorial Telescope) के सदृश हैं, और उसी प्रकार का काम भी देते हैं, अर्थात् क्रांति-नत-काल और विश्वांश नापने के काम में आते हैं। ६ फ़ुट के व्यास का एक पीतल का अंशांकित वृत्त दो स्तंभों के बीच में इस प्रकार से लगा हुआ है कि उसका अक्ष उत्तरी ध्रुव की तरफ़ बना हुआ है। यह वृत्त इस अक्ष के चारों तरफ़ घुमाया जा सकता है। इस घुमाव को नापने के लिये एक और रेखांकित वृत्त बना हुआ है। प्रथम वृत्त के बीच में एक पीतल की शलाका लगी हुई है। यंत्र को घुमाकर इस शलाका को इष्ट नक्षत्र के सम्मुख कर देने से उसकी क्रांति और नत-काल नापा जा सकता है।

१३—यंत्रराज। महाराज सवाई जयसिंह इस यंत्र का बहुत आदर करते थे। उन्होंने इस यंत्र के बनाने की विधि और व्यवहार की विधि के ऊपर एक पुस्तक लिखी थी। यह यंत्र बहुत ही पुराना मालूम होता है,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और जितना आकाश-मंडल देख पड़ता है, उसका एक मान-चित्र है।

ये दोनों धातु के वृत्ताकार पत्तरों के बने हुए हैं। इस यंत्र की सहायता से ज्योतिष-शास्त्र के अनेक प्रश्न हल हो सकते हैं, अर्थात् उन्नतांश, दिगंश, अक्षांश, भुजांश तथा नक्षत्र आदि के समय-विषय का प्रत्येक प्रश्न विना लेखनी और काग़ज़ के निकाला जा सकता है।

१४—खगोल-यंत्र। (Admillary Sphere)। यह यंत्र मुख्यतर जयपुर के रामनिवास-अजायबघर में रक्खा रहता है। इसको महाराज माधवसिंह प्रथम ने बनवाया था। यह यंत्र पीतल के अनेक वृत्तों का बना हुआ है। ये वृत्त खगोल के नाड़ीवृत्त, क्रांतिवृत्त इत्यादि हैं। इस यंत्र में ये वृत्त इस प्रकार से लगाए गए हैं कि सब मिलकर एक गोले के रूप में हो जाते हैं। यह गोला एक अक्ष के ऊपर घूमता है। कहा जाता है, इसका आविष्कार ग्रीस-देश में ईसा के २५५ वर्ष पूर्व हुआ था।

१५—यंत्र। सम्राट्-यंत्र से उत्तर-पश्चिम की ओर एक चूने का बना हुआ चबूतरा है। यह महाराज जयसिंह की गद्दी के नाम से पुकारा जाता है। इस पर एक ४९ फ़ुट १० इंच के अर्द्धव्यास का संगमरमर का वृत्त खिंचा हुआ है। इस वृत्त पर अंश अंकित हैं। इस वृत्त का व्यास और सम्राट्-यंत्र के वृत्त-चतुर्थांशों का व्यास एक ही है। मालूम होता है, वृत्त-चतुर्थांश के अंशांकन में इस चबूतरे के वृत्त के अंशांकन से सहायता ली गई थी।

पहले चबूतरा और वृत्त चूने (Plaster) के बने हुए थे; परंतु अब वृत्त संगमरमर के बना दिए गए हैं। यहाँ पर तीन और यंत्रों के निशानात पाए जाते हैं, जो महाराज प्रतापसिंह के समय में आनंदविहारी का मंदिर बनाने के लिये तोड़ दिए गए थे *।

एकाकी

[लेखक, पं० इलाचंद्र जोशी]

गहन विजन में बैठा हूँ मैं
एकाकी विरही विभ्रांत।
(विजनवती)

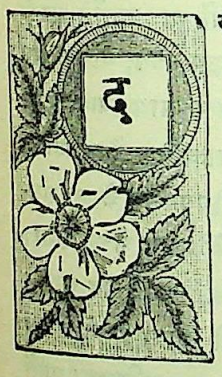

सहरे का ज़माना था। शुक्लजी के यहाँ लखनऊ से दो-चार लड़के छुट्टियों में उनके मेहमान बनकर 'ट्रिप' के लिये आए हुए थे। वे लोग असल में शुक्लजी के नहीं, किंतु उनके लड़के रंजन के मेहमान थे। उनमें एक सज्जन प्रोफ़ेसर थे, और एक लड़का मेडिकल कॉलेज से भी आया हुआ था। उस दिन रात को खाना खाकर वे लोग बाहर टहलने के लिये निकल पड़े।

प्रोफ़ेसर साहब की नियुक्ति इसी साल हुई थी। इस कारण वह लड़कों के प्रायः समवयसी थे। बड़े हँसमुख तथा रसिक व्यक्ति थे। उनकी नाना प्रकार की रसिकतापूर्ण बातें सुनते-सुनते लड़के चले जाते थे। चाँदनी रात थी। सर्वत्र एक अपूर्व, स्निग्ध शांति व्याप्त थी। टहलते-टहलते वे लोग रेलवे लाइन की बाईं ओर एक सुविस्तृत मैदान में आ पहुँचे। इस निर्जन, दिगंतप्रसारित, समतल भूमि में आकर वे सब एक स्थान में बैठ गए। अष्टमी का निर्मल चंद्र सिर के ऊपर से, अपनी शीतल किरणों के विकीरण से, सर्वांग अभिषिक्त कर रहा था। विजनता का जो एक निजी निराला रूप है, वह निर्लज्ज नग्नावस्था में उन लोगों की आँखों के सामने झलकने लगा। कुछ देर तक सभी इस शांत, नीरव तथा स्तब्धच्छवि से बेबस, आच्छन्न होकर, जड़ भाव से मौन होकर बैठे रहे। ऐसा मालूम देता था कि वे सब ध्यानमग्न होकर अनंत के प्रति अपनी श्रद्धांजलि प्रदान करने के लिये संभ्रम का भाव प्रदर्शित कर रहे हैं।

---

* इस लेख के लिखने में मुझे निम्न-लिखित महाशयों की पुस्तकों से सहायता मिली है। उनका मैं अत्यंत अनुगृहीत हूँ—

G. R. Kaye;
Liet. A. H. Garrett.
Notes on Jaipur (official)

राज-ज्योतिषी पं० गोकुलचंद्र भावन व पं० केदारनाथ को उनकी सहायता के लिये अनेक धन्यवाद।—लेखक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अचानक प्रोफ़ेसर साहब ने इस अखंड नीरवता को भंग करके कहा—"निर्जनता के भीतर स्निग्ध प्रीति का भाव भी छिपा हुआ है, और दिल दहलानेवाली भीति भी वर्तमान है। शून्य की विभीषिका तथा पूर्ण का सहज आनंद उसमें परस्पर जड़ित हैं। मैंने अपने एक मित्र के मुँह से एक निर्जनप्रिय व्यक्ति का जो वृत्तांत सुना है, उसे आज आप लोगों को सुनाना चाहता हूँ। क़िस्सा दिलचस्प भी है। आप लोगों में से कई तत्त्वार्थी उसमें से कुछ तत्त्व भी खोजकर निकाल सकते हैं। इलाहाबाद के बैंक-रोड में जो लेडी डॉक्टर रहती हैं, उन्हें तो आप लोग सब जानते हैं न?"

डॉक्टर साहबा के गिद्ध के समान मोटे, फूले हुए शरीर तथा मिट्टी के रंग के समान धूसरित मुखमंडल से कटरे के प्रायः सभी लोग परिचित थे। ये सब लड़के पहले इलाहाबाद में ही पढ़ते थे, इस कारण वे भी उन्हें जानते थे। डॉक्टर साहबा अपने दो छोटे-छोटे लड़कों तथा एक छोटी-सी लड़की को लेकर एक पीले रंग से रँगे हुए फ़िटन पर सवार होकर अकसर सैर करती हुई दिखलाई देती थीं।

प्रोफ़ेसर साहब ने कहा—"शायद आप लोगों को मालूम नहीं होगा कि वह दो साल से विधवा हैं। उनके पति का नाम गिरिजाशंकर गुप्त था। वह एक बड़े ज़मींदार थे। उन्हीं का क़िस्सा मैं आज आप लोगों को सुनाऊँगा। मित्र से जैसा कुछ मैंने सुना है, और जिस प्रकार मैं उसे समझने में समर्थ हुआ हूँ, उसी प्रकार आप लोगों के सामने व्यक्त करूँगा। मेरे मित्र ने यह क़िस्सा गुप्तजी के किसी अंतरंग मित्र से मालूम किया है।

"बचपन से ही गुप्तजी का झुकाव आध्यात्मिक बातों की ओर था। जीवन की वास्तविकता से वह बहुत डरते थे। कहीं कोई वास्तविक घटना उनके मर्म को स्पर्श न कर ले, इस ख़याल से वह प्रतिक्षण अपने को स्वप्नों के सुदृढ़ मायाजाल से आवरित रखते। उनका विश्वास राथ्सचाइल्ड, कार्नेगी राकफ़ेलर, फ़ोर्ड आदि धन-कुबेरों के प्रचंड अध्यवसाय की अपेक्षा अलिफ़-लैला के जादू के चिराग़ में अधिक था। डाकुओं के हमलों से भौतिक उपद्रवों में उनकी अधिक आस्था थी। जब वह कभी किसी निर्जन स्थान में जाते, तो उन्हें पूरा विश्वास हो जाता था कि यहाँ अवश्य ही कुछ रहस्य छिपा हुआ है। भौतिक उपन्यासों तथा तिलिस्मी कहानियों के प्रति उनकी बड़ी रुचि थी। नित्य जंगल की तरफ़ जाकर वह इसी खोज में रहते थे कि कहीं कोई जादू का घर तो पड़ा नहीं है, जहाँ मायावती अलबेली परियाँ संसार की आँख बचाकर इस दृश्य संसार के भीतर ही अलग किसी अदृश्य जगत् में निष्कलुष, चिंताहीन, रागरंगपूर्ण, चिर-यौवनमय जीवन बिता रही होंगी। उनके मन में यह उत्कट लालसा वर्तमान रहती थी कि कोई 'जिन' आकर उनकी आँखों में जादू का सुरमा लगाकर इसी प्रकार का एक अनंत आनंदमय राज्य आँखों के सामने झलका देता, तो वह वहाँ प्रवेश करके वास्तविक जीवन की तुच्छता से मुक्ति पाते। मुसलमान फ़क़ीरों को देखते ही उनकी इच्छा यह विश्वास करने की होती कि वह दमिश्क या इस्तंबोल की अलबेली शाहज़ादियों तथा परीज़ादियों के सुगंधित, मधुमय आलिंगनों का रस लूटकर, किसी अलौकिक हाथों के चक्र से निपीड़ित होकर भटकते फिरते हैं। बाबा लोगों के अखाड़ों में धूनी रमी देखकर उन्हें शकुंतला के तपोवन की याद आती थी।

"सोलह वर्ष की अवस्था तक उनका यही हाल रहा। इसके बाद अचानक एक साल के अंदर ही उनके दो बड़े भाइयों तथा एक छोटी बहन की मृत्यु हो गई। एक भयंकर भीति की विभीषिका से उनका दिल दहल उठा। इस विभीषिका से त्राण पाने के लिये वह इतनी छोटी अवस्था में ही 'दर्शन' के जटिल ग्रंथों का अध्ययन करने लगे। सांख्य और वेदांत, इन दोनों दर्शनों का उन्होंने अच्छी तरह से अध्ययन किया। गीता, उपनिषत्, योगवासिष्ठ आदि सभी ग्रंथों को वह उत्कट रुचि के साथ स्वाहा करने लगे। सांख्य का त्रिविध दुःखों की आत्यंतिक निवृत्तिवाला प्रस्ताव उन्हें बहुत पसंद आया। योगवासिष्ठ के उपशम-प्रकरण में नैराश्य का मंत्र उनके मन में माया फूँकने लगा। बुद्धदेव का दुःखवाद उनको सर्वोत्तम जचा। वह समस्त सृष्टि के चक्र में सर्वत्र दुःख की ही छाया देखने लगे। उनको दृढ़ विश्वास हो गया कि जिन सूक्ष्मातिसूक्ष्म तत्त्वों को लेकर विधाता ने सृष्टि रची है, उनमें दुःख का तत्त्व ही सर्वप्रधान है। ईथर (Ether) से भी सूक्ष्मतर इस दुःख-तत्त्व से ही नीहारिका अभिव्यक्त होती है, और तब इसके बाद सूर्य, ग्रह, उपग्रह आविर्भूत होते हैं। यह सिद्धांत उनके मन में प्रतिष्ठित हो गया। इस दुःख की माया को आत्मा में निराकृत करना चाहिए, यह धारणा उनके चित्त में बद्धमूल हो गई। 'असङ्गोऽयं पुरुषः'।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दुःखोद्भूत प्रकृति के संसर्ग से बिलकुल अलग रहकर आत्मानंद में रमना चाहिए। पर यह आत्मानंद अवश्य ही गुप्तजी की निजी धारणा के अनुसार था।

"धीरे-धीरे एक निर्विकार नैराश्य का भाव उनके चित्त में घनीभूत हो गया। इसका फल यह हुआ कि वह दुःख सहने के आदी हो गए, और किसी भी दुःखपूर्ण घटना का असर उनके हृदय में होना असंभव-सा हो गया। ऐसी स्थिति में किसी के प्रति समवेदना प्रकट करना कब संभव था? अँगरेज़ी में जिसे Cynic कहते हैं, गुप्तजी वही बन गए। जब कोई उनसे कहता था—'आज फ़लाँ आदमी मर गया है', तो वह तुरंत उत्तर देते—'अरे भाई, लाखों आदमी रोज़-रोज़ मरते जाते हैं, किस-किसके लिये रोया जाय! हम सब मरने के लिये ही तो आए हैं!' जब उनके कॉलेज का कोई सहपाठी कहता—'आज फ़लाँ लड़के की घड़ी ख़राब हो गई है, चलती नहीं', तो वह कहते—'अरे भैया, देखते नहीं, हर घड़ी दुनिया में लाखों आदमियों के शरीर की घड़ियों के पुर्ज़े ख़राब होते जाते हैं, और एक बार ख़राब होकर फिर अनंत तक वे घड़ियाँ चलती ही नहीं! इस तुच्छ घड़ी के लिये क्या अफ़सोस करते हो? इसे तो मामूली घड़ीसाज़ ठीक कर सकता है।' जब उनके कानों में यह ख़बर पहुँचती कि किसी लड़के की कोई चीज़ खो गई है, तो वह झट अपना मंतव्य प्रकट कर बैठते—'आदमी ऐसा अंधा है कि वह देखकर भी नहीं देखना चाहता कि विकट मोह के कारण असंख्य प्रलोभनों में फँसता हुआ उसका मन ही पल-पल में खोया जा रहा है। एक बार हाथ में आते ही तुरंत फिसलकर फिर-फिर न मालूम कहाँ खोया जाता है, इसका पता भी उसे नहीं चलता। तुच्छ चीज़ों के खोए जाने से वह इतना रोता है, पर मूल चैतन्य का विलुप्त होना उसे मालूम नहीं होता!' इसी प्रकार के हास्य, व्यंग्य, नैराश्य तथा उदासीनता-मिश्रित दार्शनिक वाक्य बात-बात पर उनके मुँह से सुनाई देते थे।

"कॉलेज की पढ़ाई अभी समाप्त नहीं हुई थी कि उनकी माता चल बसीं। दैव का कोप ऐसी बुरी तरह उनके ऊपर सवार हो गया था कि माता की मृत्यु के दो साल बाद उनके पिता भी स्वर्गवासी हो गए। संसार में एक प्राणी भी उनका अपना कहने को शेष नहीं रहा। विधाता ने उनकी बहुत काल की वासना को सफलीभूत करने के लिये ही जैसे यह चक्र रचा था। वह अपने मामा के हाथ में ज़मींदारी का भार सौंपकर देश-त्यागी हो गए। तीन-चार साल तक हरद्वार और वृंदावन में बाबा लोगों के अखाड़ों में अड्डा जमाते रहे। गाँजा फूँकना भी सीख गए। भटकते-भटकते विंध्यवासिनी में आए। वहाँ की पहाड़ी में एक झरने के पास, किसी निर्जन स्थान में, कोई बाबाजी एक छोटी कुटी में धूनी रमाकर मस्त भाव से रहा करते थे। एक साल तक उनका शिष्यत्व स्वीकार करके उनकी सेवा में रत रहे। कहीं कोई अज्ञात तत्त्व किसी निर्जन स्थान में हवा के भीतर बहता हुआ मिल जाय, यह अस्पष्ट आकांक्षा बचपन से अब तक उनके अंतस्तल में वर्तमान थी। अपनी आकांक्षा की असंगति पर कभी पल-भर के लिये भी उनके चित्त में संदेह नहीं होता था।"

प्रोफ़ेसर साहब की सिगरेट बहुत देर तक उँगलियों में ही दबी रहने के कारण बुझ गई थी। उन्होंने रुककर सिगरेट जलाई और दो-एक लंबी फूँकें लेकर फिर अपना क़िस्सा शुरू किया—

"विंध्यवासिनी में भी उनका जी नहीं लगा। वह मिर्ज़ापुर-ज़िले के इर्द-गिर्द के जंगलों की ख़ाक छानने लगे। बहुत खोज के बाद अंत को उन्हें उनकी रुचि के अनुसार एक स्थान दिखाई दिया। एक गाँव की बस्ती से बहुत दूर पर एक जंगल था। उस जंगल के उस पार विस्तीर्ण चौरस भूमि का सुदीर्घ विस्तार दिगंत तक प्रसारित हो चला था। सारी ज़मीन वीरान पड़ी हुई थी। बहुत संभव है, सैकड़ों बरस पहले यह ज़मीन गोचारण के लिये छोड़ दी गई थी। तब से किसी को इसमें खेती करने का साहस नहीं हुआ। पश्चिम की सीमा में महारण्य घेरा बाँधे हुए था। उत्तर की तरफ़ एक छोटा नाला गंगा के गर्भ में विलीन होने के लिये मंद गति से प्रवाहित हो चला था। पूर्व की ओर बहुत दूर तक एक क़ब्रस्तान पड़ा था। गुप्तजी ने क़ब्रों के ऊपर खुदे हुए अंक देखे, तो ५५ से ५७ सन् तक की तारीख़ें पड़ी थीं। क़ब्रस्तान से कुछ दूर पर लंबे-चौड़े, बहुत पुराने बँगलों के खँडहर दिखलाई दिए। बहुत संभव है, उनमें ग़दर के साल से पहले लार्ड हेस्टिंग्स के ज़माने के अँगरेज़ी रेजीमेंट के अफ़सर लोग रहा करते थे। खँडहरों के बीच में हाल के आकार का एक सुविशाल कक्ष दिखलाई दिया। इसमें अँगरेज़ युवक-युवतियों का नाच-गान होता होगा। दो फ़र्लांग आगे बढ़कर उन्होंने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देखा, एक अव्यवहृत रेलवे-लाइन वक्र गति से बहुत दूर तक चली गई है। लार्ड हेस्टिंग्स के ज़माने में जब पहलेपहल भारत में रेल चलाई गई थी, संभवतः यह लाइन तभी स्थापित हुई थी। पर पीछे यह पथ उपयुक्त न समझा जाकर इसका व्यवहार बंद हो गया था। साठ साल पहले के जीवन की हवा मृत्यु के इस शून्य गह्वर में व्यर्थ गर्जन से क्षुब्ध हो रही थी। प्रेतलोक की अपूर्व माया से गुप्तजी का सारा शरीर अवश हो आया। वह स्थान अपने चौंबक बल से उन्हें जकड़ने लगा।

"उन्होंने उन बारिकों (Barracks) के खँडहरों में एक कोना अपने लिये पकड़ लिया। वहाँ से ढाई कोस दक्षिण की ओर बस्ती थी। नित्य एक बार थोड़ी देर के लिये वहाँ जाकर रूखा-सूखा टुकड़ा जो कुछ भी प्राप्त होता था, उससे पेट-पूजा करके उसी प्राणिलेश-शून्य सुविस्तृत प्रांत में आकर नाना प्रकार के अस्पष्ट, भयावह, अज्ञात तथा अज्ञेय तत्वों की चिंता में मस्त रहते। बस्ती में जब किसी बाबा के अड्डे का पता मिल जाता, तो वहीं जाकर फलाहार, मूलाहार, परान्नाहार भक्त करके गाँजाहार, सुलफाहार को भी स्वाहा कर आते। वापस आकर दिन को कभी गंगा के किनारे-किनारे दूर तक चलकर एक महा-श्मशान के पास आसन मारकर बैठ जाते। कभी जब वह किसी क़ब्र के ऊपर बैठते थे, तब एक अज्ञात हर्ष से उनका सारा शरीर कंटकित हो जाता था। इस हर्ष का कारण उन्हें कुछ भी मालूम नहीं था। पर जब एक बार उन्होंने उसका स्वाद पा लिया, तो उसका त्याग करना कठिन हो गया। गरमी के दिनों में रात को भी वह किसी क़ब्र के ऊपर लंबे होकर लेट जाते और वहीं सो रहते थे। स्तब्ध विजन का राज्य प्राप्त करके रॉबिंसन क्रूसो को वास्तव में कितना आनंद प्राप्त हुआ था, यह बात निश्चय-पूर्वक नहीं कही जा सकती। पर गुप्तजी को इस निर्जन निर्वास से अभिनव आनंद प्राप्त होता था, यह सुनिश्चित है। कोलंबस ने अवश्य एक सुवृहत् भूखंड का आविष्कार किया था; पर गुप्तजी अपनी अतृप्त आत्मा के लिये जिस नए साम्राज्य का आविष्कार करके उसके एकाधिपति बन बैठे थे, वह, प्रत्यक्ष में बहुत बड़ा न होने पर भी, अदृश्य में अनंत शून्य तक प्रसारित था।

"यह विजन प्रांत प्रतिक्षण अपनी भयावह शून्यता से भाँय-भाँय करता था। मृत्यु के लोक में प्राप्त इस मुक्त जीवन से वह धीरे-धीरे इतने मुग्ध हो गए कि बस्ती में जाकर वहाँ के गृहों का बद्ध जीवन देखते ही उनका जी मचल उठता था। मकान के भीतर मनुष्य कैसे रह सकता है, यह बात उन्हें आज बड़ी आश्चर्यजनक मालूम होने लगी। पानी से बचने के लिये छत के नीचे विवशता के कारण रहना ही पड़ता है, फिर भी कोई व्यक्ति दरवाज़ा बंद करके कैसे रह सकता है, यह बात सोचकर उन्हें कम आश्चर्य नहीं होता था। अब जब वह अपने प्रबंध में किसी घर के भीतर बद्ध होकर रात बिताने की कल्पना करते, तो आतंक से काँप उठते।"

यहाँ पर जो लड़का मेडिकल कॉलेज से आया हुआ था, वह बोल उठा—"यह क्लास्ट्रोफ़ोबिया का केस मालूम देता है। 'सीमटम' साफ़ झलकते हैं।"

प्रोफ़ेसर साहब ने मुसकिराकर कहा—"देखिए डॉक्टर साहब, माफ़ कीजिए, अभी आप लड़के ही हैं। अभी आपको इस लाइन में तजुर्बा हासिल नहीं हुआ। और, तजुर्बा होने पर भी मानसिक व्याधियों के संबंध में एक-दम से कोई राय नहीं दी जा सकती। यहाँ पर क्लास्ट्रो-फ़ोबिया के लक्षण झलकते हैं, संदेह नहीं, पर जिस महा-रोग से हमारा मरीज़ पीड़ित है, क्लास्ट्रोफ़ोबिया स्वयं उसके अनेक लक्षणों में से एक साधारण लक्षण-मात्र है। ख़ैर, मैं कह रहा था कि बद्ध जीवन की विभीषिका उनके हृदय में प्रतिष्ठित हो गई। चाँदनी रात में मुक्ति का अधिक आनंद लूटने की आशा से वह फूले नहीं समाते। प्रायः आधी रात तक इधर-उधर टहलते फिरते। कभी श्मशान के पास जाते, कभी दूर जंगलों के भीतर से होकर भटकने में आनंद पाते। चंद्रमा को देखकर उन्हें इसलिये आनंद प्राप्त नहीं होता कि वह अपनी शीतल किरणों से सुधा-धारा वर्षित कर रहा है, किंतु इस ख़याल से कि किसी ज़माने में वह भी हमारी इस शस्य-श्यामला धरणी के समान अन्न-जल-मय और प्राणियों से पूर्ण था; पर अब शुष्क, नीरस, निर्जीव होकर निर्वाण-गति को प्राप्त हो गया है। वह अपनी आत्मा को भी शून्य में निर्वापित और विनष्ट कर देना चाहते थे, जिससे फिर कभी इस भस्मीभूत देह के पुनरागमन की नौबत ही न पहुँचे।

"जिस श्मशान में वह कभी-कभी सैर के लिये चले जाते थे, वहाँ भैरव का एक मंदिर था। उस मंदिर के भीतर एक बाबा रहते थे। वह अकसर बाबाजी के दर्शना-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भिलाषी होकर उस मंदिर में जाया करते थे। बाबा धूनी रमाकर, धूनी के पास ही राख का एक ढेर बिछाकर, उस पर आसन जमाए रहते थे, और उसी में सोया भी करते थे। बाबा की इस कठोर साधना पर वह मुग्ध हो गए। बाबा के साथ बहस करने में उन्हें बड़ा आनंद प्राप्त होता था। बाबा ने उन्हें माया-प्रपंच विस्तार-पूर्वक समझा दिया।

"एक दिन बाबा बड़े सुस्त जान पड़े। कारण पूछा, तो मालूम हुआ वह दो दिन से भूखे हैं। कोई दानी पुरुष चार आलू दे गया था। बस, उन्हें गरम राख से भून-कर खाने का विचार था। गुप्तजी से उन्होंने कहा—'बेटा, आज कुछ खिलाओ। यह प्रश्न विकट था। गुप्तजी से कुछ उत्तर देते न बन पड़ा। बाबा ने कहा, पैसे मैं देता हूँ, तुम शहर में जाकर एक पात्र में कुछ मद्य और एक टुकड़ा बकरे का मांस ले आओ। इस वक्त जाओ, तो शाम तक लौट आ सकते हो।'

"गुप्तजी चौंके। एक तो शहर बहुत दूर था। पर इसकी भी इतनी परवा नहीं थी। मद्य और मांस के विना बाबा की क्षुधा शांत नहीं होती, यह सोचकर उनके संस्कार में आघात पहुँचा। भूख के कारण बाबा की स्वाभाविक रूक्ष मूर्ति आज अधिक उग्र बनी थी। आँखों से हिंस्र जंतु की तरह चिनगारियाँ निकली पड़ती थीं। गुप्तजी ने पूछा—'क्यों बाबाजी, मद्य-मांस का भोग लगाना क्या ज़रूरी है? किसी दूसरी चीज़ से क्या आपका पेट नहीं भर सकता?' बाबा ने कहा—'बेटा, इन चीज़ों के सेवन से चित्त एकाग्र होता है और ध्यान में सहायता मिलती है। इसके सिवा कालभैरव प्रसन्न होते हैं। तुम यह नास्तिक की तरह क्या प्रश्न कर रहे हो! आज बहुत दिनों से मद्य-मांस नहीं मिला, इसलिये जी तड़फड़ा रहा है। जाओ, जल्दी जाकर ले आओ।'

"गुप्तजी इस आदेश की अवज्ञा न कर सके। बाबा ने राख के भीतर से पैसे निकालकर दिए। पैसे लेकर गुप्तजी उठ खड़े हुए। बहुत दूर तक गंगा के किनारे-किनारे चले गए। निस्तब्ध मध्याह्न के समय गंगाजी शांत, निरुद्वेग भाव से वही चली जाती थीं। नाना चिंताओं ने उन्हें आ घेरा। वह सोचने लगे कि मैं कहाँ आया हूँ, क्या कर रहा हूँ, किसकी आज्ञा का पालन करके इस मध्याह्न में मद्य-मांस ख़रीदने के लिये चला जाता हूँ! मेरे निरुद्देश्य जीवन की गति किस ओर को बही जाती है! इस भीषण निर्जनता का आलिंगन करके शून्य के अतल गर्भ में विलीन होने से किस महागति की प्राप्ति और उच्चाकांक्षा की पूर्ति की दुराशा में निमज्जित हो रहा हूँ! निरतिशय भ्रांति और उत्कट आतंक के कारण उस निस्तब्ध और जनहीन नदी के किनारे उनके रोएँ खड़े हो गए। आज अचानक निर्वास की विभीषिका उग्र रूप लेकर उनके सामने प्रकट हुई। चलते-चलते वह पश्चिम की तरफ़ मुड़ गए। जंगल के बीच से होकर अस्पष्ट पथ की एक क्षीण रेखा बहुत दूर तक चली गई थी। उसी रास्ते से होकर वह चलने लगे। जंगल इतना भयंकर था कि दिन-दहाड़े भी उन्हें डर मालूम देने लगा। अपनी आकस्मिक भीरुता देखकर उन्हें हँसी भी आती थी, और दुःख भी होता था। कल तक रात को भी भयंकर निर्जन स्थान में एकाकी सोने में उन्हें भय नहीं होता था। वह सोचने लगे, क्या सभी मनुष्यों का हृदय प्रतिक्षण अनंत निराशा, भयंकर शून्यता और उत्कट अवसाद से ग्रस्त रहता है? कितने लोग गार्हस्थ्य धर्म का पालन करके अपने स्त्री-पुत्र, भाई-बहन, माता-पिता के प्रेम का आनंद लूट रहे होंगे। कितने ही प्रेमिक-प्रेमिकाएँ हृदय के परस्पर आदान-प्रदान से एक दूसरे को रिझाकर, उमंग से मन की कली खिलाकर, मधुर प्रेमाभि-वादन से पुलकित हो रहे होंगे! कितने ही बालक-बालि-काओं का जीवन निष्कलुष आमोद-प्रमोद में मुक्त प्रवाह से बहा जाता होगा! इतने लोग क्या सब मूर्ख हैं? क्या केवल मैं ही बुद्धिमान् हूँ, जो इस निर्जन निर्वास में उत्कट अवसादमय जीवन बिताकर मद्य-मांसगत-प्राण संन्यासी की आज्ञा का पालन करने के लिये इतनी दूर तक चला आया हूँ!

"चलते-चलते वह एक बस्ती के पास आ पहुँचे। किसान लोग खेतों में काम कर रहे थे। हलवाहे हल चला रहे थे। कोई बीज डाल रहा था, कोई बैठकर तमाखू पी रहा था, और बड़ी मेहनत के बाद कुछ आराम कर रहे थे। गउएँ और भैंसें कहीं तलैयों में जल-क्रीड़ा कर रही थीं, कहीं कोई किसान उन्हें चरा रहा था। सांसारिक और प्राकृतिक जीवन एक रूप में मिलित होकर शांत भाव से उनकी आँखों में प्रतिभात होने लगा। यह शांत छवि देखकर विना किसी कारण के उनके हृदय में अत्यंत मधुर विषाद का भाव जागरित होने लगा। जब वह गाँव से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होकर जाने लगे, तब उन्होंने देखा कि कहीं औरतें धान कूट रही हैं, कहीं चक्की पीस रही हैं। कहीं लड़के मधुर कलरव से आँगन में खेल रहे हैं। कोई किशोरी बालिका कुएँ से पानी भर रही है। गुप्तजी को ऐसा ज्ञात होने लगा, जैसे वह कभी मृत्युमय लोक से जीवन-लोक में आए हैं, और जीवन का अज्ञातपूर्व रस पान कर रहे हैं, जैसे इससे पहले कभी उन्होंने जीवन का दृश्य नहीं देखा है। ऐसे साधारण दृश्य का इतना गहरा प्रभाव उन पर क्यों हुआ, यह सोचकर उनके आश्चर्य की सीमा नहीं रही। पर कुछ भी हो, वह अतृप्त हृदय से यह रस पान कर रहे थे।

"जब वह शहर में पहुँचे, तब दुनिया ही बदल गई। जनता के कोलाहल के बीच उनके समस्त मधुर विषादमय स्वप्न भंग हो गए। उन्हें अब अपने काम की सुध हुई। उन्हें अचानक याद आया कि बाबा के लिये मदिरा-मांस ख़रीदने को वह इतनी दूर चले आए हैं। सोचकर हँसी भी आई, और आनंद भी हुआ। किससे पूछकर मदिरा की दूकान का पता चलेगा, और कैसे मांस की दूकान का संधान होगा, यह सोचकर वह घबरा उठे। पूछने पर लोग क्या कहेंगे? उनके लंबे-लंबे बाल और दाढ़ी देखकर सोचेंगे कि औघड़ बाबा कहाँ से चले आए! सब उनकी दिल्लगी उड़ावेंगे। लड़के उनके पीछे-पीछे चलकर तालियाँ पीटेंगे, और पागल बनाने की चेष्टा करेंगे। क्या करना चाहिए, उन्हें कुछ न समझ पड़ा। निरुद्देश्य व्यक्ति की तरह अली-गली में भटकने लगे। बहुत देर तक इधर-उधर भटकते फिरे। अंत को एक ऐसी दूकान में पहुँचे, जहाँ बाहर एक आदमी अर्द्धमूर्च्छितावस्था में हाथ-पाँव पसारकर चित होकर पड़ा था। उसकी चढ़ी हुई आँखें अत्यंत भयंकर मालूम दे रही थीं। बीच-बीच में उसके सिर हिलाने से ही यह मालूम देता था कि उसमें चैतन्य वर्तमान है। उसे देखकर उनका सारा शरीर कंटकित हो गया। वह न भीतर घुस सके, और न वापस जा सके।

"थोड़ी देर के बाद एक दूसरा आदमी दूकान से बाहर आया। वह धक्के खाता हुआ गुप्तजी के पास पहुँचा। उन्हें कुछ भय मालूम हुआ। पर वह स्थिर भाव से खड़े रहे। वह आदमी अंड-बंड बकता जाता था और बीच-बीच में ऐसी-ऐसी गंदी बातें मुँह से निकाल रहा था कि दोनों कानों को बंद करने को जी कर रहा था। उसके चले जाने पर एक तीसरा आदमी बाहर को आया। वह व्याकुल होकर रो रहा था। रोता-रोता वह गुप्तजी के पास आया, और गिड़गिड़ाकर उनके पैर पर पड़ गया। उन्होंने अपना पाँव छुड़ाना चाहा। इससे वह और ज़ोर से पाँव पकड़कर धाड़ें मार-मारकर रोने लगा, और कहने लगा—'नहीं बाबा, यह हो नहीं सकता। आप जूतियों से मुझे ठुकराइए, मेरे मुँह पर थूकिए, मुझसे तौबा कराइए, तब मैं आपको छोड़ूँगा। नहीं तो हरगिज़ नहीं।' वह रोता जाता था, और बीच-बीच में 'हाय राम! हाय राम!' कहके चिल्लाता जाता था। गुप्तजी के लिये अपना पिंड छुड़ाना कठिन हो गया। वह फिर-फिर कहता था—'नहीं, जब तक आप मेरे सिर पर जूतियाँ मारकर, मेरे मुँह पर थूककर, मुझसे तौबा नहीं करावेंगे, तब तक हरगिज़ नहीं।'

"लाचार होकर उन्होंने पूछा—'क्यों? तुम अपने को क्यों जूतियों से पिटवाना चाहते हो?' शराबी ने कहा—'क्यों नहीं? रोज़ की तरह आज भी मैंने अपनी घरवाली से वादा किया था कि आज से कभी नहीं पियूँगा, पर फिर—जानते हैं आप? मैं रात को रोज़ उसे पीटता हूँ। वह रोती है, और नीचे जाकर छिप जाती है। नशा उतरने पर उससे माफ़ी माँगता हूँ। आज भी उसे मारने के लिये हाथ खुजला रहे हैं। बिना मारे चैन नहीं मिलता; पर फिर पछताता हूँ। बतलाइए, कैसा मज़ा है! आज आपके दर्शन हुए हैं, अब नहीं छोड़ने का!' यह कहकर वह फिर अत्यंत दीनता से रोने लगा।

"उत्कट घृणा तथा अदम्य करुणा ने एकसाथ गुप्तजी के हृदय पर अधिकार किया। उसे समझा-बुझाकर, दिलासा देकर बड़ी मुशकिल से उन्होंने अपना पिंड छुड़ाया, और लौट चले।

"निर्विकार तथा उदासीन भाव से वह चले जाते थे। जब शहर की सीमा पर पहुँचे, तो उन्होंने देखा कि एक युवक कुछ स्त्रियों और बाल-बच्चों के साथ सैर करता हुआ चला जाता है। युवक के चेहरे पर अपूर्व उल्लास की झलक वर्तमान थी। किसी स्त्री के साथ वह परिहास करता था, किसी के प्रति स्नेह का भाव प्रकट कर रहा था, किसी के प्रति श्रद्धा प्रकट कर रहा था। बालक और बालिकाएँ अपनी सुमधुर किलकारियों से उस निर्जन प्रांत को मुखरित कर रही थीं, युवतियाँ नव-यौवन के उमंग से सुललित विलास व्यंजित कर रही थीं, और प्रौढ़ा स्त्रियाँ सरस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तथा स्निग्ध गांभीर्य का भाव झलका रही थीं। जो उत्कट दृश्य देखकर गुप्तजी लौट चले थे, यह दृश्य उसके बिलकुल विपरीत था। क्षण-भर के लिये उनका समस्त जीवन-व्यापी विषाद एक अभिनव माया-मंत्र से तिरोहित हो चला। स्नेह, प्रेम, आनंद, उमंग और उल्लास के नए-नए भावों ने उनके हृदय के तारों को झनझनाना आरंभ कर दिया। वह सोचने लगे, यदि इसी प्रकार स्निग्ध सरसता में उनका जीवन भी व्यतीत होता! हाय, इस जीवन और उनके जीवन के बीच कितना सुदीर्घ और भीषण व्यवधान है!

"वह चले जाते थे। अँधेरा होने लग गया था। अभी उन्हें बहुत दूर जाना था। पर उस श्मशानवासी संन्यासी को वह क्या उत्तर देंगे! कितनी उद्दाम आशा से वह प्रतीक्षा कर रहा होगा! क्षुधार्त व्याघ्र की तरह मांस के टुकड़े की लालसा से उसके मुँह से बार-बार लार टपकी पड़ती होगी। जब वह उन्हें रिक्तहस्त आता देखेगा, तब उसकी क्या गति होगी! कैसा भयंकर, उग्र तथा रूक्ष रूप प्रकट करके वह अपनी आँखों से आग के शोले बाहर निकालेगा! इस बात की कल्पना करते ही वह इस निर्जन अंधकार में आतंक से काँप उठे। उन्हें आश्चर्य होने लगा कि आज तक कैसे वह इस उद्दंड साधु के साथ 'मित्रता' निभाते आए हैं!

"अँधेरा जितना बढ़ता जाता था, उनका भय भी उसी परिमाण में बढ़ रहा था। आज यह अनोखी बात थी। इतने वर्ष वह अकेले निर्जन में रहे, कभी एक क्षण के लिये भी भय का विचार उनके हृदय में उत्पन्न नहीं हुआ। पर आज जब वह आनंदमय संसार की हवा अपने साथ ले चले, तो भय भी अपनी उग्रता प्रकट करने लगा। जब वह किसी गहन वन के भीतर से होकर जाते थे, तो ज़रा-ज़रा-सी आवाज़ से घबरा उठते कि कहीं कोई जंगली जानवर उन पर टूट न पड़े। अपने प्राणों के प्रति इतने मोह का अनुभव इससे पहले उन्हें कभी नहीं हुआ था। कलेजा थामकर वह चलते रहे। हृदय की धड़कन तीव्र गति से चल रही थी।

❀ ❀ ❀

"उस दिन से उनको ऐसा मालूम देने लगा जैसे निर्जनता अपनी असीमता से प्रतिक्षण उनकी आत्मा को चाट-चाटकर शोषित करने में लगी है। जब तक वह उसके अणु-परमाणु को शून्य में न बिखेर देगी, तब तक उसे चैन नहीं मलेगा। वह सोचने लगे कि इस प्रकार के निर्वाण-तत्त्व में लय होने में मज़ा क्या है? निर्जनता की विभीषिका अब उन्हें अपना तांडव नृत्य दिखाने लगी। संध्या के समय क़ब्रिस्तान की हवा प्रेतलोक के रहस्य की वार्ता वहन करती हुई उनके ख़ून को बर्फ़ के मानिंद ठंडा बना देती थी। चारों तरफ़ से खुले हुए जीर्णतम बारिकों के खँडहरों में पहले वह ख़ूब मज़े से सोते थे। अब वह एक ऐसे स्थान का संधान करने लगे, जो चारों तरफ़ से बिलकुल बंद हो। बद्ध जीवन के संयत आनंद की कल्पना से अब उन्हें हर्ष के कारण रोमांच हो आने लगा।"

यहाँ पर मेडिकल कॉलेज का डॉक्टर लड़का बिना अपनी राय दिए न रह सका। झट बोल उठा—"एगारोफ़ोबिया के लक्षण हैं।"

प्रोफ़ेसर साहब ठट्ठा मारकर हँस पड़े—"देखिए, फिर वही बात! मैं पहले ही कह चुका हूँ कि गुप्तजी का रोग अत्यंत जटिल और रहस्यपूर्ण है। यह रोग उनकी आत्मा की जड़ में पैठा हुआ था। डॉक्टरी की किसी भी किताब से इसकी असलियत मालूम नहीं की जा सकती।"

नवीन डॉक्टर साहब उनकी बात काटकर फिर कुछ कहना चाहते थे; पर अन्य सज्जनों ने अधीरता प्रकट करके कहा—"प्रोफ़ेसर साहब, आप अपनी कहानी सुनाइए। ये बातें पीछे होती रहेंगी।" उन्होंने फिर कहानी चलाई—

"गुप्तजी को अपने आप पर आश्चर्य होने लगा। वह सोचने लगे कि वह कितनी आसानी से गार्हस्थ्य जीवन का रस ले सकते थे! अच्छी-से-अच्छी स्त्री उन्हें चेष्टा करने पर प्राप्त हो सकती थी। बंधु-बांधव और नौकर-चाकरों से उनका घर भरा-पुरा हो सकता था। किसी बात की तकलीफ़ उन्हें कभी न उठानी पड़ती। पर न-जाने किस माया के रहस्यमय प्रकोप के कारण उन्हें निर्जन-वास की सूझी! उससे क्या फ़ायदा हुआ? केवल अनंत शून्य की विभीषिका का अनुभव हुआ। व्यर्थ! व्यर्थ! समस्त जीवन उनका व्यर्थता के गहन गर्त में विलीन होने को है।

"धीरे-धीरे निर्जन-वास उनके लिये असहनीय हो चला। उनका हृदय फिर से एकबार जीवन के बंधन में जकड़े जाने के लिये लालायित हो उठा। निर्वाण की मुक्ति उन्हें नीरस जान पड़ी। अंत को एक दिन वह घर लौट चले।"

❀ ❀ ❀

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रोफ़ेसर साहब ने एक दूसरा सिगरेट निकालकर जलाया। श्रोतागण कहानी का अंत सुनने के लिये अत्यंत उत्सुक होकर स्तब्ध भाव से बैठे थे। दूर पर किसी गिर्जे की घड़ी में बारह बजे का घंटा बजा। प्रोफ़ेसर साहब ने कहा—"देर हो गई है। अब लौट चलना चाहिए।"

एक महाशय ने अधीर होकर कहा—"क्यों साहब, क्या कहानी ख़तम हो गई?"

प्रोफ़ेसर साहब उनकी अधीरता पर हँस पड़े। बोले—"आप घबराते काहे को हैं? चलिए, चलते-चलते ख़तम कर लेंगे।"

सब लोग उठ खड़े हुए। चलते-चलते प्रोफ़ेसर साहब क़िस्सा सुनाने लगे—

"घर लौटकर जब गुप्तजी ने ज़मींदारी का कारबार अपने हाथ में ले लिया, तो वह उसमें बड़ी दिलचस्पी लेने लगे। ख़ुद खेतों में जाकर वह किसानों का काम देखने लगे। किसानों के जीवन के प्रति उनके हृदय में अत्यंत सहानुभूति उत्पन्न हो गई। अपने पारिवारिक जीवन-संबंधी बातों में भी उन्हें विशेष रस प्राप्त होने लगा। पर एक अज्ञात तृष्णा प्रतिपल उनका मर्म शोषित करने में लगी थी। अपनी अतृप्त आकांक्षा की तुष्टि वह किसी प्रकार भी करने में समर्थ नहीं थे। वैवाहिक जीवन की लालसा उन्हें प्रतिपल प्रबल वेग से आकर्षित करती थी। पर संसार के कठोर अनुभव से हीन ग्यारह-बारह वर्ष की किसी अज्ञात बालिका के साथ विवाह करना उनकी स्थितिवाले व्यक्ति के लिये असंभव था। उन्हें ऐसी स्त्री की आवश्यकता थी, जिसे संसार के कठिन चक्र के सुख-दुःख का पूरा अनुभव हो चुका हो, और जो उनकी प्रकृति समझकर पूर्णतया उनकी जीवन-संगिनी बनने में समर्थ हो। ऐसी स्त्री देहात में क्या, शहर में भी मिलनी कठिन थी। इष्ट-मित्रों के बहुत संधान के बाद एक ऐसी स्त्री का पता चला, जो पूर्ण युवती थी और जो हाल ही में आगरे में डॉक्टरी पास कर चुकी थी। मित्रों के अत्यंत परिश्रम के बाद इस युवती स्त्री के साथ उनकी सगाई हो गई। युवती के पिता आर्यसमाजी थे। उनकी सांसारिक स्थिति अच्छी नहीं थी। बड़ी कठिनता से वह लड़की को डॉक्टरी पढ़ाने में समर्थ हुए थे। एक धनी और सुयोग्य वर के प्राप्त होने पर उनकी प्रसन्नता की सीमा न रही। ख़ूब धूम-धाम से दोनों का विवाह हो गया। गाँव में बड़ी हलचल मची। चारों तरफ़ से आवाज़ें सुनाई देने लगीं कि जब मालिक ही समाजी हो गए, तो धरम करम सब भाड़ में गया! इस घोर अनाचार में कैसे इस गाँव में रहा जायगा! अब तो मौत होने से ही छुटकारा है। इत्यादि-इत्यादि।

"गुप्तजी रात-दिन इस प्रकार की बातें सुनकर तंग आ गए, और इलाहाबाद चले आए। एक नई उमंग में वह जीवन बिताने की चेष्टा करने लगे। इसमें संदेह नहीं कि उनकी स्त्री मायादेवी सुंदरी तथा सुशिक्षिता थीं। पर न-जाने क्यों, उनके आचार-व्यवहार तथा बोल-चाल में ऐसा भाव टपकता था, जो गुप्तजी को बिलकुल नहीं भाता था। वह अपनी स्त्री के रूप तथा शिक्षा के क़ायल होकर अपने को प्रसन्न तथा संतुष्ट रखने की चेष्टा करने लगे, पर उनकी प्रकृति देखकर उनका हृदय सिकुड़ने लगता था। नाना दुश्चिंताओं तथा कड़वे अनुभवों से क्षत-विक्षत उनकी आत्मा को जिस मंगलमय, स्निग्ध और मधुर स्नेह के अवलेप की आवश्यकता थी, वह मायादेवी से किसी प्रकार प्राप्त न हो सका। इसी प्रकार तीन साल बीत चले। तीन साल के भीतर ही उनके एक लड़का और दो लड़कियाँ उत्पन्न हो गईं। प्रथम गर्भावस्था से ही उनकी स्त्री का सुगठित मांस फूलने लग गया था, द्वितीय प्रसव में वह अधिक फूल उठीं, और तृतीय प्रसव में तो वह फूलकर कुप्पा ही हो उठीं। उनका मुख-मंडल भी अतिरिक्त मांस-वृद्धि के कारण इतना विकटाकृति हो गया कि देखकर गुप्तजी घिना गए। वह सोचने लगे कि किस सुख से इस स्त्री के साथ जीवन व्यतीत करें! उसमें श्री नहीं, संभ्रम नहीं, लज्जा नहीं, सहृदयता नहीं। रूप था, अब वह भी नहीं रहा। उनकी जीवनव्यापी सुदीर्घ तपस्या का अंतिम फल क्या यही मिला! जिसकी ख़ातिर अपना कठोर व्रत तथा संयम भंग किया और समाज की गंजनाएँ सहीं, उससे उन्हें केवल इतना ही लाभ हुआ कि जीवन के कठिन चक्र में निरानंदभाव से पिसना पड़ा। वह प्रियतमा के कोमल भुजपाशों का बंधन चाहते थे, अंत को मालूम हुआ कि वह लोहे की सख़्त ज़ंजीर से जकड़े गए हैं! वह समझ गए कि भाग्य उन्हें सब तरफ़ से धोका दे रहा है। उनका जीना अब किसी तरह से उचित नहीं।

"यह भाव धीरे-धीरे उनके हृदय में इस तरह से जम गया कि वह उसे दूर नहीं कर सके। हर वक़्त उन्हें इसी बात

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साहित्य-संसार के दिग्गज विद्वानों द्वारा प्रशंसित

सुप्रसिद्ध

गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय, लखनऊ

की उत्कृष्ट और सचित्र पुस्तकें

गंगा-पुस्तकमाला की उत्तमोत्तम पुस्तकें

१. उपन्यास

हृदय की प्यास (सचित्र)—लेखक, हिंदी के सुप्रसिद्ध लेखक आयुर्वेदाचार्य पं० चतुरसेन शास्त्री; मूल्य १॥), २)

रंगभूमि (दो भाग)—लेखक, श्रीयुत प्रेमचंदजी मूल्य ५), ६)

विजया (सचित्र)—मूल-लेखक, श्री० शरच्चंद्र चट्टोपाध्याय; अनुवादक, सुधा-संपादक पं० रूपनारायण पांडेय कविरत्न; मूल्य १॥), २)

बहता हुआ फूल (सचित्र)—मूल लेखक, बाबू चारुचंद्र बंद्योपाध्याय बी० ए०; अनुवादक, सुधा-संपादक पं० रूपनारायण पांडेय कविरत्न; मूल्य २॥), ३)

पवित्र पापी (सचित्र) (एक रूसी उपन्यास का अनुवाद)—अनुवादक, पं० व्रजकृष्ण गुर्टू बी० ए०, एल्-एल्० बी० और कविराज विद्याधर विद्यालंकार; मूल्य ३), ३॥)

विचित्र योगी—लेखक, श्रीद्वारकाप्रसाद मौर्य बी० ए०, एल्-एल्० बी; मूल्य १), १॥)

मा—लेखक, पं० विश्वंभरनाथ शर्मा कौशिक; मूल्य लगभग ३)

संसार-रहस्य अथवा अधःपतन—लेखक, ठाकुर प्रसिद्धनारायणसिंह बी० ए०; मूल्य १॥), २)

सीधे पंडित—लेखक, ठाकुर प्रसिद्धनारायणसिंह बी० ए०; मूल्य १॥)

२. गल्प और कहानियाँ

चित्रशाला (सचित्र)—लेखक, विश्वंभरनाथ शर्मा कौशिक; मूल्य २), २॥)

भूत आलाप—लेखक, हिंदी-साहित्य-संसार के सर्वमान्य ग्रंथी पं० महावीरप्रसादजी द्विवेदी; मूल्य १), १॥)

जातक-कथा-माला—अनुवादक, बाबू रामचंद्र वर्मा, मूल्य १), १॥)

नंदन-निकुंज—लेखक, स्व० श्रीचंडीप्रसादजी बी० ए० 'हृदयेश'; मूल्य १), १॥)

अश्रुपात (सचित्र)—लेखक, ख्वाजा हसन निज़ामी; अनुवादक, पं० श्रीराम शर्मा बी० ए०; मूल्य १), १॥)

जासूस की डाली (सचित्र)—लेखक, बाबू गोपालराम गहमरी, जासूस-संपादक; मूल्य १), १॥)

नाट्यकथाऽमृत—लेखक, प्रिंसिपल चंद्रमौलि सुकुल एम्० ए०, एल्० टी०; मूल्य १), १॥)

प्रेम-गंगा—अनुवादक, स्व० पं० ईश्वरीप्रसाद शर्मा, संपादक "हिंदूपंच"; मूल्य १), १॥)

प्रेम-प्रसून—लेखक, श्रीप्रेमचंदजी; मूल्य १=), १॥=)

प्रेम-द्वादशी (सचित्र)—लेखक, श्रीप्रेमचंदजी; मूल्य १), १॥)

मंजरी (सचित्र)—अनुवादक, सुधा-संपादक पं० रूपनारायणजी पांडेय कविरत्न; मूल्य १), १॥)

३. नाटक

कर्बला—लेखक, श्रीप्रेमचंदजी; मूल्य १॥), २)

कीचक—लेखक, श्रीभगवन्नारायण भार्गव बी० ए०, एम्० एल्० सी०; मूल्य १), १॥)

कृष्णकुमारी (सचित्र)—लेखक, सुधा-संपादक पं० रूपनारायणजी पांडेय कविरत्न; मूल्य १), १॥)

ग्राँजहाँ (सचित्र)—लेखक, सुधा-संपादक पं० रूपनारायणजी पांडेय कविरत्न; मूल्य १=), १॥=)

जयद्रथ-वध—लेखक, पं० गोकुलचंद्र शर्मा बी० ए०; मूल्य ॥=), १=)

संचालक गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय, २६-३०, अमीनाबाद-पार्क, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दुर्गावती (सचित्र)—लेखक, लखनऊ-युनिवर्सिटी के हिंदी-लेक्चरार पं० बदरीनाथजी भट्ट बी० ए०; मूल्य १), १॥)

बुद्ध-चरित्र (सचित्र)—अनुवादक, सुधा-संपादक पं० रूपनारायणजी पांडेय कविरत्न; मूल्य ॥), १)

वीर भारत—लेखक, पं० भवानीदत्त जोशी बी० ए०, एल्-एल्० बी०; मूल्य ॥), १)

वेणी-संहार नाटक—लेखक, पं० महावीरप्रसादजी द्विवेदी; मूल्य ॥=), १=)

वरमाला (सचित्र)—लेखक, श्रीयुत गोविंदवल्लभ पंत; मूल्य ॥), १)

पूर्व-भारत—लेखक, हिंदी के धुरंधर विद्वान् "मिश्रबंधु"; मूल्य ॥=), १=)

४. व्यंग्य, हास्य और प्रहसन

अचलायतन—मूल-लेखक, श्रीरवींद्रनाथ ठाकुर; अनुवादक, सुधा-संपादक पं० रूपनारायण पांडेय कविरत्न; मूल्य ॥)

ईश्वरीय न्याय—लेखक, प्रोफ़ेसर श्रीरामदास गौड़ एम्० ए०; मूल्य ॥)

मूर्ख-मंडली—लेखक, सुधा-संपादक पं० रूपनारायण पांडेय कविरत्न; मूल्य ॥=), १=)

मिस्टर व्यास की कथा—लेखक, स्वर्गीय पंडित शिवनाथजी शर्मा बी० ए०; मूल्य २॥), ३)

रावबहादुर—मूल-लेखक, मौ० मौलियर; अनुवादक, पं० लल्लीप्रसाद पांडेय; मूल्य ॥), १)

बबड़धोंधों—लेखक, लखनऊ-युनिवर्सिटी के हिंदी-लेक्चरार पं० बदरीनाथ भट्ट बी० ए०; मूल्य ॥), १॥=)

५. काव्य

आत्मार्पण—लेखक, द्वारकाप्रसाद गुप्त "रसिकेंद्र"; मूल्य लगभग ॥)

उषा—लेखक, स्व० श्रीशिवदास गुप्त "कुसुम"; मूल्य ॥=)

पराग—लेखक, सुधा-संपादक पं० रूपनारायण पांडेय कविरत्न; मूल्य ॥), १)

पुष्पांजलि—लेखक, श्रीनरेंबुल श्यामबिहारी मिश्र एम्० ए० और रायबहादुर पं० शुकदेवबिहारी मिश्र बी० ए०; मूल्य १॥)

भारत-गीत—लेखक, कवि-सम्राट् पं० श्रीधर पाठक; मूल्य ॥), १)

मानस-मुक्तावली—संग्रहकर्ता, रायबहादुर बाबू मुकुंदलालजी गुप्त; मूल्य ।=)

६. गद्य-साहित्य

निबंध-निचय—लेखक, हिंदी के उत्कृष्ट समालोचक पं० जगन्नाथप्रसाद चतुर्वेदी; मूल्य १), १॥)

विश्व-साहित्य—लेखक, सरस्वती-संपादक श्रीपदुमलाल-पुन्नालाल बख़्शी बी० ए०; मूल्य १॥), २)

साहित्य-सुमन—लेखक, स्व० पं० बालकृष्ण भट्ट; मूल्य ॥=), १=)

हिंदी—लेखक, लखनऊ-विश्वविद्यालय के हिंदी-लेक्चरार पं० बदरीनाथ भट्ट बी० ए०; मूल्य ॥=), १=)

७. समालोचनाएँ

देव और बिहारी—लेखक, पं० कृष्णबिहारी मिश्र बी० ए०, एल्-एल्० बी०; १॥), २)

भवभूति—अनुवादक, हिंदी-संसार के सुप्रसिद्ध विद्वान् पं० ज्वालादत्त शर्मा; मूल्य ॥=), १=)

हिंदी-नवरत्न—लेखक, हिंदी-संसार के धुरंधर समालोचक "मिश्रबंधु"; मूल्य ४॥)

८. जीवन-चरित्र

कारनेगी और उसके विचार—लेखक, श्रीउमरावसिंह कारुलिक; मूल्य ॥=)

केशवचंद्र सेन—लेखक, भारतीय हृदय; मूल्य १), १॥)

प्रभु-चरित्र—लेखक, पं० शिवराम शुक्ल; मूल्य ॥)

प्राचीन पंडित और कवि—लेखक, आचार्य पं० महावीरप्रसाद द्विवेदी; मूल्य ॥=), १=)

बंकिमचंद्र चटर्जी—लेखक, सुधा-संपादक पं० रूपनारायण पांडेय कविरत्न; मूल्य १), १॥)

सुकवि-संकीर्तन (सचित्र)—लेखक, साहित्य-महारथी पं० महावीरप्रसादजी द्विवेदी; मूल्य १), १॥)

९. इतिहास

इँगलैंड का इतिहास (तीन भाग)—लेखक, डॉ० [illegible] विद्यालंकार पी०-एच्० डी०;

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जापान का इतिहास—लेखक, ऑनरेबुल पं० श्याम-विहारी मिश्र एम्० ए०, रायबहादुर पं० शुकदेवविहारी मिश्र बी० ए० ; मूल्य ॥।=)

स्पेन का इतिहास—लेखक, ऑनरेबुल पं० श्यामविहारी मिश्र एम्० ए०, रायबहादुर पं० शुकदेवविहारी मिश्र बी० ए० ; मूल्य ॥।=)

१०. अर्थशास्त्र और व्यापार

भारतीय अर्थशास्त्र—लेखक, भूतपूर्व प्रेस-संपादक बाबू भगवानदासजी केला ; मूल्य २॥), ३॥)

विदेशी विनिमय—लेखक, प्रयाग-विश्वविद्यालय के अर्थ-शास्त्र अध्यापक श्रीदयाशंकर दुबे एम्० ए०, एल्-एल्० बी० ; मूल्य १), १॥)

११. कृषि

उद्यान (सचित्र)—लेखक, श्रीशंकरराव जोशी एग्रिकल्चरल ऑफ़िसर ; मूल्य १=), १॥=)

किसानों की कामधेनु (सचित्र)—लेखक, हिंदी के सुप्रसिद्ध लेखक पं० गंगाप्रसाद अग्निहोत्री ; मूल्य ।=)

कृषि-मित्र—लेखक, पं० गंगाप्रसाद पांडेय L. A. G. सुपरिटेंडेंट एग्रिकल्चर ; मूल्य ।=)

कृषि-विद्या—लेखक, पं० अश्विनीकुमार शुक्ल; मूल्य ॥), १)

तरु-जीवन—लेखक, पं० गंगाशंकर पंचोली; छप रहा है।

१२. स्वास्थ्य और चिकित्सा

तात्कालिक चिकित्सा (सचित्र)—लेखक, बाबू लालबहादुरलाल; मूल्य १), १॥)

संक्षिप्त शरीर-विज्ञान—लेखिका, श्रीमती हेमंतकुमारी भट्टाचार्य; मूल्य ॥=)

संक्षिप्त स्वास्थ्य-रक्षा—लेखिका, श्रीमती हेमंतकुमारी भट्टाचार्य; मूल्य ॥=)

स्वास्थ्य की कुंजी—लेखक, डॉ० बाबूराम गर्ग ; मूल्य १), १॥)

१३. वैज्ञानिक

भूकंप—लेखक, सुप्रसिद्ध विद्वान् बाबू रामचंद्र वर्मा; मूल्य १)

मनोविज्ञान—लेखक, प्रिंसिपल पं० चंद्रमौलि शुक्ल एम्० ए०, एल्० टी० ; मूल्य ॥), १)

१४. नवयुवकोपयोगी

जीवन का सद्व्यय—अनुवादक, श्रीहरिभाऊ उपाध्याय, संपादक हिंदी नवजीवन ; मूल्य १), १॥)

एशिया में प्रभात—मूल लेखक, पाल रिचर्ड ; अनुवादक, श्रीठाकुर कल्याणसिंह शेखावत बी० ए० ; मूल्य ॥), १)

भिखारी से भगवान्—अनुवादक, ठाकुर बाबू नंदनसिंह बी० ए० ; मूल्य १), १॥)

सुख तथा सफलता मूल्य ।)

१५. योग

प्राणायाम—लेखक, ठाकुर प्रसिद्धनारायणसिंह बी० ए० ; मूल्य ॥।=), १।=)

कर्मयोग—लेखक, श्रीसंतराम बी० ए ; मूल्य ॥), १)

हठयोग—लेखक, ठाकुर प्रसिद्धनारायणसिंह बी० ए० ; मूल्य लगभग २)

योग-शास्त्रांतर्गत धर्म—लेखक, ठाकुर प्रसिद्धनारायणसिंह बी० ए० ; मूल्य ॥)

योगत्रयी—लेखक, ठा० प्रसिद्धनारायणसिंह बी०ए०; मूल्य॥)

राजयोग—लेखक, ठा० प्रसिद्धनारायणसिंह बी०ए०; मूल्य १॥)

योग की कुछ विभूतियाँ—लेखक, ठाकुर प्रसिद्धनारायणसिंह बी० ए० ; मूल्य ॥।)

जीवन-मरण-रहस्य—लेखक, ठाकुर प्रसिद्धनारायणसिंह बी० ए० ; मूल्य ।=)

योग-दर्पण—लेखक, लाला कन्नोमल एम्० ए० ; मूल्य लगभग १)

१६. महिला-माला की मनोहर मणियाँ

कमला-कुसुम (सचित्र)—लेखिका, श्रीमती गिरिजा देवी; मूल्य १)

श्रद्धा—लेखक, कविराज श्रीप्रतापसिंह वैद्य, हिंदू-विश्वविद्यालय के आयुर्वेद विभाग के सुपरिटेंडेंट ; मूल्य ॥।=)

गुप्त-संदेश (दो भाग)—लेखक, श्री डॉक्टर युद्धवीरसिंह ; मूल्य १=)

देवी पार्वती (सचित्र)—लेखक, मुं० बहादुरलाल मूल्य १)

संचालक गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय, २९-३०, अमीनाबाद-पार्क, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

5) की पुस्तकें मँगाइए और सुधा मुफ्त लीजिए
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वी द्रौपदी (सचित्र)—लेखक, कविवर श्रीरामचरितजी उपाध्याय ; मूल्य ॥)

नारी-उपदेश—लेखक, श्रीगिरिजाकुमार घोष ; मूल्य ॥)

पत्रांजलि—मूल-लेखक, श्रीसतीशचंद्र चक्रवर्ती ; अनुवादक पं० कात्यायनीदत्त त्रिवेदी ; मूल्य ॥)

भारत की विदुषी नारियाँ—संपादिका, श्रीमती कृष्णकुमारी; मूल्य ॥)

भारतीय स्त्रियाँ—अनुवादक, बाबू रामचंद्र वर्मा; मूल्य १॥), २)

महिला-मोद—लेखक, साहित्य-महारथी पं० महावीरप्रसादजी द्विवेदी ; मूल्य ॥)

लक्ष्मी (सचित्र) - लेखक, श्रीगिरिजाकुमार घोष; मूल्य ॥=)

वनिता-विलास (सचित्र)—लेखक, भूतपूर्व सरस्वती-संपादक पं० महावीरप्रसादजी द्विवेदी ; मूल्य ॥)

१७. बालविनोद-वाटिका के सुंदर सुमन

इतिहास की कहानियाँ (सचित्र)—लेखक, मुं० जहूरबख़्श हिंदी-कोविद ; मूल्य ॥=)

कीड़े-मकोड़े (सचित्र)—लेखक, पं० भूपनारायणजी दीक्षित बी० ए०, एल्० टी० ; मूल्य ॥=)

खिलवाड़—लेखक, पं० भूपनारायणजी दीक्षित बी० ए०, एल्० टी० ; मूल्य ।)

खेल-पचीसी—लेखक, श्रीप्रतिपालसिंहजी ; मूल्य ।=)

गधे की कहानी (सचित्र)—लेखक, पं० भूपनारायणजी दीक्षित बी० ए०, एल्० टी० ; मूल्य ॥), १)

नटखट पाँड़े (सचित्र)—लेखक, श्री पं० भूपनारायणजी दीक्षित बी० ए०, एल्० टी० ; मूल्य १॥), २)

परोपकारी हातिम (सचित्र)—लेखक, मुं० जहूरबख़्श हिंदी-कोविद ; मूल्य १), १॥)

बालनीति-कथा (दो भाग)—मूल-लेखक, हिंदू-विश्वविद्यालय, काशी के प्रिंसिपल और प्रो-वाइस-चांसलर श्रीयुत ए० बी० ध्रुव एम्० ए० एल्-एल्० बी० ; अनुवादक, लखनऊ-विश्वविद्यालय के हिंदी-लेक्चरार श्रीपं० बदरीनाथभट्ट बी० ए०; मूल्य २), ३)

भगिनी-भूषण—लेखक, स्व० श्रीबा० गोपालनारायणसेनसिंह बी० ए० ; मूल्य =)

भारत के सपूत (सचित्र)—लेखक, मुं० जहूरबख़्श हिंदी-कोविद ; मूल्य ॥=)

लड़कियों का खेल (सचित्र)—लेखक, स्व० श्रीगिरिजा-कुमार घोष ; मूल्य ॥)

सुघड़ चमेली—लेखक, श्रीयुत रामजीदास भार्गव ; मूल्य=)

हँसी-खेल—लेखक, श्रीजगमोहन 'विकसित'; मूल्य लगभग ॥)

१८. सुकवि-माधुरी-माला के अनुपम रत्न

बिहारी-रत्नाकर—प्रणेता, व्रजभाषा-साहित्य के पारदर्शी विद्वान् बाबू जगन्नाथदास "रत्नाकर" बी० ए०; मूल्य ५)

मतिराम-ग्रंथावली—संपादक, पं० कृष्णविहारी मिश्र बी० ए०, एल्-एल्० बी ; मूल्य २॥), ३)

मिश्रबंधु-विनोद (दो खंड)—लेखक, पं० गणेशविहारी मिश्र, माननीय पं० श्यामविहारी मिश्र एम्० ए० और रा० ब० पं० शुकदेवविहारी मिश्र बी० ए० ; मूल्य

प्रथम खंड २), २॥)

द्वितीय खंड ३), ३॥)

१९. प्रकीर्णक पुस्तकें

अयोध्यासिंह उपाध्याय— मूल्य =)

देशहितैषी श्रीकृष्ण—लेखक, स्वर्गीय स्वनाम-धन्य पं० राधाचरण गोस्वामी ; मूल्य =)

द्विजेंद्रलाल राय—लेखक, सुधा-संपादक पं० दुलारेलाल भार्गव और पं० रूपनारायण पांडेय कविरत्न ; मूल्य =)

पूर्ण-संग्रह—संपादक, पं० कृष्णविहारी मिश्र बी० ए०, एल्-एल्० बी० ; मूल्य १॥), २)

प्रायश्चित्त-प्रहसन—लेखक, सुधा-संपादक पं० रूपनारायण पांडेय कविरत्न ; मूल्य ।)

मध्यम व्यायोग—लेखिका, श्रीमती सुशीलादेवी जायसवाल; मूल्य =)

स्कॉड-मार्चिंग (सचित्र)—लेखक, पं० मनोहरप्रसाद त्रिपाठी ; मूल्य ॥)

सम्राट्-चंद्रगुप्त—लेखक, पं० बालमुकुंद वाजपेयी भूतपूर्व लक्ष्मण-संपादक ; मूल्य

Hindi in Thirty days—लेखक, श्रीरामस्वरूप एम्० ए०, एम्० आर० ए० एस्० विद्याभूषण

संचालक गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय, २९-३०, अमीनाबाद-पार्क, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का सोच रहने लगा कि किस उपाय से जीवन का अंत किया जाय। अंत को एक दिन उन्होंने अपनी छाती पर पिस्तौल से गोली चलाकर आत्महत्या कर डाली।"

सब श्रोता क्षण-भर के लिये चौंक पड़े। कहानी का यह परिणाम अप्रत्याशित था। कुछ देर तक सब चुप रहे। थोड़ी देर बाद किसी ने पूछा,—"श्रीमतीजी क्या अभी प्रैक्टिस करती हैं?"

प्रोफ़ेसर साहब ने कहा—"नहीं; प्रैक्टिस अब क्यों करने लगीं! स्टेट की आमदनी कुछ कम थोड़े ही है! फ़िज़ूल तकलीफ़ उठाकर रोगियों की हत्या का पाप अपने सिर मढ़ना वह उचित नहीं समझतीं। सुनते हैं, उनके माता-पिता, भाई-बहन, मौसी-फूफी, सब-के-सब उनके पास ही आकर डट गए हैं। अच्छा मौक़ा हाथ लगा है!"

गुप्तजी के जीवन के दुःखांत नाटक का क़िस्सा सुनकर सभी के हृदय में अवसाद की प्रगाढ़ कालिमा छा गई थी। अंत को इस तुच्छ स्वार्थ की छीना-झपटी के विचार ने कॉलेज के लड़कों के नवीन-उत्साह-पूर्ण हृदयों में, उस समय के लिये, मानव-जीवन के प्रति घृणा तथा उदासीनता का भाव जागरित कर दिया। उस मंडली में केवल एक युवक था, जो यह क़िस्सा सुनकर जीवन के प्रति अधिक उत्साहित हो उठा। वह था मेडिकल कॉलेज का डॉक्टर लड़का।

चाँदनी निर्विकार भाव से छिटक रही थी।

फूल

[लेखक, कविवर पं० अयोध्यासिंह उपाध्याय "हरिऔध"]

किसलिये दिया स्वर्ग को छोड़,
हो गई कैसे ऐसी भूल?
कह रहे हो क्या मुँह को खोल,
बता दोगे क्या हमको फूल?
रंग ला दिखलाते हो ढंग,
दिलों को ले लेते हो मोल;
खींचकर जी को अपनी ओर,
कौन-सा भेद रहे हो खोल?
मुसकिरा जतलाते हो प्यार,
चुप बने रह करते हो बात;
किसलिये करके किसका मोह,
महकते रहते हो दिन-रात?
हुआ है किसका इतना मान,
मची कब किसकी इतनी धूम;
भाँवरें भर जाता है भौंर,
आ हवा मुँह लेती है चूम।
हो बड़े अलबेले, अनमोल,
डालियों की गोदी के लाल;
सदा लेते हो आँखें छीन,
न-जाने कैसा जादू डाल।
सुनहला पहनाता है ताज,
तुम्हें उगता सूरज कर प्यार;
वार देती है तुम पर ओस,
निज गले का मोती का हार।
तुम न होते तो खिलकर कौन,
बुझाता कितनों की रस-प्यास;
बड़ी रंगीन साड़ियाँ पैन्ह,
तितलियाँ आतीं किसके पास।
फबीला तुम-सा मिला न और,
रसीला याँ ऐसा है कौन;
खिल सका तुम-जैसा कब आन,
हँस सका है तुम-जैसा कौन।
बुरों का सब दिन करके साथ,
कौन अपने को सका सँभाल;
तुम्हीं काँटों में करके वास,
खिले ही मिलते हो सब काल।
प्यार कर कोई लेवे चूम,
दुखों में कोई देवे डाल।
भूलकर अपना सारा रंज,
कर सके सबको तुम्हीं निहाल।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रहस्यवादियों की कुछ विशेषताएँ

[लेखक, अध्यापक पं० अवध उपाध्याय]

(पूर्वार्द्ध)

हस्यवादी लोग अंतिम सत्य अर्थात् ईश्वर का अनुभव करने का दावा करते हैं। ये लोग यह भी कहते हैं कि ईश्वर का अनुभव कर लेने पर भी, ब्रह्मानंद का अनुभव कर लेने पर भी, मनुष्य एक सांत और परिमित जीव रहता है, और संयोगावस्था में वह अनंत का अनुभव करता तथा उसे समझता है। मनुष्यों के भीतर एक ऐसी शक्ति काम करती रहती है, जो सर्वदा पूर्ण तथा कल्याण की ओर खींचती रहती है, और रहस्यवादी के पूर्ण अनुभव की दशा ही उस शक्ति की अंतिम सीमा है। रहस्यवादियों के अनुभव से धर्म के विकट प्रश्न भी हल हो जाते हैं। अब हम लोग रहस्यवाद की प्रधान दशाओं का वर्णन करेंगे; क्योंकि यह अत्यंत आवश्यक है। रहस्यवाद के प्रधान लक्षणों का वर्णन करने से सत्य का अर्थ भी अधिक स्पष्ट हो जायगा। परंतु ऐसा करने में हमें बहुत ही संक्षिप्त वर्णन करना पड़ेगा; क्योंकि रहस्यवादियों के अनुभव भिन्न-भिन्न और कई प्रकार के होते हैं। रहस्यवाद का वर्णन करना, अतीत, परमोत्तम, इंद्रियातीत तथा शाश्वत क्रम का वर्णन करना है। यह अनुभव मस्तिष्क के उस अंश से संबद्ध रहता है, जो अमर तथा इन इंद्रियों के अनुभव से परे है। यह न भूलना चाहिए कि रहस्यवादी का अनुभव पूर्ण होता है। इस अनुभव से संसार-भर के कवियों, कलाविदों, दार्शनिकों, धार्मिकों तथा संतों ने सहायता ली है। यही अनुभव उनकी अमरता तथा उनकी अंतःप्रेरणा का प्रायः कारण हुआ है। रहस्यवादियों का अनुभव ही संसार के कुछ श्रेष्ठ कवियों की कविता का मूल तथा प्रधान स्रोत बन गया है। कितने ही दार्शनिकों तथा धार्मिकों के सिद्धांतों की अमर भित्ति उनका रहस्यवाद-संबंधी अनुभव ही है। कितने ही संतों की तो यह जान ही है। रहस्यवाद के सिद्धांतों के समझने, लिखने तथा उस पर विचार करने के लिये भी रहस्यवादियों की ही अधिक आवश्यकता है; क्योंकि दूसरे लोग न तो इसे भली भाँति समझ सकते हैं, और न इस पर अच्छी तरह से लिख ही सकते हैं। यही कारण है कि इस संबंध में बहुत मतभेद पाया जाता है। इस मतभेद का प्रधान कारण यह है कि अभी संसार में जितने रहस्यवादी हो गए हैं, उनकी संख्या बहुत ही कम है। यह भी संभव है कि इन इने-गिने रहस्यवादियों में भी कुछ लोगों का अनुभव वास्तविक न होकर केवल भ्रमात्मक ही हो। इसके अतिरिक्त रहस्यवाद के विषय में लिखनेवाले भी कुछ रहस्यवादी नहीं हैं। इसलिये रहस्यवाद के विषय में मतभेद होना आवश्यक है। इन सब कठिनाइयों के होते हुए भी हम रहस्यवाद—सत्य रहस्यवाद—के प्रधान लक्षण लिखने का साहस कर रहे हैं। रहस्यवाद भिन्न-भिन्न परिस्थितियों में भिन्न-भिन्न रूप धारण कर लेता है। रहस्यवाद के ये रूप या आकार क्रमानुसार लिखे जाते हैं; परंतु इन क्रमों में पहले का आशय यह नहीं कि वह दूसरे से प्रसिद्ध है। ये क्रम किसी दृष्टिकोण से नहीं लिखे गए हैं।

❀ ❀ ❀

रहस्यवादियों का यह अनुभव बहुत ही आकस्मिक होता है। अधिक लोगों का विचार है कि यह आकस्मिकता ऊपरी है। यदि रहस्यवादियों का यह अनुभव वास्तव में मनुष्यों के विकास का सर्वश्रेष्ठ तथा सबसे ऊँचा उदाहरण है, तो, जीवन-विद्या के एक प्रधान सिद्धांत के अनुसार, इसे अवश्य ही आकस्मिक और अनपेक्षित होना चाहिए। जीवन-विद्या (Biology) के जाननेवाले परिवर्तनवाद को स्वीकार करते हैं। उस परिवर्तनवाद के सिद्धांत के अनुसार रहस्यवादियों के अनुभव की आकस्मिकता तथा अनपेक्षितता ठीक ही है। जब हम कहते हैं कि रहस्यवादियों का यह अनुभव आकस्मिक होता है, तब हमारा यह अभिप्राय नहीं होता कि हम लोगों के भूत-काल के अनुभव में एक ऐसे अनुभव का समावेश हो जाता है, जो सब तरह से बिलकुल नया रहता है। कोई भी परिवर्तन ऐसा नहीं होता। परिवर्तनवाद के सिद्धांत के अनुसार भी हम लोगों का अनुभव अधिक विस्तृत हो जाता है, हम लोगों के अनुभवों के गुण में परिवर्तन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हो जाता है, और यह परिवर्तन अचानक, बहुत शीघ्र तथा आकस्मिक होता है। हम लोगों की इंद्रियों तथा शक्तियों में बहुत अधिक गुणात्मक तथा विस्तारात्मक परिवर्तन हो जाता है।

रहस्यवादियों के इस अनुभव को समझाने के लिये हम लोग भौतिक संसार से उदाहरण ले सकते हैं। मान लीजिए, बरफ़ का यहाँ एक टुकड़ा रक्खा है, और यह भी मान लीजिए कि उसका तापक्रम इस समय एक अंश है। अब इसमें और अधिक गरमी पहुँचाइए। मान लीजिए, अब उस बरफ़ के टुकड़े का तापक्रम २ अंश हो गया। इस दशा में भी बरफ़ के टुकड़े में कोई विशेष अंतर नहीं पड़ेगा। इस बरफ़ को और भी अधिक गरम करते चले जाइए। बरफ़ के टुकड़े में गरमी की मात्रा प्रतिक्षण बढ़ती चली जायगी; परंतु तो भी बरफ़ के टुकड़े के गुणों में कुछ विशेष अंतर नहीं पड़ेगा, जब तक उसका तापक्रम ३२ अंश न हो जाय। परंतु जब उस बरफ़ के टुकड़े का तापक्रम ३२ अंश हो जाता है, तब एक प्रकार का भौतिक परिवर्तन उत्पन्न हो जाता है, और तब बरफ़ एक ठोस पदार्थ नहीं रहती; किंतु एक द्रव (जल की तरह चीज़) पदार्थ का रूप धारण कर लेती है। इसी को भौतिक परिवर्तन के नाम से पुकार सकते हैं।

इस प्रकार ३२ अंश के तापक्रम पर यह बरफ़ का टुकड़ा पानी हो जाता है। यदि इस पानी को और अधिक गरम करते ही चले जायँ, तो, अधिक तापक्रम होने पर भी, जल के रूप में पहले कोई विशेष परिवर्तन नहीं होता; परंतु जब जल का तापक्रम २१२° अंश हो जाता है, तब जल के गुण में फिर परिवर्तन हो जाता है और वह वाष्प (भाप) बनकर आकाश में अदृश्य हो जाता है। भौतिक संसार में परिवर्तनवाद का यह एक अच्छा उदाहरण है। हम लोगों की चेतनता में भी ऐसे ही परिवर्तनवाद का उदाहरण पाया जाता है। प्रारंभिक दशा में हम लोगों की चेतनता पाशविक रहती है, और तब एक ऐसी दशा आती है, जिसमें पाशविक चेतनता मनुष्योचित चेतनता का रूप धारण कर लेती है। इस दशा में मनुष्य एक विचारवान् जीव हो जाता है, और वह इस संसार की समस्या के बारे में सोचने-विचारने तथा अनुभव करने लगता है। यह परिवर्तन भी यदि बिलकुल नहीं, तो लगभग आकस्मिक तो अवश्य होता है। मनुष्योचित चेतनता में भी इसी प्रकार का एक परिवर्तन होता है, और मनुष्य तब रहस्यवादी हो जाता है। इस समय का अनुभव सर्वश्रेष्ठ, उच्च तथा पूर्ण होता है। इस दशा में मनुष्यों की साधारण अवस्था का अंत हो जाता है और उसे सार्वभौमिक चेतनता का अनुभव होने लगता है। इस समय पता चल जाता है कि यह जीव भी ईश्वर ही है। इस अनुभव की अवस्था में मनुष्य अपने को ईश्वर में लीन पाता है, और इस समय ज्ञाता और ज्ञेय में कुछ अंतर ही नहीं रह जाता। हम लोगों के साधारण अनुभव से रहस्यवादियों का अनुभव कहीं श्रेष्ठ और ऊँचा होता है। इस अनुभव की दशा में मनुष्य चिल्ला उठता है—"अहं ब्रह्मास्मि।" इसी अनुभव की अवस्था में मनसूरअली 'अनलहक़' कहकर चिल्ला उठता था। इसी अनुभव के आवेश में महात्मा कबीरदासजी कह उठे हैं—

"मैं लागा उस एक से, एक भया सब माहिं ;
सब मेरा, मैं सबन का, तहाँ दूसरा नाहिं।"

इसीलिये संत पाल लिखता है—"If any man be in Christ, he is a new creature; the old things have passed away; behold, they are become new."

इसका अर्थ यह है कि यदि कोई मनुष्य ईसा में हो, तो वह बिलकुल एक नया जंतु हो जाता है। पुरानी बातें बीत जाती हैं, और मनुष्य बिलकुल नया हो जाता है।

हमें यह भी भली भाँति समझ लेना चाहिए कि रहस्यवादियों के अनुभव में जो यह अंतिम परिवर्तन होता है, वह उन सब परिवर्तनों से ऊँचा होता है, जिनका प्रायः सब लोग अपने जीवन-काल में अनुभव करते हैं। उस समय रहस्यवादी उस अनुभव का आनंद लूटता है, जिसका पता उसे बहुत पहले से लग गया था। कहा जा चुका है कि यह अनुभव आकस्मिक होता है; क्योंकि यह किसी साधारण वस्तु का अनुभव नहीं, अंतिम सत्य अथवा परमेश्वर का होता है। यह चेतनता का वह स्पष्ट परिवर्तन है, जिसमें सांत अनंत का अनुभव करता है जिसमें दृश्य अपना असली रूप धारण करता है, जिसमें असत्य के लिये कोई स्थान नहीं, सब सत्य-ही-सत्य दिखलाई पड़ता है, जिसमें कोई वस्तु सामयिक नहीं, सब शाश्वत अर्थात् नित्य का रूप धारण करती हैं।

❀ ❀ ❀

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रारंभिक अवस्था में रहस्यवादियों के लिये एकांत तथा मौन रहने की भी आवश्यकता पड़ती है। रहस्यवादियों का अनुभव मनुष्य के मस्तिष्क की किसी विशेष दशा पर निर्भर है। हम लोगों की बुद्धि प्रायः सब वस्तुओं की विवेचना किया करती है और प्रायः छोटी-छोटी वस्तुओं के बारे में भी अपनी शक्ति लगाया करती है। और हम लोगों की इच्छाएँ, नीचे खींचनेवाले तथा क्षण-भंगुर सुखों के संतोषों में प्रायः लगी ही रहती हैं। जो मनुष्य रहस्यवादी होना चाहता है, उसे इन दोनों बातों को—कम-से-कम कुछ समय के लिये—अवश्य ही छोड़ देना चाहिए। ऐसा करने से मस्तिष्क, उच्च भावों तथा विचारों के लिये ग्रहणशील रहता है। जब मनुष्य, बुद्धि की विवेचना और इच्छा के क्षण-भंगुर सुखों का परित्याग करता है, तभी उसकी अंतरात्मा इस संसार के गहरे अर्थों को समझ सकती है, अन्यथा नहीं, और ऐसी अवस्था प्राप्त करने के लिये एकांत-वास की अत्यंत अधिक आवश्यकता है। इसीलिये प्रसिद्ध दार्शनिक जेम्स लिखता है—"रहस्यवाद एक विशेष मनुष्य का वह अनुभव है, जिसमें वह एकांत में अपने को उस ईश्वर में डूबा हुआ पाता है, जो इस संसार का एक-मात्र कारण है।" इस एकांत-वास पर संसार के अधिक लोगों ने बहुत ही अधिक ज़ोर दिया है। इस संबंध में पाश्चात्य देश का एक प्रसिद्ध विद्वान् लिखता है—"निर्जन-स्थान तथा एकांत-वास ही प्रतिभा की माता है।"

संसार-भर में जितने सच्चे धर्म हो सकते हैं, रहस्यवाद ही उनका अंतिम सिद्धांत, अनुभव-गम्य पदार्थ, है। इसी कारण रहस्यवादी के अनुभव के लिये एकांत-वास की जितनी आवश्यकता है, एक अच्छे धार्मिक के लिये भी इसकी उतनी ही आवश्यकता है। भारतवर्ष में तो इस एकांत-वास के अनेक प्रेमी पाए जाते हैं। इनके उदाहरणों से संस्कृत-साहित्य भरा पड़ा है। परंतु पाश्चात्य देशों में भी एकांत-वास के प्रेमी पाए जाते हैं। संत पाल, ईसा और फ़ाक्स आदि इसके उदाहरण हैं। इस संबंध में एफ़्० जे० हेमर्टन लिखता है—"मैं विमलात्मता, शांति तथा अपने भावों और विचारों के समझने के लिये एकांत-वास को अमूल्य पदार्थ समझता हूँ। एकांत में ही हम लोग अपने स्वभावों तथा उसकी आवश्यकता को समझ सकते हैं।" मनोविज्ञान-शास्त्र की दृष्टि से भी एकांत-वास और मौन-व्रत अत्यंत ही लाभदायक हैं। जब हम लोग प्रतिदिन के कामों तथा बखेड़ों से निवृत्त हो जाते हैं, जब हम लोगों का मन शांत हो जाता है, तभी हम लोगों की अंतरात्मा सजग होती है, तभी आत्मिक जागृति के फ़ौवारे खुलते हैं, और तभी सच्चे सुख का अनुभव हो सकता है। ऐसी दशा में ही पता चल सकता है कि हम लोगों का जीवन ईश्वरीय जीवन है। भारत के जंगलों में सबसे पहले आध्यात्मिक धर्म का प्रचार हुआ था। उपनिषदों का जन्म एकांत ही में हुआ था।

जब मनुष्य कुछ दिन तक एकांत-वास का सेवन करता है, तब वह अपने सच्चे धर्म का गंभीर अनुभव करने लग जाता है, तब वह प्रायः किसी धर्म की प्रथाओं से उदासीन हो जाता है, और प्रायः साधारण धर्म की रीति तथा रवाज उसके मार्ग में कोई सहायता नहीं पहुँचाते, बरन् उसे हानिकारक अवश्य ही मालूम पड़ते हैं। जब वह मनुष्य सच्चे धर्म के अधिक तत्त्वों से, अथवा किसी विशेष तत्त्व से अवगत हो जाता है, तब साधारण मनुष्यों की तरह नहीं रह जाता, और साधारण धर्मावलंबियों के बीच में अकेला ही रह जाता है। अंत में जब मनुष्य रहस्यवादी हो जाता है, तब वह प्रायः वर्तमान धार्मिक रीतियों की अवहेलना करने लगता है। कभी-कभी तो रहस्यवादी अपनी सत्यता के आधार पर सत्य के अनुभव के आगे धार्मिक बातों का कुछ भी महत्त्व नहीं समझता, और उनकी घोर निंदा करने लगता है। परंतु कभी-कभी ऐसा भी होता है कि ऐसा समझते हुए भी—यह जानते हुए भी कि उसके अनुभव के आगे धर्मों की साधारण रीतियों की कोई सत्ता नहीं—वह धर्म की सब बातों का ऊपर से आदर करता है, और उसकी निंदा नहीं करता। परंतु ऐसी दशा में वह प्रायः अपने मन में ऐसा भी समझता है कि यह पद उसे धार्मिक नियमों के पालन करने से नहीं मिला है। पाश्चात्य देश में जॉर्ज फ़ॉक्स ऐसा ही उदाहरण है। जॉर्ज फ़ॉक्स रहस्यवादी था। उसने स्पष्ट शब्दों में कहा था कि रहस्यवादी होने के लिये, ईश्वर का प्रत्यक्ष दर्शन करने के लिये, धर्म की सब रीतियों को छोड़ना होगा, इन सब रवाजों को तोड़ना होगा, धार्मिक आवश्यकताओं को त्यागना पड़ेगा, और शांत चित्त से ईश्वर के दर्शन का इच्छुक बनना होगा। रहस्यवादी ईश्वरीय पूर्णता का तात्कालिक अनुभव करना चाहता है। उस समय वह अपने और ईश्वर के बीच में ध्यान अथवा और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कोई वस्तु नहीं आने दे सकता। इसलिये उसे एकांत-वास तथा मौन-व्रत की आवश्यकता पड़ती है। इसीलिये उसे इन धार्मिक नियमों से भी स्वतंत्र रहने की आवश्यकता पड़ती है। यदि मनोविज्ञान की दृष्टि से इस प्रश्न पर विचार किया जाय, तो भी उसे किसी बाहरी विषयात्मक देवता की आवश्यकता नहीं पड़नी चाहिए। उसका धर्म तो केवल इतना ही रह जाता है—"शांत हो, और ईश्वर का अनुभव करो और अंत में इस बात का भी अनुभव करो कि तुम भी ईश्वर हो।" रहस्यवाद तो वास्तव में एक की एक के पास उड़ान है।

इन सब बातों को पढ़कर कुछ लोग यह प्रश्न कर सकते हैं कि क्या रहस्यवादियों के लिये एकांत-वास सर्वदा ही आवश्यक है?

असल बात यह है कि रहस्यवादी की दो प्रधान अवस्थाएँ हो सकती हैं—साधक और सिद्ध।

जब तक कोई मनुष्य ईश्वर का साक्षात्कार नहीं कर लेता, परंतु उसके अनुभव करने का प्रयत्न करता रहता है, तब तक वह साधक कहलाता है, और जब वह ईश्वर का प्रत्यक्ष अनुभव कर लेता है, तब सिद्ध कहा जाता है। साधक की अवस्था में ही एकांत-वास की अधिक आवश्यकता होती है, सिद्ध की अवस्था में नहीं। जब रहस्यवादी सिद्ध हो जाता है, तब वह जन-समुदाय में भी स्वच्छंदता-पूर्वक रह सकता है।

रहस्यवादियों के विरुद्ध कुछ लोग यह भी प्रश्न कर सकते हैं कि जब रहस्यवादी को यह पता चलता है कि वह भी परमेश्वर ही है, तो संभव है, वह स्वयं अपना परमेश्वर भी बन बैठे!

यदि संसार के रहस्यवादियों का इतिहास देखा जाय, तो पता चलेगा कि रहस्यवादी लोगों के स्वभाव भिन्न-भिन्न हो जाते हैं। परंतु इसमें कुछ भी संदेह नहीं कि रहस्यवादी स्वयं अपने को ईश्वर नहीं मानता, यद्यपि उस अनुभव की अवस्था में वह अपने को ईश्वर से भिन्न नहीं समझता। वास्तव में रहस्यवादी ईश्वर का सच्चा भक्त ही बना रहता है, और बड़े प्रेम से वह ईश्वर की पूजा करता है। परंतु उस अनुभव के बाद वह संसार की सब वस्तुओं को दूसरी ही दृष्टि से देखता है। उस समय छोटी-से-छोटी वस्तु भी उसे अनंत दिखलाई पड़ती है, और सबसे ख़राब फूल पर भी वह आँसू बहा सकता है। उस अनुभव की दशा में वह उस सत्य का अनुभव करता है, जो संसार की सब घटनाओं को सत्य बनाता है। जिस अनंत, जिस ब्रह्म का वह अनुभव करता है, उसी को वह कण-कण में देखता है। रहस्यवादी तब संत को नहीं, किंतु अनंत को सिर झुकाता है। उस समय, उस अनुभव की दशा में, मनुष्य के मस्तिष्क और हृदय में कुछ भी भेद नहीं रह जाता, और उसी दशा में रहस्यवादी ईश्वर की सर्वश्रेष्ठ पूजा करता है।

❀ ❀ ❀

जो मनुष्य वास्तव में सच्चा रहस्यवादी हो जाता है, उसका ज्ञानोदय भी अवश्य होता है, और उसकी प्रतिभा अवश्य ही और भी अधिक चमक उठती है। उस अनुभव के बाद रहस्यवादी की प्रतिभा (Intuition) अथवा उसका सहज-ज्ञान अवश्य बड़ा प्रबल हो जाता है। हमें यह कभी न भूलना चाहिए कि इस प्रतिभा में केवल विचार या ज्ञान का ही नहीं, किंतु भाव का भी अंश रहता है। इसमें संदेह नहीं कि वह प्रतिभा ज्ञानात्मक अवश्य होती है, किंतु उसमें भाव और अनुभव का भी अभाव नहीं रहता। रहस्यवादी के अनुभव की अवस्था में विचार और भाव, दोनों ही एक में मिले रहते हैं। कुछ लोगों ने तो ऐसा ही मान लिया है कि यह ज्ञान हम लोगों को भाव के द्वारा ही होता है। हम लोग ऐसा भी नहीं कह सकते कि रहस्यवादियों का अनुभव विचार और भाव का संयोग-मात्र है। वास्तव में यह रहस्यवादियों की एक विचित्र अवस्था है, जिसमें उनकी चेतनता अत्यंत ही अधिक सजग हो जाती है, और वह भली भाँति इस बात को समझ लेती है कि वास्तव में सत्य क्या है और सत्य का क्या अर्थ है? रहस्यवादियों की यह अनुभव-पूर्ण, स्पष्ट, व्यवधान-रहित तथा ध्यान की सर्वश्रेष्ठ दशा है। इसमें वह एक का अनुभव करता है, और उस अनुभव की अवस्था में केवल उसके भावों की ही अधिकता नहीं होती, और न केवल आनंद का ही आधिक्य होता है। वास्तव में उस समय वह ईश्वर या सत्य का ठीक-ठीक अर्थ समझता, उसका स्पष्ट अनुभव करता, और उसका सच्चा ज्ञान प्राप्त करता है। जो सच्चा रहस्यवादी है, उसके लिये संसार के सब द्वंद्व मिट से जाते हैं। सच्चा रहस्यवादी जड़ और चेतन, विचार और भाव, ज्ञाता और ज्ञेय, ईश्वर और जीव,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नित्य और अनित्य आदि द्वंद्वों की सीमा के ऊपर चढ़ जाता है। वह एक ऐसी उँचाई पर पहुँच जाता है, जहाँ सब भेद-भाव मिट जाते हैं। वहाँ वह एकता-ही-एकता देखता है। इसीलिये प्रसिद्ध मनोवैज्ञानिक जेम्स लिखता है—"रहस्यवादी अपने अनुभव के समय उन सब बातों का अनुभव करता है, जिन्हें साधारण लोगों की बुद्धि की सीमा के बाहर ही कहना अधिक उचित होगा। रहस्यवादी लोग सत्य का उसी प्रकार अनुभव करते हैं, जैसे हम लोग भौतिक दृश्यों का अनुभव प्राप्त करते हैं। उस समय रहस्यवादी के लिये निरपेक्ष्य और सापेक्ष्य का भी भेद-भाव मिट जाता है।"

जब रहस्यवादी इन सांसारिक द्वंद्वों के ऊपर उठ जाता है, जब वह परमोत्तम, इंद्रियातीत (Transcendent) दशा की प्राप्ति कर लेता है, तब अपने अनुभव के द्वारा इस बात को भी जान लेता है कि उसकी सच्ची आत्मा ही निरपेक्ष्य (Absolute) की आत्मा है। इस अनुभव के बाद भी रहस्यवादी अपना परिमित तथा शांत अस्तित्व नहीं खोता। यही कारण है कि इस परमोत्तम दशा की प्राप्ति के बाद भी वह अपनी विशेषताओं को रखता है, और अपनी अप्रतिरूपता (Uniqueness) को नहीं खोता।

जब रहस्यवादी का अनुभव सर्वश्रेष्ठ तथा ऊँचा-से-ऊँचा हो जाता है, जब उसे परम पद की प्राप्ति हो जाती है, तब उसके ज्ञान की अत्यंत ही अधिक उन्नति हो जाती है। तब रहस्यवादी केवल इतना ही नहीं कहता कि मैं ईश्वर के समान हूँ, और न वह केवल इतना कहता है कि ईश्वर से मेरा संयोग हो गया है, किंतु वह यह भी कहने लगता है कि मैं और ईश्वर एक हूँ; दोनों में कोई अंतर नहीं।

इसको दूसरे शब्दों में यों भी कह सकते हैं कि रहस्यवादी केवल ईश्वर से समानता तथा संयोग का ही दावा नहीं करता, किंतु ईश्वर से एकता, तादात्म्य और अनन्यता का भी दावा करता है। अपने अनुभव की उच्च दशा में रहस्यवादी वेदांती की तरह कह उठता है—"तत्त्वमसि" अर्थात् तू वह है।

इसका अभिप्राय यह है कि रहस्यवादी तब अपने को उस निरपेक्ष्य ब्रह्म का कोई अंश अथवा कोई दशा नहीं मानता, किंतु कहता है—हम भी वही (ईश्वर ही) हैं। और, आश्चर्य की बात तो यह है कि संसार-भर के रहस्यवादी ऐसा ही कह उठते हैं। ईसाई-धर्मावलंबी रहस्यवादियों ने भी यही कहा है, सूफ़ियों ने भी यही कहा है। यदि रहस्यवादियों का यह अनुभव एक वास्तविक घटना है, तो इन भिन्न-भिन्न धर्मों और संप्रदायों के कथनों में समानता होना केवल स्वाभाविक ही नहीं, किंतु आवश्यक भी है।

हमें यह कभी न भूलना चाहिए कि दर्शन की सहायता से भी हम लोग इसी सिद्धांत पर पहुँच सकते हैं। परंतु ऐसा करना केवल उस सच्चे अनुभव की प्रतिध्वनि-मात्र होगा। किसी एक बात का स्पष्ट रूप से अनुभव करना एक बात है, और उसी बात को कहना अथवा नाम-मात्र को समझना बिलकुल दूसरी बात। रहस्यवादी लोग अपने व्यक्तिगत, सच्चे अनुभव के आधार पर ही तत्त्वमसि कहते हैं, दर्शन की आवश्यकता के कारण से नहीं। टॉलर कहता है—"सब एकताओं का अंत परमेश्वर है, और सब भेद एक में मिलकर एक हो जाते हैं।"

इसी संबंध में टॉम्स केंपिस कहता है—"निरपेक्ष्य एक है, और हम लोग निरपेक्ष्य (ब्रह्म) के साथ और उसी में हैं।"

अछूत

[लेखक, सुकवि श्रीजगन्नाथप्रसाद खत्री "मिलिंद"]

एक दलित कण मैं भी हूँ मा के बिखरे वैभव का,
घोट चुकी है घृणा गला जिसके कोमल कलरव का।
इस छोटे-से जीवन में माँगा था कितनी बार—
चरणों की रज में मिल-जुलकर रहने का अधिकार!

तिरस्कार से अधिक न मुझको दे पाया संसार;
कैसे हो विश्वास, करेगा वही मुझे अब प्यार?
जीवन-भर पाली थी मैंने, आज लालसा खोई!
हृदय-हीन जगवालों में से मुझे न छूना कोई!!

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संगीत और मनोविज्ञान

[लेखक, पं० भगवन्नारायण भार्गव बी० ए०, मेंबर लेजिसलेटिव काउंसिल]

शब्द संसार की रचना के पहले से था, इस बात को विविध-धर्मावलंबी मानते हैं, और वैज्ञानिक लोग भी इससे इनकार नहीं कर सकते। मनुष्यों की उत्पत्ति के साथ भाषा बनी; भाषा का अस्तित्व न होता, तो संसार की सत्ता ही निरर्थक हो जाती। कोई-कोई कहेंगे, यह ठीक नहीं कि मनुष्यों की ही भाषा है। जो ऐसा कहते हैं, उनका कथन भी तथ्य है; क्योंकि पशु-पक्षियों की भी भाषाएँ हैं, वे भी अपने आशय को एक दूसरे पर प्रकट करते हैं, वे भी अपने हर्ष-विषाद, भय और क्रोध को विविध शब्दों द्वारा जताते हैं। इस बात को प्रत्येक मनुष्य, ध्यानपूर्वक उनके शब्दों को सुनकर, जान सकता है। हाल में सर जगदीशचंद्र वसु ने तो आविष्कार किया है, और उसे व्यावहारिक रूप से प्रत्यक्ष प्रमाणित कर दिया है कि वृक्ष, पुष्प आदि की भी भाषा है; वे भी अपना हर्ष, विषाद, भय आदि प्रकट कर सकते हैं, और मनुष्य इन परिवर्तनों का अनुभव भी कर सकता है। पवन में भी शब्द है, जल में है, आकाश में है, बिजली में भी है। मतलब यह कि सारा ब्रह्मांड शब्द से व्याप्त है। मैं तो यह भी बतलाऊँगा कि शांति (Silence) में भी शब्द (Sound) या स्वर मौजूद है। संगीत के जो स्वर-ताल आदि हैं, वे सब शब्द ही हैं, शब्दों का ही प्राकृतिक हेर-फेर है। स्वरों की संख्या सात है। इस सात के अंक में भी मुझे जादू मालूम होता है। चाहे लोग इसको मेरी कल्पना ही कहें, पर इस अंक की व्यापकता है बहुत भारी। हिंदुओं के यहाँ, और कुछ अन्य धर्मों में भी, सात लोक या सात आसमान माने जाते हैं। हमारे पुराणों में सात द्वीप, सात समुद्र बतलाए हैं। दिन तथा मुख्य ग्रह भी सात ही हैं। कुछ तारागण भी, जिनको सप्तर्षि कहते हैं, नपी-तुली दूरी पर आकाश में टँगे हैं, और सदा सातों साथ ही रहते हैं। सूर्य की मुख्य किरणें सात ही हैं, जिससे सूर्य को सप्ताश्व या सप्तार्चि कहते हैं, जिनके सात वर्ण देखे गए हैं। श्रीमद्भागवत के पाठ का सर्वोपरि जो नियम है, वह भी सप्ताह ही का है, और कवियों ने रामचरित्र का असली वर्णन भी सात ही कांडों में किया है। इस सप्त स्वर से सब जड़-चेतन, सारा ब्रह्मांड व्याप्त है।

अँगरेज़ी में भी यदि किसी ने इस बात का समर्थन किया है, तो वह अतथ्य नहीं है।

एक कवि ने कहा है—

"Music in the valley; Music in the hill,
Music in the woodland; Music in the rill.
Music on the mountain; Music in the air,
Music in the true breast; Music everywhere."

अर्थात् "संगीत कहाँ नहीं है? घाटी में, पहाड़-पहाड़ियों में, नदी-नाले में, जंगलों में और वायु में, सच्चे हृदय में और सारे स्थलों में संगीत-ही-संगीत है।"

यह कवि की कल्पना नहीं है। संगीत को वैज्ञानिक दृष्टि से देखने-समझनेवाले जानते हैं कि इस कवि के कथन में एक-एक शब्द सत्य से परिपूर्ण है। मैं तो यह कहूँगा कि मनुष्यों में जिस ढंग से संगीत का प्रचार है, उससे कहीं ऊँचे दर्जे का संगीत प्रकृति में विद्यमान है। एक योगी, जो शांति से समाधि में बैठा हुआ परब्रह्म का ध्यान करता है, वह भी ऊँचे षड्ज स्वर में मस्त रहता है। यद्यपि वास्तव में वह निःशब्द-सा प्रतीत होता है, पर वह अनहद के शब्द सुनता हुआ सारे संसार की संगीत-शक्तियों का एकीकरण करता हुआ चित्त को एक ही स्वर में, न कि एक राग में, स्थित किए हुए रहता है।

हमारे यहाँ राग-रागिनियों के रूप बतलाए हैं, उनके गाने का समय आदि बतलाया है, उनका फल-प्रभाव बतलाया है। इन बातों को भी लोग मिथ्या और काल्पनिक मानते हैं। परंतु जो धैर्य से, बुद्धि से विचार किया जाय, तो मालूम होगा कि इन सब बातों का संबंध विज्ञान से है, और ये सब बातें सत्य और तथ्य हैं। यह भी हम लोगों ने सुना है कि संगीत में इतनी शक्ति है कि जल बरसा दे, दीपक जला दे, रोगों को अच्छा कर दे,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पशुओं की हिंसकता दूर कर दे, इत्यादि । ये बातें भी आश्चर्य-जनक भले ही प्रतीत हों, पर सत्य से रहित कोई भी नहीं । मनुष्य के मस्तिष्क में अनेकों केंद्र हैं। किसी का संबंध शब्द से है, किसी का नेत्र से, किसी का जिह्वा आदि से। इन सबमें मुख्य केंद्र वाणी या शब्द का है। मनन-शक्ति भी अपना कार्य विशेष रूप से इसी के द्वारा करती है। जब कोई भाषण देता है, और यदि उस को भाषण देने का अच्छा अभ्यास है, तो वह वक्ता, मनन-शक्ति का अलग प्रयोग न करके, शब्दोच्चारण द्वारा ही विचार-शक्ति से काम लेता जाता है । जब आप किसी से बातचीत करते हैं, तो आपके कोई शब्द तो दूसरे मनुष्य के मन में हास्य उत्पन्न करते हैं, कोई शब्द शोक, कोई भय और कोई उत्साह, अहंकार या द्वेष तथा घृणा। शब्दों के स्वर-व्यंजन अक्षर आदि वे ही हैं। वे घटते-बढ़ते नहीं। पर शब्दों के स्वर से विविध प्रकार का प्रभाव मनुष्य के मस्तिष्क पर पड़ता है, जिससे अनेक प्रकार की अवस्थाएँ प्रादुर्भूत होती हैं। फिर ऐसा भी हम देखते हैं कि एक ही बात को सुनकर एक मनुष्य प्रसन्न होता है, और दूसरा क्रोधित । कारण यह है कि केवल शब्दों का कोई प्रभाव नहीं पड़ता । शब्द और उनके भावों की वह शक्ति है, जो मनुष्य के मस्तिष्क पर काम करती है। मस्तिष्क के केंद्रों का संबंध सारे शरीर के तंतु-अवयवों से है। जिस प्रकार का शब्द हमारे मुख से निकलेगा, उसी प्रकार का प्रभाव सुननेवालों के सारे शरीर पर तुरंत हो जायगा। क्या यह आप रोज़ नहीं देखते कि महाक्रोध में भरे हुए मनुष्य या पशु को आप शब्दों द्वारा ऐसा शांत कर सकते हैं, मानो प्रज्वलित अग्नि में जल डाल दिया हो। भय से काँपते हुए मनुष्य को शब्दों द्वारा ही साहसी बना देते हैं। यह सब कैसे होता है? समय, स्थिति, भाव, शक्ति इनकी नाप-तौल करके आप कुछ विशेष शब्दों का प्रयोग करते हैं। उनका प्रभाव, ज्ञानेंद्रिय द्वारा, मस्तिष्क के केंद्रों में पहुँचता है। वहाँ जो विकृतियाँ, क्रोधादि से, उत्पन्न हो गई हैं, उनको वे शब्द परिवर्तित करके उनका कार्य-क्रम बदल देते हैं, और मनुष्य की दशा दूसरी ही हो जाती है। जब साधारण शब्दों का ऐसा प्रभाव होता है, तो रागों के अलापने का प्रभाव कितना अधिक हो सकता है, यह अनुमान करने की बात है । जैसे क्रोध आदि के समय मस्तिष्क के केंद्रों में विशेष विकृतियाँ उत्पन्न हो जाती हैं, उसी प्रकार, शिरःपीड़ा, निद्रा का अभाव, पागलपन, पक्षाघात आदि मस्तिष्क से विशेष संबंध रखनेवाले रोगों में मस्तिष्क-केंद्रों की विशिष्ट और विविध अवस्थाएँ होती हैं। उन अवस्थाओं का भी उसी प्रकार परिवर्तन, सस्वर शब्दों से या रागों से, हो जाता है, जैसे क्रोध, भय आदि का। इसीलिये कोई राग ऐसे हैं, जो हर्ष उत्पन्न कर सकते हैं, कोई शोक। यदि कोई मनुष्य समय के विपरीत राग गावे, तो उसका प्रभाव नहीं हो सकता। यह बात भी विज्ञान-सिद्ध है कि प्रकृति के अनुसार १२ बजे रात के बाद मनुष्य के मस्तिष्क की जो दशा होती है, वह बारह बजे दिन को नहीं हो सकती । जिस राग का समय प्रातःकाल है, उसको अगर हम शाम को गावें, तो वह अच्छा नहीं मालूम होगा। कई रोग गान द्वारा अच्छे किए गए हैं, इस बात को आजकल भी बहुत-से लोग जानते हैं। मेजर रंजीतसिंहजी को अनिद्रा का रोग हो गया था। सब प्रकार की डॉक्टरी ओषधियाँ कर चुके ; पर निष्फल हुईं। प्रयाग-विश्वविद्यालय के एक प्रोफ़ेसर साहब ने गान द्वारा यह रोग हाल ही में दूर किया था।

पशुओं को भी शब्द का ज्ञान है। जब वे प्रसन्न होते हैं, तब उनके शब्द का स्वर कुछ और होता है, और जब क्रोधित, भयभीत या भूखे होते हैं, तब और। संगीत-वाद्य का प्रभाव सर्प, हाथी, हरिण, गऊ आदि पर क्या होता है, यह साधारण लोग भी जानते हैं। पर वास्तव में सभी पशु-पक्षियों पर उसका प्रभाव होता है। मस्त हाथी संगीत द्वारा वश में लाए गए हैं। पशु-पक्षियों के शब्द विविध भाव प्रकट करने के अनेक होते हैं। हमारे शब्दों का भी प्रभाव उनके मस्तिष्क पर पड़ता है, और वे हमारे भाव को भी समझ लेते हैं। अगर हम प्रेम से उनसे बोलें, तो वे हमारे पास आ जाते हैं ; अगर हम झिड़क दें, तो वे भाग जाते हैं।

प्रकृति पर भी हम अपने रागों द्वारा प्रभाव डाल सकते हैं; क्योंकि पृथिवी, जल, तेज, वायु और आकाश, इन्हीं पंच तत्त्वों से प्रकृति का आवरण बना है, और इन्हीं से मनुष्य-मात्र बने हैं। यह अवश्य है कि साधारण सांसारिक गायक इस शक्ति का प्रयोग नहीं कर सकते। यह बात तो मानी हुई है कि शब्द भावयुक्त होने पर प्रभाव डालते हैं; पर भावों की नीचता, उच्चता, शुद्धता आदि का भी ध्यान

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रखना चाहिए। यदि हमारी शुद्ध इच्छा-शक्ति (Will) भली भाँति उन्नत हो चुकी है, अगर हमने अपनी आत्मा में परमात्मा की शक्ति का अनुभव कर लिया है, तो हम रागों के गान द्वारा सारी सृष्टि पर प्रभाव डाल सकते हैं; हम मेघाच्छादित आकाश बना सकते हैं, जल बरसा सकते हैं, पवन के वेग को रोक सकते हैं, और हवा भी चला सकते हैं, दीपक बिना अग्नि के जला सकते हैं इत्यादि। इन बातों को असंभव मानकर छोड़ देना बुद्धिमानी नहीं।

शब्दों के प्रभाव से शब्द, भाव और उनके स्वरों के अनुकूल रूप भी बन जाते हैं। जैसे विद्युत् (Electricity) में शक्ति-कण (Vibrations) होते हैं, वैसे ही मनुष्य में भी अनादि काल से पुरुष और प्रकृति का ऐसा घनिष्ठ संबंध चला आता है कि यदि ध्यानपूर्वक हम छान-बीन करें, तो मालूम कर सकते हैं कि पुरुष की शक्तियाँ ही प्रकृति में मौजूद हैं। लोग समझते हैं, हमारे शब्द का प्रभाव उतनी ही दूर तक हो सकता है, जहाँ तक और जिसको वह सुनाई देता है; पर सूक्ष्म रीति से विचार करने पर यह बात ग़लत सिद्ध होती है। शब्दों में से भी Vibrations बनते हैं। उनकी शक्ति का विकास भी बिजली की तरह होता है। आप शब्दों को ज़ोर से न बोलें, मन ही में कहें, अर्थात् विचार ही करें (क्योंकि बिना शब्दों के आप कुछ मनन भी नहीं कर सकते) तो उन विचारों का प्रभाव आप संसार के किसी भी कोने में पहुँचा सकते हैं। ज़रा सोचिए, प्रकृति सर्व-व्यापक है, पंच-तत्त्व से रहित कोई न स्थान है और न कोई जीवित मनुष्य; तो फिर यह कोई असंभव बात नहीं कि हम यदि तत्त्वज्ञान (जिसका मनोविज्ञान एक भाग है) और संगीत-ज्ञान को मिलाकर ब्रह्मांड-मात्र पर प्रभाव फैलाना चाहें, तो फैला सकते हैं।

यह बात अनुभव करके बतलाई गई है कि यदि बाजा बजाते हुए आप राग अलापें, और अपने सामने ही Lycopodium का चूर्ण हवा में बिखेर दें, तो राग के शब्दों के अनुकूल उसमें शकलें बनेंगी।

प्रोफ़ेसर टेलर ने साबुन के झागों पर इसका अनुभव किया है। मारगरेट वैट्स (Margarat Watts) ने अपने Eidophone (ईडोफोन) यंत्र से शब्दों के रूप उत्पन्न किए हैं। कहीं स्त्री के रूप बनते हैं, कहीं पुरुषों के, कहीं पुष्पों के। इधर विज्ञान ने अधिक ध्यान नहीं दिया है।

शब्दों के इन्हीं प्रभावों को देखते हुए कहा जा सकता है कि हिंदू-शास्त्रों के मंत्रों का भी कितना अधिक प्रभाव हो सकता है, यदि उनका उच्चारण ठीक स्वर में, उचित रीति से, भावमय होकर किया जाय। जिस सिद्धांत पर संगीत द्वारा मनुष्यों के रोग दूर किए जा सकते हैं, पशु-पक्षियों को ही नहीं, किंतु प्रकृति को भी वश में किया जा सकता है, उसी सिद्धांत से वेद-मंत्रों द्वारा भी बड़ी-बड़ी शक्तियाँ काम में लाई जा सकती हैं, और उन मंत्रों द्वारा भी प्रकृति तथा पुरुष पर प्रभाव डाला जा सकता है। साम-वेद संगीत से भरा हुआ है, यह सभी जानते हैं। जो लोग मंत्रों को या उनकी शक्ति को झूठा मानते हैं, वे मनोविज्ञान और प्राकृतिक विज्ञानों के आधार पर खोज करें, और अपने संशयों को प्रत्यक्ष रूप से दूर करें।

धर्म और संगीत का संबंध सदा से, सब देशों में, रहा है, केवल भारत ही में नहीं। धार्मिक गुरु या योगी लोग संगीत की शक्ति से बड़ी भारी उन्नति कर सकते हैं। मस्तिष्क भी तब तक पूर्ण रूप से उन्नत नहीं हो सकता, जब तक संगीत का भी ज्ञान न हो। आजकल तो भारत में संगीत का ऐसा अधःपतन हुआ है कि उससे धर्म और मस्तिष्क की उन्नति तो एक ओर रही, व्यभिचार की उन्नति हो रही है। इसीलिये कुछ लोग समझते हैं कि गाना तो रंडी-भड़ुओं का काम है।

हम लोगों के लिये आवश्यकता इस बात की है कि हम दुष्ट संगीत का बहिष्कार करके शुद्ध संगीत का प्रचार करें। प्रत्येक पाठशाला में संगीत-शिक्षा अवश्य होनी चाहिए। तभी इस विद्या के साथ-ही-साथ मनुज-जाति की भी उन्नति हो सकती है।

---

२०० वर्ष का पुराना, आचार्य वात्स्यायन-कृत **असली कामसूत्र** हिंदी-अनुवाद सहित

यदि आपको इसके पढ़ने की इच्छा है तो शीघ्र ५) रु० मनीआर्डर द्वारा भेजकर मँगाइए।
वी० पी० किसी दशा में भी नहीं भेजा जायगा और पुस्तक केवल ३० वर्ष से अधिक आयुवालों को दी जायगी।
मिलने का पता—रामसिंहासन तिवाड़ी, मैनेजर—डायमंड-प्रेस, जुबली (सु) अजमेर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ज़ेकोस्लोवाकिया और राष्ट्रपति मसारिक

[लेखक, प्रो० चंद्रदत्त शास्त्री काशी-विद्यापीठ]

चवान का लड़का, बचपन में लुहार, जवानी में प्रोफ़ेसर और बुढ़ापे में राष्ट्रपति ! विश्वास नहीं होता। पर बात सत्य है। ज़ेकोस्लोवाकिया-नामक नवजात प्रजा-तंत्र के अध्यक्ष राष्ट्रपति मसारिक का ही यह सूक्ष्म जीवनचरित्र है। ज़ेकोस्लोवाकिया ! पाठकों को यह नाम बड़ा विकट और अपरिचित मालूम होगा। हो भी क्यों न। जब हम भूगोल रटते थे, 'होनोलूलू,' 'टिंबक्टू' के मारे आफ़त थी। हँसते-हँसते पेट फूल जाता था। उस समय ज़ेकोस्लोवाकिया कहाँ था? सन् १९१८ से पहले यह देश स्मृति-अवशिष्ट आस्ट्रिया-हंगरी के साम्राज्यांतर्गत एक प्रांत-मात्र था। मध्य-योरप के उस भूखंड में, जिसमें ज़ेक व स्लोवाक नाम की स्लाव-जातियाँ बसती हैं, वर्तमान ज़ेकोस्लोवाकिया का प्रजा-तंत्र स्थित है। इस समय यह राष्ट्र पोलैंड और जर्मनी के बीच में पड़ता है। इसके अंतर्गत पाँच मुख्य प्रांत हैं—बोहेमियाँ, मोराविया, स्लोवाकिया, रूथनियाँ और साइलीसिया का एक भाग। इनमें से बोहेमियाँ मध्य-युगीन योरप में प्रसिद्ध राज्य था। बहुत दिनों तक बोहेमियन लोगों ने स्वतंत्रता का उपभोग किया, और सभ्यता की उन्नति करने में हाथ बटाया। मध्य-योरप का सबसे प्राचीन विद्यापीठ बोहेमियाँ की राजधानी प्रेग (Prague) में, सन् १३४८ ई० में, स्थापित हुआ था। यह आज तक योरप के प्रसिद्ध विद्यापीठों में एक है। पोपशाही की अंधपरंपरा के विरुद्ध सबसे पहले आंदोलन करनेवाले, सत्य की वेदी पर बलि होनेवाले धर्मवीर जॉन हुस् (John Huss) बोहेमियाँ के ही रहनेवाले थे। प्रसिद्ध महात्मा लूथर से सवा सौ वर्ष पहले इन्होंने काम शुरू किया था। सुधारक धर्म का प्रचार जितनी दृढ़ता से बोहेमियाँ में हुआ, उतना और कहीं नहीं। इसी कारण सन् १६१८ ई० में यहीं से तीस वर्ष तक चलनेवाले युद्ध का श्रीगणेश हुआ था। इसके बाद ही बोहेमियाँ आस्ट्रिया के राज्य में मिलाया गया। तीन सौ वर्ष तक इसको परतंत्रता में रहना पड़ा। परंतु यहाँ के लोग निरंतर स्वतंत्र होने की चेष्टा करते रहे।

गत महासमर में इनको सुअवसर मिल गया।

दलित जातियों के लिये स्वतंत्रता प्राप्त करने का सबसे अच्छा अवसर युद्ध है। जिस प्रकार क्रांति के समय महत्त्वाकांक्षी व्यक्ति अपनी अभिलाषाओं को पूरा करते हैं, उसी तरह स्वतंत्रता के प्यासे देश इस कार्य के लिये युद्ध के समय का उपयोग करते हैं। गत महासमर में योरप की सभी पराधीन जातियों ने इसका उपयोग किया। पोलैंड, फ़िनलैंड, लैटविया, इस्थोनियाँ, लिथुनियाँ, युगोस्लाविया और ज़ेकोस्लोवाकिया ने इसी समय अपनी बेड़ियाँ काटीं।

लेकिन ऐसे ईश्वर-प्रदत्त अवसर से फ़ायदा उठाने के लिये भी योग्य नेता की आवश्यकता होती है। परिस्थिति अनुकूल होती है; परंतु योग्य नेतृत्व के अभाव में वह निष्फल जाती है। महासमर आया। मिसर ने, आयरलैंड ने, अफ़ग़ानिस्तान ने ब्रिटिश-शासन के जाल से निकलने का पूरा उद्योग किया। परिस्थिति के अनुसार उन्हें सफलता भी हुई। परंतु भारत के नेताओं ने 'राजनीतिक दूरदर्शिता' से अथवा साहस और सूझ की कमी से ऐसा मार्ग बतलाया, जो देश-द्रोह के सन्निकट है। अस्तु, यदि ज़ेकोस्लोवाकिया के नेता भी उन लोगों को आस्ट्रिया की सहायता करने का उपदेश देते, तो आज ज़ेकोस्लोवाकिया का नाम संसार में विख्यात न होता। युद्ध के समय ज़ेकोस्लोवाकिया के पथ-प्रदर्शक श्रीमसारिक थे। इन्हीं के भगीरथ-प्रयत्न से देश को स्वतंत्रता प्राप्त हुई। हालैंड के लिये मौनी विलियम* ने, अमेरिका के लिये वाशिंगटन ने, हंगरी के लिये डीक और कसूथ ने, आयरलैंड के लिये डी-वेलरा और ग्रिफ़िथ ने, इटली के लिये त्रिमूर्ति † ने, चीन के लिये सन-यात-सेन ने, टर्की के लिये कमाल पाशा ने, मिसर के लिये ज़गलुल पाशा ने और भारत के लिये म० गांधी ने

* William the Silent of Orange, 1533–84.

† मेज़िनी, कावूर और गेरीवाल्डी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जो किया, वही मसारिक ने सद्योजात ज़ेकोस्लोवाकिया के लिये किया। उन्होंने स्वतंत्रता प्राप्त करने में, स्वतंत्रता का सदुपयोग करने में महान् स्वार्थ-त्याग और अद्भुत योग्यता का परिचय दिया।

टामस मसारिक का जन्म १८५० ई० में एक कोचवान के घर हुआ था। इनका पिता ज़ेक और माता स्लोवाक-जाति की थी। बचपन में पढ़ने-लिखने के साथ लुहार का काम करके इसने अपना निर्वाह किया। लड़का पढ़ने-लिखने में चटपटा था। उसने मामूली शिक्षा प्राप्त करने के बाद प्रेग-विद्यापीठ से उच्च शिक्षा प्राप्त की। शिक्षा समाप्त करने के पश्चात् इसने जर्मनी, फ्रांस आदि देशों में भ्रमण किया, और एक अमेरिकन लड़की से शादी की। स्वदेश लौटने पर १८८२ ई० में, प्रेग-विद्यापीठ में, दर्शन का अध्यापक नियुक्त हुआ। इसी समय से इस महापुरुष के जीवन का कार्य आरंभ होता है। इसकी बुद्धि प्रखर थी। थोड़े ही समय में दर्शन का प्रकांड पंडित हो गया। अनेक दार्शनिक ग्रंथों की रचना करने के कारण योरप-भर में इसका नाम हो गया। दार्शनिक विचारों की स्वतंत्रता के कारण इसको अपने समय के बड़े-बड़े विद्वानों का विरोध करना पड़ा। परंतु यह बड़ा निर्भय और सत्यव्रत है। अन्याय और असत्य चाहे किसी दिशा से क्यों न आवे, यह उसका पूरा विरोध करता था। इसलिये यह बहुत काल तक लोगों का प्रीति-पात्र नहीं बन सका। परंतु समय आने पर लोगों को विश्वास हो गया कि यह शुद्ध-हृदय है। जॉन हुस की तरह इसने सत्य को अपने जीवन का मूल-मंत्र बना रक्खा था। यह कहता था—"सत्य की तलाश करो, सत्य से प्रेम करो, और सत्य की प्राण-पण से रक्षा करो।" इसी लगन का फल है कि यह आज तक निःस्वार्थ भाव से कर्तव्य-पालन कर रहा है।

१८९१ ई० में मसारिक पहली बार आस्ट्रियन पार्लियामेंट का सदस्य चुना गया। दो साल के बाद इसने इस पद से इस्तीफ़ा दे दिया। उस समय तक ज़ेक लोग आस्ट्रिया के साथ संघ में सम्मिलित होकर बराबरी का दर्जा पाने की कोशिश कर रहे थे। लेकिन इसको यह निश्चय हो गया कि जब तक स्वामी और भृत्य का नाता है, तब तक बराबरी नहीं हो सकती। इस समय से इसने पूर्ण स्वतंत्रता को ही अपना ध्येय बनाया। १८९३ ई० में एक पत्र की स्थापना की। उसके द्वारा स्वतंत्रता के भावों का प्रचार होने लगा। १९०७ ई० में यह दुबारा निर्वाचित हुआ—साम्राज्य की पार्लियामेंट में अपने निर्वाचकों के विचारों को निर्भीक होकर प्रकट करता रहा। परंतु स्वतंत्रता 'पार्लियामेंट' के व्याख्यानों से नहीं आती। उसका मंत्र दूसरा ही है।

१९१४ ई० की पावस ऋतु के साथ ही योरप के राजनीतिक आकाश में वे बादल मँडलाने लगे, जिनसे स्वतंत्रता-सुधा-वृष्टि के लिये चातक प्रतीक्षा करते हैं। महासमर प्रारंभ हुआ। मसारिक ने 'मफ़िया' नाम की गुप्त समितियों का संगठन किया। परंतु उस समय देश में रहकर काम करना संभव नहीं था। अतः इन्होंने आस्ट्रिया के शत्रु-राष्ट्रों की शरण ली। जो लोग स्वतंत्रता के लिये विदेशी प्रचार की उपयोगिता को नहीं मानते, उनको ज़ेकोस्लोवाकिया के इतिहास पर दृष्टि डालनी चाहिए। इसकी स्वतंत्रता का मुख्य साधन विदेशों की सहानुभूति और उचित अवसर पर प्रहार करना है।

महासमर आरंभ होने के थोड़े दिन बाद इन्होंने अपना देश छोड़ दिया। फ्रांस चले गए। वहाँ पर ज़ेक स्वतंत्रता की लीग क़ायम की, और ज़ोरों से प्रचार होने लगा। इसी प्रकार इटली, इँगलैंड, रूस, जापान होते हुए अमेरिका पहुँचे। वहाँ पर राष्ट्रपति विल्सन से योरप के नव संगठन के प्रश्न पर बातचीत हुई। विल्सन ने अपने 'चौदह नियमों' में दलित जातियों * को आत्मनिर्णय † का अवसर देने के सिद्धांत को प्रधानता दी है। इसी सिद्धांत के अनुसार योरप में आठ-दस नए राष्ट्रों की स्थापना हुई। यह निश्चय है कि यह सिद्धांत कूट नीति से ख़ाली नहीं है। जर्मनी और उसके मित्रों का अंगच्छेद करना ही इसका मुख्य उद्देश्य था। यदि यह सिद्धांत अच्छी नियत से चलाया जाता, तो भारतवर्ष को भी स्वतंत्रता मिल जाती। लाखों मनुष्य जर्मन, पोलैंड अथवा ज़ेको-स्लाविका के राज्य में न कर दिए जाते। अस्तु, जो कुछ भी हो, इस सिद्धांत के अनुसार मित्र-राष्ट्रों ने अपने शत्रु आस्ट्रिया की प्रजा ज़ेक लोगों को विद्रोह करने के लिये प्रोत्साहित किया। १९१८ ई० के प्रारंभ से ही

* Depressed Nationalaties.

† Principle of self-determination

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ज़ेक-सेना ने आज्ञा की अवहेला शुरू कर दी। उसी साल ऑक्टोबर मास में जर्मनी के पक्ष के राष्ट्र टूटने लगे। बलगेरिया और टर्की ने युद्ध बंद कर दिया। आस्ट्रिया की भिन्न-भिन्न जातियों ने अपनी स्वतंत्र सरकार क़ायम कर ली।

१४ ऑक्टोबर को ज़ेक लोगों ने स्वतंत्रता की घोषणा कर दी। एक अस्थायी सरकार की योजना हुई। प्रजा-तंत्र के अध्यक्ष मसारिक चुने गए। उस समय यह अमेरिका में थे। दो सप्ताह के बाद स्वदेश लौटे। १९२० ई० में सात साल के लिये स्थायी रूप से राष्ट्रपति चुने गए। इस वर्ष मई मास में नियुक्ति दुहरा दी गई। इसी से पाठक मसारिक की लोकप्रियता का अनुमान कर सकते हैं। इनका मुसोलिनी की तरह आतंक नहीं छाया हुआ है। यह अपने सरल स्वभाव, मिलनसारी, निस्स्वार्थता और कार्यतत्परता के कारण प्रजा की आँखों का तारा बने हुए हैं।

युद्ध के पश्चात् समस्त योरपियन देशों की दशा बहुत ख़राब हो गई थी। व्यापार तितर-बितर हो गया था। खाने की सामग्री की कमी से शहरों में 'रोटी के दंगे' होते थे। बोलशेविक आंदोलन के प्रभाव से कारख़ानों में हड़ताल आए दिन की आफ़त हो गई थी। सरकारों का परिवर्तन होते देर न लगती थी। सारे योरप में अशांति का राज्य छाया हुआ था। फ़्रांस में इन पिछले ९ वर्षों में १०-१२ दफ़े सरकार बदली गई है। कोई स्थिति सँभालने में समर्थ नहीं है। जर्मनी और फ़्रांस में सिक्के की जो दुर्दशा हो गई थी, उसको पाठक भूले न होंगे। ऐसी आँधी के समय केवल ज़ेकोस्लोवाकिया ही ऐसा राष्ट्र था, जो इन सब अशांतियों से निश्चिंत था। जिस प्रकार जर्मनी के कारख़ाने रूर-प्रांत में हैं, वैसे ही आस्ट्रिया के सारे उद्योग-धंधे इसी प्रांत में थे। ये सब ज़ेकोस्लोवाकिया को मिल गए। कृषि और व्यापार, दोनों की वृद्धि से प्रजा समृद्ध हो गई। सिक्का स्थिर रहा। हड़ताल नहीं हुई। सरकार में परिवर्तन नहीं हुआ। बजट में गुंजाइश रहती है। सारांश यह कि स्वराज्य और सुराज, दोनों साथ ही आए। ऐसा कम होता है। भीतरी सुप्रबंध का श्रेय यदि राष्ट्रपति मसारिक को है, तो अंतरराष्ट्रीय क्षेत्र में धाक जमाए रखने का श्रेय परराष्ट्र-मंत्री एडवर्ड बेनीश को है। आप बड़े अनुभवी राजनीतिज्ञ हैं। ९ वर्ष पहले जब नई सरकार की योजना हुई थी, तो आप ही सर्वप्रथम परराष्ट्र-मंत्री नियुक्त हुए थे। आपकी अवस्था उस समय केवल ३४ वर्ष की थी। आप मसारिक के शिष्य हैं। वर्सेया की संधि तथा लोकार्नो-सम्मेलन के समय आपने अंतरराष्ट्रीय राजनीति में पूरा भाग लिया है। आपकी सहायता के लिये चेंबरलेन, ब्रियाँ तथा स्ट्रेसमान ने भूरि-भूरि प्रशंसा की है। वास्तव में यह योरप के इने-गिने राजनीतिज्ञों में से एक हैं। यदि आप फ़्रांस, जर्मनी अथवा इँगलैंड के कर्णधार होते, तो आपका नाम ग्रे, चेंबरलेन, स्ट्रेसमान तथा ब्रियाँ से कुछ कम न होता। यह स्वतंत्रता का ही फल है कि ज़ेकोस्लोवाकिया भी संसार के सामने अपनी महत्ता प्रकट कर सका। परतंत्र देशों में भी प्रतिभाशाली व्यक्ति होते हैं; परंतु उनका विकाश नहीं होने पाता।

बोहेमियन लोगों का स्वभाव बड़ा सरल और मिलनसार होता है। इनमें बनावटीपन की बू भी नहीं रहती। अँगरेज़ी भाषा में 'बोहेमियन' शब्द अनियमितता का पर्यायवाची हो गया है। ज़ेक-भाषा का साहित्य विस्तृत और उन्नतिशील है। संगीत और चित्र-कला के लिये यह जाति प्रसिद्ध है। पाश्चात्य सभ्यता के संसार में इनका भाग भी नगण्य नहीं है। योरप की छाती में यह छोटा-सा* जनपद अपना सिर ऊँचा किए हुए है।

लोल लोचन

[लेखक, कविवर "हितैषी"]

पल पत्रवाले यह खंजन हैं तो भी ख़ुद,
उड़ते नहीं हैं, होश औरों के उड़ाते हैं;
होके हीन मीन फाँसते हैं दीन प्रेमियों को,
बरबस रस-सरवर में डुबाते हैं।
दृग मृग हैं पै कार करते शिकारियों का,
दूसरों को मार-शर मार के गिराते हैं;
कंज हैं ये जिनके कि नेजे लगते ही हाय,
रेजे-रेजे होकर कलेजे कट जाते हैं।

* इसकी आबादी एक करोड़ चालीस लाख है, और क्षेत्रफल हमारे युक्त-प्रांत का आधा।—लेखक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रामानुज

(उत्तरार्द्ध)

[लेखक, श्रीनलिनीमोहन सान्याल भाषातत्त्वरत्न, एम्० ए०]

शंकराचार्य के मत की आलोचना पहले की गई है। अब रामानुजाचार्य ने उस मत का किस प्रकार खंडन किया है, यह देखना चाहिए। "सदेव इदमग्र आसीदेकमेवाद्वितीयम्", इस श्रुति-वाक्य का अर्थ है "पहले, अर्थात् सृष्टि के पहले एक-मात्र ब्रह्म था। उस समय जगत् और जीवात्मा सब अव्यक्त अवस्था में ब्रह्म में लीन थे।" इस श्रुति से जगत् मिथ्या है, ऐसा प्रमाणित नहीं होता।

शंकर ने कहा है—"श्रुतियों में सगुण तथा निर्गुण उभयविध ब्रह्म का वर्णन रहने के कारण श्रुति-वाक्यों में परस्पर विरोध है; परंतु ब्रह्म के निर्गुणत्व की प्रतिपादक श्रुतियों का प्रामाण्य अधिक है।" रामानुज ने इसके उत्तर में कहा है—"श्रुति-वाक्यों में परस्पर विरोध नहीं है। ब्रह्म को निर्गुण कहने का उद्देश्य यह है कि वह सब हेय-गुण-विरहित है, और उसको सगुण कहने का उद्देश्य यह है कि वह निखिल-कल्याण-गुण का आकर है। यह व्याख्या निम्नोद्धृत श्रुति-वाक्य के द्वारा स्पष्ट समझी जाती है। "एष आत्मा अपहतपाप्मा विजरो विमृत्युर्विशोकोऽविजिघित्सोऽपिपासःसत्यकामःसत्यसङ्कल्पः।"(छांदोग्य उ०८-१-५) इसका अर्थ यह है कि यह आत्मा पापरहित, जराविहीन, मृत्युविहीन, शोकशून्य है, और इसके क्षुधा नहीं है, पिपासा नहीं है। यह सत्यकाम और सत्यसंकल्प है। भगवद्गीता में भी कहा गया है—

अहं कृत्स्नस्य जगतः प्रभवः प्रलयस्तथा।
मत्तः परतरं नान्यत्किंचिदस्ति धनञ्जय;
मयि सर्वमिदं प्रोतं सूत्रे मणिगणा इव ॥ ६-७ ॥

"मैं समस्त जगत् का उत्पत्तिस्थान हूँ, मुझमें ही समस्त जगत् लीन होता है, मुझसे कोई श्रेष्ठ नहीं, सूत्र में मणि सब जैसे ग्रथित हैं, उसी प्रकार मुझमें सब ग्रथित हैं।"

विष्णुपुराण में भी ऐसा ही कहा गया है—"वह सर्वभूत प्रकृति के महदादि विकार और त्रिगुण के अतीत है। वह सर्वज्ञ, सर्वभूतात्मा है। उसके द्वारा सब विश्व-संसार परिव्याप्त है, वह सब कल्याण-गुणाकर है, वह सब सृष्टि के कार्यों को निज शक्ति के लेश-मात्र के द्वारा संपन्न करता है। वह इच्छानुसार नाना देह धारण करता है, और जगत् का अशेष हितसाधन करता है। वह तेज, बल, ज्ञान, ऐश्वर्य, वीर्य, शक्ति इत्यादि गुणों का एकमात्र आधार है। वह श्रेष्ठ की अपेक्षा भी श्रेष्ठ है और उसमें किसी प्रकार के क्लेश आदि नहीं हैं। वह ईश्वर अंश-रूप में और समष्टि रूप में विराजमान है। उसका स्वरूप अव्यक्त और अप्रकाशित है। वह सर्वेश्वर, सर्वद्रष्टा, सर्ववित् और सर्वशक्तिमान् परमेश्वर है। जिसके द्वारा वह दोषहीन, शुद्ध, सर्वश्रेष्ठ, निर्मल, एकरूप ब्रह्म जाना जाता या प्राप्त होता है, वही ज्ञान है, अपर जो कुछ है, सब अज्ञान है।"

शास्त्रों में निर्विशेष (अभेद) प्रतिपादित नहीं हुआ है। जगत् भ्रममूलक है, यह शास्त्र का उपदेश नहीं। चित्, (जीव), अचित् (स्थावरादि) और ईश्वर (ब्रह्म) स्वरूपतः भिन्न नहीं हैं, यह भी शास्त्र में उपदिष्ट नहीं हुआ है। शंकराचार्य के मत में निर्गुण ब्रह्म ही सत्य है, सगुण ब्रह्म सत्य नहीं। रामानुज के मत में सगुण ब्रह्म ही सत्य है, निर्गुण नहीं। रामानुज का मत विशिष्टाद्वैतवाद है। विशिष्टाद्वैतवादी लोग कहते हैं कि निर्विशेष ब्रह्म का प्रमाण नहीं है। उनका कथन है कि ब्रह्म ही जगत् का कर्ता और उपादान है अर्थात् ईश्वर ही जगत् का उपादान और निमित्त-कारण है। उसी से जगत् की उत्पत्ति, उसी में जगत् की स्थिति और उसी में जगत् का लय होता है। "यतो वा इमानि भूतानि जायन्ते। येन जातानि जीवन्ति। यत्प्रयन्त्यभि संविशन्ति। तत् विजिज्ञासस्व तद्ब्रह्म।"

(तैत्तिरीय उ० । ३ । १)

अर्थात् "जिससे सब भूत उत्पन्न हुए हैं, जिसके द्वारा जीवित हैं, और अंत में जिसमें विलीन होंगे, उसको जानना होगा। वही ब्रह्म है।" यही ब्रह्म का लक्षण है। इसीलिये वादरायण ने सूत्र बनाया है—"यन्माद्यस्य यतः।" ब्रह्मसूत्र १ । १ । २। "जिससे जगत् का जन्मादि सिद्ध होता है, वही ब्रह्म है।" अद्वैतवादी लोग इसको ब्रह्म का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तटस्थ लक्षण कहते हैं, और "सत्यं ज्ञानमनन्तं ब्रह्म।" यही उनके मत में ब्रह्म-का स्वरूप लक्षण है। विशिष्टाद्वैतवादी लोग तटस्थ और स्वरूप-लक्षणों में प्रभेद नहीं स्वीकार करते।

विशिष्टाद्वैत-मत में ईश्वर, जीव और जड़, ये तीन पदार्थ हैं। द्रव्य द्विविध है—जड़ और अजड़। अजड़ वा चित् के दो विभाग हैं—जीव और ईश्वर। अद्वैतवादी लोगों का कथन—"ब्रह्म ही एकमात्र परमार्थ है, और जीव तथा जगत्-प्रपंच रज्जु-सर्प की नाईं अविद्या का परिकल्पना-मात्र है"—विशिष्टाद्वैतवादियों का अनुमोदित नहीं है। शंकराचार्य ने कहा है—"पुरुष, प्रकृति और परमेश्वर, ब्रह्म के ये तीन भाव हैं।"

विशिष्टाद्वैतवादीगण कहते हैं—"प्रकृति (जड़) और पुरुष (जीव) स्वतंत्र पदार्थ होने पर भी संपूर्ण ईश्वराधीन हैं। ईश्वर जीव और जड़ में अंतर्यामी है। इसलिये ये दोनों ईश्वर के शरीर हैं।" इन कथनों के प्रमाण के लिये रामानुज ने श्रुति तथा स्मृति-वाक्य उद्धृत किए हैं।

"नेह नानास्ति किंचन" (यहाँ बहुत्व नहीं है), "एकमेवाद्वितीयम्" (ब्रह्म एक और अद्वितीय है), "आत्मा वा इदमेकाग्र आसीत्" (पहले यह परमात्मा ही था) इन श्रुति-वाक्यों का यह उद्देश्य नहीं है कि जीव और जगत् मिथ्या कल्पना-मात्र है; इनका यथार्थ तात्पर्य यह है कि प्रकृति और पुरुष भगवान् के प्रकार या विधा (Aspect)-मात्र हैं। प्रलय के समय प्रकृति-पुरुष नाम-रूप-भेद-रहित होकर अनिर्देश्य रूप से ब्रह्म में विलीन रहते हैं—उस अव्याकृत अवस्था में ब्रह्म एकमेवाद्वितीयम् है। तब तद्विशिष्ट ब्रह्म को छोड़कर कुछ भी नहीं रहता। परंतु वृक्ष के बीज के सदृश उनमें जगत् सूक्ष्म, अव्यक्त अवस्था में रहता है।

विशिष्टाद्वैतवादी लोग कहते हैं कि ब्रह्म की दो अवस्थाएँ हैं—कार्यावस्था और कारणावस्था—प्रलय में कारणावस्था और सृष्टि में कार्यावस्था। दोनों अवस्थाओं में प्रकृति-पुरुष ब्रह्म के शरीर हैं—प्रलय में सूक्ष्म रूप में और सृष्टि (कार्यावस्था) में स्थूल रूप में।

अद्वैतवादी लोग कहते हैं कि जीव और ब्रह्म स्वरूपतः अभिन्न हैं। विशिष्टाद्वैतवादी लोग कहते हैं जीव और ब्रह्म स्वतंत्र वस्तुएँ हैं। ब्रह्म है विश्व का पति, आत्मा का ईश्वर, आत्मा का आधार, अखिल का आश्रय ("पतिं विश्वस्यात्मेश्वरं", "आत्माधारोऽखिलाश्रयः")।

विशिष्टाद्वैतवादी लोग यह भी कहते हैं कि जब ब्रह्म अखंड वस्तु है, तब जीव ब्रह्मखंड नहीं हो सकता। जीव ब्रह्म की विभूति है। जैसे प्रभा अग्नि का अंश कही जाती है, जैसे देह देही का अंश कही जाती है, वैसे जीव भी ब्रह्म का अंश है।

विशिष्टाद्वैत-मत में ईश्वर का लाभ करना ही परम पुरुषार्थ है। पुरुषोत्तम का लाभ करना ही परम सिद्धि लाभ करना है—यह सिद्धि पुनरावृत्ति-रहित भगवत्-पद-लाभ है। मुक्त पुरुष ब्रह्मोचित गुण प्राप्त करते हैं; परंतु उनके साथ एकीभूत नहीं होते—अद्वैतवादी कहते हैं एकीभूत होते हैं ❀।

अचित् की सूक्ष्म अवस्था ही (सांख्योक्त) प्रकृति है। प्रकृति और पुरुष (परमात्मा) के संयोग से ब्रह्मांड की उत्पत्ति हुई है। परमात्मा या ईश्वर दोषरहित है। वह अनादि अनंत है, सब जीव और अजीवों में है, सबका नियंता है, वह आनंदमय और ज्ञानमय है, सृष्टिस्थिति-प्रलयकर्ता है। जीव बहु हैं और तीन श्रेणी के हैं—(१) बद्ध, (२) मुक्त और (३) नित्य। बद्ध जीव कुछ सुखान्वेषी हैं और कुछ मुक्तिप्रार्थी। मुक्ति का अभिलाषी भक्ति-मार्गावलंबी है। केवल श्रेष्ठ तीन वर्णों के लोग भक्ति-मार्ग के अधिकारी हैं। एक श्रेणी के भक्त और हैं, जिनको प्रपन्न कहते हैं। कुछ प्रपन्न धर्मार्थकाम चाहते हैं, अवशिष्ट मोक्ष। सब वर्णों के लोग प्रपन्न हो सकते हैं। भक्ति के लिये कर्मयोग और ज्ञानयोग आवश्यक हैं। कर्म से ज्ञान की प्राप्ति होती है, और ज्ञान से भक्ति की †।

उत्तर-भारत में रामानुज के मतावलंबी बहुत थोड़े हैं; परंतु दक्षिण-भारत में उनकी संख्या अधिक है।

अतएव देखा जाता है कि रामानुज का दर्शन उपनिषदों और ब्रह्मसूत्र पर प्रतिष्ठित है; परंतु उनका सृष्टि-तत्त्व पुराणों तथा और सांख्य-दर्शन से लिया गया है। उनका वैष्णव-मत प्राचीन पंचरात्र-मत का अनुगामी है। उनके संप्रदाय के लेखों में विष्णु का नाम कम मिलता है, और गोपाल कृष्ण के नाम का व्यवहार कहीं नहीं पाया जाता। नारायण का नाम ही विशेषता से पाया जाता है, और प्रायः परमात्मा के लिये वासुदेव के नाम का व्यवहार किया गया है।

❀ श्रीयुक्त हरींद्रनाथ दत्त का 'गीता में ईश्वरवाद'।

† Sir R. G. Bhandarkar's Vaishnavism.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राधाकृष्ण का उल्लेख कहीं नहीं है। रामानुज के मत की भक्ति में केवल उपासना का प्राधान्य है, अतएव कुछ नीरस-सी है *। चैतन्य की भक्ति सरस और असीम माधुर्यपूर्ण है।

अब रामानुज के जीवन का अवशिष्ट वृत्तांत संक्षेप में दिया जाता है।

भाष्यादि की रचना के बाद श्रीरंगम् में रहने के समय रामानुज के शिष्यों ने उन्हें दिग्विजय को बहिर्गत होने के लिये उत्साहित किया। उन्होंने शीघ्र ही देश-भ्रमण के लिये यात्रा की। पहले चोल-मंडल की ओर गए। वहाँ से पांड्य-देश में पहुँचे। वहाँ से कुरंगनगर होते हुए केरल-देश में, द्वारका में, पुष्कर-तीर्थ में, अयोध्या में, नैमिषारण्य और मथुरा-वृंदावन में गए। तब काश्मीर में उपस्थित हुए। इन सब स्थानों में अद्वैतवादियों को परास्त किया।

अब वह वाराणसी में पहुँचे। वाराणसी के अधिकांश पंडित ही अद्वैतवादी और शैव थे। वहाँ भी वैष्णव मत की जय हुई। वाराणसी से पुरुषोत्तम-क्षेत्र में गए। यह महातीर्थ अति पुरातन और प्रसिद्ध है। इस स्थान के अधिवासीगण परम वैष्णव और भगवद्भक्त हैं। यहाँ रामानुज ने पंचरात्र-आगम के अनुसार भगवान् पुरुषोत्तम की सब पूजा, उत्सवादि संपन्न कराना चाहा। पर इस स्वाधीन क्षेत्र में वह सफल काम नहीं हुए। पुरुषोत्तम से वह कूर्मक्षेत्र, सिंहाद्रि-गरुड़ाद्रि होते हुए वेंकटाचल में उपस्थित हुए। वहाँ वैष्णव-धर्म प्रतिष्ठित कर वह भूतपुरी होते हुए श्रीरंगम् पहुँचे।

इसके बाद रामानुज ने धनुर्दास-नामक एक स्त्रैण शूद्र का उद्धार किया। धनुर्दास अनासक्त हृदय से भक्ति-पथ का पथिक होकर जीवन अतिवाहित करने लगा।

रामानुज की वृद्धावस्था में शैव-धर्मावलंबी चोलराज ने वैष्णवों के प्रति घोर अत्याचार आरंभ किया। उन्होंने सभा आह्वान कर सबको एक पत्र पर "मैं शैव हूँ" लिखकर हस्ताक्षर करने की आज्ञा दी। शैवों ने हस्ताक्षर किए; पर वैष्णव लोग दंडित होने के भय से देश छोड़कर भागे। चोलराज ने सोचा कि वैष्णवाग्रगण्य रामानुज को उस सभा में बुलाकर उनके हस्ताक्षर कराने से सब वैष्णवों का मत ग्रहण करना सहज होगा। अतएव रामानुज को लाने के लिये आदमी भेजे गए। परंतु उनके शिष्यों ने उनकी रक्षा के लिये उन्हें श्रीरंगम् छोड़ जाने को कहा। यतिराज ने कई एक शिष्यों को साथ लेकर झट वैसा ही किया। उन्होंने जंगल के भीतर एक व्याध-पल्ली में आश्रय लिया। यहाँ के व्याध लोग वैष्णव और यतिराज के शिष्य थे। उन्होंने उनकी परिचर्या की। वहाँ से रवाना होकर एक ब्राह्मण के घर में पहुँच ब्राह्मण-पत्नी चेलाचलांबा, जो यतिराज की शिष्या थी, उसके यहाँ वह कुछ दिन रहे। यहाँ से बहु-जनपद और नगर पर्यटन कर और भिन्न-भिन्न मतावलंबियों को वैष्णव-धर्म में दीक्षित कर यादवाद्रि में अवस्थान करने लगे।

यहाँ किसी वैष्णव ने उन्हें समाचार दिया कि रामानुज के पलायन के बाद चोलराज के दूतों ने पूर्णाचार्य और कुरेश को चोल-राजधानी त्रिशिरपल्ली (त्रिचिनापल्ली) में ले जाकर राजसभा में उपस्थित किया। चोलराज ने उन्हें प्रतिज्ञा-पत्र में हस्ताक्षर करने की आज्ञा दी। उन्होंने वीरों की नाईं वैष्णव-धर्म का श्रेष्ठत्व प्रकाश किया। चोलराज ने क्रोध में अधीर होकर उनके चक्षु उत्पाटित करने की आज्ञा दी। आँखें फोड़ दी गईं। वैष्णव लोग उन्हें लेकर श्रीरंगम् की ओर रवाना हुए। पूर्णाचार्य वार्धक्य में चक्षु की यंत्रणा सह नहीं सके। श्रीरंगम् में पहुँचने के पहले ही उनका देहांत हुआ।

यतिराज वैष्णव के मुख से अपने गुरु के देहत्याग तथा प्रिय शिष्य कुरेश के नेत्रोत्पाटन का समाचार सुनकर अत्यंत व्यथित हुए। कुरेश की सांत्वना के लिये एक ज्ञानी वैष्णव को श्रीरंगम् में भेजा। कुरेश इस समय वृषभाचल में रहते थे; क्योंकि श्रीरंगम् नगर के द्वारपालों ने वहाँ उनका प्रवेश निषेध किया था। वृषभाचल में रहने के समय कुरेश ने सुंदर भुजस्तोत्र, श्रीस्तोत्र, अतिमानुषस्तोत्र और वैकुंठस्तोत्र की रचना की थी। महात्मा गोष्ठीपूर्ण की भी चरम दशा उपस्थित हुई, और वह यामुनाचार्य के पादपद्मों की चिंता करते-करते वैकुंठ को सिधारे। यतिराज इस समाचार से बहुत शोकार्त हुए।

चोलराज ने जितने विष्णुमंदिर थे, उनका विनाश किया। वैष्णवक्षेत्र श्रीरंगम् के नाश के लिये श्रीरंगम् जा रहे थे कि रास्ते में अकस्मात् उनके कंठ में एक व्रण उत्पन्न हुआ। वह व्रण बहुत बड़ा हो गया, और उसमें असंख्य

* Sir R. G. Bhaudarkar's Vaishnavism.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कृमि (कीड़े) उत्पन्न हुए। कुछ दिन के बाद वह काल-कवलित हुए। कंठ में कृमि होने के कारण मृत चोलराज का नाम कृमिकंठ हुआ।

विद्युत्-वेग से यह समाचार सारे देश में फैल गया। वैष्णव-समाज को बहुत आनंद हुआ। १२ वर्ष के बाद रामानुज सशिष्य श्रीरंगम् लौटे। शठारि के स्मरणार्थ कुरुका-नगरी में प्रतिवर्ष महोत्सव हुआ करता है। श्रीरंगम् में लौट आने के बाद वह एक वर्ष के महोत्सव में उपस्थित हुए। शठारि मूर्ति को भक्ति के साथ प्रणाम कर समवेत जन-संघ को संबोधन कर वह कहने लगे—"इन महात्मा ने मानवों के उद्धार के लिये जन्म-ग्रहण किया था। जन्मांतर-सिद्ध महापुरुष अलौकिक प्रतिभा से वेद का निगूढ़ अर्थ द्राविड़ भाषा में ग्रथित कर 'द्राविड़ वेद' प्रकशित कर गए। वही आदि वैष्णव-दर्शन है। उस ग्रंथ के आधार पर वैष्णव-दर्शन और वैष्णव-मत प्रचारित हो रहे हैं। हे भक्तगण, आप सदा इस महात्मा के प्रति भक्तिमान् रहिए। महात्मा शठारि जगत् का हित कर गए हैं। मानव-कुल सदा के लिये उनका ऋणी है।"

रामानुज स्वामी की देह क्रमशः जराजीर्ण हो गई। उनके शिष्यगण उनकी सेवा में लगे रहे। इस समय कुरेश का वैकुंठवास हुआ। यतिराज बहुत शोकार्त हुए।

इस प्रकार यतिराज ने जनगण के प्रति कृपा-वितरणार्थ सुदीर्घकाल श्रीरंगम् में वास किया। उनकी आयु एक सौ बीस वर्ष की हो गई। उनका वैकुंठ-यात्रा का दिन उपस्थित हुआ। उस दिन प्रातःकाल ही स्नान समाप्त कर ध्यानस्थ हुए। उनके शिष्यगण उन्हें घेरे रहे। यामुनाचार्य के पादपद्मों की चिंता करते हुए उनका प्राणवायु ब्रह्मरंध्र भेदकर बहिर्गत हो गया।

रामानुजाचार्य ने अपने दीर्घ जीवन-काल में असंख्य महत् कार्य किए। उनके असाधारण पांडित्य, अनुपम भक्ति और अदम्य प्रचारोत्साह के कारण धर्म-जगत् में एक नूतन युग का सूत्रपात हुआ। उन्होंने क्षण-भंगवादी बौद्धों के, देहात्मवादी चार्वाक संप्रदाय के, दांभिक शैवों के, ब्रह्म तथा जीव के एकत्ववादी प्रच्छन्न बौद्धों (अद्वैतवादी शंकराचार्य संप्रदायवालों) के, अनीश्वर मीमांसकों के और ईश्वर-अनापेक्ष सांख्यों के मतों को संपूर्णता से उन्मूलित कर जीवेश्वर की भिन्नता-प्रतिपादक मानव हृदय के आकांक्षित सेव्य-सेवक भाव के पोषक भक्ति-मत का प्रचार किया। आपका नाम चिर-स्मरणीय रहेगा।

धन की दुर्दशा

[लेखक, कविवर पं० कामताप्रसाद गुरु]

कमला और कुबेर बने हैं जिसके रक्षक,
सारा सभ्य समाज आज है उसका भक्षक।
बचकर इससे भला रहेगा रक्षित कब तक;
अचरज है, धन टिका हुआ है जग में अब तक।
कहाँ-कहाँ से खींच लोग इसको लाते हैं;
कुटियों में भी इसे खोजने को जाते हैं।
धन के लिये उपाय नीच क्या-क्या करते हैं;
रचते हैं षड्यंत्र, मारते हैं, मरते हैं।
बन जाते हैं कभी इसे पाने को कायर,
कभी भिखारी दीन, कभी मौरूसी शायर।
हृदय बेचते कभी, सौंप देते हैं तन भी;
कैसी अद्भुत वस्तु जगत में है यह धन भी!
गुरु तज निज सिद्धांत शिष्य का धन हरते हैं;
पंडित इसके लिये नियम खंडित करते हैं।
वैद्य हितैषी प्राण-संग लेते हैं इसको;
न्यायाधीश पुनीत न्याय देते हैं इसको।
राज-कोष हैं भरे हुए प्रायः उस धन से,
जिसे खींचते राज-पुरुष हैं निर्बल जन से।
महाजनों का काम नित्य धन-आकर्षण है;
पर न भाप की भाँति पुनः उसका वर्षण है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बनकर पात्र अपात्र आप सब कुछ लेते हैं ;
पर सुपात्र को कभी न कुछ मिलने देते हैं।
सीमा से भी अधिक प्राप्त यद्यपि करते हैं ;
धन-तृष्णा से रात-दिवस यों ही मरते हैं।
पा सकते कुछ नहीं दीन-धनियों के मारे,
बहते जिनके यहाँ सदा हैं द्रव्य-पनारे।
दीनों का धन लूट धनी सुख से सोते हैं ;
अन्न-वस्त्र के लिये दीन, निर्धन रोते हैं।
वे दिन में दस बार वेष नूतन करते हैं ;
घर में सब सामान विदेशी ला भरते हैं।
जाता है अरगजा, अगर कोठों में पोता;
यों ही सभ्य समाज व्यर्थ ही है धन खोता।
मुख धोने के लिये काम है गुलाब-जल का;
व्यंजन सुधा समान चाहिए मीठा, हलका।
पीने का जल दूर विलायत से आता है ;
धनियों का धन इसी भाँति जल में जाता है।
सभ्यों के पद-पद्म नहीं धरती पर पड़ते ;
मखमल पर भी उन्हें सदा हैं काँटे गड़ते।
सुमन-सेज पर पड़े हुए व्याकुल होते हैं ;
वाहन विविध अनेक सदा उनको ढोते हैं।
कई खर्च के अलग-अलग हैं उनके खाते ;
एक काम के लिये दाम दूने हैं जाते।
निज गौरव के हेतु, उन्हें ऋण भी भाता है ;
आता है जिस भाँति द्रव्य वैसे जाता है।
हे धन ! तेरा साथ सत्य ने त्याग दिया है ;
कलि ने तेरे पास वास अब बना लिया है।
कमला और कुबेर रहें चाहें रखवाले ;
पर है तू अब आन पड़ा सभ्यों के पाले।

उद्योग-धंधों में भारतीय स्त्रियों का स्थान

[लेखक, श्रीउमेशप्रसादसिंह बख़्शी बी० ए० और श्रीहरिहरशरणदत्त बी० ए०]

अन्य देशों की भाँति भारत में भी उद्योग-धंधों के प्रचार का एक परिणाम यह हुआ है कि यहाँ स्त्रियों तथा बच्चों के परिश्रम से निर्दयता-पूर्वक अनुचित लाभ उठाया जाने लगा है। कहने का अभिप्राय यह नहीं कि इसके पूर्व यहाँ की स्त्रियाँ किसी प्रकार का परिश्रम करती ही न थीं, प्रत्युत भले घरों की स्त्रियाँ भी सदा से अनेक प्रकार के परिश्रम करती आई हैं। वे गृहिणी कहलाती हैं ; गृह-प्रबंध तथा बच्चों का पालन-पोषण विशेष कर उन्हीं के कर्तव्य माने जाते हैं। किंतु उनके इन कार्यों के औद्योगिक महत्त्व की ओर भारत-वर्ष ही क्या, किसी भी उन्नतिशील देश के लोगों का ध्यान नहीं आकर्षित हुआ है, और इसी कारण स्त्रियों के सिर औद्योगिक उन्नति में बाधक होने का मिथ्या दोष मढ़ा जाता है।

श्रमजीवी-वर्ग की स्त्रियों के ऊपर गृह-संबंधी कार्य तथा शिशु-पालन के अतिरिक्त खेती-बारी के भी अनेक कार्यों का भार रहता है। देहात की स्त्रियों का, द्रव्योपार्जन अथवा अपने पतियों की सहायता के लिये, खेतों में काम करना एक साधारण बात है। कारीगरों की स्त्रियाँ अपने व्यवसाय के विशेष परिश्रम-साध्य अथवा विशेष कौशल-साध्य कार्यों को पुरुषों के लिये छोड़कर शेष सभी कार्यों में यथेष्ट भाग लेती हैं। किंतु इस ढंग से कार्य करने में न तो पारिश्रमिक का और न कार्य करने की अवधि का ही कोई प्रश्न उठता है, बरन् अपने ही परिवार के लोगों के साथ कार्य करने में अधिक सुगमता एवं आनंद का अनुभव होता है।

कारख़ानों में काम करने की पद्धति यहाँ के राष्ट्रीय जीवन के प्रतिकूल इस प्राचीन पद्धति से अत्यंत भिन्न है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस प्रणाली के कारण कारख़ानों के भीतर निश्चित दैनिक या साप्ताहिक पारिश्रमिक के लिये श्रमजीवियों के बड़े समूह के साथ मिलकर एक अपरिचित स्वामी के अधीन काम करने के संबंध में हमारे सम्मुख ऐसी समस्याएँ उपस्थित हो गई हैं, जैसी पहले कभी न थीं।

खेती तथा मज़दूरी में जितना घनिष्ठ संबंध भारतवर्ष में है, उतना अन्य किसी देश में नहीं। स्वभावतः यहाँ प्रत्येक मज़दूर कृषक ही है केवल आवश्यकतावश कारख़ानों में मज़दूरी कर लेता है। दुर्भाग्य से किसानों को साल में केवल पाँच महीने ही खेती करनी पड़ती है, शेष सात महीने बेकार रहना पड़ता है। इतना ही नहीं, कहीं-कहीं तो उपज इतनी कम होती है कि शक्ति-भर परिश्रम करने पर भी उनको अपने तथा अपने परिवार के भरण-पोषण के लिये उपयुक्त यथेष्ट सामग्री नहीं प्राप्त होती।

रत्नगिरि (बंबई) तथा उसके आसपास की ज़मीन इतनी कम उपजाऊ है कि वहाँ के कृषकों को अन्य व्यवसायों के द्वारा अधिक द्रव्य-प्राप्ति के लिये बाध्य होकर अपनी खेती छोड़ देनी पड़ती है। यही कारण है कि बंबई की कपड़े की मिलों (Mills) में काम करनेवाले अधिकांश श्रमजीवी इन्हीं हिस्सों से आते हैं। उत्तर-भारत में, जहाँ ऐसे किसान, जो ज़मीन के स्वामी भी हों, बहुत थोड़े हैं, किसान अपनी ज़मीन से किसी भी समय बेदख़ल किए जा सकते हैं। ऐसे किसान जब कारख़ानों में, जहाँ प्रतिमास मज़दूरी मिलती है, काम करने जाते हैं, तब आरंभ में ही उन्हें ऋण लेना पड़ता है, और महीने-डेढ़ महीने के बाद जब उन्हें पहले मास का वेतन मिलता है, तब उसका एक बड़ा भाग उनके साहूकार या काबुली महाजन की जेब में चला जाता है। इसका फल यह होता है कि उनके परिवार के लोग जिस आय की राह देख रहे थे, उसके न पहुँचने पर आतुर हो उठते हैं। अंत में उनकी स्त्रियों को भी नगर में आकर उनके साथ रहना पड़ता है। किंतु शहर का रहन-सहन, व्यय-साध्य होने के कारण, उन्हें भी कारख़ाने में मज़दूरी करने के लिये बाध्य होना पड़ता है। स्त्री-पुरुष दोनों की आय से बूढ़े मा-बाप तथा बच्चों के लिये भेजने योग्य कुछ जमा हो सका, तो कभी कुछ भेज दिया, अन्यथा बहुधा ऐसा होता है कि बच्चों को भी आकर मा-बाप के साथ ही रहना तथा कारख़ानों की शरण लेनी पड़ती है।

इससे स्पष्ट है कि भारतवर्ष की वर्तमान आर्थिक स्थिति में उद्योग-धंधों में स्त्रियों का अधिकाधिक भाग लेना अनिवार्य है, और यद्यपि इससे पारिवारिक जीवन विच्छिन्न भी होता है, तथापि देहातों में प्राप्य होनेवाले उद्योग-धंधों की अपेक्षा अधिक द्रव्योपार्जन हो सकने के कारण इसे रोकने की चेष्टा करना भी उचित नहीं। अतएव स्त्रियों की मज़दूरी तथा उनके काम करने की शर्तों आदि में ही यथा-साध्य सुधार करना आवश्यक है।

स्त्रियों से काम लेने के पक्ष में यही दलीलें पेश की जाती हैं कि उनकी मज़दूरी कम तथा काम अधिक स्थायी होता है, और उन पर पुरुषों की अपेक्षा अधिक दबाव डाला जा सकता है। भारत के संगठित उद्योग-धंधों में काम करनेवाले श्रमजीवियों की कुल संख्या ४० लाख है, जिसमें लगभग एक-तिहाई स्त्रियाँ हैं। चाय, काफ़ी तथा रबर आदि की खेती में लगभग आधे मज़दूर स्त्रियाँ ही हैं। खानों में काम करनेवाले मज़दूरों की एक-तिहाई तथा बुनाई आदि के काम में चौथाई संख्या स्त्रियों की ही है। कारख़ानों में काम करनेवाले मज़दूरों की संख्या क़ानून से नियंत्रित है, और सन् १९२२ में १३ लाख थी, जिसमें से २,००,००० से कुछ अधिक स्त्रियाँ थीं। २,३०,००० खानों में काम करनेवाले मज़दूरों में ८०,००० स्त्रियाँ थीं, जिनमें लगभग ६०,००० खानों के भीतर काम करती थीं। क़ानून से नियंत्रित चाय, कहवे तथा रबर के व्यवसाय में लगभग २५०,००० स्त्रियाँ काम करती थीं।

सर्वांश में, संपूर्णतया उद्योग-धंधों में लगे हुए श्रमजीवियों में, स्त्रियों की संख्या भारतवर्ष में, और वह भी विशेषतः बुनाई के व्यवसाय में, अन्य सभी देशों की अपेक्षा कम है। कदाचित्, यहाँ भी बाल-विवाह-प्रथा इसका कारण है। इसके अतिरिक्त एक और कारण यह भी है कि स्त्री-श्रमजीवियों में कुमारियों की अपेक्षा विवाहिताओं की संख्या, अन्य देशों की अपेक्षा, भारत में अधिक है।

यद्यपि खेती-बारी के काम में प्राप्त होनेवाली मज़दूरी की आय अत्यंत न्यून होने के कारण संगठित उद्योग-धंधों में अधिक मज़दूरी पर काम करने के लिये स्त्रियों का जाना नहीं रोका जा सकता, तथापि इन कारख़ानों तथा संगठित उद्योग-धंधों में काम करनेवाली स्त्रियों के जीवन तथा उनकी परिस्थितियों पर विचार करने पर उन्हें अपने दरिद्र ग्राम्य जीवन को छोड़कर अर्थकर, किंतु अत्यंत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हानिकर, औद्योगिक जीवन में प्रवेश करने के लिये उत्साहित करने की ओर से अवश्य अरुचि होती है। परंतु इसका समुचित उपाय यही है कि प्रत्येक व्यवसाय में, और विशेष कर संगठित उद्योगों में, उनके काम करने की परिस्थिति में अधिक न्यायोचित तथा मनुष्योचित सुधार किए जाते। श्रमजीवी-सुधार-संबंधी क़ानूनों का एक सिद्धांत तथा अंतरराष्ट्रीय श्रमजीवी-संघ का आधार यही है कि मज़दूरों के कार्य को केवल एक वस्तु-मात्र न माना जाय, वरन् मज़दूरी तथा मज़दूरी करने की परिस्थिति निश्चित करने में मज़दूरों की मानवी आवश्यकता का विशेष ध्यान रक्खा जाय। किंतु दुर्भाग्यवश ऐसा जान पड़ता है कि भारत में यह सिद्धांत अभी तक न तो पूँजी-पतियों को और न शासकवर्ग को ही मान्य हुआ है।

यह मानना अनुचित न होगा कि भारतवर्ष में सबसे अधिक मज़दूरी देनेवाला उद्योग बंबई के सूती कपड़ों का व्यवसाय ही है। वहाँ एक पुरुष की औसत मासिक मज़दूरी लगभग २ पौंड (प्रायः ३०) रु०), या प्रतिसप्ताह १० शिलिंग (प्रायः ७॥) रु०) हैं। और, एक स्त्री की मासिक आय लगभग १ पौंड ५ शिलिंग या ६ शि० साप्ताहिक है। दूसरे स्थानों तथा दूसरे व्यवसायों की मज़दूरी इससे कम होती है। कोयले की खानों की औसत दैनिक मज़दूरी सन् १६१२ में प्रत्येक मज़दूर के लिये आठ आने या १० शि० थी। आजकल यह दर स्त्रियों की मज़दूरी की है। चाय के बग़ीचों में पुरुषों की औसत साप्ताहिक मज़दूरी ४ शिलिंग तथा स्त्रियों की २ शिलिंग ६ पेंस है। इस पर यह कि मज़दूरी, कम होने पर भी, महीने या सप्ताह के ठीक समाप्त होते ही, नहीं मिल जाती; वरन् जहाँ साप्ताहिक वेतन बाटने की प्रथा है, वहाँ एक सप्ताह की, और जहाँ मासिक वेतन बाटने की प्रथा है, वहाँ दो-तीन सप्ताह की मज़दूरी बाक़ी रख छोड़ी जाती है। मालिक के अर्थ-दंड देने के अधिकार की सीमा किसी क़ानून के द्वारा नियंत्रित नहीं है, और प्रायः ओवरसियर लोग (Overseers) मज़दूरी का कुछ भाग अपने लिये निकाल लेते हैं। काम के घंटों तथा अन्य शर्तों के संबंध में पुरुषों और स्त्रियों में विशेष अंतर नहीं है। Indian Factory Act के अनुसार पुरुष तथा स्त्रियाँ, दोनों ही के लिये सप्ताह में ६० घंटे, तथा दैनिक अधिक-से-अधिक ११ घंटे, तक काम करने का नियम है। स्त्रियों को रात में काम करना मना है। खानों में वे प्रतिसप्ताह ६० घंटे बाहर तथा ५४ घंटे भीतर काम करती हैं। दैनिक काम करने के घंटों की कोई सीमा क़ानून द्वारा निर्धारित नहीं है, और न स्त्रियों के लिये खानों के भीतर काम करने की ही कोई रुकावट है। अतः वे दैनिक सोलह-सोलह घंटे तक भी खानों के भीतर काम करती रह जाती हैं। बग़ीचों या खेतों पर काम करने में तो काम के घंटे एकदम ही अनियंत्रित हैं। प्रसव के थोड़े दिनों पहले, अथवा थोड़े ही दिनों के बाद, कारख़ानों या खानों में काम करने के लिये कोई रोक-टोक नहीं है। भारतवर्ष में Sickness insurance तथा Unemployment insurance आदि के लिये कोई क़ानून नहीं।

इनमें से कम-से-कम कुछ बातों में तो सुधार करने के लिये शीघ्र ही नियम बनाने की आवश्यकता है। काम करने के घंटे बहुत अधिक हैं, विशेष कर स्त्रियों के लिये, जिन पर अपने जीविकोपार्जन के अतिरिक्त रसोई तथा शिशु-पालन का भार भी रहता है। जो लोग स्त्रियों और पुरुषों की आर्थिक समानता में विश्वास करते हैं, वे कदाचित् स्त्रियों के लिये काम करने के घंटों के घटाने के लिये विशेष नियम बनाने का समर्थन नहीं करेंगे; क्योंकि इससे ऐसे नियमों से पुरुषों की बराबरी करने में वे पीछे रह जायँगी। किंतु यह ध्यान रखने की बात है कि भारतवर्ष में अभी स्त्रियों तथा पुरुषों में इतनी स्पर्धा नहीं है। दूसरी बात यह भी है कि देश के उद्योग-धंधों में तेज़ी के साथ वृद्धि होने के कारण मज़दूरों की बहुत बड़ी माँग है, और इस कारण पुरुषों के द्वारा स्त्रियों की मज़दूरी छिन जाने का कोई भय नहीं है। तीसरे स्त्रियों के काम करने के घंटों में कमी करने से सभी जगह पुरुषों के काम करने के घंटों में भी उसी प्रकार कमी हो सकती है।

स्त्रियों के लिये खानों के भीतर काम करने का भी शीघ्र निषेध हो जाना चाहिए। खानों के नीचे काम करने से स्त्रियों का केवल शारीरिक तथा नैतिक पतन ही नहीं होता, वरन् इससे पुरुषों के सुख तथा शांति में भी बाधा पहुँचती है। परंतु दुर्भाग्यवश नैतिक दृष्टि से ही इस प्रथा का समर्थन किया जाता है। कहा जाता है, पुरुष अपनी स्त्रियों को अपने निकट रखना पसंद करते हैं। कारण, दूर—खान के ऊपर—रखने से उन्हें सदा उनकी प्रतिष्ठा की हानि होने का भय लगा रहता है। सरकार तथा कारख़ानों के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वामी तो कुछ मध्य-श्रेणी की शिक्षिता स्त्रियों को अपना पृष्ठपोषक बनाकर उनसे इस प्रथा का समर्थन करा देते हैं, और वर्तमान नियमों से संतुष्ट रहनेवाली कुछ स्त्री-श्रमजीवियों का उदाहरण भी उपस्थित कर देते हैं ; किंतु असल बात तो यह है कि आजकल संसार-भर में केवल भारतवर्ष ही एक ऐसा देश है, जहाँ स्त्रियों के लिये खानों के भीतर काम करना निषिद्ध नहीं है ।

प्रसव के कुछ काल पहले तथा कुछ दिन बाद, स्त्रियों का मज़दूरी करना रोकने तथा प्रसव-काल की आवश्यक अनुपस्थिति के समय तक कुछ आर्थिक सहायता करने के निमित्त क़ानून बनाने में विलंब करने का तो कोई कारण ही नहीं हो सकता । सरकार तथा कारख़ानों के स्वामी, दोनों ही इन बातों का विरोध करते हैं ; किंतु दोनों की दलीलें एक दूसरे से भिन्न हैं । चाय के बग़ीचों में स्त्रियों को रोक रखने के लिये प्रसव-काल में उन्हें कुछ आर्थिक सहायता पहले से दी जाती है । अतः बग़ीचों के स्वामी इसके लिये क़ानून बनाना व्यर्थ समझते हैं । दूसरे लोग यह कहकर इसका विरोध करते हैं कि अभी ऐसे नियम बनाने का समय नहीं आया है । भारतवर्ष की स्त्री-श्रमजीवियों में कुमारियों की अपेक्षा विवाहिता स्त्रियों की संख्या बहुत अधिक होने के कारण यहाँ ऐसी संस्थाओं की भी बड़ी आवश्यकता है, जहाँ माताओं की अनुपस्थिति में बच्चों की देख-भाल की जाय । अभी तो माताओं की अनुपस्थिति में बच्चों को शांत रखने के लिये उन्हें अफ़ीम खिला देना एक साधारण बात है । इन्हीं सब हानिकर प्रथाओं तथा असुविधाओं के कारण एक वर्ष से नीचे के बच्चों की मृत्यु-संख्या भयंकर अधिक है—यहाँ तक कि प्रतिसहस्र ४०० से ६०० तक बच्चों की जान जाती है ।

इन सब सुधारों से भी अधिक आवश्यकता इनकी शिक्षा तथा संगठन की है । वैसे तो भारतवर्ष में सभी के लिये शिक्षा की आवश्यकता है । कारण, यहाँ ५ प्रतिशत स्त्रियाँ भी साक्षर नहीं हैं । किंतु मज़दूर-स्त्रियों में तो कदाचित् १ प्रतिशत भी पढ़ी-लिखी स्त्री न मिलेगी ? श्रमजीवी-स्त्रियों में किसी प्रकार का संगठन भी नहीं है, और शिक्षा के अभाव के कारण इसकी जड़ शीघ्र जम भी नहीं सकती ।

एक ही प्रकार के अथवा समान काम के लिये समान मज़दूरी का प्रश्न अभी भारत में नहीं उपस्थित हुआ है । यहाँ तो निस्संदेह उतने ही या वैसे ही काम के लिये स्त्रियों को पुरुषों की अपेक्षा कम मज़दूरी मिलती है । इसके कई कारण हैं । पहले तो यहाँ की श्रमजीवी-स्त्रियों में न तो शिक्षा या संगठन ही है, और न उनके बदले इसका आंदोलन करनेवाले दूसरे शिक्षित लोग ही हैं । फिर बाल-विवाह की प्रथा भी यहाँ की लड़कियों को कम मज़दूरी पर काम करने के लिये बाध्य करती है । कारण, वे अपने पतियों के साथ ही रहकर काम करना अधिक पसंद करती हैं, और दूसरे देशों की लड़कियों की तरह स्थानांतर में रहने को प्रस्तुत नहीं होतीं ।

साधारणतः पुरुषों और स्त्रियों में कोई स्पर्धा नहीं रहती ; क्योंकि वे दोनों प्रायः दो विभिन्न प्रकार के काम करते हैं । उदाहरणार्थ बुनाई के काम में पुरुष सूत कातने तथा बुनने का काम करते हैं, और स्त्रियाँ सूत लपेटने का काम करती हैं । इसी प्रकार खानों में पुरुष खोदने तथा स्त्रियाँ ढोने का काम करती हैं । चाय के बग़ीचों या अन्य व्यवसायों में भी पुरुष अधिकतर कठिन काम करते हैं ।

भारतवर्ष में स्त्रियों और पुरुषों की आर्थिक समानता पर विचार करते हुए यह स्मरण रखना आवश्यक है कि यहाँ की स्त्रियों—विशेष कर मध्यम-श्रेणी की स्त्रियों—की सामाजिक स्वतंत्रता संकुचित होने के कारण वे योरप की स्त्रियों की अपेक्षा पुरुषों पर अधिक निर्भर रहती हैं । उत्तर-भारत की स्त्रियाँ तो एकदम परदे में रहती हैं, और बिना घूँघट के बाहर निकलती तक नहीं । पश्चिम तथा दक्षिण-भारत में जहाँ परदे की प्रथा नहीं है, पुरुषों तथा स्त्रियों में पूर्ण स्वतंत्रता-पूर्वक मेल-जोल नहीं होता, यहाँ तक कि मध्यम-श्रेणी की स्त्रियों का नौकरी या मज़दूरी करना भी कितने लोगों को बुरा मालूम होता है । किंतु हाँ, यह विचार, बढ़ते हुए आर्थिक संकटों के कारण, अब दूर होता जा रहा है । श्रमजीवी-वर्ग की स्त्रियों को अवश्य कुछ सामाजिक स्वतंत्रता प्राप्त है; किंतु इन पर भी ऊँची श्रेणी का प्रभाव पड़े बिना नहीं रहता । सौभाग्य-वश शिक्षा-प्रचार के कारण यहाँ की स्त्रियाँ अब आर्थिक तथा सामाजिक क्षेत्रों में अधिकाधिक स्वतंत्र होती जा रही हैं, और यह आशा की जाती है कि आज जितना हम अनुमान कर सकते हैं, उससे भी अधिक इस दिशा में उन्नति होगी ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ज़मींदार साहब

रबर की थैलियाँ

दूषित रोगों से बचने के लिये तथा संतान इच्छानुसार होने के लिये इसका उपयोग कीजिए, सालों खराब न होगी। मूल्य फ़ी थैली १।) रु० डाक-ख़र्च १ से ३ तक ।=) आना।

मिलने का पता—मेहता ब्रादर्स, C/o पोस्टबक्स नं० ११४४४ कलकत्ता।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बाबर की मृत्यु

[लेखक, श्रीअवधवासी लाला सीताराम बी० ए०]

ब कोई जाति किसी दूसरी जाति को छल से, बल से, या छल-बल, दोनों से परास्त करके अपने अधीन कर लेती है, तो सब लोग यही कहते हैं कि विजित जाति पर ईश्वर का कोप हुआ, और विजयिनी पर उसने दया की। विजेता जितना दुष्ट और क्रूर होता है, उतना ही ईश्वर को अपना पक्षपाती बताता है। मुसलमानों में शराब क्या, सारे नशे हराम हैं। परंतु जैसे हिंदू मुसलमान या 'अछूत' के घर का पानी पीने से जाति-बाहर कर दिया जाता है, वैसे मुसलमान नहीं। इस्लाम की जड़ सुदृढ़ है। एक शायर ने कहा है—

"ज़ाहिद, शराब पीने से काफ़िर हुआ मैं क्यों ?
क्या एक चुल्लू पानी से ईमान बह गया ?"

भारत में मुग़ल-साम्राज्य की स्थापना करनेवाला बाबर शराब पीता था। परंतु वह भारत में आया, और फ़रवरी, १५२७ में, बयाने के मैदान में, प्रबल राजपूतों ने उसकी सेना को मार भगाया। अब्दुलअज़ीज़ की कमान में जो सेना आगे बढ़ गई, उसे काट डाला, तो उसने तुरंत तोबा की। फिर क्या था, अल्लाह ने काफ़िरों को नष्ट करके उसे हिंदोस्तान की सल्तनत बख़्श दी। बाबर की तोबा का ब्यौरा उसी के मुँह से सुनिए—

"जमादिल औवल की तेईसवीं तारीख़, सोमवार के दिन मैं अपने मोरचों को देखने के लिये सवार हुआ। चलते-चलते मुझे यह ध्यान आया कि मैंने कई बार अपने पापों के लिये पश्चात्ताप करने का विचार किया ; परंतु जो काम मना हैं, उनके छोड़ने की चाह मेरे चित्त में बनी रही। मैंने अपने मन में कहा—अरे मन, पाप में तू कब तक सुख मानेगा ? पश्चात्ताप बुरा नहीं होता, इसे कर डाल। मैंने इन प्रलोभनों से चित्त को हटाकर यह निश्चय किया कि अब शराब न पिऊँगा। मैंने शराब पीने-पिलाने की चाँदी-सोने की सुराहियाँ और प्याले तुड़वा डाले, और अपने मन को शुद्ध करके शराब पीना छोड़ दिया। मैंने हुक्म दिया कि चाँदी-सोने के बर्तनों के टुकड़े फ़क़ीरों और कंगालों को दे दिए जायँ। सबसे पहला मनुष्य, जिसने इस प्रायश्चित्त में मेरा साथ दिया, असास था। हम दोनों ने यह भी प्रण किया कि अब से दाढ़ी न कटावेंगे। उसी रात को तीन सौ अमीरों, मुसाहबों और सिपाहियों ने तोबा की। जो शराब हमारे साथ थी, सब फेंक दी गई। जो शराब बाबा दोस्त लाए थे, उसमें नमक डलवा दिया, जिससे वह सिरका हो जाय (यह बाबा दोस्त लाहौर के हाकिम बुड्ढे दौलतख़ाँ थे, जिन्होंने किसी लालच से बाबर को इब्राहीम से लड़ने के लिये बुलाया था, और बाबर की रुचि देखकर शराब का तुहफ़ा लाए थे। बाबर पहले तो उन्हें बाबा [बाप] कहता था। जब बाबा की आशा पूरी न हुई, और उन्होंने चीं-चपड़ की, तो मार भी खा गए) जहाँ शराब लुढ़काई गई थी, उसी (मदिरा-सिंचन से पवित्र) धरती पर मैंने एक ख़ैरातख़ाना बनवा दिया। मैंने अपने राज्य में मुसलमानों से तमग़ा लेना भी बंद कर दिया (तमग़ा एक प्रकार का टैक्स देश के भीतर लाई वस्तुओं पर लगाया जाता था)।"

इस लेख से विदित है कि बाबर की सेना में शराब बहुत पी जाती थी। परंतु बाबर और उसके कुछ साथियों के तोबा करने का उनको कितना बड़ा इनाम मिला ! चोर चोरी करना छोड़ दे, तो सेठ हो जाता है।

पापी छोड़ै पाप तो करै राज-सुख भोग ;
अति विचित्र गति ईश की, को जग जानै जोग।

परंतु 'तारीख़ पारीना मदीनतुल औलिया' में बाबर के राज्य पाने का दूसरा ही कारण लिखा है। उसे हम यहाँ उद्धृत करते हैं—

"काबुल जीतने के बाद जब बाबर को हिंदोस्तान की सल्तनत पाने की लालसा हुई, तो वह फ़क़ीर के भेस में श्रीअयोध्या गया। उन दिनों वहाँ दो सिद्ध फ़क़ीरों—शाह जलाल और मूसा आशिक़ान—से मिलकर उनसे अपनी अभिलाषा प्रकट की। दोनों ने कहा कि जन्म-स्थान के मंदिर को तोड़कर मसजिद बनवा दो, तो तुम्हारी मनःकामना पूरी हो। बाबर ने तुरंत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मंदिर नष्ट करने का संकल्प किया। इस पर दोनों सिद्धों ने दुआ की, जो तुरंत क़बूल हो गई। बाबर लौट गया, और एक बड़ी सेना लेकर हिंदोस्तान पर चढ़ आया।"

परंतु इस यात्रा का वर्णन बाबर ने नहीं किया। इससे हम यही मानेंगे कि अपनी की हुई तोबा से उसने हिंदुओं पर विजय पाई।

यह तो बाबर की पहली दुआ अल्लाहतालाा ने क़बूल की। अब दूसरी दुआ का हाल सुनिए। कथा प्रसिद्ध है—

"बाबर का बड़ा बेटा हुमायूँ बहुत बीमार हो गया। उस का रोग बढ़ता गया, और ऐसा जान पड़ता था कि उसका जीना कठिन है। बाबर को अपने प्यारे बेटे की दशा देखकर बड़ा दुःख हुआ। उसने अपने दरबार के धर्मज्ञों से पूछा कि क्या करना चाहिए। एक बोला—'आप ईश्वर से दुआ माँगिए, और यह कहिए कि मेरे पास जो सबसे महँगी वस्तु है, जिसे मैं संसार में सबसे बढ़कर समझता हूँ, उसे तेरे नाम पर दे दूँगा। कदाचित् वह आपके बेटे की जान बचा दे।' बाबर बोल उठा—'मेरे पास सबसे अच्छी वस्तु क्या है?' एक सरदार बोला—'सबसे महँगी वस्तु वह हीरा है, जो आपको आगरे में मिला था। वह कई लाख का है। उसे ईश्वर के नाम पर दे डालिए। उसको बेच डालिए, और जो दाम मिलें, वह दीन-दुखियों को बाँट दीजिए।' बाबर ने कहा—'इसमें संदेह नहीं कि वह हीरा बड़े दाम का है। परंतु मेरे पास उससे भी महँगी एक वस्तु है। वह मेरी जान है। ईश्वर मेरे बेटे की जान बचा दे, तो मैं अपनी जान दे दूँगा।'

"इतना कहकर बाबर ने नमाज़ पढ़ी, और ईश्वर से यह बिनती की कि तू मेरी जान लेकर मेरे बेटे की जान बचा दे। हुमायूँ उस समय पलँग पर बीमार पड़ा था। बाबर उठा, और पलँग की तीन परिक्रमा करके बोल उठा—'मैंने ले लिया, ले लिया।' उस समय ऐसा जान पड़ा, मानो ईश्वर ने उसकी सुन ली। उसी दिन से हुमायूँ अच्छा होने लगा, और बाबर को रोग लग गया। जिस दिन हुमायूँ अच्छा हो गया, उसी दिन बाबर मर गया!"

यह कथा अबुलफ़ज़ल ने लिखी है। परंतु आजकल की छान-बीन से यह सारा प्रसंग कपोल-कल्पित सिद्ध हुआ है। इस विषय पर ग्रेट ब्रिटन और आयरलैंड की रॉयल एशियाटिक सोसाइटी के सन् १९२६ के जर्नल (J. R. A. S. 1926) में श्रीराम शर्माजी का एक विचार-पूर्ण लेख है। उसका सारांश पाठकों को निवेदन किया जाता है—

"अबुलफ़ज़ल की गढ़ंत में इक़बालनामा जहाँगीरी ने, कुछ और नमक-मिर्च मिलाया; परंतु बख़्शी निज़ामुद्दीन ने, जिसका पिता बाबर के मरते समय उसके पास उपस्थित था, और जिसने राज्य पाने में हुमायूँ की सहायता की थी, इस विषय में मौन धारण कर लिया है। बदायूनी भी चुप है। अहमद यादगार के सामने अबुलफ़ज़ल का ग्रंथ था; परंतु वह भी कुछ नहीं कहता। परंतु बाबर की बेटी गुलबदन बेगम, जो सब हाल जानती थी, अपने रचे 'हुमायूँनामा' में कुछ ऐसी बातें लिखती है, जिनसे भंडा फूट जाता है। उसका कथन यह है कि जिस दिन बाबर ने हुमायूँ के बदले अपनी जान देने का संकल्प किया, उसी दिन वह बीमार पड़ गया, और ज़नाने में लाया गया। दो-तीन महीने तक पड़ा रहा। हुमायूँ उन दिनों कालिंजर में था। उसके पास समाचार भेजा गया, और वह दौड़ता हुआ राजधानी पहुँचा। बाबर की दशा देखकर उसे बड़ा अचंभा हुआ। हकीमों से कहने लगा—'हम तो इन्हें भला-चंगा छोड़ गए थे। इस बीच में यह क्या हो गया?' इतने में बाबर के पेट की पीड़ा बढ़ गई, तो हुमायूँ ने हकीमों से कहा कि कुछ उपाय करना चाहिए। हकीमों ने आपस में सलाह की, और बाबर की नाड़ी देखकर बोले—'इब्राहीम की मा ने बाबर को विष दिया था; उससे जो लक्षण देख पड़े थे, वैसे ही अब भी हैं।' बाबर ने अपनी दशा बिगड़ती देखकर अमीरों को बुलाया, और हुमायूँ को अपना उत्तराधिकारी बनाकर तीन दिन पीछे मर गया।"

इस पर विचार करने से प्रकट होगा—

(१) बाबर के आत्मसमर्पण के बाद ही उसकी मृत्यु नहीं हुई।

(२) इस समर्थन के पीछे बाबर के मर जाने का किसी को भी भ्रम न हुआ, न उसकी संभावना जान पड़ी। हुमायूँ का एक प्रतिद्वंद्वी ख़्वाजा मेंहदी था, जो राज्य पाने के लिये षड्यंत्र रच रहा था! बाबर के मरने की संभावना होती, तो हुमायूँ राजधानी छोड़कर कभी कालिंजर न जाता।

(३) हुमायूँ का हकीमों से कहना कि हम इनको भला-चंगा छोड़ गए थे, अबुलफ़ज़ल की कथा को संदेह में डाल देता है।

(४) किसी हकीम ने यह नहीं कहा कि आप ही के लिये आपके पिता मर रहे हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(५) हकीमों ने बाबर के रोग का यह निदान बताया कि इब्राहीम की मा के विष का असर है। गुलबदन बेगम मानती है कि उस विष का असर बाक़ी था। इसी से लोग चिंतित हो रहे थे।

इससे सिद्ध है कि बाबर उसी ज़हर के असर से मरा, और उसकी दूसरी दुआ अबुलफ़ज़ल के मस्तिष्क में फँसकर ख़ुदावंद करीम तक न पहुँची। उसको माँगी मौत न मिली; परंतु विष के असर ने उसे मौत के घाट उतार दिया था।

चीन में अन्य राष्ट्रों का स्वार्थ

[लेखक, प्रो० चंद्रभाल जौहरी बी० ए०, एम्० आर० ए० एस्० प्रो० गुजरात-विद्यापीठ]

योरप के पूँजीपति राष्ट्र अमेरिका और जापान से आजकल चीन का जो संघर्ष चल रहा है, उसका मुख्य कारण चीन का व्यापार है। योरप के राष्ट्र अमेरिका और जापान ने व्यापार के ही बल पर संसार में अपना सिर ऊँचा किया है, और व्यापार के उठने-गिरने पर ही उनका भविष्य निर्भर है। चीन अरबों का माल हर साल लेता-देता है, और उसके व्यापार से अन्य राष्ट्रों के व्यापारी ख़ूब धनी बन रहे हैं। अपने-अपने व्यापार को बढ़ाने के लालच से ही विदेशियों ने चीन में अपने पैर अड़ाए हैं, अपने व्यापार को मज़बूत करने के लिये ही नगर बसाए हैं, रेलें निकाली हैं, और चीन में बहुत-सा रुपया क़र्ज़ में लगा दिया है। अब चीन ने भी सिर उठाकर उन्नति के मार्ग पर क़दम रक्खा है। चीन की उन्नति का अर्थ है चीनी व्यापार की भी उन्नति। चीनी व्यापार की उन्नति होने से अन्य राष्ट्रों के व्यापार को हानि अवश्य पहुँचेगी, इसलिये सारे व्यापारी राष्ट्रों में खलबली मच गई है। अन्य राष्ट्रों ने चीन में अपना-अपना व्यापार सुदृढ़ रखने के लिये जो इधर-उधर हाथ-पैर फैला रक्खे हैं, वह चीन की उन्नति में बाधक हैं। इसलिये चीन अन्य राष्ट्रों को अपने हाथ-पैर समेटने के लिये बाध्य कर रहा है। इस लेख में हम इस समस्या पर किसी अन्य दृष्टि से विचार न कर केवल यह देखेंगे कि चीन में अन्य राष्ट्रों का व्यापारिक अथवा आर्थिक स्वार्थ कितना है।

चीन से व्लैडीवस्टक तक फैली हुई ६८० मील लंबी रेलवे-लाइन रूस की थी, और यह ३५,००,००,००० रूबल्स * की लागत से तैयार हुई थी। इस कंपनी के शेयर ख़रीदने का अधिकार चीनियों को भी था; परंतु चीनियों के पास रुपया ही न था कि शेयर ख़रीद सकें, इसलिये सब रुपया रूसी व्यापारियों ने ही लगाया। कंपनी के प्रबंध में भी सब हाथ रूसियों का ही रहा। रूस और जापान के युद्ध के बाद दक्षिण-मंचूरिया की रेलवे-लाइन जापान के हाथ आई, और जापान ने और रुपया लगा मुकदन इत्यादि और नई लाइनें खोलकर ६८० मील लंबी लाइन अपने अधिकार में कर ली। इसी जापानी कंपनी ने चीनी सरकार से फ़्यूशन, यनताइ, और सिनचियू की कोयले की खानें खोदने का ठेका भी ले लिया, और डालनी-बंदर का प्रबंध हाथ में लेकर डालनी से शंघाई तक जहाज़ चलाना शुरू किया। रूस को ठेका देते समय यह शर्त थी कि ३६ वर्ष बाद रेलवे चीनी सरकार को दी जायगी; परंतु जापान का अधिकार हो जाने पर इस पट्टे की अवधि ६६ वर्ष बढ़ा दी गई। क्याउचाउ की खाड़ी का पट्टा लेकर जर्मनी ने ५,८०,३२,००० मार्क की लागत से २८४ मील लंबी रेलवे-लाइन बनाई, और रूसी लाइन की तरह इस कंपनी ने भी चीनियों को शेयर ख़रीदने का अधिकार दिया। परंतु रुपया गाँठ में न होने से बेचारे चीनी इस अधिकार का लाभ न उठा सके। यह भी शर्त थी कि चीनी सरकार चाहे तो २५ वर्ष बाद रुपया देकर इस रेलवे को ख़रीद सकेगी। परंतु यदि शांटुंग-प्रांत की उन्नति के लिये किसी पर-राष्ट्र से रुपया लिया जायगा, तो जर्मनी के साहूकारों से ही लिया जायगा। इसके अतिरिक्त जर्मनी को इस लाइन के तीस मील के वर्गक्षेत्र तक खानें खोदने का भी अधिकार मिला। फ़्रांस को, युनान प्रांत में, इंडो-चीन से अपनी रेलवे-लाइन बढ़ा लाने का अधिकार मिला। इंडो-चीन की सरकार ने एक फ़्रांसीसी कंपनी को १२,५०,००,००० फ़्रांक की सहायता दी, और इतना

* रूस का सिक्का। एक रूबल दो रुपए के क़रीब होता है।—संपादक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ही धन उस कंपनी ने अपना लगाकर हायफौन से लआ-उके तक फ़्रांस की भूमि पर और लआउके से युन्नन्फू तक चीन की भूमि पर १६,५०,००,००० फ़्रांक लगाकर, ५३३·७७ मील लंबी रेल की लाइन निकाली, जिसमें से २८८·६४ मील तक यह लाइन चीन की भूमि पर बनी। इसमें भी यही शर्त हुई कि २० बर्ष बाद चीन सारी लागत जमा कर यह लाइन ख़रीद सकेगा।

जिस-जिस पट्टे में जो-जो समय था, उस समय से पहले चीनी सरकार को किसी मामले में कुछ हस्तक्षेप करने का अधिकार न था। ये सब पट्टे और सुविधाएँ चीन ने अन्य राष्ट्रों को इच्छा-पूर्वक नहीं दी थीं। एक के बाद दूसरे राष्ट्र ने चीन पर दबाव डालकर अपना-अपना ज़ोर बढ़ाने के लिये, और यह समझकर कि चीन-साम्राज्य छिन्न-भिन्न हो जाने पर ये भाग उन्हें मिल जायँगे, चीन के विभिन्न भागों में इस प्रकार टाँग अड़ाई थी। इन रेलवे-लाइनों में लगे हुए रुपयों के अतिरिक्त विदेशियों ने चीनी सरकार को क़र्ज़ में भी और बहुत रुपया दिया। ऊपर से तो यही दिखाई देता है कि अन्य देशों ने शायद चीन की सहायता करने को रुपया दिया होगा; परंतु इतिहास से पता चलता है कि ये सब चालें केवल अपना-अपना ज़ोर बढ़ाने और चीन का गला घोटने के लिये ही चली गईं। चीन-जापान युद्ध के पहले जो चीन को क़र्ज़े दिए गए, उनका ज़िक्र हम यहाँ नहीं करेंगे; क्योंकि उन सबका भुगतान हो चुका है। युद्ध के बाद, जापान की क्षति पूर्ति इत्यादि के लिये, चीन ने फ़्रांस और रूसी सरकार से १५,८२,००,००० रुपए का एक क़र्ज़ा और इँगलैंड और जर्मनी की सरकार से दो क़र्ज़े एक-एक करोड़ के लिए। इन सब क़र्ज़ों के बदले में जमानत के तौर पर सारे समुद्र से आनेवाले माल पर लगनेवाला कर, नमक का कर और अन्य चार करों को वसूल करने का अधिकार विदेशियों को दे दिया गया। सामुद्रिक और नमक इत्यादि के करों को विदेशियों ने ज़मानत में इसलिये ले लिया कि इन करों से बहुत आमदनी तो होती ही थी, इसके अतिरिक्त इनकी वसूली का प्रबंध भी विदेशी अधिकारियों के ही हाथ में था, और इसलिये उन्हें विश्वास था कि यह कर चीनी सरकार के हाथों में न जाकर सीधा हमारे यहाँ चला आया करेगा। ३१ दिसंबर, सन् १६१५ ई० को इन क़र्ज़ों का ३३,७६,५८,७१० रुपया मूलधन के तौर पर चीन को चुकाना था। बाक्सर-विद्रोह में होनेवाली क्षति के लिये संसार के सभ्य राष्ट्रों ने चीन पर जो जुर्माना किया था, उसे एकदम देने में चीन असमर्थ था। इसलिये वह भी चीन पर एक क़र्ज़ मान लिया गया, जो ३६ वर्ष में प्रत्येक वर्ष कुछ-कुछ देकर चीन को अदा करना था। सन् १६१४ ई० में सूद और असल मिलाकर इस जुर्माने के क़र्ज़ के लिये चीन को अन्य राष्ट्रों को ६३,८४,७२,६८० रु० देने थे। जो कर पिछले क़र्ज़ों में बंधक नहीं हुए थे, वे इस क़र्ज़ में बंधक हो गए। अन्य जितने भी क़र्ज़े चीनी सरकार ने लिए, वे सब प्रायः रेले बनाने के लिये। साधारणतः जब किसी देश की सरकार को कभी किसी अन्य देश में क़र्ज़ा लेना होता है, तो वह उस देश के व्यापारियों से कहती है कि हमें अमुक दर पर इतने रुपए का क़र्ज़ चाहिए और व्यापारी लोग, उस सरकार की साख पर, जिस दर पर सूद देना पसंद करते हैं, देते हैं। परंतु चीन बेचारे को जब-जब सूद लेना पड़ा, तो उसे अपनी साख पर नहीं मिला। अन्य राष्ट्रों ने अपने बैंकों और व्यापारियों को अपनी शर्तों पर चीन को सूद देने को बाध्य किया, और इन क़र्ज़ों का सारा उत्तरदायित्व और अधिकार भी व्यापारियों से उनकी सरकारों ने स्वयं ले लिया। चीन को कोई ऐसा क़र्ज़ नहीं मिला, जिसके देने में कोई राजनीतिक चाल न चली गई हो। प्रत्येक क़र्ज़ के पीछे कोई-न-कोई राजनीतिक उद्देश्य अवश्य ही रहता था। सब राष्ट्र चीन के साथ समान स्वार्थपूर्ण तथा लोलुप नीति से पेश आते थे। पहले सब राष्ट्र एक दूसरे से स्पर्धा करके चीन की गाँठ काटने का प्रयत्न करते थे, पीछे सबने सहयोग करके चीन की जेब काटना शुरू किया। सन् १८६८ में रूस ने पेकिंग-हैंको-रेल को एक बेलजियम की कंपनी द्वारा, और शांसी-प्रांत की रेलों को कुछ फ़्रांसीसी और बेलजियम के बैंकों द्वारा, इस उद्देश्य से क़र्ज़ा दिया कि शांसी की कोयले की खानों पर रूस का अधिकार जम जाय। रूस की यह चाल देखते ही इँगलैंड के कान खड़े हुए, और उसने चीनी सरकार को इस पर बाध्य किया कि शनहाहकवान-सिनमिनटन-रेल को इँगलैंड से क़र्ज़ा लेकर अँगरेज़ इंजीनियर द्वारा ही बनाया जाय, जिससे कहीं यह रेल मंचूरिया की रेल से मिलाकर वह रूस के लिये फाटक न खोल दे। चीन को यह बात माननी पड़ी। पीछे रूस और इँगलैंड ने आपस में सलाह कर ली कि रूस यांगूसी में न

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

घुसने का प्रयत्न करे, और इँगलैंड चीन की दीवार की उत्तर की तरफ़ बढ़ने का ध्यान छोड़ दे। इन साहूकार राष्ट्रों की आपस की बहसों में बेचारे चीन की बड़ी खींचा-घसीटी होती थी। कभी-कभी तो इतने राष्ट्रों ने उसे एक साथ क़र्ज़ लेने पर बाध्य किया कि बेचारा चीन आफ़त में पड़ गया। वह इतना क़र्ज़ लेकर क्या करे? पर यदि राष्ट्रों की आपस की यह स्पर्धा क़ायम रहती, तो चीन को शायद यह मौक़ा रहता कि एक दूसरे से भाव-ताव करके कुछ सूद की दर कम करा ले। जब दूकानदार आपस में स्पर्धा करते हैं, तो ग्राहक को स्वभावतः माल सस्ता मिलता ही है। परंतु चीन के भाग्य में यह सुविधा भी नहीं थी। उसको क़र्ज़ देनेवाले साहूकार बड़े दूरदर्शी थे। उन्होंने आपस में सहयोग करके सन् १९०८ से चीन के प्रति नीति बदल दी। सब राष्ट्रों ने मिलकर निश्चय कर लिया कि अब से सब मिलकर चीन को क़र्ज़ देंगे। सन् १९१३ में सब राष्ट्रों ने मिलकर जब चीन को क़र्ज़ दिया, तब उस समय साफ़ ही कहा गया कि हमारी आपस की होड़ से चीन को लाभ होता है, इसलिये हम सबको मिल जाना चाहिए। इस साहूकारों के मेल से चीन के लिये क़र्ज़ का खुला बाज़ार बंद हो गया। जो शर्त यह साहूकारों का गुट क़र्ज़ देने में लगाता, उसके मानने के अतिरिक्त चीन को और कोई चारा न रहा। चीन को क्रांति के बाद देश के शासन और प्रबंध को सुदृढ़ करने के लिये रुपयों की बहुत ज़रूरत थी। साहूकार राष्ट्रों की इस गोष्ठी ने यह शर्त लगाई कि चीनी सरकार को अपने आडिट (Audit)-विभाग में एक-एक रूसी, जर्मन और फ़्रांसीसी, ये तीन विदेशी अधिकारी इसलिये, रखने पड़ेंगे कि वे देखते रहें कि यह क़र्ज़ लिया हुआ रुपया ऐसे कामों में लगाया जा रहा है या नहीं, जिससे क़र्ज़ अदा हो सके; नमक के कर का, जो बंधक में दिया जा रहा था, प्रबंध करने के लिये एक अँगरेज़ मुख्य अधिकारी के तौर पर रहेगा, और अन्य बहुत-से विदेशी अधिकारी भी रहेंगे। यदि चीनी सरकार इन विदेशी अधिकारियों में से किसी विशेष व्यक्ति को पसंद न करे, तो उसे हटा सकती है; परंतु फिर भी रखना कोई विदेशी ही पड़ेगा। विदेशी राष्ट्र अपना बहुत-सा रुपया चीन में लगाकर चीनियों पर विश्वास करने को तैयार नहीं है। १९०८ ई० से पहले चीन ने रेलों के लिये जो क़र्ज़ लिए, उन सब में, क़र्ज़ अदा न होने तक उन रेलों पर बहुत कुछ विदेशियों का अधिकार रहने की सदा शर्त रहती थी। परंतु १९०८ के बाद के क़र्ज़ों में इस प्रकार के अधिकार के संबंध में माँगें बहुत कम हो गईं। संसार के पूँजीपति राष्ट्र तो चीन में अपना व्यापार और अधिकार जमाने के लिये बहुत-सा धन लगा ही बैठे हैं, इन राष्ट्रों के अतिरिक्त अन्य नागरिकों ने भी अपने वैयक्तिक उत्तरदायित्व पर सनलाइट-सोप-फ़ैक्टरी और काटन मिल्स-जैसे बहुत-से व्यापारिक धंधे खड़े कर दिए हैं। इन सबकी रक्षा के लिये विदेशी राष्ट्र उत्सुक हैं, और अपने-अपने देशों से तोपें, फ़ौजें और जंगी जहाज़ चीन की तरफ़ भेज रहे हैं। सभी राष्ट्र एक दूसरे से क़र्ज़ लेते हैं; परंतु क़र्ज़ दिए हुए धन के व्यय का प्रबंध करने के लिये क़र्ज़ लेनेवाले राष्ट्र में अपने अधिकारी नहीं रखते। फ़्रांस और इँगलैंड के ऊपर आजकल अमेरिका का बहुत क़र्ज़ है, और उस क़र्ज़ के चुकाने में भी कठिनाइयाँ हो रही हैं; परंतु अमेरिका, इँगलैंड और फ़्रांस के घर की व्यवस्था सुधारने के लिये अपने अधिकारियों को वहाँ रखने का प्रस्ताव नहीं कर सकता। फिर चीन के साथ यह व्यवहार क्यों? क्या इसीलिये कि वह एक निर्बल एशियाई राष्ट्र है?

घर बैठे लीजिए
सच्चा बनारसी माल
काशी-सिल्क की धोतियाँ, दुपट्टे, साफ़े, कोट-कमीज़ के रेशमी कपड़े, सच्ची ज़री की साड़ियाँ, साफ़े, दुपट्टे और हर तरह के बनारसी ज़रीदार कपड़े। आपके शहर के भाव से फ़ी रुपया चार आना किफ़ायत की गारंटी। विशेष जानकारी के लिये हमसे लिखा-पढ़ी कीजिए।
बनारस-शिल्प-व्यापार-कार्यालय, नं० १०१ (S), बनारस-सिटी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मीराँबाई

[लेखक, ठाकुर गोपालसिंह राठौड़ मेड़तिया]

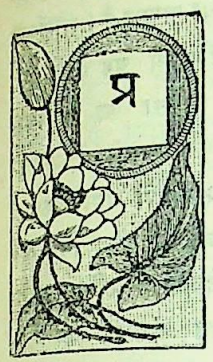

सिद्ध नगर जोधपुर के संस्थापक मरुधराधीश राव जोधाजी के चतुर्थ पुत्र राव दूदाजी थे। राव दूदाजी बड़े पराक्रमी थे। निज बाहुबल द्वारा मेड़ते में इन्होंने अपना स्वतंत्र राज्य स्थापित किया। राठौड़ों की प्रसिद्ध मेड़तिया-शाखा का प्रारंभ इन्हीं से हुआ। राव दूदाजी के चतुर्थ पुत्र रत्नसिंहजी थे, जिनको निर्वाह के लिये जागीर में कुड़की, बाजोली प्रभृति १२ गाँव मेड़ता-राज्य की ओर से दिए गए थे। रत्नसिंहजी के कोई पुत्र न हुआ; केवल एक पुत्री हुई, जिसका नाम मीराँबाई रक्खा गया।

मीराँबाई का जन्म, वि० सं० १५५५ के आसपास, कुड़की गाँव में होना माना जाता है। इनकी माता का बाल्यावस्था में ही देहांत हो गया, इससे इनके पितामह—राव दूदाजी—ने इन्हें अपने पास बुलाकर मेड़ते में ही रक्खा। राव दूदाजी परम वैष्णव थे, अतः उनके पास रहने से मीराँबाई को भी बचपन से ही भगवद्भक्ति में विशेष रुचि उत्पन्न हो गई। वि० सं० १५७२ में राव दूदाजी का स्वर्गारोहण होने पर उनके ज्येष्ठ पुत्र वीरमदेवजी मेड़ते के राज्यासन पर विराजमान हुए। राज्याधिकार ग्रहण करने के एक वर्ष उपरांत, वि० सं० १५७३ में, राव वीरमदेवजी ने मीराँबाई का विवाह चित्तौड़ के महाराणा साँगाजी के ज्येष्ठ राजकुमार—भोजराजजी—के साथ कर दिया। विवाह के कुछ वर्षों बाद युवराज भोजराजजी का देहांत हो गया।

राजकुमार भोजराजजी का देहांत होने के संवत् का निश्चित रूप से यद्यपि पता नहीं लग सका, तथापि जहाँ तक अनुमान है, इस घटना का वि० सं० १५७५ और १५८० के बीच में किसी समय होना संभव है। इस घोर विपत्ति के पड़ने पर, बाल्यावस्था के शुद्ध संस्कारों के प्रभाव से, मीराँबाई वैधव्य के तीव्र शोक का दमन कर अनन्य भाव से भगवान् श्रीकृष्ण की आराधना में ही परायण हो गईं।

वि० सं० १५८४ में इनके पिता रत्नसिंहजी, महाराणा साँगाजी और बादशाह बाबर का परस्पर बयाने में जो घमासान युद्ध हुआ था, उसमें काम आ गए। इसी संवत् में इनके ससुर महाराणा साँगाजी का भी देहांत हो गया। महाराणा साँगाजी के पश्चात् मीराँबाई के पति राजकुमार भोजराजजी के सहोदर, कनिष्ठ, भ्राता रत्नसिंहजी ने मेवाड़ के राज्याधिकार को ग्रहण किया। परंतु उनका भी चार वर्ष पश्चात् ही, वि० सं० १५८८ में, देहांत हो गया। रत्नसिंहजी के बाद उनके सौतेले भाई विक्रमादित्यजी चित्तौड़ के महाराणा हुए। इस अंतर में मीराँबाई की अपूर्व भक्ति और भावपूर्ण भजनों की ख्याति दूर-दूर तक फैल गई थी, और बहुत दूर-दूर के स्थानों से अनेक साधु-संत इनके दर्शन करने आया करते थे। मीराँबाई को भी साधु-महात्माओं की संगति में बड़ी रुचि थी। दिन-रात मंदिर में विराजकर भक्तशिरोमणि मीराँबाई, भगवान् के सामने साधु-संतों के साथ, वैराग्य के भजन गाया करती थीं। साधुओं की संगति में रहने के कारण मीराँबाई से महाराणा विक्रमादित्यजी अप्रसन्न रहा करते थे। महाराणा इनके अलौकिक महत्त्व को पहचान न सके, और इनको तरह-तरह के कष्ट देने लगे। ऐसा भी प्रसिद्ध है कि इनके प्राण-हरण के निमित्त महाराणा ने विष का भी प्रयोग कराया; परंतु मीराँबाई को ईश्वरेच्छा से कोई हानि नहीं पहुँची।

मीराँबाई की तकलीफ़ों का हाल सुनकर मेड़ताधीश राव वीरमदेवजी को अत्यंत दुःख हुआ। इन्होंने मीराँबाई को मेड़ते बुलवा लिया, और वहीं अपने पास बड़े स्नेह और सम्मान से रखने लगे। मीराँबाई के चित्तौड़ छोड़कर मेड़ते आ जाने के पीछे चित्तौड़-राज्य पर बड़ी-बड़ी विपत्तियाँ आईं। गुजरात के सुलतान बहादुरशाह ने दो बार आक्रमण कर चित्तौड़ के राज्य को बिलकुल शक्ति-हीन कर दिया, और पुनः महाराणा रायमलजी के राजकुमार पृथ्वीराजजी के अनौरस पुत्र (पासवानिया) वणवीर ने महाराणा विक्रमादित्यजी को मार डाला, तथा मेवाड़ के राज्यासन पर वह स्वयं ही बैठ गया। इधर वि० सं० १५९५ में जोधपुर के राव मालदेवजी ने राव वीरमदेवजी से मेड़ता छीन लिया। इस प्रकार सुसराल और पीहर, दोनों ही स्थानों पर विपत्ति आ पड़ने से मीराँबाई को और भी अधिक वैराग्य हो गया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उन्होंने तीर्थाटन करने का निश्चय किया । मथुरा, वृंदावन आदि बहुत-से तीर्थ-स्थानों का अवलोकन कर मीराँबाई द्वारका पहुँचीं, और वहीं निवास करने लगीं । वि० सं० १५९७ में महाराणा विक्रमादित्यजी के छोटे भाई महाराणा उदयसिंहजी ने बणवीर को परास्त कर अपने पैतृक राज्य को प्राप्त किया । इसके तीन वर्ष पीछे, वि० सं० १६०० में, राव वीरमदेवजी ने भी पुनः मेड़ते पर अपना अधिकार स्थापित कर लिया । परंतु राव वीरमदेवजी के मेड़ता-विजय करने के दो महीने बाद ही उनका देहांत हो गया । उनके उपरांत उनके ज्येष्ठ पुत्र राव जयमल्लजी मेड़ते के राज्यासन पर विराजमान हुए । इसके पीछे चित्तौड़ और मेड़ता, दोनों ही राज्यों की तरफ़ से मीराँबाई को द्वारका से वापस बुलाने के लिये कई दफ़े मनुष्य भेजे गए; परंतु इन्होंने अब भक्ति-भाव के कारण द्वारका के तीर्थ को छोड़कर चित्तौड़ या मेड़ते जाना स्वीकार न किया । द्वारका-क्षेत्र में ही मीराँबाई का, वि० सं० १६०३ में, स्वर्गवास हो गया ।

मीराँबाई की हिंदी और गुजराती, दोनों ही भाषाओं के श्रेष्ठ कवियों में गणना है । इनकी कविता भाव-पूर्ण, सरल और सरस है । भक्त-शिरोमणि मीराँबाई के बनाए हुए भक्ति और वैराग्य के सैकड़ों भजन भारत-भर में प्रसिद्ध हैं । मीराँबाई के नाम से संपूर्ण धार्मिक हिंदू नर-नारी अच्छी तरह परिचित हैं । हिंदोस्तान में कोई ऐसा विरला ही विष्णु-मंदिर होगा, जहाँ इनके बनाए हुए वैराग्य और भक्ति के भजन न गाए जाते हों । मीराँबाई का मलार-राग तो बहुत ही प्रसिद्ध है । इन्होंने राग-गोविंद नाम का कविता का एक ग्रंथ भी बनाया था । इनके संबंध की बहुत-सी बातें पीछे से प्रसिद्ध हो गईं; परंतु उनका कुछ ऐतिहासिक महत्त्व नहीं है ।

चित्तौड़ में कुंभस्वामी और आदिवराह के दोनों विष्णु-मंदिर एक ही ऊँची कुरसी पर पास-पास बने हुए हैं । एक बहुत ही बड़ा और दूसरा छोटा है । ऐसी प्रसिद्धि हो गई है कि बड़ा मंदिर महाराणा कुंभाजी ने और छोटा उनकी राणी मीराँबाई ने बनवाया था । इसी जन-श्रुति के आधार पर कर्नल टाड साहब ने मीराँबाई को महाराणा कुंभाजी की राणी लिख दिया है । परंतु यह सर्वथा अशुद्ध है । मीराँबाई मेड़तणी कहलाती हैं, जिसका अभिप्राय यह है कि वह मेड़ता के राजकुल की कन्या थीं । मेड़ता का अधिकार जोधपुर के राव जोधाजी के चतुर्थ पुत्र दूदाजी ने, मुसल-मानों को परास्त कर, वि० सं० १५१८ में प्राप्त किया । राव दूदाजी के ज्येष्ठ पुत्र वीरमदेवजी का जन्म वि० सं० १५३४ में हुआ । मीराँबाई वीरमदेवजी के कनिष्ठ भ्राता रत्नसिंहजी की पुत्री थीं । महाराणा कुंभाजी का वि० सं० १५२५ में देहांत हो गया था । महाराणा कुंभाजी के देहांत के नौ बरस बाद मीराँबाई के पिता के बड़े भाई वीरमदेवजी का जन्म हुआ । अतः मीराँबाई का महा-राणा कुंभाजी की राणी होना सर्वथा असंभव है । वास्तव में मीराँबाई महाराणा साँगाजी के युवराज भोजराजजी को ब्याही गई थीं, जैसा कि मेवाड़, मारवाड़ और मेड़ते की तवारीख़ों में लिखा हुआ है । टाड साहब के ही आधार पर अन्य भी बहुत-से ग्रंथों में मीराँबाई को महाराणा कुंभाजी की राणी मान लिया गया है, जो सर्वथा भ्रम-मूलक है ।

वि० सं० १६१३ के फाल्गुन-मास में राव मालदेवजी ने अपनी क्षुद्र बुद्धि और ईर्ष्यालु स्वभाव के कारण मेड़ते के समस्त राजभवनों का विध्वंस करा दिया । केवल श्रीचतुर्भुजजी का मंदिर तथा राजमहल का थोड़ा-सा भाग बाक़ी छोड़ा, जो आज तक मौजूद हैं । राजमहल के इसी अवशिष्ट भाग में आजकल जोधपुर-राज्य की ज़िला-कचहरियाँ स्थापित हैं । इसी स्थान पर एक छोटी-सी पुरानी कोठड़ी है, जिसको वहाँ के लोग मीराँबाई की भजनशाला बतलाते हैं, और मीराँबाई के गौरव के विचार से ही राव मालदेवजी का इसका भग्नावशिष्ट छोड़ना ज़ाहिर करते हैं । यह किंवदंती सत्य भी हो सकती है; परंतु अभी तक इसका कोई दृढ़ प्रमाण उपलब्ध नहीं हुआ ।

शीघ्रता कीजिए ! शीघ्रता कीजिए !!

सुधा की पहली छः संख्याएँ अब बहुत थोड़ी रह गई हैं । शीघ्र पहली संख्या से ग्राहक बनकर मँगा लें, नहीं तो फिर २)-२) रुपए में भी पिछली संख्याएँ नहीं मिलेंगी ।

मैनेजर सुधा, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चिंता

[लेखक, कविवर कौशलेंद्र राठौर]

प्रेम-पथ तो है पग-पग में कठिन अति,
डर है कि वह उसमें न कहीं पग जाय;
जैसे मैं ठगी गई प्रपंची पंचसायक से,
वैसे ही न मेरा प्राणप्यारा कहीं ठग जाय।

जलती सदैव विरहानल है मानस में,
दैव! उसके भी उर में न कहीं जग जाय;
लगन लगी है दिन-रात उसकी ज्यों मुझे,
उसी भाँति मेरी उसको न कहीं लग जाय।

मा

[लेखक, पं० विश्वंभरनाथ शर्मा कौशिक]

तीसरा परिच्छेद

सरे दिन प्रातःकाल नित्य कर्म से छुट्टी पा चुकने पर व्रजमोहनलाल ने कुछ जलपान किया। जलपान करके उठने पर सावित्री ने उनके हाथ में दो बीड़े पान देकर कहा—"रात की बात याद है न?" व्रजमोहनलाल मुसकिराकर बोले—"क्यों, याद क्यों नहीं। क्या तुम समझती हो कि इतनी जल्दी भूल जाऊँगा?"

"भूलने को क्या हुआ? जिस काम को करने की इच्छा नहीं होती, उसे भूल जाना कौन बड़ी बात है?"

व्रजमोहनलाल ने हँसकर कहा—"अच्छा! यह उस पर तुर्रा! इच्छा न होने की एक ही कही।"

"कल की बातों से तो ऐसा ही जान पड़ता था।"

व्रजमोहन कुछ गंभीर होकर बोले—"नहीं, नहीं, यह तुम्हारा भ्रम है। बात यह है कि मैं जिस काम को करता हूँ, पहले उसकी छानबीन कर लेता हूँ।"

"ख़ैर, यों ही सही। ख़ूब छानबीन कर लो। रघुनाथ-प्रसाद के पास कब जाओगे?"

"बस, अब जाता हूँ" कहकर व्रजमोहन अपनी बैठक में चले आए। बैठक में बनवारीलाल बैठे हुक़्क़ा गुड़गुड़ा रहे थे। बड़े भाई के आने पर हुक़्क़ा उनकी ओर सरका दिया। व्रजमोहनलाल हुक़्क़े की निगाली हाथ में लेकर बनवारी से बोले—"ज़रा बदलू को तो बुलाओ।"

बनवारी ने आवाज़ देकर बदलू को बुलाया। बदलू के आने पर व्रजमोहनलाल ने उससे कहा—"कोचवान से कहो, गाड़ी जोत लावे।"

बदलू के चले जाने पर बनवारी ने भाई से पूछा—"कहीं जाइएगा क्या?"

व्रजमोहनलाल ने हुक़्क़ा पीते-पीते केवल "हूँ" कर दिया।

दस मिनट तक व्रजमोहनलाल चुपचाप हुक़्क़ा पीते रहे। तत्पश्चात् उसे छोटे भाई की ओर खिसकाकर बोले—"तुम चलकर दूकान खुलवाओ। मैं ग्यारह बजे तक आऊँगा। और देखो, आज जाते ही रामसरन-रामविलास के यहाँ हिसाब उतारकर भेजना। उन्होंने आज भुगतान देने को कहा था। और, बुलाक़ीदास के यहाँ भी आदमी भेजना।"

"बुलाक़ीदास के यहाँ आज भेजने से क्या होगा? उन्होंने तो सप्तमी का वादा किया है।"

"हाँ, ठीक है, मुझे ख़याल नहीं रहा। उनके यहाँ न भेजना। और, कल श्यामू बाबू के यहाँ आदमी भेजा था, उन्होंने क्या कहा?"

"पंद्रह दिन में देने को कहा है। पर वह देवें-दिलावेंगे नहीं; उन पर नालिश करनी पड़ेगी।"

"मैंने तो तुमसे पहले ही कहा था; पर तुम न माने।"

"क्या कहूँ, मैंने मित्र समझकर उनका विश्वास किया था; किंतु—"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"भैया, तुम अभी बच्चे हो, क्या जानो! भला ऐसे मित्रों का विश्वास करना चाहिए? हरे राम-राम! ये सब मतलब के यार हैं। फिर दस-पाँच रुपए की बात होती, तो कोई चिंता नहीं थी, देते-देते न देते-न देते। हर इच्छा। कोई परवा नहीं थी। परंतु एक दम से ८०) रु० का कपड़ा उठा दिया। ख़ैर, अब तो जो होना था, हो ही गया; पर आगे ध्यान रखना। ऐसा लड़कपन कभी न करना।"

बनवारी सिर नीचा करके बोला—"नहीं, अब क्या हर दफ़े धोखा खाऊँगा?"

उसी समय बदलू ने आकर कहा—"बाबूजी, गाड़ी आ गई।"

"अच्छा, कपड़े लाओ" कहकर ब्रजमोहनलाल खड़े हो गए। ब्रजमोहनलाल कपड़े पहनकर गाड़ी पर आ बैठे, और कोचवान से कहा—"वकील साहब के यहाँ चलो।"

"बहुत अच्छा" कहकर कोचवान ने रास हिलाई। जब तक गाड़ी चलती रही, तब तक ब्रजमोहनलाल रात की बातों पर विचार करते रहे। कभी सावित्री की बातें याद करके मन-ही-मन उसकी दूर-दर्शिता की सराहना करते, कभी यह सोचकर कि उनके मरने के पश्चात् उनकी गाढ़ी कमाई छोटे भाई हड़प जायँगे, उनके माथे पर बल पड़ जाते, कभी अपनी संतान-हीनता पर ठंडी साँसें भरते इत्यादि-इत्यादि। यदि गाड़ी चलती रहती, तो वह न-जाने कब तक विचार-सागर में ग़ोते खाते रहते; किंतु उनके सौभाग्यवश कहिए अथवा दुर्भाग्यवश गाड़ी रुक गई। गाड़ी के रुकते ही ब्रजमोहनलाल चौंक-से गए, और कोचवान से बोले—"क्या पहुँच गए?"

"हाँ हुजूर" सुनकर गाड़ी से उतरे, और वकील साहब के मकान में पहुँचे।

बाबू रघुनाथप्रसाद वकील इनके सहपाठी और मित्र थे, इसलिये यह अपनी भली-बुरी सब बातें उनसे कह दिया करते थे। इनके मुक़द्दमे की पैरवी भी रघुनाथप्रसाद ही किया करते थे।

उस समय वकील साहब अपने मवक्किल से बातचीत करने में मग्न थे, इसलिये ब्रजमोहनलाल चुपचाप एक कुर्सी पर बैठ गए।

वकील साहब के मवक्किलों में से एक ने कहा—"मौक़े-वारदात पर तो कोई आदमी था नहीं।"

वकील साहब मुँह बनाकर बोले—"न हो, इससे होता क्या है, आपको दो-चार आदमी ऐसे तो मिल सकते हैं, जो कि अदालत में आपकी जानिब से गवाही दे सकें?"

"ऐसे आदमी दो-चार क्या, कितने ही मिल सकते हैं; मगर जब उन्होंने कुछ देखा ही नहीं, तो वे क्या—।"

कुछ बिगड़कर वकील साहब बोले—"देखा हो या न देखा हो, इससे कुछ मतलब नहीं, हम जो कुछ उन्हें सिखावें, उनको वह कह देना चाहिए। बस, काफ़ी है।"

"हाँ, यह तो हो सकता है।"

"तो बस, काफ़ी है। अब आप तशरीफ़ ले जा सकते हैं। परसों इतवार है, आप उन लोगों को हमारे पास लाइएगा।"

यह कहकर वकील साहब दूसरे आदमी की ओर घूमकर बोले—"हाँ साहब, आपकी आज तारीख़ है। कहिए, मेहनताना लाए?"

"आधा मेहनताना तो दे ही चुका हूँ। आज फ़ैसला हो जाने दीजिए, बक़िया मेहनताना और शुकराना साथ ही साथ—"

"अब आप राग लाए। इस बात से मुझे सख़्त नफ़रत है। मैं तो खरा व्यवहार रखता हूँ। पहले बक़िया मेहनताना लाइए, फिर बात कीजिए। मेरे पास फ़िज़ूल वक़्त नहीं है।"

"बही-खाता अदालत ने तलब किया था, सो लेता आया हूँ।"

किंतु वकील साहब ने उस बेचारे की बात ही न सुनी, तीसरे मवक्किल की ओर घूमकर बोले—"हाँ साहब, आप क्या कहते हैं?"

उसने कहा—"मेरे बयान-तहरीरी दाख़िल होंगे।"

"ओ, ठीक है" कहकर वकील साहब सामने तख़्त पर बैठे हुए दो मुहर्रिरों में से एक की ओर देखकर बोले—"मुंशीजो, आपके बयान-तहरीरी ले लीजिए; (मवक्किल से) जाइए साहब, लिखा दीजिए।"

इतने में उसी दूसरे मवक्किल ने जेब से पचीस रुपए निकालकर वकील साहब के सामने रख दिए, और बोला—"लीजिए बक़िया मेहनताना। आप मानते ही नहीं, मज़बूरी है।"

वकील साहब हँसकर बोले—"आप भी ग़ज़ब करते

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हैं। निकालकर रख ही दिए। मैंने तो फ़क़त दिल्लगी में कहा था, आप कुछ नामोतिबर थोड़े ही हैं। ख़ैर, हाँ, तो बही-खाता आप ले आए हैं न ?"

"हाँ, लाया हूँ।"

"तो बस, ठीक है, आप जाइए और ठीक ग्यारह बजे कचहरी आ जाइएगा; क्योंकि जहाँ तक मेरा ख़याल है, आपका मुक़द्दमा अव्वल वक्त पेश होगा।"

"मैं साढ़े दस ही बजे आ जाऊँगा।"

"और भी अच्छी बात है।"

मवक्किल से बात कर चुकने पर अँगड़ाई लेते हुए वकील साहब ने अपने चारों ओर नज़र डाली। सामने व्रजमोहनलाल को बैठे देख मुसकिराकर कुछ उच्च स्वर से बोले—"अरे ! आप कब आए ? मैंने देखा ही नहीं।"

व्रजमोहनलाल ने भी मुसकिराकर उत्तर दिया—"मुझे आए पंद्रह मिनट हुए होंगे ; किंतु आप अपने असामियों से बातचीत कर रहे थे, इसलिये मैंने आपका ध्यान आकर्षित करना उचित न समझा।"

"कहिए, घर में सब कुशल है ?"

"सब आपकी दया है।"

"यार, तुम भी झूठों के सिरताज हो ! सनीचर को थिएटर चलने का वादा किया था। मैं साढ़े आठ बजे तक राह देखता रहा; पर आपका पता ही नहीं।"

"उस दिन दूकान से देर को उठा, इसी कारण न आ सका।"

"भले आदमी, कभी-कभी तो दूकान का पिंड छोड़ दिया करो। आख़िर यह कमा-कमाकर किसके लिये रख रहे हो ? कोई लड़का-बाला भी तो नहीं।"

वकील साहब के अंतिम वाक्य व्रजमोहनलाल के हृदय से टकरा गए। उनके अंतस्तल से एक दीर्घ निश्वास निकली। मुख मलिन हो गया। उस मलिनता को शुष्क मुसकिराहट के नीचे दबाने की चेष्टा करते हुए व्रजमोहनलाल बोले—"कमाना-धमाना क्या, किसी-न-किसी प्रकार जीवन के दिन काट रहे हैं।"

"हूँ, जीवन के दिन काट रहे हो ? यह नहीं कहते कि लाखों के वारे-न्यारे कर रहे हो। यार, अब तो मेरा भी जी चाहता है कि वकालत छोड़कर यही काम करूँ।"

"अरे कहीं ऐसा ग़ज़ब भी न करना ! इसमें क्या धरा है ? दिन-भर दूकान में पिसोगे ; रात के ग्यारह बजे छुट्टी मिला करेगी। फिर वकालत की-सी पैदा नहीं।"

"अजी वकालत में क्या धरा है ? रात-दिन कुत्ते की तरह भूँकना पड़ता है, तब कहीं महीने में सौ-दो सौ मिलते हैं।"

"इसमें क्या संदेह है ? महीने में सौ-दो सौ ! यह नहीं कहते कि एक दिन में सौ-दो सौ। अभी मेरे सामने ही एक मिनट में पचीस फटकार लिए, और उस बेचारे से सीधी तरह बात भी न की ! ले भला हम लोगों को इन बूँदों भेंट कहाँ ! जब चौबीस रुपए का माल देते हैं, तब कहीं यह पचीस दिखाई पड़ते हैं। अच्छा ये बातें छोड़िए, मुझे इस समय आपसे एक बड़े ही गंभीर विषय पर कुछ बातचीत करनी है।"

गंभीर विषय का नाम सुनते ही वकील साहब तुरंत गंभीर होकर बोले—"क्यों-क्यों, ख़ैर तो है ? ऐसी कौन-सी बात है ?"

"चलिए, कमरे के अंदर चलें" कहकर व्रजमोहनलाल उठ खड़े हुए। साथ ही वकील साहब भी उठे।

कमरे के अंदर पहुँचकर व्रजमोहनलाल एक कुर्सी पर बैठते हुए बोले—"पहले यह बतलाइए कि आपके पास समय कितना है ?"

कमरे में लगी हुई क्लाक (घड़ी) की ओर देखकर वकील साहब ने उत्तर दिया—"अभी पौने आठ बजे हैं। नौ बजे तक मैं आपसे बातचीत कर सकता हूँ—हाँ, यदि कोई मवक्किल न आया, तो साढ़े नौ बजे तक भी बैठ सकता हूँ ; क्योंकि मुझे अब केवल भोजन करना बाक़ी है। स्नान मैं सुबह ही कर लेता हूँ।"

"ख़ैर, मुझे केवल एक ही घंटा चाहिए" कहकर व्रजमोहनलाल ने अपनी कुर्सी वकील साहब के निकट खिसका ली।

व्रजमोहनलाल ने कहना आरंभ किया—"जो कुछ मैं कहता हूँ, उसे ध्यानपूर्वक सुनना और अपनी स्पष्ट सम्मति देना।"

"आप कह चलिए, मैं बड़े ध्यान से सुनूँगा, और जहाँ तक मेरी बुद्धि काम देगी, उचित सम्मति भी दूँगा।"

"आपको यह तो मालूम ही है कि मैं चालीस से ऊपर पहुँच चुका हूँ, और यह भी आप जानते हैं कि अब तक मेरे कोई संतान नहीं हुई। कल रात को मेरी स्त्री ने यही बात

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छेड़ी। उससे और मुझसे जो कुछ बातचीत हुई, मैं उसका सारांश सुनाए देता हूँ। उसका कहना है कि अब हमारे संतान होना यदि असंभव नहीं, तो कठिन अवश्य है। इतना भी उसने लौकिक व्यवहार की दृष्टि से कहा; अन्यथा वह स्वयं तो इसे असंभव ही समझ रही है। ख़ैर, अब उसे यह चिंता लगी हुई है कि यदि कल मेरी मृत्यु हो जाय, तो उसकी क्या दशा होगी? इससे आप उसका तात्पर्य समझ गए होंगे। उसको यह चिंता है कि मेरे पीछे उसके देवर मेरी सारी संपत्ति के मालिक हो जायँगे और उसे कष्ट देंगे। कष्ट न भी दें, तो भी उसे यह बात असह्य है कि जिस संपत्ति की आज वह सोलहो आने मालिक बनी बैठी है, वही संपत्ति कल दूसरों के अधिकार में चली जाय, उस पर उसका ज़रा-सा भी स्वत्व न रहे। अब आपसे मेरा पहला प्रश्न यह है कि इसके बचाव की कोई युक्ति निकल सकती है?" वकील साहब एक सिगरट सुलगाकर बोले—"आपके प्रश्न का उत्तर देने के पहले मैं एक बात आपसे पूछना चाहता हूँ।"

ब्रजमोहनलाल शीघ्रतापूर्वक बोले—"हाँ-हाँ, शौक़ से पूछिए।"

"भला आपने अपनी स्त्री से यह प्रश्न भी किया था कि वह संपत्ति पर अपना अधिकार जमाए रखने के लिये क्यों चिंतित है? आपके बाद उसे चाहिए ही क्या? केवल रोटी-कपड़ा, सो यह उसे मिलेगा ही, इसमें कभी कोई अड़चन पड़ ही नहीं सकती।"

"आपका यह कहना किसी अंश तक ठीक है। ऐसा एक प्रश्न क्या, कई प्रश्न हो सकते हैं। किंतु भाई साहब, आप ज़रा मनुष्य के हृदय का भी ध्यान रक्खें। मनुष्य के हृदय का यह स्वभाव है कि वह अपनी कष्ट-संचित कमाई को—चाहे उसके चले जाने अथवा रहने से उसे कोई हानि-लाभ न हो—सहज में नहीं त्याग सकता।"

वकील साहब हँसकर बोले—"हाँ, यह बात तो ठीक ही है। ख़ैर, अब मैं आपके प्रश्न का उत्तर देता हूँ। जो कुछ आपके पास नगद रुपया है, उसे आप अपनी स्त्री के नाम से किसी बैंक में जमा कर दीजिए। ज़ेवर पर किसी का अधिकार हो नहीं सकता। वह स्त्री की संपत्ति है। रही जायदाद, उसमें से भी आप एक मकान उसके रहने के लिये उसके नाम लिख सकते हैं।"

"और उसके सिवा जो मकानात हैं, उनका क्या होगा? और दूकान के बारे में आपकी क्या राय है?"

"उन मकानात और दूकान पर आपके भाइयों का अधिकार होगा।"

"और दूकान ही में सारा रुपया लगा है। नगद क्या है, दो-चार हज़ार पड़े रहते हैं।"

"दूकान में कितना रुपया लगा होगा?"

"नगद तो पचास हज़ार लगा है, किंतु माल ८०-९० हज़ार से कम का नहीं रहता।"

"ख़ैर, उसे जाने दीजिए। पचास हज़ार नगद दूकान में है; क्यों न?"

"हाँ।"

"उसकी केवल यह युक्ति हो सकती है कि या तो आप दूकान उठा डालिए, और वह रुपया भी अपनी स्त्री के अधिकार में दे दीजिए, और या—"

वकील साहब की बात काटकर ब्रजमोहनलाल बोले—"दूकान उठा डालना तो असंभव है। एक तो बड़ी बदनामी होगी, दूसरे घर का ख़र्च चलना दूभर हो जायगा; क्योंकि जब तक मैं जीवित हूँ, मुझे अपनी शान और ठाठ-बाट रखने ही पड़ेंगे।"

"मकानात से आपको कितनी आमदनी है?"

"अजी यही कोई डेढ़ सौ मासिक, और वह भी तब, जब कोई मकान ख़ाली न रहे।"

"ख़ैर, सवा सौ का औसत रख लीजिए।"

"हाँ, सवा सौ रखिए। किंतु इस आमदनी से मेरा ख़र्च नहीं चल सकता। मेरा ख़र्च तो इस समय चार-पाँच सौ रुपए मासिक का है।"

"तो ऐसी दशा में दूकान का उठा डालना निस्संदेह कठिन है। ख़ैर, दूसरी युक्ति यह हो सकती है कि आप दूकान से थोड़ा-थोड़ा रुपया खींचते रहें, और उसे अपनी स्त्री के नाम से कहीं जमा करते रहें।"

"हाँ, यह भी हो सकता है; किंतु—"

"किंतु क्या?"

"यह बात मुझे कुछ अच्छी नहीं लगती।"

"तो इसके अलावा और आप क्या चाहते हैं?"

"कोई और युक्ति नहीं निकल सकती?"

"मेरी समझ में तो इससे अच्छी और कोई युक्ति नहीं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साहित्य-प्रेमियो, सावधान !

शीघ्रता कीजिए !! शीघ्रता कीजिए !!!

किसलिये ?

सर्वश्रेष्ठ, सुप्रसिद्ध और सर्व-प्रिय

सचित्र मासिक पत्रिका

के ग्राहक बनने में।

क्यों ?

सुधा की पिछली संख्याएँ अब बहुत थोड़ी रह गई हैं। इस महीने में जो ग्राहक बनेंगे, उन्हीं को सुधा पहली संख्या से मिल सकेगी।

कारण ?

सुधा की ग्राहक-संख्या जिस तेजी से बढ़ रही है, उसे देखकर यही अनुमान होता है कि महीने-भर बाद आपको सुधा की पिछली संख्याओं के लिये

हताश होना पड़ेगा !

अतः आप शीघ्र, पहली संख्या से, ग्राहक बन जायँ।

मैनेजर, 'सुधा', लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अवसर न चूकिए ! काफ़ी लाभ उठाइए !!

आवश्यकता है !!!

पुस्तक-विक्रेताओं

की

हमारी सुंदर, सस्ती और लोक-प्रिय

पुस्तकों को बेचने के लिये

सभी बड़े-बड़े शहरों में।

एजेंसी के लिये

शीघ्र

पत्र-व्यवहार कीजिए।

संचालक—गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सब कठिनाइयाँ दूर हो गईं!!

देश-देशांतर

के

सभी

कला-प्रिय प्रकाशक और व्यापारी

छपाई का काम

हमारे यहाँ क्यों भेजते हैं ?

का काम सुंदर और सस्ता छपता है।

र सब प्रकार की छपाई का काम यहाँ होता है।

ग काम ठीक वक़्त पर दिया जाता है।

काम संतोष-प्रद होने की गैरंटी

सब प्रकार की

हिंदी-अँगरेज़ी छपाई,
रंगीन-तिरंगे चित्र,
सोने की छपाई,
सर्वश्रेष्ठ जिल्द-बँधाई,
चिट्ठी के काग़ज़,
लिफ़ाफ़े, पोस्टकार्ड,
विज़िटिंग कार्ड,
बिल, मिमो, रसीद-बुक,
कैलेंडर, नोटिस,
निमंत्रण-पत्र,
अभिनंदन-पत्र,
पुस्तक आदि—

आपको छोटा-मोटा, सुंदर, सस्ता, किसी प्रकार का भी छपाई का काम कराना हो, तो तुरंत हमारे पास भेजिए।

अब इधर-उधर भटकने की जरूरत नहीं !

मैनेजर— गंगा-फाइन आर्ट-प्रेस, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मोटरकार, मोटर साइकिल,

पुर्ज़े, टायर, ट्यूब, मोबिल आयल, पेट्रोल, मोटर आयल्स, लुब्रीकेटिंग और किरोसिन इत्यादि आप हमारे भाव से कम दाम में अच्छा माल कहीं न पाइएगा।

Phones B. B. 2118,
B.B. 1361
South 408 Cal. 4832.

Telegrams :
BENAUTO.

गनेसदास रामगोपाल
(एजेंट्स दी इंडो बर्मा पेट्रोलियम् कंपनी लि०)
४९, मुक्तारम बाबू स्ट्रीट, कलकत्ता

शाखाएँ—रानीगंज, पटना, मुज़फ़्फ़रपुर, इलाहाबाद और लखनऊ।

उपन्यास-रत्नमाला का पहला रत्न

मँगाइए ! **मीठी चुटकी** तैयार है !!

यह बड़ा ही सरस, मौलिक, सामाजिक उपन्यास है। प्रसिद्ध समालोचक श्रीयुत "शिलीमुख" एम्० ए० इसके विषय में लिखते हैं—"हमारी समझ में 'मीठी चुटकी' को हिंदी के वर्तमान उपन्यास-साहित्य में एक विशेष स्थान मिलना चाहिए। यथार्थ में 'सेवा सदन' के बाद हमको हिंदी का यही एक उपन्यास अधिक पसंद आया है।" मूल्य सर्व साधारण से १॥), स्थानीय ग्राहकों से केवल १)। स्थायी ग्राहक होने का शुल्क १) मात्र है। स्थायी ग्राहकों को उपन्यास-रत्नमाला के सभी उपन्यास दो तिहाई मूल्य में मिलेंगे।

पता—
साहित्य-मंदिर, दारागंज (S) प्रयाग।

मदर-इंडिया का जवाब

(अनुवाद और जवाब दोनों सिर्फ़ बारह आने में—डाक-व्यय अलग)

लेखिका—श्रीमती चंद्रावतीजी लखनपाल बी० ए०

कुछ सम्मतियाँ

अर्जुन लिखता है—"इस पुस्तक में मिस मेयो के प्रलापों का औचित्यपूर्ण, किंतु करारा जवाब है। इसमें मदर-इंडिया के कान खींचे गए हैं। इस १५० पृष्ठों की पुस्तक में "मदर-इंडिया" का सत खींच लिया गया है। इस ओजस्विनी किताब को पढ़ते समय साफ़ मालूम होता है कि इसकी भाषा किसी फ़ौलादी क़लम से लिखी गई है। हमारी समझ में 'मदर-इंडिया' और उसके जवाब में अन्य मोटे पोथों पर धन का दुरुपयोग न करके इस १२ आने (डाक-व्यय अलग) की पुस्तक से जनता अधिक लाभ उठा सकती है। यह एक अमेरिकन महिला को भारतीय महिला का करारा जवाब है। पुस्तक की छपाई-सफ़ाई बहुत बढ़िया है।" बांबे क्रानिकल लिखता है—"Mrs. Chandrawat has dealt in A Masterly way."

इस विषय की यही सबसे सस्ती और अद्वितीय पुस्तक है !!

पता—'अलंकार' आफ़िस, गुरुकुल कांगड़ी, (S) जि० बिजनौर

बी० बसु ठाकुर का

शेर मार्के का

स्वदेशी मोमजामा

सदा इस्तेमाल कीजिए। यह सबसे अच्छा है।

थोक खरीदारों को भाव और नमूने के लिये इस पते पर लिखना चाहिए।

Nirmal Chandra Basu, B. A.,
Agent, B. Basu Thakur's Oil Cloth
49/B, Machua Bazar Street,
CALCUTTA

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"हम लोगों ने भी एक युक्ति सोची है।"

वकील साहब मुसकिराकर बोले—"तो यह कहिए, सारा परामर्श गाँठकर आप मेरे पास आए हैं!"

व्रजमोहनलाल ने भी मुसकिराकर कहा—"किंतु जब तक आपकी मुहर न लग जाय, तब तक वह प कार्य-रूप में परिणत नहीं हो सकता।"

"अच्छा, कहिए, आपने क्या सोचा है?"

"मेरी स्त्री का कहना है कि यदि कोई लड़का गोद ले लिया जाय, तो इन सब बातों का भय जाता रहे।"

वकील साहब मुँह बनाकर बोले—'हाँ, यह भी हो सकता है; किंतु मेरी समझ में यह कोई अच्छी युक्ति नहीं।"

व्रजमोहनलाल कुछ हतोत्साह होकर बोले—"क्यों, इससे हानि क्या है?"

"हानि यह है कि मान लीजिए, वह लड़का दुश्चरित्र निकल गया, तो?"

"यह तो कोई बात नहीं। जब अच्छी शिक्षा दी जायगी, तो दुश्चरित्र कैसे निकल सकता है?"

"यह न कहिए। अच्छा, इसे भी जाने दीजिए। मान लीजिए, उसकी अपनी मा अर्थात् आपकी स्त्री से न बनी।"

"अजी नहीं, कम उम्र का लड़का लिया जायगा। जब वह उसे पाले-पोसेगी, लाड़-प्यार करेगा, तो उसे भी कुछ प्रेम हो ही जायगा।"

"हाँ, हो सकता है। किंतु दोनों ही बातों की संभावना है। उसे सच्चरित्र बनाना, उसके हृदय में अपने प्रति प्रेम उत्पन्न करना, यह सब आप दोनों ही पर निर्भर है।"

"निस्संदेह, आपका यह कथन ठीक है। तो आपकी समझ में यह युक्ति भी अच्छी है?"

"हाँ, हाँ, अच्छी क्यों नहीं।"

"तो बस, यही ठीक है।"

"आपके छोटे भाइयों के लड़के-वड़के हैं?"

"बनवारी के तो अभी कोई लड़का-वड़का हुआ नहीं। उसका गौना अभी परसाल ही हुआ है। हाँ, केदारनाथ के एक लड़का और दो लड़कियाँ हैं।"

"जब एक ही लड़का है, तो क्या हो सकता है?"

"मैं आपका अभिप्राय नहीं समझा।"

"मेरा मतलब यह है कि यदि उनके दो लड़के होते, तो उन्हीं में से एक को आप गोद ले लेते। यह अधिक अच्छा रहता।"

"हाँ, किंतु जब है ही नहीं, तो क्या किया जाय?"

"एक बात का और ध्यान रखिएगा।"

"वह क्या?"

"जहाँ तक हो सके, तीन-चार वर्ष से अधिक उम्र का लड़का न लीजिएगा। किसी ग़रीब का लड़का हो, पितृ-हीन हो और उसके भाई-बहन जहाँ तक संभव हो, कम हों।"

'इससे क्या लाभ?"

'मेरी बात मानिए, लाभ आपको स्वयं मालूम हो जायँगे।"

"आख़िर कुछ तो बताओ।"

"अच्छा बताए देता हूँ, तुम भी न क्या याद करोगे! सुनो, कम उम्र होने का लाभ तो तुम्हें मालूम ही है, और वह यह कि उसे जैसी चाहोगे, शिक्षा दे सकोगे। ग़रीब होने से यह लाभ होगा कि एक तो ग़रीब अपना लड़का सहर्ष दे देगा; क्योंकि वह देखेगा, तुम्हारे यहाँ जाने से उसके लड़के को सब प्रकार के सुख मिलेंगे। दूसरे इतनी बड़ी संपत्ति का मालिक होगा। पिता और भाई-बहन न होने का यह लाभ होगा कि जितना ही उस लड़के के, उसके निज के, नाते-रिश्तेदार कम होंगे, उतना ही अधिक वह आपका हो कर रहेगा।"

व्रजमोहनलाल प्रसन्न-मुख होकर बोले—"वास्तव में ये बातें तो आपने बड़े मार्के की बताईं।"

उसी समय घड़ी ने टन-टन करके ९ बजाए। व्रजमोहनलाल अपनी टोपी उठाकर बोले—"अच्छा, अब मैं आपका अधिक समय न लूँगा; क्योंकि आपको कचहरी जाना है, और मेरा काम भी पूरा हो गया।" यह कहकर व्रजमोहनलाल उठ खड़े हुए। वकील साहब भी उठे, और व्रजमोहनलाल की पीठ पर हाथ मारकर बोले—"अब कब मिलोगे?"

"आज कौन दिन है? बृहस्पति। अच्छा, अब इतवार ही को मिलूँगा। दोपहर में सोते तो नहीं हो?"

'नहीं।"

"तो बस, दोपहर ही में आऊँगा।"

यह कहकर व्रजमोहनलाल वकील साहब से बिदा हुए।

चौथा परिच्छेद

"चंदो, चंदो।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"हाँ भैया।"

"ज़रा यहाँ तो आना।"

"आई" कहने के कुछ क्षण पश्चात् विधवा चंद्रमोहनी अपने भाई व्रजमोहनलाल के पास आई।

उस समय व्रजमोहनलाल अपनी पत्नी के कमरे में अकेले बैठे हुए थे।

चंदो के आने पर उन्होंने कहा—"ज़रा बैठो, तुमसे कुछ बात करना है।"

कुछ कौतूहल-भरे नेत्रों से भाई की ओर ताकती हुई चंदो उनके सामने बैठ गई, और बोली—"कहो, क्या बात है?"

व्रजमोहनलाल कुछ देर तक सिर झुकाए चुपचाप बैठे रहे। तत्पश्चात् सिर उठाकर बोले—"तुमसे कुछ सलाह लेनी है।"

"कैसी सलाह?"

तुम्हें यह तो मालूम ही होगा कि तुम्हारी भावज पुत्र के लिये कितनी चिंतित रहती है?"

बड़े भाई के मुख से एक ऐसी बात सुनकर जो स्त्रियों के उस हृदयगत भाव से संबंध रखती है, जिसे हम लज्जा अथवा संकोच कह सकते हैं, चंदो सिर नीचा करके सकुचाती हुई बोली—"हाँ, पुत्र की चिंता तो उन्हें बहुत कुछ है।"

व्रजमोहनलाल समझ गए कि चंदो इस विषय पर बातचीत करने में संकोच करती है। अतएव वह बोले—"देखो चंदो, यह मैं जानता हूँ कि मेरा इस विषय पर तुमसे बातचीत करना हमारे नाते के कुछ विरुद्ध पड़ता है; किंतु आगे जो कुछ मैं कहना चाहता हूँ, वह साधारण बात है। उस पर खुलकर बातचीत करने में तुम्हें कुछ संकोच न करना चाहिए। सुनो, तुम्हारी भाभी के अब पुत्र होने की कोई आशा नहीं, इस कारण हमने एक युक्ति सोची है।"

चंदो बोल उठी—"जो युक्ति आपने सोची है, वह मैं कुछ-कुछ समझ गई।"

"भला क्या समझीं? कहो तो।"

"दूसरा विवाह—"

व्रजमोहनलाल ज़ोर से हँस पड़े। फिर अकस्मात् गंभीर होकर बोले—"नहीं, यह कोई युक्ति नहीं। एक दुर्बल आशा के भरोसे पराई बेटी का जीवन नष्ट करना बड़ी बुरी बात है। मैं ऐसा कदापि नहीं कर सकता।"

चंदो कुछ विस्मित होकर बोली—"तो फिर कौन-सी युक्ति है?"

"लड़का गोद लेने की।"

"ऐं! लड़का गोद लेने की?"

"हाँ लड़का गोद लेने की। यह कोई नई बात नहीं, बहुत लोग ऐसा करते हैं। क्यों, तुम्हें क्या यह नापसंद है?"

"नहीं, नापसंद क्यों होगी। आप मुझसे अधिक समझदार हैं, जब आप ठीक समझते हैं, तो ठीक ही है।"

"मैं केवल यह पूछना चाहता हूँ कि तुम्हें यह बात स्वीकार है न?"

"स्वीकार क्यों नहीं, अच्छी बात है, कोई नाम चलानेवाला तो होना ही चाहिए।"

"अच्छा, अब यह बताओ कि तुम्हारी जान में कोई लड़का है?"

"मेरी जान में?"

"हाँ, मेरा मतलब है कि तुम्हारी सुसराल के रिश्ते-नाते में कोई ऐसा लड़का मिल सकता है?"

सुसराल का नाम सुनते ही चंदो ने एक ठंडी साँस ली, और बोली—"मेरी जान में तो कोई नहीं है।"

"ख़ैर, कोई और प्रबंध किया जायगा।"

"पुरोहितजी से कहो, वह कोई-न-कोई बता देंगे।"

व्रजमोहनलाल प्रसन्न होकर बोले—"यह तुमने ठीक कहा। मुझे इसका ध्यान ही नहीं था। निस्संदेह वह अवश्य बता सकेंगे।"

उस समय सावित्री देवी छम-छम करती हुई आ पहुँचीं, और मुसकिराकर बोलीं—"यह चुपके-चुपके क्या सलाह हो रही है?"

चंदो उठ खड़ी हुई, और मृदु हास्य करके बोली—"सारी सलाहें तुम्हारे ही लिये हो रही हैं।" इतना कहकर चंदो चली गई। चंदो के चले जाने पर सावित्री ने पति से पूछा—"सब ठीक हो गया?"

"हाँ, ठीक ही है।"

"अभी और किसी से सलाह करना बाक़ी है?"—ये वाक्य सावित्री ने कुछ व्यंग्य-पूर्वक कहे।

"अरे सलाह काहे की? सलाह तो मुख्य हमारी-तुम्हारी है। इन लोगों के कानों में भी भनक डालनी थी, सो डाल दी। चंदो ने एक बात अच्छी सोची।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

76073

"वह क्या ?"

"उसने कहा कि पुरोहितजी से कहो, वह भाई-बिरादरी में आते-जाते हैं। वही कोई लड़का ढूँढ देंगे।"

"हाँ, यह तो ठीक कहा।"

"तो बस, अब यह काम तुम्हारा है।"

"हाँ, कह तो मैं दूँगी, पर तुम्हारे भी कहे बिना ठीक न होगा।"

"हाँ-हाँ, मैं भी कह दूँगा।"

"तो आज ही बुलाकर कह देना चाहिए।"

"आज ही कह दो। बदलू को भेजकर उन्हें बुलवा लो।"

सावित्री देवी को तो एक-एक क्षण एक-एक वर्ष के बराबर बीत रहा था। उन्होंने उसी दम पुरोहितजी को बुलवाया। पुरोहितजी के आने पर सावित्री ने उनसे सारा कच्चा चिट्ठा कह सुनाया।

पुरोहितजी सब सुन चुकने पर बड़े प्रसन्न हुए। बोले—"वाह बहूजी, यह तुमने बहुत सुंदर सोचा। और क्या, जीवन का कोई भरोसा नहीं। जो अपने जीते-जी हो जाय, वही अच्छा। गरुड़पुराण में लिखा है कि जिसके पुत्र नहीं, उसकी मुक्ति नहीं होती। इससे बढ़कर और क्या हो सकता है ? नाम का नाम चलेगा, और पिंडदान करनेवाला भी हो जायगा।"

सावित्री देवी बोलीं—"हाँ, यही सोचकर तो मैंने उनसे बहुत कहा-सुना। वह तो इन बातों को मानते-वानते नहीं; पर ख़ैर, मेरे कहे-सुने से राज़ी हो गए।"

"इन्हीं पर क्या है बहूजी, ये जितने अँगरेज़ी पढ़े-लिखे हैं, कोई नहीं मानते। और, सच पूछो, तो जब से यह अँगरेज़ी चली, सारा धर्म-कर्म उठ गया। क्या किया जाय, समय की बात है। ख़ैर, वह किसी तरह माने, मान तो गए, यही बहुत है।"

"और क्या, यही बहुत है। अच्छा, तो अब लड़का ढूँढना तुम्हारे हाथ है।"

"ऐसा लड़का लो कि चित्त प्रसन्न हो जाय। यह जान ही न पड़े कि गोद का है या पेट का।"

"देखने-सुनने में भी अच्छा हो।"

"अजी चाँद का टुकड़ा लो ! लड़कों की क्या कमी है ? एक नहीं, पचास दे सकता हूँ। और बहू, गोद के और पेट के को कोई बात नहीं। सारी बात चित्त की है। जिससे चित्त प्रसन्न रहे, जो सुशील निकले, वही अपना। वह पेट ही का हुआ और कपूत निकल गया, तो किस काम का ! सारी उमर का दुःख और नाम डूबे, सो अलग। शास्त्र में भी सुशील ही की प्रशंसा लिखी है, चाहे गोद का हो या पेट का। गोद का अच्छा निकल गया, तो सारे वंश को स्वर्ग में ले जाता और पेट का भी यदि कपूत हो गया, तो सारा वंश नरक में जाता है।"

सावित्री ठंडी साँस भरकर बोली—"ठीक ही है, इस-में क्या झूठ है ?"

सावित्री ने जिह्वा से तो यह कह दिया, किंतु मन-ही-मन बोली—"वह चाहे जैसा हो, पेट का पेट ही का है।"

पुरोहितजी चलने के लिये उद्यत होकर बोले—"तो मैं शीघ्र ही लड़का ढूँढ़ दूँगा, तुम निश्चिंत रहो।"

"बाबूजी से भी बात कर लेना।"

पुरोहितजी हँसकर बोले—"क्या आवश्यकता है ? मेरे लिये तो दोनों एक-से हैं, जैसी तुम वैसे बाबूजी। और, मेरे जी की जो पूछो, तो मैं तो तुम्हीं को मालिक समझता हूँ। इन बातों को ये अँगरेज़ी-पढ़े नहीं समझते बहू।"

"ख़ैर, मैंने कह दिया। तुम्हारा जी चाहे पूछ लो, न जी चाहे जाने दो।"

"ख़ैर, देखा जायगा" कहकर पुरोहितजी सावित्री देवी से बिदा हुए।

बाहर आकर व्रजमोहनलाल के कमरे में पहुँचे। पुरोहितजी को देखते ही व्रजमोहनलाल बोले—"आइए पुरोहितजी, भीतर हो आए ?"

"हाँ, हो आया, ईश्वर जाने, मुझे तो बड़ी प्रसन्नता हुई।"

व्रजमोहनलाल कुछ उदास होकर बोले—"फिर क्या किया जाय पुरोहितजी, भगवान् ने हम पर कृपा ही नहीं की।"

"तो क्या चिंता है बाबूजी ? वह सब एक ही बात है। जिसे अपना समझ लो, जिससे प्रेम हो जाय, वही अपना है। मैंने देखा है, सगे पिता-पुत्रों में जब प्रेम नहीं होता, तो वे पराए से भी बत्तर (बदतर) हो जाते हैं।"

"हाँ, यह तो ठीक ही है। सच पूछो, तो मेरी इच्छा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तो नहीं थी; पर बनवारी की भाभी न मानीं। उसे रात-दिन यही खटका लगा रहता है कि कल को कहीं मेरी आँखें मुद गईं तो—"

पुरोहितजी मुँह बनाकर बीच ही में बोल उठे—"हरे राम-राम! यह भी भला कोई बात है? ईश्वर आपको चिरायु करे। ऐसा सोचना निरी मूर्खता है। इसीलिये तो कहा है कि स्त्रियों की समझ बड़ी ओछी होती है। स्त्रियों की समझ शास्त्रों में भी निंद्य कही गई है।"

"स्त्रियाँ तो कुछ ऊँच-नीच समझती ही नहीं। उन्हें तो जो धुन सवार हुई, वह सवार हुई, और पुरुष को आगा-पीछा सोचकर काम करना पड़ता है।"

"यही बात है। आपका कहना यथार्थ है। स्त्रियाँ ऊँच-नीच बिलकुल नहीं समझतीं।"

"अब हम लोगों ने पढ़ा-लिखा है, तो किस दिन के लिये? विना सोचे-समझे काम कर बैठें, तो हमारा पढ़ना-लिखना किस काम का?"

"इसमें कोई संदेह नहीं। और, बाबूजी, मैं तो फिर भी अँगरेज़ी की प्रशंसा करूँगा। इसके पढ़ने से आदमी के चार आँखें हो जाती हैं। क्यों न हो, राज-विद्या (भाषा) है कि दिल्लगी। राज-विद्या की शास्त्रों ने भी प्रशंसा की है।"

पुरोहितजी की बातों पर कुछ विशेष ध्यान न देते हुए व्रजमोहनलाल अपनी ही कहते गए—"मैंने तो लौकिक बातों को सोच-विचारकर ऐसा करना स्वीकार किया; क्योंकि मुक्ति-वुक्ति का तो मैं क़ायल नहीं। साफ़ बात यह है कि मुझको यह सब ढकोसला मालूम होता है।"

पुरोहितजी दाँत निकालकर सिर खुजाते हुए बोले—"हाँ, एक प्रकार से आपका कहना भी ठीक ही है। काहे से कि कोई देख तो आया ही नहीं कि मरने के पश्चात् क्या होता है क्या नहीं होता। जो कुछ शास्त्रों में लिखा है, उसी के अनुसार लोग कहते हैं। और, मेरे मन की जो पूछिए, तो मेरा तो यह विश्वास है कि ईश्वर की माया कौन जान सकता है? जिसकी माया बड़े-बड़े योगी और ज्ञानी भी न जान सके, उसकी माया मनुष्य कैसे जान सकता है?"

"यही बात है पंडितजी।"

"तो अब चलता हूँ।"

"हाँ, जाइए। परंतु तनिक चेष्टा करके शीघ्र ही ढूँढ दीजिएगा!"

"शीघ्र ही लीजिए, आज के आठवें-दसवें दिन ही लीजिए।"

"लड़के के विषय में मुझे कुछ कहना-सुनना नहीं। आप स्वयं समझदार हैं।"

"आप निश्चिंत रहिए, आपका चित्त प्रसन्न हो जाय, तब कहिएगा।"

"हाँ, एक बात का ध्यान रखिएगा। लड़का तीन-चार वर्ष से अधिक का न हो, और किसी ग़रीब का हो, अनाथ हो, तो और भी अच्छा।"

पुरोहितजी कुछ देर तक विचार करके बोले—"अच्छी बात है। जहाँ तक हो सकेगा, ऐसा ही ढूँढूँगा।"

प्रतीक्षा

[लेखिका, कुमारी कौशल्यादेवी गोरेवाला]

उच्च और हिमाच्छादित पर्वत-मालाओं के सामने सघन तथा हरी-हरी पहाड़ियों के बीच वह विशाल भवन स्थित था। चारों ओर से उसे खिले हुए फूल तथा लोनी लताएँ घेरे हुए थीं।

यों तो उस अनुपम, श्वेत, गगन-चुंबी गृह की शोभा का दूर ही से कुछ-कुछ आभास होने लगता था; पर पास पहुँचने पर तो उसका सौंदर्य कई गुना बढ़ जाता।

सामने की ओर भव्य, सौम्य, उच्च, पुरातन, विदेशी ढंग के, सुंदर स्तंभ थे, जिनके बीच में एक मंच था। कई एक सीढ़ियाँ पार करके इस चबूतरे पर पहुँचना पड़ता था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भवन के सामने एक सुविस्तृत, लताद्रुम-आच्छादित अभिराम मार्ग था। फाटक के समीप स्फटिक-शिला कलकल-नाद करते हुए चश्मे के पास शोभित थी। उस स्रोत की मधुर ध्वनि तथा मंजुल नृत्य वीणा की झंकार के समान श्रुति-सुखकर थे। उसका आनंद-मग्न होकर नन्ही छलाँगें भरते, अपूर्व तरंगें लेते हुए, पहाड़ के नीचे की ओर प्रवाहित होना कितना सुखकर था!

उस सुंदर भवन की पौर से लेकर फाटक तक सुविस्तृत हरी-हरी दूब का चौरस मैदान था, जिसमें असंख्य पुष्प क्यारियों में खिल रहे थे। कुंद के समान श्वेत पैटूनिया के फूल दूर तक फैले हुए थे। वे नव शशि पर मुग्ध होकर संध्या की मंद-मंद बयार की अठखेलियों से प्रसन्नतापूर्वक खिल तथा महक उठे थे। उनकी भीनी-भीनी मधुर मुसक्यान सारे उपवन और भवन को सुवासित कर रही थी।

एक नव-यौवना बाला, अपने लंबे सुकेशों को पाश-मुक्त कर, एक विशाल शिला पर, विराजमान थी। उसके विशाल, भोले, मृग-छौने के-से नयन, उसके श्यामघटा के समान काले-काले बालों पर, स्थिर थे। यद्यपि वह पूर्ण युवती थी; परंतु बाल्य-सुलभ छवि अभी तक उस भोले मुख पर क्रीड़ा कर रही थी। बार-बार उसके प्रिय तथा विमल नेत्र फाटक के बाहर मार्ग की ओर उठते और फिर एक क्षण में निराशा से पानी के बुद्बुदों की ओर और कभी अपने आधे भीगे पाँवों पर स्थित हो जाते।

नीलमयी देवी की श्यामलता सुंदर संध्या के समान ही विमुग्ध करनेवाली थी। जैसे संध्या की

एक नव-यौवना बाला, अपने लंबे सुकेशों को पाश-मुक्त कर, एक विशाल शिला पर विराजमान थी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शांत छवि मनुष्य को प्रिय होती है, वैसी ही इस सरल बाला की छटा थी। कितना सादृश्य था! दोनों ही नील मणि के समान श्याम, दोनों ही गंभीर, भोली, सादी और शांतिदायिनी।

नीलमयी देवी के लंबे-लंबे सुंदर हाथ कितनी सुंदरता से अपने बालों से क्रीड़ा कर रहे थे। मुख के प्रत्येक भाव से आकांक्षा, प्रतीक्षा टपक रही थी। वीणा बेसुध एक ओर कुशा पर ही पड़ी थी। चुपके-चुपके चंद्र की निर्मल किरणों से वीणा पर जड़े हुए रत्न चमक रहे थे।

धीरे-धीरे वाष्पमय बादलों ने सारे गृह और आकाश को घेर लिया। नीलमयी देवी के पाँवों को शीत की भी सुध न थी। उन बादलों से सारा मार्ग, सारा गृह ऐसे ढक गया, मानो पतला रेशम का कपड़ा किसी ने चारों ओर उढ़ा दिया हो। नीलमयी ने एक बार फिर नैराश्य-पूर्ण नेत्रों से सुंदर पथ की ओर निहारा, और वही भाव लिए वीणा को उठा मंद-मंद गति से सीढ़ियों पर चढ़ना आरंभ किया। अब की बार उसने निश्चय कर लिया कि लौटकर न देखूँगी। परंतु दूर पर उसे बादलों के उस पार, ऊँची पहाड़ी पर, प्रकाश दिखाई दिया। नीलमयी भीतर आकर लेट गई। कई एक पल तक वह नयन मूँदे पड़ी रही। जब आँखें खोलीं, तो आकाश में कहीं श्यामल मेघ चाँद को घेरे उसकी शोभा बढ़ा रहे थे, कहीं केवल स्वच्छ आकाश था। भवन की दीवारें धवल चाँदनी में नहा रही थीं। मंजुल बयार प्रवाहित हो रही थी। नव पल्लव चमक उठे थे। दूर सघन कुंजों में से मधुर पहाड़ी वंशी की मधुर ध्वनि कभी-कभी कानों में झनक उठती थी। पर वन-मार्ग शून्य था।

"दुखवा मैं कासे कहूँ मोरी सजनी?"

[लेखक, श्रीयुत महादेवप्रसाद त्रिपाठी]

आयुर्वेदाचार्य श्रीचतुरसेन शास्त्री की लिखित एक कहानी 'सुधा'-पत्रिका के श्रावण के अंक में प्रकाशित है, जिसका शीर्षक है "दुखवा मैं कासे कहूँ मोरी सजनी?" यह कहानी मौलिक नहीं है। उर्दू में 'नक़ाब-पोश आशिक़' नाम का एक उपन्यास है, जिसके लेखक बाबू सतीशचंद्र वसु हैं। वह हिंदुस्तानी-प्रेस, नज़ीराबाद लखनऊ से प्रकाशित है। उसी उपन्यास का अनुवाद शास्त्रीजी ने हिंदी में करके सुधा में प्रकाशित कराया है।

यों तो आजकल हिंदी के बहुत-से ऐसे लेखक हैं, जो दूसरी पुस्तकों के भाव को अपने शब्दों का पहनावा पहना-कर येन केन प्रकारेण अपना उल्लू सीधा कर ही लेते हैं; किंतु ऐसे लब्ध-प्रतिष्ठ लेखक शास्त्रीजी का इस रूप से हिंदी-क्षेत्र में आना सर्वथा असंगत प्रतीत होता है। नमूने के तौर पर हम यहाँ उपन्यास का एक पैरा त।। उसका अनुवादित रूप देते हैं—

उपन्यास से—"एक ख़वीस सूरत फ़ौरन् बादशाह के रूबरू आ सिर झुकाकर खड़ी हो गई। बादशाह ने फ़र-माया—मख़दूम, इस बदनसीब को ज़मीन-दोज़ क़ैद-ख़ाने में ले जाकर मुक़ैद कर। कोई इसको पानी और खाना न दे। फ़ाक़ा मरने की सज़ा इसके वास्ते तजवीज़ हुई है।"

शास्त्रीजी की कहानी से—"क्षण-भर में एक भयंकर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रूपवाली तातारी औरत बादशाह के सामने अदब से आ खड़ी हुई। बादशाह ने हुक्म दिया—"इस मर्दूद को तहख़ाने में डाल दे ताकि विना खाए-पिए मर जाय।"

इसी तरह पूर्ण कहानी उपन्यास से समता रखती है, यदि अंतर है, तो केवल भाषा का रूपांतर। हाँ, शास्त्री-जी ने अनुवाद करने में भी बहुत-से स्थानों को छोड़ते हुए भावों को ऐसा लुस कर दिया है, जिससे कहानी की क्रम-बद्धता को क्षति पहुँचती है, और बहुत-सी शंकाएँ पैदा होती हैं। यथा उपन्यास में लिखा है—

शाहजहाँ बादशाह फ़क़ीर के रूप में क़ैदख़ाने में माहरू के पास गया, और उसी से वास्तविक घटना और उसके तथा सलीमा के भाव मालूम कर लिए। जब माहरू द्वारा बादशाह को यह प्रमाणित हो गया कि सलीमा निर्दोष है, तो वह अपनी करनी पर पश्चात्ताप करता हुआ सलीमा के पास गया और विष-पान की घटना देखकर धाड़ मार रोने लगा। किंतु शास्त्रीजी की कहानी से सूचित होता है कि जब खोजे ने विष-पान की सूचना बादशाह को दी, तब शाहजहाँ सलीमा के पास जाकर उसको प्रथम धिक्कारने तथा कटु शब्दों द्वारा प्रहार करने लगा, और उसी के द्वारा उसे निर्दोष समझकर साथ ही पश्चात्ताप भी करने लगा। तदुपरांत वह माहरू के पास क़ैदख़ाने में गया और सलीमा की निर्दोषिता का प्रमाण लिया।

पाठकगण इसी से विचार कर सकते हैं कि अनुवादित लेख में कितना व्यतिक्रम हुआ है। बादशाह का सलीमा को प्रथम धिक्कारना और अपराधी ही द्वारा उसकी निर्दोषिता का विश्वास कर पश्चात्ताप भी करना सर्वथा असंगत है। यदि बादशाह को उसी के द्वारा सिद्ध हो गया था कि सलीमा निर्दोष है, तो फिर उसके मरने पर माहरू के पास जाने की क्या आवश्यकता थी। इसी तरह की खींचा-तानी अनेक स्थानों पर हुई है, जिसको व्यक्त करना मेरे लेख का लक्ष्य नहीं।

प्रतिवाद

[लेखक, आयुर्वेदाचार्य श्रीचतुरसेन शास्त्री]

ऊपर मेरी एक गल्प 'दुखवा मैं कासे कहूँ मोरी सजनी ?' की आलोचना पाठक पढ़ रहे हैं। इससे प्रथम 'आज' में एक सज्जन ने लिखा था कि यह गल्प अब से २५ वर्ष प्रथम निकली एक मराठी कहानी का भ्रष्ट अनुवाद है, जिसे मैंने अपनी क़लम की नोक से नोच-नाचकर उसका समस्त सौंदर्य भ्रष्ट कर डाला है। इसके बाद 'मतवाला' में किन्हीं महोदय ने लिखा कि यह बँगला के किसी उपन्यास का छिन्न-भिन्न अंश है, जिसमें असली सौंदर्य बिलकुल नष्ट हो गया है। अब यह तीसरे सज्जन उसे एक उर्दू-उपन्यास की छीछालेदर बता रहे हैं। इन विद्या-दिग्गज समालोचकों का मुझ पर यह पहला ही प्रहार है, और इस प्रहार से मेरी बुद्धि ही चक्कर खा रही है। अब मैं इस बात की प्रतीक्षा में हूँ कि कोई सज्जन गुजराती, अरबी और फ़ारसी, या तेलगू आदि भाषाओं में से इस कहानी का उद्गम और खोज निकाले, तो फिर कम से-कम लोग मुझे दर्जनों एशियाई और ख़ासकर हिंदुस्तान की भाषाओं का पंडित तो समझने ही लगें। फ़िलहाल तो मैं बँगला एक अक्षर भी नहीं पढ़ सकता, उर्दू का शायद एकआध अक्षर दाँत से उखाड़ने की कोशिश कर सकूँ। मराठी पढ़ तो लूँ, पर समझूँ ख़ाक भी नहीं। इन महाक़लम-सम्राट् समालोचकों से मेरा विनम्र निवेदन है कि उक्त समस्त कहानियों की मूल-घटना अर्ध-ऐतिहासिक होने से सर्वत्र ही पात्रों के नाम, मुख्य घटना और तत्कालीन परिस्थिति एक-सी होना क्या संभव या अनिवार्य नहीं हो सकता।

यदि नहीं, तो इन विद्वान् समालोचकों से मेरा अनुरोध है कि वे अपने प्रकांड बहुदर्शी ज्ञान के आधार पर यह निर्णय कर दें कि मराठी, उर्दू और बँगला, इन तीनों में से कहानी का मौलिक मालिक कौन है और मैं अपने को किसका नक़ाल समझूँ।

अन्य समालोचकों की तरह उपर्युक्त समालोचक भी कहते हैं कि मैंने असली उर्दू-कथा का सौंदर्य काट-छाँटकर नष्ट कर दिया है। किसी का सौंदर्य नष्ट कर देने की सज़ा अँगरेज़ी क़ानून में कई तरह की है। विद्वान् समालोचक इस अपराधी को क्या सज़ा देने की कृपा करेंगे ? वह जो चाहें दें; परंतु अपराधी का निवेदन है कि अपनी शक्ति-भर मैं सौंदर्य का पुजारी रहा हूँ—मेरी कहानी यदि किसी सौंदर्य को क्षत-विक्षत करे, यहाँ तक कि मेरे-जैसे हिंदी-सेवक से हिंदी-साहित्य की भारी क्षति (?) पहुँचने की संभावना हो—तब तो मेरे लिये सलीमा की तरह विष-पान ही उपयुक्त सज़ा है और यदि हिंदी-संसार ने मुझे यह सज़ा दी, तो मैं माननीय समालोचक महोदय से पूछता हूँ कि क्या वह मेरी विधवा क़लम को अपने करकमल का सौभाग्य प्रदान कर, हिंदी-साहित्य की इस अपराधी द्वारा की गई क्षति की पूर्ति करके अपराधी को आभारी करेंगे ?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साहित्य की शक्ति

[लेखिका, कुमारी गार्गी जलविद्-स्नातिका]

क्ति जीवित में होती है, मृत में नहीं। जीवन का अर्थ ज्ञान और प्रयत्न है। इन दोनों की परा काष्ठा साहित्य में देखी जाती है। साहित्य या काव्य-कला सबसे ऊँची है। साहित्य-रहित मनुष्य पशु है। भर्तृहरि ने इसीलिये कहा है—

"साहित्यसङ्गीतकलाविहीनः
साक्षात् पशुः पुच्छविषाणहीनः ;
तृणं न खादन्नपि जीवमान-
स्तद्भागधेयं परमं पशूनाम् ।"

मनुष्य सामाजिक जीव है। वह अकेला नहीं रह सकता। समाज केवल व्यक्तियों का समूह ही नहीं है; जीवित पदार्थों की भाँति उसमें कार्य-विभाग इत्यादि संगठन की व्यवस्था भी होती है। पारस्परिक संबंध से ही मनुष्य की शक्तियाँ विकसित होती हैं। मनुष्य समाज में अपने ज्ञान और प्रयत्न का सदुपयोग कर जन्म को सार्थक करता है। वह अपने विज्ञान-बल से नित्य नए-नए कला-कौशल का निर्माण कर परमात्मा की रची सृष्टि को नया रूप देता है। इसमें कुछ तो उसका स्वाभाविक ज्ञान होता है, कुछ मनुष्य-समाज की आवश्यकताओं के अनुसार नित्य की देख-रेख से होता है, और कुछ उस ज्ञान-भंडार से, जो कि पुस्तकों आदि के रूप में भरता ही जाता है, प्राप्त होता है। यही पोथियाँ साहित्य है। सभ्यता और साहित्य का घनिष्ट संबंध है; दोनों ही एक दूसरे की रगड़ से चमकते हैं। मनुष्य आदि से ही रागी प्राणी है; उसकी मनोवृत्ति ही कुछ ऐसी है कि उसे अपना सुख-दुःख सुनाने और दूसरों के सुख-दुःख सुनने में एक प्रकार का रस और आनंद प्राप्त होता है। यह रस ही मनुष्य-जीवन की सफलता अर्थात् परोपकारादि और साहित्य का भी मूल कारण है। साहित्य में प्रधानतया मानव-जीवन की अभिव्यक्ति होती है।

साहित्य का अर्थ है किसी जाति के 'सत्यं शिवं सुंदरं' विचार-भावों का वह हित-युक्त गुच्छ, जिसकी भीतरी सुगंध और बाहरी सुंदरता मन को मुग्ध करती हो या आपात-रमणीय हो, अर्थात् हित एवं परोपकार और मनुष्य का अर्थ मननशील-विचार है। साहित्य में ये तीनों बातें हैं, इसलिये साहित्य मनुष्य के लिये है; उसका मनुष्यों ने हित की दृष्टि से निर्माण किया है। मनुष्य की स्मरण-शक्ति बहुत छोटी है, और संसार बहुत जटिल। उससे पार पाने के लिये भूत-भविष्यत्-वर्तमान का ज्ञान प्राप्त करना अत्यंत आवश्यक है। यह शक्ति और ज्ञान या तो साहित्य से उपलब्ध होते हैं या आप्त महात्माओं के चरणों में बैठने से। मनुष्य आप्त महात्माओं को सर्वथा नहीं प्राप्त कर सकता, न उन्हें उठाकर ले जा सकता है, और यह भी नहीं हो सकता कि निरंतर उनके साथ (जहाँ वे जायँ) वह घूमता फिरे। वे भी इसे कठिन समझते हैं। इसलिये अपने ज्ञान को जन-साधारण के लिये साहित्य का रूप देकर पोथी के थैले में बंद कर देते हैं। ये थैले सुलभ होते हैं और सहज ही में अपने साथ उठाए जा सकते हैं। साहित्य एक प्रकार का देश-दर्शन है; इसके द्वारा हम जब चाहें अन्य देशों और जातियों के साथ संपर्क कर सकते हैं। साधारण यात्रा तो किसी नियमित समय में ही होती है; पर साहित्य के द्वारा हम अन्य देशों के रहन-सहन, कला-कौशलादि, तथा सब परिस्थितियों से सहज में ही परिचय प्राप्त कर सकते हैं। इसके लिये काल का कोई बंधन नहीं, और न अधिक धन का ही व्यय होता है। साहित्य में एक ऐसी शक्ति है, जिससे मनुष्य को सर्वोच्च पद प्राप्त होता है, अन्यथा वह अज्ञान में भटकता फिरता है। जैसे जन्म ही से किसी व्यक्ति को अलग रक्खा जाय, तो वह मूर्ख ही रह जायगा; क्योंकि उसे लोक-व्यवहार और साहित्य का ज्ञान ही नहीं है। मनुष्य सर्वोच्च प्राणी है। वही साहित्य-निर्माण कर सकता है। उसकी विद्या-बुद्धि और मानसिक उन्नति अन्य समस्त प्राणियों से बढ़ी-चढ़ी है; इसलिये मनुष्य सर्वोत्तम है। उसकी विद्या-बुद्धि पशु जगत् से बहुत ऊँची है। यह उँचाई ही उसे बुद्धिमान् पशु कहलाती है। साहित्य मनुष्य के मस्तिष्क की मधुर उपज है। यही मनुष्य के बाह्य और अंतर्जगत् का इतिहास है, उसके हृदय की व्याख्या है। व्यक्त वाणी अर्थात् सार्थक भाषा जीवन का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राजा दुर्लभराव

[श्रीहनूमान शर्मा की कृपा से प्राप्त]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

ress, Lucknow.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चिह्न है। यह जीवन चेतनता से भिन्न है। चेतनता तो सभी प्राणियों में है, पर इस प्रकार का जीवन नहीं। साहित्य वाणी का विकास है। विकसित वाणी मनुष्येतर प्राणियों में नहीं है, इसलिये वे मनुष्य की अपेक्षा अधिक मूर्ख, अधिक दुःखी और अधिक परवश हैं। सार्थक वाणी जीवनदाता है, जाति की पहचान है। जिनका साहित्य अच्छा है, वे मनुष्य भी अच्छे हैं। उनकी वाणी और हृदय भी अच्छा है; क्योंकि हृदय को लेखक अपने लेख में छिपाए हुए होता है। वह जैसा अपना हृदय रखता है, उसी प्रकार गुप्त रूप से अपने हृदय के भाव लेख द्वारा व्यक्त करता है। प्रत्येक मनुष्य अपनी जाति का अंग है। जिस प्रकार का मनुष्य होगा, उसी प्रकार का वह साहित्य भी लिखेगा। कोई जाति अथवा कोई देश जिस प्रवाह में बहता होगा, उसकी वृत्तियाँ या कार्यावली जैसी होगी, वैसा ही उसका साहित्य भी होगा। मुसलमानी राजत्वकाल में हमारे भारत में चारों ओर विलासिता का अँधेरा राज्य था, अतः उस काल का साहित्य भी अश्लील, सीमातिक्रांत शृंगारमय था। उसके बाद अँगरेज़ों के राज्य में दासता और विलासिता, दोनों ही अपना-अपना प्रभाव पूर्वरूपेण डालने लगीं। उसके बाद कुटिल कूट राजनीति की बारी आई। भारत पराधीनता से कुछ खिन्न होने लगा। आज भारत के कोने-कोने में इसी की धूम है। परिणामतः हमारा साहित्य भी बहुधा इसी रँग में रँगा जा रहा है। तात्पर्य यह कि जाति और देश की स्थिति के अनुसार ही साहित्य बनता है। साहित्य जातीयता का द्योतक है। जातीय साहित्य केवल उन पुस्तकों का समूह नहीं कहलाता, जो किसी एक भाषा या किसी एक देश में विद्यमान हों। जातीय साहित्य जाति-विशेष के मस्तिष्क की उपज और उसकी प्रकृति के उन्नतिशील क्रमागत अभिव्यंजन का फल है; क्योंकि लेखक देश, काल और स्थिति के वशीभूत होता है। हाँ, कोई-कोई प्रतिभाशाली लेखक इससे भी ऊँचा साहित्य लिखते हैं। यदि ऐसा न हो तो किसी कवि या ग्रंथकार की व्यक्तिगत सत्ता या विशेषता का लोप हो जाय। इतना होने पर भी उनमें काल की गति का थोड़ा-बहुत प्रभाव होता है। उन्हीं के आधार पर हम किसी जाति की शक्ति, उसकी त्रुटि और उसकी मानसिक तथा नैतिक स्थिति का ज्ञान प्राप्त करते हैं, और यह जानते हैं कि सांसारिक गति में उस जाति का प्रवाह कैसा रहा।

एक भाषा से एक साहित्य होता है। एक साहित्य से विचारैकता होती है। यह विचारैकता ही शक्ति है। साहित्य मनुष्य की विविध जटिलताओं को सुलझाने में समर्थ होता है। मनुष्य जब संसार के राग-द्वेषादि से ऊब जाता है, तब साहित्य द्वारा विविध रसों से मन को स्थिर करता है, और फिर से मनुष्य को सांसारिक कर्तव्यों की ओर लगाता है। यह साहित्य ही की महती शक्ति है।

जीवन के आनंद के लिये संगीत आवश्यक है। संगीत वाणी का ही मनोरम रूपांतर है। यह मनोरम रूपांतर मनुष्य के ही भाग्य में है, पशुओं के नहीं। इसलिये यह भी सिद्ध हुआ कि मनुष्य अधिक आनंद-प्राप्त जीव है। यह भी साहित्य ही की शक्ति की कृपा है।

साहित्य के त्याग से जीवन नष्ट हो जाता है, जातियाँ बदल जाती हैं, देश कुछ-का-कुछ हो जाता है। जब कोई जाति किसी दूसरी जाति पर अधिकार जमाना चाहती है, तो उसके साहित्य को नहीं पनपने देती। वह उसका प्रचार रोक देती है, अपने साहित्य का पठन-पाठन प्रचलित कर देती है। विजेता विजित देश की मातृभाषा नष्ट करने का प्रयत्न करता है, जिसमें पराजित देशवाले थोड़े काल में अपने प्राचीन इतिहास को भूलकर, अपनी परंपरा का ज्ञान खोकर, अपने पूर्वजों की कमाई मिट्टी में मिलाकर सदा के लिये नपुंसक बन जायँ। न मातृभाषा का ज्ञान रहेगा, न पुरानी मान-मर्यादा के जानने का अवसर प्राप्त होगा। इस प्रकार भविष्य में उनके सामने कोई उद्देश्य न रहेगा, जिसके लिये वे सिर उठा सकें। इसी न्याय पर चलकर आयरिश भाषा के नाश का जो प्रयत्न अँगरेज़ों ने किया था, वही पोलिश भाषा के मिटाने को रूस ने किया और डेनिश भाषा के मिटाने को जर्मनी ने। यह सब एक-सा और एक ही श्रेणी का यत्न, एक ही उद्देश्य की पूर्ति के लिये, एक ही लालच से किया गया था। सभी पराधीन देशों के इतिहास इसके उदाहरण हैं। इसी प्रकार हमारे भारतवर्ष पर भी अँगरेज़ों ने आकर अपनी भाषा का ही सिक्का जमाया। जगह-जगह स्कूलों और कॉलेजों की स्थापना हो गई। इस प्रकार यहाँ अँगरेज़ों का ऐसा बोलबाला हुआ कि बच्चों को जन्म से ही इसकी शिक्षा मिलने लगी। माता-पिता भी अपने बच्चों को मातृभाषा का बोध कराना अपनी मान-मर्यादा के विरुद्ध समझने लगे। फल-स्वरूप यह मानसिक दासता इतनी बढ़ी कि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपने धर्म, अपनी भाषा की सुध भी न रही। अस्तु। परिणाम-रूप कुपरिणाम सबके सामने ही है।

साहित्य की रक्षा और उसका प्रचार देश की सीमा-रक्षा से भी अधिक आवश्यक है। साहित्य का प्रचार खद्दर-प्रचार की अपेक्षा अधिक महत्त्व-पूर्ण है; क्योंकि खद्दर से केवल शरीर ढकता है, और साहित्य के सद्भावों से बाहर-भीतर दोनों आच्छादित होते हैं। साहित्य अपना रहेगा, तो हृदय भी अपना रहेगा। हृदय अपना रहेगा, तो हम भी अपने रहेंगे। हम अपने रहेंगे, तो देश भी अपना रहेगा। इसलिये साहित्य की रक्षा, देश की रक्षा से भी अधिक आवश्यक है।

संसार में कोई जाति ऐसी नहीं है, जो साहित्य की सहायता के विना स्वाधीन और उच्च हुई हो। दूसरी जाति की प्रतिभा, उसकी प्रवृत्ति, उसकी उन्नति आदि के क्रमिक विकास का इतिहास हम साहित्य से जान सकते हैं। ज्ञान-वृद्धि आदि सभी बातें साहित्य की उँचाई से होती हैं। साहित्य की उन्नति से मन ऊँचा होता है। मन की उँचाई से देश उन्नत होता है। यह सब साहित्य की ही महती शक्ति है। साहित्य के बल पर इँगलैंड का सिक्का, संपूर्ण भारतवर्ष पर जमा हुआ है, कला-कौशल की उन्नति और विज्ञान की प्रधानता है। साहित्य की ही शक्ति है कि उसने उसका मस्तक ऊँचा रक्खा। तात्पर्य यह कि कोई भी कार्य साहित्य की शक्ति से ही ऊँचा हो सकता है। किमधिकम्—

अंधकार है वहाँ, जहाँ आदित्य नहीं है;
मुर्दा है वह देश, जहाँ साहित्य नहीं है।

हिंदी-कविता-साहित्य की प्रगति

[लेखक, पं० सूर्यकांत त्रिपाठी "निराला"]

ज्ञात अनादि काल से लेकर आज तक समय के परिवर्तन के साथ-ही-साथ हमारे भाषा-साहित्य का भी परिवर्तन होता गया है। जैसे साहित्य भी सृष्टि की नश्वरता के नियमों में बँधा हो—"नवानि गृह्णाति" के अनुकूल चल रहा हो। जो सूक्ष्मातिसूक्ष्म कारण, युग-धर्म के रूप से, साहित्य में इस प्रकार के परिवर्तन करते आए हैं, इस लेख में, उन पर विचार न किया जायगा। हिंदी-साहित्य-सम्मेलन के सुयोग्य सभापतियों द्वारा इस विषय पर बहुत कुछ विचार हो चुका है। कम-से-कम, संतोष करने के लिये, कुछ अपभ्रष्ट शब्दों की सूची तो तैयार हो ही चुकी है। समय के प्रवाह में जिन अनेक शब्दों को पड़ना पड़ा, लोक-रुचि से घिसा हुआ एक परिवर्तित स्वरूप धारण करना पड़ा, प्रसंगवश, हम उन्हें ही ग्रहण करते हैं, और कहना चाहते हैं कि इतने प्रवर्तन के होने पर भी उनकी आत्मा में विकार नहीं हो पाया—उन अपभ्रष्ट शब्दों में अधिकांश शब्द ऐसे हैं, जिनके अर्थ में किसी प्रकार की विकृति नहीं हुई। इस तरह, हम देखते हैं, वैदिक साहित्य की जो निर्मल आत्मा थी, अनादि काल से आते हुए प्रवर्तनों के प्रतिघातों से जाग्रत्, सुप्त और मूर्च्छित, हमारे भाषा-साहित्य के वर्तमान क्रम हिंदी में भी वही आत्मा मौजूद है। हम यहाँ उन शब्दों पर भी विचार नहीं करना चाहते, जिनकी आमदनी दूसरे भाषा-साहित्यों से हुई है। किंतु यहाँ इतना कह देना अप्रासंगिक न होगा कि सूक्ष्म विचार करनेवाले वैदिक पंडितों के प्रमाण से दूसरे भाषा-साहित्य की सृष्टि और पुष्टि वैदिक शब्द-राशि के विकृत रूपों से ही हुई है। किस तरह इधर आर्य-भाषा में अनार्य भाव आए, इतिहास, विज्ञान, "हाँ-न"-वाली सृष्टि की विरोधी युक्तियाँ आदि इसके प्रमाण हैं। हम इस उलझन में भी नहीं पड़ना चाहते। हम केवल देखेंगे कि भारतीयता क्या है—जो आज जातीयता के रूप में, एक विचित्र शिरश्चरण-विहीन छाया की तरह दृष्टि-गोचर हो रही है—और हमारा वर्तमान कविता-साहित्य हमारी भारतीयता या हमारी वर्तमान जातीयता की ओर कहाँ तक अग्रसर है।

भारतीयता या जातीयता के प्रश्न पर विचार करने के समय जब ज्ञान-कांड और कर्म-कांड में विभाजित भारत-वर्ष की अनुभूतियों और आचरणों की ओर हम देखते हैं, तो हमें विश्वास हो जाता है—विश्वास ही नहीं, हमें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संतोषप्रद प्रमाण भी मिल जाते हैं—कि हमारी ज्ञान-भूमि की व्याख्या है 'पूर्णता', यदि एक शब्द में कही जाय, और हमारे तमाम आचरणों का संबंध उसी पूर्णता के साथ रक्खा गया है। 'समाज' की सम्यक् गतिशील रहनेवाली 'अज' धातु इसका प्रमाण है। यह गति पूर्णता की ओर ही की गई है। हम यह नहीं कहते कि आदिम सृष्टि-काल में अनार्यता थी ही नहीं, जड़ था ही नहीं; अनार्यता थी, असत् का आश्रय ज़रूर था, परंतु बहुत कम था। यह असत् उतना ही था, जितना छाया का अंश पेड़ के नीचे, और सत् उतना, जितना प्रकाश का अंश उसके ऊपर। बल्कि कहना चाहिए, सत् को सिद्ध करने के लिये ही हमारे जातीय शरीर में थोड़ा-सा असत् का अंश आया था। आज तक जितने आचरण बदले, कर्म-कांड में जो भेदातिभेद होते गए, वे ज्ञान-कांड की पुष्टि के लिये, ज्ञान-भूमि पर स्थापित होने के लिये ही हुए।

उदाहरणार्थ व्रज-भाषा-साहित्य को लीजिए। कबीर उसके वेदांत-साहित्य के रचयिता, तुलसी उसके ज्ञान-मिश्रित भक्ति-साहित्य के प्रणेता, सूर उसके अलौकिक प्रेम के प्रदर्शक और अन्यान्य भक्त-कवि उसके दिव्य भावों को पुष्ट करनेवाले, समाज के शिरोमणि, जाति के यथार्थ नेता होंगे। भूषण आदि व्रज-भाषा के ओज उसकी शिथिल शिराओं में जातीयता का प्रवाह संचालित करनेवाले होंगे। मतिराम, विहारी, पद्माकर, देव आदि उसके गृह-शरीर की वासनाओं को रूप देनेवाले, गृहस्थों के मनोविनोद की सृष्टि करनेवाले होंगे। इस तरह व्रज-भाषा की मूर्ति हमारे सामने आ जाती है—जातीय प्रगति का उज्ज्वल चित्र हमारे सामने आ जाता है। हम समझ लेते हैं, वेदांत की सर्वव्यापक चेतन भूमि में विचरण करना ही हमारी मुक्ति है, साहित्य में—

"सूर परकास तहँ रैन कहँ पाइए
रैन परकास नहिं सूर भासै;
होय अज्ञान तहँ ज्ञान कहँ पाइए
होय जहँ ज्ञान अज्ञान नासै।"
(कबीर)

"जानिय तबहिं जीव जग जागा;
जब सब विषय-विलास विरागा।
होय विवेक मोह-भ्रम भागा;
तब दृढ़ चरण-कमल अनुरागा।"
(तुलसी)

यही भाव हमारी जातीय मुक्ति के सूत्र, हमें लोकोत्तरानंद देनेवाले, हमारी जाति की आत्मा, हमारी बुद्धि में सर्वोत्तम संस्कृत, हमें मनुष्य से देवता और देवता से ब्रह्म कर देनेवाले हैं।

भारतवर्ष की किसी भी प्रांतीय भाषा को लीजिए, उसके संपूर्ण शरीर का ऐसा ही संगठन होगा। उसमें दिव्य भाव और मानव भावों की ही अधिकता होगी। आसुर भाव बहुत कम होंगे। और, उस भाषा का परिवर्तन भी आसुर भावों के बाद ही हुआ होगा, जैसे उस भाषा-शरीर को नष्ट करने के लिये ही आसुर भावों या इतर प्रवृत्तियों का दौर-दौरा साहित्य में हुआ हो।

जब हम अपने साहित्य के सुधार की चेष्टा करते हुए अपनी बनी-बनाई आँखों को रोग-ग्रस्त सोचते हैं, उन पर एक दूसरे देश के सुधार का चश्मा रख लेते हैं, उस समय हम भूलते हैं। वर्तमान शासन के 'प्रभाव' का दोष भी हमारी शिक्षा के साथ सम्मिलित होकर हमें अपनी ओर खींचता है, हमें अपनी शक्ति से वशीभूत कर लेता है। हमारी आत्मा, हमारे अज्ञात भाव से, हमारी नहीं रहती, उनकी हो जाती है; हम साहित्यिक पराधीनता स्वीकार कर लेते हैं।

भारतीय या जातीय, इन भावों को सामने रखकर हम देखेंगे, हमारी जातीय मुक्ति की ओर हमारा वर्तमान कविता-साहित्य कहाँ तक अग्रसर है।

चाहे जिन कारणों से हो, "भगवान् व्यास तुमको प्रणाम" की गहन श्रद्धा से, कविता में खड़ी बोली की गिटकरियाँ और तान-मूर्च्छनाएँ भरी जाने लगीं। उधर व्रज-भाषा के भक्तों ने संबद्ध होकर रण-घोषणा की। किसके चीत्कार में लालित्य मिलता है, इसकी जाँच चलने लगी। उस समय खड़ी बोली की कविता में प्राण न थे। वह दास्य-वृत्तिवाली ही थी। किसी-न-किसी महापुरुष के पैरों पड़ती रही। अपनी प्रार्थना से लोगों को अपनी ओर बढ़ाती रही। कुछ कवि अपने पूर्व-संस्कारों को जाग्रत् कर खड़ी बोली की शिला पर अपने पुराने ज़ंग-लगे महास्त्रों को घिसकर शानदार करने की चेष्टा में रहे। कुछ ने सीता-राम और कृष्ण भगवान् की पुरानी तान छेड़ी। साहित्य के उस काल की पूजा वैसी ही रही, जिसके संबंध में कहा है—"···अनख आलस हू, राम जपत मंगल दिसि दस हू।" महर्षि दयानंद की वैदिक प्रतिष्ठा के क़ायल,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपनी जाग्रत् प्रतिभा के ज्वर से जर्जर, निंदोक्तियों द्वारा समाज को प्रबुद्ध करनेवाले कवि भी हुए, और सबसे अधिक खड़ी बोली को मधुर करने का श्रेय रहा राष्ट्र के उष्ट्र-मार्क कवियों को, जिनकी प्रतिभा के प्रखर प्रवाह से शब्दों के गले में "त्राहि माम्" करने की शक्ति भी न रही।

खड़ी बोली के प्रथम कवियों में आर्य-भावना पर सफलता पंडित अयोध्यासिंहजी उपाध्याय को हुई। इनकी 'आर्यबाला' शायद इनकी इधर की, १० वर्ष के अंदर की, रचना है; पर है अत्यंत सुंदर—

"कमला-लौं सब काल लोक-लालन-पालन-रत ;
गिरि-नंदिनी-समान पूत पति-प्रेम-भार-नत।
गौरव-गरिमामयी ज्ञान-शालिनी गिरा-सम ;
काम-कामिनी-तुल्य मृदुलतावती मनोरम।

❀ ❀ ❀

"वह है पति-मन-मधुप के लिये लतिका कुसुमित ;
वह है सुंदर सरिस सरोजिनि सम्मति के हित।
वह है मन-मोहन-मुरलिका मधुर-मुखी, मृदु-नादिनी ;
पुर-जन-परिजन-परिवार-जन-गोप-समूह-प्रसादिनी।

❀ ❀ ❀

"पा जिनका विज्ञान बनी अति पावन अवनी ;
उन ऋषि गौतम-कपिल-व्यास की है वह जननी।

❀ ❀ ❀

"नर है पीवर, धीर, वीर, संयत, श्रमकारी ;
है मृदुतन, उपराममयी, तरलित-उर नारी।
नर-जीवन है विपुल-कार्यमय प्रांतर न्यारा ;
नाना-सेवा-निलय नारिता है सरि-धारा।
मस्तिष्क-मान-साहस-सदन वीर्यवान है पुरुष-दल ;
हैं सहृदयता-ममतावती पयोमयी महिला-सकल।"

❀ ❀ ❀

उपाध्यायजी ही उस काल के एक ऐसे रत्न हैं, जिन्हें दिव्य भावना की उपासना का श्रेय दिया जा सकता है। इनके चौपदों की सजीवता और भाषा के ऐश्वर्य से हिंदी को मौलिक बहुत कुछ मिला।

शंकरजी की कुछ वेदांत की कविताएँ मैंने देखी हैं। अन्य भावों की भी अनेक कविताएँ मैंने देखी हैं। इनकी तरह वर्ण-वृत्तों और मात्रिक छंदों का कुशल कवि हिंदी में हुआ ही नहीं। मुझे इनकी वर्णन-शक्ति से छंदोधिकार ज़बरदस्त जान पड़ता है। हिंदी के एक प्रसिद्ध समालोचक ने इनके संबंध में कभी लिखा था कि इनके उग्र शब्द जैसे अपनी उग्रता सहन न कर सकते हों। "ढकेलू ढंग ढाँपने को" इस तरह शब्दों के गढ़ने की ओर इनकी रुचि तो मिलती है, परंतु सफलता के विचार से हमें कहना पड़ता है, इनके शब्द-संगठन में कवि के हृदय की रस-प्रियता का परिचय नहीं मिलता। इनके शब्द इन्हीं के साहित्य तक परिमित रहे। प्रतिभा में रस-ग्राहिता कम रहने के कारण लोगों पर केवल प्रतिभा का प्रभाव ही पड़ा। वे इनके शब्दों के रूपों को अपना कर लेने का साहस नहीं कर सके।

खड़ी बोली का साँचा दुरुस्त हुआ बाबू मैथिलीशरणजी गुप्त की कविताओं से। गुप्तजी की कविताओं में खड़ी बोली के मार्जन के साथ-ही-साथ सती भावना की एक निर्मल ज्योति भी मिलती है। कवि की भावुकता हृदय को बहुत कुछ शांति करने की शक्ति लेकर प्रकट हुई—

चुन ले चला हमारा साथी सुमन कहाँ तू ?—
माली कठोर माली !
है छोड़ता यहाँ पर केवल कराल कंटक
यह रीति है निराली।
किसको सजायगा रे हमको उजाड़ कर यों,
यह तो हमें बता तू ;
झंखाड़ छोड़ता है इस वन्य झाड़ पर क्यों,
इत देख यह लता तू।

❀ ❀ ❀

"मृदु, मंद-मंद गति से शीतल समीर आकर
दल-द्वार खटखटाता ;
पर सज्ञ हो विरति से जाता उसे न पाकर
निर्गंध लटपटाता।"

❀ ❀ ❀

"वह फूल, जो मधुर फल उपमानुकूल लाता,
तू सोच देख मन में ;
भगवान के लिये क्या वह भोग में न आता,
बलि हो स्वयं भुवन में।"

❀ ❀ ❀

गुप्तजी की इन पंक्तियों में सहृदयता का स्रोत उमड़ रहा है। कोई पंक्ति ऐसी नहीं, जिससे भावुकता न टपकती हो, और जिसे पढ़कर पाठक सुखानुभव न करें।

गुप्तजी के साथ के अनेक कवि हैं। परंतु उन सबमें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुप्तजी की ही कविताओं में आकर्षण की शक्ति विशेष रूप से देख पड़ती है, एक सनेहीजी को छोड़कर। सहृदयता की मात्रा गुप्तजी की कविताओं से सनेहीजी की कविताओं में अधिक मिलती है। गुप्तजी संस्कृत के शुद्ध प्रयोगों के पक्ष में रहते हैं, सनेहीजी खिचड़ी-शैली के पक्ष में; इतना ही इनमें अंतर मिलता है। सनेहीजी की कविताएँ खिचड़ी-शैली में होने के कारण स्वाभाविकता से विशेष संबंध रखकर चलती हैं। गुप्तजी की कविताएँ भाषा की एक नीति के आधार पर लिखी गई-सी जान पड़ती हैं, परंतु सनेहीजी की कृतियाँ नीति से रहित। अथवा खिचड़ी-शैली ही उसकी भाषा की नीति-भूमि रही, यह कहना पड़ता है। हिंदी के, अपने समय के, ये दोनों ही कवि महान् हैं। इनसे हिंदी को बहुत कुछ मिला। सनेहीजी—

"उदासी घोर निसि में छा रही थी;
पवन भी काँपती थर्रा रही थी।
विकल थी जाह्नवी की वारि-धारा;
पटककर सिर गिराती थी कगारा।
घटा घनघोर नभ में घिर रही थी;
बिलखती चंचला भी फिर रही थी।
न थे वे बूँद, आँसू गिर रहे थे;
कलेजे बादलों के चिर रहे थे।
कहीं धक-धक चिताएँ जल रही थीं;
धुआँ मुँह से उगल वेकल रही थीं।
कहीं शव अधजला कोई पड़ा था;
निठुरता काल की दिखला रहा था।
खड़ी शैव्या वहीं पर रो रही थी;
फटी दो-टूक छाती हो रही थी।"

प्रकृति में दुःख का कितना सुंदर चित्र है! बादलों से आँसुओं का झरना, रात्रि की स्याही में उदासी, पवन की भीरुता, कंपन, जाह्नवी की जल-धारा में विकलता।

"जगत यह दुःख-सुखमय है अगर यह हम समझते हैं;
समझिए तो कि इनका भेद ही हम कम समझते हैं।
समझवाले इसे बस, एक मन का भ्रम समझते हैं;
बुरा क्या वे समझते हैं, बहुत उत्तम समझते हैं।"

❀ ❀ ❀

"वही सलिला सरस जिसमें हमारी सैर होती है;
महानिर्भय-हृदय बनके भरी नौका डुबोती है।"

❀ ❀ ❀

"मनस्वी वीर अपने चित्त पर अधिकार रखते हैं;
न दुख की भीति रखते हैं, न सुख का प्यार रखते हैं।
स्ववश निज इंद्रियाँ ही क्या, सकल संसार रखते हैं;
इसी से दीन का उपकार, निज-उद्धार रखते हैं।"

सनेहीजी की रचनाओं में पाठक देखें, किस ख़ूबी से रसों और भावों का स्फुरण हुआ है।

पंडित रामचरितजी उपाध्याय की भी कोई-कोई रचना सजीव हो गई है। इधर कुछ दिनों से राजनीति और साहित्य के मिश्रण पर लिखते रहने के कारण अब यह कवियों की पंक्ति से उठकर उपदेशकों के स्वर में स्वर मिला रहे हैं। कवि की सहृदयता पर डिपुटी उपटर्सिह का प्रभाव पड़ा है। इनकी—

"लड़ नहीं सकता मुझसे कभी,
तनिक भी नृप-बालक स्वप्न में;
कब, कहाँ, कह तो, किसने लखा,
कपि, लवा-रण वारण से भला?"

इस तरह की ललित रचनाएँ बहुत थोड़ी हैं। परंतु हिंदी के कविता-साहित्य में इन्होंने भी अपना एक सरल, निराला ढंग रक्खा और उसकी श्री-वृद्धि की।

पंडित रामनरेशजी त्रिपाठी, पंडित रूपनारायणजी पांडेय, श्रीयुत गोपालशरणजीसिंह, पंडित लोचनप्रसादजी पांडेय आदि कवियों की कोई-कोई रचनाएँ उच्च कोटि की, हिंदी की स्थायी संपत्ति, नारिकेल के फल की तरह अंतःसलिल-सिक्त और मधुर हुई हैं। विस्तार-भय से उनके उदाहरण नहीं दिए जा सके। यहाँ तक हिंदी के कवियों का यह जो प्रवाह रहा, इसमें दिव्य भावों के दीपक तो अनेक छोड़े गए, परंतु वे जलते हुए जाति के जीवन-समुद्र तक नहीं जा सके। घृत का अभाव था। कवियों की आत्माएँ प्रभात के शिशिर-स्नात फूलों की तरह प्रसन्न होकर खिल नहीं सकीं—भाषा की नवीन तंत्रियों में झंकृत कोई जागृति की प्रभाती नहीं सुनाई पड़ी। अभाव की वेदना से पीड़ित करुणा की क्षीण रागिनी उठकर संध्या के अंध वातावरण में विलीन होती रही। कुछ लोगों ने अपने गौरव के गीत भी गाए; परंतु उस समय के प्राकृतिक अभाव को वे दबा नहीं सके, उनके स्वर से ऐश्वर्य की उज्ज्वल किरणों ने स्वर नहीं मिलाया। लोगों की दिव्य भावनाओं को उनकी कविताओं से एक प्रकार से प्रोत्साहन-मात्र मिला। उस ऐश्वर्य

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की ध्वनि में "क्या खाया ?" प्रश्न के "चने की रोटियाँ और बैंगन का ख़ुश्क कबाब"-जैसे उत्तर की तरह, स्पर्द्धा और कर्कशता ही रही, प्राणों की प्रसन्न पूर्णता नहीं। पंडित रामनरेशजी त्रिपाठी ने खड़ी बोली की कविता का जो दूसरा युग स्वीकार किया है, यह वही है। इसमें सहृदयता कम और शक्ति का विकास अधिक मिलता है। गरियार बैल से हल चलवाने की चेष्टा की तरह ही खड़ी बोली के शब्दों से कविता की ज़मीन पर संसरण का गुरु कार्य कराया गया है।

शब्दों के अपभ्रष्ट रूपों में भी जिस तरह उनकी आत्मा की प्रथम ज्योति मिलती है, जिस तरह वैदिक संस्कृत से अवतीर्ण, भारतवर्ष की दूसरी भाषाएँ, वैदिक और संस्कृत की मुक्ति की तरह, अपने कर्म-कांड द्वारा अपनी ज्ञान-राशि का प्रकाश विकीर्ण करती हुई, अबाध मुक्ति की ओर अग्रसर होती गई हैं, और तब तक अभीप्सित विराम के आसन पर रहीं, जब तक उनके साहित्य-शरीर को जीर्णता ने ग्रस्त नहीं कर लिया, उसी तरह खड़ी बोली की प्रगति भी उसी मुक्ति की ओर होती जा रही है। यह मुक्ति इसे दिव्य भावना के बल से प्राप्त होगी। भारतवर्ष का जल-वायु इसी के अनुकूल है। जड़ परमाणुओं के आघात-प्रतिघातों से, कविता में जड़त्व के प्रचार से, न भाषा की मुक्ति होगी, न उससे संबद्ध इस जाति की ही मुक्ति हो सकती है। यदि देश का अर्थ मिट्टी है, यदि विश्व के माने मिट्टी का एक बृहत् पिंड है, यदि देश के उद्धार से मिट्टी के उद्धार का अर्थ सिद्ध होता है, यदि विश्व-मैत्री का सिद्धांत जड़ शरीर से प्रेम करने की शिक्षा है, और यदि आजकल के कवि इन्हीं भावनाओं की पुष्टि करेंगे, तो निस्संदेह इससे भाषा के साथ भाषा के बोलनेवालों की मुक्ति असंभव होगी। इस जाति के प्राण जड़ से नहीं, चेतन से मिले हुए हैं। यहाँ का कोई सुधार योरप की तरह प्रतिघात के बल से नहीं हुआ। कहा जा चुका है—यहाँ का कर्म-कांड दिव्य भावों से संबंध रखनेवाला, चेतन की ओर ले चलनेवाला रहा है और इस समय भी है, चाहे कोई कविता लिखने का कर्म करे या संपादन का या कुछ और। राजनीति की दृष्टि से हमारा यह पतन हमीं से हुआ हमारे इतर कर्मों के कारण, हमारी दिव्य भावना के अभाव से, हमारे जड़ाश्रय दुर्गुणों के प्रभाव से। हमीं ने कमज़ोर होकर अपने शासन के लिये दूसरों को आमंत्रित किया, और तब तक दूसरे हमारे शासक रहेंगे, जब तक इस अपनी जातीय प्रतिष्ठा, जातीय मुक्ति, दिव्य भावना के अनेकानेक महास्त्रों से, प्राप्त न कर सकेंगे।

जिस तरह बाह्य भूमि में इस प्रकार के शासक और शासित रहते हैं, उसी तरह साहित्य की भूमि में भी रहते हैं। कारण, साहित्य किसी जाति का ही साहित्य हुआ करता है और यदि वह किसी दुर्बल जाति का हुआ, तो दूसरी सबल जाति का उस पर प्रभाव पड़ना स्वाभाविक हो जाता है। हमारी पराधीन हिंदी पर पराधीनता के ही कारण फ़ारसी का प्रभाव पड़ा, अँगरेज़ी का पड़ रहा है, और आश्चर्य है, उसकी प्रांतीय सहेलियाँ, बँगला-मराठी आदि, भी उस पर रोब गाँठ रही हैं। व्रजभाषा हिंदी के समय फ़ारसी को छोड़कर दूसरी किसी प्रांतीय भाषा को उस पर प्रभाव छोड़ने का सौभाग्य नहीं प्राप्त हुआ; बल्कि बँगला-जैसी प्रांतीय भाषाओं पर उसी का प्रभाव पड़ा है। दूसरी भाषाओं से रत्नों को अवश्य ग्रहण करना चाहिए; परंतु प्रभावित होकर नहीं—प्रीत होकर।

हिंदी के उस युग की सृष्टि में, कहा जा चुका है, सहृदयता की मात्रा बहुत अधिक न थी। "भाषा की प्रथम अवस्था में जितना हुआ, बहुत हुआ" के विचार से संतोष करने के लिये यह बहुत है ॐ।

---

* श्रीयुत बाबू जयशंकरजी "प्रसाद", पंडित माखनलालजी चतुर्वेदी, पंडित मुकुटधरजी पांडेय, पंडित बालकृष्णजी शर्मा "नवीन", पंडित सुमित्रानंदनजी पंत आदि जिन कवियों की छायावादी कवियों के नाम से प्रसिद्धि हो रही है, इनकी रचनाओं ने हिंदी को क्या दिया, इस पर किसी दूसरे प्रबंध में विचार करूँगा।—लेखक

गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय
की
प्रकाशित सुंदर पुस्तकों
का
प्रचार करें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पाखंड-परिच्छेद*

[लेखक, काव्यभूषण पं० मातादीन शुक्ल "सुकवि नरेश"]

(१)

वासना के वशीभूत होके एक काव्य-दूत,
आया बन सूत, गीत गाता वही द्वार पर;
"राम-नाम जपु नीच, राम-नाम जपु नीच",
राम कौन, जप क्यों—न इसका विचार कर।
श्रोता सुन बोले, अरे, चूरन न बेच भाई,
जा, जा हट, जा रे बुद्धि का तो सतकार कर;
सदियों पुरानी बात बकता न जानता है,
ढोल पीटता है फिर उसका प्रचार कर।

(२)

शक्तियाँ समेट के उमेठ भुजमंडल को,
कलम-कुठार की दिखा दी बान अपनी;
जानते तो थे ही नहीं, तानते कहाँ लौं वह,
ज्ञान-गूदड़ी की बस देख ली है करनी!
दादुर बिचारा कूपवासी बात जाने कहाँ,
'सूप-जैसे कान गज के हैं' कभी सुननी;
कान भी नहीं हैं, ध्यान का भी यों गुमान गया,
काव्य क्या, रहस्य क्या है, क्या है नेकचलनी!

(३)

काव्य का अनंत व्योम रोम-रोम में है व्याप्त,
क्या है अब भी न प्राप्त, इसमें भी शंका है;
लेकर विवाद एक, कैसा है "रहस्यवाद",
यह बकवासवाद का ही शेष डंका है।
किंतु वह देखो जरा तुलसी 'शशी' की ओर,
'अलख', 'अनादि' में ही जिसका अतंका है;
यह क्या रहस्य, इसे जाने वह कैसे भला,
जानता जो इतना ही—रावण की लंका है।

(४)

आकर अनंत ब्रह्मांड बीच नेत्र खोलो,
अणु-अणु में विराजमान राम-नाम है;
अलख निहार, लख उसकी अपार शोभा,
थाल-भर क्षितिज के बाहर भी घाम है।
गोपिका पदारविंद त्याग के सुभाग देख,
कृष्ण के मुखारविंद की छटा ललाम है;
दृष्टि है अनंत जब, आदि-अंत ढूँढ क्यों न,
छू न किंतु, है रहस्य काव्य गुण-धाम है।

(५)

खाली राम जप के अजामिल तरा था कभी,
और तरते थे नित्य कितनेक पाप कर;
आँख-हीन, दीन लकुटीन के सहारे हारे,
भटक-भटक भव-सिंधु जाते पार कर।
वह भी विकासवाद का प्रमाद एक रहा,
नाहक़ क्यों ढोंगी-सा उखाड़ या पछाड़ कर;
तब राम-नाम, अब उसका रहस्य जान,
है रहस्यवाद यह इसका विचार कर।

(६)

मुक्ति चाहता है, तब युक्ति-उक्ति शक्ति खोज,
ओज चाहता है तब भाव-जगती में चल;
घूम-घूम चोथीं, चरीं पत्तियाँ-पलौंची ख़ूब,
ढूँढ वह, मिलता है जिनसे इन्हें भी बल।
हरे-हरे तान या वितान है सुघर जब,
तब उस मूल-रस पर भी जरा मचल;

*सुधा में प्रकाशित 'पाखंड-प्रतिषेध' कविता के उत्तर में।—लेखक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राम-नाम के रहस्य-रस की पिपासा यदि,
तो लकीर छोड़के फ़क़ीर का भी लूट फल।

(७)

वानर का रूप बदरंग देख रंग-ढंग,
भिन्न अपने से जान झिझके तमाशबीन ;
दीन-सी दुहाई दे के तीन-तीन तेरह से,
भागे भयभीत भूत-भाव भावना-विहीन।
किंतु जब कवि ने दिखाया दिल खोल चीर,
यह तो महान कोई प्रभु-भक्त है नवीन ;
राम-राम रोम-रोम में रमाए कौन यह
है रहस्यवाद वही कविता-प्रवीन पीन।

(८)

तुक-अलकावली में उलझ रहा है मन,
उसको ज़रा-सा खींच-तान सुलझाओ तुम ;
तार-तार भिन्न हो निहारो मिकदार तब,
सूक्ष्मता के सार का विचार मन लाओ तुम।
जानोगे शिला-सा भार भीषण तरा था सिंधु,
झूठ ही कलंक भारीपन का लगाओ तुम ;
बंधन-विहीन प्रतिभा को मत बाँधो अरे,
तन सुकुमार, तरवार न चलाओ तुम।

(९)

देखते शिला हो जिसे, सत्य ही नहीं हैं वह,
नवनीत-सुकुमार मार-रूप माला है ;
खून का घड़ा है अरे, भागो न सभीत मीत,
धोके मुँह देखो यह शैशव उजाला है।
नंग, अरधंग, भंग-गंगधारी शंकर के,
पद की विभूति बनी जैसे एक बाला है;
वैसे ही अकथ कवि का भी है रहस्यवाद,
अंग-अंग चतुरंग यकता, निराला है।

(१०)

झीनी-झीनी चादर-सा बादर-वितान तना,
प्रकृति की पूरी चौक लोक बीच रुचती ;
नवरस स्वागत के कलश लिए हैं खड़े,
नायिका पदारविंद धोने को है फिरती।
है रहस्यवाद के विवाह का उछाह आज,
ऋतुराज शोभा जल-थल में विचरती ;
स्वर्ग से सोहाग भाल लिए मदमाती चाल,
कल्पना-बधूटी मुसुकाती-सी उतरती।

(११)

है रहस्यवाद के रहस्य का रहस्य यह,
शस्य-श्यामला पै दीखता जो आदि-अंत है;
संत-सा विरागी, अनुरागी, धन्य त्यागी वीर,
भाषा-भाल-कुंकुम-तिलक विकसंत है।
इच्छा का न भिच्छुक, परिच्छा का न इच्छुक है,
शुभ कमनीय भाव का किशोर कंत है ;
'नीरव', 'निघोष' नित्य होकर 'अनित्य' यही,
व्याप्त जगती में है, अनादि है, अनंत है।

हिंदी की सुप्रसिद्ध और सर्वश्रेष्ठ पत्रिका

सुधा

के ग्राहक बनाइए और साहित्य-सेवा में हमारा हाथ बटाइए।

चार ग्राहक बनानेवाले को साल-भर सुधा मुफ़्त मिलेगी !

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मेल

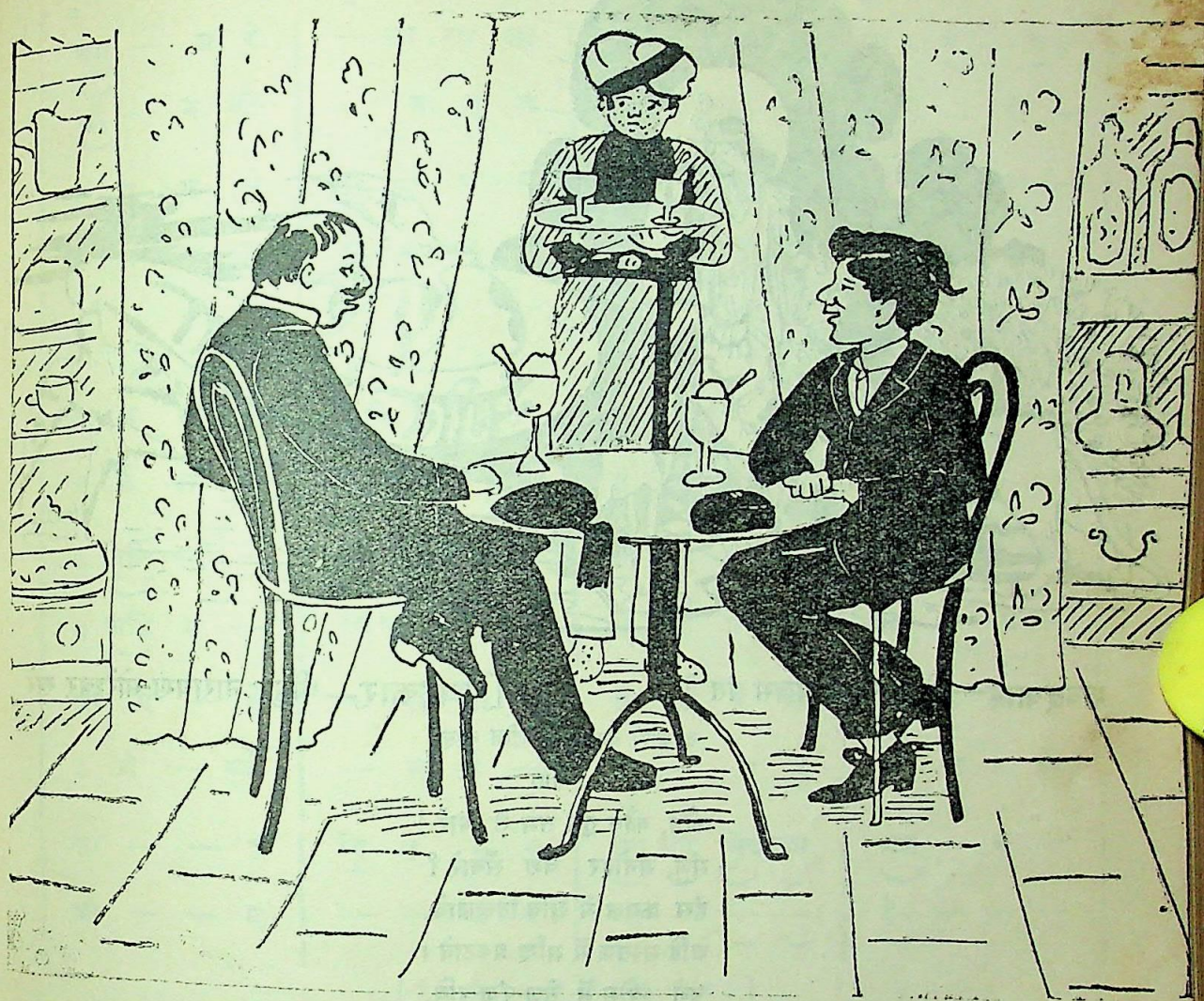

आँवले का तेल दिमाग़ और बालों के लिये बड़ा लाभदायक है और बाज़ार में सर्वत्र असली मिलता नहीं, यद्यपि दाम पूरे देना पड़ते हैं

आँवला-तेल बनाने का मसाला— हमारे यहाँ हमेशा तैयार मिलता है। एक पैकेट में १५भरी मसाला रहता है। इससे डेढ़ सेर के लगभग तेल तैयार होगा। तेल बनाने की विधि पैकेट के साथ मिलेगी। एक पैकेट का दाम ।।।≥), तीन का २।।); तेल को सुगंधित बनाने के लिये ।) की सुगंधित द्रव्य की शीशी मिलती है। ३ शीशी सुगंधिकर द्रव्य का दाम ।।≥) आना।

मँगाने का पता—एल० के० मेघानी १४ अमरतल्लास्ट्रीट, कलकत्ता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

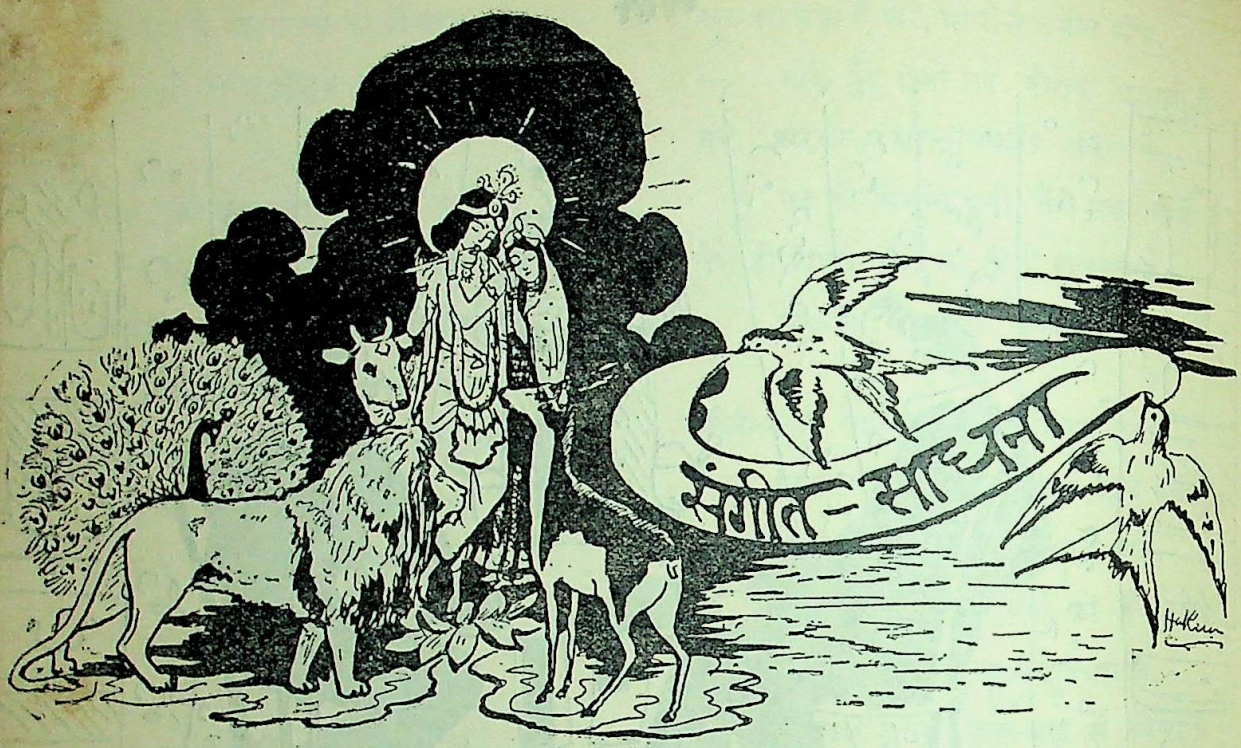

शब्दकार—श्रीयुत गोविंदवल्लभ पंत] [स्वरकार—श्रीयुत नारायण-मोरेश्वर खरे

दरबारी कानड़ा—तीन ताल

गीत

कौन, कौन तुम तम में प्यारे !
मंजु, मनोहर वेश सँवारे ?
हंस कमल में छवि दिखलावे,
अहि-मस्तक में मणि प्रकटावे।
उगे व्योम में तेज-पुंज रवि,
आए घन कारे।
कौन, कौन तुम तम में प्यारे !
चुप हो संकेतों से खिलते,
किस रहस्य को लिए मचलते ?
सुमन धरा में, जल में मुक्ता,
रजनी में तारे ?
कौन, कौन तुम तम में प्यारे !
चपला थिरक रही चंचलमति,
नृत्य-शील मन-मोर मृदुल गति।
उठ री, प्रलय-बयार ! सिंधु में,
खोलो नौका रे !
कौन, कौन तुम तम में प्यारे !

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्थायी

०			३			×			२		
मग	—	म रे	— सा	सा सा		नि	सा रे —		मग	... मप	... ग—
कौ	--	न कौ	— न	तु म		त	म में —		प्या	... ...	रे —
❀ म	म	म	प —	प	प	यनि	सांरें	निसां निप	मप	निप	मग —
❀ मं	जु	म	नो —	ह	र	के-	-- श-	सँ-	वा-	-- रे-	—

अंतरा

०			३			×			२		
❀ म	म	म	प	प ध	निध —	नि	नि सां	सां	सां	— सां	—
❀ हं	स	क	म	ल में	----	छ	वि दि	ख	ला	— वे	—
❀ निनि	सां	—	रें	रें सां	—	नि	सां रें	सां	निसां	रेंसां	धनि
❀ अहि	म	—	स्त	क में	—	म	णि प्र	क	टा-	-- वे	—
सां	मं	— रें	—	सां सां	—	नि	सां रें	प	नि	प म	प
उ	गे	— व्यो	—	म में	—	ते	— ज	पुं	—	ज र	वि
सां	—	— प	नि	प म	प	मप	मप निप	मप	मग	— म	—
आ	—	— ए	—	— ध	न	का-	-- -- --	--	रे-	— —	—

[शेष दोनों अंतरे भी इसी प्रकार ।]

संकेत

१. जिन स्वरों के नीचे बिंदु हो वे मंद सप्तक के, जिनमें कोई बिंदु न हो वे मध्य सप्तक के तथा जिनके शीर्ष में बिंदु हो वे तार सप्तक के हैं। जैसे—सा, सा, सां।

२. जिन स्वरों के नीचे लकीर हो वे कोमल हैं। जैसे रे, ग, ध, नि। जिनमें कोई चिह्न न हो वे तीव्र हैं। जैसे—रे, ग, ध, नि।

३. शुद्ध मध्यम का चिह्न "म" और तीव्र मध्यम का चिह्न "म" है।

४. यह चिह्न ⌒ मींड का प्रदर्शक है।

५. सम का चिह्न ×, ताल के लिये अंक और ख़ाली का द्योतक ० है।

६. ⌣ इस चिह्न में जितने स्वर रहें, वे एक मात्रा में गाए या बजाए जायँगे। जैसे—सारे।

७.—यह दीर्घ मात्रा का चिह्न है।

यह ❀ विश्रांति का चिह्न है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१. अवंतिसुंदरी-कथा

इस महाकवि दंडी-रचित पुस्तक के प्रकाशन का श्रेय 'दक्षिण-भारती-ग्रंथमाला' तथा उसके सुविज्ञ संपादक पं० एस्० के० रामनाथ शास्त्री को प्राप्त है। यह ग्रंथमाला की तीसरी पुस्तक है। इसकी भाषा यद्यपि गद्य है, तथापि इसकी भूमिका पद्य में है। मूल-रचना के कोई-कोई अंश नष्ट हो जाने के कारण पुस्तक में यत्र-तत्र शून्य स्थान पाया जाता है। भूमिका में कवि ने सर्वप्रथम त्रिदेव और सरस्वतीदेवी की वंदना की है, तत्पश्चात् पहले के कवियों का यशोगान किया है। गद्य-भाग का विषय तीन प्रकरणों में विभक्त है। प्रथम तो कवि ने अपनी विशद वंशावली का वर्णन किया है। फिर पुस्तक-रचना का कारण बतलाया है। अंत में कथा-वस्तु का निर्देश किया है। अवंतिसुंदरी-कथा के साथ-साथ अवंति-सुंदरीकथासार भी, जिसके रचयिता के नाम से हम अभी तक अनभिज्ञ हैं और जो पूर्वोक्त पुस्तक का एक संक्षिप्त छंदोबद्ध रूप है, प्रकाशित हुई है। 'कथासार' भी अपूर्ण आकार में उपलब्ध है। यह अनुष्टुप् छंद में है। इसके छंदों की संख्या आठ सौ है। रचना-शैली प्रायः क्लिष्ट है, एवं दंडी के 'काव्यादर्श' से बहुत मिलती है। प्रत्येक सर्ग के अंतिम छंद में 'अनंद' शब्द का प्रयोग है। भोजदेव का मत है कि यह 'अनंद' शब्द 'शूद्रक-कथा' के प्रणेता पंच-शिख का संकेत-सूचक है।

पुस्तकावलोकन से यही पता चलता है कि अवंतिसुंदरी-कथा संस्कृत-साहित्य के इतिहास पर एक नया प्रकाश डालती है। आज तक हमारी धारणा थी कि महाकवि दंडी-कृत केवल दो पुस्तकें हैं। एक 'दशकुमारचरितम्' और दूसरी 'काव्यादर्श'। किंतु मालूम हुआ कि महाकवि दंडी की लिखी यह तीसरी पुस्तक भी है। ऊपर कहा जा चुका है कि पुस्तक की भूमिका में दंडी ने अपने पूर्वकालीन कवियों के संबंध में लिखा है। इसके द्वारा हमें उन कवियों के विषय में नई सूचना प्राप्त होती है, तथा हमारे प्रथम विचार और मत में परिवर्तन हो जाता है, योरप के विद्वानों द्वारा निश्चित समय का निराकरण होता दिखाई पड़ता है। सर्वप्रथम 'वासवदत्तम्' के रचयिता सुबंधु का नाम आया है। यह मगध के अधिपति बिंदुसार के समकालीन बताए गए हैं। महाकवि दंडी लिखते हैं—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"सुबन्धुः किल निष्क्रान्तो बिन्दुसारस्य बन्धनात् ;
तस्यैव हृदयं बध्वा वत्सराज × × × ।"

इससे पता चलता है कि सुबंधु और बिंदुसार का समय ईसा से ३८० वर्ष पूर्व का है । Macdonell साहब के मतानुसार सुबंधु खीष्टाब्द की सप्तम शताब्दी में हुए थे। सुबंधु के उपरांत गुणाढ्य और 'कोरसूत्र' के प्रणेता मूलदेव के विषय में कहा गया है । ऐसा कथानक प्रचलित है कि 'बृहत्कथा' इसी गुणाढ्य कवि की रचना थी, जिसकी भाषा पैशाचिक प्राकृत थी, और जो आज लुप्त हो गई है । आगे बढ़ने पर शूद्रक का (जिनकी लिखी दो पुस्तकें 'मृच्छकटिक' और 'पद्मप्रवर्तक' हैं) नाम आता है। इनके बाद एक अन्य कवि का नाम है, जो पुस्तक खंडित होने के कारण पढ़ा नहीं गया। इन दोनों के पश्चात् महाकवि भास के अलौकिक नाटक-रचना-कौशल का दिग्दर्शन कराया गया है । 'त्रिवेंद्रम्-ग्रंथमाला' के संपादक तर्कभूषण गणपति शास्त्री ने भास का होना ईसा से पूर्व माना है । अतः यह सिद्ध होता है कि गुणाढ्य और शूद्रक खीष्टाब्द से कई शताब्दी पहले हुए थे । इस सिद्धांत के मानने से एक ओर तो पाश्चात्य मत के अनुसार शूद्रक का छठी शताब्दी में होना असिद्ध हो जाता है, और दूसरी ओर दंडी-विरचित मृच्छकटिक की किंवदंती झूठी ठहरती है । महाकवि भास के बाद क्रमशः सर्वसेन और प्रवरसेन नाम के दो कवियों का उल्लेख है । सर्वसेन-रचित 'हरिविजय' काव्य है । प्रवरसेन उस प्रसिद्ध 'सेतुबंध काव्य' के कर्ता हैं, जिसको हम प्रायः कालिदास की कृति समझ बैठे हैं । इसके बाद फिर पन्ने खंडित हैं, जिससे अन्य एक कवि का नाम नहीं पढ़ा जाता है । पश्चात् कवि-कुल-चूड़ामणि कालिदास की मुक्त कंठ से प्रशंसा की गई है । कालिदास के समय को लेकर संसार में बहुत बड़ा मतभेद देख पड़ता है, अतः इस विषय पर यहाँ कुछ लिखना व्यर्थ है । अंत में अंध-कवि कुमारदास, 'वेणीसंहार' के प्रणेता नारायण भट्ट, महाकवि भारवि, बाण, मयूर आदि कवियों का क्रमानुसार उल्लेख है। इन कवियों के समय प्रामाणिक हैं। अतएव यहाँ मतभेद का अवकाश नहीं । इन सब बातों से विदित होता है कि 'अवंतिसुंदरीकथा' की भूमिका संस्कृत के ऐतिहासिक क्षेत्र में एक बड़े मार्के की वस्तु है, और इसके द्वारा हमारी खोज का मार्ग बहुत कुछ साफ़ होता है ।

भूमिका-भाग को यहीं छोड़ अब हम पुस्तक के गद्य-अंश पर दृष्टिपात करते हैं । १—सर्वप्रथम हमें कवि की वंशावली मिलती है । भारत के उत्तर-पश्चिम में, अनंदपुर में, कौशिक-गोत्री ब्राह्मणों का एक परिवार निवास करता था । यह अनंदपुर गुजरात-प्रांत में है । यहाँ से हटकर ये लोग नासिक के अचलपुर (आधुनिक मध्य-प्रदेश का इलिचपुर)-नामक नगर में गए । वहाँ नारायण स्वामी को दामोदर या भारवि-नामक एक पुत्र-रत्न की प्राप्ति हुई। भारवि को भाग्य-चक्र के फेर में पड़कर अनेक कष्ट उठाने पड़े, तथा क्रमशः अचलपुर के युवराज विष्णुवर्द्धन (भेंगी-विजेता कृष्ण-विष्णुवर्द्धन) तथा पश्चिमी गांग-वंश के दुर्विनीत और पल्लवराजसिंह विष्णु के दरबार में जाना पड़ा । दुर्विनीत और विष्णुवर्द्धन का समय सन् ५८० ईसवी के लगभग है । अतः भारवि का भी इसी समय में होना सिद्ध होता है । भारवि के मनोरथ नाम का पुत्र हुआ, जिसके चतुर्थ पुत्र का नाम वीरदत्त था । वीरदत्त का विवाह गौरी से हुआ, और इन्हीं दोनों की संतति दंडी के नाम से प्रख्यात हुई । इससे हमें यह नई बात मालूम हुई कि दंडी के प्रपितामह भारवि थे । दंडी को बाल्यकाल ही में मातृ-पितृ-वियोग का दुःख सहना पड़ा । पश्चात् युद्ध-संबंधी झमेलों के कारण कतिपय कष्टों को भी भोगना पड़ा । कांची के नरसिंह वर्मन् और उनके पुत्र दंडी का विशेष सत्कार करते थे, तथा पल्लव-राज्य में दंडी की सदा तूती बोलती रही । मातृदत्त और रामशर्मा-नामक दंडी के दो मित्र भी थे ।

२—गद्य-भाग के दूसरे प्रकरण में दंडी पुस्तक-रचना का कारण बतलाते हैं । बात इस तरह थी कि एक दिन वास्तु-विद्या-प्रवीण मांधातृ-तनय ललितादित्य ने दंडी के सम्मुख आकर निवेदन किया कि आप कृपया महमल्लपुर (आधुनिक महाबलीपुर) चलकर मेरी वास्तु-कुशलता देखें । दंडी ने इसे सहर्ष स्वीकार किया, और निर्दिष्ट स्थान पर जाकर ललितादित्य की अलौकिक कृति देखी । किंतु थोड़े ही समय में अचानक एक दैवी घटना संघटित हो गई । लोगों ने देखा, एक गिरे हुए पद्म-पुष्प का देव-प्रतिमा के चरण से स्पर्श होते ही वह शरीर-धारी विद्याधर बनकर देवता के सम्मुख हाथ जोड़ और सिर झुकाकर खड़ा हो गया । फिर क्षण-भर ही में अंतर्द्धान भी हो गया । इस आकस्मिक प्रसंग से उपस्थित जन स्तब्ध और विस्मित हो गए । रामशर्मा ने दंडी से यह रहस्य खोलने के लिये

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रार्थना की। दंडी ने स्वयं देवता से इस गूढ़ भेद को जानना चाहा। वे सब कांची लौट आए। दूसरी गोद्वादशी की रात्रि में जब दंडी कुशपर्यंक पर पड़े विश्राम कर रहे थे, तो महाप्रभु ने प्रकट होकर अवंतिसुंदरी की कथा कही, जिसमें एक विद्याधर का शापवश पद्म-पुष्प में परिवर्तित हो जाना वर्णित है। दंडी ने इसी कथा को लिपि-बद्ध कर अपने इष्ट-मित्रों को सुनाया।

३—तीसरा भाग कथा-वस्तु से संबंध रखता है। इस विषय पर हमें कुछ अधिक कहना नहीं है। कथा-विन्यास ठीक वैसा ही है, जैसा कि संक्षिप्त रूप से 'दशकुमारचरितम्' में पाया जाता है। राजवाहन की स्त्री—अवंतिसुंदरी—कथा की नायिका है। वररुचि, शूद्रक, शौनक, कादंबरी, समुद्रदत्त आदि के विषय में जो आख्यायिकाएँ हैं, वे मूलतः 'बृहत्कथा' के आधार पर हैं। इन आख्यायिकाओं के लिखने में कवि का एक अन्य प्रयोजन देख पड़ता है। ध्यान देकर देखने से पता चलता है कि दंडी ने पौराणिक नायकों के कलेवर में अपने उपकारक पल्लव-नरेशों की कीर्ति फैलाने की चेष्टा की है। अनेक गंग और पल्लव-नरेशों की 'विक्रांत-शूद्रक' आदि उपाधियाँ थीं। एक स्थल पर तो प्रत्यक्ष साम्य हो जाता है; क्योंकि रंगपटक, जो कि शूद्रक की पटरानियों में से थी, वास्तव में पल्लव-राज नरसिंह वर्मन् की विवाहिता रानी थी।

'अवंतिसुंदरी-कथा' की रचना-शैली 'कादंबरी' की-सी है। भेद केवल इतना ही है कि यह उसके-जैसी एक धारा-प्रवाह में नहीं है। पुस्तक के जगह-जगह खंडित हो जाने के कारण इतिहास और साहित्य को बड़ी क्षति पहुँची है।

मदनप्रसाद कपूर (बी० ए० ऑनर्स)

× × ×

२. दरिद्र-नारायण

हृदय-द्वार है रुद्ध, नहीं दुखिया भीतर घुसने पाते;
धूल-भरे पैरों से डरते हैं उनके सम्मुख जाते।
हैं निर्गंध सुमन, चरणों पर रखने में हैं सकुचाते;
चना-चबेना भरी सभा में लज्जित होते हैं लाते।
हैं नत-मस्तक, हृत-आसन, गत-गौरव, जीवन्मृत, हारे;
देव! इसी से हैं तुझको प्राणों से भी दरिद्र प्यारे।
तिरस्कार का तीखा रस नीरव होकर चख लेते हैं;
आशा के अंकुर पर निर्भय हो पत्थर रख लेते हैं।
देव! डरो मत, सूख गया है कंठ, न निकलेगी अब आह;
चरण न भीगेंगे, आँखों से गिरते सूखे अश्रु-प्रवाह।
वीणापाणि! करुण-स्वर में गा तीनों लोक हिला देना;
पर इनके हृत्कंपन से वीणा के तार मिला लेना।

श्रीमोहनलाल महतो "वियोगी"
(साहित्यालंकार)

× × ×

३. एक नवीन प्रस्ताव

आजकल हिंदी का मासिक साहित्य ख़ासी उन्नति पर है। पत्रिकाओं में एक दूसरे से आगे बढ़ने की होड़-सी लगी हुई है। ये वास्तव में जागृति के लक्षण हैं। विविध विषय-विभूषित कई पत्रिकाओं की पृष्ठ-संख्या १०० से १४४ तक प्रति मास रहती है। अधिकांश पत्र-पत्रिकाएँ साल में एक-दो विशेषांक भी निकालती हैं। सारांश यह कि साल के अंत में इन पत्रिकाओं की पृष्ठ-संख्या और चित्र-संख्या इतनी बढ़ जाती है कि मूल्य को देखते ये बहुत सस्ती मालूम देती हैं।

यद्यपि कई सज्जन इन पत्रिकाओं की फ़ाइल बँधवाकर रखते हैं, पर अनेक विषयों की खिचड़ी होने के कारण न तो वे पुस्तकों का रूप धारण कर सकती हैं, और न उनका कभी उपयोग ही किया जाता है। हाँ, आवश्यकता पड़ने पर कुछ इने-गिने सज्जन एक-आध लेख देख लेते हों, तो दूसरी बात है। यदि ऐसा प्रबंध हो जाय कि साल के अंत में भिन्न-भिन्न विषयों के लेख एक जगह इकट्ठे किए जा सकें, तो अलबत्ता इनका बहुत कुछ उपयोग किया जा सकता है। मेरी तुच्छ सम्मति में तो ऐसा हो जाने पर मासिक पत्रिकाओं का आदर और प्रचार बहुत बढ़ सकता है। इसीलिये मैंने इन पंक्तियों को लिखने का साहस किया है।

जो पत्र-पत्रिकाएँ इस प्रस्ताव के अनुसार काम करना चाहें, उन्हें चाहिए कि वे सर्वप्रथम लेखों को विषयानुसार अनेक भागों में बाँट लें। यथा—चित्र, संगीत, काव्य और तद्विषयक लेख, साहित्य और समालोचना, अध्यात्म, दर्शन आदि, इतिहास, गल्प, उपन्यास, नाटक, गद्य-काव्य

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आदि, यात्रा और वर्णन, विज्ञान, जीवनी, स्त्रियोपयोगी, बालोपयोगी, राजनीति और वर्तमान आंदोलन आदि तथा विविध। पत्रिका के विषय तथा आकार के अनुसार इनमें और भी घटाव-बढ़ाव किया जा सकता है। साथ ही यह भी आवश्यक नहीं कि जितने विषय बनाए जायँ, उनमें से प्रत्येक विषय के लेख प्रत्येक संख्या में रहें। किसी संख्या में किसी विषय का लेख नहीं भी रह सकता, और किसी विषय के लेख एक से अधिक भी रह सकते हैं।

साधारणतः जिस प्रकार छपाई की जाती है, उसी प्रकार की छपाई होने से लेखों का संग्रह नहीं किया जा सकता; क्योंकि अधिकांश लेख पृष्ठों और पत्रों के बीच में आरंभ होकर बीच ही में समाप्त भी हो जाते हैं। अब यदि इनको अलग-अलग निकालकर संग्रह करें, तो किस प्रकार? इसलिये ऐसा प्रबंध किया जाना चाहिए कि प्रत्येक विषय के लेख अलग-अलग पृष्ठों पर छापे जायँ, दूसरे लेखों के काग़ज़ों के साथ उनका तनिक भी संबंध न हो। इस प्रकार छपने से यदि काग़ज़ थोड़ा ख़ाली रह जाय, तो उस जगह में उसी विषय का कोई छोटा लेख या नोट अथवा अन्य पत्रों से उद्धृत अंश तथा समाचार आदि छापे जा सकते हैं।

प्रत्येक रंगीन चित्र के सामने एक स्वतंत्र मोटे काग़ज़ पर चित्र का परिचय छपना चाहिए, जिससे साल के अंत में आसानी से सुंदर अलबम बनाया जा सके।

पत्रिकाओं में जिस क्रम से लेख छपते हैं, उस क्रम से तो पृष्ठ के ऊपरवाले भाग में अंक लगाए ही जाते हैं, साथ ही पृष्ठ के निचले भाग में विषय-विशेष के पृष्ठांक अलग लगने चाहिए। जब उसी विषय का दूसरा लेख अगले अंकों में प्रकाशित हो, तो पहले लेखवाले पृष्ठांकों से आगे दूसरे में आरंभ होना चाहिए। इसी प्रकार सब विषयों के अलग-अलग पृष्ठांक होने चाहिए, तथा उनका परस्पर संबंध भी होना चाहिए।

पत्रिका की कटाई इस प्रकार होनी चाहिए कि साल-भर की प्रतियों का आकार एक-सा रहे, तनिक भी छोटा-बड़ा न रहे। इसी प्रकार सिलाई के छेद भी प्रत्येक संख्या के एक ही सीध में होने चाहिए, जिससे साल के अंत में उन्हीं छेदों में डोरा डालकर आसानी से सिलाई की जा सके।

प्रकाशक को चाहिए कि वह अलग-अलग विषयों की पुस्तक बनाने के लिये टाइटिल पेज, विषय-सूची सहित, छपवाकर भेज दे। ग्राहकगण इसी विषय-सूची को देख-कर लेखों को छाँटकर अलग-अलग विषयों की पुस्तकें बना सकेंगे।

साल-भर तक ग्राहकगण यथासमय पत्रिका को पढ़ते रहेंगे, और वर्षांत में चित्रों का एक अलबम तथा अन्य १०-१२ पुस्तकें तैयार हो सकेंगी, सो भी नाम-मात्र के परिश्रम से। इससे अधिक आपको और क्या चाहिए? यदि तीन-चार वर्ष में एक-एक विषय की तीन-तीन चार-चार पुस्तकें हो जायँ, तो उन पर जिल्दें चढ़वा लीजिए, जो किसी भी समय आपका मनोरंजन भी कर सकती हैं, और आपके पुस्तकालय की शोभा भी बढ़ा सकती हैं।

यद्यपि उपर्युक्त प्रकार से प्रकाशन करने में ख़र्च कुछ ज़्यादा पड़ेगा, थोड़ा परिश्रम भी अधिक उठाना पड़ेगा, परंतु पत्रिका का प्रचार बढ़ जाने से सब सफल हो सकता है। एक बात और भी है। यदि पत्रिका में कोई महत्त्व-पूर्ण लेख-माला निकले, तो उसकी अतिरिक्त कापियाँ छपवाकर साल के अंत में पुस्तक बनाकर भी बेची जा सकती है। विशेष कर गल्प, क्रमशः प्रकाशित उपन्यास, नाटक आदि में तो यह रीति बहुत ही उपयोगी सिद्ध होगी। कहने की आवश्यकता नहीं कि इस प्रकार पुस्तकों के प्रकाशन में ख़र्च भी कम पड़ेगा।

इन पंक्तियों के लेखक को संपादन अथवा मुद्रण-कला का तनिक भी अनुभव नहीं है। इसलिये इस रीति से कार्य करने में जो-जो कठिनाइयाँ उत्पन्न हो सकती हैं, उन्हें समझने में वह असमर्थ है। उन्हें ढूँढ़कर दूर करना इस विषय के विशेषज्ञों का ही काम है। अंत में मैं विद्वानों तथा विविध विषय-विभूषित पत्रों के संपादकों से निवेदन करता हूँ कि इस विषय पर अधिक विचार करें।

लक्ष्मीनारायण पचीसिया

× × ×

४. सरिता का जीवन-संगीत

उस अगाध सागर का ही हूँ मैं छोटा-सा एक स्वरूप;
सागर ही है मेरे जीवन का सर्वस्वाधार अनूप।
कर्म-चक्र में फँसकर ही मैं हूँ उससे हे विश्व! विभिन्न;
पर सचमुच मैं हूँ सागर की, वह है मेरा हृदय-अभिन्न।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मिलने की आशा से ही मैं बही जा रही हूँ अविराम ;
खा समीर के मधुर थपेड़े गाती हूँ संगीत ललाम ।
उदयाचल से ऊषा आ नित करती है मेरा शृंगार ;
मेरी विस्तृत गोदी में रवि-किरणें करती हैं अभिसार ।
निशा-काल में निशानाथ आ सुधा-धार बरसाता है ;
मेरी तरल तरंगों से मिल मचल-मचल मुसकाता है ।
मुझे देखकर नभ में बादल हो विभोर लहराते हैं ;
मेरी ही बूँदों से भू पर नवल छटा छहराते हैं ।
गए बीत दिन बहुत और थोड़ा-सा समय बिताना है ;
जिसका हूँ मैं लघु स्वरूप, उसमें ही फिर मिल जाना है ।

श्रीकेदारनाथ मिश्र गौड़ "प्रभात"

× × ×

५. बिहार के नार्मल स्कूल

पटना-नार्मल स्कूल की स्थापना सन् १८६३ ईसवी में हुई थी। सन् १९१९ तक इस स्कूल में मिडिल वर्नाक्युलर-पास विद्यार्थी भर्ती होकर सरकारी छात्र-वृत्ति पाकर तीन वर्ष तक शिक्षा पाते थे, और ट्रेनिंग समाप्त होने के पश्चात् मिडिल वर्नाक्युलर-स्कूलों में जीविका पाकर हिंदी-शिक्षक का कार्य करते थे। देशी भाषा तथा गणित आदि विषयों में इनकी योग्यता इतनी हो जाती थी कि उक्त स्कूलों में देशी भाषा-शिक्षा का कार्य सुचारु रूप से चला लेते थे। बिहार-गवर्नमेंट ने सन् १९२३ ईसवी से इन स्कूलों (Secondary Training Schools) की नीति में परिवर्तन कर दिया, जिसके अनुसार अब मैट्रिकुलेट भर्ती हो रहे हैं, और दो वर्ष की ट्रेनिंग पाकर मिडिल वर्नाक्युलर स्कूलों में हिंदी-भाषा पढ़ाने के लिये शिक्षक नियुक्त होते हैं ; क्योंकि नवीन शिक्षा-प्रणाली की जानकारी में वे अधिक दक्ष समझे जाते हैं, चाहे उनकी योग्यता हिंदी-भाषा की सेवा के लिये कम ही क्यों न हो। एक ओर हिंदी-साहित्य-सम्मेलन, प्रयाग ने 'विशारद' आदि की परीक्षा जारी की है, जिसमें देशी भाषा के विद्वान् भली भाँति हिंदी-साहित्य का ज्ञान प्राप्त करके देश की सेवा कर सकें, दूसरी ओर बिहार के शिक्षा-विभाग के चंद महारथी, वर्नाक्युलर डेवलपमेंट के प्रश्न को हल करने का काम युनिवर्सिटी का बताते हैं । वे यह भी कहते हैं कि मिडिल वर्नाक्युलर-पास विद्यार्थियों या हिंदी-भाषा के उपासकों को अपनी उन्नति का कोई दूसरा रास्ता नहीं मिलता, तो वे नार्मल स्कूल पर धावा करते हैं। बिहार की देशी-भाषोन्नतिकारिणी सभा की रिपोर्ट ने एक अलग ही झगड़ा खड़ा कर दिया है। वह यह कि ऊपर की कक्षाओं में हिंदी-उर्दू अनिवार्य कर दी जाय। इसमें कोई संदेह नहीं कि हिंदी उन्नति के शिखर पर है—हाई स्कूलों तथा कॉलेजों में उसको उच्च स्थान देना हर एक विचार-वान् का धर्म होना आवश्यक है । परंतु विचारने योग्य बात यह है कि जो लड़का नीचे के वर्ग से लेकर मिडिल तक या नार्मल स्कूल की पढ़ाई तक हिंदी-भाषा की शिक्षा पावेगा, उसकी योग्यता बच्चों की शिक्षा के लिये कहीं अधिकतर लाभदायक ठहरेगी। मैट्रिक-पास या एफ़्० ए०-पास विद्यार्थी सी० टी० होने पर अपने को अँगरेज़ी का विद्वान् समझते हैं। हिंदी-सेवा की ओर उनका झुकाव कम रहता है। यदि वे चाहें, तो उनका ज्ञान-भांडार मिडिल के विद्यार्थी से कहीं अधिक है ; परंतु कम वेतन पर मिडिल स्कूलों में काम करने में उनका मन नहीं लगता। ऐसी हालत में हिंदी की हानि ही की संभावना है। बिहार में तीन प्रकार की ट्रेनिंग-संस्थाएँ हैं—

(1) Training College, (2) Secondary Training Schools, (3) Elementary Training Schools.

(1) Training College में बी० ए०, एम्० ए० ट्रेंड होते हैं, जो बी० एड्० की उपाधि से भूषित होकर हाई स्कूलों में ट्रेंड शिक्षक का कार्य करते हैं। प्राविंस में एक कॉलेज ऐसा है।

(2) Secondary Training School में मैट्रिक या आई० ए०, दो वर्ष की ट्रेनिंग द्वारा, हिंदी मिडिल स्कूलों में शिक्षक का कार्य पाने के लिये शिक्षित किए जाते हैं । प्रत्येक डिवीज़न (कमिश्नरी) में एक-एक स्कूल ऐसा है।

(3) Elementary Training Schools में एम्० बी०-पास प्राइमरी स्कूल के शिक्षक ट्रेनिंग पाकर १३) या १५) मासिक पर लोअर प्राइमरी तथा अपर प्राइमरी में शिक्षक का कार्य करते हैं। ऐसे स्कूल हर एक ज़िले में ७ या ८—जन-संख्या के अनुसार—हैं। इनका भी रूप

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परिवर्तन होनेवाला है। दो वर्ष की ट्रेनिंग दी जायगी। कोर्स कुछ बढ़ा दिया जायगा। इसका संचालन किसी ट्रेंड ग्रेजुएट के अधीन रहेगा। सहायक शिक्षक सी० टी० या नार्मल-पास रहेंगे। प्राइमरी शिक्षा अनिवार्य होने का निश्चय हो गया है। ऐसी हालत में शिक्षकों की आवश्यकता बढ़ती जायगी। इस दशा में ट्रेनिंग का रहना ज़रूरी है।

संयुक्त-प्रांत में अपर प्राइमरी मिडिल स्कूलों में नार्मल-पास ही शिक्षक का कार्य करते हैं। बिहार में हिंदी की पढ़ाई के लिये एफ़्० ए० या मैट्रिक को लेना युक्तिसंगत नहीं मालूम पड़ता। बल्कि इस स्थान को विशारद या हिंदीरत्न पाते, तो कहीं अच्छा होता, तथा बिहार-गवर्नमेंट नार्मल स्कूल की पढ़ाई इस ढंग की करती, जिसमें विशारद आदि योग्यता के मनुष्य तैयार होते, तो ठीक था। परंतु आशा की संभावना कम है; क्योंकि हाल में पटना ट्रेनिंग स्कूल की नई इमारत के उद्घाटन के अवसर पर लाट साहब ने अपने भाषण में कहा है—'मैं इस बात का स्वागत करता हूँ कि नार्मल स्कूलों में एम्० बी०-पास विद्यार्थियों का स्थान मैट्रिक ने ले लिया। आशा की जाती है कि निकट भविष्य में मैट्रिक का स्थान आई० ए० वाले लेंगे। यह उन्नति का चिह्न है।" ऐसी हालत में हिंदी की उन्नति कहाँ तक होगी, ईश्वर ही जाने।

मथुराप्रसाद (अध्या० ट्रेनिंग स्कूल)

× × ×

६. अंधा कुआँ

आँख लगी थी जिस पर सबकी, आज पड़ा वह अंधा है;
जीवन दे जो श्रम हरता था, डाल दिया क्यों कंधा है?
टूटी पड़ी जगत है उसकी, जगत टूटता था जिस पर;
भूर-भूर है जिसे सराहा, आया भूर धूर से भर।
कभी न टूटा तार धार का, ऐसा जगता सोता था;
देख विपुल जलराशि मेघ भी पानी भर-भर रोता था।
गरमी में बाज़ार गरम था जहाँ पिलाने का पानी,
आज हुआ है ठंडा सब कुछ मगर नहीं ठंडा पानी।
लोग जहाँ भरते थे पानी, आज वहाँ भरते हैं आह;
आते हैं जो बड़े चाह से, पाते हैं वह सूखा चाह।
जल के तट के घने वृक्ष-तल बैठ पथिक सुसताते थे;
शीतल जल पीकरके जिसका शीतल हो सो जाते थे,
उस तरु की जड़-राशि प्यास से कूएँ के भीतर जाकर,
लटकी रही किनारे से नीचे ख़ाली कूआँ पाकर।
लोना लग-लग खाता जाता है, जो हैं सेवर ईंटे;
खोद-खोद मिट्टी निकालकर बना रहे हैं बिल चींटे।
नीचे बैठा एक भेक है कभी कूद जो आया था,
जिस पानी के दुनिया का कुछ ओर-छोर नहिं पाया था,
आज वही मिट्टी में बैठा जल के लिये तरसता है;
'टर्रू' बोल माँगता पानी, मिलता कहीं न रसता है।
दीवारों से निकल पेड़ यक पीपल का है उग आया,
कड़ी धूप की किरणों से जो कूएँ में करता छाया,
जिसकी डालों पर कपोत के झुंड 'गुटुरगूँ' करते हैं,
निष्कंटक इस कूप-कोट में जो स्वच्छंद विचरते हैं,
जिसकी टूटी दीवारों को चोंचों से खोखली बना,
चारों ओर बनाकर कोटर देते हैं अंडा-बच्चा।
भरने जल आई पनिहारी ख़ाली घड़ा लिए बेकल;
रस्सी लेकर साँस खींचती आँखों में भर लाई जल।

गुरुभक्तसिंह "भक्त"
(बी० ए०, एल्-एल्० बी०)

× × ×

७. मकार की महिमा

मनमोहन मिश्र मथुरा में महात्मा माने जाते थे। उनके मकान में माता, महिला, मामा, मामी और मेहमान मृत्तिका के महादेव की महिमा मानते और महामाया से मंगल-कामना के लिये मानता माना करते थे। वह मथुरा से महावन, माठ में मोहनभोग का मधुरास्वादन लेते हुए मुंबई गए। मुंबादेवी-मुहल्ले के एक माले में मंगल-ग्रह की माला जपने और मारवाड़ियों के यहाँ महाप्रसाद लेने लगे। महाप्रसाद में मेवा, मिठाई, मोहनभोग, मठरी, मालपुआ, मावा, मेथीपाक और मुख्य-मुख्य मिष्टान्न खाते और मुंबई के मुहल्ले-मुहल्ले में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

घूम-घूमकर मौज मारा करते थे। मुंबादेवी और मारवाड़ी-बाज़ार के मध्य में मेरठ के माधव महाराज का माला था। महालक्ष्मी की मेहर्बानी से इन्हीं माधव-महाराज ने मनमोहन मिश्र को मालामाल कर दिया। मन-मानती माया लेकर मिश्र महाशय मथुरा आ गए।

मथुरा आकर मिश्रजी ने मालवमयूर, मारवाड़ी-गज़ट, मेदिनी-बांधव, मारवाड़ी-समाचार आदि में मज़मून पढ़े। 'मेरे ही मामले' में मज़मून देखकर वह मन-ही-मन मुसकिराए। मासिक पत्रों के मज़मूनों में उनका मन महब हो जाया करता था। मज़हब के मामले उनके मत से मट्टी के मुआफ़िक़ थे। मात्र मुसलमानों के मत में मुहम्मद को वह महात्मा मानते थे। मथुरा के महामहिम महेश्वर महला ने महादेव के मंदिर में मनमोहन को माला जपने पर मुक़र्रर किया। माला ही ने उनका मन महादेव की महिमा में मज़बूत कर दिया, और तब वह—

"मन्मना भव मद्भक्तो मद्याजी मान्नमस्कुरु ;
मामेवैष्यसि युक्त्वैव मात्मानं मत्परायणः।"

को मूल-मंत्र मानने लगे। इसी के माहात्म्य से वह सच्चे महात्मा बने। मरते दम तक मिश्रजी ने इसी मूल-मंत्र का मनन किया। यही उनके लिये महिमा का और फिर मोक्ष का मसाला बन गया।

मेहता (लज्जाराम शर्मा)

× × ×

८. श्रीगुरु नानकदेव और नव गुरु

पंजाब-प्रांत में एक हिंदू खत्री कालूराम के घर श्रीगुरु नानकदेवजी का जन्म हुआ। आपने १५ वर्ष की अवस्था में उदासीन भेष की दीक्षा गुरु संत रैण उदासी महात्मा से ग्रहण करके हमेशा के लिये साधु-भेष में ही रहना स्वीकार किया। इनके जन्म के समय में हिंदुओं पर घोर अत्याचार हो रहे थे। इनका मुख्य उद्देश हिंदू-धर्म की रक्षा और हिंदू-जाति को हर तरह से बचाना था। इसी लक्ष्य को सामने रखकर आपने यथाशक्ति आयु-भर कार्य किया। आपके वचन इसके प्रत्यक्ष प्रमाण हैं। यथा—

"खत्रियाँ तो धर्म छोड़ा म्लेच्छ-भाषा गही ;
सृष्टि सब यकवर्ण होई धर्म की गति रही।"
(आदिग्रंथसाहब, धनाश्री, महिला १)

अर्थ—क्षत्रिय हिंदू लोग अपने धर्म को छोड़ते चले जाते हैं। इसी अनुसार अन्य हिंदू भी अपनी संस्कृत-हिंदी भाषा का परित्याग करके म्लेच्छ-भाषा (फ़ारसी) को ग्रहण करते चले जा रहे हैं। अब तो सब सृष्टि एकवर्ण हो गई, और धर्म की गति नष्ट होती देखी जाती है। उस समय हिंदू लोग अपने पुराने आदेशों से विमुख किए जाते थे। उनको बचाने के लिये ही यह वाक्य था।

"हिंदू सालाही-सालाहन दर्शनरूप अपार ;
तीरथ नावहि अर्चापूजा अगर बास वहुकार।"
(आदिग्रंथसाहब, आसावार, महिला १)

ये हिंदुओं के ऊँचे आदर्श बनानेवाले कर्तव्य थे, जिनको मुसलमान अन्याय के साथ मिटा रहे थे। इस दशा को

बालरूप श्रीगुरु नानकदेवजी

देखकर गुरु नानकदेव के हृदय में हिंदू-धर्म के क्षीण होने का विशेष कष्ट हो रहा था।

गुरु नानक का ही उद्देश लेकर पंचम गुरु अर्जुनदेवजी तक सब गुरु महाराज शांत रूप से अपने हिंदू-मत का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रचार भजनवाणी द्वारा करके ही इसलामी लहर को रोकते रहे।

छठे गुरु हरगोविंदजी से ही शुरू में विरोध प्रत्यक्ष में प्रकट हुआ। जिस समय इनको गुरुआई की गद्दी पर स्थापित किया गया, उस समय सेल्ही-टोपी (उदासियों का बाना), पाँच पैसे, नारियल धर करके गद्दी दी जाती थी। यह परंपरा की रीति गुरु नानकदेवजी के समय से चली आती थी। इसी के अनुसार हरगोविंदजी को भी उपर्युक्त वस्तुएँ भेंट में दी गईं। उस समय हरगोविंदजी ने कहा—"मैं युद्ध करके हिंदू-जाति को बचाना चाहता हूँ, इसलिये अस्त्र-धारण करूँगा, सेल्ही-टोपी नहीं।"

इस वचन से छठे गुरु महाराज के मानसिक भाव स्पष्ट प्रकट होते हैं।

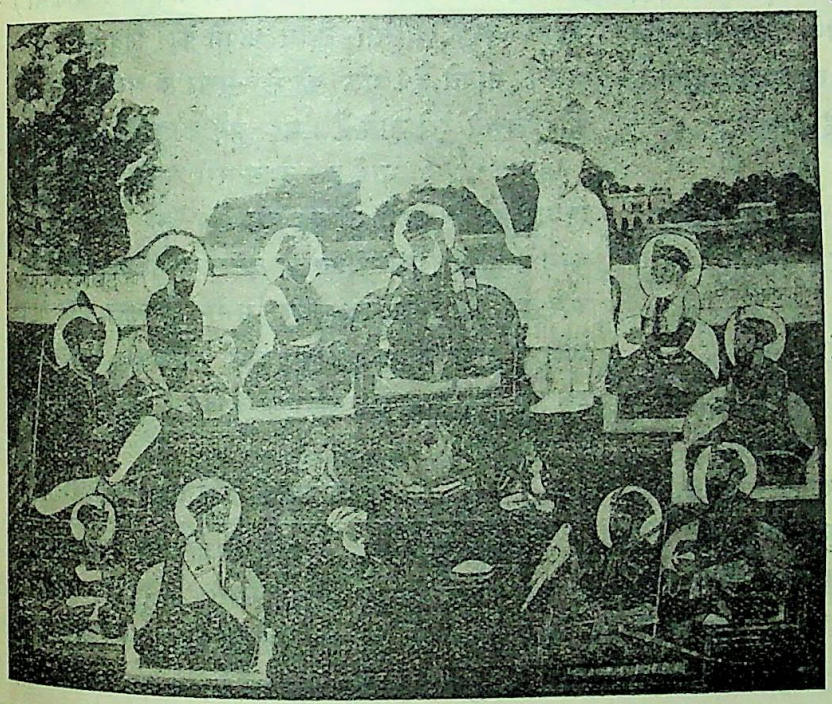

दसो गुरु महाराज

मुसलमान भी छठे गुरुजी को हिंदुओं का पीर मानते थे। "हरगोविंद हिंदुन के पीर" (सूर्यप्रकाश, पृष्ठ ४८०) यह वाक्य एक क़ाज़ी ने छठे गुरु के विरुद्ध नालिश करने के समय कहा था।

नवम गुरु श्रीतेग़बहादुरजी ने अपने हिंदू-धर्म, चोटी, जनेऊ और तिलक की रक्षा के लिये ही देहली में अपना परम प्यारा शीश दिया था, जिसका संक्षिप्त विवरण यों है—

एक समय काश्मीर के कुछ ब्राह्मण तथा दूसरे देशों के हिंदू भाई इकट्ठे होकर नवम गुरुजी के पास आनंदपुर में आकर प्रार्थना करने लगे कि महाराज, अब तो धर्मांध मुसलमानों के अत्याचारों की हद हो चुकी। हमारे ही सामने यवन क़साई लोग गउओं का घात करते हैं, और हमारे ही लोगों के यज्ञोपवीत उतार, चोटी काट, बल-पूर्वक हम लोगों को म्लेच्छ बना रहे हैं। पीड़ित हिंदुओं के इन मर्मभेदी वचनों को सुनकर गुरु तेग़बहादुरजी बोले—"इस समय किसी धर्मात्मा हिंदू का बलिदान होना आवश्यक है।" इस वाक्य को सुनकर गोविंदसिंहजी, जो उस समय बाल-अवस्था में थे, बोले—"हे भगवन्, आपसे बढ़कर और कौन हिंदू धर्मात्मा हो सकता है? आप ही इस धर्मरूपी वेदी में आत्मबलिदान कीजिए।"

इस बात को सुनकर गुरु तेग़-बहादुरजी बड़े प्रसन्न हुए, और देहली में औरंगज़ेब के बुलाने से जाकर उससे वार्तालाप करते समय साफ़ निर्भय शब्दों में कहा—

उत्तर अन्यो धर्म हम हिंदू;
अति प्रिय को किमि करैं निकंदू।
लोक-प्रलोक बिखै-सुखदानी;
आन न पइयत याहि समानी।
मन मलीन मूरख मति जोय;
इसकों त्यागहि पामर सोय।
हिंदू-धर्म रखै जग माहीं;
तुमरे कहे विनसिहै नाहीं।"
(सूर्यप्रकाश, रास १२, असू६४)

इन वचनों से गुरु तेग़बहादुर-जी का अपनी हिंदू-जाति और धर्म पर गूढ़ प्रेम टपक रहा है। गुरु महाराज के इन वचनों को सुनकर औरंगज़ेब ने क़त्ल करने की आज्ञा दे दी। इसी आज्ञा से परमपुनीत हिंदूधर्मरक्षक शांत आत्मा गुरु तेग़बहादुरजी देहली की चाँदनी-चौक में (वि०सं० १७३२, मार्गशीर्ष-शुक्ल ५, गुरुवार को, मध्याह्न समय) तेज़ तलवार से मौत के घाट उतार दिए गए।

इस बलिदान की चर्चा सारे देश में बिजली की तरह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फैल गई। पीछे गुरु गोविंदसिंहजी अपने पिता की धर्म-मृत्यु के संबंध में यों लिखते हैं—

"तिलक जंजु राखा प्रभु ताका ;
कीन्हो बड़ो कलू में शाका।
साधन हेत इती जिन करी ;
शीश दिया पर सी न उच्चरी।
धर्म हेत शाका जिन कीया ;
शीश दिया पर सिर रन दीया।"

(दशम ग्रंथ विचित्र नाटक, ध्या० ५)

अर्थ—परमेश्वर ने मेरे पिता के तिलक, जंजू (जनेऊ) की लाज रख ली। मेरे पिता ने अपने हिंदू-धर्म को रखने के लिये शीश दे दिया ; पर धर्म से पतित न हुए। यह काम इन्हीं-जैसे धर्मात्मा वीर पुरुषों का था।

पश्चात् गुरु गोविंदसिंहजी ने अपने हिंदू-धर्म की रक्षा और अपने पिताजी (गुरु) का बदला लेने के लिये नैना-देवी में यज्ञ करके देवी भगवती को प्रत्यक्ष कर यह वरदान माँगा—

"यही देहु आज्ञा तुरकन गहि खपाऊँ ;
गऊ-घात का दोष जग से मिटाऊँ।"

(दशम ग्रंथ, छक्का-छंद ५)

इसी उद्देश को मुख्य रख करके सिंह (ख़ालसा)-मत में कुछ हिंदुओं को लगाते हुए कहा—

"सकल जक्क में खालसा-पंथ गाजै ;
जगै धर्म हिंदू तुरक द्वंद भाजै।"

(दशम ग्रंथ)

गुरु गोविंदसिंहजी का यह वाक्य स्पष्ट प्रमाण है कि हिंदू-धर्म बचाने के वास्ते ही आपने कुछ हिंदू-वीरों को युद्ध करने के वास्ते ख़ालसा बनाकर युद्ध कराया था। पीछे सिंहों की कमज़ोरी होते देखकर महंत बाबा कृपालदासजी उदासी ने आकर युद्ध में सहायता कर दशम गुरु को जितवाकर हिंदू-जाति की रक्षा की। यथा—

"कृपाल कोपियं कुंत को सँभारी ;
हठी खान हय्यात के शीश झारी।
उठी छिछइ छंक ढामेद जोरं ;
मनो माखनं माटकी कान्ह फोरं।"

(दशम ग्रंथ, विचित्र नाटक, ध्या० ८)

अर्थ—महंत कृपालदास ने हठी ख़ाँ और हयातख़ाँ का मय फ़ौज के सिर फोड़ दिया, जिस तरह श्रीकृष्णजी ने गोपियों की माखन की मटकियाँ फोड़ी थीं।

यह सब विवरण लिखने का मतलब यह है कि सब गुरु पक्के हिंदू थे, और हिंदू-धर्म की रक्षा करना उनका प्रण था। वे हिंदू-क़ौम की रक्षा के वास्ते ही अपना सर्वस्व मिटाते हुए अंत को बच्चों तक को बलिदान की वेदी में चढ़ा गए।

परंतु शोक है कि उन्हीं धर्मगुरुओं के सिंह (ख़ालसा) कहला करके ख़ालसा लोग अपने को हिंदू-क़ौम * से अलग मानते हैं। गऊ को भेड़-सुअर के समान † कहते और लिखते देखे जाते हैं। यह बड़े शोक की बात है।

हरएक हिंदू भाई इस दुःख-भरी आवाज़ को पढ़कर विचार करे कि कहाँ तो वह गूढ़ हिंदू-धर्म और गो-रक्षा करने के वास्ते ख़ालसा बनाना दशम गुरुजी का कर्तव्य था, और कहाँ आजकल गऊ-सुअर समान लिखना और हिंदू-क़ौम से बाहर जाना! सिख और ख़ालसा भाइयों को इस पर विचार करना चाहिए। वे हिंदू हैं, और हिंदू-धर्म के रक्षक भी।

महंत स्वामी हरिनामदास उदासीन

---

* देखो पुस्तक "हम हिंदू नहीं" वज़ीर-हिंद प्रेस, अमृतसर की छपी, सरदार कान्हासिंह-रचित।

† देखो अख़बार ख़ालसा पारलीमिंट गज़ट १५ असू, सं० १९८४—मुताबिक़ तारीख़ १ ऑक्टोबर, सन् १९२७ ई०, सफ़ा १, कालम २।

सुधा की दसवीं संख्या

"साहित्य-संख्या"

होगी। इसमें १२ रंगीन चित्र, ८ व्यंग्य-चित्र, कई दर्जन सादे चित्र रहेंगे। २२५ पृष्ठों की यह संख्या हिंदी-साहित्य में एक अपूर्व चीज़ होगी। मूल्य १॥) । सुधा के ग्राहकों को मुफ़्त मिलेगी। अगर आप सुधा के ग्राहक न हों, तो शीघ्र बनें। नहीं तो पूरे दाम ख़र्च करने पड़ेंगे।

मैनेजर सुधा, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

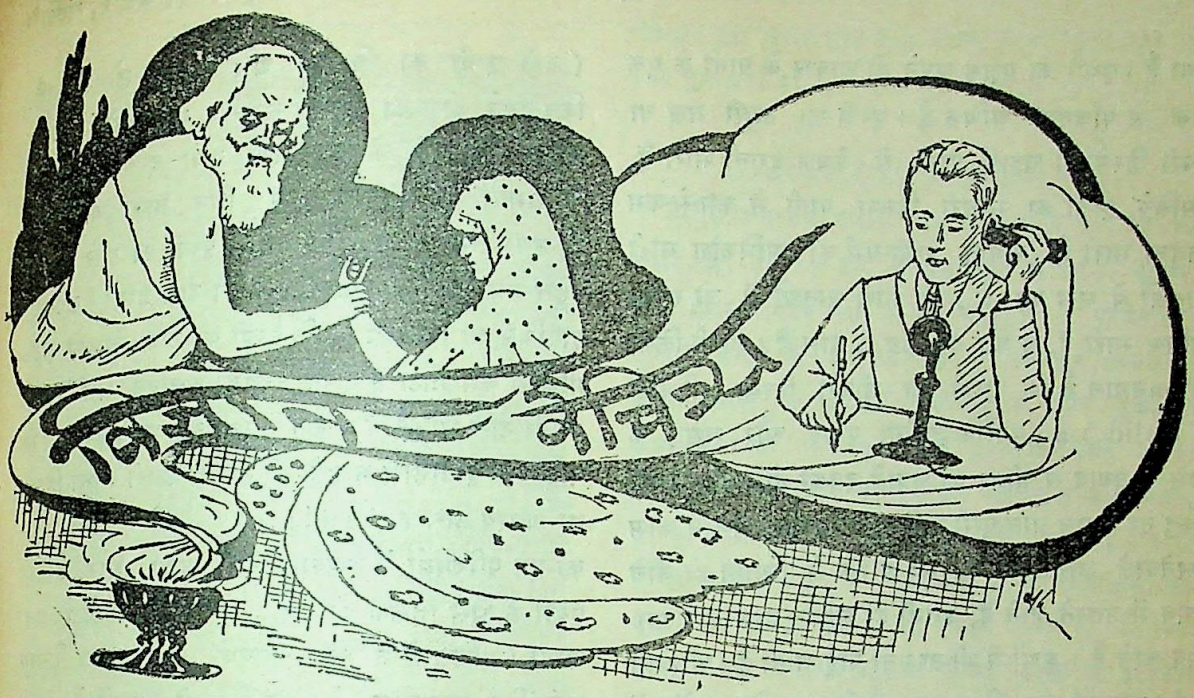

१. पृथ्वी का गर्भ

जिस ग्रह पर हम लोग रहते हैं, उसके प्रत्येक हिस्से की जानकारी प्राप्त करने के लिये सभी मनुष्य उत्सुक जान पड़ते हैं। हमारी उत्सुकता को दूर करने की चेष्टा वैज्ञानिक लोग अनेक प्रकार से कर रहे हैं। कुछ तो उत्तरी ध्रुव तक पहुँचने की धुन में लगे हुए हैं, कुछ सहारा की बालुका-राशि का पता लगाने के लिये कमर कस चुके हैं, कुछ आफ़्रिका के दुर्गम जंगलों में प्रवेश कर वहाँ का रहस्योद्घाटन करना चाहते हैं, हिमालय की चोटी पर पहुँचने की कई बार चेष्टाएँ हो चुकी हैं। इनके अतिरिक्त समुद्र-तल का अनुसंधान संसार के भिन्न-भिन्न हिस्सों में भिन्न-भिन्न मनुष्यों या संस्थाओं द्वारा चल ही रहा है। ये सारी चेष्टाएँ कुछ अंश तक सफल भी हुई हैं; किंतु सफलता की मात्रा दाल में नमक के बराबर भी नहीं है। अभी हमारे घरों के पास ही ऐसे अनेक स्थान पड़े हुए हैं, जिनके विषय में कोई कुछ नहीं जानता। संसार के अज्ञात स्थानों का पता लगाना किसी एक मनुष्य का काम नहीं, और न वह एक दिन का काम है। इसके लिये मनुष्य और समय, दोनों की आवश्यकता है। पृथ्वी के ऊपरी हिस्से को छोड़कर आभ्यंतरिक हिस्से की खोज करना भी वैज्ञानिकों का कर्तव्य है। इसलिये वे पृथ्वी के गर्भ का पता लगाने में भी उसी प्रकार दत्तचित्त हैं, जिस प्रकार इसके ऊपरी हिस्से का। किंतु पृथ्वी के ऊपरी हिस्से का पता लगाना जितना आसान है, उतना इसके भीतरी हिस्से का पता लगाना नहीं। एक में हम लोग जो कुछ देखते हैं, प्रत्यक्ष अपनी आँखों के सामने देखते हैं; किंतु दूसरे में अधिकतर अनुमान ही से काम लेना पड़ता है। भूगर्भ-शास्त्र हमें पृथ्वी के रहस्योद्घाटन में केवल कुछ ही अंशों तक सहायक होता है। उसकी सीमा परिमित होने के कारण वह पृथ्वी-गर्भ में बहुत दूर तक प्रवेश नहीं करता। हमारा ज्ञान अपूर्ण है; हमारे पास जो साधन हैं, वे काफ़ी नहीं हैं। इन्हीं अपूर्ण तथा परिमित साधनों के सहारे वैज्ञानिकों ने जिन तथ्यों का पता लगाया है, उनका इस लेख में वर्णन रहेगा।

पृथ्वी के भीतरी हिस्से को न तो किसी ने देखा है, और न कोई देख ही सकता है; किंतु उसके विषय में दो बातें हमें अवश्य ज्ञात हैं—(१) वह बहुत भारी है और (२) बहुत गर्म। चंद्रमा तथा अन्य ग्रहों और नक्षत्रों की चाल को, जिन पर पृथ्वी के गुरुत्वाकर्षण का प्रभाव पड़ता है, देखकर ज्योतिषियों ने पता लगाया है कि पृथ्वी उन ग्रहों को किस शक्ति से अपनी ओर खींचती है। इस आकर्षण-शक्ति ने ही उसके गुरुत्व का भी पता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिया है। पृथ्वी का वज़न अपने ही आकार के पानी के एक गोले से पाँचगुना अधिक है। पृथ्वी का ऊपरी तल या ऊपरी हिस्से की चट्टानें पानी से केवल दुगनी भारी हैं, इसलिये पृथ्वी का भीतरी हिस्सा पानी से कम-से-कम तिगुना भारी है, अर्थात् पृथ्वी-गर्भ का अधिकांश भारी धातुओं से भरा पड़ा है। इन भारी धातुओं में जो सबसे अधिक भारी हैं, वे केंद्र या केंद्र के पास हैं। किसी-किसी का अनुमान है कि पृथ्वी का भीतरी हिस्सा भी ठोस (Solid) है; क्योंकि ज़मीन, पहाड़ और समुद्र के जल के दबाव से भीतर की चट्टानें दबकर ठोस हो गई हैं। किंतु दर असल बात ऐसी नहीं जान पड़ती। खान में काम करनेवाले लोगों का अनुभव है कि वे जितना ही नीचे खान में उतरते जाते हैं, उतनी ही अधिक गरमी का अनुभव करते हैं। कुओं में भी उष्णता पाई जाती है। और भी कई परीक्षाओं द्वारा सिद्ध हुआ है कि हम लोग ज्यों-ज्यों पृथ्वी की सतह के नीचे चले जायँ, उतनी ही अधिक गरमी का अनुभव करने लगेंगे। सन् १८८२ ई० में ब्रिटिश एसोसिएशन की एक कमेटी ने निश्चय किया कि हर ६४ फ़ीट का उतराव १° फ़ा० की गरमी अधिक कर देता है। यदि स्थूल रूप से हर ६० फ़ीट के उतराव में १° फ़ा० की गरमी की अधिकता मान लें, तो ६,००० फ़ीट नीचे उतरने पर १५०° फ़ा० की गरमी मिलेगी, और १०,००० फ़ीट से भी कम दूरी पर इतनी गरमी होगी कि पानी खौलने लगेगा। ३५,००० फ़ीट, अर्थात् सात मील से भी कम, दूरी पर सीसा गल जायगा। हम लोगों को इस समय जितने पदार्थ ज्ञात हैं, वे पृथ्वी की सतह के २५-३० मील पहुँचते-पहुँचते गलकर पानी हो जायँगे। किंतु वे ठोस भी रह सकते हैं; क्योंकि उन पर उनके ऊपर की चट्टान या पृथ्वी के भारी हिस्से का दबाव भी तो पड़ता है। इसलिये पृथ्वी के गर्भ में जितने पदार्थ हैं, उन पर विचार करते समय हमें पृथ्वी की गरमी तथा उन पदार्थों के ऊपर के पृथ्वी के हिस्से पर भी हमें ध्यान रखना पड़ेगा। किंतु अभी तक यह नहीं कहा जा सकता कि इन दोनों में से किसका अधिक प्रभाव पड़ता है।

अस्तु, पृथ्वी के गर्भ के संबंध में इस समय तीन सिद्धांत, बड़े-बड़े मनीषियों द्वारा, प्रतिपादित हुए हैं—(१) पृथ्वी का छिलका—ऊपरी थोड़ा हिस्सा—ठोस है, और बाक़ी तरल; (२) पृथ्वी सारी-की-सारी ठोस है; (३) पृथ्वी का छिलका और गुठली तो ठोस है; किंतु इनके बीच का हिस्सा तरल। गणितज्ञों ने ज्वार-भाटा और सूर्य के उत्तरायण तथा दक्षिणायन होने के समयों का निरूपण कर जिन तत्त्वों को पाया है, उनसे सिद्ध होता है कि या तो पृथ्वी का ठोस छिलका बहुत मोटा होगा या सारी पृथ्वी ही ठोस होगी। डब्ल्यू० हापकिंस का विश्वास था कि पृथ्वी का ठोस छिलका ४०० मील से कम मोटा न होगा। लॉर्ड केलविन सारी पृथ्वी को ही ठोस मानते थे। किंतु उनका यह भी कहना था कि यदि सारी पृथ्वी ठोस न हुई, तो उसका ऊपरी आधा हिस्सा तो अवश्य ठोस है। Delaunay और Henessy को इन परिणामों में विश्वास नहीं हुआ, और उन्होंने पृथ्वी के ठोस छिलके को केवल १०० मील मोटा बतलाया। गणितज्ञों ने जिन विषयों पर अपना हिसाब अवलंबित रक्खा था, वे भिन्न-भिन्न थे, इसलिये उनके फल में इतना फ़रक़ पड़ा।

हाल में एक प्रसिद्ध रासायनिक—Arrhenius—ने अपना सिद्धांत पेश किया है, जिस पर विचार करना आवश्यक जान पड़ता है। उनके मत से समुद्र-जल पृथ्वी के अंदर प्रायः आठ मील तक घुस जाता है। वहाँ वह भाप बन जाता है। या इतनी दूरी तक पहुँचने के पहले ही वह बालूमय पदार्थों के साथ मिलकर कुछ रासायनिक परिवर्तन करता है। इन्हीं फेर-बदलों के कारण धड़ाका तथा भूकंप होता है। उनका यह भी कहना है कि जो बात जल के विषय में लागू है, वही अन्य पदार्थों के विषय में भी लागू कही जा सकती है। इसलिये पृथ्वी-गर्भ में प्रायः सभी ज्ञातव्य पदार्थ वायव्य (Gaseous) अवस्था में हैं; उनके तरल अवस्था में होने में तो कोई शक ही नहीं है। इसलिये वह इस नतीजे पर पहुँचते हैं कि पृथ्वी की सतह के २५ मील नीचे इतनी गरमी है, जितनी गरमी में पृथ्वी के ऊपर की सभी वस्तुएँ तरलावस्था में विद्यमान हैं।

चाहे हम किसी पहलू से विचार करें, हमें यही पता लगता है कि पृथ्वी का गर्भ इसके ऊपरी हिस्से से सर्वथा भिन्न है।

रमेशप्रसाद (बी० एस्-सी०, केमिस्ट)

× × ×

२. कृत्रिम शब्दोच्चारण-विधि

जब हम बातचीत करते हैं, तो दो क्रियाएँ एक साथ काम करती हैं। एक शब्द या नाद का कंठ से प्रकट होना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सर रिचर्ड पेजेट
(अपने यंत्र का उपयोग कर रहे हैं)

और दूसरा उस नाद से दंत, ओष्ठ, तालू आदि की सहायता से मुख्य-मुख्य अक्षरों का स्पष्टीकरण या उच्चारण। जब वायु वेग के साथ किसी पतली दराज़ या नलिका से होकर गुज़रती है, तो उसमें आवाज़ पैदा होती है। इसी को शब्द या नाद कहते हैं। यह क्रिया हर्ष, शोक आदि आभ्यंतरिक भावों की द्योतक है। यह पशुओं में भी पाई जाती है। अक्षरों और शब्दों का उच्चारण मस्तिष्क की विशेष प्रेरणा से होता है। यह क्रिया विशेषतः मनुष्य में ही पाई जाती है। कंठ (Vocal chords) से ध्वनि उठती है, और उसे दंत, ओष्ठ, तालू आदि विविध अक्षरों के उच्चारण का रूप देते हैं। गूँगे लोग शब्द या नाद की क्रिया तो कर सकते हैं, परंतु वे विविध अक्षरों का उच्चारण स्पष्टतः नहीं कर पाते। अभी हाल में लंदन की फ़िज़िकल सोसाइटी के फ़ेलो सर रिचर्ड पेजेट महाशय ने एक ऐसे नए यंत्र का आविष्कार किया है, जिसके द्वारा अब गूँगे लोग भी बातचीत कर सकेंगे। इसमें ध्वनि पैदा करने के लिये या तो मुँह से फूँककर या धौंकनी द्वारा हवा भरी जा सकती है, और उच्चारण उँगलियों के परिचालन से होता है। ऊपर के चित्र में सर रिचर्ड अपने इसी "मूकं करोति वाचालम्" को सार्थक करनेवाले नवाविष्कृत यंत्र द्वारा छोटे-छोटे वाक्य, जैसे "अरे भाई राम, क्या तुम वहाँ हो ?," बोल रहे हैं।

× × ×

३. ऐस्बेस्टस् (Asbestos) की पोशाक

ऐस्बेस्टस्-नामक पदार्थ पर आँच और ताप का कोई असर नहीं होता। इस विशेष गुण से लाभ उठाने के लिये टैक्स थार्नटन नाम के एक महाशय ने ऐस्बेस्टस् की पोशाक बनाई है। इस पोशाक को पहनकर जलती हुई अग्नि-ज्वाला में घुसकर निर्भयता से आग बुझाने का काम किया जा सकता है, और शरीर के किसी भाग में आँच तक नहीं लगने पाती। इस पोशाक में कोट, पतलून या चुस्त पाजामा, दस्ताने, जूते और कंटोप हैं। ये सब ऐस्बेस्टस् के बने हुए हैं। टोप में आँखों के सामने किसी रंगीन पारदर्शक पदार्थ का टुकड़ा लगा है, जिसमें से होकर न तो ताप की और न तीक्ष्ण प्रकाश की ही किरणें आँखों पर आ सकती हैं। धुँधला छना हुआ प्रकाश दिखाई देता है, जिसके द्वारा देखने-भालने का सब काम हो सकता है। उपर्युक्त चित्र में टैक्स थार्नटन महाशय

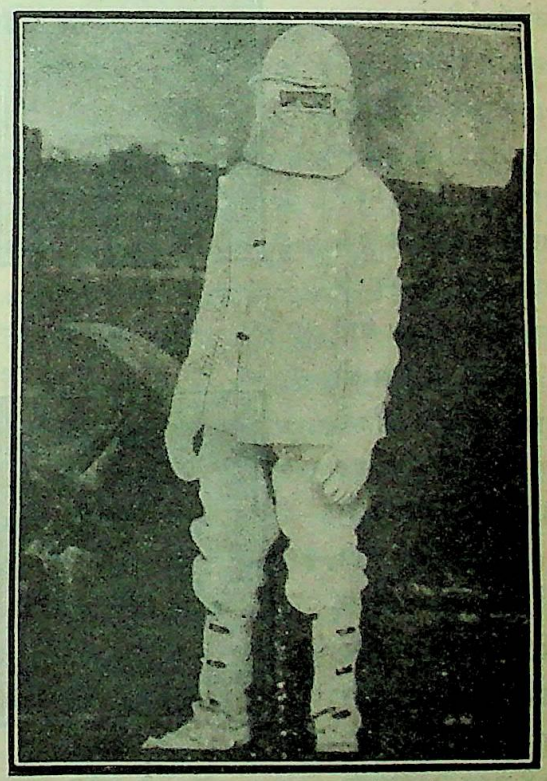

टैक्स थार्नटन
(एक इंच मोटी ऐस्बेस्टस् की पोशाक पहने हुए)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक इंच मोटी ऐस्बेस्टस् की पोशाक पहने हुए आग बुझाने को तैयार खड़े हैं।

× × ×

४. साँप के विष से बचने का टीका

काला साँप, जिसे नाग या कोब्रा कहते हैं, कैसा भयंकर जंतु है, यह सभी जानते हैं। अब डॉक्टरों ने एक ऐसा टीका (Serum) तैयार किया है, जिसको शरीर की रुधिर-नलिकाओं में प्रवेश (Inject) कराने के बाद फिर नाग के काटने पर विष चढ़ने का डर नहीं रहता।

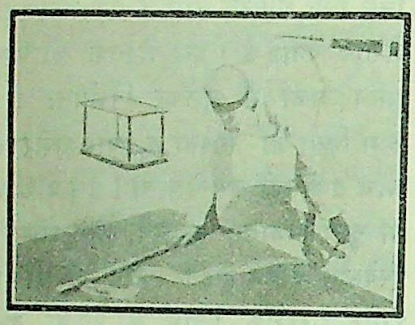

नं० १ चित्र

सीरम तैयार करने के लिये बंबई के परेल-नामक स्थान में प्रयोगशालाएँ हैं। इनमें बड़े-बड़े विषधर नाग पींजड़ों में पालकर रक्खे जाते हैं। पहले चित्र में साँप का पकड़नेवाला उसे पींजड़े से निकालकर तत्काल बाएँ पैर से साँप की दुम को दबाकर दाहने से साँप के सिर पर एक डंडा रखकर उसे पकड़ने की ताक में है। सारा काम बड़ी फुर्ती और होशियारी से किया जाता है। यदि पैर से साँप की दुम न दाबी जाय, तो वह पकड़नेवाले के शरीर में लिपटकर उसे छोड़ने के लिये बाध्य करेगा, जिसके भयंकर परिणाम की कल्पना पाठक स्वयं कर सकते हैं।

नं० २ चित्र

नं० ३ चित्र

दूसरे चित्र में साँप के अगले दाँतों को एक रबर से मढ़े हुए काँच के गिलास से छेड़ा जा रहा है। साँप कुपित होकर अपने दाँत रबर में गड़ाकर विष भीतर की ओर डाल रहा है। इस प्रकार कई साँपों से विष की काफ़ी मात्रा गिलास के भीतर जमा हो जाती है। चित्र में देखिए, साँप पकड़नेवाला किस एकाग्रता से साँप को सिर के ठीक पीछे मज़बूत पकड़े हुए है!

तीसरे चित्र में विष निकालने के बाद साँप के पेट में एक कीप मुँह में लगाकर दूध भरा जा रहा है। यही इसका भोजन है। दूध पिलाने के बाद साँप फिर युक्ति से पींजड़े के भीतर बंद कर दिया जाता है। यही साँप फिर दुबारा विष तैयार होने पर निकाला जाता है। निकाले हुए विष में पानी की अधिक मात्रा मिलाकर किसी तंदुरुस्त घोड़े के शरीर में पिचकारी द्वारा प्रवेश कराते हैं। इस प्रकार क्रम से पानी की मात्रा कम करते-करते घोड़े को इस योग्य बना लेते हैं कि वह साँप के विष को निर्जल दशा में शरीर में प्रवेश कराके बिना कष्ट के रह सके। ऐसी दशा में घोड़े के रक्त में ऐसे रासायनिक द्रव्य अपने-आप पैदा हो जाते हैं, जो साँप के विष के मृत्युकारी प्रभाव को नष्ट कर सकते हैं। इस प्रकार तैयार हो जाने पर घोड़े के रक्त से कुछ अंश सीरम का निकालकर शीशियों में बंदकर रखते हैं। यह सीरम जिस प्राणी के शरीर में प्रवेश (Inject) करा दिया जाता है, उस पर साँप के विष का प्रभाव नहीं पड़ता।

रामनारायण कायस्थ (एम्० एस्-सी०, बी० एज़ी०, एफ़्० सी० एस्०)
रामनारायण मिश्र (एम्० एस्-सी०)

हिंदूधर्म की चार सुंदर तस्वीरें

चतुर चित्रकारों द्वारा चित्रित। चित्र-कला को चकित करनेवाला चमत्कार। अनेक नेत्र-रंजक रंगोंवाली। साइज़ "३०×२०", और "२०×१५" सुंदर बहुमूल्य चिकने काग़ज़ पर छपी हुई। फिर भी ख़ूब सस्ती।

डाक-ख़र्च के लिये एक आने का टिकट भेजकर कई सुंदर हाफ़टोन चित्रों से सुशोभित कैटलॉग मुफ़्त मँगाइए!

पत्र-व्यवहार कृपया अँगरेज़ी में करें।

मिलने का पता—
The Caxton Publishing Co.,
Post Box 562, CALCUTTA

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारतीय चित्रकला

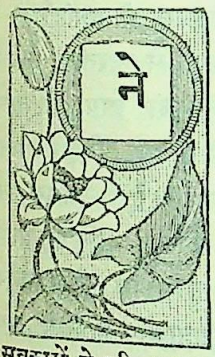

नों से देख पड़नेवाले और मनोगत कल्पना में आए हुए किसी भी वस्तु, पदार्थ या भाव को तद्रूप में अंकित कर देना चित्रकला का प्रधान काम है। इसी से उसकी व्यापकता और महत्त्व परिलक्षित होते हैं। भारतीय ऋषि-महर्षियों अथवा सूत्रकारों ने भी अन्यान्य प्रकार की चौंसठ कलाओं में चित्रकला को ही विशेष महत्त्व दिया है।

वास्तव में चित्रकला ऐसी अद्वितीय कला है, जिसके द्वारा संपूर्ण सभ्य संसार (विलायत हो या भारतवर्ष) केवल उपासना और उपजीविका-रूप के दो चित्रों में अंकित होते हैं। और, इसी कारण यह कला 'विश्व-व्यापी कला' कही जा सकती है।

विशेषज्ञ विद्वान् इस बात का भली भाँति विचार कर सकते हैं कि संपूर्ण सभ्य संसार का लक्ष्य उपासना और उपजीविका पर ही रहता है, और इनके पूर्व-रूप चित्रकला के आधार पर ही निर्धारित होते हैं। यह बात अवश्य है कि देश-भेद, रुचि-भेद और काल-भेद के कारण उपासना और उपजीविका के रूप पृथक-पृथक् प्रकार के हो जाते हैं। और, उनको तद्रूप में अंकित करने के अनुरोध से चित्रकला भी पृथक्-पृथक् प्रकार की प्रतीत होती है। परंतु उद्देश्य सबका एक रहता है।

मान लीजिए, किसी देश में देव, दानव या मानव-समाज की उपासना होती है, तो किसी देश में पशु-पक्षी या निर्जीव जीवों की उपासना की जाती है। कोई माता, पिता तथा भ्राता आदि को ईश्वर समझकर पूजते हैं, तो कोई विलासिता की पूर्ति के लिये आमिष, वारुणी या वारांगना आदि की उपासना करते हैं। इसी प्रकार किसी देश में कृषि, गोधन या वाणिज्य से उपजीविका चलाते हैं, तो किसी देश में कला-कौशल के कई काम किए जाते हैं। कोई आटा-दाल, भोजन-वस्त्र या फल-फूल बेचता है, तो कोई मद्य-मांस, जूते-बूट या अन्यान्य प्रकार के अस्त्र-शस्त्रादि देने-लेने या बनाने आदि के व्यवसायों से ही अपनी उपजीविका चलाता है। अतएव उपासना और उपजीविका के अनेक प्रकार के अवांतर-भेद होने से प्रत्येक देश की चित्रकला में भी अनेक प्रकार के भेद-भाव परिलक्षित होते हैं।

अन्य देशों की अपेक्षा भारतवर्ष धर्मप्राण देश है। इसमें धर्मोपासना और सात्त्विक वृत्ति का ही प्राधान्य है। यहाँ चारों वर्णों में अपने-अपने धर्म-कर्म के अनुसार यजन-याजन, पठन-पाठन, प्रजा-रक्षण, कृषि-गोरक्ष-वाणिज्य

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और देश-सेवा के रूप में ईश्वर की उपासना की जाती है; सदसद् विवेक के साथ क्रय-विक्रय, कला-कौशल, गोपालन और कृषि साधन आदि के रूप में उपजीविका चलाई जाती है। अतः इस देश में विशेष कर इन्हीं से संबंध रखनेवाली चित्रकला का प्राधान्य है। अन्य देशों की अपेक्षा इस देश में यह आरंभ ही से सुचारु अथवा सर्वोत्कृष्ट रूप में होती आ रही है।

❀ ❀ ❀

कुछ कारीगरों का सिद्धांत है कि प्राचीन काल में भारतीय चित्रकला सुचारु अथवा समुन्नत अवस्था में नहीं थी। क्यों नहीं थी? इसका कारण यह बतलाया जाता है कि उन दिनों के चित्रकार एतद्विषयक अनुभव में अधूरे थे, और उनके पास उत्तम प्रकार के रंग-रोग़न आदि का भी अभाव था।

वर्तमान समय के कुछ विख्यात चित्रकार भी इसका समर्थन करते हैं। वे जब कभी प्राचीन काल के चित्र बनाते हैं, तो उनके आकार-प्रकार अथवा आकृति आदि को ऐसा विकृत बना देते हैं, जिससे प्राचीन काल की एतद्देशीय चित्रकला के ज्ञान का अधूरापन आप ही प्रकट हो जाता है, और आजकल के-जैसे चमकीले रंग-रोग़न का अभाव भी देख पड़ता है।

इन दिनों के सचित्र साहित्य अथवा मासिक पत्रों आदि में उन लोगों के बनाए हुए कुछ देवी-देवतों अथवा नट-नर्तकी आदि के ऐसे ही चित्र छपते हैं, जिनके हीनाधिक अंग-उपांग अथवा विकृत आकृति आदि जान-बूझकर बनाई जाती हैं, और उनको प्राचीन काल के भारतीय चित्रों की नक़ल अथवा प्रतिबिंब बतलाया जाता है।

ये लोग वर्तमान समय की चित्रकला में विशेष कुशल होकर भी वैसे चित्र यही दिखाने को बनाते हैं कि प्राचीन काल के भारतीय चित्रकार चित्रकला में इतनी ही योग्यता रखते थे, और उनके बनाए हुए प्राचीन चित्र इसी प्रकार के होते थे।

गवर्नमेंट की ओर से इंडियन आर्ट अथवा भारतीय चित्रकला-विषयक ज्ञान प्राप्त करने के लिये कई एक चित्र-पत्र-पुस्तकें और रिपोर्ट आदि प्रकाशित हुआ करती हैं, जिनमें भारत के विभिन्न स्थानों से प्राप्त हुए पत्र, चित्र, प्रतिमा, प्राचीर और स्तूप आदि की प्रतिलिपियाँ विवरण-सहित छपा करती हैं। उन्हीं को आदर्श का रूप देकर आधुनिक काल के कुछ चित्रकार उक्त प्रकार के चित्र बनाते हैं, जिनसे प्राचीन काल की भारतीय चित्रकला को उत्तम मानने में मन हिचक जाता है।

विचार कर देखा जाय, तो यह भ्रांति-मूलक धारणा अथवा गर्हणीय चेष्टा है। भारत के कई स्थानों में वैसे चित्र पाए अवश्य जाते हैं; परंतु कतिपय स्थानों के विकृताकृति अथवा न्यूनाधिक अंग-उपांगोंवाले उदासीन चित्रों को देखकर यह कल्पना कर लेना सर्वथा निरर्थक है कि प्राचीन काल में ऐसे ही अनाड़ीपन के भद्दे चित्र बनते और उनमें धूल, मिट्टी अथवा गोबर आदि के रंग लगाए जाते थे।

अधिकदर्शी इस बात को नहीं मानेंगे कि एकदेशिक अथवा एककालिक वस्तु-विशेष आदि के आकार-प्रकार अथवा रूप-रंग आदि को देखकर यह कल्पना कर लेना चाहिए कि अमुक वस्तु सार्वदेशिक, सार्वत्रिक अथवा सार्वजनिक है। इस प्रकार के सिद्धांतों को सत्य, ध्रुव समझने से तो भारतीय विद्याओं अथवा सर्वोत्कृष्ट कलाओं पर कलंक लगता है, और वे लुप्तप्राय हो जाती हैं।

यदि इसी प्रकार की कल्पनाओं से भारतीय चित्रकला का तारतम्य अथवा तथ्य निकाला जाय, तो वर्तमान समय के सचित्र साहित्य में बंगाल, बिहार, गुजरात, पंजाब, महाराष्ट्र और राजपूताना आदि के विभिन्न बर्ताव, व्यवहार अथवा वेश-भूषा और रूप-रंग आदि के अगणित चित्र ऐसे छपते हैं, जिनमें से अधिकांश चित्र एकदेशीय होने के अनुरोध से दूसरे देशवालों के लिये रुचिकर नहीं हो सकते।

ऐसी दशा में यह कल्पना करना सर्वथा निरर्थक है कि बीसवीं शताब्दी का भारतीय सचित्र साहित्य उत्तम था अनुत्तम अथवा उन्नत था अनुन्नत था।

❀ ❀ ❀

वेदों की ऋचाएँ, पुराण अथवा महाभारतादि की कथाएँ, भूगर्भ-लब्ध प्राचीन प्रतिमाएँ, यवन-साम्राज्य के वस्त्र-शस्त्र-पुस्तकें और प्राचीन काल के रंगीन चित्र आदि इस बात की साक्षी देते हैं कि प्राचीन काल में भारतीय चित्रकला सर्वोत्कृष्ट अथवा समुन्नत अवस्था में थी, और उसका अनेक प्रकार के सद्व्यवहार्य कार्यों में सदुपयोग किया जाता था।

वैदिक काल में अथवा यों कहिए कि अत्यंत प्राचीन काल में—जब ऋषि-महर्षियों का साम्राज्य सारे भारत में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

व्याप्त हो रहा था, और चतुर्वर्ग-साधन के नित्य-नैमित्तिक, यज्ञ-याग-प्रयोगादि का सर्वत्र प्रचार फैला हुआ था—धर्म-प्राण भारतवासियों, स्वकर्म-निरत द्विजातियों अथवा देवोपासक नर-नारियों को त्रिकोण, षट्कोण, वज्रांकित, पद्माकृतिक, अष्ट-नव-दश-शत-सहस्र-दलादि-युक्त, स्वस्तिक-स्वरूप, वृत्ताकार अथवा षड्बिंदु आदि से निर्मित विविध प्रकार के वेदोक्त चित्रों के लिखने का प्रतिदिन प्रयोजन पड़ता था।

उक्त प्रकार के वैदिक चित्र सोने, चाँदी, ताँबे, लोहे, काठ, पत्थर और मृण्मय पीठादि पर औषध-चूर्ण अथवा हल्दी आदि यथोचित द्रव्य फैलाकर सुवर्ण की शलाका, दूर्वा या कुश की पिंजुली और दाड़िम आदि की लेखनी से लिखे जाते थे।

कुछ चित्र केसर, चंदन, गोरोचन, तैल-सिंदूर अथवा अष्टगंध आदि से ताम्र-पत्र या भोज-पत्र आदि पर लिखे जाते थे। उक्त प्रकार के चक्र-चित्र अथवा यंत्र आदि लिखने में इस बात की बड़ी सावधानी रखनी पड़ती थी कि कोई भी चित्र आकार-प्रकार, अंक-योजना अथवा आकृति आदि में न्यूनाधिक न हो जाय।

कदाचित् कोई चित्र तिल-भर भी टेढ़ा होता या उसमें ह्रास-वृद्धि हो जाती, तो फिर वह अशुद्ध मान लिया जाता था, और उसके द्वारा होनेवाले कार्यों की सफलता में संदेह कर लिया जाता था।

इससे प्रतीत होता है कि उन दिनों वेद-मार्ग को प्रचलित रखनेवाले आचार्य लोग इस प्रकार के सर्वोत्तम चित्र लिखना जानते थे, और उनके यथोचित रूप में लिखे जाने से ही उपासक का कल्याण मानते थे।

❀ ❀ ❀

इसी प्रकार इहलोक और परलोक के साधक वेदांग के कर्म-कांड में भी अनेक प्रकार की वैदिक चित्रकला का उल्लेख पाया जाता है। उसमें देवालय, आराम, तड़ाग आदि के स्थापन, पूजन अथवा प्रतिष्ठा आदि में, धर्मार्थ काम मोक्ष के हेतु-रूप व्रतोत्सवादि के आरंभ और उत्सर्ग में, और सदनुष्ठानादि के संपादन में, एकलिंगतोभद्र, चतुर्लिंगतोभद्र, द्वादशलिंगतोभद्र, सर्वतोभद्र, चाप, खड्ग, त्रिशूल और वारुण-यंत्र आदि के रूप में विविध प्रकार के चित्र बनाए जाते थे।

ऐसे चित्र यज्ञ-भूमि के प्रांगणों में, बालुकामय वेदियों में, यज्ञ-मंडप की भित्तियों में और यज्ञ-स्तंभ के समीप लाल, हरे, काले, पीले और सफ़ेद रंग के गंध, पुष्प, औषध-चूर्ण अथवा चावल, मूँग, मसूर आदि से बनाए जाते थे। उनके बनाने के लिये आजकल के चित्रकार उत्तम चित्रों के लिये जिस प्रकार पेंसिल से समानांतर की आड़ी-सीधी रेखाएँ खींचते हैं, उसी प्रकार उक्त भद्र-चित्रों के लिये भी पीठ-भित्ति अथवा वेदियों पर समानांतर की, यथोचित संख्यावाली तिर्छी और खड़ी रेखाएँ खींची जाती थीं। और, उनमें यथोक्त रंगों के गंध, पुष्प, धान्य अथवा चूर्ण आदि से विविध प्रकार के रंग-रंजित भद्र-चित्र बनाए जाते थे।

जिस प्रकार वर्तमान समय के सुदक्ष कारीगर उच्च श्रेणी के ग़लीचों अथवा क़ालीनों में विविध प्रकार के फूल-बेल-पत्ते अथवा प्राकृतिक दृश्य दिखाते हैं, उसी प्रकार उपर्युक्त रीति के भद्र-चित्रों में भी सुंदर रूप की चित्रकला अथवा मनोहारिता प्रकट की जाती थी, और यथासंभव वे बड़ी बुद्धिमानी से तैयार होते थे।

उनके साथ कई जगह इंद्र, अग्नि, यम और वरुण आदि दिक्पालों के, ब्रह्मा-विष्णु-महेशादि देवतों के और तोरण-स्तंभ तथा यज्ञ-पुरुष आदि के रंगीन चित्र भी बड़े उत्तम बनाए जाते थे। उन चित्रों में प्रत्येक देवता के वाहन, आसन, आभूषण, अस्त्र-शस्त्र और मंडल आदि भी होते थे, जिनसे देव-दानव-मानव-समाज के साथ ही हाथी, घोड़े, गाय, बैल, हंस, मयूर, मूषक आदि पशु-पक्षियों तथा विविध प्रकार के अस्त्र-शस्त्र-आभूषण और पोशाक आदि के चित्र-लेखन का भी संयोग होता रहता था।

यह कहने की आवश्यकता नहीं कि उन चित्रों के आकार-प्रकार, आकृति और रूप-रंग आदि भी बड़ी बुद्धिमानी और सावधानी के साथ यथोचित रीति से बनाए जाते थे। उनमें कोई भी चित्र हीनांग, विकृतांग, भयजन्य, भावशून्य अथवा अस्वाभाविक नहीं होता था। कदाचित् कोई हो जाता, तो उसको अशुभ या अशुद्ध बतलाकर कर्ता का तिरस्कार किया जाता था। इस कारण उनके सुंदर, मनोहर, सद्व्यवस्थ तथा यथोचित होने का पूरा ध्यान रखना पड़ता था। इससे विदित होता है कि आज से हज़ारों वर्ष पूर्व भी भारतीय चित्रकला सुचारु रूप में वर्तमान थी, और उसकी त्रुटि-पूर्ण अवस्था दूर करने के प्रयत्न होते रहते थे।

❀ ❀ ❀

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुराण, इतिहास अथवा महाभारत आदि में अनेक जगह इस प्रकार के नगर, ग्राम, राज-प्रासाद, रमणीय महल अथवा स्थल-विशेष आदि के ऐसे वर्णन मिलते हैं, जिनमें सोना, चाँदी, रत्न, काँच, पत्थर, मिट्टी और काष्ठ अथवा हाथी-दाँत आदि के संयोग से विविध प्रकार के अति सुंदर चित्र अंकित होते थे। और, रंग, रोग़न तथा वज्रलेप आदि के पक्के चित्र भी बनाए जाते थे।

वाल्मीकीय रामायण के राम-राज्याभिषेक की अयोध्या के, लंका-निरीक्षण में रावण के रनिवास के, रामचंद्र की विमान-यात्रा के अथवा सीता, दमयंती और द्रौपदी आदि के स्वयंवर के समय के मंडप आदि के वर्णन देखिए। राजा दुष्यंत और शकुंतला के सम्मेलन की अँगूठी, जिसमें एक विचित्र चित्र बना हुआ था, और उसी को देखकर दुष्यंत ने शकुंतला को पहचाना था, और हनुमान् की दी हुई अँगूठी, जिसमें भगवान् रामचंद्र का नाम अंकित था, इन पर ध्यान दीजिए। आपको बहुत प्राचीन काल में भी भारतीय चित्रकला की उत्तमता अथवा समुन्नत अवस्था का पता चलेगा।

महाभारत के सभा-भवन में 'मय' के लिखे हुए विचित्र प्रकार के आंतिजनक अद्वितीय चित्रों के लिखे जाने, उषा की सहेली चित्रलेखा के लिखे हुए अदृष्ट-पूर्व नगर, ग्राम और अपरिचित नर-नारियों के तत्तुल्य चित्रों के प्रकाशित करने, और तत्कालीन राजसूय-यज्ञ में आए हुए राजा-महाराजों के वस्त्र,शस्त्र,यान, आसन और विजय-ध्वज आदि में अनेक प्रकार के देवी, देवता, पशु, पक्षी अथवा राजचिह्नों के चित्रों और मूर्तियों के लगे रहने के वर्णन से स्पष्ट विदित हो जाता है कि उन दिनों की भारतीय चित्रकला का लोगों पर बहुत प्रभाव पड़ता था, और उसके द्वारा तत्कालीन नरेंद्रगण अपने महान् महत्त्व को दूसरों के प्रति प्रकाशित करते थे।

पौराणिक कथाओं में कुछ ऐसी घटनाएँ भी वर्णन की गई हैं, जो अति दुर्घट अथवा असंभव होने पर भी तत्कालीन चित्रकला के द्वारा सुगमतापूर्वक संघटित की गई हैं।

❀ ❀ ❀

त्रिस्कंध ज्योतिष के बृहत्पाराशरी आदि होरा-ग्रंथ, सूर्य-सिद्धांत आदि गणित-ग्रंथ, और नारद वशिष्ठ भारद्वाज, अत्रि-अगस्त्य-अंगिरा, और भृगु-बृहस्पति-वाराही आदि संहिता-ग्रंथ बहुत प्राचीन काल के हैं। उनमें आकाश, पाताल, भूलोक और भूत-भविष्य-वर्तमान बड़ी प्रयोजनीय और विलक्षण बातें वर्णन की गई हैं।

उन्हीं में सूर्यादि नवग्रहों के, मेषादि बारह राशियों के, अश्विनी आदि सत्ताईस नक्षत्रों के, ध्रुव-सप्तर्षि आदि तारागणों के और योगिनी आदि दशाओं के रूप-रंग, आकार-प्रकार, यानासन-आयुध-आकृति और उनके मंडल आदि का वर्णन किया गया है, जिनके आधार पर प्राचीन काल के ज्योतिषी लोग उनके यथार्थ चित्र तैयार करते थे।

उक्त प्रकार के चित्रों में भूगोल और खगोल-संबंधी अनेकों चक्र-चित्र बड़े ही दुर्घट, कठिन अथवा जटिल होते थे। उनके बनाने में केवल चित्रकला ही काम नहीं देती थी; किंतु पूर्वापर-परिस्थिति के विचार-बाहुल्य और भचक्र विज्ञान आदि के द्वारा वे तैयार होते थे।

उन्हीं ग्रंथों में विविध प्रकार के कला-कौशल के विधान भी विस्तार से वर्णित हुए हैं, जिनसे अस्त्र-शस्त्र-वस्त्राभूषण-यान, विमान-सिंहासन-दुर्ग-प्रासाद, वासभवन, रंग-रोग़न, वज्रलेप और मूर्ति-निर्माण आदि के वर्णन हैं; और उन्हीं में विविध प्रकार के चित्र लिखने के उल्लेख हैं, जिनसे उनकी आकृति-प्रकृति, रूप-रंग और नाप-जोख (किसकी कितनी होनी चाहिए और किस प्रकार के चित्रों को किस प्रयोजन से मंडप, मकान अथवा सभा-भवनों में लगाना चाहिए) इत्यादि बातों के विधान मालूम हो जाते हैं।

❀ ❀ ❀

विशेषज्ञ विद्वानों की सम्मति से सरकार के पुरातत्त्व-विभागों ने पंजाब, बंगाल और सिंध-प्रदेशों में भूगर्भ से जिस प्राचीन काल की भारतीय विलुप्त रत्नराशि को खोज निकाला है, उसमें भारतीय चित्रकला का प्राचीन रूप भी परिलक्षित हुआ है। उससे पता चलता है कि कम-से-कम छः हज़ार वर्ष पहले तक भी भारतीय चित्रकला का समुज्वल प्रकाश फैला हुआ था।

प्राचीन शोध के पंडितों ने पृथ्वी के पेट से पाँच-पाँच, छः-छः हज़ार वर्ष पहले की बनी हुई देवी-देवतों, महापुरुषों, नारी-रत्नों और गो-गज-मृग आदि पशु-पक्षियों की पाषाण-निर्मित अथवा धातु-संघटित सुदर्शनीय मूर्तियाँ निकाली हैं, जिनमें प्राचीन काल के भारतीय कला-कौशल का शुद्ध

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वरूप तो प्रकट होता ही है, किंतु साथ ही तत्कालीन चित्र-कला के उत्कृष्ट स्वरूप का आभास भी भली भाँति मिल जाता है।

इस विषय में यह बात ध्यान में रखने की है कि कला-कौशल की किसी भी वस्तु, पदार्थ अथवा मूर्ति आदि को बनाने के पहले उसे चित्र-रूप में तैयार करके भविष्य अंग-प्रत्यंगों की गढ़ाई, सुघराई और सौष्ठव आदि के पूर्वापर सुधारों का विचार कर लिया जाता है। और, फिर चित्र-रूप में अंकित किए हुए मनोगत भाव अथवा सदिच्छाओं के अनुसार वस्तु, पदार्थ अथवा मूर्ति आदि का निर्माण किया जाता है।

अतएव जब हमारे सामने भू-गर्भ से निकली हुई हज़ारों वर्ष पहले की सुंदर वस्त्राभूषणों से सुसज्जित मनोहर मूर्तियाँ प्रत्यक्ष दिख रही हैं, तब प्राचीन काल की भारतीय चित्रकला को समुन्नत मानने में संदेह करना निरर्थक ही नहीं, निंदाजनक भी है। अतः ऐसी दशा में वर्तमान समय के कुछ ख्याति-प्राप्त चित्रकारों की यह कल्पना कि "महाभारत के ज़माने में गोबर के गणेश-जैसे गजानन, ग्रामीण वधिक-जैसे भीमार्जुन और निकृष्ट नारियों अथवा नीच जाति की स्त्रियों-जैसी द्रौपदी आदि होती थीं, अथवा उन दिनों इस प्रकार के चित्र बनाए जाते थे", ठीक नहीं है। ऐसा कहना सर्वथा भ्रांति-मूलक चेष्टा अथवा ईर्षालु भाव का परिचय देनेवाला कहा जा सकता है।

❀ ❀ ❀

यह बात मान सकते हैं कि प्राचीन काल में एक ऐसा समय आया था, जिसमें बहुत वर्षों तक भारतीय जनता में सात्त्विकता और शांति के भाव सर्वत्र-व्याप्त हो गए थे, और वे सरल जीवन तथा ईश्वर-स्तवन में ही सुख मानते थे। उस अवसर की भारतीय चित्रकला में भी एक ही भाव का प्राधान्य रहा था, जिसके कारण तत्कालीन चित्रों में हास्य-विहीन निर्मलता विद्यमान रही थी।

उन दिनों के चित्रों की वेश-भूषा, आकार-प्रकार और रंग-रोग़न आदि अवश्य ही हलके, फीके और उदासीनता लिए हुए होते थे। परंतु ऐसे चित्र एकजातीय और एक-कालिक थे, सर्वकालिक, सार्वत्रिक अथवा सार्वजनिक नहीं।

उनके पीछे यहाँ विदेशियों का आगमन हुआ। उन्होंने अपने देश के बर्ताव, व्यवहार और शिष्टाचार आदि का यहाँ प्रचार किया। आरंभ में उन्होंने अपने देश के कुछ अदृष्ट-पूर्व बढ़िया चित्र भी यहाँवालों को भेंट किए। इन्होंने उनकी प्रतिलिपि ली, और यहाँ भी हिंदू-मुसलिम सम्मेलन की तरह विदेशीय और भारतीय चित्र-कलाओं में मेल हो जाने से भावद्वय के विशेष चित्र विख्यात होने लगे।

इधर राजपूताने के राजा लोग, यवन-सम्राटों के आज्ञा-वर्ती और उनकी वेश-भूषा अथवा आचरण आदि से अधिक संपर्क रखने पर भी, अपनी परंपरागत कुल-मर्यादा, एतद्देशीय वेश-भूषा और स्वजातीय धर्म-कर्म आदि से हीन नहीं हुए थे। उनमें उस समय भी महाभारत के समय की वेश-भूषा, आचार-विचार, शिष्टाचार, शौर्य-वीर्य, महत्त्व और स्वाभिमान आदि के कई एक अंग-उपांग किसी अंश में बने हुए थे।

अतएव इस देश के कला-कौशल का परंपरागत ज्ञान रखनेवाले सुदक्ष कारीगर और मंत्र-तंत्र, धनुर्वेद तथा आतुर-भेषज आदि विविध प्रकार की विद्याओं के पारंगत विद्वान् उनके समीप सदैव से आश्रय पाते चले आ रहे थे। इस कारण भारतीय चित्रकला के सुदक्ष कारीगरों को अपनी वंश-परंपरागत चित्रकला के समुचित विधान तथा उसके सब साधन यथावत् याद थे। और, वे लोग समय-समय पर सुंदर रूप के मनोहर चित्र बनाते रहते थे, जिनके द्वारा प्राचीन काल की भारतीय चित्रकला किसी प्रकार अपने स्वरूप में सजीव रहती आई, और उसका समुचित प्रवाह यथावत् चलता आया।

❀ ❀ ❀

उन दिनों के सचित्र साहित्य और स्वतंत्र चित्रों को विदेशी ग्राहकों ने अधिक अर्थव्यय करके (दुर्नीति या गुणग्राहकता से ?) अपने यहाँ मँगा लिया है। एक-एक चित्र के दस-दस और बीस-बीस हज़ार रुपए देकर अनेकों अँगरेज़ यहाँ के देव-दुर्लभ चित्रों को बटोर ले गए हैं—कई एक बहुमूल्य सचित्र ग्रंथ और स्वतंत्र चित्र राजों-महा-राजों, सेठ-साहूकारों अथवा अदूरदर्शी धनवानों से भेंट, इनाम अथवा पारितोषिक के रूप में प्राप्त करके मुफ़्त ही छीन ले गए हैं। इन्हीं कारणों से यहाँ के लोकोत्तर-गुण-संपन्न सचित्र ग्रंथ अथवा स्वतंत्र चित्र एक-एक करके सब-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के-सब विलायत चले गए। जो कुछ बचे भी हैं, उनके सुरक्षित रखने का अभी कोई उत्तम उपाय नहीं हुआ।

वर्तमान समय के कुछ सचित्र मासिक पत्रों ने भारतीय रंगीन चित्रों के प्रकाशन का प्रारंभ किया था, जिसके द्वारा उनके किसी रूप में बने रहने अथवा उनकी ओर लोगों का चित्ताकर्षण होते रहने की आशा हुई थी। किंतु व्यय-बाहुल्य अथवा छल-व्यवहार के कारण उनमें भी लाल, पीले, किसी भी एक रंग के छपे हुए साधारण चित्र भी रंगीन चित्रों में गणनीय होने लग गए।

ऐसी अवस्था में भारतीय चित्रकला के सुरक्षित रहने की आशा आकाश-कुसुम अथवा अरण्य-रोदन के समान है। हमारी समझ में अधिक चित्रों की अपेक्षा बहुत कम या एक-दो ही रंगीन चित्र, बहुत बढ़िया छापकर, दिए जायँ, तो अच्छा।

कुछ राजधानियों में इस समय भी कई सौ वर्ष पहले के सचित्र ग्रंथ और रंगीन चित्र सुरक्षित हैं। उनमें कई ग्रंथ ५-५ लाख रुपए की लागत के हैं, और कुछ चित्र २०-२० हज़ार रुपए में भी सस्ते प्रतीत होते हैं।

किस विषय के कौन ग्रंथ अथवा किस आशय के कौन चित्र कहाँ हैं, और उनमें क्या-क्या विशेषताएँ हैं, इन बातों को फिर कभी प्रकाशित करने का प्रयत्न किया जायगा। आज इतना ही।

हनूमान शर्मा

भारतीय कारीगरी का अनुपम दृश्य

इटावा-भारतीय सिल्क

हमारे इस सिल्क के बनते ही काशी-सिल्क, भागलपुरी, मद्रासी, चाइना आदि सभी सिल्क शरमिंदा हो गए।

इसकी अनेक विशेषताएँ हैं

यह काशी-सिल्क से ज़्यादा सुंदर न मालूम होने पर भी धुलने से चटकता या खिलता नहीं है।

इसका बनाया हुआ कपड़ा १० वर्ष तक ख़ूब इस्तेमाल करने से भी ख़राब न होकर जितना धुलता है, उतना ही फ़ैशनेबिल मुलायम सुंदर बहार दिखलाता है। इसका प्राकृतिक हलका रंग सोफ़ियाना मनोहर पहनने से ५००) रु० की पोशाक को भी लज्जित करता है। यह हर फ़ैशन तथा हर ऋतु में एक-सा काम देता है।

इतना मज़बूत होने के कारण ही यह सूती कपड़े से सस्ता है।

यह सूट तथा कोट के लिये सर्वांगसुंदर होते हुए भी इसके बंगाली काट के कुरते, कमीज, दुपट्टे, चादरे, अचकन, जामा आदि भी बहुत सुंदर बनते हैं, तिस पर भी—

सात गज़ लंबे ३२ इंच चौड़े थान का दाम २५), प्रति गज़ ३।।।)

नापसंद होने से मूल्य वापस

पता—दि स्वदेशी क्लाथ सप्लाई स्टोर, नं० २७, इटावा (यू० पी०)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

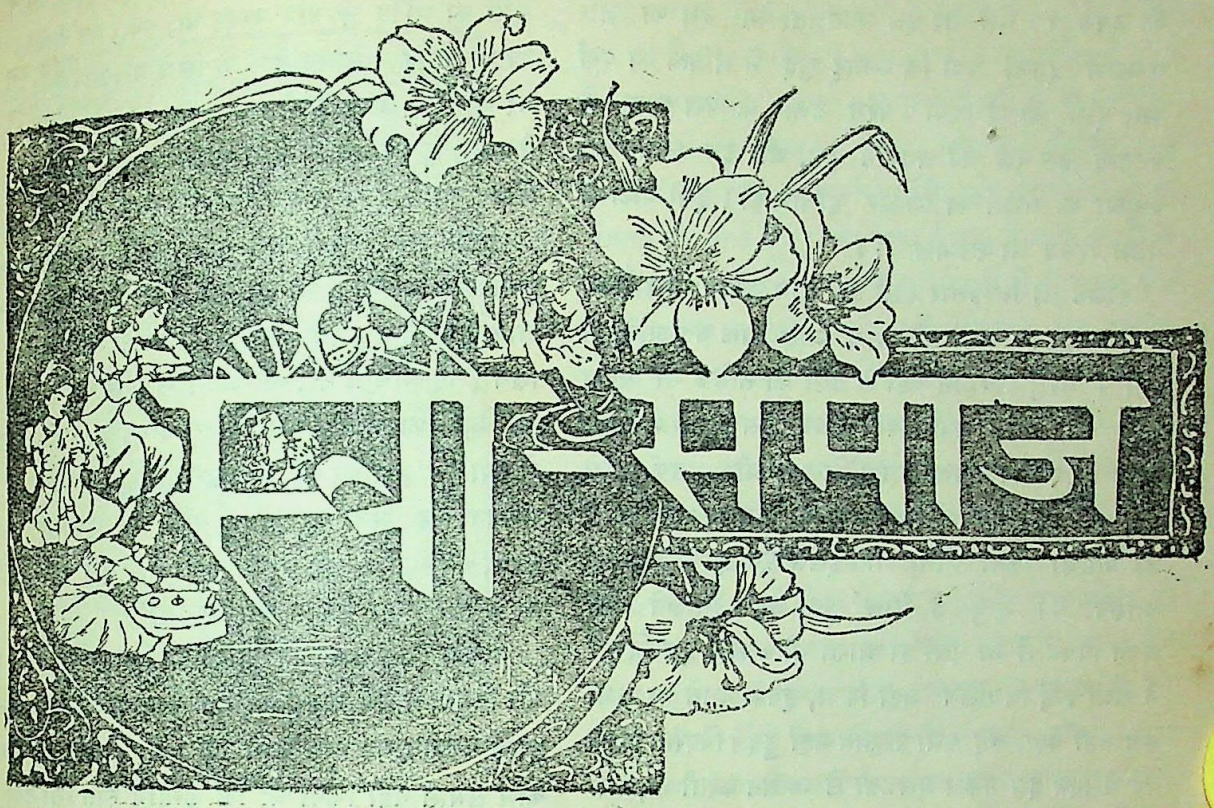

१. मैडम रोलैंड

जिन दिनों फ्रांस में स्वतंत्रता की लहर दौड़ रही थी, और हर ओर इसी की चर्चा हो रही थी, उन दिनों बहुत-से पुरुषों ने अपने देश को स्वतंत्र कराने में भाग लिया था। एक महिला ने भी उस अवसर पर कुछ कम सेवा नहीं की। इसका नाम मैडम रोलैंड था। इसने फ्रांस में स्वतंत्रता का शंख-नाद करके तहलका मचा दिया, और अपना जीवन प्रसन्नता-पूर्वक स्वतंत्रता की भेंट चढ़ाया।

यह महिला-रत्न पैरिस में, सन् १७५४ ई० में, उत्पन्न हुई थी। माता-पिता ने इसका नाम मेरी जेन रक्खा था। इसका पिता अत्यंत निर्धन था, और मूर्तियाँ बनाकर बेचा करता था। चित्रकला में भी वह बड़ा होशियार था। इसी निर्धन पिता की यह पुत्री इतनी बुद्धिमती थी कि केवल नौ वर्ष की छोटी-सी आयु में ही प्लूटार्क और रूसो-जैसे उत्कट विद्वानों की कृतियाँ भली भाँति पढ़ और समझ लिया करती थी। एक जगह इस महिला-रत्न ने स्वयं भी लिखा है—"बालकपन में मुझे प्लूटार्क के लेख इतने अधिक पसंद थे कि मैं गिरजाघर में इंजील के स्थान पर इन्हें ही साथ ले जाया करती थी, और इन्हीं के द्वारा मेरे हृदय में स्वतंत्रता के विचार उत्पन्न हुए।" एक और स्थल पर वह लिखती है—"विवाह के पश्चात् मैंने निश्चय कर लिया था कि जिस प्रकार मेरा पति देश-सेवा में भाग लेता है, उसी तरह मैं भी अपना जीवन देश को अर्पण करूँगी, और प्रत्येक समय देश-सेवा में तत्पर रहूँगी।"

रोलैंड के पति का संबंध उन लोगों के दल से था, जो स्वतंत्रता के प्रेमी और इच्छुक थे। कुछ काल के पश्चात् यह विदुषी भी इसी दल में सम्मिलित हो गई, और उसके कार्य में पूर्ण सहयोग देने लगी। प्रायः इन्हीं के घर इस दल की बैठकें हुआ करती थीं, और सब सदस्य अपने राष्ट्रीय कार्यों में इन्हीं की सम्मति पर चला करते थे।

सन् १७९२ ई० में, फ्रांस में, ऐसी राष्ट्रीय हलचल मची कि वहाँ के सम्राट् ने लाचार होकर मंत्रित्व का भार इसी राष्ट्रीय दल-विशेष को सौंप दिया। रोलैंड मंत्री नियत हुआ, और उसकी वीर-पत्नी—हमारी चरित्रनायिका—उसकी सलाहकार बनी। उस समय रोलैंड ने जितने सुधार के कार्य किए, वे सब मैडम रोलैंड के ही मस्तिष्क

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की उपज थे। धीरे-धीरे इस स्वतंत्रता-प्रेमी दल का ज़ोर फ्रांस में इतना बढ़ा कि सम्राट् लुई ने मंत्रित्व का पूर्ण भार इसी को दे दिया। परंतु उन्नति की परा काष्ठा के पश्चात् इस दल की अवनति हुई, और इन लोगों को शत्रुओं की चालों का शिकार होना पड़ा। इसी पार्टी में मैडम रोलैंड भी शामिल थीं।

रोलैंड तो गिरफ़्तार होते ही भाग गया। मगर मैडम रोलैंड बंदी हो गईं, और पाँच मास तक बंदीख़ाने में रहीं। परंतु उन्होंने वहाँ के कष्टों की तनिक भी परवा नहीं की, और अपना बंदी-जीवन हँसी-ख़ुशी में बिता दिया। यह वहाँ अपना चरित्र लिखती और पुस्तकें पढ़ती थीं, एवं अपने विषय में न्यायालय का अंतिम निर्णय सुनने की प्रतीक्षा किया करती थीं। इससे पूर्व इनके बहुत-से साथियों को मृत्यु-दंड मिल चुका था, इसलिये इन्हें अपने विषय में भी ऐसी ही आशा थी। परंतु इस विचार ने कभी इन्हें विचलित नहीं किया, इनके माथे पर कभी बल नहीं पड़ा, यह कभी परेशान नहीं हुईं। विपरीत इसके यह ये दिन इस प्रकार प्रसन्नता से व्यतीत करती थीं, जैसे वह घर में चैन से बैठी हुई हैं।

जिस दिन इनके साथियों को फाँसी की आज्ञा दी गई, उस दिन इन्हें दूसरी जेल में बदल दिया गया। यहाँ यह छः दिन रहीं, और इस बीच में इन्हें दो बार न्यायालय में जाना पड़ा, जहाँ इनके विरुद्ध साक्षी सुनी गई। अंतिम दिन इनका वह वकील, जो इनकी ओर से बड़े परिश्रम से पैरवी कर रहा था, इनके पास धैर्य बँधाने आया, और उसने कहा, कल फिर आऊँगा। मैडम रोलैंड ने अपनी अंगूठी उतारकर उसे दी, और कहा—"आप मेरी पैरवी न करें; क्योंकि मेरी पैरवी करना अपनी जान को ख़तरे में डालना है। कल आने की आवश्यकता नहीं; क्योंकि कल तो मैं स्वतंत्र होकर परम पिता परमात्मा की गोद में पहुँच जाऊँगी।"

अगले दिन प्रातःकाल जब यह उठीं, तो सफ़ेद वस्त्र पहने, काली मख़मल की पट्टी अपनी कमर में बाँधी एवं अपनी सुनहरी केशराशि को कमर तक बिखेरकर एक स्वर्गीय देवी की भाँति मृत्यु-दंड सुनने के लिये चलीं। जैसी आशा थी, वही आज्ञा सुनाई गई। जब यह आज्ञा सुन चुकीं, तो इन्हें फाँसी-घर की ओर ले जाया गया। उस समय समस्त उपस्थित जन-समूह नेत्रों में आँसू भरे प्रस्तर-मूर्ति की भाँति चुपचाप खड़ा था; परंतु यह साहसी देवी स्वतंत्रता पर बलिदान होने के लिये प्रसन्नता-पूर्वक फाँसी-घर की ओर जा रही थीं। उस समय इनके गंभीर, परंतु तेजस्वी, मुख-मंडल से ऐसा भासित होता था कि यह अपने जीवन का कोई सुंदर कर्तव्य पूर्ण करने के लिये जा रही हैं।

इनके साथ इन्हीं-जैसा क्रांतिकारी, मृत्यु-दंड पाया हुआ एक अभियुक्त भी जा रहा था; परंतु वह अत्यंत शोकाकुल था। अपने लिये नहीं, बल्कि मैडम रोलैंड के लिये। वह सोचता था, स्त्री-जाति के प्रति यह भीषण दंड वह किस प्रकार देख सकेगा! मैडम ने यह देखकर अधिकारी से कहा—"कृपा कर मेरे पहले इन कृपालु को फाँसी दो।" संभवतः वह मना कर देता, यदि यह मुसकिराकर न कहतीं—"नहीं, नहीं, मुझे आशा है, तुम एक महिला की अंतिम इच्छा अवश्य पूरी करोगे।"

तत्क्षण इनके साथी को समाप्त कर दिया गया, और इस वीर विदुषी ने धैर्य धारण कर उस भयानक दृश्य को देखा। इसके पश्चात् यह स्वयं आगे बढ़ीं। अभी तलवार ने अपना काम समाप्त नहीं किया था कि इन्होंने स्वतंत्रता-देवी की उस मूर्ति को, जो सामने खड़ी हुई थी, संबोधन कर कहा—"स्वतंत्रता की देवी, तुझे भी कुछ ख़बर है कि इससे पूर्व तुझ पर कितने प्राणी न्योछावर हो चुके हैं, और भविष्य में कितने होंगे—।"

इनके अंतिम वाक्य पूर्ण भी न होने पाए थे कि तलवार गर्दन पर पड़ी, और पृथ्वी रक्त-रंजित हो गई! यद्यपि इस देवी को हुए बहुत समय व्यतीत हो चुका है, परंतु देश की स्वतंत्रता के लिये अपना जीवन तक न्योछावर कर देना अब भी उसे अमर बनाए हुए है, और जब तक संसार में इतिहास एवं उसके पढ़नेवाले रहेंगे, उसका नाम अमर रहेगा।

आनंदीप्रसाद मिश्र "निर्द्वंद्व"

× × ×

२. वैज्ञानिक महिला

जिन महिला का चित्र दिया जाता है, उनका नाम मिस वसुंधराबाई है। आप मदरास-प्रांत की रहनेवाली हैं। और-और प्रांतों की तरह मदरास-प्रांत का आंध्र-विभाग भी महिलाओं को शिक्षा देने में पीछे नहीं है। उक्त महिला अभी हाल ही में मदरास-विश्वविद्यालय से एम्० ए०-परीक्षा में उत्तीर्ण हुई हैं। आप विज्ञान की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

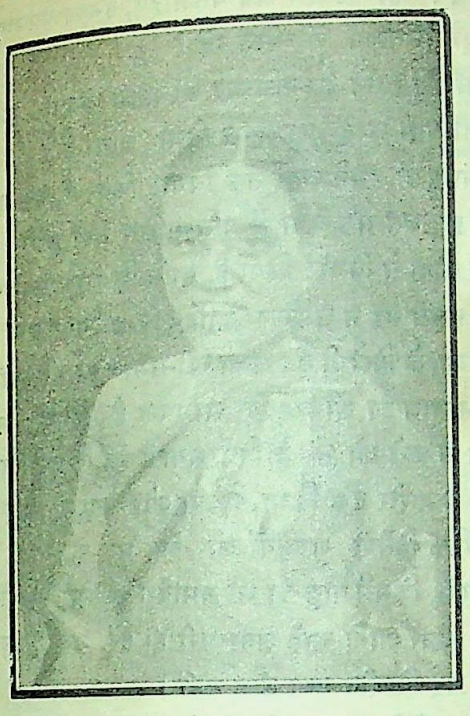

मिस वसुंधराबाई एम्० ए०

उच्चतम शिक्षा प्राप्त करने के लिये 'रमज़ाक'-नामक जहाज़ से विलायत गई हैं। इन्हें सरकार की ओर से छात्र-वृत्ति भी मिली है। आंध्र-प्रांत की यह प्रथम महिला हैं, जिन्हें यह उत्तम सुयोग प्राप्त हुआ है।

श्रीगोपीनाथ वर्मा

× × ×

३. स्त्रियों का पट-पर्दा

किसी गृह, जाति अथवा देश के सुधार के लिये उस गृह, जाति अथवा देश के नारी-वर्ग को शिक्षित बनाने की कितनी आवश्यकता है, इसका अनुमान शिक्षित समुदाय भली प्रकार कर चुका है। पर्दे की प्रथा इस संबंध में प्रधान बाधक है। यह प्रथा प्राचीन नहीं है। यह विशेषतः यवन—मुसलमान—राजों के समय से प्रचलित हुई है, जब कि रूपवती कन्याओं का पाणिग्रहण बल-पूर्वक कर लिया जाता था। इसके पूर्व का कोई प्रमाण इस विषय का समर्थक नहीं मिलता। परंतु किसी नियम के प्राचीन अथवा अर्वाचीन होने से उसकी उपयोगिता निर्धारित नहीं की जा सकती। जिस विषय में लाभ अधिक और हानि स्वल्प मात्रा में हो, वही उत्तम है। इसी दृष्टि से इस पर भी विचार होना चाहिए।

इस प्रथा के प्रचलित होने से सबसे बड़ी हानि शिक्षा की हुई है। स्त्री-जाति तो सब प्रकार से अशिक्षित है ही। पुरुष-समाज में भी शिक्षा का प्रसार इसी के कारण पूर्णतया नहीं हो सकता। कारण, संतान में विशिष्ट गुण माता ही के संसर्ग से उत्पन्न होते हैं, और बहुतों का बीजारोपण तो गर्भ में ही हो जाता है। अभिमन्यु आदि के अनेक प्रमाण इस विषय के इतिहासों में विद्यमान हैं। पूर्व-काल की माताएँ अपने पुत्रों में अनेक गुण बाल्यावस्था में ही उत्पन्न कर देती थीं, तभी तो आज जो गुण वयस्क क्या, वृद्ध पुरुषों में भी नहीं होते, उन गुणों का समावेश पूर्व-काल की नन्ही-नन्ही आत्माओं में ही पूर्णतया हो जाता था। शिक्षा-प्रेमी सज्जनों से यह बात छिपी नहीं कि शिक्षा का जो प्रभाव शिक्षित माता-पिता की संतान पर होता है, वह अशिक्षित माता-पिता की संतान पर विशेष काल एवं विशेष प्रयत्न से होता है। अनेक गुणागुण तो गर्भ-काल अथवा बाल्य-काल में ऐसे प्रविष्ट हो जाते हैं कि आजन्म पिंड नहीं छोड़ते। सच पूछिए, तो बाल-विवाह, कुदेव-पूजन आदि अनेक कुरीतियों का निराकरण भी इन्हीं मूर्ख-शिरोमणि महिलाओं का हाथ होने से पुरुष-समाज नहीं कर सका। उन्हें कौन समझावे, और इतनी समझ भी उनमें कहाँ कि वे समझ लें, इन कुरीतियों का प्रचलन किसी विशेष समय में, किन्हीं विशेष बाधाओं से निस्तार के लिये हुआ था, अब उन बाधाओं का भय नहीं, और इनमें कुछ तथ्य नहीं। हाय, कितना आंतरिक क्षोभ होता है, जब किसी विकसित आत्मा की जिह्वा से ये शब्द कर्णगोचर होते हैं—"क्या करें, महाशय! हमसे इस अनर्थ का दूरीकरण नहीं हो सकता। गृह-स्वामिनी मानती ही नहीं; उसकी अनिच्छा से यह कार्य करने में आज ही यह गृह साक्षात् किरातपुरी बनता है; अमुक-अमुक कारणों से गृह-त्याग भी नहीं कर सकते। अब आयु का जितना अंश बीत गया है, उतना शेष नहीं। येन-केन-प्रकारेण इसे भी बिता देंगे।" ऐसी एक नहीं, अनेक जीवात्माएँ हैं, जो सुबोध होते हुए भी ऐसी अड़चनों के कारण मृतवत् जीवन व्यतीत कर रही हैं। शिक्षा का विकास उनके कोमल हृत्पट पर इस अवस्था में 'बूढ़े तोता राम-राम नहीं रटा करते', इस उक्ति के अनुसार नहीं हो सकता। इसके लिये तो वही बाल्य-काल का समय उपयुक्त है। उसका उपयोग इस अनर्थकारी प्रथा के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कारण नहीं हो सका, और जब तक इसका मूलोच्छेद न होगा, तब तक इस विषय में सफलता कभी नहीं हो सकती।

दूसरी हानि इस प्रथा में यह है कि इससे स्वास्थ्य को भारी धक्का पहुँच रहा है। इस देश की स्त्री-जाति का जीवन ऐसी दूषित वायु में व्यतीत होता है, जिसमें संजीवनी शक्ति का नितांताभाव नहीं तो विशेषाभाव अवश्य है। यही कारण है कि इस देश की स्त्रियाँ स्वस्थ जीवन व्यतीत करती हुई बहुत कम देखने में आती हैं। प्रायः सब-की-सब निस्तेज, पीतवर्ण, अल्पायु प्रतीत होती हैं। जो समय यौवनावस्था का है, उसी में वृद्धावस्था धारण कर लेती हैं। यौवनावस्था तो इनके लिये कभी आती ही नहीं। नगरों में गृह-निर्माण इतना पास-पास होता है कि थोड़े से ही स्थान में कई परिवारों को निर्वाह करना पड़ता है। अतएव गृह पर गृह अर्थात् अट्टालिकादि निर्मित करानी पड़ती हैं, जिससे प्रकृति-जन्य, परम जीवनोपयोगी प्रकाश का भी अभाव रहता है। सूर्य भगवान् के दर्शन ही नहीं होते। ऐसी हालत में स्वास्थ्य बेचारा क्योंकर स्थिर रह सकता है? और, जब स्वास्थ्य नहीं, तो बुद्धिदेवी क्यों कृपा करने लगीं? निदान हमारी स्त्रियाँ हठीली, गर्वीली, चिड़चिड़ी आदि अनेक दुर्गुणों की खानि बन जाती हैं। अब ऐसे माता-पिता की संतान को भी तो इस पैतृक संपत्ति में से कुछ-न-कुछ प्रसाद अवश्य ही प्राप्त होना चाहिए। तब क्यों न्यूनबल, अल्पायु और हतबुद्धि संतान को देखकर पश्चात्ताप किया जाता है!

तीसरी हानि यह है कि इससे अपव्यय बढ़ रहा है, रुग्णता आदि के कारण ओषधि आदि में तो अवश्य होता ही है, परंतु बहुत-से कार्य, जो स्त्रियों की सहायता से विना व्यय अथवा अल्पव्यय के हो सकते थे, वे इनकी देख-रेख में भी नहीं हो सकते। कारण, कोई इनके आगे से ही वस्तु उठाकर क्यों न ले जाय, इन्हें तो आहट पाते ही घर के किसी कोने में छिपना अथवा मुँह ढक लेना पड़ता है; भले ही ठोकर खाकर गिर पड़ें अथवा अंग-भंग हो जाय।

चौथी बड़ी हानि जो हो रही है, उससे समाचारपत्रों के पाठक अनभिज्ञ नहीं हैं। कहीं हमारी स्त्रियाँ स्वयं उड़ाई जाती हैं और कहीं नन्हे-नन्हे बच्चे छिपाकर रक्खे जाते हैं। पुरुष बेचारे क्या करें। घर में यदि चार हैं, तो चारों को उदर-पूर्ति के लिये धन-संचय की चिंता बनी रहती है। लेना इनके हाथ, देना इनके हाथ, किसी कार्य में भी तो हाथ नहीं बटता। अब बतलाइए, इनका पर्यवेक्षण करें या इन चिंताओं में व्यस्त रहें!

पाँचवीं हानि है व्यभिचार की मात्रा बढ़ना। गुप्त वस्तु को ही प्राप्त करने का प्रयत्न किया जाता है;

संक्षेप में हमने जहाँ तक विचार किया है, हमें एक भी गुण इस वर्तमान प्रथा में प्रतिभासित नहीं हुआ। प्रत्युत जिस कोण से विचार किया है, हानि-ही-हानि देख पड़ी है। परंतु इससे यह न समझना चाहिए कि हम पर्दा, दूसरे शब्दों में लज्जा, के विरोधी हैं। लज्जा स्त्री-समाज का ही नहीं, वरन् पुरुष-समाज का भी अमूल्य आभूषण है। परंतु वर्तमान समय में उसे जो रूप दे दिया गया है कि शिर से पग पर्यंत कपड़े से शरीर ढक लिया, अथवा ज्येष्ठ, श्वशुर आदि अपने वास्तविक हितैषी गुरुजनों को देख घर के भीतर ऐसी कोठरी में, जिसमें वायु का भी समावेश न हो, बैठ रहीं, और नाई, कहार आदि चाहे अनाचारी ही हों, उनसे कुछ लज्जा नहीं, यह विपरीत प्रथा ठीक नहीं।

चिर-परिचित स्वजनों के लिये तो यह ढोंग, और मेले आदि में संपूर्ण वस्त्रालंकार से सुसज्जित होकर निधड़क विचरना, जहाँ कितने ही दुर्जनों की कुदृष्टि पड़ती है, यह कैसी अनोखी बात है। इसके अतिरिक्त विवाहादि शुभ अवसरों पर एक कपड़े की ओट से जो अपशब्दोच्चारण (गाली गाना) होता है, उसे तो प्रायः स्वजन, परिजन तथा छोटे-बड़े सभी श्रवण करते हैं। बलिहारी ऐसे पर्दे की! वास्तविक बात यह है कि पर्दा-वर्दा कुछ नहीं, सब ढोंग-मात्र रह गया है। गुरुजनों का यथार्थ सत्कार, किसी दशा में भी उनका अपमान न करना, सदा अविलंब आज्ञा-पालन में तल्लीन रहना निश्चयात्मक रूप से पर्दा है, जिसे स्त्री-पुरुष, दोनों को समान भाव से धारण करना चाहिए। साथ ही ऐसे कार्य, जिन्हें करने से चित्त में संकोच हो, एकांत में करने चाहिए। तब देखिए यह भारत-भूमि स्वर्गधाम कैसे नहीं बनती। परंतु जब तक अज्ञान के माहात्म्य की अवहेलना न की जायगी, कुछ न होगा। इसलिये भारत-हितचिंतकों का सबसे पूर्व इस ओर ध्यान जाना चाहिए। मुझे जो कुछ कहना था, संक्षेप में कह चुका। आशा है, विज्ञवर महाशय इस पर समुचित प्रकाश डालेंगे। तभी भारत की इन अंधपरंपराओं का विध्वंस होगा। भगवान् यह शुभ दिन शीघ्र लावें। तथास्तु।

बदरीप्रसाद जैन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

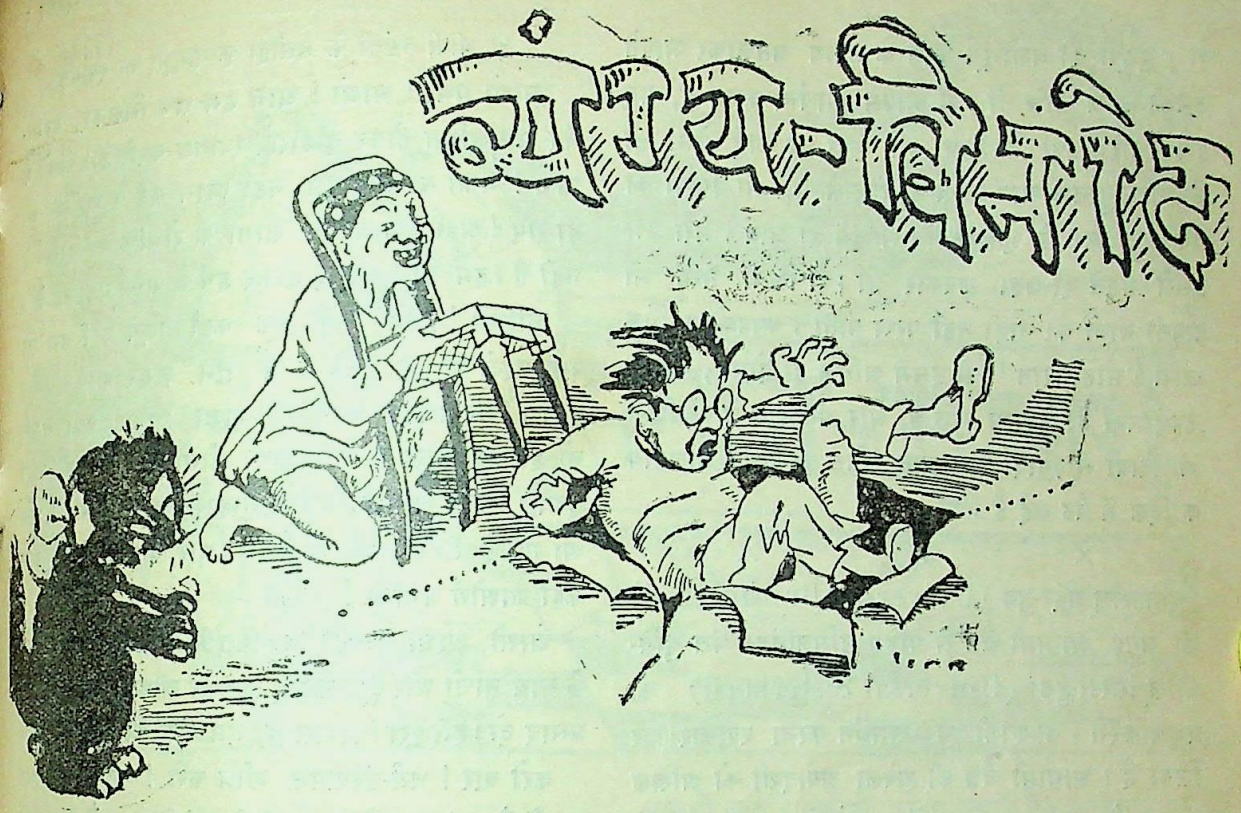

१ होली का रंग

ब के बाबू शिवपूजनसहाय का साहित्यिक विवाह होनेवाला है। वह अपनी भविष्य पत्नी की परीक्षा ले चुके हैं। बिहारी-सतसई में उन्हें प्रवीण और उत्तीर्ण पाया। पत्र से मालूम हुआ, उनकी भविष्य पत्नी अपने भावी पति की आज्ञा से इस समय विद्यापति-पदावली का अध्ययन कर रही हैं।

× × ×

बाबू शिवपूजनसहाय ने "निराला"जी के पास "सहिवाला" होने का निमंत्रण-पत्र भेजा था। उन्होंने "सहिवाला" होना स्वीकार कर लिया है। वर-पक्ष से कोषाध्यक्ष हैं बाबू जयशंकर "प्रसाद" और कर्ता हैं पंडित कृष्णविहारी मिश्र। पंडित बालकृष्ण शर्मा "नवीन", पंडित विष्णुदत्त शुक्ल, पंडित रामशंकर त्रिपाठी, पंडित विनोदशंकर व्यास, पंडित लक्ष्मीनारायण मिश्र "श्याम" आदि ने वर-यात्री होना स्वीकार कर लिया है।

× × ×

कन्या-पक्ष से तिलक लेकर आवेंगे "बालक" के संपादक पंडित रामवृक्ष शर्मा बेनीपुरी और पंडित मोहनलाल महतो "वियोगी"। कन्या-पक्ष का कर्तव्य पराड़करजी ने ग्रहण कर लिया है।

× × ×

पंडित जगन्नाथप्रसादजी चतुर्वेदी लिखते हैं—यद्यपि स्टेट की मैनेजरी से हमें फ़ुर्सत नहीं मिलती, तथापि हम भरसक कोशिश करेंगे कि आपकी महफ़िल वीरान न हो। इस कृपा के लिये उनके पास बधाई का पत्र जा चुका है।

× × ×

अब के साहित्य पर मंगलाप्रसाद-पारितोषिक उग्रजी को मिलेगा; क्योंकि काव्य-सांख्य-व्याकरण-तीर्थ प्रोफ़ेसर सकलनारायण शर्मा ने लिखा है, मंगलाप्रसाद-पारितोषिक के निर्णायक उग्रजी की पुस्तकें पढ़ लें। पंडितजी की सलाह से निर्णायकों ने तीन-तीन प्रतियाँ प्रति पुस्तक की ख़रीद ली हैं।

× × ×

श्रीयुत जी० पी० श्रीवास्तव पंडित कृष्णकांत मालवीय को लिखते हैं—"सोहागरात" लिखकर आपने स्त्रियों का बहुत बड़ा उपकार किया, बेचारी पुरुषों की सताई हुई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

थीं ; पुरुषों को वशीभूत करने के उपाय बतलाकर आपने उनकी आँखें खोल दीं। मैं आपसे प्रार्थना करता हूँ, अब हम बेचारे पुरुषों के लिये भी कृपा कर कोई ऐसी ही उपयोगी पुस्तक आप लिख दें, जिससे हमें भी स्त्रियों को वशीभूत करने के कुछ उपाय मालूम हो जायँ। मेरा तो इससे बहुत ही बड़ा उपकार हो। मैं किसी तरह भी अपनी बीबी की नाड़ी नहीं परख पाता। आपको आर्थिक लाभ "सोहागरात" से इसमें अधिक ही होगा ; क्योंकि रुपए मर्दों ही के पास रहते हैं, और संख्या में वे पढ़े-लिखे भी स्त्रियों से ज़्यादा हैं। बात पंडित कृष्णकांत मालवीय के दिल में बैठ गई है।

× × ×

युनिवर्सल् ब्रदर-हुड (Universal Brotherhood) की जगह आगामी चैत्र से पंडित सुमित्रानंदन पंत युनिवर्सल् सिस्टर-हुड (Universal Sisterhood) का प्रचार करेंगे। बख़्शीजी ने समर्थन करना स्वीकार कर लिया है। आगामी चैत्र की शुक्ला त्रयोदशी को अखिल भारतवर्षीय महिला-परिषद् में इन दोनों महानुभावों के व्याख्यान होंगे। कानपुर से "नवीन"जी भी जानेवाले हैं।

श्रीविनोदलाल गुप्त

× × ×

२. चौदह रत्न

मनि हैं सुमन, कल्पतरु हैं हितैषी, शशि—
श्रीरतन, भगवती वारुनी-बरन हैं ;
निरमल शंख, पंत रंभा, श्रीसुभद्रा श्री हैं,
नंदिनी नवीन औ' अनंदी गज-तन हैं।
विष हैं अनूप, त्यों धनंतर वियोगीहरि,
धनुष निराला, पद्म बाजि स-वचन हैं ;
मोहिनी सुधा-से हैं वियोगी, नए निकरे ये,
साहित के सागर से चौदहौ रतन हैं।

"रंगी"

× × ×

३. बीबी बसंती के मसीहा कृष्णमूर्ति का स्वागत

आओ प्रभो ! आओ ! आज हम सब मिलकर, परमानंद से पुलकित होकर तुम्हारा स्वागत करते हैं ! भक्तों के प्राण ! भक्तों का मोह तुम नहीं त्याग सके। आख़िर आ ही गए ! अहा ! आज हम लोगों के रोमांच का पारावार नहीं है। हम लोग गद्गद होकर हर्ष के आँसू बहा रहे हैं।

छलिया ! इतने दिनों तक कहाँ छिपे थे ? हम तो भई, पहले ही कह चुके थे कि तुम ज़रूर आकर दर्शन दोगे। 'परित्राणाय साधूनाम्'-वाला वाक्य क्या तुमने यों ही कह मारा था ! पर इन लोगों को यक़ीन नहीं हुआ। धिक् अविश्वासियो ! तुम्हारा बुरा होगा ! अब आ गए हैं बीबी बसंती के लाल और हमारे प्रभु। अब कहाँ जाओगे बचाजी !

आओ, आओ नटवर ! विलायत में जाकर गोपांगनाओं के साथ नाचो और दूध-मलाई चुराकर खाओ, फिर हमें भी प्रसाद दो। हमें पूरा विश्वास है, तुम कंस का वध करोगे।

करो यार ! धर्म-संस्थापन शीघ्र करो ! बहुत तंग आ गए हैं भैया ! अब तो लाज बीबी बसंती के और तुम्हारे ही हाथ में है। आज तक देश की लाज बीबी ने ही रक्खी है, अब तुम अपना मंत्र फूँको।

आओ, आओ, हमारे गिरिवरधारी ! भारत के सिर पर कमीशनआदि दुःखों का पहाड़ टूट पड़ा है, उसे उठाकर अपने सिर पर रख लो। यह भार तुम्हीं सह सकोगे। आओ भाई ! देश को इन दुःखों से उबारो।

आओ हमारे कोट-पैंट--धारी कृष्ण ! अपनी अभिनव-मूर्ति हमें दिखाओ। हिंदोस्तानियों की धोती, कुर्ता और टोपी जलाकर उन्हें सभ्य बनाओ। खद्दर की धोती पहनकर यह देश बर्बरता के कराल अंधकार में डूबा ही चाहता है।

स्वागत है मेरे रसिया बाँके-बिहारी ! अपनी तिरछी नज़रों की अदाओं से एक-आध गोरी को गाँठकर शादी कर लो भाई। उसके गर्भ से फिर गौरांग प्रभु अवतरित होंगे, जो तुम्हारे बाद देश को दुश्मनों से बचाए रहेंगे। या अविवाहित रहने का इरादा है ? जो कुछ भी हो, तुम आओ, हम तुम्हारा स्वागत करते हैं।

"गौरांग-भक्त"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समाज और सुधार

यह आर्य (हिंदू)-जाति एक बहुत प्राचीन जाति है। इसको इतने पुरातन होने पर जितना अभिमान है, उतना शायद ही किसी जाति को कभी रहा हो। इसके पास समाज-सुधार की सामग्री शास्त्रों और स्मृतियों में उपस्थित है। इसकी प्राचीन संस्थाएँ इस प्रकार से बनाई गई थीं कि समाज सुसंगठित रह सके। इसलिये यहाँ के लोग समाज-सुधार के नाम से घबराते हैं। वे कहते हैं—"जब हमारे पूर्वज बड़े बुद्धिमान्, तपस्वी, धर्मात्मा और ज्ञानी थे, तो उनके बताए हुए मार्ग पर चलना ही यथेष्ट है। समाज-सुधार के नाम से नई बातों पर अमल करना मानो अपने पूर्वजों की बुद्धि की अवहेलना करना है। जैसा होता आया है, वैसा ही होने दो। क्या हमारे पूर्वज मूर्ख थे?" यह प्रश्न भारतवर्ष में प्रत्येक की जिह्वा पर रहता है। यदि इसका उत्तर अन्य देशवालों के समान दिया जाय, और कहा जाय कि "संभव है मूर्ख रहे हों", तब तो आकाश-पाताल एक हो जायँ। "ओहो, बड़े बुद्धिमान् हैं, जो अपने पूर्वजों को मूर्ख बताते हैं। यदि वे ही न होते, तो तुम कहाँ से आते?" यदि कहा जाय कि—"नहीं। हमारे पूर्वज मूर्ख न थे", तो फिर "परिवर्तन ही क्यों करते हो? जैसा होता आया है, वह, सब अच्छा है, उसी को होने दो। जिनको तुम कुप्रथाएँ कहते हो, वे वस्तुतः बड़ी अच्छी प्रथाएँ हैं। केवल तुम्हारी बुद्धि का फेर है। तुम्हारी समझ में नहीं आतीं।"

यह है समाज-सुधार के विरोधियों की वार्ता। सारांश यह कि हाथ न हिलाओ, जैसा होता रहा है, वैसा ही होता चला जाय। भारतवर्ष में सुधारों का प्रवेश करने का प्रयत्न ही मानो अपना और अपने शास्त्रों का अपमान करना है।

परंतु ऐसे लोग समाज की दशा को नहीं बिचारते। उनका कोई निश्चित उद्देश नहीं, उन्होंने कभी यह सोचने का यत्न नहीं किया कि हमारे समाज का उद्देश क्या है, और उसकी पूर्ति कैसे हो सकती है। उनकी अवस्था जंगल में जाते हुए उस पथिक के समान है, जो चल तो रहा है, परंतु यह नहीं जानता कि कहाँ से आ रहा हूँ और मुझे कहाँ जाना है? कब तक पहुँचना है?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और क्यों पहुँचना है ? उनके लिये केवल यही पर्याप्त है कि चल रहे हैं। जो समाज के उद्देशों पर ध्यान रखते हैं, वे उसकी गति पर भी अवश्य ही ध्यान रखते हैं। वे उद्देश से विचलित होते ही समाज की गति को सुधारने में तत्पर हो जाते हैं। परंतु जिन्होंने अपने रथ के घोड़ों की लगाम छोड़ दी है, वे अपने मार्ग को निर्दिष्ट रहने ही नहीं देते। जिधर रथ चलेगा, उधर वे भी चलेंगे। बहुतों का मत है कि हिंदू-जाति-रूपी रथ का मार्ग ऐसा निर्दिष्ट है कि रथ अपने पथ से विचलित हो ही नहीं सकता। यह रथ इतना सुदृढ़ है कि उसकी मरम्मत करने की ज़रूरत ही नहीं पड़ती।

परंतु यह घातक भूल है। हमारा भी विश्वास तो यही है कि हमारे पूर्वज बड़े विद्वान्, तपस्वी और दूरदर्शी थे। उन्होंने अपनी संस्थाएँ बड़ी सुदृढ़ नींव के ऊपर बनाईं, और उन प्राचीन संस्थाओं ने जाति का बड़ा उपकार किया। परंतु हम यह मानने के लिये तैयार नहीं कि हमारे पूर्वजों की बनाई हुई संस्थाएँ ज्यों-की-त्यों चली आ रही हैं। जिस समाज-रूपी रथ के पहिए पचास हज़ार वर्ष पहले बड़े मज़बूत, बड़े चमकीले और बड़े उपयुक्त बनाए गए थे। वे अब भी पचास हज़ार वर्ष के प्रयोग के पीछे, वैसे ही मज़बूत, वैसे ही चमकीले और वैसे ही उपयुक्त नहीं रह सकते। यह संसार परिवर्तन-शील है। इसमें अनेक भौतिक और मानसिक विप्लव होते रहते हैं। फिर कैसे संभव है कि हमारे रथ के पहियों की मरम्मत की ज़रूरत न हो। और, यदि मरम्मत की ज़रूरत है, तो क्यों न मरम्मत की जाय ?

हमारा विश्वास है कि हमारे पूर्वजों ने महल भी बनाए और तंबू भी बनाए। महल स्थायी थे और तंबू क्षणिक। जहाँ स्थायी रीति से निवास करना होता था, वहाँ बहुमूल्य महल बना लेते थे ; परंतु जहाँ दो-चार दिन ही ठहरना होता था, वहाँ कपड़े का वितान तान-कर ही काम निकाल लेते थे। यही बुद्धिमत्ता का चिह्न था। स्थायी निवासस्थान में तंबू लगाना मूर्खता होती, और दो-चार दिन ठहरने के लिये महल बनाना अपव्यय था। इसलिये उपयुक्त यही था कि क्षणिक आवश्यकताओं के लिये क्षणिक सामग्री और स्थायी आवश्यकताओं के लिये स्थायी सामग्री एकत्रित की जाय। परंतु मरम्मत की महलों और तंबुओं, दोनों में आवश्यकता पड़ती थी। तंबू भी फट जाते थे, तो उनको ठीक करना था, उनमें पेबंद लगाना पड़ता था। महलों पर भी ताई करने की ज़रूरत होती थी। हमारे पूर्वजों ने जिस बुद्धिमत्ता से ये महल और तंबू बनाए, उसी बुद्धिमत्ता से इनकी मरम्मत करने को सामग्री भी एकत्रित की, और उसकी रीति निर्दिष्ट कर दी। जो पुरुष यह कहता है कि मैं अपने पूर्वजों के बनाए महल की मरम्मत नहीं कराऊँगा, वे बुद्धिमान् थे और उनके बनाए हुए महल की मरम्मत की ज़रूरत नहीं, वह मूर्ख है। उसको इतिहास का ज्ञान नहीं। उसे यह नहीं मालूम कि हमारे पूर्वज किस प्रकार बर्ता करते थे। वह न तो अपने मस्तिष्क को काम में लाता है और न अपने पूर्वजों के मस्तिष्क को। वह बनना तो चाहता है अपने पूर्वजों का अनुयायी ; परंतु अनुयायी होने की उसमें योग्यता नहीं। जिसकी आँखें फूट गई हों, टाँगों में बल न रहा हो, उसको पूर्वजों का बनाया हुआ मार्ग भी नहीं दिख सकता, और न वह उस पर चल सकता है।

हिंदू-जाति का आजकल यही हाल है। उसके पूर्वजों ने बड़ी तपस्या से सामाजिक संस्थाओं की नींव डाली। उनमें कुछ तो महल के समान स्थायी थीं और कुछ संस्थाएँ तत्कालीन थीं। विशेष काल, विशेष देश और विशेष अवस्थाओं के लिये ही उनका निर्माण हुआ था। हिंदू-जाति ने आलस्य के वश यह समझ लिया है कि प्रथम तो सब संस्थाएँ सब काल के लिये हैं। दूसरे इनमें कभी परिवर्तन की आवश्यकता नहीं। इसलिये वह समाज-सुधार में हस्तक्षेप करना नहीं चाहती।

आलस्य सबसे कम परिवर्तनशील है। इसलिये प्रायः देखा जाता है कि आलस्य के वश जातियाँ भी सबसे कम परिवर्तन चाहती हैं। हिंदू-जाति आजकल सबसे अधिक आलसी है। इसलिये इसकी सबसे पहली इच्छा तो यही होती है कि किसी प्रकार परिवर्तन की आवश्यकता न पड़े। इसके लिये प्राचीन पूर्वजों की श्रद्धा एक बहाने का काम करती है। यदि केवल इतना कहने से काम चल जाय कि हमारे पूर्वज जो कुछ करते थे, वह सब अच्छा ही करते थे, तो फिर हाथ-पैर हिलाने से क्या प्रयोजन ? हम यह नहीं सोचते कि हमारे पूर्वज आलसी नहीं थे, नित नई गवेषणाएँ करते थे और वे जैसी जिस समय ज़रूरत होती थी, उसी के अनुकूल कार्य करने में संलग्न हो जाते थे। उन्होंने बड़े-बड़े टापुओं की खोज की। संसार-भर में बस्तियाँ बसा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

डालीं। ज़मीन के गज़ बन गए। बड़े-बड़े नगर बसाए, विशाल भवनों का निर्माण किया। पर्वतों को काट डाला। नदियाँ निकाल डालीं। अद्भुत पुस्तकें लिख गए। यदि हमारे यह पूर्वज भी हमारी तरह यही कहते रहते कि "हमारे पूर्वज जो कुछ कर गए, वह ठीक है। हमको कुछ परिवर्तन की आवश्यकता नहीं", तो क्या आज हमको अपने पूर्वजों पर अभिमान करने का अवसर मिलता? कदापि नहीं। हमारे पूर्वजों ने समझ लिया था कि संसार परिवर्तनशील है। हम भी परिवर्तनशील हैं। इसलिये जहाँ जैसी ज़रूरत हुई, वहाँ वैसे ही परिवर्तन भी किए। उनका कथन था—

तातस्य कूपोऽयमिति ब्रुवाणाः क्षारं जलं कापुरुषाः पिबन्ति।

अर्थात् "बाप के बनाए खारी कुएँ का पानी पिए चले जाना कायर पुरुषों का काम है।"

सृष्टि का एक प्रबल नियम यह है कि आप हर घड़ी उन्नति करने का यत्न करते रहें। कभी उससे संतुष्ट न हों। यदि ऐसा न करोगे, तो अवनति आरंभ हो जायगी। उन्नति न करना ही अवनति है। उदाहरण के लिये यह संसार बड़ी भारी भीड़ के समान है। आप भीड़ में खड़े हुए यह चाहते हैं कि हम इसी स्थान में खड़े रहें। नियम यह है कि यदि आप आगे को पैर बढ़ाने के लिये तैयार नहीं हैं, तो भीड़ आपको उसी स्थान पर रहने न देगी। या तो आगे बढ़िए, अन्यथा पीछे हटा दिए जाओगे। हिंदू-जाति चाहती है कि हम उसी स्थान पर खड़े रहें, जिस पर वह हज़ार-दो हज़ार वर्ष पहले खड़ी थी। परंतु उसकी यह इच्छा सफल नहीं हुई। अन्य जातियों ने कहा कि या तो आगे बढ़ो या पीछे हटो। इन्होंने आगे बढ़ने से इनकार किया। बस, अन्य जातियों ने इसको पीछे ढकेल दिया। किसी समय यह जाति सबसे प्रथम थी। अन्य जातियाँ इसको गुरु मानती थीं—

एतद्देशप्रसूतस्य सकाशादग्रजन्मनः;
स्वं स्वं चरित्रं शिक्षेरन् पृथिव्यां सर्वमानवाः।

इस देश के लोग विदेशों में जाकर आचार-व्यवहार का उपदेश देते थे। इनके आचरणों को लोग प्रमाणिक मानते थे। क्या हिंदू-जाति अब भी उसी स्थान पर है? जो ऐसा समझते हैं, वे आँखों-देखते भी नहीं देखते और कानों-सुनते भी नहीं सुनते। आज हिंदू-जाति को सभ्य जातियाँ कुली समझती हैं। कोई इनका सम्मान करने के लिये तैयार नहीं। यही नहीं, सब अच्छे-अच्छे स्थान भी हिंदुओं से छिन गए। स्वयं भारतवर्ष में भी दो-तिहाई ही हिंदू रह गए हैं, और प्रत्येक मनुष्य-गणना में इनकी संख्या कम होती जाती है। कुछ हिंदू-रियासतों में तो हिंदुओं की संख्या इस वेग से कम हो रही है कि उनकी शीघ्र ही इतिश्री होना चाहती है। दक्षिण में ट्रावनकोर रियासत है। यह हिंदू-रियासत है। १९०१ ई० में इस रियासत में दस हज़ार पुरुषों में ६,८९५ हिंदू थे, १९११ में केवल ६,६५७ रह गए और १९२१ ई० में ६,३६५ ही रह गए। भारतवर्ष के समस्त ईसाइयों में सबसे अधिक संख्या ट्रावनकोर में है। ३७,५२८ मनुष्य ईसाई हो चुके हैं। बंगाल में १८७२ ई० में हिंदुओं की संख्या मुसलमानों की अपेक्षा साढ़े चार लाख अधिक थी। ५० वर्ष में, अर्थात् १९२१ ई० में, मुसलमान ५० लाख अधिक हो गए। १० वर्ष में हिंदुओं की संख्या में १,३६,२३१ की कमी हो गई। बंगाल की मनुष्य-संख्या का हिसाब इस प्रकार है—

सन् ईसवी	हिंदू	मुसलमान	ईसाई
१८७२	१,७०,५१,५३३	१,६६,१९,१९१	६३,४८२
१८८१	१,८०,६७,८१६	१,८३,९५,४२४	७२,२७९
१८९१	१,८९,७४,२७९	२,०१,७३,२०१	८२,३३९
१९०१	२,०१,५२,१०१	२,३९,५१,८१८	१,०३,५९६
१९११	२,०९,४५,३७९	२,४२,३६,७६६	१,२९,७०६
१९२१	२,०८,७९,१४८	२,४४,८६,१२४	१,८९,०७५

भारतवर्ष में १९११ ई० में ३८,७६,००० ईसाई थे। १९२१ में ४७,५४,००० हो गए अर्थात् ८,७८,००० का आधिक्य हुआ।

संयुक्तप्रांत आगरा व अवध की मनुष्य-गणना के अध्यक्ष का कथन है कि १९०१ से लेकर १९११ तक हिंदू लोग १·३१ प्रति शतक कम हुए थे, और १९११ से १९२१ तक ३·५ प्रति शतक कम हुए। उन्होंने हिसाब लगाया है कि ११८५ वर्ष में हिंदू और मुसलमान बराबर हो जायँगे। मेरे विचार में यदि हिंदू और मुसलमानों में ऐसी ही दशा रही, तो ११८५ वर्ष लगेंगे; परंतु यदि हिंदू न जगे और मुसलमान उन्नति करते रहे, तो ११८५ से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बहुत पूर्व हिंदू मुसलमानों के बराबर हो जायँगे, और हिंदुओं की संख्या कम होनी आरंभ हो जायगी। इस सबका मुख्य कारण यह नहीं कि लोग ईसाई-धर्म को वैदिक धर्म से अच्छा समझते हैं। अधिकतर तो हिंदुओं के सामाजिक अत्याचारों से तंग आकर लोग अपना धर्म छोड़ बैठते हैं, और सदा के लिये उस आत्मिक शांति से वंचित रह जाते हैं, जो उनको वैदिक धर्म में प्राप्त हो सकती थी। सामाजिक दोषों के कारण हिंदुओं की आत्मिक उन्नति में भी बड़ी बाधा पड़ रही है। समस्त समय सामाजिक अत्याचारों के निराकरण या उनसे उत्पन्न हुई विपत्तियों के भोगने में व्यय हो जाता है।

हिंदुओं के अनेक सामाजिक दोषों का कारण यह है कि ये कलियुग के पुजारी हैं। इन्होंने ईश्वर और उसके नियमों की पूजा न करके कलियुग की पूजा आरंभ कर दी है। ये समझते हैं कि बस, कलियुग आ गया। कलियुग में दोष अवश्य होंगे, चाहे कितना ही प्रयत्न किया जाय। इसलिये प्रयत्न भी क्यों करना। इन भलेमानसों को यह नहीं सूझता कि कलियुग केवल हिंदुओं के लिये ही है या औरों के लिये भी। संसार की अन्य जातियाँ तो कलियुग में रहती हुई उन्नति करें, और कलियुग के पुजारी हिंदू कलियुग-कलियुग की ही रटना रटते रहें। जिस प्रकार बंदर के सामने यदि साँप काटने आ जाय, तो बंदर आँखें बंद करके बैठ जाता है, वह समझता है, आँखें बंद करने से विपत्ति दूर भाग जायगी, इसी प्रकार हिंदू लोग विपत्ति आने पर आँखें बंद करके बैठ जाते हैं। वे यह नहीं जानते कि विपत्ति सामना करने से दूर होती है, न कि आँखें बंद करने से। हिंदुओं को सबसे पहले यह विश्वास दिलाने की आवश्यकता है कि जीव कर्म करता है, और उसी के अनुकूल फल पाता है। कलियुग कर्म नहीं करता, और न भोगता ही है।

बहुत-से लोग कहा करते हैं कि जिस प्रकार जाड़े में रज़ाई ओढ़ते और गर्मियों में मलमल पहनते हैं, इसी प्रकार कलियुग में मनुष्य की अवनति ही होती है। उन्नति के युग तो सत्ययुग, त्रेता और द्वापर ही हैं। इस सिद्धांत ने हिंदुओं को बड़ी हानि पहुँचाई है। इनके हृदय से उन्नति का विश्वास हट गया है। ये समझने लग गए हैं कि जब तक कलियुग है, इनकी उन्नति हो ही नहीं सकती। उन्नति का मूल-मंत्र आशा और आत्म-विश्वास है। कलियुग के सिद्धांतों ने आशा और आत्म-विश्वास, दोनों के मूल पर आघात किया है। इनकी आशा-लता सूख चुकी। इनका आत्म-विश्वास लुप्त हो गया। ये कलियुग का शिकार हो चुके। पाश्चात्य जातियाँ इसी कलियुग में उन्नति करें, और हिंदू-जाति जाड़े-गर्मी और लिहाफ़-मलमल के व्यर्थ उदाहरणों में अपना समय नष्ट करे! यह कितने शोक की बात है। कलियुग की जाड़े या गर्मी से उपमा देना ही भूल है। जिस प्रकार जाड़ा हो या गर्मी, दोनों समय सत्य-भाषण ही अच्छा है, मिथ्या-भाषण नहीं, इसी प्रकार मूल-धर्म के लक्षण सत्ययुग और कलियुग में एक-से ही रहते हैं। क्या जाड़े में चोरी करना पाप है और गर्मी में पुण्य? इसी प्रकार यदि प्रयत्न करके अपनी अवनति न होने देना सत्ययुग में मनुष्य का कर्तव्य था, तो अब भी है और भविष्य में भी रहेगा।

समाज-सुधार में सबसे बड़ी बाधा 'कर्म' का अर्थ न समझने के कारण भी होती है, जिसको साधारण लोग अपनी भाषा में 'भाग्य' अथवा 'क़िस्मत' के नाम से पुकारते हैं। लोग समझते हैं, जो कुछ दुःख उनको प्राप्त हो रहे हैं, उनका कारण उनकी सामाजिक त्रुटियाँ नहीं, किंतु उनके भाग्य या क़िस्मत का फेर है। यह दोष वैदिक धर्म की उपेक्षा के कारण हिंदुओं में आया है। वैदिक सिद्धांत यह है कि मनुष्य कर्म करने में स्वतंत्र है और फल पाने में ईश्वर के अधीन। तुम जैसा कर्म करोगे, वैसा ही फल प्राप्त करोगे। इसलिये वैदिक धर्म सिखलाता है कि यदि तुम इस समय दुखी हो, तो यह न समझो कि सदैव दुखी बने रहोगे। तुमको सोचना चाहिए कि वर्तमान दुःख पिछले किसी दुष्कर्म का फल है; इसलिये वर्तमान में सुधार करने से भविष्य अवश्य सुखमय होगा। भूतकाल में दोष-युक्त कर्म करने से वर्तमान में दुःख हुआ। यदि वर्तमान में भी दोषयुक्त कर्म रहेंगे, तो भविष्य भी बिगड़ेगा। इसलिये भविष्य को बनाने के लिये वर्तमान में कार्य करना उचित है। यदि तुम सुखी हो, तो भी कर्म करो; क्योंकि भूतकाल में शुभ कर्म किए, तब तो वर्तमान में सुख मिला। यदि वर्तमान में शुभ कर्म न किए, तो भविष्य-निर्माण किस प्रकार करोगे? हिंदू-जाति में आजकल 'भाग्य के लिखे' पर बहुत श्रद्धा है। परंतु ये नहीं जानते कि यह अवैदिक सिद्धांत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुसलमानों से लिया गया है। मुसलमान लोग पुनर्जन्म नहीं मानते। वे समझते हैं कि ईश्वर ने हमको बनाया है। समय के कुछ भोग अपनी इच्छा के अनुसार नियत कर दिए हैं, जिनको 'भाग्य' या 'क़िस्मत' कहते हैं। 'क़िस्मत' का शाब्दिक अर्थ है 'बाँटना', और 'भाग्य' का भी यही अर्थ होता है। वे समझते हैं कि ईश्वर के पास जो कुछ सुख की सामग्री है, उसे वह अपनी इच्छा के अनुसार किसी को कम किसी को अधिक बाँट देता है। हिंदुओं ने यह सिद्धांत मुसलमानों से लेकर सर्वसाधारण में भ्रम उत्पन्न कर दिया है। कोई ऐसी स्लेट या तख़्ती नहीं, जिस पर 'भाग्य' लिखा जाता हो। वस्तुतः हम जैसा कर्म करते हैं, वैसा ही फल मिलेगा। इसलिये 'भाग्य' के भरोसे बैठे रहना शास्त्र और प्राचीन पूर्वजों की शिक्षा, दोनों के विरुद्ध है। हिंदुओं में एक लोकोक्ति है—"चलनी में दूध दुहे, कर्म को टटोवे", अर्थात् वह कितना मूर्ख मनुष्य है, जो चलनी में दूध दुहने बैठता है, और जब दूध गिरने लगता है, तो कहता है—क्या करूँ, मेरा भाग्य ही बुरा था! विपत्ति आने पर उँगली से माथे की ओर संकेत करने से काम न चलेगा। कुछ लोग समझते हैं, मस्तिष्क एक प्रकार की मुक़द्दमे की मिस्ल है, जिसमें हमारी 'क़िस्मत' लिखी हुई है। वस्तुतः यह बात नहीं। मस्तिष्क केवल बुद्धि का घर है। यदि तुमने अशुभ कर्म किया और परिणाम में दुःख हुआ, तो अवश्य ही मस्तिष्क अर्थात् बुद्धि का दोष है। परंतु वह दोष माथा ठोंकने से न जायगा। ज़रूरत तो इस बात की है कि माथे में जो बुद्धि है, उसको काम में लाया जाय। बुद्धि को काम में लाने से ही कर्म बनेगा, और कर्मानुसार ही फल की प्राप्ति होगी।

इसलिये इन सब विघ्नों को अपने मन से हटाकर प्रत्येक हिंदू-स्त्री तथा पुरुष और समझदार बालक का मुख्य कर्तव्य यह है कि वह सामाजिक रीतियों की भले प्रकार आलोचना करे, और जो-जो प्रथाएँ हानिकारक प्रतीत होती हों, उन्हें दूर करने का यत्न करे। हम आगे चलकर इन बातों का वर्णन करेंगे—

(१) सामाजिक संगठन—प्राचीन और नवीन। इसमें दोष।

(२) शुद्धि, इसे दूर करने के साधन।

(३) स्त्री-जाति। इसका मुख्य स्थान। इसके विषय में अनेक भ्रम। उनकी ओषधि। विधवा-विवाह। स्त्री-दोष।

(४) परिवार। संयुक्त परिवार की मीमांसा। उसके हानि-लाभ। उसके सुधार के उपाय।

(५) विदेश-यात्रा।

(६) विवाह-संबंधी कुप्रथाएँ। ❀

गंगाप्रसाद उपाध्याय

* लेखक की अप्रकाशित पुस्तक का एक अंश।

आर्डर भेजिए! तुरंत मँगाइए!!!

ख़ास रियायत!

सुधा

अवसर न चूकिए!

के सुंदर सुनहरी रेशमी जिल्दवाले

१ से ६ संख्याओं के सेट तैयार हो गए!

१ से ६ संख्याओं के सेट बड़े ही मनोमोहक, रेशमी जिल्द से मंडित और सुवर्णाक्षरों से अंकित हैं। मूल्य प्रति सेट ४॥) डाक-व्यय-सहित, किंतु सुधा के ग्राहकों से ३) ही लिया जायगा। आज ही पत्र भेजकर मँगाइए। अन्यथा बिक जाने पर फिर न मिलेंगे। सुधा के ऐसे ग्राहक जो श्रावण मास से नहीं बने हैं, उन्हें भी ये सेट ३) में दिए जायँगे। लेखों की दृष्टि से ये संख्याएँ बड़ी महत्त्वपूर्ण हैं। प्रथम दो अंकों की तो इतनी अधिक माँग आई थी कि हमें उनके २-२ संस्करण निकालने पड़े!

मैनेजर सुधा, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

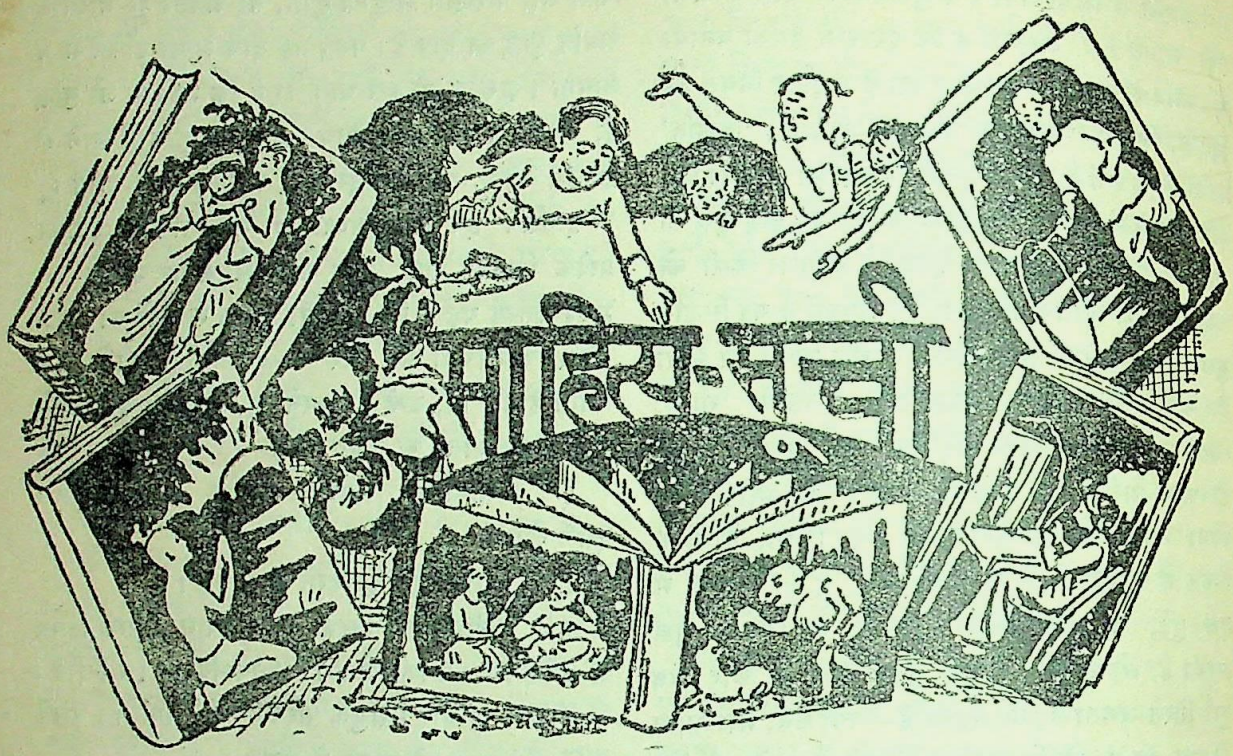

इस कॉलम में हम हिंदी-प्रेमियों की जानकारी और सुबीते के लिये प्रतिमास नई-नई पुस्तकों के नाम देते हैं। पिछले महीने में नीचे-लिखी पुस्तकें प्रकाशित हुईं—

(१) 'श्रीछत्रसाल-दशक' (सटीक)—टीकाकार, लाला भगवानदीन; मूल्य =)

(२) 'बंकिम-साहित्य' (तीन खंड)—बँगला का हिंदी में अनुवाद; मूल्य ३॥)

(३) 'मेवाड़-गौरव'—लेखक, बा० पद्मराज जैन; मूल्य १)

(४) 'शंकराचार्य' (जीवन-चरित्र)—लेखक, श्रीउमादत्त शर्मा; मूल्य १॥)

(५) 'शिवाजी' (जीवन-चरित्र)—लेखक, श्रीउमादत्त शर्मा; मूल्य १॥)

(६) 'महाराणा प्रताप' (जीवन-चरित्र)—लेखक, पं० सूर्यकांत त्रिपाठी "निराला"; मूल्य १)

(७) 'पृथ्वीराज' (जीवन-चरित्र)—लेखक, पं० नरोत्तम व्यास; मूल्य १)

(८) सावित्री-सत्यवान (द्वितीय संस्करण)—लेखक, श्रीउमादत्त शर्मा; मूल्य ॥)

(९) 'नल-दमयंती' (द्वितीय संस्करण)—लेखक, श्रीउमादत्त शर्मा; मूल्य ॥)

(१०) 'भक्त प्रह्लाद'—लेखक, पं० सूर्यकांत त्रिपाठी "निराला"; मूल्य ॥=)

(११) 'भीष्म'—लेखक, पं० सूर्यकांत त्रिपाठी "निराला"; मूल्य ॥=)

(१२) 'लव-कुश'—लेखक, पं० ईश्वरीप्रसाद शर्मा; मूल्य ॥=)

(१३) 'शांति-कुटीर' (तृतीयावृत्ति)—अनुवादक, पं० रूपनारायण पांडेय; मूल्य १=), १॥)

(१४) 'राजसिंह' (तृतीयावृत्ति)—मूल-लेखक, स्वर्गीय बंकिमचंद्र चटर्जी सी० आई० ई०; अनुवादक, श्रीकिशोरीलालजी गोस्वामी; मूल्य १)

(१५) 'साहित्यालोचन' (द्वितीयावृत्ति)—लेखक, रायसाहब बा० श्यामसुंदरदास बी० ए०; मूल्य २), ३)

(१६) मानस-मयंक—रचयिता, श्रीशिवलाल पाठक; मूल्य ५)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१. स्त्रियोपयोगी

सोहाग रात या बहूरानी को सीख—लेखक, श्रीयुत कृष्णकांत मालवीय बी० ए०; प्रकाशक, पं० पद्मकांत मालवीय अभ्युदय-प्रेस, प्रयाग; आकार डबल क्राउन सोलह-पेजी; पृष्ठ ५०० से ऊपर; मूल्य सादी ३।) और जिल्ददार ३॥); छपाई-सफ़ाई बढ़िया। कवर पर एक सुंदर चित्र भी है।

पं० कृष्णकांतजी हिंदी के ख्यातनामा लेखक, प्रकृष्ट विद्वान् और मार्मिक विवेचक हैं। आपकी क़लम में ज़ोर है। आपने अपनी पुत्र-वधू के लिये यह उत्कृष्ट पुस्तक लिखी है। पहले लाला लाजपतराय की लिखी सुंदर भूमिका है। फिर लेखक का निवेदन और समर्पण है। २२ अध्यायों में विवाह-संबंधी बातें, सोहागरात, पुरुष और स्त्री, पुरुष है क्या, अधिकार का रहस्य, जड़-मनुष्य पर अधिकार, शरीर आकर्षक कैसे हो, शरीर की सफ़ाई, भोजन कैसा हो, वसन कैसा हो, शृंगार, रजोधर्म, हृदय पर अधिकार, स्त्री-जीवन का उद्देश्य तथा मनुष्य के मस्तिष्क पर अधिकार, प्रेम की ग्रंथि, लड़का या लड़की, संतान-निग्रह, बच्चों को बचाओ, मित्रों का चुनाव, समाज में व्यवहार, सतीत्व और आदि-शक्ति, इन विषयों पर पत्रों के रूप में बड़े अच्छे ढंग से लिखा गया है। परिशिष्ट भाग में पतिव्रता-चरित्र, लक्ष्मी किन स्त्रियों के पास निवास करती है, रजस्वला के नियम, स्त्रियों के नाश के कारण, गर्भ में लड़का या लड़की, स्त्री की महत्ता, रानी कलावती की सोहागरात की कथा, सौंदर्य-वृद्धि का नुस्ख़ा, बेटी को दहेज और सीख, ये उपयोगी विषय भी जोड़ दिए गए हैं। हमारे यहाँ स्त्रियों के लिये उपयोगी साहित्य बहुत थोड़ा है। हर्ष की बात है कि मालवीयजी-जैसे प्रथम श्रेणी के लेखक ने यह पुस्तक लिखकर हिंदी का मस्तक उन्नत किया है। हम ज़ोर देकर कह सकते हैं कि अन्य भाषाओं में भी ऐसी उत्तम और सर्वांगपूर्ण पुस्तक शायद ही अधिक हों। पुस्तक प्रत्येक दृष्टि से उच्च कोटि की है। हमें यह जानकर बड़ी ही प्रसन्नता हुई कि थोड़े ही समय में इस पुस्तक का प्रथम संस्करण बिक गया। अब दूसरा संस्करण छप रहा है। आशा है, यह भी शीघ्र ही बिक जायगा। बीमारी की हालत में भी मालवीयजी मातृभाषा की सेवा करना नहीं भूले, यह उनकी लगन का प्रमाण है। हमारा अनुरोध है कि मालवीयजी और भी ऐसी उच्च कोटि की पुस्तकें लिखकर अपने अवकाश का सदुपयोग करते रहें।

× × ×

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२. जीवन-चरित्र

लोकमान्य तिलक का चरित्र (पूर्वार्द्ध)—मूल-लेखक, श्रीनरसिंह-चिंतामणि केलकर केसरी-संपादक ; अनुवादक, श्रीसिद्धनाथ-माधव लोंढे, सह० संपादक कर्मवीर, खंडवा सी० पी० ; प्रकाशक, श्रीधोंडो-काशिनाथ फड़के, अरुणोदय-प्रेस, थाना ; पृष्ठ ८१२ ; मूल्य ४) ; आकार रॉयल अठपेजी ; छपाई सुंदर।

लोकमान्य महापुरुष थे; वह देश के पथ-प्रदर्शक महान् नेता थे। उनका जीवन लोक-शिक्षा की घटनाओं से पूर्ण और उपदेशप्रद था। ऐसे महापुरुष का जीवन-चरित्र वही लिख सकता है, जो उसका निकट-संबंधी और सहचर हो। केलकरजी लोकमान्य का दाहना हाथ थे। उन्होंने बड़ी खोज और परिश्रम करके मराठी में यह सुवृहत् ग्रंथ लिखा है। हिंदी-प्रेमियों के सौभाग्य से उसका हिंदी में अनुवाद भी प्रकाशित हो गया। इसमें प्रत्येक विषय का वर्णन और प्रतिपादन बड़े अच्छे ढंग से किया गया है। इसे देखकर हिंदी के लेखक यह जान सकेंगे कि सर्वांग-पूर्ण जीवनचरित्र किस तरह लिखा जाना चाहिए। पुस्तक प्रत्येक देशभक्त नर-नारी के पढ़ने के योग्य है। आशा है, इसका हिंदी में बहुत प्रचार होगा, और देश के पढ़े-लिखे होनहार युवक-युवती इससे शिक्षा प्राप्त करेंगे। तथास्तु।

× × ×

३. विज्ञान

भाषा-विज्ञान—लेखक, श्रीनलिनीमोहन सान्याल भाषा-तत्त्व-रत्न, एम्० ए०; प्रकाशक, इंडियन-प्रेस लिमिटेड, प्रयाग; आकार ड० क्रा० १६पेजी; पृष्ठ २०० से ऊपर। लेखक का एक चित्र भी है। छपाई-सफ़ाई-काग़ज़ वग़ैरह के लिये इंडियन-प्रेस प्रसिद्ध ही है।

सान्याल महाशय से सुधा के पाठक अच्छी तरह परिचित हैं। आप वृद्धावस्था में भी युवकों से बढ़कर उद्योग-शील हैं। आपने कलकत्ता-युनिवर्सिटी से, ६० वर्ष की अवस्था में, हिंदी में, एम्० ए० पास किया है। इस समय उक्त युनिवर्सिटी में आप हिंदी-भाषा तथा साहित्य के अध्यापक हैं। पहले बंगाल-प्रांत के स्कूल-इंस्पेक्टर भी रह चुके हैं। यह तुलना-मूलक भाषा-विज्ञान की रचना आप की अध्ययन-शीलता और विद्वत्ता का प्रकृष्ट प्रमाण है। पुस्तक हिंदी-साहित्य का रत्न है। १४ परिच्छेद हैं। उनमें भाषा-विज्ञान क्या है, भाषा-विज्ञान का इतिहास, वाक्-शक्ति का विवर्तन, भाषा की उत्पत्ति, भाषा का विकास, गठन-शैली के अनुसार भाषाओं का श्रेणी-विभाग, वंश के अनुसार भाषाओं का श्रेणी-विभाग, ध्वनितत्त्व, ध्वनि-विकार, उपभाषाओं की उत्पत्ति, लिखन की उत्पत्ति, शब्दार्थ-तत्त्व, भाषा में सादृश्य, इन विषयों की विशद विवेचना की गई है। वास्तव में सान्यालजी ने हिंदी-साहित्य के एक बड़े अभाव की पूर्ति की है, और इसके लिये आप साधुवाद के पात्र हैं। ऐसी अच्छी पुस्तक प्रकाशित करने के लिये हम प्रकाशकों की प्रशंसा किए विना नहीं रह सकते। आशा है, इस पुस्तक-रत्न का यथेष्ट समादर होगा।

× × ×

४. आयुर्वेद

रस-योग-सागर (प्रथम भाग—अ से न तक)—लेखक, वैद्यराज पंडित हरिप्रपन्न शर्मा ; प्रकाशक भी वही; मिलने का पता—श्रीभास्कर-औषधालय, बंबई नं० २ ; मूल्य १२) ; पृष्ठ बड़े साइज़ के ७०० से ऊपर ; काग़ज़ बहुत बढ़िया; छपाई-सफ़ाई प्रथम श्रेणी की ; जिल्द मज़बूत और सुंदर।

यह एक संग्रह-ग्रंथ है। इसमें भिन्न-भिन्न पुस्तकों में वर्णित आयुर्वेदोक्त रसों के नाम, बनाने की विधि, किन रोगों पर वह रस काम करता है, इसका उल्लेख अकारादि क्रम से किया गया है। संस्कृत में श्लोक और हिंदी में उनका अनुवाद दिया गया है। इस संग्रह में ४६७ रसों का संग्रह है। पुस्तक वैद्यों और आयुर्वेद-प्रेमियों के बड़े काम की है। पुस्तक का आकार, छपाई का व्यय-बाहुल्य और लेखक का परिश्रम देखते दाम भी अधिक नहीं हैं। आशा है, इसके अन्य भाग भी शीघ्र प्रकाशित होंगे।

× × ×

५. नाटक

सफ़ेद डाकू—लेखक, मुंशी मोहम्मद इस्माइल "फ़रोग़" ; संपादक और प्रकाशक, तात्या नेमिनाथ पांगल; मूल्य १) ; आकार ड० क्रा० १६ पेजी ; पृष्ठ १०० ; छपाई साधारण।

यह सरस वाङ्मय-रत्नमाला-सीरीज़ की पहली पुस्तक है। नाटक सामाजिक है। लेखक के मुसलमान होने के कारण भाषा खिचड़ी है। संपादक के भिन्न-भाषा-भाषी होने के कारण हैं की जगह हँय, जोरू को जोरु इत्यादि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सर्लिंग की हज़ारों भद्दी अशुद्धियाँ रह गई हैं। तथापि एक भिन्न-भाषा-भाषी सज्जन के इस उद्योग का हम स्वागत करते हैं। आशा है, भविष्य में आप किसी अच्छे हिंदी जाननेवाले की सहायता अवश्य लेंगे। नाटक अच्छा है, रोचक है, पारसी स्टेज की सामग्री है।

× × ×

६. कविता

मानसी—लेखक, पं० रामनरेश त्रिपाठी; संग्रहकर्ता श्रीयुत श्रीगोपाल नेवटिया; प्रकाशक, हिंदी-मंदिर, प्रयाग; पृष्ठ ८२; आकार ड० क्रा० १६पेजी; छपाई-सफ़ाई सुंदर। मूल्य ॥)

हमारे पाठक उक्त त्रिपाठीजी की रचनाओं से पूर्ण परिचित होंगे। त्रिपाठीजी की रचनाओं में एक ख़ास गुण यह होता है कि भाव उच्च कोटि के होने पर भी भाषा जटिल नहीं होती। आपकी भाषा सँजी हुई और भाव टकसाली होते हैं। आपकी कुछ चुनी हुई कविताएँ इस संग्रह में हैं, जिनकी संख्या ५० है। आदि में नेवटियाजी की लिखी २३ पृष्ठ की भूमिका भी है। हमारा पाठकों से अनुरोध है कि वे इस पुस्तक को मँगाकर अवश्य देखें। उनके धन का दुरुपयोग न होगा। कई कविताएँ तो ऐसी हैं, जिन्हें कंठ किए विना उनसे नहीं रहा जायगा।

× × ×

प्रतिबिंब—लेखक, श्रीसत्यप्रकाश एम्० एसू-सी०; प्रकाशक, कला-कार्यालय, प्रयाग; आकार ड० क्रा० १६पेजी; पृष्ठ १०८; छपाई और जिल्द दर्शनीय; मूल्य ।॥) और राज-संस्करण का १॥); लेखक का एक चित्र भी है।

इस संग्रह में लेखक की कुछ कविताएँ निस्संदेह बहुत अच्छी हैं। कुल ३६ कविताएँ हैं। कविताओं से कवि की भावुकता का पूर्ण परिचय प्राप्त होता है। आदि में एक अच्छी भूमिका भी है। पर उसका अँगरेज़ी में न होना ही अच्छा होता।

× × ×

७. पत्र-पत्रिकाएँ

The Birla Park Annual—संपादक, एल्० एन्० विड़ला; बड़ा आकार; पृष्ठ १५६।

यह विड़ला-पार्क-मैगज़ीन का पहला वार्षिक विशेषांक है। इसमें अँगरेज़ी और हिंदी के दो विभाग हैं। दोनों में लेख, कविताएँ और चित्र उच्च कोटि के हैं। ४ तिरंगे और दर्जनों सादे चित्र हैं। लेखकों में प्रो० यदुनाथ सरकार, श्रीदेवीप्रसाद खेतान, प्रो० शेषाद्रि, श्रीघनश्यामदास बिड़ला, मि० एंड्रूज़, मि० जयकर, श्रीरवींद्रनाथ ठाकुर, श्रीसुभासचंद्र वसु, मालवीयजी, ला० लाजपतराय, बाबू भगवानदास, बा० मैथिलीशरण गुप्त, पं०शालग्राम शास्त्री, श्रीजमनालाल बजाज, म० गांधी आदि देश के गण्य-मान्य विद्वान् हैं। ऐसा उत्तम, दर्शनीय, सफल अंक प्रकाशित कर सकने के लिये हम संपादकजी को बधाई देते हैं।

× × ×

बाल-सखा का विशेषांक—संपादक, श्रीनाथासिंह; प्रकाशक, इंडियन-प्रेस लिमिटेड, प्रयाग; मूल्य ॥)

इंडियन-प्रेस हिंदी की जैसी सेवा कर रहा है, वह उसके संचालकों के लिये गौरव की बात है। यह बालकोपयोगी पत्र उक्त प्रेस से ११ वर्ष से निकल रहा है। विशेषांक बड़ी सजावट से निकाला गया है। इसके लिये बालकों में छीना-झपटी मच जाना तो अवश्यंभावी है। लेख, चित्र, कविता, छपाई आदि सभी बातों में यह विशेषांक प्रशंसनीय है।

× × ×

विशाल भारत—संपादक, पं० बनारसीदासजी चतुर्वेदी; पृष्ठ-संख्या १४४; मूल्य ६) वार्षिक; पता—६१ अपर सरकुलर रोड, प्रवासी-प्रेस, कलकत्ता।

हिंदी-भाषी जनता इस पत्र की प्रतीक्षा बड़ी उत्सुकता के साथ कर रही थी। पत्र वास्तव में आशा के अनुरूप ही निकला है। चित्र लगभग सभी चित्रकार मोलाराम के अंकित प्रकाशित किए गए हैं, जो प्रायः अच्छे हैं। मौलिक लेखकों में राजपूत-चित्रकला, हमारी वायव्य सीमा की राजनीतिक परिस्थिति, देशी राज्यों का भविष्य लेख मार्के के हैं। चंडिकादेवी कहानी और ताम्र-युग में भारतवर्ष अनुवाद हैं, जो मूल-लेखकों के ही नाम से निकले हैं। इस अंक में ४ तिरंगे और ११ सादे चित्र मोलाराम के हैं। टिप्पणियाँ ज़ोरदार हैं। तरुण-भारत और महिला-मंडल स्तंभों का चुनाव सुंदर हुआ है। तात्पर्य यह कि पत्र पठनीय और दर्शनीय है। हमें आशा है, हिंदी के मासिक साहित्य में विशाल भारत शीघ्र ही एक विशेष स्थान प्राप्त कर लेगा। तथास्तु।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

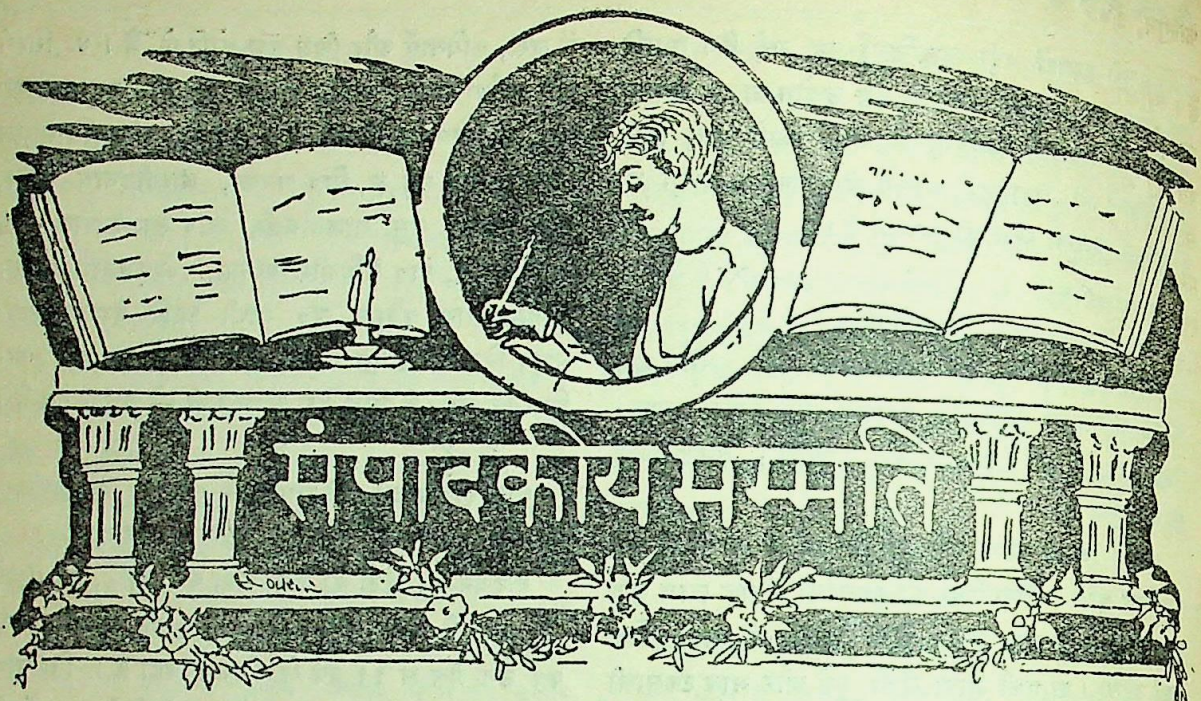

१. आगामी हिंदी-साहित्य-सम्मेलन

इस बार हिंदी-साहित्य-सम्मेलन का वार्षिक अधिवेशन मुज़फ़्फ़रपुर में होगा। स्वागत-समिति बन चुकी है, और वह अपना कार्य करने लगी है। अब सम्मेलन के समय और सभापति के चुनाव का प्रश्न उपस्थित है। समय के संबंध में तो यह एक प्रकार से निश्चित ही है कि वह ईस्टर की छुट्टियों में होगा। सभापति के संबंध में हमारा मत यह है—

१. बाबू जगन्नाथदास "रत्नाकर" बी० ए०
२. 'आज'-संपादक श्रीयुत बाबूराव-विष्णु पराड़कर
३. पं० पद्मसिंह शर्मा
४. बाबू मैथिलीशरण गुप्त
५. श्रीयुत जयशंकर "प्रसाद"

इन पाँचों सज्जनों की विद्वत्ता और हिंदी की सेवा हिंदी-संसार में किसी से छिपी नहीं। बाबू जगन्नाथदासजी बहुत अच्छे कवि हैं, और आपने आजन्म हिंदी-सेवा की है। आप वयोवृद्ध भी हैं और ज्ञानवृद्ध भी। व्रजभाषा के तो आप इस समय एक-मात्र सर्वश्रेष्ठ कवि हैं। आपकी संपादित अनेक काव्य-पुस्तकें काशी के भारत-जीवन-प्रेस से किसी समय प्रकाशित हुई थीं। इधर आपने बिहारी-सतसई की बृहत् और सुंदर टीका लिखी है, जो बिहारी-रत्नाकर के नाम से गंगा-पुस्तकमाला ने प्रकाशित की है। आपने इसके लिखने में बड़ी खोज, परिश्रम और अध्ययन किया है। इसकी भूमिका जो आपने लिखी है और जो शीघ्र ही प्रकाशित होनेवाली है, वह एक २-३ सौ पृष्ठ का स्वतंत्र ग्रंथ ही होगा। उससे आपकी साहित्य-ज्ञता का प्रकृष्ट परिचय प्राप्त होगा। यही नहीं, आप प्राकृत के भी अच्छे ज्ञाता हैं, और अँगरेज़ी के भी ग्रेजुएट। आपने गंगावतरण नाम का एक मनोहर काव्य लिखकर इंडियन-प्रेस से प्रकाशित कराया है। उसकी काव्य-छटा भी दर्शनीय है। आपने उद्धव-शतक, भीष्माष्टक, गणेशाष्टक, द्रौपदी-अष्टक आदि अनेक छोटी-मोटी रचनाएँ भी की हैं, जो शीघ्र ही प्रकाशित होंगी। ऐसे श्रेष्ठ विद्वान् को यह सम्मान देना हिंदी-संसार का आवश्यक कर्तव्य है। श्रीयुत पराड़करजी की अध्ययनशीलता और योग्यता वास्तव में प्रशंसनीय है। आप संपादक भी प्रथम श्रेणी के हैं। आज पत्र को जो गौरव प्राप्त है, वह आप ही के मार्मिक लेखों और विवेचना-पूर्ण टिप्पणियों के कारण। आपने भिन्न-भाषा-भाषी होकर भी हिंदी को अपनाया है, यह आपकी विशेषता है। पं० पद्मसिंहजी के विषय में अधिक लिखने की आवश्यकता नहीं। आप संस्कृत, प्राकृत और फ़ारसी के साहित्य के विशेष मर्मज्ञ हैं, सत्समालोचक हैं, सहृदय हैं, सफल संपादक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हैं। ज्वालापुर से निकलनेवाले भारतोदय पत्र को जिन्होंने पढ़ा है, वे इस बात को अच्छी तरह जानते होंगे। इस पत्र का संपादन आप ही करते थे। सतसई-संहार और सतसई-संजीवन आपकी सर्वतोमुखी प्रतिभा के प्रकृष्ट प्रमाण हैं। गुप्तजी हिंदी के लिये गौरव हैं। आपकी रचनाएँ बहुत सुंदर हैं। आपके ज़ोरदार ग्रंथों से हिंदी-संसार अच्छी तरह परिचित है। बाबू जयशंकर प्रसाद की प्रतिभा अब अच्छी तरह विकास को प्राप्त हो चुकी है। आप जैसे नाटक लिखने में सिद्धहस्त हैं, वैसे कविता करने में, वैसे ही कहानी तथा उपन्यास लिखने में। आपकी आँसू, अजातशत्रु, कामना, नागयज्ञ, स्कंदगुप्त, अशोक, कंकाल, चंद्रगुप्त आदि पुस्तकें हिंदी-साहित्य का गौरव हैं। आपकी कविताएँ इतनी भावपूर्ण और सुंदर होती हैं कि सहृदय पाठक मुग्ध हो जाते हैं। हमारी राय में इन्हीं पाँच सज्जनों में से किसी एक को इस बार सभापति बनाना उचित होगा। आशा है, हिंदी-संसार हमारी इस प्रार्थना पर ध्यान देने की अवश्य कृपा करेगा। अवस्था की दृष्टि से रत्नाकरजी को ही सभापति बनाने के लिये हम अधिक ज़ोर देते हैं।

× × ×

२. भरतपुर-नरेश का भाग्य-निर्णय

पाठकों को मालूम होगा कि भरतपुर-नरेश इधर कुछ वर्षों से अपनी रियासत में नए-नए सुधार करने में लगे हुए थे। उनकी यह इच्छा बहुत दिनों से थी कि उनकी रियासत अन्य किसी देशी राज्य से शिक्षा तथा सरकार-संबंधी किसी भी बात में कम न रहे। इस कार्य के लिये देश के नामी दिग्गज पंडितों को उन्होंने नियुक्त करना आरंभ कर दिया था। सार्वजनिक जीवन में भी उनकी प्रजा दिलचस्पी ले और अपनी मोहाच्छन्न स्थिति से जागरित होकर आँखें खोलकर देखे कि दुनिया कहाँ पहुँची हुई है, यह भी उनकी इच्छा थी। राष्ट्र-भाषा की तरफ़ से भी वह उदासीन नहीं थे। भरतपुर-महिला-सम्मेलन के अवसर पर डा० रवींद्रनाथ को बुलाकर जो उत्साह उन्होंने दिखलाया था, वह सभी को विदित है।

सरकार महाराजा साहब की इन सब कारस्तानियों पर ग़ौर करती जा रही थी। इसी घात में थी कि कब मौक़ा हाथ लगे और कब उनकी रियासत पर हाथ सफ़ा किया जाय। अंत को उन्हें सूचना दी गई कि उनकी रियासत में गड़बड़ी मच रही है, इसलिये एक कमीशन उसकी भीतरी बातों की जाँच करेगा। भरतपुर-नरेश ने यह बात स्वीकृत कर ली। उनसे यह भी कहा गया कि जाँच होने तक उन्हें गद्दी छोड़ देनी पड़ेगी। पर इस बात पर वह सहमत नहीं हुए। इस पर उन्हें गुप्त रीति से डराया-धमकाया गया। अंत को वह वायसराय के पास गए, और कहा कि जाँच के संबंध में प्रत्येक शर्त उन्हें मंज़ूर है। समाचार-पत्रों में इस संबंध में अनेकानेक समाचार छपे हैं। कोई कहता था कि बंबई के मि० डी० जी० मेकेंज़ी भरतपुर के स्थानापन्न शासक बनेंगे, कोई कहता था कि वायसराय ने रिआयत करके यह शर्त पेश की है कि वह अपने अनुमोदित किन्हीं छः व्यक्तियों के नाम पेश करें, उनमें से वायसराय महोदय किसी एक को छाँट लेंगे। अब मालूम हुआ पहली ही ख़बर ठीक थी। मि० मेकेंज़ी ने आते ही राज्य के हितचिंतक श्रीजगन्नाथदासजी अधिकारी को राज्य से निकाल दिया है!

कुछ भी हो, यह निश्चित है कि भरतपुर-राज्य में भी सरकार ने अपना पंजा मार दिया है, अब वह छुटने का नहीं। हैदराबाद, नाभा और इंदौर तो हलाल हो ही चुके हैं, अब भरतपुर की बारी आई है। सरकार की यह नीति सबसे अधिक कूट, सूक्ष्म और ख़तरनाक है। देश में छोटी-छोटी बातों पर बड़ा आंदोलन मच जाता है; पर सरकार की इस श्येन-दृष्टि का विरोध कोई नहीं कर पाता। वह उत्तरोत्तर तीक्ष्णतर होती जाती है। इसका परिणाम बहुत भयंकर होगा। हमारे नेता लोग सभा-समितियों में पूर्ण स्वतंत्रता के प्रस्ताव पास कराते और इस बात पर लड़ते-झगड़ते हैं कि पूर्ण स्वतंत्रता भारत का अंतिम ध्येय है अथवा स्वायत्त-शासन। इधर सरकार इन कोरी काग़ज़ी तथा मौखिक बहसों पर हँसती और अपना पंजा और भी दृढ़ करती जाती है। हम घमंड से चिल्ला रहे हैं कि पूरी स्वाधीनता हमारा ध्येय है और हम वही लेंगे (जैसे सरकार हमसे पूछ रही हो कि तुम पूरी स्वाधीनता लोगे या स्वायत्त-शासन?)। इधर हमारे अर्ध-स्वाधीन राज्य भी ग़ारत हो रहे हैं। हमारे नेताओं को महात्मा गांधी की इस बात पर ध्यान देना चाहिए कि कांग्रेस के थोथे प्रस्तावों से कुछ नहीं होगा, जब तक मूल-सत्तात्मक बातों पर ध्यान नहीं दिया जायगा।

× × ×

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

३. अफ़ग़ानिस्तान के अमीर अमानुल्ला का योरप में स्वागत

माडर्न रिव्यू लिखता है—अमीर अमानुल्ला का योरप में अपूर्व स्वागत कोई आश्चर्य का विषय नहीं। यह तो हम लोगों का पहले ही से अनुमान था। हँसी उन देशों पर आती है, जो कि जनसत्तावाद के कट्टर पक्षपाती हैं और अनियंत्रित राजा (Despotic king) के घोर विरोधी, जिन्होंने ऐसे स्वेच्छाचारी राजों के नाश के लिये ख़ून की नदियाँ बहा दी हैं। पर आज यही राष्ट्र अमीर अमानुल्ला के स्वागत की तैयारी में नींद-भूख खो बैठे हैं। यहाँ तक कि फ़्रांस में भी उनके लिये नेपोलियन का महल ख़ाली करवाया गया। जरमनी में कैसर का एक पुराना महल रीदा गया। पर इस स्वागत का कारण क्या है? पहला कारण तो यह है कि जनसत्तावाद के कट्टर पक्षपाती होने पर भी अभी जनता के दिलों से एक राजसी पुरुष के प्रति सम्मान-भाव नहीं गए हैं। किसी भी राजा का नाम सुनकर वह उत्सुक हो उठती है। हमारी यह धारणा रुमानिया की रानी के अमेरिकावाले स्वागत और इस अमीर के स्वागत से दृढ़ हो गई है। पर हमको एक और राजनीतिक कारण का संदेह होता है। यह सबको मालूम है कि अफ़ग़ानिस्तान का विस्तार अधिक है और आबादी कम। उसका क्षेत्रफल लगभग २,४५,००० और २,७०,००० वर्ग-मील के बीच में है, और, हाल की मनुष्य-गणना के अनुसार, आबादी केवल ८० लाख। इँगलैंड की आबादी लगभग ४ करोड़ के है, और क्षेत्रफल ५०,८४३ वर्ग-मील। युक्त-प्रांत भी लगभग उतना ही बड़ा है। पर आबादी ४½ करोड़ है। यह सब देखकर अनुमान होता है कि पहाड़ी प्रांत होने पर भी अफ़ग़ानिस्तान कई लाख आदमियों को अब भी शरण दे सकता है। इसका यह मतलब नहीं कि योरप अपनी जनता को यहाँ भेजना चाहता है। अमीर उद्योगी पुरुष हैं और अपने देश को संसार की गति के अनुकूल बनाना चाहते हैं। इस काम के लिये करोड़ों रुपए और सैकड़ों अनुभवी कारीगरों की आवश्यकता होगी। ये सब अफ़ग़ानिस्तान में तो मिल नहीं सकते। अतः योरप के देश अमीर को हर तरह धन और जन से सहायता देकर भारत की भाँति दुहना चाहते हैं। अफ़ग़ानिस्तान यदि अपनी बढ़ती चाहता है, तो उसको मशीनें और उनका सामान योरप या अमेरिका से मँगाना ही पड़ेगा। इस समय, जब कि अमीर योरप की 'तीर्थयात्रा' कर रहे हैं, तमाम राष्ट्र आपस में उनके स्वागत में एक दूसरे से बाज़ी लगा रहे हैं; क्योंकि वे जानते हैं, अमीर अपने राज्य में अनियंत्रित हैं और उनकी प्रसन्नता ही से बड़े योरपियन राष्ट्र उनके यहाँ अपने धन-जन का उपयोग कर सकते हैं—यद्यपि उनकी यह अभिलाषा कदाचित् ही पूर्ण हो; क्योंकि—जैसा हम जानते हैं—अमीर कट्टर स्वदेशी हैं। वह अपने ही देश की बनी वस्तुओं को ग्रहण करते हैं और अपने देश का अपने ही रुपयों से उद्धार करना चाहते हैं।

यह संदेह तब और भी दृढ़ हो जाता है, जब हमको मालूम होता है कि अफ़ग़ानिस्तान में सोना, ताँबा, टीन और लोहा आदि बहुत पाए जाते हैं। यदि योरपियन लोग उद्योग करें, तो और भी खनिज पदार्थ मिल सकते हैं। पर वे लोग तो अफ़ग़ानिस्तान को चूसने ही की फ़िक्र में होंगे।

अफ़ग़ान लोगों के शरीर की गठन बहुत ही अच्छी है। पर वे अक्सर आँख की बीमारियों या मलेरिया आदि से पीड़ित रहते हैं। यदि इस समय वहाँ पर कुछ भारतीय चिकित्सक पहुँच जायँ, तो बहुत काम हो सकता है। भारत अफ़ग़ानिस्तान को धन और जन से सहायता कर सकता है। भारत के कर्मवीर वहाँ पर अपना पूर्ण उद्योग कर सकते हैं। अमीर अफ़ग़ानिस्तान भी इस सहयोग से काफ़ी लाभ उठा सकते हैं। इस पारस्परिक सहयोग का भावी परिणाम दोनों देशों के लिये कल्याणकारी होगा।

× × ×

४. साइमन-कमीशन की घोषणा

गत तीसरी फ़रवरी की अत्यंत सफल हड़ताल के बाद कुछ-कुछ आशा होने लगी थी कि इसका असर सर जॉन साइमन के ऊपर अच्छा पड़ेगा और वह लॉर्ड बर्केनहेड की नीति में काफ़ी संशोधन करेंगे। किसी शक्तिहीन देश के लिये शत्रु पर विजय पाने को हड़ताल ही एक ज़बर्दस्त हथियार है। अतः हम इस कमीशन की भावी घोषणा की बड़ी उत्सुकता से प्रतीक्षा कर रहे थे। वह घोषणा अंत में ७ फ़रवरी को हो ही गई। परंतु इसकी विवेचना करने के पहले ही हम यह कह सकते हैं कि इसने हमारी सब आशाओं पर पानी फेर दिया है। इसमें सिवा ऊपरी दिखावे के कोई तत्त्व नहीं है। चूँकि कमीशन अब तक वायसराय और एस्॰ आर॰ दास

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से काफ़ी बातचीत कर चुका है, और उसे जनता की पुकार भी मिल चुकी है, इसलिये उसने घोषणा के शब्द बड़ी चालाकी से लिखे हैं। पर असल में वही लॉर्ड बर्केनहेडवाली वाणी उसमें भी है।

सर जॉन साइमन जनता को विश्वास दिलाना चाहते हैं कि यह कमीशन न तो ब्रिटिश सरकार से और न भारत-सरकार से कोई संबंध रखता है, किंतु बादशाह द्वारा भेजा गया है, यद्यपि उसके सब मेंबर पार्लियामेंट से लिए गए हैं। इसमें कोई शक नहीं कि यह घोषणा सर जॉन साइमन की राजनीतिक चाल का अच्छा परिचय देती है; क्योंकि इससे वह राजभक्त भारतीयों को अपनी ओर आकर्षित करना चाहते हैं। किंतु हिंदोस्तानी लोग यह अच्छी तरह जानते हैं कि बादशाह स्वयं स्वतंत्र नहीं हैं। वह अपने मंत्रियों की मंत्रणा से बँधे हैं। उनके हरएक काम के लिये कोई-न-कोई मंत्री अवश्य उत्तरदायी है। ख़ास कर कमीशन भेजने के लिये भारतीय विधान के सेक्शन ८४ ए० में यह साफ़-साफ़ लिखा है कि "सेक्रेटरी ऑफ़ स्टेट पार्लियामेंट की दोनों व्यवस्थापिका सभाओं की सम्मति के अनुसार बादशाह की सम्मति के लिये कुछ नाम कमीशन में नियुक्त करने के वास्ते रक्खेगा।" इससे मालूम होता है, बादशाह कमीशन की नियुक्ति में सिवा हस्ताक्षर के और कुछ न करेंगे और इसका उत्तर-दायी मंत्रि-मंडल ही होगा।

सर जॉन साइमन साहब कहते हैं कि भारत-सरकार, प्रांतीय सरकारों तथा और-और संस्थाओं द्वारा तैयार की हुई रिपोर्टें कमीशन और बड़ी व्यवस्थापिका सभा द्वारा चुने हुए सात प्रतिनिधियों के मिले हुए "स्वतंत्र सम्मेलन" के सामने रक्खी जायँगी। यहाँ पर साइमन साहब लॉर्ड बर्केनहेड और वायसराय की इस घोषणा को कि प्रतिनिधि कमीशन के सामने अपनी रिपोर्ट पेश करेंगे; कमीशन चाहे उन्हें माने या न माने—चालाकी से बचा जाते हैं। पर असल में मतलब उनका भी वही है। कारण, आगे चलकर वह कहते हैं कि बहुत-से मौक़ों पर प्रतिनिधि सहयोग नहीं करने पावेंगे। संक्षेप में—जब कोई गवर्नर या कोई फ़ौज का अफ़सर गुप्त मंत्रणा देने के लिये आवेगा, तब भारतीय प्रतिनिधि बिदा कर दिए जायँगे। जब और साधारण प्रश्न उपस्थित होंगे, तब फिर बुला लिए जायँगे। इस दृष्टि से तो वे सहयोगी कहे ही नहीं जा सकते; क्योंकि जब कमीशन चाहेगा, उनको बिदा कर देगा और जब चाहेगा बुला लेगा। यह सिवा कठपुत-लियों के नाच के है ही क्या?

आगे चलकर आप कहते हैं, कमीशन और प्रतिनिधि अपनी-अपनी रिपोर्ट अलग-अलग लिखेंगे। यह उनकी ख़ास मेहरबानी होगी कि वे दोनों रिपोर्टों को साथ-साथ प्रकाशित और बादशाह के सामने पेश करेंगे। दूसरे शब्दों में जब कमीशन अपनी रिपोर्ट लिखने बैठेगा, तब भारतीय प्रतिनिधियों को वोट देने का कोई अधिकार न होगा, यद्यपि कमीशन "उनकी सम्मतियों तथा इच्छाओं का सच्चा वर्णन" अपनी रिपोर्ट में कर देगा। पर इससे फ़ायदा क्या होगा? इँगलैंड की जनता की बुद्धि अभी से विदेशी समाचारपत्रों ने इतनी कुंठित कर दी है कि वह भारतीय प्रतिनिधियों की "सम्मतियों तथा इच्छाओं" को आँख उठाकर भी न देखेगी।

अंत में सर जॉन साइमन साहब भी वही कहते हैं, जो अभी तक भारत के ओ'डायर-सरीखे "सच्चे मित्रों" ने कहा है। वह कहते हैं, भारतीय नेता कमीशन के विधान को अच्छी तरह समझ ही नहीं पाए हैं। जब कभी अँगरेज़ लोग अपनी बात रखना चाहते हैं, तो वे यही कहते हैं कि भारतीय नेताओं में इतनी समझ या अक़्ल ही नहीं है। क्या हम पूछ सकते हैं कि ईश्वर ने बुद्धि सिर्फ़ अँगरेज़ों को ही दी है?। क्या भारत के हिस्से में एक टुकड़ा भी नहीं आया? यदि यही होता, तो भारत की संस्कृति को संसार कभी न मानता। अब प्रश्न यह है कि ऐसे अवसर पर भारतीयों का क्या कर्तव्य है। इसके लिये दिल्ली के ७ फ़रवरीवाले सर्व-दल-नेता-सम्मेलन की राय ही सर्वश्रेष्ठ है। नेताओं ने यह विज्ञप्ति प्रकाशित की है—

"हम लोगों ने साइमन-कमीशन द्वारा प्रकाशित आज की घोषणा के विधान को काफ़ी सोच-विचार लिया है। पर हम लोगों का कमीशन-विधान और घोषणा-विधान का विरोध जिस सिद्धांत पर अवलंबित था, वह वैसा ही बना हुआ है। इस अवस्था में हम अपने इस सिद्धांत पर अटल हैं कि हम कमीशन से किसी भी प्रकार का और कभी संबंध नहीं रख सकते।" ईश्वर भारतीय नेताओं को प्रतिज्ञा-पालन का बल दें।

× × ×

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

५. इंदौर के भूतपूर्व महाराज

इस बार फिर इंदौर के भू० पू० महाराज का नाम बड़े ज़ोर-शोर के साथ समाचारपत्रों में लिया जा रहा है। पाठकों को स्मरण होगा कि एक वेश्या के अंध प्रेम ने उनकी काफ़ी बदनामी कराई है; यहाँ तक कि उनको गद्दी भी त्याग देनी पड़ी। इस घृणित व्यापार से न-मालूम समाचारपत्रों ने कितने कॉलम-के-कॉलम रँग डाले होंगे। हम समझे थे, इस व्यापार का अंत हो गया, और यदि महाराजा साहब में कुछ भी शर्म होगी, तो पुनः वह इस झगड़े में न पड़ेंगे। पर बात दूसरी ही हुई।

महाराजा साहब के दो स्त्रियाँ हैं। हिंदू-क़ानून की दृष्टि से वह और विवाह कर सकते हैं; पर धार्मिक आचार इस बात की हर्गिज़ आज्ञा न देंगे। इस पर भी महाराजा साहब एक अमेरिकन महिला के साथ विवाह करना चाहते हैं। चूँकि राजा साहब ईसाई या मुसलमान होना नापसंद करते हैं, अतः महिला का हिंदू होना आवश्यक है। कभी सुनने में आता है कि भारतीय आर्यसमाजों ने शुद्धि करने से इनकार कर दिया है, और कभी यह कि मदरास-आर्यसमाज शुद्धि करने को उद्यत है। यह ठीक है कि हरएक धर्म को शुद्धि करने का जन्मसिद्ध अधिकार है; पर जिसका मन शुद्ध नहीं है, उसे केवल एक महाराज की काम-वासना पूर्ण करने के लिये ही शुद्ध करना निर्लज्जता की परा काष्ठा होगी।

मरता क्या न करता। हिंदुओं के इनकार करने पर फ़ौरन् एक मुसलमानी संस्था का तार शुद्धि के लिये पहुँच गया। यह सब देखकर मरहठा मिशन सोसाइटी, डॉक्टर सावरकर आदि भी तैयार हैं। इधर करवीर-मठ के शंकराचार्यजी भी शुद्धि करने को तैयार हैं। आशा है, उनकी उपस्थिति में मिस मिलर की शुद्धि नासिक में हो जायगी, और महाराजा इंदौर द्वारा एक और कलंक का टीका भारत के मत्थे लग जायगा।

× × ×

६. साहसी उड़ाका

पाश्चात्य नर-नारी जिस काम को करते हैं, उसकी हद कर देते हैं। कुछ नई बात करने में, चाहे उससे उन्हें कुछ व्यक्तिगत लाभ न हो, उनका उत्साह सीमा को पार कर जाता है। ऐसे काम करने में जान जाने का ख़तरा जानकर भी वे हँसते-हँसते अग्रसर होते हैं। ध्रुव तक पहुँचने में कितनी जानें गईं; पर वहाँ तक पहुँचकर ही पाश्चात्यों ने दम लिया। इसी तरह हिमालय की सबसे ऊँची चोटी तक चढ़ने की चेष्टा चल रही है। अभी उस बार दो साहसी यात्रियों की जानें जा चुकी हैं; पर अब फिर एवरेस्ट पर चढ़ने की तैयारी की जा रही है। हाल में कप्तान हाथार्न ग्रे ने आकाश में ऊँचे-से-ऊँचे चढ़ने की चेष्टा की थी, और उसी में उनकी जान गई। यह ऊपर ८ मील की उँचाई तक पहुँच गए थे। इससे पहले यह ४२,४७० फ़ीट ऊपर अवश्य गए थे; पर बैलून के उतरने के पहले ही पाराशूट लेकर बैलून से यह फाँद पड़े थे, और अपनी जान बचा ली थी, इस कारण इन्हें इतने ऊँचे चढ़ने का सम्मान नहीं दिया गया। अब की बार कप्तान ग्रे बेलबिल से २ बजकर २२ मिनट पर ऊपर चढ़ने लगे थे। उनके साथ-साथ सहायता के लिये ४ एरोप्लैन भी चले। जिस बैलून पर ग्रे थे, उसमें ८० हज़ार घन-फ़ुट गैस थी। उसके नीचे एक चौकोना झोला बैठने के लिये लटक रहा था। झोले के चारों ओर बालू से भरी लंबी थैलियाँ बोझ के लिये अटकाई हुई थीं। इन थैलियों का मुख नीचे की ओर था और वह रस्सी से बँधा था। सवार की इच्छा के अनुसार इस रस्सी के खुल जाने पर बालू गिर पड़ती और बैलून हलका होकर क्रमशः ऊपर चढ़ सकता था। साथ के एरोप्लैन १२,००० फ़ीट ऊपर तक साथ गए थे। १५,००० फ़ीट पर जाकर कप्तान ग्रे ने ऑक्सिजन गैस से भरे चोंगों की अच्छी तरह जाँच की और फिर बीच-बीच में इस गैस में साँस लेते रहे। २० हज़ार फ़ीट पर जाकर उन्होंने इस गैस की चाभी खोल दी और गैस का टोप पहन लिया। अब वह गैस ही की श्वास-प्रश्वास लेने लगे। कारण, इस जगह की हवा में मनुष्य साँस नहीं ले सकता। ग्रे के साथ तीन गैस के चोंगे, एक गैस का टोप और गैस गरम रखने के लिये एक बिजली का उत्तापक था। इस जगह इतनी ठंडक थी कि गैस को गरम किए विना उसकी साँस लेना मनुष्य के लिये असंभव है। ३० हज़ार फ़ीट तक एरोप्लैनों से बैलून देख पड़ता रहा, उसके बाद वह नज़रों से ग़ायब हो गया। पृथ्वी के साथ उसका संबंध केवल एक बेतार के तार की मशीन से रह गया था। उस यंत्र में दारुण सन्नाटे को तोड़कर संगीत सुन पड़ रहा था। और ऊपर बैलून जाने लगा। वहाँ बादल न थे, धूप न थी, कुछ भी न था। केवल अनंत नीलिमा और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसके बीच में एक प्रकांड अग्नि का गोला नज़र आ रहा था। बात यह है कि यह जो धूप हमें चमकती नज़र आती है, उसका कारण धूलि-कणों से इसका टकराना है। उतने ऊँचे पर इसकी चमक अनंत नीलिमा में लय हो जाती है। ४० हज़ार फ़ीट पर जाकर ग्रे ने बालू की थैलियाँ बिलकुल ख़ाली कर दीं—यहाँ तक उन्होंने अपने चार्ट में हाल लिखा। अब इसके बाद और कुछ बोझ गिराने की आवश्यकता पड़ी; क्योंकि इसके बिना बैलून का और ऊपर जाना संभव न था। शायद उन्होंने सोचा था कि गैस का एक ख़ाली चोंगा फेंक देंगे, और इससे कुछ ऊपर बैलून चढ़ सकेगा; किंतु वह ऐसा कर नहीं पाए। साधारण वायु के अभाव और लगातार बराबर ऑक्सिजन-गैस का सेवन करने से मनुष्य का शरीर ऐसा सुन्न हो जाता है कि कभी-कभी अंगोपांग उसकी इच्छा के अनुसार कार्य नहीं कर पाते। कप्तान ग्रे की हालत इस जगह इस समय कदाचित् ऐसी ही हो गई थी; क्योंकि उन्होंने छुरी से रबड़ का नल तो काट दिया था, किंतु उसके बाद दूसरा चोंगा फिर नहीं खोल पाए। इस प्रकार वायु के अभाव से ही दम घुटकर उनकी मृत्यु हो गई। कप्तान ग्रे जितनी दूर ऊपर गए, उतनी दूर शायद ही कोई और जा सके, लोगों का ऐसा ख़याल है। अमेरिका में इस बारे में और अनेक प्रकार की खोजें की जा रही हैं, और भी ऊपर जाने के उपाय सोचे जा रहे हैं।

× × ×

७. कुछ जानने योग्य बातें

१—भारत-सरकार को आबकारी से जो आमदनी होती है, उसका गत कुछ वर्षों का हिसाब इस प्रकार है—

सन्	'लिकर' और ड्रग की कुल मिलाकर आमदनी (रुपयों में)	लिकर की आमदनी (रुपयों में)	ड्रग की आमदनी (रुपयों में)	लिकर की दूकानें	ड्रग की दूकानें
१९०१-२	६,१६,८७,८४६	४,५१,७९,५१८	१,६३,४१,४८३	८४,९२५	२०,१५५
१९०४-५	७,७६,८१,१५०	५,७६,४५,२२३	१,९७,९६,८२७	९१,१३८	२१,९७८
१९०८-९	९,५८,१०,२२४	७,१२,३५,७४१	२,४२,५८,६१८	७३,३५०	२०,००५
१९१२-१३	१२,३२,७२,३९२	९,२८,६३,७५३	२,९९,८१,१८४	५९,८६५	१८,७६७
१९१६-१७	१३,८०,९२,१८६	१०,१५,६५,८५४	३,५०,५२,२३१	५१,८२४	१७,२७७
१९२०-२१	२०,३७,३८,२९१	१५,५८,७६,८४२	४,७०,००,७६८	४८,३८८	१६,६५१
१९२४-२५	१९,२४,९०,४०१	१४,३३,७८,२०९	४,७८,०२,९४०	४४,६९६	१४,४२५

२—सन् १९२५-२६ में ब्रिटिश भारत में लिकर इतनी आई—

प्रांत	देसी स्पिरिट (इंपीरियल एल्० पी० गैलन)	बाहर से मँगाई गई स्पिरिटें (इंपीरियल गैलन)	बाहर से आई 'वाइन' (इंपीरियल गैलन)	बाहर से आई माल्ट लिकर (इंपीरियल गैलन)
बंबई	१३,८७,७९०	२,१७,२४०	२९,७९२	४,९९,३४४
बंगाल	६,३२, ३५१	२,२३,१६८	३७,७६७	४,३१,८४२
यू० पी०	३,७१,४५३	६९,७२१	१६,३७७	२,१५,२६५
पंजाब	३,०२,७५८	५२,९०७	१८,०४५	१,९७,०६७
मध्यप्रदेश और बरार	५,५४,३७५	१४,८१४	२,३६६	१,८५,५९७
आसाम	२,३७,४८०	—	२,९४४	२२,६५४
पश्चिमोत्तर-सीमांत	२१,२९३	१८,०९४	५,००६	९२,३४४
बिहार-उड़ीसा	११,२४,००९	१५,९९०	५,३००	८०,५९३
बर्मा	१,०८,७६६	—	—	—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

३—सन् १९२५-२६ में यहाँ देसी शराब और दवा में इस्तेमाल होनेवाली शराबें इतनी खपीं—

प्रांत	देसी शराब (इंपीरियल गैलन)	देसी माल्ट-लिकर (इंपीरियल गैलन)	दवा की शराब (इंपीरियल गैलन)
बंबई	७,११९	२२,६७०	—
बंगाल	—	—	९,४०१
यू० पी०	२७,८५६	१,०६,७००	—
पंजाब	१४,४५१	१५,०७,२८६	३२२
मध्यप्रदेश और बरार	६,२८१	१,३४,११७	२६०
आसाम	—	—	१३२
पश्चिमोत्तर-सीमांत	८,८५३	२,११,०९९	—
बिहार-उड़ीसा	५६५	—	६७७
बर्मा	१,८००	१,८१,९७६	—

४—सन् १९२५-२६ में भारत में अफ़ीम, चरस, गाँजे और भंग की इतनी खपत हुई—

प्रांत	अफ़ीम (सेर)	चरस (सेर)	गाँजा (सेर)	भंग (सेर)
बंबई	२४,५५१	—	४४,४४१	७,६६१
बंगाल	३९,९४५	२,७५१	७१,४७३	१७,४७७
यू० पी०	२१,९९६	२४,७७४	११,४८६	१,१५,७१४
पंजाब	३४,९२९	४४,७९२	—	१,१०,०४०
मध्यप्रदेश-बरार	३१,७४५	—	२४,८५८	१,७४३
आसाम	३३,६२६	—	१८,५५७	—
पश्चिमोत्तर-सीमांत	१,९११	४३१	—	४,५५४
बिहार-उड़ीसा	३४,५४९	—	६३,८९७	१२,७८२
बर्मा	२७,२४१	१,२२८	—	—

"आर्थिक उन्नति"

× × ×

८. शाही कमीशन पर बड़ी व्यवस्थापिका सभा में अविश्वास का प्रस्ताव

गत १६ फ़रवरी को लाला लाजपतराय ने बड़ी व्यवस्थापिका सभा में शाही कमीशन के ऊपर अविश्वास-सूचक प्रस्ताव पेश किया। प्रस्ताव का आशय यह था—"यह परिषद् गवर्नर जेनरल से सिफ़ारिश करती है, वह ब्रिटिश सरकार को सूचना दे दें कि शाही कमीशन की वर्तमान रचना और कार्य-प्रणाली इस सभा को बिलकुल नामंज़ूर है, इसलिये यह सभा उस कमीशन से किसी अवस्था में और किसी रूप में कोई संबंध न रक्खेगी।" इस प्रस्ताव को पेश करते समय लालाजी ने एक मार्के का व्याख्यान दिया। उन्होंने कहा कि वह इस समय अपना उत्तरदायित्व अच्छी तरह समझते हैं, और इसलिये यह सेवा जनता की भेंट कर रहे हैं। आपने कमीशन से सहयोग न करने के तीन कारण बताए। पहला तो यह कि लालाजी को कमीशन नियुक्त करनेवालों पर विश्वास नहीं है कि उन्होंने यह कमीशन भारत-हित ही के लिये नियुक्त किया है। दूसरा यह कि उन्हें कमीशन की योग्यता पर भी संदेह है। यद्यपि सर जॉन साइमन की योग्यता निस्संदेहात्मक है, और शेष मेंबर भी अपनी योग्यता इँगलैंड में सिद्ध कर चुके हैं, तब भी ये लोग भारत का प्रश्न हल नहीं कर सकते। भारतीय प्रश्न इतना जटिल है कि यदि देवता भी स्वर्ग से उतर आवें, तो वे भी ऐसा नहीं कर सकते कि कुछ ही महीनों में ऐसी स्कीम पेश

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करने में सफल हों, जो इँगलैंड और भारत, दोनों को रुचिकर और ग्राह्य हो। तीसरा कारण यह है कि लालाजी को किसी भी कमीशन पर विश्वास नहीं है। वह कोई ख़ास विवादग्रस्त प्रश्न का फ़ैसला कर सकता है; पर किसी भी राष्ट्र का, बिना उसकी सम्मति के, भाग्य-विधाता नहीं हो सकता। यह बग़ैर आपस के समझौते के असंभव है। रही प्रमाण की बात, सो कमीशन यदि चाहे, तो योरपियन व्यापारी भी भारत को स्वराज्य के लिये अयोग्यता सिद्ध कर सकते हैं। और, यदि कमीशन चाहे, तो भारत को स्वराज्य के योग्य सिद्ध कर सकता है। लालाजी मानते हैं कि अंतिम निर्णय ब्रिटिश पार्लियामेंट के हाथ में है। पर पार्लियामेंट वही करती है, जो उस समय की सरकार कराती है। इसलिये अच्छा यही होगा कि ब्रिटिश सरकार भारतीय प्रतिनिधियों से समझौता कर ले, और उसको पार्लियामेंट से पास करा दे। यह इँगलैंड और भारत, दोनों के लिये हितकर है।

लालाजी ने इस तरह अँगरेज़-सरकार की पोल अच्छी तरह खोल दी। आपने अपने व्याख्यान में सच्ची घटनाओं का ख़ास उपयोग किया। लालाजी के बाद और भी कई नेताओं—पंडित मोतीलाल नेहरू, मिस्टर मोहम्मदअली जिन्नाह, पंडित मदनमोहन मालवीय आदि—ने सरकार को ख़ूब सुनाईं। सरकार का जवाब बहुत ही क्षीण और व्यर्थ था। विपक्ष में सर ज़ुल्फ़िक़ार अली, सर बी० एम्० मित्र, मिस्टर राजा (अछूतों की तरफ़ से सरकार द्वारा निर्वाचित), सर वैसिल ब्लैकेट आदि ने प्रस्ताव का घोर विरोध किया। उनका कहना यही था कि यह मानते हुए भी कि भारतीयों को कमीशन में स्थान न मिलना ठीक नहीं है, भारतीय नेताओं को सर जॉन साइमन का मित्र भाव से बढ़ाया हुआ हाथ ग्रहण करना चाहिए। इस बेकार (यदि है) कमीशन से भी अच्छाइयाँ ले लेना चाहिए। सर जॉन साइमन का यह कहना कि कुछ गवाहियाँ गुप्त रूप से ली जायँगी और भारतीय प्रतिनिधि वहाँ उपस्थित नहीं हो सकेंगे, कुछ हद तक ठीक है; क्योंकि बहुत-से राजा, महाराजा, गवर्नर इत्यादि उनकी उपस्थिति को अपनी बेइज़्ज़ती समझेंगे (ख़ूब ! और सफ़ेद मेंबरों की उपस्थिति को इज़्ज़त !)।

पंडित मोतीलाल नेहरू, सर पुरुषोत्तमदास-ठाकुरदास आदि के भाषण के बाद वोट लेने का समय आया। हृदय दोनों पक्षों के धड़क रहे थे, यद्यपि राष्ट्रवादियों को विजय की क्षीण आशा थी। ६८ प्रतिनिधियों ने लालाजी के पक्ष में और ६२ ने विपक्ष में वोट दिए। परिषद्-भवन इस जनता की विजय पर वंदेमातरम् के नाद से गूँज उठा।

इस तरह से भारत ने सिद्ध कर दिया कि भारतवासी भी अपनी मानहानि और भलाई-बुराई समझते हैं। मुसलमानों में भी—जिन पर सरकार को बहुत विश्वास था—१४ ने लालाजी के पक्ष में, और केवल १२ ने विपक्ष में, वोट दिए। इससे मालूम होता है, मुसलमान इस विषय में यहाँ तक हिंदुओं से एकमत हैं। गवर्नमेंट की तरफ़ से वोट देनेवालों में २६ सरकारी मेंबर और ३६ ग़ैरसरकारी—जिनमें नियुक्त किए हुए भारतीय और योरपियन भी शामिल हैं—थे। इस भारी ऐतिहासिक विजय पर हम बड़ी व्यवस्थापिका सभा को हार्दिक बधाई देते हैं, और आशा करते हैं, नेता अंत तक कमीशन के बहिष्कार पर डटे रहेंगे।

× × ×

९. विश्व-विजयी पहलवान गामा

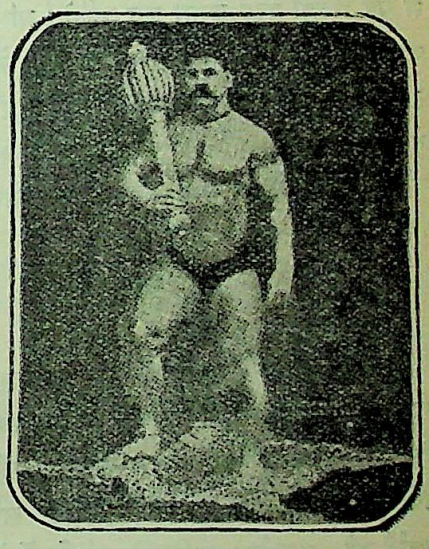

विश्व-विजयी पहलवान गामा
(श्रीकृष्ण-संदेश की कृपा से)

भारत के अद्वितीय मल्ल गामा ने गत २९ जनवरी को पटियाले में योरप के सर्वश्रेष्ठ पहलवान ज़ेविस्को को एक मिनट में ही पछाड़कर अपने को विश्व-विजयी पहलवान सिद्ध कर दिया। सन् १९१२ में लंदन में ज़ेविस्को और गामा की कुश्ती ३½ घंटे तक होती रही; पर किसी की हार नहीं हुई। दूसरे दिन ज़ेविस्को भाग गए, लड़ने ही न आए। अब पंद्रह-सोलह वर्ष तक तैयारी करके आप भारत में गामा को पछाड़ने का विश्वास लेकर आए थे; किंतु अंत को फल विपरीत ही

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हुआ—ज़ेविस्को को इतनी जल्दी पछाड़कर कहना ही पड़ा कि गामा शेर है। ५० हज़ार के लगभग जनता यह कुश्ती देखने को जमा हुई थी और देश के अनेक राजा-रईस वग़ैरह भी उपस्थित थे। गामा की इस भारी सफलता पर सबने हर्ष मनाया। गामा का संक्षिप्त परिचय इस प्रकार है—वह पुश्तैनी पहलवान है। १० वर्ष की अवस्था से कुश्ती लड़ने का अभ्यास कर रहा है। उसका भाई इमाम-बख़्श भी प्रसिद्ध मल्ल है। ये दोनों भाई सन् १९१० में इँगलैंड गए। वहाँ बड़े से बड़ा पहलवान जो इनसे लड़ा, वही पछड़ा। डॉक्टर रोलर और हैकोमिट, ज़ेविस्को सभी पहलवानों के दाँत इन्होंने खट्टे कर दिए। गामा की अवस्था अब ४४ वर्ष की है। लंबाई ५ फ़ीट ७ इंच और वज़न ढाई मन है। पोलैंड के पहलवान ज़ेविस्को का परिचय इस प्रकार है—यह ८ भाषाएँ जानते हैं। वकालत पास कर चुके हैं। पर पेशा पहलवानी का ही पसंद है। दाव-पेंच नहीं जानते, ताक़त के भरोसे लड़ते हैं। २००० से अधिक प्रतिद्वंद्वियों को पछाड़ चुके हैं। ४ घंटे प्रति दिन व्यायाम करते हैं। इन्हें विश्वास है कि ६० वर्ष की अवस्था में यह अच्छी तरह कुश्ती लड़ सकेंगे। मांस-मदिरा-तमाखू का सेवन नहीं करते। ४५ वर्ष की आयु में इनका वज़न २४५ पौंड और लंबाई ५ फ़ीट १० इंच थी। इसमें संदेह नहीं कि गामा ने ज़ेविस्को को पछाड़कर संसार में भारत की शक्ति का सिक्का जमा दिया है। परमेश्वर गामा को चिरजीवी करें, यही हमारी प्रार्थना है।

× × ×

१०. स्वर्गगत टामस हार्डी

गत ११ जनवरी को इँगलैंड के सुप्रसिद्ध कवि, औपन्यासिक, नाटककार और दार्शनिक टामस हार्डी अपने डारचेस्टर के भवन में स्वर्ग सिधार गए। उनकी अवस्था ८७ वर्ष की थी। उनके शव को सुप्रसिद्ध साहित्यिक जॉर्ज बर्नार्ड शॉ, बाल्डविन आदि बड़े आदमियों ने उठाकर उनके प्रति सम्मान दिखाया था। उनका शव इँगलैंड के वेस्ट मिनिस्टर एबी में गाड़ा गया। यह विक्टोरिया-युग के साहित्यिक थे। डारचेस्टर में मि० ब्लूमफ़ील्ड के पास जब यह इंजीनियरी सीखते थे, तभी इन्होंने कविता लिखना शुरू किया था। इनकी इंजीनियरी की निपुणता का प्रमाण सेंट पानक्रास स्टेशन की इमारत है। इंजीनियरी सीखने के लिये ही इन्होंने ग्रीक और लैटिन भाषाएँ सीखीं, और जान पड़ता है, ग्रीक साहित्य की दुःखांत रचनाओं का प्रभाव इनके ऊपर ऐसा पड़ा कि इनकी भी अधिकांश रचनाएँ वियोगांत ही हैं। ३१ वर्ष की अवस्था में इन्होंने साहित्य-सेवा को ही अपने जीवन का लक्ष्य बना लिया। इसी साल इनकी Desperate Remedies-नामक रचना प्रकाशित हुई। इसी समय इन्होंने कविता लिखना शुरू किया। इसके बाद इनकी Under the Green wood Tree, Tess of the Durvillies रचनाएँ प्रकाशित हुईं। अंतिम ग्रंथ ने ही जन-समाज में इनकी अपूर्व प्रतिभा की घोषणा कर दी। किंतु इसके बाद और भी The wood landers, The Mayor of the Casterbridge, The return of the Native, Yude the obscure आदि अच्छी पुस्तकें निकलीं। उन्होंने उसके बाद The Dynesty नाम का एक महाकाव्य बनाया। इस प्रकार आप जगत् के अन्यतम श्रेष्ठ साहित्यिक और औपन्यासिक माने जाने लगे। आपकी मृत्यु से विश्व-साहित्य की जो क्षति हुई है, वह शीघ्र पूरी होनेवाली नहीं। यही कारण है कि संसार के सभी श्रेष्ठ साहित्यिकों को आपकी मृत्यु अखरी है, और सभी ने आपके प्रति सम्मान का भाव दिखलाया है। हम पहले ही कह चुके हैं कि आप दुःखांत-रचना में सिद्धहस्त थे। एक विशेषता आपमें यह थी कि इतने बड़े और प्रसिद्ध विद्वान् होने पर भी आप समाचारपत्रों के संपादकों के पास डरते-डरते अपनी कविताएँ भेजते थे। विनम्र भाषा में लिख देते थे कि मेरी रचना में अगर कोई भूल-भ्रांति हो, तो मुझे सूचित कीजिए, मैं संशोधन कर दूँगा। इसे अगर हम शिष्टाचार भी मान लें, तो इतना शिष्टाचार भी आजकल के लेखकों में नहीं देखा जाता। पर कोई इससे यह न समझ ले कि आप दब्बू थे। आपकी निर्भीकता, स्पष्टवादिता और सत्यप्रियता प्रसिद्ध है। आपकी रचना का मूल-मंत्र निर्भीक भाव ही था। सत्य को प्रकट करने में आप कभी दबना नहीं जानते थे। सत्य को प्रकट करने के समय आप कभी प्रचलित सामाजिक रीति-नीति, प्रचलित विश्वास या सामयिक लोक-मत की पर्वा नहीं करते थे। प्रचलित लोक-मत के विरुद्ध ईसाई-मत के संबंध में उन्होंने जो अपनी राय ज़ाहिर की है, वह उनकी निर्भीकता का स्पष्ट प्रमाण है। उपन्यास लिखने में सफलता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और प्रसिद्धि प्राप्त करने पर आपने नाटक लिखना शुरू किया। नाटक लिखने में भी आपने अद्भुत निपुणता और मनीषा का परिचय दिया। उनके जितने चरित्र हैं, उन सबमें उन्होंने समाज की बुराइयाँ दिखलाई हैं। आज-कल जो योरप में खेती की अवनति, शिल्प-वाणिज्य का प्रसार, गाँवों का ध्वंस और नगरों में कल-कारख़ानों की भरमार हो रही है, यह आपको नहीं भाता था। उनका विश्वास यही था कि योरप ठीक रास्ते से हटकर अवनति की ओर अग्रसर हो रहा है। और, यही उन्होंने अपनी रचनाओं में दिखलाया है। हम टामस हार्डी के प्रति अपनी श्रद्धा प्रकट करते हुए ईश्वर से उनकी आत्मा के लिये शांति-लाभ की प्रार्थना करते हैं।

× × ×

११. चित्र-परिचय

पहला रंगीन चित्र जयपुर के महाराज पृथ्वीराज का है। यह जयपुरी क़लम का चित्र शायद १८वीं शताब्दी के अंत का है। चार रंग में है। काँगड़ा-क़लम में जो रंग का जादू रहता है, उसका जयपुरी क़लम में प्रायः अभाव ही रहता है। बहुत ही सादे रंगों से काम लिया जाता है। जो कुछ दिखाना होता है, वह सजीव रेखा द्वारा प्रकट होता है। तस्वीर में भी ज़्यादा एकचश्मी यानी अर्धमुख की ही शबीह खींची जाती है। अपनी चित्रकला का यह एक दोष ही समझना चाहिए; क्योंकि एकचश्म तस्वीर में व्यक्तिगत गुणों का पूरा भाव व्यक्त करना प्रायः असंभव ही है। इसी से मुग़ल या हिंदू चित्रों में अधिकतया अर्ध-मुख (Profile) दिखाया जाता है। जो भाव मुख द्वारा प्रकट होना चाहिए, उसके लिये हस्तमुद्रा का आश्रय लेना पड़ता है। इस महाराज पृथ्वीराज के चित्र में भी मुखाकृति सजीव नहीं मालूम पड़ती। परंतु जयपुरी क़लम के सब लाक्षणिक गुण इसमें मौजूद हैं। हाथों की रेखाओं पर मुसव्विर ने विशेष ध्यान दिया है। क़द से, पहनाव से और मुखमुद्रा से महाराज साधारण व्यक्ति देख पड़ते हैं। चित्रकार की क़लम सत्य को छिपा नहीं सकती, फिर वह चाहे ग़रीब कारीगर ही हों। (एन्० सी० मेहता)

दूसरा चित्र वन-विहार का है। इसका विषय स्पष्ट है।

तीसरा चित्र राजा दुर्लभराव का है। यह सोढ़देव के पुत्र थे, जिनका चित्र गत संख्या में निकल चुका है। मीनों को मारकर सर्वप्रथम इन्होंने ही आमेर में अपना राज्य स्थापित किया था।

शीघ्र आवश्यकता है

सुधा-कार्यालय के प्रबंध और विज्ञापन-विभाग के लिये

हिंदी और अँगरेज़ी जाननेवाले क्लर्कों की। लिखावट सुंदर हो।

हिंदी में पत्र-व्यवहार कर सकें। अँगरेज़ी का भी साधारण ज्ञान अवश्य होना चाहिए। विज्ञापन-संबंधी कार्य किए हुए और आफ़िस के काम से पूरी जानकारी रखनेवालों के पत्र पर पहले ध्यान दिया जायगा। वेतन योग्यतानुसार। प्रार्थना-पत्र हिंदी और अँगरेज़ी दोनों भाषाओं में आने चाहिए।

मैनेजर सुधा, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारत-गवर्नमेंट से रजिस्ट्री किया हुआ, बड़े-बड़े राजों-महाराजों तथा अनेक प्रतिष्ठित अनुभवी सज्जनों द्वारा परीक्षित; शरीर के बाहर भीतर होनेवाले सैकड़ों रोगों की एक ही अचूक औषधिः—

पीयूषधारा

मूल्य प्रति शीशी १।) दर्जन का १५)

पी० एस० वर्मन पो० जम्होर, (गया)

संसार के कुल केश-तैलों का एकमात्र चक्रवर्ती सम्राट्

रजिस्टर्ड] **'दूतनाथ'** [रजिस्टर्ड

मूल्य प्रति शी० १) तीन का २।) छः का ४) एक दर्जन का ७।)

"दूतनाथ परफ्युमरी वर्क्स"

पो० जम्होर, (गया)

यात्रियों के लिये ख़ास सुविधा !

हिंदी संसार में हलचल मचा देनेवाली

सर्वोत्तम साहित्यिक, सामाजिक

और सचित्र मासिक पत्रिका

सुधा

मेसर्स ए० एच० ह्वीलर-कंपनी के रेलवे-बुक-स्टालों पर भी मिलती है।

हावड़ा, पटना, मोग़लसराय, इलाहाबाद, कानपुर, अलीगढ़, बनारस, इलाहाबाद, फ़ैज़ाबाद, लखनऊ, कानपुर सिटी, बरेली, मुरादाबाद, हरद्वार, देहरादून, लखनऊ सिटी, काठगोदाम, ग़ाज़ियाबाद, दिल्ली, मेरठ छावनी, सहारनपुर आदि बड़े-बड़े स्टेशनों पर ख़ास प्रबंध किया गया है।

अगर आप सुधा का नमूना देखना चाहते हैं, तो अपने पास के बुक-स्टालों से ।।) में ख़रीद सकते हैं। इस प्रकार वी० पी० के ख़र्च की बचत भी रहेगी।

मैनेजर सुधा, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जीवन दान

संसार में एक विशाल महत्त्व का चमत्कार-पूर्ण नवीन आविष्कार

संजीवनी है, पीयूष यह, रामबाण, या अमृत धाग है ।
चक्रसुदर्शन, मानव प्राणों का जावन 'जीवनदान' हमारा है ॥

पागल को ज्ञान ! स्त्रियों को संतान !! नपुंसक को बल-प्रदान !!! मृतक को जीवन-दान !!!!

यदि डॉक्टर आपको रोग से बचा सकता है तो "जीवनदान" आपको स्वयं मृत्यु के विकराल मुँह से निकाल सकता है। फिर आप ही बतलाइए कि डॉक्टर विशेष महत्त्व का है या सर्वगुण-संपन्न हमारा जीवनदान। 'जीवदान' अवश्य। फिर आइए इसी सुधासागर दैवी गुणयुक्त कल्याणप्रद 'जीवनदान' के प्रयोग से हम आपको वृद्ध से युवक, पशु से मनुष्य, और मनुष्य से देवता बनाएँ। यह 'जीवनदान' परमहंस, योगिराज, महात्मा रामकृष्णजी के कठिन आत्मोत्कर्ष और तपस्या का फल है। महात्माजी की उमर इस समय तीन सौ वर्ष की है। उस पर भी आप भीम के समान शक्तिमान् और सरस्वती के समान ज्ञानवान् हैं। प्रत्यक्ष के लिये प्रमाण की कोई आवश्यकता नहीं। फिर सौ वर्ष और उससे भी ज़्यादा की उमर तो हम आपकी केवल 'जीवनदान' ही के प्रयोग से कर सकते हैं। और यदि संसार के आडंबरों से दूर रहकर इसका प्रयोग करें, तो दूसरे रामकृष्ण आप खुद हो सकते हैं।

यों तो 'जीवनदान' की प्रशंसा निर्गुण-सगुण की प्रशंसा से भी ज़्यादा बढ़ जायगी। संजीवनी, पीयूष राम-बाण, अमृतधारा या यों कहिए सभी कुछ 'जीवनदान' में है। बहुत-से गुणों में से इसके दो-चार गुण ही केवल यहाँ उल्लेख किए देता हूँ।

इसका सर्वप्रथम चमत्कार यह है कि यदि मनुष्य मर रहा हो, उसकी अंतिम स्वाँस निकल रही हो, फ़ौरन् ही चंद्रजल के साथ उसे 'जीवनदान' खिला दीजिए, मौत टल जायगी। जीवन-जीवन-दान मिल जायगा। जहाँ मनुष्य विकराल काल के घोर अंधकारमय स्थल में जीवन से निराश हो रहा हो, वहाँ जीवन की कली फिर से खिल उठेगी। प्राणांत के समय प्राणदान-जीवन की रत्ता, यदि यह महामाया जगज्जननी की साक्षात् कृपामृत नहीं है, तो और क्या ? उससे बातचीत कर लीजिए जो पूछना चाहें, पूछ लीजिए, उसे इतना बल तक प्रदान हो जाता है कि यदि आवश्यकता हो, तो किसी पत्र पर हस्ताक्षर भी करा सकते हैं, जो लिखवाना चाहें, लिखा सकते हैं।

नपुंसक तथा दुर्बल के लिये तो यह रामबाण है। 'जीवनदान' रक्त, वीर्य, बल एवं मस्तिष्क-शक्ति को बढ़ाता तथा काम, इच्छा, अभिलाषा और वासनाओं को उत्पन्न करता है। क्षय रोग, मृगी, बादीपन और अजीर्णता को तो जड़ से नाश कर देता है। उन्माद, पागलपन और चित्त-विभ्रम के लिये इससे बढ़कर औषधि और कहीं संसार में नहीं मिल सकती। बाँझ स्त्रियों को संतान प्रदान करना तो इसका सर्व उत्तम दैवीगुण है।

कुछ विशेष चीज़ों के समयानुसार ज़्यादा न मिलने के कारण हमारे पास 'जीवनदान' केवल थोड़ा ही-सा तय्यार हो सका है। माँग भी विशेषकर है। उसमें कुछ ऐसी वस्तुओं का समावेश भी है, जो किसी विशेष समय में केवल विशेष स्थान पर ही मिल सकती हैं। जैसे 'चंद्रभूत', 'निमामृतपुष्प' जो चंद्रग्रहण तथा सूर्यग्रहण के समय ही के उपयोगी होते हैं। 'निमामृतपुष्प' तो खिलता ही केवल चंद्रग्रहण के समय है।

दाम भी लागत-मात्र इस सुधासागर सर्वगुण-संपन्न 'जीवनदान' के केवल २५०) दो सौ पचास फ़ी तोला इसके उत्तम और सच्चे गुणानुसार ही रक्खे हैं। इस पर भी यदि आपको सफलता प्राप्त न हो, तो हम निस्संकोच आपके दाम वापस करने को सर्वदा तय्यार हैं। ऑर्डर २५) पेशगी के साथ आना आवश्यक है।

राजाराम गुप्ताजी "आनंद निवासी"

कायमगंज यू० पी० (इंडिया)

CC-0. In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection. Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक अत्युत्तम सामाजिक उपन्यास

बिज्जा

[अनुवादक, 'सुधा'-संपादक पंडित रूपनारायण पांडेय कविरत्न]

पांडेयजी बँगला के कैसे सिद्धहस्त अनुवादक हैं, यह हिंदी-संसार पर भली भाँति विदित है। आपका अनुवाद मौलिकता से मंडित और स्वाभाविकता से सुसज्जित होता है। इस उपन्यास में सामाजिक चरित्र-चित्रण इतनी बारीकी और सुंदरता से किया गया है कि कहीं पढ़ते-पढ़ते करुणा और सहानुभूति से हृदय पिघल जाता है, और कहीं घटना की वास्तविकता से प्रभावान्वित होकर आठ-आठ आँसू बहाने पड़ते हैं। वर्णन का क्रम बड़ा मधुर और चित्ताकर्षक है। भाषा ललित और ओजस्विनी है। ६-७ रंगीन और सादे चित्र भी दिए गए हैं। मूल्य १॥), सजिल्द २)

मिलने का पता—संचालक गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

* हिंदी-उपन्यासों का शिरमौर्य *

द्वितीय

बहता हुआ फूल

आवृत्ति

[अनुवादक, पं० रूपनारायण पांडेय]

बंग-भाषा के लेखकों में श्रीयुत बाबू चारु-चंद्र बंद्योपाध्याय बी० ए० का नाम ख़ूब प्रसिद्ध है। आपने बँगला में कई उच्च श्रेणी के उपन्यास लिखे हैं। यह उपन्यास उन्हीं के "स्रोतेर फूल" नाम के सर्व-श्रेष्ठ उपन्यास का हिंदी-अनुवाद है। चरित्र-चित्रण जिस सुंदरता के साथ किया गया है, उसे देखकर आप मुग्ध हुए बिना नहीं रह सकेंगे। अनुवाद साधारण बोलचाल की भाषा में किया गया है, अतः सर्व-साधारण इसे बिना कष्ट के समझ सकते हैं। बँगला-मुहाविरों को शुद्ध हिंदी-भावों में परिणत करने में जो कमाल दिखलाया गया है, वह सोने में सुगंध का काम हो गया है। इसका पहला संस्करण हाथोंहाथ बिक गया। अनेक रंगबिरंगे चित्रों से सुसज्जित लगभग ५०० पृष्ठ के बड़े पोथे का मूल्य केवल २॥), सजिल्द ३)

मिलने का पता — गंगा-पुस्तकमाला कार्यालय, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection. Allahabad.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नवयुवकोपयोगी पुस्तकें

सुख तथा सफलता

(द्वितीयावृत्ति)

Foundation Stones to Happiness and Success का हिंदी-अनुवाद । मूल-लेखक, जेम्स एलेन । इनकी पुस्तकों के बारे में लिखना सूर्य को दीपक दिखाना है । अँगरेज़ी में इनकी पुस्तकों के २० और २५ संस्करण तक निकल चुके हैं । फिर भी उनका प्रचार नित्य बढ़ता ही जाता है । पुस्तक का विषय उनके नाम से ही स्पष्ट है । सत् सिद्धांत, अच्छे नियम, सत्य कर्म, सत्य भाषण, समचित्तत्व और शुभ फल पर अच्छा विवेचन है । यू० पी० और सी० पी० के शिक्षा-विभाग से लाइब्रेरी और इनाम के लिये स्वीकृत । पृष्ठ-संख्या ४० ; मूल्य ।)

जीवन का सद्व्यय

"Economy of Human Life" नाम की महत्त्व-पूर्ण अँगरेज़ी पुस्तक का अनुवाद । अनुवादक, श्रीहरिभाऊ उपाध्याय, संपादक 'त्याग-भूमि' ।

मूल्य १)

सजिल्द १॥)

भिखारी से भगवान

(द्वितीयावृत्ति)

अनुवादक, श्री बाबू नंदनसिंह । जेम्स एलेन की From Poverty to Power का हिंदी-अनुवाद । जेम्स एलेन की सभी पुस्तकों का हिंदी-साहित्य में काफ़ी आदर हुआ है । उनकी कई उत्तमोत्तम पुस्तकों का अभी तक हिंदी में अनुवाद छपा ही नहीं है । इसी कमी को दूर करने का हमने विचार किया है, और उनकी पुस्तकों का सुंदर संस्करण छपवाकर प्रकाशित कर रहे हैं । मूल्य सजिल्द लगभग १॥), सादी १)

एशिया में प्रभात

अनुवादक, ठाकुर कल्याणसिंह शेखावत बी० ए० । यह पुस्तक योगिराज तपस्वी अरविंद घोष के सुहृद् और फ्रांस के अद्भुत त्यागी विद्वान् श्रीमान् पॉल रिचर्ड महोदय की "Dawn over Asia"-नामक पुस्तक का अतीव भावमय, सुंदर अनुवाद है । इसमें एशिया की प्राचीन सभ्यता की महिमा बड़े ओजस्वी शब्दों में व्यक्त की गई है, और अत्यंत उदारता-पूर्वक पाश्चात्य जगत् को एशिया का पवित्र संदेश सुनाया गया है । इसमें पाश्चात्य जगत् की वर्तमान उन्नति को घोर अवनति और सर्वनाश का द्वार बतलाया गया है । इसे पढ़कर प्रत्येक विचारशील का हृदय उन्नत, उदार और प्रसन्न हो सकता है । पुस्तक अतीव सुंदरता से छपी है । मूल्य ।), सजिल्द १)

गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection. Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुछ चुने हुए उपन्यास

विचित्र योग

लेखक, श्रीद्वारकाप्रसाद मौर्य बी० ए०, एल्-एल्० बी०। बिलकुल नया मौलिक उपन्यास। वसुभती का अपनी सती-साध्वी देवरानी से ईर्षा करना। देवर का चित्त अपनी ओर आकर्षित करने के लिये षड्यंत्र की रचना। देवर का घर छोड़कर कहीं चला जाना। उसकी मृत्यु की खबर। कमला के साथ दुर्व्यवहार। उसका पिता के घर चला जाना। पिता की अप्रसन्नता। काशी में किसी पंडा के घर उसका छोड़ा जाना। वहाँ से उसका निकल भागना। एक मियाँ के हाथ में पड़ना। वहाँ से भी एक हिंदू दाई की मदद से अपने सतीत्व की रक्षा करना और भाग निकलना। उषा का साठ वर्ष के बुड्ढे से विवाह। उषा से बलात्कार करने की महेशसिंह की इच्छा। उसके भाई का आ जाना और महेशसिंह की दुर्दशा। आदि-आदि एक-से-एक बढ़-कर गार्हस्थ्य-जीवन की जटिल समस्याओं से भरपूर। पढ़ते जाइए और आनंद तथा आश्चर्य से खुश और चकित होते जाइए। पुस्तक हाथ में लेकर समाप्त किए बिना नहीं छोड़ सकते। मूल्य १), सजिल्द १॥)

सीधे पंडित

लेखक, ठाकुर प्रसिद्धनारायणसिंह बी० ए०। यह उपन्यास भी अपने ढंग का हिंदी में एक ही है। सिधाई का ज़माना इस समय नहीं है, सीधे को सभी जगह नीचा देखना पड़ता है। आजकल की सभ्यता में सच्चा ईमानदार, दयालु और सरल-प्रकृति होना बुरा समझा जाता है, उसे 'सीधे' की उपाधि देकर सभी जगह अपमानित किया जाता है। इस पुस्तक में एक विद्वान् पंडितजी की सिधाई का ही चित्र खींचा गया है। लोगों ने उनकी सिधाई से क्या-क्या फ़ायदा उठाया और उन्हें नीचा दिखाने के कैसे-कैसे प्रयत्न किए, यह भली भाँति इसमें दिखाया है। पुस्तक को पढ़कर आप अच्छी तरह यह जान सकते हैं कि आधुनिक सभ्यता में क्या-क्या बुराई है और इस बुराई में पड़कर मनुष्य क्या-क्या अनर्थ करते हैं। पृष्ठ-संख्या २८४; मूल्य १॥), सजिल्द २)

संसार-रहस्य अथवा अधःपतन

लेखक, ठाकुर प्रसिद्धनारायणसिंह बी० ए०। वैसे तो हिंदी में अनेकों उपन्यास हैं, और नित्य नए-नए प्रकाशित भी होते हैं; पर यह उपन्यास हिंदी में एक नए ही ढंग का है। इसमें भौतिक और आध्यात्मिक जगत् का चित्र खींचा गया है। गार्हस्थ्य, ऐतिहासिक, जासूसी और तिलस्मी उपन्यास तो बहुतेरे लेखकों ने लिखे और प्रकाशकों ने प्रकाशित भी किए, पर आध्यात्मिक विषय पर हिंदी में अभी तक इने-गिने लेखकों ने ही लिखने का प्रयत्न किया है। इस उपन्यास में लेखक ने संसार के द्वंद्व पुण्य-पाप, उचित-अनुचित, यह-वह, मैं भला और तू बुरा, मैं बुद्धिमान् और तू मूर्ख—आदि ऐसे ही प्रश्नों को सुलझाकर यथातथ्य प्रकाश डाला है। पृष्ठ-संख्या २७४; मूल्य १॥), सजिल्द २)

मिलने का पता—गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कृषि की सर्वोपयोगी पुस्तकें

कृषि-मित्र

लेखक, पं० गंगाप्रसाद पांडेय एल्० ए०-जी०, सुपरिंटेंडेंट ऑफ़ एग्रिकल्चर। कृषि-विज्ञान के कुछ ऐसे नियम हैं, जिनका जानना प्रत्येक कृषक के लिये अनिवार्य है। उन्हीं के न जानने से कृषकों को प्रचुर परिश्रम करने पर भी पर्याप्त सफलता की प्राप्ति नहीं होती। कब, किस समय और कैसी अवस्था में किस वस्तु की जुताई, बोवाई इत्यादि करना चाहिए, सब बातें बड़ी सुंदर, सरल और सुबोध भाषा में लेखक ने समझाई हैं। ये सब ऐसी बातें हैं कि प्रत्येक किसान और उनके बालकों को कंठस्थ होनी चाहिए। मूल्य ।=)

उद्यान

(द्वितीय संस्करण)

लेखक, श्रीयुत शंकरराव जोशी, एग्रीकल्चर-ऑफ़िसर। इस पुस्तक में फल-फूल के वृक्षों, बेलों और बहारदार घासों के लगाने की विस्तृत विधि लिखी गई है। खाद, पेवंद, क़लम, बीज, सिंचाई, बाग़ की सजावट आदि विषय सरल भाषा में इस ख़ूबी के साथ समझाए गए हैं कि साधारण मनुष्य भी, बिना किसी माली की सहायता के, बाग़बानी के सब काम कर सकता है। इस विषय की इतनी बड़ी और सर्वांग-पूर्ण अन्य पुस्तक हिंदी में अभी तक नहीं निकली। पुस्तक में आवश्यकतानुसार १४ सुंदर चित्र भी दिए गए हैं। छपाई साफ़ और काग़ज़ उम्दा ऐंटिक। मूल्य १=), जिल्ददार १॥=)

कृषि-विद्या

लेखक, पं० अश्विनी-कुमार शुक्ल। कृषि-संबंधी सभी ज्ञातव्य विषय इसमें बड़ी सुंदर, सरल और सारगर्भित भाषा में दिए गए हैं। थोड़ी-सी प्रतियाँ और रह गई हैं। शीघ्र मँगाइए, नहीं तो दूसरे संस्करण तक रुकना पड़ेगा। मूल्य ॥), १)

किसानों की कामधेनु

लेखक, पं० गंगाप्रसाद अग्निहोत्री। कृषि-विज्ञान पर हिंदी-भाषा में पुस्तकों का बड़ा अभाव है। उसमें भी सरल और सुबोध पुस्तकें, जिन्हें पढ़कर किसान लोग लाभ उठा सकें, बहुत ही कम हैं। यह पुस्तक उस कमी को दूर करने में सहायता देगी, इसमें ज़रा भी संदेह नहीं। इसे पढ़कर कृषि में आशातीत उन्नति की जा सकती है। हाथोंहाथ बिक रही है। मूल्य ।=)

संचालक गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय, लखनऊ

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

काव्य की सुंदर पुस्तकें

पराग

यह 'सुधा'-संपादक पं० रूपनारायण पांडेय 'कविरत्न' की चुनी हुई कविताओं का संग्रह पढ़ने ही योग्य है। पांडेयजी की कविताएँ कैसी होती हैं, इस पर अधिक लिखने की ज़रूरत नहीं। आपकी कविताएँ अपना एक विशेष स्थान रखती हैं। पुस्तक मँगाकर देख लीजिए, हमारा कथन अक्षरशः ठीक है या नहीं। इसमें पांडेयजी और पं० दुलारेलालजी के चित्र भी दिए गए हैं। पृष्ठ-संख्या १४४। सुंदर छपाई। मूल्य ॥), सुंदर रेशमी जिल्द का १)

उषा

लेखक, स्व० श्रीयुत शिवदास गुप्त "कुसुम"। छः सुंदर चित्रों से सुशोभित मनोहर खंड-काव्य। अनुप्रास-हीन नई शैली की रुचिर रचना। चित्ताकर्षक चरित्र-चित्रण। भव्य भावों की भरमार। मनोरंजक, ओजस्वी वर्णन। बाणनंदिनी उषा और कृष्णचंद्र के पौत्र अनिरुद्ध के प्रणय-परिणय की पौराणिक कथा। एक नवीन परंतु प्रवीण कवि का अभिनंदनीय उद्योग। अवश्य मँगाकर पढ़िए। पढ़कर परम प्रसन्नता प्राप्त होगी। मूल्य ॥=), जिल्ददार १=)

भारत-गीत

(द्वितीयावृत्ति)

लेखक, कवि-सम्राट् पं० श्रीधर पाठक। पाठकजी खड़ीबोली के आचार्य माने जाते हैं। आपने समय-समय पर देश-संबंधी जो उपयोगी और उत्तम कविताएँ लिखी हैं, उन्हीं का यह सुंदर संग्रह है। मूल्य लगभग १)

पुष्पांजलि

लेखक—रायबहादुर माननीय पं० श्यामविहारी मिश्र और रायबहादुर पं० शुकदेवविहारी मिश्र। हिंदी-नवरत्न, मिश्रबंधु-विनोद आदि अनेक साहित्य-ग्रंथों के रचयिता श्रद्धेय मिश्रबंधुओं की लेखनी का चमत्कार पाठकों से छिपा नहीं है। इन्हीं स्वनाम-धन्य काव्य-मर्मज्ञ कवियों की कविताओं का यह संग्रह है। किस समय कौन कविता लिखी गई है, इसका भी उल्लेख किया गया है। कविताएँ कैसी चुटीली, मर्मभेदी और चमत्कार-पूर्ण हैं, यह समझनेवाले जान सकते हैं। पुस्तक छप रही है। मूल्य लगभग २), सजिल्द २॥)

मिलने का पता—**गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय, लखनऊ**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वास्थ्य और चिकित्सा-संबंधी पुस्तकें

तात्कालिक चिकित्सा

लेखक, श्रीलालबहादुरलाल। मनुष्य की असावधानी तथा नियमों की अनभिज्ञता के कारण यह मनुष्य-शरीर टूटा-फूटा एवं अस्वस्थ रहता और विनाश को प्राप्त हुआ करता है। फलतः इसे प्रति-क्षण किसी सुयोग्य डॉक्टर अथवा वैद्य की आवश्यकता हुआ करती है। किंतु प्रत्येक स्थान पर और प्रत्येक समय उसकी सहायता प्राप्त करना कठिन होता है। इसलिये प्रत्येक मनुष्य को चाहिए कि वह अपनी शरीर-रचना तथा उसके स्वास्थ्य-नियमों का यथोचित ज्ञान रक्खे, ताकि समय-कुसमय, डॉक्टरों अथवा अनुभवी वैद्यों की अनुपस्थिति में भी, वह अपनी, अपने कुटुंबियों की, मित्र-मंडली और अन्य प्राणियों की यथार्थ तात्कालिक चिकित्सा कर सके। यह पुस्तक इसीलिये लिखी गई है। इसकी भाषा सरल है, और चित्रों से इसका आशय समझने में और भी सुगमता हो गई है। इसके लेखक एक अनुभवी बालचर-शिक्षक (Scout Master) और सहृदय देश-भक्त हैं। बालचरों के लिये तो यह पुस्तक अत्यंत उपयोगी है। साथ ही प्रत्येक छोटे-बड़े गृहस्थ को भी इसकी एक-एक प्रति अपने यहाँ रखकर इससे लाभ उठाना चाहिए। स्थान-स्थान पर लगभग पचास-साठ चित्र भी दे दिए गए हैं। इस कारण पुस्तक का विषय समझने में और भी सरलता हो गई है। इतने चित्रों के रहते हुए भी इस उपयोगी, १४२ पृष्ठों की, सचित्र पुस्तक का मूल्य १), सजिल्द १।।)

संक्षिप्त शरीर-विज्ञान

संसार में स्वास्थ्य और शरीर की रक्षा से बढ़कर और कुछ भी महत्व-पूर्ण नहीं है। स्वास्थ्य-रक्षा ही जीवन का मूल-धन है। स्वास्थ्य बिगड़ जाने से लौकिक सुख दुर्लभ हो जाते हैं। शारीरिक सुख तो स्वास्थ्य-रक्षा ही पर पूर्ण रूप से निर्भर है। जिसका स्वास्थ्य ठीक नहीं, वह सब तरह से संपन्न होकर भी दरिद्र और दुखी है। किंतु शरीर की भीतरी बातें जाने बिना स्वास्थ्य की रक्षा नहीं हो सकती। प्रत्येक अवयव की अंदरूनी हालत जानने से स्वास्थ्य-रक्षा में बड़ी सुविधा और सुगमता होती है। इस पुस्तक में मानव-शरीर के प्रत्येक अंग की बनावट और उसकी आंतरिक अवस्था का सूक्ष्म विवेचन बड़ी अनुभवशीलता और सरलता से किया गया है। संसार में सुख की इच्छा रखनेवाले प्रत्येक व्यक्ति को शारीरिक शास्त्र से परिचित होना चाहिए। यह पुस्तक शारीरिक शास्त्र का सार-गर्भ निचोड़ और सर्वोपयोगी है। मूल्य ॥=), सजिल्द १=)

संक्षिप्त स्वास्थ्य-रक्षा

लेखिका श्रीमती हेमंत-कुमारी भट्टाचार्य ने इस स्वास्थ्य-रक्षा के मूल-तत्त्वों की बड़ी ही सरल भाषा में विवेचना की है। यदि आप चाहते हैं कि आप और आपकी संतान सदैव नीरोग रहे, तो इस पुस्तक को मँगा-कर अपने घर रखिए, और इसके अनुसार आचरण करिए। फिर देखिए, आपका स्वास्थ्य कितना सुंदर रहता है। मूल्य ॥=), सजिल्द १=)

स्वास्थ्य की कुंजी

लेखक, श्रीबाबूराम गर्ग एल्० एम्० पी०। हिंदी-साहित्य में स्वास्थ्य-रक्षा पर अनेकों पुस्तकें अब तक प्रकाशित हो चुकीं और नित्य नई-नई पुस्तकें लिखी जा रही हैं। पर किसीने भी सर्वसाधारणोपयोगी इस प्रकार की सब विषयों से पूर्ण पुस्तक नहीं लिखी है। पुस्तक में ग्रंथ-परिचय, भोजन, वायु, जल, व्यायाम, मकान, स्त्रियाँ और स्वास्थ्य, व्यक्तिगत स्वास्थ्य, छूतवाले रोग और उनसे बचने का उपाय और मादक वस्तु-निषेध आदि विषयों का थोड़े में पूर्ण विवेचन किया गया है। प्रत्येक भारतीय स्त्री-पुरुष को स्वास्थ्य-संबंधी ज्ञान प्राप्त करना चाहिए। यही इस पुस्तक का उद्देश्य भी है। पृष्ठ-संख्या १७४; मूल्य १), सजिल्द १।।)

गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुफ़्त !!

मुफ़्त !

'सी' रजिस्टर्ड टाइम पीस

मुफ़्त !

उन्हीं को मिलेगी जो हमारी एक भी हाथ की घड़ी ख़रीदेंगे। २२ कैरेट रोल्ड गोल्ड की। १० वर्ष की गारंटी, जो डायल पर खुदा हुआ है। रेशमी पट्टा सहित। शीघ्र आर्डर भेजिए।

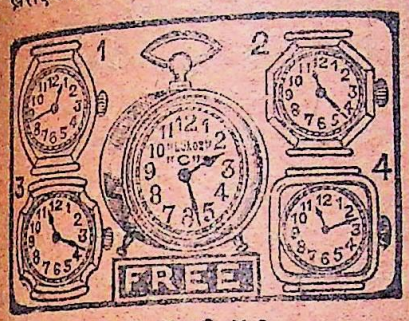

दोनों घड़ियाँ ७) में मिलेंगी।

मिलने का पता—

वी० एस्० वाच कंपनी,

पोस्ट बाक्स नं० १०५, मदरास

१५ उपयोगी वस्तुएँ मुफ़्त !

हमारी ४॥) की सुंदर लिवर वाच (जेबघड़ी) के ख़रीदार को पेंसिल, फूल, बटन, कंघी, हार, अँगूठी, चाकू, साबुन, चैन, ऐना, कमीज़ के चार बटन, तेल की शीशी और एक फौंटेन पेन मुफ़्त में मिलेगी। इन सब चीज़ों के सहित घड़ी

का दाम ४॥) मिलने का पता—

इँगलिश इंपोरियम

पो० ब० नं० १०५, मदरास

आपको परमात्मा की क़सम मुझको जरूर पढ़िए

"बरकी वैदिक मुहम्मदशाही तिला"

यह वही नुस्ख़ा है, जिसे देहली के रँगीले बादशाह मुहम्मदशाह के लिये उस समय के नामी हकीमों और वैद्यों ने मिलकर बनाया था। सौभाग्य से वह नुस्ख़ा हमारे हाथ आ गया। यह तिला इस क़दर निकल रहा है कि लखनऊ में जो यूनानी हिकमत का सेंटर हो रहा है, इस दवा को छोड़कर और दवा नहीं बिकती। बड़े-बड़े वैद्य, डॉक्टर और हकीम इस दवा को अपने बीमारों पर इस्तेमाल करके नेकनामी और शुहरत उठा रहे हैं, और बाज़ लोग ५०) एक शीशी का दाम वसूल करते हैं। यह दवा बिलकुल सच्ची है कि इससे बेहतर दुनिया में और कोई दवा नहीं है। २०-२०, ३०-३० बरस के नाउम्मेद सुस्ती, कमज़ोरी, हर क़िस्म की नातावती, नामरदी वग़ैरह के मरीज़ आज चैन कर रहे हैं। विशेष इंद्रिय की कुल ख़राबियाँ जाती रहती हैं। बिजली की ताक़त होने की वजह से चंद घंटों में अपना असर दिखाता है। और, यहाँ तक ताक़त पैदा करता है कि आदमी ख़ुद हैरान रह जाता है। २१ रोज़ तक स्त्री से परहेज़ रखिए, चाहे दवा का असर आपको कितना ही मजबूर करे। क़ीमत एक शीशी २॥), महसूल ।=)। अगर इस तिला से फ़ायदा न हो, या १० साल के बाद बीमारी लौट आए, तो क़ीमत वापस या दुबारा, तिबारा मुफ़्त भेजने की शर्त करते हैं। क्योंकि झूठे दवाफ़रोशों ने भरोसा खो दिया है।

मैनेजर—अज़मतुल इलाज दवाख़ाना (सु) लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

केवल दश रुपयों में १० वर्ष की गारंटी

साथ ही बीस क़ीमती चीज़ें मुफ़्त !

Registered "रजिस्टर्ड पेटेंट लीवर रेडियम रिस्टवाच"

इन घड़ियों में रेडियम ऐसा चमकीला लगता है, जैसा कि दिन में देखिए वैसे ही रात में भी। इसके साथ २० नीचे लिखी चीज़ें ग्राहकों को मुफ़्त दी जाती हैं—

१—पाकेट लैंप [बिजली नई], २—फ़ाउनटेन पेन (अपने आप लिखनेवाली क़लम), ३—दावात, ४—फ़ोल्डिंग, ५—पेंसिल बनाने को कल, ६—हीरे की अँगूठी, ७—कान के लटकन, ८—सेफ़्टी पिन, ९—चाक़ू, १०—चश्मा, ११—हाथ की घड़ियों के लिये पट्टा, १२—बढ़िया ताश, १३—सिगार लाइटर, १४—क़मीज़ का सेट, १५—कोट के बटन, १६—रूमाल, १७—इतर की शीशी, १८—एक सुंदर प्याला, १९—लाकेट, २०—क़ैंची।

नोट—केवल वी० पी० से भेजा जायगा। पोस्टेज १) रु०, (२) क़ीमत १०) गारंटी १० वर्ष।

मिलने का पता—

दी मास्टर वाच कं०, नं० १९० भूलेश्वर, बंबई नं० २

शर्तिया इलाज और दवा मुफ़्त

शोक है कि छोटे-छोटे दवा बेचनेवालों की इतनी ज़्यादती है कि उनमें सचमुच किनकी दवा फ़ायदा करेगी, इनका अंदाज़ करना बहुत कठिन हो गया है। लोगों ने एक ऊधम मचा रक्खा है। लेकिन हम इस ऊधम को मिटाने और अपनी सचाई ज़ाहिर करने के लिये अपने औषधालय की मशहूर दवा "जवानी का बक्स", जिसकी क़ीमत ८) है और जिसमें एक शीशी तिलाए शबाब और २१ ताक़त की गोलियाँ हैं, जिनको खाने से नामरदी, प्रमेह, बदख़्वाबी, हर क़िस्म की कमज़ोरी, सुस्ती धातु के गिरने वग़ैरह की तमाम ख़राबियाँ दूर हो जाती हैं, थोड़े दिनों के लिये हमने तय किया है कि बिलकुल मुफ़्त बाँट करके स्थायी ग्राहक बना लिये जावें। ख़ूब मशहूर हो जाने और बहुत फ़ायदेमंद साबित हो जाने पर इस क्षणिक हानि का बदला हो जायगा। इसलिये जिन लोगों को ऊपर लिखी बीमारियों ने सता रक्खा हो, मौत को ज़िंदगी से अच्छा जानते हों, या जिनके दिमाग़, दिल, मेदे वग़ैरह में कितनी ही कमज़ोरी आ गई हो और अब हमेशा यानी ज़िंदगी-भर के लिये छुटकारा पाना चाहते हों, तो एक आख़िरी मरतबा ईश्वर पर भरोसा करके "जवानी बक्स" सिर्फ़ एक रुपए में—वह भी बाबत छपाई इश्तहार ॥), डिब्बी =), पैकिंग =), महसूल डाक ।) नौकरों की तनख़्वाह और क़ीमत शीशी वग़ैरह यानी जो ऊपर से ख़र्च होता है—सिर्फ़ एक रुपया अदा करके बिलकुल मुफ़्त मँगाएँ। जितने बक्स मँगाना हों, इकट्ठा मँगा लीजिए। नहीं तो दो हज़ार बक्स बिक जाने पर फिर पूरी वही क़ीमत ८) में भेजा जावेगा। फ़ायदा न हो, तो दाम की वापसी की शर्त है। इससे ज़्यादा क्या विश्वास दिलाया जाय।

फ़ायदेमंद साबित होने पर एक सार्टीफ़िकट भेजना ज़रूरी होगा।

मैनेजर—अइनुश्शिफ़ा मेडिकल हॉल (सु) लखनऊ

आर्डर में सुधा का हवाला अवश्य दें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

BUDDHIST INDIA

The Premeir Illustrated Buddhist Quarterly in India & Buddhist Gazette.

Also a Journal of Buddhist Researches Dealing with Buddhism, Buddhist History, Literature, Religion, Philosophy, Science, Art, Archæology, Iconology, Travels, Researches, Etc.

Editors:—Dharma Aditya Dharmacharyya B.M.Barua, M. A. D.Lit.(Lond.)

Published and Managed by a Board of Buddhist Indians.

The aims and objects of Buddhist India are:—

1. To be purely representative of Buddhism in India and its wide expension abroad.
2. To protect and publish Buddhism, Buddhist Literature, Art, Culture etc. in India.
3. To be an organ for preaching Buddhism to the teeming Millions of India who merely worship Buddha as a Vishnu Avatara.
4. To promote the forgotten position of Buddhism as one of the luring religions of India.
5. To properly represent Buddhist religious and cultural problems in India.

Illustrated. Double Crown 8 Vo, 80 pages in each Issue.

Original Articles, Translations, and Illustrations a speciality.

Yearly Rs. 4. 4 Yen, 5 Shillings or. 2 Dollars. Single Copy Rs. 1-4 or 1-10 d.

Post Box 7894
CALCUTTA.

Managing Editor,
Buddhist India Office.

इससे बढ़कर और क्या चाहिए, पसंद न हो तो पूरे दाम वापस

सुनहरी हाथ घड़ी—(गारंटी १० साल)

यह रिस्टवाच बहुत ही ख़ूबसूरत, मज़बूत और साइज़ में छोटी है। इसके डायल और रूप-रंग की सुंदरता १२०) की घड़ी को भी मात करती है। मूल्य सिर्फ़ ६॥), पैकिंग और डाक-ख़र्च अलग।

नं० ३६८

'जोकर' कैरेज क्लॉक—(गारंटी ५ साल)

यह घड़ी ठीक चित्र-जसी है। इसकी मशीन आला दर्जे की मज़बूत होने से यह वर्षों तक सच्चा टाइम देती है और शक्ल की ख़ूबसूरती के कारण कमरे की शोभा दूनी बढ़ा देती है।

नं० १—अलार्म बेल यानी जगाने की घंटीवाली मूल्य ६॥=)

नं० ५६८

नं० २—घंटा आधा घंटा बजानेवाली मूल्य ८॥)

नं० ३—अलार्मबेल के साथ घंटा, आधा घंटा बजानेवाली मूल्य १०) पैकिंग और डाक-ख़र्च अलग।

दी यूनियन ट्रेडिंग कं०
१६६, हरीसन रोड (W) कलकत्ता

शक्तिका ख़ज़ाना यानी धातु पुष्टिके लिये

मदनमंजरी गोलियां

यह दिव्य गोलियाँ दस्त साफ़ लाती है, पेशाब और स्वप्नमें जाते वीर्य्यको बन्द करके वीर्य्य पुष्ट करती हैं, और प्रत्येक प्रकारकी कमज़ोरीको नष्ट करके अटूट बल और नया जीवन देती हैं। क़ीमत ४० गोलीकी डिब्बी १) रु०

रमण विलासिनी वटिका।

स्थम्मन करनेवाली अक्सीर दवा। फ़ी डिब्बी १) रु०

मू. फ़ी डि. १) **नपुंसकरञ्जन घृत**। मू. फ़ी डि. १)

पुरुषके गुह्य भागकी प्रत्येक प्रकारकी कमज़ोरी यह लेप लगानेसे नष्ट होकर सच्चा पुरुषत्व प्राप्त होता है।

राजवैद्य नारायणजी व शत्रजी, १७७, हरिसन रोड. कलकत्ता।

प्रत्येक शहरके लिये एजेण्टकी ज़रूरत है। निगम बहुत नुक़सान है।

एजेंट:—निगम मेडिकल हाल

फ़तेहगंज

लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुंदर और मनोहर छपाई

हिंदी, संस्कृत तथा अँगरेज़ी में

चेक, रसीद, विज़िटिंग कार्ड, रंगीन चित्र, अन्य फ़ैंसी काम तथा बड़ी-बड़ी पुस्तकें और सभी प्रकार के

जाब-वर्क

ठीक समय पर, साधारण रेट में छापे जाते हैं।
संतोष-जनक होने की गारंटी।

पत्र-व्यवहार का पता—मैनेजर गंगा-फ़ाइन आर्ट-प्रेस, लखनऊ

शीघ्रता कीजिए ! नहीं तो पछताइएगा !!

केवल विवाहिता स्त्रियों के लिये !

सोहागरात या बहूरानी को सीख

लाला लाजपत रायजी

लिखित भूमिका सहित

लेखक—पंडित कृष्णकांतजी मालवीय

बत्तीस एक रंग और एक तिरंगे चित्र से सुशोभित। पृष्ठ-संख्या प्रायः ५००। पुस्तक को पंडितजी ने अपनी पुत्र-वधू के लिये लिखा है, और पुत्र-वधू को ही पुस्तक समर्पित भी की गई है। वैवाहिक जीवन को सुखमय बनाने के लिये जितनी बातें हो सकती हैं, प्रायः सब ही का इसमें समावेश है, साथ ही वैवाहिक जीवन में जिन बातों का ज्ञान नितांत आवश्यक है, उनका भी इस पुस्तक में समावेश है। पुस्तक के सर्व-श्रेष्ठ होने के संबंध में हमारी समझ में इतना ही कह देना काफ़ी है। पुस्तक की विषय-सूची इस प्रकार से है:—[१]विवाह-संबंधी बातें [२] सोहागरात [३] पुरुष और स्त्री [४] पुरुष हैं क्या ? [५] अधिकार का रहस्य [६] जड़-मनुष्य पर अधिकार [७] शरीर आकर्षक कैसे हो [८] शरीर की सफ़ाई [९] भोजन कैसा हो [१०] वसन कैसा हो [११] शृंगार [१२]रजोधर्म [१३]हृदय पर अधिकार [१४]मानव-मस्तिष्क पर अधिकार तथा स्त्री जीवन का उद्देश्य[१५]प्रेम की ग्रंथि [१६]लड़का या लड़की [१७]संताननिग्रह [१८]बच्चों को बचाओ [१९]मित्रों का चुनाव [२०] समाज में व्यवहार [२१]सतीत्व [२२] आदि-शक्ति।

परिशिष्ट भाग में

[१] पतिव्रता-चरित्र (काम-सूत्र से) [२] लक्ष्मी किन स्त्रियों के पास निवास करती हैं (महाभारत से) [३] स्त्रियों के नाश के कारण (रति-रहस्य तथा अनंग-रंग से) [४] गर्भ में लड़का या लड़की (सुश्रुत से) [५] रजस्वला के नियम [६] व्यायाम-शिक्षा [७] स्त्री की महत्ता—(शकुंतला-दुष्यंत की बातचीत, महाभारत से) [८] रानी कलावती की सोहागरात की कथा स्कंद-पुराण से आदि-आदि।

पुस्तक में "काम-सूत्र," "रति-रहस्य," "अनंग-रंग," कंदर्प-चूड़ामणि" तथा पश्चिमीय विशेषज्ञों के उपदेश भरे पड़े हैं। मूल्य सादे कवर की पुस्तक का ३), सजिल्द ३।)

प्रत्येक गृह में पुस्तक होनी चाहिए, प्रत्येक विवाहिता स्त्री को इस पुस्तक को पढ़ना चाहिए और प्रत्येक पति को, जो अपने वैवाहिक जीवन को स्वर्गीय बनाना चाहता हो, इस पुस्तक को अपनी सहधर्मिणी को पढ़ा देना चाहिए। पुस्तक डबल क्राउन १६पेजी में बहुत ही सुंदर छपी है।

मैनेजर अभ्युदय प्रेस, प्रयाग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Each outfit consists of letters, figures, etc., Ink pad, Type Holder & Tweezers. The letters are made of Solid Rubber & can be easily fitted into the holder with the tweezers. A stamp of any desired wording can be quickly set up and printed like ordinary Rubber Stamps.

AAAAABBBCCCCDDDEEEEEFFFGGGHHHIIIIIJJKKLLL
LLMMMNNNNOOOOPPPQRRRRRSSSSSTTTTTUUVVW
WXYYZ&$£.....,,,,,-"!1223344556677889900 QUADS AND SPACES.

No. 0 with 2 line holder Rs 1

AAAAABBBBCCCCCDDDDEEEEEFFFFGGGGHHHHIIIIIJ
JJJJKKKLLLLLMMMMNNNNNOOOOOPPPPQQRRRR
RSSSSSTTTTTUUUVVVWWWWXXYYYYZZ&111223
34455667788990O0$.....,,,,,--"/£

No. 1 with 2 line holder Rs 2

AAAAAaaaaaaBBBBbbbbCCCCCccccDDDDddddE
EEEEeeeeeeFFFFffffGGGGgggggHHHHhhhhhIIIIIiiiiii
JJJjjjKKkkkLLLLLIIIIIIMMMMMmmmmmNNNNnnnn
nnnOOOOOooooooPPPPppppQQqqRRRRRrrrrrrSS
SSSssssssTTTTTttttttUUUuuuVVvvWWWwwwwXxx
YYyyyZzz&$.....,,,,,--"!1122334455667889900/£

No. 2 with 3 line holder Rs 3

AAAAAaaaaaaBBBBbbbbCCCCCccc
ccDDDDddddddEEEEEeeeeeeFFFFff
ffGGGGggggHHHHHhhhhhIIIIIiiiiiJ
JjjjKKkkkLLLLLIIIIIMMMMmmmmm
NNNNnnnnnOOOOoooooooPPPPppp
pQQqqRRRRRrrrrrrSSSSSsssssssTT
TTTttttttUUUuuuuVVvvWWWwwww
wXxxYYYyyyyZZzz&1122334455667
7889900$.....,,,,,—"/£

No. 3 with 4 line holder Rs 4

BHOLA NATH & CO.,
Stationers and Rubber Stamp Makers, Lucknow.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रचारकों की आवश्यकता

हमें हिंदी की सर्वश्रेष्ठ साहित्यिक और सामाजिक पत्रिका 'सुधा' तथा अपने प्रकाशित किए हुए सुंदर साहित्य का प्रचार करने के लिये (पंजाब, यू० पी०, बिहार, सी० पी० आदि में) सुशिक्षित स्त्री-पुरुषों की आवश्यकता है। आवेदन-पत्र में योग्यता, अनुभव और आयु का स्पष्ट उल्लेख होना चाहिए।

पत्र-व्यवहार करने का पता—

संचालक सुधा, अमीनाबाद-पार्क, लखनऊ

क्या आपको बौद्ध-धर्म से कुछ भी दिलचस्पी है ?

तो

सचित्र और अंतर्राष्ट्रीय बौद्ध संघ की मासिक पत्रिका

महाबोधी

के

अवश्य ग्राहक होइए।

संपादक

श्रीअनागरिका धर्मपाल

(संस्थापक महाबोधी संघ और शिकागो की धार्मिक पॉर्लियामेंट में दक्षिणी बौद्धों के प्रतिनिधि)

इसकी विशेषताएँ

१. बौद्ध-धर्म पर विविध दृष्टि से लिखे गए मौलिक लेख
२. अप्रकाशित धार्मिक ग्रंथों का अनुवाद
३. बौद्ध-आंदोलन-संबंधी भारतवर्ष और देशांतरों के समाचार
४. विद्वत्तापूर्ण नोट और समालोचनाएँ इत्यादि

हमारे कुछ लेखक

जे० एफ़० मेकेंज़ी (भिक्षु शिलाकार)
डॉ० जॉर्ज ग्रिम
प्रो० ए० आर० जॉर्न
डॉ० बी० सी० ला, एम्० ए०, पी० एच्० डी०, बी० एल्० रेव० लूई ग्रीव
श्री ए० डी० जयसुंदर
पं० शिवनारायण
रेव० इ० हंट

वार्षिक मूल्य ४), योरप ६ शिलिंग, अमेरिका २ डालर, प्र० सं० ।=)

मिलने का पता—महाबोधी, (४ ए,) कॉलेज स्क्वॉयर, कलकत्ता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुप्रसिद्ध लेखक ठाकुर प्रसिद्धनारायणसिंह बी० ए० की योग-संबंधी पुस्तकें

योगत्रयी

इसमें कर्मयोग, ज्ञानयोग और भक्तियोग का संक्षेप, किंतु विशद वर्णन है। स्वामी रामचारकजी ने इसमें तीनों योगों की सापेक्षता सिद्ध की है। इसके अध्ययन से मनुष्य आत्मा तथा परमात्मा का ज्ञान प्राप्त करके अपने जीवन को सफल शुभाशापूर्ण और शांत बना सकता है। पुस्तक की प्रशंसा करना सूर्य को दीपक दिखाना है। एकबार अवश्य पढ़िए। पृष्ठ-संख्या १०४; मूल्य ॥), सजिल्द १)

प्राणायाम

यह पुस्तक स्वामी रामचारक-लिखित 'साइंस ऑफ़ ब्रेथ' का हिंदी-रूपांतर है। प्राणायाम-जैसी कठिन क्रिया बड़ी सरल भाषा में समझाई गई है। साधारण-से-साधारण व्यक्ति भी इसे एक बार पढ़कर प्राणायाम का अभ्यास कर सकता है। योगी तथा गृहस्थ सभी इससे लाभ उठा सकते हैं। मूल्य केवल ॥।=), सजिल्द १।=)

योग की कुछ विभूतियाँ

योग की विभूतियाँ तो अनंत हैं, परंतु इस पुस्तिका में कुछ ऐसी विभूतियों का वर्णन है, जिन्हें जान-कर आप अनंत लाभ उठा सकते हैं। इसमें ध्यान, समाधि और संयम इत्यादि का ऐसा सुंदर वर्णन है कि थोड़े ही से अभ्यास से मनुष्य की विचित्र शक्तियों का विकास हो सकता है। हमारे कथन का सत्य तथा पुस्तक के तत्त्व पढ़ने ही से ज्ञात हो सकते हैं। पृष्ठ-संख्या १३४; मूल्य ॥), सजिल्द १।)

योगशास्त्रांतर्गत धर्म

संसार में धर्म का विचित्र झमेला है। धार्मिक मतभेदों से संसार में असंख्य अनिष्ट हुए हैं। स्वामीजी ने धार्मिक अनेकता में एकता और प्रति-कूलता में अनुकूलता दिख-लाई है। इसके मनन और अध्ययन से धर्म-विष-यक सारे संशय मिट जाते हैं। इसमें विषयों का इतना विशद तथा सरल वर्णन है कि योग-ऐसा क्लिष्ट विषय भी सरस हो गया है। पुस्तक के विषय में अधिक लिखना व्यर्थ है। पृष्ठ-संख्या ६८; मूल्य ॥)

हठयोग

नाम पढ़कर मत घब-राइए। आप समझते होंगे कि पुस्तक योगियों के पुराने दुःसाध्य अभ्यासों से भरी होगी; भूलकर भी ऐसा ख़याल मत कीजिए। इसमें असाध्यता की बू तक नहीं है। इस बीसवीं शताब्दी के सर्वसाधारण के लिये यह लिखी गई है। इसमें स्वामी रामचारक के बताए हुए ऐसे सरल अभ्यास हैं जिन्हें आप खाते, पीते, उठते, बैठते, सोते, जागते, चलते, फिरते हर वक्त कर सकते हैं। थोड़े ही अभ्यास से आपकी शारी-रिक उन्नति और मनःशक्ति-प्रबलता उस मात्रा तक पहुँच जायगी जिसका आपको स्वप्न में भी ख़याल न होगा। इसे अवश्य पढ़िए। छप रहा है।

राजयोग अर्थात् मान-सिक विकास

वह विद्या है, जिसके द्वारा आप अपने मानसिक दूषणों और त्रुटियों को दूर करके मनः-शक्ति को प्रबल तथा 'हृदय' को परमानंद, परिप्लावित कर सकते हैं। लेखक ने इसमें मन के भिन्न-भिन्न भेदों का स्पष्ट वर्णन करके आत्मोद्धार के उत्तम उपाय बतलाए हैं। इसमें अनु-भव-हीनों की तरह मन को मारना या इसे ज़बरदस्ती दबा लेना नहीं बतलाया गया है। स्वामीजी ने इसमें मतवाले मन को स्वच्छंद रीति से वश में करना सिखाया है। सुंदर उपदेशों के साथ-साथ सरल भाषा में ऐसे मंत्र दिए गए हैं, जिनके मननसे वास्तविक कल्याण होगा। इसके तत्त्व पढ़ने ही से ज्ञात होंगे। पृष्ठ ३००; मूल्य १॥)

जीवन-मरण-रहस्य

इस पुस्तक में मानव-शरीर-यंत्र का सूक्ष्म वर्णन है, जिसका ज्ञान प्रत्येक प्राणी को आवश्यक है। शरीर के साथ आत्मा, मन-प्रवृत्ति, अंतःकरण इत्यादि का वर्णन ऐसी सरल रीति से किया गया है, जिसे साधा-रण मनुष्य भी भली भाँति समझ सकता और अपना शारीरिक और मानसिक विकास कर सकता है। इसे सच्चे हृदय से पढ़ने से मरण-भय की सत्ता हृदय में नहीं रह सकती। इस पुस्तक को पढ़कर अपनी आत्मा को कर्मण्य तथा निर्भीक बना-इए। मूल्य ।=)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साहित्य-दर्पण

['विमला'-नामक हिंदी-टीका सहित]

यदि आप साहित्य का वास्तविक आनंद लेना चाहते हैं, यदि आप कविताओं का यथार्थ मर्म समझना चाहते हैं, दि आप अलंकारों, रसों और ध्वनियों की गुत्थियाँ सुलझाना चाहते हैं, यदि आप कविताओं के गुण-दोषों को परखना चाहते हैं, और चाहते हैं पुराने टीकाकारों की भूलों का मार्मिक विवेचन देखना, तो एक बार 'विमला' अवश्य पढ़िए। इसके विषय में स्वर्गीय महामहोपाध्याय भारतभास्कर पूज्यपाद **श्रीशिवकुमारशास्त्रीजी** ने जो सम्मति दी थी, उसका अनुवाद है कि—

"बरेली-निवासी साहित्याचार्य शालग्राम शास्त्री की बनाई साहित्य-दर्पण की भाषा-टीका के अनेक स्थल हमने सुने हैं। इसमें सन्निवेशित विचार अत्यंत रमणीय, युक्तियुक्त और प्रमाणों से पूर्ण हैं। इसके निरूपण की शैली हृदयंगम है। यह विद्यार्थी और अध्यापक, दोनों के काम की वस्तु है।" इत्यादि

सर्वतंत्रस्वतंत्र, महोपाध्याय, श्रीपंडित काशीनाथ शास्त्री, कालिका गली, बनारस की सम्मति का सार यह है कि—"बरेलीवासी साहित्याचार्य शालग्राम शास्त्री ने प्राचीन छपी तथा लिखी अशुद्ध पुस्तकों को बड़े परिश्रम से शुद्ध और परिष्कृत करके साहित्य-दर्पण की हिंदी-भाषा में प्रत्यक्षर सुविशद व्याख्या की है। इसमें श्रीरामचरण तर्कवागीश की की हुई फक्किकाओं की व्याख्या का युक्ति और प्रमाणों द्वारा अच्छा खंडन किया है। यह व्याख्या सरल तथा मनोहारिणी है।"

व्याकरणाचार्य न्यायशास्त्री पं० गिरिधर शर्मा चतुर्वेदी विद्यानिधि, महामहोपाध्याय—

सुयोग्य विद्वान् साहित्याचार्य श्रीशालग्राम शास्त्रीजी ने जो साहित्य-दर्पण की हिंदी-भाषा में एक विस्तृत, गंभीर, सुस्पष्ट, सम्यक् एवं सरल टीका लिखी है, उसके बहुत-से अंशों को मैंने ध्यान-पूर्वक देखा है। वस्तुतः साहित्याचार्य महोदय ने यह कार्य बड़े परिश्रम से किया है, और यह उनके गौरवास्पद 'आचार्य'-पद के अनुरूप ही हुआ है। हिंदी-भाषा में तो वस्तुतः यह नई चीज़ है। अलंकार शास्त्र का ऐसा परिमार्जित विवेचन अभी तक हिंदी-भाषा में नहीं था। अतः साहित्य-रसिक सज्जनों को इसे शीघ्र अपनाना चाहिए।

छपाई-सफ़ाई उत्तम। निर्णय-सागरी नया टाइप। बढ़िया काग़ज़। उत्तम जिल्द। मू० ४।), डा० व्यय अलग

आयुर्वेद-महत्त्व

यह पुस्तक आयुर्वेद से संबंध रखनेवाली अनेक अद्भुत, गंभीर तथा प्रामाणिक गवेषणाओं से पूर्ण है। जिन रहस्यों का पता आयुर्वेद के समस्त ग्रंथ पढ़ जाने पर भी नहीं मिलता, उनका इसमें युक्ति और प्रमाणों के बल पर इतनी सुंदरता से प्रतिपादन किया है कि पढ़नेवाले दंग रह जाते हैं! वर्णनशैली इतनी रमणीय है कि कठिन-से-कठिन विषय बड़ी जल्दी समझ में आ जाता है। भाषा ऐसी सरल और हृदयग्राहक है कि स्थान-स्थान पर उपन्यास का-सा आनंद आने लगता है। गंभीर और कठिन विषयों के बाद ही मनोरंजन की भी काफ़ी सामग्री मिलती है, जिससे पढ़नेवाले का जी नहीं ऊबता।

वात, पित्त, कफ की दार्शनिक मीमांसा, वेदों से आयुर्वेद का संबंध, वेदों में वात, पित्त, कफ का वर्णन, वेदों में राजयक्ष्मा (Phthisis) का वर्णन, रोग के कीटाणुओं (Germs) का वर्णन, यक्ष्मा का विष, यक्ष्मा-रोग और उसके रोगी का वर्णन, यक्ष्मा की ओषधियों का वर्णन, तीन प्रकार के रोग, तीन प्रकार की ओषधियाँ, उनका तीन देवताओं से संबंध, पश्चिमी साइंस से वैदिक सिद्धांतों का भेद, पूर्व और पश्चिम की परीक्षा में भेद, कुनैन, थर्मामेटर, चरक में कुनैन इत्यादि अनेक विषयों पर इस पुस्तक में बड़ी विद्वत्ता और योग्यता के साथ प्रकाश डाला गया है। ऐलोपैथी, होम्योपैथी आदि चिकित्साओं के साथ आयुर्वेदिक सिद्धांतों की तुलना करके उसका महत्त्व दिखाया गया है। छपाई, सफ़ाई काग़ज़ आदि उत्तम। सुपर रायल १६-पेजी आकार के लगभग तीन सौ पृष्ठों की पुस्तक का लागत-मात्र मूल्य केवल १)

याज्ञिकजी का प्रलाप

इसमें आयुर्वेद-महत्त्व पर ऐलोपैथिक डॉक्टरों की ओर से किए गए प्रबल आक्षेपों का मार्मिक समाधान है। भाषा और वर्णनशैली इतनी हास्य-रसपूर्ण है कि पढ़नेवाला हँसते-हँसते लोट-पोट हो जाता है। मूल्य केवल =)

मैनेजर श्रीमृत्युञ्जय औषधालय, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिंदी-साहित्य का सर्वोत्तम गार्हस्थ्य उपन्यास

हृदय की प्यास

(सचित्र और मौलिक)

[लेखक—हिंदी के सुप्रसिद्ध, सिद्ध-हस्त लेखक आयुर्वेदाचार्य श्रीचतुरसेन शास्त्री]

हिंदी में मौलिक उपन्यास-लेखक इने-गिने ही हैं, और उनमें शास्त्रीजी का स्थान किसी से कम नहीं। गद्य-काव्य लिखने में आप आचार्य माने जाते हैं। बड़े-बड़े साहित्य-सेवी आपकी लेखन-शैली के क़ायल हैं। नवयुवकों के लिये तो यह आदर्श ही है। यह उपन्यास भी उनकी पूर्ण प्रतिभा का परिचायक है; भावमयी भाषा, सुंदर शैली, सरल और सुबोध रचना का यह सर्वोत्तम नमूना है। मित्रता के लक्षण, सौंदर्य की विषमता, शंका की सत्यता, तज्जनित द्वेष और डाह, उसका दुष्परिणाम ही नहीं, वरन् आधुनिक शिक्षा से उत्पन्न सौंदर्योपासना, अविवेक और मतिभ्रम तथा पूर्व संस्कार के कारण कर्तव्य-परायणता और पश्चात्ताप इसमें पढ़ते ही बनता है। गार्हस्थ्य जीवन क्योंकर सुखी हो सकता है, आजकल के नवयुवक क्यों उसे नरक-तुल्य समझते हैं, घर की लक्ष्मी को छोड़कर कूड़े-कर्कट की कौड़ी पर क्यों दृष्टि गड़ाए रहते हैं—आदि जीवन के कतिपय जटिल प्रश्नों का शास्त्रीजी ने बड़ी ख़ूबी और योग्यता के साथ निराकरण किया है। इन सब बातों के होते हुए भी इसका प्लाट ऐसी ख़ूबी से रचा गया है कि उपन्यास को एक बार हाथ में लेने पर क्या मजाल कि आप खाना-पीना न भूल जायँ, और उसे समाप्त किए बिना ही छोड़ दें। सती की सत्यता और कुलटा की कायरता तो ग़ज़ब ढाती हैं। एक बार इसको मँगाइए, स्वयं पढ़िए और अपनी गृहिणी को भी पढ़ाइए। ६ रंगीन और सादे चित्रों से सुशोभित इस अमूल्य पुस्तक का मूल्य केवल १॥), सजिल्द २)

मिलने का पता—संचालक गंगा-पुस्तकमाला कार्यालय, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मनोविज्ञान का एक अद्वितीय उपन्यास

पवित्र पाप

(सुप्रसिद्ध रूसी उपन्यास-लेखक डॉस्टॉय फ़िस्की के लोक-प्रिय उपन्यास
Crime and Punishment का हिंदी-अनुवाद)

[अनुवादक—पं० ब्रजकृष्ण गुर्टू बी० ए०, एल्-एल्० बी० और कविराज विद्याधर विद्यालंकार]

जिज्ञासु ज्ञान-पिपासा शांत करने को क्या नहीं कर सकता, हत्यारे के सिर पर हत्या किस प्रकार सवार होकर बोलती है, पुलिस की तहक़ीक़ात में सत्य की मात्रा कितनी होती है, सशंक मनुष्य कौन-सा अनर्थ ऐसा है, जो नहीं कर सकता—आदि बातें ऐसी सुंदर, सरल और मनोरंजक भाषा में लिखी गई हैं कि उपन्यास पढ़ते ही बनता है। रूस की दरिद्रता, वहाँ की राजनीतिक अवस्था, पुलिस की तहक़ीक़ात का ढंग, साइबेरिया के जेल की दशा, शराबख़ाने का दृश्य, सच्ची मित्रता का अनुपम चित्र और स्वार्थी मनुष्य का प्रेम देखते ही बनता है। एक बार पुस्तक खोलिए, फिर बिना समाप्त किए पुस्तक रखने की इच्छा ही नहीं होती। अपने ढंग के इस नए और निराले ५५० पृष्ठ के सचित्र उपन्यास का मूल्य ३)

मिलने का पता—

गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हास्य-रस की अलौकिक पुस्तक

मिस्टर बास का कथा

[लेखक—भूतपूर्व आनंद-संपादक स्वर्गीय श्रीशिवनाथ शर्मा बी० ए०]

अन्य रसों की तरह हास्य-रस पर क़लम चलाना सहज नहीं। बिरले ही प्रतिभाशाली, सिद्ध-हस्त लेखक इसमें सफलता पाते हैं। व्यंग्य और विनोद द्वारा समाज की बुराइयों का चित्र खींचना साधारण लेखक की क़लम से बाहर है। लक्ष्य-हीन, उद्देश्य-हीन हँसी के चुटकुले लिख लेना मामूली बात है। यही कारण है कि संसार की सभी भाषाओं में हास्य-रस का साहित्य बहुत ही कम है। हिंदी में तो इस प्रकार की मौलिक रचनाएँ नहीं के बराबर हैं। शर्माजी उच्चकोटि के हास्य-लेखक हैं। आपकी इस पुस्तक में व्यंग्य और विनोद द्वारा बड़े ही अच्छे ढंग से समाज की बुराइयों का चित्र खींचा गया है। पुस्तक की पंक्ति-पंक्ति और अक्षर-अक्षर में व्यंग्य और विनोद कूट-कूटकर भरे हुए हैं। हास्य-रस की प्रधानता के साथ-साथ भाषा की सजीवता और ओज ने सोने में सुगंध का काम किया है। सभ्य हँसी, चुटीली भाषा में, स्थान-स्थान पर भर दी गई है। क्या मजाल कि रोनी सूरतवाले भी इसकी एक-एक पंक्ति पढ़कर हँसते-हँसते लोट-पोट न हो जायँ। एक बार पुस्तक को हाथ में लेकर फिर समाप्त किए बिना उसे छोड़ने को जी नहीं चाहता। अपने ढंग के इस नए और निराले, हास्य-रस-पूर्ण, सचित्र ४३२ पृष्ठ के ग्रंथ का मूल्य केवल २॥) रक्खा गया है।

संचालक गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय, लखनऊ

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection. Digitized by eGangotri

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साहित्य-संसार में युगांतर उपस्थित करनेवाला अभूतपूर्व मौलिक उपन्यास

हिंदी-उपन्यासों का चक्रचूड़ामणि

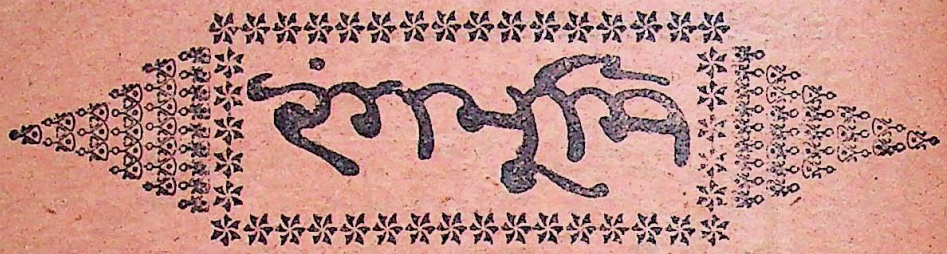

प्रेमचंदजी के अन्य उपन्यासों की तरह इस बृहत् उपन्यास में भी वर्तमान काल की सामाजिक दशाओं का स्वाभाविक चित्र अंकित किया गया है। सेवा-सदन में पतित जीवन की मीमांसा है। प्रेमाश्रम में सभ्य स्वार्थपरता की विवेचना की गई है। इस रंगभूमि में लेखक ने यह दिखलाने की सफल चेष्टा की है कि हम संसार में सुखी क्योंकर रह सकते हैं। इसमें राजनीतिक और औद्योगिक प्रसंगों का प्राधान्य है। कर्मक्षेत्र भी बहुत विस्तृत हो गया है। अब तक लेखक के किसी उपन्यास में ईसाइयों ने पदार्पण नहीं किया था। इसमें भारतवर्ष के तीनों प्रधान धर्मों का समावेश है। लेखक ने समाज के किसी अंग को नहीं छोड़ा—ग्रामीण भी हैं, पूँजीपति भी हैं, देश-सेवक भी हैं; सभी अपनी-अपनी महत्त्वाकांक्षा के साथ रंगभूमि में आते और अपना-अपना खेल दिखा चले जाते हैं। विद्वान्, धनी, अनुभवी, सभी श्रेणी के खिलाड़ी आपके सामने आते हैं, और सभी सुखी जीवन का रहस्य न जानने के कारण असफल होते हैं, सब ठोकर खाते और गिर पड़ते हैं, कर्तव्य से विचलित हो जाते हैं। केवल एक दीन, हीन, निर्बल, अंधा, दरिद्र प्राणी अंत तक आपको अपनी लीलाओं से मुग्ध करता रहता है, और जब उसकी लीला समाप्त हो जाती है, और वह रंगशाला से जाता है, तो आप मन में कह उठते हैं, यही सफल जीवन है, यही जीवन्मुक्त पुरुष है, यही निपुण खिलाड़ी है, यही जानता है कि जीवन-लीला का रहस्य क्या है। इसकी भाषा सरल और सरस है, वर्णन-शैली अत्यंत हृदयग्राहिणी है, भावव्यंजना बड़ी मर्मस्पर्शिनी है, और चरित्र-चित्रण, जो उपन्यास का सर्वप्रधान अंग माना गया है, इतनी सूक्ष्म दृष्टि से किया गया है कि पढ़कर लेखक के मनोवैज्ञानिक अनुभव का क़ायल होना पड़ता है। इस बृहदाकार उपन्यास के दोनों भागों का मूल्य ५), सुंदर रेशमी जिल्दों का ६)

श्रीयुत बाबू शिवप्रसाद गुप्त—श्रीप्रेमचंदजी ने यह उपन्यास लिखकर हिंदी-भाषियों को एक उत्तम वस्तु भेंट की है। इस उपन्यास में असहयोग और सत्याग्रह का महत्त्व बड़ी उत्तमता से प्रतिपादित किया गया है।

श्रीयुत बाबू संपूर्णानंद बी० एस्-सी० एल्० टी०—××× वस्तुतः यह पुस्तक प्रेमचंदजी की और पुस्तकों से बहुत अच्छी है।

संचालक गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय, अमीनाबाद पार्क, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

व्यंग्य और विनोद की अनुपम पुस्तकें

रावबहादुर

[लेखक—फ्रांस के सर्वश्रेष्ठ नाटककार मिस्टर मोलियर]

मोलियर संसार-भर में, हास्य-रस की रचना में, अपना सानी नहीं रखते। यों तो मोलियर के और भी छोटे-छोटे कई ग्रंथों का हिंदी में अनुवाद हो चुका है, कितने ही उनके आधार पर भी लिखे गए हैं, पर रावबहादुर का स्थान उन सबसे ऊँचा है। इसमें ख़िताब की लालच में मर मिटनेवाले, उपाधि के लोभ में किसी भी उपद्रव से बाज़ न आनेवाले, स्वल्प-शिक्षित पर सर्वज्ञता का दम भरनेवाले, मनचले मूर्ख—घरफूँकबहादुर—का ख़ाका ख़ासी तौर से खींचा गया है। फ्रांस, महाराष्ट्र, अवध, आगरा आदि कई देशों की नोक-झोंक, फ़ैशन, चाल-चलन, ठाट-बाट और चालाकी का मज़ा उठाना हो, तो इस पुस्तक को आरंभ कीजिए, फिर क्या मजाल कि आप उसे ख़त्म किए विना छोड़ें। जिसने हँसने की क़सम खाली हो, वह भी इसे पढ़कर खिलखिला उठेगा। बस, पुस्तक मँगाकर पढ़िए, और रावबहादुर की कारगुज़ारी पर हँसिए। मोलियर का चित्र भी है। १०० पृष्ठ की पुस्तक का मूल्य केवल ॥), सुंदर रेशमी जिल्द १)

अचलायतन

[मूल लेखक—कवींद्र रवींद्र]

अनुवादक, पं० रूपनारायणजी पांडेय कविरत्न। मूल-लेखक रवींद्र बाबू ने इसमें वर्तमान हिंदू-धर्म की छुआछूत और आडंबर की कट्टरता पर बहुत अच्छा प्रकाश डाला और उसका खंडन किया है। यह छोटा-सा नाटक पढ़ने ही योग्य है। जिन्होंने रवींद्र बाबू की रचनाओं को देखा है, वे स्वयं समझ लेंगे कि यह नाटक किस कोटि का होगा। इसके गीत भी एक-से-एक अच्छे हैं। अनुवाद भी ऐसी सरस, सरल, सुंदर भाषा में किया गया है कि यह एक स्वतंत्र रचना मालूम होती है। मूल्य ॥), सजिल्द १)

ईश्वरीय न्याय

[लेखक, अध्यापक श्रीरामदास गौड़ एम्० ए०]

यह व्यंग्य-नाटक है। गौड़जी काशी-म्युनिसिपैलिटी में शिक्षा-विभाग के अध्यक्ष रह चुके हैं। इस नाटक में आपने अत्यंत मार्मिक ढंग से दिखाया है कि अछूतों के उद्धार और राष्ट्रीय शिक्षा-सुधार में किन-किन कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है, और अछूतों के प्रति बहुत प्रेम दिखानेवाला हिंदू-सभ्य-समाज, अवसर पड़ने पर, कैसे बग़लें झाँकने लगता है। मूल्य ॥), सजिल्द १)

संचालक गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पं० बदरीनाथ भट्ट की नई पुस्तक

छप गई ! प्रकाशित हो गई !! शीघ्र मँगाइए !!!

लबड़धोंधों

भट्टजी हास्य-रस के एक अद्वितीय लेखक हैं। हास्य-रस के इनके लेख अपनी विशेषता रखते हैं। कहने की आवश्यकता नहीं कि वे कैसी सभ्य, सुंदर, सरल, सरस और चुटीली भाषा में लिखे होते हैं, मनोरंजन के साथ-साथ शिक्षा-प्रद भी इतने कि छोटे-बड़े सभी उन्हें पढ़कर लाभ और आनंद उठा सकते हैं। जिसने हँसने और पढ़ने की क़सम ले ली हो, वह भी इस पुस्तक को हाथ में लेकर समाप्त किए बिना नहीं छोड़ेगा, और क्या मजाल कि जो वह हँसते-हँसते लोटन-कबूतर न हो जाय। कई रंगीन और सादे चित्रों से सुसज्जित पुस्तक का मूल्य ॥।=), जिल्ददार १।=)

मिलने का पता—

संचालक गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकाशित हो गई ! शीघ्रता कीजिए !! खूब बिक रही है !!!

हास्य-रस की अपने ढंग की निराली पुस्तक

विवाह-विज्ञापन

[लेखक—पं० बदरीनाथ भट्ट बी० ए०]

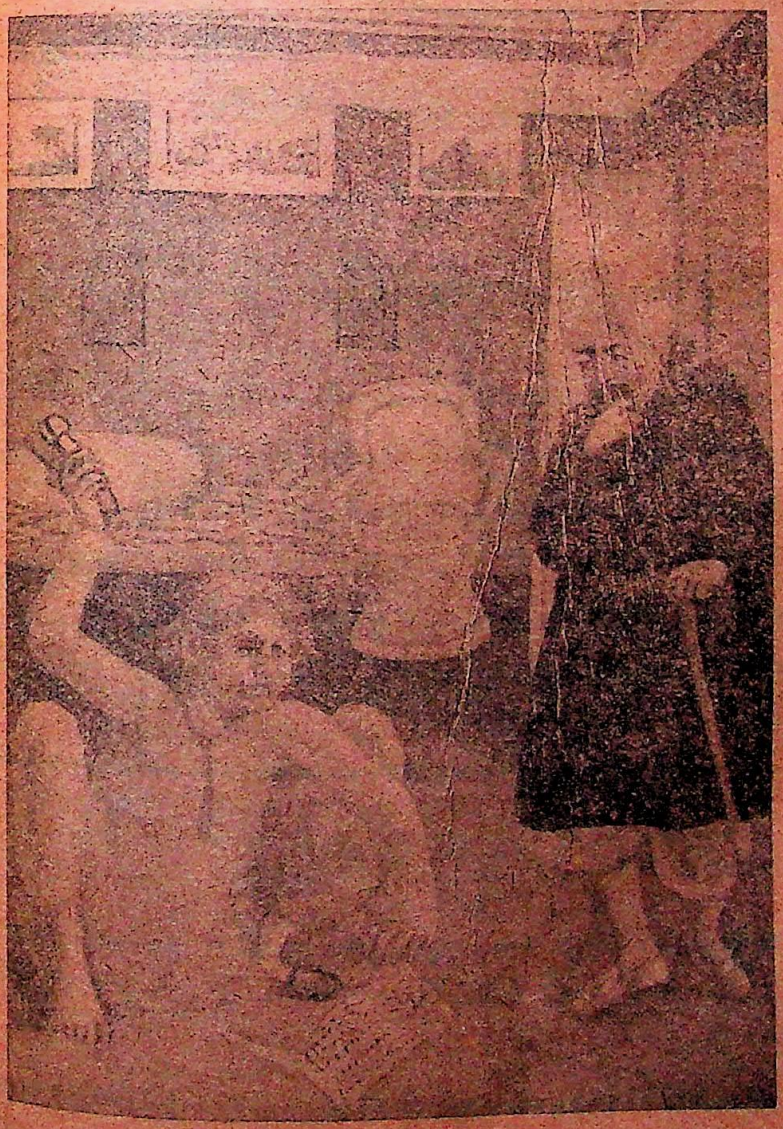

भट्टजी हास्य-रस के सिद्ध-हस्त लेखक हैं। आप ही की कुशल लेखनी का यह चमत्कार है। पढ़ते-पढ़ते आप लोट-पोट हो जायँगे। पुस्तक में दो तिरंगे और चार सादे चित्र भी हैं। लेखक और चित्रकार, दोनों की कारीगरी एक साथ इस पुस्तक में देखने को मिलती है। मूल्य १), सजिल्द १।।)

मिलने का पता—संचालक गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय, लखनऊ

CC-0. Public Domain. Gurukul Kangri Vishwavidyalaya, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

व्यंग्य और विनोद की विचित्र पुस्तकें

ऊ ल ज लू ल शीघ्र प्रकाशित होगा

मूर्ख-मंडली

[पाँचवाँ संस्करण]

(लेखक—पं० रूपनारायण पांडेय)

स्वर्गीय श्रीद्विजेंद्रलाल राय के अत्यंत मनोरंजक और सभ्य हास्य-रस-पूर्ण प्रहसन के आधार पर इसकी रचना की गई है। इसे पढ़कर मारे हँसी के आप लोट-पोट हो जायँगे। हम दावे के साथ कहते हैं कि इससे बढ़कर मनोरंजक प्रहसन आपने हिंदी में न पढ़ा होगा। सभी हिंदी-पत्रों और विद्वानों ने इसकी प्रशंसा मुक्तकंठ से की है। पंचमावृत्ति। मूल्य ॥=); सजिल्द १=)

वि वा ह वि ज्ञा प न शीघ्र प्रकाशित होगा

प्रायश्चित्त-प्रहसन

'सुधा'-संपादक पं० रूपनारायण पांडेय कविरत्न-लिखित। देशी होकर भी विदेशी चाल चलनेवालों का इसमें खूब ही ख़ाका खींचा गया है। पढ़कर हँसते-हँसते पेट में बल पड़ने लगेंगे। बड़ा ही सभ्य हास्य-रस-पूर्ण प्रहसन है। मूल्य ।)

गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय, लखनऊ

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सर्वश्रेष्ठ पत्रिका क्यों है ?

इसका कारण ढूँढ़ने दूर नहीं जाना पड़ेगा। किसी बड़े स्टेशन पर, ह्वीलरके बुकस्टाल पर, या अपने शहर या गाँव की किसी लाइब्रेरी में जाकर सुधा की कोई भी संख्या उठाकर आप देखेंगे, तो आपको मालूम हो जायगा—

ही हिंदी की सर्वोत्तम पत्रिका है।

क्योंकि

सुधा—साहित्य और कला की अभूतपूर्व प्रदर्शिनी है।
सुधा—के सभी लेख मौलिक और सुप्रसिद्ध विद्वानों के लिखे होते हैं।
सुधा—में सभी विषयों पर उत्तमोत्तम लेख निकलते हैं।
सुधा—ही बराबर ललितकला पर लेख निकालती है। जैसा कि हिंदी की किसी पत्रिका में नहीं होता।
सुधा—का प्रत्यक चित्र भावपूर्ण मनोहर और कला की दृष्टि से उत्तम होता है।
सुधा—में मोटाई बढ़ाने को भर्ती के लेख और चित्र नहीं दिए जाते।
सुधा—के कार्टून सामयिक और व्यंग्यपूर्ण होते हैं।
सुधा—काग़ज़, छपाई, रूप-रंग, गेट अप आदि में आदर्श है।
सुधा—हिंदुस्तान के कोने-कोने और प्रत्येक गाँव में पढ़ी जाती है।
सुधा—हिंदुस्तान के बाहर सभी मुल्कों में सुधा पढ़ी जाती है।
सुधा—विज्ञापन का सबसे अच्छा साधन है।
सुधा—को सभी विद्वानों और कलाकारों ने सर्वश्रेष्ठ बताया है।
सुधा—ही एक ऐसी पत्रिका है जो अँगरेज़ी की पत्रिकाओं से टक्कर ले सकती है।
सुधा—का प्रत्येक अंक स्थायी साहित्य की सर्वोत्तम सामग्री है।
सुधा—पहली ही संख्या से ७२०० छपती, जैसा सौभाग्य हिंदी की किसी भी पत्रिका को आजतक प्राप्त नहीं हुआ है।

अगर आप अभी तक सुधा के ग्राहक न हुए हों, तो शीघ्र ६॥) मनीआर्डर भेजकर ग्राहक हो जाइए। विलंब मत कीजिए। नहीं, तो इसके पिछले अंक फिर दुर्लभ हो जायँगे।

मैनेजर सुधा, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
Registered No. A. 1712.

हिंदी-संसार में

सुधा की अभूतपूर्व सफलता !

केवल ४-५ मास में ही

७२०० छपने लगी !!

इसी ख़ुशी में

५०० ग्राहक मुफ्त बनाए जायँगे !!!

हिंदी-संसार ने सुधा को जिस तेज़ी से अपनाया है, वैसा सौभाग्य आज तक किसी भी हिंदी-पत्रिका को प्राप्त नहीं हुआ। किंतु हमारे पास ऐसे ढेरों पत्र आ रहे हैं, जिनसे मालूम पड़ रहा है कि सुधा के हज़ारों प्रेमी उसके रसास्वादन से, किसी कारण, वंचित हैं। अतः उनके लिये हमने निश्चय किया है कि वे—

हमारी प्रकाशित

८) की पुस्तकें ख़रीद लें,

तो

हम उन्हें सुधा का

छमाही ग्राहक मुफ्त बना लेंगे।

यह रियायत पहले आए हुए ५०० ग्राहकों के साथ ही की जायगी। अवसर न चूकिए। लाभ उठाइए! 'सुधा' का मुफ्त पान कीजिए !!! अपनी पुस्तकों की लिस्ट हमने अंदर, रंगीन कागज़ पर, रीडिंग मैटर के बीच में, दी है।

अध्यक्ष सुधा और गंगा-पुस्तकमाला, लखनऊ

प्रकाशक—श्रीदुलारेलाल भार्गव, अध्यक्ष गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय, लखनऊ
मुद्रक—श्रीदुलारेलाल भार्गव, अध्यक्ष गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय, लखनऊ
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आर्डर भेजिए ! शीघ्रता कीजिए !! तुरंत मँगाइए !!!

ख़ास रियायत

सुधा के

सुंदर सुनहरी रेशमी जिल्दवाले

१ से ६ तक की संख्याओं के सजिल्द सेट तैयार हो गए !

मूल्य में ख़ास कमी

अवसर न चूकिए !

१ से ६ तक की संख्याओं के सेट बड़े ही मनमोहक, रेशमी जिल्द सुवर्णाक्षरों से अंकित मूल्य प्रति सेट ४॥) डाक-व्यय-सहित, किंतु सुधा के जो ग्राहक माघ से बने हैं—उनसे ३) ही लिया जायगा। आज ही पत्र भेजकर मँगाइए। अन्यथा बिक जाने पर फिर न मिलेंगे। सुधा के ऐसे ग्राहक जो श्रावण मास से नहीं बने हैं—उन्हें भी ये सेट ३) में दिए जायँगे। लेखों की दृष्टि से ये संख्याएँ बड़ी महत्त्वपूर्ण हैं। इन अंकों की इतनी अधिक माँग आई थी कि हमें उनके २-२ संस्करण निकालने पड़े।

मैनेजर, सुधा

एक हज़ार पौंड इनाम !

यदि कोई विज्ञापनदाता अपने "कोकशास्त्र कशमीरी" को स्वर्गवासी श्रीपंडित कोकाजी महामंत्री महाराजा कशमीर-रचित असली साबित कर दें। अन्यथा किसी पत्र-संपादक अथवा बैंक में १५ हज़ार तो नहीं, केवल १०० जमा करा दें। हम अपनी पुस्तक को असली साबित करते हैं।

सचित्र ! [श्रीमान् कोका पंडित-रचित का हिंदी-अनुवाद] पुराना !!!

(असली कशमिरी कामशास्त्र अर्थात् कोकशास्त्र)

कशमिरी कोकशास्त्र

पद्मिनी, चित्रिणी, शंखिनी, हस्तिनी, और शशक, वृषभ, मृग, अश्व

इन चारों प्रकार की स्त्री तथा पुरुषों की पहिचान। उनका वर्णन, स्त्री को आयु-भर स्वस्थ, सुंदर, सौंदर्य अर्थात् हुस्नो इश्क़ की देवी बनाए रहना। मनचाही सुंदर बलिष्ठ संतान उत्पन्न करना, गर्भ में पुत्र-पुत्री की पहिचान। स्त्री-पुरुष के जोड़े-जोड़ी का मिलान। संतान उत्पन्न न होती हो तो ज़रूर हो। स्वयं पूरे सौ वर्ष तक हृष्ट-पुष्ट सुंदर और स्वस्थ बने रहना। कुमारी-भेद और लक्षण-प्रेम-प्रीति स्त्री-पुरुष का पारस्परिक संबंध स्त्रियों का रजोदर्शन, ऋतु और उसका सामयिक प्रभाव, सहवास-विलासियों के लिये सहवास के नियम। गर्भाधान*चौरासी आसन*गर्भ-परीक्षा, गर्भोत्पत्ति, गर्भ-वृद्धि, प्रसव और शिशुपालन, स्त्रियों के शृंगार, उनके संबंध में समस्त यौवन-वर्द्धक, आनंद-दायक मसाले। स्त्री-पुरुषों के कोकशास्त्र-संबंधी गुप्त रोग और उनका अद्भुत इलाज। कामोपदायक औषधियाँ तथा मसाले। वशीकरण, स्त्री-पुरुषों की चौरासी रंग-बिरंगी तसवीरें, तथा आसनों के दिलचस्प हाल दर्ज हैं। क़ीमत केवल ३)

पता—श्रीगोकुलपुरी भवन, नं० १२, लुधियाना (पंजाब)

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिंदुस्थान का मशहूर

पापुलर फ्लुट हारमोनियम

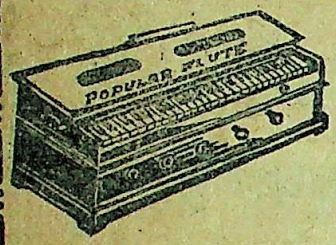

सागौन लकड़ी का बना है और हिंदुस्थान की आबहवा के लिये एकमात्र उपयोगी। गारंटी ३ साल। नापसंद होने से बदल देते हैं।

जर्मनरीड लगे हुए सिंगलरीड—२०) २२) २४)
नैरिसरीड ,, ,, ,, ,,—२६) २८) ३२)
जर्मनरीड ,, ,, डबलरीड—३०) ३२) ३५)
पैरिसरीड ,, ,, ,, ,,—४२) ४४) ४७)

आर्डर के साथ ५) पेशगी—

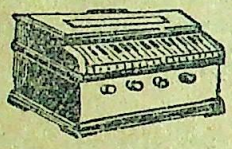

और अपने निकट के स्टेशन का नाम लिखिए।

प्रोप्राइटर पि०एन्०पाल

पापुलर हारमोनियम कं०

पोस्ट बक्स नं० १२ (सु) कलकत्ता।

समाज की वेदी

छोटा किंतु अत्यंत आकर्षक उपन्यास

इसमें सामाजिक पतन के रहस्य का संक्षेप में उद्घाटन किया है। प्रेम और ज्ञान के रोमांचकारी द्वंद्व का ख़ासा चित्र खींचा गया है। नवयुवक अपनी प्रेम-यात्रा में किस प्रकार यौवनमद रूपी लुटेरे से अपनी सर्वोत्तम वस्तु की लूट करा लेते हैं और प्राणों तक से भी हाथ धो बैठते हैं रोचक भाषा में वर्णित है। इस पुस्तक को पढ़कर हिंदू-समाज यदि आँखें न खोलेगा तो निकट भविष्य में उसे उसी अशांति का मुक़ाबला करना पड़ेगा जिसका पाश्चात्य समाज आजकल कर रहा है। इसकी कहानी में मर्मभेदी कई ऐसी बातें हैं जिन्हें पढ़ते से पाठकों के मन में अपने हृदय टटोलने की आकांक्षा उत्पन्न होती है। मूल्य ॥)

पता—पी० डी० शास्त्री C/o संस्कृत प्रोफ़ेसर
कॉलेज, (सु) अमरावती।

हिंदी-साहित्य में एक महत्त्व-पूर्ण नई पुस्तक

भाषा-विज्ञान

लेखक

कलकत्ता-विश्वविद्यालय के हिंदी भाषा तथा साहित्य के अध्यापक और बंगाल-प्रांत के विद्यालयों के भूतपूर्व परिदर्शक

श्रीयुक्त नलिनीमोहन सान्याल, "मोहन"
भाषा-तत्त्व-रत्न, एम्० ए०

इस मौलिक ग्रंथ में योरपीय तथा भारतीय दोनों मतों का उपयोग किया गया है। पुस्तक पढ़ने से भिन्न-भिन्न भाषाओं के स्वरूप तथा संबंध का ज्ञान होता है। इसमें भाषा की उत्पत्ति, लक्षण, परिवर्तन, विकास, ध्वनि तथा शब्दार्थ तत्त्व इत्यादि की आलोचना है।

मूल्य कपड़े की जिल्द ३)
काग़ज़ की जिल्द २॥)

प्राप्ति-स्थान

गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय, लखनऊ

फ़क़त एक मास के लिये

लीवर रिस्ट वाच

क़ीमत रु० ८) फ़क़त

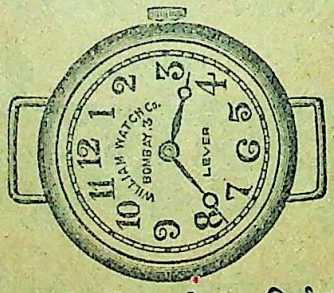

Price Rs. 8 only.

लिखित गारंटी पाँच वर्ष की। सिर्फ़ एक मख़मल, लेदर और रेशम का पट्टा मुफ़्त। एक रिस्टवाच के ख़रीदार को एक जरमन बो० टाइमपीस भेंट, पोस्टेज ८ आने अलग। एकीसाथ दो रिस्टवाच के ख़रीदार को एक फ़ैंसी पाकेट वाच भेंट, पोस्टेज ८ आने अलग। एकीसाथ तीन रिस्टवाच लेनेवाले को एक फ़ोनोग्राफ़ भेंट, पोस्टेज रु० २) अलग। फ़क़त ५००० वाच स्टाक में हैं, जल्दी आर्डर भेजना।

दी विलियम वाच कंपनी ;(S)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रोग शत्रु पर विजय का डंका

हिन्दुस्तान और विदेशों की रिपोर्ट से साबित

❀ सरकार से रजिस्टर्ड ❀

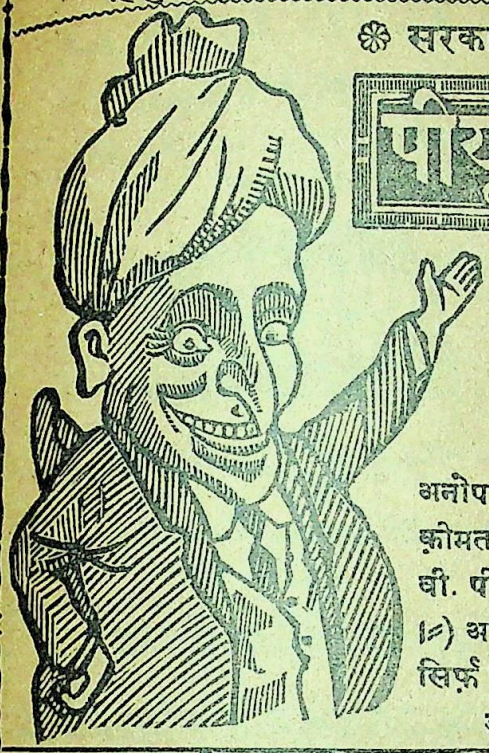

पीयूषसिन्धु

कफ, खांसी, हैज़ा, दमा पोंचश, पेटदर्द, नज़ला बुख़ार, बालकोंके हरे पीले दस्त, आदि रोगों की स्वादिष्ट और बिना अनोपान की अचूक दवा है। क़ीमत फ़ी शीशी ॥) आठ आ. वी. पी. ख़रच एक से ३ तक ।≈) आना १२ शीशी का दाम सिर्फ़ ४≈) चार रु. तीन आना डांक ख़रच माफ़

हाय! खुजाते खुजाते मर चले

तो हम क्या करें हमने तो पहिले ही कहा था कि दादपर 'दादका काल' लगादो वरना रोओगे।

दाद का काल

पुरानेसे पुराने व कठिनसे कठिन दादको बिना किसी कष्ट व जलन के २४ घंटे में जड़से खोनेवाली मशहूर दवा है क़ी. फ़ी शी. ।) ख़र्च १से३ तक ।≈) १२ शी.का मू. १॥।-) ख़र्च माफ़

पता ☛ सुन्दर शृङ्गार महौषधालय मथुरा।

आवश्यक सूचना

श्रीराष्ट्रीय विद्या-भवन तथा सरस्वती-सम्मेलन, आगरा की व्याकरण, साहित्य, ज्योतिष्, आयुर्वेद और हिंदी-साहित्य तथा धर्म-संबंधी परीक्षाएँ २३ मार्च सन् १९२८ ई० से होंगी। प्रथमादि में उत्तीर्ण छात्रों को क्रमशः तत्तद्विषयक उपाध्याय, शास्त्री और आचार्य उपाधि प्रदान की जायगी। हिंदी में क्रमशः साहित्य-भूषण, रत्न व निधि और धार्मिक परीक्षोत्तीर्णों को धर्म-विशारद उपाधियाँ दी जावेंगी। प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण छात्रों को पदक प्रदान किए जावेंगे। जिन अध्यापकों के सात से अधिक छात्र उत्तीर्ण होंगे वे भी पदकादि से सम्मानित किए जावेंगे। नवीन केंद्र सात परीक्षार्थी होने पर हो सकेगा। आवेदनपत्र सशुल्क २० फ़रवरी तक आ जाने चाहिए। नियमावली तथा आवेदनपत्र -) टिकट आने पर भेज दिए जावेंगे।

विनीत—

जगन्नाथप्रसाद मंत्री

श्रीराष्ट्रीय विद्या-भवन, आगरा

सीधी लाइन की सादी मुहर (केवल अक्षरों की २ लाइनें, २ इंच लंबी, और आधा इंच चौड़ी तक) छापने का सामान-सहित। मूल्य १), डाक-ख़र्च ।≈) ; बड़ी होने से दाम अधिक होगा। हिंदी, अँगरेज़ी, उर्दू तथा बँगला, कोई भाषा हो। अंडाकार मुहर, जैसा ऊपर नमूना है, २॥) मय सामान। डाक-ख़र्च एक मुहर ।≈), दो का ॥) और तीन का ॥≈); काम देखकर खुश होंगे।

पता—जी० सी० खत्री, रबर-स्टांप-मेकर

(सु) बनारस (सिटी)

CC-0. In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नोटिस निस्बत दिखाने वजह के नमूना आम

बअदालत जनाब सब जज साहब बहादुर खीरी मुक़ाम लखीमपूर।

मुक़द्दमा नंबर २११ सन् १९२७ इजराय दीवानी

मदनमोहन ब्राह्मण साकिन मुहल्ला शतरंजी मुहाल शहर कानपूर— डिगरीदार

बनाम बनवारीलाल वग़ैरा

(१) प्रागदत्त (२) बनवारीलाल (३) मनीलाल (४) परमेश्वरीदयाल पिसरान लालबिहारीलाल ब्राह्मण साकिन क़स्बा महम्दी परगना महम्दी ज़िला खीरी (५) विशनूदयाल (६) जंगबहादुर पिसरान रामनाथ क़ौम ब्राह्मण साकिन शाहजहाँपूर मुहल्ला फ़तहपूर परगना व ज़िला शाहजहाँपूर मदयूनान

हरगाह मुसम्मा डिगरीदार ने दरख़्वास्त इस अदालत में गुज़रानी है कि डिगरीदारान ने दरख़्वास्त क़ुरक़ी डिगरी नंबरी ९२ इजलास जनाब सबजज साहब बहादुर खीरी मुसदवरा २६ जनवरी सन् १९२५ बउनवान लालबिहारीलाल बनवारीलाल डिगरीदारान बनाम जंगबहादुर वग़ैरा क़ुर्क़ कराई है लिहाज़ा जो कुछ उज़्र हो तारीख़ मुअय्यना पर आकर पेश करो। लिहाज़ा तुमको इत्तिला दी जाती है कि तुम असालतन या मारफ़त किसी वकील के जो हालात मुक़द्दमा से बख़ूबी वाक़िफ़ हो समय १० बजे तारीख़ ३ फ़रवरी सन् १९२८ इस अदालत में हाज़िर होकर दरख़्वास्त के ख़िलाफ़ वजह दिखाओ। अगर ऐसा न करोगे तो दरख़्वास्त मज़कूर तुम्हारी ग़ैरहाज़िरी में समाअत की जावेगी।

बतारीख़ १३ जनवरी सन् १९२८ मेरे दस्तख़त और मुहर अदालत से जारी किया गया।

बहुक्म
द० नामालूम
मंसरिम

बहुक्म ठाकुरलाल भगवतीदयालसिंह एम्० ए० एल्-एल्० बी० मुंसिफ़ पीलीभीत।

सम्मन वास्ते क़रारदाद उमूर तनक़ीह तलब

(आर्डर ५ क़ायदा १ व ५)

नंबर मुक़द्दमा २७४ सन् १९२७

बअदालत मुंसफ़ी ज़िला पीलीभीत

छिद्दू व कुंदन पिसरान परमाई व फुलू व रूपी पिसरान कुंदन क़ौम कुरमी साकिनान मौज़ा कनगाँवाँ परगना बीसलपुर ज़िला पीलीभीत मुद्दई बनाम गौरी वल्द निता क़ौम कुरमी साकिन मौज़ा कनगाँवाँ परगना बीसलपुर ज़िला पीलीभीत मुद्दाअलेह

हरगाह कि मुद्दई ने तुम्हारे नाम एक नालिश बाबत ५००) के दायर की है लिहाज़ा तुमको हुक्म होता है कि तुम बतारीख़ १७ माह फ़रवरी सन् १९२८ ईसवी बवक़्त १०½ बजे दिन के असालतन या मार्फ़त वकील के जो मुक़द्दमा के हालात से क़रार वाक़ई वाक़िफ़ किया गया हो और कुल अमूरात अहम मुतअल्लिक़ै मुक़द्दमा का जवाब दे सके या जिसके साथ कोई और शख़्स हो कि जवाब ऐसे सवालात का दे सके हाज़िर हो और जवाबदिही दावा की करो और तुमको लाज़िम है कि उसी रोज़ जुमला दस्तावेज़ात पेश करो जिन पर तुम बताईद अपनी जवाबदिही के इस्तदलाल करना चाहते हो।

तुमको इत्तला दी जाती है कि अगर बरोज़ मज़कूर तुम हाज़िर न होगे तो मुक़द्दमा बग़ैर हाज़िरी तुम्हारे मस्मू और फ़ैसल होगा।

बसन्त मेरे दस्तख़त और मोहर अदालत के आज बतारीख़ २१ माह जनवरी सन् १९२८ ई० जारी किया गया।

बहुक्म
भगवानदीन शुक्ल
मुंसरिम

सम्मन वास्ते क़रारदाद उमूर तनक़ीह तलब

(आर्डर ५—क़ायदा १, ५)

नंबर मुक़द्दमा ६३० सन् १९२८

अदालत मुंसफ़ी ग़र्बी ज़िला इलाहाबाद

इजलास बाबू अंबिकाप्रसाद श्रीवास्तव मुंसिफ़ ग़र्बी इलाहाबाद।

फ़र्म रामरतन रामगोपाल बज़रिया मुसम्मात राजदुलारी देवी साकिन कर्नैलगंज ज़िला कानपूर

बनाम (१) मुसम्मात मुन्नो बीबी दुख़्तर बदरीप्रसाद ज़ौजा रामलाल (२) मुसम्मात पिरभतो बेवह भोलानाथ

इंदाम अग्रवाला साकिन किशुनपूर परगना यकज़ला ज़िला फ़तहपूर बर दूकान रामगोपाल भारतयलाल मुद्दाअलेह

हरगाह मुद्दई ने तुम्हारे नाम एक नालिश बाबत इस्तक़रार के दायर की है लिहाज़ा तुमको हुक्म होता है कि तुम बतारीख़ ४ माह फ़रवरी सन् १९२८ समय १० बजे दिन के असालतन या मारफ़त वकील के जो मुक़द्दमा के हालात से क़रार वाक़ई वाक़िफ़ किया गया हो और कुल अमूरात अहम मुतअल्लिक़ा मुक़द्दमा का जवाब दे सके या जिसके साथ कोई और आदमी हो कि जवाब ऐसे सवालात का दे सके हाज़िर हो और जवाबदिही दावा की करो और तुमको लाज़िम है कि उसी रोज़ जुमला दस्तावेज़ात पेश करो जिन पर तुम बताईद अपने जवाबदिही के इस्तदलाल करना चाहते हो।

तुमको इत्तिला दीजाती है कि अगर बरोज़ मज़कूर तुम हाज़िर न होगे तो मुक़द्दमा बग़ैर हाज़िरी तुम्हारे मस्मू और फ़ैसल होगा।

यह सबत मेरे दस्तख़त और मुहर अदालत के आज बतारीख़ १३ माह जनवरी सन् १९२८ जारी किया गया।

बहुक्म
द० नामालूम
मुंसरिम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्मन बिनावर इनफ़िसाल मुक़दमा
(आर्डर ५ क़ायदा १, ५)

नम्बर २०७ सन् १९२७
ब अदालत जज ख़फ़ीफ़ा बाँदा ज़िला बाँदा
रघुराजसिंह मुद्दई
बनाम पुन्ना
पुन्ना वल्द बदलवा क़ौम चमार साकिन गड़रियन का पुरवा मजरा बांकी परगना सुमेरपुर ज़िला हमीरपुर मुद्दालेह

हरगाह कि मुद्दई ने तुम्हारे नाम एक नालिश बाबत १२५) के दायर की है। लिहाजा तुमको हुक्म होता है कि तुम बतारीख ३१ माह जनवरी सन् १९२८ ई० समय १० बजे दिन के असालतन या मारफ़त वकील के जो मुक़द्दमा क हालात से करार वाक़ई वाक़िफ़ किया गया हो और जो कुल उमूर अहम मुतअल्लिक़ा मुकदमा का जवाब दे सके या जिसके साथ कोई और आदमी हो कि जवाब ऐसे सवालात का दे सके हाज़िर हो और जवाबदिही दावा की करो। और हरगाह वही तारीख़ जो तुम्हारे अहज़ार के लिये मुक़र्रर है वास्ते इनफ़िसाल क़तई मुक़दमा के तजवीज हुई है पस तुमको लाजिम है कि उसी रोज़ अपने जुमला गवाहों को जिनकी शहादत पर नीज़ तमाम दस्तावेज़ात जिन पर तुम अपनी जवाबदिही के ताईद में इस्तदलाल करना चाहते हो उसी रोज़ पेश करो। तुमको इत्तिला दी जाती हु कि अगर बरोज़ मज़कूर तुम हाज़िर न होगे तो मुक़द्दमा बग़ैर हाज़री तुम्हारे मस्मू और फ़ैसल होगा।

यह सब्त मेरे दस्तख़त और मुहर अदालत के आज बतारीख़ ९ माह जनवरी सन् १९२८ जारी किया गया।

बहुक्म द० नामालूम मुंसरिम

इजलास बाबू छैलबिहारीलाल माथुर साहेब बहादुर एम्० ए० एल० एल० बी० मुंसिफ़ रसड़ा (बलिया)
[बदस्त अवाम फ़रोख़्त के लिये]
सम्मन बग़रज़ इनफ़िसाल मुक़दमा
(आर्डर ५ क़ायदा १ व ५ मज़मुआ ज़ाबिता दीवानी सन् १९०८ ई०)

नंबर मुक़दमा ७२६ सन् १९२७
बअदालत मुंसफ़ी रसड़ा ज़िला बलिया
बाबू कामताप्रसाद उमर तख़मीनन ४५ बरस व बाबू गिरजाप्रसाद उमर तख़मीनन ४२ बरस पिसरान बाबू गोविंदप्रसाद मुतवफ़्फ़ी सा० क़सबा रसड़ा परगना लखनेसर— मुद्दई
बनाम बलदेवराय उमर तख़मीनन ३५ बरस पिसर शिवबरनराय मुतवफ़्फ़ी क़ौम क्षत्री सा० मौज़ा जगभानपुर परगना भदायँ मुद्दाअलेह

वाज़ेह हो कि मुद्दई ने तुम्हारे नाम एक नालिश बाबत मुबलिग़ ३४॥) के दायर की है लिहाज़ा तुमको हुक्म होता है कि तुम बतारीख़ २७ माह फ़रवरी सन् १९२८ ई० वक्त १० बजे मुक़ाम मुंसफ़ी रसड़ा असालतन या मार्फ़त वकील के जो मुक़द्दमा के हालात से क़रार वाक़ई वाक़िफ़ किया गया हो और जो कुल उमूर अहम मुतालिक़ा मुक़द्दमा का जवाब दे सके या जिसके साथ कोई और शख़्स हो कि जबाब ऐसे सवालात का देसके हाज़िर हो और जवाबदिही दावा की करो—और हरगाह वही तारीख़ जो तुम्हारी हाज़िरी के लिये मुक़र्रर है वास्ते इनफ़िसाल क़तई मुक़द्दमा के तजवीज़ हुई है। पस तुमको लाज़िम है कि उसी रोज़ अपने जुमला गवाहों को जिनकी शहादत पर नीज़ जुमला दस्तावेज़ात जिन पर तुम बताईद अपनी जवाबदिही के इस्तदलाल करना चाहते हो उसी रोज़ पेश करो।

और तुमको इत्तिला दी जाती है कि अगर बरोज़ मज़कूर तुम हाज़िर न होगे तो मुक़द्दमा बग़ैर हाज़िरी तुम्हारे मस्मू और फ़ैसल होगा।

बसब्त मेरे दस्तख़त और मुहर अदालत के आज बतारीख़ २६ माह जनवरी सन् १९२८ ई० जारी किया गया।

बहुक्म

[बदस्त अवाम फ़रोख़्त के लिये
समन बग़रज़ इनफ़िसाल मुक़दमा
(आर्डर ५ क़वायद १ व ५ मजमूआ ज़ाबिता दीवानी सन् १९०८ ई०)

ब इजलास बाबू छैलबिहारीलाल माथुर साहेब बहादुर एम्० ए० एल० एल० बी० मुनसिफ़, रसड़ा (बलिया)
नंबर मुक़दमा ६६७ सन् १९२७
बअदालत दीवानी मुनसफी मुक़ाम रसड़ा ज़िला बलिया फ़र्म मनोहरदास सुखदेवप्रसाद वाक़ः क़सबा रसड़ा जि० बलिया मुद्दई
बनाम परगनसिंह पिसर छांगुरसिंह साकिन बहरा ुर परगना मोहम्मदाबाद गोहना ज़ि० आजमगढ़ मुद्दाअलेह

वाज़ेह हो कि फ़र्म मुद्दई ने तुम्हारे नाम एक नालिश बाबत मुबलिग़ ३९१।-)॥ के दायर की है लिहाज़ा तुमको हुक्म होता है कि तुम बतारीख़ २९ माह फ़रवरी सन् १९२८ ई० वक्त १० बजे बमुक़ाम मुनसफी रसड़ा असालतन या मार्फ़त वकील के जो मुक़द्दमा के हालात से क़रार वाक़ई वाक़िफ़ किया गया हो और जो कुल उमूर अहमम्मुतअल्लिक़ा मुक़द्दमा का जवाब दे सके या जिसके साथ कोई और शख़्स हो कि जवाब ऐसे सवालात का दे सके हाज़िर हो और जवाबदिही दावा की करो—और हरगाह वही तारीख़ जो तुम्हारी हाज़िरी के लिये मुक़र्रर है वास्ते इनफ़िसाल क़तई मुक़द्दमा के तज़वीज़ हुई है पस तुमको लाज़िम है कि उसी रोज़ अपने जुमला गवाहों को जिनकी शहादत पर नीज़ जुमला दस्तावेज़ात जिन पर तुम बताईद अपनी जवाबदिही के इस्तदलाल करना चाहते हो उसी रोज़ पेश करो।

और तुमको इत्तिला दी जाती है कि अगर बरोज़ मज़कूर तुम हाज़िर न होगे तो मुक़द्दमा बगैर हाज़िरी तुम्हारे मसमू और फैसल होगा।

बसब्त मेरे दस्तख़त और मुहर अदालत के आज बतारीख़ २६ माह जनवरी सन् १९२८ ई० जारी किया गया।

दस्तख़त नंदकिशोरलाल
मुंसरिम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

स्त्रियोपयोगी सुंदर, सचित्र और सरल पुस्तकें

यदि आप संसार
का
सच्चा सुख
लूटना चाहते हैं
तो
अपनी गृह-देवियों
को
अवश्य उचित
शिक्षा दें और
सरल, सुंदर साहित्य की
ये
उपयोगी पुस्तकें
उन्हें पढ़ने को दें।

महिलामाला की महीरमणियाँ

भारत की विदुषी नारियाँ	मूल्य ॥)
नारी-उपदेश	मूल्य ॥)
वनिता-विलास	मूल्य ॥)
जच्चा	मूल्य ॥=)
पत्रांजलि	मूल्य ॥)
गुप्त संदेश	मूल्य १=)
महिला-मोद	मूल्य ॥)
भारतीय स्त्रियाँ	मूल्य १॥)
लक्ष्मी	मूल्य ॥=)
देवी पार्वती	मूल्य १)
देवी द्रौपदी	मूल्य ॥)
कमला-कुसुम	मूल्य १)

मिलने का पता—**गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय, लखनऊ**

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिंदुस्थान-भर को आपके

माल

की ज़रूरत है।

१०,००० एजेंट आपका माल लेने और बेचने को तैयार है।

कैसे ?

मैनेजर 'सुधा', लखनऊ से पूछिए।

शक्तिका ख़ज़ाना यानी धातु पुष्टिके लिये

मदनमंजरी गोलियां

यह दिव्य गोलियां दस्त साफ़ लाती है, पेशाब और स्वप्नमें जाते वीर्य्यको बन्द करके वीर्य्य पुष्ट करती हैं, और प्रत्येक प्रकारकी कमज़ोरीको नष्ट करके अटूट बल और नया जीवन देती हैं। क़ीमत ४० गोलीकी डिब्बी १) रु०

रमण विलासिनी वटिका।

स्थम्भन करनेवाली अक्सीर दवा। फ़ी डिब्बी १) रु० मू. की डि. १) नपुंसकतारि घृत। मू. फ़ी डि. १) पुरुषके गुह्य भागकी प्रत्येक प्रकारकी कमज़ोरी यह लेप लगानेसे नष्ट होकर सच्चा पुरुषत्व प्राप्त होता है। राजवैद्य नारायणजी शिवजी, १७७, हरिसन रोड, कलकत्ता। प्रत्येक शहरके लिये एजेंटकी ज़रूरत है। नियम बहुत आसान है।

एजेंटः—निगम मेडिकल हाल
फ़तेहगंज
लखनऊ

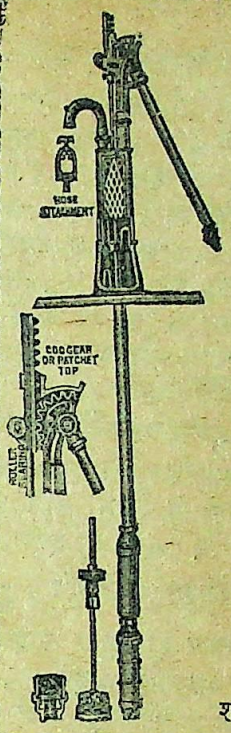

सभी एकमत हैं
कि
मायर्स के पंप सबसे
अच्छे हैं।
छोटे दस बरस के बच्चे भी २०० फ़ुट गहराई का जल आसानी से उठाते हैं।
मायर्स के
हर क़िस्म के पंपों का स्टाक मौजूद है।
अपनी ज़रूरत लिखिए। भारत के सोल एजेंट—
दि लिमये ब्रादर्स लिमिटेड
नं० ५ पोलक स्ट्रीट,
पो० ब० नं० २०८५, कलकत्ता,
शाखाएँ बंबई, कराँची और मद्रास।

साइकिल

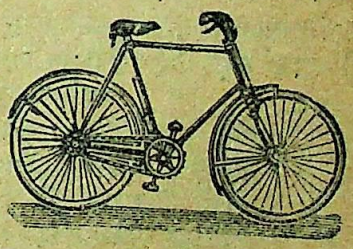

हर क़िस्म का हमारे यहाँ सुभीता में मिलेगा।
दि कलकत्ता मोटर साइकिल कंपनी
११।३ लालबाज़ार स्ट्रीट, कलकत्ता

SELECTIONS FROM HINDI LITERATURE
BY
RAI BAHADUR LALA SITA RAM, B. A.,
PRICE Rs. 30
To be had of-
GANGA PUSTAKMALA KARYALAVA,
LUCKNOW.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आयुर्वेदिक रत्न ! आराम न होने से दाम वापस

मदनानंद गुटिका (बलवीर्य-वर्द्धक)—इसके सेवन से स्वप्न-दोष, धातुक्षीणता, बिगड़ा हुआ वीर्य, मलमूत्र परित्याग करते समय वीर्य पतन होना और नपुंसकता आदि दूर होती है। मदनानंद आनंददायक, शक्ति-वर्द्धक, बल-वर्द्धक तथा वीर्य-संबंधी सब रोगों का मूल नाशक है। शरीर को पुष्ट करता, बल-वीर्यकारक, स्वस्थ जीवन प्रदान करनेवाला है। पानी के समान पतले वीर्य को पत्थर के समान बना देता है। नामर्दी की यह परम प्रसिद्ध औषधि है। जिन लोगों ने अपनी युवा अवस्था को मिट्टी में मिला दिया हो, धातु-रोगों से पीछा नहीं छूटता हो, व जवानी में बुढ़ापे की-सी हालत हो गई हो, उनके सब रोगों को नाश कर शरीर का रंग लाल-सा बना देता है। तेज और कांति बढ़ाकर दिल में तरुण-तरंग उत्पन्न कर देता है। मूल्य २॥) डाक-ख़र्च ॥) आना।

राजेश्वर लेप—बिना जलन वा छाला के गुप्तेंद्रियों की समस्त प्रकार की कमज़ोरी, सुस्ती, नामर्दी को शर्तिया मिटानेवाली एकमात्र औषधि है। जिन्हें किसी प्रकार की बीमारी नहीं हो, उन्हें इस औषधि का प्रमादवश सेवन नहीं करना चाहिए। मूल्य ३) रुपया, डाक-ख़र्च ॥) आना।

उपदंश-मोचन (गर्मी की अचूक औषधि)—मूल्य ५) रुपया। **सूज़ाक-नाशक**—मूल्य ४) रु०।

"स्तंभनवटी"—बड़ा फ़ाइल मूल्य ३), छोटा फ़ाइल १) रु०। "स्त्री-यौवन" (स्त्रियों को वश में करने की औषधि)—मूल्य बड़ी फ़ाइल ३) छोटी फ़ाइल १॥) रुपया। "बवासीर की अचूक औषधि"—मूल्य ५), सैमपुल २) रुपया। "श्वेतकुष्ठ की दवा"—मूल्य ५), छोटी सैमपुल १) रु० "गंजरोगचिकित्सा" (कपाल के उड़े हुए केशों को जमानेवाला)—मूल्य ३), नमूना १) रु० १०) रुपए की औषधि मँगाने से डाक-ख़र्च माफ़।

मिलने का पता—**प्रताप औषधालय, नं० ३७४, अपर चितपुर रोड, कलकत्ता।**

इससे बढ़कर और क्या चाहिए, पसंद न हो तो पूरे दाम वापस

सुनहरी हाथ घड़ी—(गारंटी १० साल)

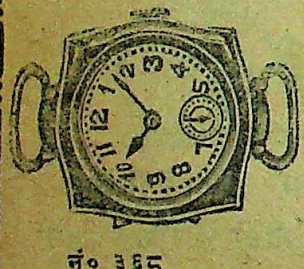

नं० ३६८

यह रिस्टवाच बहुत ही ख़ूबसूरत, मज़बूत और साइज़ में छोटी है। इसके डायल और रूप-रंग की सुंदरता १५०) की घड़ी को भी मात करती है। मूल्य सिर्फ़ ६॥), पैकिंग और डाक-ख़र्च अलग।

'जोकर' कैरेज क्लॉक—(गारंटी ५ साल)

नं० ५६८

यह घड़ी ठीक चित्र-जैसी है। इसकी मशीन आला दर्जे की मज़बूत होने से यह वर्षों तक सच्चा टाइम देती है और शक्ल की ख़ूबसूरती के कारण कमरे की शोभा दूनी बढ़ा देती है।

नं० १—अलार्म बेल यानी जगाने की घंटीवाली मूल्य ६॥=)

नं० २—घंटा आधा घंटा बजानेवाली मूल्य ८।)

नं० ३—अलार्मबेल के साथ घंटा, आधा घंटा बजानेवाली मूल्य १०) पैकिंग और डाक-ख़र्च अलग।

दी यूनियन ट्रेडिंग कं०

१६६, हरीसन रोड (W) कलकत्ता

स्वीज़रलैंड की पाकेट वाच

सिर्फ़ २॥) रुपए में हाथों हाथ लुट गई।

थोक ख़रीदार अब तीसरे चालान का इंतज़ार करें; क्योंकि एक या दो दर्जन से अधिक किसी ख़रीदार को न दी जाएँगी। हाँ, जिन व्यापारियों का आर्डर अभी से आएगा, उन्हें माल आने पर सबसे पहले भेजा जायगा। ख़ुदरा ख़रीदार जल्दी करें, नहीं तो फिर तीसरे चालान का इंतज़ार करना पड़ेगा। एक घड़ी से ३ घड़ी तक डाक-ख़र्च ।=) आना है। गारंटी ५ वर्ष। समय की इतनी सच्ची है कि मजाल नहीं कि एक मिनट का फ़र्क़ पड़े, कल-पुर्ज़े इतने मज़बूत हैं कि दामी-दामी घड़ियों को भी मात करती है। दर्जन का आर्डर १०) रु० पेशगी मनीआर्डर आने से भेजा जायगा।

CHADDHA WATCH AGENCY,

पता—चड्ढा वाच एजेंसी,

पोस्ट बॉक्स नं० ११४४४, कलकत्ता।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

केवल दश रुपयों में १० वर्ष की गारंटी

साथ ही बीस क़ीमती चीज़ें मुफ़्त !

Registered "रजिस्टर्ड पेटेंट लीवर रेडियम रिस्टवाच"

इन घड़ियों में रेडियम ऐसा चमकीला लगता है, जैसा कि दिन में देखिए वैसे ही रात में भी। इसके साथ २० नीचे लिखी चीज़ें ग्राहकों को मुफ़्त दी जाती हैं—

१—पाकेट लैंप [बिजली नई], २—फ़ाउनटेन पेन (अपने आप लिखनेवाली क़लम), ३—दावात, ४—फ़ोल्डिंग, पेंसिल बनाने की कल, ५—हीरे की अँगूठी, ६—कान के लटकन, ७—सेफ़्टी पिन, ८—चाक़ू, ९—चश्मा, १०—हाथ की घड़ियों के लिये पट्टा, ११—बढ़िया ताश, १२—सिगार लाइटर, १३—क़मीज़ का सेट, १४—कोट के बटन, १५—रूमाल, १६—इतर की शीशी, १७—एक सुंदर प्याला, १८—लाकेट, १९—क़ैंची।

नोट—केवल वी० पी० से भेजा जायगा। पोस्टेज १) रु० (२) क़ीमत १०) गारंटी १० वर्ष।

मिलने का पता:—

दी मास्टर वाच कं०, नं० १९० भूलेश्वर, बंबई नं० २

शर्तिया इलाज और दवा मुफ़्त

शोक है कि छोटे-छोटे दवा बेचनेवालों की इतनी ज़्यादती है कि उनमें सचमुच किनकी दवा फ़ायदा करेगी. इनका अंदाज़ करना बहुत कठिन हो गया है। लोगों ने एक ऊधम मचा रक्खा है। लेकिन हम इस ऊधम को मिटाने और अपनी सचाई ज़ाहिर करने के लिये अपने औषधालय की मशहूर दवा "जवानी का बक्स", जिसकी क़ीमत ८) है और जिसमें एक शीशी तिलाए शबाब और २१ ताक़त की गोलियाँ हैं, जिनको खाने से नामरदी, प्रमेह, बदहज़मी, हर क़िस्म की कमज़ोरी, सुस्ती धातु के गिरने वग़ैरह की तमाम ख़राबियाँ दूर हो जाती हैं, थोड़े दिनों के लिये हमने तय किया है कि बिलकुल मुफ़्त बाँट करके स्थायी ग्राहक बना लिये जावें। ख़ूब मशहूर हो जावे और बहुत फ़ायदेमंद साबित हो जाने पर इस आर्थिक हानि का बदला हो जायगा। इसलिये जिन लोगों को ऊपर लिखी बीमारियों ने सता रक्खा हो, मौत को ज़िंदगी से अच्छा जानते हों, या जिनके दिमाग़, दिल, मेदे वग़ैरह में कितनी ही कमज़ोरी आ गई हो और अब हमेशा यानी ज़िंदगी-भर के लिये छुटकारा पाना चाहते हों, तो एक आख़िरी मरतबा ईश्वर पर भरोसा करके "जवानी बक्स" सिर्फ़ एक रुपए में—वह भी बाबत छपाई इश्तहार ॥), डिब्बी =), पैकिंग =), महसूल डाक ।) नौकरों की तनख़्वाह और क़ीमत शीशी वग़ैरह यानी जो ऊपर से ख़र्च होता है—सिर्फ़ एक रुपया अदा करके बिलकुल मुफ़्त मँगाएँ। जितने बक्स मँगाना हों, इकट्ठा मँगा लीजिए। नहीं तो दो हज़ार बक्स बिक जाने पर फिर पूरी वही क़ीमत ८) में भेजा जावेगा। फ़ायदा न हो, तो दाम की वापसी की शर्त है। इससे ज़्यादा क्या विश्वास दिलाया जाय।

फ़ायदेमंद साबित होने पर एक सार्टीफ़िकट भेजना ज़रूरी होगा।

मैनेजर—अइनुशिफ़ा मेडिकल हॉल (सु) लखनऊ

आर्डर में सुधा का हवाला अवश्य दें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुफ़्त !

मुफ़्त !!

ी' रजिस्टर्ड टाइम पीस

मुफ़्त !

उन्हीं को मिलेगी जो हमारी एक भी हाथ की घड़ी रीदेंगे। २२ कैरेट रोल्ड गोल्ड की। १० वर्ष की गारंटी, जो डायल पर खुदा हुआ है। रेशमी पट्टा सहित। शीघ्र आर्डर भेजिए।

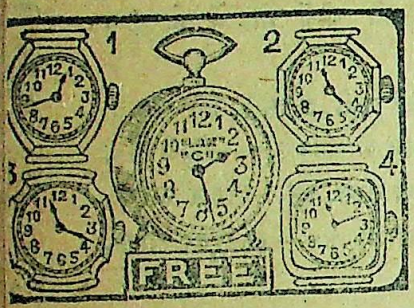

नों घड़ियाँ ७) में मिलेंगी।

मिलने का पता—

वी० एस्० वाच कंपनी,

पोस्ट बाक्स नं० १०५, मदरास

१५ उपयोगी वस्तुएँ मुफ़्त !

हमारी ४॥) की सुंदर लिवर वाच (जेबघड़ी) के ख़रीदार को पेंसिल, फूल, बटन, कंघी, हार, अँगूठी, चाक़ू, साबुन, चैन, ऐना, कमीज़ के चार बटन, तेल की शीशी, और एक फौंटेन पेन मुफ़्त में मिलेगी। इन सब चीज़ों के सहित घड़ी

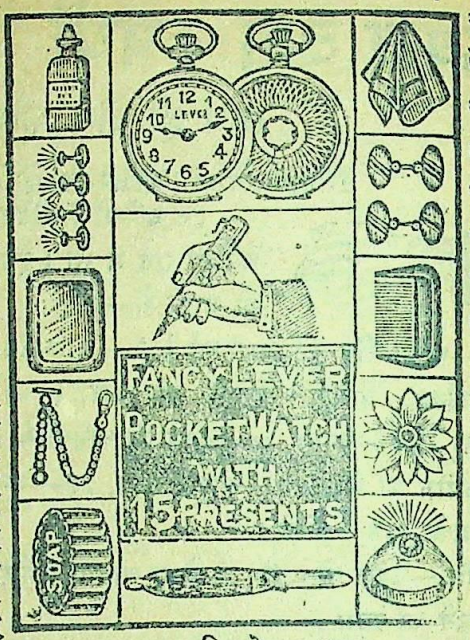

का दाम ४॥) मिलने का पता—

इंगलिश इंपोरियम

पो० ब० नं० १०५, मदरास

आपको परमात्मा की क़सम मुझको जरूर पढ़िए

"बरकी वैदिक मुहम्मदशाही तिला"

यह वही नुस्ख़ा है, जिसे देहली के रँगीले बादशाह मुहम्मदशाह के लिये उस समय के नामी हकीमों और वैद्यों ने मिलकर बनाया था। सौभाग्य से वह नुस्ख़ा हमारे हाथ आ गया। यह तिला इस क़दर निकल रहा है कि लखनऊ में जो यूनानी हिकमत का सेंटर हो रहा है, इस दवा को छोड़कर और दवा नहीं बिकती। बड़े-बड़े वैद्य, डॉक्टर और हकीम इस दवा को अपने बीमारों पर इस्तेमाल करके नेकनामी और शुहरत उठा रहे हैं, और बाज़ लोग ५०) एक शीशी का दाम वसूल करते हैं। यह दवा बिलकुल सच्ची है कि इससे बेहतर दुनिया में और कोई दवा नहीं है। २०-२०, ३०-३० बरस के नाउम्मेद सुस्ती, कमज़ोरी, हर क़िस्म की नातावती, नामरदी वग़ैरह के मरीज़ आज चैन कर रहे हैं। विशेष इंद्रिय की कुल ख़राबियाँ जाती रहती हैं। बिजली की ताक़त होने की वजह से चंद घंटों में अपना असर दिखाता है। और, यहाँ तक ताक़त पैदा करता है कि आदमी खुद हैरान रह जाता है। २१ रोज़ तक स्त्री से परहेज़ रखिए, चाहे दवा का असर आपको कितना ही मजबूर करे। क़ीमत एक शीशी २॥), महसूल ।=)। अगर इस तिला से फ़ायदा न हो, या १० साल के बाद बीमारी लौट आए, तो क़ीमत वापस या दुबारा, तिबारा मुफ़्त भेजने की शर्त करते हैं। क्योंकि झूठे दवाफ़रोशों ने भरोसा खो दिया है।

मैनेजर—अज़मतुल इलाज दवाख़ाना (सु) लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection. Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(यदि इसमें १३२ सातरंगी सुंदर चित्र असली न हों तो क़ीमत वापस देंगे)

असली पुराना

काशमीरी कोकशास्त्र

असली पुस्तक अन्यत्र न मिलेगी

(श्रीमान् कोका पं० महामंत्री काशमीर की असली पुस्तक का अनुवाद)

नक़ली पुस्तक को लोग भारी दामों पर बेचकर लूट रहे हैं। उनकी चिकनी-चुपड़ी बातों में पड़कर धोखे में न पड़ें।

पद्मिनी, चित्रिणी, शांखिनी और हस्तिनी तथा शशक, वृषभ, मृग और अश्व

इन चारों प्रकार की स्त्रियों तथा पुरुषों की पहिचान, उनका वर्णन, स्त्री-पुरुष का जोड़ा, स्त्री को आयु-भर स्वस्थ, सुंदर, सौंदर्य की देवी और अपनी आज्ञा माननेवाली बनाए रखना, मन-चाही सुंदर तथा बलिष्ठ संतान उत्पन्न करना, गर्भ में पुत्र-पुत्री की अथवा नेक व बद की पहचान, स्त्री-पुरुषों के जोड़ों का मिलान, संतान उत्पन्न न होती हो तो ज़रूर हो, पूरे सौ वर्ष तक हृष्ट-पुष्ट, सुंदर और स्वस्थ बने रहना, कुमारी भेद और लक्षण, प्रेम, प्रीति, परदा, स्त्री-पुरुष का परस्पर संबंध, स्त्रियों का रजोदर्शन अर्थात् ऋतु, उसका सामयिक प्रभाव, सहवास, विलासियों के लिये सहवास के नियम, गर्भाधान, चौरासी आसन, गर्भ-परीक्षा, गर्भोत्पत्ति, गर्भ-वृद्धि, गर्भ रोकना, प्रसव और शिशुपालन, स्त्रियों के शृंगार, उनके संबंध में समस्त यौवन-वर्द्धक आनंद-दायक मसाले, स्त्री-पुरुषों के कोकशास्त्र-संबंधी रोग और उनकी अद्भुत गुणकारी औषधियाँ, कामोद्दीपक दवाएँ, वशीकरण, स्त्री-पुरुषों की १३२ तसवीरें तथा ८४आसनों के दिल-चस्प हालात दर्ज हैं। यही नहीं, स्त्री तथा पुरुषों की गुप्त बीमारियाँ आदि कई एक ऐसी दर्ज हैं, जो यहाँ लिखना उचित नहीं ; पाठक समझ लें। इसके १३२ चित्र कानपुर, कलकत्ता वग़ैरह के मशहूर कारीगरों से बनवाए हुए हैं। क़ीमत उत्तम सुनहरी जिल्द, डाक-ख़र्च सहित २॥), रेशमी सुंदर जिल्द ३)

दुनिया-भर की सर्व ज्योतिष की पुस्तकों का मुकुट-शिरोमणि

चशमा ज्योतिष

या ख़ुफ़िया राज़दान, अर्थात् ज्योतिष-सागर तथा गुप्त प्रश्न-प्रदीपिका।

इसे पुस्तक नहीं बल्कि दुनिया की क़िस्मत का ख़ज़ाना समझें, क्योंकि इसमें आदि से अंत तक ज्योतिष के वह गुप्त भेद संपूर्णतया अंकित कर दिए हैं, जो भारी रक़म लेकर भी ज्योतिषी लोग नहीं बताते। "चशमा ज्योतिष" का कर्ता ख़ांदानी ज्योतिषी है, जिसकी मशहूरी दूर देशांतरों में हो चुकी है, भला इसकी रची पुस्तक जो इसकी ज़ाती क़ाबिलियत का फ़ोटो है, क्यों माननीय न होगी ? ज्योतिष विद्या के माननेवाले सज्जनों से हम अनुरोध करते हैं कि इस अनुपम पुस्तक को शीघ्र ही मँगाकर लाभ उठावें; क्योंकि इससे पूर्व की सर्व पुस्तकें अधूरी हैं। इस पुस्तक को पढ़नेवाले सब सज्जन केवल १ मास में पूरे ज्योतिषी बनकर सर्व गुप्त भेद बता सकते हैं, और हर स्त्री-पुरुष की तक़दीर आपके सुख-दुःख का हाल, ग्रहों की चाल, जन्मकुंडली, लग्न बनाकर फलादेश बताना, हर प्रकार के सच्चे मुहूर्त तथा सट्टा का ठीक परिणाम बताना, जन्मपत्री बनाना, नजूम व प्रश्न, और सर्व प्रकार की ज्योतिष विद्याएँ इसमें दर्ज हैं। हम डंके की चोट से कहते हैं कि यदि इसके पढ़नेवाले सच्चे हालात व प्रश्नों के जवाबात न बता सकें तो हम इसकी १०गुनी क़ीमत लौटावेंगे। हमने इसके रचयिता को बड़ी मुश्किल से रज़ामंद किया है कि वह अपने कमालात को पुस्तक रूप में लाकर जनता को लाभ पहुँचावें। बड़े आकार के सफ़ों की संख्या २२० काग़ज़ व छपाई उत्तम और अति सुंदर जिल्द बँधी हुई दाम केवल डाक ख़र्च समेत ३)

ग़ज़ब की रियायत

केवल ६) में ४ बढ़िया घड़ियाँ

पता—एल्० डी० आहूजा ऐंड संस, आहूजा बिल्डिंग्स, S. L. २ ब्रांडर्थ रोड, लाहौर।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रोतों को हँसाने और मुरदादिलों को ज़िंदादिल बनानेवाली अद्वितीय पुस्तक

यदि हँसते-हँसते पेट में बल न पड़ जायँ तो कहना

हँसी का गोल गप्पा

यह अनुपम पुस्तक चटकीले, चुलबुले मज़मून से भरी हुई है। इसकी एक कहानी पढ़ने से हँसते-हँसते पेट में बल पड़ जाते हैं। आदमी ख़्वाह कितना ही उदास क्यों न हो, इसकी एक ही मनोरंजक कथा पढ़ने से दुःख दूर हो जाते हैं। इस पुस्तक में कई प्रकार की हास्य-रस से भरपूर कहावतें, पहेलियाँ और विचित्र-विचित्र दोहे-श्लोक आदि-आदि हर प्रकार के लोगों के लिये ऐसे अनोखे, अनूठे लतीफ़े बड़े परिश्रम से संपादन करके अंकित किए गए हैं, जिनसे पढ़नेवालों के दिल-दिमाग़ के कपाट खुल जाते हैं। इस पुस्तक ने इस विषय की सब पुस्तकों को मात कर दिया है। अर्थात् इस पुस्तक को अद्वितीय बनाने में कोई न्यूनता बाक़ी नहीं छोड़ी। शीघ्र मँगवाकर आनंद उठाइए। बड़े आकार के २०४ सफ़े। मूल्य उत्तम जिल्दवाली १॥), डाक-ख़र्च ॥) अलग।

यक्षिणी-भैरव

साधनम्—इस पुस्तक में नाना प्रकार के चमत्कार यंत्र-मंत्र आदि विषय सरल हिंदी भाषा में लिखे गए हैं। जिनसे विद्वान् तथा अल्पपठित पुरुष भी अपनी मनोकामना पूर्ण कर सकते हैं। योग-विद्यावर्णन, यक्षिणी तथा शिव, विष्णु, ब्रह्मा, सूर्य, चंद्र, भैरव, महावीर देवताओं की सिद्धि प्राप्त करके अपनी आशाएँ पूर्ण होती हैं। क़ीमत २॥), डाक-ख़र्च-सहित।

बंगाल देश का जादू—बंगाल देश जादू में बड़ा मशहूर है। आपने कहानियों में पढ़ा होगा कि एक आदमी बंगाल देश में चला गया और उस देश की स्त्रियों ने उसको पकड़ कर भेड़ या बकरा बनाकर अपने पास रख लिया। यह बातें बिलकुल ठीक हैं और उन्हीं कहानियों को पढ़कर कई महाशयों का जी यही चाहता है कि हम भी वैसे ही जादूगर बन जावें। इसी वास्ते यह पुस्तक तैयार की है। इसमें सब प्रकार के सहज रीतिवाले तंत्र, मंत्र, यंत्र अंकित कर दिए हैं कि सर्व साधारण इसे पढ़कर अपनी इच्छा पूर्ण कर लें। कई रोगों के यंत्र, सर्प आदि जीवों को वश करना, आमदनी बढ़ाने के मंत्र, भूत-प्रेत को दूर करना आदि विषय भी दर्ज हैं। मूल्य १), डाक-ख़र्च-सहित।

फ़रंगी और हिंदुस्तानी मदारी अर्थात् भानमती का पिटारा

यह पुस्तक योरप और हिंदुस्तानी मदारियों का पिटारा है। इसमें अंडे, बोतल, गिलास, फुलझड़ी, रुपया, ताश के हर प्रकार के खेल, भूत-प्रेत, जिन्न उतारना, अँधेरे में रोशनी कर देना, मुँह से आग निकालना, हाथ पर आग रक्खें तो हाथ न जले, मनुष्य को क़त्ल करके ज़िंदा कर देना, आम का बूटा, सरसों हाथ पर जमाना, बिना भट्टी जुआर-चने भून लेना, आग पर खाना न पके, बँधे मनुष्य को छुड़ाना, क़ैदी की बेड़ी खुल जावें, काग़ज़ की कढ़ाई में पकौड़ी तलना, कमरे में हर रंग की रोशनी कर देना, जादू की स्याहियों के नुस्ख़े जिनसे लिखा हुआ अन्य मनुष्य पढ़ न सके और सैकड़ों तमाशे बहुत ही सरल रीति से लिखे हैं। मूल्य १॥), डाक-महसूल-सहित।

असली पुराना मिस्र का जादू सचित्र रंगीन संपूर्ण (दसवाँ एडीशन)

(मिस्र-देश के प्रचलित जादू-विद्या की एक हस्त-लिखित पुस्तक का तर्जुमा)। अपनी छाया, सूर्य, शनि, चंद्रमा, मंगल आदि ग्रहों को सिद्ध करना (मूसा फ़रऊन के समय की विचित्र बातें आप मँगा करके देख लो)।

(१) वशीकरण, (२) सूर्यवशीकरण, (३) चंद्रवशीकरण, (४) मंगलवशीकरण, (५) शनिवशीकरण, आदि प्रत्येक ग्रह का वशीकरण और इसके सिवा अन्य कई चीज़ों के वशीकरण करने के लिये पूर्ण विधियों से युक्त चकित करनेवाले नुस्ख़े दर्ज किए हैं। इसके सिवा हर तरह के साधन रोगों पर करना, घर बैठे और देशों की सैर करना, हवा में उड़ते फिरना, जिसको चाहना वश कर लेना, दृष्टि से गुप्त हो जाना, दूसरे रूप में प्रकट होना, दूर-दराज़ की वस्तु मँगवा लेना, देव, परी, जिन्नों को अपने अधिकार में रखना और इच्छानुसार उनसे काम लेना इत्यादि—यदि यह पुस्तक लिखे-अनुसार न हो तो वापस कर दो, क़ीमत सजिल्द सिर्फ़ २), डाक-महसूल-सहित।

१,०००) रुपया माहवार शर्तिया कमा लो (चौथा एडीशन)

इस पुस्तक में ५२८ हुनर ऐसे छपे हैं, जिनमें से एक भी अपने मतलब का चुन लिया जाय, तो १,०००) रु० महीना कमाए जा सकते हैं। मसलन् गिलटसाज़ी, फ़ोटोग्राफ़ी, दंदानसाज़ी, कुरते बनाना, बाल उड़ाने का तेल, पाउडर, साबुन, बाल काले करने का अँगरेज़ी ढंग का ख़िज़ाब और बाल उम्र-भर न पैदा होने का नुस्ख़ा, मूछ बढ़ाने का तेल, हीरा-मूँगे बनाना, शीशा साफ़ करना, पत्थर जोड़ना, मोमबत्ती, शोरा गंधक के गिलास, आतशबाज़ी, हर तरह के साबुन, इत्र, तेल, फुलेल, सब रंगों के कपड़े रँगना, अँगरेज़ी ढंग के खाने, डबल रोटी, बिस्कुट, मिठाई, विलायती सोडावाटर, अचार, मुरब्बे, चटनियाँ, तरह-तरह की बीमारियों के इलाज और नुस्ख़े, १०८ बीमारियों की एक दवा का नुस्ख़ा, आदि ५२८ हुनर दर्ज हैं। मूल्य डाक-महसूल-सहित सजिल्द १॥।=) ३७४

ता—लक्ष्मणदास आहूजा ऐंड संस, आहूजा बिल्डिंग्स S.L.2 ब्रांडर्थ रोड, लाहौर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्मन बग़रज़ इनफ़िसाल मुक़द्दमा

मुक़द्दमा नं० १३४ सन् १९२७ ई०

बअदालत सबजज्जी खीरी, मुक़ाम लखीमपूर

फ़र्म शिवदयाल रामाधीन बज़रिये रामअधीन व रामरतन क़ौम वाथमवैश्य सा० ढखवा, ओयल परगना व ज़िला खीरी, मुद्दई बनाम श्रीकृष्ण वग़ैरह

बनाम (१) श्रीकृष्ण व दीनदयाल (२) देबीदयाल व नामालूम क़ौम ब्राह्मण साकिन सराय सक्खन, परगना सफ़ीपूर ज़िला उन्नाव मुद्दाअलेह

हरगाह मुद्दई ने तुम्हारे नाम एक नालिश बाबत २७२॥)। के दायर की है। लिहाज़ा तुमको हुक्म होता है कि तुम बतारीख़ १९ माह जनवरी सन् १९२८ ई० बवक्त १० बजे असालतन् या मार्फ़त वकील के जो मुक़द्दमे के हाल से क़रार वाक़ई वाक़िफ़ किया गया हो और जो कुल उमूर अहम मुताल्लिक़ै मुक़द्दमा का जवाब दे सके या जिसके साथ कोई और शख़्स हो जो जवाब ऐसे सवालात का दे सके हाज़िर हो और जवाबदिही दावै मुद्दई मज़कूर की करो और हरगाह वही तारीख़ जो तुम्हारे अहज़ार के लिये मुक़र्रर है वास्ते इनफ़िसाल क़तई मुक़द्दमे के तज़वीज़ हुई है। पस तुमको लाज़िम है कि अपने जवाबदावा की ताईद में जिन गवाहों की शहादत पर या जिन दस्तावेज़ात पर तुम इस्तदलाल करना चाहते हो उसी रोज़ उनको पेश करो।

मुत्तिला रहो कि अगर बरोज़ मज़कूर तुम हाज़िर न होगे तो मुक़द्दमा बग़ैर हाज़िरी तुम्हारे मस्मू और फ़ैसल होगा—आज बतारीख़ ४ माह जनवरी सन् १९२८ ई० मेरे दस्तख़त और मुहर अदालत से जारी किया गया।

बहुक्म
द० नामालूम
मुंसरिम

समन बग़रज़ क़रारदाद उमूर तनक़ीह तलब

मुक़द्दमा नं० ३१५ सन् १९२७ ई०

अदालत जनाब पं० प्यारेलाल साहब भार्गव मुंसिफ़ साहब बहादुर जनूबी हरदोई मुक़ाम हरदोई मुद्दई श्यामलाल वल्द नरायनदास वैश सा० क़सबा संडीला मोहल्ला असराफ टोला ज़िला हरदोई बनाम अयोध्याप्रसाद वग़ैरह अक़वाम वैश सा० कानपूर मोहल्ला पटकापूर ज़िला कानपूर।

मुद्दाअलेह बनाम (१) अयोध्याप्रसाद वल्द गोकुलचंद (२) मुन्नूलाल वल्द रामसेवक वैश साकिन शहर कानपूर, मोहल्ला पटकापूर ज़िला कानपूर।

वाज़े हो कि मुद्दई ने तुम्हारे नाम एक नालिश बाबत ८०३॥≡) ९पाई के दायर की है, लिहाज़ा तुमको हुक्म होता है कि तुम बतारीख़ २५ माह जनवरी सन् १९२८ ई० वक्त

सम्मन वास्ते क़रारदाद अमूर तनक़ीह तलब

नं० मुक़दमा ९१६ सन् १९२७ ई०

अदालत अव्वल मुंसिफ़ साहिब क़याम गोरखपूर ज़िला गोरखपूर इजलास जनाब बाबू आनंदबिहारीलाल साहब अव्वल मुंसिफ़ गोरखपूर

शिवमानक कौटरी वल्द रामचरन कौटरी साकिन मौज़ा नलौखी पत्ता परौर पार परगना जोवल ज़िला गोरखपूर मुद्दई (१) देवनरायण उपाध्या वल्द दशरथ उपाध्या साकिन मौज़ा सरस्यानया मनदौटा परगना जोवल गोरखपूर ज़िला गोरखपूर (२) मुसम्मात घौरा उर्फ़ घोलरा जौज़ा बंधू साकिन मौज़ा जैनपूर सरपेड़ा परगना सिंधौर चोटिया ज़िला गोरखपूर

हर गाह कि मुद्दई ने तुम्हारे नाम एक नालिश बाबत दख़ल के दायर की है। लिहाज़ा तुमको हुक्म होता है कि तुम १४ जनवरी सन् १९२८ को बवक्त दस बजे दिन के असालतन् या मार्फ़त वकील के जो मुक़दमा के हालात से क़रार वाक़ई वाक़िफ़ किया गया हो और कुल अमूरात अहम मुतअल्लिक़ा मुक़दमा का जवाब दे सके या जिसके साथ कोई और शख़्स हो कि जवाब ऐसे सवालात का दे सके हाज़िर हो और जवाबदिही दावा की करो और तुमको लाज़िम है कि उसी रोज़ जुमला दस्तावेज़ात पेश करो जिनपर तुम बताईद अपने जवाबदिही के इस्तदलाल करना चाहते हो।

तुमको इत्तिला दी जाती है कि बरोज़ मज़कूर तुम हाज़िर न होगे तो मुक़दमा बग़ैर हाज़िरी तुम्हारे मस्मू और फ़ैसल होगा।

यह सबत मेरे दस्तख़त और मुहर अदालत के आज बतारीख़ ११ दिसंबर सन् १९२७ जारी किया गया।

बहुक्म
द० नामालूम
मुंसरिम

१० पर असालतन् या मार्फ़त वक़ील के जो मुक़द्दमे के हाल से क़रार वाक़ई वाक़िफ़ किया गया हो और जो कुल उमूरात अहम मुतअल्लिक़ै मुक़द्दमा का जवाब दे सके या जिसके साथ कोई और शख़्स हो जो जवाब ऐसे सवालात का दे सके हाज़िर हो और जवाबदिही दावा मुद्दई मज़कूर की करो और तुमको हिदायत की जाती है कि जुमला दस्तावेज़ात को जिन पर तुम बताईद अपनी जवाबदिही के इस्तदलाल करना चाहते हो पेश करो।

मुत्तला रहो कि अगर बरोज़ मज़कूर तुम हाज़िर न होगे तो मुक़द्दमा तुम्हारी ग़ैरहज़िरी में मस्मू और फ़ैसल होगा।

आज बतारीख़ $\frac{२२}{२३}$ माह दिसंबर सन् १९२७ ई० मेरे दस्तख़त और मोहर अदालत से जारी किया गया।

बहुक्म
द० नामालूम
मुंसरिम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्मन बनाम मुद्दालय बिनावर हाज़िरी असालतन बग़रज़ इनफ़िसाल मुक़दमा आर्डर ५ क़ायदा ३

बअदालत मुंसफ़ी बस्ती, मुक़ाम बस्ती, ज़िला बस्ती मुक़दमा नं० ४४ बाबत सन् १९२७ ई०

रामसरनसिंह वगैरः मुद्दई

बनाम शेरबहादुर सिंह वगैरः मुद्दाअलेह

बनाम शेशबहादुर सिंह व ठाकुर सिंह पिसरान ओदतसिंह मनौजी साकिनान मौज़ा संघा राजा पता दोवलया परगना अमोढा ज़िला बस्ती।

हरगाह मुद्दैयान ने आपके नाम एक नालिश बाबत इंददाम के दायर की है लिहाज़ा आपको हुक्म दिया जाता है कि आप १५ फ़रवरी सन् १९२८ बवक्त १० बजे दिन के अदालत हाज़ा में असालतन हाज़िर हों और जवाब दिही दावा की करें और हरगाह वही तारीख़ जो आप की हाज़िरी के लिये मुक़र्रर है वास्ते इनफ़िसाल क़तई मुक़दमा के तज़वीज़ हुई है, पस आपको लाज़िम है कि उसी रोज़ अपने जुमला गवाहों को हाज़िर करें नीज़ जुमला दस्तावेज़ात जिनपर आप बताईद अपनी जवाबदिही के इस्तदलाल करना चाहते हों उसी रोज़ पेश करें आप को इत्तिला दी जाती है कि अगर बरोज़ मज़कूर आप हाज़िर न होंगे तो मुक़दमा बग़ैर हाज़िरी आपके मस्मू और फ़ैसल होगा। यह सबत मेरे दस्तख़त और मुहर अदालत के आज बतारीख़ ११ माह जनवरी सन् १९२८ ई० जारी किया गया।

बहुक्म
द० रामदास
मुंसरिम

(नमूना क़ाबिल फ़रोख़्त)

सम्मन बिनाबर इनफ़िसाल मुक़द्दमा

(आर्डर ५ क़ायदा १ व ५)

नंबर मुक़द्दमा २६६ सन् १९२७ ई०

बअदालत मुंसफ़ी खुर्जा ज़िला बुलंदशहर

लाला जैनरायन वगैरः मुद्दई

बनाम (१) किशनसिंह (२) झंडूसिंह (३) उमरावसिंह क़ौम ठाकुर साकिन मौज़ा भवेश परगना सहसवान मुतल्लका मुंसिफ़ी सहसवान किशुनसिंह वगैरः मुद्दाअलेह ज़िला बदायूँ मुद्दालैम

हरगाह मुद्दैयान ने तुम्हारे नाम एक नालिश बाबत रुक्क़ाज़ात १२२७) के दायर की है लिहाज़ा तुमको हुक्म होता है कि तुम बतारीख़ १० माह २ सन् १९२८ ई० बवक्त १० बजे दिन के असालतन या मार्फ़त वकील के जो मुक़द्दमे के हालात से क़रार वाक़ई वाक़िफ़ किया गया हो और जो कुल अमूर अहम मुतअल्लिक़ै मुक़द्दमा का जवाब

सम्मन बग़रज़ इनफ़िसाल मुक़द्दमा

ख़फ़ीफ़ा

मुक़द्दमा नंबर ३१६ सन् १९२७ ई०

बअदालत जनाब बाबू शीतलासहाय साहब एम्० एल्० एल्० बी० मुंसिफ़ जनूबी उन्नाव

मुद्दई शीतलप्रसाद वल्द दूलू तेली सा० सिकंदरपुर करन परगना हड़हा, ज़िला उन्नाव

बनाम सीताराम वग़ैरह

बनाम सीताराम वल्द मोहन क़ौम लोध साकिन शंकर खेड़ा मज़रा झन्ना परगना हड़हा ज़िला उन्नाव।

हरगाह मुद्दई ने तुम्हारे नाम एक नालिश बाबत ८०॥) के दायर की है लिहाज़ा तुमको हुक्म होता है कि तुम बतारीख़ १६ माह जनवरी सन् १९२८ ई० बवक्त दस असालतन् या मार्फ़त वकील के जो मुक़द्दमे के हाल से क़रार वाक़ई वाक़िफ़ किया गया हो और जो कुल उमूर अहम मुतअल्लिक़ै मुक़द्दमा का जवाब दे सके या जिसके साथ कोई और शख़्स हो जो जवाब ऐसे सवालात का दे सके हाज़िर हो और जवाबदिही दावै मुद्दई मज़कूर की करो और हरगाह वही तारीख़ जो तुम्हारे अहज़ार के लिये मुक़र्रर है वास्ते इनफ़िसाल क़तई मुक़द्दमे के तजवीज़ हुई है। पस तुमको लाज़िम है कि अपने जवाबदावा की ताईद में जिन गवाहों की शहादत पर या जिन दस्तावेज़ात पर तुम इस्तदलाल करना चाहते हो उसी रोज़ उनको पेश करो।

मुत्तला रहो कि अगर बरोज़ मज़कूर तुम हाज़िर न होगे तो मुक़द्दमा बग़ैर हाज़िरी तुम्हारे मस्मू और फ़ैसल होगा—आज बतारीख़ ९ माह १ सन् १९२८ ई० मेरे दस्तख़त और मुहर अदालत से जारी किया गया।

बहुक्म
द० भैरोंप्रसाद
मुंसरिम

दे सके या जिसके साथ कोई और शख़्स हो कि जवाब ऐसे सवालात का दे सके हाज़िर हो और जवाबदिही दावा की करो। और हरगाह वही तारीख़ जो तुम्हारे इहज़ार के लिये मुक़र्रर है वास्ते इनफ़िसाल क़तई मुक़द्दमा के तज़वीज़ हुई है। पस तुमको लाज़िम है कि उसी रोज़ अपने जुमला गवाहों को जिन की शहादत पर व नीज़ तमाम दस्तावेज़ात जिन पर तुम अपनी जवाबदिही के ताईद में इस्तदलाल करना चाहते हो उसी रोज़ पेश करो—तुमको इत्तिला दी जाती है कि अगर बरोज़ मज़कूर तुम हाज़िर न होगे तो मुक़द्दमा बग़ैर हाज़िरी तुम्हारे मस्मू और फ़ैसल होगा।

ब-सब्त मेरे दस्तख़त और मोहर अदालत के आज बतारीख़ ६ माह १ सन् १९२८ ई० जारी किया गया।

बहुक्म
द० नामालूम
मुंसरिम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बअदालत जनाब अडीशनल सबजज साहब बहादुर सुल्तानपूर मुक़ाम सुल्तानपूर मुक़दमा अपील नं० ९० सन् १९२७ ई०

पंडित बेनपत पटवारी — अपीलांट

बनाम रामहित पाठक व

अपील बनाराज़ी तजवीज़ व डिगरी अदालत जनाब मुंसिफ़ साहब बहादुर अव्वल सुल्तानपूर मुक़ाम सुल्तानपूर

बनाम मंगल पाठक व रामदेव पाठक व मथुरा पाठक मिसरान पाँचू पाठक साकिनान मौज़ा दसरुआ परगना अलावमू तहसील कादमपुर ज़िला सुल्तानपूर

रिस्पांडंट मुत्तिला हो कि अपील बनाराज़ी डिगरी २८ सितंबर १९२७ इस मुक़दमा में मुसम्मा पंडित बेनपत पटवारी के पेश किया और वह इस अदालत में दर्ज रजिस्टर हुआ और इस अदालत ने बतारीख़ २६ माह जनवरी सन् १९२८ वास्ते समाअत इस अपील के मुक़र्रर की है और अगर तुम या तुम्हारा वकील या कोई और आदमी जो क़ानूनन तुम्हारी तरफ़ से अपील हाज़ा में जवाब सवाल करने का मजाज़ हो हाज़िर न आएगा तो उसकी समाअत और तजवीज़ तुम्हारी ग़ैर हाज़िरी में इकतरफ़ा की जावैगी।

आज बतारीख़ १३ जनवरी सन् १९२८ मेरे दस्तख़त और मुहर अदालत से जारी किया गया।

बहुक्म
द० नामालूम
मुंसरिम

बअदालत मुंसिफ़ी शुमाली उन्नाव मुक़ाम उन्नाव

मुक़दमा नं० २८६ सन् १९२५ ई०

मुशैदा हैदरनामबख़्श क़ौम शेख़ साकिन मौज़ा पबासो परगना व तहसील खुर्जा ज़िला बुलंदशहर

बनाम सीताराम वल्द पंचम क़ौम पासी साकिन पंचम-खेड़ा मज़रुआ मौज़ा लोधी परगना औरास ज़िला उन्नाव।

हरगाह मुसम्मा मुद्दई ने दरख़्वास्त इस अदालत में गुज़रानी है कि डिगरी इब्तदाई बएनात क़तई की जावे। लिहाज़ा तुमको इत्तिला दी जाती है कि तुम असालतन या मार्फ़त किसी वकील के जो हालात मुक़दमा से बख़ूबी वाक़िफ़ हो वक्त १० बजे बतारीख़ १८ माह फ़रवरी सन् १९२८ ई० इस अदालत में हाज़िर होकर दरख़्वास्त के बरख़िलाफ़ वजह दिखलाओ अगर ऐसा न करोगे तो दरख़्वास्त मज़कूर तुम्हारी ग़ैर हाज़िरी में समाअत की जावेगी।

बतारीख़ १६ माह जनवरी सन् १९२८ ई० मेरे दस्तख़त और मुहर अदालत से जारी किया गया है।

बहुक्म
आदित्याप्रसाद
मुंसरिम

हस्ब आर्डर ५ क़ायदा नं० २० ज़ाबता दीवानी

सम्मन बग़रज़ कुल क़रारदाद अमूर तनक़ीह तलब

मुक़दमा नं० ३२५ सन् १९२७

अदालत इजलास जनाब बा० अवधविहारीलाल साहब बहादुर मुंसिफ़ कुंडा मुक़ाम परतापगढ़

भगवानदीन वल्द इशरी क़ौम ब्राह्मण मिश्र साकिन मौज़ा भावलपूर पूणवेर-परगना बिहार तहसील कुंडा ज़िला परताबगढ़ बनाम कढेदीन मिश्र वल्द देबीदीन साकिन भागलपूर पूणवेर परगना बिहार तहसील कुंडा ज़िला परताबगढ़।

वाज़े हो कि मुद्दई ने तुम्हारे ऊपर एक नालिश बाबत दख़लयाबी दायर की है लिहाज़ा तुमको हुक्म होता है कि तुम २५ जनवरी सन् १९२८ वक्त दस बजे के असालतन् या मार्फ़त वकील के जो मुक़द्दमा के हाल से वाक़ई वाक़िफ़ किया गया हो और जो कुल अमूरात अहम मुतालिक़ा मुक़दमा का जवाब दे सके या जिसके साथ कोई और शख़्स हो जो जवाब ऐसे सवालात का दे सके हाज़िर हो और जवाबदिही दावा मुद्दई मज़कूर की करो और तुम को हिदायत की जाती है कि जुमला दस्तावेज़ात को जिन पर तुम बताईद अपनी जवाबदिही के इस्तदलाल करना चाहते हो पेश करो। मुत्तला रहो कि अगर बरोज़ मज़कूर तुम हाज़िर न होगे तो मुक़दमा तुम्हारी ग़ैरहाज़िरी में मस्मू और फ़ैसल होगा।

आज बतारीख़ ३ माह जनवरी सन् १९२८ को मेरे दस्तख़त और मोहर अदालत से जारी किया गया।

बहुक्म द० राजनारायण भटनागर मुंसरिम

सुंदर, सस्ती और मज़बूत
रबर की मुहरें
अथवा
पीतल की सील, मुहरें और चपरास

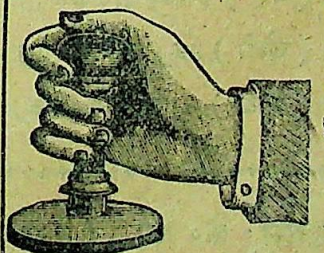

आपको जब कभी चाहिए तुरंत नीचे-लिखे पते पर नमूना लिख भेजें। अब इधर-उधर भटकने की ज़रूरत नहीं रही। आपके आर्डर के मुताबिक़ मुहरें या चपरास बहुत शीघ्र तैयार करके सेवा में भेज दी जायँगी।

मुफ़्त मँगाइए—हमारा सब प्रकार की मुहरों और चपरास का कैटलॉग।

सब प्रकार की रबर और पीतल की मुहरें और चपरास आदि बनाने का कारख़ाना।

भोलानाथ कंपनी
२६।३१, अमीनाबाद-पार्क, लखनऊ

CC-0. Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परिणाम में मीठा फल

"हील-एक"

यह प्रभावपूर्ण औषध चर्म-रोगों के लिये संजीवनी है। इस एक ही दवा से सब प्रकार के घाव-वेदना, बात, मोच, गाँठ (गिल्टी), झाईं, मुँहासे, फुंसी, चकत्ते, आग से जलने का घाव, दर्द, ख़ून का बहना आदि सभी तरह के चर्म-रोग व चमड़े पर होनेवाली व्याधियों के लिये "हील-एक" रत्न रूप दवा है।

प्रति डिब्बी ॥=) डा० म० ।=)

तीन डिब्बी १॥) डा० म० ।)

कफ खाँसी की दवा

जब सब दवा खाके आराम न हो तो एकबार डॉ० एस्० के० बर्मन की यह दवा खाइए। आज ४४ वर्षों से हज़ारों रोगियों द्वारा परीक्षित होकर दुनिया-भर में अमर नाम पा रही है। एकबार परीक्षा कर देखिए। अवश्य संतुष्ट होंगे।

प्रति शीशी (बड़ी) १) डा० म० ।)

तीन शीशी (बड़ी) ३॥=) डा० म० ।॥=)

प्रति शीशी (छोटी) ॥≡) डा० म० ।)

तीन शीशी (छोटी) २) डा० म० ॥≡)

बहुमूल्य सम्मति

भारत की राष्ट्र पताका

".....श्रीमती सरोजनी नायडू लिखती हैं —

डॉक्टर एस्० के० बर्मन की बनाई सभी ओषधियाँ गुणकारी होती हैं।

इनकी दवाइयों के प्रति मुझे अपना अनुभव व विश्वास प्रकट करने में बड़ी प्रसन्नता होती है।

मुझे यह विश्वास है कि वे अपने उपयोग में देशवासियों द्वारा अवश्य उत्साहित किए जायँगे।.....।"

पता— डॉक्टर एस्० के० बर्मन, (विभाग नं० ४६) पोस्ट बक्स नं० ५५४, कलकत्ता।

एजेंटः—लखनऊ(चौक) में डॉक्टर गंगाराम जैतली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

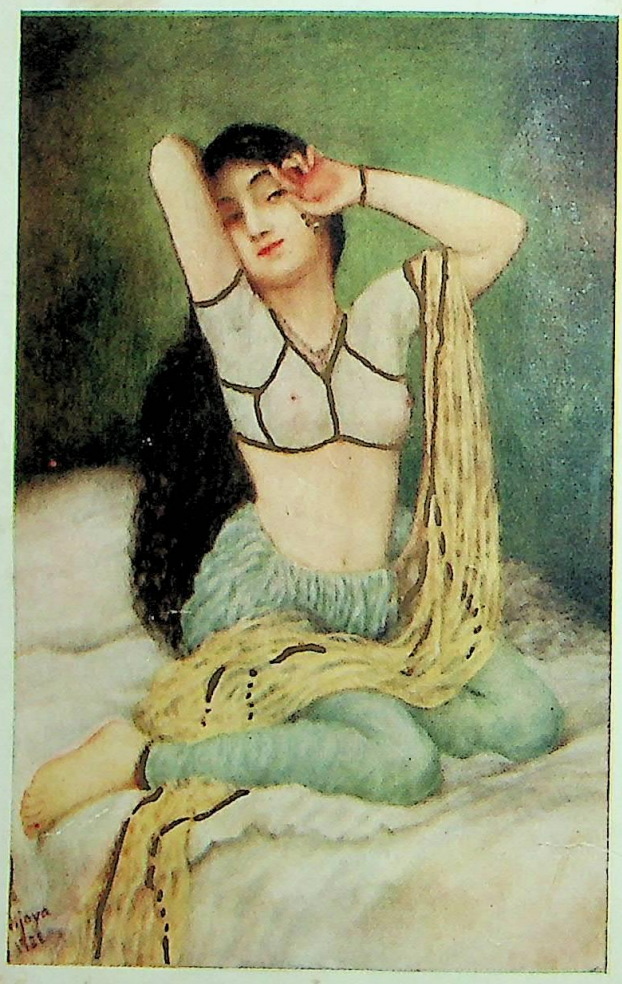

प्रभात

[चित्रकार—श्रीयुत हीरालाल-बब्बनजी]

लरिकाई-ऊषा दुरी, झलक्यौ जोबन-प्रात ;
छई नई छबि-भानु-भा, नारि-प्रकृति कैं गात ।

दुलारेलाल भार्गव

The Ganga Fine Art Press. Lucknow.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"कीन्हेहु सुलभ सुधा बसुधा हू।"
(गो० तुलसीदास)

वर्ष १ खंड २ | माघ, ३०५ तुलसी-संवत् (१९८४ वि०)— फ़रवरी, १९२८ | संख्या १ पूर्ण संख्या ७

गणेश-गुण-गान

[लेखक, कविवर बाबू जगन्नाथदास "रत्नाकर" बी० ए०]

मंजु अवतंसन पै गुंजरित भौंर-भीर,
मंद-मंद स्रौननि चलाइ बिचलावै है ;
कहै 'रतनाकर' निहारि अध-चाँपे चख,
चूमिबे कौं संभु को अधर थरकावै है।
कुंडलित सुंडिका पसारि अनचीते चट,
कुंडल खड़ानन को छ्वै पुनि छपावै है;
दाबे मुख मोदक बिनोद में मगन इमि,
गोद गिरिजा की गहे मोद उपजावै है।

सुंड सौं लुकाइ औ दबाइ दंत दीरघ सौं,
दुरित, दुरूह दुख, दारिद बिदारे देत,
कहै 'रतनाकर' बिपति फटकारै फूँकि,
कुमति कुचार तै उछारि छार डारे देत।
करनी बिलोकि चतुरानन गजानन की,
हंब सों बिलखि यौं उराहनौ पुकारे देत ;
तुमहीं बताओ कहाँ बिघन बिचारे जाहिं,
तीनौ लोक माहिं कोक उनकौं उजारे देत।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्या योरप उन्नति कर रहा है ?

[लेखक, प्रो० महेंद्रप्रताप शास्त्री, एम्० ए०, एम्० ओ० एल्०]

संसार में उन्नति के अर्थ और उसके वास्तविक अभिप्राय के बारे में यथेष्ट मत-भेद है। किसी एक हृष्ट-पुष्ट पहलवान से जाकर पूछिए, भाई, तुमने उन्नति का तात्पर्य क्या समझा है ? वह, उत्तर देने में देर न कर कह उठेगा—"ख़ूब कसरत करना और पेशियों को ख़ूब बढ़ाकर शरीर को सुंदर, सुडौल बनाना ही उचित है। उस प्राणी की सत्ता व्यर्थ है, जिसने व्यायाम से अपनी शारीरिक उन्नति नहीं की।" ठीक यही बात वैद्यक-प्रवर्तकों के "धर्मार्थकाममोक्षाणामारोग्यं मूलमुत्तमम्।" (अर्थात् धर्म-अर्थ, काम, और मोक्ष, सबको पाने का एक-मात्र साधन आरोग्य होना है) इस वचन से भी ध्वनित होती है। दूसरी ओर दृष्टि डालिए, और एक व्यापारी से, जिसपर कुबेरजी महाराज की कृपा-दृष्टि हो, जो रात-दिन भले-बुरे, सब प्रकार के उपायों से अपनी संपत्ति बढ़ाने की उधेड़-बुन में लगा रहता हो, पूछिए, क्यों भाई, तुम्हारी सम्मति में उन्नति का क्या अर्थ है ? उसका उत्तर होगा—"रुपया पैदा करना। बिना रुपए के सब मनोरथ व्यर्थ और बिना रुपए के सब उमंगें निष्फल हैं।" उसका उत्तर इस बात की दुहाई देगा—"टका धर्म टका कर्म टका हि परमं पदम्। टका यस्य गृहे नास्ति हा टका टकटकायते।" इसकी यथार्थता तो आजकल ख़ूब अच्छी तरह सिद्ध की जा सकती है ; क्योंकि आज संसार-भर में रुपए का बोलबाला है। जिधर देखो, उधर ही धन-दौलत के ग़ुलाम नज़र पड़ेंगे। सभी तरह-तरह से लक्ष्मीदेवी को प्रसन्न करने में प्रयत्नशील हैं। इसलिये, हमारी समझ में, यह दृष्टि उस व्यापारी की ही नहीं, अपितु आधुनिक पढ़े-लिखे सभ्य संसार की भी है। और आगे चलिए, और एक विद्वान् पुरुष से, जिसे पठन-पाठन का व्यसन हो, जो स्वाध्याय के पीछे दीवाना हो गया हो, उन्नति का अर्थ पूछिए, वह यही कहेगा कि "ज्ञान की उन्नति में ही उन्नति है। वह धनी और पहलवान किस काम का, जो इस संसार में अपने मस्तिष्क की उन्नति न कर सका ! मस्तिष्क का भोजन पचाने और उसकी कसरत में जो मज़ा आता है, उसे ये बेचारे क्या जानें" इत्यादि। उन्नति का अर्थ यहीं समाप्त नहीं हो जाता। आगे बढ़कर एक महात्मा से, जो आत्मा और ईश्वर के पीछे पागल हो गया हो, और जिसने ईश्वर को पाने के साधनों का पालन कर, उसे पाने की प्रतिज्ञा कर, सांसारिक सुखों को लात मार दी हो, उन्नति का अर्थ पूछिए। वह इन तीनों श्रेणी के पुरुषों के लिये दया का भाव प्रकट करते हुए 'आत्मिक उन्नति' को ही उन्नति का अर्थ और ध्येय बतलावेगा। वह अपने प्रमाण के लिये बड़े-बड़े तत्त्व-वेत्ताओं के वाक्य और भारतीय ऋषियों द्वारा रचित उपनिषदों के उद्धरण प्रस्तुत करेगा। यदि इससे भी विश्वास न हो, तो अपना ही उदाहरण दे उसकी पुष्टि करेगा। वह अपने सामने उस राजा को भी, जिसके पास असंख्य सेना और संपत्ति हो, दीन और हीन समझता है। पृथ्वी का राजा होना भी उसकी समझ में कुछ नहीं।

इस पूछताछ से, कम-से-कम, हमारे कथन की पुष्टि होती है कि संसार में उन्नति के विषय में बहुत मत-भेद है। किसी ने इसका तात्पर्य कुछ समझा है, और किसी ने कुछ। परस्पर विरोधी होने से ये सब-के-सब ठीक नहीं हो सकते। और, यह भी संभव है कि ये सभी भ्रम में हों। प्रत्येक आदमी की दृष्टि इतनी सूक्ष्म एवं दूरदर्शी नहीं होती कि वह प्रत्येक वस्तु के वास्तविक तत्त्व को समझ सके। विरले ही पुरुष-पुंगव इस अधिकार को प्राप्त करते हैं, और शेष व्यक्ति तो उनका अनुकरण ही किया करते हैं।

इस विचार से यह जानने की भावना प्रबल हो उठती है कि फिर उन्नति का अर्थ क्या है, अथवा वास्तविक उन्नति से क्या तात्पर्य है (या लेखक ने उससे क्या समझा है) ? इसकी समीक्षा के पूर्व यह जानना आवश्यक प्रतीत होता है कि 'उन्नति का ध्येय' क्या है ? प्राणी उन्नति की ओर अग्रसर क्यों होते हैं ? स्वाभाविक रीति से प्रत्येक प्राकृतिक वस्तु में उन्नति कहाँ से और क्यों आ जाती है ? हमारी समझ में उन्नति करना (चाहे वह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उन्नति किसी भी ओर हो) मनुष्य का एक स्वाभाविक धर्म है; क्योंकि यह सबमें ही पाई जाती है । परंतु यहाँ हम उन्नति के इस विस्तृत अर्थ को छोड़ उसके उस अर्थ पर ही विचार करेंगे, जिसमें उसका साधारणतः प्रयोग होता है । हमारी समझ में 'उन्नति का ध्येय' सुख-प्राप्ति है ; क्योंकि सुख-प्राप्ति की कामना स्वाभाविक है, उन्नति उसका स्वाभाविक साधन बन जाती है । उन्नति का परिणाम सुख होता है, या होना चाहिए ; क्योंकि एक व्यक्ति को शारीरिक परिश्रम करने से और उसके परिणाम-स्वरूप स्वस्थ हुए शरीर से सुख होता है । वह इसी में उन्नति माने हुए है, और उसकी अल्प बुद्धि में उन्नति का अर्थ 'शारीरिक उन्नति' है । यही घटना एक धनी, स्वाध्यायशील और आत्मदर्शी के बारे में भी सच है । इन सबने, अपने-अपने विश्वास के अनुसार, अपने सुख को वास्तविक सुख और उसको देनेवाली उन्नति को ही वास्तविक उन्नति मान लिया है ।

जिस प्रकार अभी उन्नति के बारे में हमने कुछ विचार किया है, उसी प्रकार कुछ शब्द हम सुख के बारे में भी लिखना चाहते हैं ; क्योंकि उन्नति और सुख का घनिष्ठ संबंध है । उन्नति का ध्येय सुख-प्राप्ति है । सुख के विषय में भी भाँति-भाँति की कल्पनाएँ हैं । जिस प्रकार उन्नति का अर्थ समझने में भ्रम किया जा रहा है, उसी प्रकार सुख के वास्तविक रूप को न जाननेवाले अज्ञानी लोग क्षणिक सुख में ही स्थायी सुख की कल्पना कर प्रसन्न हो जाते हैं । वह क्षणिक सुख उनकी आँखों में चकाचौंध पैदा कर उन्हें वास्तविक सुख का सुनहरा दृश्य नहीं देखने देता । उन्हें कभी स्वप्न में भी ध्यान नहीं आता कि इससे बढ़कर भी कोई सुख हो सकता है या नहीं । इसके अतिरिक्त कुछ सुख ऐसे होते हैं, जिनका परिणाम दुःख होता है । अज्ञानावृत मन इस बात को नहीं जान पाता कि इस सुख का अंत क्या है ; क्योंकि उस समय उसे सुख हो रहा है, इसलिये वह भविष्य को भुला देता है—मानो वह कवि लाँगफ़ेलो के कथनानुसार भूत-भविष्य को भुलाकर वर्तमान का ही ध्यान रखता हो । इसके बाद यह बात भी सोचने की है कि सुख किसको पहुँचना चाहिए । क्या जो सुख शरीर को पहुँचता है, वही वास्तविक सुख है, या जो अन्य प्रकार से अनुभव किया जाता है ? यद्यपि सुखानुभव करने का साधन एक ही (मन) है, पर उसके विषय अलग-अलग हैं । कोई घटनाएँ हमारे शरीर को आराम देती हैं, और कोई सीधे हमारी आत्मा को सांत्वना । इनमें कौन-सा सुख अभिलषणीय है, कौन-सा नहीं, यह विचार एक नया ही प्रश्न उठा देता है, और वह यह है कि हरएक व्यक्ति सुख किसके लिये चाहता है ?

प्रत्येक व्यक्ति के लिये संसार में सबसे अधिक प्यारी वस्तु उसकी आत्मा है । अपने से बढ़कर प्यारा और कोई नहीं होता । इसलिये आदमी जो कुछ भी सुख चाहता है, वह अपने लिये । ऊपरी दृष्टि से देखने पर चाहे इस बात में विश्वास न हो, परंतु वास्तविक तथ्य यही है । कहा जा सकता है कि पिता और पुत्र अथवा दो अत्यंत घनिष्ठ मित्रों का आपस का प्रेम इतना बढ़ा हुआ होता है कि उनमें से एक दूसरे के सुख के लिये सब कुछ करने को तैयार रहता है । आप दुःख भोगकर भी पिता या माता अपने आत्मज को सुखी बनाने का प्रयत्न करते हैं । परंतु ऐसा कहते समय हम यह भूल जाते हैं कि पिता या माता को, अपने पुत्र को इस प्रकार सुखी देखकर भीतरी आनंद होता है । यही स्वार्थ का स्थान है; क्योंकि पुत्र को सुखी या फलते-फूलते देखकर उसकी आत्मा आनंदित होती है—वह सब प्रकार से उसे सुख पहुँचाने का प्रयत्न करता है । इसमें परमार्थ भी है और स्वार्थ भी । इसी भाव को बृहदारण्यकोपनिषद् में याज्ञवल्क्य ऋषि ने अपनी ब्रह्मवादिनी पत्नी मैत्रेयी को, उदाहरणों की एक लंबी शृंखला द्वारा, समझाया है । संसार के निकटतम-से-निकटतम प्रेमी-युगल को लेकर वह कहते हैं—"मैत्रेयी, यह न समझना कि ये एक दूसरे की तृप्ति के लिये परस्पर प्रेम करते हैं ; अपितु अपनी आत्मा की तृप्ति के लिये ही ऐसा करते हैं । यह समझना भ्रम है कि पति की तृप्ति के लिये पत्नी उससे प्रेम करती है । वास्तव में पत्नी अपनी तृप्ति के लिये ही पति को चाहती है" इत्यादि । इसी प्रकरण में स्वामी रामतीर्थ जी की लिखी हुई एक घटना हमें याद आती है । इसी भाव को समझने के लिये वह एक कथानक लिखते हैं, जो इस प्रकार है—

एक नदी के किनारे एक वृक्ष था, जिस पर बंदर रहा करते थे । एक बार बरसात में उस नदी में बाढ़ आई । पानी ने बढ़कर पेड़ को घेर लिया । बंदर घिर गए, और पानी बढ़ने लगा । जैसे-जैसे पानी बढ़ता गया, बंदर पेड़ पर चढ़ते गए । उन बंदरों में एक बँदरिया भी थी, जिसकी छाती से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक नन्हा-सा बच्चा चिमटा हुआ था। वह और बंदरों के साथ-साथ पेड़ के ऊपर ही चढ़ती जा रही थी। पानी का चढ़ाव न रुका, और धीरे-धीरे पानी उस पेड़ की चोटी तक पहुँचने लगा। बँदरिया पहले तो अपने बच्चे के साथ-ही-साथ ऊपर को चढ़ती गई, पर पीछे से जब उसने देखा कि पानी तो ऊँचा ही होता जाता है, इससे बचना कठिन है, उसने झट अपने बच्चे को अपने नीचे रक्खा, और स्वयं कुछ ऊँची हो गई। संभव है, यह कोई घटना न हो, और स्वामी राम ने दृष्टांत के लिये ही गढ़ी हो; परंतु इससे हमारा वक्तव्य भलीभाँति समझ में आ जाता है। बँदरिया का स्वार्थ-मिश्रित परोपकार ज़ोर मारता रहा; पर जब परीक्षा का कठिन अवसर आया, तो स्वार्थ प्रबल हो गया, और उसकी क़लई खुल गई। हमारे कहने का तात्पर्य यही है कि प्रत्येक व्यक्ति अपने (आत्मा) को सुख पहुँचाना चाहता है। यह 'आप' (आत्मा) क्या है, उसे सुख कैसे पहुँचाया जा सकता है, इस पर गूढ़ दार्शनिक प्रश्न उठ सकते हैं, इसलिये हम इस पर विचार न करेंगे। हमारी समझ में हमारे यहाँ तक के कथन का तात्पर्य स्पष्ट है। सारांश यह कि आदमी को ऐसे स्थायी तथा वास्तविक सुख की अभिलाषा और प्राप्ति का प्रयत्न करना चाहिए, जिससे उसकी आत्मा संतुष्ट हो; क्योंकि आत्मा हमेशा अच्छे कार्यों से संतुष्ट होती है। ऐसा सुख उन्हीं कार्यों से मिल सकता है। ऐसे सुख को पाने के लिये ही प्रत्येक व्यक्ति का प्रयत्न होता है; यही उसकी 'उन्नति का ध्येय' होना चाहिए।

प्रारंभ में उन्नति पर विचार करते हुए हमने बताया था कि उन्नति कई प्रकार की है। उनमें मुख्य आत्मिक, शारीरिक और मानसिक है। संसार का अनुभव बतलाता है कि ये तीनों प्रकार की उन्नतियाँ सुख देनेवाली होती हैं; परंतु तभी, जब सब का एक साथ अनुशीलन किया जाय। यदि एक व्यक्ति एक ओर तो विशेष उन्नत और दूसरी ओर अवनत हो, तो हम न तो उसे उन्नत ही कहेंगे, और न सुखी ही। एक ऐसा विद्वान्, जिसने मानसिक उन्नति की है, लेकिन और उन्नति नहीं, उसका शरीर निर्बल एवं रोगी है, तो वह सुखी नहीं। यही बात अन्य उन्नतियों के बारे में भी सत्य है। इससे यह पता लगा कि सुखी होने के लिये सब प्रकार की उन्नतियाँ करना आवश्यक है, न कि एक प्रकार की। इसके अतिरिक्त एक और प्रश्न उपस्थित होता है। वह यह कि ये सब उन्नतियाँ एक-सा ही फल देनेवाली हैं या न्यूनाधिक। उत्तर स्पष्ट है; क्योंकि सुख आत्मा के लिये चाहा जाता है, इसलिये वह उन्नति, जो सीधी उसे ही सुखी करे, सबसे बढ़कर है।

आत्मोन्नति सब उन्नतियों में मुख्य है, तथा उन्नत कहाने के लिये सब प्रकार की उन्नति का अनुशीलन करना आवश्यक, ये दो सिद्धांत स्थिर कर अब हम प्रकृत विषय पर आते हैं। ये दो कसौटियाँ हैं, जिनसे हम योरप की दशा को परखेंगे, और किसी परिणाम पर पहुँचने का प्रयत्न करेंगे। विचार को पूर्ण एवं रोचक बनाने के लिये हम जगह-जगह प्राचीन एवं अर्वाचीन भारतीय सभ्यता की योरपियन सभ्यता से तुलना करेंगे। हमारे प्रश्न का दूसरा रूप यह हो सकता है कि प्राचीन भारत की सभ्यता उन्नति की ओर ले जानेवाली थी, अथवा आधुनिक योरप की सभ्यता है?

इस बात में किसी को संदेह नहीं हो सकता कि योरप और अमेरिका ने प्राकृतिक जगत् में आज आशातीत उन्नति कर रक्खी है। हज़ारों आश्चर्यमय आविष्कार हो चुके हैं, और होते रहते हैं। वहाँ के रहनेवालों का कहना है कि प्रकृति बुद्धिमान् मनुष्य के उपभोग की सामग्री का ख़ज़ाना है, वह मनुष्य की दासी है, मनुष्य उस पर पूर्ण अधिकार प्राप्त कर सकता है, और मनुष्य की बुद्धि आदि सब शक्तियाँ इस अधिकार के पाने में ही लगनी चाहिए। प्रकृति की शक्तियों को वशीभूत करने में ही उनकी सारी शक्ति लग रही है, या यों कहिए कि प्रकृति और उनके बीच युद्ध ठना हुआ है। विस्तृत भूमितल पर उनका राज्य स्थापित हो चुका है। उसका कोना-कोना उन्होंने छान डाला है। अनेक प्रकार की सवारियाँ निकालकर उन्होंने पृथिवी के विस्तार को निष्फल कर दिया है। उधर समुद्र की विशाल छाती पर विना रोक-टोक के यातायात किया जाता है। उसकी भयंकर लहरें और गहराई उनके हृदयों को नहीं डरा सकतीं। उन्हें इस बात की परवा नहीं कि उनका जीवन रहेगा या नहीं; वे तब तक न रुकेंगे, जब तक समुद्र उनके सामने अगस्त्य ऋषि के दास की तरह हाथ जोड़कर खड़ा न हो जायगा। तरह-तरह के जहाज़ों का आविष्कार होता जा रहा है। तीसरी ओर हवा के साम्राज्य पर भी धावा बोल दिया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गया है। यदि स्थल से नहीं तो जल से, और जल से नहीं तो आकाश से, जहाँ चाहें आ-जा सकते हैं ; क्योंकि ज़मीन पर उतनी तेज़ी से नहीं चला जा सकता था। समुद्र का रास्ता निकाला गया ; पर जब उससे भी काम न चला, तो हवा से ठन गई। अब वहीं से डाक और यात्री आया-जाया करेंगे। वायुयान का आविष्कार साधारण घटना नहीं है ; परंतु अन्य बातों की ओर देखिए, इससे भी बढ़कर आश्चर्यमय सफलताएँ प्राप्त की गई हैं। साइंस के एक-एक पृष्ठ को देखकर दाँतों-तले अँगुली दबानी पड़ती है। अभी तक तो बेतार के तार द्वारा बातचीत ही हो सकती थी ; पर अब उसके द्वारा आदमियों की प्रतिकृतियाँ भी देखी जा सकेंगी। यदि प्रेयसी अमेरिका में है और प्रेमी इँगलैंड में, तो यह कई हज़ार मील का अंतर उन्हें विरह का कष्ट नहीं दे सकता। इतनी दूरी से भी वे एक दूसरे के दर्शन कर नेत्रों को तृप्त कर सकते हैं। यह आवश्यकता नहीं कि अमेरिका की प्रसिद्ध नाटक-मंडली इँगलैंड जाकर ही अपने कौशल का परिचय दे। अमेरिका में अभिनय किया जायगा, और लंदन के आदमी देख सकेंगे। और देखिए, भारतवर्ष में बैठे हुए ही इँगलैंड और अमेरिका के प्रोफ़ेसरों के व्याख्यान सुनने को मिल जायँगे ; कैंब्रिज और ऑक्सफ़ोर्ड न जाना पड़ेगा। बतलाइए, कितनी सहूलियत होती जा रही है ! समय बचा, रुपया बचा, और असुविधा से पीछा छूटा। अब तो भारत पर भी कृपा-दृष्टि होती जा रही है। लखनऊ और आगरे में बैठे हुए ही आप बंबई और कलकत्ते का गाना-बजाना सुन सकते और वहाँ से बातचीत कर सकते हैं। पिछले दिसंबर की बात है, कनाडा-साम्राज्य ने अपनी शताब्दी मनाई थी। उसके प्रारंभ में बजने के लिये एक घंटा बनाया गया था। वह घंटा पंचम जॉर्ज ने इँगलैंड में बैठे हुए ही बजाया था। बटन दबाया लंदन में, और घंटा बजा कनाडा में !

दूसरी ओर प्रयत्न किया जा रहा है कि प्रकृति के अन्य साम्राज्यों का भी निरीक्षण किया जाय। साहसी लोग चंद्र और बृहस्पति तक उड़कर जाने की फ़िक्र में हैं। असफलता होती है ; पर वे अपनी धुन से बाज़ नहीं आते। यहीं तक नहीं, नक़ली दूध और घी आदि तो बन गए, और काम में भी आने लगे, अब कोशिश इस बात की है कि मनुष्य बनाया जाय। बस, जब मनुष्य बन गया, उसमें जीवन डाल दिया गया और जीवन का रहस्य समझ में आगया, तो फिर क्या बचा ? जन्म-मरण पर विजय पाना उन्नति की अंतिम सीढ़ी है।

यह सत्य है कि यह सब रुपए का ही खेल है। पर रुपया भी इनका दास है। मिट्टी से ये ही रुपया बनाते हैं, और वह रुपया जादूगर का-सा नहीं, सचमुच का। इन्हें ख़ज़ाने की बू आनी चाहिए, फिर कौन रोक सकता है ? पृथिवी के भीतर और समुद्र के तट पर डाका मारना इन्हीं के बाँट में आया है। फल यह है कि संसार का रुपया उधर ही सिमटता चला जा रहा है। चुंबक चुंबक को खींचता ही है। दुनिया के सबसे बड़े धनाढ्यों के दर्शन करने हों, तो अमेरिका और योरप की तीर्थ-यात्रा करो। कारनेगी की मृत्यु के बाद अब मि० हेनरी फ़ोर्ड संसार में सबसे अधिक धनी हैं। गत वर्ष इन्होंने अपनी पुत्री के विवाह में ६० करोड़ रुपए का दहेज़ दिया था। यह है रुपए की गर्मी और बुद्धि एवं साहस का मीठा फल। कहाँ तक लिखें, आज जहाँ भारतवासियों को भर-पेट रोटी नहीं मिलती, वहाँ अमेरिका में प्रति दस व्यक्तियों में एक के पास मोटर है ! शिक्षा का हाल यह है कि सौ में सौ पढ़े मिल सकते हैं। फिर कौन होगा, जो इन्हें उन्नत न कहे ?

परंतु यह तसवीर का एक रुख़ है। दूसरी ओर भी तो देखना चाहिए, क्या हाल है। हम फिर वही प्रश्न उठावेंगे कि क्या योरप और अमेरिका ने इस दौड़-धूप से सच्चे सुख का स्रोत पा लिया ? यहाँ हम अपने पाठकों को एक बात से सावधान कर देना चाहते हैं। वे हमारे विचारों को पढ़ते समय भारत की वर्तमान दशा की योरप की वर्तमान दशा से तुलना न करें। ऐसा करने से हमारे भाव समझ में नहीं आवेंगे, और संभव है, भ्रमोत्पादक भी प्रतीत हों। हम मानते हैं कि वे लोग आज हमसे अधिक सुखी हैं ; लेकिन हमारा प्रश्न है कि क्या वे वास्तव में आदर्श सुख भोग रहे हैं ? योरप की इस उन्नति का अंत क्या है ? आज योरप जो उन्नति कर रहा है, वह भौतिक (Material) है। यह कभी संभव नहीं कि इस प्रकार की उन्नति उसे सुख दे सके। आत्मिक सुख और भावी सुख की बात तो जाने दीजिए, वर्तमान समय में भी उन्हें सुखी नहीं कहा जा सकता। वासनाओं और सांसारिक तृष्णाओं की प्यास कभी बुझाई नहीं जा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सकती । यदि उसको बुझाना हो, तो उन्हें प्रारंभ में ही दबाना चाहिए । एक बार उन्हें भोग कर फिर दबाने का स्वप्न स्वप्न ही है । मनु ने लिखा है—

न जातु कामः कामानामुपभोगेन शाम्यति ;
हविषा कृष्णवर्त्मेव भूयएवाभिवर्धते ।
(मनु० अ० २)

जिस प्रकार घी की आहुति से आग बढ़ती है, उसी प्रकार भोग से या भोग की सामग्री से तृष्णा । जब तक तृष्णा शांत न हो, सुख नहीं मिल सकता । आज योरप की हालत यही है । जितना ही अधिक वह भौतिक उन्नति में फँसेगा, उतना ही आत्मिक (वास्तविक) सुख से दूर होता जायगा, और सांसारिक सुख भी पूर्ण रूप से नहीं भोग सकेगा । योरप की वर्तमान अवस्था पर विचार कीजिए । आज वहाँ के निवासियों की इच्छा क्या है ? उनकी बुद्धि और प्रयत्न किधर लगे हुए हैं ! प्रत्येक व्यक्ति चाहता है कि मैं अधिक-से-अधिक रुपए प्राप्त कर अच्छे-से-अच्छे भोग भोग सकूँ । इस इच्छा की तृप्ति के लिये उसे सब कुछ करना पड़ता है । उसे धर्म-अधर्म या पाप-पुण्य का ध्यान नहीं रहता । उसे तो किसी तरह धन प्राप्त करना है । वह झूठ बोलता है, धोका देता है, ठगता है, और इन उपायों से रुपए प्राप्त करता है, ऐश्वर्य भोगता है । जो बात एक-एक व्यक्ति के बारे में सत्य है, वही समूचे राष्ट्र के बारे में भी । आज संपूर्ण पाश्चात्य राष्ट्रों की धुन यही है कि किस तरह अपनी संपत्ति और राज्य का विस्तार बढ़ाया जाय, चाहे वह किसी तरह हो । गत महायुद्ध इसी प्रकार के लालच का भयंकर परिणाम था । उससे योरपियन सभ्यता किधर जा रही है, उन्नति की ओर या अवनति की ओर, इसका अनुमान भलीभाँति हो जाता है । देखिए, योरप की प्राकृतिक उन्नति का परिणाम क्या होता है ! जर्मनी के विज्ञानवेत्ता अपनी बुद्धि इस बात में ख़र्च करते हैं कि किस प्रकार अधिक-से-अधिक आदमी मारे जा सकें । भयंकर-से-भयंकर अस्त्र-शस्त्रों, ७५ मील तक गोला फेकनेवाली तोपों, शहर-के-शहर तबाह करनेवाले वायुयानों और विषैली गैसों का आविष्कार भी इन्हीं उर्वर मस्तिष्कों का काम था । इस युद्ध में कितने आदमी काम आए, कितना रुपया बिगड़ा, कितने नगर उजड़े, कितने मंदिर और पुस्तकालय ढाए गए, यह विचारने से रोंगटे खड़े हो जाते हैं । जब धन और जन की शक्ति जाती रही, तो युद्ध रोका गया, और लगे करने संधि तथा शांति की बातें । सब राज्य संसार में शांति का अटल झंडा गाड़ने के गीत गाते और भविष्य में युद्ध न करने की दुहाई देते हैं । संधि-कानफ्रेंस में मि० उड्रो विल्सन (अमेरिका के भूतपूर्व राष्ट्रपति) १४ शर्तें पेश करते हैं । भिन्न-भिन्न राष्ट्रों के प्रतिनिधि उन्हें उस समय तो मान लेते हैं, परंतु जब वहाँ से बिदा होकर अपने-अपने देशों के स्वार्थपूर्ण, विषैले-वायुमंडल में पहुँचते तथा मंत्रियों से परामर्श करते हैं, तो उनका दिमाग़ बदल जाता है । बेचारे उड्रो विल्सन की १४ शर्तें मिट्टी में मिल जाती हैं । शांति किस प्रकार हो सकती है, जब तक कि अपने मन में शांति न हो । अरे, राज्य बढ़ाने की स्वार्थ-पूर्ण लालसा को वशीभूत करो, शांति-ही-शांति दृष्टिगोचर होगी । मन में तो पाप छिपा है, पुण्य की दुहाई दी जाती है । राष्ट्र-संघ (League of Nations) की स्थापना की गई है ; परंतु क्या कोई कह सकता है कि इसमें सफलता होगी ? सब अपने स्वार्थ का ध्यान रखते हैं । जहाँ उसमें रुकावट हुई, सब संघ धरे रह जायँगे, और फिर लगेगी लड़ाई ठनने । यह समझना कि योरप में शांति हो गई, बुद्धिमान् का काम नहीं है । भौतिक उन्नति का फल ही अशांति और युद्ध है । बबूल बोकर आम किस प्रकार मिल सकते हैं ? जहाज़ों के कम करने का प्रश्न कब से चल रहा है ? समझौता क्यों नहीं होता ? जब इँगलैंड ने देखा कि कहीं अपने जहाज़ों को कम करने की नौबत न आ जाय, तब भारतवर्ष को जहाज़ी बेड़ा रखने की आज्ञा दे दी । अगर उधर से कमी पड़े, तो इनको मिलाकर तो पूरे हो जायँगे । सच पूछा जाय, तो आज इन पाश्चात्य राष्ट्रों ने राजनीति को असत्य और छल-कपट का साधन बना रक्खा है । कहा जाता है, 'राजनीति में झूठ दोष की बात नहीं मानी जाता ।' यही क्यों न कह दो कि झूठ कहीं भी दोष नहीं होता । पूरा मतलब तो तभी हल होगा । इँगलैंड के एक विख्यात राजनीतिज्ञ ने कहा था—"राजनीति वही है, जिससे किसी साम्राज्य के स्वार्थ पूरे हों ।" अच्छा महाराज ! आप उन्नत हैं, जो कहें, वही ठीक ।

यह इन उन्नत राष्ट्रों की दशा का एक पहलू है । अन्य पहलुओं पर विचार करने पर भी हम इसी परिणाम पर पहुँचते हैं । हम यह कहने में कभी न हिचकेंगे कि योरप की सामाजिक दशा हमारी समझ में उन्नत नहीं है । हिंदुओं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के लिये कहा जाता है, इनकी वर्ण-व्यवस्था बहुत बुरी है। उच्च वर्ण के हिंदू नीच वर्णवालों को पशु से भी गया-बीता समझते और उनसे बहुत बुरा व्यवहार करते हैं। बिलकुल सच है, और इस वर्ण-व्यवस्था का जितनी जल्दी हो सके, नाश किया जाय। परंतु यह दोष केवल भारतवर्ष तक ही सीमित नहीं। उसके सिवा सभ्य देशों में भी किसी-न-किसी रूप में यह दोष विद्यमान है। आज से डेढ़ सौ वर्ष पूर्व यह उच्च और नीच का भाव फ्रांस में बड़ा ग़ज़ब ढा रहा था। वहाँ के सरदार (Nobles) सर्फ़ (Serfs) लोगों को सचेतन प्राणी नहीं समझते थे। उन पर सरदारों के किए हुए अत्याचारों को पढ़ रोमांच हो आता है। फ्रांस का जग-प्रसिद्ध विप्लव उसी का आवश्यक परिणाम था। यह नहीं कि यह बात योरप में पुरानी हो गई हो, और अब दृष्टिगोचर न होती हो। ज़माना बदल गया है। आज उतना अत्याचार संभव नहीं। फिर भी जितना हो सकता है, उसका उदाहरण पूँजीपतियों (Capitalists) और मज़दूरों (Labourers) की समस्या में दिखाई देता है। अकेले इँगलैंड में ही नहीं, पश्चिम के सभी देशों में यह प्रश्न उपस्थित है। पूँजीपतियों की धन-लोलुपता चरम सीमा तक पहुँच गई है। वे चाहते हैं कि मज़दूरों से अधिक-से-अधिक काम लेकर अधिक-से-अधिक रुपया कमाया जाय। मामला अड़ता है काम के घंटों पर आकर। मज़दूर आख़िरकार आदमी हैं, उनकी शारीरिक शक्ति परिमित है। वे कहते हैं, हम दिन में ७-८ घंटे से अधिक काम नहीं करेंगे। परंतु पूँजीपति कहते हैं, हम तुमसे ९-१० घंटे काम लेंगे और वेतन भी न बढ़ावेंगे। परिणाम हड़ताल के रूप में देख पड़ता है। अभी कुछ मास पूर्व इँगलैंड में कोयले की खानों में काम करनेवालों ने छः सप्ताह तक काम बंद कर रक्खा था। इस हड़ताल में लगभग ४० लाख मनुष्य सम्मिलित थे। इँगलैंड के बड़े-बड़े दिमाग़वाले इस पूँजीपति और मज़दूरों की समस्या से घबराए हुए हैं। उन्हें इसका कोई समाधान नहीं दिखलाई पड़ता। स्वार्थ और धन की लोलुपता एवं विषय-भोग में कमी करो, तो इसका समाधान हो सकता है। रूस में मामला बहुत दूर तक पहुँच गया था। वही हुआ, जो होना था। साम्यवाद और बोल्शेविज़्म इन्हीं बीमारियों की दवाएँ हैं। परंतु ये सब तब तक व्यर्थ हैं, जब तक इन धनियों के भीतर दया और न्याय के भाव उदित न हों। समाज और देश की शांति तो मानसिक शांति पर निर्भर है। मानसिक संतोष हो, तो सब जगह शांति हो जाय। यदि सब व्यक्ति अपने-अपने न्यायोचित अधिकार को पाकर ही संतुष्ट हो जायँ, तो समाज में सब जगह शांति का अटल साम्राज्य स्थापित हो जाय।

योरप और अमेरिका में स्त्री-पुरुष का संबंध भी एक रोचक बात है, और वह वहाँ की उन्नति पर अच्छा प्रकाश डालती है। योरप इस बात का दावा करता है कि वह स्त्री और पुरुष में कुछ भेद नहीं मानता। स्त्री-जाति समाज में उसी स्वतंत्रता की अधिकारिणी है, जिसकी पुरुष-जाति। भारतवर्ष की तरह वहाँ पर्दे की कुप्रथा नहीं। यहाँ की तरह वहाँ की स्त्रियाँ अपढ़ और दक़ियानूसी विचारोंवाली नहीं होतीं। उन्हें पता होता है कि उनके देश में—नहीं-नहीं, संसार में क्या हो रहा है। यदि यहाँ स्त्रियाँ पुरुषों का आदर करती हैं, तो वहाँ पुरुष स्त्रियों का। वहाँ पति अपनी पत्नी को दाहनी ओर बैठावेगा, और उतरते समय पहले उतरकर देवीजी को हाथ पकड़ कर उतारेगा। यदि एक स्त्री मार्ग में जा रही हो, तो पुरुष रास्ता देंगे, और अपना टोप उतारकर सम्मान प्रदर्शित करेंगे। सारांश यह कि वहाँ स्त्रियों की स्थिति पुरुषों के बराबर, बल्कि उनसे ऊँची है।

हम स्त्रियों के इस अधिकार पाने से ईर्ष्या नहीं करते। परंतु अपनी तुच्छ बुद्धि के अनुसार इसे सामाजिक शांति और गृहस्थ-सुख के लिये हानिकर अवश्य समझते हैं। अधिक न लिखकर हम यही कहेंगे कि पुरुष और स्त्री के भेद—एक का बली और दूसरे का कम बली होना, एक का रक्षा करना और दूसरे का उस पर निर्भर रहना और एक का बढ़कर तथा दूसरे का दबकर रहना—प्राकृतिक भेद हैं। इसके अपवाद हो सकते हैं; परंतु अधिकांश में यह बात सच है। इसके अतिरिक्त बिना इस प्रकार के संबंध के गृहस्थ-सुख आसान न रहेगा। शांति के लिये एक की प्रमुखता, चाहे वह किसी प्रकार की हो, आवश्यक है। इँगलैंड में जब स्त्रियाँ चेतीं, तो उन्होंने चाहा कि वे राजनीतिक क्षेत्र में भी पुरुषों से पीछे न रहें। बड़ा भारी आंदोलन उठा। स्त्रियों ने अनेक ऐसे कार्य किए, जो स्त्री-जनोचित नहीं कहे जा सकते। वे स्वाभाविक नम्रता को तिलांजलि दे बलवाई पुरुष बन बैठीं। जब देखा, पुरुष हमारी नहीं सुनते, तो उनपर धावे शुरू कर दिए। पार्लिया-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मेंट तथा अन्य भवनों के शीशे तोड़ डाले। मोटर में जाते हुए प्रधान सचिव को रोक कर उनकी ख़बर ली, और प्रतिज्ञा कराई कि वह पार्लियामेंट में स्त्रियों को अधिकार दिलाने का प्रयत्न करेंगे। पुरुष डर गए, और स्त्रियों को राजनीतिक क्षमता या समता मिल गई। हम स्त्रियों की इस राजनीतिक बराबरी के विरोधी नहीं; परंतु उनके इस साहसिक कार्य की निंदा अवश्य करेंगे। स्त्रियों की स्वतंत्रता का यह तात्पर्य नहीं। आज योरप स्त्रियों पर लट्टू है। उन्हें तरह-तरह से सजाने का उपाय करता है। पेरिस इस बात के लिये प्रसिद्ध है कि वहाँ प्रति दिन एक नए फ़ैशन की पोशाक निकलती है। सहस्रों स्त्री-पुरुष अपना तन, मन, धन इसी के अर्पण किए हुए हैं। स्त्रियाँ तरह-तरह से सजकर सायंकाल नाच-गृहों में जाकर ग्रेमियों के नेत्र तृप्त करती हैं। बड़ी-बड़ी दूकानों पर सामान दिखाने और ग्राहकों को आकर्षित करने के लिये युवतियाँ रक्खी जाती हैं। योरपियन स्त्रियों की वेष-भूषा, उनकी सीमा से बढ़ी हुई स्वतंत्रता, पुरुषों के साथ स्वतंत्र हो कर रहना, विवाह से पूर्व कोर्टशिप (Courtship) की प्रथा, स्त्री-पुरुषों की रबर की प्रतिकृति बनाना और संतानोत्पत्ति-निग्रह के उपाय (Conteraceptives) आदि बातों के विषय में हम अधिक लिखना उचित नहीं समझते; परंतु इतना कह सकते हैं कि ये सब भोग-वृद्धि के साधन और अधोगति के चिह्न हैं। आज अमेरिका और योरप इनके शिकार बने हुए हैं। चकाचौंध ने इनकी आँखों को असमर्थ कर दिया है।

तलाक़ (Divorce) की प्रथा भी योरप के माथे पर एक कलंक है। इँगलैंड में कुछ वर्ष पहले साल में तलाक़ के सौ मामले होते थे; लेकिन अब उनकी संख्या प्रति वर्ष एक सहस्र हो गई है। तलाक़ देनेवालों में से ७५ प्रति शतक व्यक्ति इसलिये तलाक़ देते हैं कि उन्हें नवीन जोड़ा मिल सके। तलाक़ के कारणों को देखने से इसकी सत्यता प्रकट हो जायगी। स्त्री अपने पति को छोड़ देती है; क्योंकि उसका पति रात को सोते समय ख़र्राटे भरता और स्त्री की निद्रा में विघ्न डालता है। पुरुष स्त्री को छोड़ देता है; क्योंकि उसकी स्त्री के दाँत सुंदर नहीं हैं; जब वह हँसती है, पतिदेव को प्रसन्नता नहीं होती। ऐसे कारणों से तलाक़ दे देना विवाह-संबंध का मख़ौल करना है। कहाँ पवित्र पति-पत्नी-संबंध, और कहाँ यह निर्लज्जता-पूर्ण कर्म? ख़बर है, इँगलैंड की तलाक़ की कचहरियों की संख्या ख़ूब बढ़ रही है। इस समय वहाँ ५०० के लगभग ऐसी कचहरियाँ हैं। भारतवर्ष आज आदर्श देश नहीं है; परंतु फिर भी यह अभी विवाह-संबंध को एक पवित्र नाता मानता है। भारत की देवी ग़रीब-से-ग़रीब, कुपढ़-से-कुपढ़ और रोगी-से-रोगी पति की सेवा करने में अभिमान करती है, और समझती है कि इसके द्वारा वह मुक्ति प्राप्त करेगी। पति की चिता पर सती होना यहीं की स्त्रियों के हिस्से आया था, और आदर्श विधवा का जीवन बिताना ये ही देवियाँ जानती हैं। आज भारत में चाहे स्त्रियों की कुछ दशा हो, पर पिछले इतिहास पर दृष्टि डालिए, ये उन्नत देश भारत की प्राचीन सभ्यता के पास भी नहीं पहुँच पाए हैं। ये क्या स्त्रियों का आदर करेंगे? अपने शास्त्रों को देखिए, स्त्रियों के लिये कैसे भाव दिखाए गए हैं। मनु लिखते हैं—

यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः;
यत्रैतास्तु न पूज्यन्ते सर्वास्तत्राफलाः क्रियाः।

"जिस घर में देवियों की पूजा होती है, वहाँ आकर देवता वास करते हैं। और, जहाँ उनकी पूजा नहीं होती, वहाँ की सब क्रियाएँ असफल होती हैं।"

जब यहाँ पर्दा न था, स्त्रियाँ शिक्षिता थीं, और प्रत्येक कार्य में पति का साथ देती थीं, यहाँ कुछ और ही दृश्य था। यहाँ की स्त्रियाँ राजनीति में भी भाग लेती थीं, और उससे बढ़कर वे 'ब्रह्म-विद्या'-जैसे गूढ़ विषय में भी रुचि रखती थीं। गार्गी और मैत्रेयी का नाम इसी लिये अमर हो गया है। यज्ञादि पवित्र कार्यों में वे पति के साथ रहती थीं। वह कर्म अधूरा रहता था, जिसमें पति और पत्नी, दोनों का सहयोग न हो। परंतु यह सब होते हुए भी वे आधुनिक योरपियन स्त्री से भिन्न थीं।

इस प्रकार योरपियन लोगों के सामाजिक अथवा वैयक्तिक जीवन के किसी भी पहलू को देख लीजिए, सबमें आपको भोग-विलास एवं भौतिक उन्नति की प्रधानता मिलेगी। प्राचीन काल में भारतीयों ने जीवन की प्रहेलिका को हल करने के लिये उसे चार भागों में विभक्त किया था। प्रारंभिक अवस्था में एक बालक युवा होने तक ब्रह्मचर्य के अपूर्व नियमों का पालन करता हुआ कठोर तपस्या का जीवन व्यतीत करता था। Simple living and high thinking की कहावत उसी के जीवन में चरितार्थ होती थी। आज के भोगी विद्यार्थी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस बात का मख़ौल करेंगे कि वे लोग जंगल में रहते थे, गऊ पालते थे और गुरु-सेवा कर भिक्षावृत्ति से निर्वाह करते थे। परंतु इस प्रकार के जीवन द्वारा वे जिस उच्च भविष्य जीवन की नींव डालते थे, उसका आज के विद्यार्थी स्वप्न भी नहीं देख सकते। उस शिक्षा से उनका सर्वतोमुख विकास (Harmonious development) होता था। शरीर स्वस्थ, मन पवित्र एवं शिक्षित होता था।

आज पाश्चात्य सभ्यता का सिद्धांत है कि किसी ऐसी बात से, जिससे वर्तमान काल में लाभ न हो, या जिसका इसी जीवन से संबंध न हो, किसी का कुछ भी प्रयोजन नहीं हो सकता। वे कहते हैं कि आत्मा, परमात्मा हमें दिखाई नहीं देते, उनसे हमें क्या प्रयोजन, उनके संबंध में विचार कर समय क्यों नष्ट किया जाय, इत्यादि। यह सिद्धांत आगे बढ़कर सत्यासत्य एवं पाप-पुण्य में भी भेद नहीं करता। इस प्रकार के विचार से संपूर्ण वायु-मंडल दूषित हो जाता है, और उसमें साँस लेनेवाले उसके प्रभाव से नहीं बच पाते। बालकपन से ही उसका असर होता है, और जब लड़के बड़े होते हैं, उनका जीवन अपने-आप वैसा ही बन जाता है। उनके सामने पुण्यापुण्य का प्रश्न ही नहीं आता। यह दशा है आजकल योरपियन सभ्यता में पले विद्यार्थियों की। योरप के विद्यार्थी आज भारतीय विद्यार्थियों से अच्छे भले ही हों, लेकिन वे आदर्श से कहीं दूर हैं। वहाँ के गुरु-शिष्य के संबंध को देखकर हमें हँसी आती है। रूस की घटना है। वहाँ के एक विद्यार्थी ने अनुत्तीर्ण होने के कारण परीक्षक को गोली का निशाना बना दिया था। योरप के बड़े-बड़े मस्तिष्क शिक्षा की समस्या को हल करने में लगे हुए हैं। तरह-तरह से उसपर विचार किया जाता है; लेकिन कोई उपाय नहीं निकलता, जिससे छात्रों का सर्वतोमुख विकास हो सके। गृहस्थाश्रम का चित्र हम ऊपर खींच चुके हैं। वानप्रस्थ और संन्यास की तो योरप में चर्चा ही नहीं है। हो कहाँ से, इनमें तो इंद्रिय-संयम के साथ तपस्या का जीवन व्यतीत करना होता है। संन्यासी को भोगमय सांसारिक जीवन को लात मारकर संपूर्ण संसार को एक ही उदार दृष्टि से देखना होता है। यह तो प्राचीन भारत का ही आदर्श था। आज यदि योरप में यह प्रथा चल पड़े, तो वहाँवाले इसे एकदम 'पागलपन' क़रार दे दें। योरप का जीवन तो शंकर के "वृद्धो याति गृहीत्वा दण्डं तदपि न मुञ्चत्याशापिण्डम्" इस कथन को चरितार्थ कर रहा है।

इधर प्राचीन भारत का आदर्श देखिए। जीवन की चाहे कोई सीढ़ी हो, आचार, सत्य, पुण्य, पाप आदि का विचार दूर न होने पाता था। सांसारिक उन्नति के साथ-साथ आत्मोन्नति से उन्हें अधिक प्रेम था, और उन्होंने इस के मीठे फल का आस्वादन किया था। योरपियन ऐतिहासिक और उनके अनुयायी आज यह कहकर कि प्राचीन भारतीय जंगल में रहते और गउएँ आदि चराते थे, उनको राजनीतिक ज्ञान न था, ग्रामों के अतिरिक्त बड़े-बड़े नगर न थे, तन ढकने के लिये पर्याप्त वस्त्र न थे*, उनका मख़ौल भले ही उड़ावें; परंतु हम तो गौरव इसी में समझते हैं कि उन्होंने दुनिया की पहेली को उसके वास्तविक रूप में देखा था। उन्होंने भौतिक उन्नति को तुच्छ एवं दुःखांत समझा था। उन्हों अपने ज्ञान से सच्ची उन्नति और सच्चे सुख के स्रोत को ढूँढ निकाला था। भौतिक उन्नति को तो वे 'प्रेय' † कहकर उसे मूढ़ पुरुषों का आकर्षक बताते थे। धीर पुरुषों के मार्ग को वे 'श्रेय' के नाम से पुकारते थे। उनकी शिक्षा और जीवन जानना हो, तो उपनिषदों को पढ़िए। नंगे और भूखे रहते हुए भी वे सुखी, पूर्ण सुखी और वास्तविक सुखी थे। वह समय अश्लील उपन्यासों और नाटकों का न होकर उपनिषदों एवं धर्मग्रंथों का था। इस समय यदि दुनिया के इस कोने से उस कोने तक बात होती है, तो वे इससे भी दूर 'निराकार प्रभु' से वार्तालाप कर सकते थे। यह था ऋषि-मुनियों का जीवन, और इससे प्रभावित होता था गृहस्थ तथा सांसारिक पुरुषों का जीवन। संपूर्ण समाज सुख एवं शांति का जीवन व्यतीत करता था। महर्षि नारद राजा अश्वपति के यहाँ आकर कहते हैं—"राजन्, मैं तुम्हारा अतिथि होकर तभी रह सकता हूँ, जब तुम्हारे राज्य में अधर्मी, चोर, डाकू आदि न हों।"

* हम अधिक विचार किसी आगामी लेख के लिये छोड़ यहाँ केवल संकेत कर देना चाहते हैं कि प्राचीन भारतीयों ने सांसारिक उन्नति भी पर्याप्त की थी। रामायण और महाभारत के नगरों का मान-चित्र लंदन और पेरिस के इंजीनियरों से नहीं बनवाया गया था। उनमें जिन वस्त्रों का वर्णन है, वे मैंचेस्टर से नहीं आए थे; जिन शस्त्रास्त्रों का ज़िक्र है, वे जर्मनी में नहीं बने थे। पुष्पक आदि विमान क का स्वप्न नहीं हैं।

† श्रेयश्च प्रेयश्च मनुष्यमेतस्तौ संपरीत्य विविनक्ति धीरः; श्रेयो हि धीरोऽभिप्रेयसो वृणीते प्रेयो मन्दो योगक्षेमाद्वृणीते।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अश्वपति उत्तर देते हैं।—"महाराज!

"न मे स्तेनो जनपदे न कदर्यो न मद्यपः ;
नानाहिताग्निर्नाविद्वान् न स्वैरी स्वैरिणी कुतः।"

मेरे राज्य में चोर नहीं, कंजूस नहीं, अग्निहोत्र न करने-वाला नहीं, अविद्वान् नहीं, व्यभिचारी नहीं, फिर व्यभिचारिणी कहाँ से होंगी? दूसरी ओर मनु कहता है—"आर्यावर्त्त-देश के ब्राह्मण से पृथिवी-भर के प्राणी अपने-अपने चरित्र सुधारने का पाठ पढ़ें।" * इन कथनों को अभिमानोक्ति या कवि-कल्पना क़रार देना निरा पक्षपात होगा। आज योरप अथवा अमेरिका का कोई देश ऐसा आदर्श उपस्थित करे! क्या कोई भी राजा अपने राज्य के लिये अश्वपति की तरह दावा कर सकता है? देश के लिये तो दूर रहा, अपने व्यक्तित्व के लिये भी वैसा कहने का साहस नहीं कर सकते।

यह भेद है आत्मिक और भौतिक उन्नति में, तथा यही भेद है प्राचीन भारतीय सभ्यता और आधुनिक योरपियन सभ्यता में। योरप और उसके हिमायती विचारें, कौन-सा मार्ग उन्नति की ओर ले जायगा!

एक आदर्श विद्यालय

[लेखक, श्रीयुत रघुवीरसिंह बी० ए०]

पाश्चात्य देशों की शिक्षा-प्रणाली में, समय तथा आवश्यकता के अनुकूल, अनेकानेक परिवर्तन होते रहते हैं, और वस्तुतः उनकी वर्तमान शिक्षा उनके पूर्वजों के उन कई शताब्दियों के निरंतर परिश्रम का फल है, जो उन्होंने अपनी संतानों में निज सभ्यता, आचार-विचार और आदर्श-प्रचार के निमित्त किया था।

प्राचीन पाश्चात्य विश्वविद्यालय वहाँ के दिग्गज महानुभाव गुरुओं की आकर्षण शक्ति के द्वारा स्थापित हुए थे, जहाँ केवल एक ही देश से नहीं, वरन् समस्त भूमंडल से जिज्ञासु आते थे। वे स्थान देश की विद्या और सभ्यता के केंद्र होते थे। प्रतिभा-संपन्न पुरुष किसी विशेष स्थान पर राजाज्ञा तथा धनाभिलाषा से नहीं, वरन् ज्ञान तथा विद्या-वृद्धि के निमित्त पारस्परिक सम्मेलन अनिवार्य समझ एकत्रित होते थे। केवल उन्हीं को गुरु-सहवास का शुभ अवसर प्राप्त होता था, जिनको सत्य से प्रेम, आचार्याज्ञा में तत्परता तथा गुरु की सब प्रकार की सेवा में प्रगाढ़ भक्ति होती थी, और जिन्हें गुरु विद्या का पात्र समझते थे। ऐसे ज्ञान और सभ्यता के केंद्र कई शताब्दियों तक नाना प्रकार की विघ्न-बाधाओं को सहन करते हुए येन-केन प्रकारेण अपना अस्तित्व अवशिष्ट रख सके। इन संस्थाओं से निकले हुए कतिपय विद्वानों ने अपने अथक परिश्रम से संसार की जो ज्ञान-वृद्धि की है, उसका जगत् ऋणी है, और ऐसे व्यक्तियों का नाम सदैव अमर रहेगा। भारतवर्ष के नालंदा, काशी और तक्षशिला के विश्वविद्यालय भी, जो प्राचीनतम हैं, इसी मंतव्य से स्थापित हुए थे। इनमें भी बड़े-बड़े दिग्गज विद्वान् निवास करते थे, और वे अपने नूतन ज्ञान तथा जीवन के आदर्शों का अपने शिष्यों में प्रचार करते थे।

प्रारंभ में शिक्षा-कार्य पुरोहितों के हाथ में था, अतः शिक्षा का अधिकांश भाग धार्मिक विचारों से परिपूर्ण रहता था। किंतु ज्यों-ज्यों मनुष्य का मस्तिष्क परिष्कृत होने लगा, त्यों-त्यों जन-समुदाय प्राकृतिक ज्ञानान्वेषण की ओर आकृष्ट हुआ। कुछ काल के उपरांत मनुष्य ने प्राकृतिक शक्तियों को वशीभूत करना आरंभ किया, और जैसे-जैसे वैज्ञानिक अन्वेषण की उमंग बढ़ती गई, सब देशों में ऐसे अनेकों महानुभावों ने जन्म लिया, जिन्होंने अनेकानेक आपदाओं से युद्ध करते हुए प्रकृति के गुप्त रहस्य को जान लिया, और मनुष्य-जाति की सेवा और सुख के निमित्त सभी प्राकृतिक शक्तियों को अपना दास बना लिया, जिसका परिणाम यह हुआ कि मानव-जाति का जीवन ही परिवर्तित हो गया। ऐसे प्रतिभाशाली पुरुषों के उत्साह तथा उमंग को दृष्टिगोचर कर अधिकाधिक लोग इन अन्वेषकों के वैज्ञानिक पथ

* एतद्देशप्रसूतस्य सकाशादग्रजन्मनः ;
स्वं स्वं चरित्रं शिक्षेरन् पृथिव्यां सर्वमानवाः।
(मनु० । २ ।)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के पथिक बन गए, और उनकी संख्या उत्तरोत्तर बढ़ती गई। ऐसा होने से बहुत-से नवीन कार्य आरंभ हो गए। अतः उनमें शिक्षित तथा निपुण कार्य-कर्ताओं की आवश्यकता हुई। इन आवश्यकताओं की पूर्ति तभी संभव थी, जब शिक्षा-संस्थाएँ इन कार्यों में सहायक बनना स्वीकार करतीं। योरप के विश्वविद्यालयों तथा विद्यालयों ने इस कार्य का उत्तरदायित्व अपने ऊपर लिया, और अपनी शिक्षा-प्रणाली में आवश्यकतानुसार परिवर्तन किया। परिवर्तन का यह क्रम जगत् के सभी उन्नतिशील देशों में संप्रति भी जारी है।

प्रोफ़ेसर 'नन' ने अपनी महत्त्वपूर्ण पुस्तक 'एजुकेशन इट्स डेटा ऐंड फ़र्स्ट प्रिंसिपल' में लिखा है—"शिक्षा का मंतव्य यह है कि प्रत्येक जिज्ञासु के लिये ऐसा वातावरण निर्मित किया जाय, जिससे उसमें सारी शक्तियों का पूर्ण विकास हो सके; वह इस योग्य हो जाय कि सांसारिक जीवन का आदर्श उसके द्वारा समुन्नत हो सके।" मनुष्य के प्रति समाज का ठीक धर्म क्या है, इस विषय में आप लिखते हैं—"मनुष्य की संपूर्ण शक्तियों का विकास एक ऐसे सामाजिक वातावरण ही में होना संभव है, जिसमें वह अन्यान्य जनों के संग रहकर, उनके आचार-विचार तथा कार्य में सम्मिलित होकर, अपने-आप को उसका एक अंग समझ सके।"

गत दो सौ वर्षों में जब पाश्चात्य देशों में बड़े वेग से परिवर्तन हो रहा था, तब भारत में अंतरराष्ट्रीय अराजकता और विदेशी आक्रमणों का साम्राज्य स्थापित हो रहा था, और अंत में अँगरेज़ों का आधिपत्य पूर्णरूप से जम ही गया। भारत के इस दुर्भाग्य-काल में देशीय संस्थाओं का ह्रास हो रहा था, अतः अँगरेज़ों ने यही उचित समझा कि अपनी संस्थाएँ तद्वत् भारत में स्थापित की जायँ, जिसका परिणाम यह हुआ कि जिस प्रकार अधिकांश विदेशी वस्तुएँ भारतवासियों के जीवन के लिये अनुपयुक्त हैं, वैसे ही उनकी विदेशी शिक्षा-प्रणाली भी ग्राह्य न हो सकी। वर्तमान शिक्षा-प्रणाली विशेषतया इस मंतव्य से प्रारंभ की गई थी कि भारतीयों को अँगरेज़ी का अध्ययन कराया जाय, जिससे वे राज्य-प्रबंध में निम्न श्रेणी के अधिकारी, तथा लेखक बनकर सहायक हो सकें। मिस्टर 'मैह्यू' ने भारतवर्ष की शिक्षा-संबंधी पुस्तक में लिखा है—"भारतवर्ष के शिक्षकों ने देश की मनोवृत्ति और इतिहास की उपेक्षा करके वहाँ की शिक्षा-प्रणाली निर्मित की है।" विचार करने पर प्रतीत होता है कि वर्तमान शिक्षा जीविकोपार्जन का पर्याप्त प्रबंध नहीं कर सकती; क्योंकि विज्ञान तथा कला-कौशल की शिक्षा का समुचित प्रबंध ही नहीं है। द्वितीय दृष्टि-कोण से प्रकट है कि वर्तमान शिक्षा का उद्देश्य केवल जीविकोपार्जन ही समझा जा रहा है। न्यूनाधिक सभी विद्यार्थियों का लक्ष्य सरकारी नौकरी, वकालत अथवा ऐसा ही कोई अन्य उद्योग-धंधा करना होता है। ज्ञान-प्राप्ति, शिक्षा-प्रेम, सभ्य मनुष्य बनने तथा गुप्त रहस्य जानने के निमित्त विद्योपार्जन करना अब विद्यार्थियों का उद्देश्य नहीं रह गया।

प्रायः माता-पिता शिक्षा को व्यवसाय की दृष्टि से देखते हैं। प्रत्येक मनुष्य की यही उत्कट इच्छा रहती है कि वह अपनी संतान को यथासंभव अल्प व्यय से शीघ्रातिशीघ्र उपाधिधारी बनाने का प्रयत्न कर सके। सरकार शिक्षा के लिये पर्याप्त धन नहीं देती। इस स्थिति में उत्तम प्रबंध होने की आशा नहीं की जा सकती। ज्यों-ज्यों भारतवासियों को उच्च श्रेणी की नौकरियाँ प्राप्त हो रही हैं, त्यों-त्यों विश्वविद्यालयों में विद्यार्थियों की संख्या उत्तरोत्तर बढ़ती जा रही है। गत १० वर्षों में विश्वविद्यालयों की संख्या भी तिगुनी हो गई है। विद्यार्थियों की इस प्रकार बढ़ती हुई संख्या के कारण नई संस्थाएँ भी स्थापित होती जा रही हैं, जिनपर यथासंभव स्वल्प व्यय किया जा रहा है। उच्च शिक्षा की उन्नति को देखते हुए यही प्रतीत होता है कि साधारण जन-समाज की शिक्षा का प्रबंध उसकी तुलना में असंतोष-प्रद है। विश्वविद्यालय तो मानो उपाधिधारियों के निर्माण के कार्यालय हैं। ये एक प्रकार के निर्जीव यंत्र हैं, जहाँ गुरु और शिष्य का पारस्परिक संबंध घटता जा रहा है।

आर्थिक अभाव, परिवार की उदर-पूर्ति, बाल-विवाह तथा अन्यान्य कारणों से अधिकांश नवयुवकों को ऐसी नौकरियों की खोज रहती है, जो चिरकाल तक स्थायी रूप से रह सकें, और वृद्धावस्था में वेतन भी दें। वे किसी नूतन स्वतंत्र मार्ग में आपदा भोगना अस्वीकार करते हैं। अतः युवक-वृंद तथा माता-पिता का सर्वोच्च आदर्श यही है कि किसी प्रकार से सरकारी नौकरी प्राप्त हो जाय।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मिस्टर रिची ने अपने शिक्षोन्नति के सन् १९१७-२२ तक के विवरण में लिखा है कि "इस देश में ऐसे विद्यार्थी यदा-कदा दृष्टि-गोचर होते हैं, जिन्हें कॉलेज में शिक्षा पाने के कारण विद्या से प्रेम उत्पन्न हो गया हो।"

बहुधा विद्यार्थी पुस्तकों को कंठ कर लेना ही अपना एक-मात्र उद्देश्य समझते हैं। पुस्तकों को पढ़कर अपने अवकाश-काल में उनसे आनंद उठाना उन्होंने लेश-मात्र भी नहीं सीखा है। पाठशालाओं (हाई स्कूलों) की शिक्षा के विषय में आप लिखते हैं—"भारत के संपूर्ण हाई स्कूलों में सामंजस्य पाया जाता है। प्रत्येक स्कूल का प्रबंध, अध्ययन-विधि, अध्यापकों के आदर्श, नित्य का कार्य-क्रम, पाठन-विधि, विद्यार्थियों का आदर्श बिलकुल अभिन्न है। चाहे वह सीमा-प्रांत का इसलामी स्कूल हो अथवा मदरास का गवर्नमेंट हाई स्कूल, सभी हाई स्कूलों का वातावरण विश्वविद्यालय की परीक्षा के आयोजनों से परिपूर्ण रहता है।"

आप लिखते हैं—"अँगरेज़ी और भारतीय संस्थाओं में सबसे बड़ा भेद यही है कि इँगलैंड के 'पबलिक स्कूल' में विद्यार्थियों का जीवन एक बँधी हुई परिपाटी पर निर्भर नहीं रहता, और एक-मात्र परीक्षा की ही आपत्ति उन्हें प्रतिक्षण नहीं संतप्त करती। भारत में परीक्षा का ही भय छात्रों के संपूर्ण छात्र-जीवन में व्याप्त रहता है। जीवन का वह भाव, जो वास्तव में सबसे प्रशंसनीय और आनंदमय होना चाहिए—जैसा अन्य देशों में होता है—भारत में एक आपत्ति-पूर्ण और व्याकुलता का काल होता है।"

पंजाब-प्रांत के डाइरेक्टर 'सर जॉर्ज एंडरसन' साहब सन् १९२४-२५ की शिक्षा-विवरण-पत्रिका में, हाई स्कूलों की शिक्षा के विषय में, महत्त्व-पूर्ण शब्दों में लिखते हैं—"भारत में स्कूल का शिक्षण-काल अति अल्प है, और जब से विश्वविद्यालय के कर्मचारियों ने १५ वर्ष से न्यून अवस्थावाले विद्यार्थियों के मैट्रिकुलेशन की परीक्षा में सम्मिलित न होने का नियम तोड़ दिया है, तब से वह समय और भी न्यून होता जा रहा है।" इस वर्ष की मैट्रिकुलेशन की परीक्षा में ५०० विद्यार्थी (परीक्षार्थी) १५ वर्ष से न्यूनावस्था में ही सम्मिलित हुए। इसका परिणाम यह होगा कि इस प्रांत के बुद्धिमान् बालकों की बुद्धि की कली, परीक्षा को उचित से अधिक शीघ्र समाप्त करने की धुन के कारण, पूर्ण विकास को न प्राप्त होगी। इन किशोरावस्थावाले विद्यार्थियों की संख्या लाहौर के कॉलेजों में उत्तरोत्तर बढ़ती जा रही है। कॉलेज में ये विद्यार्थी एक कक्षा में समुचित रीति से शिक्षा पाने के स्थान में बृहत् समुदाय में केवल व्याख्यान सुनते हैं। यहाँ इनको नाना प्रकार के प्रलोभनों का सामना करना पड़ता है, जिनसे बचना बहुतों के लिये असंभव हो जाता है। और, वहाँ का जीवन उनको अपने गृहों के आचार-विचार से पृथक् कर देता है। विद्यार्थी का विद्यालय-काल, जो पाश्चात्य देशों में सारे जीवन का सबसे सुखमय काल होता है, भारत में दुःख और चिंता के साथ व्यतीत होता है। सबसे महान् दुःख तो इस बात को देखकर होता है कि विद्यार्थियों को अपने विद्यालय से अति न्यून अथवा नहीं के बराबर प्रेम होता है। इँगलैंड में एक 'पबलिक स्कूल' के छात्र को, जो अपने स्कूल का छात्र-नेता बननेवाला है, यदि १५ वर्ष की अवस्था में स्कूल की परीक्षा पास कराके विश्वविद्यालय में इस प्रयोजन से भेजा जाय कि वह १९ वर्ष की अवस्था में बी० ए० की उपाधि से विभूषित हो जायगा, तो इस दशा में उस विद्यार्थी को जो महान् कष्ट होगा, वह वर्णनातीत है। देश की वर्तमान शिक्षा-प्रणाली में सबसे अधिक आवश्यकता स्कूल के सुप्रबंध, प्रफुल्ल जीवन, पारस्परिक सहानुभूति तथा छात्र-जीवन में आनंदोत्पत्ति की है। इनसे भी बड़ी आवश्यकता यह है कि अन्य देशों की भाँति हमारे देश के विद्यार्थियों को भी जीवन के प्रत्येक उपयोगी विषय पर पूर्ण रीति से शिक्षा देने का प्रबंध किया जाय, और मैट्रिकुलेशन की परीक्षा पास करने के उपरांत छात्रों को कुछ काल तक विद्यालय में रहने का अवसर दिया जाय, जिससे वे स्वच्छंदता से आनंद-पूर्वक ज्ञान-लाभ कर सकें।

गत १५ वर्षों के अंतर्गत उन्नतिशील देशों के प्रतिभाशाली पुरुषों में बालक तथा शिशु-शिक्षण के विषय में वर्तमान पद्धति में घोर आंदोलन की आवश्यकता का अनुभव करनेवाले केवल शिक्षक, माता-पिता तथा विद्यार्थियों के स्वाभाविक स्नेही ही नहीं हैं, बरन् सुधारकों के परिश्रम से देश के शासकों का हृदय भी परिवर्तनार्थ वाध्य हो गया है। आज से कुछ काल पूर्व इस विषय के जो विचार उन्मत्तों का प्रलाप समझे जाते थे, वे अब प्रभावकारी एवं लाभकारी सिद्ध हो गए हैं।

भारतीय शिशुओं तथा बालक-बालिकाओं को समु-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चित तथा देश-कालानुकूल शिक्षा देने की आवश्यकता का अनुभव करके दिल्ली के कतिपय भद्र पुरुषों ने एक ऐसे विद्यालय की संस्थापना का संकल्प किया, जो विद्यार्थियों के शिष्टाचार का, निरे अध्यापन की अपेक्षा, विशेष आदर करे, और जहाँ विद्यार्थी वर्ण-विभेद के उच्छृंखल नियमों से मुक्त रहते हुए ऐसे वातावरण में रहें, जिसमें उनकी शारीरिक, मानसिक तथा आध्यात्मिक शक्तियों का पूर्ण विकास हो सके। अतः इसी शुभ आधार पर सन् १९२० ई० में भारत के केंद्रस्थान दिल्ली में एक 'माडर्न स्कूल'-नामक विद्यालय स्थापित किया गया, जिसमें बालक और बालिकाएँ प्रविष्ट की गईं। प्रयत्न यह किया गया कि विद्यार्थियों को विद्यालय स्वगृह-सा प्रतीत हो। संचालकों का विचार है कि बालक-बालिकाओं का पारस्परिक संबंध रहने से वे अपने जीवन की पवित्रता और शिष्टता का पालन सम्यक् रूप से कर सकेंगे।

केवल छोटे-छोटे बालक (शिशुगण) ही विद्यालय में इस अभिप्राय से प्रविष्ट किए गए कि विद्यालय अपने लक्ष्य की ओर यथासंभव शीघ्र अग्रसर होता जाय। बालकों की शिक्षा 'मांटीसोरी'-विभाग में समुचित रीति से स्वच्छंदता और प्रफुल्लता के साथ प्रारंभ हो, इसलिये ८ वर्ष से अधिक अवस्था के बालकों को विद्यालय में

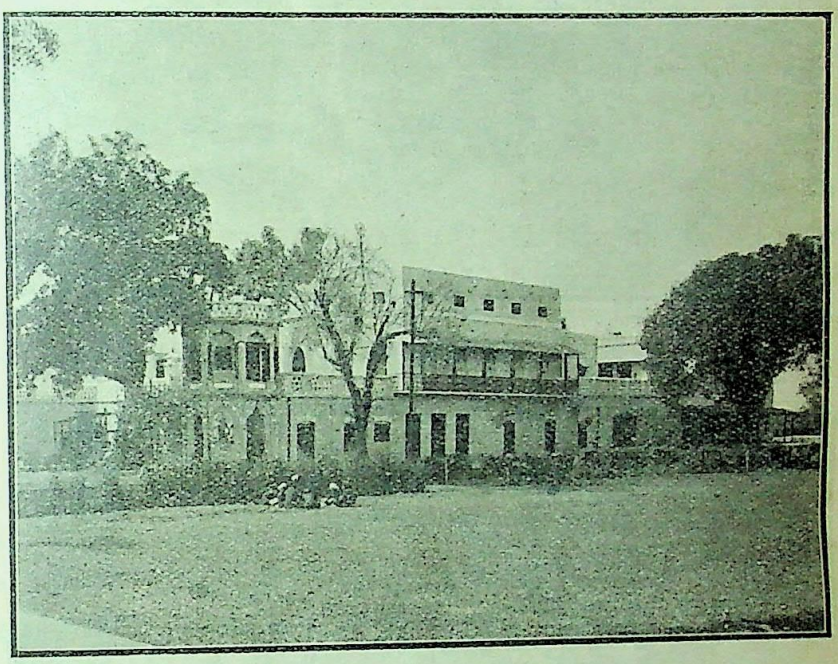

विद्यालय का मुख्य भवन

प्रविष्ट होने की आज्ञा नहीं दी गई। प्रारंभ में 'मांटीसोरी' (शिशु-विभाग) तथा प्रथम श्रेणी स्थापित की गई, और प्रतिवर्ष विद्यार्थी एक नवीन श्रेणी बनाते चले गए। संप्रति यह विद्यालय एक हाई स्कूल के रूप में पहुँच गया है।

उक्त विद्यालय के प्राचीर के अंतर्गत, उपवन तथा क्रीड़ास्थल (खेल का मैदान) भी है। इसे एक संस्थापक ने, जिनकी ज़मीन है, १० वर्ष के लिये विना किराए के दिया है।

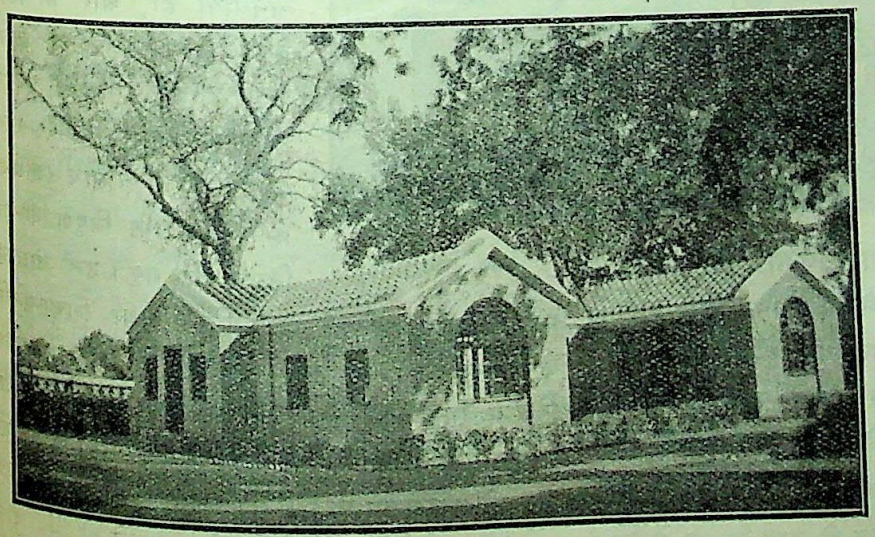

नवीन भवन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

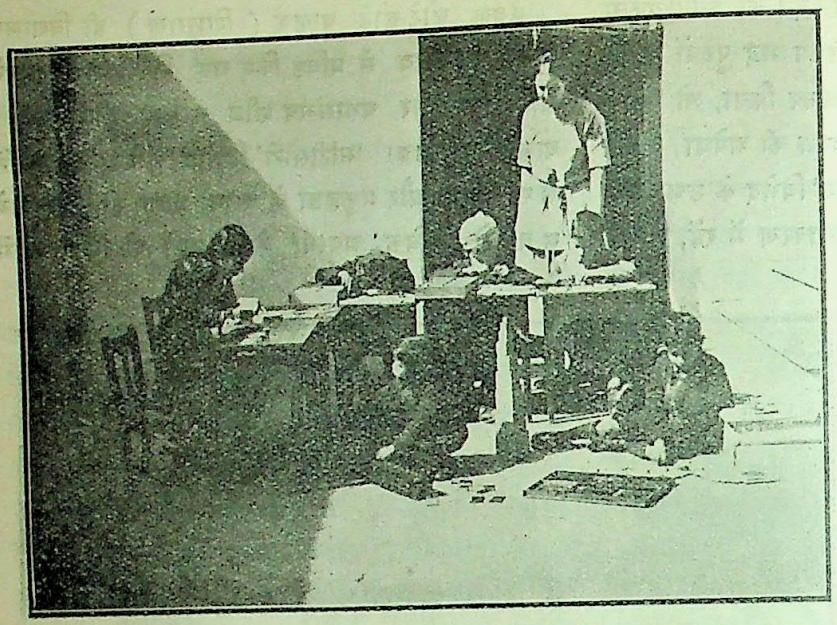

मांटीसोरी-विभाग

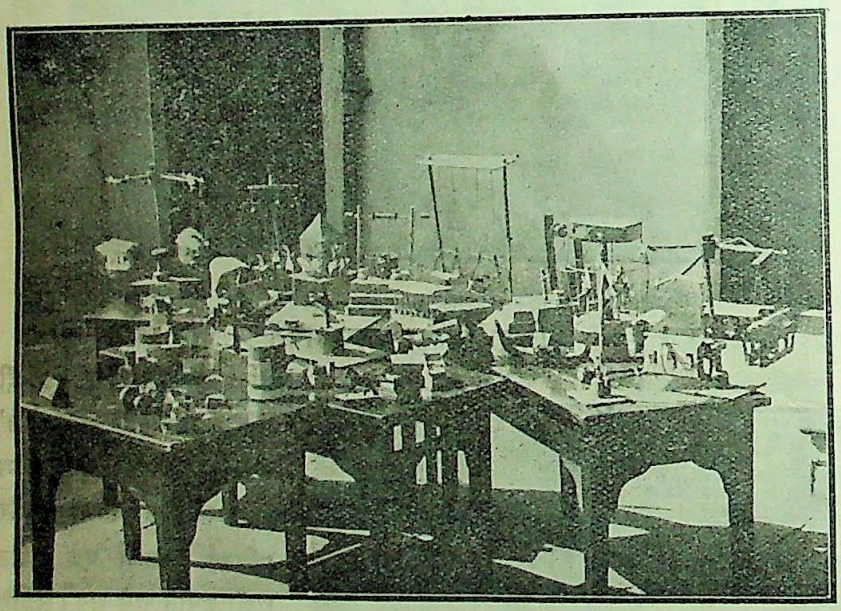

मांटीसोरी-विभाग की शिल्पकारी

इसके चतुर्दिक् सुंदर दृश्य बनाने का उद्योग किया गया। शिक्षा देने में मुख्य विचार यह रक्खा गया कि बालक प्रसन्नचित्त रहें, और उन्हें स्कूल स्वगृह-सा भासमान हो। वे यही समझें कि हम लोग यहाँ पठनार्थ नहीं, बरन् खेलने के निमित्त अथवा क्रीड़ार्थ आए हैं। उनके हृदय में यह भाव उत्पन्न हो जाय कि घर में गुरु-जन शासन करने के हेतु नहीं हुआ करते, बरन् अपने से छोटों से सहयोग कर उनकी सब प्रकार की, यहाँ तक कि खेल-कूद में भी, सहायता के लिये होते हैं; क्योंकि खेल-कूद ही तो बाल्यावस्था का मुख्य सार होता है। बालकों से पालतू पशुओं तथा पुष्प-पत्रादि की सेवा कराई जाती थी, और गृह के कार्यों में वे सहायक होते थे। उदाहरणार्थ अपना वासस्थल स्वयं स्वच्छ करना, भोजन के समय में भोज्य-पदार्थ वितरण करना, शयन के निमित्त अपनी शय्या स्वयं सजाना, इत्यादि। बच्चों को स्वतंत्रता दी जाती थी, और उस समय उन्हें यह उच्च अभिलाषा रहती थी कि मेरे कार्यों से मेरे साथी संतुष्ट रहें। ऐसा होने से उन्हें अपनी इंद्रियों को वश में करना स्वयं आ जाता था।

स्वतंत्रता और स्वावलंबन का वातावरण निर्माण करने के लिये ऐसे शिक्षकों की आवश्यकता हुई, जो स्वयं इस आदर्श के अनुयायी हों, और जो पर्याप्त वेतन लेकर संतुष्ट हो अपनी संपूर्ण शक्तियाँ बच्चों की सेवा में अर्पण कर सकें। बड़ी देख-भाल और निरीक्षण के साथ उच्च श्रेणी के शिक्षित तथा निपुण शिक्षक नियुक्त किए गए। उन्हें बालकोपयोगी पाठ्य पुस्तकों के निर्वाचन तथा शिक्षा-पद्धति के ग्रहण करने में पूर्ण स्वतंत्रता दी गई। प्रत्येक विभाग तथा प्रत्येक विषय की आवश्यकता भली भाँति सम्यक् रीति से पूर्ण की गई, और शिक्षकों तथा विद्यार्थियों के लिये उत्तमोत्तम वस्तुओं का संग्रह किया गया।

बालक अपने गुरुओं को न केवल पढ़ने ही में, बरन् खेल में भी अपना पथ-प्रदर्शक समझते हैं, और अपनी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

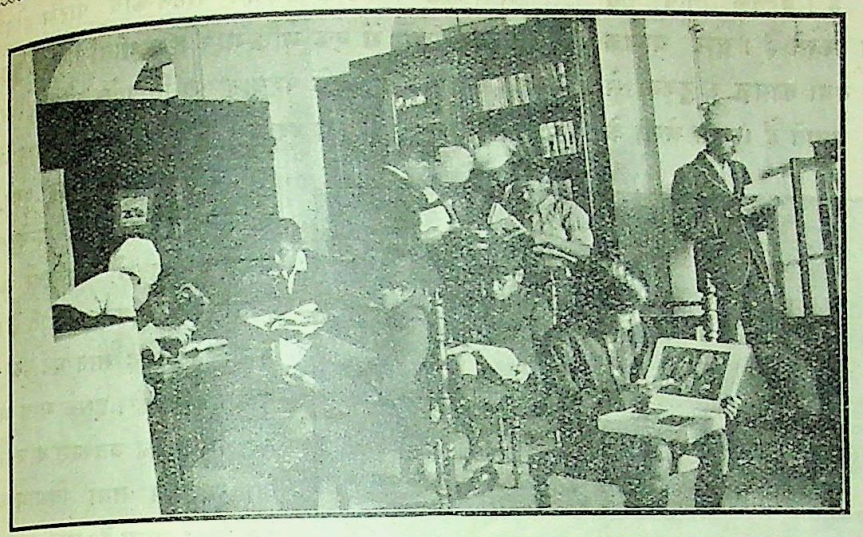

पुस्तकालय

इच्छा के अनुसार उनसे प्रश्न करने में भी कभी संकोच नहीं करते। वे अपने शिक्षकों के सम्मुख कृत्रिम भय नहीं प्रदर्शित करते; क्योंकि गुरुजन उनके आनंद के मार्ग में किसी प्रकार की बाधा, जो अनुचित हो, नहीं उपस्थित करते। जब बालकों के साथ समवेदना तथा सहानुभूति का सद्व्यवहार, सौजन्य प्रेम और हार्दिक सहयोग मैत्री भाव से किए जायँगे, तभी उनकी आनंद-कली सम्यक् विधि से विकसित हो सकेगी; क्योंकि यह पुष्प प्रफुल्लता के क्षेत्र में सहानुभूति, प्रेम, सहयोग तथा सौजन्य के वातावरण ही में खिल सकता है। शिक्षा का उद्देश्य विद्यार्थियों के मस्तिष्क में ज़बरदस्ती ज्ञान भरना नहीं है, बल्कि जिन शक्तियों को लेकर वे संसार में आए हैं, उनका उपयोगी कार्यावली द्वारा विकास करना है।

विद्यालय के प्रत्येक बालक की उन्नति का संपूर्ण विवरण लेख-बद्ध होता है, और माता-पिता को समय-समय पर सूचित किया जाता है। बालकों की नियमानुकूल नाप-तौल की जाती है, और एक अनुभवी डॉक्टर उनके स्वास्थ्य की देख-भाल करते हैं। यदि किसी बालक को ओषधि-सेवन की आवश्यकता पड़ती है, तो उसका उचित प्रबंध किया जाता है।

इस सिद्धांत के अनुकूल कि बालकों को विशुद्ध वातावरण में अपनी जाग्रतावस्था व्यतीत करनी चाहिए, प्रत्येक बालक संपूर्ण दिन विद्यालय में रक्खा जाता है। बालकों को क्या शीत ऋतु, क्या ग्रीष्म, सदैव प्रातःकाल विद्यालय में आना पड़ता है, और वे संध्या-समय खेल खेलने के बाद गृह को लौट जाते हैं। उनका कार्य-क्रम इस प्रकार का बनाया गया है कि उन्हें अपने अध्ययन, कला-कौशल, शिल्प-कारी, व्यायाम तथा खेल-कूद के लिये पर्याप्त समय मिल जाता है। प्रत्येक बालक को मध्याह्न-काल में भोजनोपरांत विश्राम करना होता है। बालक किसी भी वर्ण के हों, सब साथ बैठकर भोजन करते हैं, और कतिपय अध्यापक भी बालकों के साथ भोजन में सम्मिलित होते हैं। उपर्युक्त आयोजनों से शिक्षक तथा शिक्षार्थियों में परस्पर भ्रातृ-भाव अनायास ही उत्पन्न हो जाता है।

कतिपय छात्रों के निवास के लिये छात्रावास का उत्तम प्रबंध है। स्थान के अभाव के कारण छात्रावास-वासियों की संख्या अधिक नहीं है; किंतु शीघ्र ही विद्यालय का निज भवन नई दिल्ली में निर्मित हो जायगा, तब यह त्रुटि दूर हो जायगी।

अँगरेज़ी भाषा का श्रीगणेश शिक्षक के साथ वार्तालाप के द्वारा आरंभिक श्रेणी से कराया जाता है। छोटे बच्चों को अँगरेज़ी सिखाने के लिये अँगरेज़ महिलाएँ नियुक्त की गई हैं। हिंदी और उर्दू, दोनों भाषाओं के सिखाने का समुचित प्रबंध किया गया है। विद्यार्थी अपने माता-पिता की इच्छा के अनुसार इनमें से कोई एक विषय ले सकते हैं। उच्च श्रेणी में संस्कृत तथा फ़ारसी भी सिखाई जाती है। प्रकृति-निरीक्षण प्रथम श्रेणी से प्रारंभ कराया जाता है। ज्यों-ज्यों बालक आगे बढ़ते हैं, शिक्षा शनैः-शनैः गहन बनाई जाती है। वैज्ञानिक शिक्षा के लिये एक उत्तम 'लेबोरेटरी' स्थापित की गई है। इतिहास और भूगोल की शिक्षा साधारण कहानियों से प्रारंभ होती है, और क्रम से बालकों की योग्यता तथा अवस्था के अनुसार क्लिष्ट बनाई जाती है। गणित-विद्या पर—जो शिक्षा का विशेष अंग है—विशेष ध्यान रक्खा जाता है। नित्य एक घंटा चित्रकारी तथा संगीत के लिये दिया जाता है। उच्च श्रेणी के विद्यार्थी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वाद्य-शास्त्र का अध्ययन करते हैं। बालक नित्य कुछ समय तक शिल्पकारी का काम करते हैं। छोटे बालक मिट्टी के नाना प्रकार के खिलौने तथा काग़ज़ के टुकड़ों से कई भिन्न-भिन्न प्रकार की वस्तुएँ बनाते हैं। उच्च श्रेणी के

प्रकृति-निरीक्षण का दृश्य

विद्यार्थी शिल्प-कार्य हाथ अथवा यंत्र से करते हैं। देशी तथा विदेशी, दोनों प्रकार का व्यायाम कराया जाता है। बालक हॉकी, क्रिकेट, फुटबाल, बाक्सिंग, कुश्ती, गदका, लाठी चलाना इत्यादि सीखते हैं।

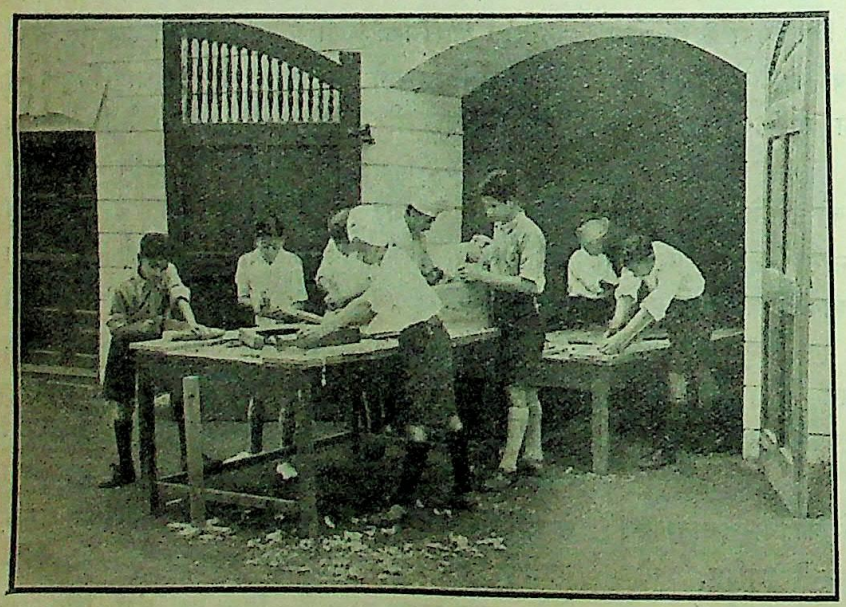

दस्तकारी की शिक्षा

प्रातःकाल ८ बजे के लगभग पाठन-कार्य प्रारंभ होता है। ईश्वर-वंदना में एक भक्ति-गान तथा गीतांजलि के कुछ स्तोत्रों का पाठ होने के पश्चात् शांति-पूर्वक मौन होकर २ मिनट तक ईश्वर का ध्यान किया जाता है। सप्ताह में दो बार किसी महान् पुरुष, वीरात्मा, विज्ञानवेत्ता, अन्वेषक तथा उच्चादर्श व्यक्तियों के विषय में व्याख्यान होते हैं। प्रातःकाल साढ़े तीन घंटे पठन-पाठन होता है। इसके मध्य में १५ मिनट का अवकाश बालकों को व्यायाम तथा विश्राम के हेतु दिया जाता है। साढ़े ग्यारह बजे मध्याह्न का भोजन होता है। तदुपरांत विद्यार्थी अपनी-अपनी अवस्था के अनुसार एक अथवा दो घंटे तक विश्राम करते हैं। तीसरा पहर कुछ अध्ययन तथा विशेष रूप से कला-कौशल और शिल्पकारी के कार्यों में व्यतीत होता है। सूर्यास्त से न्यूनाधिक डेढ़ घंटा पूर्व खेल प्रारंभ हो जाते हैं।

आचार्य-शिक्षा में स्काउटिंग (चर-शिक्षा) का विशेष भाग है, जिसके द्वारा बालकों में सहयोग और सेवा का सद्भाव उत्पन्न हो रहा है। स्कूल के स्काउट (चर) गत दो वर्षों में चीफ़ कमिश्नर का झंडा जीतने में सफल रहे हैं।

गत ऑक्टोबर में विद्यालय अपनी अवस्था का सातवाँ वर्ष पूर्ण कर चुका है और निरंतर उन्नति-पथ पर अग्रसर होता जा रहा है। विद्यार्थियों की संख्या १५ से बढ़ते-बढ़ते अब ५० से अधिक हो गई है। माता-पिता भी अब उस परिश्रम और उद्योग का अनुभव कर रहे हैं, जो अद्यावधि उनकी संतानों के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

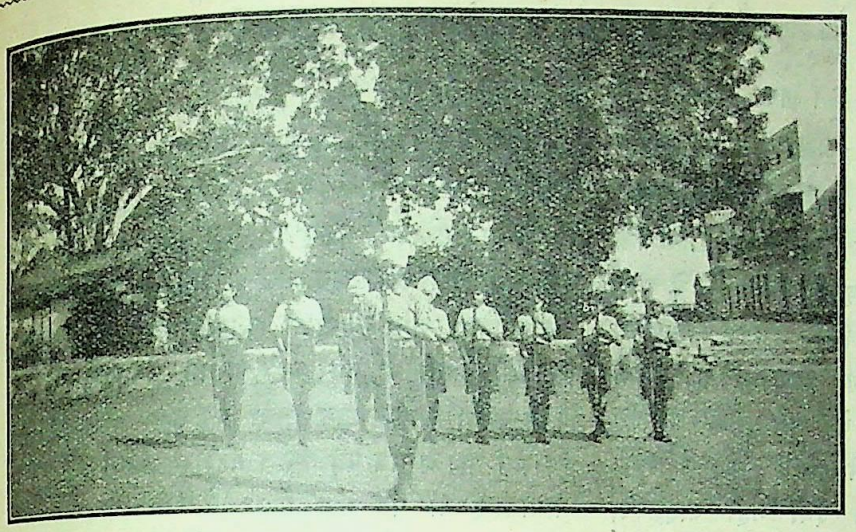

बंदूक़ चलाने की शिक्षा

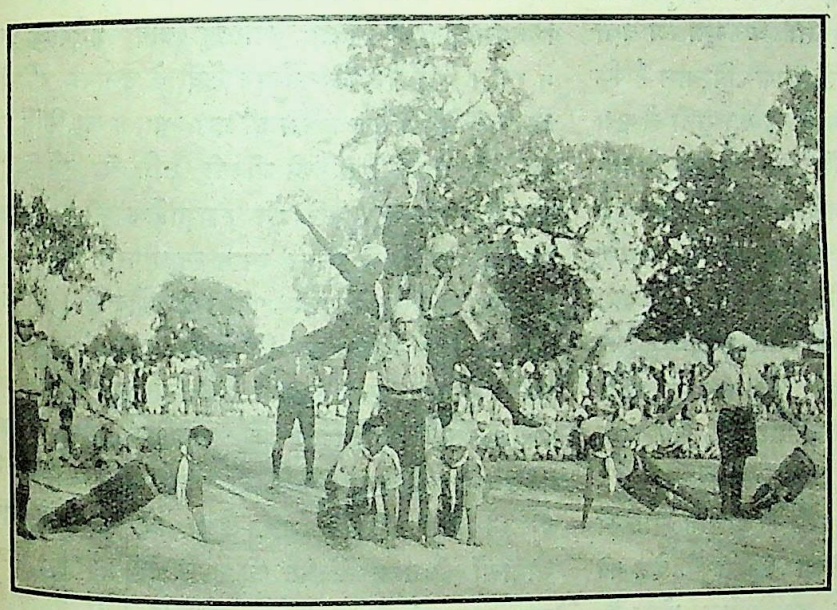

बाल-चर-प्रदर्शिनी

समुचित रीति से भरण-पोषण के निमित्त किया गया है। बालकों ने स्वास्थ्य की अत्यंत उन्नति की है, उनमें तत्परता और बुद्धिमत्ता साधारण अवस्था से कहीं अधिक प्रकट हो रही है। उनका प्रसन्न मुख, जो उनकी निर्दोषिता का प्रकृष्ट प्रमाण है, उनका सद्-व्यवहार और स्वावलंबन, उन्हें उन अन्य बालकों से पृथक्-सा कर देता है, जिनको अपना बाल्य-जीवन आनंद-पूर्वक व्यतीत करने का शुभ अवसर नहीं प्राप्त हो रहा है, अथवा नहीं हुआ है। केवल वे ही लोग, जो इन बालकों को लड़कपन से स्वस्थ और प्रफुल्ल बनते हुए आज इस दशा में देख रहे हैं, उस आनंद का अनुभव कर सकते हैं, जो उन्हें अपने प्रयत्न को फल-स्वरूप में परिणत देखकर होता है।

अब वह समय आ गया है, जब कि विद्यालय अति शीघ्र विस्तृत रूप धारण करेगा। संस्थापकगण गत काल के अनुभव से अपने आदर्श की सत्यता तथा सफलता पर विश्वास करते हैं। शिक्षा-विभाग ने विद्यार्थियों को मैट्रिकुलेशन की परीक्षा में सम्मिलित होने के लिये विद्यालय को स्वीकृति दे दी है। सन् १९२८ ई० में सर्व-प्रथम विद्यार्थी उक्त परीक्षा में सम्मिलित होंगे। कैंब्रिज-स्कूल सार्टिफ़िकेट की परीक्षा में भी विद्यार्थियों को भेजने का प्रबंध किया गया है। इस विद्यालय को भारतीय बालकों के लिये एक 'पब्लिक स्कूल' बनाने का विचार है, और आशा की जाती है कि यह विद्यालय भारतवर्ष को स्वतंत्रता दिलाने तथा उन्नतिशील बनाने में एक विशेष भाग ले सकेगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिंदी-साहित्य की वर्तमान दशा

[लेखक, श्रीयुत ललितकिशोरसिंह बी० ए०]

ह हर्ष और संतोष की बात है कि हिंदी का प्रचार दिन-पर-दिन बढ़ता जा रहा है। ऐसा देखा जाता है कि कल जो हिंदी से घृणा करते थे, वे आज इससे प्रेम करने लगे हैं। कल जो इसे साधारण बोलचाल की भाषा समझते थे, वे आज इसके साहित्य के पन्ने उलटने लगे हैं। कल जो इसे प्रादेशिक भाषा से अधिक सम्मान देना नहीं चाहते थे, वे आज इसे 'राष्ट्र-भाषा' का उच्च पद प्रदान करने को आतुर हैं। इस प्रचार का श्रेय कुछ तो उन महापुरुषों को है, जो समस्त भारतवर्ष को एकता के सूत्र में बँधा देखना चाहते हैं, और जिनका यह अटल विश्वास है कि हिंदी राष्ट्र-भाषा के रूप में इस कार्य को आसानी से पूरा कर सकती है। पर हम इस संबंध में तुलसी और सूर, नानक और कबीर को नहीं भूल सकते, व्रज-भाषा की सहज मधुरता, सरलता और लाघव की उपेक्षा नहीं कर सकते, और न व्रजभाषा के प्राचीन कवियों की सरसता, भावुकता और उद्दाम कल्पना को विस्मृति के सागर में डुबा सकते हैं। अस्तु, हिंदी के प्रचार का बहुत कुछ श्रेय भाषा के सहज गुण और इसके प्राचीन साहित्य को देना उचित है।

परंतु किसी जीवित भाषा के लिये प्राचीन साहित्य तो आधार-मात्र है। वह तो केवल उन्नति के क्षेत्र को विस्तृत करता है। यदि भाषा को उन्नतिशील होना है, तो उसे आधुनिक साहित्य का बल चाहिए। जिस प्रकार प्राचीन भारत का गौरव हमें अनंत काल में भी उन्नत नहीं कर सकता, यदि हममें अपना बल न हो, उसी प्रकार आधुनिक साहित्य के बल बिना हिंदी-भाषा, केवल प्राचीन साहित्य के बल पर, उन्नतिशील नहीं हो सकती। प्राचीन साहित्य तो नवीन साहित्य के लिये केवल एक आदर्श का निर्माण करता है। वह तो नवीन साहित्य की एक ढाल है। इसीलिये यह आवश्यक है कि हम हिंदी-साहित्य की वर्तमान दशा पर कभी-कभी विचार और इसकी गति-विधि की आलोचना कर लिया करें। और, जो कुछ त्रुटि जान पड़े उसे दूर करने की चेष्टा करें।

भाषा-साहित्य से पहले इस पर विचार करना उचित है कि भाषा-शैली इस समय किस दशा में है। इसमें संदेह नहीं कि जीवित भाषा की शैली काल की गति के साथ-साथ बदलती जाती है, और यही परिवर्तन जीवनी शक्ति को प्रकट करता है। व्यवहृत भाषा की शैली पर पारिपार्श्विक अवस्था का प्रभाव पड़े बिना नहीं रह सकता। जैसे-जैसे वातावरण में परिवर्तन होता है, वैसे-वैसे शैली भी बदलती जाती है। यही कारण है कि लल्लूजीलाल की शैली राजा शिवप्रसाद की शैली न रही, और शिवप्रसाद की शैली भारतेंदु बाबू हरिश्चंद्र की न रही। यहाँ तक कि वर्तमान हिंदी के उन्नायक हरिश्चंद्र की शैली ने भी कुछ दूसरा ही रूप धारण कर लिया है। यह परिवर्तन हिंदी की जीवनी शक्ति का द्योतक है। साथ-ही-साथ यह परिवर्तन स्वाभाविक भी है। कारण, शैली के निर्माण में इसका ध्यान रहना परम आवश्यक है कि भाषा के लिखने और पढ़नेवाले कौन हैं। भारतेंदु हरिश्चंद्र राजा साहब की 'लच्छेदार इबारत' पर लट्टू थे सही, पर वह उनकी इबारत के सिद्धांत पर आगे न बढ़ सके; क्योंकि उन्हें हिंदी को प्रादेशिक सीमा के बाहर ढकेलना था। आज हिंदी का प्रचार सारे भारतवर्ष में हो रहा है। इसीलिये भाषा-शैली को समस्त प्रचलित भाषाओं की जननी संस्कृत की शरण लेनी पड़ी है। आज-कल शुद्ध संस्कृत शब्दों का व्यवहार जिस प्रचुरता से होता है, उस प्रचुरता से पहले नहीं होता था। 'महावरे-दार' भाषा की चाल प्रायः उठती-सी देख पड़ रही है। स्थानीय अपभ्रंश शब्दों की जगह लोग शुद्ध संस्कृत-शब्दों का व्यवहार करने लगे हैं। शैली का यह विकास स्वाभाविक ही है; क्योंकि अन्य प्रदेश के लोग, जिनकी मातृ-भाषा हिंदी नहीं, महावरे का प्रयोग निर्भीक होकर नहीं कर सकते, और उनको संस्कृत-गर्भित शैली ही सुबोध हो सकती है।

परंतु यह मानना पड़ेगा कि वर्तमान भाषा-शैली में कृत्रिमता आ गई है। साथ-ही-साथ भाषा-सौंदर्य भी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लुप्तप्राय हो गया है। वर्तमान साहित्य के अनुशीलन से सबसे बड़ी कमी जो जान पड़ती है, वह यह है कि इने-गिने विद्वानों को छोड़कर किसी को विशेष शैली का ज्ञाता नहीं कह सकते। भाषा पर पूरा अधिकार हुए विना ही लोग गद्य और पद्य पर लेखनी उठाते हैं। इसी से भाव विकृत हो जाता है, शैली की गठन ढीली पड़ जाती है, और उच्च कोटि का कवित्व भी खटकने लगता है। आज-कल मासिक पत्रों में ऐसे ही गद्य-पद्य लेखों की भरमार देख पड़ती है। इसमें संदेह नहीं कि कुछ विद्वान् इन दोषों से सर्वथा मुक्त हैं। पर अधिक लेखकों और लब्ध-प्रतिष्ठ कवियों की यही दशा है।

शैली की उपर्युक्त त्रुटियों के रहने पर भी गद्य-साहित्य की यथेष्ट उन्नति हुई है। लेखकों और संपादकों का ध्यान गद्य-साहित्य के प्रत्येक अंग की ओर गया है। और, अब यह अवस्था हो गई है कि प्रायः प्रत्येक लोक-प्रिय विषय पर एक-दो हिंदी-ग्रंथ देखने को मिल जाते हैं।

भारतीय दर्शन पर संसार-त्यागी उदासीनों ने अनेक मोटे-मोटे ग्रंथ लिख डाले हैं; पर शैली के ज्ञाता न होने के कारण उनके ग्रंथ दुर्बोध हैं। यदि इन ग्रंथों की भाषा कुछ सुधार दी जाय, तो ये हिंदी-साहित्य के एक परम आवश्यक अंग की पूर्ति कर सकते हैं। पाश्चात्य दर्शन के भी कुछ ग्रंथ प्रकाशित हुए हैं। पर इतने से ज्ञान-पिपासा की तृप्ति नहीं हो सकती। पाश्चात्य दार्शनिक प्रणाली के ज्ञान के लिये लोगों को अँगरेज़ी की शरण लेनी पड़ती है। केवल हिंदी जाननेवालों के लिये कोई साधन नहीं। राजनीतिक साहित्य की भी प्रायः यही अवस्था है।

सबसे शोचनीय अवस्था वैज्ञानिक साहित्य की है। विज्ञान के एक-दो मुख्य विभागों को छोड़ अन्य विभागों का संभवतः एक भी ग्रंथ नहीं। एक-दो रसायन की और एक-दो भौतिक विज्ञान की पुस्तिकाएँ प्राप्त होती हैं। वह भी अपूर्ण और भ्रमपूर्ण। सबसे बड़ी त्रुटि इस संबंध में यह है कि पुस्तक-रचना की ओर विशेषज्ञों का ध्यान नहीं गया है। हिंदी क्या, अँगरेज़ी में भी भारतीय विद्वानों के रचित बहुत ही थोड़े ग्रंथ हैं। मासिक पत्रों में भी वैज्ञानिक लेख विशेषज्ञों के लिखे नहीं होते। वे प्रायः उन्हीं लोगों के लिखे होते हैं, जो अँगरेज़ी अख़बारों की सहायता से इधर-उधर की कुछ बातें इकट्ठी कर देते हैं। कुछ वैज्ञानिक कोष भी तैयार हुए हैं। पर खेद है कि वैज्ञानिक विचारों के प्रकट करने में उनसे बहुत थोड़ी सहायता मिलती है। इसका कारण स्पष्ट है। वैज्ञानिक कोष भाषा के उन पंडितों ने तैयार किए हैं, जो विज्ञान से वस्तुतः अनभिज्ञ हैं। और, कुछ वैज्ञानिकों ने जो काम-चलाऊ शब्द गढ़ने का प्रयास किया है, वह भाषा के विचार से असफल हुआ। उनके गढ़े हुए शब्दों में से अधिकतर 'असमर्थता' दोष से ग्रस्त हो गए हैं। वैज्ञानिक कोष रचने का अधिकार उन्हीं लोगों को है, जो विज्ञान से पूर्णतया अभिज्ञ हैं, जिन्होंने वैज्ञानिक सिद्धांतों, विचारों और भावों को विशद रूप से हृदयंगम किया है; साथ-ही-साथ जिन्हें भाषा पर भी पूरा अधिकार है, और आयुर्वेद-जैसे प्राचीन विज्ञानों का भी ज्ञान है। अतएव वही विद्वान् या विद्वत्समुदाय इस समस्या को हल कर सकता है, जिसमें विज्ञान, भाषा, आयुर्वेद और तंत्र के ज्ञान का सुंदर समन्वय हो। जब तक वैज्ञानिक शब्दों की कमी दूर नहीं होती, तब तक चाहे एक-दो अनुवाद-ग्रंथ निकल भी जायँ, पर मौलिक अनुसंधान-विषयक लेखों की आशा करना व्यर्थ है। कम-से-कम संपादकों और प्रकाशकों को उचित है कि वे विशेषज्ञों से ही पुस्तकें और प्रबंध लिखवाने की चेष्टा करें। कारण, विशेषज्ञ जिस शब्द का प्रयोग करेंगे, वह प्रचलित हो जायगा, और प्रचलित हो जाने से उसकी असमर्थता मिट जायगी। इसका सबसे अच्छा दृष्टांत स्वयं 'विज्ञान' शब्द ही है, जिसकी साइंस (Science) के अर्थ में रूढ़ि हो गई है।

अब हिंदी-साहित्य के उस अंग का विचार करना है, जो बड़ी तीव्र गति से पुष्ट हो रहा है। वह अंग है उपन्यास। इसमें संदेह नहीं कि उपन्यास और नाटक का भाषा-साहित्य में बहुत ही ऊँचा स्थान है। विशेषतः भाषा-प्रचार के विचार से तो उपन्यास नाटक से भी अधिक उपयोगी है। 'चंद्रकांता'-जैसे उपन्यासों का सम्मान चाहे अब न हो, क्योंकि लोक-रुचि में परिवर्तन हो गया है; पर यह तो स्वीकार करना ही पड़ेगा कि किसी समय चंद्रकांता ने हिंदी के प्रचार में बड़ी सहायता पहुँचाई है। इन दिनों प्रति वर्ष अनेक नए उपन्यास प्रकाशित होते हैं। हिंदी-संसार में उनका स्वागत भी अच्छा होता है। उपन्यास-प्रेमियों की संख्या दिन-दिन बढ़ रही है। बहुत-से लोगों ने तो केवल उपन्यास पढ़ने के लिये ही हिंदी सीखी है। विशेषतः उर्दू के जाननेवाले, जिन्हें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उर्दू में ऐसे उपन्यास पढ़ने को नहीं मिलते, हिंदी उपन्यासों को बड़े चाव से पढ़ते हैं। इस उपन्यास-पठन का प्रभाव उन पर ऐसा पड़ता है कि वे हिंदी-साहित्य की मुक्त कंठ से प्रशंसा करने लग जाते और हिंदी-साहित्य को उर्दू-साहित्य से अधिक पुष्ट और उपयोगी समझने लगते हैं। इस प्रकार उपन्यासों की वृद्धि से हिंदी-साहित्य को अपरिमित लाभ पहुँचा है। उपन्यास की साहित्यिक विशेषताओं के विचार के लिये यहाँ स्थान नहीं है। और, न हिंदी में प्रकाशित उपन्यासों की विस्तृत आलोचना ही यहाँ हो सकती है। हाँ, इतना ही कहा जा सकता है कि हिंदी-भाषा में जो उपन्यास उपलब्ध होते हैं, उनके पठन और अनुशीलन से उपन्यास-साहित्य के सौंदर्य का अनुभव सुचारु रूप से हो सकता है। उपन्यासों में कवित्व और कल्पना की क्रीड़ा कैसे हो सकती है, मानव-चरित्र का सूक्ष्म विश्लेषण औपन्यासिक के लिये कितना सुकर है, मानव-हृदय के रहस्य का प्रकटीकरण कैसे सुंदर रूप से किया जा सकता है, सामाजिक समस्याओं को किस भावुकता के साथ हल कर सकते हैं, संसार की अनेक जटिल ग्रंथियों को कैसी दूर-दर्शिता से सुलझा सकते हैं, इत्यादि अनेक विचित्र विषयों का ज्ञान उपन्यासों के अध्ययन से होता है। कुछ औपन्यासिक तो ऐसे हैं, जिनके ग्रंथों का स्थान सारे जगत् के साहित्य में बहुत ऊँचा है। पर खेद है कि ऐसे जगद्विख्यात औपन्यासिकों का लीला-क्षेत्र हिंदी नहीं है। हिंदी में जो इनके ग्रंथ देख पड़ते हैं, उनसे, अनुवाद के द्वारा, रवींद्र और शरत्-जैसे अपूर्व प्रतिभाशाली औपन्यासिकों की लेखनी से निर्गत मधुर रस का पान हम हिंदी-भाषा में कर सकते हैं, और रसानंद में मुग्ध भी हो सकते हैं। पर यह मानना पड़ेगा कि अनुवाद-ग्रंथों से भाषा-साहित्य का भांडार नहीं भरा जा सकता, और न भाषा का गौरव ही उनसे बढ़ सकता है। कवि की प्रतिभा समग्र मानव-जाति का धन है। सारा जगत् उस प्रतिभा को देख चकित, मुग्ध और प्रभावान्वित हो सकता है। पर वह प्रतिभा उसी भाषा को यथार्थ गौरव प्रदान करती है, जिसके द्वारा वह विकसित होती है। मतलब यह कि उपन्यासों की संख्या में इतनी वृद्धि होने पर भी हिंदी-साहित्य की उनसे विशेष पुष्टि नहीं हुई। मौलिक कृति का बहुत बड़ा अभाव है। हाँ, एक-दो साहित्य-सेवी इस अभाव को दूर करने का स्तुत्य परिश्रम कर रहे हैं। पर वे अब तक कितना सफल हुए हैं, यह विवाद-ग्रस्त है। इस संबंध के वाद-विवाद का अंत अभी तक नहीं हुआ।

आजकल गल्प-लेखकों की भी संख्या बढ़ रही है, और यह ज़ोर के साथ कहा जा सकता है कि साहित्य के अन्य भागों की अपेक्षा इस भाग में सफलता अधिक हुई है, अधिक संतोषप्रद कार्य हुआ है। कहानी केवल रोचक ही नहीं, शिक्षाप्रद भी होनी चाहिए। कहानियों का आदर्श भी उच्च होना उचित है। कुछ गल्प-लेखकों की कृतियों में ये गुण यत्किंचित् देख पड़ते हैं। पर ऐसी कहानियों का सर्वथा अभाव है, जो मानव-हृदय के किसी विशेष भाव अथवा प्रबल प्रवृत्ति के आधार पर विकसित हुई हों। मानव-प्रकृति कितनी सौंदर्यमय है, कितनी रहस्य-मय है!! सौंदर्य की एक-एक अनुभूति एक-एक गल्प का विषय हो सकती है। एक-एक रहस्य पर एक-एक कहानी प्रस्तुत हो सकती है। इसीलिये कहानी जितनी गंभीर, रोचक और भावमय हो सकती है, उतना उपन्यास नहीं। कहानी की इस विशेषता की ओर शायद हिंदी के गल्प-लेखकों का ध्यान नहीं गया है, इसीलिये 'गोरा' और 'चरित्रहीन' की छाया चाहे कदाचित् कहीं देख भी पड़े, पर 'बिंदुर छेले' की विशद ज्योत्स्ना का आनंद तो हिंदी-साहित्य में अभी आता ही नहीं।

हिंदी-साहित्य के नाटक-भाग की ओर दृष्टि डालने से बड़ा खेद और असंतोष होता है। यह नहीं कहा जा सकता कि भारतेंदु के नाटक उच्च कोटि के हैं; परंतु हिंदी-भाषा के उस प्रारंभिक युग में उस कोटि के नाटकों का निकलना भी बहुत मूल्य रखता है, और अभी तक हिंदी-साहित्य के इस अंग की पूर्ति यदि किसी अंश में होती है, तो उन्हीं पुराने नाटकों से। हरिश्चंद्र के बाद जिन साहित्य-सेवियों ने नाटक लिखने का प्रयत्न किया है, वे असफल हुए। सच तो यह है कि नाटक का लिखना तब तक सफल नहीं हो सकता, जब तक सहज प्रतिभा का प्रादुर्भाव न हो। उच्च कोटि का नाटक तो 'कालिदास' और 'शेक्सपियर'-जैसे नाटककारों के उर्वर मस्तिष्क का ही फल है। पर दुःख की बात तो यह है कि यहाँ साधारण कोटि के नाटकों का भी अभाव है। थिएटरों के लिये जो नाटक रचे जाते हैं, वे साहित्यिक नाटकों से कोसों दूर हैं। ये नाटक तो केवल स्वार्थ-साधन का एक उपाय-मात्र हैं। इसी से प्रायः इनमें अस्वाभाविक और चकित कर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देनेवाली घटनाओं का समावेश रहता है। जो कुछ साहित्यिक नाटक रचे गए हैं, वे ऐसे नहीं हैं, जिनकी आलोचना की जा सके। इनमें से अधिक तो ऐसे हैं, जो किसी विशेष समय पर, किसी विशेष प्रयोजन से रचे गए, और उनकी उपयोगिता वहीं समाप्त हो गई।

पहले साहित्य शब्द काव्य का पर्यायवाची समझा जाता था। इसी अर्थ में सदा इसका व्यवहार होता था। पर अब साहित्य का अर्थ बहुत ही व्यापक हो गया है, और उसी अर्थ को ध्यान में रखकर यह प्रबंध लिखा जा रहा है।

साहित्य का क्षेत्र इतना विस्तृत होने पर भी वस्तुतः काव्य ही साहित्य का प्राण है। इसी से हिंदी-संसार में काव्य-साहित्य की पुष्टि के लिये बृहत् और व्यापक आंदोलन-सा देख पड़ता है। प्रत्येक कवि, प्रत्येक लेखक और प्रत्येक समालोचक का हृदय प्रकृत कवि के प्रादुर्भाव के लिये व्यग्र-सा जान पड़ता है। कबीर और तुलसी फिर कैसे पैदा हों, हिंदी में दूसरा रवींद्र कैसे तैयार हो, क्रांतिकारी माइकेल की मधुर वाणी कैसे सुन पड़े, इसकी चिंता सभी को लगी है। और, आश्चर्य नहीं कि शीघ्र ही किसी क्रांतिकारी कवि का हिंदी के शुभ्राकाश में शुभ नक्षत्र की भाँति उदय हो।

यह साहित्यिक आंदोलन व्रजभाषा और खड़ी बोली के द्वंद-युद्ध से आरंभ हुआ, और अब साहित्यिक उच्छृंखलता के रूप में वर्तमान है। व्रजभाषा और खड़ी बोली के घात-प्रतिघात का फल हिंदी-साहित्य के लिये बहुत ही हितकर हुआ। कारण, इसी संबंध में व्रजभाषा के प्राचीन कवियों के अनुपम कवित्व पर प्रकाश डाला गया। देव और बिहारी की प्रतिभा इस संघर्ष से चमक उठी। तुलसी और सूर पूज्य दृष्टि से देखे जाने लगे। सर्वसाधारण में व्रजभाषा का प्रेम बढ़ गया। लोग इसकी मधुरता और काव्य की योग्यता के क़ायल हो गए।

व्रजभाषा और खड़ी बोली के झगड़ों का तो प्रायः अंत हो गया; पर हृदय की व्यग्रता दबाई न जा सकी, और वह खड़ी बोली के परिधान में जैसे-तैसे बाहर निकल पड़ी। किसी ने कोई लक्ष्य निश्चित न किया, किसी ने कोई; आदर्श की अपेक्षा न रही। जिसे जो राह सूझ पड़ी, उसी पर वह नाक की सीध में चल पड़ा। यह दशा अभी चाहे अरुचिकर हो, पर यह मानना पड़ेगा कि साहित्यिक विकास की यह एक विशेष अवस्था है। हिंदी-साहित्य के इतिहास में यह उद्देश्य-विहीन काल एक मनोहर अध्याय प्रस्तुत करेगा।

अस्तु, वर्तमान काल में ऐसे अनेक ग्रंथ प्रकाशित हुए हैं, जिनमें प्राचीन प्रथा का अतिक्रमण किया गया है। उनमें कुछ तो ऐसे हैं, जिनका आधार देश-भक्ति है। और, इसी हेतु कवि का कार्य प्रशंसनीय है; क्योंकि कवि का आदर्श पवित्र है। पर खेद है कि इनमें काव्य की योग्यता नहीं। यदि वह होती, तो सोने में सुगंध होता। मैं समझता हूँ, कवि का तात्पर्य काव्य-ग्रंथ लिखना नहीं, वरन् पद्य द्वारा अपने कथन को अधिक प्रभावशाली बनाने का रहा होगा, और इसमें कवि को पूर्ण सफलता भी मिली है। कुछ काव्य-ग्रंथों के अतिरिक्त मुक्तकों का अनवरत प्रवाह दृष्टि-गोचर होता है। इनके अनुशीलन से ऐसा विदित होता है कि आधुनिक कवियों के भावों और विचार में अधिक परिवर्तन नहीं हुआ है, कल्पना विशेष बलवती नहीं हो पाई है। केवल कविता के स्थूल रूप में बहुत कुछ उलट-पलट हो गया। अनेक नए छंदों का आविष्कार हुआ, और आधुनिक सिद्धांतों का अनुकरण करते हुए भिन्न-तुकांत और मुक्त-वृत्त पद्यों पर कवियों ने परिश्रम किया। भिन्न-तुकांत और मुक्त-वृत्त पद्य की आलोचना यहाँ अप्रासंगिक होगी। पर मुक्त-वृत्त पद्यों के देखने से विदित होता है कि कवि स्वयं इसके सिद्धांत को नहीं समझते। इस ढंग की जितनी कविताएँ प्रकाशित होती हैं, वे सब-की-सब अनुकरण-मात्र हैं। इनकी विशेषता शायद कवि ही समझते हों, पर साधारणतया उनमें कोई गुण नहीं देख पड़ता। भावों में यदि नवीनता और मौलिकता हो, तो बेढंगा छंद भी सरस और रुचिर हो सकता है। पर यहाँ तो इनका भी टोटा है।

हिंदी के कवियों की जिस नूतन कृति ने काव्य-जगत् में 'उथल-पथल' मचा दी और साहित्य में 'क्रांति' पैदा कर दी है, वह 'छायावाद' है। छायावाद शायद मिस्टिसिज़्म (Mysticism) का अनुवाद है। कहा जाता है, रवींद्रनाथ ठाकुर इस छायावाद के आचार्य हैं। हिंदी के छायावाद के कवि उन्हें ही अपना पथ-प्रदर्शक और गुरु मानते हैं। पर जिसे रवींद्रनाथ की कवित्व-कला का कुछ भी ज्ञान है, वह कह सकता है कि इस हिंदी के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छायावाद के न तो वह आचार्य ही हैं, और न इसके कवियों के गुरु ही बनने का उन्हें अधिकार है। इस छायावाद का तो ढंग ही निराला है।

कुछ कवियों का तो शायद ऐसा विश्वास है कि छायावाद और मुक्त-वृत्त का नित्य संबंध है। असंबद्ध भावों अथवा प्रलापों को किसी प्रकार अस्त-व्यस्त रूप में एकत्र कर डालने ही को लोग छायावाद कहते हैं। पर यह ख़ूबी गीतांजलि में कहाँ? शब्द-योजना अनियमित हो, भाषा ऐसी हो कि कवि का भाव समझ में न आवे, 'वीणा', 'संगीत', 'दीपक,' आदि शब्दों का व्यर्थ प्रयोग हो। बस, छायावाद की कविता तैयार हो गई। यह बात रवींद्रनाथ में कहाँ? उनकी भाषा तो बड़ी सरल होती है। भाव गूढ़ होते हैं सही, पर भावों की शृंखला अस्त-व्यस्त नहीं होती। रवींद्र और कबीर की दुर्बोधता विषय की गंभीरता के कारण हैं। पर हिंदी के छायावाद की दुर्बोधता, शैली की जटिलता और भाषा-दोष के कारण है। छायावाद के लिये हृदय में ईश्वरीय प्रकाश, दिव्य ज्ञान का आभास और आत्मविस्मृति चाहिए।

अंतिम आलोचनीय विषय 'समालोचना' है। साहित्य-सम्मेलन के मंच से अनेक बार समालोचना पर ज़ोर दिया गया है, और उसका प्रभाव भी आशातीत पड़ा। सच तो यह है कि मौलिक काव्य-साहित्य के अभाव में समालोचना-साहित्य अधिक उन्नति नहीं कर सकता। पहले सोना, तब उसका पारखी। पहले कवि तब समालोचक। फिर तो समालोचक स्वयं अनेक कवियों को प्रकाश में खींच लाता है। पर हर्ष की बात है कि काव्य की अपेक्षा समालोचना-साहित्य ने अधिक उन्नति की है। प्राचीन साहित्य के आधार पर अनेक समालोचक खड़े हो गए, और हिंदी के प्राचीन रत्न-भांडार में से अनेक रत्न ढूँढ लाए। सबसे अधिक ध्यान समालोचकों ने तुलनात्मक समालोचना की ओर दिया है, और इस विषय के ऐसे अनेक ग्रंथ प्रकाशित हुए हैं, जिनके पढ़ने में बड़ा आनंद आता है। यह मार्ग हिंदी-भाषा के लिये सर्वथा नवीन है। पर सबसे अधिक प्रशंसनीय कार्य इसी विभाग में हुआ है। हाँ, खेद इतना ही है कि तुलनात्मक समालोचना के कारण गंभीर समालोचकों में भी एक दोष आ गया है। वे कवियों की तुलना की धुन में इस बात को भूल जाते हैं कि वे दो महाकवियों की तुलना कर रहे हैं। वे प्रायः एक कवि के स्तुति-गान में दूसरे कवि पर धूल उड़ाने लगते हैं। यहाँ तक कि पारस्परिक विरोध के कारण आलोच्य कवि को भी अपशब्दों का शिकार बनाते हैं। साधारण समालोचना में भी व्यक्तिगत आक्षेपों की बौछारों से काम लिया जाता है। समालोचना-जैसे पवित्र और उत्तरदायित्व-पूर्ण कार्य में भी स्थिरता नहीं रहती, और एक समालोचक मैदान में आ घोषणा कर देता है कि अमुक औपन्यासिक अथवा कवि कहीं-कहीं शेक्सपियर-जैसे जगद्विख्यात कवि से भी आगे बढ़ गया है। इतने में दूसरा आकर अपना फ़ैसला सुनाता है कि वह तो औपन्यासिक अथवा कवि नाम के भी योग्य नहीं। इस तरह की समालोचना निंद्य और उपहासास्पद है, और समालोचक में सौंदर्य-ज्ञान तथा रसज्ञता का अभाव प्रकट करती है। समालोचक की दृष्टि सौंदर्य के अनुसंधान में कम रहती है। अथवा उसमें असंख्य दोषों में भी सुषमा की छटा देखने की सामर्थ्य ही नहीं। बस, इसी का खेद है।

अस्तु, सभी विषयों पर विचार कर यह कहते बड़ी प्रसन्नता होती है कि असंख्य विघ्न-बाधाओं के रहने पर भी हिंदी-साहित्य ने अपूर्व उन्नति की है। दोष अनेक हैं, त्रुटियाँ असंख्य हैं, काम का बहुत बड़ा हिस्सा बाक़ी है। पर जो कार्य हुआ और जो हो रहा है, वह संतोषप्रद ही है। हिंदी-साहित्य का दायित्व बहुत बड़ा है। यदि हिंदी को राष्ट्रभाषा होना है, तो हिंदी-साहित्य को विराट् रूप धारण करना होगा। यदि हिंदी-भाषा को देश-प्रदेश अतिक्रमण कर सारे जगत् में व्याप्त हो जाना है, तो हिंदी-साहित्य की पताका हिमालय की चोटी पर गाड़नी होगी। यदि हिंदी-भाषा को समस्त मानव-जाति की प्यारी भाषा बनना है, तो हिंदी-साहित्य की कीर्ति-कौमुदी संसार के कोने-कोने में फैलानी होगी। इस दृष्टि से वर्तमान हिंदी-साहित्य अत्यंत नगण्य है। इसकी योग्यता सागर में एक बूँद के बराबर है। पर यदि हिंदी-प्रेमियों के हृदय में ऐसी ही आतुरता बनी रही, उद्देश्य ऐसा ही उच्च रहा, और हृदय में आशा तथा कला का संचय कर इसी भाँति वे आगे बढ़ते गए, तो एक-न-एक दिन उन्हें पवित्र लक्ष्य का लाभ अवश्य होगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महाश्वेता

[लेखक, पं० इलाचंद्र जोशी]

मूर्तिमती करुणा-सम हो तुम
कौन अप्सरा-बाला ?
बजा रही हो वीणा रुमझुम,
पहने हो वनमाला ।
किस तापस की हो तुम तपती कन्या ?
मदन-भस्म से रचित कौन हो धन्या ?
होमशिखा-सम उजली कौन अनन्या ?
किस वनदेवी ने तुमको है पाला ?
मूर्तिमती करुणा-सम हो तुम
कौन अप्सरा-बाला ?

किस संध्या का स्वप्न झिलमिला
आँखों में है झलका ?
किस प्रवेग से रहा तिलमिला
रोदन अंतस्तल का ?
किस करुणा से व्याकुल है तव वीणा ?
शांत तेज में लोनी कौन निलीना ?
चंद्रकला-सम दिन-दिन होती क्षीणा,
कैसे तुम अलबेली आकुल-अलका ?
किस संध्या का स्वप्न झिलमिला
आँखों में है झलका ?

अविरल-धारापात-सुमंगल-
वर्षा-जल से स्नाता,
मुक्ता-सम उज्ज्वल, अति निर्मल
तुम हो शरत्-प्रभाता।
फुल्ल, सिक्त, नव कास-समान पुनीता,
कुसुम-स्तवक-नत लता-समान विनीता,
स्वच्छ, स्निग्ध हो सरस-विमल-नवनीता,
गंधवती हो शीतल उत्तर-वाता।
अविरल-धारापात-सुमंगल-
लोचन-जल से स्नाता।

कठिन नियम-चारण से तेजित
हो निर्दय, निर्भीता,
शीतल ओस-कणों से मज्जित
वन में हो आनीता।
शांत विजन में बैठी हो तुम विजना,
कुंद-शुभ्र हो तुम इंदीवर-व्यजना,
चंदन-काष्ठ-समान बनी तुम कठिना,
हिम-संघात-शिला-सम हो तुम शीता।
कठिन-नियम-चारण से तेजित
हो निर्दय, निर्भीता।

बैठी हो शंकर-आलय में
रुद्रा कौन कराला ?
तुम हो रंगित भीम प्रलय में
ज्वालमुखी की ज्वाला।
दीप्त हुताशन-सम अंगार उगलती,
वज्रताप से भीति-भावना दलती,
तुम चिताग्नि सम रंगिणि ! नित हो जलती,
राज रही हो लिए हाथ में भाला।
बैठी हो शंकर-आलय में
कौन भैरवी बाला ?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सर्विस-यात्रा

[चित्रकार—श्रीयुत उत्तमसिंह तोमर बी० ए०]

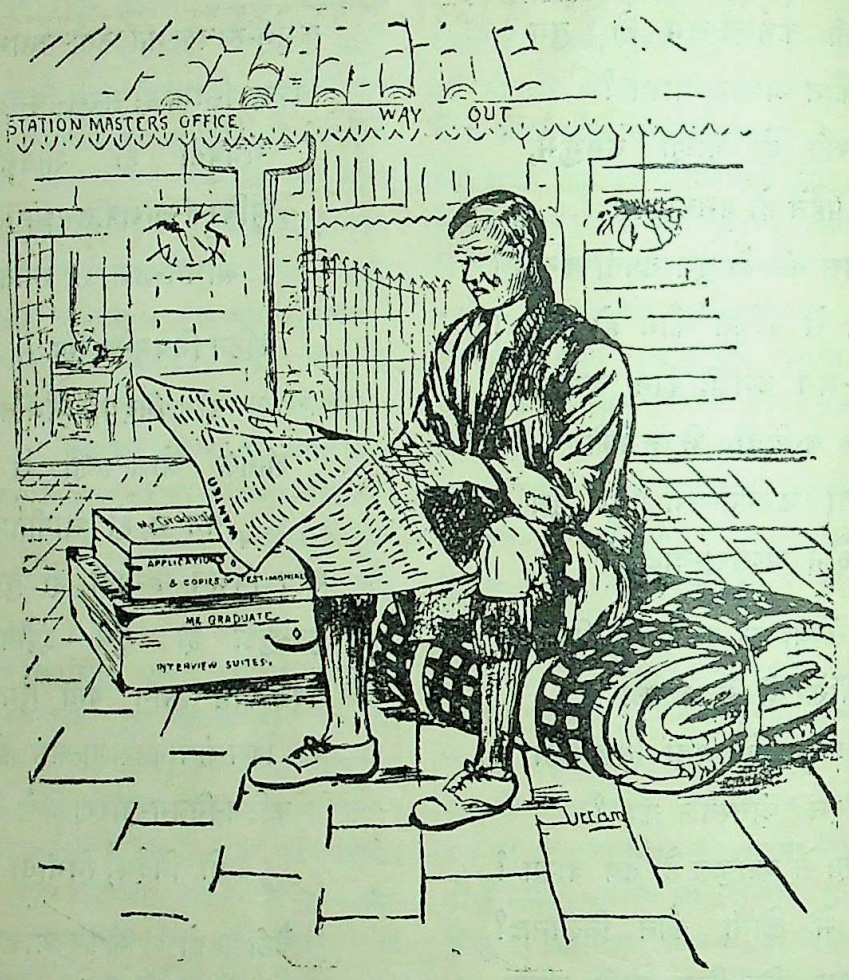

हिंदी-संसार में बिलकुल नई चीज़

शीघ्रता कीजिए ! शीघ्रता कीजिए !!

तीन महीने में ३००० प्रतियाँ बिक गईं

लो० तिलक का चरित्र

(सचित्र)

भूमिका-लेखक, पं० मदनमोहन मालवीय

लेखक, श्रीयुत नरसिंहचिंतामणि केलकर एम्० एल्० ए०

(मराठी केसरी के संपादक)

अनुवादक, श्रीसिद्धिनाथ-माधव लोंढे

पृष्ठ-संख्या ८५० मूल्य ४)

पुस्तक का विषय, लेखक और भूमिका-लेखक के नाम ही पुस्तक की उपयोगिता और महत्त्व के काफ़ी प्रमाण हैं।

मिलने का पता—धोंडो काशीनाथ फड़के, अरुणोदय प्रेस, थाना (बंबई)

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साहित्य-संसार के दिग्गज विद्वानों द्वारा प्रशंसित

सुप्रसिद्ध

गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय, लखनऊ

की उत्कृष्ट और सचित्र पुस्तकें

गंगा-पुस्तकमाला की उत्तमोत्तम पुस्तकें

१. उपन्यास

हृदय की प्यास (सचित्र)—लेखक, हिंदी के सुप्रसिद्ध लेखक आयुर्वेदाचार्य पं० चतुरसेन शास्त्री; मूल्य १॥), २)

रंगभूमि (दो भाग)—लेखक, श्रीयुत प्रेमचंदजी मूल्य ५), ६)

विजया (सचित्र)—मूल-लेखक, श्री० शरच्चंद्र चट्टोपाध्याय; अनुवादक, सुधा-संपादक पं० रूपनारायण पांडेय कविरत्न; मूल्य १॥), २)

बहता हुआ फूल (सचित्र)—मूल लेखक, बाबू चारुचंद्र बंद्योपाध्याय बी० ए०; अनुवादक, सुधा-संपादक पं० रूपनारायण पांडेय कविरत्न; मूल्य २॥), ३)

पवित्र पापी (सचित्र) (एक रूसी उपन्यास का अनुवाद)—अनुवादक, पं० व्रजकृष्ण गुर्टू बी० ए०, एल्-एल्० बी० और कविराज विद्याधर विद्यालंकार; मूल्य ३), ३॥)

विचित्र योगी—लेखक, श्रीद्वारकाप्रसाद मौर्य बी० ए०, एल्-एल्० बी; मूल्य १), १॥)

मा—लेखक, पं० विश्वंभरनाथ शर्मा कौशिक; मूल्य लगभग ३)

संसार-रहस्य अथवा अधःपतन—लेखक, ठाकुर प्रसिद्धनारायणसिंह बी० ए०; मूल्य १॥), २)

सीधे पंडित—लेखक, ठाकुर प्रसिद्धनारायणसिंह बी० ए०; मूल्य १॥)

२. गल्प और कहानियाँ

चित्रशाला (सचित्र)—लेखक, विश्वंभरनाथ शर्मा कौशिक; मूल्य २), २॥)

अद्भुत आलाप—लेखक, हिंदी-साहित्य-संसार के सर्वमान्य महारथी पं० महावीरप्रसादजी द्विवेदी; मूल्य १), १॥)

जातक-कथा-माला—अनुवादक, बाबू रामचंद्र वर्मा; मूल्य १), १॥)

नंदन-निकुंज—लेखक, स्व० श्रीचंडीप्रसादजी बी० ए० 'हृदयेश'; मूल्य १), १॥)

अश्रुपात (सचित्र)—लेखक, ख़्वाजा हसन निज़ामी; अनुवादक, पं० श्रीराम शर्मा बी० ए०; मूल्य १॥), १॥)

जासूस की डाली (सचित्र)—लेखक, बाबू गोपालराम गहमरी, जासूस-संपादक; मूल्य १), १॥)

नाट्यकथाऽमृत—लेखक, प्रिंसिपल चंद्रमौलि सुकुल एम्० ए०, एल्० टी०; मूल्य १), १॥)

प्रेम-गंगा—अनुवादक, स्व० पं० ईश्वरीप्रसाद शर्मा, संपादक "हिंदूपंच"; मूल्य १), १॥)

प्रेम-प्रसून—लेखक, श्रीप्रेमचंदजी; मूल्य १=), १॥=)

प्रेम-द्वादशी (सचित्र)—लेखक, श्रीप्रेमचंदजी; मूल्य १), १॥)

मंजरी (सचित्र)—अनुवादक, सुधा-संपादक पं० रूपनारायणजी पांडेय कविरत्न; मूल्य १), १॥)

३. नाटक

कर्बला—लेखक, श्रीप्रेमचंदजी; मूल्य १॥), २)

कीचक—लेखक, श्रीभगवन्नारायण भार्गव बी० ए०, एम्० एल्० सी०; मूल्य १), १॥)

कृष्णकुमारी (सचित्र)—लेखक, सुधा-संपादक पं० रूपनारायणजी पांडेय कविरत्न; मूल्य १), १)

ख़ाँजहाँ (सचित्र)—लेखक, सुधा-संपादक पं० रूपनारायणजी पांडेय कविरत्न; मूल्य १=), १॥=)

जयद्रथ-वध—लेखक, पं० गोकुलचंद्र शर्मा बी० ए०; मूल्य ॥=), १=)

संचालक गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय, २९-३०, अमीनाबाद-पार्क, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दुर्गावती (सचित्र)—लेखक, लखनऊ-युनिवर्सिटी के हिंदी-लेक्चरार पं० बदरीनाथजी भट्ट बी० ए०; मूल्य १), १॥)

बुद्ध-चरित्र (सचित्र)—अनुवादक, सुधा-संपादक पं० रूपनारायणजी पांडेय कविरत्न; मूल्य ॥), १)

वीर भारत—लेखक, पं० भवानीदत्त जोशी बी० ए०, एल्-एल्० बी०; मूल्य ॥), १)

वेणी-संहार नाटक—लेखक, पं० महावीरप्रसादजी द्विवेदी; मूल्य ॥=), १=)

वरमाला (सचित्र)—लेखक, श्रीयुत गोविंदवल्लभ पंत; मूल्य ॥), १)

पूर्व-भारत—लेखक, हिंदी के धुरंधर विद्वान् "मिश्रबंधु"; मूल्य ॥=), १=)

४. व्यंग्य, हास्य और प्रहसन

अचलायतन—मूल-लेखक, श्रीरवींद्रनाथ ठाकुर; अनुवादक, सुधा-संपादक पं० रूपनारायण पांडेय कविरत्न; मूल्य ॥)

ईश्वरीय न्याय—लेखक, प्रोफ़ेसर श्रीरामदास गौड़ एम्० ए०; मूल्य ॥)

मूर्ख-मंडली—लेखक, सुधा-संपादक पं० रूपनारायण पांडेय कविरत्न; मूल्य ॥=), १=)

मिस्टर व्यास की कथा—लेखक, स्वर्गीय पंडित शिवनाथजी शर्मा बी० ए०; मूल्य २॥), ३)

रायबहादुर—मूल-लेखक, सौ० मौलियर; अनुवादक, पं० लल्लीप्रसाद पांडेय; मूल्य ॥), १)

लबड़धोंधों—लेखक, लखनऊ-युनिवर्सिटी के हिंदी-लेक्चरार पं० बदरीनाथ भट्ट बी० ए०; मूल्य ॥), १॥=)

५. काव्य

आत्मार्पण—लेखक, द्वारकाप्रसाद गुप्त "रसिकेंद्र"; मूल्य लगभग ॥)

उषा—लेखक, स्व० श्रीशिवदास गुप्त "कुसुम"; मूल्य ॥=)

पराग—लेखक, सुधा-संपादक पं० रूपनारायण पांडेय कविरत्न; मूल्य ॥), १)

पुष्पांजलि—लेखक, आनरेबुल श्यामविहारी मिश्र एम्० ए० और रायबहादुर पं० शुकदेवविहारी मिश्र बी० ए०; मूल्य १॥)

भारत-गीत—लेखक, कवि-सम्राट् पं० श्रीधर पाठक; मूल्य ॥), १)

मानस-मुक्तावली—संग्रहकर्ता, रायबहादुर बाबू मुकुंदलालजी गुप्त; मूल्य ।=)

६. गद्य-साहित्य

निबंध-निचय—लेखक, हिंदी के उत्कृष्ट समालोचक पं० जगन्नाथप्रसाद चतुर्वेदी; मूल्य १), १॥)

विश्व-साहित्य—लेखक, सरस्वती-संपादक श्रीपदुमलाल-पुन्नालाल बख्शी बी० ए०; मूल्य १॥), २)

साहित्य-सुमन—लेखक, स्व० पं० बालकृष्ण भट्ट; मूल्य ॥=), १=)

हिंदी—लेखक, लखनऊ-विश्वविद्यालय के हिंदी-लेक्चरार पं० बदरीनाथ भट्ट बी० ए०; मूल्य ॥=), १=)

७. समालोचनाएँ

देव और बिहारी—लेखक, पं० कृष्णबिहारी मिश्र बी० ए०, एल्-एल्० बी०; १॥), २)

भवभूति—अनुवादक, हिंदी-संसार के सुप्रसिद्ध विद्वान् पं० ज्वालादत्त शर्मा; मूल्य ॥=), १=)

हिंदी-नवरत्न—लेखक, हिंदी-संसार के धुरंधर समालोचक "मिश्रबंधु"; मूल्य ४॥)

८. जीवन-चरित्र

कारनेगी और उसके विचार—लेखक, श्रीउमरावसिंह कारुलिक; मूल्य ॥=)

केशवचंद्र सेन—लेखक, भारतीय हृदय; मूल्य १), १॥)

प्रभु-चरित्र—लेखक, पं० शिवराम शुक्ल; मूल्य ॥)

प्राचीन पंडित और कवि—लेखक, आचार्य पं० महावीर-प्रसाद द्विवेदी; मूल्य ॥=), १=)

बंकिमचंद्र चटर्जी—लेखक, सुधा-संपादक पं० रूपनारायण पांडेय कविरत्न; मूल्य १), १॥)

सुकवि-संकीर्तन (सचित्र)—लेखक, साहित्य-महारथी पं० महावीरप्रसादजी द्विवेदी; मूल्य १), १॥)

९. इतिहास

इँगलैंड का इतिहास (तीन भाग)—लेखक, डॉ० प्राणनाथजी विद्यालंकार पी०-एच्० डी०; मूल्य ३), ४)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जापान का इतिहास—लेखक, ऑनरेबुल पं० श्यामविहारी मिश्र एम्० ए०, रायबहादुर पं० शुकदेवविहारी मिश्र बी० ए० ; मूल्य ।।।=)

स्पेन का इतिहास—लेखक, ऑनरेबुल पं० श्यामविहारी मिश्र एम्० ए०, रायबहादुर पं० शुकदेवविहारी मिश्र बी० ए० ; मूल्य ।।।=)

१०. अर्थशास्त्र और व्यापार

भारतीय अर्थशास्त्र—लेखक, भूतपूर्व प्रेम-संपादक बाबू भगवानदासजी केला ; मूल्य २॥), ३॥)

विदेशी विनिमय—लेखक, प्रयाग-विश्वविद्यालय के अर्थशास्त्र अध्यापक श्रीदयाशंकर दुबे एम्० ए०, एल्-एल्० बी० ; मूल्य १), १॥)

११. कृषि

उद्यान (सचित्र)—लेखक, श्रीशंकरराव जोशी एग्रिकल्चरल ऑफ़िसर ; मूल्य १=), १॥=)

किसानों की कामधेनु (सचित्र)—लेखक, हिंदी के सुप्रसिद्ध लेखक पं० गंगाप्रसाद अग्निहोत्री ; मूल्य ।=)

कृषि-मित्र—लेखक, पं० गंगाप्रसाद पांडेय L. A. G. सुपरिंटेंडेंट एग्रिकल्चर ; मूल्य ।-)

कृषि-विद्या—लेखक, पं० अश्विनीकुमार शुक्ल; मूल्य ॥), १)

तरु-जीवन—लेखक, पं० गंगाशंकर पंचोली; छप रहा है।

१२. स्वास्थ्य और चिकित्सा

तात्कालिक चिकित्सा (सचित्र)—लेखक, बाबू लालबहादुरलाल; मूल्य १), १॥)

संक्षिप्त शरीर-विज्ञान—लेखिका, श्रीमती हेमंतकुमारी भट्टाचार्य; मूल्य ॥=)

संक्षिप्त स्वास्थ्य-रक्षा—लेखिका, श्रीमती हेमंतकुमारी भट्टाचार्य; मूल्य ॥=)

स्वास्थ्य की कुंजी—लेखक, डॉ० बाबूराम गर्ग ; मूल्य १), १॥)

१३. वैज्ञानिक

भूकंप—लेखक, सुप्रसिद्ध विद्वान् बाबू रामचंद्र वर्मा; मूल्य १)

मनोविज्ञान—लेखक, प्रिंसिपल पं० चंद्रमौलि सुकुल एम्० ए०, एल्० टी० ; मूल्य ॥), १)

१४. नवयुवकोपयोगी

जीवन का सदुपयोग—अनुवादक, श्रीहरिभाऊ उपाध्याय, संपादक हिंदी नवजीवन ; मूल्य १), १॥)

रूसिया में प्रभात—मूल लेखक, पाल रिचर्ड ; अनुवादक, श्रीठाकुर कल्याणसिंह शेखावत बी० ए० ; मूल्य ॥), १)

भिखारी से भगवान्—अनुवादक, ठाकुर बाबू नंदनसिंह बी० ए० ; मूल्य १), १॥)

सुख तथा सफलता मूल्य ।)

१५. योग

प्राणायाम—लेखक, ठाकुर प्रसिद्धनारायणसिंह बी० ए० ; मूल्य ।।।=), १।=)

कर्मयोग—लेखक, श्रीसंतराम बी० ए ; मूल्य ॥), १)

हठयोग—लेखक, ठाकुर प्रसिद्धनारायणसिंह बी० ए० ; मूल्य लगभग २)

योग-शास्त्रांतर्गत धर्म—लेखक, ठाकुर प्रसिद्धनारायणसिंह बी० ए० ; मूल्य ॥)

योगत्रयी—लेखक, ठा० प्रसिद्धनारायणसिंह बी०ए०; मूल्य॥)

राजयोग—लेखक, ठा० प्रसिद्धनारायणसिंह बी०ए०; मूल्य १॥)

योग की कुछ विभूतियाँ—लेखक, ठाकुर प्रसिद्धनारायणसिंह बी० ए० ; मूल्य ॥)

जीवन-मरण-रहस्य—लेखक, ठाकुर प्रसिद्धनारायणसिंह बी० ए० ; मूल्य ।=)

योग-दर्पण—लेखक, लाला कन्नोमल एम्० ए० ; मूल्य लगभग १)

१६. महिला-माला की मनोहर मणियाँ

कमला-कुसुम (सचित्र)—लेखिका, श्रीमती गिरिजा देवी; मूल्य १)

ज़च्चा—लेखक, कविराज श्रीप्रतापसिंह वैद्य, हिंदू-विश्वविद्यालय के आयुर्वेद विभाग के सुपरिंटेंडेंट ; मूल्य ॥।=)

गुप्त-संदेश (दो भाग)—लेखक, श्री डॉक्टर युद्धवीरसिंह ; मूल्य १=)

देवी पार्वती (सचित्र)—लेखक, मुं० जहूरबख़्श मूल्य १)

संचालक गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय, २६-३०, अमीनाबाद-पार्क, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देवी द्रौपदी (सचित्र)—लेखक, कविवर श्रीरामचरितजी उपाध्याय ; मूल्य ॥)

नारी-उपदेश—लेखक, श्रीगिरिजाकुमार घोष ; मूल्य ॥)

पत्रांजलि—मूल-लेखक, श्रीसतीशचंद्र चक्रवर्ती ; अनुवादक पं० कात्यायनीदत्त त्रिवेदी ; मूल्य ॥)

भारत की विदुषी नारियाँ—संपादिका, श्रीमती कृष्णकुमारी; मूल्य ॥)

भारतीय स्त्रियाँ—अनुवादक, बाबू रामचंद्र वर्मा; मूल्य १॥), २)

महिला-मोद—लेखक, साहित्य-महारथी पं० महावीरप्रसादजी द्विवेदी ; मूल्य ॥)

लक्ष्मी (सचित्र) – लेखक, श्रीगिरिजाकुमार घोष; मूल्य ॥=)

वनिता-विलास (सचित्र)—लेखक, भूतपूर्व सरस्वती-संपादक पं० महावीरप्रसादजी द्विवेदी ; मूल्य ॥)

१७. बालविनोद-वाटिका के सुंदर सुमन

इतिहास की कहानियाँ (सचित्र)—लेखक, मुं० जहूरबख़्श हिंदी-कोविद ; मूल्य ॥=)

कीड़े-मकोड़े (सचित्र)—लेखक, पं० भूपनारायणजी दीक्षित बी० ए०, एल्० टी० ; मूल्य ॥=)

खिलवाड़—लेखक, पं० भूपनारायणजी दीक्षित बी० ए०, एल्० टी० ; मूल्य ।)

खेल-पचीसी—लेखक, श्रीप्रतिपालसिंहजी ; मूल्य ।=)

गधे की कहानी (सचित्र)—लेखक, पं० भूपनारायणजी दीक्षित बी० ए०, एल्० टी० ; मूल्य ॥), १)

नटखट पाँड़े (सचित्र)—लेखक, श्री पं० भूपनारायणजी दीक्षित बी० ए०, एल्० टी० ; मूल्य १॥), २)

परोपकारी हातिम (सचित्र)—लेखक, मुं० जहूरबख़्श हिंदी-कोविद ; मूल्य १), १॥)

बालनीति-कथा (दो भाग)—मूल-लेखक, हिंदू-विश्वविद्यालय, काशी के प्रिंसिपल और प्रो-वाइस-चांसलर श्रीयुत ए०बी०ध्रुव एम्०ए०एल्-एल्०बी० ; अनुवादक, लखनऊ-विश्वविद्यालय के हिंदी-लेक्चरार श्रीपं०बदरीनाथभट्टबी०ए०; मूल्य २॥), ३॥)

भगिनी-भूषण—लेखक, स्व० श्रीबा०गोपालनारायणसेनसिंह बी० ए० ; मूल्य =)

भारत के सपूत (सचित्र)—लेखक, मुं० जहूरबख़्श हिंदी-कोविद ; मूल्य ॥=)

लड़कियों का खेल (सचित्र)—लेखक, स्व० श्रीगिरिजा-कुमार घोष ; मूल्य ॥)

सुघड़ चमेली—लेखक, श्रीयुत रामजीदास भार्गव ; मूल्य=)

हँसी-खेल—लेखक, श्रीजगमोहन 'विकसित'; मूल्य लगभग ॥)

१८. सुकवि-माधुरी-माला के अनुपम रत्न

बिहारी-रत्नाकर—प्रणेता, व्रजभाषा-साहित्य के पारदर्शी विद्वान् बाबू जगन्नाथदास "रत्नाकर" बी०ए०; मूल्य ५)

मतिराम-ग्रंथावली—संपादक, पं० कृष्णविहारी मिश्र बी० ए०, एल्-एल्० बी ; मूल्य २॥), ३)

मिश्रबंधु-विनोद (दो खंड)—लेखक, पं० गणेशविहारी मिश्र, माननीय पं० श्यामविहारी मिश्र एम्० ए० और रा० ब० पं० शुकदेवविहारी मिश्र बी० ए० ; मूल्य

प्रथम खंड २), २॥)

द्वितीय खंड ३), ३॥)

१९. प्रकीर्णक पुस्तकें

अयोध्यासिंह उपाध्याय— मूल्य =)

देशहितैषी श्रीकृष्ण—लेखक, स्वर्गीय स्वनाम-धन्य पं० राधाचरण गोस्वामी ; मूल्य =)

द्विजेंद्रलाल राय—लेखक, सुधा-संपादक पं० दुलारेलाल भार्गव और पं० रूपनारायण पांडेय कविरत्न ; मूल्य =)

पूर्ण-संग्रह—संपादक, पं० कृष्णविहारी मिश्र बी० ए०, एल्-एल्० बी० ; मूल्य १॥), २)

प्रायश्चित्त-प्रहसन—लेखक, सुधा-संपादक पं० रूपनारायण पांडेय कविरत्न ; मूल्य ।)

मध्यम व्यायोग—लेखिका, श्रीमती सुशीलादेवी जायसवाल; मूल्य =)

स्कॉड-मार्चिंग (सचित्र)—लेखक, पं० मनोहरप्रसाद त्रिपाठी ; मूल्य ॥)

सम्राट्-चंद्रगुप्त—लेखक, पं० बालमुकुंद वाजपेयी भूतपूर्व लक्ष्मण-संपादक ; मूल्य ।)

Hindi in Thirty days—लेखक, श्रीरामस्वरूप कौशल एम्० ए०, एम्० आर० ए० एस्० विद्याभूषण; मूल्य ॥)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विवाह-विज्ञापन

[लेखक, पं० बदरीनाथ भट्ट बी० ए०]

पाँचवाँ दृश्य

स्थान—उद्यान का एक भाग

(बाल्टीदेवी का प्रवेश)

बाल्टीदेवी—हे भगवान्, यह मुझे क्या हो गया है! क्या और सबको भी यही सब सहना पड़ता है या अकेली मैं ही इसका शिकार बन रही हूँ? मुझे पूरा विश्वास है कि अकेली मैं ही इस विपत्ति में पड़ी हूँ; क्योंकि यदि इसके पहले यह विपत्ति किसी और पर पड़ी होती तो अवश्य ही उसके मरने का समाचार अब तक पत्रों में कभी का छप चुका होता। राधा, सीता, रुक्मिणी, सुभद्रा, दमयंती, मंदोदरी और सूपनखा का प्रेम भी यदि मेरा ही जैसा असली होता तो वे अवश्य ही हृदय के रोग से पीड़ित होकर मर गई होतीं; सो बात आज तक नहीं सुनी गई। उन सबका प्रेम बनावटी था, अकेला मेरा ही असली है। (हृदय पर हाथ रखकर) कैसी पनचक्की-सी चल रही है! जब तक मैंने इन सज्जन को नहीं देखा था तब तक मेरा मन किसी अज्ञात और अपरिचित वस्तु की खोज में हैरान हुआ मानो आकाश में उड़ा-उड़ा फिरता था, उसमें एक ख़ालीपन-सा था, जिसे भरने में मन-बहलाव की सब तरह की सामग्री असमर्थ थी; किंतु अब जब से इन्हें देखा है, मन इन्हीं के हाथ बिक गया है। यह जो हृदय में मोटर-सी बिगड़ रही है सो केवल इसलिये कि जैसे हो सके वैसे झटपट मुझे इनकी सेवा का अवसर मिले। यही जी चाहता है कि अब इन्हें घर न जाने दूँ, हृदय में बंद कर लूँ, दिन-रात देखा करूँ, एक मिनट को भी आँखों से ओझल न होने दूँ। दुनिया में यह अब और किसी के कुछ न रहकर मेरे ही सब कुछ हो जायँ।

(सखी का प्रवेश)

सखी—क्यों बहन, तुमको यह क्या हो गया है, जो इस तरह पागल-सी हुई घूमती हो? मुझसे बात भी नहीं करतीं!

बाल्टीदेवी—तुम आ गईं! इसमें मेरा नहीं, मेरे मन का दोष है।

सखी—कैसा?

बाल्टी०—मैं अपने पति को देखकर भी, उनकी बातें सुनकर भी, उन्हें नहीं पा रही हूँ।

सखी—(अचरज से) यह मैं क्या सुन रही हूँ?

बाल्टी०—सच बात।

सखी—सच बात! पहले जब कभी तुमसे हँसी में भी इस तरह की बातें करने लगती थी तो तुम लजा जाती थीं और मुझे चुप कर दिया करती थीं। आज यों खुलकर—

बाल्टी०—अधिक तर्क-वितर्क करने की क्या आवश्यकता है? न-जाने किसने मेरी लज्जा हर ली है! न-जाने मुझे क्या हो गया, या हो रहा है?

सखी—मान लो—

बाल्टी०—(बीच ही में) ऐसी बात मुँह से निकालना भी मत। हिंदू लड़की एक से अधिक पति नहीं कर सकती। जो किसी लालच या हठ से एक से अधिक की इच्छा हृदय में करे तो समझ लो कि वह अवश्य पूर्व-जन्म की वेश्या है और इस जन्म में आगे चलकर वैधव्य भोगनेवाली है।

सखी—ये जो दो पाहुने आए हैं—

बाल्टी०—(बीच में) पाहुने मत कहो; इनमें से एक मेरे पति हैं और दूसरे उनके मित्र।

सखी—तुम्हारे पति!

बाल्टी०—हाँ, जिन्हें हृदय से वर लिया है।

सखी—मान लो, सब बातें पक्की न हुईं?

बाल्टी०—राम-राम, ऐसी अशुभ बात मेरे सामने मुँह से न निकालो।

सखी—मान लो—

बाल्टी०—तो फिर?

सखी—फिर क्या करोगी?

बाल्टी०—कुछ नहीं।

सखी—क्या दूसरे से विवाह ही न करोगी?

बाल्टी०—चुप, चुप; यह पाप की बात मुँह से न निकालो।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सखी—हे भगवान्, इतनी बदल गईं ! यह प्रकृति का खेल है या प्रवृत्ति का ?

बाल्टी०—जिसका चाहो, समझो। तुम जाओ यहाँ से, दूसरे काम में लगो, न-जाने क्यों इस समय मुझे अकेले ही में अच्छा लग रहा है।

सखी—तो मैं क्या तुम्हारे विरुद्ध थोड़ही हूँ। मुझे तो, सच कहती हूँ, बड़ी ही प्रसन्नता है, और मैं हर प्रकार से तुम्हारी सहायता करने को तैयार हूँ; और तुम न भी कहोगी तो भी करूँगी, जैसे पुराने समय में त्रिजटा ने सीता की की थी—यद्यपि वह और विषय था, जिसका कि इस विषय से कोई ऐसा सीधा संबंध नहीं था।

बाल्टी०—यदि तुम सचमुच मेरी सहायता करना चाहती हो तो वहीं चली जाओ और सब बातें सुनकर मुझे बताओ। जाओ, जल्दी जाओ, मुझे अकेली ही रहने दो। (कुछ सोचती हुई) हर प्रकार से निर्दोष, ऐसी मोहिनी मूरत मैंने आज तक नहीं देखी।

सखी—सखी, यह कोई नई बात नहीं है, प्रेम का चश्मा लगाने से सभी को ऐसा दीखने लगता है। सदा से यही होता आया है। अच्छा, मैं जाती हूँ। (गई)

बाल्टी०—(सोचती हुई) ऐसा करने में यदि कुछ बुराई न हो तो एक पत्र ही भेजूँ। क्या करूँ ? किससे सलाह लूँ ? अच्छा, आने दो ; शकुंतला की भाँति मैं भी सखी से ही पूछूँगी। (कुछ आहट सुनकर एक ओर देखती है) अहा ! ये इधर-उधर घूम रहे हैं ! ऐसे निर्दोष सज्जन तो दुनिया में दूसरे कोई भी न होंगे। ऐसा मन होता है कि अभी पैरों पर गिरकर प्रार्थना कर डालूँ कि जैसे बने वैसे मुझे ही अपनी दासी बनाइए, और मेरे पिताजी की त्रुटियों की ओर—यदि उनमें कुछ हों भी तो—ध्यान न दीजिएगा। (फिर उसी ओर देखकर) लो, यह तो इधर ही आ रहे हैं। आड़ में से इनकी मन-मोहिनी बातें सुनकर ही कलेजा ठंडा करूँ।

(आड़ में हो जाती है ; बेचैनीराम व संपादक का प्रवेश)

संपादक—तो अब तो सब हो ही रहा है; ऐसे उतावले क्यों हुए जाते हो ?

बेचैनी०—मुझे और कुछ नहीं, मूर्ख कवियों पर तरस आरहा है, जो बका करते हैं कि 'चंद्रमा-जैसा मुख !' 'कमल-जैसा मुख !' मैं कहता हूँ कि चंद्रमा और कमल, दोनों उसके मुख के आगे पानी भरते हैं।

संपादक—पानी भरते हैं तो क्या हो गया ?

बेचैनी०—तुम तो उधर अपनी क्षमा-प्रार्थना की बातों में लग रहे थे। मैं कहता हूँ तनिक-सी झलक दीखी थी तब तो मेरा यह हाल हुआ, जब विवाह हो गया तब मैं कैसे बचूँगा ! हे मूर्ख कवियो, होश की दवा करो होश की ! (बाल्टी चकित और हर्षित होती है)

संपादक—अजी, अभी सब तय हुआ जाता है ; क्यों घबड़ाते हो ? ये लोग सब पक्ष में हैं ही, अब रह क्या गया है ?

बेचैनी०—सच बताओ, क्या वह भी मुझसे प्रेम करती होगी ? मैं तो समझता हूँ नहीं करती होगी ; ऐं ? एक ओर प्रेम, दूसरी ओर उदासीनता ! हे ईश्वर, कैसा अंधेर है ! (बाल्टी खुश होती है)

संपादक—तुमको हो क्या गया है ?

बेचैनी०—और, अभी जब पास से निकली और मैंने ढिठाई के साथ पूछा कि क्या बाल्टीदेवी आप ही हैं, तो क्या मुसकिराकर उत्तर दिया है कि जी नहीं, मैं तो उनकी सखी हूँ ! (बाल्टी चौंकती है) हुँः, मुझे ही चकमा दिया होता ! पर वह तो यह कहो कि मेरा हृदय जो गवाही दे रहा था, सो भला मैं उसके प्रेम-पूर्ण धोखे में आ कैसे जाता ? (बाल्टी दुखी होकर मूर्च्छित-सी हो जाती है)

संपादक—यार, सच बात तो यह है कि यद्यपि सब बातें पक्की हो रही हैं और तुम मुझे मूर्ख समझोगे, परंतु अब भी मेरे मन में रह-रहकर यह संदेह उठ खड़ा होता है कि कलट्टर साहब से सहज में पिंड छूट भी जायगा या नहीं।

बेचैनी०—मैं पूछता हूँ कि किसी सच्चे प्रेमी को तरसा-तरसाकर मारने से लाभ ?

संपादक—मैं कहता हूँ कि साहब के चपरासी साले इनाम के लिये अवश्य पीछे पड़ेंगे।

बेचैनी०—सच बताओ, क्या वह हमारी बातें सुनती रही होगी ?

संपादक—मैं साफ़ कहे देता हूँ कि मैं किसी को कौड़ी एक न दूँगा। चाहे कोई बुरा माने या भला, मेरे पास डब्बल नहीं है देने को।

बेचैनी०—यह तो मैंने माना कि बुरा-भला मानने की बात नहीं है, पर मैं यह पूछता हूँ कि वह मुझसे झूठ क्यों बोली ? (बाल्टी बेचैन होती है)

संपादक—कभी नहीं, इस बात को तुम स्वयं जानते हो कि मैंने कभी कोई बात अपने पत्र में झूठ नहीं लिखी; फिर मुझ पर यह अत्याचार क्यों ? मैं तो साफ़ कहूँगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बेचैनी०—इन बातों को रहने दो; तुम मेरी बात का जवाब दो। सुनो, मैं साफ़ कहे देता हूँ कि उसके बिना मैं न जियूँगा। यदि वह मुझे न मिली तो मैं आठ आने की अफ़ीम लेकर खा लूँगा।

संपादक—हँसनेवाले हँसा करें; मुझे किसी के हँसने-रोने की परवा नहीं। मैं इस काम ही को छोड़ दूँगा।

बेचैनी०—जैसे बनेगा वैसे उसी से करूँगा।

संपादक—तो अब दीवान बहादुर साहब से पूछना चाहिए कि कितनी देर है।

बेचैनी०—तुमने ठीक ताड़ा; अब देर का काम नहीं है। चलकर जैसे बने वैसे शीघ्र ही मुझे उससे मिला दो। न हो तो किसी नौकर-चाकर की ही कुछ मुट्ठी गरम की जाय। मैं सच कहता हूँ, मेरी सारी देश-भक्ति पर उसके प्रेम का पानी फिर गया है। अब मुझसे कुछ न होगा। आदमी से एक समय में एक ही काम हो सकता है, चाहे प्रेम कर ले, चाहे देश-भक्ति।

संपादक—तो चलो, जल्दी चलें।

बेचैनी०—चलो, चलो।

(दोनों का जाना ; बाल्टी का प्रवेश)

बाल्टी०—हाय स्वामी, दुर्भाग्य से मेरी सखी को अपनी प्रियतमा बाल्टीदेवी समझ गए! यह क्या अनर्थ हो रहा है! जैसे समुद्र में डूबता हुआ आदमी नीचे ही को धँसता जाता है, उसी प्रकार तुम भी उसके प्रेम-समुद्र में प्रति-क्षण गहरे डूबते चले जा रहे हो! अब क्या मुझे निराश होकर अपने प्राण ही दे देने पड़ेंगे? यह दुष्टा सखी इस समय कहाँ से आ मरी! यह अवश्य तुमको मुझसे छीन लेगी। हाय, क्या करूँ?

(सखी का प्रवेश)

सखी—बाल्टी, बड़ा तमाशा हुआ!

बाल्टी०—(क्रोध से) चल हट उधर, चोट्टी।

सखी—(अचरज से) हैं! यह तुम क्या कह रही हो?

बाल्टी०—दुष्टा! छलनी! कपटिन! जिस थाली में खाय, उसी में छेद करे! (मुहँ ढककर रोने लगती है)

सखी—(घबड़ाकर) हाय! मेरी सखी प्रेम के मारे पगली हो गई है, जैसा कि किताबों में लिखा रहता है! हे भगवान्, ऐसे शुभ समय में यह कैसी बिजली गिरी! (पास जाकर) बाल्टी!

(बाल्टी और भी रोती है)

सखी—हैं! हैं! यह क्या करती हो? तुमको हो क्या गया? वह देखो वह! तुम्हारे पिताजी आरहे हैं।

बाल्टी०—मुझे विष दे दे, कुलटा, तू ही सुहागिन बन जा।

सखी—राम-राम, देखो सभी काम ठीक हो रहा है, अपने को सँभाले रहो।

बाल्टी०—तूने उनका हृदय चुराकर उन्हें अपने बस में कर लिया! मेरा भंडार लूट लिया! विश्वासघातिन—

सखी—हाय, क्या अभी डॉक्टर को बुलाना पड़ेगा? यह क्या अंडबंड बक रही हैं!

बाल्टी०—अब ऐसी भोली बनती है!

सखी—(एक ओर देखकर) लो! वह आ गए। तुम्हारे पिताजी और तहसीलदार साहब! उठो, उठो!

(दोनों जाती हैं; दूसरी ओर से दीवान व तहसीलदार आते हैं)

दीवान०—लड़का अच्छा है, इसमें कोई संदेह नहीं।

तहसील०—सुशील है, होनहार है।

दीवान०—आप जानते ही हैं कि मैं तो किसी अधेड़ से करने का इरादा कर ही चुका था; पर देखता हूँ कि यह लड़का जवान होने पर भी बहुत-सी बातों में किसी अधेड़ से कम नहीं है।

तहसील०—सचमुच नहीं है।

दीवान०—मैं चाहता हूँ कि किसी तरह से एक बार लड़की उसे और वह लड़की को देख ले।

तहसील०—प्रेम के अनगिनती आँखें होती हैं; एक दूसरे को देख भी लिया हो तो कौन जाने?

दीवान०—ऐसा तो, ख़ैर, नहीं हुआ होगा; क्योंकि मेरी लड़की बड़ी ही लजीली और भोली है।

तहसील०—(आप-ही-आप) यह भी अजीब अंध-विश्वास है जो सृष्टि के आदि से ही माता-पिताओं के हृदयों में डेरा डाले हुए है! (दीवान० से) शकुंतला के विषय में महर्षि कण्व का भी ऐसा ही विचार था।

दीवान०—क्या मतलब?

तहसील०—यही कि जो पाव-भर अन्न खाता है या खाती है, वह इतना हद से ज़्यादा भोला या भोली नहीं हो सकता है और न हो सकती है। अर्थात् वह बहुत कुछ बुद्धि रखता है या रखती है, जो कि प्रेम की सान पर रक्खी जाने पर क़ैंची की भाँति और भी तेज़ हो जाती है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दीवान०—क्या कहा आपने ?

तहसील०—यही कि अच्छा हो यदि माता-पिता, अब अधिक देर न कर, आज ही से अपनी संतान को इतनी भोली और लजीली समझना छोड़ दें।

दीवान०—न-जाने आप यह क्या चर्चा ले बैठे ? मैं विश्वासपूर्वक कहता हूँ कि वे दोनों हमारे वैभव को देखकर बड़े हर्षित और संतुष्ट हो रहे हैं। (तहसीलदार के कान में कुछ कहता है)

तहसील०—ठीक है, यही तरकीब ठीक होगी।

(बेचैनीराम व संपादक का प्रवेश)

दीवान०—आशा है, हमारी चित्रशाला आप लोगों को पसंद आई होगी।

बेचैनी०—चित्रशाला क्या है विचित्रशाला है !

संपादक—सभी चित्र अनमोल, अनुपम और धन्य हैं।

बेचैनी०—मैं अपने स्वर्गीय माता-पिता की सौगंध खाकर कहता हूँ कि मैंने ऐसी चित्रशाला आज तक नहीं देखी। इन चित्रों को देखने से पहले मुझे यह ज्ञात ही नहीं था कि कृष्णजी को भी कभी तपेदिक़ हुई थी, तथा गोपियाँ किसी ऐसे रोग से पीड़ित थीं, जिसे लज्जा के कारण बहुत दिनों तक छिपाए रखने से वे पीली पड़ गई थीं, और सूखकर काँटा हो गई थीं। भला हो इन चित्रकारों का जिन्होंने ऐसी अद्भुत ऐतिहासिक खोज करके कुछ गुप्त बातों की मानों सूरत ही लोगों के सामने खड़ी कर दी ! भला यही क्या कुछ कम बात है कि इन कला-विशारदों की कृपा से हमें यह ज्ञात हो गया कि उस समय किसी का भी स्वास्थ्य महात्मा गांधी से अच्छा न था—और न लंबाई-चौड़ाई ही—चाहे स्त्री हो, चाहे पुरुष।

संपादक—ये बातें भागवत लिखनेवाले व्यासजी को भी ज्ञात नहीं थीं। देखिए न, चित्रों के देखने से यह भी पता लगा कि अन्त तक श्रीकृष्णजी ने न तो कर्मयोग का मार्ग छोड़ा और न कर्ज़न-फ़ैशन। रही उनकी मक्खन-पसंदी की, सो इसका कारण यह है कि उन दिनों कचालू की चाट नहीं बिकती थी; क्योंकि आलू तो बेचारे बाद को इस देश में आए हैं।

तहसील०—(अचरज से) तो क्या श्रीकृष्ण भगवान् ने कचालू कभी नहीं खाया था ?

संपादक—जी, और न श्रीरामचंद्रजी ने; वरना वे मक्खन क्यों पसंद करते ?

तहसील०—(दीवान० की ओर) कैसे आश्चर्य की बात है ! ईश्वर के अवतारों तक ने चाट नहीं खाई थी !

दीवान०—यह तो मैं नहीं कह सकता कि किसको क्या बीमारी थी, पर यह बात सच है कि कला की दृष्टि से ये सब चित्र लासानी हैं। चित्र-कला के मर्म को समझनेवाले बड़े-बड़े लोग इनकी प्रशंसा कर गए हैं।

बेचैनी०—क्यों न हो, वही तो मैं भी कहता हूँ, यद्यपि मैं चित्र-कला का कोई ऐसा बड़ा जानकार नहीं। क्या मैं यह पूछने की ढिठाई कर सकता हूँ कि ये कलावतीदेवी कहाँ की रहनेवाली हैं ?

तहसील०—जी, ये कलकत्ते की हैं, जहाँ की काली माई का नाम आपने भी सुना होगा। बस, वहीं से ये ईस्ट इंडियन रेलवे पर सवार होकर इधर चली आई हैं।

संपादक—(कुछ बेचैनी के साथ) मैं सच कहता हूँ, ऐसे चित्र कलक्टर साहब के यहाँ भी न निकलेंगे।

दीवान०—आपने ठीक कहा, अब थोड़ी देर में देख ही लीजिएगा। वे लोग तो जंगल और पहाड़ों के चित्र लटकाया करते हैं, जब कि हमारे यहाँ के चित्र मनुष्य के भीतरे से भीतरे मनोभावों की झलक दिखाते हैं।

संपादक—इसमें क्या संदेह ?

तहसील०—संपादकजी, तो अपने मित्र को यहीं छोड़कर चलिए, अब आपका वह काम भी करा ही दिया जाय; क्योंकि आपको उसकी चिंता बेतरह सता रही है, और सचमुच वह है भी चिंता की बात। दीवान बहादुर साहब, कहिए, क्या राय है ?

दीवान०—चलिए न ? अभी लौट आवेंगे; तब तक भोजन भी तैयार हो जायगा। (संपादक से) कलक्टर साहब से, बस, दो ही बातों में फ़ैसला हो जायगा, आप कुछ भी चिंता न कीजिए।

संपादक—जब आप-सरीखे परोपकारी हितैषी मौजूद हैं, तब चिंता किस बात की ?

तहसील०—तो बस, अब चलिए।

संपादक—बहुत अच्छा। (बेचैनीराम को छोड़कर सब जाते हैं)

बेचैनी०—हे अप्सरे, क्या तू कुछ दिन और मेरे जीवित रहने में मेरी कुछ भी सहायता न करेगी, जब कि मैं तेरे प्रत्येक हाव-भाव-कटाक्ष पर यों बुरी तरह मुग्ध हूँ ? क्या तूने मुझे बिलकुल ही गया-बीता समझ लिया है, जब कि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बेचैनीराम

लिखता है और बड़े जोश में पढ़ता भी जाता है।

('विवाह-विज्ञापन'-प्रहसन)

Designed and Printed
The Ganga Fine Art Press, Lucknow.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मैं तुझे अपने हृदय की रानी बनाए बैठा हूँ ? रही मेरी प्रतिष्ठा की, सो हिंदी के समाचार-पत्रों के दफ़्तरों में जाकर देख कि जब कभी मैं जा बैठता हूँ तो किस तरह पान-पर-पान चले आते हैं, और किस तरह बरफ़ पड़े हुए ठंडे पानी के झरने बहने लगते हैं ! अधिक क्या कहूँ, बस, मैं ही जानता हूँ कि मैं कैसा बड़ा कवि हूँ; इस बात को मेरे मित्र भी पूरी तरह से नहीं जान पाते। उनमें योग्यता ही नहीं है। (सखी और बाल्टी, दोनों एक ओर आड़ में खड़ी होकर सुनती हैं। बाल्टी सखी के और सखी बाल्टी के वस्त्र पहने हुए है) हे मेनका-मद-गंजनी, यदि तुझमें योग्यता हो तो तू देखे कि मैं अभी हाल क्या करता हूँ। (जेब में से काग़ज़-पेंसिल निकालता हुआ) इस समय तू न-जाने कहाँ बैठी आटा सान रही होगी ; परंतु जब तेरे पास यह कवितामय पत्र पहुँचेगा, तब तू समझेगी कि मेरी क्या दशा है। (लिखता है और बेड़ जोश में पढ़ता भी जाता है)

कवितामय पत्र

इच्छा है, प्यारी, तुमको जीवन-सहचरी बनाऊँ मैं ;
हृदय-भवन के प्रेम-पालने में आजन्म झुलाऊँ मैं।
जहाँ तुम्हारा गिरे पसीना, अपना खून गिराऊँ मैं ;
तुम्हें तारने को भव-सागर, स्वयं सेतु बन जाऊँ मैं।
जो विपदाएँ आवेंगी, उनको मैं अपने सिर लूँगा ;
तन, मन, धन तुम पर वारूँगा, कष्ट न कुछ होने दूँगा।
मैं किवाड़ हूँ, तुम चौखट हो—मैं खिड़का, तुम जाली हो ;
मैं चूल्हा हूँ, तुम चक्की हो—मैं लोटा, तुम थाली हो।
दया करो अब मेरे ऊपर, मुझको अधिक न तरसाओ ;
अब जैसे भी बने, सुंदरी, मुझको झटपट अपनाओ।

(दुबारा देखता है कि कोई भूल तो नहीं रह गई; सखी बाल्टी को समझा-बुझाकर बेचैनीराम के पास भेजकर आप खिसक जाती है; बाल्टी को देखकर बेचैनीराम चौंक पड़ता है; दोनों कुछ देर चुप रहते हैं)

बेचैनी०—(बड़े साहस के साथ) प्रिय श्रीमती बाल्टी-देवीजी, (ध्यान से देखता हुआ) यद्यपि आप इस समय पहले से कुछ बदली हुई दीखती हैं, परंतु सच कहिए कि मुझे पहले क्यों बहकाया था ? (बाल्टी को चुप देखकर) जल्दी कहिए, जल्दी कहिए, वरना मैं समझ लूँगा कि इस पंचतत्त्वमय अधम शरीररूपी पिंजड़े को छोड़कर इन प्राण-पखेरुओं के उड़ने का समय अब आ उपस्थित हुआ है।

बाल्टी०—(नीचा मुख किये हुए) श्रीमान् मम परम —(चुप हो जाती है)

बेचैनी०—हाँ, कहिए, कहिए, निस्संकोच कहिए, आपके वचनामृत का पान करने के लिये मेरे सूप-कर्ण उपस्थित हैं—बल्कि 'उत्सुक' शब्द ठीक रहता, जल्दी में 'उपस्थित' कह दिया, क्षमा कीजिएगा।

बाल्टी०—(बेचैनी से इधर-उधर देखती हुई) अच्छा, अब जाती हूँ, क्षमा—(चुप हो जाती है)

बेचैनी०—प्रिय श्रीमती श्री श्री श्री बाल्टीदेवीजी, आप-की सेवा में मेरा नम्र निवेदन है कि हा, ये विष-सरीखे शब्द कैसे आपके मुखारविंद से बहिर्गत हुए, जब कि वह अमृत का भंडार है, और जब कि आपसे प्रेम हो जाने के कारण मेरा ढेर हुआ जा रहा है!

(बाल्टी चुप रहती है)

बेचैनी०—हे 'चारु चिबुक-नासिका-कपोला' सुंदरी, श्रीबाल्टीदेवीजी, किसी सच्चे प्रेमी की पीठ पर इस प्रकार उदासीनता के कोड़े फटकारना कौन-से प्रेम-शास्त्र में लिखा है ? मेरा तात्पर्य यह है कि कौन-सी 'प्रेम-पचीसी' या 'विरह-बारहमासी' में यह बात लिखी है कि कोड़े फट-कारना ? मेरा मतलब उदासीनता से था।

(बाल्टी मुसकिरा देती है)

बेचैनी०—हे श्री श्री श्रीमतीजी, यदि आपको मुझसे कुछ भी प्रेम हो तो आपको मेरी सौगंध है, आप अपने मुखरूपी कस्तूरी के नाफे को शीघ्र खोलिए।

बाल्टी०—क्या बातें ?

बेचैनी०—ओह, कुछ कहा तो ! मेरा अहोभाग्य ! इस प्रकार तो कुंभकरण की स्त्री ने भी उस बेचारे को न तर-साया होगा, सिवा उस समय के जब कि वह सो रहा हो, अर्थात् छः महीने। मैं कहता हूँ कि हे हे हे श्री श्री श्रीमतीजी, आप इतनी सुंदरी क्यों हैं, तथा संसार में एक-मात्र आप ही को इतनी अधिक सुंदरी बन बैठने का क्या अधिकार है ? क्योंकि आजकल अधिकारों का ज़माना है।

बाल्टी०—हे श्रीमहाशयजी, मैं क्या जानूँ ?

बेचैनी०—अच्छा, तो अब यह दास यह पूछने का साहस करने की ढिठाई करने का कार्य संपादन करता है कि क्या यह संभव है कि प्रेम एक ही ओर से हो, दूसरी ओर उसका नाम भी न हो ?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बाल्टी०—हे श्रीमान्‌जी, अब अपनी अनेक त्रुटियों की क्षमा चाहती हूँ।

बेचैनी०—आप के सुंदर बालों को देखकर मुझे मेनका की याद आती है, जिसे इस जन्म में मैंने केवल एक ही बार देख पाया था, और सो भी एक तमोली की दूकान पर बड़ी भीड़ में, जब कि वह शकुंतला को विश्वामित्र को दिखा रही थी। ये 'बुढ़िया का काता डब्बल में जाता' को मात करनेवाले ऐसे सुंदर बाल आपने कहाँ से पाए? सच कहिए, आप को मेरी शपथ है।

बाल्टी०—हे श्रीमान्‌जी, प्रथम तो यह कि आप अपनी शपथ न धराया कीजिए, दूसरी बात यह कि इन केशों में पिताजी का पाँच सौ रुपया व्यय हुआ था।

बेचैनी०—ओह, पाँच सौ रुपया कौन अधिक हुआ! इनके सँवारने में तो यदि पाँच हज़ार हुआ होता तो भी थोड़ा था। ये तो अनमोल हैं।

बाल्टी०—मम परम पूज्य श्रीमान्‌जी, ये पैरिस से मँगवाए थे पिताजी ने।

बेचैनी०—यही मैं भी सोच रहा था, श्रीदेवीजी, कि इनके सँवारने में जिस मसाले की आवश्यकता पड़ी होगी, वह अभी तक अपने देश में बना ही नहीं, लोगों ने प्रयत्न तो बहुत किए।

बाल्टी०—श्रीमान्‌जी, पैरिस में इनका फ़ैशन है।

बेचैनी०—निस्संदेह, श्रीमतीजी, पैरिस फ़ैशन का घर है; फ़ैशन पैरिस से तले है।

बाल्टी०—जी, वहाँ भी जिनके सिर के बाल उड़ जाते हैं वे इसी प्रकार के बनावटी बाल लगा लेती हैं।

बेचैनी०—पर श्रीमती जी, कहीं वे बनावटी बाल आपके असली बालों को पा सकते हैं?

बाल्टी०—श्रीमान्‌जी, आप की सेवा में नम्र निवेदन है कि ये भी बनावटी हैं, यद्यपि असली लगते हैं।

बेचैनी०—(अचरज से) क्या ये भी बनावटी हैं? सच कहिएगा?

बाल्टी०—श्रीमान्‌जी, मैं कभी झूठ नहीं बोलती।

बेचैनी०—(बेचैनी के साथ) तो क्यों श्री श्री श्रीदेवी-जी, ये क्यों मँगाए गए थे, क्या मैं यह पूछने की धृष्टता कर सकता हूँ?

बाल्टी०—श्रीमान्‌जी, बचपन में एक बीमारी के कारण मेरे सिर के सब बाल उड़ गए थे; आशा है, इस धृष्टता के लिये आप उन्हें क्षमा करेंगे।

बेचैनी०—तो क्या ये सब-के-सब नक़ली हैं?

बाल्टी०—(बेचैनीराम को बेचैन और चिंतित देखकर) तो क्या आपका प्रेम केवल बाल ही भर का था? (मुसकिराती है)

बेचैनी०—हे श्रीदेवीजी, कदापि नहीं, कदापि नहीं। पर आपने मुझे छकाना ख़ूब चाहा! मुझे ऐसा भोला समझ लिया है कि मैं यों ही बातों में आ जाऊँ? आप नई कटोरी की तरह निर्दोष, चम्मच की डंडी के समान सीधी और रबड़ी के समान मनोमोहक हैं। मैंने तो ऐसी दूसरी कन्या—क्या मनुष्यों और क्या पशुओं—में कभी देखी ही नहीं। वाह, क्या आपका रूप-लावण्य है! पुरानी चाल के तोते-चश्म कवि नाक के विषय में व्यर्थ ही 'तोता' 'तोता' रटा करते हैं! भला आपकी नाक के सामने तोते की नाक किस काम की हो सकती है? हे श्रीमतीजी, मैं तो यह कहता हूँ कि धन्य है ब्रह्मा को, जिसने आप की नाक को ऐसा गढ़ा कि इलाहाबादी अमरूद भी मात हो गया! यदि आगे के कवियों में बुद्धि का लेश भी हुआ, तो वे आप ही की नाक को आदर्श मानेंगे, और इसी की उपमा देते देते न थका करेंगे इति।

बाल्टी०—उसका नाम ब्रह्मा नहीं था, हर्मन था श्रीमान्‌जी।

बेचैनी०—किसका नाम श्रीमतीजी ने मुखारविंद से लिया कि वह नहीं, यह था?

बाल्टी०—जिसने यह नाक बनाई, श्रीमान्‌जी।

बेचैनी०—किसने, श्रीमतीजी?

बाल्टी०—वह एक जर्मन था, जिसने इंदौर के वैद्यों से नाक बनाना सीखा था। भारतवर्ष के बहुत-से स्त्री-पुरुषों की नाकें बनाता हुआ वह यहाँ भी आया था। पिताजी ने उसे दो हज़ार रुपए दिए थे।

बेचैनी०—(कुछ घबराहट के साथ) काहे के?

बाल्टी०—परम पूज्य व प्रिय श्रीमान्‌जी, पिताजी की उससे यही बात ठहरी थी कि ऐसी नाक बना दो कि पास बैठनेवाले को भी न जँचने पावे कि नक़ली है।

बेचैनी०—(हैरानी के साथ) तो क्या यह नाक नक़ली है?

बाल्टी०—मेरे परम आराध्य देव, (मुसकिराकर) बालों की तरह इसे भी निभाना ही होगा।

बेचैनी०—(हैरानी के साथ) श्रीमतीजी, यह मैं क्या

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुन रहा हूँ—बाल भी नक़ली और नाक भी ! कौन मूर्ख इस पर विश्वास करेगा ?

बाल्टी०—मैं, हे श्रीमान्‌जी, कभी झूठ नहीं बोलती हूँ, फिर आपको तो हृदय अर्पण कर चुकी हूँ।

बेचैनी०—तो अब, हे हे हे श्री श्री श्रीमतीजी, जब कि मेरा-आपका विवाह एक प्रकार से निश्चित हो चुका है तो अब मुझे इससे अधिक उल्लू बनाना आपको, ब हैसियत भावी धर्मपत्नी, उचित नहीं है ; क्योंकि बहुत खाने से अजीर्ण हो जाता है, चाहे किसी ने प्रेमपूर्वक या हँसी में ही खिलाया हो। अतएव, बस, इतनी ही हँसी बहुत है।

बाल्टी०—मैं पूछती हूँ कि हे भावी स्वामीजी, आप मेरे हृदय के स्वामी हैं या नहीं ?

बेचैनी०—मैं कहता हूँ कि हे भावी धर्मपत्नीजी, अवश्य हूँ, अवश्य हूँ, अवश्य हूँ।

बाल्टी०—फिर नाक निगोड़ी से क्या है ?

बेचैनी०—फिर नाक निगोड़ी से कुछ भी नहीं है।

बाल्टी०—चाहे वह भले ही नक़ली हो ?

बेचैनी०—चाहे वह भले ही नक़ली हो ; पर मैं यह कहता हूँ कि आप इस प्रकार की बातें करके मेरे प्रेम की अग्नि-परीक्षा ले रही हैं, यह मैं अच्छी तरह समझता हूँ, और आपको विश्वास दिलाता हूँ कि बाल और नाक चाहे बनावटी साबित भी हो जाते, पर मेरा प्रेम कभी बनावटी साबित न होता। बालों और नाक के बनावटी होने पर भी मैं और दूसरे गुणों द्वारा आपसे बँधा रहता। आप चाहे जैसी परीक्षा ले लें, मैं फ़ेल कभी न हूँगा। भला जब मैं असहयोग के दिनों में जेल जाने से नहीं डरता था तो फिर संसार में और कौन-सी ऐसी विकट परीक्षा है जिससे डर जाऊँगा ?

बाल्टी०—धन्य है आपको ! मेरा सौभाग्य है कि आप सरीखा मन-चीता वर मुझे मिला। हे श्रीमान्‌जी, मैं सदा आपकी दासी बनी रहने में अपना परम सौभाग्य समझूँगी। (मुसकिराती है)

बेचैनी०—'दासी' नहीं, रानी, मालकिन, स्वामिनी। रे मूर्ख कवियो, संसार के भूत, वर्तमान व भविष्यत् तुक-जोड़ुओ, अभी जब मेरी प्रियतमा, इन श्रीमतीजी ने ये वाक्य कहे, तब तुम सब-के-सब कहाँ मर गए थे ? क्या तुमने इन श्रीमतीजी की सुंदर दंत-पंक्ति नहीं देखी, जो तुम अनारदाने के गीत गाते-गाते मरे हो, मर रहे हो, और मेरे हज़ार समझाने पर भी मरते रहोगे ? भला, इन सुंदर और मधुर दाँतों के सामने खट्टा और दवा या चटनी में पड़नेवाला अनारदाना है क्या चीज़ ? यदि तुम में कुछ भी समझ या मौलिकता है तो आगे से उस भद्दी उपमा को कभी काम में न लाना, भूलकर भी, बस।

बाल्टी०—कौन-सी ? क्या चीज़ ? श्रीमान्‌जी, मैं समझी नहीं। सातवीं ही कक्षा तक तो पढ़ी हूँ।

बेचैनी०—कुछ नहीं, बस, वही आपके दाँतों की सुंदर कतार।

बाल्टी—ओह, इसके लिये तो पूरा एक हज़ार लगा था। मुझे हर्ष है कि आपको भी यह पसंद आई। पिताजी ने बहुत-से नमूनों में से इसे छाँटा था।

बेचैनी०—छाँटा था ?

बाल्टी०—जी, श्रीमान्‌जी।

बेचैनी०—कैसे ?

बाल्टी०—जब बारह-तेरह वर्ष की अवस्था तक भी मेरे दूध या पानी के दाँत न निकले तो डॉक्टरों ने साफ़ कह दिया कि बस, अब आ चुके। तब एक हज़ार रुपया एक अमेरिका के डॉक्टर को देकर और वहाँ से बहुत-से नमूने मँगवाकर—अमेरिका से—उन्हीं में से ये छाँट लिए गए।

बेचैनी०—(बड़ी बेचैनी के साथ) क्या आप यह सच कहती हैं, श्रीहृदय-हारिणीजी ?

बाल्टी०—मैं कभी झूठ नहीं बोलती, श्रीमान्‌जी।

बेचैनी०—आप सचमुच ही मुझे पागल कर देंगी क्या ? किसी सच्चे प्रेमी को इतना अधिक न बनाना चाहिए। बस, बहुत हुआ।

बाल्टी०—तो क्या आप इन्हें असली समझते हैं ?

बेचैनी०—हे श्रीमाधुरीजी, क्या आप इन्हें नक़ली बताती हैं ?

बाल्टी०—परम ज्य हृदय-दुलारेजी, मैं कभी भी झूठ नहीं बोलती।

बेचैनी०—आप सचमुच ही श्री 'दिल्लगी की पुड़िया' जी हैं, जो इतनी बेढब दिल्लगी करती हैं, और यह सोचने का कष्ट नहीं उठातीं कि कभी-कभी इसमें किसी के प्राण तक निकल खड़े होना उचित समझ लिया करते हैं। (आप-ही-आप) हे दैव, कहीं ये देवीजी सच तो नहीं कह रहीं ? यदि ऐसा हुआ तो पुनर्जन्म के लिये शीघ्रता करनी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पड़ेगी। (बाल्टी से) हे श्रीसत्यवतीजी, मेरे ऊपर तरस खाकर साबित कीजिए कि यह जो कुछ आप कह रही हैं, सब सच है। यों तो थोड़ी ही देर में मेरा प्रेम आप पर इतना बढ़ गया है कि नाक-कान तो क्या, यदि आपके प्राण भी नक़ली हुए तो भी मैं आपका दास हो चुका—

बाल्टी०—हैं! हैं! आप अपने को ऐसा क्यों कहते हैं, मैं आपसे केवल एक प्रश्न करती हूँ—पुरुष स्त्री के केवल बाहरी रूप पर ही प्रेम करता है अथवा उसके और गुणों पर भी?

बेचैनी०—आहा, वही तो मैं कहता हूँ कि आप मेरी केवल कठिन परीक्षा ले रही हैं, और कुछ भी बात नहीं है! मैं कहता हूँ क्यों हों बनावटी? और, मैं क्यों छोड़ दूँगा प्रेम करना? बस, बहुत हुआ, अब यह न कहिए कि मैं झूठ नहीं बोलती; हँसी में बोली हुई झूठ भी तब झूठ हो जाती है, जब उसका परिणाम बुरा हो; उससे पहले नहीं। मैं सच कहती हूँ —

बाल्टी०—मैं बिलकुल सच कहती हूँ, श्रीमान्‌जी!

बेचैनी०—(घबराकर ऊपर देखता हुआ) क्या सचमुच बिजली गिरनेवाली है?

बाल्टी०—क्या तब सचमुच आप मुझसे प्रेम करना छोड़ देंगे, और किसी दूसरी से विवाह कर लेंगे? क्या आप इतने कठोर हो जायँगे, श्रीपतिदेवजी?

बेचैनी०—श्रीपत्नीदेवीजी, मेरा एकमात्र आप ही पर प्रेम है, यह बात अच्छी तरह समझ लीजिए; और, मैं आपसे हाथ जोड़कर प्रार्थना करता हूँ कि ऐसी बातें करके मेरे प्राणों पर संकट उपस्थित मत कीजिए।

बाल्टी०—श्रीमान्‌जी, मैं समझी नहीं।

बेचैनी०—श्रीमतीजी, हर बात की सीमा होती है; बस, बहुत हो चुका हास-परिहास।

बाल्टी०—आप मेरे जीवन के आधार हैं—

बेचैनी०—आप मेरी जीवन-नौका हैं; अतएव अब यदि आपने ऐसी कोई बात कही तो मुझे डर है कि मैं पहले से सूचना दिए बिना ही बेहोश हो जाऊँगा। आपने व्यर्थ ही मेरे हृदय के खेत में संदेह का बीज डाल दिया है। अतएव मुझे अपनी इच्छा के विरुद्ध भी, और इसका कुछ भी परिणाम न होगा, यह जानकर भी केवल अपनी उत्सुकता निवारण करने के लिये आपसे यह प्रार्थना करनी पड़ती है कि लाइए, देखूँ आपके सुंदर केश—

बाल्टी०—क्या सचमुच ही आप इन्हें देखना चाहते हैं?

बेचैनी०—हाँ, यदि आप कृपा करके—

बाल्टी०—श्रीमान्‌जी, यह कृपा-वृपा रहने दीजिए। मैं आपकी हूँ; आप मुझसे विवाह की प्रतिज्ञा करके मुझे अपना ही चुके हैं, इसलिये—यद्यपि पिताजी ने, ऐसा करने को तो क्या, इसके विषय में कहने तक को मना कर दिया है, तो भी पति की हैसियत से अब आप ही मेरे परमेश्वर हैं—मैं आपको विलायत की कारीगरी के नमूने दिखाकर आपकी उत्सुकता दूर करने को हर तरह से तैयार हूँ। मैं आपकी आज्ञाकारिणी दासी हूँ।

बेचैनी०—(आप-ही-आप) हे भगवान्, क्या होने-वाला है? ऐसी कड़ी परीक्षा तो राजा हरिश्चंद्र को भी न देनी पड़ी थी—श्मशान में।

बाल्टी०—(बनावटी बाल उतारकर दिखाती हुई) यह फ्रांस की कारीगरी का नमूना है।

(बेचैनीराम का चेहरा फक् हो जाता है)

बाल्टी०—(बालों को सिरपर रखकर नाक निकालकर दिखाती हुई) यह जर्मनी की—यद्यपि उन्होंने हमारे ही देश से सीखी है।

(बेचैनीराम की सूरत बेतरह बिगड़ जाती है)

बाल्टी०—(नाक लगाकर दाँतों को पकड़ती हुई) अमेरिकावाले—

बेचैनी०—(घबराहट के मारे बेञ्च पर बैठकर) बस,बस, बख़्शिए, बचाइए—(बेहोश हो जाता है; उसकी यह दशा देखकर बाल्टी भी बेहोश होती है; गड़बड़ सुनकर सखी आती है)

सखी—(इन्हें बेहोश देखकर, घबराकर)

सोरठा

छायावादी अंत, हा इस प्रेमालाप का!
क्या ऋतुराज वसंत, आज प्रलयकारी हुआ?

क्या विवाह से पहले मिलने का यही परिणाम होता है? (एक ओर देखकर चौंकती है और दोनों के हाथ पकड़कर उठाने का प्रयत्न करती है) अरे उठो! उठो! यह देखो वे आ रहे हैं! उठो! उठो! (सबका आना और दोनों को बेहोश देखकर चकित होना; सखी का छिपाकर बाल्टी को और संपादक का छिपाकर बेचैनीराम को नोचना; दोनों का होश में आना; बाल्टी का लजाकर एक ओर खड़ा होजाना; सबका बेचैनीराम की ओर देखना)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"यह कंस की कारीगरी का नमूना है।"

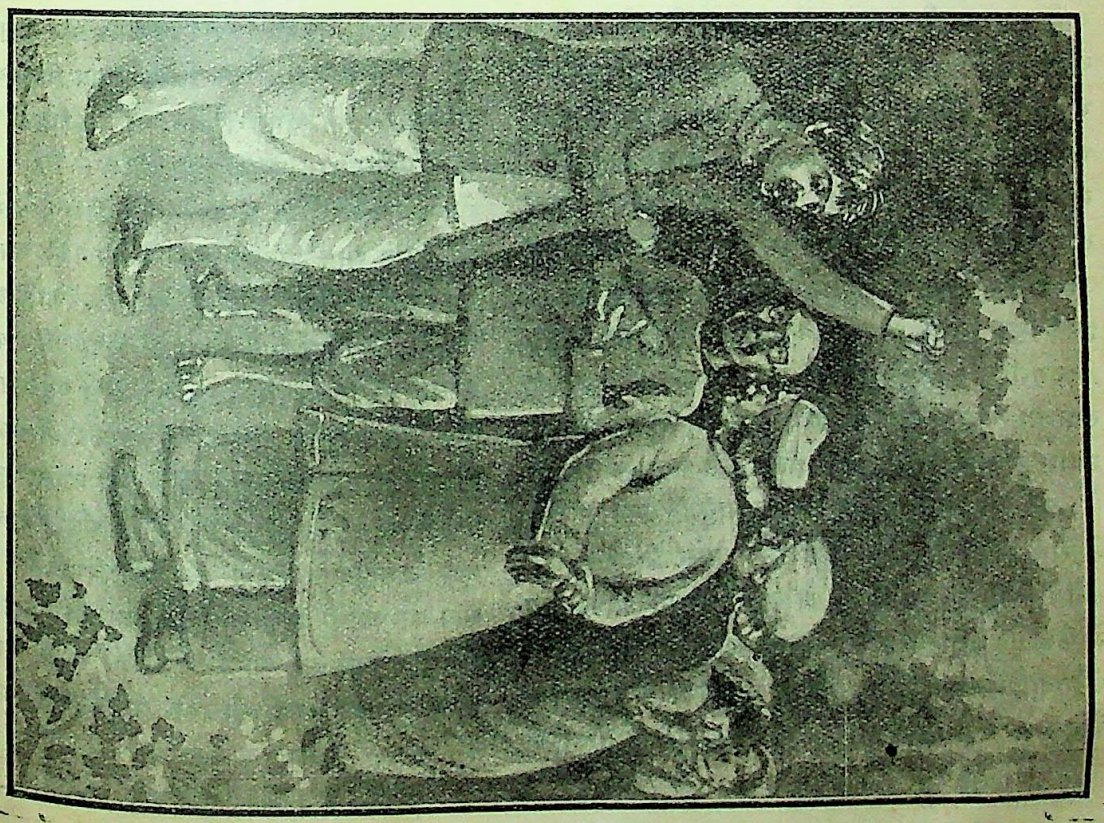

"Hanging and wiving go by destiny."

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बेचैनी०—(संपादक की ओर) Friends, (दीवान बहादुर की ओर) Fathers, and (तहसीलदार की ओर) Gentlemen, 'hanging and wiving go by destiny'. (सखी और बाल्टी की ओर) सखियो और बहुओ, अर्थात् कोई हज़ार चाहे कि यहाँ मेरा हो वहाँ न हो, अथवा वहाँ न हो यहाँ हो, पर उसकी एक न चलेगी, चाहे वह कितना ही प्रयत्न करे। विवाह और फाँसी के विषय में 'होइ है सोइ जो राम रचि राखा।' इसलिये (संपादक से) चलो, करो तैयारी, (दीवान० व तहसीलदार से) आप लोग भी करें।

दीवान व तहसीलदार—तथास्तु।

(सब जाते हैं)

रामानुज

[लेखक, श्रीनलिनीमोहन सान्याल भाषातत्त्वरत्न, एम्० ए०]

वैष्णवों के चार संप्रदाय हैं—(१) श्री-संप्रदाय, (२) माध्वी-संप्रदाय, (३) सनक-संप्रदाय और (४) रुद्र-संप्रदाय *। (१) श्री-संप्रदाय के नेताओं में रामानुज का नाम सबसे प्रसिद्ध है। इनका जन्म ९३८ शकाब्द (१०१७ ई०, अर्थात् १०७४ संवत्) के चैत्र में, मदरास के निकट, भूतपुर (पेरंबुरम्) में, हुआ था। इनके पिता का नाम केशव याज्ञिक था और माता का नाम कांतिमती। केशव याज्ञिक की पत्नी श्रीशैलपूर्ण-नामक एक वृद्ध संन्यासी की भगिनी थीं। आठवें वर्ष में रामानुज का उपनयन हुआ, और केशव याज्ञिक स्वयं ही पुत्र को शिक्षा देने लगे। बालक की तीक्ष्ण बुद्धि तथा प्रतिभा का परिचय पाकर लोग मुग्ध हो जाते थे। सोलहवें वर्ष में रक्षांबा नाम की एक ब्राह्मण-कन्या के साथ रामानुज का विवाह हुआ। इसके कुछ समय बाद केशव याज्ञिक का देहांत हुआ।

उन दिनों द्राविड़-प्रदेश की राजधानी कांची-नगरी विद्या तथा धर्म-चर्चा के लिये दक्षिणापथ में प्रसिद्ध थी। यादव-प्रकाश स्वामी नाम के एक वेदांती उस समय कांची-नगर के सुधी-समाज में विख्यात थे। रामानुज अपने परिवार के साथ कांची-नगर में आकर उनके पास अध्ययन करने लगे। रामानुज की प्रतिभा की ख्याति समग्र दक्षिणापथ में फैल गई। यादवप्रकाश स्वामी शंकराचार्य के मत के अद्वैतवादी वेदांती थे। परंतु रामानुज के हृदय का झुकाव वैष्णव-मत की ओर था। अतएव वह स्वामीजी की अध्यापना से संतुष्ट न हो सके। दोनों में विरोध उपस्थित हुआ। अंत में रामानुज ने यादवप्रकाश स्वामी का शिष्यत्व छोड़ दिया, और अपने घर में बैठकर अध्ययन करने लगे। अब से वह आलवारों के प्रबंधों का बहुत ध्यान से अध्ययन करने लगे।

इस समय दाक्षिणात्य में दो श्रेणियों के वैष्णव-शिक्षक थे—आलवार और आचार्य। आलवार लोग भक्ति-मार्ग के उपासक थे, और अपने उपास्य देवता विष्णु या नारायण की स्तुति के लिये उन्होंने तामिल-भाषा में एक प्रकार के भजनों की, जिनका नाम प्रबंध था, रचना की थी। ये प्रबंध बहुत पवित्र गिने जाते और वैष्णव-वेद कहे जाते थे। उत्तर-भारत में जिस समय ब्राह्मण्य धर्म का पुनरुत्थान हुआ था, संभवतः दक्षिणापथ में आलवारों का अभ्युदय उसी समय हुआ था *।

आचार्य-श्रेणी के वैष्णवों का काम था भिन्न-मतावलंबियों के साथ शास्त्रार्थ तथा विचार करके अपने धर्म-मत का समर्थन करना। इस श्रेणी के आदि-आचार्य थे नाथमुनि। श्रीरंगम् में इनकी गद्दी थी। यामुनाचार्य इनकी गद्दी के उत्तराधिकारी हुए थे। यह उस समय के वैष्णव-संप्रदाय के प्रधान अधिनायक थे। श्रीरंगम् में यामुनाचार्य ने रामानुज की बड़ी प्रशंसा सुनी थी। उन्होंने सोचा, रामानुज-जैसे तीक्ष्णबुद्धि, सदाचारी युवक यदि वैष्णव-मत ग्रहण करें, तो वैष्णव-धर्म के मधुर भाव का चारों ओर प्रचार हो जायगा। वही जीवात्मा के साथ परमात्मा का संबंध भली भाँति साधारण को समझा सकेंगे। यह सोचकर यामुनाचार्य उनको अपने मत में लाने के लिये व्यग्र हुए।

* रायबहादुर डॉक्टर दीनेशचंद्रसेन।

* Sir R. G. Bhandarkar's Vaishnavism.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीरंगम् में यामुनाचार्य के बहुत शिष्य थे। उनमें एक का नाम पूर्णाचार्य था। वह जैसे सुपंडित थे, वैसे ही भगवद्भक्त भी। यामुनाचार्य बहुत वृद्ध और रोगग्रस्त हो गए थे। अपनी मृत्यु के पश्चात् वैष्णव-मत का परिचालक रामानुज के सिवा दूसरा कोई उन्हें नहीं सूझता था। उन्होंने एक स्तोत्र बनाया, और पूर्णाचार्य के हाथ उसे भेजकर रामानुज को कांचीपुर से श्रीरंगम् में बुलाया। रामानुज ने यामुनाचार्य का नाम पहले ही सुना था, और उनको अपने गुरु-पद में अभिषिक्त करने की वासना मन-ही-मन की थी। अब यह स्तोत्र पढ़कर उनकी वह लालसा जग उठी। पूर्णाचार्य से यामुनाचार्य की पीड़ा का समाचार सुनकर उस भक्तप्रवर महात्मा को देखने के लिये रामानुज ने उसी दिन पूर्णाचार्य के साथ श्रीरंगम् की ओर यात्रा की।

कुछ दिन के बाद जब वह कावेरी-नदी के तट पर पहुँचे, तब उन्होंने देखा, यामुनाचार्य की मृत देह समाधि के लिये उस नदी के किनारे पर लाई गई है। इस दृश्य को देखकर रामानुज और पूर्णाचार्य बड़े शोक में अभिभूत हुए। मृत्यु के पहले यामुनाचार्य अपने शिष्यों के पास रामानुज के लिये आदेश रख गए थे कि वह बादरायण के ब्रह्म-सूत्र के एक भाष्य की रचना करें, जिससे वैष्णव-मत का समर्थन हो।

भक्ति और प्रेम का मत ही वैष्णव-मत है। वैष्णव-मत के नेताओं ने ऐसे ग्रंथ की आवश्यकता का अनुभव किया; क्योंकि उन्होंने देखा, ऐसे ग्रंथ के विना, उपनिषदों के आधार पर प्रतिष्ठित शंकराचार्य की ब्रह्म-सूत्र की व्याख्या के विरुद्ध प्रेम और भक्ति के मत का प्रचार होना असंभव है। शंकराचार्य ने अष्टम शताब्दी (ईसवी) में अद्वैतवाद का प्रचार किया था। उनका मत यह है कि सब प्रकार के भेद से रहित ज्ञान-स्वरूप ब्रह्म ही एक-मात्र सत्य है। उसको छोड़कर जो कुछ देखा या पाया जाता है, सब मिथ्या है। उन्होंने श्रुतियों के बहुत-से प्रमाण उद्धृत किए हैं। उनमें से कुछ नीचे दिए जाते हैं—

"सदेव सौम्येदमग्र आसीदेकमेवाद्वितीयम्।"

(छांदोग्य उ० । ६ । २ । १)

हे सौम्य, पहले एक-मात्र सत् (ब्रह्म) ही था। वह एक, अद्वितीय है।

"सत्यं ज्ञानमनन्तं ब्रह्म।"

(तैत्तिरीय उ० । २ । १)

सत्य, ज्ञान-स्वरूप, अनंत ही ब्रह्म है। इत्यादि

अद्वैत-मत में जीव ही ब्रह्म है।

"जीवो ब्रह्मैव नापरः।"

जीव शुद्ध, बुद्ध, मुक्त, सत्य-स्वभाव है।

"नित्य-शुद्ध-बुद्ध-मुक्त-सत्य-स्वभावं
प्रत्यक्चैतन्यमेव आत्मतत्त्वम्।"

(वेदांतसार)

"एकएव तु भूतात्मा भूते-भूते व्यवस्थितः;
एकधा बहुधा चैव दृश्यते जलचन्द्रवत्।"

(ब्रह्म-बिंदु १२)

एक ही भूतात्मा नाना प्राणियों में विराजित है। वह जल में चंद्रवत् एक रूप तथा बहु रूप में दृष्ट होता है।

"तत्त्वमसि" (तुम हो वह), "अयमात्मा ब्रह्म" (यह आत्मा ब्रह्म है), "सोहम्" (मैं ही वह हूँ), "अहं ब्रह्मास्मि" (मैं ब्रह्म हूँ) इत्यादि वेद के महा-वाक्य जीव और ब्रह्म का अभेद प्रतिपादित करते हैं। जीव और ब्रह्म में कोई भेद नहीं। जीव और ब्रह्म में जो भिन्नता मालूम होती है, वह वास्तव नहीं, मायिक-मात्र है। जिस भेद की प्रतीति होती है, वह उपाधिकृत है। यह उपाधि जीव का कोष है। कोष-रूप उपाधि का आश्रय कर ब्रह्म को ही जीव कहते हैं। परंतु ब्रह्म यथार्थ में उपाधि-मुक्त है। ब्रह्म सच्चिदानंद है, अतएव जीव भी सच्चिदानंद है। जीव और ब्रह्म में नाम-मात्र का प्रभेद है, जैसे घटाकाश और महाकाश में प्रभेद है। अद्वैत-मत में ब्रह्म ही एक-मात्र सद्वस्तु है, अपर जो कुछ विद्यमान मालूम होता है, वह असत्य, काल्पनिक है। माया या अविद्या के कारण उनकी ऐसी प्रतीति होती है। यथार्थ वस्तु का ज्ञान उत्पन्न होने से जिस धारणा का अवसान होता है, वही मिथ्या है; जैसे रज्जु में सर्प की धारणा मिथ्या है। ब्रह्म की यथार्थ धारणा होने से ही अविद्या अर्थात् अज्ञान का नाश होता है *।

शंकराचार्य इस मत के प्रवर्तक नहीं थे। उनके पहले भी अद्वैत-मत प्रचलित था। उनके गुरु के गुरु गौड़पाद ने मांडूक्य-उपनिषद् की जो कारिका बनाई थी, उसमें अद्वैत-मत की परिणत अवस्था का परिचय मिलता है। शंकराचार्य ने उस कारिका का भाष्य रचा है। अपने

* हीरेंद्रनाथ दत्त का 'गीता में ईश्वरवाद'।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शारीरक भाष्य में उन्होंने अपने मत के समर्थन के लिये भगवान् उपवर्ष को प्रमाण-स्वरूप उद्धृत किया है। उपवर्ष के भी पूर्ववर्ती योगवाशिष्ठ और सूत-संहिता में अद्वैत-मत का सुस्पष्ट उपदेश है *।

जब एक ओर बौद्ध और जैनधर्मों का और दूसरी ओर वासुदेव-धर्म का उत्थान हुआ था, तब बहुत हल-चल मच गई थी! स्वतंत्र युक्तियों के अवलंबन द्वारा इन धर्म-मतों के खंडन का उद्योग किया गया था। पालि-भाषा में लिखित बौद्ध-मत के स्थान को संस्कृत में लिखित महायान बौद्ध मत ने अधिकृत किया। इस मत के विरुद्ध गौतम ने न्याय-मत को स्थापित किया, और मीमांसकों ने—विशेष करके शवर स्वामी और कुमारिल भट्ट ने—कर्मकांड की श्रेष्ठता दिखाई। मीमांसकों ने केवल बौद्धों के विरुद्ध ही अस्त्र-धारण नहीं किया था, उन्होंने औपनिषदों—अर्थात् जिनका धर्म-मत उपनिषदों के प्रमाणों पर प्रतिष्ठित है, उन—पर भी आक्रमण किया था। औपनिषदों को अपने मतों के समर्थन के लिये विशेष चेष्टा करनी पड़ी थी। उनको यह दिखाने की आवश्यकता पड़ी कि उन्हीं के मत का अवलंबन करनेवालों को परमार्थ मिल सकता है। जो महात्मा इस मत को प्रतिष्ठित करने के लिये रंग-मंच पर उपस्थित हुए, उनका नाम था गौड़पादाचार्य। और कुछ समय के बाद उनके शिष्य के शिष्य शंकराचार्य हुए, जिनके मत का विस्तृत उल्लेख ऊपर किया गया है। उनके मत में ईश्वर-प्रेम तथा ईश्वर-सेवा का कोई स्थान न था। उनके मत में वास्तव जगत् की स्थिति ही न थी। जीव और ब्रह्म में भेद ही नहीं, तो जीव के द्वारा ईश्वर की उपासना कैसे होगी? अतएव यह मत वैष्णव-मत के संपूर्ण विपरीत था। उन दिनों के दक्षिण-देशीय वैष्णव-नेताओं की हार्दिक आकांक्षा थी कि जिन उपनिषदों के प्रमाणों द्वारा मायावाद की स्थापना की गई है, उन्हीं के प्रमाणों से मायावाद का खंडन कर वैष्णव-धर्म को दृढ़ भित्ति पर प्रतिष्ठित किया जाय। इसके अतिरिक्त शैव-धर्मावलंबी लोगों का प्रभाव भी इस समय दाक्षिणात्य में थोड़ा नहीं था। इनके विरुद्ध भी वैष्णवों के लिये आत्मरक्षा करने का प्रयोजन था। अतएव ऐसे एक प्रतिभाशाली व्यक्ति का प्रयोजन हुआ, जो इन दोनों प्रबल शत्रुओं का सामना कर सके। इस कार्य के लिये उपयुक्त इस समय रामानुजाचार्य के सिवा दूसरा कोई न था *। मृत्यु के पहले यामुनाचार्य रामानुज से मिल नहीं सके; परंतु उन्होंने रामानुज को ही इस काम के लिये चुना था, और शरीर से प्राण-वायु बहिर्गत होने के पहले अपनी शिष्य-मंडली से कह गए थे कि वह रामानुज के ऊपर यह भारी भार न्यस्त किए जाते हैं।

परमात्मा ने रामानुज को यामुनाचार्य से नहीं मिलाया। रामानुज ने केवल उनके शव-देह का दर्शन कर पाया। समाधि के समय उनके शिष्य-वर्ग ने रामानुज को उनकी अंतिम अभिलाषा जताई। रामानुज ने उसी स्थान पर मृत महात्मा की इच्छा पूर्ण करने की प्रतिज्ञा की। यामुनाचार्य से मिलने की आशा रखते हुए उन्होंने कांची से यात्रा की थी। अब वह आशा टूट जाने के कारण वह बहुत दुखी हुए। इसलिये उन्होंने कांची लौटने का संकल्प किया। परंतु श्रीरंगम् के वैष्णवगण उनके प्रति अत्यंत अनुरक्त हो गए थे—थोड़े समय के दर्शनों से उनकी तृप्ति नहीं हुई थी, अतएव अतिविनम्र वचनों से वे उनसे ठहरने के लिये अनुरोध करने लगे। रामानुज ने कहा—"मेरी आशा टूट गई, अब मैं न रहूँगा।" यह कहकर वैष्णवों से बिदा होकर आप कांची की ओर चल पड़े।

रामानुज कांची-तीर्थ में पहुँचकर वहाँ की प्रसिद्ध विष्णु-मूर्ति—श्रीवरदाराज—की सेवा में समय बिताने लगे। उस समय कांची-क्षेत्र में कांचीपूर्ण नाम के एक हरिभक्त साधु रहते थे। यद्यपि वह शूद्र पिता और शवरी माता से उत्पन्न हुए थे, तथापि उनके सदृश हरि-भक्ति-परायण कोई न था। कांचीपूर्ण सदा एकांत चित्त से कांची-तीर्थ के देवता वरदाराज की सेवा और ध्यान में लगे रहते थे। उस महात्मा ने सर्वांतःकरण से नारायण में आत्म-समर्पण किया था। बहुत दिनों से उनके साथ रामानुज का परिचय था, और उनकी यह गुरु के समान भक्ति करते थे। कांचीपूर्ण यामुनाचार्य के शिष्य थे। रामानुज के श्रीरंगम् से लौटने के बाद कांची-

* हीरेंद्रनाथ दत्त का 'गीता में ईश्वरवाद'।

* Sir R. G. Bhandarkar's Vaishnavism.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पूर्ण को अपने गुरु के देहांत का समाचार मिला। वह बहुत शोकार्त हुए, और मृत गुरु के प्रति शिष्य का जो कर्तव्य होता है, वह सब इन्होंने किया। यह अनन्य मन होकर वरदाराज की सेवा में पहले की नाईं नियत रहने लगे। आहार में, विहार में, शयन में, स्वप्न में भगवान् की चिंता, भगवान् के ध्यान, भगवान् के नाम-जप और भगवान् के भजन को छोड़ इनका दूसरा कोई काम न था। जितने दिन जाने लगे, उतना ही कांचीपूर्ण के प्रति रामानुज की भक्ति की गंभीरता बढ़ने लगी। उन्होंने सोचा, इस भक्त महात्मा का उच्छिष्ट प्रसादान्न भोजन कर अपने को कृतार्थ करेंगे। इस अभिप्राय से उन्होंने कांचीपूर्ण को भोजन के लिये अपने घर में निमंत्रित किया; परंतु दैवसंयोग से उनका अभिप्राय सिद्ध न हुआ। निर्दिष्ट समय के पहले ही कांचीपूर्ण उनके घर पहुँचे, और भोजन समाप्त कर चले गए। रामानुज उस समय घर में नहीं थे। जब लौटे, तो देखा, उनकी पत्नी रत्नांबा भोजन का पात्र साफ़ कर नहा रही हैं। पूछने पर उन्होंने कहा, शूद्र का उच्छिष्ट छूने के कारण उनका देह अपवित्र हो गया है, इसलिये उनको नहाना पड़ा। यह सुनकर रामानुज बहुत असंतुष्ट हुए, और भोजन समाप्त कर कांचीपूर्ण को खोजने के लिये वरदाराज के मंदिर में गए। कांचीपूर्ण मंदिर में बैठे थे। रामानुज ने उनके पास जाकर कहा—"कृपामय, आज ही आप मेरे पंच-संस्कार कर मेरा उद्धार कीजिए। मैं आपके शरणागत हूँ।" कांचीपूर्ण रामानुज का यह अवैदिक वाक्य सुनकर शास्त्रीय विधि के प्रति दृष्टि रख कहने लगे—"बेटा रामानुज, तुम जो कह रहे हो, वह अशास्त्रीय न होने पर भी, आचार-विरुद्ध है। यद्यपि भरद्वाजसंहिता में कहा गया है कि योगी सब योनि में जन्म ग्रहण करता है, और जिसने परमात्मारूपी भगवान् का प्रत्यक्ष किया है, उसके कुल आदि बातों का विचार न करना चाहिए, तथापि मुझसे यह काम न होगा। मैं चतुर्थ वर्ण शूद्र हूँ, और तुम वर्ण-श्रेष्ठ ब्राह्मण। शूद्र के पास ब्राह्मण का दीक्षा-ग्रहण आचार-विरुद्ध है। अतएव मैं यह निंदनीय कार्य न कर सकूँगा।" रामानुज ने कहा—"अब मेरी मुक्ति का उपाय क्या होगा? मैं किस गुरु का शरणापन्न हूँगा? आप कृपाकर उस गुरु का नाम बता दीजिए।" कांचीपूर्ण ने सोचकर दूसरे दिन रामानुज से कहा—"तुम सब गुणों के आधार महात्मा पूर्णाचार्य के पास जाओ।" रामानुज ने भी ऐसा ही सोचा था। अतएव विलंब न कर उन्होंने श्रीरंगम् की ओर यात्रा की *।

यामुनाचार्य की परम पद-प्राप्ति के अनंतर श्रीरंगम् के वैष्णव लोग उनके वियोग-दुःख से व्यथित होकर काल-क्षेप कर रहे थे। एक दिन किसी वैष्णव ने वहाँ के वैष्णव-समाज में उपस्थित होकर कहा—"परलोक-गत गुरुदेव के लिये शोक करना अब वृथा है। हम लोगों के लिये एक बुद्धिमान् सर्वशास्त्रवित्, भगवद्भक्त, तेजस्वी, क्षमाशील रक्षक का प्रयोजन है। ये सब गुण रामानुजाचार्य में हैं। अतएव उनको हमारे मत में लाने की चेष्टा करनी चाहिए। देर न करके महात्मा पूर्णाचार्य कांची नगर को सिधारें। वहाँ पहुँचकर रामानुजाचार्य के पंच-संस्कार संपन्न करें, और कुछ समय वहाँ ठहरकर उनको वैष्णव-ग्रंथों का उपदेश दें। इस प्रकार अपने वशीभूत कर उनको किसी उपाय से यहाँ लिवा लावें।" सबने इस प्रस्ताव का अनुमोदन किया। पूर्णाचार्य ने झट सपरिवार कांची की ओर यात्रा की। जब वह मादुरा-नगर के निकट किसी अग्रहार (ब्राह्मणों के टोले) में उपस्थित हुए, उसी समय रामानुज भी उसी स्थान में आ पहुँचे। रामानुज पूर्णाचार्य को देखकर बड़े आनंदित हुए, और उन्होंने उनके चरणों में प्रणाम किया। दोनों ने अपना-अपना आगमन-वृत्तांत परस्पर कहा। दोनों के हृदय आनंद से भर गए। रामानुज ने पूर्णाचार्य से कहा—"कृपामय, यहीं पंच-संस्कार कर संसार-कूप से मेरा उद्धार कीजिए।" रामानुज के पंच-संस्कार उसी समय हो गए। पूर्णाचार्य रामानुजाचार्य को श्रीहरि-दासों के साम्राज्य के नायकत्व पर प्रतिष्ठित कर कहने लगे—"इस लोक में यामुनाचार्य वैष्णव-जगत् के गुरु थे। उनके तिरोभाव के बाद आपने ही अब उनका स्थान प्राप्त किया। हे वैष्णवोत्तम, आप अब प्रच्छन्न बौद्ध-संप्रदाय (अर्थात् मायावादी शंकराचार्य के मतावलंबियों) को समूल उन्मूलित कर वैष्णव-धर्म की रक्षा कीजिए।" रामानुज अवनतमस्तक होकर बैठे रहे।

अब सकुटुंब पूर्णाचार्य को साथ लेकर रामानुज कांची धाम को लौटे। वहाँ रामानुज पूर्णाचार्य से द्राविडागम (द्रविड़देशीय भक्ति-सिद्धांत) पढ़ने लगे। छः महीने के बाद पूर्णाचार्य श्रीरंगम् को लौट गए।

---

* शरच्चंद शास्त्री का रामानुज-चरित।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रत्नांबा के आचरण पर विरक्त होकर रामानुज ने संन्यास ग्रहण किया। कांचीपूर्ण ने रामानुज को भूतपुरी से कांचीपुर में लाकर उनके लिये मठ और परिचारक निर्दिष्ट कर दिए। उस दिन से रामानुज की 'यतिराज' उपाधि हुई।

कांचीपुर के पूर्व में विद्वानों से भरा हुआ एक अग्रहार था। रामानुज के बहनोई अनंत दीक्षित वहीं के रहने-वाले थे। उनका पुत्र दाशरथि वेद-वेदांग में बहुत पारदर्शी हो गया था, और भगवान् में भी उसका अशेष प्रेम था। मातुल के संन्यास-ग्रहण का समाचार पाकर वह बड़ा प्रसन्न हुआ, और उसने कांचीपुर आकर उनका आश्रय ग्रहण किया। उसी समय भूतपुर-निवासी अनंत भट्ट का पुत्र कुरेश, जिसने शास्त्र में विशेष पारदर्शिता प्राप्त की थी और जिसकी भगवान् में अशेष भक्ति थी, रामानुज के शरणापन्न हुआ। इन दोनों शिष्यों पर रामानुज की विशेष प्रीति थी। ये यतिराज के पास ब्रह्म-विद्या पढ़ने लगे। यादवप्रकाश स्वामी ने भी शैव-मत को छोड़कर वैष्णव-मत ग्रहण किया, और रामानुज के शरणापन्न हुए। रामानुज ने उनके पंच संस्कार किए, और उनको संन्यास की दीक्षा दी। उस दिन से यादवप्रकाश का नाम हुआ गोविंददास। रामानुज ने उन्हें वैष्णव-सिद्धांत-विषयक उपदेश देकर कहा—"आप वैष्णव-मत का समर्थन कर ग्रंथ-रचना कीजिए।" गोविंददास का मन उस समय विमल भगवद्भक्ति से पूर्ण हो गया था, अतएव उन्होंने 'यतिधर्म-समुच्चय'-नामक वैष्णव-धर्म-समर्थक एक पुस्तक की रचना की। इसके बाद उनको मोक्ष-लाभ हुआ।

अब मौसी के बेटे गोविंद के लिये यतिराज के मन में चिंता उपस्थित हुई। सरल-प्रकृति गोविंद को यादव-प्रकाश ने बहकाकर शैव-धर्म में दीक्षित किया था। वह कहाँ है? उसका कैसे उद्धार होगा? किस उपाय से वह वैष्णव-मत में लाया जायगा? इस चिंता में रामानुज बड़े व्याकुल हुए। उन्होंने गोविंद के हित के लिये मातुल शैलपूर्ण स्वामी के निकट एक पत्र भेजा, और उत्तर की अपेक्षा करने लगे।

इधर आदि-वैष्णवधाम श्रीरंगम् में यामुनाचार्य के शिष्यगण यतिराज की अतुल विभूति की बात सुनकर बड़े आनंदित हुए। उनको श्रीरंगम् में बुलाने के लिये वे बड़े उत्सुक हुए। यामुनाचार्य के पुत्र वररंग बड़े भक्त थे, संगीत विद्या में भी बड़े प्रवीण थे। वह कांचीक्षेत्र में भेजे गए। उन्होंने वरदाराज के मंदिर में उपस्थित होकर अपने संगीत से वहाँ की वैष्णव-मंडली को विमोहित किया। अब वररंग ने उनसे श्रीरंगनाथ की सेवा के लिये यतिराज को माँगा। उन्होंने बहुत अनिच्छा के साथ वररंग की प्रार्थना स्वीकार की। विवश होकर यतिराज वरदाराज को साष्टांग प्रणाम कर कुरेश, दाशरथि इत्यादि शिष्यों के साथ रवाना हुए।

यतिराज सशिष्य श्रीरंगनगर के समीप पहुँचे। वहाँ के वैष्णव लोग कनक, छत्र, ध्वज, शृंग, करताल आदि के साथ अभ्यर्थना कर उनको श्रीरंगनाथ के मंदिर ले गए। पूर्णाचार्य, यतिराज के दीक्षागुरु होने पर भी, उनको असामान्य पुरुष जानकर यतिराज के चरणों में प्रणत हुए। यतिराज उस समय प्रेम से आत्मविस्मृत हो रहे थे। वह महाभक्ति के साथ गुरुजी के चरणों पर गिरे। इस प्रकार अपने गुरु को सामने रखकर और सब वैष्णवों के साथ मिलकर रंगनाथजी के दर्शनों के लिये मंदिर में पहुँचे।

रामानुज ने भगवान् रंगराज को प्रणाम किया, और वैष्णवों को संबोधन कर कहा—"मेरे इस देह में जितने दिन प्राण रहेंगे, मैं उतने दिन श्रीरंगनाथ की सेवा-टहल तथा प्रिय कार्य में नियत रहूँगा।" अब रामानुज विश्राम के लिये मंदिर के सामने के मंडप में आ बैठे। उस समय पूर्णाचार्य इत्यादि सब वैष्णव उनको घेरे रहे। अनंतर रामानुज ने रंगनाथ के सेवकों को बुलवाकर कहा—"आज से आप लोग बहुत सावधान होकर भगवान् रंगनाथजी की सेवा करें, भूले से भी किसी बात की त्रुटि न हो।" सेवकों ने उनकी आज्ञा का पालन करना स्वीकार किया। उस दिन से यतिपति भगवान् रंगनाथ को अपना देह-मन-समर्पण कर कुरेश, दाशरथि इत्यादि शिष्यों के साथ श्रीरंगम्-नगर में रहने लगे।

कुछ समय के बाद यतिराज को शैलपूर्ण स्वामी से समाचार मिला कि गोविंद ने वैष्णव-धर्म का आश्रय ग्रहण किया है। अब रामानुजाचार्य वैष्णव-धर्म के गूढ़ रहस्यों को जानने के लिये व्यग्र हुए। पूर्णाचार्य ने उनको अहोद्वय-माहात्म्य, पुरुष-निर्णय, सिद्धित्रय, नारद-पंचरात्र, गीतार्थ-संग्रह और ब्रह्मसूत्र आदि का उपदेश किया। पीछे गोष्ठीपूर्ण नाम के एक महात्मा वैष्णव से, जिनको यामुना-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चार्य कुछ मंत्रार्थ बता गए थे, रामानुज को बहुत कठिनाई से उन मंत्रार्थों की प्राप्ति हुई। गोष्ठीपूर्ण ने पहले उन्हें अष्टाक्षरी मंत्र दिया, और यथाविधि न्यास, मुद्रा, ऋषि, देवता इत्यादि का उपदेश दिया। महापापी भी उस मंत्र के जप से विमुक्त हो सकता है। मुमुक्षु व्यक्तियों के लिये वह एक-मात्र जप है, उसके जप से वे मोक्ष-लाभ करते हैं। गोष्ठीपूर्ण ने रामानुज से शपथ करवा ली थी कि वह मंत्र दूसरे किसी से न कहेंगे। परंतु उसी दिन गोष्ठीपुर में भगवान् नृसिंह स्वामी का उत्सव था। वहाँ नाना देशों से अनेक वैष्णव उपस्थित हुए थे। उनके प्रति करुणायुक्त होकर रामानुज ने मंदिर के द्वार-देश पर उच्चैःस्वर से उस मंत्र का वारंवार पाठ किया। ७४ वैष्णव उस मंत्र को पाकर कृतार्थ हुए। प्रतिज्ञा-भंग से नरकगामी होने को भी स्वीकृत होकर उन्होंने दूसरों का कल्याण किया। गोष्ठीपूर्ण पहले बहुत असंतुष्ट हुए थे; पर पीछे उनकी महानुभावता देखकर हृष्टांतःकरण से उन्हें बुलाकर 'मंत्रार्थ' इत्यादि मंत्रों का उपदेश दिया, और सब वैष्णवों को बुलाकर उनसे कह दिया कि आज से वैष्णवों के सिद्धांत का नाम रहेगा 'रामानुज-दर्शन'। यामुनाचार्य के पुत्र वररंग से भी रामानुज को उनके सिखाए हुए कुछ मंत्रों के 'चरमार्थ' मिले। श्रीरंगम्-नगरवासी मालाधर-नामक एक वैष्णव ने रामानुज को सहस्रगीति की व्याख्या सिखाई। यामुनाचार्य प्राण-त्याग करने के पहले रामानुज के लिये सब मंत्रार्थ नाना शिष्यों के पास सौंप गए थे। पूर्णाचार्य, गोष्ठीपूर्ण, मालाधर और वररंग से उन्हें वे सब मिल गए। इस प्रकार ज्ञान-विज्ञान से विभूषित होकर रामानुज शास्त्र की चर्चा तथा शिष्यों की अध्यापना करते हुए श्रीरंगम् में आनंद से काल-यापन करने लगे। भगवान् रंगनाथ की सेवा में उनका गाढ़ अनुराग था। जिसमें अर्चना, भोग, अतिथि-सेवा इत्यादि का अच्छा प्रबंध हो, इसके लिये वह सदा सतर्क रहते थे। देव-सेवा का भली भाँति निर्वाह होने लगा। पहले देवपूजा और अतिथि अभ्यागतों की सेवा के लिये ढेर-की-ढेर जो सब सामग्रियाँ आती थीं, देवल तथा पाचक लोग उनका अधिकांश अपहरण करते थे। अब रामानुज की तीक्ष्ण दृष्टि का अतिक्रम करना उनको असंभव हुआ। इससे पुजारी लोग बहुत असंतुष्ट और उत्तेजित हो गए, और उन्होंने यतिराज के प्राण-नाश का संकल्प किया। यतिराज स्वयं नगरवासियों के द्वार-द्वार पर भिक्षा कर अपनी जीविका का निर्वाह करते थे। एक देवल ने किसी लोभी ब्राह्मण को धन के द्वारा वशीभूत कर एक दिन उनको विषान्न दिला दिया। दूसरे किसी दिन उन्हें विष-मिश्रित प्रसाद दिया। परंतु परमात्मा की कृपा से वह दोनों बार बच गए। तब पूजकगण भग्न-मनोरथ होकर उनके शरणापन्न हुए। यतिराज ने उनको क्षमा कर उनके साथ सौहार्द स्थापित किया।

कुछ समय के बाद यज्ञमूर्ति-नामक एक अद्वैतवादी, दिग्विजयी पंडित रामानुज के साथ शास्त्रार्थ के लिये श्रीरंगम् में आए। १७ दिन तक वादानुवाद चला। १८वें दिन बाद आरंभ होने के पहले ही यज्ञमूर्ति ने कातर और यतिराज के चरणों पर प्रणत होकर कहा—"ज्ञान-लोचना के सिवा मैंने अब तक कुछ नहीं किया। इसलिये मेरा हृदय शुष्क हो गया। अहमिका ने मेरे हृदय पर अधिकार कर भक्तिमार्ग का द्वार रुद्ध कर दिया।" यह कहकर यज्ञमूर्ति रामानुज के शरणापन्न हुए। यतिवर ने उनको पंच-संस्कारों से संस्कृत किया और उनका 'देवराज' नामकरण किया। रामानुज ने उनके लिये स्वतंत्र आश्रम बनवा दिया। उन्होंने यतिराज से भट्टनाथ के प्रबंध और समग्र द्राविड़-सिद्धांत का अध्ययन कर, यतिराज के अभिप्राय के अनुसार, 'ज्ञानसार' और 'प्रमेयसार'-नामक दो ग्रंथ द्राविड़-भाषा में लिखकर वैष्णव-संप्रदाय का बहुत उपकार किया।

कुछ काल व्यतीत होने पर यतिराज तीर्थ-भ्रमणार्थ निकले। पहले विद्वज्जन-परिवृत अष्टसहस्र-ग्राम में उपस्थित हुए। वहाँ उनके वरदार्य और यज्ञेश-नामक दो शिष्य थे। उनकी गुरुभक्ति की परीक्षा कर वह कांचीक्षेत्र होते हुए वैष्णव लोगों के साथ वेंकटाचल की ओर जाने लगे। रास्ते में श्रीपर्वत के निकट कपिलतीर्थ-नामक पवित्र तीर्थस्थान में शठकोप इत्यादि दस योगियों की मूर्तियों के दर्शन किए। शठकोप या शठारि एक ऋषियों के सदृश ज्ञानी पुरुष थे। नीच-जातीय शिल्पी के कुल में उनका जन्म हुआ था। वह ईश्वरदत्त प्रतिभा के बल से असाधारण ज्ञानी हुए थे, एवं उन्होंने श्रुतियों का सारांश मंथन कर पहले द्राविड़-देश की भाषा में 'शठारि-सूत्र' नाम के वैष्णव-मत-संबंधी ग्रंथ की रचना की थी। वह बड़े भक्त साधु थे, और उन्होंने साधारण लोगों को वैष्णव धर्म में दीक्षित करने की चेष्टा की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

थी, पर कृतकार्य न हो सके थे। रामानुज ने शठारिसूत्र का अवलंबन कर अपने संप्रदाय को गठित किया।

दूसरे दिन सामने विशाल वृष-पर्वत देखकर उनके मन में बड़ा आश्चर्य हुआ, और उन्होंने कुछ दिन वहाँ ठहरने का संकल्प किया। इस समय उस देश के जैनधर्मावलंबी राजा विट्टलदेव ने रामानुज के प्रभाव से मुग्ध होकर वैष्णव-धर्म ग्रहण किया। रामानुज ने उनके पंच-संस्कार किए और अब से राजा का नाम 'विष्णुवर्धन' हुआ। राजा ने रामानुज को एक ग्राम और ३० खंड उर्बरा भूमि दी। पर रामानुज ने इन भूखंडों को ब्राह्मणों में बाँट दिया।

इसके बाद वह वेंकटाचल के पाद-देश में पहुँचे, पर दैन्य से वेंकटगिरि पर चढ़ने को अनिच्छुक हुए। पीछे वहाँ के शैलपूर्ण स्वामी इत्यादि वैष्णवों के आग्रहातिशय से चढ़ना स्वीकार किया। यतिराज ने भक्ति के साथ वेंकटेश्वर को प्रणाम और प्रदक्षिणा की। वेंकटाचल की उपत्यका में उनके मातुल शैलपूर्ण स्वामी का घर था। रामायण का अध्ययन करने को वहाँ वह एक वर्ष तक रहे। उनका मौसेरा भाई गोविंद वैष्णव धर्म ग्रहण करने के बाद शैलपूर्ण स्वामी का किंकरत्व ग्रहण कर उनके घर में रहता था। मातुल-भवन में उसे देखकर यतिराज बहुत आनंदित हुए।

अनंतर वह गोविंद को साथ लेकर श्रीरंगम् को लौटे। गृहस्थाश्रम में गोविंद की अनास्था देखकर यतिराज ने उसकी प्रार्थना के अनुसार उसे संन्यास दिया।

रामानुजाचार्य असाधारण पंडित तथा शास्त्रज्ञ थे। अद्वैतवाद का खंडन कर जीवात्मा और परमात्मा में संबंध का निर्णय करना ही उनके जीवन का प्रधान लक्ष्य था। उन्होंने यामुनाचार्य के मृत देह के निकट प्रतिज्ञा की थी कि नर-नारियों की मुक्ति के निमित्त श्रुति का यथार्थ तात्पर्य ग्रहण कर ब्रह्मसूत्र का भाष्य बनावेंगे। वह प्रतिश्रुति पूर्ण करने को वह अब यत्नवान् हुए। परंतु बोधायन-वृत्ति के निरीक्षण के बिना उस प्रकार के भाष्य का निर्माण करना असंभव था। उस ग्रंथ के अवलोकन के निमित्त उन्होंने कुरेश को साथ लेकर काश्मीर के प्रसिद्ध शारदा-पीठ के अभिमुख यात्रा की। वहाँ पहुँचकर बोधायन-वृत्ति का संग्रह किया, और उसे लेकर एक दिन श्रीरंगम् की ओर रवाना हुए। शारदापीठ के अधिकारियों को जब मालूम हो गया कि दक्षिणी पंडित उस ग्रंथ को ले भागा है, तब रामानुज एक महीने का पथ अतिवाहित कर चुके थे। परंतु वह पकड़े गए, और बोधायन-भाष्य उनसे छीन लिया गया। रामानुज बहुत दुखी हुए। परंतु कुरेश ने उनसे कहा—"प्रभो! आप चिंता न कीजिए; क्योंकि प्रतिदिन रात को मैं वह भाष्य मनोयोग के साथ पढ़ता था, अतएव वह संपूर्ण मुझे कंठ हो गया है।" यह सुनकर यतिराज बहुत संतुष्ट हुए।

रामानुज और कुरेश श्रीरंगम् पहुँचे। कुरेश तथा दाशरथि को साथ लेकर रामानुज भाष्य-रचना में प्रवृत्त हुए। उन्होंने कहा—"वत्सगण! देखो, अद्वैतवादी लोग कहते हैं कि 'तत्त्वमसि' इत्यादि श्रुतियों के अर्थ-ज्ञान सहित सत्कर्म से मुक्ति मिलती है। केवल सत्कर्म या ज्ञान या दोनों के द्वारा ईश्वर के प्रति भक्ति उत्पन्न नहीं हो सकती। भक्ति उत्पन्न होने से मुक्ति की संभावना नहीं होती। अतएव मैं संपूर्ण रूप से अद्वैतवाद का खंडन कर विशिष्टाद्वैतवाद के मत की प्रतिष्ठा करने की इच्छा करता हूँ।" भाष्य-रचना का काम आरंभ हुआ। रामानुज कहते गए और कुरेश लिखते गए। इस प्रकार वेदांत-भाष्य, वेदांत-दीप, वेदांत-सार, वेदांत-संग्रह और भगवद्गीता का भाष्य रचा गया।

(अगली संख्या में समाप्य)

बौद्ध-दर्शन में विज्ञानवाद

[लेखक, लाला कन्नोमल एम्० ए०]

शून्यवाद और विज्ञानवाद परस्पर बहुत कुछ सादृश्य रखते हैं, इसका उल्लेख कुमारिल भट्ट और शंकराचार्यजी ने भी किया है। विज्ञानवाद के अनुसार सब धर्म (गुण और द्रव्य) केवल मनःकल्पित बातें हैं। भौतिक बाह्य जगत् में हम गति मानते आए हैं; लेकिन यह बात मिथ्या है। बाह्य जगत् है ही नहीं। उसे हम आप ही कल्पित कर लेते हैं, और फिर स्वयं ही भूल से समझने लगते हैं कि वह है (निर्मित प्रतिमोहि)। हमारे ज्ञान में दो क्रियाएँ हैं—१ ख्याति-विज्ञान, और २ वस्तु-प्रतिविकल्प-विज्ञान। पहले ज्ञान से हम वस्तुओं को देखते हैं, और दूसरे से वस्तुओं की कल्पना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करते हैं। ये दोनों विज्ञान परस्पर ऐसे मिले रहते हैं कि इनमें भेद बताना कठिन है (अभिन्नलक्षणे अन्योन्य-हेतुके)। ये दोनों क्रियाएँ अनादिकाल-प्रपंच-वासनाहेतुक हैं। इंद्रियों द्वारा ज्ञान तभी बंद हो सकता है, जब अभूत परिकल्प-वासना-वैचित्र्य-निरोध हो। हमारा सब जगत्-संबंधी ज्ञान निःस्वभाव है, माया-कल्पित है, मृगतृष्णा और स्वप्न के सदृश मिथ्या है। कोई बाहरी जगत् है ही नहीं। सब अपने चित्त की कल्पना है। चित्त अनादि काल से ऐसे प्रपंच की कल्पना करता आया है। यह चित्त, जिसकी गति से ये बाह्य और आंतरिक सृष्टियाँ रची जाती हैं, स्वयं रूपहीन है। इसकी उत्पत्ति, स्थिति और नाश नहीं है, यानी यह उत्पाद-स्थिति-भंग-वर्ज है। इसका नाम आलय-विज्ञान है। आलय-विज्ञान में उत्पाद-स्थिति-भंग न होने का कारण यह है कि वह सभी दशा में रहता है। उसके द्वारा सब दृश्यमान व्यावहारिक दशाओं का केवल विवेचन होता है, इसलिये उसकी उत्पत्ति सर्व-साधारण की उत्पत्ति के सदृश नहीं कही जा सकती, और न उसका कोई विशेष स्वभाव ही कहा जा सकता है।

(१) सब बाह्य संसार केवल हमारे मन की कल्पना है; वह वास्तव में नहीं है।

(२) अनादि वृत्ति है, जिससे हम बाह्य संसार की सृष्टि में विश्वास करते हैं।

(३) ज्ञान के दो रूप हैं—ज्ञाता और ज्ञेय।

(४) मन में विविध रूपों का अनुभव करने की भी वासना है।

इन चारों कारणों से आलय-विज्ञान में प्रवृत्ति-विज्ञान की वैसे ही लहरें उठा करती हैं, जैसे किसी झील में उठती रहती हैं, और यही प्रवृत्ति-विज्ञान के रूप में दिखाई देती हैं। पाँचों स्कंध, जिन्हें पंच विज्ञानकाय कहते हैं, एक समुचित रूप में दिखाई देते हैं। जैसे समुद्र की लहरों को न समुद्र से भिन्न कह सकते हैं, और न अभिन्न, वैसे ही व्यावहारिक ज्ञान जो होता है, वह न आलय-विज्ञान से भिन्न है न अभिन्न। जैसे समुद्र में लहरों का नृत्य होता है, वैसे ही चित्त अथवा आलय-विज्ञान में उसकी अनेक वृत्तियों का नृत्य होता रहता है। चित्त-रूप से वह भीतर के सब कर्मों का संचय करता है, मन-रूप से विधान करता है, और विज्ञान-रूप से पाँच प्रकार के ज्ञान बनाता है। माया के कारण ज्ञाता और ज्ञेय का भेद है। ये केवल संवृत्ति सत्य हैं—परमार्थ में वे न भावात्मक हैं और न अभावात्मक।

सत् असत् मायोपमा हैं। जो भली भाँति देखते हैं, वे मालूम करते हैं कि वास्तव में जितना प्रपंच है, वह सब झूठा है। जितना अभाव है, वह भी झूठ है; क्योंकि वह भी दृश्य-रूप है। इस संसार में भावाभाव-समानता है। यह अवस्था, जो स्वयं पूर्ण है, और जिसका न नाम है न कोई द्रव्य, तथता कहलाती है। इसी दशा को शून्यता भी कहा है, जो एक है और जिसमें न उत्पाद है, न स्वभाव है। इसे ही तथागतगर्भ कहा है, यह वेदांत-मत से भिन्न यों है कि उसमें आत्मा मानी है, जो स्थायी है, और इसमें स्थायी तत्त्व कोई नहीं माना।

विज्ञानवादी प्रतीत्यसमुत्पाद-सिद्धांत को कुछ हेर-फेर से मानते हैं। उनकी दृष्टि से आध्यात्मिक और बाह्य, दो प्रकार के समुत्पाद हैं। भौतिक वस्तुओं का अनेक अंशों के सम्मेलन से प्रादुर्भाव होना बाह्य प्रतीत्यसमुत्पाद है। उदाहरणतः मृत्तिका, कुंभकार, कुंभकार का चक्र इत्यादि के द्वारा घट का बनना।

आध्यात्मिक प्रतीत्यसमुत्पाद का अविद्या, तृष्णा, कर्म, स्कंध और तदुत्पन्न आयतनों द्वारा प्रादुर्भाव होता है।

हमारी बुद्धि दो प्रकार की है—(१) प्रविचय बुद्धि, और (२) विकल्पलक्षण ग्रहाभिनिवेशप्रतिस्थापिका बुद्धि।

प्रविचय बुद्धि निम्न-लिखित चार प्रकारों से भौतिक वस्तुओं की जाँच करती है—

(१) एकत्वान्यत्व = यह वा वह।

(२) उभयानुभय = दोनों या दोनों नहीं।

(३) अस्ति-नास्ति = है या नहीं है।

(४) नित्यानित्य = नित्य है या अनित्य है।

प्रपंच के विषय में इनमें से कोई भी बात नहीं कही जा सकती। दूसरे प्रकार की बुद्धि चित्त की वह वृत्ति है, जिसके द्वारा वह अनेकों वस्तुओं की कल्पना करती है, और उन्हें कर्ता, क्रिया, कारण तथा अन्य संबंधों के अनेक रूपों में समुचित क्रमबद्ध करती है। जो इन दोनों प्रकार की बुद्धियों से भली भाँति परिचित है, वह कह सकता है कि बाहरी प्राकृतिक जगत् नहीं है, और उस सबका अनुभव केवल मन में ही होता है। जल नहीं है, लेकिन स्नेह की ज्ञानेंद्रिय द्वारा कल्पना है, जो जल को एक बाहरी पदार्थ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बना देती है। इसी प्रकार क्रिया या उद्योग की ज्ञानेंद्रिय कल्पना से अग्नि बन जाती है। असत् को सत् समझने की झूठी आदत से पंच स्कंध प्रकट हो जाते हैं। यदि वे सब एकसाथ उत्पन्न हों तो हम कार्य-कारण संबंध का निश्चय नहीं कर सकते। यदि वे एक दूसरे के बाद प्रकट हुए, तो उनमें कोई संबंध नहीं; क्योंकि उन्हें एक दूसरे को बाँधने के लिये कोई चीज़ होनी चाहिए। लेकिन वहाँ कोई ऐसी चीज़ नहीं है। वास्तव में कोई चीज़ ऐसी नहीं है, जो उत्पन्न या नष्ट होती हो। हमारी कल्पना-शक्ति से ये वस्तुएँ अपने संबंधों सहित दिखाई देती हैं, और हमारा उनका ज्ञाता-ज्ञेय का संबंध हो जाता है। जिसे हम वाणी कहते हैं, वह केवल वाग्विकल्प और असत् है। वस्तुओं को जानना केवल व्यवहार है।

जब कोई किसी चीज़ की बाबत कहेगा, तो उस चीज़ का कोई-न-कोई कारण-संबंध अवश्य रहेगा; लेकिन ये सब संबंध असत्य हैं। ऐसी वाणी की विकल्पना से परमार्थ सत्य का पता नहीं चलता।

वस्तुओं की शून्यता सात दृष्टियों से देखी जाती है—

(१) वस्तुएँ सदा अन्योन्याश्रित हैं, और इसलिये स्वयं कोई विशेष स्वभाव नहीं रखतीं। जब स्वभाव भी नहीं है, तो पराभाव क्या हो सकता है। अतः वे लक्षण-शून्यता हैं।

(२) वे भाव-स्वभाव-शून्यता हैं, अर्थात् उनमें कुछ भाव-स्वभाव ही नहीं है; क्योंकि उनकी स्वभावाभावोत्पत्ति है।

(३) अप्रचरित-शून्यता। चूँकि सब स्कंध निर्वाण में जाते रहते हैं, इसलिये वे एक अपरिचित प्रकार की असत्ता हैं।

(४) प्रचरित शून्यता। वे वास्तव में अभावरूप हैं, पर कार्य-कारण-बद्ध दिखाई देती हैं; क्योंकि स्कंध वास्तव में असत्य हैं, उनका दूसरों से संबंध नहीं है, तथापि वे दूसरों से कारण-कार्य-संबंध रखते प्रतीत होते हैं।

(५) कोई वस्तु कोई निश्चित स्वभाव रखती हुई कही जा सकती है, पर उसे वाक्य द्वारा प्रकट नहीं कर सकते। यह निरभिलप्य-शून्यता है।

(६) उनके विषय में कोई ज्ञान नहीं हो सकता, सिवा उस ज्ञान के, जो चिरस्थित वासना-दोषों से होता है, और जो दोष हमारी दृष्टि बिगाड़ देते हैं।

(७) इतरेतर-शून्यता। हम वस्तुओं को विशेष स्थान और काल में होती हुई मानते हैं; पर वे उनमें होती नहीं हैं। वे इस अर्थ में भी अभावात्मक हैं।

इस प्रकार शून्यता ही है, जो न नित्य और न अक्षय है। जगत् स्वप्न और माया है। दो प्रकार के निरोध आकाश और निर्वाण हैं। जो चीज़ें न सत् हैं और न असत्, उन्हें मूर्ख सत् मानते हैं। सत्यता केवल तथागत-गर्भ है। सब दृश्यमान पदार्थ—जैसे स्कंधपंच, धातु, आयतन—उसे दोषों से ढकते हैं। इसका अर्थ यह हुआ कि एक जगदात्मा है, लेकिन यह बात नहीं है। यह तथागत-गर्भ-सत्यता केवल देखने की है। यह अल्पज्ञों को आकर्षित करने के लिये लिखी गई है। असल में तो सिद्धांत नैरात्म्य का ही है।

बोधिसत्व परम गति को इन चार ज्ञानों द्वारा प्राप्त करते हैं—

(१) स्वचित्त-दृश्य-भावना।

(२) उत्पादस्थितिभंग-विवर्जनता।

(३) बाह्यभावाभावोपलक्षणता।

(४) स्वप्रत्यार्थज्ञानाधिगमाभिन्नलक्षणता।

(१) सब वस्तुएँ हमारी मनःकल्पना की रची हुई हैं।

(२) वस्तुओं में स्वभाव न होने से उनमें उत्पाद, स्थिति और भंग भी नहीं हैं।

(३) यह समझना चाहिए कि किस अर्थ में बाहरी चीज़ें सत् या असत् कही हैं; क्योंकि उनका अस्तित्व मृगतृष्णा के समान है, जो अनेकत्व के रचने और देखने की अनादि वासना से उत्पन्न होता है।

(४) सब वस्तुओं के स्वभाव को ठीक-ठीक समझना।

ध्यान चार हैं—(१) बालोपचारिक, (२) अर्थप्रविचय, (३) ततथालंबन, (४) तथागत।

पहले ध्यान को श्रावक और प्रत्येक बुद्ध करते हैं। दूसरा है पुद्गलनैरात्म्य पर ध्यान करना तथा हरएक चीज़ को अस्थायी, दुःखमय और दोषयुक्त समझना। आदि से अंत तक इस प्रकार ध्यान करते-करते मुनि तब तक आगे बढ़ता है, जब तक असंज्ञानिरोध न हो जाय। यह ध्यान प्रारंभ करनेवालों के लिये है और पहली सीढ़ी है। दूसरा ध्यान इससे बढ़कर है। इस अवस्था में यह पूरा ज्ञान हो जाता है कि आत्मा नहीं है। यही नहीं, बल्कि इस बात का भी ज्ञान होता है कि अन्य-धर्मानुयायियों के यह अथवा दूसरे सिद्धांत हैं ही नहीं, और कोई धर्म

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रतीत ही नहीं होता। यह अर्थ प्रविचयध्यान कहलाता है। इस ध्यान में योगी सब अर्थों के प्रविचय में सर्वथा ध्यान लगाता है। तीसरे ध्यान में योगी को अनुभव हो जाता है कि आत्मा नहीं है, और न दृश्यमान प्रपंच ही है। यह विचार भी कल्पना का परिणाम है। वह तथता में लीन हो जाता है। यह ध्यान तथतावलंबन कहाता है; क्योंकि उसका लक्ष्य तथता है। चौथे ध्यान में मन तथता अवस्था में ऐसा लीन हो जाता है कि सब प्रपंच की शून्यता और अज्ञेयता का पूर्ण रीति से अनुभव हो जाता है। निर्वाण में सब मूल वासनाएँ, जो ज्ञानरूप में व्यक्त होती हैं, नष्ट हो जाती हैं, और मन, जो बुद्धि और ज्ञानेंद्रियों के ज्ञान द्वारा मिथ्या रचना करता रहता है, काम करना बंद कर देता है। यह मृत्यु नहीं है; क्योंकि इसके पश्चात् पुनर्जन्म नहीं होगा, और न यह विध्वंस है; क्योंकि केवल संस्कृत वस्तुओं का विध्वंस होता है। अतः यह मृत्यु और नाश, दोनों से भिन्न है। यह निर्वाण श्रावक और बुद्धों के निर्वाण से भिन्न है; क्योंकि वे निर्वाण उसी अवस्था को कहते हैं, जिससे सब वस्तुओं के सामान्य गुणों के ज्ञान द्वारा वे वस्तुओं में आसक्त नहीं होते, और भ्रमिक व्यवस्थाएँ करने से बंद हो जाते हैं।

इससे ज्ञात होगा कि जैसे दूसरे मतवाले कहते हैं कि इन गोचर वस्तुओं का कारण है, वह बात नहीं है। जब यह कहा जाय कि संसार माया है, तो उसका मतलब यह है कि उसका कोई आधार-कारण या अवलंबन-भूमि नहीं है। जो वस्तुएँ उत्पन्न, स्थित और नष्ट होती दिखाई देती हैं, वे दूषित कल्पना की सृष्टि हैं। और, अनादि मूल-वासनाओं के संग से मलिन विकल्प की प्रकृति अथवा रचना-क्रिया से निवृत्त हो जाना ही तथता है। तथता माया से पृथक् सत्ता नहीं रखती, बल्कि वह स्वयं माया है, जिसकी रचना-क्रिया बंद हो गई है। इसलिये उसे चित्त-विमुक्त भी कहते हैं; क्योंकि वह सर्व-कल्पना-विरहित है।

मा

(उपन्यास)

[लेखक, पं० विश्वंभरनाथ शर्मा कौशिक]

पहला खंड

पहला परिच्छेद

प्राक्कथन

एक ठंडी साँस लेकर सावित्री बोली—"बहन, मेरे ऐसे भाग्य कहाँ, जो पुत्र का मुँह देखूँ!"

सावित्री की सखी शांता मुँह बनाकर कहने लगी—"क्यों, भाग्य क्यों नहीं, अभी तेरी उमर ही क्या है? बहुत होगी, तीस वर्ष की होगी। फिर इतनी उमर में क्या लड़के नहीं होते? बहन, तू तो ऐसी बातें करती है कि—"

शांता की बात पूरी होने के पूर्व ही सावित्री बोल उठी—"जिनके होते होंगे उनके होते होंगे, मेरे तो अब होने से रहे।"

"तू तो पागलों की-सी बातें करती है! देख अभी परसाल ही मेरी चाची के पहली लड़की हुई है; उनकी उमर कुछ न होगी, तो चालीस से कम न होगी—बहन, सच बात तो यह है कि सब कर्मों की बात है, तीस-चालीस पर कुछ नहीं। जिन्होंने अच्छे कर्म किए हैं, उनके होते ही हैं, चाहे चालीस की हों या पचास की।"

"अरी तू भी क्या बातें करती है? कहने लगी कर्म—हुँह—मैं सच कहती हूँ।"

"पत्थर सच कहती है।"

"मुझे तो आशा नहीं रही।"

"क्यों नहीं रही; भला यह भी कोई बात है।"

"अरी पगली, तू तो हवा में महल बना रही है, और मुझे एक-एक पल एक-एक बरस के समान दिखाई दे रहा है। एक अनिश्चित बात पर भरोसा करके बैठ रहना बड़ी भूल है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"बैठ न रहेगी तो करेगी क्या? यह भी कोई अपने बस की बात है? भरोसा करके तो बैठना ही पड़ेगा, और तू कर ही क्या सकती है?"

"कर क्यों नहीं सकती?"

"क्या कर सकती है?"

"तुझे जब तक सारी बातें खोलकर न सुनाऊँगी तब तक तेरी समझ में मेरी बात नहीं आवेगी।"

"तो फिर बता न, क्या बात है?"

"सुन, यह तो तू जानती ही है कि उनकी (सावित्री के पति की) उमर चालीस के ऊपर है और आजकल जो समय है उसके देखते चालीस के ऊपर पहुँच जाने पर आदमी का चल-चलाव लग जाता है। आजकल जब जवानों ही का कोई ठीक नहीं तो बूढ़ों की कौन कहे। अच्छा अब यदि भगवान् न करे, कल को उनकी आँखें मिच गईं, तो मेरी क्या दशा होगी?"

"क्या दशा होगी!"

"और क्या, मुझे कहीं बैठने का ठिकाना रहेगा?"

"क्यों, रहेगा क्यों नहीं? ईश्वर का दिया सब कुछ है। दूकान है, जायदाद है, यह सब कहाँ चला जायगा? क्या वह छाती पर धर ले जायँगे?"

"उँह, यही तो तुझे ख़बर नहीं; अरी पगली, इन सबमें से तो मुझे एक कौड़ी नहीं मिलेगी।"

"क्यों नहीं मिलेगी?"

"यह सब तो देवर-जेठ छीन लेंगे।"

"क्यों, वे क्यों छीन लेंगे?"

"अरी, यह आजकल का क़ानून है कि देवर-जेठ के आगे स्त्री का हक़ नहीं होता—न-जाने किस निगोड़े ने यह क़ानून चलाया है।"

शांता ठोढ़ी पर उँगली रखकर बोली—"ऊई बहन, यह कैसा उलटा क़ानून—आग लगाऊँ इस निगोड़े क़ानून को! जिस मुए ने यह क़ानून चलाया, उस निगोड़मारे ने यह न सोचा कि भला जब देवर-जेठों को सब मिल जायगा तो स्त्रियाँ क्या खाकर जिएँगी। हे भगवान्, कमा-कमाकर कोई मरे और ले कोई जाय—और हम जो रात-दिन अपने मर्दों के साथ जलती-मरती हैं, उन्हें एक कौड़ी भी न मिले, वाह रे क़ानून, ऐसा अनोखा क़ानून तो आज तक सुना नहीं—तो क्यों बहन, स्त्रियों को कुछ भी नहीं मिलता।"

"केवल रोटी-कपड़ा मिलता है।"

"ख़ैर, चलो इतना भी बहुत है।"

सावित्री भृकुटी चढ़ाकर बोली—"हूँ—बहुत है, तेरे लिये बहुत होगा।"

"बहुत तो नहीं, पर कुछ न मिलने से इतना मिलना भी बहुत है—आख़िर किया क्या जाय?"

"किया क्यों नहीं जाय, जो आज मेरे पुत्र होता तो मुझे कोई सोच ही न था।"

"क्यों, सोच क्यों नहीं था?"

"फिर तो देवर-जेठों को एक कौड़ी नहीं मिल सकती, सब लड़के को मिलता।"

"क्या यह भी कोई क़ानून है?"

"हाँ—जो पुत्र हो तो सब उसी को मिलता है, देवर-जेठों को कुछ नहीं मिलता।"

शांता आँखें विस्फारित करके मुसकिराती हुई बोली—"ओहो—बहन, अब मैं सब समझ गई। हाँ, बहन, ऐसी दशा में तेरा पुत्र के लिये सोच करना ठीक ही है।"

"अब तू ही बता, ऐसी दशा में केवल आशा पर भरोसा करके बैठ रहना कहाँ तक ठीक है?"

शांता मुख उदास करके बोली—नहीं बहन, ऐसी दशा में तो यह ठीक नहीं; किंतु मैं फिर तुझसे पूछती हूँ कि तू कर ही क्या सकती है?

"यही मैं भी सोच रही हूँ, क्या करूँ क्या न करूँ।"

"भला उनसे भी कभी यह चर्चा चलाई?"

"नहीं, अभी तक तो चलाई नहीं, डर लगता है—वह अपने जी में कहेंगे कि यह हर समय मुझे मरा ही मनाया करती है।"

"नहीं इस ढंग से कह कि वह ऐसा न सोच सकें।"

"देखो आजकल में कहूँगी। (ठंडी साँस भरके) मैंने एक राह निकाली है, तू भी उस पर विचार करके देख कि वह ठीक है या नहीं।"

"कौन-सी राह?"

"यह तो मैं समझ चुकी कि अब मेरे पुत्र होना नहीं—इस कारण अब अपनी बचत के लिये यही ठीक है कि कोई लड़का गोद ले लूँ। क्यों, तेरी क्या सलाह है?"

"हूँ" कहकर शांता कुछ क्षण तक चुपचाप बैठी सोचती रही; तत्पश्चात् बोली—"हाँ यही ठीक है, इसे छोड़ और हो ही क्या सकता है?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सावित्री ने कहा—"और कुछ नहीं हो सकता।"

शांता जाने के लिये तैयार होने का भाव दिखाती हुई बोली—"तो फिर जो कुछ करना हो, जल्दी कर डाल।"

"मैं आज-ही-कल में उनसे कहती हूँ।"

शांता ओढ़ने की चादर उठाकर बोली—"अच्छा तो अब आज्ञा दो, तीन बज गए, वह आते होंगे।"

सावित्री मुसकिराकर बोली—"वह तो कहीं चार-पाँच बजे आवेंगे। क्या आजकल दफ़्तर जल्दी बंद हो जाता है?"

"नहीं, जल्दी तो नहीं बंद होता।"

"तो फिर?"

"अभी उनके जलपान के लिये कुछ बनाना-बनूना है।"

शांता उठ खड़ी हुई, साथ ही सावित्री भी उठकर खड़ी हो गई और बोली—"अब कब मिलोगी?"

चादर ओढ़ते हुए शांता ने उत्तर दिया—"तीन-चार दिन में आऊँगी।"

दूसरा परिच्छेद

प्रस्ताव

बाबू व्रजमोहनलाल कपूर मध्यम श्रेणी के आदमी हैं। लखनऊ के खत्री-समाज में आपका अच्छा आदर है। आप कपड़े का व्यवसाय करते हैं, कुछ जायदाद भी है। इन दोनों से आपको चार-पाँच सौ मासिक की आमदनी हो जाती है। आप पढ़े-लिखे तो सामान्य ही हैं, नाइंथ-क्लास तक अँगरेज़ी जानते हैं, हिंदी तथा उर्दू में चिट्ठी-पत्री लिख पढ़ सकते हैं, किंतु निरंतर व्यवसाय की चालें खेलते रहने के कारण और उम्र में चालीस के ऊपर होने से कुछ सांसारिक अनुभव रखने के कारण आपमें बुद्धि की कुछ अधिक कमी नहीं है। यद्यपि बाबू साहब को संसार में आए हुए चालीस वर्ष के लगभग हुए हैं, और आजकल का जलवायु देखते हुए यह वह अवस्था है, जब मनुष्य यौवन के उद्यान से निकलकर बुढ़ापे की मरु-भूमि में पैर रखता है; परंतु गृहस्थी के भार अथवा और किसी चिंता ने आपके चेहरे पर बुढ़ापे का रंग कुछ आवश्यकता से अधिक फेर दिया है।

बाबू साहब के परिवार में छः मनुष्य हैं। एक स्वयं आप, दूसरी आपकी स्त्री, तीसरा छोटा भाई, जिसकी वयस २५ वर्ष के लगभग है, चौथी छोटे भाई की स्त्री, पाँचवीं एक विधवा भ्रातृवधू, उम्र २४ वर्ष के लगभग, और छठी एक विधवा बहन, वयस ३० वर्ष के लगभग। इसके अतिरिक्त एक भाई और हैं। वह आपसे केवल पाँच-छः वर्ष छोटे हैं; किंतु इलाहाबाद-ज़िले की किसी तहसील में तहसील-दारी के पद पर नियुक्त हैं, इस कारण अपने बाल-बच्चों सहित वहीं रहते हैं। छोटे भाई का नाम बनवारीलाल है, और वह बाबू साहब के साथ ही कपड़े की दूकान में काम करता है। यहाँ पर बाबू व्रजमोहनलाल का इतना ही परिचय यथेष्ट है, आगे चलकर पाठक उनके विषय में स्वयं ही सब जान जायँगे।

वैशाख का महीना था। पूर्णिमा का चंद्रमा संसार को आलोकित करने के लिये अपनी पूरी शक्ति काम में ला रहा था। शीतल वायु के मंद-मंद झोंके दिन-भर के थके हुए मनुष्यों को थपक-थपककर सुलाने की चेष्टा कर रहे थे।

रात के दस बज चुकने पर व्रजमोहनलाल अपनी पत्नी सहित मकान की छत पर आए। व्रजमोहन अपनी शय्या पर बैठकर बोले—

"अहाहा! आज तो बड़ी ठंडी हवा चल रही है, चाँदनी भी ख़ूब छिटकी हुई है।"

उनकी पत्नी ने पति के उत्तर में केवल एक ठंडी साँस भरी और चुप-चाप अपनी शय्या पर बैठ गई।

व्रजमोहन स्त्री की उदासीनता पर ध्यान न देकर बोले—"आज बड़ी मीठी नींद आवेगी, कल तो गर्मी के मारे अच्छी तरह नींद ही न आई।"

स्त्री ने रुखाई से उत्तर दिया—"मुझे क्या? मेरे लिये तो सब दिन एक-से हैं; मुझे तो सारी रात करवटें लेते बीत जाती है।" पत्नी के इन शब्दों ने व्रजमोहनलाल की भी दबी हुई उदासीनता को उभार दिया। वह चौंक पड़े, उनके चेहरे का रंग बदल गया, उनके मुख का भाव देखने से यह प्रतीत होता था कि जिस उदासीनता के बादलों को वह वायु के झोकों में उड़ा देना चाहते थे, उन्हें स्त्री के शब्दों ने और भी अधिक सघन कर दिया। जिस अंधकारमय हृदय को वह चंद्रमा की किरणों से कुछ क्षण के लिये आलोकित करने का प्रयत्न कर रहे थे, वह स्त्री के शब्दों से और भी अंधकारमय हो गया।

व्रजमोहन ने भी एक ठंडी साँस भरी और बोले—"क्या करें, ईश्वर हमारी सुध ही नहीं लेता, अपना कुछ वश है?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उनकी स्त्री फिर एक ठंडी साँस लेकर बोली—"मुझे तो कुछ नहीं सुहाता, जब हमारा घर ही अँधेरा पड़ा हुआ है, तो यह चाँदनी किस काम की ? जब हमारा तन-मन ही जल रहा है, तो यह ठंडी हवा किस मतलब की ?"

"यह तो सब सच है, परंतु किया क्या जाय ?"

उनकी पत्नी दबी ज़बान से बोली—"किया क्यों नहीं जा सकता ? करने से सब कुछ किया जा सकता है।"

ब्रजमोहन को स्त्री की बात पर आश्चर्य हुआ, मन में सोचने लगे—ऐं ! इसका क्या अर्थ, क्या करने से हो सकता है ? कहीं इसका तात्पर्य दूसरे विवाह से तो नहीं ? यदि यही तात्पर्य है तो इसकी भूल है।

उनकी स्त्री उन्हें सन्नाटे में देखकर बोली—"क्यों, चुप क्यों हो गए ? क्या मैंने कोई बुरी बात कही ?"

"मैं तुम्हारी बात का अर्थ ही नहीं समझा, बुरी-भली क्या बताऊँ ?"

"मेरा मतलब यह है कि आख़िर अपना नाम चलाने का भी कोई उपाय सोचा।"

ब्रजमोहन मुँह बनाकर बोले—"अजी तुम भी कहाँ की लचर बात लाईं—हुँह—मेरा सिद्धांत यह नहीं कि संतान से नाम चलता है, संतान से नाम-वाम ख़ाक नहीं चलता। बहुत चला, दो-चार पीढ़ी चल गया। नाम चलता है अच्छे-अच्छे काम करने से। तुलसीदासजी का नाम क्या उनके पुत्र ही की बदौलत चल रहा है ? कबीर का नाम क्या उनकी संतान ही चला रही है ? यह सब ढकोसला है। जो कहीं संतान दुश्चरित्र निकल गई, तो नाम चलने के बदले और उलटा डूब जाता है।"

पति की बात पर पत्नी अप्रसन्न होकर बोली—"तुम्हारा मत तो संसार से निराला है। सारे वेद-शास्त्र चिल्ला-चिल्ला-कर कह रहे हैं कि दुनिया में पुत्र से बढ़कर और कोई सुख नहीं। अभी मैंने परसों एक पुस्तक पढ़ी थी। उसमें लिखा है कि जिसके पुत्र नहीं होता, उसकी मोक्ष नहीं होती, और एक पुस्तक क्या, सभी ऐसा कहते हैं ; पर तुमसे कहे कौन ? तुम तो अपने आगे किसी की सुनते ही नहीं।"

ब्रजमोहन कुछ मुसकिराकर बोले—"जिसे मोक्ष की इच्छा हो, वह पुत्र के लिये रोवे। हमें तो मोक्ष की इच्छा है नहीं, हमें मोक्ष पर विश्वास ही नहीं।" पाठक समझ गए होंगे कि ब्रजमोहन की पत्नी हमारी पूर्व परिचित सावित्रीदेवी हैं।

सावित्री मुँह चढ़ाकर बोलीं—"चलो रहने दो अपना विश्वास। बातें बनाना ख़ूब आता है। भला दुनिया में ऐसा कौन है, जिसे मोक्ष की इच्छा नहीं ? ये साधू-जोगी संसार छोड़कर जंगलों में रहते हैं, फल-फूल खाकर भगवान् का ध्यान करते हैं; सो क्या पागल हैं ? यह सब मोक्ष ही के लिये करते हैं या और कुछ ?"

ब्रजमोहन ने मन में सोचा कि सावित्री अल्पज्ञ है, अतएव उसका ऐसा विश्वास होना स्वाभाविक ही है। वह फिर मुसकिराकर बोले—"तुम्हारे कहने के अनुसार तो वे पागल ही हैं। भला जब केवल पुत्र उत्पन्न करके मोक्ष मिल सकती है, तो फिर व्यर्थ ही वे जंगलों में रहकर अपने शरीर को कष्ट देते हैं। उन्हें चाहिए कि आनंद से गृहस्थी में रहकर संसार का सुख लूटें, मोक्ष तो पुत्र के कारण मिल ही जायगी। क्यों, है न ठीक ?"

अब सावित्री भी हँस पड़ी, बोली—"तुम्हें तो उपहास सूझा है, और मैं सच्ची बात कहती हूँ। अच्छा, जाओ मेरा कहना सब झूठ है। मान लो, पुत्र से कोई लाभ नहीं ; पर तुम भी तो पुत्र के लिये ठंडी साँसें भरा करते हो। जब कोई लाभ ही नहीं, तो ऐसा क्यों करते हो ?"

ब्रजमोहन कुछ गंभीर होकर बोले—"हाँ, अब तुम राह पर आईं—मुझे पुत्र की चिंता क्यों है, सुनो—प्रथम तो सांसारिक सुखों में पुत्र-सुख की भी गिनती है; जिसके घर में पुत्र होता है, सब उसे भाग्यवान् समझते हैं, स्त्री पर से बाँझ होने का कलंक जाता रहता है, बच्चों की बाल-लीला मनोरंजक तथा सुखदायी होती है। तुम कहोगी कि यही सब बातें तो कन्या के लिये भी कही जा सकती हैं—यह ठीक है, किंतु पुत्र में कई विशेषताएँ हैं। लड़की पराए घर की होती है, लड़का अपना होता है। लड़की से दूसरे का वंश चलता है, लड़के से अपना। पुत्र माता-पिता का बड़ा सहायक और बुढ़ापे में तो पालन-पोषण-कर्ता तक होता है। इसीलिये तो पुत्र को बुढ़ापे की लाठी कहा गया है। संक्षिप्त यह कि पुत्र गृहस्थी का एक बलवान् तथा आवश्यक अंग समझा जाता है।"

सावित्री खिलखिलाकर हँस पड़ी। ब्रजमोहन उसके हँसने पर कुछ खिझलाकर बोले—"क्यों-क्यों, इसमें हँसने की क्या बात थी ?" सावित्री हँसती हुई बोली—"वाह, यह तो वही कहावत हुई कि नाक यों न पकड़ी यों पकड़ी, बात तो एक ही है। पुत्र का आवश्यक होना सिद्ध हो गया।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तो मैं यह कब कहता हूँ कि पुत्र का होना आवश्यक नहीं? मैंने तो यह कभी नहीं कहा। हाँ, यह मैं ज़रूर कहता हूँ कि मैं पुत्र का होना उतना आवश्यक नहीं समझता, जितना कि पुत्र द्वारा मोक्ष चाहनेवाले अथवा नाम चाहनेवाले लोग समझा करते हैं; और न मैं उन लोगों में से हूँ, जो पुत्र के लिये हर प्रकार के बुरे-भले उपाय किया करते हैं। मैं तो यह जानता हूँ कि यदि पुत्र हो, तो बड़ी अच्छी बात है, ईश्वर की कृपा है, और यदि न हो तो हरि इच्छा। संसार में हरएक मनुष्य को तो सब सुख मिलते ही नहीं, बहुत-से आदमी ग़रीब होते हैं, तो क्या वे संसार में रहते नहीं, या वे रुपए के लिये दिन-रात रोया ही करते हैं? हमारी दूकान के चपरासी ही को देख लो। उसके तीन-चार लड़के हैं; किंतु रुपया न होने से वही लड़के उसे दुखदायी हो रहे हैं।"

सावित्री सूखी हँसी हँसकर बोली—"भगवान् की माया भी समझ में नहीं आती। जहाँ लड़कों की चाह नहीं, वहाँ तो लड़कों के ढेर लगे हैं, और जहाँ चाह है, वहाँ चूहे का बच्चा तक नहीं—वाह रे ईश्वर!"

"यही तो तमाशा है। अब उस चपरासी के हृदय से कोई पूछे। सच पूछो, तो उसकी दरिद्रता उन लड़कों के कारण और भी बढ़ गई है।"

सावित्री मुँह चढ़ाकर बोली—"अजी बैठो भी, कहने लगे, लड़कों के कारण बढ़ गई—हुँह—भगवान् करे अच्छे रहें, सयाने होकर चारों कमायँगे, तब उसे जान पड़ेगा कि हाँ, लड़के भी संसार में कोई पदार्थ होते हैं।"

व्रजमोहन हँसकर बोले—"तुम भी क्या बातें करती हो? बाबा मरेंगे तब बैल बटेंगे, जब तक वे सयाने होंगे, तब तक तो उनके कारण उस बेचारे के सब करम हो जायँगे।"

"तो फिर सेवा ही से मेवा मिलता है।"

"वाह री सेवा और वाह रे मेवा।"

"तो तुम्हारा-सा कठोर जी सबका तो है नहीं।"

"मेरा जी कठोर है?"

"और नहीं तो क्या!"

"ख़ैर, तुम यही समझो।"

सावित्री गंभीर होकर बोली—"अच्छा ये बातें तो हुआ ही करेंगी—अब तुम्हें एक काम करना पड़ेगा।"

"कौन-सा काम?"

"पहले यह बताओ कि तुमने कभी यह भी सोचा कि—ईश्वर वह दिन मुझे न दिखावे—यदि कल को तुम्हारी आँखें मिच गईं, तो मेरी क्या दशा होगी?"

"क्यों, क्या दशा होगी?"

"घस्सू की चाची का हाल तो तुम्हें मालूम ही है, बस, समझ जाओ।"

व्रजमोहन कुछ क्षण तक सिर झुकाए कुछ सोचते रहे, तत्पश्चात् बोले—"तुम्हारा यही मतलब है न कि मेरे पश्चात् तुम्हारे देवर सब छीन-छान लेंगे और तुम्हें कष्ट देंगे?"

"और क्या, यह तो होगा ही।"

"हूँ" कहकर व्रजमोहन फिर चिंता में पड़ गए।

सावित्री ने कुछ क्षण तक पति के बोलने की प्रतीक्षा करके कहा—"क्या तुम्हें इसमें कुछ संदेह है?"

व्रजमोहन बोल उठे—"नहीं, संदेह तो नहीं है किंतु—"

"किंतु क्या?"

"ऐसा हो भी सकता है और नहीं भी हो सकता।"

"मान लो, ऐसा ही हुआ।"

"अच्छा तो तुम्हारा मतलब क्या है? क्या तुम यह चाहती हो कि पुत्रोत्पत्ति के लिये मैं दूसरा विवाह—"

सावित्री कानों पर हाथ रखकर जल्दी से बोल उठी—"हे भगवान्, मैं ऐसी बात सुनना तक नहीं चाहती, मुझे मर जाना स्वीकार है, पर सौत का मुँह देखना—"

सावित्री की बात पूरी होने के पहले ही व्रजमोहन बोल उठे—"तो फिर तुम क्या चाहती हो, खुलकर कहो न।"

"मैं यही चाहती हूँ कि अपने जीते-जी कोई ऐसा प्रबंध कर दो कि पीछे मेरी दुर्दशा न हो।"

"दुर्दशा क्यों होगी? तुम्हें रोटी-कपड़ा तो मिलेगा ही।"

"हे भगवान्, क्या तुम यह समझते हो कि मैं ये सारी बातें रोटी-कपड़े ही के लिये कर रही हूँ? रोटी-कपड़े की मुझे क्या चिंता है? रोटी-कपड़ा देने को तो अभी राधे (सावित्री का छोटा भाई) ही काफ़ी है। मैं यह चाहती हूँ कि तुम्हारी गाढ़ी कमाई, मेरी और तुम्हारी जोड़ी हुई गृहस्थी तीन-तेरह न हो। भला सोचो तो सही, जो धन-दौलत हमने एक-एक पैसा करके, पेट काट-काटकर, इकट्ठा की है, और जिसकी इस समय तुम्हारी दया से मैं सोलौ (सोलहो) आने की मालिक बनी बैठी हूँ, वही तुम्हारे पीछे बरात की फुलवारी के समान लुट जाय, और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मैं बैठी टुकुर-टुकुर देखा करूँ; यह सब भला मुझसे कैसे देखा जायगा ?"

व्रजमोहन का मुख अधिक गंभीर हो गया, उनकी भौंहें तन गईं। उनके मुख का भाव देखने से मालूम होता था कि उनके हृदय पर सावित्री के शब्दों का बड़ा प्रभाव पड़ा है।

सावित्री फिर कहने लगी—"जिसके पास चार पैसे होते हैं, उसे भी उनका मोह होता है। फिर भला हमें-तुम्हें अपनी इतनी बड़ी गृहस्थी का मोह क्यों न होना चाहिए ? दूर क्यों जाओ, अपने भाई तहसीलदार ही को न देख लो, इतना कमाते-धमाते हैं, किंतु तुम्हें भी कभी चार रुपए भेजते हैं ? जो कुछ करते हैं, अपने ही बाल-बच्चों के लिये करते हैं। तुमसे तो उलटे कुछ ले ही लेते हैं। संसार में कोई किसी का मीत नहीं, सब अपना ही भला चाहते हैं; लेने के लिये सब खड़े हो जाते हैं, देने को कोई भी नहीं।"

व्रजमोहन एक लंबी साँस छोड़कर बोले—"निस्संदेह तुम्हारी बात बहुत ठीक है। मैंने इन पर कभी विचार ही नहीं किया, और न कभी तुमने ही कुछ चर्चा चलाई।"

"चर्चा क्या चलाती ? मैं तो आशा-ही-आशा में रही, यही सोचती रही कि अभी हमारी उमर ही क्या है। भगवान् कभी तो हमारी ओर दृष्टि फेरेंगे। परंतु जब आशा टूट गई, तो कहना ही पड़ा।"

"तो अब तुम्हारी क्या सलाह है ?"

"मेरी सलाह तो यही है कि कोई लड़का गोद ले लो, बस, सारे झगड़े-टंटे मिट जायँगे।"

"हूँ" कहकर व्रजमोहनलाल फिर चिंता-सागर में ग़ोते खाने लगे। पति को चुप हो जाते देखकर सावित्री समझी कि उन्हें यह प्रस्ताव कुछ पसंद नहीं आया, अतएव वह बोली—"क्यों, चुप क्यों हो गए ? क्या मेरी बात तुम्हें कुछ जँची नहीं ? लड़का गोद लेना कुछ नई बात तो है नहीं, बहुत लोग ऐसा करते हैं।"

व्रजमोहनलाल ने उत्तर दिया—"करते क्यों नहीं, किंतु—"

सावित्री ने कुछ रुष्ट होकर कहा—"किंतु-परंतु क्या करते हो ? जो कुछ कहना हो, खुलकर कहो।"

व्रजमोहनलाल सिर खुजलाते हुए बोले—"लड़का गोद लेने में बड़ी अड़चनें पड़ेंगी।"

"क्या अड़चनें ?"

"एक तो भाई बिरादरीवाले नाक-भौं सिकोड़ेंगे, दूसरे केदार (तहसीलदार साहब) और बनवारी बुरा मानेंगे।"

"ये सब तुम्हारी बनावटी बातें हैं। भाई बिरादरीवाले तो जब बुरा मानें, जब उन्होंने कभी कोई लड़का गोद न लिया हो। रही केदार और बनवारी की बात, सो वे यदि बुरा मानें, तो उनकी भूल है। वे अपना अलग कमाते-खाते हैं, अपनी गृहस्थी बाँध रहे हैं, उन्हें बुरा मानने से मतलब ? कुछ तुम उनकी कमाई तो छीनते ही नहीं हो। ईश्वर ने उन्हें बाल-बच्चे दिए हैं, हमें नहीं दिए, हम अपना गोद ही लेकर मन बहलावेंगे। आख़िर वे इतना तो समझ ही सकते हैं कि हमारे पीछे हमें कोई पानी देने-वाला भी तो होना चाहिए, और जो वे इतना समझते हुए भी बुरा मानें तो बस, समझ लेना चाहिए कि वे यही चाहते हैं कि तुम्हारे पीछे सब उन्हीं को मिले।"

"अच्छा कल मैं बाबू रघुनाथप्रसाद से सलाह करूँगा, देखो वह क्या कहते हैं।"

"सलाह-वलाह चाहे जिससे करो, पर इतना ध्यान रखना कि बिना इसके अब मुझे चैन न पड़ेगी; जब से मेरे मन में यह बात उठी, तब से मेरा खाना-पीना आधा रह गया। चिंता के मारे कुछ खाया-पिया ही नहीं जाता, सूखती चली जाती हूँ।"

व्रजमोहनलाल बोल उठे—"हाँ, यह तो ठीक है। तुम पहले से अब बहुत दुबली हो गई हो। चेहरा भी पीला पड़ता जाता है। मैं तो तुमसे यह स्वयं ही कहनेवाला था।"

"चेहरा पीला न पड़े तो क्या हो, रात-दिन इसी सोच में घुला करती हूँ।"

"अच्छा देखो, कल मैं रघुनाथप्रसाद से सलाह करके शीघ्र ही कोई-न-कोई प्रबंध करूँगा।"

(क्रमशः)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक मित्र को

[लेखक, कविवर श्रीधर पाठक]

प्रियवर, उत्तर-कार्ड मिला कल आपका ;
पढ़कर मिश्रित भाव हृदय-थल में उठा।
'युद्ध-ज्वर' का कोप यहाँ भी प्रबल है ;
सारा नगर प्रयाग व्याधि से विकल है।
मृत्यु नित्य अनिरुद्ध कृत्य निज कर रही ;
स्वाभाविक सौचित्य प्रजा का हर रही।
विधि का यह आचरण अतिव ही क्रूर है ;
नहीं विदित ईश्वर को क्या मंजूर है।
यूनिवृष्टि ने किया सभ्य जो आपको,
वास्तव में वह किया उचित था कार्य जो।
सज्जन, सुज्ञ, सदस्य सहज मिलते नहीं ;
सब ऋतु में सब फूल कभी खिलते नहीं।
खुश-बख्ती की बिपुल बधाई लीजिए ;
ऐसी खबरें दिया हमेशा कीजिए।
समर-अंत की भी सु-खबर है आ गई ;
खुशियाली है यहाँ चतुर्दिक् छा गई।
ईश-अनुग्रह से यह अति अच्छा हुआ ;
नरक-लोक-आलोक तिरोहित हो गया।
विजय-अंक में आय सुकृत सुस्थित हुआ ;
स्खलित हुआ खल-दर्प, दलित दुष्कृत हुआ।

श्रीपद्मकोट,
१३-११-१९१८ } —श्रीधर पाठक

पु०—"चक्कर" मुझ पर भी अक्सर करता चक्कर है,
जानें पाजी पाता याँ क्या घी-शक्कर है।

मा की आत्मा

[लेखक, श्रीयुत राय कृष्णदासजी]

हे भगवान्, मा की आत्मा में तूने कहाँ की ममता भर दी है। निस्स्वार्थ प्रेम, सच्चा स्नेह, अकृत्रिम प्रणय देखना है, तो मा के हृदय को देखो। यदि आत्मोत्सर्ग का अभ्यास करना हो, तो माता से सीखो। यदि करुणा का तत्त्व जानना हो, तो माता के अंतःकरण का अध्ययन करो। यदि परम पवित्र तीर्थ में स्नान करना हो, तो मा के आँसुओं से भीगो। यदि इस पाप-पूर्ण संसार में देव-सेवा करके निष्पाप होना है, तो निरंतर मातृचरण की धूल में लोटो।

"हे राम" ये शब्द केवल मुँह से नहीं निकले थे। इनमें एक व्यथित हृदय की समस्त व्यथा भरी हुई थी। ज्वाला-मुखी से जो लपटें निकलती हैं, उन्हें कहीं साधारण दीप-शिखा न समझ लेना। किस अनंत अग्नि को वे बाहर निकालने का उद्योग करती हैं, इसका अनुमान कर लेना कोई साधारण काम नहीं। राम, तुम्हारे सिवा दुःख में प्राणी किसे पुकार सकता है? हे दीन-दुखियों के एक-मात्र आधार, इस स्वार्थमय, जघन्य संसार में उन्हें और कौन आश्रयदाता है?

लंबी साँस के साथ "हे राम" कहती हुई, सेवती ने चूड़ी पीसनी शुरू की। छोटा-सा घर है। वह कच्चा है। उसमें केवल दो कोठरियाँ, एक दालान और एक छोटा-सा आँगन है। आज, माघ के महीने में उसे खड़ा देखकर यही आश्चर्य होता है कि वह पिछली बरसात में टिक कैसे गया।

एक कोठरी में दो खाटें पड़ी हैं। खाटें क्या, झिलँगे हैं। उन पर फटी-पुरानी, मैली-कुचैली, कथरी-गुदड़ियाँ धरी हैं। दूसरी कोठरी में एक फटी चटाई, दो फटे बोरे पड़े हैं। वे इस योग्य हैं कि यदि भारत की आर्थिक दशा दिखाने के लिये कोई प्रदर्शिनी की जाय, तो उसमें उन्हें सर्वोच्च पुरस्कार (Grand Prix) मिले। एक कोने में दो-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तीन छोटे-बड़े घड़े और झज्झर पड़े हैं। चुहिया बार-बार आती है और कूदकर उनके गले पर जाकर, उनके भीतर झाँककर फिर अपने बिल को लौट जाती है। शायद किसी ज़माने में उनमें सीधा-सामान रक्खा जाता रहा होगा। एक ओर एक डोरी पर कई फटे-पुराने कपड़े टँगे हैं। बस, इतनी ही गृहस्थी के बूते पर इस घर के लोग 'गृहस्थ' कहे जाते हैं!

नहीं, नहीं, मैं एक बात तो भूल ही गया। दालान में एक चूल्हा भी है। देखने से जान पड़ता है, वह कई दिनों से नहीं जला। ठीक उसके ऊपर खूँटियों में दो काली-काली हाँडियाँ टँगी हैं।

पाठक, यह घर है किसका? पं० रामदहिन दूबे का। दूबेजी अब इस संसार में नहीं, उन्हें मरे तीन बरस हो चुके। अब उनकी विधवा सेवती और सात बरस का लड़का रामसूरत उनकी स्मृति बनाए हुए है।

दूबेजी एक लोअर प्राइमरी स्कूल में अध्यापक थे। उन्हें ८) मिलते थे, उसी में वह सुखं-दुःखम् घर चलाते थे। उनके मरने पर घरवालों को कोई आश्रय न रह गया।

स्त्री बेचारी न पढ़ी-लिखी थी, न कोई कला-कौशल ही जानती थी। घर का ख़र्च चलता तो कैसे? हाँ, उसके तन पर कई गहने अवश्य थे। वे एक-एक करके आधे दामों पर बिक गए। तब भूखों मरने की नौबत आई। पर मा की आत्मा भला लड़के को दुखी देख सकती है? सेवती ने ५०) पर मकान बंधक रखकर साल-भर किसी प्रकार उसका पेट भरा। इधर महाजन ने तक़ाज़ा शुरू किया। पहले तो वह महीनों तक टालती रही। जब कोई उपाय न देख पड़ा, तब उसने साफ़ कह दिया कि भाई, रुपए मेरे दिए न दिए जायँगे; तुम्हारे जो मन आवे, करो। बस, इसी की तो प्रतीक्षा थी। महाजन को शील कहाँ! भला महाजनी और शील कहीं एकसाथ रहे हैं!! राम कहिए!!! उसने चट नालिश करके ५६) पर मकान नीलाम करा लिया। ३७) की डिगरी घाटे में बनी रही।

आज तीन दिन हुए, उसने सेवती को ज़बानी नोटिस दे दी है कि माघी पूर्णिमा से या तो किराया दिया करो या मकान ख़ाली कर दो। अब तक मैंने बहुत नुक़सान उठाया, अब नहीं सह सकता।

गाँववाले उसकी इस दयालुता की भूरि-भूरि प्रशंसा

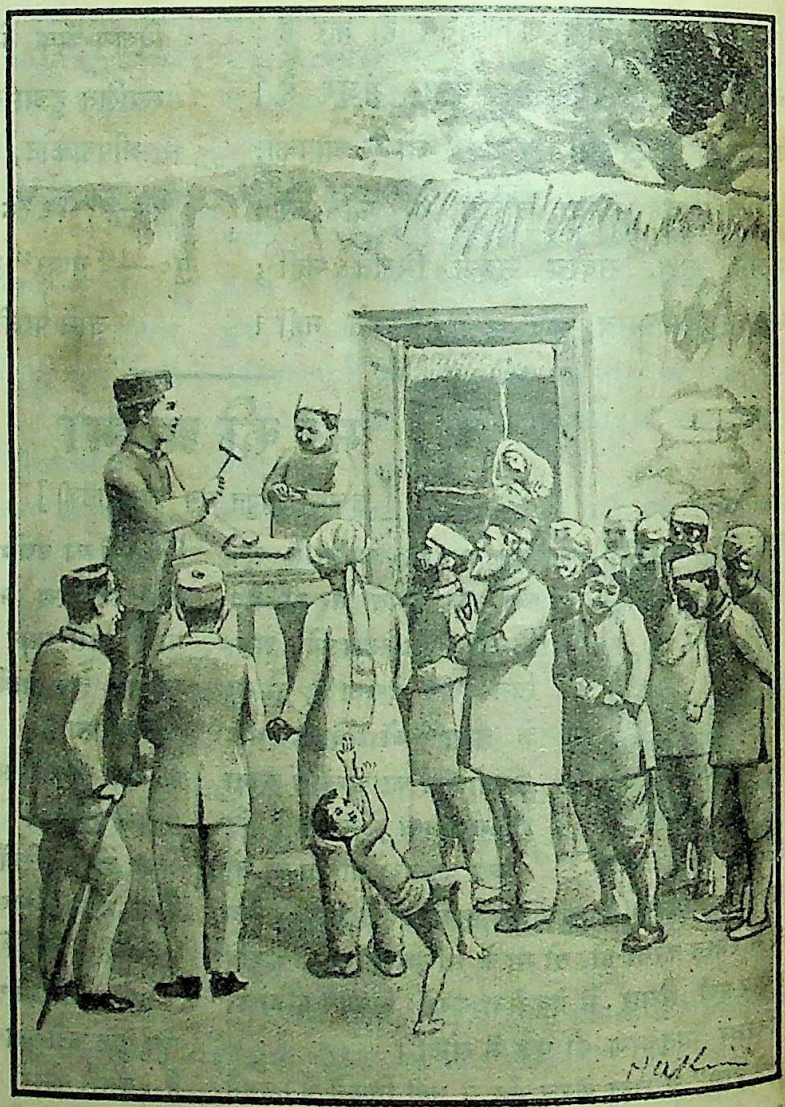

जब एक, दो, तीन होकर आख़िरी बोली बोली गई थी, तब वह आनंद की किलकारी मारता हुआ उछलने लगा था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करते हैं। दूसरा नीलामदार होता, तो उसने तुरंत क़ब्ज़ा ले लिया होता। प्रशंसा न करते, तो जाते कहाँ। सारे गाँव का तो अलियार साव 'शैलाक्ष' हो रहा है।

रामसूरत को इन सब बातों की कोई चिंता नहीं। चिंता कैसे हो? एक तो उसकी उम्र नहीं, दूसरे सिर पर माता का छत्र है। वह अपने खेलने-कूदने में मस्त रहता है। जिस दिन मकान नीलाम हो रहा था, वह और लड़कों के संग खड़ा-खड़ा तमाशा देख रहा था।

जब एक, दो, तीन होकर आख़िरी बोली बोली गई थी, तब वह आनंद की किलकारी मारता हुआ उछलने लगा था। बेचारी माता भीतर बैठी-बैठी रक्त के आँसू रो रही थी, और 'उत्तर-राम चरित' के राम की भाँति पुटपाक में पक रही थी। उसको सबसे भारी चिंता रामसूरत के भविष्य की थी।

रामसूरत, जाने आज के बाद तेरे भाग्य में वे आनंद की किलकारियाँ है या नहीं।

सेवती में कोई विद्या तो न थी, पर बाहुबल था। उसने घर-घर यह प्रस्ताव किया कि या तो मुझसे आँटा पिसवाया करो, पानी भराया करो या और जो मेहनत-मज़दूरी चाहो, करा लो। पर इस पर कोई कैसे सम्मत होता? भला, हिंदू-समाज पंडितानी से कहीं चाकरी करा सकता है? ऐसा हो तो वह आज ही रसातल को न चला जाय? अंततोगत्वा उसे चारों ओर अंधकार-ही-अंधकार सूझने लगा। किसके लिये? कुछ अपने लिये नहीं, अपने एकमात्र प्राण रामसूरत—लल्लू—के लिये। जिस प्रकार कछुई पानी में बैठी-बैठी, बालू में गड़े अपने अंडों की मंगल-कामना किया करती है, उसी भाँति लल्लू चाहे जहाँ रहे, सेवती का जी उसी में लगा रहता, उसी की शुभ कामना किया करता।

आज लल्लू के संध्या को खाने के लिये घर में कुछ भी नहीं। सत्तू की अंतिम मुट्ठी खाकर वह खेलने गया है। आज ही क्या, आज से आगे सेवती के किए कुछ नहीं हो सकता। यों होने को तो एक उपाय है। पर क्या वह उसके लिये तैयार होगी? कदापि नहीं। इसी से उसने चूड़ी खाकर प्राण देना निश्चित किया है।

लल्लू का कष्ट क्या वह अपनी आँखों देख सकती है? कभी नहीं। क्या वह लल्लू से अपने मुँह से कह सकती है—"बेटा, तुम्हारे खाने के लिये कुछ नहीं है।" कभी नहीं, कभी नहीं—ऐसा अवसर आने के पहले ही वह ख़ुशी-ख़ुशी प्राण देकर अपना जी ठंडा करेगी।

सेवती, सेवती, तुम यह क्या अनर्थ कर रही हो? सोचो तो, तुम कैसे भयंकर पाप-गर्त में कूद रही हो! अब भी समय है। चेत जाओ—जीवन्नरोभद्रशतानि पश्येत्। पर नहीं, मैं भूल रहा हूँ, वे भारत के स्वर्णमय दिनों की बातें थीं। अब तो इस अभागे देश में दुःख के सिवा सुख कहाँ! सेवती, तुम मरो, अवश्य मरो, इसी में तुम्हें चिर शांति मिलेगी। हतभाग्य भारतवासियो, प्राण देने ही में तुम्हारे लिये जीवन है।

चूड़ी पिस गई। सेवती ने उसे जिस धीरज के साथ फाँककर पानी पिया, उस धीरज के साथ शायद ही किसी योगी ने आज तक ब्रह्मांड द्वारा प्राण-वायु-विमोचन के लिये समाधि लगाई हो। परंतु इसके बाद वह अपने को न सँभाल सकी—"हाय लल्लू, अब तेरा क्या होगा! क्या तू सचमुच ही सपना हो जायगा!" कहकर रोते-रोते वह धड़ाम-से आँगन में गिर पड़ी। पर शीघ्र ही सँभल कर रोती-रोती अपनी टूटी खाट पर जाकर मुँह ढककें पड़ रही।

सोओ सेवती, तुम शांतिपूर्वक महानिद्रा में सोओ, अब लल्लू की चिंता का समय नहीं। उसके सिर पर भगवान् हैं।

असली कस्तूरी, केसर और बरास

नीचे-लिखे पते से मँगाइए। थोक तथा पेटेंट माल लेनेवालों और एजेंटों को पूरा कमीशन दिया जाता है।

हरिशंकरलाल नैपाली (के ५६) चौखंबा, बनारस सिटी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परलोक

[लेखक, अध्यापक रामदास गौड़ एम्० ए०]

६. पूर्णावेश-संबंधी निजी अनुभव

परलोक-विद्या के संबंध में अपने साहित्य में इतनी अधिक चर्चा है कि प्रत्येक हिंदू-बालक पारलौकिक योनियों में या तो विश्वास ही करने लगता है या अँगरेज़ी शिक्षा के प्रभाव से वह एकदम नास्तिक ही बन जाता है। आर्यसमाज और सनातन धर्म, दोनों ही पक्षों के ग्रंथों का अनुशीलन करने पर भी युवावस्था में मेरी प्रवृत्ति सनातन धर्म की ही ओर थी। यद्यपि मेरे जो भाव सनातन धर्म के प्रति तब थे, ठीक वे ही आज भी हैं, और आज भी मुझे अनेक सनातनिकों से कई बातों में वैसा ही मत-भेद है, जैसा पहले था, तो भी मनुष्येतर पारलौकिक अदृश्य प्राणियों में मेरा विश्वास अब की अपेक्षा कम दृढ़ था। एक ओर से प्रचलित अँगरेज़ी शिक्षा और दूसरी ओर से उसी से प्रभावित आर्यसमाज उनके अस्तित्व को असिद्ध कर रहा था। परंतु थियासोफ़िकल सोसाइटी के साहित्य ने पहले मेरा समर्थन किया। संवत् १९५९ में, जब मैं बी० ए० में पढ़ता था, प्रोफ़ेसर विलियम क्रुक्स की लिखी पुस्तक "Researches in Spiritualism" (प्रेतवाद के संबंध में खोज) पढ़ी। यह रसायन के एक भारी जगन्मान्य आचार्य की लिखी पुस्तक थी, जिनके सैकड़ों प्रयोग रसायन और अन्य वैज्ञानिक विषयों में आज भी दोहराए और प्रमाण माने जाते हैं, जिन्होंने थैलियम-नामक एक नया मौलिक ढूँढ निकाला था, और जो रसायन और भौतिक विज्ञानों के विवर्धक माने जाते हैं। इनके प्रयोगों की चर्चा पहले हो चुकी है। इनके प्रयोगों को पढ़कर मन पर जो प्रभाव पड़ा, उसके विस्तार की यहाँ आवश्यकता नहीं। इस पुस्तक के बाद परान्वेषण-परिषत् की पत्रिका बराबर पढ़ने लगा, और परलोक-विद्या-संबंधी खोज पर जो अच्छी पुस्तकें समय-समय पर निकलती गईं, उनका भी, यथोपलब्धि, अनुशीलन करता गया। मेरा विश्वास दृढ़ होता गया,

परान्वेषण में मेरा अधिकार

और स्वयं परीक्षा और अनुभव करने का कुतूहल भी बढ़ता गया। परिस्थिति उस समय अनुकूल न थी। यद्यपि अध्ययनावस्था से लेकर अध्यापनावस्था तक बराबर विज्ञान का ही अनुशीलन जारी रहा, तथापि परलोक-विज्ञान के व्यक्तिगत अनुभव के अवसर बहुत थोड़े मिले। उस समय जो कुछ अनुभव हुआ भी, वह खोज या अनुशीलन के रूप में पर्याप्त काल तक लाया न जा सका। परंतु प्रेतयोनि के सच होने की धारणा उसी प्रकार मन में बैठी हुई थी, जैसे शिकागो या न्यूयार्क अब तक न देखने पर भी पुस्तकों के अध्ययन से इन नगरों के संबंध में मन में अनेक बातें बैठी हुई हैं।

संवत् १९८० के आश्विन में मेरी बड़ी पुत्री बीमार हुई। सारा शरीर फूल आया, शरीर-भर में रक्ताभ चित्ते पड़ गए। ज्वर तो न था, पर उन्माद मालूम होता था। माता-पिता पास होते थे, तब भी मा-बाप को बुलाती थी, किसी को पहचानती न थी। भोजन के पदार्थों के नाम भूल-सी गई। आँखें देखने में ठीक थीं; पर कुछ देखती न थी। कानों से कुछ सुनती न थी। विचित्र दशा थी। डॉक्टरों ने लाख-लाख कोशिशें कीं। हकीम हार गए। किसी चिकित्सा से लाभ न हुआ। मैं आस्तिक अवश्य था, पर रोग के लिये पूजा-पाठ नहीं कराता था। एक रात को, जब मैं सो रहा था, मेरे घर आई हुई एक मेहमान स्त्री ने रोगिणी को जगन्नाथजी की धूप जलाकर सुँघाई। उसकी मा के सामने की बात है कि उस स्त्री के प्रश्नों के उत्तर में उस लड़की ने जो बातें बताईं, वे आश्चर्य-जनक थीं। उसने अपना नाम, अपनी माता का नाम, पिता का नाम, सभी भिन्न बताया। पता चला कि लड़की को चुड़ैल लगी हुई है। प्रातःकाल जब मुझसे ये बातें कही गईं, तो मुझे कुतूहल हुआ। इतने में उसे नित्य देखनेवाला डॉक्टर भी आ गया। फिर मेरे और डॉक्टर के सामने धूप सुँघाकर सब बातें पूछी गईं। हम दोनों ने सैकड़ों प्रश्न पूछे, और यह निश्चय कर लिया कि यह चुड़ैल ही है। फिर अंत में उसे जब अमोनिया सुँघाया गया, तो लड़की बिलकुल अच्छी हो गई। कई दिनों के बाद एकाएकी मा-बाप,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पड़ोसी आदि सबको पहचानने, देखने-सुनने लगी। खाना खाया। डॉक्टर दवा करते-करते हैरान था। किसी औषधि से लाभ नहीं होता था। आज अमोनिया सुँघाते ही चुड़ैल भागी और लड़की बिलकुल अच्छी हो गई।

परंतु दो घंटे के बाद लड़की की दशा फिर वही हो गई। फिर वही उन्माद। अब तो मालूम था कि चुड़ैल है। यह भी मालूम हो गया कि अमोनिया से भागेगी। अतः उससे पूछपाछ करके मैंने ये बातें मालूम कर लीं कि किन-किन बातों से उसे भय या घृणा है। इसी लिये दुर्गा-पाठ करवाया, हवन कराए, गायत्री-मंत्र का जप स्वयं किया, कराया भी, घंटा-शंखनाद प्रातः-सायं होने लगा; पर वह चुड़ैल इन सबसे तो कुछ देर के लिये भाग जाती थी; किंतु जब ये बातें न होती रहतीं, उस समय फिर आ जाती थी। कोरे खोजी के लिये तो यह मौक़ा अच्छा था; परंतु मैं कोरा खोजी न था। पुत्री के स्वास्थ्य की चिंता सर्वोपरि थी। बराबर इसी दौड़-धूप में रहता था कि इस चुड़ैल से किसी तरह पिंड छूटे। विशेष चिंता इसी लिये थी कि उसने धमकाया था, मैं तुम्हारी बेटी को दो महीने में ले जाऊँगी। उस चुड़ैल से पाँच महीने में छुटकारा हुआ। परंतु इसी चुड़ैल से मेरी परीक्षाओं का आरंभ भी हुआ।

व्यक्ति की पहचान

पहली परीक्षा जो परमावश्यक थी, वह व्यक्ति की पहचान थी। यह निश्चय करना था कि प्रेतात्मा जो अपना व्यक्तित्व बताता है, वह ठीक है या नहीं। संयोग से उस चुड़ैल की पूर्वावस्था से मैं ही परिचित था। मेरे मकान के पीछे एक कुटुंब रहता है। उसकी लड़की संवत् १९७० में मर गई थी। उसके पहले से ही मैं सपरिवार प्रयाग में रहता था। अकेला मैं कभी-कभी घर की देख-भाल के लिये काशी आया करता था। उस लड़की को मैंने ज़रूर देखा था; परंतु मेरी लड़की ने उसे कभी देखा न था। जब वह मरी, तो मेरी लड़की प्रयाग में थी, और केवल छः बरस की थी। अतः यह संदेह करने का कोई कारण न था कि मेरी लड़की मक्र कर रही होगी। चुड़ैल ने जीवित अवस्था की जितनी बातें बताईं, उन्हें मैं जानता था, और वे सच्ची थीं। माता-पिता का नाम, स्वभाव, हुलिया, घर का वर्णन, सभी कुछ बिलकुल ठीक-ठीक था। कई घटनाएँ उसने ऐसी बताईं, जो मेरे सिवा कोई नहीं जानता था, और जिन्हें मैंने किसी से कहा भी न था। इससे मुझे निश्चय हो गया कि यह आवेश है, और जिस प्रेत का आवेश है, वह अपना सच्चा पता दे रहा है।

इतना निश्चय कर लेने पर मुझे क्रुक्सवाली बल की परीक्षा याद आई। डॉक्टर साहब उस समय मौजूद थे। उन्होंने पूछा—"तुझे पानी में डाल दें?" चुड़ैल ने कहा—"नहीं, नहीं, ऐसा न करो, मैं इसे छोड़ दूँगी।" परंतु वह छोड़नेवाली कब थी? योंहीं बातें बनाती थी। मेरे इशारे पर डॉक्टर ने कहा—"नहीं, अब तू न जायगी, (मुझसे) आइए साहब, हम दोनों इसे पकड़कर कंडाल में डुबो दें।" मैंने दाहनी काँख में और डॉक्टर ने बाईं काँख में हाथ डाला, और उसे उठाकर ले जाना चाहा; पर हमलोगों के पूरा ज़ोर लगाने पर भी वह तिल-भर भी न उठ सकी। हम लोग लज्जित होकर हट गए। डॉक्टर ने बड़ा आश्चर्य प्रकट किया। यह तो हम लोगों के बल से उसके भार की परीक्षा हुई। परंतु अब उसके बल की परीक्षा सुनिए। उससे कहा गया कि यह भरा हुआ ताँबे का कलसा तुम्हारे सामने रक्खा हुआ है। उकड़ूँ बैठकर इसे अपने दाँतों से पकड़े हुए लेकर खड़ी हो जाओ। लड़की ने यह क्रिया बहुत आसानी से कर दी। जिस स्थूल शरीर पर इस चुड़ैल का आवेश था, वह अत्यंत बलहीन था। इस तरह का तो क्या, किसी प्रकार का व्यायाम कभी नहीं किया था। उस कलसे में लगभग बारह सेर के जल रहा होगा। कलसे का भार मिलाकर पंद्रह सेर से कम कदापि न रहा होगा। मैंने ठीक तोल मालूम करने की आवश्यकता नहीं समझी। इतना ही जान लेना पर्याप्त था कि प्रेत के कारण आविष्ट में अधिक बल हो जा सकता है। मिस्टर होमवाले प्रयोग में क्रुक्स के यंत्र का लीवर अदृश्य शक्ति के बल से उठा था, इसी लिये वहाँ यह ठीक-ठीक मालूम किया जा सका कि तुला-दंड को प्रेत कितना उठा सकता है। परंतु यहाँ आवेशक और आविष्ट, दोनों का बल सम्मिलित था। साथ ही व्यक्तियों की शक्तियाँ भिन्न-भिन्न हुआ करती हैं। शरीर की अवस्था के अनुसार भी बल में अंतर पड़ा करता है। अतः केवल यही जान लेना पर्याप्त था कि आवेश की दशा में बल अत्यधिक बढ़ जाता है।

भार और बल की जाँच

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उस चुड़ैल की धमकी से बड़ी चिंता हो गई थी। उस के आवेश से ही लड़की बीमार हो जाती थी। शरीर फूल आता था। देखना-सुनना बंद हो जाता था। ऊर्ध्वश्वास चलने लगती थी। डॉक्टर तक चिंतित हो जाते थे। परंतु नाड़ी की गति से उन्हें कोई भय नहीं मालूम होता था। हृदय का स्पंदन ठीक रहता था। नाड़ी वात-प्रकोप की चलती थी। दवाओं के प्रयोग से लक्षणों में भीषण उग्रता आ जाती थी। होमियोपैथिक इलाज करनेवाला हैरान होगया। अल्लोपैथ तो पहले ही हैरान हो चुका था। पूजा-पाठ, मंत्र-जप और अमोनिया से आवेश उतर जाता था, लड़की बिलकुल अच्छी रहती थी; परंतु यह चौबीसों घंटे संभव न था। उसे यंत्र पहनाया गया। कवच याद करा दिया गया कि स्वयं पाठ करती रहे। मंत्र बता दिया गया कि जपती रहे। परंतु ये सब काम जहाँ रुके, थोड़ी गफ़लत हुई कि आवेश हो गया। अब गुनी और स्यानों की भी जाँच हुई। परंतु वे भी कुछ कर न सके। मैंने स्वयं चुड़ैल को तंग करने के विविध उपाय सोचे। भाँति-भाँति की युक्तियाँ कीं। लाल मिरचें आग में डालकर नाक के सामने रक्खीं। हम लोग घर-भर खाँसते-खाँसते व्याकुल हो गए; पर चुड़ैल बड़ी प्रसन्न हुई। उसे छींक भी न आई। बल्कि मिरचों के धुएँ में श्वास की ऊर्ध्व-गति सुधर-सी गई, और लड़की बराबर हँसा की। गायत्री-मंत्र की परीक्षा विविध रीतियों से की गई। पहली परीक्षा इस तरह की गई। पास के कमरे में जाकर, सबसे छिपाकर, दवावाले काँच के बरतन को धोकर उसमें थोड़ा गंगा-जल लेकर गायत्री-मंत्र उसमें फूका। मेरी इस क्रिया को किसी ने भी न देखा और न जाना। मैं उसी तरह वह गिलास लाया, जैसे होमियोपैथिक दवा लाता था। मैंने कहा—"अच्छा, ले, यह दवा पी।" मैंने ज्योंही उसके होंठ से उसे लगाया, उसने बलपूर्वक दवा को हाथ से हटा दिया, और चिल्लाई कि "मुँह में आग डालते हो!" मैंने दूसरे प्रयत्न में वह जल धोके से मुँह में डाल दिया, तो पीते ही "हाय, हाय, जली, जली" कहकर चिल्लाई। परंतु आवेश उतरा नहीं। मैंने पूछा—"अभी तक नहीं गई?" बोली—"तुमने जो आग पिला दी, तो जहाँ-जहाँ वह आग गई है, वहाँ-वहाँ से मैं हट गई हूँ।" अब मेरी समझ में आ गया कि नित्य स्नान करने पर आवेश क्यों उतर जाता है, और दुर्गा-पाठ के समय क्यों आवेश नहीं होता। यह चुड़ैल जल से डरती थी, और अभिमंत्रित जल उसे आग की तरह लगता था। हवन मंत्रों से किया जाता है, इसी लिये हवन से भी डरती थी; परंतु आग से या आँच से उसे कोई डर न था। एक दिन रोगिणी की मा आँच पर कड़ाही में कड़वे तेल में पकौड़ियाँ निकाल रही थी। रोगिणी ने हाथ से जलती पकौड़ियाँ निकाल लीं। डाँटे जाने पर उसने कुछ देर तक तेल में उँगली डुबो रक्खी, और बोली—"देखो, कहीं जलती है?" मा ने ज़बरदस्ती उसका हाथ पकड़कर वहाँ से हटा दिया। परंतु आश्चर्य की बात यह थी कि उँगली में छाले भी नहीं पड़े, दाह भी नहीं हुआ।

इलाज बेकार

अभिमंत्रित जल से जल गई। आग से नहीं जली।

मंत्र-बल की परीक्षा

जब से घंटा-शंख का नाद प्रातः-सायं होने लगा, तब से एक घृणित बात देखने में आई। घंटा-शंख बज जाने के बाद जब कभी आवेश होता था, तब रोगिणी के शरीर से पाख़ाने की दुर्गंध आने लगती थी। पहले उसके शरीर की परीक्षा की गई। कपड़े साफ़ पहने हुए थी। गंदगी का कहीं नाम-निशान न था। शरीर-भर में केवल मुँह से बड़ी बदबू आती थी। कई बार के आग्रह पर चुड़ैल ने बयान किया—"जब बाजा बजता है, मुझ से सहा नहीं जाता। मैं भागकर पाख़ाने में, अत्यंत गंदगी में छिप जाती हूँ।" इतने पर भी मुझे संतोष न हुआ। बाजा बजने से भय क्यों होता है? यदि होता भी है, तो क्या ऐसी गंदी जगह पर सुन नहीं पड़ता? फिर चुड़ैल तो बहरी थी, उसे शब्द से भय क्या? कई दिनों के प्रश्नोत्तर से अंत में यह पता चला कि जब शंख बजता है, तब पापी प्रेतों को दंड देनेवाले भयानक प्राणी वहाँ तक भर जाते हैं, जहाँ तक शब्द जाता है; परंतु ये दंड देनेवाले अत्यंत गंदे स्थानों में नहीं जाते। इसी लिये सतानेवाले प्रेत भय की दशा में पाख़ाने और गंदी मोरियों में जा छिपते हैं। यह भी बहुत पूछने पर मालूम हुआ कि सतानेवाले नीच प्रेत मुर्दे और मांस, मेद, मज्जा, मल-मूत्र, पीब, रक्त आदि बड़े चाव से खाते हैं। उनका ऐसा स्वभाव हो जाना एक प्रकार की यम-यातना है।

पहले ही दिन, जब बदबू का मुँह से निकलना मालूम हुआ, पूर्ववत् अभिमंत्रित जल दवा के बहाने उसे ज़बर्दस्ती पिला दिया गया। बदबू तत्क्षण ही ग़ायब हो गई। वह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बहुत चीख़ी-चिल्लाई। इससे यह जान पड़ा कि जब वह शरीर के और अंगों में रहती है, तब बदबू नहीं निकलती; परंतु जब वह पेट, हृदय और फुफ्फुस में रहती है, तब मुँह और नाक से तीव्र दुर्गंध आती है।

प्रेत को बाँधना और मारना

पहले तो आवेश को दूर करने के लिये अमोनिया का प्रयोग, शंख-नाद, स्नान आदि कुछ-न-कुछ अवसरानुसार करना पड़ता था; परंतु जब चुड़ैल ने देखा कि यह अपनी परीक्षाएँ करके, प्रश्न पूछ करके, अपना मतलब निकालकर भगा देते हैं, तो वह स्वयं कुछ अधिक पूछपाछ करने पर भाग जाने लगी। अब प्रश्न का उत्तर देना मंज़ूर न होता, तो तुरंत रोगिणी को होश आ जाता था, और ज्यों ही मैं चुप हो जाता था, और अपने प्रयोग बंद कर देता था, त्यों ही फिर आवेश हो जाता था। जाड़े की ऋतु थी। रोगिणी जब रज़ाई ओढ़े पड़ी रहती थी, तब प्रायः आवेश की दशा होती थी; परंतु पूछने पर परीक्षाओं के डर से सचेत बन जाती और होश-हवास की-सी बातें करने का प्रयत्न करती। रोगिणी का नाम पुकारने से उत्तर दे देती; परंतु जब मैं आँख की परीक्षा कर बैठता या धीरे से पुकारता, तो अंधापन और बहरापन उसकी मक्कारी को प्रकट कर देते थे। पहली बार ही जब इस मक्कारी का पता लगा, तो मैंने रज़ाई से उसका मुँह भी अच्छी तरह ढक दिया, चरख़े से लंबा सूत निकालकर उसे गंगा-जल में भिगोया, सात बार गायत्री मंत्र फूँका, रोगिणी के चारों ओर सात फेरे लपेट दिए और गायत्री देवी से प्रार्थना की कि यह चुड़ैल तबतक बँधी रहे, जबतक मैं इसे मुक्त न कर दूँ। सातवाँ फेरा पूरा भी न होने पाया था कि रज़ाई के भीतर से रोने का शब्द आने लगा। मैंने फेरा पूरा करके रज़ाई उठा दी, मुँह खुल गया। परंतु रोना जारी था। बहुत पूछने पर जवाब मिला—"मेरा अंग-अंग ज़ंजीर में कसकर पूछते हो कि क्यों रोती है?" मैंने पूछा—"ज़ंजीर कैसी? मैंने तो कुछ भी नहीं किया? यहाँ ज़ंजीर तो कहीं नहीं है?" उत्तर दिया—"यह क्या है, सात फेरे लाल-लाल ज़ंजीर के पड़े हुए हैं, बदन हिला नहीं सकती। लगता है, जल-जल जाता है।" मैंने पूछा—"तुझे तो सूझता नहीं था, ये सात फेरे कैसे गिन लिए?" उसने कहा—"यह तो चमकती ज़ंजीर है, साफ़ देख पड़ती है।" मैंने कहा—"अब मेरे सवालों का ठीक-ठीक जवाब दे, तो तुझे इस बंधन से मुक्त कर दूँगा।" वह राज़ी हुई। परंतु वह जवाब साफ़-साफ़ नहीं देती थी। अनेक बातें झूठ कहती थी, छिपाती थी। प्रेत-लोक की अनेक बातें बताने से अब साफ़ इनकार करने लगी। मैंने सिर से रज़ाई उढ़ा दी, और अभिमंत्रित चाक़ू से रज़ाई के ऊपर काटने की-सी क्रिया की, तो लगी ज़ोर से चिल्लाने—"मुझे काटो-मारो मत, मैं सब बताऊँगी।" उसने अब धड़ाधड़ असंगत और झूठ उत्तर देने आरंभ किए।

मैंने देखा, प्रेत से भी ज़बर्दस्ती करके सत्य का पता लगाना असंभव है, इसलिये ये धमकियाँ उसको सदा के लिये भगा देने के काम में लाई गईं। एक दिन अत्यंत पीड़ाप्रद यातनाओं के बाद उसने पक्का वादा किया कि घर छोड़ दूँगी। एक सप्ताह तक आवेश के लक्षण दिन में तो देखने में नहीं आए, सोते में मेरा अनुमान है कि अवश्य आवेश होता रहा होगा।

परंतु अब दूसरे प्रकार के अधिक भयानक उपद्रव होने लगे। रात को ज्यों ही नींद आती, त्यों ही मुझे ऐसा मालूम होता कि सिरहाने काग़ज़ फाड़ा जा रहा है। मैं पहले उठ बैठा और देखा, कुछ नहीं है। यह शब्द ऐसा होने लगा कि सोना हराम हो गया। यही दशा मेरी पत्नी की भी थी। दो-एक बार उठकर देखने के बाद फिर उठना बंद कर दिया; परंतु यह उपद्रव जारी रहा। जब बहुत तंग किया गया, तो उठकर, हाथ-पाँव धोकर गायत्री-मंत्र से अभिमंत्रित जल से चारपाई बाँध दी। फिर थोड़ी देर पढ़ता रहा। जब नींद आने लगी, सो रहा। लालटेन एक तिपाई पर बराबर जलती रही। लगभग एक बजे के किसी ने कमरे के बंद दरवाज़े को ज़ोर से भड़भड़ाया। मैं चौंककर उठ बैठा। दरवाज़ा खोल दिया। कोई न था। अब खुला दरवाज़ा छोड़कर सो रहा। थोड़ी देर के बाद ज्यों ही आँख लगी,

प्रेत-लीला, उपद्रव

त्यों ही ऐसा जान पड़ा, मानो घर में बड़े ज़ोरों से बासन मले जा रहे हैं। मैं घबराकर उठ बैठा। जाकर देखा, सब सन्नाटा है, दो-तीन बजे रात को बासन कौन माँजेगा? इस तरह के उपद्रव रात को जब बराबर होने लगे, तो उन्हें सहकर ज्यों-त्यों सोना तो ज़रूरी था। इन उपद्रवों के अब भाँति-भाँति के रूप देख पड़ने लगे। आधी रात को दरवाज़े पर कोई ज़ोर से खटखटाता या नाम लेकर पुकारता। जब दरवाज़ा खोलते हैं, तो कोई देख नहीं पड़ता। परंतु यह बात देखी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गई कि यह तीन बार से अधिक नहीं होता था। हमारे घर में एक मित्र डॉक्टर मेहमान थे। वह उन दिनों बीमार थे। रात को एक बजे के लगभग लघुशंका के लिये उठे। मोरी के पास एक स्त्री खड़ी देखा। लौट आए। फिर कुछ ठहरकर गए, फिर वही दृश्य। अब लालटेन लेकर गए, तो कुछ न था। जब लौटने लगे, तो किसी ने पीछे से पीठ में घूँसा मारा। वह अपने कमरे में आकर ज़ोर से कराहने लगे। पास के ही कमरे में मैं सोता था। उठकर उनके पास गया। दवा की मालिश की। उन्होंने सारी घटना कही। इन उपद्रवों की शांति के लिये कोई उपाय समझ में नहीं आता था। हर कमरे में पूजा-पाठ हुआ। अभिमंत्रित कीलें घर के कोने-कोने में गड़वाई गईं, तब कुछ शांति हुई। तब भी बाहर से खटखटाना नित्य का व्यापार था। इस उपद्रव को एक सप्ताह भुगत लेने के बाद फिर गंदे आवेश आरंभ हुए। मालूम हुआ, वह झूठी पिशाचिनी घर में ही रहती थी। रात को सोते में आवेश भी करती थी, और सबको तंग भी करती थी। परंतु कीलों के गड़ जाने से अब पाख़ाने के सिवा कहीं उसे ठौर-ठिकाना न था। इसी लिये अब वह फिर दिन में भी आवेश करने लगी।

मुझे यह बड़ा कुतूहल था कि प्रेत सताते क्यों हैं? इस चुड़ैल को मैंने कितना तंग किया। बाँधा, मारा-पीटा, काटा, जलाया, जो कुछ कड़ाई हो सकती थी, की। मेरे मारने, काटने, जलाने से वह मर नहीं सकती थी। इसका मुझे निश्चय हो गया। परंतु तो भी मैं उसे अनेक कष्ट देता था। इतने पर भी वह मेरी लड़की को सताना नहीं छोड़ती थी। अवश्य ही कोई प्रलोभन ऐसा ज़बर्दस्त होगा, जिसके कारण वह सारी यातनाएँ सहकर भी अपनी कुटेव नहीं छोड़ती थी। यह प्रश्न मैं बारंबार करता था; परंतु वह सीधा संतोष-जनक उत्तर नहीं देती थी। आरंभ में तो उसका नाम जब पूछा जाता था, तो बड़ी मुश्किलों से कान में बताती थी, और सहेजती थी कि देखो, कोई जानने न पावे। परंतु हम लोगों ने उसे रहस्य नहीं रक्खा। मैं तो पुत्री को आवेश की दशा में उसी चुड़ैल के नाम से पुकारता था और वह उत्तर भी देती थी। मेरी आज्ञा का पालन भी करती थी। मेरे बहुत तंग करने पर उसने कई बार हाथ जोड़े और वादे किए कि मैं घर के भारी-से-भारी, कठिन-से-कठिन सारे काम करूँगी; पर मुझे घर में अपनी बेटी के साथ रहने दो। वह सचमुच बड़ी मेहनती थी। किसी काम में आनाकानी न करती थी। परंतु कई बार मैंने चाहा कि मेरे भाई, पिता, माता आदि को बुलाकर लावे और आवेश करावे, तो इसमें वह असमर्थ रही। एक बार उसने मेरे बड़े आग्रह पर धोका देकर मुझे संतुष्ट करना चाहा। भाई बनकर आवेश किया। परंतु मेरे प्रश्नों से उसकी मक्कारी खुल गई। मैंने इस मक्कारी का उसे दंड भी दिया। उसने क़बूल किया कि दूसरे प्रेतों का आवेश कराना मेरी शक्ति के बाहर है। परंतु लाख समझाने-बुझाने पर भी वह अपना आवेश छोड़ नहीं सकती थी। अनेक बातों से मैंने जो स्वयं परिणाम निकाला, वह यह था—

आवेश का प्रयोजन

१. यम-यातना-भोगी प्रेत जब किसी को लगते हैं, तो यातना का कुछ अंश प्रेतग्रस्त भी भोगने लगता है, और प्रेत का कष्ट घट जाता है। कभी-कभी इतना कष्ट यातना में होता है कि उसके मुक़ाबले मारने-काटने-जलाने आदि का क्षणिक कष्ट कुछ भी नहीं है। आवेश का एक कारण यह भी है।

२. प्रेत के मनमें विषय-वासना तीव्र होती है; परंतु उसके लिये इंद्रियादि साधन सुलभ नहीं होते। आविष्ट के शरीर से सुलभ हो जाते हैं। आवेश की प्रवृत्ति का एक कारण यह भी है।

३. कभी-कभी प्रेम के कारण और अधिकांश द्वेष-भाव से प्रेत लगकर सताने लगते हैं। एक कारण आवेश का यह भी है।

४. नीच प्रेतों को आवेश में प्रायः वैसा ही सुख होता है, जैसे काम-सुख। इसके सिवा रक्त, मांस, मज्जा, पीब, अस्थि, रस आदि शरीर की धातुएँ उनका प्रिय भोजन हैं। यह शरीर में सुलभ हो जाता है। नवीन गर्भ उनके लिये अत्यंत स्वादिष्ट होता है। वह इसकी खोज में फिरते हैं।

इन चार कारणों में से कोई एक कारण प्रेतावेश के लिये पर्याप्त प्रवर्त्तक हो सकता है। परंतु आवेश हो जाने पर आविष्ट द्वारा जितने लाभ हो सकते हैं, प्रेत उनमें से एक को भी नहीं छोड़ता। प्रेत किसी को सताता है, तो चोर की तरह। विरले ही कभी वह अपने को प्रकट करता है। जब वह ढीठ हो जाता है, और उसे निश्चय हो जाता है कि मेरा कोई कुछ नहीं कर सकता, अथवा उसे आत्यंतिक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उपद्रव करना या मार डालना होता है, या जब उसकी चोरी खुल जाती है, तब वह अपने को प्रकट कर देता है। इसमें सर्वशक्तिमान् का भी कोई गुप्त उद्देश्य होता है, विशेषतः जब रक्षा मंज़ूर होती है, तभी प्रेत के मन में इतनी ढिठाई की ओर प्रवृत्ति होती है, जो हो, एक बार जब प्रेत का रहस्य खुल जाता है, तो वह खुल खेलता है। भरसक आत्यंतिक उपद्रव करता है। सोचता है कि अब तो भेद खुल ही गया है, अब हम अवश्य ही भगाए जायँगे, इसलिये जो करना हो कर लें। प्रेतग्रस्त अत्यंत रोगग्रस्त हो जाता है। वह ऐसे साधन करने में असमर्थ हो जाता है, जिनसे प्रेतबाधा दूर हो।

मुझे मंत्रादि द्वारा अपने को भगाने में असमर्थ देखकर वह चुड़ैल मेरी दिल्लगी उड़ाने लगी। एक बार आवेश के समय लड़की आँगन में पड़ी थी। मैं छत पर था। ऊपर कंडाल में जल था। उसमें से जल लेकर गायत्री-मंत्र पढ़कर मैंने अदृश्य ही ऊपर से डाल दिया। लड़की होश में आ गई। मैं फिर नीचे चला आया। काम से बैठक में गया। लड़की सुस्त हो गई थी; अभी आँगन में ही थी कि एकाएकी आँगनवालों के ऊपर जल पड़ने लगा। लोगों की निगाह जब ऊपर गई, तब लोगों ने लंबे बालवाली एक स्त्री को जल फेंकते हुए देखा। स्त्रियाँ चिल्ला उठीं। हम लोग तुरंत ऊपर गए, तो कोने की ओर भागती देखी गई, और न-जाने कहाँ समा गई। वह मेरी नक़ल कर रही थी, मख़ौल उड़ा रही थी।

इस चुड़ैल को नष्ट करने के लिये जैसे ओझे, स्याने, मौलवी आदि की मदद ली गई, वैसे ही पाश्चात्य विधियों का भी आश्रय लिया गया।

पाश्चात्य विधियों का अभ्यास

ओझे-स्याने तो कोई उपाय न कर सके, परंतु पाश्चात्य ओझे उपलब्ध न हुए। एक पाश्चात्य ओझे की परीक्षा की गई। वह परीक्षा के आरंभ में ही फ़ेल हो गया। रोगी को स्वयं अपनी डॉक्टरी में सुबीता नहीं होता; परंतु यहाँ लाचारी थी। तिपाए तख़्ते या मेज़ की विधि से आरंभ किया गया। उद्देश्य यह था कि अपने मृत बड़े-बूढ़ों से पूछा जाय। परंतु मेज़ की विधि बहुत समय और श्रमवाली थी। मुझे माध्यम भी उपलब्ध ही था। कठिनाई यह थी कि लड़की, जो अच्छा माध्यम होती, स्वयं उस चुड़ैल के चक्कर में फँसी हुई थी। उसके सिवा मेज़ के द्वारा यह पता लग चुका था कि मेरे मृत कुटुंबी लगनेवाले प्रेत न थे। वे पूर्णावेश की विधि पसंद न करते थे। मेज़ के द्वारा ही उन्होंने बतलाया कि तख़्ती के अभ्यास से आरंभ करके लेखन-विधि का अभ्यास यदि माध्यम कर ले, तो लिखा-पढ़ी सहज हो जाय। ऐसा ही किया गया। सौभाग्य से घर के भीतर ही दो-तीन माध्यम मिल गए, जिन पर पूर्णावेश और अंशावेश, दोनों ही सध गए। अब हमारा मार्ग अत्यंत सरल हो गया। मैंने अपने मृत कुटुंबियों से संबंध स्थापित कर लिया। पहले कई-कई दिनों तक इस बात की जाँच करता रहा कि वही हैं, कोई दूसरा तो मुझे धोका नहीं दे रहा है। जब पूर्णतया निश्चय हो गया, तब नाम के साथ एक विशेष चिह्न नियुक्त कर लिया गया कि बारंबार जाँच न करनी पड़े। जिन दिनों पाश्चात्य विधि की जाँच का सूत्रपात हो रहा था, उन्हीं दिनों उस चुड़ैल के नष्ट होने का उपाय भी मालूम हो गया, और वह जला दी गई। परंतु यह स्वयं एक बृहत् और स्वतंत्र विषय है, इसलिये इसका किसी आगे के प्रकरण में वर्णन किया जायगा।

आरंभ में लेखन-विधि से अधिकांश प्रेत-बाधाओं के दूर करने में ही सहायता ली गई। उस चुड़ैल के जलाए जाने के बाद यह पता लगा कि मेरी स्त्री को जो सत्रह वर्षों से दरजनों रोग शय्याशायी बनाए हुए हैं, और जिनका इलाज करते-करते मैं थक गया था, दो चुड़ैलें सता रही थीं। उन्हें भी जब उसी विधि से दूर किया गया, तो वह बिना किसी दवा के एकदम अच्छी हो गईं। आज तक उन्हें उन शिकायतों में से एक भी फिर न हुई। प्रेत-विद्या ने मुझे तो बड़ा लाभ पहुँचाया; दो रोगियों को बिलकुल अच्छा किया। साथ ही इस नए विज्ञान के संबंध की सैकड़ों नई बातें भी मुझे मालूम हुईं।

कुछ काल पीछे मेरे पितृलोकी पितामह ने पता दिया कि मेरे एक कुटुंबी को एक यक्ष सता रहा है। उसकी रक्षा के उपाय करो। इसका नाम भी उन्होंने बतलाया। इतना बताना था कि वह आविष्ट तुरंत बीमार हो गया चरक में जिस यक्षोन्माद का वर्णन है उसके लक्षण देख पड़ने लगे—

यक्षोन्माद के उपद्रव

"असकृत्स्वप्नरोदनहास्यं नृत्यगीतवाद्यकथान्नपानस्नानमाल्यधूपगन्धरतिं रक्तविप्लुतार्द्रं द्विजातिवैद्यपरिवादिनं रहस्यभाषिणमिति यक्षोन्मत्तंविद्यात् ॥२२॥

(चिकित्सित स्थान अ० १४)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अर्थात् बार-बार सोना, रोना, हँसना, गाना, बकना आदि सभी बातें थीं। परंतु उन्माद के दौरे कई-कई बार आने लगे। यक्ष कहने लगा—अब तो मेरी बात प्रकट हो गई। मैं इसे ले ही जाऊँगा। उसका आवेश होने पर बहुत बहस होती। उससे मैंने यही नतीजा निकाला कि यदि यक्षवाली बात छिपी रहती, तो आविष्ट को कभी प्रकट कष्ट न होता। मेरे पितामह भी पीछे उसके उपद्रवों को देखकर पछताए कि मैंने बताने में नाहक़ जल्दी की। जितना ही भयंकर सतानेवाला होता है, उसकी बात खुलने पर उतना ही भारी उभाड़ होता है। उस यक्ष ने घरवालों को—विशेषतः मुझे—डराने को विविध उपद्रव आरंभ किए। परंतु वह जितना बलवान् था, उतना ही हृदयवान् भी।

यक्ष के खेल

वह सब कुछ ऊधम करता था केवल डराने के लिये। किसी को व्यर्थ कष्ट नहीं पहुँचाता था। जितनी घटनाएँ हुईं, सब उसका खेलवाड़-मात्र था। एक सात बरस का बच्चा चारपाई पर बैठा था। उस जगह से वह आठ फ़ुट की दूरी पर उछाल दिया गया। वह बैठे ही गिरा, परंतु चोट ज़रा भी न आई। हँसता-हँसता उठ खड़ा हुआ। मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ। यह घटना इतनी जल्दी हुई कि मैं भौचक्का-सा रह गया। लड़के को कुछ भी चोट न लगी। वह बोला—किसी ने मुझे फेंक दिया, पर उस जगह किसी दूसरे ने लोक लिया। ऐसी घटना कई बार हुई। एक आदमी खड़ा था। मुझसे कुछ कह रहा था। एकाएकी धम-से धरती पर गिरा, मगर आलथी-पालथी मारे और हँसता हुआ। पूछने पर मालूम हुआ, किसी ने बड़ी फ़ुरती से उसकी टाँगें आलथी-पालथी के आसन में मोड़ दीं, और वह बैठे गिरा; परंतु जैसे किसी ने बड़े कोमल गद्दे पर लोक लिया हो, ज़रा भी चोट नहीं आई। मैं कमरे में बैठा काम कर रहा हूँ। छत पत्थर से पटी हुई है। साफ़ है, मिट्टी का नाम नहीं; परंतु एकाएकी ढेर-की-ढेर मिट्टी मेरे सिर पर और काग़ज़-पत्र पर गिर गई; पर मुझे चोट नहीं आई, यद्यपि मिट्टी के अच्छे बड़े ढेले भी उसमें थे। गाय को सानी-पानी देने में देर हुई। जो आदमी चारा देने के लिये गया, उससे मनुष्य-की सी बोली में गाय कहती है—"भला देर क्यों की? कब से माँग रही हूँ।" ये सब घटनाएँ इसी लिये या तो मेरे साथ होतीं या मेरे सामने ही होतीं कि मैं डर जाऊँ, और यक्ष को दूर करने के उपाय न करूँ। वह बार-बार यही धमकाता था कि तुम मुझे दूर करने के उपाय करोगे, तो हमेशा के लिये पछताओगे, और इसे तो मैं पंद्रह दिन में ले जाऊँगा।

ये उपद्रव तो उस समय होने लगे, जब कि यक्ष के सताने की बात खुल गई। परंतु कुछ उपद्रव पहले भी हुए थे, जिन पर मेरा ध्यान नहीं गया था। ऊपर की घटनाएँ चढ़ते सावन की थीं। परंतु असाढ़ के महीने में जिस कमरे में मैं सबसे ज़्यादा रहता और पढ़ता-लिखता था, उसी में एक दिन बड़ी भीनी गेंदे की ख़ुशबू फैल गई थी। सुगंध इतनी तीव्र थी कि घर-भर गेंदे का फूल भरा होता, तभी हो सकती थी। परंतु उस कमरे में कोई ऐसी चीज़ न थी, जिससे इस सुवास के आने का मैं शुबहा कर सकूँ। मैंने औरों को भी बुलाकर यह निश्चय कर लिया कि सबको गेंदे की तेज़ ख़ुशबू मालूम हो रही है। असाढ़ के महीने में गेंदे के फूल कहाँ? परंतु इसका कोई कारण समझ में नहीं आया। यह रहस्य दुर्भेद्य था। इसी तरह एक बार गुलाब की भी भीनी-भीनी ख़ुशबू एकाएकी उस समय मालूम हुई, जब कि तड़के चार बजे उठकर मैंने वही कमरा खोला और अपना काम शुरू किया। मैंने ख़ूब तलाश की, कहीं गुलाब का फूल न था और न उस समय मेरे घर-भर में गुलाब का या किसी तरह का इत्र या फुलेल था। प्रेतबाधा का अनुभव ताज़ा होने से, और बीस बरस पहले एक बार इसी तरह रहस्यमय दुर्गंध का अनुभव हो चुकने से, इस सुगंध के अनुभव को भी मैंने प्रेतों की ही करतूत समझा। परंतु यक्ष का पता लगने पर मालूम हुआ कि सुगंध का शौक़ीन वही था।

इन उपद्रवों का अंत जल्दी हो गया। उपाय शीघ्र किए गए। यह यक्ष भी ठिकाने लगा। जैसे उस चुड़ैल की धमकी झूठी निकली, वैसे ही इस यक्ष की धमकी भी व्यर्थ गई। वह पंद्रह दिन के भीतर आविष्ट को न ले जा सका; उसे ही पंद्रह दिन के भीतर मैंने दूर किया। शायद वही पछताता होगा। मुझे तो विश्वास है कि उस यक्ष को दूर करके मुझे अपने शेष जीवन में पछताने का कभी कोई कारण उपस्थित न होगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पाखंड-प्रतिषेध

[लेखक, पं० रामचंद्र शुक्ल]

"हम लखि, लखहि हमार, लखि हम हमार के बीच ;
तुलसी अलखहि का लखहि, राम-नाम जपु नीच।"

× × ×

"अंतर्जामिहु तें बड़ बाहरजामी हैं राम..."

(तुलसी)

(१)

तमोमयी वासना के गर्भ में विलीन कभी
गड़े हुए आप में जो आप को छिपाते हैं,
रूप-गति-भेद का विकास लेके वे ही भाव
खेलते-खेलाते हुए खुले चले आते हैं।
परम-हृदय खुला, बना क्या ? जगत्-काव्य
जगी हुई ज्योति-सा जगाते जिसे पाते हैं ;
यों ही खुल बाहर जो आप को बढ़ाते वे ही
हृदय पुनीत कला काव्य की दिखाते हैं।

(२)

अखिल अनंत महाकाव्य की अखंड धार
फूट-फूट छिटक रही है विश्व-रूप धर ;
पालन-विनाश के विधान की झलक लिए
छलक रहे हैं भूरि भाव भी भुवन भर।
होके रस-सीकर वे भेदते नहीं हैं किंतु
हृदय जो बाहर को खुले द्वार मूँदकर ;
कोठे-कोठे भरम रहे हैं अंधकूप बीच
कूदते हैं वात-पित्त-लिप्त किसी कोने पर।

(३)

छुटती चराचर में इसी भाव-धारा ओर
हृदय हमारे आदिकवि का खुला था जब,
सत् के आभास लोकपालन औ' रंजन के
भावों की पुनीत प्रभा उसमें समाई तब।
ध्वंस-रूप असत् की छाया साथ-साथ लगी
देख पड़ी, किंतु वह उसमें सकी न दब ;
जगत् की जागती अनंत कला शाश्वत है
सगुण-विभूतिमयी भासमान सत्ता सब।

(४)

सहन हुआ न उस सत्त्वगर्भ मानस को
खग के भी जीवन की हानि और सुख-भंग;
वेदना से क्षुब्ध ज्यों ही उमड़ पड़ा है वह,
भारती की वीणा झनकारती उठी तरंग।
रोष ने, अमर्ष ने, पराए अपकर्ष ने भी
करके संचार उन करुण स्वरों के संग ;
साधन सहायक के रूप में ही काम किया
खोलने में मंगली शुभ्र भावना का रंग।

(५)

काव्य में 'रहस्य' कोई 'वाद' है न ऐसा, जिसे
लेकर निराला कोई पंथ ही खड़ा करे ;
यह तो परोक्ष रुचि-रंग ही की झाईं है, जो
पड़ती है व्यक्त में अव्यक्त-बिंबता धरे।
दृष्टि जो हमारी कर देती है लीन किसी
धुँधली-सी माधुरी में लोक-काल से परे ;
किंतु जो इसी के सदा झूठे स्वाँग रचे, उसे
हाँक दो, न घूम-घूम खेती काव्य की चरे।

(६)

पूरब में शुद्ध रूप में था यह यहाँ, वहाँ
पच्छिम में पहुँचा पखंड के प्रमाद तक,
अंगल की भूमि बीच ब्लेक* ने जो ढोंग रचा,

* William Blake (१७५७-१८२७)। यह अँगरेज़ कवि अपने को ईश्वर का दूत प्रकट करना चाहता था और इसी प्रकार की बातें और चेष्टाएँ करता था, जिस प्रकार यहाँ पहुँचे हुए सिद्ध-महात्मा बननेवाले पाखंडी साधु किया करते हैं। इसे ईश्वर का दर्शन और इलहाम हुआ करता था। इसने एक अन्योक्तिमयी रचना (Jerusalem : The emanation of the Giant Albion) करके यह घोषित किया कि "मैं तो इस काव्य का केवल मुहर्रिर हूँ—लिखानेवाले, असली कवि, तो अमरलोकवासी फ़रिश्ते हैं। मैं इसे संसार का सबसे उत्कृष्ट काव्य मानता हूँ।" पर संसार अंधा नहीं था—होशियार हो चुका था! इसकी रहस्यवाद की रचनाएँ बिलकुल निकम्मी ठहराई गईं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देखते हैं आज यहाँ उसी की चढ़ी है झक।
जूठा औ पुराना यह पच्छिमी पखंड लेके,
होती है नवीनता की डींग-भरी बक-बक;
योरप के किसी-किसी कोने में रहे तो रहे,
रोकना है किंतु यहाँ इसे आज भरसक।

(७)

वीणापाणि वाणी लोकमानस-विहारिणी है,
लुकी-छिपी किसी-किसी कोने में न रहती;
परख पुरानी यह भारत की भास रही,
काल बल खाती काव्य-धारा बीच बहती।
पहुँचा उन्माद की दशा को जहाँ व्यक्तिवाद,
कविता वहाँ की रूप-हानि घोर सहती;
नाचती नटी-सी निरी दंभ की सताई हुई,
सच्चे भोले भाव कभी भूलके न कहती।

(८)

देख चुके दंभ के विकास का विधान यह,
सह चुके गिरा के भी गौरव का अपमान;
लालसा अज्ञात की बताके ढोंग रचते जो
शब्दों का झूठमूठ, अब हों वे सावधान।
आवें लोकलोचन समक्ष, देखें एक बार
अपनी यह कलाहीन कोरी शब्द की उड़ान;
बोलें तो हृदय पर हाथ रख सत्य-सत्य,
इसका वहाँ के किसी भाव से भी है मिलान।

(९)

भाषा है, न भाव है, न भूति भाँपने को आँख,
शिक्षा की सुभिक्षा भी न पाई कभी एक कन;
गाँथते हैं गर्व-भरी गुरु ज्ञान-गूदड़ी वे
चुने हुए चीथड़ों से, किए ब्रह्म-लीन मन।
कहीं बंग-भंग-पद चकती चमक रही,
कहीं अँगरेज़ी अनुवाद का अनाड़ीपन;
ऐसे सिद्ध साँइयों की माँग मतवालों में है,
काव्य में न झूठे स्वाँग खींचते कभी हैं मन।

(१०)

कहाँ का अध्यात्म? अरे! कैसी ब्रह्मलिप्सा यह—
वासना का लंबा-चौड़ा रूप विकराल अति;
देह के मलों का यह सागर अपार!
कायवृत्तियों का झंझावात, झूठ की प्रचंड गति!
'अये' 'अये' भंडता की कैसी है पुकार यह?
जड़ता से जड़ी हुई कैसी यह मोटी मति?
अंधाधुंध कैसी! यह भेड़ियाधसान कैसी!
नक़ल-नवीसी कैसी! कितनी अज्ञान-रति?

अपनी रचनाओं को छपाने में यह विचित्र-विचित्र ढोंग निकाला करता था। प्रत्येक पृष्ठ एक चित्र-रचना के रूप में होता था, जिसके बीच में कुछ पंक्तियाँ टेढ़े-मेढ़े ढंग से सजी रहती थीं।

इस प्रकार के पाखंड मतवादियों और सांप्रदायिकों के ही काम के हो सकते हैं। काव्य की सत्यभावमयी भूमि में इनका प्रवेश अत्यंत गर्हित है। इँगलैंड के कालरिज, ब्राउनिंग, वर्ड्सवर्थ और शेली आदि की रचनाओं में जो कहीं-कहीं रहस्यमय आभास हैं, वे सच्चे हैं, हृदय की सच्ची अनुभूति के व्यंजक हैं। पर उनके भावों को ग्रहण करने की भी क्षमता हिंदी के मैदान में छायावादी बनकर कूदनेवालों में नहीं है। अधिकांश की शिक्षा की हद और अँगरेज़ी आदि की योग्यता छिपी नहीं है। आजकल जो बीच-बीच में इनके लेख निकलने लगे हैं, उनमें योरप के दर्जनों नाम गिनाए हुए मिलते हैं जिनकी रचना के एक पृष्ठ का दर्शन भी इन भले-मानसों ने न किया होगा। इन नामों में बहुत-से ऐसे नाम भी आ जाते हैं, जिनसे रहस्यवाद से कोई सरोकार नहीं—जैसे तुलसीदास और कीट्स। अँगरेज़ी-साहित्य का साधारण ज्ञान रखनेवाले भी जानते हैं कि कीट्स (Keats) अपने वाह्यार्थवाद (Sensualism) और कलाकुशलता के लिये प्रसिद्ध है, न कि रहस्यवाद के लिये। इसी प्रकार के एक लेख के लेखक का पता लगाने पर मालूम हुआ कि आपने आठवें दरजे तक अँगरेज़ी पढ़ी है। जो थोड़ी-बहुत अँगरेज़ी समझते हैं, वे कुछ कवियों के शब्दों और वाक्यों का टेढ़ा-सीधा अनुवाद जोड़-जाड़कर अपनी कविता में घुसा लेते हैं। पर इनकी जोड़बंदी का मुख्य मसाला है वंगभाषा की कविताओं की कोमलकांत-पदावली—कुहुकिनी, छलना, नीरव संदेश, और न-जाने क्या-क्या। सारांश यह कि इस प्रकार की अनधिकार-चेष्टा, पाखंड प्रलाप और अज्ञता का आवरण हमारे काव्य के नवीन विकास के लिये व्याधि-स्वरूप है। यह सच्चा रहस्यवाद नहीं, झूठा और कृत्रिम रहस्यवाद (Psendo Mysticism) है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सन् १९२७ का रूस

[लेखक, श्रीयुत परिपूर्णानंद वर्मा]

"रूस में अत्याचार होता है, पशुता होती है, कृषकों तथा दरिद्रों के ऊपर दमन की तलवार सदा लटका करती है, वे भूखों मर रहे हैं," इस प्रकार के वाक्य हम प्रायः पत्रों तथा पुस्तकों में, रूस के संबंध में, पाते हैं। साम्राज्यवादी राष्ट्र—विशेष करके ब्रिटेन—तथा उनकी विज्ञापक रायटर की एजेंसी सत्य के संपूर्ण वायुमंडल को इन अनर्गल कथनों से दूषित कर रही है। हम यह तो सुना करते हैं कि अमुक राज्य ने रूस से शत्रुता की घोषणा की या मैत्री स्थापित की; पर वस्तुतः रूस है कौन-सी बला तथा उसके कार्य क्या हैं, यह हम रूस से न पूछकर रायटर से या ब्रिटेन से पूछते हैं। वास्तविक रूस अधिकांश में एशियाई है, न कि योरपियन। अतः पड़ोसी तथा सजातीय होने के नाते हमें उसके संबंध में अवश्य जानकारी रखनी चाहिए।

योरपियन राजनीति में सबसे महत्त्वपूर्ण प्रश्न ब्रिटेन और रूस की प्रतिस्पर्द्धा का है। यदि आगामी महासमर होगा, तो इसी प्रतिस्पर्द्धा के कारण; यदि ब्रिटेन का पतन होगा, तो इसी व्यर्थ की घुड़दौड़ के कारण; यदि योरपियन क्रांति का उग्र तांडव होगा, तो इसी होड़ के कारण। पर क्या वास्तव में रूस ब्रिटेन के सम्मुख खड़ा हो सकता है? क्या संपूर्ण साम्राज्यवादी राष्ट्रों द्वारा व्यापार-संबंधी मैत्री से भी तिरस्कृत होने पर उसमें इतनी ताक़त है कि वह अपने पैरों खड़ा रह सके? ये सब बड़े आवश्यक प्रश्न हैं, जिनके उत्तर अधिकांशतः नहीं दिए जाते। इसी लिये लेख के लिखने की आवश्यकता जान पड़ी है।

सन् १९१७ में ऑक्टोबर मास की क्रांति के उपरांत सोविएट सरकार ने प्राचीन रूसी साम्राज्य के अंतर्गत संपूर्ण रूसी जनता के लिये आत्मनिर्णय के सिद्धांत की घोषणा की थी। उसी घोषणा के परिणाम-स्वरूप स्वाधीन राज्यों की कई सृष्टियाँ हुईं। इस समय 'साम्यवादी सोविएट रूस के गणतंत्र-संघ' के अंतर्गत १५ स्वाधीन गणतंत्र और १४ स्वाधीन (स्व-शासक) क्षेत्र हैं। इस संघ को संक्षेप में यू० एस्० एस्० आर० कहते हैं। इस समूचे गणतंत्र का सर्वोच्च शासक लेनिनग्रेड की केंद्रीय सोविएट सरकार है। दिसंबर, १९२६ में संपूर्ण संघ में ७४३ क़स्बे (नगर), ३,८७,४४६ ग्राम और २,२९,४७,७२४ मकानात तथा जनसंख्या १४,३५,००,००० थी। इस संख्या में १२,१०,००,००० ग्रामीण तथा ११,८०,००,०० नागरिक संघ के योरपियन भाग में रहते हैं। संघ का योरपियन भाग समस्त भाग का एक-चौथाई मात्र है, जो इसकी 'एशियाइयत' का साक्षी है। पड़ोस के राज्यों में से कुछ ने संघ में सम्मिलित होना स्वीकार नहीं किया। अतः वे स्वतंत्रतापूर्वक नवीन शासन स्थापित करने की आज्ञा पा गए। इस प्रकार उनकी ३१,३०,००,००० जनसंख्या रूस से पृथक् हो गई। परंतु रूस ने उनको अपने क़ब्ज़े में, उनकी अनिच्छा पर, रखना उचित न समझकर अपनी आदर्शवादिता का सुंदर परिचय दिया।

यह तो रूस की जनसंख्या आदि के विषय में हुआ। अब दूसरा प्रश्न, जिसके बारे में हमारा अज्ञान अत्यंत तीव्र है, वह है श्रमिकों का प्रश्न। कुछ तो समझते हैं कि वहाँ के श्रमिक दिन में दो-तीन घंटे ही काम करते होंगे, कुछ समझते हैं कि वे पिसे जाते हैं। पर अवस्था बिलकुल भिन्न है।

श्रम

१९२२ में श्रम-विधान श्रमिकों की रक्षा तथा नियंत्रण के लिये बनाया गया था। समय-समय पर आवश्यकतानुसार इसमें परिवर्तन तथा सुधार होते रहे हैं। सन् १९२८ में पुनः इसमें सुधार होनेवाला है। अतः १९२७ का वर्ष समाप्त होते ही रूसी श्रमिकों के लिये एक नवीन युग का जन्म होगा।

अस्तु, इस विधान के अनुसार २४ घंटे में केवल ८ घंटे ही श्रमिकों से काम लिया जायगा। यह संख्या १९२८ से ७ घंटे कर दी जायगी *। इन ८ घंटों के अलावा उन्हें और भी बड़ी सुंदर रियायतें मिली हैं। जैसे प्रति-

*Decision in the Jubilee clebration of Soviet Executive Commitee.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वर्ष दो सप्ताह का पारिश्रमिक सहित अवकाश तथा हर सप्ताह में कम-से-कम ४२ घंटों की छुट्टी। इसके अलावा गर्भवती स्त्रियों के साथ और भी रियायतें की गई हैं।

१४ वर्ष की अवस्था से नीचे के लड़के या लड़कियाँ कारख़ानों में भरती नहीं की जा सकतीं। १६ वर्ष से १४ वर्ष तक की अवस्था के व्यक्ति से ४ घंटे से अधिक काम नहीं लिया जा सकता। १६ से १८ वर्ष तक केवल ६ घंटे ही काम लिया जायगा। इसके साथ ही दिमाग़ी काम करनेवालों तथा कलों में काम करनेवालों से भी ६ घंटे से अधिक काम नहीं लिया जा सकता। यदि रात को काम करना रहता है, तो प्रति २४ घंटों में केवल ७ घंटे ही काम करना होगा। कोई ऐसी ही ख़ास अवस्था छोड़कर विशेष काम (समय से ऊपर) * करने की आज्ञा नहीं है।

इन श्रमिक नियमों के तोड़ने पर यथेष्ट दंड की योजना है। श्रमिकों के संबंध में ये नियम कितने आदर्श हैं!

अब प्रश्न यह हो सकता है कि जब क्रांति के कारण रूस में भयानक आर्थिक गड़बड़ मची थी, ब्रिटेन तथा उसके मित्र राष्ट्रों ने रूस को घेरकर †, उससे व्यापारिक संबंध तोड़कर तथा हर तरह से बहिष्कृत कर उसको भूखों मार डालने का विचार किया था, वैसी अवस्था में अकाल के कारण जर्जरीभूत, परित्यक्त रूस में श्रमिक भी इतना कम काम करते थे, तो रूस की आर्थिक अवस्था कितनी शोचनीय होगी! पर इसका उत्तर रूस के १९२७ तक के बजट से मिलता है।

अर्थ

१९२७ की रिपोर्ट देखने से पता चलता है‡ कि राष्ट्रीय मितव्यय की सबसे बड़ी शाखाएँ सोविएट संघ सरकार द्वारा ही संचालित और संरक्षित हैं। इस मद से जो आमदनी होती है, उससे राज्य के बजट में नित्यप्रति एक बढ़ती रक़म का सहारा मिलता जाता है। राज्य के कर से अलग आमदनी का ख़ास आधार भूमि, जंगलात, खदान, मछलियाँ, उद्योग और व्यापार हैं। इन्हीं में उधार (साख), राज्य की बीमा-संस्थाएँ तथा आवागमन भी शामिल हैं।

चलन के सिक्के केवल केंद्रीय सरकार ही प्रचलित कर सकती है। पर हमें इतनी विपरीत परिस्थितियों के होते हुए भी ज़ार द्वारा 'सुशासित' रूस की महासमर के पहले की तथा अब की आमदनी देखकर आश्चर्य होता है। बजट का मोटा ख़ाका इस प्रकार है—

१९१३ में बजट में ख़र्च केवल ३,३८,३०,००,००० रूबल (रूसी सिक्का) था; पर इस वर्ष (१९२७ में) वह रक़म ६,००,२०,००,००० रूबल हो गई है। * इस आमद तथा आय-संतुलित व्यय में कई विषमताएँ भी हैं। रूस की राजनीतिक परिस्थिति ऐसी है कि कभी कोई विदेशी सरकार उससे संबंध स्थापित कर लेती है, कभी विच्छेद कर देती है। इसका परिणाम उसकी आय में सामयिक रूप से अच्छा अथवा बुरा प्रभाव होता है, फिर भी नीचे के अंक कितने आश्चर्य-जनक हैं—

राज्य की आमदनी—गत तीन आर्थिक वर्षों में—दसलाख रूबलों में—

	१९२३-२४	१९२४-२५	१९२५-२६
महसूल और चुंगी	७८८·५	१३१४·६	१७७८·३
राजसंपत्ति और इंटरप्राइज़	९३५·३	१३५४·९	१९४७·१
विशेष ज़रिए—आंतरिक क़र्ज़े, चलन की छूटें आदि	१११८·२	४०६·२	३०३·४

१९२६-२७ की बजट की आमदनी—एक मिलियन रूबलों में—

प्रत्यक्ष कर	७७३·१
अप्रत्यक्ष कर	१·३८६·९
महसूल और चुंगी	१७३·०
कर से संपूर्ण आय	२,३३३,०
डाक और तार	१६२·०

*Overtime & Blockade.

†"In the U. S. S. R. the State own and directly controls the biggest branches of the national economy the revenue decieved from this economy plays an overgrowing park in the State Budget, the non tanation Revenue of the State are derived from Land, forest unioning, Fisheris Industry and trade, transport & credit & State Insurance organizations"

"The right to issue money for circulation is a monopoly of the central finance Administration and none of the union republic possess this right"

‡ ——Serial union year book, 1927—450 pages, published by George Allen & Uruoin Ltd. 7/6 net.

* एक रूबल (Rouble) २ शि० १½ पें० के (लगभग) बराबर होता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आवागमन	१,६२८,०
राजसंपत्ति और उद्योग	५५०·०
राज-फ़ंड की बिक्री	२२·०
अन्य	५६·४
कर-रहित आमदनी का योग	२·४१७·०
साख के कार्य	२२०·०
पूर्व वर्ष का बैलेंस	३२·०
महान् योग	५,००२·०

उल्लिखित हिसाब से जो आश्चर्यजनक अंक हमें मालूम होते हैं, उनसे पता चलता है कि रूस का आर्थिक शासन कितना सुंदर होगा कि लाख विपत्ति पड़ने पर भी आय बढ़ती जा रही है। कई प्रमुख लेखकों का कथन है कि रूस इतनी और शीघ्र उन्नति कर रहा है, जितनी किसी विदेशी पाश्चात्य प्रदेश ने नहीं की थी। इसका कारण उसकी जागृति तथा स्व-शासन की भित्ति को सुदृढ़ बनाने की इच्छा है।

उसकी यही उन्नति है, जो अब अनेकों साम्राज्यवादी राष्ट्रों की भी आँखें खोल रही है, और वे रूस से व्यापारिक तथा राजनीतिक संबंध पुनः जोड़ रहे हैं। इस अवसर पर रूस की विदेशी व्यापारी स्थिति जानना भी रोचक होगा।

१९१८ के ही क़ानून के अनुसार राज्य ने विदेशी व्यापार का पूर्ण अधिकार अपने हाथ में ले लिया था।

विदेशी व्यापार

इस अधिकार के कारण कई अच्छाइयाँ हो सकी हैं। पहली बात तो यह कि इसके कारण राज्य उस वस्तु की ठीक मात्रा निर्धारित कर सकता है, जिसका आयात आवश्यक है। जो मात्रा छोड़ दी जा सकती है, वह नहीं लाई जा सकती। साथ ही वह यह भी तय कर लेता है कि कितनी मात्रा में निर्यात हो। दूसरी बात यह है कि राज्य, विदेशी व्यापार के पूर्ण अधिकार के कारण, कुछ विशेष संस्थाओं पर ही विदेशी व्यापार को केंद्रीभूत तथा एकाग्र कर देता है। इस एकाग्रता तथा केंद्रीभूत करने से देश की यथेष्ट बचत होती है। साथ ही विदेशी व्यापारियों को रुपया डूबने का डर भी नहीं रहता। उन्हें व्यापारी संस्थाओं के दिवालिया होने का भय नहीं रहता। वे व्यापारी संस्थाएँ तो सरकारी होती हैं। पर इस बात की ओर स्वार्थी राज्यों के अनुचित प्रचार के कारण विदेशी व्यापारियों का ध्यान नहीं आकृष्ट होने पाता, जिसका परिणाम दोनों के लिये अहितकर है।

अस्तु, राजनीतिक कारणों से तथा शत्रुओं की अनुदार नीति के कारण रूस का विदेशी व्यापार महासमर के पूर्व की स्थिति पर नहीं पहुँच सका है; परंतु फिर भी बड़ी तेज़ी से वह बढ़ता चला जा रहा है।

परंतु यदि रूस का विदेशी व्यापार ख़ूब बढ़ भी जाय, तो वह उसके साथ अपनी औद्योगिक उन्नति नहीं कर सकता। बहुत दिनों तक रूस अज्ञान के अंधकार में पड़ा रहा। ज़ार-शाही ऐयाश-शाही थी। रूस का उतना ख़याल उसकी नज़रों में न था, जितना अपने आराम का ख़याल। इसका परिणाम यह हुआ कि रूस औद्योगिक उन्नति बिलकुल न कर सका। जिस समय सारा संसार कल-कारख़ाने अपनाता आ रहा था, तब रूस में वही खेती, वही हल, सब कुछ प्राचीन था। पर गणतंत्र की स्थापना के बाद उसने बहुत शीघ्र उन्नति आरंभ की है। ग्रामों में नवीन कृषि-यंत्र पहुँच रहे हैं, तथा कल-कारख़ाने खुल रहे हैं। भारत की भाँति रूस में भी बड़ी औद्योगिक सुविधाएँ हैं। प्राकृतिक साधन भरे पड़े हैं। पर उनका उपयोग अभी रूसी सीख नहीं पाए हैं। इसी कारण तथा सिद्धांततः बड़े-बड़े रूसी कारख़ाने राज्य के हैं। पर वह भी पूरा औद्योगिक संचालन नहीं कर सकता, अतएव उसने कुछ रियायतों पर विदेशी उद्योगियों को अपने यहाँ आमंत्रित किया है। १९२० की २३ नवंबर को कौंसिल ऑफ़् पीपुल्स कमिशनरीज़ की डिक्री * के अनुसार इन रियायतों के संबंध में आम सिद्धांत मुक़र्रर कर दिए गए हैं। इनमें राज्य के अधिकार की सतर्कता-पूर्वक रक्षा की गई है। पट्टा केवल ९९ वर्ष के लिये होता है, और अवधि की समाप्ति पर संपूर्ण प्राकृतिक ज़रिए राज्य के हो जायँगे। पर ऐसी अवस्था में उनको कुछ हरजाना भी मिलेगा।

अस्तु, इन शर्तों को मानकर अनेकों (सैकड़ों) विदेशियों ने अर्ज़ियाँ भेजीं, जिनमें सबसे अधिक जर्मन तथा ब्रिटिश थे। परंतु रियायत के अधिकार केवल ३९ जर्मन, २३ ब्रिटिश, १५ अमेरिकन प्रार्थियों को मिले। इस प्रकार की रियायत में लगभग ८०,००,००० पौंड की लागत की

* Decree of the council of people's commisaries Nov: 23—1920-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संपत्ति लगी है। इसका सबसे अधिक भाग खानों तथा कारी के उद्योग में लगा है।

यह तो कारख़ानों तथा उद्योग के संबंध में हुआ। अब कुछ कृषि-उद्योग के विषय में जानना आवश्यक है। भारत की तरह रूस भी कृषि-प्रधान देश है। हम ऊपर उसके ग्रामीणों की संख्या बतला आए हैं। उसी से पता चल सकता है कि यह उद्योग कितना व्यापक तथा राष्ट्रीय जीवन का स्वास्थ्य है। अतः हम भारतीयों के लिये इसका ज्ञान अत्यंत आवश्यक है।

कृषि-व्यवसाय

महासमर के पूर्व रूस की सारी शक्ति कृषि-व्यवसाय में ही अधिकांशतः व्यय होती थी। यद्यपि अब औद्योगिक उन्नति की विशद चेष्टाएँ की जा रही हैं, परंतु, फिर भी, यह अत्यावश्यक उद्योग बड़ी उन्नति कर रहा है। यह सोचना भ्रम है कि वहाँ के कृषकों को बड़ा दुःख है। बिलफ़ोर्ड विलोक महोदय ने आँखों-देखी एक घटना समाचारपत्रों में छपवाई है, जिसमें एक कृषक तथा रूसी क्रांति से रुष्ट पादरी का वार्तालाप है। उसको पढ़ने से पता चलता है कि रूसी कृषक कितने प्रसन्न हैं, तथा नित्यप्रति नवीन यंत्रों द्वारा खेती में उन्हें कितनी सफलता की आशा देख पड़ती है।

अस्तु, संघ की नाज की उत्पत्ति इस वर्ष (१९२६ में) ४,६२,८७,००,००० पूड (एक पूड १८ सेर के बराबर होता है) हुई है—१९१६ में ३,८५,४७,००,००० पूड उत्पन्न हुआ था। इस प्रकार उत्पत्ति में वृद्धि हुई है। परंतु रूस की पैदावार में सबसे महत्त्वपूर्ण स्थान रुई का है। १९१३ में १५,५६,००० एकड़ भूमि रुई के लिये काम में लाई जाती थी; पर इस समय (१९२७ में) कम-से-कम १९,१४,३०० एकड़ भूमि इस काम में लगी हुई है। अस्तु, सब मिलाकर भूमि का भाग, जो उपयोगी होने पर भी बेकार पड़ा था, अब काम में लाया जा रहा है।

इस प्रकार कृषि की फ़सल १९१३ के बराबर हुआ चाहती है। इसमें कितनी द्रुत गति से उन्नति हो रही है, इसका उदाहरण १९२२ तथा १९२५-२६ के आँकड़ों की तुलना है। १९१३ की उत्पत्ति का केवल ५० प्रतिशत १९२२ में उत्पन्न हुआ था; पर इस वर्ष उसका ९१ प्रतिशत उत्पन्न हुआ है।

ऊपर हम विदेशी व्यापार के विषय में विचार करते समय रूस की औद्योगिक स्थिति का कुछ विवरण दे चुके हैं। यहाँ पर उसका तथा श्रमिकों का कुछ ज्ञान प्राप्त कर लेना उचित है।

उद्योग तथा श्रमिक

रूस में औद्योगिक उन्नति जिस तेज़ी से हो रही है, उसका वर्णन करने के लिये हमारे पास यथेष्ट साधन तथा स्थान नहीं है; परंतु उसके विषय में कुछ थोड़ा बतलाना आवश्यक है। सबसे पहले जानने योग्य बात कपड़े का व्यवसाय है। रूस अपनी राजनीतिक परिस्थिति के कारण जिस प्रकार परित्यक्त हो रहा है, उसका विवरण बड़ा रोचक और अत्यंत आश्चर्य-जनक है। परंतु हम केवल आँकड़े देकर ही उसकी सूचना द्वारा पाठकों से इस विषय का अधिक अध्ययन करने का अनुरोध करते हैं। रुई का उद्योग रूस में बढ़ रहा है, यह ऊपर संकेत किया गया है। उस संकेत का प्रमाण यह है कि जहाँ सन् १९२३-२४ में इस उद्योग में २,५७,८०० रजिस्टर्ड मज़दूर काम करते थे, वहाँ अब ४,५९,००० मज़दूर काम करते हैं। उस समय ४७,१०,००० चर्ख़े तथा १,२५,००० कर्घे चलते थे, अब १,०३,२१,००० चर्ख़े और २,६२,२०० कर्घे चल रहे हैं। इसी प्रकार १९२३-२४ में सवा तीस करोड़ पौंड के लगभग औद्योगिक उत्पत्ति थी, वह अब ७०,००,००,००० पौंड हो गई है। नित्य काम करनेवाले २०,००,००० मज़दूर इस समय उद्योग-धंधों में काम कर रहे हैं। मौसिमी काम करनेवाले ७,००,००० होते हैं। ये अपना आधा समय उद्योग-धंधों में तथा आधा कृषि करने में लगाते हैं। मज़दूरी भी १९२२ से तिगुनी हो गई है, तथा बढ़ती ही जा रही है। मध्य तथा पूर्वी योरप की भाँति यहाँ भी मज़दूरी बड़ी कम है; पर वह निस्संदेह बढ़ती जा रही है। अस्तु, इस समय शिक्षा, स्वास्थ्य, आवागमन तथा उद्योग में काम करनेवालों की संख्या लगभग ९८,०८,००० है। सन् १९२२-२३ में यह संख्या केवल ६७,३६,००० थी।

यह सब तो देश की आर्थिक स्थिति तथा आंतरिक अवस्था के विषय में हुआ। अब उसके अन्य पहलुओं पर भी विचार करना चाहिए। कहा जाता है, रूस साम्राज्यवादी राज्य है, तथा उसके कारण देश में भयंकर मार-काट मचने की संभावना है। इसका कारण यह है कि वह शीघ्रता से अपनी सेना बढ़ा रहा है। हम इस आक्षेप की सत्यता की परख करेंगे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महाराज सोढ़देव

[श्रीहनूमान शर्मा की कृपा से प्राप्त]

The Ganga Fine Art Press, Lucknow.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सेना तथा विदेशी संबंध

१९२० में रूसी सेना सबसे अधिक थी। इसका कारण ज़ारशाही के पक्षपातियों का ऊधम तथा विदेशी शक्तियों का-सा बर्ताव था। उस समय भी केवल ५३,००,००० ही सेना थी। पर इस समय व्यावहारिक निःशस्त्रीकरण का पाठ पढ़ानेवाले रूस ने यह देखते हुए भी कि उसके विरुद्ध न-जाने किस दिन सारा संसार हाथ उठावे, अपनी सेना केवल ५,६२,००० ही रक्खी है। इसके अलावा नागरिकों को सैनिक शिक्षा भी दी जाती है, जो एक अत्यंत आवश्यक कार्य है। ऊपर जो अंक दिए गए हैं, उनमें नाविक तथा वायु-सेना भी सम्मिलित है।

विदेशी संबंध के विषय में यहाँ पर लिखने का स्थान नहीं है। हम जानते हैं, ब्रिटन के षड्यंत्रों तथा जर्मनी-फ्रांस-अमेरिका के सम्मिलित प्रयत्न से रूस को महागर्त में गिराने की कितनी चेष्टा की जा रही है। पर रूस भी अपनी आदर्शवादिता के कारण डटा खड़ा है। वह यदि योरपियन राष्ट्र-समूह को अप्रिय है, तो केवल इस कारण कि १९२७ तक उसने पूर्व में—एशिया में—योरपियन राष्ट्र-समूह की दाल नहीं गलने दी। अब १९२८ की ईश्वर जाने। योरपियन साम्राज्यवादी समुदाय एशिया को चूसकर अपने को पुष्ट करना चाहता है। पर रूस ऐसा नहीं करने देता, इसीलिये वह सबका शत्रु है।

चीन में विदेशियों की दाल न गलने का श्रेय रूस को ही है। फ़ारस को अँगरेज़ों के पंजे से छुड़ाने का श्रेय रूस को ही है। जापान से मित्रता कर उसे ब्रिटेन के दबाव से बचाने का श्रेय रूस को ही है। तुर्किस्तान की शान का श्रेय अंशतः रूस को ही है। अभी हाल में जापान ने उस से संधि की है। इसी १९२७ में फ़ारस से उसकी व्यापारिक संधि हुई है। तुर्किस्तान का उसका संबंध स्पष्ट है, तथा अफ़ग़ानिस्तान के अमीर भी उसके प्रभाव में हैं। इस प्रकार रूस क्रमशः अपने को एक एशियाई राष्ट्र बनाता जा रहा है—और यही है उसकी साम्राज्यवादियों से दुश्मनी की जड़।

सारांश

सारांश स्पष्ट है। हम अपने विषय पर पूरा प्रकाश नहीं डाल सकते। समय नहीं। स्थान नहीं। इच्छा नहीं। लेखक रूसी शासन-प्रणाली का प्रेमी नहीं। उसे रूस से विशेष प्रेम नहीं है। पर वह रूस के सिद्धांतों में जो आध्यात्मिकता पाता है, उसका आश्चर्य-पूर्वक आदर करता है। अंतरराष्ट्रीय राजनीति का विद्यार्थी होने के कारण मैंने अपना कर्तव्य समझा कि एक सत्य को, जो छिपाया जा रहा है, प्रकट कर दूँ तथा यह दिखला दूँ कि आदर्शवादी होने पर भी कोई राष्ट्र पनप सकता है। यह असंभव कल्पना नहीं।

रूस से साम्राज्यवादी सरकारों का वैर बढ़ता जा रहा है। यह उनकी द्वेषी वृत्ति का परिणाम है। उन्होंने रूस का बहिष्कार किया, तथा उसे तबाह करना चाहा; पर वह पनप उठा, और नित्यप्रति बढ़ता जा रहा है। बिना किसी सहायता के रूस ने क्रांति के दो-तीन वर्ष बाद ही इतनी औद्योगिक उन्नति कर ली है कि उसकी दशा महासमर के बाद किसी भी पाश्चात्य राष्ट्र के बराबर हो गई है। (जर्मनी की उस समय की अवस्था छोड़ दीजिए)। बड़ी शक्तियों से उसे आर्थिक युद्ध लड़ना पड़ा। उसके पहले औद्योगिक दुरवस्था इतनी अधिक थी कि यदि उसके यहाँ एक मशीन टूट जाती, तो वह फिर बेकार पड़ी रहती थी—जब तक विदेश से उसका टूटा पुर्ज़ा बन न आवे। पर कितना आश्चर्य है कि ऐसे रूस ने अपनी गिरी विनिमय दर को केवल अपने प्रयत्न से सँभाला, जैसा कि संसार के किसी राज्य ने न किया और न कर सकता था। उसकी पैदावार बढ़ती जा रही है। एक ओर उसके मित्रों की संख्या बढ़ती जा रही है, तो दूसरी ओर शत्रु भी बढ़ते जा रहे हैं।

अस्तु, रूस का १९२७ का वर्ष बड़ी आशंका और विपत्ति का वर्ष रहा। बोलशेविक अफ़सर मारे गए। आपस में फूट हो गई, तथा कई बार ब्रिटेन ने उसे भड़काकर युद्ध छेड़ने की चेष्टा की। पर परिणाम कुछ न हुआ। संतोष-पूर्वक रूस बढ़ता जा रहा है, और यह विपत्ति-भय वर्ष सुख-पूर्वक पार कर ले गया। देखें, १९२८ को ईश्वर कैसा वर्ष बनाता है।

शीघ्रता कीजिए ! शीघ्रता कीजिए !!

सुधा की पहली छः संख्याएँ अब बहुत थोड़ी रह गई हैं। शीघ्र पहली संख्या से ग्राहक बनकर मँगा लें, नहीं तो फिर २)-२) रुपए में भी पिछली संख्याएँ नहीं मिलेंगी।

मैनेजर सुधा, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संसार के प्राचीन विश्वविद्यालय

१. तक्षशिला

[लेखक, प्रो० सत्यकेतु विद्यालंकार]

भारत के प्राचीन विश्वविद्यालयों में तक्षशिला का नाम बहुत प्रसिद्ध है। जिन लोगों ने प्राचीन भारतीय इतिहास का कुछ भी अनुशीलन किया है, वे तक्षशिला-विश्वविद्यालय के नाम से परिचित हैं। परंतु ऐसे लोग बहुत कम हैं, जो इस प्रसिद्ध शिक्षा-केंद्र के संबंध में अच्छी तरह जानकारी रखते हों। प्राचीन साहित्य के अध्ययन से इस विश्वविद्यालय के संबंध में जो बातें ज्ञात होती हैं, उन्हें हम संक्षिप्त रूप से इस लेख में देंगे।

तक्षशिला में शिक्षा प्रारंभ करने की आयु सोलह वर्ष की थी*। इससे पूर्व विद्यार्थी लोग अपने-अपने नगरों में ही शिक्षा प्राप्त करते थे। पीछे से उच्च शिक्षा प्राप्त करने की अभिलाषा से वे सोलह साल की आयु में तक्षशिला-विश्वविद्यालय में जाया करते थे। समझा यह जाता था कि तक्षशिला में शिक्षा को समाप्त करने के लिये जाना है†। शिक्षा अपने यहाँ भी मिल सकती थी; पर राजा तथा अन्य धनी लोग अपने लड़कों को दूर देश में शिक्षार्थ भेजना उपयोगी समझते थे। तक्षशिला में शिक्षा का क्या प्रबंध था, इस विषय को स्पष्ट करने के लिये हम एक जातक-कथा का कुछ भाग अनूदित करना आवश्यक समझते हैं—

"एक समय की बात है कि बनारस के राजा ब्रह्मदत्त के एक पुत्र उत्पन्न हुआ, जिसका नाम कुमार ब्रह्मदत्त रक्खा गया। पुराने समय के राजा लोगों में यह प्रथा थी कि चाहे उनके अपने शहर में कोई प्रसिद्ध अध्यापक विद्यमान हो, तब भी वे अपने लड़कों को दूर देश में शिक्षा पूर्ण करने के लिये भेजना उपयोगी समझते थे। इससे वे यह लाभ समझते थे कि कुमार लोग अभिमान और दर्प को अपने वश में करना सीखेंगे, गरमी और सरदी को सहन करेंगे, साथ ही दुनिया के रीति-रिवाजों से जानकारी भी प्राप्त कर लेंगे। राजा ब्रह्मदत्त ने भी यही किया। उसने अपने लड़के को बुलाकर—कुमार की आयु अब १६ वर्ष की हो गई थी—उसे एकतालिक जूते, पत्तों का छाता और एक हज़ार कार्षापण देकर कहा—'तात! तक्षशिला जाओ और विद्या का अभ्यास करो। कुमार ने उत्तर दिया—'बहुत अच्छा।' माता-पिता से विदा होकर वह समय पर तक्षशिला पहुँच गया। वहाँ जाकर उसने आचार्य का घर पूछा। आचार्य महोदय विद्यार्थियों के सम्मुख अपना व्याख्यान समाप्त कर चुके थे, और अपने घर के द्वार पर घूम रहे थे। आचार्य को देखते ही कुमार ने जूते उतार दिए, छाता बंद कर दिया, और सम्मान-पूर्वक वंदना करके चुपचाप खड़ा होगया। आचार्य ने देखा, वह थका हुआ है, अतः उसके भोजन का प्रबंध कर उसें आराम करने का आदेश दिया। भोजन करके कुमार ने कुछ देर विश्राम किया, और फिर आचार्य के सम्मुख सम्मान-पूर्वक प्रणाम करके खड़ा हो गया।

आचार्य ने पूछा—'तात! तुम कहाँ से आए हो?'

'वाराणसी से'

'तुम किस के पुत्र हो?'

'मैं वाराणसी के राजा का पुत्र हूँ।'

'तुम यहाँ किस लिये आए हो?'

'विद्याध्ययन के लिये।'

'बहुत ठीक। क्या तुम आचार्य के लिये उपयुक्त फ़ीस लाए हो, या शिक्षा के बदले सेवा की इच्छा रखते हो?'

'मैं आचार्य के लिये उपयुक्त फ़ीस साथ लाया हूँ।'

यह कहकर उसने एक हज़ार कार्षापणों की थैली आचार्य के चरणों पर रख दी। दो तरह के विद्यार्थी आचार्य से शिक्षा ग्रहण करते थे। पहले 'धम्मंतेवासिक'—ये दिन में आचार्य का काम करते और रात को शिक्षा प्राप्त करते थे। दूसरे 'आचार्य-भागदायक'—ये आचार्य के घर में ज्येष्ठ पुत्र की तरह निवास करते थे, और इस प्रकार विद्याभ्यास में लीन रहते थे। कुमार ब्रह्मदत्त आवश्यक फ़ीस साथ लाया था, और वह आचार्य के

* The 'Jatak', edited by Prof. E. B. Cowell, Vol. I. p. 126, Vol. II. p. 193, Vol. V. p. 66 etc.

† Ibid. Vol. IV. p. 24.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

घर पर ही रहता था; अतः उसे नियम-पूर्वक शिक्षा दी गई। इस प्रकार कुमार ब्रह्मदत्त ने शिक्षा समाप्त की *।"

इस उद्धरण से तक्षशिला की शिक्षा-विधि पर बहुत अच्छा प्रकाश पड़ता है। तक्षशिला में शिक्षा पाने की फ़ीस एक हज़ार कार्षापण थी। अन्य अनेक स्थलों पर भी इसी फ़ीस का उल्लेख मिलता है †। जो विद्यार्थी यह फ़ीस दे सकते थे, वे आचार्य के घर में, आचार्य ही के प्रबंध से, पूरे आराम के साथ रहते थे। जिस प्रकार घर में बड़े लड़के का पूरा ख़याल रक्खा जाता है, उसी तरह आचार्य-कुल में इन विद्यार्थियों के आराम आदि पर पूरा ध्यान दिया जाता था। उन्हें किसी तरह का श्रम करने की आवश्यकता न थी। पर जो विद्यार्थी निश्चित फ़ीस न दे सकते थे, उनके लिये भी तक्षशिला-विश्वविद्यालय में स्थान था। वे अपने पैरों पर आप खड़े होकर, स्वावलंबी बनकर, दिन में काम करते और रात को पढ़ते थे। तक्षशिला की कीर्ति के कारण जो निर्धन विद्यार्थी वहाँ आकृष्ट होकर पहुँचते थे, उनको आचार्य की ओर से, या विश्वविद्यालय की ओर से, काम दिया जाता था, और इस तरह वे अपना ख़र्च आप चला सकते थे! इन दो तरह के विद्यार्थियों के सिवा एक तीसरी तरह के भी विद्यार्थी होते थे। ये न आवश्यक फ़ीस देते थे, और न दिन में काम करके रात की पढ़ाई से संतुष्ट रहते थे, अपितु प्रतिज्ञा कर लेते थे कि शिक्षा समाप्त होने पर हम सारी फ़ीस चुका देंगे। 'दूत-जातक' में एक ब्राह्मण की कथा आती है, जो ग़रीब के घर में उत्पन्न हुआ था। उसको शिक्षा की बहुत लगन थी; पर वह 'आचार्य-भाग' या विश्वविद्यालय की नियत फ़ीस कहाँ से लाता? अतः उसने प्रतिज्ञा की कि शिक्षा समाप्त होने पर मैं सारी फ़ीस दे दूँगा। उसकी बात मान ली गई। वह 'आचार्य-भागदायक' विद्यार्थियों की तरह आराम के साथ पढ़ता रहा, और शिक्षा समाप्त कर चुकने पर अपने प्रयत्न से एकत्रित कर उसने सारी फ़ीस अदा कर दी ‡।

तक्षशिला में अनेक संसार-प्रसिद्ध आचार्य शिक्षा देने का कार्य करते थे। इन आचार्यों के साथ बार-बार 'संसार-प्रसिद्ध' विशेषण लगाना ❀ सूचित करता है कि उस समय तक्षशिला-विश्वविद्यालय अपनी विद्या के लिये अद्वितीय था। एक आचार्य के पास प्रायः ५०० विद्यार्थी शिक्षा पाते थे। जातक-साहित्य में अनेक स्थानों पर ऐसे आचार्यों का ज़िक्र आता है, जिनके पास ५०० विद्यार्थी विद्याध्ययन करते थे †। जातकों से यह भी स्पष्टतया सूचित होता है कि तक्षशिला में ऐसे संसार-प्रसिद्ध आचार्यों की संख्या कम न थी। एक समय में बहुत-से ऐसे आचार्य विद्यमान होते थे ‡। संभवतः यह कल्पना अनुचित न होगी कि तक्षशिला-विश्वविद्यालय में अनेक 'कॉलेज' थे, जिनमें से प्रत्येक में ५०० के लगभग विद्यार्थी शिक्षा पाते थे, और इन कॉलेजों के प्रधान अध्यापक को आचार्य कहा जाता था। वर्तमान परिभाषाओं में यही वर्णन तक्षशिला-विश्वविद्यालय के वास्तविक रूप को प्रकट कर सकता है।

तक्षशिला में शिक्षा समाप्त कर चुकने पर विद्यार्थी लोग शिल्प, व्यवसाय आदि का क्रियात्मक अनुशीलन तथा देश-देशांतर के रीति-रिवाजों का अध्ययन करने के लिये भ्रमण किया करते थे। इस संबंध में अनेक निर्देश जातक-साहित्य में दृष्टिगोचर होते हैं। 'सोनक-जातक' में लिखा है कि मगध का राजकुमार अरिंदम, तक्षशिला में सब विद्याओं में प्रवीणता प्राप्त कर चुकने के बाद, स्वयं अवलोकन द्वारा, शिल्प आदि का क्रियात्मक अनुभव प्राप्त करने के लिये, यात्रा करने निकला $। इसी तरह अन्य अनेक विद्यार्थियों के संबंध में भी लिखा गया है ¶।

तक्षशिला-विश्वविद्यालय इतना प्रसिद्ध था कि बड़े-बड़े राजा, ज़मींदार और क्षत्रिय लोग अपने लड़कों को वहाँ पढ़ने के लिये भेजते थे। जातक-साहित्य में अनेक राज-कुमारों के तक्षशिला में शिक्षा प्राप्त करने की कथा लिखी है। हम कुछ राजकुमारों का नाम निर्दिष्ट करना पर्याप्त समझते हैं—

* The 'Jatak', edited by V. Fausball, Vol. II. p. 277-8.
† The 'Jatak', edited by E. B. Cowell, Vol. V. p. 246, Vol. I. p. 148, Vol. IV. p. 32 etc.
‡ Ibid. Vol. IV. p. 140.

* Ibid. Vol. V. p. 66-67, Vol. II. p. 193, Vol. III. p. 154 etc.
† Ibid. Vol. III. p. 154, Vol. IV. p. 32, Vol. V. p. 67, Vol. I. p. 173 etc.
‡ Ibid. Vol. II. p. 194.
$ Ibid. Vol. V. p. 127.
¶ Ibid. Vol. V. p. 227, Vol. IV. p. 24.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१. वाराणसी (काशी) का राजकुमार ब्रह्मदत्त ❀
२. मगधराज का लड़का अरिंदम †
३. कुरुदेश (इंद्रप्रस्थ) का राजकुमार सुतसोम ‡
४. मिथिला का राजकुमार कुमार विदेह $
५. इंद्रप्रस्थ का राजकुमार धनंजय ¶
६. कंपिल्लक देश का राजकुमार ÷
७. मिथिला का राजकुमार सुरुचि +

इसी तरह के अन्य अनेक राजकुमारों के भी निर्देश जातकों में मिलते हैं। 'महासुतसोम-जातक' की कथा इस विषय में बहुत उपयोगी है। उसके अनुसार—

"कुरु-देश के राजकुमार का नाम सुतसोम था। जब उसकी आयु १६ वर्ष की हो गई, तो उसे तक्षशिला में एक संसार-प्रसिद्ध आचार्य के पास शिक्षा प्राप्त करने के लिये भेजा गया। मार्ग में जाते हुए उसे काशीदेश का राजकुमार ब्रह्मदत्त मिल गया। वह भी विद्याध्ययन के लिये तक्षशिला जा रहा था। उनकी मित्रता हो गई। वे दोनों एक ही आचार्य के पास शिक्षा के लिये जा रहे थे। दोनों ने एक ही साथ पढ़ना शुरू किया। 'आचार्य को फ़ीस देकर उन्होंने विद्याध्ययन आरंभ कर दिया। केवल वे ही नहीं, उनके सिवा भारत के अन्य भी अनेक राजकुमार, जिनकी संख्या उस समय एक सौ एक थी, उसी आचार्य से शिक्षा पा रहे थे×।' तक्षशिला में शिक्षा पाकर ये लोग अपने-अपने राज्य में वापस गए, और अपनी योग्यता प्रदर्शित कर राजा बने।"

इस कथा से स्पष्ट है कि तक्षशिला-विश्वविद्यालय में एक आचार्य के पास १०१ राजकुमार शिक्षा पा रहे थे। क्या इस आचार्य के कॉलेज को हम 'राजकुमारों का कॉलेज' नहीं कह सकते? निस्संदेह अन्य विविध कॉलेजों के साथ तक्षशिला-विश्वविद्यालय में एक ऐसा भी कॉलेज था, जिसमें राजों के लड़के पढ़ते थे, और जिसकी कीर्ति भारत-भर के राजकुमारों को अपनी तरफ़ आकृष्ट करती थी।

केवल 'राजकुमार कॉलेज' ही नहीं, तक्षशिला के अन्य कॉलेज भी भारत-भर में प्रसिद्ध थे। यही कारण है कि 'धोनसाख-जातक' में लिखा है कि भारत-भर से ब्राह्मण और क्षत्रिय-वर्णों के लड़के तक्षशिला में पढ़ने के लिये जाया करते थे❀।

परंतु यह ध्यान में रखना चाहिए कि नीच जातियों के लोग इस जगत्-विख्यात विश्वविद्यालय में नहीं पढ़ सकते थे। चांडालों का वहाँ पढ़ना निषिद्ध था। यही कारण है कि 'चित्तसंभूत-जातक' में लिखा है कि चांडाल लोग वेश बदलकर—छिपकर—तक्षशिला में शिक्षा पाते थे†।

चांडालों के सिवा अन्य किन जातियों का तक्षशिला में पढ़ना निषिद्ध था, इसका पता जातकों से नहीं लगता। यही समझना उचित होगा कि चांडालों के सिवा अन्य सब लोग वहाँ शिक्षा प्राप्त कर सकते थे।

तक्षशिला-विश्वविद्यालय में विद्यार्थियों का जीवन किस प्रकार बीतता था, इस संबंध में जातकों के एक-दो निर्देशों का अवलोकन उपयोगी है। विद्यार्थी अपने आचार्य के निरीक्षण में रहते थे। उनके जीवन के सुधार पर आचार्य बहुत ध्यान देता था। यही कारण है कि अनेक भाँति के दंड भी विद्यार्थियों को दिए जाते थे। तक्षशिला में विद्यार्थियों को शारीरिक दंड भी मिलता था। 'तिल-मुट्ठि-जातक' में लिखा है—

"एक बार कुमार ब्रह्मदत्त अपने आचार्य के साथ स्नान करने के लिये गया। मार्ग में एक वृद्धा स्त्री ने तिल सुखाने के लिये डाल रक्खे थे। वह सम्मुख बैठी हुई उनकी रखवाली भी कर रही थी। कुमार ने जब उन तिलों को देखा, तो खाने के लिये इच्छा उत्पन्न हुई। उसने मुट्ठी-भर तिलों को उठा लिया, और खाने लगा। स्त्री ने समझा, 'यह भूखा होगा', अतः उसने कुछ न कहा, और चुपचाप बैठी रही। अगले दिन ठीक उसी तरह कुमार ब्रह्मदत्त उसी समय आचार्य के साथ गया, और उसने पहले दिन की ही तरह तिल उठाकर खा लिए। उसी तरह स्त्री ने भी कुछ न कहा। तीसरे दिन भी कुमार

* Ibid. Vol. V. p. 66 etc.
† Ibid. Vol. V. p. 127.
‡ Ibid. Vol. V. p. 246.
$ Ibid. Vol. II. p. 27.
¶ Ibid. Vol. II. p. 251.
÷ Ibid. Vol. III. p. 52.
+ Ibid. Vol. IV. p. 198.
× Ibid. Vol. V. p. 247.

* Ibid. Vol. III. p. 105.
† Ibid. Vol. IV. p. 245.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ने वही किया। अब स्त्री चुप न रह सकी। उसने चिल्लाकर कहा—'संसार-प्रसिद्ध आचार्य अपने शिष्यों द्वारा मुझे लूटना चाहता है।' यह कहकर वह बाँह उठाकर रोने लगी। आचार्य ने पीछे मुड़कर पूछा—'क्या बात है मा?'

'मैंने सुखाने के लिये तिल बिछाए हैं। तुम्हारे शिष्य ने मुट्ठी भरकर उन्हें उठा लिया है। यह उसने आज किया है, कल किया था और परसों भी किया था। इस तरह तो यह मेरे सारे घर को बरबाद कर देगा।'

'मा, रोओ मत, मैं तुम्हें इसकी क़ीमत चुका दूँगा।'

'ओह! स्वामी, मैं क़ीमत नहीं चाहती, इस लड़के को ऐसी शिक्षा दो कि आगे से ऐसा न करे।'

आचार्य ने 'बहुत अच्छा', कहकर दो लड़कों को उस राजकुमार के दोनों हाथों को पकड़ लेने का आदेश दिया, और स्वयं उसकी पीठ पर तीन डंडे मारे। इस तरह आचार्य ने कुमार को फिर ऐसा काम न करने की शिक्षा दी ❀।"

इस कथा से हमें विश्वविद्यालय के आंतरिक नियंत्रण के संबंध में एक मनोरंजक निर्देश मिल जाता है।

तक्षशिला-विश्वविद्यालय में कौन-कौन-सी विद्याएँ पढ़ाई जाती थीं, इस संबंध में भी कुछ निर्देश जातक-साहित्य में उपलब्ध होते हैं। तक्षशिला में मुख्यतया निम्न-लिखित विषय पढ़ाए जाते थे—

(१) तीनों वेद—जातकों में सर्वत्र तीन वेदों का ही उल्लेख है †। ऐसा प्रतीत होता है कि इस काल में अथर्व वेद को वेद नहीं समझा जाता था।

(२) अष्टादश विद्या—जातकों में तक्षशिला-विश्वविद्यालय के संबंध में अनेक बार लिखा गया है कि वहाँ अष्टादश विद्याओं में प्रवीणता प्राप्त कराई जाती थी ‡। पर ये १८ विद्याएँ कौन-कौन-सी थीं, इसका निश्चय कर सकना कठिन है।

(३) सिप्प या शिल्प—तक्षशिला में अनेक प्रकार के शिल्पों (Arts या Sciences) की भी शिक्षा दी जाती थी$।

(४) धनुर्विद्या—'असदिस-जातक' में एक असदृश (असदिस) कुमार का वर्णन है, जिसने तक्षशिला में एक आचार्य के पास धनुर्विद्या में प्रवीणता प्राप्त की थी ❀।

(५) हस्ति-विद्या—'सुसीम-जातक' के अनुसार वाराणसी के राजकुमार सुसीम ने तक्षशिला में आचार्य के पास वेदों के सिवा हस्ति-विद्या भी ग्रहण की थी †।

(६) मंत्रविद्या—'अनभिरति-जातक' के अनुसार काशी में रहनेवाले एक ब्राह्मण-कुमार ने तक्षशिला में संपूर्ण मंत्रविद्या (Magic Charms) का अध्ययन किया था ‡। 'चंपेय्य-जातक' में लिखा है कि एक विद्यार्थी ने तक्षशिला में ऐसा जादू (मंत्र) सीखा था कि वह सब प्राणियों को अपने वश में कर सकता था। उस विद्यार्थी के साँप को वश में करने का हाल भी जातक में लिखा है $।

(७) सब प्राणियों की बोलियों को समझने की विद्या—'परंतप-जातक' में एक कुमार का वर्णन है, जिसने तक्षशिला में जाकर उस विद्या का अध्ययन किया था, जिससे सब प्राणियों की बोली समझी जा सके ¶।

(८) चिकित्सा-शास्त्र—यह तक्षशिला-विश्वविद्यालय चिकित्सा-शास्त्र की दृष्टि से बहुत प्रसिद्ध था। वहाँ पर इसी विषय की शिक्षा मुख्यतः दी जाती थी ÷। चिकित्सा-शास्त्र का अध्ययन करने के लिये दूर-दूर से विद्यार्थी यहाँ पधारा करते थे। मगध-सम्राट् राजा बिंबिसार के प्रसिद्ध राजवैद्य जीवक ने तक्षशिला में ही शिक्षा प्राप्त की थी ×।

इन निर्देशों से उन विषयों का थोड़ा बहुत अनुमान किया जा सकता है, जिनकी शिक्षा इस संसार-प्रसिद्ध विश्वविद्यालय में दी जाती थी।

प्राचीन भारत के अनेक बड़े-बड़े व्यक्तियों ने तक्षशिला में ही शिक्षा पाई थी। राजा बिंबिसार के राजवैद्य का ऊपर उल्लेख किया जा चुका है। राजा पसेनदी (कोशल

* Ibid. Vol. II. p. 194-5.
† Ibid. Vol. III. p. 76, Vol. I. p. 126 etc.
‡ Ibid. Vol. I. p. 126 etc.
$ Ibid. Vol. V. p. 92 etc.

* Ibid. Vol. II. p. 60.
† Ibid. Vol. II. p. 32.
‡ Ibid. Vol. II. p. 68.
$ Ibid. Vol. IV. p. 283.
¶ Ibid. Vol. III. p. 249.
÷ E. B. Havell, Aryan Rule in India, p. 90.
× B. C. Law, Historical Gleanings, p. 1.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का प्रसिद्ध राजा, जो मगध-सम्राट् अजातशत्रु का समकालीन था) ने भी इसी विश्व-विदित विश्वविद्यालय में शिक्षा प्राप्त की थी *। आचार्य चाणक्य का भी यही शिक्षा-स्थान था †।

इस विवेचना से हम प्राचीन तक्षशिला-विश्वविद्यालय के संबंध में अनेक आवश्यक बातों का ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं। यह प्रसिद्ध विश्वविद्यालय बहुत समय तक विद्यमान रहा। पीछे से यह बौद्ध-धर्म के अध्ययन का सुविख्यात केंद्र बन गया, और इसने बड़े-बड़े बौद्ध आचार्य और प्रचारक उत्पन्न किए।

भावापहरण

[लेखक, श्रीयुत "हितैषी"]

(१)

इक भीजे चहले परे, बूड़े, बहे हज़ार ;
किते न औगुन जग करत, नय वय चढ़ती बार ?

(बिहारी)

ढाता है तरुण तरु बहुत, बहाता घर,
नाश करता है कुल-कीरति किसानी का ;
धीरज का बाँध तोड़ता है, छोड़ता है नहीं,
पल में डुबाता है सकल ज्ञान ज्ञानी का।
करता "हितैषी" पानीवालों को भी पानी-पानी,
मुँह मारता है तलवार के भी पानी का ;
होश बदहोश कर देता है गजब जोश
बढ़ती नदी का और चढ़ती जवानी का।

(२)

धूरि चढ़ावत सीस पर, कहु रहीम केहि काज ?
जेहि रज ऋषि-पतनी तरी, सोइ ढूँढ़त गजराज।

(रहीम)

डाँटे हैं मृगेंद्र औ, उपाटे तरु जिसने, वो
राह पर आता नहीं, खाता शूल पर शूल ;
सुकवि "हितैषी" त्याग सुखद स्वतंत्रता को,
परतंत्रता में, निरलज्ज हो, रहा है फूल।
जग में कहाकर बड़ा, यों बड़ी नाक रख,
जिल्लत की जिंदगी से तो है मरना कबूल !
मोचकर आँसू, डालता है धूल देह पर,
गज सोचकर—हा ! हा ! ऐसे तन पर धूल।

* B. C. Law, Historical Gleanings, P. I.

† E. B. Havell, Aryan Rule in India, p. 90.

सम्मति

कविवर पंडित सूर्यकांत त्रिपाठी "निराला" लिखते हैं—माधुरी के संपादन से सम्मार्जित आप लोगों की योग्यता 'सुधा' में और चमकी है। मैं निःसंदेह कहूँगा, सुधा अपनी प्रथम संख्या से ही प्रथम श्रेणी की पत्रिका हो गई। हिंदी के बड़े-से-बड़े लेखकों और कवियों के अंतरंग सौंदर्य को सुधा के बहिरंग साधनों द्वारा रूप मिल रहा है।

आपका अध्यवसाय, संचालन-शक्ति, पर्यवेक्षण, तत्परता और सौंदर्य-ग्राहिता आदि प्रशंसनीय हैं। पत्रिका को आपने ख़ूब सुंदर कर दिया है।

CC-0. In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection. Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शाही कमीशन क्या करेगा ?

बतावें तुमको कि मरने के बाद क्या होगा ?
पुलाव खायँगे अहबाब, फ़ातिहा होगा।
(स्व० कविवर अकबर)

घर बैठे लीजिए

सच्चा बनारसी माल

काशी-सिल्क की धोतियाँ, डुपट्टे, साफ़े, कोट-कमीज़ के रेशमी कपड़े, सच्ची ज़री की साड़ियाँ, साफ़े, डुपट्टे और हर तरह के बनारसी ज़रीदार कपड़े। आपके शहर के भाव से फ़ी रुपया चार आना किफ़ायत की गारंटी। विशेष जानकारी के लिये हमसे लिखा-पढ़ी कीजिए।

बनारस-शिल्प-व्यापार-कार्यालय, नं० १०१ (S), बनारस-सिटी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

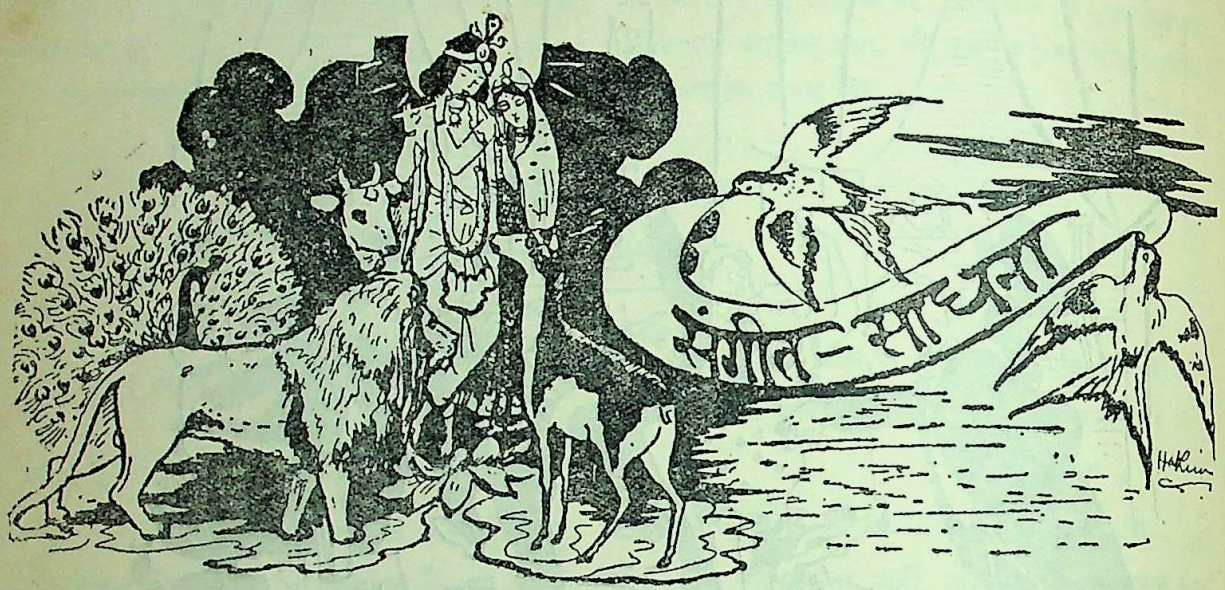

शब्दकार—श्रीमैथिलीशरण गुप्त] [स्वरकार—श्रीलक्ष्मणदास मुनीम

मिश्र आसावरी—तीन ताल

गीत

हम सब हैं हिंदू-संतान ;
जिए हमारा हिंदुस्तान !
जैन, बौद्ध, सिख, आर्य अशेष,
सब हिंदू-कुल के ही वेष ;
फिर क्या विग्रह, क्या विद्वेष !
छेड़ो मधुर मिलन की तान ।

स्थायी

×		३		×		२	
रे रे म म		प—सनी सं		ध नी प ध		प — — प	
ह म स ब		हैं ऽ हिं ऽऽ		दू ऽ सं ऽ		ता ऽ ऽ न	
म म — म		प नी ध प		म प म ग		रे ग रे स	
जि ए ऽ ह		मा ऽ रा ऽ		हिं ऽ दु स्		ता ऽ ऽ न	

अंतरा

०		३		×		२	
म — म प		— प ध ध		सं — सं सं		सं — — सं	
जै ऽ न बौ		ऽ द्ध सि ख		आ ऽ र्य अ		शे ऽ ऽ ष	

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नी	नी	नी	—	नी	—	सं	सं	नी	सं	रें	सं	नी	ध	प	—	प
स	ब	हिं	ऽ	दू	ऽ	कु	ल	के	ऽ	ऽ	ही	ऽ	वे	ऽ	ऽ	ष
प	गं	रें	गं	सं	रें	नी	सं	धनी	सरें		सं	नी	ध	प	—	प
फि	र	क्या	ऽ	वि	ऽ	अ	ह	क्याऽ	ऽऽ		वि	ऽ	द्वं	ऽ	ऽ	ष
म	—	म	—	प	नी	ध	प	म	प	म	ग		रे	ग	रे	स
छे	ऽ	ड़ो	ऽ	म	धु	र	मि	ल	न	की	ऽ		ता	ऽ	ऽ	न

स्वर-लिपि-संबंधी संकेत

१. जिन स्वरों के नीचे बिंदु हो, वे मंद्र स्थान के समझने चाहिए; जिन स्वरों के नीचे या ऊपर बिंदु न हो, वे मध्य स्थान के हैं; जिन स्वरों के ऊपर बिंदु हो, वे तार स्थान के हैं।

२. जिन स्वरों के नीचे—इस प्रकार की लकीर हो, वे कोमल हैं; जिस स्वर के ऊपर। ऐसी खड़ी लकीर हो, वह तीव्र स्वर है।

३. जिस स्वर-लिपि में ताल-भाग के ऊपर + ऐसा चिह्न हो, उस स्थान पर ताल का सम समझना चाहिए; जिस ताल-भाग के ऊपर १, २, ३, ४ इत्यादि अंक दिए हों, वे ताल के क्रमशः दूसरे भाग समझे जाने चाहिए; जिस ताल-भाग के ऊपर ० ऐसा बिंदु हो, वह ताल का ख़ाली भाग है।

यात्रियों के लिये ख़ास सुविधा !

हिंदी संसार में हलचल मचा देनेवाली

सर्वोत्तम साहित्यिक, सामाजिक

और सचित्र मासिक पत्रिका

मेसर्स ए० एच० ह्वीलर-कंपनी के रेलवे-बुक-स्टालों पर भी मिलती है।

हावड़ा, पटना, मोग़लसराय, इलाहाबाद, कानपुर, अलीगढ़, बनारस, प्रतापगढ़, फ़ैज़ाबाद, लखनऊ, कानपुर सिटी, बरेली, मुरादाबाद, हरद्वार, देहरादून, लखनऊ सिटी, काठगोदाम, ग़ाज़ियाबाद, दिल्ली, मेरठ छावनी, सहारनपुर आदि बड़े-बड़े स्टेशनों पर ख़ास प्रबंध किया गया है।

अगर आप सुधा का नमूना देखना चाहते हैं, तो अपने पास के बुक-स्टालों से ।।।) में ख़रीद सकते हैं। इस प्रकार वी० पी० के ख़र्च की बचत भी रहेगी।

मैनेजर सुधा, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१. खोज

निर्जन वन था और बीहड़ पथ !!

स्वर्णमयी संध्या आकाश को चूमकर चली गई थी। इस समय तरंगित नीलांबर में उज्ज्वल तारे निर्निमेष पलकों से सुधांशु की प्रतीक्षा कर रहे थे। पर उनका कुछ पता नहीं।

सुनसान अँधेरी रात थी। मैं रह-रहकर इधर-उधर देखने लगता और हृदय चिल्ला उठता—"अभी तो बहुत दूर जाना है।" निदान मैं थककर एक वृक्ष के नीचे बैठ गया। क्षण-भर विश्राम लेकर फिर चल पड़ा। सैकड़ों जुगनू आशा की स्वर्ण-ज्योति से चमककर मुझे प्रकाश दिखलाने लगे। चारों तरफ़ झनझन-झनझन हो रहा था। मेरे पैर काँपते-काँपते ज़मीन पर पड़ते थे; मेरे भय की सीमा नहीं थी।

यह क्या ! मैं जिस मार्ग से आ रहा था, वह एकाएक भूल गया, लौटना कठिन हो गया। पूजा की सामग्री मेरे हाथों में थी, उसे सँभाले हुए धीरे-धीरे आगे ही बढ़ चला।

अचानक किसी ने पुकारा—"इस भीषण रजनी में अकेले कहाँ?"

मैंने फिरकर देखा, वह मेरे ही-जैसा कोई व्यक्ति था, पर उसके मुख पर शांति मुसकिरा रही थी।

मैंने कहा—"मैं मार्ग भूल गया हूँ।"

उसने कहा—"कई वर्ष हुए, जब मैं भी पहली बार इधर ही आया था, तो मार्ग भूल गया था।"

"तो क्या आपको वह निर्दिष्ट स्थान प्राप्त हो गया?"

"हाँ, बड़ी साधना और आराधना के बाद।"

"सुना है, वहाँ पहुँच जाने पर मनोकामना पूर्ण हो जाती है!"

"हाँ।"

"तो मेरी भी मनोकामना पूर होगी ? मैंने तो उपासना में बहुत समय बिताया है!"

"जाओ, वहाँ पहुँचने पर ही तुम्हारी उपासना का निर्णय होगा।"

"अभी कितनी दूर जाना है?"

"थोड़ी ही दूर, इस नदी के उस पार।"

बातों से हृदय को साहस हुआ, पाँव जल्दी-जल्दी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उठने लगे। मैं वहाँ पहुँच ही तो गया। उस तोरण, कलश और बंदनवार से सुशोभित द्वार पर लिखा हुआ था—"प्रेम-मंदिर"।

मेरे पहुँचते ही द्वार खुला, और मैं बेधड़क भीतर चला गया। पूजा समाप्त कर मैंने प्रेमदेव को साष्टांग प्रणाम किया।

उन्होंने प्रसन्न होकर कहा—"तुम्हें क्या चाहिए?"

मैंने कहा—"नाथ, केवल एक भिक्षा।"

उन्होंने कहा—"पहले तुम इस मंदिर के सब पुजारियों से भेंट कर लो, फिर तुम जैसा चाहोगे वैसा ही प्रबंध होगा।"

प्रेम-पुजारियों के दर्शन हुए। कुछ लोग ध्यान में निमग्न थे, कुछ आहें भर-भरकर आँसू बहा रहे थे। सभी का तन जर्जरित और मुख पीला था। आँखों में विफलता बस रही थी।

उन लोगों को दिखाकर प्रेमदेव ने पूछा—"क्या इस दल में तुम मिलना चाहते हो?"

मैंने कहा—"यदि शांति मिले, यदि प्रियतम का दर्शन मिले तो—"

उन्होंने कहा—"तुम अपने प्रियतम को पाकर सुखी न हो सकोगे। फिर लौटकर वापस आओगे; किंतु यहाँ का नियम है कि दूसरी बार वरदान नहीं मिलता। ख़ूब विचार कर लो।"

मैंने कातर कंठ से कहा—"स्वामिन्, कोई ऐसा वरदान दीजिए जिससे हृदय को भीषण ज्वाला में पड़कर जलना न पड़े।"

उन्होंने कहा—"अच्छा, तो तुम जिसे चाहते हो, उसे पाने की अभिलाषा कभी मत करना, नहीं तो सब सुख चला जायगा। केवल आराधना करो, उपासना करो, इसी में अक्षय सुख है।"

मैंने कहा—"जो आज्ञा।"

❀ ❀ ❀

उस दिन ब्राह्म-मुहूर्त में मैं नदी-तट पर बैठा हुआ प्रेमोपासना कर रहा था। उस समय कनक-किरीटिनी उषा भी शायद किसी की आराधना में लगी हुई थी।

दूर से अचानक किसी के आने की आहट मिली। फिरकर देखा। देखता ही रहा। स्तब्ध हो गया। अवाक् हो गया। चकित हो गया।

एक कोकिल-कंठी ने कहा—"प्रियतम, तुम्हारी विकलता मुझे खींच लाई है। मैं तुम्हारी हूँ, मुझे स्वीकार करो।"

मैंने कहा—"प्रिये, मैं तुम्हें अब नहीं चाहता। तुमने व्यर्थ कष्ट किया—विलंब—अति विलंब।"

"फिर क्या मेरा ध्यान नहीं करते?"

"करता हूँ; किंतु तुम्हें पाने की अभिलाषा पूरी हो गई, तुम्हें पा चुका। तुम लौट जाओ। क्षमा करो।"

सुंदरी ने खिलखिलाकर कहा—"तुम पागल तो नहीं हो गए हो?"

"तो क्या इस पागलपन को भी देख लेना चाहती हो?"

"अच्छा, मैं फिर आऊँगी, तब तक तुम इस पर विचार कर लेना—"

❀ ❀ ❀

उस दिन से मेरे ध्यान का रूप बदल गया। अब मैं यही सोचता हूँ कि वह आराधना की मूर्ति अब कब आवेगी!

विनोदशंकर व्यास

× × ×

२. भगवान् श्रीकृष्ण का जन्म-पत्र

सुधा के वर्ष १, खंड १, संख्या १ में माननीय पं० लज्जारामजी मेहता का ५वाँ कुसुम बड़ा अच्छा खिला है। माननीय मेहताजी ने यह लिखा है—"आस्तिक ज्योतिषी इस जन्म-पत्र के आधार पर इस बात की जाँच करें कि वास्तव में यह जन्म-पत्र कहाँ तक सही है, और श्रीकृष्ण को स्वधाम पधारे ठीक कितने वर्ष हुए।" माननीय मेहताजी ने यह भी लिखा है—"मैं ज्योतिषी नहीं हूँ, और न मुझे इस प्रकार की बातों में विशेष रुचि है।" यह बात हमारी समझ में नहीं आती कि जब माननीय मेहताजी महाराज ज्योतिषी नहीं, और न इस प्रकार की बातों में उन्हें विशेष रुचि है, तब भला इस विषय को क्यों छेड़ बैठे? अस्तु।

भगवान् श्रीकृष्ण की जन्म-कुंडली, जो कि हमारे अप्रकाशित ग्रंथ "कुंडली-संग्रह" में है, इस प्रकार है—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

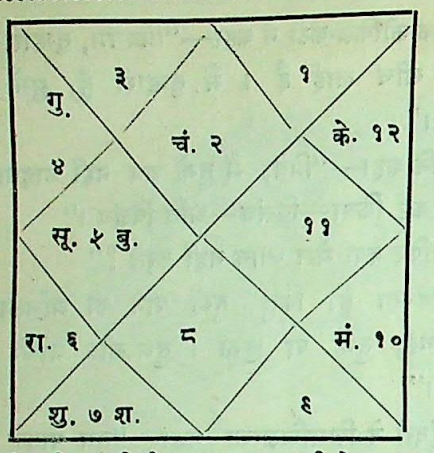

माननीय मेहताजी के पूज्यपाद गुरुजी ने महात्मा सूरदासजी के पद्य के अनुसार जन्म-पत्र तैयार किया है; परंतु उस जन्म-पत्र में गड़बड़ है। फलित ज्योतिष में बारह भावों, दशाओं और वर्ष-मासादिकों के फलों का घनिष्ठ संबंध उनके स्वामियों से होता है; तदनुसार भगवान् श्रीकृष्ण के जन्म-पत्र के ग्रहों का विचार होना चाहिए। महात्मा सूरदासजी ने कुंडली पर सूक्ष्म विचार नहीं किया। उन्होंने कुंडली पर स्थूल विचार किया है। वह तो भगवद्भक्त थे, कृष्ण-भक्ति में शराबोर रहते थे। वह अपने उपासक को, आराध्य देवता को, अपने इष्ट को कभी राधा के साथ बाँसुरी बजाते, सखियों के साथ झूला झूलते, गोप-कन्याओं और वधुओं के साथ रास रचाते, राधा के पैर पड़ते, चंद्रावली के केश सँवारते, दधि-माखन चुराते देखते थे। उन्हें ज्योतिष के सूक्ष्म विचार से मतलब ही क्या? महात्मा सूरदासजी ने कहा है—

"नीच-ऊँच जुवती बहु भोगै सप्तम राहु परयो है"

परंतु सप्तमेश मंगल पाप-राशि में स्थित है, एतदर्थ सप्तम भाव का फलादेश महात्मा सूरदासजी के कथनानुसार सही नहीं। जाया-स्थान में राहु पाप-ग्रह है। वह महा अनिष्टकारक है। वह स्त्री-सुख से वंचित रखता है। सप्तमेश मंगल पाप-राशि (शनि) में होने से भी फलादेश यही निकलता है कि भगवान् कृष्ण को स्त्री-सुख से रहित होना चाहिए।

पापभे पापसंयुक्ते कवौ नारीसुखोज्झितः।
(भावकुतूहल, श्लोक २६)

इस पद से यह सिद्ध होता है कि मेहताजी महाराज की प्रेषित की हुई कंडली संशोधन के योग्य है। 'ईश्वर' संवत्सर तथा 'हर्षण' योग के फल उत्तम हैं।

मान्यवर मिश्रबंधुओं ने भारतवर्ष के इतिहास के अध्याय १६वें में श्रीकृष्ण का जन्म-संवत् वि० पूर्व १५०० बतलाया है, जो कि बड़ी खोज से लिखा हुआ है। माननीय मेहताजी के पूज्य गुरुजी की गणना भी शायद संशोधन चाहती है। मेहताजी महाराज ने वादा किया है—"मैं इस विषय में पूज्यपाद पंडितजी का मत प्रकाशित करने का उद्योग करूँगा।" अतः हम निवेदन करते हैं कि आप मत प्रकाशित कीजिए, हम बड़ी दिलचस्पी से उस पर अपने विचार प्रकट करेंगे।

छोटेराम शुक्ल (साहित्यरत्न)

× × ×

३. "तुलसी-सो सुत होय"

हिय-हुलसी 'हुलसी'-निकट सुरपुर-बनिता जोय;
सब यहि बर हित तप करति तुलसी-सो सुत होय।
हिंदी सन भाषा सबै कहति, गरब निज खोय,—
जतन करहु सखि, कौन बिधि तुलसी-सो सुत होय।
चमकावत नभ-गोद कहँ ज्यों रबि, ससि मिलि दोय;
त्यौं हिंदी कौ सूर अरु तुलसी-सो सुत होय।
कलुष-कालिमा काटि दिय काव्य-कौमुदी धोय;
धनि-धनि भाषा, देस, जहँ तुलसी-सो सुत होय।

× × ×

४. चित्र

धन्य भागि प्रिय, दरसन पाए;
मन मैं रहे, हाथ मैं आए।
हृदय में भी छबि खिंची औ' हाथ की तसवीर में;
निकल तो जाओ भला फँस दोहरी ज़ंजीर में!

श्रीललितकुमारसिंह "नटवर"

× × ×

५. हिंदी-भाषा और पाठ्य पुस्तकें

हिंदी-प्रचार के साथ हिंदी में पाठ्य-पुस्तकों का अभाव दिन-दिन बढ़ता ही जाता है। इधर तीन-चार वर्षों से कई प्रांतों (युक्तप्रांत, बिहार, मध्यप्रांत आदि) के स्कूलों और कॉलेजों में हिंदी को अधिकाधिक स्थान मिल रहा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है। यद्यपि वह अभी बहुत थोड़ा है। वास्तव में देखा जाय, तो स्कूलों और कॉलेजों में ही हिंदी को यथोचित स्थान दिलाने से इसकी पूरी उन्नति हो सकती है।

विद्यालयों में हिंदी-प्रचार में सबसे बड़ा बाधक हिंदी में पाठ्य-पुस्तकों का अभाव ही दिखलाई देता है। योग्य शिक्षकों के न मिलने तथा पाठ्य-पुस्तकों के अभाव से बहुत-से लड़के, इच्छा रहते हुए भी, हिंदी माध्यम को छोड़, अँगरेज़ी में ही सब विषयों को पढ़ते हैं। पाठ्य पुस्तकों के वर्तमान रहने पर साधारण शिक्षक भी काम चला लेते हैं, और लड़कों को भी विशेष कोई कठिनाई नहीं पड़ती।

हिंदी में अभी पाठ्य-पुस्तकों का बहुत कुछ अभाव है। बहुत ही कम प्रकाशक और लेखक हिंदी में विभिन्न विषयों की पाठ्य-पुस्तकें प्रकाशित करने में लगे हैं। दो-चार प्रकाशक जो इस कार्य में लगे हुए हैं, वे भी केवल निम्न श्रेणियों की पाठ्य-पुस्तकें ही प्रकाशित कर अपने कर्तव्य की इतिश्री समझ बैठे हैं। यह बात ठीक है कि पहले-पहल पाठ्य-पुस्तकों के प्रकाशन से बहुत कम लाभ होगा; परंतु कुछ ही समय में उनका प्रचार हो जाने पर यथेष्ट लाभ होने लगेगा, जो बाहरी पुस्तकों पर बहुत कम संभव है।

भूगोल, विज्ञान, गणित (रेखा-गणित, बीज-गणित आदि), तर्कशास्त्र, अर्थशास्त्र और न्यायशास्त्र आदि अनेक विषयों पर हिंदी में शायद ही कोई नाम लेने लायक़ पाठ्य-ग्रंथ अभी तक प्रकाशित हुआ है। कॉलेजों की बात तो अलग रही, हाई स्कूलों में भी पढ़ाने लायक़ कई विषयों पर कोई भी पाठ्य ग्रंथ हिंदी में प्राप्य नहीं है। इस कारण जो क्षति हिंदी-प्रेमी छात्रों और शिक्षकों की हो रही है, वह कदापि हिंदी के भविष्य के लिये अच्छी नहीं है। बड़ी ही लज्जा की बात है कि राष्ट्र-भाषा हिंदी में, इतने बड़े-बड़े प्रकाशकों और लेखकों के होते हुए भी, अभी तक पाठ्य-पुस्तकों का अभाव दूर नहीं हुआ।

आशा है, हिंदी के सुयोग्य लेखक और प्रकाशक मेरी इस अति आवश्यक प्रार्थना पर शीघ्रातिशीघ्र ध्यान देकर हिंदी में पाठ्य-पुस्तकों के अभाव को अतिशीघ्र दूर करने का उद्योग करेंगे। मुझे पूर्ण विश्वास है कि प्रकाशकगण शीघ्र ही हिंदी में सब विषयों के, सब वर्गों के लिये, भरपूर पाठ्य-ग्रंथ प्रकाशित कर हिंदी के ऊपर लगाए जाने-वाले इस कलंक को दूर कर देंगे *।

मंगलप्रसादसिंह (हिंदू-विश्वविद्यालय)

× × ×

६. हमारी जन्म-भूमि

जन्म-भूमि जननी हमकौं स्वर्गहु सों प्यारी;
है को या सम पूज्य त्रिजग मधि कहहु हमारी।
सुखद, सुभग, सुठि स्वर्गमयी अनुपम छबि-धारी;
सजला, सफला, सस्य-स्यामला सब गुनवारी।
अमरावति हू लजत जासु सुचि छटा निहारत;
जासु बिपुल द्रुम, लता, कुंज लखि सुर-तरु हारत।
गंग-जमुन अवगाहि सकल तन ताप निवारत;
बैठि सुसीतल छाँह सघन तरु की स्रम टारत।
ह्याँ को मधुर सुधा-मय मधु अरु नूतन माखन;
और कहाँ मिल सकत नेक हू देखन, चाखन?
बरबस चित्त-चुरावन, हठि सहृदय-मन-राखन;
कानन कलरव करन विहँग-अवली मृदु भाखन।
लैकै नित नव भेंट प्रकृति सेवा महँ आवति;
कला-कुसल निज कर-कमलनि सुठि साज सजावति।
अरपति ऋतु-अनुकूल फूल, फल, चित्त रिझावति;
परम मनोहर दृस्य दिखावति, हिय हरसावति।

---

* हम तो अब तक हिंदी-साहित्य को केवल उच्च कोटि के साहित्यिक ग्रंथ-रत्नों से ही भरने के प्रयत्न में लगे रहे हैं, यद्यपि इसी प्रयत्न में अनेक सुंदर-सुंदर पाठ्य-ग्रंथों का भी निर्माण हो गया है, जो विभिन्न विश्वविद्यालयों, गुरुकुलों, विद्यापीठों, विद्यालयों और सरकारी स्कूलों में पढ़ाए भी जा रहे हैं। आगे हमारा विचार है कि श्रेष्ठ साहित्य-पुस्तकों के प्रकाशन के साथ-ही-साथ उत्कृष्ट और उपयुक्त पाठ्य-ग्रंथों को भी अपने यहाँ से निकल रही चारों (गंगा-पुस्तकमाला, महिला-माला, बाल-विनोद-वाटिका और सुकवि-माधुरी-माला) सीरीज़ों में छापें। यह तभी संभव है, जब विभिन्न शिक्षा-संस्थाएँ हमें अपनी आवश्यकताओं की सूचना देती रहें, और सुयोग्य, लब्धप्रतिष्ठ लेखक उनकी पूर्ति करने में हमारा हाथ बटावें। हम चाहते हैं कि प्रति वर्ष १०-१५ पुस्तकें तो हम निकालें ही।—संपादक और अध्यक्ष गंगा-पुस्तकमाला।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

झर-झर करि कहुँ झरत सैल सों झरना सोहत ;
महकि-महकि बन पुहुप कहूँ रसिकन हिय पोहत ।
हरित-भूमि सुख-पुंज कुंज कहुँ जन-मन-मोहत ;
लोभत कहुँ सुर-बृंद, कहूँ मघवा मग जोहत ।
हिम-गिरि छत्र लगावत, कटि-पट बिंध्य सँवारत ;
निसि-दिन जाके परम पूज्य पग सिंधु पखारत ।
जहाँ जनमिबे हेत विबुधगन हूँ ललचावत ;
धारत नित उर ध्यान, कहत जय भारत, भारत ।

दामोदरदास चतुर्वेदी

× × ×

७. विद्या-दान और धनिक

ओफ़ ! कैसा समय है। चारों तरफ़ हाहाकार मचा हुआ है ! क्या किया जाय, कहाँ जाया जाय ? भारत की कैसी दयनीय दशा है ! और बातें तो दूर, खाने तक का ठिकाना नहीं। ओफ़ ! हृदय फटा जाता है। क्या भारत के बच्चे सदैव ही अन्न विना, ज़रूरी चीज़ों के विना तड़पते ही रहेंगे ? क्या होगा, भारत की क्या दशा होगी ? ईश्वर ही रक्षा करे।

किन पापों का फल हमें इस तरह मिल रहा है ? फिर क्या भारत-वासियों ने ही पाप किए हैं ? क्या हमें ही ऐसा कड़ा दंड मिलेगा ? दूसरे देश आगे बढ़े जा रहे हैं। वहाँ सुख है, संपत्ति है, स्वास्थ्य है । पर हमारे लिये कुछ भी नहीं !

ओफ़ ! कैसी रोमांचकारी दशा है । भारत के सारे पुरातन आदर्श मिट गए । एक वह ज़माना था, जब विना दाम के सब कुछ मिलता था। और अब ? अब यदि तुम्हारे पास पैसा नहीं, तो चाहे तुम्हारा हृदय विद्या-जैसी श्रेष्ठ वस्तु प्राप्त करने को तड़प रहा हो, तो भी कोई तुम्हें धन से सहायता देनेवाला नहीं । कितने दानी पुरुष आज भारत में हैं, जिन्होंने लड़के-लड़कियों की शिक्षा के लिये वज़ीफ़े दे रक्खे हों ? हज़ारों की तनख़्वाह पाने-वाले, नित्य सैकड़ों की आमदनीवाले इसी भारत में मौजूद हैं ; पर क्या उन्हें कभी इसका ध्यान आता है कि उन्हें जो ईश्वर ने इतना दिया है, उसे वह थोड़ा-सा परोपकार में लगाकर पुण्य के भागी बनें ? नहीं, उन्हें इस बात का ध्यान ही नहीं रहता कि संसार में कोई ऐसा व्यक्ति भी है, जो इस थोड़े से धन विना अधोगति को प्राप्त हो रहा है ।

यदि भारत में कोई सच्चा दानी हुआ है, तो वह प्रातःस्मरणीय ईश्वरचंद्र विद्यासागर थे। संभव है, वह इतने उदार और दानी न होते, यदि उन्होंने बचपन में बुरे दिन न देखे होते। एक आदमी दूसरे की हीन स्थिति का पूर्ण रूप से तब तक अनुभव नहीं कर सकता, जब तक स्वयं उसे पार न कर चुका हो। भूख की ज्वाला को वह आदमी क्या जानेगा, जो स्वयं कभी भूखा न रहा हो ?

वे धनी विद्यार्थी, जिनके घर पर घोड़े-गाड़ियाँ खड़ी हैं, मास्टर घर पर पढ़ाने आते हैं, जो स्कूलों या कॉलेजों में अच्छे बोर्डिंगों में रहते हैं, जो विना किसी असुविधा के विद्योपार्जन करते हैं, कैसे उस हृदय की ज्वाला का अनु-भव कर सकते हैं, जो धनाभाव के कारण स्कूल तथा कॉलेज के स्वप्न देखा करता है—जो दिन-रात इसी चिंता में घुला जाता है कि कैसे विद्वान् बनें ? तनिक उस युवा (या युवती) की स्थिति के ऊपर ध्यान दो, जिसे स्कूल में सदैव वज़ीफ़ा मिलता रहा हो, जिसे मास्टर तथा अड़ोसी-पड़ोसी सभी प्रतिभाशाली मानते हों, और जो मैट्रिक पास कर चुकने के बाद पिता से कहता हो—"पिताजी, मैं और पढ़ूँगा ।" पर पिता अपनी आर्थिक स्थिति को देख-कर उसे कुछ भी जवाब न दे सकता हो, और हृदय में ख़ून का घूँट पीकर रह जाता हो । ऐसे समय में जो कोई उस युवा की आर्थिक सहायता करेगा, वह उसके लिये क्या देव-दूत न होगा ? अवश्य होगा । परंतु भारत में ऐसे कितने देव-दूत हैं ।

यदि विद्यासागर-जैसे दो-चार व्यक्ति भी भारत में आज पैदा हो जायँ, तो इस दुखी भारत के बहुत-से कष्ट कम हो जायँ, यह फिर अपना प्राचीन गौरव प्राप्त करने में समर्थ हो जाय।

क्या भारत के धनिक इस ओर ध्यान देंगे ?

कुमारी कौशल्यादेवी गोरोवाला

× × ×

८. उपचार *

आइकै लाल भली ही करी, तुम्हैं
पाइकै जान गई परि जान मैं ;

* एक कवि-सम्मेलन में "पान में" समस्या की पूर्ति।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रेम-परिच्छा से जानिकै "रंगी" वियोग के
सोग को रोग-निदान मैं ।
दै मुसक्यान ही के मधु दर्स की औषधि
संपुट-सी अँखियान मैं ;
लीन्ह्यो जियाइ मरयो बिरही हू पियाइकै
रूप-सुधा अनुपान मैं ।
रामशंकर त्रिपाठी "रंगी"

× × ×

९. रूस एवं शिक्षा-प्रचार

एक समय था जब रूस शिक्षा में, योरप-भर में सबसे पिछड़ा हुआ था। वहाँ के स्वेच्छाचारी शासक शिक्षा-प्रचार को 'अपने पैर में आप कुल्हाड़ी मारना' समझे हुए थे। उनकी धारणा थी कि यदि प्रजा को शिक्षित बनाने की ओर तनिक भी ध्यान दिया गया, तो वह अपने हाथ से निकल जायगी, और तब उसे पुनः अपने अधीन रखना टेढ़ी खीर हो जायगा। अतएव उसे अज्ञानांधकार में ही रखना श्रेयस्कर है, और तभी वह हमारी दासता की शृंखलाओं में शांति से जकड़ी हुई रक्खी जा सकेगी। फल-स्वरूप वहाँ की अवस्था उस समय बड़ी ही शोचनीय हो रही थी। अधिकारी-वर्ग प्रजा पर मन-माना अत्याचार करता था। उसके सामने चूँ तक भी करने का किसी को अधिकार न था। बहुतों का कहना है कि शनैश्चर की दृष्टि जिस व्यक्ति पर पड़ती है, उसे हानि उठानी पड़ती है। परंतु स्वार्थ, तेरी बलिहारी है। जिसके ऊपर तेरी दृष्टि पड़ जाती है, वहाँ तो सब चौपट ही हो जाता है। अपने अनुयायी को नष्ट-भ्रष्ट करके ही तू शांत होता है, उसके अस्तित्व को इस भूमंडल से मिटा देने में ही तुझे विश्राम मिलता है। रूस में भी वही दृश्य सामने आया। प्रजा रात-दिन के अत्याचार सहते-सहते अधीर हो उठी। अधिक अत्याचार सह सकने की शक्ति उसमें शेष न रह गई। स्वेच्छाचारी शासकों के अमानुषिक कुकृत्यों से प्रजा का रक्त उबल उठा। परिणाम इसका यह हुआ कि सन् १९१७ ई० में वहाँ पर भारी क्रांति हुई। उससे शिक्षा का स्वरूप भी पलट गया। देखते-ही-देखते उस समय के और इस समय के रूस में आकाश-पाताल का अंतर हो गया। आज सभ्य संसार के सामने सुशासन की डींग मारनेवाले ब्रिटिश साम्राज्य द्वारा विगत डेढ़ सौ वर्ष से शासित भारतवर्ष को रूस केवल अपने अल्पाति-अल्प-कालीन परिश्रम के कारण शिक्षा देने योग्य हो गया है। यह भारत-भाग्य-विधाताओं के लिये बड़ी ही लज्जा की बात है। सन् १९१८-१९ ई० में ब्रिटिश भारत की जन-संख्या २४ करोड़ ४० लाख थी, जिसमें से ७३ लाख स्कूल और कॉलेजों में शिक्षा पाते थे। सन् १९२३-२४ में यह संख्या बढ़कर ८६ लाख हो गई। इस हिसाब से यह कहा जा सकता है कि प्रायः २४½ करोड़ जनता में से ब्रिटिश सरकार इतने दीर्घकाल में एक करोड़ व्यक्तियों को भी साक्षर नहीं कर सकी। अब यदि दूसरी ओर दृष्टि डाली जाय, तो यह कहना ही पड़ेगा कि सोवियट रूस के रूसी प्रजातंत्र, ह्वाइट रशिया, युक्रेन और ट्रांसकाकेशिया, इन चार बड़े प्रजा-तंत्रों में केवल इस अल्प काल ही में शिक्षा-संबंधी युगांतर उपस्थित हो गया है। इन चारों प्रजा-तंत्रों के १३ करोड़ ४० लाख मनुष्यों में १ करोड़ से कहीं अधिक स्कूलों और कॉलेजों में पढ़ते हैं। नीचे की सूची से दोनों देशों की तुलना कर देखिए—

रूस के प्राथमिक और माध्यमिक स्कूलों में पढ़नेवाले विद्यार्थियों की संख्या	९१,६४,०००
३,३३८ बालोद्यानों में पढ़नेवाले विद्यार्थियों की संख्या	२,५७,७१५
१,१६४ संयुक्त बालोद्यानों में पढ़नेवाले विद्यार्थियों की संख्या	६१,४५०
२६४ आश्रमों में पढ़नेवाले विद्यार्थियों की संख्या	३६,७३५
गूँगों और बहरों के विद्यालयों में पढ़नेवाले विद्यार्थियों की संख्या	३३,८२६
काम-काज की शिक्षा जहाँ दी जाती है, ऐसे ३,०३० विद्यालयों में पढ़नेवालों की संख्या	२,८३,५०६
११४ कारीगरी के कॉलेजों में पढ़नेवाले विद्यार्थियों की संख्या	४३,१०९
९०३ औद्योगिक विद्यालयों में पढ़नेवाले विद्यार्थियों की संख्या	१,६२,१९७
१७० कॉलेजों में उच्च शिक्षा प्राप्त करनेवाले विद्यार्थियों की संख्या	१,७०,८११
कुल	१,०२,१३,४४९

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इनके अतिरिक्त भिन्न-भिन्न आयुवाले विद्यार्थियों के लिये भिन्न-भिन्न पाठशालाएँ वहाँ पर स्थापित की जा चुकी हैं।

भारत—प्राथमिक एवं माध्यमिक स्कूलों में पढ़नेवाले विद्यार्थियों की संख्या	७६,३१,७८१
१५६ आर्ट्स कॉलेजों में पढ़नेवाले विद्यार्थियों की संख्या	५६,८१४ / १,६२२
३४ मेडिकल कॉलेजों और स्कूलों में पढ़नेवाले विद्यार्थियों की संख्या	८,९३६
१३ 'लॉ' कॉलेजों और स्कूलों में ,, ,, ,,	७,३५१
२० 'कृषि' कॉलेजों और स्कूलों में ,, ,, ,,	९९९
१४१ व्यापारिक कॉलेजों और स्कूलों में ,, ,, ,,	८,९५८
इंजीनियरिंग कॉलेजों और स्कूलों में ,, ,, ,,	२,७३९
	कुल ७७,१९,२००

इनके अतिरिक्त यहाँ पर कारीगरी के भी दो-चार स्कूल एवं कॉलेज हैं। परंतु इनमें से आज तक ऐसा कोई छात्र नहीं निकला, जिसने इस संबंध में प्रसिद्धि पाई हो। यहाँ पर ११ विश्वविद्यालय सरकारी और २ ग़ैर सरकारी भी हैं। सरकारी विश्वविद्यालय तो प्रायः परीक्षा लेनेवाले हैं। दो-तीन विश्वविद्यालय पढ़ानेवाले भी हैं। भारत में आयु के लिहाज़ से भिन्न-भिन्न स्कूल नहीं हैं।

नंदकिशोर अग्रवाल चौधरी

× × ×

१०. मैं

मैं हूँ सुंदर ऊषा-काल ;
मैं हूँ अरुण गगन सु-विशाल।
मैं हूँ दर्शनीय रवि बाल ;
मैं हूँ स्वर्ण-किरण की माल।
मैं हूँ फूलों की मुसकान ;
मैं हूँ मधुपों का मधु-गान।
मैं हूँ लता-रचित नव कुंज ;
मैं हूँ अमल कमल मृदु पुंज।
मैं हूँ चंचल मलय-पवन ;
मैं हूँ द्रुम-दल का कंपन।
मैं हूँ 'झरझर'-मय निर्झर ;
मैं हूँ श्वेत तुषार-शिखर।
मैं हूँ घन-माला अभिराम ;
मैं हूँ 'रिमझिम' वृष्टि ललाम।
मैं हूँ हरित भूमि कोमल ;
मैं हूँ इंद्र-धनुष छवि-थल।
मैं हूँ कोकिल की पंचम तान ;
मैं उपवन की श्री अम्लान।
मैं हूँ नंदन सुरभि अनंत ;
मैं हूँ सुंदर तरुण वसंत।
मैं हूँ निर्मल नील गगन ;
मैं हूँ लघु-प्रकाश उडुगन।
मैं हूँ एक शुभ्र घन-खंड ;
मैं हूँ सुकवि, अनादि, अखंड।

सोहनलाल द्विवेदी विशारद

× × ×

११. अमेरिका के एक विश्वविद्यालय का व्यय

मनुष्य का ज्ञान-भांडार इतना समृद्ध और विद्या का क्षेत्र इतना विस्तृत हो गया है कि वर्तमान समय में किसी भी विश्वविद्यालय को सर्वांग-संपन्न बनाना अति दुष्कर कार्य हो उठा है। इसका एक उदाहरण अमेरिका के एक विश्वविद्यालय से लीजिए।

सन् १९१३ ई० में कोलंबिया-विश्वविद्यालय में ९,३७९ विद्यार्थी थे। उनमें २,१५५ विद्यार्थी परीक्षोत्तीर्ण तथा उपाधि-प्राप्त थे। दस वर्ष के बाद १९२३ ई० में छात्र-संख्या बढ़कर ३०,६१९ हो गई, और उनमें ३,५८९ छात्रों को उपाधि दी गई। सन् १९१३ ई० में वहाँ ८५१ अध्यापक तथा भिन्न-भिन्न विषयों के शिक्षक थे। १९२३ ई० में उनकी संख्या १,७८१ हो गई। विश्वविद्यालय के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बड़े-बड़े भवनों और अट्टालिकाओं की संख्या ५२ थी। इस विश्वविद्यालय में व्यायाम और खेलने की जगह ८० बीघे तक फैली हुई है। मेडिकल स्कूल को छोड़कर समूचा विश्वविद्यालय २४० बीघे ज़मीन में अवस्थित है।

सन् १९२३ ई० में बर्नार्ड-कॉलेज, शिक्षा-कॉलेज तथा मेडिकल कॉलेज के व्यय को छोड़कर केवल विश्वविद्यालय का व्यय २५ करोड़ रुपए कूता गया था।

इधर ब्रिटिश भारत में शिक्षा के लिये, १९२२-२३ ई० में, १९ करोड़ ४ लाख ४ हज़ार ३६ रुपए व्यय हुए थे। संपूर्ण भारतवर्ष के सब प्रकार के विद्यार्थियों की शिक्षा के लिये ख़र्च किए गए रुपए की अपेक्षा अमेरिका के केवल एक विश्वविद्यालय में (३०,६१९ छात्रों के लिये) ६ करोड़ रुपए अधिक व्यय हुए।

यह निर्विवाद सिद्ध है कि अमेरिका अतुल संपत्तिशाली देश है, और भारतवर्ष निर्धन। किंतु तिस पर भी अमेरिका जितना ख़र्च केवल एक विश्वविद्यालय के लिये करता है, संपूर्ण ब्रिटिश भारत, प्राइमरी विद्यालय से लेकर विश्वविद्यालय तक, सब प्रकार की शिक्षाओं के लिये उसकी अपेक्षा कम व्यय करता है। इसी से जाना जा सकता है कि हम किस प्रकार शिक्षा में पिछड़े हुए हैं।

गोपीनाथ वर्मा

× × ×

१२. तिरस्कृत

किसी विजन वन के प्रांतर में सूने गौरव की हूँ राह;
बड़ी-बड़ी अभिलाषाओं की एक सिसकती-सी हूँ आह।
वैभव की निर्धनता हूँ मैं, निर्धनता का वैभव हूँ;
गौरव का भोला शैशव हूँ, अपयश का मैं गौरव हूँ।
तिरस्कार ही के काले अंचल में पला हुआ प्राणों—
सुख से सहता हूँ अपमानों की मैं सारी मनमानी।
दुख से छके हुए प्राणों का थका हुआ कोमल तन हूँ;
करुणा के चरणों पर अपना चढ़ा चुका यह जीवन हूँ।

हरिकृष्ण विजयवर्गीय "प्रेमी"

× × ×

१३. श्रीलतीफ़हुसेन की शुद्धि

बिहार-प्रांत में दो हिंदी-साहित्य-सेवी मुसलमान सज्जन प्रसिद्ध हैं। एक बेतिया (चंपारन) के श्रीयुत पीरमुहम्मद मूनिस, और दूसरे मुज़फ़्फ़रपुर के श्रीयुत लतीफ़हुसेन। किंतु मूनिसजी केवल राष्ट्रीय विचार के गद्य-लेखक हैं, और लतीफ़हुसेन गद्य-लेखक के साथ कवि भी हैं—अलावा इसके बिहार के अनेक सार्वजनिक कार्यों में दिलचस्पी लेनेवाले एक उत्साही और कर्मठ नवयुवक भी। हिंदी-पत्र-पत्रिकाओं के पाठकों को यह मालूम है कि गत आश्विन-वदि ८, रविवार (१८ सितंबर, १९२७) को बिहार-प्रांतीय हिंदू-सभा द्वारा आपकी शुद्धि हुई है, जिसके कारण कुछ सामयिक पत्रों में आपका संक्षिप्त परिचय भी प्रकाशित हो चुका है। फिर भी यह परिचय लिखने की आवश्यकता इसलिये पड़ी कि उन परिचयों में आपके विषय की रहस्यपूर्ण बातें प्रकट नहीं हुई हैं। इसलिये हिंदी-संसार अभी तक आपके वास्तविक परिचय से वंचित है। आशा है, इस लेख से उन महाशयों का कौतूहल शांत होगा, जो आपकी शुद्धि होने के बाद से आपके अब तक के जीवन की अप्रकट घटनाएँ जानने को उत्सुक हैं। हाँ, उन्हें सबसे पहले यह जान लेना चाहिए कि शुद्धि के बाद आपमें केवल 'चुटिया' और 'जनेऊ' की ही वृद्धि हुई है, और आपका हिंदू नाम पड़ा है ठाकुर ललितकुमारसिंह नटवर। उनकी वेष-भूषा और आचार-विचार, पद्धति पहले भी आज ही-जैसी थी, और इसीलिये यद्यपि प्रांत में या हिंदी-संसार में आप मुस्लिम नाम से परिचित थे, तथापि अपने हमजोलियों और हम साहित्यिक मित्रों की पंगत में वह बहुत पहले से ही शुद्ध माने जा चुके थे। अस्तु।

आपके पिता—बाबू महादेव सिंह—उज्जैन-वंशीय क्षत्रिय थे। वह शाहाबाद (आरा)-ज़िले के 'महुआर' ग्राम (थाना ब्रह्मपुर) के निवासी थे, और मुज़फ़्फ़रपुर की म्युनिसिपलिटी में पहले तहसीलदार और फिर बाद को सब-ओवरसियर रहे। उन्होंने आपके जन्म (ज्येष्ठ-कृष्ण १५, गुरुवार, सं० १९५५) के दो साल बाद अपनी दूसरी शादी—अपने ही क्षत्रिय-समाज में—की थी, जिससे उत्पन्न हुए पुत्र बाबू जगन्नाथसिंह अभी वर्तमान हैं। वह इस बार आपकी शुद्धि और सहभोज में स्वतः सम्मिलित हुए थे। बाबू महादेवसिंहजी की वह दूसरी विवाहिता पत्नी भी अभी जीवित हैं, और उनके सगे छोटे भाई बाबू मथुरासिंहजी भी। इन लोगों की सामाजिक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ठाकुर ललितकिशोरसिंह (शुद्धि से पहले)

परिस्थिति आज तक बड़ी पवित्र, प्रतिष्ठित एवं संतोषजनक है। पीरपौंती (भागलपुर) में इनकी अच्छी गृहस्थी और खेती-बारी है। बाबू जगन्नाथसिंह की आरंभिक शिक्षा आपही के साथ मुज़फ़्फ़रपुर में हुई थी। उनमें तो अभी तक भ्रातृत्व का इतना माद्दा है कि वह बड़े आग्रह से आपको अपने घर ले जाना चाहते हैं। किंतु मुज़फ़्फ़रपुर से आपके जीवन की घनिष्ठता इतनी बढ़ी हुई है, और वहाँ का आपका नागरिक जीवन इतना सम्मान्य तथा सार्वजनिक बन गया है कि अभी आप वहाँ से अन्यत्र जाना नहीं चाहते। वहाँ की आपकी सखा-शिष्य-मंडली ही आपका अपना परिवार हो रही है।

आपकी माता का नाम पानकुँअरि था। वह मुज़फ़्फ़रपुर-ज़िले के 'ससौला' ग्राम (थाना, शिवहर) की रहनेवाली थीं। उनके नाना पहले शाकद्वीपी-ब्राह्मण थे, जो बाद को मुसलमान हो गए थे; किंतु उनके पिता शेख़ मदारू मियाँ ख़ानदानी मुसलमान थे। बाबू महादेवसिंहजी उनको बहुत छोटी उम्र में ही मुज़फ़्फ़रपुर लाए थे। उसी समय से अपने घर के अंदर, विवाहिता पत्नी के समान, बड़ी प्रतिष्ठा और पवित्रता के साथ, उन्हें पर्दे में रखते थे। वह भी, जब से बाबू साहब के आश्रय में आईं, हिंदू-गृहिणी की तरह, नित्य बड़ी स्वच्छता से नहाती-धोती और खाती-पीती थीं—कभी किसी मुसलमान के घर खाया-पिया नहीं। १९१९ के सितंबर में उनका देहांत हुआ, और वह मुसलमानी रवाज के अनुसार दफ़नाई गईं। आपके पिता तो सन् १९१५ में ही स्वर्गवासी हो चुके थे, और उनका दाह-कर्म हिंदू-रीति के अनुसार ही उक्त बाबू जगन्नाथसिंह ने किया था।

माता के सदाचार का प्रभाव आप पर ख़ूब पड़ा। आपने भी कभी अभक्ष्य-भोजन नहीं किया—१९१३ ई० से तो बिलकुल निरामिषभोजी हो गए—खान-पान और आचार-विचार में बड़े संयत रहे—रहन-सहन और संग-सोहबत पर केवल हिंदुत्व की ही छाप रही। बचपन से ही हिंदू-धर्म पर श्रद्धा और विश्वास रहा। अपने पिता और लँगोटिया यारों के साथ बराबर हिंदू-मंदिरों और उत्सवों में बेरोक-टोक आते-जाते रहे। फलतः लड़कपन से ही श्रीकृष्ण की भक्ति के रंग में रँग गए। वृंदावन के कवि-सम्मेलन में आपकी कृष्णभक्तिमयी कविता सुनकर पं० किशोरीलालजी गोस्वामी ने जब आपको 'रहीम' कहकर वाहवाही दी, तो पं० जगन्नाथप्रसादजी चतुर्वेदी ने छूटते ही कहा था कि मैं तो इन्हें पहले ही 'रसखान' की पदवी दे चुका हूँ। वास्तव में आप आधुनिक 'रसखान' हैं भी।

छुटपन में आपकी शिक्षा-दीक्षा साधारण-सी हुई थी। कुछ दिन तक मिडिल में पढ़ने के बाद मामूली तौर से थोड़ी-बहुत अँगरेज़ी, उर्दू और संस्कृत की प्रारंभिक शिक्षा पाई। यों तो अब बँगला और गुजराती भी टटोल लेते हैं। आरंभिक शिक्षा के समय से ही आप बड़े खेलवाड़ी, नटखट, विनोदी और साहसी रहे। अभी तक, इस २९ वर्ष की अवस्था में भी, आपकी जवानी ने आपके बचपन को ख़राब नहीं किया है। लड़कों के साथ—चाहे वे जहाँ कहीं के हों, या जिस किसी के हों—चुटकियों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में मिलनसारी बढ़ा लेना और उनके रंग में रँगकर अपने बाल-स्वभाव का जौहर दिखा देना आपके बाएँ हाथ का खेल है। यह इतनी लड़कपन की मस्ती और चुल-बुलाहट होते हुए भी आपकी दशा ठीक महावीर हनुमान्-जैसी है, जो दूसरों द्वारा अपनी शक्ति की याद दिलाए विना गोवर-गणेश बने रहते थे। आप भी वैसे ही बड़े आलसी स्वभाव के पर कार्य-काल में अत्यंत स्फूर्तिशाली हैं। आपके स्वभाव में अजगर-जैसा आलस्य और खंजन-जैसी स्फूर्ति देखकर इस घोर वैपरीत्य पर वस्तुतः आश्चर्य होता है।

हिंदू-समाज से घनिष्ठ संबंध होने के कारण आपके हृदय में हिंदी-प्रेम का जो बीज-वपन हो चुका था, वह सन् १९१३ ई० से अंकुरित होने लगा। आप १९१३ से १९१८ ई० तक मुज़फ़्फ़रपुर की प्रसिद्ध हिंदी-भाषा-प्रचारिणी-सभा के पुस्तकालयाध्यक्ष रहे, और इसी काल में हिंदी पत्र-पत्रिकाओं तथा पुस्तकों के निरंतर पाठ से लेख आदि लिखने की ओर आपकी प्रवृत्ति हुई। उसी समय से हिंदी-सभाओं और अन्य सार्वजनिक उत्सवों में सम्मिलित होकर व्याख्यान आदि सुनने और उनकी रिपोर्ट तत्कालीन पत्रों में भेजने लगे। इससे आपकी रचना-शक्ति की विशेष स्फूर्ति हुई। यों तो आप बहुत छोटी अवस्था—११-१२ वर्ष की उम्र—से ही टूटी-फूटी रचनाएँ करने लगे थे। पहले दोहा, चौपाई, गीतों और नौटंकी के तर्ज़ पर ईशभक्ति, देशभक्ति, तथा अधिकांश व्यंग्य-विनोद से पूर्ण स्वाभाविक रचनाएँ करते चले गए। आपकी उस समय की रचनाएँ प्रायः आपके बाल-सहचरों द्वारा सभा-सोसाइटियों में गाई-सुनाई भी जाती थीं। उनमें से अधिकांश रचनाएँ आप ही के द्वारा १९१३ ई० में ललित-राग-संग्रह नामकी पुस्तिका में प्रकाशित हुई थीं। फिर तो १९१५ ई०—प्रायः १५-१६ वर्ष की अवस्था—से आपकी रचनाएँ सामयिक पत्र-पत्रिकाओं में धड़ल्ले से छपने लगीं। पहले 'प्रताप', 'पाटलिपुत्र', 'प्रभा,' 'संसार' आदि में छपीं, और अब, 'माधुरी', 'मतवाला', 'मनोरमा,' 'हिंदू-पंच' तथा 'विश्वमित्र' आदि में बराबर छपा करती हैं। किंतु पद्य-रचना में विशेष दत्त-चित रहने पर भी आप गद्य-रचना से बिलकुल उदासीन न रहे। आपके गद्य-लेखन का श्रीगणेश भी—जैसा मैं ऊपर कह चुका हूँ—सन् १९१३ ई० से ही हो चुका था। दैनिक 'भारत-मित्र' और 'कानपुर-गज़ट' के आप नियमित संवाद-दाता थे—सभा-समितियों के विवरण इनमें सोत्साह भेजते रहे। फिर बाद को 'पाटलिपुत्र', 'श्रीशारदा', 'सेनापति', 'अभ्युदय', 'आज', 'विश्वमित्र', 'प्रताप' आदि में भी आपके कितने ही गद्य-लेख निकले।

ठाकुर ललिताकिशोरासिंह (शुद्धि के समय)

यद्यपि आप १९१६-१७ में मुज़फ़्फ़रपुर के रत्नाकर-प्रेस (जहाँ से 'सत्ययुग'-नामक सचित्र मासिक पत्र और स्वामी सत्यदेवजी की 'सत्य-ग्रंथमाला' निकलती थी) के असिस्टेंट मैनेजर रहे, तथापि सन् १९१९ ई० में आपकी उल्लेखनीय साहित्य सेवा का सूत्रपात हुआ। उसी साल आप बर्मन कंपनी (मुज़फ़्फ़रपुर) की रमणी-रत्नमाला के सहायक संपादक और प्रबंधक नियुक्त हुए, और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तदुपरांत १९२३-२४ में 'किसान-समाचार' (मुज़फ़्फ़रपुर) के संयुक्त संपादक एवं बिहारबंधु-प्रेस के मैनेजर तथा १९२५-२६ ई० में साप्ताहिक 'आशा' (मुज़फ़्फ़रपुर) के प्रधान संपादक रहकर अपनी साहित्यिक लगन की आंशिक पूर्ति की। आपकी रचित पुस्तकों में (बाल-रचना—'ललित-संग्रह'को छोड़कर) 'गुलाल' (होली के सुधार-संबंधी गीतों का संग्रह) और 'चतुर चर' (बालचर-संबंधी नाटक) केवल दो ही प्रकाशित हैं। अभी कई अप्रकाशित हैं, जिनमें 'प्रजाशक्ति' (नाटक) 'तिरछी चितवन' (उर्दू के चुनिंदा शेरों का सटीक संग्रह) और 'बाँसुरी' (आपकी चुनी-चुनाई कविताओं का नवीन संग्रह) मुख्य है। 'नटवर' की 'बाँसुरी' अब शीघ्र ही बजनेवाली है!

अपनी सार्वजनिक सेवाओं के कारण बिहार में आप बहुत लोकप्रिय हो गए हैं। नेताओं से लेकर जनता तक—सब आपको प्यार और आदर ही की दृष्टि से देखते हैं। बिहार-प्रांत की सबसे पहली सेवा-समिति (भारतीय नवयुवक-समिति)को आप ही ने १९१६ में स्थापित किया था, जिसके आप १९२६ तक प्रधान मंत्री रहे, और अब तक भी उसके प्रधान कार्यकर्ता तथा नाट्यकलाध्यक्ष हैं। यह समिति मुज़फ़्फ़रपुर की एक जीवित संस्था है। आप ही के उद्योग से मई, १९२० ई० में मुज़फ़्फ़रपुर में सेवा-शिक्षण-क्लास खुला था, जिसमें ट्रेनिंग देने के लिये प्रयाग की सेवा-समिति की ओर से पं० वेंकटेश-नारायण तिवारी एम्० ए० आदि सज्जन आए थे, और जिसमें शिक्षा पाने के लिये मुज़फ़्फ़रपुर के अतिरिक्त, प्रांत के अन्य स्थानों से भी शिक्षार्थी आए थे। फिर उसी १९२० के सितंबर में, उक्त समिति के वार्षिकोत्सव के अवसर पर, भूतपूर्व 'सेवा'-संपादक ठाकुर छेदालाल एम्० ए० बार-ऐट-लॉ (ऑकसन) के सभापतित्व में समस्त बिहार-प्रांत की लगभग ५० सेवा-समितियों का सम्मेलन हुआ था। उसी सम्मेलन में सेवा-समितियों की एक निश्चित कार्य-प्रणाली स्थिर हुई, और 'बिहार-प्रांतीय सेवा-समिति' का संघटन हुआ, जिसके आप अभी कुछ दिन पहले तक प्रचार-मंत्री थे। सन् १९१९ के मई में प्रयाग जाकर आपने स्काउटिंग की शिक्षा प्राप्त की, और वहाँ से आकर बिहार में पहले-पहल उसी नवयुवक-समिति के अधीन स्काउटिंग-शाखा खोलकर उसकी ट्रेनिंग का प्रचार किया। फिर प्रयाग के बालचर-मंडल की ओर से आप बिहार-प्रांतीय-प्रचारक नियुक्त हुए। इस समय आप मुज़फ़्फ़रपुर-बालचर-मंडल के स्काउट-कमिश्नर हैं। यह बालचर-मंडल—जो बालोपकारिणी समिति के नाम से प्रसिद्ध है—केवल मुज़फ़्फ़रपुर की ही इस समय की जीवित सेवा-संस्था नहीं है, बल्कि बिहार-प्रांत-भर में एक ही सुदक्ष बालचर-मंडल है। इसी तरह कांग्रेस के भी आप अनन्य भक्त और कार्य-कर्ता हैं। १९१६ ई० से ही—दो-तीन अधिवेशनों को छोड़कर—आप बराबर कांग्रेस में जाते और अपने नगर तथा प्रांत में उसका कार्य करते हैं। सन् १९१६-१७ के होमरूल-आंदोलन के समय अपने नगर में आपने अच्छा काम किया था। असहयोग-काल में आप कांग्रेस-सेवक दल के ज़िला-कप्तान, गया-कांग्रेस के स्वयंसेवक दल के सहकारी प्रधान नायक तथा उसके आफ़िस-इँचार्ज और 'स्वराज्य-पुरी' के रक्षक थे। उसी युग में, जब कि सरकार द्वारा स्वयंसेवक दल को ग़ैरक़ानूनी मजमा क़रार दिया गया था, मुज़फ़्फ़रपुर में आपके अधीनस्थ लगभग ५०० सेवक सत्याग्रह-पूर्वक जेल गए थे, और, इसी प्रकार, अखिल भारतवर्षीय हिंदी-साहित्य-सम्मेलन में भी आप सन् १९१५ ई० से ही—दो-तीन अधिवेशनों को छोड़कर—बराबर भाग ले रहे हैं। छः वर्षों से आप उसकी स्थायी समिति के सदस्य और उसकी नाट्य-उपसमिति के नियोजक हैं। इतना ही नहीं, बिहार-प्रांतीय हिंदी-साहित्य-सम्मेलन के जन्म-दाताओं और कार्य-कर्ताओं में से एक आप भी हैं। आप ही के उद्योग से मुज़फ़्फ़रपुर में, कवि-समाज की तरह, 'हिंदी-साहित्य-परिषद्' की स्थापना हुई है, जिसमें समय-समय पर नियमित रूप से कविता-लेख-पाठ, कवि-सम्मेलन और पदक-वितरण आदि हुआ करता है। इसी 'परिषद्' ने इस बार अखिल भारतवर्षीय हिंदी-साहित्य-सम्मेलन को बिहार में निमंत्रित किया है। इस परिषद् के मंत्री भी आप ही हैं। इसके अतिरिक्त आप मुज़फ़्फ़रपुर की टाउन कांग्रेस-कमेटी के संयुक्त-मंत्री और हिंदू-सभा के सहायक मंत्री भी हैं।

अंत में आपकी सबसे बड़ी विशेषता का उल्लेख करके इस लेख को समाप्त करता हूँ। वह विशेषता है आपका नाट्य-कौशल। ऐसे तो सब रसों के पार्ट आप ख़ूबी से कर लेते हैं, पर वीर और हास्य-रस में आप बड़े ही पटु हैं। बिहार-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रांत के तो आप एक प्रसिद्ध और सफल अभिनेता गिने जाते हैं। नाट्याभिरुचि आपमें बाल्यावस्था ही से पनपने लगी थी। १०-११ वर्ष की अवस्था से ही रामलीलाओं और नौटंकी के स्वाँगों की आप नक़ल किया करते थे। बाद को १९१३ ई० से जब आपने हमजोलियों के सहयोग से एक नाटक-मंडली स्थापित की, तो रंगमंच पर अवतीर्ण होकर लगभग प्रतिवर्ष अपने अभिनव अभिनय से जनता को मुग्ध करने लगे। सन् १९२२ के लाहौर-वाले अखिल भारतीय हिंदी-साहित्य-सम्मेलन में "अभिनय के योग्य उच्चनाट्य-ग्रंथ और अभिनय के नियमों के निर्माण" के लिये उपसमिति नियत करने का प्रस्ताव आपही ने उपस्थित किया था, जो सर्वसम्मति से स्वीकृत हुआ था। बाद को उस उपसमिति के नियोजक भी आप ही चुने गए। आपने अब तक अपने रससिद्ध अभिनय-कौशल, भावुकता-पूर्ण कविता-पाठ तथा तत्परता-पूर्ण सेवा-कार्यों के लिये कई स्थानों से अनेक पदक एवं प्रशंसा-पत्र प्राप्त किए हैं। हाँ, आपकी एक विशेषता अभी और है—आप अभी तक अविवाहित हैं। किंतु फिर भी इतने सरस-हृदय कि परखना मुशकिल।

अहा! एक मज़ेदार बात छूटी जा रही है। शुद्धि के बाद आपके मित्रों ने एक पैसे का दंड उन लोगों के लिये नियत किया था, जो 'ललित' के बदले—पुराने अभ्यास के वशीभूत होने से—अकस्मात् 'लतीफ़' कह उठते थे। शुद्धि के चार दिन बाद जब मैं मुज़फ़्फ़रपुर पहुँचा, तो मुझे भी ९ पैसे दंड-स्वरूप देने पड़े थे। बिदा के समय, स्टेशन पर, जब गाड़ी खुली, तो मैंने जान-बूझकर आप-को पुकारकर कहा—"भाई लतीफ़! एक पैसा और लेते जाओ।" इस पर बड़ी हँसी हुई। वह मेरा दसवाँ पैसा आपके पास एक आख़िरी यादगार-सा रहेगा!

शिवपूजनसहाय

भारतीय कारीगरी का अनुपम दृश्य

इटावा भारतीय सिल्क

हमारे इस सिल्क के बनते ही काशी सिल्क, भागलपुरी, मद्रासी, चाइना आदि सभी सिल्क शर्मिंदा हो गए।

इसकी अनेक विशेषताएँ

यह काशी सिल्क से ज़्यादा सुंदर व मुलायम होने पर भी धुलने से चटकता या खिलता नहीं है। इसका बनवाया हुआ कपड़ा १० वर्ष तक ख़ूब इस्तेमाल करने से भी ख़राब न होकर जितना धुलता है, उतना ही फैशनेबिल मुलायम सुंदर बहार दिखलाता है। इसका प्राकृतिक हलका रंग सोफ़ियाना मनोहर पहिनने से ५००) रु० की पोशाक को भी लज्जित करता है। यह हर फ़ैशन, तथा हर ऋतु में एकसाँ काम देता है।

इतना मज़बूत होने के कारण ही यह सूती कपड़ों से सस्ता पड़ता है।

यह सूट तथा कोट के लिये सर्वांगसुंदर होते हुए भी इसके बंगाली काटके कुरते, क़मीज़, दुपट्टे, चादरे, अचकन, जामा आदि भी बहुत सुंदर बनते हैं, तिस पर भी—

सात गज़ लंबे ३२ इंच चौड़े थान का दाम २५); प्रति गज़ ३॥)

नापसंद होने से मूल्य वापिस

पता—दि स्वदेशी क्लाथ सप्लाई स्टोर, नं० २७, इटावा (यू० पी०)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

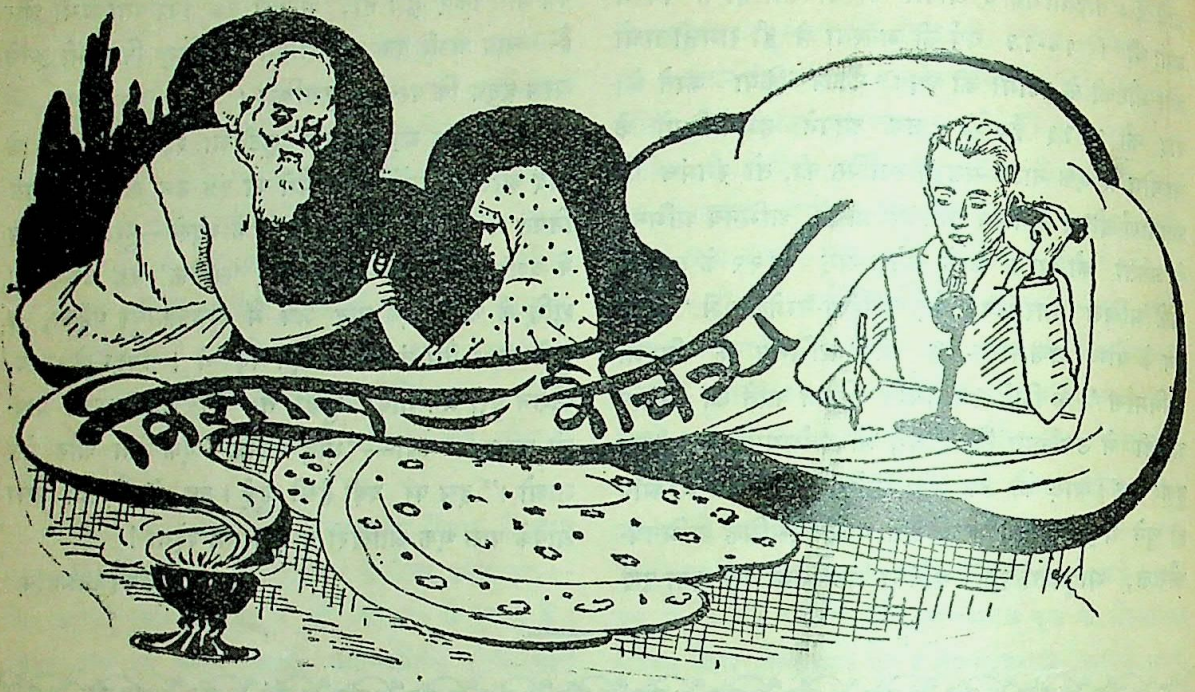

१. नई मोटर-साइकिल

मोटर-साइकिल की एक ऐसी साइड-कार बनी है, जिसमें दरवाज़ा लगाकर उसे बिलकुल सुरक्षित बना दिया गया है, और उसमें बैठनेवाला उसी आराम और शान के साथ बैठता है, जैसे किसी लैंडो या विक्टोरिया में।

× × ×

२. पानी में शिकार

पानी में निरापद होकर बंदूक़ से शिकार करने के लिये एक ऐसे शिकारी सूट का आविष्कार हुआ है, जिसमें हवा से फूल जानेवाला एक बैग लगा हुआ है। इसमें हवा भर दी जाती है, और इससे शिकारी नहीं डूबता। इसमें एक और सुविधा है। वह यह कि मारे जानेवाले पक्षियों को शिकारी के आगमन की सूचना नहीं होती, और यह फूली हुई थैली बंदूक़ रखने के लिये एक अच्छे सहारे का काम देती है।

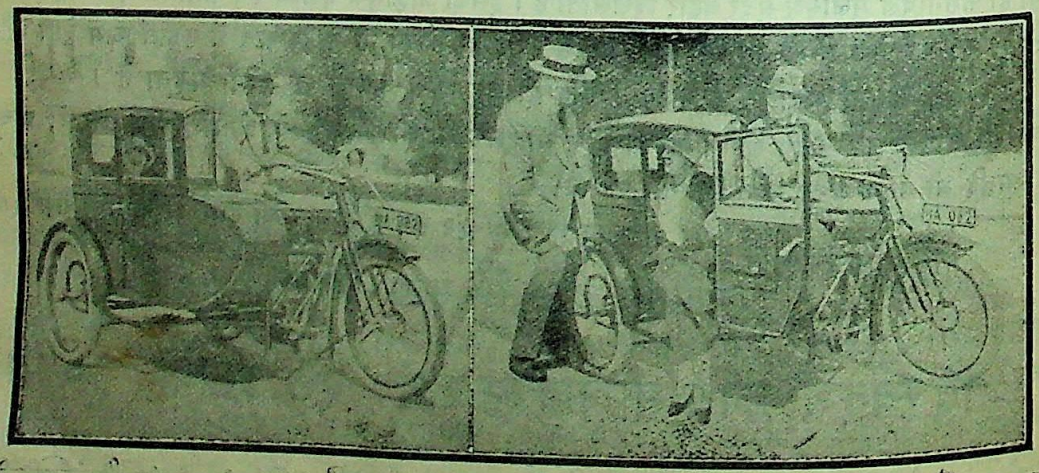

नई मोटर-साइकिल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पानी में शिकार

× × ×

३. हाथ की शक्ति से चलनेवाला हल

इसको एक आदमी हाथ के द्वारा मज़े में चला सकता है। अधिकतर इसका उपयोग छोटे-छोटे खेतों के गोड़ने में होता है। इसके चलाने में परिश्रम भी कम होता है। साथ ही यह हाथ में टाँगकर हर जगह आसानी से ले जाया जा सकता है। पहले चित्र में खेत जोतने की क्रिया का प्रदर्शन है और दूसरे में हल को ले जाते हुए दिखलाया है। यह हल जर्मनी में बना है।

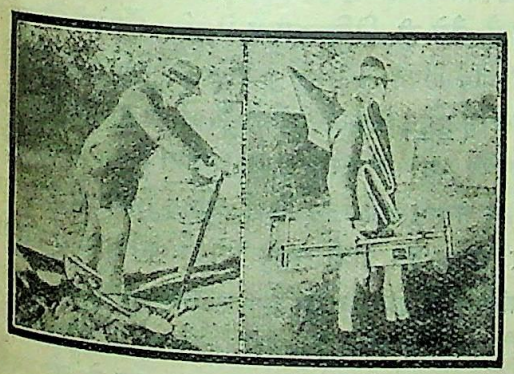

हाथ की शक्ति से चलनेवाला हल

× × ×

४. रेल की पटरी पर चलनेवाली बाइसिकिल

पाश्चात्य कारीगरों ने एक नवीन बाइसिकिल बनाई है, जिस पर चढ़कर रेलवे के कर्मचारीगण और बड़े-बड़े जंगलों के रक्षक थोड़े परिश्रम से निर्दिष्ट स्थान पर पहुँच जाते हैं। साधारण बाइसिकिलों की तरह यह भी पैर से चलाई जाती है।

रेल की पटरी पर चलनेवाली बाइसिकिल

× × ×

५. बच्चों का सहारा

छोटे बच्चों को सीधा बैठना सिखाने और उनको लुढ़कने से बचाने के लिये एक पेटी का निर्माण हुआ है। जिसकी पीठ में लोहे के हलके दो पैर लगे रहते हैं, जो बच्चे को गिरने नहीं देते, और उसके अंग-संचालन व खेल-कूद में बाधक भी नहीं होते।

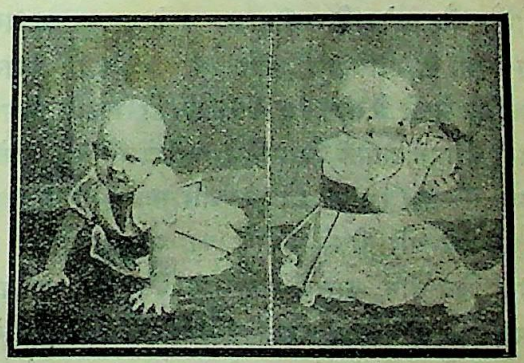

बच्चों का सहारा

× × ×

६. गाड़ी में जुता हुआ हिप्पो (दरियाई घोड़ा)

सर्कस में तमाशा दिखाने के लिये कैलिफ़ोर्निया की एक सर्कस-कंपनी ने इसे गाड़ी में जोत रक्खा है। चित्र

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में शिक्षक सवार दिखलाया गया है, जिनका नाम मिस्टर लोटस है।

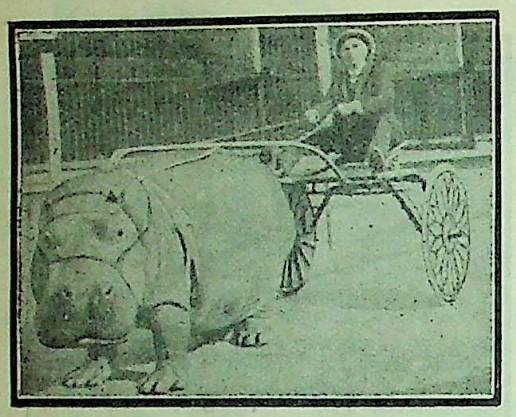

गाड़ी में जुता हुआ हिप्पो (दरियाई घोड़ा)

बदरीप्रसाद श्रीवास्तव

× × ×

७. तार द्वारा रंगीन चित्र

तार द्वारा संवाद-प्रेरण बहुत दिनों से हो रहा है। इधर इसके द्वारा फ़ोटो भेजने की भी व्यवस्था हुई है। अब वैज्ञानिक कुछ और आगे बढ़ने लगे हैं। अमेरिकन टेलीफ़ोन और टेलीग्राफ़-कंपनी ने घोषणा की है कि उसके वैज्ञानिकों ने तार द्वारा तिरंगा चित्र भेजने में सफलता प्राप्त की है। इस समय तिरंगे चित्र छापने के लिये तीन प्रकार के ब्लॉक और तीन रंग की रोशनाई व्यवहृत होती है, और प्रत्येक चित्र तीन बार छपने पर वह आकार ग्रहण करता है, जिसे हम लोग देखते हैं। इसी प्रकार रंगीन चित्र भेजने में तीन रंग के फ़ोटोग्राफ़ों से काम लिया जाता है। ये फ़ोटोग्राफ़ भिन्न-भिन्न तरीक़ों से लिए जाते हैं। एक में लाल रंग को छोड़कर और सब रंग रहते हैं; दूसरे में नीले और तीसरे में पीले का अभाव होता है। ये तीनों चित्र तीन बार में भेजे जाते हैं; किंतु ग्राहक-यंत्र पर एक ही स्थान पर वे अंकित होते हैं। इसलिये भेजे गए चित्र की प्रति-आकृति ग्राहक-यंत्र पर जैसी-की-तैसी छप जाती है।

× × ×

८. फलों को शीघ्र पकाना

पेड़ पर स्वाभाविक दशा में फलों के पकने में कई दिन या कई सप्ताह लग जाते हैं; किंतु यह बात वैज्ञानिकों को सह्य नहीं होती। मनुष्यों का जीवन अब पहले-सा नहीं रहा। उन्हें सभी पदार्थ तुरंत चाहिए। इसलिये वे अब फलों के पकने के लिये कई दिन खोना गवारा नहीं करना चाहते। फिर पेड़ों पर फलों के लगे रहने से उनमें कीड़े लगने का भय रहता है; पक्षी भी उन्हें कम नुक़सान नहीं पहुँचाते। इन बातों पर लक्ष्य रखकर सेंट पॉल के कृषि-विश्वविद्यालय के डॉ० आर० वी० हार्वे ने यह आविष्कार किया है कि यदि फलों को 'इथलिन'-गैस में रख दिया जाय, तो वे दिनों के बदले घंटों ही में पककर तैयार हो जायँगे। अमेरिका की केमिकेल सोसाइटी के सामने आपके आविष्कार की जाँच भी हुई थी, और वह ठीक निकला। इस गैस के व्यवहार से कीड़ों और पक्षियों का भय तो जाता ही रहता है, किंतु इससे फल भी मीठे हो जाते हैं, उनमें तुर्शी कम हो जाती है, और वे खाने में स्वादिष्ट जान पड़ते हैं। फल की खेती करनेवालों के लिये यह आविष्कार बड़े काम का है। भारतवर्ष का अनुभव है कि जब यहाँ फल पकने लगते हैं, तो बाज़ार में वे इतनी अधिकता से बिकने लगते हैं कि उनके ग्राहक नहीं मिलते, और उनमें से बहुत-से सड़-सड़कर नष्ट हो जाते हैं। किंतु उक्त आविष्कार से यह भय जाता रहेगा, और एक-एक फल की फ़सल बहुत दिनों तक रहेगी।

× × ×

९. क्या हम मुर्दे की तरह सोते हैं?

कहावत है कि सोने और मरने की अवस्था में फ़र्क़ नहीं। जैसे मृतावस्था में मनुष्य ज्ञान-शून्य और चेतना-शून्य हो जाता है, वैसे ही निद्रितावस्था में भी। अँगरेज़ी में कहते हैं—"He sleeps like a log." किंतु पिट्सबर्ग के मेलन-इंस्टीट्यूट के अठारह विद्यार्थियों की परीक्षा करने पर डॉ० एच्० एम्० जॉनसन ने पता लगाया है कि आठ घंटे की निद्रा में मनुष्य औसतन् सिर्फ़ चौदह मिनट ही निश्चिंत होकर सोता है। बाक़ी समय उसका मस्तिष्क चिंताओं से आंदोलित होता रहता है। चिंताओं में आर्थिक चिंता की ही प्रधानता होती है। परीक्षा-काल में ये १८ विद्यार्थी एक विशेष प्रकार के बिस्तरे पर सुलाए गए थे, जो उनकी हरएक मानसिक गति को अंकित करता जाता था। सारी रात में विद्यार्थियों ने औसत पैंतीस बार करवट बदली। अब आप ही बतलाइए, क्या हम मुर्दे या लकड़ी की तरह सोते हैं?

× × ×

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१०. बिजली में हज़ारों रुपया

वर्षा-ऋतु में मिनट में न-मालूम कितनी ही बार बिजली चमकती है। अन्य ऋतुओं में भी बिजली चमकती है, यद्यपि हम लोग केवल कुछ ही को देख पाते हैं। किंतु हम लोग यह नहीं जानते कि बिजली की प्रत्येक चमक में हज़ारों रुपए की विद्युत् नष्ट हो जाती है। इसकी छोटी-से-छोटी चमक आपके घरों को कम-से-कम चालीस वर्षों तक प्रकाशित कर सकती है। हरएक चमक में विद्युत्-शक्ति की ३०,००० किलोवैट घंटा (Kilowatt hours of electric power) निहित रहता है, जिसकी क़ीमत प्रायः छः हज़ार रुपए है। सारे संसार में सभी समय दो हज़ार बिजलियाँ चमकती हैं। इन चमकों में पृथ्वी निरंतर ४ खरब से भी अधिक अश्व-शक्ति खो रही है, अर्थात् इस समय संसार में जितनी विद्युत् पैदा की जाती है, उसका प्रायः हज़ारगुना अधिक। इँगलैंड के कैंब्रिज-विश्वविद्यालय के प्रोफ़ेसर सी० टी० आर० विलसन ने इन आँकड़ों को संसार के सामने रक्खा है। सुनने में आया है, इन प्राकृतिक बिजलियों को पकड़कर व्यवहार में लाने की चेष्टा हो रही है।

× × ×

११. वायु से सोना

सोना गलाते समय उसके कुछ कण वायु के साथ मिलकर उड़ जाते हैं। ये कण इतने कम और सूक्ष्म होते हैं कि उन्हें हम साधारणतः देख नहीं सकते। अमेरिका के Assay Office में, जहाँ सोने की ईंटें गलाई जाती हैं, इन कणों को रोक रखने की व्यवस्था की गई है। स्वर्ण-मिश्रित हवा उच्च-विद्युत्-संपन्न दो धातु के पत्तरों से होकर गुज़रती है। यहाँ वायु के स्वर्ण-कण विद्युत्-संपन्न होकर जमा हो जाते हैं, जो पीछे से हटा लिए जाते हैं। इस प्रकार अब प्रायः ४०,००० रुपए का स्वर्ण-कण जमा किया गया है।

× × ×

१२. विचित्र टेबुल

जिस टेबुल के विषय में यहाँ लिखा जा रहा है, उसके आकार-प्रकार में विचित्रता नहीं है, विचित्रता है उसमें लगनेवाली लकड़ियों में। सारा टेबुल लकड़ियों के ५१,००० टुकड़ों से बना हुआ है। इसके बनानेवाले सिन-

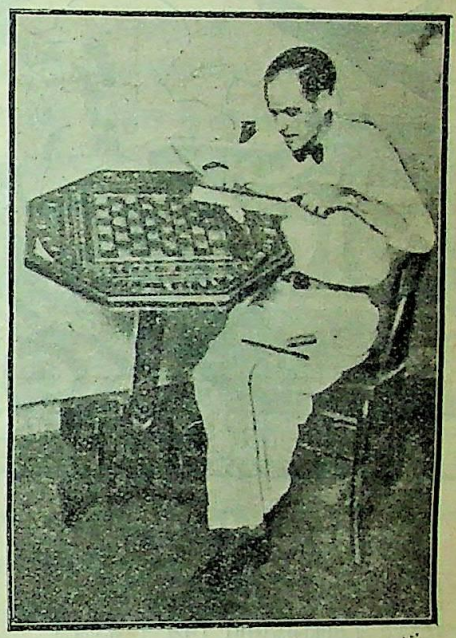

विचित्र टेबुल

सिनेटी के जॉर्ज एल्० हाथावे हैं। लकड़ियों को जमा करने में आपको १३,००० मील की यात्रा करनी पड़ी थी। इसमें संसार की प्रायः सभी दुर्लभ लकड़ियों का समावेश है। संसार के प्रसिद्ध-प्रसिद्ध वृक्षों के टुकड़े भी इसमें लगे हुए हैं। टेबुल का चित्र यहाँ दिया जा रहा है। इसे बनाने में ४१ महीने लगे हैं।

रमेशप्रसाद

अपूर्व अवसर ! चूकिए नहीं !!

जो साहित्य-प्रेमी फ़रवरी मास में सुधा के ग्राहक बनेंगे, उन्हीं को सुधा पहली संख्या से मिल सकेगी। फ़रवरी के बाद हम पहली संख्या से ग्राहक नहीं बना सकेंगे। कारण, अब पिछली संख्याएँ थोड़ी रह गई हैं। अतः ६॥) मनीआर्डर से भेजकर आज ही ग्राहक बन जाइए।

मनेजर सुधा, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१. चित्र के छः अंग

रूपभेदप्रमाणात्त भावलावण्ययोजनम् ;
सादृश्यं वर्णिकाभङ्गमिति चित्रं षडङ्गकम् ।

पर की कारिका वात्स्यायन के व्याख्याकार पं० यशोधर की रचना है। वह इसमें कहते हैं— चित्र के छः अंग हैं, अर्थात् इनमें से एक अंग भी दूषित या हीन होने से चित्र की अंग-हानि होती है, वह चित्र सर्वांगपूर्ण और सुसंपन्न नहीं होता। अच्छा वे छः अंग कौन हैं ? इस विषय की आलोचना पत्र-पत्रिकाओं में की जा चुकी है। श्रीयुत अवनींद्रनाथ ठाकुर और पर्सी ब्राउन साहब ने विशेष रूप से इसकी आलोचना की है। इस श्लोक में व्यवहृत 'रूप' शब्द का अर्थ एक चित्रकला के विशेषज्ञ विद्वान् की राय में अलंकार-शून्य स्वाभाविक शोभा है। रेखा से रूप का भेद प्रकट किया जाता है। रेखाओं के खींचने से रूप के भेद से विभिन्न अंग-प्रत्यंगों की स्वाभाविक शोभा को चित्रकार विकसित करता है।

अब रेखाओं के संबंध में सुनिए—

यद्यत्साधु न चित्रे स्यात् क्रियते तत्तदन्यथा ;
तथापि तस्या लावण्यं रेखया किञ्चिदङ्कितम् ।
(अभिज्ञानशाकुंतल)

अर्थात् चित्र में भी जिसे विकसित या प्रकट करना संभव नहीं हुआ, उस उसके लावण्य को अन्य प्रकार से कुछ अनिर्वचनीय रेखाओं द्वारा सूचित किया गया है।
(टीकाकार राघव भट्ट)

अतएव देखा जाता है कि रेखाओं का अंकन साधारणतः अंग-विशेष के रूप-भेद को प्रकट करने में प्रयुक्त होता है। किंतु स्थान-विशेष में वह वर्ण-विन्यास के अधिकार में भी हस्तक्षेप करता है। कारण, लावण्य का विकास वर्ण-विन्यास से ही साधित होता है। ऊपर उद्धृत श्लोक में देखा जाता है कि रेखाओं ने इस लावण्य को भी कुछ-कुछ अंकित एवं विकसित कर दिया है। यहीं पर चित्रकार की कारीगरी है, यह बात उसके लिये गौरव की है।

विद्धशालभंजिका का यह श्लोक गत संख्या की चित्रकला में उद्धृत किया जा चुका है—

क्रमपरिणतरेखामांसलैरङ्गभङ्गैः
लघुरपि लिखितेयं दृश्यते पूर्णमूर्तिः ;
अयमपि सुकुमारः सात्त्विकानां निवेश-
श्चतुरमसृणमुग्धं भावमाविष्करोति ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसमें क्रम-परिणत-रेखा शब्द से रेखाओं के खींचने की निपुणता सूचित होती है। रेखाओं ने मोटी-पतली होकर क्रम-परिणति के द्वारा तरल, चिकने भाव को प्रकट करने में भी कुछ सहायता की है। सांसल अंगभंगी के रूप-भेद को दिखाकर ही रेखाओं का काम समाप्त नहीं हो गया, भाव-लावण्य-योजना के अंतर्गत और भी कुछ—भाव के आविष्कार में सहायता भी—उन्होंने किया है।

अंग-प्रत्यंग के रूप-भेद को प्रकट करने के बाद षडंगक चित्र के प्रमाण-नामक अंश अर्थात् प्रकृष्ट मान (Proportion) की बात कही गई है। चाहे जिस कारण से हो, बहुत लोगों की धारणा यह है कि भारतीय चारु शिल्प में प्रमाण की नाप-जोख का झगड़ा बिलकुल नहीं था। वास्तु-शास्त्र में नर-मूर्ति बनाने का परिमाण आठ ताल और देव-मूर्ति का परिमाण नव ताल लिखा है। अवस्था और समय के भेद के अनुसार विभिन्न अंग-प्रत्यंगों के विभिन्न अनुपात से बढ़ने की बात उसमें निर्दिष्ट है। अतएव देखा जाता है कि उसमें केवल अंग-प्रत्यंगों की माप ही नहीं दी गई है, बल्कि अवस्था और काल के भेद से अंग-प्रत्यंग के बढ़ने का परिमाण अथवा विशेष अवस्था में अंग-विशेष के न बढ़ने की बात भी उसमें लिखी है।

इसके बाद भाव-लावण्य-योजना की बात है। पहले ही भाव के प्राधान्य में परिमाण और रूप-भेद को भूल न जाना चाहिए। रूप-भेद और परिमाण पर ध्यान रखकर उनके ऊपर भाव-लावण्य की योजना का विधान शास्त्र में है।

चित्र के 'सादृश्य'-नामक अंग की चर्चा पीछे की जायगी। उसके पहले अन्य अवशिष्ट चित्रांगों पर विचार कर लेना उचित जान पड़ता है। श्लोक में उल्लिखित 'वर्णिकाभंग'-नामक अंग को एक चित्रकला के विशेषज्ञ विद्वान् वर्ण-विन्यास बतलाते हैं। अब देखिए, चित्र का अंग-लावण्य क्या वस्तु है—

मुक्ताफलेषु छायाया दृश्यते यदिवान्तरा;
प्रतिभाति यदङ्गेषु तल्लावण्यं हि कथ्यते।

अर्थात् मोती की चमक की तरह जो अंगों में कांति देख पड़ती है, वही अंग-लावण्य है।

अब हम पूर्व-श्लोकांतर्गत 'सादृश्य' शब्द की सहायता से भारतीय चित्र की प्रकृति को समझने की चेष्टा करेंगे। भारतीय चित्र के छहो अंगों में प्रधान अंग यह सादृश्य ही है। यथा—

चित्रे सादृश्यकरणं प्रधानं परिकीर्तितम्।

भारतीय शिल्प की प्रधान वस्तु ही सादृश्य है। इस सादृश्य ने ही हमारी ललित कला के आदर्श को विशेषता दी है। शास्त्रीय नियम-तंत्र (Conventional) और वस्तु-तंत्र (Naturalistic), इन दोनों श्रेणियों के शिल्प के लिये सादृश्यकरण समान भाव से प्रयोजनीय है। प्रथमोक्त श्रेणी के शिल्प के अंतर्गत सचराचर लोकलोचन के अगोचर जीवों के अलावा, मानस दृष्टि से दर्शनीय देव-मूर्ति, कल्पवृक्ष आदि वस्तुएँ भी हैं। स्वभाव के बाहर लोक-चक्षु से न देखी जानेवाली वस्तुओं अथवा जीवों का भी सादृश्य हो सकता है। देव-मूर्ति आदि का अस्तित्व बाह्य जगत् में नहीं है; ऋषि लोग ध्यान-मग्न होकर इन्हें देख पाते थे। शास्त्र कहता है, ऋषि लोग भी सत्य-युग में इस प्रक्रिया से इन वस्तुओं को देख पाते थे। व्यक्ति-विशेष शायद अब भी ध्यानस्थ होकर इन वस्तुओं का प्रत्यक्ष कर सके। हाँ, शास्त्र की राय में कम-से-कम कलियुग में इनका साक्षात् ध्यान से भी दुर्लभ है। ऋषि लोग ध्यान में दर्शन करके इन वस्तुओं को जैसा देख पाया, वैसा ही इनका वर्णन अपने ग्रंथों में कर गए हैं। उस शास्त्र-वर्णित रूप के साथ उन चित्रों का सादृश्य-साधन और साधारणतः दिखाई देनेवाले जीवों के साथ उनके चित्रों का सादृश्य-साधन वास्तव में एक ही बात है। इस सादृश्य-साधन के अवकाश ने ही शिल्पी को शास्त्र-विधि की शृंखला के बीच अपना व्यक्तित्व विकसित करने की सुविधा दी है। कारण, इस सादृश्य का क्षेत्र है उसका मन—इसी जगह उसे सृष्टि करने का अवसर मिलता है। किंतु शास्त्र का इस पर भी पूरा ध्यान है कि इस सृष्टि के कार्य में शिल्पी का व्यक्तिगत ख़याल अधिक प्रबल न हो जाय। अतिक्षीण और अतिस्थूल देव-मूर्ति को शास्त्र ने अमांगलिक बतलाया है। कुछ भी हो, यह मानना ही पड़ेगा कि इस सादृश्य-नामक अंग ने हमारे शिल्प के 'दृष्ट' और 'अदृष्ट', दोनों विभागों को न्यूनाधिक परिमाण में भाव-मिश्रित कर दिया है। किंतु पाश्चात्य शिल्प में सादृश्य अर्थात् प्रतिकृति के ऊपर उतना ज़ोर नहीं दिया गया, और अनुकृति की ओर कुछ झुकाव अधिक पाया जाता है,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस कारण उसमें वस्तु-तंत्रता ही प्रबल देख पड़ती है। इसी कारण शरीर की नसें, मांसपेशियाँ और ग्रंथियाँ दिखाना ही पाश्चात्य शिल्प की रीति है, और भारत के चित्र-शिल्प में यह वर्जनीय है—सादृश्य के गौरव की हानि न हो, इस भय से निषिद्ध है। स्थूल बात यह है कि पाश्चात्य शिल्प में इस सादृश्य-साधारण के कई अभावों के कारण वस्तु-तंत्रता का प्राधान्य देख पड़ता है, और इस सादृश्य के प्रभाव के कारण हमारे चित्र-शिल्प में भावमयता की प्रबलता उसकी नियम-तंत्रता की नींव पर खड़ी है।

श्रीप्रफुल्लकुमार सरकार

× × ×

२. क्या भारतीय संगीत पाश्चात्य देशवासियों को प्रिय हो सकता है ?

यद्यपि आनंद तथा रस का भाव सर्वत्र समान है, तथापि शिक्षा तथा संस्कार की भिन्नता के कारण एक देशवासी दूसरे देशवासियों की कला का रस सहज भाव से ग्रहण करने में असमर्थ होते हैं। किसी देश अथवा जाति का मूल-प्राण समझने के लिये उसकी शिक्षा तथा संस्कार से पूर्णतया अभिज्ञ होकर उसके प्रति सहानुभूति प्रदर्शित करनी पड़ती है, यह बात निर्विवाद सिद्ध है। मानसिक चिंता-धारा के साथ हृदय का बहुत कुछ संबंध है। यहाँ पर यह कहा जा सकता है कि मानव-हृदय सर्वत्र समान है, इसलिये किसी देश की सुकुमार कलाओं का रस लेने के लिये किसी भी मानसिक चेष्टा की आवश्यकता न होकर, उनका प्रभाव दूसरे देश के लोगों के हृदय में स्वतः होना चाहिए। पर हम देखते हैं, ऐसा नहीं होता। कोई अच्छी कविता पढ़कर किसी छोटे बच्चे को सुनाइए। वह उसका रस लेने में कदापि समर्थ न होगा। कारण यह है कि उसकी बुद्धि अभी इतनी संस्कृत नहीं हुई कि वह उसका रहस्य समझ सके। इसी प्रकार हम देखते हैं कि रवींद्रनाथ की कविता का रसास्वादन करने में बहुत कम लोग समर्थ हैं। अधिकांश पाठकों को उनकी कविता फीकी तथा क्लिष्ट जान पड़ती है। रवींद्रनाथ की श्रेणी के कवियों की कविता का आनंद जिसे लूटना है, उसके लिये यह आवश्यक है कि वह रसिक हो, साथ ही उसका चित्त सुसंस्कृत हो।

यही बात गीत के संबंध में भी कही जा सकती है। जन-साधारण के सामने यदि उच्च श्रेणी का गीत अलापा जाय, तो उसका कुछ प्रभाव नहीं पड़ेगा। पर यदि दो-चार अच्छी-अच्छी ग़ज़लें गाकर गलेबाज़ी दिखलाई जाय, तो जनता मुग्ध हो जाती है। संगीत का रस लेने के लिये भी मानसिक उत्कर्ष की आवश्यकता है। चित्त जितना सुसंस्कृत होता जाय, गीत की सूक्ष्मताओं का भी वह उतना ही अनुभव कर सकेगा। हमारे कहने का तात्पर्य यह है कि हृदय के आनंद के लिये मस्तिष्क की सहायता लेनी ही पड़ती है।

यदि हम यह सोचते हैं कि भारतीय संगीत में विशेषता होने से योरपवासी उसका रस अवश्य ग्रहण करेंगे, तो हम भूल करते हैं। हमारी विचार-धारा से जब तक वे परिचित न हों, तब तक उन्हें हमारे संगीत में विशेष आनंद नहीं प्राप्त हो सकता। इसमें संदेह नहीं कि जर्मनी, फ्रांस तथा रूस के कुछ संगीत-विशेषज्ञ हमारे संगीत का रहस्य समझने में समर्थ हैं, और उसका रसास्वादन भी करते हैं; पर फिर भी अधिकांश लोग उसमें कुछ रस नहीं पाते। उसी प्रकार भारतवासियों को भी योरप का संगीत प्रिय नहीं मालूम देता।

संगीत में दो बातों की प्रधानता रहती है। एक भावावेग और दूसरा स्वर-वैचित्र्य। कुछ गीत ऐसे होते हैं, जिनमें स्वर-वैचित्र्य नहीं होता, पर जो अच्छी तरह से गाए जाने पर संगीत-विशेषज्ञों को भी मुग्ध कर देते हैं। ऐसे गीतों में भावावेग की प्रधानता रहती है। पर हमारे देश के दुर्भाग्य से यहाँ अधिकांश गायनाचार्य नीरस प्रकृति के लोग होते हैं। वे संगीत में आवेग के प्रति बिलकुल ध्यान न देकर अरसिक वैयाकरणों की तरह गीत के सूक्ष्मातिसूक्ष्म विश्लेषण द्वारा उसके टुकड़े-टुकड़े करके स्वर-वैचित्र्य तथा गलेबाज़ी प्रदर्शित करने में ही अपना गौरव समझते हैं। पर विलायत में यह बात नहीं पाई जाती। वहाँ आवेग की तरफ़ अधिक ध्यान दिया जाता है। जो संगीतकार अपने गीतों की राग-रागिनियों में अधिक गंभीर आवेग भर सकता है, वहाँ उसी की अधिक क़दर होती है। बीटोफ़ेन की रचनाओं पर वहाँ के लोग इसीलिये मुग्ध हैं। इस जर्मन संगीताचार्य के गीतों में इतना गंभीर भावावेग पाया जाता है कि भारतीय संगीतज्ञ भी उसकी मूर्च्छना पर मर मिटते हैं। यदि हमारी राग-रागिनियों में भी इसी प्रकार आवेग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की प्रधानता भरने की चेष्टा की जाय, तो उसे सुनकर योरप के लोगों के भी कान खड़े होने लगें।

योरप के संगीत में आनंद-उत्सव समय जीवन की चंचलता हिलोरें लेती हुई जान पड़ती है। भारतीय संगीत में विजन विश्व की शांत-क्लांत आत्मा अपने को ध्वनित करना चाहती है। भावावेग की इन दो धाराओं को संयुक्त करके यदि सामंजस्य प्रतिष्ठित करने की चेष्टा की जाय, तो योरपवासी हमारे और हम योरप के संगीत का रस लेने में समर्थ हो सकेंगे। हमारे वर्तमान तामसिक, अलस तथा निरानंदमय जीवन को जागरित तथा उत्तेजित करने के लिये पाश्चात्य संगीत के भावावेग की आवश्यकता है। पाश्चात्य देशवासियों को अपने असंतोष-पूर्ण, प्रतिहिंसामूलक, घोर राजसिक जीवन को संयत बनाने के लिये हमारे संगीत के अनंतोन्मुख आवेग की प्रशांत तथा गंभीर धारा की आवश्यकता है।

पाश्चात्य देशवासियों को यदि हमें अपने देश की सभ्यता के मूल-रहस्य से परिचित कराना है, यदि अपने देश की आत्मा के अंतरतम भाव से उन्हें प्रणोदित करना है, तो हमें अपने संगीत को ऐसा रूप देना होगा कि वह उनकी शिक्षा तथा संस्कार के अनुकूल भी हो, और उससे हमारे संगीत का मूल-प्राण भी अक्षत रहे।

"मायावादी"

सचित्र-रत्नाकर-ग्रंथ-माला

चित्रमय सती-संसार ! सचित्र बाल-तरुण-साहित्य !!

हिंदी में युगांतर

सर्वांग-सुंदर ! सर्व-सुलभ मूल्य !!

हिंदी में सर्व-सुलभ और सर्वांग-सुंदर सचित्र सती एवं बाल और तरुण-साहित्य। बढ़िया छपाई, ऐंटिक पेपर और एक सौ से अधिक नयनाभिराम रंग-बिरंगे चित्र। कन्याओं, बहनों, बालकों और प्रियजनों को उपहार में देने के लिये सर्वश्रेष्ठ। कन्या-विद्यालयों तथा बालक-पाठशाला-स्कूलों में प्राइज़ तथा लाइब्रेरियों के लिये गवर्नमेंट के शिक्षा-विभागों द्वारा स्वीकृत।

चित्रमय सती-संसार

१—सावित्री-सत्यवान	॥)	६—शकुंतला	॥=)
२—नल-दमयंती	॥)	७—देवी द्रौपदी	॥=)
३—शैव्या-हरिश्चंद्र	॥)	८—शर्मिष्ठा-देवयानी	॥)
४—सीता देवी	॥=)	९—सुभद्रा	॥=)
५—सती-पार्वती	॥)	१०—संयुक्ता	॥=)

सचित्र बाल-तरुण-साहित्य

११—भक्त ध्रुव	॥=)	१६—पृथ्वीराज	१)
१२—भक्त प्रह्लाद	॥=)	१७—महाराणा प्रताप	१)
१३—वीर अभिमन्यु	॥=)	१८—छत्रपति शिवाजी	१॥)
१४—वीर लव-कुश	॥=)	१९—श्रीशंकराचार्य	१॥)
१५—भीष्म	॥=)	२०—श्रीकृष्ण	१॥)

२१—मेवाड़-गौरव १)

दी पॉपुलर ट्रेडिंग कंपनी ११५, हरीसन रोड, कलकत्ता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

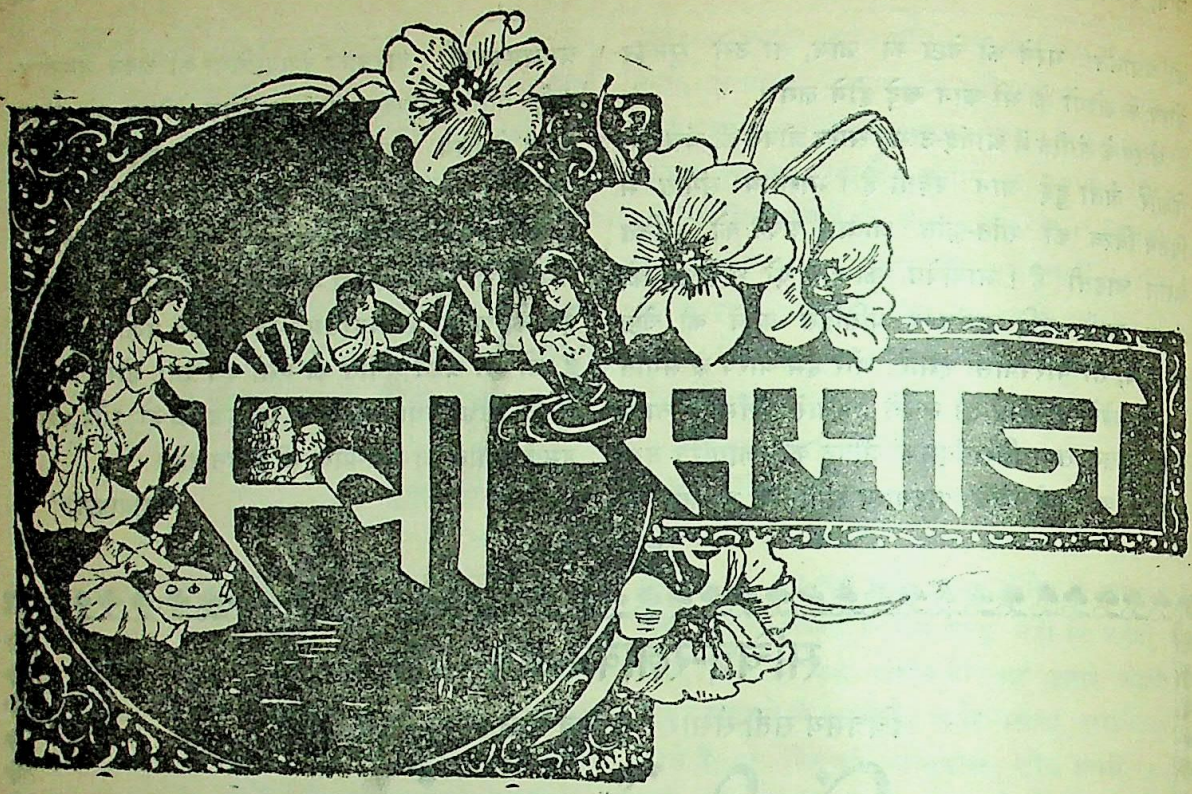

१. मिसेज़ हेम्स

श्चात्य देशों में बालकों की शिक्षा-दीक्षा, और उनके मनोरंजन के लिये जितना ध्यान दिया जाता है, उससे प्रकट है कि वहाँ सैकड़ों विद्वानों ने केवल इन्हीं के लिये उत्तमोत्तम पुस्तकें लिखना ही अपने जीवन का लक्ष्य बना रक्खा है। परंतु भारतवर्ष में बात बिलकुल उलटी है। यहाँ के लोग केवल यही चाहते हैं कि उनके लेख और कविताएँ पत्रों में छप जाया करें, बस! प्रकाशकगण भी बाल-साहित्य की ओर कम ध्यान देते हैं। परंतु योरप में बहुत-से ऐसे कवि हैं, जो केवल बाल-साहित्य की पूर्ति कर रहे हैं। वे निहाल हो जाते हैं, जब यह देखते हैं कि एक नन्हा बालक उनकी कविताओं को शौक़ से पढ़ रहा है, प्रसन्नता से गा रहा है, और आदर-पूर्वक अपना कवि कहकर उन्हें पुकार रहा है।

जिन कवि और लेखकों ने अपना जीवन एकमात्र नन्हे बालकों के प्रति उत्सर्ग कर दिया, उन्हीं में एक मिसेज़ हेम्स भी थीं। मिसेज़ हेम्स इँगलिस्तान के प्रसिद्ध कवियों में गिनी जाती हैं। यद्यपि समालोचकों ने इस महिला को प्रथम श्रेणी में स्थान नहीं दिया, तथापि इसमें संदेह नहीं कि उसकी रचनाएँ अमर हैं, और अँगरेज़ी-साहित्य जब तक विद्यमान है, उसकी कविताओं को पढ़ने या गानेवालों की कमी न रहेगी।

इँगलैंड का कोई बालक ऐसा न होगा, जिसने मिसेज़ हेम्स की कविताओं को न पढ़ा हो। इन्होंने बालकों के स्वभाव का अनुभव प्राप्त करके पद्य-रचना की है, जिसके कारण इनकी कविताओं को पढ़ते-पढ़ते बालक कभी नहीं थकते और नित्य नया आनंद-लाभ करते हैं।

फिलेस्या डारोथ्याहेम्स २५ सितंबर सन् १७९३ ई० में लिवरपूल में उत्पन्न हुई थीं। इनके पिता अपने जीवन में कभी बड़े धनाढ्य थे। परंतु भाग्य ने पलटा खाया। इनका सब कार-बार चौपट हो गया, और यह निर्धन हो गए। शहर लिवरपूल को छोड़कर अब यह उत्तरी वेल्स के एक नगर के निवासी बने। वहीं के सुंदर दृश्यों में फिलेस्या अपने छः भाई-बहनों के साथ बाल-क्रीड़ा समाप्त कर युवती बनीं।

कवित्व-शक्ति कुछ परमात्मा ने ही दी थी, और कुछ ग्राम के सादे और सुंदर दृश्यों ने प्रभावित किया। बस, इन्होंने बहुत छोटी अवस्था में ही पद्य-रचना आरंभ कर दी। इनके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पिता को न-मालूम क्या सूझी कि उन्होंने इनकी कविताओं का संग्रह करके छपवा डाला। आलोचकों ने इस बालिका की रचना के प्रति अन्याय किया। परंतु मिसेज़ हेम्स ने हिम्मत न हारी। अपना शौक़ जारी रक्खा, और इसी वर्ष बड़े परिश्रम से पद्य लिखकर एक और संग्रह प्रकाशित किया। प्रथम और द्वितीय संग्रह में आकाश-पाताल का अंतर था।

मिसेज़ हेम्स को स्वाध्याय का बड़ा व्यसन था। वह रात-दिन पढ़ने-लिखने में तन्मय रहती थीं। देश-प्रेम भी उनमें बहुत था, और इसी कारण उन्होंने सन् १८१२ ई० में एक वीर कप्तान से विवाह किया था। सन् १८१८ ई० में इनके पति कार्य-वश इटली गए, और अपनी युवती पत्नी एवं पाँच छोटे-छोटे बालकों को अकेला छोड़ गए। कुछ दिनों तक कप्तान के पत्र आते रहे; परंतु इसके पश्चात् वह ऐसे ग़ायब हुए कि फिर उनका कुछ पता न मिला। मिसेज़ हेम्स संतोष करके बैठ रहीं। उन्हें पाँच बालकों का पालन-पोषण करना था, और उनकी आय का उपाय था एकमात्र उनकी कविताएँ! परंतु मिसेज़ हेम्स ने इन समस्त कष्टों को प्रसन्नता-पूर्वक झेला, और अपनी पद्य-रचना की आय से अपने कुटुंब के व्यय का प्रबंध किया। इन्हीं दिनों एक विषय पर कविता लिखने के लिये पचास पौंड का इनाम नियत हुआ। अपनी अद्वितीय कवित्व-शक्ति द्वारा यह इन्होंने प्राप्त कर लिया। तीन वर्ष पश्चात् एक और बड़ा पारितोषिक भी इनकी एक कविता पर इन्हें प्राप्त हुआ। अपने पुत्रों को आराम से रखने और पेट पालने के लिये इन्हें कड़ा परिश्रम करना पड़ता था। यह रात-दिन पत्र-पत्रिकाओं के लिये लेख व कविताएँ लिखा करती थीं, और इस प्रकार जो पुरस्कार मिल जाता था, उसी से अपना काम चलाती थीं। धीरे-धीरे इँगलैंड और अमेरिका में सर्वत्र इनकी धाक जम गई।

इन्होंने इस विषय पर एक कविता लिखी थी कि ब्रिटानिया के वीर-युवक किस प्रकार पहले-पहले अमेरिका के किनारे पर उतरे थे। यह कविता अमेरिका में इतनी लोकप्रिय और प्रसिद्ध हुई कि अमेरिका के लोग उस स्थान पर इकट्ठे होकर इसे उछल-उछलकर गाया करते थे, जहाँ कई वर्ष पूर्व इन्होंने जहाज़ से उतरकर पहली बार अमेरिका के किनारे पर पैर रक्खा था।

मिसेज़ हेम्स ने कभी अमेरिका देखा न था, और इन्हें ज्ञात न था कि लोग जहाँ पहली बार उतरे थे, वहाँ का दृश्य कैसा है। एक बार कोई मनुष्य अमेरिका से आया, और मिसेज़ हेम्स से मिला। उसने कहा—"अमेरिका में आप की कविताएँ अत्यंत लोकप्रिय हैं।" मिसेज़ हेम्स ने उससे उस किनारे का हाल पूछा, जहाँ यात्री प्रथम बार उतरे थे। उसने कहा—"यद्यपि आप की कविता का वहाँ अत्यंत आदर है, परंतु उसमें वहाँ के दृश्य का वर्णन ठीक नहीं है। वहाँ का किनारा पथरीला नहीं, बल्कि चौरस है, और प्रत्येक प्रकार की भीषणता से पवित्र है।" मिसेज़ हेम्स को अपनी इस भूल पर बड़ा पश्चात्ताप हुआ, और वह फूट-फूटकर रोने लगीं।

कुछ दिनों बाद मिसेज़ हेम्स ने उत्तरी वेल्स का निवास-स्थान त्याग कर एक तालाब के किनारे एक छोटा-सा मकान बनवा लिया। वह एकांत स्थान चाहती थीं, जहाँ अपना काम अच्छी तरह कर सकें, और अपने नन्हे-नन्हे बालकों का पेट पाल सकें। परंतु यहाँ भी इन्हें ऐसा सुयोग न मिल सका। लोगों ने इस स्थान से भी जानकारी प्राप्त कर ली, और झुंड-के-झुंड लोग इनके पास आने लगे। कोई इनकी स्मृति में हस्ताक्षर माँगता, कोई और चिह्न। इसी समय कार्याधिक्य से इनका स्वास्थ्य ख़राब होने लगा; परंतु यह रोगों का साहस-पूर्वक मुक़ाबला करती रहीं। इनको मालूम था कि स्वास्थ्य बिगड़ गया है, इन्हें ज्ञात था कि जिन सुंदर पद्यों के विचार उनके मस्तिष्क में मौजूद हैं, उनके लिखने के लिये कभी समय न मिलेगा; परंतु बालकों के पालन-पोषण की फ़िक्र, इन्हें स्वास्थ्य की चिंता छोड़कर उसी तेज़ी से काम करने के लिये मजबूर करती थी।

इनके चित्त को कई आघात पहुँचे थे। पति लापता हो गए, माता-पिता स्वर्ग-गामी हुए, कई भाई-बहन भी इन्हें बिलखते छोड़ गए। इसी शोक का हाल इन्होंने एक रोमांचकारी पद्य में लिखा है, जिसका शीर्षक है—"एक कुटुंब का श्मशान!"

कोई अँगरेज़ बालक संभवतः ऐसा न होगा, जिसने इनकी 'बालक का प्रथम शोक'-शीर्षक कविता न पढ़ी हो और उसके नेत्र अश्रुपूर्ण न हो गए हों। यह पद्य इस प्रकार आरंभ होता है—

"मेरे भाई को बुला दो, मुझसे अकेले नहीं खेला जाता। गरमी तो आ गई, पुष्प खिल रहे हैं, मक्खियाँ भी भनभना रही हैं। मेरा भाई कहाँ गया?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसी प्रकार की बीसों कविताएँ हैं, जो मिसेज़ हेम्स ने बालकों की प्रसन्नता और शोकों का अनुभव प्राप्त करके लिखी हैं। इसी कारण वे बालकों को बहुत भाती हैं। अँगरेज़ी भाषा में बालकों के लिये कविताओं का जो संग्रह छपता है, उनमें मिसेज़ हेम्स की कविताएँ अवश्य होती हैं।

लोगों की सम्मति है कि यदि इन्हें अपने उदर-पोषण की चिंता न होती, तो यह बड़ी अच्छी कविता करतीं। बालकों को पालने और उन्हें शिक्षित बनाने के लिये ही यह कविता करती थीं, और जल्दी में जैसा बुरा-भला लिखा जाता, वही छपवा देतीं। यदि ये चिंताएँ न होतीं, और यह धैर्य-पूर्वक धीरे-धीरे लिखतीं, तो इनकी कविताएँ अत्यंत उत्कृष्ट होतीं।

४१ वर्ष की आयु में जब मिसेज़ हेम्स के कविता-गगन में सूर्य अपनी पूर्ण ज्योति प्रकट कर रहा था, वह स्वर्ग-सिधार गईं। एक दिन वह पुष्प-वाटिका में बैठी थीं कि उनको ज़ुकाम हो गया। स्वास्थ्य तो पहले ही से बिगड़ा हुआ था, ज़ुकाम का बहाना हुआ, और वह १६ मई, सन् १८३५ ई० में स्वर्गगामिनी हो गईं। उनकी मृत्यु पर एक कविता लिखी गई है, जिसका अर्थ यह है—

"ओ पवित्र आत्मा, तू उस परम पिता की गोदी में प्रसन्नता से आराम कर। मिट्टी पृथ्वी में अपने अंधकारपूर्ण निवास-स्थान को चली गई, और आत्मा एक उत्तम स्थान पर। जिन लोगों ने तेरी कविताओं को पढ़ लिया, वे अब मृत्यु से भय नहीं खाते।"

आनंदीप्रसाद मिश्र "निर्द्वंद्व"

× × ×

२. पर्दे की कुप्रथा

यह बात किसी से छिपी नहीं है कि भारतीय स्त्री-समाज की दशा आज कितनी गिरी हुई है, और उसके साथ कितना अन्याय हो रहा है।

इस देश में अनेकों सामाजिक कुरीतियाँ है। मेरे विचार से यदि विचारशील तथा उदार विचारवाले महाशय इस ओर ध्यान दें, तो इन सामाजिक कुरीतियों को अवश्य मिटा सकते हैं। आज जब कि भारत के प्रत्येक क्षेत्र में परिवर्तन हो रहा है, और भारतीय समाज एक नए आदर्श की ओर क़दम बढ़ा रहा है, तब इस विषय पर विचार करना अत्यंत आवश्यक है कि इस परिवर्तन में स्त्री-जाति को भी स्थान मिलना उचित है। यदि हम भारतवर्ष के ऐतिहासिक काल पर दृष्टिपात करें, तो हमें ऐसे अनेकों उदाहरण मिलेंगे, जिनसे हम यह सिद्ध कर सकते हैं कि कुछ समय पहले यहाँ स्त्रियाँ केवल आदर की दृष्टि से ही नहीं देखी जाती थीं, बरन् भारतीय इतिहास खुले शब्दों में इस बात की साक्षी दे रहा है कि केवल एक स्त्री की मर्यादा के रक्षार्थ घोर युद्ध भी होते थे। महाभारत के भीषण युद्ध का सूत्रपात स्त्री-जाति की मर्यादा नष्ट करने के ही कारण हुआ।

प्राचीन काल के इतिहास पर दृष्टि डालने पर स्वीकार करना पड़ेगा कि प्राचीन समय में इस देश में स्त्री-जाति का स्थान बहुत उच्च था। ब्राह्मण-ग्रंथों के समय की स्त्रियाँ बड़ी ही विदुषी होती थीं, यह बात कन्याओं के गुरुकुल-निवास तथा पत्नी के पति के साथ सब प्रकार के यज्ञों में सम्मिलित होने से सिद्ध है। इससे एक बात यह भी सिद्ध होती है कि उस समय की स्त्रियों में आजकल की तरह पर्दे की कुप्रथा भी न थी।

यदि पर्दे की कुप्रथा होती, तो महाराज जनक की सभा में ब्रह्मवादिनी गार्गी याज्ञवल्क्य से शास्त्रार्थ न कर सकतीं, और न महर्षि याज्ञवल्क्य गार्गी के इस प्रश्न पर कि "कस्मिन्नु ब्रह्मलोका ओताश्च प्रोताश्च" यह कहते कि "गार्गी! मति प्राक्षीः"। न ऐतरेय ब्राह्मण की पंचम पंजिका के चतुर्थ खंड में यह लिखा मिलता—"कुमारी गंधर्वगृहीता वक्तास्मः।" न तैत्तिरीय में यह लिखा मिलता कि "इन्द्राणी वै सेवाया देवता।"

ब्राह्मण-काल में ही ब्रह्मवादिनी लोपामुद्रा और कुमारी अपालात्रेयी ब्रह्म-विद्या की उपदेशिका थीं। सूत्रकाल में भी पर्दे की कुप्रथा न थी। यदि होती, तो बौद्धायन-सूत्र, आपस्तंब-सूत्र के प्रश्न १, पटल ७, खंड १३, सूत्र ९ में आचार्या-विषयक लेख न होता।

यही नहीं, रामायण के पढ़ने से भी ज्ञात होता है कि जिस समय महाराज दशरथजी इंद्र की सहायता के लिये युद्ध में गए, उस समय उनकी पत्नी कैकेयी उनके साथ थीं, और रथ की धुरी टूटने पर उन्होंने कील के स्थान पर अपनी उँगली लगाकर राजा की सहायता की थी। इसी तरह सीताजी रामचंद्रजी के साथ वन को गईं। यदि पर्दा होता, तो कैकेयी युद्ध में क्योंकर जाती, और सीताजी भी वन-गमन के लिये क्यों तैयार होतीं? इसी प्रकार सहस्रों उदाहरण हैं। इन उदाहरणों से स्पष्ट विदित होता है कि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्राचीन समय में पर्दे की कुप्रथा न थी, और इसी के कारण स्त्रियाँ बड़ी ही विदुषी तथा बुद्धिमती होती थीं।

परंतु मुसलमानी शासन-काल में भारत की कुमारियों तथा अबलाओं पर ऐसे नृशंस अत्याचार आरंभ हुए, जिनके कारण हमारे पूर्वजों ने हमारी माताओं तथा बहनों को उनकी कुदृष्टि से बचाने के लिये पर्दे की प्रथा प्रचलित की। साथ ही यह भी कहना पड़ेगा कि राजा का प्रभाव भी प्रजा पर पड़े बिना नहीं रहता। मुसलमानी सभ्यता अरब से ही पर्दे की कुप्रथा लेकर चली थी, और उसका कारण बड़ा ही रहस्यपूर्ण है।

पर मैं मनु की 'सत्यं ब्रूयात् प्रियंब्रूयात्'-वाली शिक्षा को ध्यान में रखकर उसकी व्याख्या नहीं करना चाहती। किंतु बड़ी प्रसन्नता की बात है कि मुसलमानी सभ्यता के केंद्र टर्की में भी पर्दे की प्रथा का विरोध हो रहा है, और उसी का अनुकरण अफ़ग़ानिस्तान तथा ईरान आदि मुसलमानी देशों में किया जा रहा है। परंतु शोक के साथ लिखना पड़ता है कि अब भी बहुतेरे भारतवासियों का यह विचार है कि स्त्रियों को पर्दा-प्रथा से रहित करना समाज के लिये घातक होगा।

देश का यह दुर्भाग्य है कि आज भी यहाँ ऐसे मनुष्य उपस्थित हैं, जो समझते हैं, स्त्रियों का जन्म इस संसार में केवल इसलिये हुआ है कि वे प्रातःकाल से लेकर सायं-काल तक घर का धंधा अर्थात् कूटना, पीसना, रोटी बनाना इत्यादि ही करती हुई अपने विलासी पतियों के पैर की जूती बनी रहें। पुस्तकें पढ़ने तथा घर से बाहर निकलकर विधाता की रहस्यपूर्ण सृष्टि के सौंदर्य-सुख का अनुभव करने का उनको अधिकार ही नहीं। स्त्रियों को सभाओं में भेजना तो इन लोगों की दृष्टि में उतना ही मूर्खता-पूर्ण है जितना कि किसी मूर्ख का पेड़ की उसी शाखा को काटना, जिस पर वह स्वयं बैठा हो। इन लोगों में कुछ ऐसे भी हैं, जिनके विचार स्त्रियों के बारे में और भी अधिक कठोर हैं।

जिस प्रकार एक कंजूस अपने धन को किसी ऐसे स्थान पर गाड़कर रखता है, जहाँ मनुष्य-प्रवेश की कौन कहे, सूर्य की किरणें तक प्रवेश नहीं कर सकतीं, उसी प्रकार यदि उनका वश चले, तो वे ऐसे ही किसी गुप्त स्थान में स्त्रियों को भी जीवित गाड़ दें और आवश्यकता पड़ने पर बाहर निकाल लें। परंतु वे यह नहीं विचारते कि स्त्रियों को इस प्रकार पक्षियों की तरह पिंजड़े में बंद रखने से केवल शारीरिक क्षति ही नहीं होती, वरन् उनकी आत्मा तथा बुद्धि के विकास में भी बाधा पड़ती है, जिसका दूषित प्रभाव भावी संतान पर पड़कर देश, जाति और धर्म की उन्नति के मार्ग में बाधक होता है; क्योंकि जब माताएँ रोगिणी, दुर्बल तथा मूर्खा हैं, तो उनकी संतानों की शारीरिक तथा मानसिक उन्नति होना कठिन ही नहीं, असंभव है।

आज भारत का दूषित वायुमंडल देखते हुए यह कहना पड़ता है कि यदि दुर्भाग्यवश कोई आपत्ति आ पड़े, नगर में हिंदू-मुसलमानों में दंगा हो जाय, या चोर डाकू आदि किसी घर पर आक्रमण करें, तो पुरुषों को सबसे प्रथम यह चिंता दबा लेती है कि अब स्त्रियों को कहाँ ले जायँ, अब ये कहाँ जायँगी इत्यादि। और, स्त्रियाँ बेचारी पराधीन होने के कारण बैठी रहती हैं। उनमें इतनी भी शक्ति नहीं कि वे अपनी रक्षा स्वयं कर सकें।

उनकी दशा उस समय पर-कटे लाचार पक्षी की-सी हो जाती है।

अतः स्त्रियों को इस पर्दे की कुप्रथा से दूर रखना ही अच्छा है।

बहुतेरे लोग मनुस्मृति के अध्याय ९ का तीसरा श्लोक "पिता रक्षति कौमारे भर्ता रक्षति यौवने" आदि उद्धृत कर स्त्रियों को सामाजिक अधिकार देने से वंचित रखना चाहते हैं, और श्लोक की 'रक्षति' क्रिया को लेकर यह तूफ़ान खड़ा करते हैं कि स्त्री सदैव दूसरों के द्वारा रक्षा की जाने-वाली एक गठरी है, और रक्षा का अर्थ बंधन है। किंतु उन महानुभावों को मनु के अध्याय ९ का ७वाँ श्लोक भी देखना चाहिए, जहाँ रक्षक-क्रिया का प्रयोग न केवल स्त्री के लिये, बल्कि कुल, धर्म, चरित्र और प्रसूति के लिये भी आया है।

यदि स्त्री-रक्षा का अर्थ स्त्री को बंधन में रखना किया जायगा, तो चरित्र-रक्षा और धर्म-रक्षा का अर्थ भी चरित्र तथा धर्म को बंधन में रखना होगा, जो नितांत भूल है। अतः जिस प्रकार धर्म-रक्षा का अर्थ धर्म को उत्तम बनाए रखना है, उसी प्रकार स्त्री-रक्षा का अर्थ स्त्री-जाति की मर्यादा को स्थिर रखना है। इस पर्दे की कुप्रथा-रूप बंधन से मुक्त रहकर ही स्त्रियाँ सामाजिक उन्नति कर सकती हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फ्रांस, जर्मनी आदि देश सब स्त्रियों के सुशिक्षित तथा स्वस्थ होने के कारण ही आज बड़ी उन्नत दशा पर हैं। वहाँ की स्त्रियाँ कभी पर्दा नहीं करतीं, और स्वतंत्रता-पूर्वक अपनी जाति की उन्नति करती हैं। मेरा यह तात्पर्य नहीं कि पाश्चात्य देश की स्त्रियों की ही नक़ल की जाय। उन्हीं की भाँति घोड़े पर चढ़कर तथा निर्लज्जता-पूर्वक भारत की देवियाँ विचरें, या गृह का कोई कार्य न करें। किंतु इतना फिर भी कहूँगी कि जब तक भारतवर्ष में पर्दे की कुप्रथा है, तब तक यथार्थ सदाचार नहीं हो सकता, और न भारतीय स्त्री-समाज की उन्नति ही हो सकती है। स्त्रियों की उन्नति के विना देश, जाति और धर्म की उन्नति एक स्वप्न-मात्र है।

अतः यदि अपने देश में अर्जुन, भीष्म, कृष्ण और रामचंद्रजी के समान योद्धा, सदाचारी, उपकारी और सर्वगुणसंपन्न नर-रत्न उत्पन्न करना है, तो पहले स्त्री-जाति को सामाजिक अधिकार देकर उनकी उन्नति की ओर विशेष ध्यान दिया जाय।

शांतादेवी हजेला

आवश्यकता है!

हिंदी की सर्वश्रेष्ठ मासिक पत्रिका

सुधा

और

सुप्रसिद्ध गंगा-पुस्तकमाला

की सर्वोत्कृष्ट पुस्तकों का और भी अधिक प्रचार करने के लिये हमें और १०० स्थानीय और ट्रैवलिंग एजेंटों की आवश्यकता है। हमारे एजेंट १००)-२००) तक कमा रहे हैं। कारण, हमारी पत्रिका और किताबें हिंदोस्तान-भर में ख़ूब मशहूर हो चुकी हैं। लाखों मनुष्य उन्हें पढ़ रहे हैं। अतएव उनकी खपत एजेंट लोग आसानी के साथ—थोड़े-से परिश्रम से ही—अन्य मासिक पत्रिकाओं और पुस्तकों की अपेक्षा कहीं अधिक कर लेते हैं। दिखलाते ही लोग उनके ग्राहक बन जाते हैं। फिर बाहरी—हिंदोस्तान-भर के प्रकाशकों की—हिंदी पुस्तकें भी भर-पूर कमीशन पर हम उनको बेचने के लिये देते हैं। क्या ये सब सुविधाएँ और कहीं उन्हें मिल सकती हैं? लेकिन ५०) या १००) की ज़मानत ज़रूरी है। जो सज्जन ज़मानत जमा करके हमारे एजेंट या ट्रैवलिंग एजेंट बनना चाहें, वे कृपा करके हमसे एजेंटों के लिये नियम मँगा लें, फ़ौरन् एजेंट बनकर हिंदी-सेवा के पुनीत कार्य में हमारा हाथ बटाएँ और ख़ुद भी रुपया कमाएँ।

"समय चूकि पुनि का पछिताने;
का वरषा जब कृषी सुखाने।"

इस समय हमारी पत्रिका और पुस्तकों की चारों ओर धूम मची हुई है। अतएव हिंदी-प्रेमी एजेंटों के लिये हिंदी-सेवा करने, आर्थिक लाभ उठाने और प्रचार-कार्य में अपना अनुभव और अभ्यास बढ़ाने के लिये यही सबसे उपयुक्त समय है।

मैनेजर सुधा, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१. चोर की स्वीकारोक्ति तथा विकारोक्ति

आजकल हिंदी-साहित्य में चोरी का बाज़ार गरम है। जिधर देखिए, चोरी की ही शिकायत सुनने में आती है। पर कोतवाल लोग भी असावधान नहीं हैं। ज़बर्दस्त धर-पकड़ जारी है। ऐसी हालत में सभी चोर घबरा उठे हैं। जो पकड़े गए हैं, उनकी मिट्टी तो ख़राब हो ही चुकी है, पर जो अभी बचे हैं, उनके भी खाना-ख़राब होने का डर है। इसलिये मैं भी कम घबराया हुआ नहीं हूँ। मुझे विश्वस्त सूत्र से अवगत हुआ है कि साहित्यिक पुलीस ने मेरे ऊपर भी बहुत कड़ी नज़र रक्खी है। ये सब ढंग देखकर मैं भी सावधान हो उठा हूँ। कहीं मेरे ऊपर कोई आकस्मिक आघात न आ पड़े, इस संशय से मैं पहले ही मोह-मुद्गर लेकर खड़ा हो गया हूँ। इसके अतिरिक्त अन्यान्य महाकवियों की पोल खोलकर यह भी दिखला देना चाहता हूँ कि साहित्य में चोरी कोई बड़ा जुर्म नहीं। सीनाज़ोरी ही ख़राब है। पर इससे पहले अपनी एक भयंकर तथा अक्षम्य चोरी जनता के सामने स्वीकार कर लेना चाहता हूँ। इस जन्म में अनेक पाप किए हैं। ज़िंदगी का क्या ठिकाना! अब पाप स्वीकृत करके भगवान् से क्षमा माँगना ही उचित है।

मैंने अपनी 'दमयंती'-शीर्षक कविता में लिखा है—

विहगी करुण विहाग-राग से दुख रोएगी सारी रात।

यहाँ पर मैंने 'रोएगी' शब्द की चोरी रवींद्रनाथ के इस पद से की है—

तल-तल छल-छल काँदिबे गभीर जल।

इस पद में रवींद्रनाथ ने जो 'काँदिबे' शब्द लिखा है, वह मुझे बहुत पसंद आया, और झट मैंने उसे चुरा लिया। पर जब मैंने सोचा कि रवींद्रनाथ इतना अच्छा शब्द कहाँ से चुरा लाए, तो मालूम हुआ, उन्होंने तुलसीदास की इस चौपाई की नक़ल की है—

बिलपति अति कुररी की नाईं।

पीछे पता चला कि गुसाईंजी भी इस संबंध में मौलिकता की रक्षा न कर सके। उन्होंने कालिदास के इस पद से यह मसाला चुराया है—

चक्रंद विग्ना कुररीव भूयः।

फिर मैंने सोचा, क्या कालिदास वास्तव में इतने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रेष्ठ कवि थे कि इतनी अच्छी उपमा मस्तिष्क से निकालने में समर्थ हो गए ? खोज की। मालूम हुआ, यह हज़रत भी वाल्मीकीय रामायण के 'रुरोद कुररीव' की नक़ल किए बैठे हैं। मैंने सोचा, ऐसे-ऐसे पाखंडी साधु जब महाकवि बन बैठे, तो मैंने कौन-सा अंधेर किया !

सज्जनो, रामजी के भक्त तुलसीदासजी भी कोई साधारण चोर नहीं निकले। कहीं-कहीं तो लाइन-की-लाइन पूरी उड़ा गए हैं। जयदेव ने लिखा है—'चकितविलोकित सकल दिशा।' गुसाईंजी (ख़ुदा उन्हें बहिश्त में ख़ैरियत से रक्खे) लिख गए हैं—

चकित बिलोकति सकल दिशि जनु शिशु मृगी सभीत।

अब बतलाइए, बेचारे पंतजी ने ही क्या अंधेर किया, जो निरालाजी उन पर बेतरह बरस पड़े हैं ! 'श्रवण समीप भए सित केशा'वाला भाव रघुवंश से किस मज़े में लिया गया है, यह सभी को विदित है।

और यह रवींद्र महाशय। यह हज़रत भी छिपे रुस्तम हैं। कुछ पूछिए मत। कबीर, जयदेव और कालिदास आदि कवियों का तो इन्होंने नाश ही मार दिया है। उदाहरणार्थ—

यूथी अनाघ्राता—रवींद्र
अनाघ्रातं पुष्पम्—कालिदास
जल-सिंचित-क्षिति-सौरभ-रभसे—रवींद्र
मृगमद-सौरभ-रभस—जयदेव
गगने गरजे मेघ—रवींद्र
गगन गरजि बरसे अमी—कबीर
हृदय निर्दय घाते—रवींद्र
निर्दय-हृदय-कपाटम्—जयदेव
तनु तव तनुलता—रवींद्र
दुःसह-निपतित-तनुलतया—जयदेव
जन-पद-वधू-तड़ित्-चकित-नयना—रवींद्र
जन-पद-वधू-लोचनैः पीयमानः—कालिदास
भवन-शिखीरे नाचाओ—रवींद्र
भवन-शिखिभिर्दत्तनृत्योपहारः—कालिदास
दादुरि डाकिछे सघने—रवींद्र
दादुरि डाके डाहुकि—विद्यापति

सज्जनो, ये उदाहरण बहुत मामूली हैं। रवींद्रनाथ की सारी पोल अभी मेरे हाथ में है। अवसर पड़ने पर सब खोलूँगा। भोला-भाला पहाड़ी आदमी पहाड़ के एक कोने में अपने स्वप्न लेकर मस्त था। दुनिया की ख़बर नहीं थी। अब जब साहित्य की मजलिस में यार लोगों के चरख़े में आ फँसा हूँ, तब कुछ ऊधम मचाकर ही शांत होऊँगा। लोग मुझे सिड़ी कहते हैं। सिड़ी तो मैं हूँ ही; पर साथ ही 'औलिया' भी हूँ।

भाव चुराने में भी हमारे बूढ़े बाबा ग़ज़ब ढा गए हैं। वर्षा के मेघ की उपमा स्निग्ध अंजन से कालिदास के अतिरिक्त अन्य किसी कवि ने नहीं दी है। ठाकुर महाशय ने यहाँ भी अपनी तीक्ष्ण दृष्टि दौड़ाई। कालिदास ने मेघ को 'स्निग्धभिन्नांजनाभे' कहा है। ठाकुर महाशय लिखते हैं—"नयने स्निग्ध सजल मेघेर नील अंजन लेगेछे।" यह तो चोरी नहीं, डकैती है ! 'पुलकित नीपनिकुंज' कालिदास के 'पुलकितमिव प्रौढ़पुष्पैः कदंबैः' की नक़ल है। (नीप कदंब को कहते हैं इत्यमरः)

टेनीसन से रवींद्रनाथ ने इतना माल चुराया है कि तीन पुश्त को गुज़र के लिये काफ़ी है। कहीं-कहीं पर तो भाव और छंद एकसाथ इस तरह उड़ाए गए हैं, जैसे मिट्टी के ढेले सहित पौदा—

Thou art not steeped in golden langours
No tranced summer calm is thine,
Ever varying Madeline !

इसके अनुकरण में रवींद्रनाथ का यह पद्य है—

नहो माता, नहो कन्या, नहो वधू, सुंदरी रूपसी,
हे नंदनवासिनी उर्वशी !

इसके अतिरिक्त ठाकुर महाशय का 'ए जगते किछूई मरे ना' टेनीसन के 'Nothing will die' का अविकल अनुवाद है। उनका 'वर्ष-शेष' शैली के 'Ode to the West Wind' की अविकल छाया है। या ख़ुदा ! ख़ैर कर। हाय रवींद्रनाथ ! आख़िर तुम भी हम चोरों के साथ घसीटे गए। तुम्हारे लिये अफ़सोस है भैया ! पंतजी की कविता में सोने का बहुत ख़र्च बतलाया गया है। यह सोना पंतजी ने अवश्य ही रवींद्रनाथ से चुराया है। पर रवींद्रनाथ भी सब सोना टेनीसन के 'Golden langours' तथा कालिदास की 'कनक-सिकता', 'कनक-कदली', 'हेमांभोज', 'हेमैश्छन्ना विकचकमलैः', 'कांचनी वासयष्टिः' इत्यादि से चुरा लाए हैं, इसकी यार लोगों को ख़बर ही नहीं !

कबीर का Mysticism भी रवींद्रनाथ ने किस प्रकार अपना बना डाला है, यह भी बहुत कम लोगों को मालूम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है। कहीं-कहीं तो भाव के साथ पद भी उड़ाए गए हैं। यथा, कबीर ने लिखा है—

सब कोई कहे तुम्हारी नारी, मोको यह संदेह रे !

इस पर ठाकुर बाबा लिखते हैं—

बले एरे गुरुजने—
ओ ये तोर पति, ओ तोर देवता,
भीत हये ताहा शोने।

अर्थात्—"इसके (मेरे) गुरुजन इससे (मुझसे) कहते हैं कि वह तेरा पति और देवता है, इस बात को यह भीत होकर सुनती है।" यहाँ पर नायिका अपने संबंध में 'इसका' शब्द व्यवहृत कर रही है। 'सब कोई कहे' के स्थान में 'बले एरे गुरुजने' लिखा गया है। 'तुम्हारी नारी' के स्थान में 'ओ ये तोर पति' काम में लाया गया है। 'मोको यह संदेह रे' के स्थान में 'भीत हये ताहा शोने' लिखा गया है। ऐसे उदाहरण बीसियों दिए जा सकते हैं।

ठाकुर साहब ! आप हम सब चोरों के सर्दार हैं। आपका भंडाफोड़ मैंने कर दिया। क्या करता, नहीं तो मैं फँसा जाता था। अब कोई ऐसा रास्ता निकालो भाई, जिससे होकर हम सब साथ ही भाग निकलें, और कोतवालों से पिंड छुड़ावें।

हाय रे संसार-साहित्य ! तेरे भीतर सारा माल चोरी और डकैती का भरा पड़ा है। हाय गुसाईंजी ! आप ने भी अंधेर किया। आप को तो हम ऐसा नहीं समझते थे ! हाय कालिदास ! तुमने भी अश्वघोष की कविता का नाश मार दिया ! अब किसका इतमीनान किया जाय ! कुछ भी हो, मुझे इतनी ही तसल्ली है कि मैं अकेला गेहूँ में घुन की तरह पिस जाता, अब बच गया।

इलाचंद्र जोशी

× × ×

२. बड़े दिन की ख़ुशी में

देवों पै चढ़ाई कभी पत्ती भूल से भी नहीं,
लेके दस्तबस्तः हाकिमों को फूल-माले जात ;
बाप की सराध जँचती है व्याधि, साहबों को,
लाद-लाद गाड़ी पर मेवे औ' मसाले जात।
जाति से अदावत है, दावत विजातियों की,
भोले भाई कान ही पकड़के निकाले जात ;
सज्जन, सुहृद, गुरु टाले जात बुत्ते दे-दे,
योरप के कुत्ते घर ला-लाके हैं पाले जात।

"गुरु"

उपन्यास-रत्नमाला का पहला रत्न

मँगाइए **मीठी चुटकी** तैयार है।

यह बड़ा ही सरस, मौलिक, सामाजिक उपन्यास है। प्रसिद्ध समालोचक श्रीयुत "शिलीमुख" एम्० ए० इसके विषय में लिखते हैं—"हमारी समझ में 'मीठी चुटकी' को हिंदी के वर्तमान उपन्यास-साहित्य में एक विशेष स्थान मिलना चाहिए। यथार्थ में 'सेवासदन' के बाद हमको हिंदी का यही एक उपन्यास अधिक पसंद आया है।" मूल्य सर्वसाधारण से १॥), स्थायी ग्राहकों से केवल १)। स्थायी ग्राहक होने का शुल्क १) मात्र है। स्थायी ग्राहकों को उपन्यास-रत्नमाला के सभी उपन्यास दो-तिहाई मूल्य में मिलेंगे।

पता—

साहित्य-मंदिर, दारागंज, (S) प्रयाग

मदर-इंडिया का जवाब

(अनुवाद और जवाब दोनों सिर्फ़ बारह आने में—डाकव्यय अलग)

लेखिका—श्रीमती चंद्रावतीजी लखनपाल बी० ए०

कुछ सम्मतियाँ

अर्जुन लिखता है—"इस पुस्तक में मिस मेयो के प्रलापों का औचित्यपूर्ण, किंतु करारा जवाब है। इसमें 'मदर-इंडिया' के कान खींचे गए हैं। इस १५० पृष्ठों की पुस्तक में 'मदर-इंडिया' का सत खींच लिया गया है। इस ओजस्विनी किताब को पढ़ते समय साफ़ मालूम होता है कि इसकी भाषा किसी फ़ौलादी क़लम से लिखी गई है। हमारी समझ में 'मदर-इंडिया' और उसके जवाब में अन्य मोटे पोथों पर धन का दुरुपयोग न करके इस १२ आने (डाक व्यय अलग) की पुस्तक से जनता अधिक लाभ उठा सकती है। यह एक अमेरिकन महिला को भारतीय महिला का करारा जवाब है। पुस्तक की छपाई-सफ़ाई बहुत बढ़िया है।" बांबे क्रानिकल लिखता है—"Mrs. Chandrawati has dealt in a masterly way."

इस विषय की यही सबसे सस्ती और अद्वितीय पुस्तक है !!

पता—'अलंकार'-आफ़िस, गुरुकुल-कांगड़ी, (S)

ज़ि० बिजनौर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

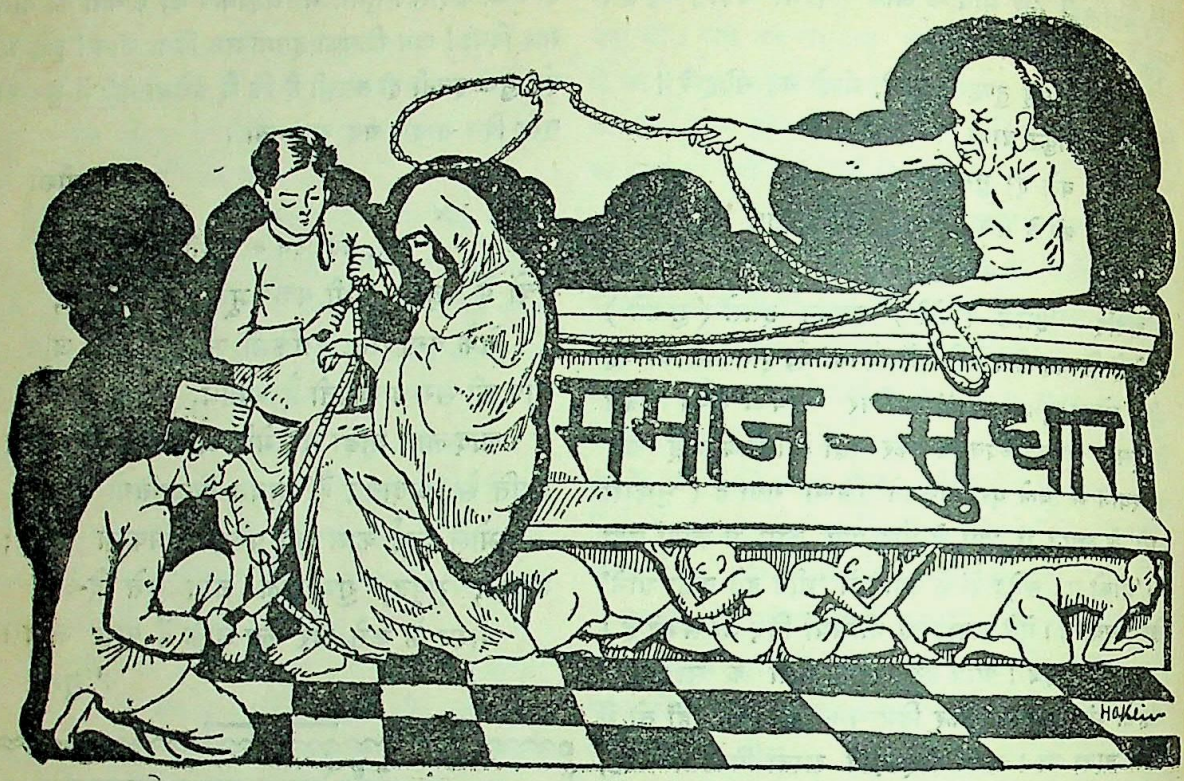

समाज और सुधार

जिस प्रकार मनुष्य के शरीर में कुछ-न-कुछ विकार सदैव होते रहते हैं, और उसको स्वस्थ रखने के लिये भोजन आदि की आवश्यकता होती है, इसी प्रकार समाजरूपी शरीर में भी विकारों का होना साधारण-सी बात है। समाज को ठीक स्थिति पर रखने के लिये सुधारों की आवश्यकता होती है। शरीर के विकारों के तीन भेद हैं (१)—किसी अवयव-विशेष का बिगड़ जाना। जैसे टाँग का टूट जाना, आँख का फूट जाना अथवा किसी उँगली आदि का कट जाना; (२) शरीर की किसी आवश्यक वस्तु का कम हो जाना या बिगड़ जाना। जैसे रक्त का दूषित हो जाना या कम हो जाना; (३) किसी बाह्य और हानिकारक पदार्थ का शरीर में प्रविष्ट होना। जैसे रक्त में विष का मिल जाना इत्यादि। इन तीनों विकारों की स्थिति मनुष्य के स्वास्थ्य को बिगाड़ देती और उसके यथोचित कर्तव्य-पालन में विघ्न डालती है। इसी प्रकार समाज में भी ये ही तीन प्रकार के दोष आ जाते हैं। जैसे (१) समाज-संबंधी किसी आवश्यक संस्था का लुप्त या लुप्तप्राय हो जाना। (२) समाज को संगठित अवस्था में रखने के लिये जो सामग्री थी, उसका न्यून हो जाना। (३) बाहर से ऐसे कुसंस्कारों, कुप्रथाओं तथा बुरी बातों का समाज में प्रविष्ट हो जाना, जिनके कारण समाज अपना काम ठीक-ठीक नहीं कर सकता।

शरीर की उपमा को और आगे बढ़ाने के लिये हमको शरीर की दैनिक अवस्था पर ध्यान देना चाहिए। यद्यपि शरीर पर सभी बाह्य पदार्थों का प्रभाव पड़ा करता है, तथापि शरीर के वास्तविक विकार उसके भीतर से ही आरंभ होते हैं। परमात्मा ने मनुष्य या अन्य प्राणियों के शरीरों को बनाकर संसार में इसलिये रक्खा है कि वे बाह्य पदार्थों के द्वारा अपनी शक्ति का अच्छी तरह संपादन करें। उदाहरण के लिये जब हम पैदा होते हैं, तो वायु इसलिये नहीं चलता कि हमारे शरीर पर आघात पहुँचावे, किंतु केवल इसलिये कि वह हमारे शरीर की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वृद्धि का कारण हो। ईश्वर ने जल, अन्न तथा संसार के अन्य पदार्थ हमारे मारने के लिये नहीं बनाए, किंतु हमारी शक्ति की संवृद्धि के लिये उनका निर्माण किया है। सूर्य की किरणों में हमारे मारने की सामग्री नहीं, किंतु जिलाने की सामग्री है। परंतु एक बात हमको अपने भीतर से ही लानी पड़ेगी। अर्थात् भोगने की सामग्री तो संसार में उपस्थित है, परंतु भोगनेवाली शक्ति हमारे भीतर होनी चाहिए। हमारी माता के स्तनों में हमको जिलानेवाला दूध मौजूद है; परंतु उसको पीने, पचाने और अपने शरीर में प्रविष्ट करने की शक्ति माता के स्तनों में नहीं, किंतु हमारे भीतर होनी चाहिए। जो बच्चे इस शक्ति से वंचित हैं, वे माता का दूध पी नहीं सकते, और उनकी शीघ्र ही मृत्यु हो जाती है। जो शरीर पुष्ट है, वह खुले वायु में कितना लाभ प्राप्त करता है। परंतु ज्वर से पीड़ित पुरुष को वही वायु कितना रोगोत्पादक हो जाता है? घी कितना पुष्टिदायक पदार्थ है; परंतु खाँस के रोगी को घी से क्या लाभ! इसलिये शरीर के संबंध में सबसे पहली सचाई यह है कि विकारों का आरंभ भीतर से होता है, बाहर से नहीं। परंतु जब एक बार आरंभ हो गया, तो फिर अन्य दोष बाहर से भी आने लगते हैं। जिनके शरीरों को आदर्श स्वास्थ्य प्राप्त है, वे तो विष खा जाने पर भी एक बार उसको अपने भीतर से निकालकर फेंक देते हैं। साधारणतया यों भी शरीर में कमियाँ होती रहती हैं। जैसे जो खाना खाकर हम प्रातःकाल कार्य करने बैठते हैं! वह सायंकाल के समय हमारे शरीर से निकल जाता है, और हमको भूख लगती है। यदि भूख न लगे, तो समझना चाहिए कि कुछ रोग है। भूख लगने पर हम रोटी खाते तथा पानी पीते हैं। उसी समय फिर उन कमियों की पूर्ति हो जाती है। ये सब बातें समाज के संबंध में भी लागू होती हैं, अर्थात् समाज की त्रुटियों का आरंभ उसके भीतर से होता है। फिर शनैः-शनैः बाहर की बातें भी अपना प्रभाव उस पर जमाने लगती हैं। जो बातें आरंभ में समाज की सहायता करतीं, वे ही कुछ समय पश्चात् उसकी निर्बलता का साधन हो जाती हैं। इसलिये आवश्यकता है कि समाज का नित्यप्रति सुधार होता रहे, अन्यथा इसमें इतने दोष आ जायँगे कि इसका नाम भी शेष न रहेगा।

यद्यपि प्रत्येक प्रकार के सुधार का मुख्य प्रयोजन मनुष्य की उन्नति है, तथापि आजकल कई प्रकार के सुधारों का वर्णन करने की प्रथा चल गई है। हम कहा करते हैं कि अमुक महात्मा धार्मिक सुधारक था, अमुक सामाजिक और अमुक नैतिक। इसलिये यहाँ यह भी आवश्यक प्रतीत होता है कि हम समाज-सुधार का धार्मिक तथा नैतिक सुधारों से संबंध बतला दें। बहुधा यह बात विवादास्पद है, और लोग इस विषय में एकमत नहीं कि समाज-सुधार पहले होना चाहिए या धार्मिक या नैतिक। हम प्रायः पत्रों और वक्तृताओं में यह विवाद सुनते हैं। कोई कहता है कि धार्मिक सुधार के बिना किसी प्रकार का सुधार होना असंभव है, अतः पहले धार्मिक सुधार कर लिया जाय; समाज-सुधार स्वयं हो जायगा। कोई कहते हैं, नहीं नैतिक सुधार ही सब कुछ है। पहले इसी का विचार करो। राजनीतिक स्वत्वों की प्राप्ति के पश्चात् धार्मिक तथा सामाजिक, सब प्रकार की उन्नति हो ही जायगी। समाज-सुधार के पक्षपाती कहते हैं, नहीं, हमारे समाज के दोषों के कारण ही हमारा धार्मिक तथा नैतिक अधःपतन हुआ है। अतः वहीं से हमारे सुधार का भी आरंभ करना चाहिए।

यहाँ एक बात और याद रखनी चाहिए। यदि शरीर में एकसाथ कई बीमारियाँ हों, तो किसका इलाज पहले करना चाहिए, इसकी विवेचना दुस्तर है। हम प्रत्येक बीमारी का उसी क्रम से इलाज नहीं करते, जिससे वह उत्पन्न होती है। कभी-कभी तो उस रोग की सबसे पहले निवृत्ति की जाती है, जो अन्य रोगों का मूल-कारण होता है। जैसे अगर क़ब्ज़ की वजह से बुख़ार आ जाय, तो पहले रेचक पदार्थ खिलाते हैं। पेट साफ़ होते ही ज्वर भी कम हो जाता है। परंतु यदि पहले ज्वर हो, और ज्वर की अवस्था में ही रोगी को मोच भी आ जाय, तो पहले मोच का इलाज होना चाहिए। मोच के लिये उस समय का इंतज़ार करना, जब ज्वर बिलकुल उतर जायगा, मूर्खता है। इसी प्रकार प्रथम तो यह कहना दुस्तर है कि पहले धार्मिक बिगाड़ होता है या नैतिक या सामाजिक। दूसरे यह भी नहीं कहा जा सकता कि पहले कौन-सा सुधार होना चाहिए। कहीं-कहीं नैतिक बिगाड़ के कारण सामाजिक सुधार नहीं हो सकता, और कहीं-कहीं सामाजिक बिगाड़ के कारण नैतिक सुधार में बाधा पड़ती है। मैं तो यह समझता हूँ कि बिगाड़ एक प्रकार का ज्वर है, जो समस्त शरीर पर एकसाथ आक्रमण करता है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और एकसाथ दूर होता है। जिस समय सिर में ज्वर होता है, उसी समय नाक में भी, उसी समय पीठ में भी और उसी समय घुटनों में भी। और, जिस समय उतरता है तो नाक पीठ आदि सभी अंगों से उतर जाता है। इसी प्रकार—यद्यपि स्थूल दृष्टि से दिखाई न पड़े, तो भी—बिगाड़ (सामाजिक, धार्मिक और नैतिक) साथ-ही-साथ आरंभ होते और साथ-ही-साथ दूर होते हैं।

हम यहाँ केवल समाज-सुधार की ही मीमांसा करेंगे, और वह भी उसी सीमा तक, जहाँ तक इसका संबंध हिंदू-जाति से है। दृष्टांत के लिये अवश्य प्रसंगवश अन्य जातियों का भी विवरण होगा।

समाज-सुधार के विषय में यहाँ पर यह कह देना आवश्यक प्रतीत होता है कि चाहे नैतिक सुधारक हो चाहे धार्मिक, विना सामाजिक सुधार किए हुए कोई सफलता को प्राप्त नहीं कर सकता; क्योंकि इन सुधारों का परस्पर घनिष्ठ संबंध है। आजकल हिंदू-जाति के नेताओं की अवस्था उस पुरुष के समान है, जो भूख लगने पर कपड़े बेचकर अन्न प्राप्त कर लेता है, और जाड़े में मर जाता है, या जाड़ा लगने पर अन्न बेचकर कुर्ता मोल ले लेता है और भूख के मारे प्राण त्याग देता है। जब सामाजिक सुधार की लहर उठती है, तो इतने वेग से आक्रमण करती है कि वह नैतिक तथा धार्मिक सुधारों को बहा ले जाती है, और जब नैतिक सुधारों की बारी आई, तो हम उसी धुन में मस्त हो जाते हैं। इस प्रकार होने कुछ नहीं पाता। एक अंग का सुधार करने से दूसरे अंगों को हानि पहुँचती है। इसलिये आवश्यकता इस बात की है कि सभी आवश्यक बातों पर ध्यान रक्खा जाय।

यद्यपि आत्मिक उन्नति सामाजिक उन्नति का मूल है, तथापि विना सामाजिक उन्नति के आत्मिक उन्नति नहीं हो सकती। यह तो संभव है कि सामाजिक उन्नति होते हुए भी आत्मिक उन्नति न हो, अर्थात् समाज की साधारण दशा तो अच्छी हो, परंतु समाज के पुरुषों में आत्मिक उन्नति के लिये ज्ञान, अनुभव, तथा प्रेरणा न हो। परंतु यदि सामाजिक दोष उपस्थित हों, तो आत्मिक उन्नति हो ही नहीं सकती।

यही अवस्था नैतिक सुधार की है। नैतिक सुधार कौन करेगा? यह एक व्यक्ति का कार्य नहीं। इसके लिये समस्त जनता को शक्तिशाली होना चाहिए। यदि जनता में समाज-संबंधी दोष हैं, यदि समाज का संगठन ठीक नहीं है, यदि कुप्रथाएँ समाज की शक्ति को व्यर्थ खो रही हैं, तो नैतिक सुधार संभव ही कैसे हो सकता है?

कुछ लोग कहते हैं कि जो क़ानून हम समाज-सुधार के लिये पेश करते हैं, उनको गवर्नमेंट स्वीकार ही नहीं करती। यदि आज हमारा स्वराज्य होता, तो अवश्य हम इन क़ानूनों को पास करा लेते। संभव है, किसी सीमा तक यह विचार ठीक हो; परंतु सर्वथा ठीक नहीं है। किसी कुप्रथा को रोकना राज्य के अधिकार में नहीं है। यदि स्वराज्य हो जाय, और समाज के व्यक्ति कुप्रथा के प्रेमी हों, तो उस कुप्रथा के रोकने का कौन-सा साधन है? जिन देशों में स्वराज्य प्राप्त है, वहाँ क्या कुप्रथाएँ नहीं हैं? इँगलैंड के लोग मद्यपान के प्रेमी हैं, इसलिये स्वराज्य होते हुए भी मद्यपान के विरुद्ध क़ानून नहीं पास कर सकते। यदि जनता समाज-सुधार में प्रेम करे, तो उसकी आवाज़ इतनी प्रबल हो जाय कि कोई राज्य, चाहे वह स्वराज्य हो अथवा पर-राज्य, क़ानून पास करने में संकोच ही नहीं कर सकता। और, यदि जनता में प्रेम न हो, और राज्य से क़ानून पास हो भी जाय, तो भी वह निरर्थक-सा ही रहता है। उदाहरण के लिये विधवा-विवाह-संबंधी क़ानून को लीजिए। सन् १८५६ ई० में पं० ईश्वरचंद्र विद्यासागर के परिश्रम से भारतीय सरकार ने यह क़ानून पास कर दिया कि विधवा-विवाह जायज़ है; परंतु इतने ही से विधवाओं के दुःख दूर नहीं हुए। इससे स्पष्टतया सिद्ध होता है कि जो लोग समाज-सुधार को उस समय तक छूना नहीं चाहते, जब तक स्वराज्य की प्राप्ति न हो, वे बड़ी भारी भूल करते हैं। न तो नैतिक सुधार ही समाज-सुधार के लिये छोड़ा या स्थगित किया जा सकता है, और न समाज-सुधार का ही राजनीतिक सुधार की वेदी पर बलिदान किया जाना चाहिए। वस्तुतः दोनों का परस्पर संबंध है, और एक की दूसरे से पुष्टि होती है। इसलिये समाज-सुधार की ओर सभी लोगों को ध्यान देना चाहिए। इस विषय पर मुझे बहुत कुछ कहना है। अगली संख्याओं में बराबर इस विषय पर लिखता रहूँगा।

गंगाप्रसाद उपाध्याय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस कॉलम में हम हिंदी-प्रेमियों की जानकारी और सुबीते के लिये प्रतिमास नई-नई उत्तमोत्तम पुस्तकों के नाम देते रहते हैं। पिछले महीने में नीचे-लिखी पुस्तकें प्रकाशित हुईं—

(१) 'जासूस की डाली'—लेखक, गोपालरामजी गहमरी; संपादक, श्रीदुलारेलालजी ; मूल्य १॥), २)

(२) 'रामचरित-मानस' (सटीक)—टीकाकार, राय साहब श्यामसुंदरदास बी० ए० ; मूल्य ६)

(३) 'दल-दलन'—लेखक, श्री पं० सूर्यप्रसाद चतुर्वेदी बी० ए०, एल्० टी० ; मूल्य ॥।)

(४) 'हिंदी-गल्प-माला' सप्तम, अष्टम, नवम खंड; मूल्य प्रत्येक २॥)

(५) 'मदर इंडिया का जवाब'—लेखिका, श्रीमती चंद्रावती लखनपाल बी० ए० ; मूल्य ॥।)

(६) 'पाश्चात्य संसार और भारतवर्ष'—लेखक, देवकीनंदन "विभव" ; मूल्य १)

(७) 'भारत की सती स्त्रियाँ'—मूल्य १)

(८) 'प्रेम-परिणाम'—लेखक, ब्रह्मचारी इंद्र शास्त्री ; मूल्य ॥।)

(९) 'प्रेम का मूल्य'—लेखक, बा० परिपूर्णानंद वर्मा ; मूल्य ॥।)

(१०) 'कर्मवीर चंड'—लेखक, श्रीयुत बा० चंद्र-नारायण सकसेना साहित्य-भूषण ; मूल्य ॥।)

(११) 'धोंधा-बसंत'—लेखक, श्रीयुत बा० चंद्र-नारायण सकसेना, साहित्य-भूषण ; मूल्य ।)

(१२) 'हिंदू-ललना'—लेखक, "आरज़ू" साहब; मूल्य ॥।)

(१३) 'सती सारंधा'—लेखक, मुंशी "आरज़ू" साहब; मूल्य ।)

(१४) 'राधा-माधव'—लेखक, एक नाटक-प्रेमी ; मूल्य ॥।)

(१५) 'संतान-विक्रय'—लेखक, श्रीयुत "लक्ष्य" बरेली ; मूल्य ।=)

(१६) 'सती शुक्ला'—लेखक, श्रीयुत तारुणीप्रसादजी; मूल्य ॥)

(१७) 'भंडाफोड़'—लेखक, श्रीयुत "आनंद"; मूल्य ।)

(१८) 'नाक में दम'—लेखक, श्रीयुत "दास"; मूल्य ।)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

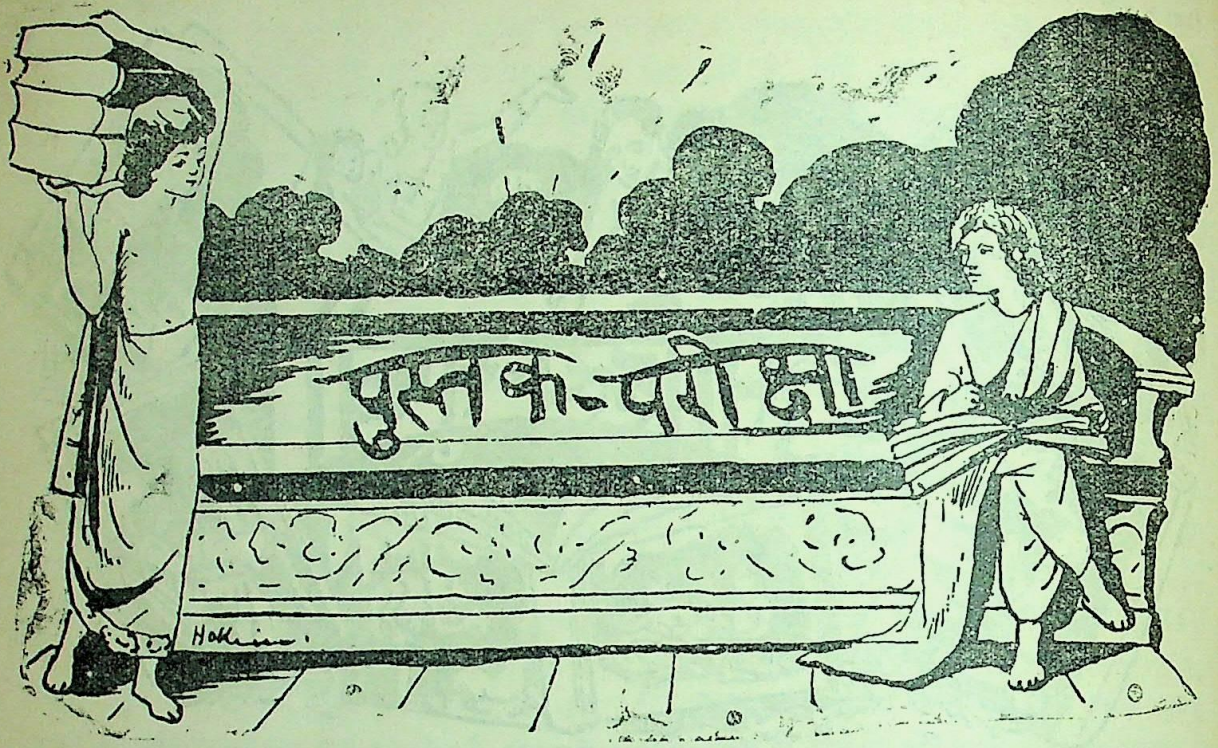

१. सामाजिक

शुद्धि-चंद्रोदय—लेखक और प्रकाशक, कुँअर चाँदकरण शारदा; मूल्य १॥); पृष्ठ-संख्या २८६।

पुस्तक के शीर्षक से ही प्रकट हो जाता है कि वह शुद्धि तथा हिंदू-संगठन पर लिखी गई है। इसके लेखक कुँअर चाँदकरण शारदा सच्चे देश-भक्त हैं, और इन्होंने असहयोग-आंदोलन के समय जगह-जगह जाकर शुद्धि का प्रचार किया था। प्रस्तुत पुस्तक में शुद्धि के पक्ष में कई दलीलें पेश की गई हैं, जो सर्वथा ग्राह्य हैं। लेखक ने दिखलाया है कि शुद्धि-आंदोलन भारत में प्राचीनतम काल से चला आता है, नया नहीं है। वैदिक युग में आर्यों ने किस प्रकार अनार्यों को अपने में मिला लिया था, रामायण के युग में राम ने वनवास के अवसर पर किस प्रकार अछूतों को अपनाया था, महाभारत के युग में राजा-महाराजों ने किस प्रकार यवन-महिलाओं के साथ विवाह करके उन्हें हिंदू-धर्म में ले लिया था इत्यादि सभी बातें लेखक ने बड़ी ख़ूबी से दिखलाई हैं। शंकर, रामानुज, कबीर, चैतन्य आदि धर्म-प्रचारकों ने भी किस प्रकार यवन, ईसाई आदि अन्य-धर्मावलंबियों की शुद्धि करके, उन्हें हिंदू-धर्म में मिलाया था, इसका उल्लेख भी किया गया है।

एक मार्के की बात लेखक ने यह दिखलाई है कि राजपूताने में परंपरा से मुसलमान-औरतों के साथ विवाह करने का रवाज अब तक चला आता है। उन मुसलमान-स्त्रियों की संतान सदा हिंदू कही जाती है। महाराज पटियाला, महाराज कपूरथला आदि देशी महाराजों ने योरपियन महिलाओं से शादी की है, अर्थात् उन महिलाओं को भी उन्होंने परोक्ष रूप में हिंदू-धर्म में दीक्षित किया है; क्योंकि उनके साथ शादी करने से वे लोग अँगरेज़ नहीं हुए। साथ ही लेखक ने उन धर्मध्वजी लोगों को ख़ूब फटकार बतलाई है, जो शुद्धि का विरोध करते हैं। लेखक का कहना है कि हमारे वर्तमान समाज में जो लोग होटलों में मुसलमान-ख़ानसामों के हाथ का खाना खाते हैं, अंडे-मुर्ग़ी, कोफ़ता, कोर्मा, मुतंजन, ज़र्दा आदि मांस-संबंधी नाना व्यंजनों को बेमालूम हज़म कर जाते हैं, शराब पीते हैं, वेश्याओं के यहाँ जाते हैं, वे हमारे 'धर्माचार्यों' द्वारा अशुद्ध नहीं गिने जाते; पर जो लोग अन्य धर्मों से शुद्ध किए जाकर हिंदू-धर्म में सम्मिलित किए जाते हैं, उनके प्रति वे अत्यंत घृणा का भाव प्रकट करते हैं!

शुद्धि से गोरक्षा पर कितना अच्छा प्रभाव पड़ सकता है, इस संबंध में लेखक ने एक महत्त्वपूर्ण तथ्य सूचित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किया है। लेखक का कहना है कि शुद्धि से गोभक्षकों की संख्या कम होगी, इससे गोरक्षा में सहायता मिलेगी। श्रीयुत देवदत्तजी (टेंपरेंस प्रीचर) का मत भी इस संबंध में उद्धृत किया गया है। वह इस प्रकार है—"यदि एक ईसाई अथवा मुसलमान एक पाव दोपहर को और एक पाव साँझ को गोमांस खाता है, तो एक दिन में आध सेर मांस का हिसाब हो गया। ३० दिन में १६ सेर। अर्थात् एक बछिया वह एक मास में खा गया। इस हिसाब से यदि वह ५० वर्ष ज़िंदा रहा, तो ३०० गउएँ हज़म कर गया। यदि ऐसे मांसाहारी को शुद्ध कर लिया जाय, तो ३०० गउओं की वैतरणी हुई।"

इसी प्रकार एक गऊ के अच्छी तरह पाले जाने से उसकी संतान (बैल) खेत जोतकर किस प्रकार ६,४०,००० मनुष्यों का पालन करने में समर्थ होती है, यह भी लेखक ने दिखलाया है। पुस्तक महत्त्वपूर्ण है, और बहुत अच्छे ढंग से लिखी गई है। शुद्धि के समर्थकों तथा पृष्ठ-पोषकों के चित्र भी पुस्तक में दिए गए हैं।

× × ×

दलितोद्धार—लेखक और प्रकाशक, कुँअर चाँदकरण शारदा ; मूल्य ।) ; पृष्ठ-संख्या ७६ ; छपाई-सफ़ाई अच्छी।

यह पुस्तक भी हिंदू-संगठन के संबंध में लिखी गई है। अछूत भाइयों पर देश में कैसा घोर अत्याचार हो रहा है, यह बात लेखक ने बड़ी ख़ूबी से दिखलाई है। वैदिक युग में गुण-कर्म के अनुसार ही वर्ण-विभाग होता था, जन्म से नहीं—यह बात प्रस्तुत पुस्तक में प्रमाणित की गई है। लेखक ने दिखलाया है कि अछूतों को समाज में सर्वथा सम्मिलित कर लेने से हिंदू-समाज की शक्ति दूनी बढ़ सकेगी। पुस्तक उपयोगी है।

× × ×

२. राजनीतिक

माडरेटों की पोल—लेखक और प्रकाशक, कुँअर चाँदकरण शारदा ; मूल्य ।) ; पृष्ठ-संख्या ९२ ; छपाई-सफ़ाई अच्छी।

प्रस्तुत पुस्तक में असहयोग की सफलता दिखलाते हुए लेखक ने माडरेटों को ख़ूब फटकार बतलाई है। असहयोग-आंदोलन में विघ्न डालने में माडरेट लोगों ने एक भी बात नहीं उठा रक्खी थी, यद्यपि अब रॉयल कमीशन के अवसर पर असहयोग के लिये वे लोग भी कमर कसकर खड़े हो गए हैं। लोग कहते हैं, माडरेट दुरंगी चालें चलते हैं। अँगरेज़ी में एक कहावत है—Heads I win, tails you loose. अर्थात् चित भी मेरी, पट भी मेरी। असहयोग के अवसर पर जिन्हें मिनिस्टरी मिलती थी, वे उसके विरुद्ध क्यों न चिल्लाते ? अब हज़रत देखते हैं कि दाँव हाथ नहीं लगा, तो लगे असहयोगियों का साथ देने। इधर वाह-वाही उधर माल यारों का। लेखक ने दिखलाया है कि माडरेट लोग किस तरह से रंग बदलते हैं। और, एक प्रश्नावली में उनकी सभी 'डिप्लोमेटिक' बातों का मुँह-तोड़ जवाब दिया है।

× × ×

३. नाटक

श्रीपूर्णभक्त नाटक (प्रथम भाग)—लेखक व प्रकाशक, स्वामी बुधचंद्र पुरी 'हिमकर' कविरत्न ; पृष्ठ-संख्या ७०; मूल्य ।) ; लेखक से मुक़ाम उवावड़ा हरीराम, पोस्ट गर्वे, तहसील सूजावाद, ज़िला मुलतान के पते पर मिलती है।

इस पुस्तक में "बालब्रह्मचारी योगीराज महात्मा पूर्ण भक्त का वृत्तांत राणी लूणा-संवाद तक बड़ी उत्तमता से वर्णन किया गया है।" ग्वालियर के श्रीअवंतविहारीलाल माथुर 'अवंत' की लिखी इसमें भूमिका है। भूमिका-लेखक तथा ग्रंथकार का एक-एक चित्र भी इसमें है। 'सांगीत पूरनमल' आदि चरित्र-बिगाड़ू पुस्तकों के प्रेमी यदि इसे पढ़ें और खेलें, तो लेखक का परिश्रम सफल हो जाय।

× × ×

उषा-सुंदरी—लेखक, श्रीयुत लाल रुद्रप्रतापसिंहजी, तहसीलदार, पन्ना ; प्रकाशक, श्रीयुत मुंशी शिवशंकरलालजी रायज़ादा, दमोह ; पृष्ठ-संख्या १५४ ; मूल्य १।), सजिल्द का १॥।)

यह एक सामाजिक नाटक है। उषा-अनिरुद्ध के प्रेम का चित्र है। लेखक की कविता कहीं-कहीं बड़ी अच्छी हुई है। पौराणिक नाटक में 'अल्लाह' और 'ख़ुदा'-वाली कविता अच्छी नहीं लगती। आशा है, आगे भी लेखक, आजकल के आदर्शों को ध्यान में रखते हुए, कम पात्रवाले, स्टेज पर खेलने-योग्य नाटक लिखकर हिंदी के भांडार को भरेंगे।

× × ×

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

४. उपन्यास

पश्चात्ताप—लेखक, पं० बुद्धिनाथ झा 'कैरव', विशारद; प्रकाशक, श्रीआगर शर्मा, व्यवस्थापक, प्रमोद-पुस्तकमाला, श्रीधर्मपूर-गांधी-विद्यालय, पो० कोढ़ा, जिला पूर्नियाँ; पृष्ठ-संख्या १२०; मूल्य ॥=)

यह सामाजिक उपन्यास है। सामाजिक कुरीतियों का और सत्य के ऊपर ढोंग के शासन का इसमें अच्छा चित्र खींचा गया है। उपन्यास मौलिक है, यह प्रसन्नता की बात है। आशा है, कैरव जी, संसार के नामी उपन्यास-लेखकों की कृतियों को पढ़कर इस क्षेत्र में और भी आगे बढ़ेंगे, और अधिक सफलता प्राप्त करेंगे। पता नहीं, हिंदी के बँगला-जूठन-प्रेमी पाठक इसे किस दृष्टि से देखेंगे!

"स"

× × ×

५. कविता

पुष्पांजलि—लेखक, श्रीगुरुदयालसिंह "प्रेम-पुष्प"; प्रकाशक, श्रीयुत राधाकृष्ण माथुर बी० ए०, ६४०, कटरा, प्रयाग; पृष्ठ-संख्या १६; मूल्य कुछ नहीं।

यह प्रेम-पुष्पजी की कुछ रचनाओं का संग्रह है। रचनाएँ सरस और उत्तम हैं, खड़ी बोली में हैं। काव्य-प्रेमियों का हृदय इन रचनाओं को पढ़कर प्रसन्न होगा, इसमें संदेह नहीं।

× × ×

श्रीसीतारामचरितायन—लेखक, श्रीयुत शीतलसिंह गहरवार; प्रकाशक और संपादक, बा० जयप्रकाशसिंह मोक़ा-बलेनवीस, कलक्टरी महाफ़िज़ख़ाना, मेखलौटगंज, गया; पृष्ठ-संख्या—बालकांड १०१, अयोध्याकांड ४१, आरण्य, किष्किंधा और सुंदरकांड २०, २५, ७०; मूल्य बालकांड १); अयोध्याकांड ॥), बाक़ी तीनों कांड १=)

यह एक 'स्वतंत्र' रामायण ग्रंथ है, जिसमें श्रीसीताराम के उन अद्भुत चरित्रों का अद्भुत वर्णन है, जो आज तक हिंदी भाषा में प्रकाशित नहीं हुए हैं। कविता अच्छी है; राम-भक्तों के पढ़ने योग्य है।

"स"

× × ×

६. फुटकल

भारत में रेल-पथ—लेखक, श्रीयुत रामनिवासजी पोद्दार; प्रकाशक, आदर्श पुस्तकालय चौक, आगरा; मूल्य २॥); पृष्ठ-संख्या ४२८।

लेखक महाशय ने इस पुस्तक को लिखकर हिंदी-साहित्य के एक आवश्यक अंग की पूर्ति करते हुए उन भारतीयों के नेत्रों की चकाचौंध दूर करने में सफलता प्राप्त की है, जो रेलों को सुख का साधन और उन्नति का मूल समझते हैं, तथा इस बात पर लेश-मात्र भी ध्यान नहीं देते कि इनसे हमारा अर्थ-शोषण कितने प्रबल वेग के साथ हो रहा है। यदि वस्तुतः देखा जाय, तो रेल का प्रादुर्भाव ही हमारे अर्थ-नाश, अकाट्य दासत्व-शृंखला-बंधन और अधःपतन का मूल-कारण है। भारतीय संतानों को पंगु और निःसत्व बनाना तथा गवर्नमेंट की अटल नीव जमा देना ईस्ट-इंडिया कंपनी का ही तो काम है। इस पुस्तक में रेलवे-संबंधी महत्त्वपूर्ण विषय का चित्ताकर्षक, विद्वत्तापूर्ण, मार्मिक विवेचन ओजस्विनी भाषा में, जिस निर्भीकता के साथ किया गया है, वह देखने ही लायक़ है। पुस्तक के प्रत्येक पृष्ठ में पोद्दारजी का अथक परिश्रम और तद्विषयक अनुभव-पूर्ण पांडित्य झलकता है। ऐसी अनूठी पुस्तक लिखकर हिंदी-साहित्य की श्री-वृद्धि करने के लिये पोद्दारजी धन्यवाद के पात्र हैं।

× × ×

आगे बढ़ो—अनुवादक, श्री पं० बुद्धिनाथ झा "कैरव", विशारद; प्रकाशक, श्रीआगर शर्मा, व्यवस्थापक प्रमोद-पुस्तकमाला, धर्मपूर-गांधी-विद्यालय, पो० आ० कोढ़ा, जिला पूर्नियाँ; मूल्य ॥)

प्रस्तुत पुस्तक एक अज्ञातनामा अमेरिकन ग्रंथकार की 'Getting On'-नामक पुस्तक का भावानुवाद है। इसमें छः विषयों पर एक-एक उपदेश-पूर्ण निबंध दिया गया है। निबंध सभी अच्छे और रोचक हैं। कर्मशून्य आलसियों को कर्तव्यनिष्ठ बनाने एवं नवयुवक छात्रों को प्रोत्साहित करने के लिये बड़े काम की पुस्तक है। छपाई-सफ़ाई साधारण है। कहीं-कहीं प्रूफ़-संबंधी त्रुटियाँ रह गई हैं।

शंकर

× × ×

सद्गुरु कबीर साहेब—लेखक, मोतीदास (चैतन्य); प्रकाशक, दीवान श्रीबालकदासजी साहेब, कबीर-धर्म-वर्धक-कार्यालय, बड़ोदा; पृष्ठ-संख्या, १००); मूल्य ॥)

यह कबीरदासजी का विवेचनात्मक संक्षिप्त चरित है। प्रत्येक कबीर-पंथी तथा साहित्य-प्रेमी को पढ़ना चाहिए।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आशा है, प्रकाशक महोदय अपने पंथ के अप्रकाशित ग्रंथों का प्रकाशन करके हिंदी के भंडार को भरने में अग्रसर होंगे।

× × ×

श्रीजपुजी साहिब सटीक—टीकाकार, श्रीमान् प्रोफ़ेसर तेजासिंहजी एम्० ए०; अनुवादक, गुरांदित्ता खन्ना; प्रकाशक, मंत्री, स्थानीय कमेटी श्रीदरबार साहेब, अमृतसर; पृष्ठ-संख्या १८४; मूल्य लिखा नहीं।

यह श्रीगुरुनानकदेवजी की दिव्य वाणी है। इसके टीकाकार अत्यंत प्रतिष्ठित और प्रसिद्ध व्यक्ति हैं। अनुवादक ने बड़ा अच्छा किया, जो इसे हिंदीवालों के लिये सुलभ कर दिया। आशा है, हिंदी-संसार इसका स्वागत करेगा।

× × ×

७. प्राप्ति-स्वीकार

श्राद्ध-गुण-विवरण (ग्यारहवाँ भाग)—लेखक, श्रीयुत बाबू कृष्णलाल वर्मा; प्रकाशक, मंत्री श्रीआत्मानंद जैन ट्रैक्ट सोसाइटी, अंबाला शहर; मूल्य =); पृष्ठ ४७; छपाई-सफ़ाई अच्छी।

इसके दस भाग निकल चुके हैं। पुस्तक अच्छे ढंग से लिखी गई है।

× × ×

जैन-धर्म ही भूमंडल का सार्वजनिक धर्म-सिद्धांत हो सकता है—लेखक, श्रीभाईदयाल जैन बी० ए० (ऑनर्स); प्रकाशक, जैन-मित्र-मंडल, दरीबा कलाँ, देहली; मूल्य)॥। पृष्ठ १४।

× × ×

विधु-बावनी—लेखक, श्रीयुत द्विजदेवनारायण शर्मा 'विधु'; प्रकाशक, विधु-साहित्य-मंदिर, गया; मूल्य =); पृष्ठ १६; छपाई-सफ़ाई साधारण।

× × ×

विधवा-विवाह करो—लेखक, कुँअर चाँदकरण शारदा; प्रकाशक, वैदिक यंत्रालय, अजमेर; मूल्य ~); पृष्ठ १४; छपाई-सफ़ाई अच्छी।

इसमें ज़ोरदार भाषा में विधवा-विवाह पर ज़ोर दिया गया है।

× × ×

आर्य-समाज और असहयोग—लेखक, कुँअर चाँदकरण शारदा; प्रकाशक वैदिक यंत्रालय, अजमेर; मूल्य ६ पाई; पृष्ठ २३; छपाई-सफ़ाई अच्छी।

× × ×

जैन-धर्म की विशेषताएँ—लेखक, पं० रामचरित उपाध्याय; प्रकाशक, श्रीआत्मानंद जैन ट्रैक्ट सोसाइटी, अंबाला शहर; मूल्य =); पृष्ठ २३।

× × ×

समय—लेखक, श्रीयुत कन्हैयालाल गार्गीय; प्रकाशक, श्रीयुत भगवानदास गार्गीय, बुकसेलर ब्यावर; मूल्य =); पृष्ठ ४८।

× × ×

प्राइमरी धर्म-शिक्षक—लेखक, बाबू जगन्नाथप्रसाद; प्रकाशक, बाल-मनोरंजन पुस्तकमाला, अशोकभवन, लोहारडागा (राँची); मूल्य =)॥; पृष्ठ २६; छपाई-सफ़ाई अच्छी।

× × ×

पुष्पांजलि—लेखक, 'श्रीविधु'; प्रकाशक, विधु-साहित्य-मंदिर, गया; मूल्य ~); पृष्ठ १४।

× × ×

अभिलाषा-बत्तीसी—लेखक, गोस्वामी श्रीहितचंद्रलालजी; प्रकाशक, श्रीयुत भीमसेन-रामानंदजी पुरोहित, अटेर, ग्वालियर; मूल्य ~); पृष्ठ १८; छपाई-सफ़ाई अच्छी।

सम्मति

भूतपूर्व प्रतिभा-संपादक श्रीयुत पं० ज्वालादत्तजी शर्मा लिखते हैं—'सुधा' को इतने थोड़े समय में ही इस स्थिति पर पहुँचा देना आपका ही हिस्सा है। लेख सुंदर, छपाई उत्तम, और चित्र बढ़िया, सभी बातें अच्छी हैं। एक निवेदन है, इसे 'माधुरी' की तरह मोटी न होने दीजिए, छोटी और बिचैत बनाइएगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मेरी सफ़ाई

पौष की माधुरी में एक नोट निकला है, जिसमें मेरी माधुरी के विशेषांक की आलोचना पर टिप्पणी की गई है। संपादक महाशय का कहना है कि जिस अंक की मेरे भाई साहब पं० हेमचंद्र जोशी ने मुक्तकंठ से प्रशंसा की है, उसे मैंने यद्यपि बुरा नहीं बतलाया है, तथापि उसकी उतनी प्रशंसा भी नहीं की है। संपादक महाशय यह बात मानते हैं कि मैंने माधुरी का विशेषांक बुरा नहीं बतलाया है। जो अंक अच्छा निकला हो, उसे कोई ख़ामख़ाह बुरा कहेगा ही क्यों? विश्लेषण के रूप में इस अंक की आलोचना की गई है, इसलिये संपादक महाशय को शायद भ्रम हुआ हो कि मैंने इसकी यथोचित प्रशंसा नहीं की। पर मेरे कई मित्रों ने तो उसे पढ़कर कहा कि तुमने माधुरी के इस अंक की बहुत प्रशंसा की है। अस्तु।

रही भाई साहब की सम्मति की बात। यह आवश्यक नहीं कि भाई साहब की जो राय हो, वही अविकल रूप से मेरी भी हो। साहित्य-संबंधी अनेक बातों में भाई साहब से मेरा मत-भेद रहता है। उनकी जिस बात से मैं सहमत न होऊँ, उसका प्रतिवाद करने के लिये मैं उसी तरह तैयार हूँ, जिस तरह प्रेमचंदजी की किसी रचना का। सुधा में उनके और मेरे नाम से जो साहित्य-संबंधी लेख छप रहे हैं, उनमें से एक अप्रकाशित लेख के संबंध में हम दो भाइयों का मत-भेद होने के कारण चिट्ठियों में दो-तीन महीने तक वाद-विवाद चलता रहा। फिर भी हम एक दूसरे की बात के क़ायल नहीं हो सके। इस कारण मुझे सारा लेख बदल देना पड़ा और उसमें केवल ऐसी ही बातें लिखनी पड़ीं, जिनसे हम दोनों सहमत थे। तात्पर्य यह कि साहित्य-क्षेत्र में भाई साहब को मेरी बात काटने का पूर्ण अधिकार है, और मुझे उनकी बात की कड़ी समालोचना करने का भी पूरा हक़ है (यद्यपि माधुरी के विशेषांक की आलोचना में मेरी और उनकी सम्मति में अधिक भिन्नता नहीं)।

संपादक महाशय को यह आश्चर्य हुआ है कि नैनीताल में बैठे-बैठे मुझे अनेक गुप्त बातों का पता कैसे लग गया। इस संबंध में मुझे यह कहना है कि लखनऊ में आने पर मुझे इन सब गुप्त बातों का पता चला। इस कारण मूल-आलोचना में कई बातें जोड़नी पड़ी हैं। मेरे नाम के साथ 'नैनीताल' छप गया है। यह भूल से रह गया है। इसकी आवश्यकता नहीं थी।

यह नोट किन संपादक महाशय का है, मैं निश्चित रूप से नहीं कह सकता। पर भाषा के संयत विलास तथा मिठास और शैली की सुरुचि एवं गांभीर्य से यह ज्ञात होता है कि संपादक महाशय सहृदय हैं। पर यह इंगित करना कि सुधा के संपादकीय विभाग में नियुक्त होने के कारण मैंने खुले दिल से माधुरी की प्रशंसा नहीं की, किसी प्रकार भी सुरुचि-अनुमोदित नहीं कहा जा सकता। मेरी तरफ़ से सुधा, माधुरी, दोनों धन्य हैं। सुधावालों का नमक खा रहा हूँ, तो उस नमक के बदले काम करता हूँ। लेकिन इसके यह माने नहीं कि केवल इसी कारण मैं माधुरी की कड़ी आलोचना करूँ।

भाग्य की विडंबना से यह हुआ है कि जिस काम से मुझे सबसे ज़्यादा नफ़रत थी, वही मुझे करना पड़ रहा है। साहित्यिक वाद-विवाद से मुझे आंतरिक चिढ़ है; पर दैवी कोप से मैं उसके दलदल में ऐसी बुरी तरह से फँस गया हूँ कि अब निकलना मुशकिल हो गया है। हिमालय-पर्वत का पक्षी स्वप्न-लोक के आकाश में मुक्त होकर विचर रहा था। पर साहित्य के जाल में फँसकर लाचार हो गया। किस कुघड़ी में मैंने माडर्न रिव्यू में हिंदी-साहित्य-संबंधी लेख छपाया था कि सारा हिंदी-संसार मेरे ख़िलाफ़ हो उठा है; पर वह लेख मैंने किसी बुरी भावना में नहीं लिखा था। कुछ भी हो, मैं प्रेमचंदजी को विश्वास दिलाना चाहता हूँ कि व्यक्तिगत रूप से मैं उन्हें भाई से अधिक मानता हूँ। साहित्य-क्षेत्र में उनसे मेरा जो मत-भेद है, उसके लिये लाचार हूँ।

संपादन के संबंध में मैंने जो बात लिखी थी, उससे मेरा तात्पर्य केवल इतना ही था कि मिश्रजी और प्रेमचंदजी के समान सुयोग्य लेखकों से हम इससे अच्छे संपादन की आशा रखते हैं।

इलाचंद्र जोशी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

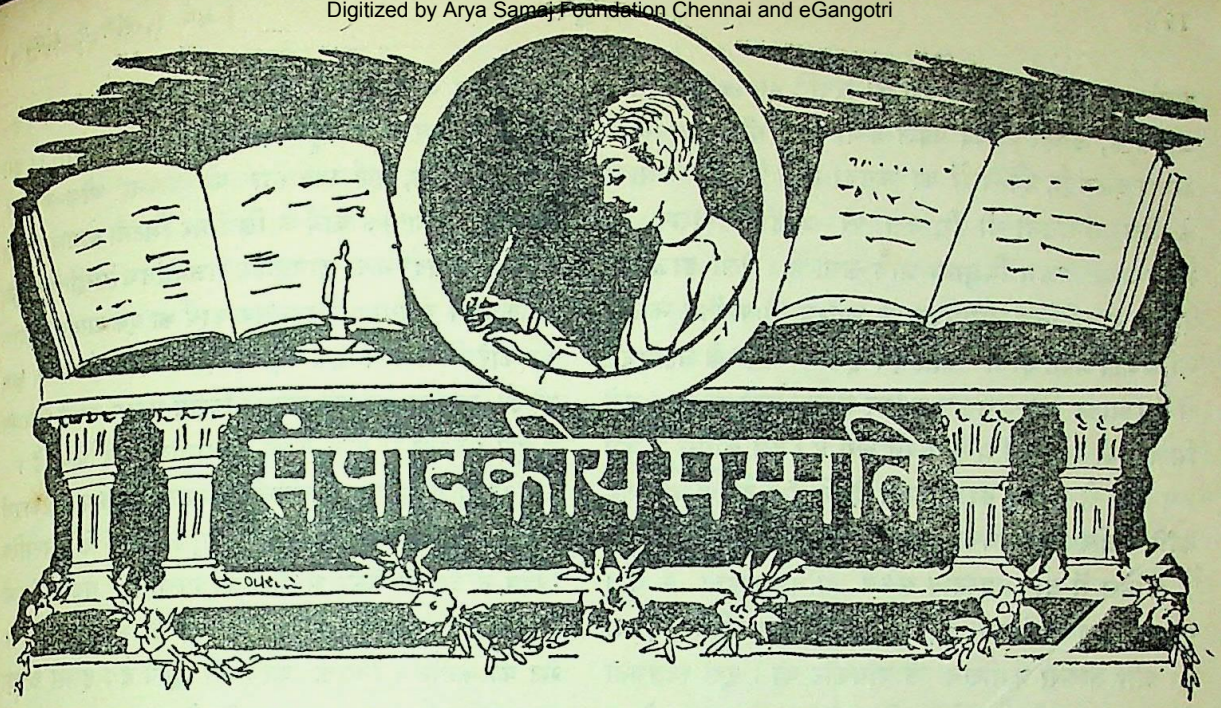

१. कुछ अपने संबंध में

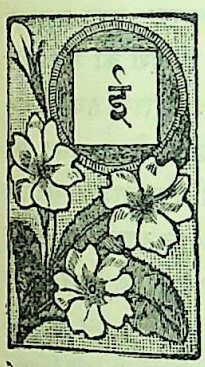

ईश्वर की कृपा से सुधा के प्रथम वर्ष का प्रथम खंड सकुशल समाप्त हो गया। यह सातवीं संख्या प्रेमी पाठकों की सेवा में उपस्थित की जाती है। सुधा कैसी निकली या निकल रही है, इसका फ़ैसला करने का अधिकार पाठकों को है। हम केवल इतना ही निवेदन कर देना चाहते हैं कि हमने यथाशक्ति पाठकों की सेवा में उत्कृष्ट सामग्री उपस्थित करने की चेष्टा की है, और यह हमारी चेष्टा उत्तरोत्तर बढ़ती ही जायगी। इस समय हिंदी की दिन-दूनी रात-चौगुनी उन्नति हो रही है। उच्च साहित्य का आदर्श भी उच्चतम होता जा रहा है। नई-नई उच्च कोटि की पत्रिकाएँ निकल रही हैं। प्रत्येक हिंदी का पत्र अपनी उन्नति करने में लगा हुआ है। यह बड़े ही हर्ष की बात है। हम सातवीं संख्या से सुधा में कुछ परिवर्तन कर रहे हैं। आशा है, ये परिवर्तन पाठकों को रुचिकर होंगे। 'चित्रकला'-स्तंभ के स्थान पर 'ललित कला'-स्तंभ रक्खा गया है। इसमें चित्र, संगीत, अभिनय, रंगमंच, उपन्यास, कहानी, नाटक, कविता आदि सभी ललित कलाओं पर लेख और नोट रहेंगे। इस स्तंभ में विश्व-साहित्य का भी परिचय देने की चेष्टा की जायगी। इस प्रकार यह स्तंभ बहुव्यापक और अधिक उपयोगी बन जायगा। इसके अतिरिक्त 'चारु चयन', 'देश-विदेश' आदि कई अस्थायी स्तंभ भी देने का विचार है। उनमें से कभी कोई स्तंभ रहेगा, कभी कोई। हमने इस बात का भी प्रबंध किया है कि प्रतिमास किसी विदेशी नाटककार, उपन्यासकार या कहानी-लेखक का परिचय, उसकी सर्वोत्कृष्ट रचना का अनुवाद या आलोचना भी दी जाया करे। इस संख्या से पं० विश्वंभरनाथ शर्मा कौशिक का 'मा' उपन्यास भी शुरू कर दिया गया है। यह क्रमशः निकलेगा। इसके बाद वर्तमान उत्कृष्ट हिंदी-लेखक, हमारे परम मित्र बा० जयशंकरप्रसादजी का 'कंकाल' उपन्यास क्रमशः निकाला जायगा। यह उपन्यास बहुत ही उच्च कोटि का होगा। अगली संख्या से हिंदी के वर्तमान लेखकों और लेखिकाओं का सचित्र परिचय भी, 'साहित्य-संसार'-स्तंभ देकर, क्रमशः प्रकाशित किया जायगा। तात्पर्य यह कि सुधा को और भी अधिक उत्कृष्ट और उपयोगी बनाने के लिये भरसक पूरी चेष्टा की जायगी। आशा है, हिंदी-प्रेमी जनता की ओर से हमें पूर्ण सहायता और सहयोग प्राप्त होगा।

× × ×

२. कांग्रेस का अधिवेशन

मदरास-कांग्रेस का अधिवेशन निर्विघ्न समाप्त हो गया। हम पहले ही लिख चुके हैं कि कांग्रेस का यह अधिवेशन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अत्यंत महत्त्व का होगा। देश की स्थिति इस समय जितनी जटिल है, उतनी शायद पहले कभी नहीं थी। कांग्रेस के भीतर दलबंदी, कौंसिलों का झगड़ा तथा हिंदू-मुसलमानों के बीच तनातनी थी ही, उस पर शाही कमीशन का माया-जाल अलग बिछाया जाने लगा है। ऐसी हालत में देश के राजनीतिक वायुमंडल में अवश्य ही भयंकर झटिका का प्रकोप प्रकट होना चाहिए। इस झटिका के धक्कमधक्के से तंग आकर हिंदू-मुसलमान फिर से भाई-भाई की तरह गले मिलने की लालसा प्रकट करने लगे हैं। इस कांग्रेस में हम नए सिरे से एकता का सूत्रपात देखते हैं। इस कारण यह कांग्रेस और भी अधिक महत्त्वपूर्ण हो जाती है।

कांग्रेस में तीन प्रस्ताव सबसे अधिक महत्त्व के थे। एक तो पूर्ण स्वतंत्रता का, दूसरा हिंदू-मुसलिम एकता का और तीसरा कमीशन के बायकाट का। पूर्ण स्वतंत्रता के प्रस्ताव का श्रेय सबसे अधिक पं० जवाहरलाल नेहरू को है। नेहरूजी हाल में विलायत से लौटे हैं। वहाँ की वर्तमान राजनीति से भी वह भली भाँति अभिज्ञ हैं। वह जान गए हैं कि किसी विदेशी राष्ट्र अथवा दल के आश्रय अथवा सहायता की आशा में टिके रहने से भारत को कभी स्वराज्य नहीं प्राप्त हो सकता। उन्होंने इस प्रस्ताव से यह दिखाना चाहा है कि हम लोग किसी साम्राज्य के अधीन रहकर उत्तरदायित्व-पूर्ण शासन की भीख नहीं माँगना चाहते, अपने पैरों पर खड़े रहकर पूर्ण स्वतंत्रता प्राप्त करना चाहते हैं। इस प्रस्ताव से हमारी दलित आत्माओं को कम-से-कम यह चेतना तो प्राप्त होगी कि हम लोग जितने दुर्बल तथा निरुपाय समझे जाते हैं, उतने नहीं हैं। हम किसी कमीशन के निकट परीक्षा में उत्तीर्ण होकर स्वराज्य की शिक्षा के लिये लालायित नहीं हैं। स्वतंत्रता प्रत्येक राष्ट्र का जन्म-सिद्ध अधिकार है, और हम लोग अपनी भीतरी शक्ति की योग्यता से उसे प्राप्त करेंगे, न कि किसी बाहरी आडंबरपूर्ण आश्रय की सहायता से। स्वतंत्रता का यह प्रस्ताव अत्यंत उपयुक्त समय पर घोषित हुआ है। कमीशन द्वारा भारतीयों का जो घोर अपमान किया गया है, उसका इससे अच्छा उत्तर और कोई नहीं दिया जा सकता था।

पर एक बात है। केवल कोरे प्रस्ताव द्वारा ही ब्रिटिश-सरकार को भय दिखाना निरी मूर्खता होगी। अँगरेज़ी सरकार इस प्रकार के काग़ज़ी प्रस्तावों के ढोल की पोल का रहस्य बहुत अच्छी तरह से समझ चुकी है। इस कारण उस पर उनका कुछ असर नहीं हो सकता। हम लोगों को अब, पूर्ण स्वतंत्रता को अपना ध्येय बनाकर, वास्तविक सत्तात्मक कार्य के लिये मर मिटना होगा। केवल मौखिक विवादों तथा छायात्मक राजनीतिक सिद्धांतों से कुछ भी काम न चलेगा। रचनात्मक कार्य का एक अत्यंत क्षुद्रांश भी कोरे विवादों के एक बड़े पहाड़ से बढ़कर होगा। कुछ भी हो, स्वतंत्रता-संबंधी प्रस्ताव विशेष महत्त्व का है। कांग्रेस ने इसे एकस्वर से पास करके प्रशंसनीय कार्य किया है।

हिंदू-मुसलिम-एकता-संबंधी प्रस्ताव भी कम महत्त्वपूर्ण नहीं। विगत पाँच वर्षों से हिंदू-मुसलमानों के पारस्परिक विद्वेष ने देश में कैसा अनर्थ मचा रक्खा है, यह सभी को विदित है। इसी पारस्परिक अनैक्य के कारण पार्लियामेंट को कमीशन नियुक्त करने की सूझी है। इससे अच्छा अवसर कमीशन ने दूसरा नहीं देखा। इस आपस की होड़ाहोड़ी और सिर-फुटौवल के कारण अन्य महत्त्वपूर्ण प्रश्नों को सुलझाने का अवसर ही देश को नहीं मिल रहा है। इस कारण कांग्रेस ने अत्यंत उदारता तथा विचारशीलता के साथ एकता के संबंध में जो प्रस्ताव पास किया है, वह प्रशंसनीय है। गोवध तथा बाजे के संबंध में कांग्रेस ने जो निर्णय किया है, उस पर यद्यपि बहुत कुछ आपत्तियाँ पेश की जा सकती हैं, तथापि वर्तमान स्थिति की जटिलता को देखते हुए इस संबंध में चुप रहना ही अच्छा है। मालवीयजी तथा अली-भाइयों के समान कट्टर मज़हबी नेताओं ने इसी कारण इन बातों में उदारता प्रदर्शित की है। एकता के संबंध में मालवीयजी ने जो व्याख्यान दिया है, वह स्वर्णाक्षरों में लिखे जाने के क़ाबिल है। अली-भाइयों में से एक का उनके पद-प्रांत पर आवेश-विह्वल होकर निपतित होना और दूसरे का उन्हें पंखा झलना ऐसा दृश्य था, जो कभी नहीं भूला जा सकता। इससे ज्ञात होता है कि तनातनी होने पर भी भीतर-ही-भीतर दोनों पक्ष किस प्रकार पारस्परिक मिलन के लिये व्याकुल हैं। एकता की महत्ता दोनों पक्ष समझे हुए थे, पर कई कारणों से उसे कार्य-रूप में परिणत करने में असमर्थ थे।

देश के सामने तत्काल कार्य-रूप में परिणत किए जाने योग्य सबसे अधिक आवश्यक प्रश्न यही एकता का है। बिना इसको हल किए त्राण नहीं। हिंदू तथा मुसलमान,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सभी नेताओं को इसके पीछे जी-जान से लग जाना होगा। देशवासियों को समझाना होगा कि यह वैमनस्य देश की भारी जड़ ही काटने में लगा है। इसे अधिक तूल देना घोर मूर्खता है। जितनी जल्दी यह दूर हो, उतना अच्छा। देश का सारा काम इसके कारण रुका पड़ा है।

तीसरा उल्लेखनीय प्रस्ताव कमीशन के बायकाट का था। पार्लियामेंट की धूर्तता तथा उद्दंडता के कारण भारत के भाग्य का निपटारा करने के लिये यह जो तथाकथित सप्तर्षि-मंडल नियुक्त हुआ है, उसका पूर्णतया बहिष्कार करना ही इस समय देश का कर्तव्य है। हम लोगों के वश में और कोई बात नहीं है। केवल उसका बहिष्कार करना ही शेष रह गया है। इतना भी यदि हम लोग न कर सके, तो हमारी नपुंसकता को धिक्कार है। कमीशन को पूरा विश्वास है कि भारत में हिंदू-मुसलमानों के वैमनस्य के कारण उसे अपनी धौंस जमाने का पूर्ण सुयोग प्राप्त होगा। उनलोगों का ऐसा सोचना अनुचित भी नहीं। मुसलमानों के कुछ उत्तरदायित्व-हीन दलों ने उसका स्वागत करने का उद्योग भी किया है। इस कारण यदि हिंदू, मुसलमान एकता के सूत्र में ग्रथित होकर एकस्वर से उसका विरोध करके उसे पूर्णतया बहिष्कृत करने में समर्थ हों, तो पार्लियामेंट को ख़ासा जवाब मिलेगा।

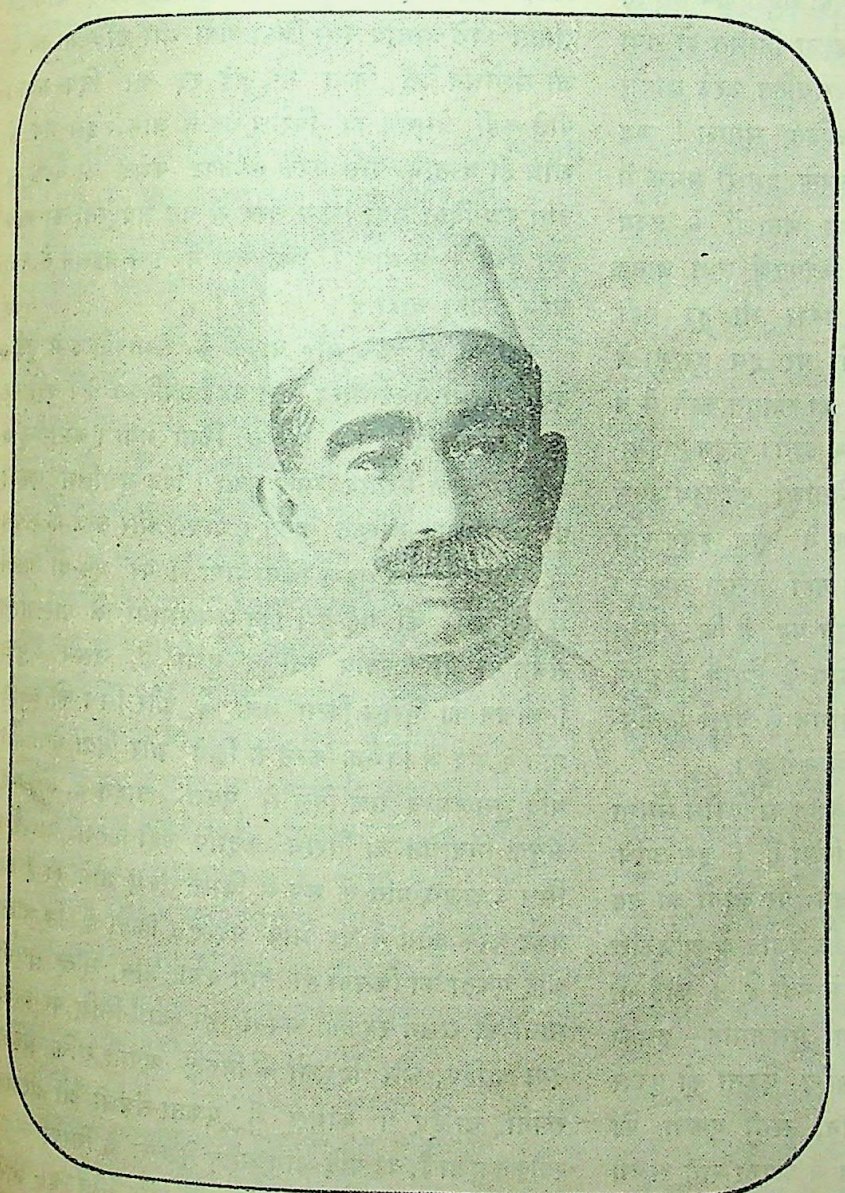

मदरास-कांग्रेस के अध्यक्ष डॉक्टर मुख़्तार अहमद अनसारी
(हिंदी-संदेश की कृपा से)

बहिष्कार का प्रस्ताव पास करके कमीशन ने उचित ही किया है; पर ख़ाली बहिष्कार से कुछ नहीं होगा। देशवासियों को हर तरह से यह दिखलाना होगा कि भारत के लोग अपने भाग्य का निपटारा स्वयं कर लेंगे। किसी बाहरी कमीशन का निर्णय वे नहीं चाहते।

इन तीन प्रस्तावों के अतिरिक्त संयुक्त निर्वाचन का प्रस्ताव भी महत्त्वपूर्ण था। हिंदुओं की तरफ़ से अलग और मुसलमानों की तरफ़ से अलग निर्वाचन होना उचित भी नहीं है और पारस्परिक एकता में बाधक भी है।

डॉक्टर अंसारी का भाषण अत्यंत ओजस्वी, आवेशपूर्ण, समयोपयोगी तथा उदारतापूर्ण था। डॉक्टर साहब ने अपनी स्वाभाविक विचारशीलता के साथ वर्तमान स्थिति की जटिलता लोगों को समझाई है, और उसे सुलझाने के लिये समस्त भिन्न-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भग्न दलों तथा संप्रदायों से सहयोग की प्रार्थना की है। आपके भाषण की शैली बड़ी मर्मस्पर्शी तथा भावुकतापूर्ण थी। देश की इस संकटापन्न स्थिति में डॉक्टर साहब के सभापतित्व से देशवासियों को बहुत-सी नई तथा उपयोगी बातों के सोचने का अवसर प्राप्त हुआ है, इस कारण वह हमारे धन्यवाद के पात्र हैं।

× × ×

३. मुसलिम लीग में फूट

आख़िर मुसलिम लीग में भी फूट हो गई। जब बहुमत से लीग का अधिवेशन कलकत्ते में होना निश्चित हो गया था, तब सर शफ़ी ने एक नया दल संगठित करके लाहौर में अपनी खिचड़ी अलग पकाना उचित समझा! यह अत्यंत खेद की बात है। इसका कारण हमारी समझ में यही आता है कि कतिपय मुसलिम नेताओं के हृदय में हिंदुओं के प्रति जो घोर विद्वेषपूर्ण तथा घातक विचार भरे हुए हैं, वे किसी प्रकार भी दूर नहीं होना चाहते। इस श्रेणी के नेताओं पर इस दुराशा ने प्रभाव डाला है कि साइमन-सप्तक का स्वागत करने से वे हिंदुओं की जड़ ही उखाड़ने में समर्थ होंगे। लंदन टाइम्स-सरीखे पत्रों के दम-झाँसों ने इन नेताओं को ख़ूब उल्लू बनाया है। हिंदू-विद्वेषिता के कारण वे लोग इतने अंधे बन गए हैं कि आगे-पीछे कुछ भी नहीं देखना चाहते। अधिक आश्चर्य तथा दुःख की बात यह है कि हसरत मोहानी सरीखे-नेता भी, जो असहयोग के ज़माने में इतने कट्टर असहयोगी थे, आज इस कमीशन के चरख़े में फँसकर मुहम्मद शफ़ी की पीठ ठोकने में लगे हैं।

मुसलिम लीग के लाहौर के अधिवेशन का विरोध समस्त देश के मुसलमानों ने बहु-मत से किया है। इस अधिवेशन की कार्यवाही की पोल खुलने पर लोगों को यह भी भली भाँति विदित हो गया है कि पंजाब के अधिकांश मुसलमान नेता भी इसके पक्ष में नहीं हैं। कोई भी समझदार आदमी—क्या हिंदू, क्या मुसलमान—इसका समर्थन नहीं कर सकता। देश में सर्वत्र एकता की पुकार मची हुई है। हिंदू तथा मुसलमान, सभी एकता का महत्त्व समझने लगे हैं। ऐसी हालत में अपना राग अलग अलापने में सर मुहम्मद शफ़ी के दल को किसी प्रकार की व्यावहारिक सफलता होना असंभव है।

सुना जाता है, लाहौर में लीग की बैठक का कार्यक्रम गुप्त रूप से संचालित हुआ है। डॉ० मुहम्मद आलम ने इस गुप्त कार्यवाही का भंडाफोड़ किया है। उन्होंने कहा है कि जो प्रतिनिधि कमीशन के बहिष्कार के पक्ष में थे, उन्हें लीग की बैठक में प्रवेश नहीं करने दिया गया है। जिन्होंने येन-केन-प्रकारेण भीतर घुसकर प्रस्ताव का विरोध किया है, उन पर गालियों की बौछारें हुई हैं, और वे डराए तथा धमकाए गए हैं। कमीशन के स्वागत-संबंधी प्रस्ताव के पक्ष में जो लोग समझे गए थे, उन्हें मुफ़्त में टिकट बाँटे गए हैं। मूल-प्रस्ताव-संबंधी विवाद को शीघ्र समाप्त करके प्रस्ताव पास किया गया और डॉ० आलम ने जो संशोधन पेश किया था, वह रद कर दिया गया। पीछे कहीं प्रस्ताव का विरोध बढ़ न जाय, इस भय से शीघ्र ही प्रस्ताव पास करके सब्जेक्ट कमेटी की बैठक का ढोंग रच दिया गया। इस तरह से यह ज़बर्दस्ती का काम पूरा हुआ। न-मालूम शफ़ी-दल ने इस प्रहसन से क्या लाभ उठाना चाहा है।

कलकत्ते की बैठक मौ० याक़ूब के सभापतित्व में हुई। देश के सभी गण्य-मान्य नेता वहाँ उपस्थित थे। वहाँ पर शफ़ी की ज़्यादती का विरोध किया गया। कमीशन के बहिष्कार का प्रस्ताव पास हुआ। हिंदू-मुसलिम एकता पर भी प्रस्ताव स्वीकृत हुआ। गोवध और बाजे के संबंध में कांग्रेस का मत ग्रहण किया गया। पर एक-दो बातों में ज़्यादती की गई है। हिंदू-मुसलमानों के पारस्परिक संबंध पर जो प्रस्ताव स्वीकृत हुआ है, उसमें संयुक्त निर्वाचन का विरोध किया गया है, और सिंध को अलग प्रांत के रूप में विभक्त करने के लिये ज़ोर दिया गया है। यदि मुसलमान सच्चे दिल से एकता चाहते हैं, तो उन्हें संयुक्त निर्वाचन का विरोध कदापि नहीं करना चाहिए। सिंध के अलग प्रांत के रूप में विभक्त किए जाने की इच्छा प्रकट करके लीग ने यह भाव प्रदर्शित किया है कि बाहर चाहे एकता का कितना ही ढोंग रचा जाय, भीतर मुसलमानों को अलग रहकर अपनी ही स्वार्थ-सिद्धि पर ध्यान देना चाहिए, और हिंदुओं के विरुद्ध अपनी शक्ति बढ़ाए रखनी चाहिए। कांग्रेस में एकता-संबंधी जो प्रस्ताव स्वीकृत हुआ है, वह यदि लीग ऑफ़ नेशन्स के निरस्त्रीकरण-प्रस्ताव की तरह प्रहसनात्मक निकला, और भीतर-ही-भीतर हिंदू-मुसलमानों के बीच अविश्वास पूर्ववत् स्थायी रहा, तो देश की वर्तमान स्थिति में इसका परिणाम भयंकर होगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुसलिम लीग की वर्तमान फूट के अवसर पर एक विशेष बात हमें मालूम हुई। लाहौरी बैठक में भिन्न-भिन्न प्रांतों से जो प्रतिनिधि गए थे, उनमें युक्तप्रांत के प्रतिनिधियों की संख्या ही अधिक थी। देहली से एक प्रतिनिधि गया था, कलकत्ते से दो, बंबई से तीन, पर युक्तप्रांत से गए बारह! इससे ज्ञात होता है कि हिंदू-मुसलिम विद्वेष की आग हमारे प्रांत में ही सबसे भीषण रूप में सुलग रही है। अपने प्रांत के मुसलमानों की यह संकीर्णता देखकर हमें बड़ा दुःख होता है।

× × ×

४. व्यक्ति और राष्ट्र

ऐसा नराधम शायद ही कोई हो, जो यह कहे कि अपने देश को प्यार मत करो। अपनी जाति और अपने देश के प्रति प्रेम होना मनुष्य के लिये स्वाभाविक है। राजनीतिक क्षेत्र में देश के लिये 'राष्ट्र' शब्द काम में लाया जाता है। पर 'राष्ट्र' शब्द छायात्मक है। इस शब्द की अस्पष्ट छाया के भीतर संसार के प्रतिदिन का कठोर वास्तविक भाव ऐसा बेमालूम छिप जाता है कि देखकर आश्चर्य होता है। राजनीतिक लोग इस छाया के अंधकार में चलकर मनुष्य के व्यक्तित्व को अनजान में अत्यंत निष्ठुरता के साथ पैरों-तले कुचलते जाते हैं। अंत को ऐसी स्थिति हो जाती है कि सभा-समितियों का जोश और कोलाहल ही वे परम सत्य समझने लगते हैं, और व्यक्ति का रात-दिन का सुख-दुःख-चक्र और कठिन जीवन-संग्राम जब अपनी कठोर वास्तविकता लेकर उग्र रूप प्रकट करने लगता है, तब वे लोग उस तरफ़ से आँख बचा लेते हैं। वास्तविक सत्य उनके लिये 'भावुकता' है और छायात्मक, व्यक्तित्वहीन (Impersonal) जीवन उनका आदर्श। राजनीतिक लोग कवियों को कोरे 'भावुक' (Idealist) कहकर उनकी बातों को हँसी में उड़ा देते हैं, पर वे ख़ुद कितना अवास्तविक भावुकतापूर्ण जीवन बिताते हैं, इसका ख़याल नहीं करते।

महात्मा गांधी Idealist अवश्य हैं। पर वह व्यक्तित्वपूर्ण भावुकता के रस में डूबे हैं। वह देश के लिये इसीलिये मर मिटे हैं कि व्यक्ति के नित्य-नैमित्तिक, वास्तविक जीवन के प्रति उनकी आंतरिक सहानुभूति है। राष्ट्रीय आंदोलन के बाह्य चक्र को और सभा-समितियों के कोलाहल को वह कभी महत्त्व नहीं देते—दे नहीं सकते। यही कारण है कि उन्होंने वर्तमान समय में हमारे देश के राजनीतिक क्षेत्र में चारों तरफ़ से हुल्लड़शाही का ज़ोर देखकर चुप्पी साध ली है, और व्यक्तिगत जीवन की कठोर वास्तविकता का अनुभव करके सत्तात्मक विचारों में निमग्न हैं।

हम यह नहीं कहते कि राजनीति की देश को आवश्यकता नहीं है। हमारा कहने का तात्पर्य केवल यही है कि राजनीति की छाया के नीचे व्यक्ति की सत्ता को लीपपोतकर एकाकार कर देना उचित नहीं। राजनीतिक चक्र में सम्मिलित न होने से अवश्य ही हम लोग बर्बर गिने जायँगे। पर व्यक्ति के विकास पर ध्यान न देने से हम लोग राष्ट्र के मूल में ही कुल्हाड़ी चला रहे हैं। देश में पचानबे फ़ी-सदी लोग ऐसे हैं, जो राजनीति और राष्ट्र का अर्थ ही नहीं समझ पाते। उनका क्या उपाय हम लोग सोच रहे हैं? यहाँ पर राजनीतिक नेता झट यह उत्तर देंगे कि उन्हीं पचानबे प्रतिशत लोगों की उन्नति के लिये ही तो हम लड़ रहे हैं। बहुत अच्छा। पर बाबा! आप लोग सभा-समितियों में जिन प्रस्ताव तथा स्पीच-नामक महास्त्रों से लड़ रहे हैं, उनसे सफलता पाने में युग बीत जायँगे! तब तक इतने लोग क्या अशिक्षा तथा अज्ञान के तमसाच्छन्न दलदल में फँसे ही रहें? उन्हें व्यक्तिगत रूप से उभारने की चेष्टा तो कीजिए। उन्हें सामाजिक बंधनों से छुड़ाकर उनके हृदयों में शिक्षा तथा मनुष्यता का बीज तो वपन कीजिए। राजनीतिक चक्र तो चलता ही जायगा।

हमारी स्त्रियाँ अपने गार्हस्थ्य-संबंधी कार्यों ही में रात-दिन व्यस्त रहती हैं। अपने पतिदेव, बाल-बच्चों तथा भाई-बहनों के प्रति स्नेह की स्निग्ध धारा बरसाने तथा अपने गृह को मंगलमय बनाने में ही उनके दिन बीतते हैं। कौन लोग कौंसिलों में चुने गए हैं, किसने कमीशन का बायकाट किया, कौन जनता में जोश फैलानेवाला है, कौन देशद्रोही है, इन सब बातों से उनको कुछ भी सरोकार नहीं रहता। पर क्या इस कारण उनका दुःखपूर्ण व्यक्तिगत जीवन उपेक्षणीय है? उनका समाज-पददलित, लांछित हृदय क्या निर्जीव है? हमें याद रखना चाहिए कि हमारे देश में स्त्रियों के प्रति जो अत्याचार हो रहे हैं, उनकी यातनाओं के प्रति कोरी मौखिक सहानुभूति प्रकट करके जैसा बीभत्स परिहास किया जा रहा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है, उनके नैमित्तिक जीवन के प्रति जैसी उपेक्षा प्रकट की जा रही है, उससे उनके हृदयों में एक ऐसी भयंकर अग्नि धीरे-धीरे संचित हो रही है, जो एक दिन सारे देश को फूँक देगी। इसीलिये हम कहना चाहते हैं कि कोरे प्रस्तावों से कभी देश का उद्धार नहीं होगा। देशवासियों के व्यक्तिगत जीवन के मूल रहस्य से परिचित होकर, उसके प्रति आंतरिक सहानुभूति प्रकट करके, उसके विकास में सहायता देनी होगी। 'राष्ट्र', 'विश्वमैत्री' आदि शब्द बिलकुल ढकोसले से भरे हैं। यह व्यक्तिवाद का युग है। जब तक हम व्यक्ति को सत्तात्मक रूप से नहीं पहचानेंगे, तब तक हम 'राष्ट्रीयता', 'विश्वमैत्री' अथवा 'मानवत्व' के अधिकारी नहीं हो सकते। छायात्मक तत्त्वों के प्रचार द्वारा मौखिक सहानुभूति से लोगों को उभाड़ने का ज़माना अब गया। हम देख चुके हैं कि इस प्रकार का जोश अस्थायी रहता है। अब तह में पहुँचकर सब बातें समझनी होंगी।

× × ×

५. नए मसीहा

दुनिया को उल्लू बनाना भी कितना सहज है, यह देखकर कभी-कभी आश्चर्य की सीमा नहीं रहती। जानवरों में एक ऐसी वृत्ति वर्तमान है, जिसे अँगरेज़ी में दल-वृत्ति (Herd instinct) कहते हैं। पशुओं के दल का कोई अग्रगामी पशु यदि किसी नए रास्ते से होकर जाने लगे या कोई नया, अनोखा काम करने लगे, तो दल के अन्य पशु भी उसका अनुसरण तथा अनुकरण करने लगते हैं। जान-बूझकर नहीं, प्रकृतिगत वृत्ति की प्रेरणा के अनुसार वे ऐसा करते हैं। यह वृत्ति, अभिव्यक्ति (Evolution) के नियमों के अनुसार, मनुष्य में भी कुछ अंश में वर्तमान रहती है। प्रायः देखा जाता है कि सभा-समितियों में जब एक व्यक्ति ताली पीटता है, तो सभा के दूसरे लोग भी उमंग में आकर वैसा ही करने लगते हैं। यह दल-वृत्ति का ही नमूना है। इस कारण जो लोग देश या समाज के नेता होते हैं, उनकी सफलता का कारण मुख्यतः यही देखा जाता है कि वे मनुष्य की इस दल-वृत्ति से पूर्णतया परिचित होकर उससे फ़ायदा उठाना जानते हैं। वे अपनी तेजस्विता तथा वाक्-शक्ति की प्रखरता से (चाहे उस प्रखरता में सहृदयता का लेश भी न हो) लोगों को मोहीभूत कर डालते हैं। फिर जिस तरफ़ को चाहें, समस्त जनता को अपने इशारे से नचा सकते हैं। ऐसे आदमियों के पीछे लाखों की नहीं, करोड़ों की संख्या में लोग लग जाते हैं और उसकी ख़ातिर गड्ढे में गिरने को तैयार रहते हैं और पहाड़ में अनर्थक चढ़ने के लिये राज़ी हो जाते हैं। इस प्रकार का मंत्र-ज्ञाता नेता यदि सहृदय होता है, तो जनता का बहुत कुछ (पूर्ण मात्रा में नहीं) उपकार भी होता है, अन्यथा वह सामूहिक रूप से बुद्धिभ्रष्ट भी हो जाती है।

श्रीमती बसंती बीबी को मनुष्य-समाज की इस दल-वृत्ति की कमज़ोरी का पूर्ण अनुभव बहुत पहले से हो चुका है। उन्होंने अपनी वाग्धारा की चौंधक शक्ति (Magnetic power) से केवल भारत की ही नहीं, योरप की जनता को भी मोहीभूत (Hypnotized) कर रक्खा है। अपनी गुरु महाशया श्रीमती ब्लावाट्सकी (Madame Blavatsky) की सहायता से उन्होंने बड़े-बड़े उद्भट वैज्ञानिकों की बुद्धि भ्रष्ट करके थियोसोफ़ी धर्म का प्रचार किया है। लोगों ने यह जानते हुए कि इस धर्म में ढकोसले के सिवा और कुछ नहीं, इसकी 'महत्ता' स्वीकृत की है। इस धर्म की उद्भट कल्पनाएँ अनेक स्थानों में हमारी पौराणिक कथाओं की अत्युक्तियों को भी मात करती हैं। जब उन्हें पूरा विश्वास हो गया कि दुनिया इतनी सरलता से बेवक़ूफ़ बनाई जा सकती है, तब अपनी मोहिनी शक्ति पर विश्वास स्थापित करके वह इतने हद तक आगे बढ़ गईं कि एक नए 'मसीहा' को पालने में लग गईं और दुनिया को इसकी सूचना भी उन्होंने पहले ही दे दी। अर्थात् विश्वकर्मा ने रेडियो द्वारा उनको जो अलौकिक सूचना दी थी, उसे उन्होंने सर्वसाधारण में प्रचारित कर दिया। अब वह मसीहा कोट-पतलून पहनकर उनके साथ-साथ देश-विदेश भ्रमण कर रहे हैं। अभी उन्होंने अपना संदेश लोगों को नहीं सुनाया है। देखा चाहिए क्या ग़ज़ब ढाते हैं।

इस बीसवीं सदी में सभी कुछ संभव है। मसीहा भी अब घर में ठोक-पीटकर अप-टू-डेट बनाकर मार्केट में इगज़िबिशन के लिये तैयार किए जा रहे हैं। इस घोर कलिकाल में उनका आत्म-चैतन्य स्वयं स्वाभाविक रूप से प्रकाशित नहीं हो सकता। इसलिये विश्व-नियंत्रिणी महागौरी (चमड़ा गोरा होने से वह 'महाकाली' कैसे पुकारी जा सकती हैं!) बीबी बसंती को दुर्भाग्यवश यह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बतलाने की आवश्यकता हुई है कि एक ऐसे 'मसीहा' पैदा होकर आप लोगों को दर्शन दे रहे हैं, जो सृष्टि का चक्र ही बदल देंगे।

धन्य हैं हमारे नए कृष्णावतार श्रीयुत कृष्णमूर्ति, और धन्य हैं हम, जिन्होंने इस घोर कलिकाल में उनके दर्शन पाए!

× × ×

६. लालाजी पर मुसलमान का आक्रमण

कुछ दिन हुए, एक आततायी मुसलमान ने लाला लाजपत राय की हत्या की चेष्टा करके अपनी पैशाचिक प्रवृत्ति का परिचय दिया था। सौभाग्यवश लालाजी उसकी कुचेष्टा को पहले ही ताड़ गए थे। वह मुसलमान अपने को पूने का ब्राह्मण बतलाकर लालाजी से मुलाक़ात करना चाहता था। लालाजी ने जब देखा कि उसने दाढ़ी रक्खी है, और सिर में चोटी नहीं, तो वह समझ गए कि कुछ दाल में काला अवश्य है। उन्होंने अपने नौकर को हुक्म दिया कि इस आदमी को बाहर ले जाकर बिदा कर दो। बाद को मालूम हुआ कि उसने अपने पास एक छुरी और एक बड़ा चाक़ू छिपाकर रक्खे थे।

लालाजी के पास और भी कई मुसलमानों के गुमनाम पत्र आए हैं कि उन्हें हिंदू-संगठन से अलग हो जाना चाहिए, अन्यथा उन पर आक्रमण होंगे। इन सब बातों से मालूम देता है कि लालाजी की जान ख़तरे में है। श्रद्धेय स्वामी श्रद्धानंद का ख़ून पीकर अभी मुसलमानों की प्यास नहीं बुझी है। अब लालाजी पर शुभ दृष्टि गई है। भगवान् ही रक्षक हैं। किसी हिंदू को आज तक इतनी हिम्मत नहीं हुई कि वह किसी मुसलमान नेता की हत्या की चेष्टा करे। हिम्मत क्या, हिंदुओं के हृदय में इस प्रकार का विचार ही पैदा नहीं हुआ। पर मुसलमानों के मन में यह विश्वास दृढ़ हो गया है कि दो-चार नेताओं की हत्या कर देने से हिंदोस्तान का सारा राज्य उन्हीं को मिल जायगा। यह कार्रवाई इक्के-दुक्के गुंडों की नहीं है। इसके पीछे एक ज़बर्दस्त दल का चक्र वर्तमान है। पर सरकार इस संबंध में उदासीन है। उदासीन ही कहना पड़ता है, यद्यपि वह सब बातें जान-बूझकर मुसलमानों के इस कुचक्र में बाधा डालना नहीं चाहती। अब्दुलरशीद के मामले में उसने इस बात की खोज करने की तनिक भी चेष्टा नहीं की कि किस गुप्त दल की शह से उसे उस घोर दुष्कर्म की प्रवृत्ति हुई थी। अब लालाजी के पास ऐसे विभीषिका-पूर्ण पत्र जा रहे हैं, पर सरकार चुप है। जैसे कुछ भी नहीं हो रहा है, सब काम पूर्ववत् शांत रूप से चला जाता है!

× × ×

७. विगत वर्ष के आयात-निर्यात का खाका

विगत वर्ष भारत ने विदेशों में ३०६ करोड़ रुपए का माल बेचा है। सन् १६२५-२६ में ३८५ करोड़ रुपए का माल बेचा गया था। रुई और पाट का भाव गिर जाने से इस बार ७६ करोड़ रुपए की हानि हुई है। इधर विदेश से ५ करोड़ रुपए का अतिरिक्त माल भारत में आया है। भारत से विदेश को कच्चा माल ही जाता है। उसी कच्चे माल को विदेशी लोग अपने कल-कारख़ानों में विभिन्न वस्तुओं में परिणत करके हमारे ही मत्थे मारते और डबल दाम वसूल करते हैं। भारत की आर्थिक दीनता का थोड़ा-बहुत परिचय इसी बात से मिल सकता है। हमारे देश में इतना अधिक कच्चा माल पैदा होता है, जितना संसार के और किसी देश में नहीं होता। पर देश के दुर्भाग्य से उद्योग-धंधों के प्रति हमारे देशवासियों का ध्यान ही नहीं जाता। यदि कच्चा माल विदेश न जाकर हमारे देसी कल-कारख़ानों में ही व्यवहृत होता, तो देश की आर्थिक समस्या बहुत-कुछ अंश में हल हो जाती। अर्थ की समस्या इस समय कितना विकट रूप धारण करके हमारे सामने उपस्थित है, यह सभी को विदित है। ऐसी स्थिति में यदि हम लोग बाहरी हुल्लड़ों को महत्त्व न देकर अपनी समस्त शक्ति से इस वास्तविक, सत्तात्मक तथा रचना-संबंधी कार्य में लग जायँ तो, राजनीतिक हीनता भी स्वयं दूर होने लगे।

इस बार विदेशी वस्त्रों की आमद बढ़ गई है। 'खद्दर-खद्दर' चिल्लाते हुए राजनीतिक नेता थक गए हैं, पर खद्दर तो दूर रहा, देसी मिलों की स्थिति ही अभी बहुत गिरी हुई है। पिछले साल से इस बार २,२४० गज़ कपड़ा अधिक बाहर से आया है।

इस बार विदेशी चीनी की आमद भी १५ फ़ी-सदी अधिक हुई है। पिछली बार १६ करोड़ रुपए के मूल्य से ८०५,००० टन चीनी बाहर से आई थी। इस बार १६ करोड़ रुपए देकर ६,२४,००० टन चीनी ख़रीदी गई।

लोहे और इस्पात की आमद पिछले साल से कम हुई है। इससे ७ फ़ी-सदी रुपया भारत का बच गया है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विदेशी रुई, मद्य तथा काग़ज़ की आमद पिछले साल से इस बार अधिक हुई है। १६ लाख रुपए का मद्य इस बार अधिक आया है। इससे पता चलता है कि भारत में शराबख़ोरी बढ़ रही है। टेंपरेंस सोसाइटियों को सचेत होजाना चाहिए।

यह तो हुई आमद की बात। रफ़्तनी में सन् १६२७ में कुछ तरक्की नहीं हुई। सन् १६२५-२६ में १०५ करोड़ रुपए की रुई तथा वस्त्र विदेश को गया था, इस बार केवल ७० करोड़ का माल गया है। कच्चे सूत के माल में भी ३८ करोड़ की हानि हुई है। पाट की रफ़्तनी में वृद्धि तो हुई, पर मूल्य बहुत कम प्राप्त हुआ।

इस बार केवल ३३ करोड़ रुपए का चावल बाहर गया। इससे पिछले साल ३६ करोड़ के चावल की रफ़्तनी हुई थी। चाय की रफ़्तनी में २ करोड़ रुपए की अधिक प्राप्ति हुई है।

ऊपर की बातों से पता चल सकता है कि सन् १६२६-२७ में पिछले सालों की अपेक्षा रफ़्तनी से आमद का ही ज़्यादा ज़ोर रहा है।

× × ×

८. हकीम अजमलख़ाँ की आकस्मिक मृत्यु

गत २६ दिसंबर को रामपुर में अचानक हृदय की गति बंद हो जाने से हकीम अजमलख़ाँ की मृत्यु हो गई। सारे देश को आपकी मृत्यु से गहरा धक्का पहुँचा है। भारत के भाग्य की विडंबना से आपकी मृत्यु ऐसे अवसर पर हुई, जब देश को आपकी सबसे अधिक आवश्यकता थी। वर्तमान हिंदू-मुसलिम वैमनस्य से देश को कितनी हानि पहुँच रही है, यह सभी को विदित है। हकीम साहब हिंदू-मुसलिम एकता के सच्चे उपासक थे, और आपका प्रभाव भी मुसलमानों पर काफ़ी था।

हकीम साहब का वंश बहुत काल से चिकित्सा-संबंधी विशेषज्ञता के लिए प्रसिद्ध है। आपने तो इस संबंध में और भी अधिक विशेषता प्राप्त कर ली थी। यूनानी चिकित्सा में आपका सानी भारत में क्या, एशिया में भी शायद ही कोई हो। आपको बचपन से ही चिकित्सा-शास्त्र के प्रति बड़ा प्रेम था। सन् १६०४ में आप इस संबंध में विशेषता प्राप्त करने के लिये ईराक़ गए। वहाँ से लौटकर आपने अपने मदरसे-तिब्बिया में अपने अनुभवों का उपयोग किया। सन् १६११ में आप विलायत गए। वहाँ भी आपने चिकित्सा-संबंधी बहुत-सी बातों का ज्ञान प्राप्त किया। इस बार जब आप भारत लौटे, तो आपने मदरसे-तिब्बिया को तिब्बिया कॉलेज के रूप में परिणत कर दिया। यह कॉलेज भारत की यूनानी-चिकित्सा-संबंधी संस्थाओं में सबसे श्रेष्ठ है। यहाँ चीर-फाड़ आदि की भी शिक्षा दी जाती है। धात्रियों के लिये हकीम साहब ने दिल्ली में ज़नाना तिब्बिया कॉलेज स्थापित किया था। इसके अतिरिक्त दिल्ली में आपका 'हिंदोस्तानी दवाख़ाना' है। इसकी वार्षिक आय डेढ़ लाख रुपए से भी अधिक है। इसकी सारी आय तिब्बिया कॉलेज को दे दी जाती है।

हकीम साहब का राजनीतिक जीवन इधर थोड़े ही वर्षों से आरंभ हुआ था। सन् १६१८ में, दिल्ली में, मालवीयजी की अध्यक्षता में, कांग्रेस का जो अधिवेशन हुआ, उसकी स्वागत-समिति के सभापति आप ही थे। तभी से आप राजनीतिक कामों में भाग लेने लगे। सन् १६१६ में जलियाँवाला-कांड ने आपके दिल में भी आग भड़काई। उसे देखकर आप पूर्णतया राजनीतिक क्षेत्र में सम्मिलित हो गए। सन् १६२१ में देशबंधु के बंदी हो जाने पर जनता ने आपको ही एक-मत से अहमदाबाद-कांग्रेस का सभापति चुना। आप इस पद के सर्वथा योग्य थे। इसके अतिरिक्त असहयोग-आंदोलन के अवसर पर हिंदू-मुसलिम एकता संघटित करने में आपने अपनी सर्वशक्ति से महात्माजी का साथ दिया। इस समय भी देश को आप ही-जैसे प्रभावशाली, सहृदय तथा विचारशील नेता की आवश्यकता थी; पर भगवान् की इच्छा कुछ और थी। भगवान् आपकी आत्मा को परलोक में शांति प्रदान करे।

× × ×

९. साहित्य और सुरुचि

वंग-साहित्य में आजकल कला-संबंधी रुचि पर ख़ूब ज़ोरों से वाद-विवाद चल रहा है। विवाद के एक पक्ष में हैं रवींद्रनाथ और दूसरे पक्ष में शरत्चंद्र। वर्तमान वंग-साहित्य में रुचि का सौकुमार्य नष्ट होते देखकर रवि बाबू अचानक बिगड़ खड़े हुए हैं। उनकी राय में इस समय बंगाल के साहित्य में अश्लीलता का कीचड़ जमा होता जाता है; पर कमल का कहीं पता नहीं। रवींद्र बाबू का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कथन अनेकांश में सत्य है, इसमें संदेह नहीं । इस समय वंग-साहित्य में अनेकानेक छोटे-मोटे 'साहित्य-सम्राट्' सत्य तथा वास्तविकता (Realism) के नाम पर ऐसी-ऐसी गंदी बातों का फ़ोटो खींचने में लगे हैं कि देखकर वितृष्णा उत्पन्न होती है । एक स्त्री लेखिका वहाँ प्रसिद्धि पा चुकी हैं । वह महाशया मज़दूरों तथा अन्यान्य निम्न श्रेणी के लोगों के स्त्री-पुरुष-संबंधी जीवन के ऐसे-ऐसे कुरुचि-पूर्ण गंदे चित्र अंकित करने में आनंद प्राप्त करती हैं, जिन्हें देखकर पुरुषों को भी लज्जित होना पड़ता है । वह कहती हैं कि इसमें हर्ज ही क्या है ? यह सत्य है । सत्य को छिपाने में क्या फ़ायदा ! इसी प्रकार और भी कई लेखक-लेखिकाएँ साहित्य-देवी के मंदिर को कलुषित करने में लगी हैं । इसके अतिरिक्त शरत् बाबू का अनुकरण करके वेश्या-संबंधी साहित्य का प्रचार भी कई हज़रत ज़ोरों से कर रहे हैं । इस संबंध में भी चाहे कैसी ही गंदी बातें लिखी जायँ, सत्य की दुहाई दी जाती है । ये सब बातें देखकर रवि बाबू घबरा उठे हैं, और उनका घबराना स्वाभाविक ही है ।

पर एक बात है । उन्होंने सामूहिक रूप से सब लेखकों पर आक्रमण किया है । इन सब लेखकों में शरत् बाबू भी सम्मिलित हो जाते हैं, यद्यपि उन्होंने शरत् बाबू का नाम लेकर उल्लेख नहीं किया है। शायद रवि बाबू का यह ख़याल है कि बंगाल में वर्तमान अश्लीलता के आचार्य शरत् बाबू ही हैं । इसमें संदेह नहीं कि वंग-साहित्य के क्षेत्र में पहले शरत् बाबू ने ही वेश्याओं के चरित्रों की अवतारणा की है । पर अन्नदा तथा सुरबाला के समान उत्कट सती-साध्वी स्त्रियों के चरित्रों का अंकन भी तो उन्होंने ही किया है ! यह बात यदि शरत् बाबू के तथाकथित शिष्य लोग भूल जाते हैं, तो इसमें उनका क्या दोष ! उन्होंने वेश्याओं के जो चित्र अंकित किए थे, वे आंतरिक वेदना से विद्ध होकर किए हैं ; किसी तुच्छ कौतूहल अथवा 'मानसिक विश्लेषण' के लिये नहीं । पर उनके 'शिष्य' लोग वेश्याओं को परम पूजनीया और 'आदर्श रमणी' मान बैठे हैं । इसमें शरत् बाबू का दोष नहीं । यदि वह दोषी हैं, तो रवि बाबू भी कम दोषी नहीं कहे जा सकते । उन्होंने भी अपनी प्रसिद्ध 'पतिता' कविता में वेश्या की महिमा गाई है, और एक कविता में तो उन्होंने वेश्याओं को 'सती-शिरोमणि' बतलाया है ! यदि शरत् बाबू कहें कि यह बात मैंने रवि बाबू से सीखी है, तब ?

रवि बाबू ने इस संबंध में 'विचित्रा' पत्रिका में एक लेख छपाया है । वह हमने नहीं पढ़ा, पर उसका सारांश पढ़ा है । 'विश्व-भारती' में जो अँगरेज़ी लेख निकला था, वह भी हमने पढ़ा था । उस लेख के उत्तर में शरत् बाबू ने 'वंगवासी' में जो कुछ लिखा है, वह भी हमने पढ़ा है । रवि बाबू कहते हैं कि स्त्री-पुरुष का पारस्परिक आकर्षण कला का प्राण अवश्य है ; पर उसकी बुनियाद जितनी नीचे होगी, इमारत भी उतनी ही पक्की तैयार होगी । यह बात शरत् बाबू स्वीकार करते हैं । रवि बाबू कहते हैं कि स्त्री-पुरुष का पारस्परिक आकर्षण जितना अध्यात्मोन्मुख होगा, उतना अच्छा । शरीर-संबंधी आकर्षण पर बहुत ज़ोर नहीं देना चाहिए । शरत् बाबू कहते हैं कि इस संबंध में शारीरिक क्षुधा तथा आत्मिक क्षुधा के बीच कोई स्पष्ट रेखा नहीं खींची जा सकती । Platonic love (आध्यात्मिक प्रेम) भी बहुधा काम-वासना में परिणत हो जाता है, और काम-वासना बीच-बीच में आध्यात्मिक प्रवृत्ति प्रकाशित करने लगती है । इन दोनों में भेद-भाव स्पष्ट रूप से अंकित नहीं किया जा सकता । शरत् बाबू की इस बात से हम भी सहमत हैं । शारीरिक आकर्षण को एकदम उपेक्षित करने से आध्यात्मिक प्रेम कभी स्थायी नहीं हो सकता । जिस प्रकार विना देह की साधना के आत्मोन्नति कभी नहीं हो सकती, उसी प्रकार विना शारीरिक आकर्षण के आत्म-चैतन्य नहीं प्राप्त हो सकता । इसीलिये प्राचीनतम काल से साहित्य में मानव-शरीर के सौंदर्य का वर्णन चला आता है ।

रवि बाबू ने अपनी कविता में शारीरिक सौंदर्य की अवहेलना की हो, यह बात नहीं । जवानी में उन्होंने जो कोई भी कविता लिखी, उसमें शारीरिक मोह और आध्यात्मिक चैतन्य का ऐसा अद्भुत सम्मिश्रण किया गया है कि एक को दूसरे से अलग करना असंभव है । इसीलिये उनकी वे कविताएँ इतनी मनोहर हैं । शरत् बाबू अपनी सफ़ाई में कहते हैं कि बंकिमचंद्र और रवींद्रनाथ ने तो अपनी रचनाओं में स्तन, आलिंगन, चुंबन आदि शरीर-संबंधी विषयों का उल्लेख किया है ; पर उन्होंने स्तन और आलिंगन तो दूर रहा, कहीं चुंबन का भी उल्लेख नहीं किया है । इससे वह यह दिखलाना चाहते हैं कि शारीरिक मोह को वह भी अधिक महत्त्व नहीं देना चाहते । पर उसकी उपेक्षा भी नहीं की जा सकती । रवि बाबू इसका क्या उत्तर देंगे, हम कह नहीं सकते । पर बात है सच । ख़ैर ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किंतु एक बात और है। जवानी की उमंग में रवि बाबू ने कुछ भी लिख मारा हो, पर अब अवस्था-प्राप्त होने पर और दुनिया का अनुभव अच्छी तरह से होने पर उन्हें यह तजुर्बा हासिल हुआ है कि सत्य के नाम पर यौन-संबंधी बातों को जितना कम तूल दिया जाय, उतना अच्छा। इस बात की ताईद हम भी करते हैं। फिर भी साहित्य-कला इन बातों के विना टिक नहीं सकती। आलोचकों की दृष्टि केवल इस बात पर होनी चाहिए कि लेखक इस संबंध की जिन बातों का वर्णन कर रहा है, उन्हें आंतरिक वेदना से प्रेरित होकर लिख रहा है या लोगों की कुरुचि उभाड़ने के लिये।

× × ×

१०. संसार के १२ सर्वोत्तम उपन्यास

प्रसिद्ध लेखक जॉन गैल्सवर्दी की राय में संसार के १२ सर्वोत्तम उपन्यास ये हैं—

सरवैंटिस	डॉनक्विकजॉट
टॉल्सटॉय	वार एंड पीस
	एनाकेरानीना
डास्टोविस्की	ब्रदर्स कैरेमेज़ो
टूर्गेनिफ़	फ़ादर्स एंड चिलड्रेन
	स्मोक
डिकेंस	पिकविक पेपर्स
	डेविड कॉपरफ़ील्ड
डूमा	थ्री मस्केटियर सीरीज़
	या रेन मैरनेट सीरीज़
मार्क ट्वेन	टॉम सायपर
	हकलेबेरी फ़िन
थैकरे	वैनिटी फ़ेयर

× × ×

११. चित्र-परिचय

इस बार का पहला रंगीन चित्र है 'प्रभात'। सुप्रसिद्ध चित्रकार श्रीयुत हीरालाल-बब्बनजी की यह परिकल्पना है। प्रातःकाल उठकर अँगड़ाई से ख़ुमार दूर कर रही स्त्री इसमें दिखलाई गई है। चित्र स्वाभाविकता से पूर्ण है। यह चार रंग में छपा है। चित्र बहुमूल्य है। आशा है, कला-प्रेमियों को यह पसंद आवेगा।

दूसरा रंगीन चित्र है 'बेचैनीराम'। इसका संबंध अन्यत्र प्रकाशित 'विवाह-विज्ञापन' प्रहसन से है।

तीसरा रंगीन चित्र है 'महाराज सोढ़देवजी'। इन्होंने नरवर तथा ग्वालियर से इधर आकर दौसा आदि में अपना राज्य फैलाया था। आमेर के राजों में सर्व प्रथम ईश्वरदेव राजा थे। उन्हीं के पुत्र सोढ़देव हुए। प्राचीन इतिहास में इनकी वीरता और स्वदेश-भक्ति का बहुत उत्तम उल्लेख है। यह देवी के अनन्य भक्त थे।

शीघ्रता कीजिए! आज ही मँगाइए!!

☞ केवल १) में चौदह विद्या ख़रीदिए।

१ कोक विद्या—सचित्र समग्र कोकशास्त्र।
२ रसायन विद्या—नक़ली सोना चांदी बनाने की युक्ति।
३ वैद्य विद्या—हर प्रकार के रोगों की दवाओं के नुस्ख़े।
४ ज्योतिष विद्या—कर्म फल और होनहार जानना।
५ सामुद्रिक विद्या—हाथ देखने की विधि।
६ आकर्षण विद्या—मृतक आत्मा से बात-चीत करना।
७ यंत्र विद्या—बाल रक्षा स्तंभन आदि यंत्र।
८ मंत्र विद्या—मंत्रों से रोग दूर करना और देवताओं की सिद्धि।
९ तंत्र विद्या—इंद्रजाल की माया और जादू के खेल।
१० शिल्प विद्या—व्यापारिक वस्तुएँ बनाने की रीति।
११ छंद विद्या—कविता करने की सुगम रीति।
१२ गान विद्या—गाना बजाना सीखने की युक्ति।
१३ राजनीति विद्या—संपूर्ण क़ानूनों का सारांश।
१४ वशीकरण विद्या—स्त्री-पुरुषों को वश में करने की युक्ति।

☞ उपर्युक्त चौदह विद्या मँगाने का पता:—

बाबू छोटेलाल, बुकसेलर, (S)
पो० बनखेड़ी १

सुधा-प्रेमियोंको
ख़ुशख़बरी
(पं० राधेश्याम वशिष्ठ-कृत)
रामायण राधेश्याम
मूल्य २६ भाग का ५=)
किंतु—
सुधा के प्रेमी ग्राहकों को सिर्फ़ ३=) में ही भेजेंगे।
मँगाने के लिये नीचे लिखे पते पर एक कार्ड डाल दीजिए

पता—
बाबू छोटेलाल
बुकसेलर, (S)
पो० बनखेड़ी १

Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुफ्त ! मुफ्त !! मुफ्त !!!

हिंदी की सर्वोत्तम साहित्यिक, सामाजिक, सचित्र मासिक पत्रिका

५०० ग्राहकों को
पूरे छ मास तक मुफ्त।

उन ग्राहकों की सेवा में बराबर छ मास तक हिंदी की सर्वोत्तम मासिक पत्रिका सुधा मुफ़्त भेजी जायगी, जो "हरिद्वार के सुविख्यात कार्यालय श्रीवाशिष्ठ डिपो" से नीचे लिखे अनुसार १० तोला "सत्त्व शिलाजीत" एक साथ इसी महीने की आख़िरी तारीख़ तक मँगाने का साहस करेंगे। "सत्त्व शिलाजीत" और "सुधा" मँगाने के लिये आर्डर पत्र सुधा के इस विज्ञापन का हवाला देकर सीधा "श्रीवाशिष्ठ डिपो" हरिद्वार को लिखिए और डाक-व्यय-सहित केवल ६।=) में घर बैठे १० तोला "सत्त्व शिलाजीत" सेवन करके बल और वीर्य की वृद्धि कीजिए तथा लखनऊ की सर्वोत्तम उच्च कोटि की "श्रीदुलारेलाल भार्गव एवं श्रीरूपनारायण पांडेय" द्वारा संपादित सुधा छ मास अथवा २० तोला सत्त्व शिलाजीत मँगाकर एक वर्ष बराबर प्रति मास मुफ़्त पढ़कर आनंद उठाइए और साथ ही अपने ज्ञान की उन्नति कीजिए।

"वैद्यक रीति से शुद्ध किया हुआ"

सत्त्व शिलाजीत

सर्व प्रकार के वीर्य-विकार तथा प्रमेह दूरकर शरीर को हृष्ट-पुष्ट तथा बलवान् बनाती है। वैद्यक के चरक सुश्रुतादि ग्रंथों में लिखा है कि शिलाजीत वृद्धावस्था को दूर करने में समर्थ है, छर्दि ८४ प्रकार के वात रोग शरीर में किसी स्थान पर भी दर्द हो, बवासीर, कुष्ठ रोग, मुखरोग, पांडु रोग, उदर रोग, तिल्ली, जिगर, श्वास, खाँसी, क्षय, उन्माद, रक्त दोष, सोज़ा, कफ़, कृमि आदि को समूल नष्ट करता है। मूत्रकृच्छ्र, मूत्र-रोग, धातुक्षीणता, नपुंसकता आदि रोगों में अपार गुणदायक है। निर्बलता को दूरकर, शारीरिक बल बढ़ाना, ख़ून साफ़ करना, भूख लगाना, दस्त साफ़ लाना इसके स्वाभाविक गुण हैं। बाल-वृद्ध-युवा स्त्री-पुरुष किसी को किसी समय भी हानिकारक नहीं; स्त्रियों के रजोदोष तथा प्रदर और प्रसूत में भी लाभकारी है।

मूल्य ५ तोला का ५), १० तो० ६), २० तो० १७), ४० तो० ३२) रु० मात्र है; डाक-ख़र्च अलग।

मुफ़्त—१० तोला पर छ मास तक सुधा मुफ़्त, २० तोला मँगाने पर एक वर्ष बराबर सुधा मुफ़्त भेजी जायगी।

नोट—जो सज्जन सुधा के ग्राहक हैं, जिनको 'सुधा' की आवश्यकता नहीं है उनको १० तोला सत्त्व शिलाजीत पर एक सुंदर टिकाऊ जेब घड़ी इनाम में दी जायगी, २० तोला पर सुनहरी रोल्ड गोल्ड पालिश की फ़ैंसी रिस्टवाच (हाथ में बाँधने की घड़ी), ४० तोला पर वेस्टेंडवाच कंपनी की मशहूर दोस्त वाच घड़ी इनाम।

पता—श्रीवाशिष्ठ डिपो नं० १०५, हरिद्वार, यू० पी०

CC-0. Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

५००) पाँच सौ रुपए नक़द इनाम अगर नक़ली हो !

असली ! सचित्र !! प्राचीन !!!

काश्मीरी कोकशास्त्र

श्रीमान् पंडित कोकाजी महामंत्री महाराज काश्मीर-रचित, जिसमें पद्मिनी, चित्रिणी, शंखिनी और हस्तिनी चारों प्रकार की स्त्री व पुरुषों की ८४ रंगीन तस्वीरें (फोटो) तथा ८४ आसनों का मनोहर (दिलचस्प) हाल, गर्भ में पुत्र और पुत्री की पहचान, बाँझ स्त्री का इलाज, अपनी स्त्री तथा अपने आपको आयु-भर सुंदर, तंदुरुस्त और जवान बनाए रखना, तमाम क़िस्म की नामर्दियों का इलाज, संतान न होती हो तो ज़रूर हो, स्त्री और पुरुषों की गुप्त बीमारियाँ और उनका इलाज, वशीकरण मंत्र आदि बहुत-सी बातें हमारी असली किताब काश्मीरी कोकशास्त्र में दर्ज हैं, जिनका यहाँ लिखना उचित नहीं। यह वही किताब है, जो १००० रु० ख़र्च करने पर भी नहीं मिल सकती थी। बहुत परिश्रम के साथ हमने इसको संस्कृत से हिंदी में छपवाया है। एक प्रति पुस्तक मँगाकर परीक्षा करें। क़ीमत सिर्फ़ तीन रुपए, अगर असली न हो तो दाम वापिस लो।

मिलने का पता—मैनेजर—असली कोकशास्त्र हाउस,(S.)लुधियाना (पंजाब)

१०००) रुपया माहवार शर्तिया कमा लो !

व्यापार-संग्रह

इस पुस्तक में ५२८ हुनर ऐसे छपे हैं जिनमें से एक भी अपने मतलब का चुन लिया जाय, तो १०००) रुपए महीना कमाए जा सकते हैं। मसलन दंदानसाज़ी, कुश्ते बनाना, बाल उड़ाने का तेल, पाउडर साबुन बाल काले करने का अँगरेज़ी ढंग का ख़िज़ाब, और बाल उमर भर न पैदा होने का नुसख़ा, मूछ बढ़ाने का तेल, हीरा मूँगे बनाना, शीशा साफ़ करना, पत्थर जोड़ना, मोम-बत्ती, शोरा गंधक के गिलास आतशबाज़ी, हर तरह के साबुन, इत्र तेल फुलेल, सब रंगों के कपड़े रँगना, अँगरेज़ी ढंग के खाने डबल रोटी बिस्कुट मिठाई, विलायती पानी, अचार, मुरब्बे, चट-नियाँ तरह-तरह की बीमारियों के इलाज और नुसख़े १०८ बीमारियों की एक दवा का नुसख़ा, सुरमे दियासलाई बनाना, गुलकंद शर्बत सत तेज़ाब बनाना, सिगरट रबड़ की मुहरें, कपूर रंग, रोशनाई, मृतक दर्शनी अँगूठी, तांबूल बिहार केशर कस्तूरी, पिपरमेंट अर्क कपूर, भीमसेनी कपूर, अगरबत्ती सब प्रकार के सुगंधित तेल व अर्क सोडावाटर बर्फ़ आदि सैकड़ों प्रकार की दस्तकारी सिखाने की तरकीबें और मेस्मरेज़म विद्या की विधि भली भाँति लिखी हैं। इस पुस्तक द्वारा अनेक हुनर प्राप्त कर हज़ारों रुपया पैदा कर सकते हो। ऐसी पुस्तक अभी तक कहीं नहीं छपी है अवश्य मँगाइए। क़ी० ३)

पता—सर्वहितकारक कंपनी (S.) लुधियाना (पंजाब)

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'SANYASI ASHRAM SARGODHA'S

चंद्रावली

रजिस्टर्ड

यह भारत के प्राचीन गौरव की एक स्मारक तथा आश्रम की प्राचीन ऋषियों की मौरूसी संपत्ति है, जो स्त्रियों के भिन्न-भिन्न प्रकार के मासिकधर्म-संबंधी तथा अन्य व्यतिक्रमों से उत्पन्न हुए बंध्यात्व (बाँझपने) को समूल नाश कर देती है। इसका व्यवहार उस उन्नति की आशा की एक शर्तिया झलक दिखाता है, जो भारत के गौरव के दिनों में देशी औषधियों से प्राप्त थी। नीचे लिखे हुए प्रशंसा-पत्रों से हमें आशा है, आप यह मालूम कर सकेंगे कि व्यवहारकर्ताओं को इसका गुण कहाँ तक प्रतीत हुआ है—

डॉ० प्रतापसिंह एम्० बी०, बी०एस्० नौशहरा *Via Khusab, N. W. Ry.* लिखते हैं कि—"जैसा कि आपको मालूम है, मेरे ब्याह के १३ वर्ष बाद तक मेरी स्त्री के मासिकधर्म ठीक नहीं होता था। कभी होता ही न था, और होता भी था, तो असह्य वेदना के साथ। इसी के फल-स्वरूप उसके कोई बच्चा भी नहीं हुआ। इतना अधिक समय हो जाने का मुझे दुःख न था; परंतु सोच था अपने भविष्य के अंधकार का। मेरी स्त्री की बेचैनी की बाबत तो कहना ही व्यर्थ है। ख़ैर, दैव-प्रेषित आपकी चंद्रावली मुझे मिली। पहली बोतल के पीने से ही उसकी मासिकधर्म-संबंधी सभी बीमारियाँ दूर हो गईं, और आश्चर्य तो यह हुआ कि उसके गर्भ के भी लक्षण प्रतीत होने लगे। मैंने इसी सिलसिले में एक बोतल और भी पिलाई, जिससे गर्भ पक्का हो गया।

मैं इसके लिये आपका बड़ा कृतज्ञ हूँ, क्योंकि मैंने अपनी स्त्री की दवा-दारू में कोई बात उठा न रक्खी थी। और, यहाँ तक कि उसके गर्भाशय का ऑपरेशन भी करवाया था। परंतु उससे रत्ती-भर भी फ़ायदा न हुआ। अब तो मैं यही कहता हूँ कि चंद्रावली ने ही मुझे पुत्र-रत्न प्रदान किया है।"

डॉ०ज्ञानसिंह एम्०बी०,बी०एस्० *Incharge Guru Ram Das Hospital* अमृतसर लिखते हैं कि—"सन् १९२४ तक, अर्थात् सन् १९१५ से मेरी शादी के ९ वर्ष बाद, मेरी स्त्री के कोई बच्चा नहीं हुआ। इसका कारण जो हम लोगों को मालूम होता था, मेरी स्त्री की मासिकधर्म की ख़राबी थी। मैंने इसको ठीक करने के लिये अपनी कोई दवा उठा न रक्खी। बाहरी दवाओं का भी ख़ासा प्रयोग किया गया, और यहाँ तक कि लाहौर के सुप्रसिद्ध डॉक्टर कर्नल टेट Col. Godfrey Tate, M. B., Ch. B. (Dub. Univ.), I. M. S., से ऑपरेशन भी करवाया। इससे भी कोई लाभ नहीं हुआ, और दो वर्ष व्यतीत हो गए।

इसी अवसर में आपकी चंद्रावली की प्रशंसा एक मित्र द्वारा मेरे सुनने में आई। मैंने तीन बोतलें मँगाकर सन् १९२३ की अंतिम तिमाही में अपनी स्त्री को इस्तेमाल कराईं। दैव-कृपा से उसी से उसके गर्भ रह गया, और इस समय एक पूर्ण स्वस्थ और सुंदर बालक उत्पन्न हुआ है। मैं चंद्रावली की भूरि-भूरि प्रशंसा करते हुए अपने हताश भाइयों से इसकी सिफ़ारिश करता हूँ।"

[श्रीयुत जे० एस्० बतरा, बैंकर, बखरबार (शाहपुर) से लिखते हैं]

"मेरा प्रथम ब्याह २० वर्ष की अवस्था में, संवत् १९५२ में, हुआ था। मेरी स्त्री ब्याह के उपरांत १९ वर्ष तक जीवित रही। उसके एक बच्चा हुआ था, जो केवल ७ मास तक जीवित रहा। इसके बाद मेरा दूसरा ब्याह संवत् १९६७ में हुआ; लेकिन मेरी यह स्त्री केवल ४ वर्ष तक ही जीवित रहकर संवत् १९७१ में उसका भी प्राणांत हो गया। ४ वर्ष बाद मैंने तीसरी शादी की। इस समय मेरी अवस्था ४४ वर्ष की थी, और मेरी स्त्री युवा होने के साथ ही पूर्णतः स्वस्थ और सुंदर थी। ४ वर्ष आशा करते-करते व्यतीत हो गए, परंतु कोई बच्चा न हुआ। अब मुझे यह शंका हुई कि शायद मेरी स्त्री कोई अंदरूनी मर्ज़ से बीमार है, और तदनुसार हमने उसे दो दाइयों को दिखलाया। अंतिम वर्ष जब भलवाल (*Bhalwal*) के हकीम पंजाबसिंह की दवाइयों से भी कोई लाभ न हुआ, तो हमारी सभी आशाओं पर पानी फिर गया। इसी निराशा की अवस्था में मुझे ख़बर मिली कि आपकी चंद्रावली अनेक स्त्रियों के बाँझपने को नाश कर चुकी है। हमने जहाँ तक जल्दी हो सका, उसकी दो बोतलें ख़रीदीं। मेरी स्त्री एक ही बोतल व्यवहार में लाई थी कि उसके गर्भ रह गया। दूसरी आज भी मेरी अलमारी में उसी तरह रक्षित है। आश्रम के प्रति मेरी तथा मेरी स्त्री की कृतज्ञता का भाव, जिसने चंद्रावली के द्वारा ४१ वर्ष की आयु में पुत्र-रत्न-लाभ कराया है, और फिर भी तीसरी स्त्री से, समझा ही जा सकता है, लिखा नहीं जा सकता।"

मूल्य १ बोतल ४), २ बोतलें ६), तीन बोतलें १३), और ४ बोतलों का दाम १६) है। पैकिंग और वी० पी० ख़र्च अलग। बड़ा सूचीपत्र लिखने पर मुफ़्त भेजा जाता है।

मिलने का पता—संन्यासी आश्रम (S.) Sargodha (India)

CC-0. In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection. Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिंदी लोकोक्ति कोष

मूल्य ३॥), सुनहरी रेशमी जिल्द ४)

[संग्रहकर्ता—बाबू विश्वंभरनाथ खत्री]

हिंदी-साहित्य के महारथी पं० महावीरप्रसादजी द्विवेदी लिखते हैं—लोकोक्ति कोष को देखकर चित्त बहुत प्रसन्न हुआ। उसका विषय और उसमें सन्निविष्ट सामग्री भी विशेष उपादेय और मनोरंजक है। पुस्तक साहित्य के सभी प्रेमियों, अध्यापकों और वक्ताओं के काम की है।

रायबहादुर बाबू जगन्नाथप्रसादजी (भानुकवि)—❀❀❀ यथार्थ में यह एक अपूर्व संग्रह है और हिंदी-भाषा में एक बड़े भारी अभाव की पूर्ति करता है। आपका उद्योग परम प्रशंसनीय है।

पं० जगन्नाथप्रसादजी चतुर्वेदी—हिंदी की प्रचलित कहावतों के सिवा संस्कृत, फ़ारसी, मारवाड़ी, पंजाबी, पूर्वी, भोजपुरी आदि भाषाओं और बोलियों की प्रसिद्ध-प्रसिद्ध कहावतों का संग्रह बड़ी खोज-ढूँढ़ के साथ किया है। अर्थ के साथ कहावतों से संबंध रखनेवाली कहानियाँ और कविताएँ भी हैं, जिनसे अर्थ और प्रयोग जानने में बड़ी सुगमता हो गई है। सचमुच यह कोष बड़े काम का हुआ है।

पं० रामदहिन मिश्र काव्यतीर्थ—❀❀❀ आपने लोकोक्तियों के विषय में यथावश्यक सभी ज्ञातव्य विषयों का सुचारु रूप से समावेश कर दिया है।

माधुरी—❀❀❀ भाषा के वैभव में लोकोक्तियों का शृंगार बड़ा ही सुंदर होता है। उन लोकोक्तियों को ढूँढ़-ढूँढ़कर एक स्थान में जमा करना और फिर अकारादि क्रम से, इस ढंग से सजाना कि जिसको चाहें, सहज में ढूँढ़ लें, बड़ा ही मार्के का काम है। आधुनिक हिंदी-साहित्य में हम इस पुस्तक का सादर स्वागत करते हैं। आशा है, प्रत्येक हिंदी-प्रेमी इसे अपनाकर प्रकाशक का उत्साह बढ़ावेंगे। ❀❀❀

रायसाहब बाबू श्यामसुंदरदास बी० ए०—❀❀❀ लोकोक्तियों से अपने पूर्वजों के अनुभव, ज्ञान और चोज-भरे वचनों का ही परिचय नहीं होता, वरन् इनके प्रयोग से भाषा में एक प्रकार का लालित्य और चमत्कार आ जाता है, जो उसे मनोमुग्धकारी बना देता है। इसलिये लोकोक्तियों का संग्रह करना मानो पूर्वजों के ज्ञान और अनुभव के भंडार को संचित और रक्षित करना है।

सरस्वती—संकलन-कर्ता ने अपनी पुस्तक को विशेष उपादेय बनाने में यथाशक्ति कोई कसर नहीं की।

कवि-विनोद

अर्थात् हिंदी-कवियों के अनूठे चुटकुले

(संग्रहकर्ता और संपादक—बाबू विश्वंभरनाथ खत्री)

इस पुस्तक में हिंदी-भाषा के प्राचीन कवियों की विभिन्न अवसरों पर बनाई हुई उक्तियाँ हैं, जिससे विनोद के साथ-साथ अनेकों प्रकार की सुशिक्षाएँ मिलती हैं, कवियों की अनोखी सूझ का पता चलता है, उनके प्रत्युत्पन्न-मतित्व का ज्ञान प्राप्त होता है। आसन्न भूत काल के राजे महाराजों की उदारता, साहित्य-रसिकता और आमोद-प्रियता का वृत्तांत पढ़कर हृदय गद्गद हो जाता है। इन सभी विषयों का सुरुचिकर वर्णन ऐसी सरल और सुबोध भाषा में किया गया है, जिसे आबाल-वृद्ध-वनिता सभी सहज में ही समझ सकते हैं। ऐसी उपादेय और बालक-बालिकाओं के लिये शिक्षा-प्रद पुस्तक अब तक हिंदी-भाषा में कहीं भी प्रकाशित नहीं हुई थी। मूल्य ॥=); सुनहरी रेशमी जिल्द १)

मिलने का पता—गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रचारकों की आवश्यकता

हमें हिंदी की सर्वश्रेष्ठ साहित्यिक और सामाजिक पत्रिका 'सुधा' तथा अपने प्रकाशित किए हुए सुंदर साहित्य का प्रचार करने के लिये (पंजाब, यू० पी०, बिहार, सी० पी० आदि में) सुशिक्षित स्त्री-पुरुषों की आवश्यकता है। आवेदन-पत्र में योग्यता, अनुभव और आयु का स्पष्ट उल्लेख होना चाहिए।

पत्र-व्यवहार करने का पता—

संचालक सुधा, अमीनाबाद-पार्क, लखनऊ

क्या आपको बौद्ध-धर्म से कुछ भी दिलचस्पी है ?

तो

सचित्र और अंतर्राष्ट्रीय बौद्ध संघ की मासिक पत्रिका

महाबोधी

के

अवश्य ग्राहक होइए।

संपादक

श्रीअनागरिका धर्मपाल

(संस्थापक महाबोधी संघ और शिकागो की धार्मिक पॉर्लियामेंट में दक्षिणी बौद्धों के प्रतिनिधि)

इसकी विशेषताएँ

१. बौद्ध-धर्म पर विविध दृष्टि से लिखे गए मौलिक लेख ३. बौद्ध-आंदोलन-संबंधी भारतवर्ष और देशांतरों के समाचार।
२. अप्रकाशित धार्मिक ग्रंथों का अनुवाद ४. विद्वत्तापूर्ण नोट और समालोचनाएँ इत्यादि

हमारे कुछ लेखक

जे० एफ़्० मैंकज़ी (भिक्षु शिलाकार) — श्री ए० डी० जयसुंदर
डॉ० जॉर्ज ग्रिम — पं० शिवनारायण
प्रो० ए० आर० ज़ॉर्न — रेव० इ० हंट
डॉ० बी० सी० ला, एम्०ए०, पी०एच्०डी०, बी०एल्० — रेव० लूई ग्रीव

वार्षिक मूल्य ४), योरप ६ शिलिंग, अमेरिका २ डालर, प्र० सं० ।=)

मिलने का पता—महाबोधी, (४ ए,) कॉलेज स्क्वॉयर, कलकत्ता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

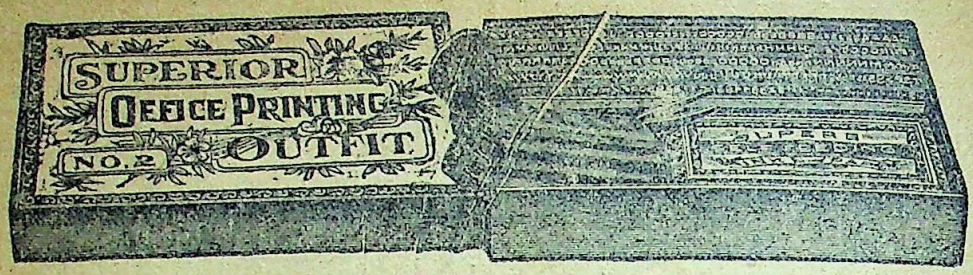

Each outfit consists of letters, figures, etc., Ink pad, Type Holder & Tweezers. The letters are made of Solid Rubber & can be easily fitted into the holder with the tweezers. A stamp of any desired wording can be quickly set up and printed like ordinary Rubber Stamps.

AAAAABBBCCCCDDDEEEEEFFFGGGHHHIIIIIJJKKLLL
LLMMMNNNNOOOOPPPQRRRRRSSSSSTTTTTUUVVW
WXYYZ&$£.....,,,,,-"1122334455667788990O QUADS AND SPACES.

No. 0 with 2 line holder Rs 1

AAAAABBBBCCCCCDDDDEEEEEFFFFGGGGGHHHHIIIIIJ
JJJJKKKLLLLLMMMMMNNNNNOOOOOPPPPQQRRRRR
RSSSSSTTTTTUUUVVVWWWWXXYYYYYZZ&111223
3445566778899000$.....,,,,,--"/£

No. 1 with 2 line holder Rs 2

AAAAAaaaaaaBBBBbbbbCCCCCccccc DDDDddddE
EEEEeeeeeeFFFFffffGGGGggggHHHHhhhhhIIIIIiiiiii
JJJjjjKKkkkLLLLLIIIIIIMMMMMmmmmmNNNNNnnn
nnnOOOOOooooooPPPPppppQQqqRRRRRrrrrrrSS
SSSssssssTTTTTttttttUUUuuuVVvvWWWwwwwXxx
YYyyyZzz&$.....,,,,,,--"lll22334455667889900/£

No. 2 with 3 line holder Rs 3

AAAAAaaaaaaBBBBbbbbCCCCCccc
ccDDDDddddd EEEEEeeeeeeFFFFff
ffGGGGggggHHHHHhhhhhIIIIIiiiiiJ
JjjjKKkkkLLLLLIIIIIMMMMmmmmm
NNNNnnnnnOOOOooooooPPPPppp
pQQqqRRRRRrrrrrrSSSSSsssssTT
TTTttttttUUUuuuuVVvvWWWwww
wXxxYYYyyyyZZzz&1122334455667
7889900$.....,,,,,—"/£

N. 3 with 4 line holder Rs 4

BHOLA NATH & CO.,
Stationers and Rubber Stamp Makers, Lucknow.

CC-0. In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Stationers and Rubber Stamp Makers, Lucknow.

रंग-बिरंगे चित्रों का अपूर्व संग्रह

रमेश-चित्रावली

रचयिता—

सुप्रसिद्ध चित्रकार बाबू रामेश्वरप्रसाद वर्मा

इस चित्रावली में पंद्रह बढ़िया मनोमोहक रंगीन चित्र हैं। सभी सुंदर आर्ट-पेपर पर बड़ी सफ़ाई से छापे गए हैं। साथ में चित्रों का परिचय भी सरस, ओजस्विनी और भाव-पूर्ण हिंदी-कविता में है, जिससे चित्र के भाव को दर्शक अच्छी तरह हृदयंगम कर सके। कुछ चित्र ये हैं—ललिता, कमल-कुमारी, दीपक, व्यास का शुकदेव को समझाना, व्यास के विनय करने पर इंद्र का रंभा को बुलाकर शुकदेव को अपनी ओर आकर्षित करने के लिये भेजना, रंभा का अपने विचित्र हाव-भाव से शुक को मोहने का प्रयत्न करना तथा निराश रंभा के मुख की उदासी, इत्यादि-इत्यादि। इन चित्रों की प्रशंसा करना व्यर्थ है। जो देखता है, मुग्ध हो जाता है। वह स्वयं तो ग्राहक होता ही है, दूसरों से भी ग्राहक होने के लिये अनुरोध करता है। चीज़ ही ऐसी है।

पुस्तक हर तरह से उपादेय बना दी गई है। इतने पर भी मूल्य सिर्फ़ २), डाक-ख़र्च आदि अलग। हमारे पास अब बहुत ही कम प्रतियाँ रह गई हैं, इसलिये यदि आपको चित्र-कला से तनिक भी प्रेम है, तो इसकी एक प्रति आज ही पत्र डालकर मँगा लीजिए। नहीं तो पीछे हाथ मलकर पछताना पड़ेगा, क्योंकि इतने कम दामों में ऐसा चित्र-संग्रह कहीं मिलने का नहीं।

गृहस्थों के लिये अमूल्य रत्न

गोरस और गोवर्द्धन-शास्त्र

हिंदी-भाषा में डेअरी-विषयक ऐसा सर्वांग-पूर्ण दूसरा ग्रंथ नह है। यह गृहस्थों का सहायक और डेअरी-फ़ार्मों के संचालकों का सच्चा मार्ग-दर्शक है। इसके द्वारा गोशालाओं के प्रबंधक भी अपनी उन्नति आसानी से कर सकते हैं। इसमें गोशाला, चारा-दाना, गऊ की रक्षा, दूध और उसके गुण, दही, मक्खन, घी, क्रीम, दूध की परीक्षा, पशुओं के साधारण रोग, पशुओं की उत्पत्ति का वर्णन, दूध देनेवाले पशुओं की प्रसिद्ध जातियाँ, डेअरी का हिसाब-किताब रखने की रीति आदि-आदि कई उपयोगी अध्याय हैं। दूध और क्रीम-संबंधी तथा जानवरों के चित्र भी दिए गए हैं। डेअरी-फ़ार्म तथा गोशाला से संबंध रखनेवाले और गऊ पालनेवाले प्रत्येक गृहस्थ को इसे मँगाकर पढ़ना चाहिए। मूल्य केवल २), हमारे पास थोड़ी-सी प्रतियाँ शेष बच रही हैं।

बिलकुल नया, बड़ा सूचीपत्र) का टिकट भेजकर मुफ़्त मँगाइए!

संचालक गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय, २९-३०, अमीनाबाद-पार्क, लखनऊ

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुछ चुनी हुई पुस्तकें

व्यापारी-मुनीम

अथवा

हिसाब का पंडित

[लेखक—पं० विश्वंभरनाथ चतुर्वेदी]

मुनीमों के उपयोग की यह एक ही पुस्तक है। थोड़ी-सी प्रतियाँ ही बच रही हैं। इसे पढ़कर बड़े-बड़े हिसाबी के कान काटे जा सकते हैं। मूल्य व्यापारी भाइयों के लिये ४॥) है।

श्रीगोविंद-निबंधावली

हिंदी-साहित्य में भला ऐसा कौन है, जो पं० गोविंद-नारायण मिश्र से परिचित न हो। इसमें स्व० पंडितजी के लिखे हुए कवि और चित्रकार, प्राकृत-विचार, सारस्वत-सर्वस्व, विभक्ति-विचार, द्वि० हिं० सा० स० का भाषण, आत्माराम की टें-टें आदि एक-से-एक बढ़कर निबंध दिए हुए हैं। ये सभी हिंदी-साहित्य के अमूल्य रत्न हैं। सभी साहित्य-सेवियों को इसकी एक प्रति अवश्य मँगाकर संगृहीत करनी चाहिए। इसमें श्रीमान् पंडितजी का एक परिचयात्मक निबंध भी है। मूल्य ३)

रुई और उसका मिश्रण

सुधा के पाठक श्रीकस्तूरीमलजी बाँठिया से अच्छी तरह परिचित हैं। भारत में रुई की खेती दक्षिण-पश्चिम में काफ़ी होती है। इस समय रुई की खेती पर ज़ोर दिया जाता है। पर अभी तक लोगों को यह नहीं मालूम है कि किस प्रकार की रुई उत्पन्न करने से अधिक लाभ हो सकता है। उनमें किस-किस का मिश्रण करने से उसका मूल्य बढ़ सकता है। इस पुस्तक में रुई का प्राकृतिक स्वरूप, रुई और रुई की खेती, रुई का उद्भिज विषयक स्वरूप, रुई के साधारण प्राकृतिक गुण और परिशिष्ट-नामक अध्याय हैं। जिसमें सभी उपयोगी और जानने योग्य बातें आ गई हैं। कृषक और व्यापारियों को इसकी एक प्रति मँगाकर अवश्य पढ़नी चाहिए। मूल्य केवल १॥) है।

स्टॉक-एक्सचेंज

[लेखक—पं० गौरीशंकर शुक्ल 'पथिक']

वर्तमान युग की व्यापारिक नीति कुछ भिन्न ही रीति से चलती है। इसमें सूझ का विशेष स्थान है। इसलिये वर्तमान व्यावसायिक नीति से सचेत करने के लिये व्यावसायिक साहित्य अत्यंत आवश्यक है। वर्तमान समय का सबसे प्रधान व्यवसाय शेअर का व्यवसाय हो रहा है। परंतु इस संस्था का औद्योगिक उन्नति के सच्चे उद्देश्य से संगठन होता है। परंतु पूरी जानकारी न होने से वैषम्यता के कारण ग़रीब लोगों को अक्सर नुक़सान उठाना पड़ता है। बड़े-बड़े औद्योगिक कारख़ाने बर्बाद हो जाते हैं। इसका कारण केवल यही है कि सभी लोग संसार की भिन्न-भिन्न संस्थाओं के संगठन से परिचित नहीं हैं। अपने संगठन की उन्नति के संसार के कतिपय शेअर बाज़ारों का ज्ञान प्राप्त करना आवश्यक है। इस पुस्तक में संसार के शेअर बाज़ारों का अच्छा वर्णन किया गया है। इसे पढ़कर हमारे व्यवसायी भाई भी काफ़ी लाभ उठा सकते हैं। उन्हें इसकी एक-एक प्रति अवश्य मँगाकर रखनी चाहिए। मूल्य १)

भारतीय सभ्यता

और

उसका विश्वव्यापी प्रभाव

[लेखक—श्रीसुखसंपतिराम भंडारी]

भारतीय सभ्यता सबसे पुरानी सभ्यता है। इसका अन्य देशों पर क्या-क्या असर किस क्रम से पड़ा है। इसका इस पुस्तक में वर्णन बड़ी उत्तमता से किया गया है। प्रत्येक हिंदी-प्रेमी को इसे अवश्य पढ़ना चाहिए। मूल्य केवल १)

पुष्पकुमारी

[लेखक—पं० टीकाराम तिवारी]

यह पुस्तक भी अपने ढंग की एक अनूठी है। जिसमें एक बालिका व बालक का आदर्श प्रेम, धर्मोपासना, नीति, सदाचार, शिक्षा आदि विषय कूट-कूटकर भर दिए गए हैं। पुस्तक विविध विषयों से विभूषित है। याने बालिका पुष्पकुमारी का धर्म-प्रेम, बालक्रीड़ा, शिक्षा, गृहशिक्षा, गृहकलह, ललिता की धूर्तता, तारा, सरयू मालिन का प्रेम से भाषण, नर्मदाघाट, मृगनाथ पर्वत की यात्रा, उसका मनोहर दृश्य तथा छटा का वर्णन, पुष्पकुमारी का अकस्मात् उस पर से पतन, उसकी दैवी रक्षा, प्रणय-मिलाप, उनका दृढ़ तथा अटल परस्पर प्रतिज्ञा-बंधन, स्त्रियों का परस्पर हास्य-विनोद, कुमारी की मूर्च्छना तथा उसका कराल भाग्योल्लेख, नारायण स्वामी, बदिराभान, ललिता का कुमंत्रणवश हानि उठाकर सुचाल होना, आशा, समाज-यंत्रणा, राधा व गंगा की कुटिलता, स्त्री-समाज की सांप्रत में घोर दुर्दशा का पूरा-पूरा चित्र, श्मशान तथा राजघाट का अर्धरात्रि समय का चित्र और उसका वर्णन, अंतिम परीक्षा, पुनः सुख-प्राप्ति आदि-आदि घटनाओं से अलंकृत है।

इतनी उत्तम पुस्तक का मूल्य भी सर्वसाधारण के हितार्थ सिर्फ़ १॥) रु० रक्खा गया है।

मिलने का पता—गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय, लखनऊ

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकाशित हो गई ! शीघ्रता कीजिए !! खूब बिक रही है !!!

हास्य-रस की अपने ढंग की निराली पुस्तक

विवाह-विज्ञापन

लेखकः—पं० बदरीनाथ भट्ट बी० ए०

भट्टजी हास्य-रस के सिद्ध-हस्त लेखक हैं। आप ही की कुशल लेखनी का यह चमत्कार है। पढ़ते-पढ़ते आप लोट-पोट हो जायँगे। पुस्तक में दो तिरंगे और चार सादे चित्र भी हैं। लेखक और चित्रकार, दोनों की कारीगरी एक साथ इस पुस्तक में देखने को मिलती है। मूल्य १), सजिल्द १॥)

मिलने का पता—संचालक गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

व्यंग्य और विनोद की विचित्र पुस्तकें

ऊ ल जलूल शीघ्र प्रकाशित होगा

मूर्ख-मंडली

[पाँचवाँ संस्करण]

(लेखक—पं० रूपनारायण पांडेय)

स्वर्गीय श्रीद्विजेंद्रलाल राय के अत्यंत मनोरंजक और सभ्य हास्य-रस-पूर्ण प्रहसन के आधार पर इसकी रचना की गई है। इसे पढ़कर मारे हँसी के आप लोट-पोट हो जायँगे। हम दावे के साथ कहते हैं कि इससे बढ़कर मनोरंजक प्रहसन आपने हिंदी में न पढ़ा होगा। सभी हिंदी-पत्रों और विद्वानों ने इसकी प्रशंसा मुक्तकंठ से की है। पंचमावृत्ति। मूल्य ॥=); सजिल्द १=)

विवाह विज्ञापन शीघ्र प्रकाशित होगा

प्रायश्चित्त-प्रहसन

'सुधा'-संपादक पं० रूपनारायण पांडेय कविरत्न-लिखित। देशी होकर भी विदेशी चाल चलनेवालों का इसमें खूब ही खासा खाका खींचा गया है। पढ़कर हँसते-हँसते पेट में बल पड़ने लगेंगे। बड़ा ही सभ्य हास्य-रस-पूर्ण प्रहसन है। मूल्य ।)

गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय, लखनऊ

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection, Haridwar

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

व्यंग्य और विनोद की अनुपम पुस्तकें

रावबहादुर

[लेखक—फ्रांस के सर्वश्रेष्ठ नाटककार मिस्टर मोलियर]

मोलियर संसार-भर में, हास्य-रस की रचना में, अपना सानी नहीं रखते। यों तो मोलियर के और भी छोटे-छोटे कई ग्रंथों का हिंदी में अनुवाद हो चुका है, कितने ही उनके आधार पर भी लिखे गए हैं, पर रावबहादुर का स्थान उन सबसे ऊँचा है। इसमें ख़िताब की लालच में मर मिटनेवाले, उपाधि के लोभ में किसी भी उपद्रव से बाज़ न आनेवाले, स्वल्प-शिक्षित पर सर्वज्ञता का दम भरनेवाले, मनचले मूर्ख—धरफूँकबहादुर—का ख़ाका ख़ासी तौर से खींचा गया है। फ्रांस, महाराष्ट्र, अवध, आगरा आदि कई देशों की नोक-झोंक, फ़ैशन, चाल-चलन, ठाट-बाट और चालाकी का मज़ा उठाना हो, तो इस पुस्तक को आरंभ कीजिए, फिर क्या मजाल कि आप उसे ख़त्म किए विना छोड़ें। जिसने हँसने की क़सम खाली हो, वह भी इसे पढ़कर खिलखिला उठेगा। बस, पुस्तक मँगाकर पढ़िए, और रावबहादुर की कारगुज़ारी पर हँसिए। मोलियर का चित्र भी है। २०० पृष्ठ की पुस्तक का मूल्य केवल ॥), सुंदर रेशमी जिल्द १)

अचलायतन

[मूल लेखक—कवींद्र रवींद्र]

अनुवादक, पं० रूपनारायणजी पांडेय कविरत्न। मूल-लेखक रवींद्र बाबू ने इसमें वर्तमान हिंदू-धर्म की छुआछूत और आडंबर की कट्टरता पर बहुत अच्छा प्रकाश डाला और उसका खंडन किया है। यह छोटा-सा नाटक पढ़ने ही योग्य है। जिन्होंने रवींद्र बाबू की रचनाओं को देखा है, वे स्वयं समझ लेंगे कि यह नाटक किस कोटि का होगा। इसके गीत भी एक-से-एक अच्छे हैं। अनुवाद भी ऐसी सरस, सरल, सुंदर भाषा में किया गया है कि यह एक स्वतंत्र रचना मालूम होती है। मूल्य ॥), सजिल्द १)

ईश्वरीय न्याय

[लेखक, अध्यापक श्रीरामदास गौड़ एम्० ए०]

यह व्यंग्य-नाटक है। गौड़जी काशी-म्युनिसिपैलिटी में शिक्षा-विभाग के अध्यक्ष रह चुके हैं। इस नाटक में आपने अत्यंत मार्मिक ढंग से दिखाया है कि अछूतों के उद्धार और राष्ट्रीय शिक्षा-सुधार में किन-किन कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है, और अछूतों के प्रति बहुत प्रेम दिखानेवाला हिंदू-सभ्य-समाज, अवसर पड़ने पर, कैसे बग़लें झाँकने लगता है। मूल्य ॥), सजिल्द १)

संचालक गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पं० बदरीनाथ भट्ट की नई पुस्तक

छप गई ! प्रकाशित हो गई !! शीघ्र मँगाइए !!!

लबड़धोंधों

भट्टजी हास्य-रस के एक अद्वितीय लेखक हैं। हास्य-रस के इनके लेख अपनी विशेषता रखते हैं। कहने की आवश्यकता नहीं कि वे कैसी सभ्य, सुंदर, सरल, सरस और चुटीली भाषा में लिखे होते हैं, मनोरंजन के साथ-साथ शिक्षा-प्रद भी इतने कि छोटे-बड़े सभी उन्हें पढ़कर लाभ और आनंद उठा सकते हैं। जिसने हँसने और पढ़ने की क़सम ले ली हो, वह भी इस पुस्तक को हाथ में लेकर समाप्त किए बिना नहीं छोड़ेगा, और क्या मजाल कि जो वह हँसते-हँसते लोटन-कबूतर न हो जाय। कई रंगीन और सादे चित्रों से सुसज्जित पुस्तक का मूल्य ॥।=), जिल्द्दार ।।=)

मिलने का पता—

संचालक गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय,लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हास्य-रस की अलौकिक पुस्तक

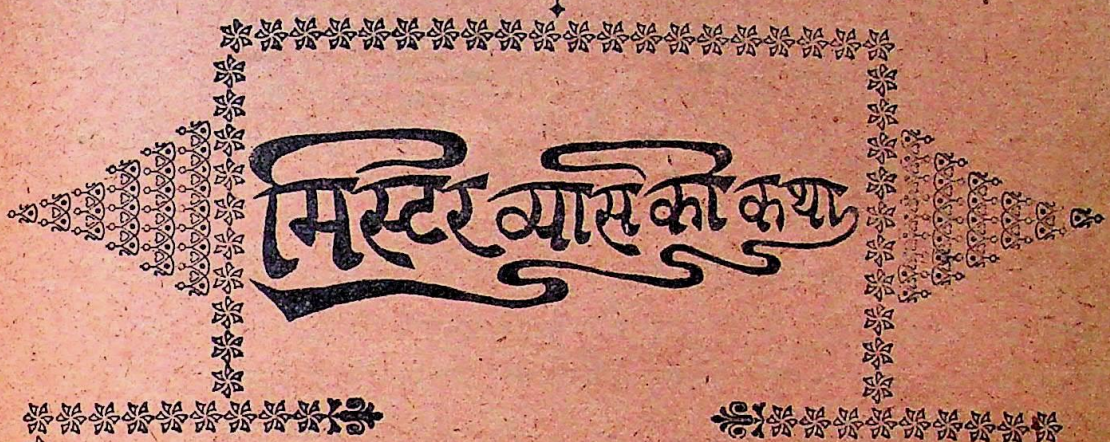

[लेखक—भूतपूर्व आनंद-संपादक स्वर्गीय श्रीशिवनाथ शर्मा बी० ए०]

अन्य रसों की तरह हास्य-रस पर क़लम चलाना सहज नहीं। बिरले ही प्रतिभाशाली, सिद्ध-हस्त लेखक इसमें सफलता पाते हैं। व्यंग्य और विनोद द्वारा समाज की बुराइयों का चित्र खींचना साधारण लेखक की क़लम से बाहर है। लक्ष्य-हीन, उद्देश्य-हीन हँसी के चुटकुले लिख लेना मामूली बात है। यही कारण है कि संसार की सभी भाषाओं में हास्य-रस का साहित्य बहुत ही कम है। हिंदी में तो इस प्रकार की मौलिक रचनाएँ नहीं के बराबर हैं। शर्माजी उच्चकोटि के हास्य-लेखक हैं। आपकी इस पुस्तक में व्यंग्य और विनोद द्वारा बड़े ही अच्छे ढंग से समाज की बुराइयों का चित्र खींचा गया है। पुस्तक की पंक्ति-पंक्ति और अक्षर-अक्षर में व्यंग्य और विनोद कूट-कूटकर भरे हुए हैं। हास्य-रस की प्रधानता के साथ-साथ भाषा की सजीवता और ओज ने सोने में सुगंध का काम किया है। सभ्य हँसी, लच्छेदार भाषा में, स्थान-स्थान पर भर दी गई है। क्या मजाल कि रोनी सूरतवाले भी इसकी एक-एक पंक्ति पढ़कर हँसते-हँसते लोट-पोट न हो जायँ। एक बार पुस्तक को हाथ में लेकर फिर समाप्त किए बिना उसे छोड़ने को जी नहीं चाहता। अपने ढंग के इस नए और निराले, हास्य-रस-पूर्ण, सचित्र ४३२ पृष्ठ के ग्रंथ का मूल्य केवल २॥) रक्खा गया है।

संचालक गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साहित्य-संसार में युगांतर उपस्थित करनेवाला अभूतपूर्व मौलिक उपन्यास

हिंदी-उपन्यासों का चक्रचूड़ामणि

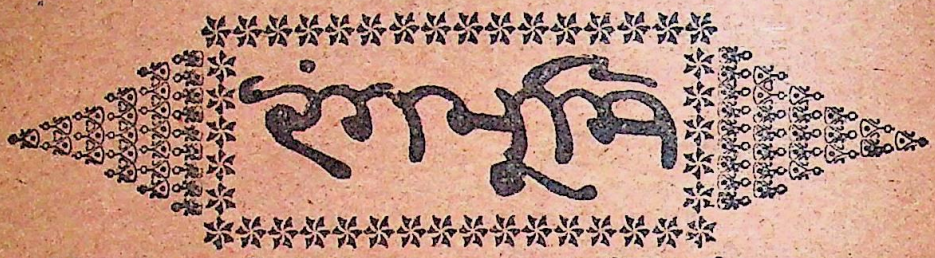

प्रेमचंदजी के अन्य उपन्यासों की तरह इस बृहत् उपन्यास में भी वर्तमान काल की सामाजिक दशाओं का स्वाभाविक चित्र अंकित किया गया है। सेवा-सदन में पतित जीवन की मीमांसा है। प्रेमाश्रम में सभ्य स्वार्थपरता की विवेचना की गई है। इस रंगभूमि में लेखक ने यह दिखलाने की सफल चेष्टा की है कि हम संसार में सुखी क्योंकर रह सकते हैं। इसमें राजनीतिक और औद्योगिक प्रसंगों का प्राधान्य है। कर्मक्षेत्र भी बहुत विस्तृत हो गया है। अब तक लेखक के किसी उपन्यास में ईसाइयों ने पदार्पण नहीं किया था। इसमें भारतवर्ष के तीनों प्रधान धर्मों का समावेश है। लेखक ने समाज के किसी अंग को नहीं छोड़ा—ग्रामीण भी हैं, पूँजीपति भी हैं, देश-सेवक भी हैं; सभी अपनी-अपनी महत्त्वाकांक्षा के साथ रंगभूमि में आते और अपना-अपना खेल दिखा चले जाते हैं। विद्वान्, धनी, अनुभवी, सभी श्रेणी के खिलाड़ी आपके सामने आते हैं, और सभी सुखी जीवन का रहस्य न जानने के कारण असफल होते हैं, सब ठोकर खाते और गिर पड़ते हैं, कर्तव्य से विचलित हो जाते हैं। केवल एक दीन, हीन, निर्बल, अंधा, दरिद्र प्राणी अंत तक आपको अपनी लीलाओं से मुग्ध करता रहता है, और जब उसकी लीला समाप्त हो जाती है, और वह रंगशाला से जाता है, तो आप मन में कह उठते हैं, यही सफल जीवन है, यही जीवन्मुक्त पुरुष है, यही निपुण खिलाड़ी है, यही जानता है कि जीवन-लीला का रहस्य क्या है। इसकी भाषा सरल और सरस है, वर्णन-शैली अत्यंत हृदयग्राहिणी है, भावव्यंजना बड़ी मर्मस्पर्शिनी है, और चरित्र-चित्रण, जो उपन्यास का सर्वप्रधान अंग माना गया है, इतनी सूक्ष्म दृष्टि से किया गया है कि पढ़कर लेखक के मनोवैज्ञानिक अनुभव का क़ायल होना पड़ता है। इस बृहदाकार उपन्यास के दोनों भागों का मूल्य ५), सुंदर रेशमी जिल्दों का ६)

श्रीयुत बाबू शिवप्रसाद गुप्त—श्रीप्रेमचंदजी ने यह उपन्यास लिखकर हिंदी-भाषियों को एक उत्तम वस्तु भेंट की है। इस उपन्यास में असहयोग और सत्याग्रह का महत्त्व बड़ी उत्तमता से प्रतिपादित किया गया है।

श्रीयुत बाबू संपूर्णानंद बी० एस्-सी० एल्० टी०—× × × वस्तुतः यह पुस्तक प्रेमचंदजी की और पुस्तकों से बहुत अच्छी है।

संचालक गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय, अमीनाबाद पार्क, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिंदी-साहित्य का सर्वोत्तम गार्हस्थ्य-उपन्यास

हृदय की प्यास

(सचित्र और मौलिक)

[लेखक—हिंदी के सुप्रसिद्ध, सिद्ध हस्त लेखक आयुर्वेदाचार्य श्रीचतुरसेन शास्त्री]

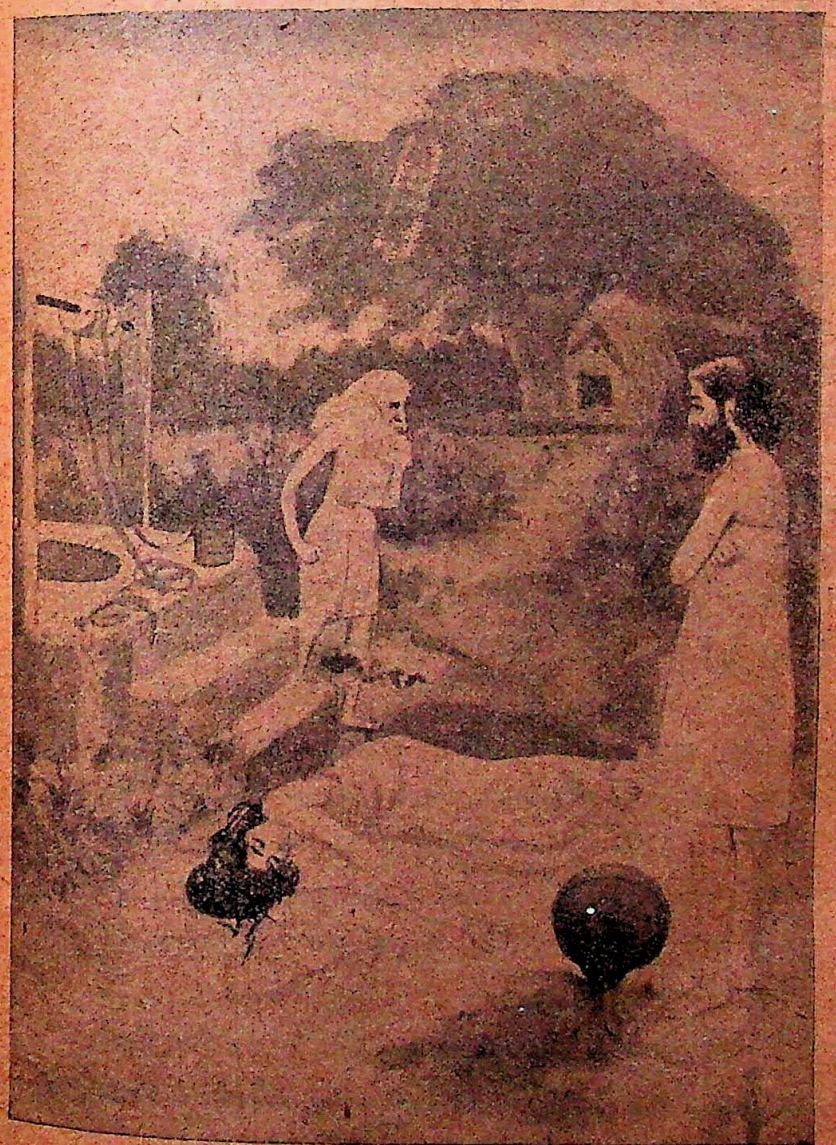

हिंदी में मौलिक उपन्यास-लेखक इने-गिने ही हैं, और उनमें शास्त्रीजी का स्थान किसी से कम नहीं। गद्य-काव्य लिखने में आप आचार्य माने जाते हैं। बड़े-बड़े साहित्य-सेवी आपकी लेखन-शैली के क़ायल हैं। नवयुवकों के लिये तो यह आदर्श ही है। यह उपन्यास भी उनकी पूर्ण प्रतिभा का परिचायक है; भावमयी भाषा, सुंदर शैली, सरल और सुबोध रचना का यह सर्वोत्तम नमूना है। मित्रता के लक्षण, सौंदर्य की विषमता, शंका की सत्यता, तज्जनित द्वेष और डाह, उसका दुष्परिणाम ही नहीं, बरन् आधुनिक शिक्षा से उत्पन्न सौंदर्योपासना, अविवेक और मतिभ्रम तथा पूर्व-संस्कार के कारण कर्तव्य-पराङ्मुखता और पश्चात्ताप इसमें पढ़ते ही बनता है। गार्हस्थ्य-जीवन क्योंकर सुखी हो सकता है, आजकल के नवयुवक क्यों उसे नरक-तुल्य समझते हैं, घर की लक्ष्मी को छोड़कर कूड़े-कर्कट की कौड़ी पर क्यों दृष्टि गड़ाए रहते हैं—आदि जीवन के कतिपय जटिल प्रश्नों का शास्त्रीजी ने बड़ी ख़ूबी और योग्यता के साथ निराकरण किया है। इन सब बातों के होते हुए भी इसका प्लाट ऐसी ख़ूबी से रचा गया है कि उपन्यास को एक बार हाथ में लेने पर क्या मजाल कि आप खाना-पीना न भूल जायँ, और उसे समाप्त किए बिना ही छोड़ दें। सती की सत्यता और कुलटा की कायरता तो ग़ज़ब ढाती हैं। एक बार इसको मँगाइए, स्वयं पढ़िए और अपनी गृहिणी को भी पढ़ाइए। ६ रंगीन और सादे चित्रों से सुशोभित इस अमूल्य पुस्तक का मूल्य केवल १॥) ; सजिल्द २)

चिट्ठे का पता: In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मनोविज्ञान का एक अद्वितीय उपन्यास

(सुप्रसिद्ध रूसी उपन्यास-लेखक डॉस्टॉय फ़िस्की के लोक-प्रिय उपन्यास
Crime and Punishment का हिंदी-अनुवाद)

[अनुवादक—पं० व्रजकृष्ण गुर्टू-बी० ए०, एल्-एल्० बी० और कविराज विद्याधर विद्यालंकार]

जिज्ञासु ज्ञान-पिपासा शांत करने को क्या नहीं कर सकता, हत्यारे के सिर पर हत्या किस प्रकार सवार होकर बोलती है, पुलिस की तहक़ीक़ात में सत्य की मात्रा कितनी होती है, सशंक मनुष्य कौन-सा अनर्थ ऐसा है, जो नहीं कर सकता—आदि बातें ऐसी सुंदर, सरल और मनोरंजक भाषा में लिखी गई हैं कि उपन्यास पढ़ते ही बनता है। रूस की दरिद्रता, वहाँ की राजनीतिक अवस्था, पुलिस की तहक़ीक़ात का ढंग, साइबेरिया के जेल की दशा, शराबख़ाने का दृश्य, सच्ची मित्रता का अनुपम चित्र और स्वार्थी मनुष्य का प्रेम देखते ही बनता है। एक बार पुस्तक खोलिए, फिर विना समाप्त किए पुस्तक रखने की इच्छा ही नहीं होती। अपने ढंग के इस नए और निराले ५५० पृष्ठ के सचित्र उपन्यास का मूल्य ३)

मिलने का पता—

गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आपको विज्ञापन कहाँ देना चाहिए ?

हिंदी की सर्वश्रेष्ठ मासिक पत्रिका

में।

क्यों ? किसलिये ?

इसलिये कि—

(१) राजे-महाराजे, रईस-ताल्लुक़ेदार, अमीर-उमराव, वकील-बैरिस्टर, डॉक्टर-वैद्य, मिलों के मालिक और दूकानदार, कोठीवाले और महाजन, अध्यापक और विद्यार्थी, सभी इसे पढ़ते हैं। इसमें विज्ञापन देने से घर बैठे आपकी तिजारत की ख़बर इन सबको मिल जायगी, और आप ही से ये लोग माल मँगाएँगे। देखिए, रोज़गार बढ़ाने का कैसा अच्छा और सस्ता तरीक़ा है !

(२) यह हिंदी की सर्वश्रेष्ठ मासिक पत्रिका है। इसके प्रत्येक पृष्ठ को लोग बड़े चाव से देखते हैं, और सदा नई-नई वस्तुओं की खोज में रहते हैं। फिर बताइए, आपकी चीज़ अगर नई, बढ़िया, सुंदर और उपयोगी हुई, तो वे क्यों नहीं उसे ख़रीदेंगे ?

(३) सभी बड़े-बड़े व्यापारी अपना विज्ञापन इसमें छपवाकर काफ़ी लाभ उठा रहे हैं। इसके विज्ञापन के पृष्ठों को देखिए ! फिर आप ही सुस्त क्यों बैठे हैं ?

(४) यह हिंदुस्थान के कोने-कोने में जाती है। कहीं भी आपकी वस्तु की आवश्यकता होगी, माँग आपके पास सीधी आएगी।

(५) इसकी ग्राहक-संख्या तेज़ी से बढ़ रही है। यह सबसे अधिक लोक-प्रिय हो रही है। लाखों स्त्री-पुरुष इसे पढ़ रहे हैं। इसीलिये हमें एक-एक अंक के दो-दो संस्करण करने पड़े हैं ! हिंदी की मासिक पत्रिकाओं के इतिहास में यह एक बिलकुल नई घटना है !

(६) इसमें सभी विषय के लेख रहते हैं, अतएव सभी विचार और प्रकृति के लोग इसे पढ़ते हैं। सो अगर किसी भी चीज़ की किसी को आवश्यकता हुई, तो वह इसी के विज्ञापन-पृष्ठों में पहले उसका विज्ञापन खोजेगा, फिर और किसी से पूछेगा !

(७) अधिक प्रचार होते हुए भी इसके विज्ञापन-छपाई के रेट भी सोच-विचारकर रक्खे गए हैं, जिसमें सभी श्रेणी के लोग विज्ञापन छपा सकें। ऐसा मौक़ा क्यों चूकते हैं ? क्या अभी आपको और कुछ जानना है ? यदि हो, तो पत्र लिखकर पूछिए।

शीघ्रता कीजिए। कंट्रैक्ट कर लीजिए। नहीं तो संभव है, आगे चलकर इसके विज्ञापन-रेट बढ़ाने पड़ें। क्योंकि कोई क्या कह सकता है कि सुधा की ग्राहक-संख्या आगे कितनी हो जायगी ?

मैनेजर 'सुधा', लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
Registered No. A. 1712.

हिंदी-संसार में

सुधा की अभूतपूर्व सफलता !

केवल ४-५ मास में ही

७२०० छपने लगी !!

इसी ख़ुशी में

५०० ग्राहक मुफ्त बनाए जायँगे !!!

हिंदी-संसार ने सुधा को जिस तेज़ी से अपनाया है, वैसा सौभाग्य आज तक किसी भी हिंदी-पत्रिका को प्राप्त नहीं हुआ। किंतु हमारे पास ऐसे ढेरों पत्र आ रहे हैं, जिनसे मालूम पड़ रहा है कि सुधा के हज़ारों प्रेमी उसके रसास्वादन से, किसी कारण, वंचित हैं। अतः उनके लिये हमने निश्चय किया है कि वे—

हमारी प्रकाशित

८) की पुस्तकें ख़रीद लें,

तो

हम उन्हें सुधा का

छमाही ग्राहक मुफ्त बना लेंगे।

यह रियायत पहले आए हुए ५०० ग्राहकों के साथ ही की जायगी। अवसर न चूकिए। लाभ उठाइए! 'सुधा' का मुफ्त पान कीजिए !!! अपनी पुस्तकों की लिस्ट हमने अंदर, रीडिंग मैटर के बीच में, दी है।

अध्यक्ष सुधा और गंगा-पुस्तकमाला, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेख-सूची

पृष्ठ

१. बाँसुरी (कविता)—[लेखक, बाबू मैथिलीशरण गुप्त ... १२१

२. अहिंसा का स्वरूप (कृष्ण और गांधी—आलोचनात्मक विचार)—[लेखक, श्रीयुत धर्मेंद्रनाथ शास्त्री, एम्० ए०, तर्कशिरोमणि १२२

३. सुधा (कविता)—[लेखक, श्रीरूपनारायण पांडेय (सुधा-संपादक) ... १२९

४. सिनेमा के वस्त्राभूषण (सचित्र)—[लेखक, श्रीयुत प्रद्युम्नकृष्ण कौल (हिंदूपंच-संपादक) १३०

५. बाजे का विरोध (व्यंग्य-चित्र)—[चित्रकार, पं० मोहनलाल महतो ... १३६

६. "बिहारी-रत्नाकर" (आलोचना)—[लेखक, डॉक्टर सर ज्यार्ज ए० ग्रियर्सन के० सी० आई० ई०, पी-एच्० डी०, डी० लिट्०, एल्-एल्० डी०, वागीश इत्यादि १३७

७. डाकू (कविता)—[लेखक, बाबू सियाराम-शरण गुप्त १३९

८. हमारे सामने सबसे बड़ा सवाल—[लेखक, पं० जनार्दन भट्ट एम्० ए० ... १४२

९. परलोक (२)—[लेखक, अध्यापक रामदास गौड़ एम्० ए० ... १४७

१०. मनुष्यत्व की कसौटी (सचित्र कहानी)—[लेखक, श्रीयुत सुदर्शन १५२

११. अज्ञान (कविता)—[लेखक, ठाकुर गोपालशरणसिंह ... १६०

१२. राष्ट्र-संघ—[लेखक, प्रिंसिपल श्रीनारायण चतुर्वेदी एम्० ए०, एल्० टी० (लंदन से) १६१

१३. अनुरोध (कविता)—[लेखक, श्रीयुत जयशंकर "प्रसाद" ... १६४

ख़फ़ीफ़ा

सम्मन बग़रज़ क़रारदाद अमूर तनक़ीह तलब

मुक़द्दमा नं० ५४२ सन् १९२७ ई० ।

अदालत जनाब बाबू अवधविहारीलाल साहब बहादुर मुंसिफ़ कुंडा, मुक़ाम परताबगढ़ ।

रानी इंद्रपाल कुँवरि बेवा राजा राघूसरजूसरन साह साकिन मौज़ा अमरगढ़, परगना व तहसील बेहटी, ज़िला परताबगढ़ मुद्दई

बनाम

दातादीनसिंह वल्द रजपालसिंह साकिन मौज़ा ब्रहलोपुर, परगना व तहसील बेहटी, ज़िला परताबगढ़ मुद्दाअलेह

बनाम दातादीनसिंह मुलाज़िम गर्ल्स स्कूल सदर बाज़ार मुत्तसिल मारकेट स्टेशन सदर शहर करांची मुद्दाअलेह ।

वाज़े हो कि मुद्दइयान ने तुम्हारे नाम एक नालिश बाबत दिला पाने २६७॥-)। असल मैसूद बर बिनाय तमस्सुक के दायर की है । लिहाज़ा तुमको हुक्म होता है कि तुम बतारीख़ १४ माह अक्टूबर सन् १९२७ ई० १० बजे पर असालतन या मारफ़त वकील के जो मुक़द्दमा के हाल से क़रार वाक़ई वाक़िफ़ किया गया हो और जो कुल अमूरात अहम मुतालिक़ा मुक़द्दमे का जवाब दे सके या जिसके साथ कोई और शख़्स हो जो जवाब ऐसे सवालात का दे सके, हाज़िर हो और जवाबदेही दावा मुद्दई मज़कूर की करो और तुमको हिदायत की जाती है कि जुमला दस्तावेज़ात को जिन पर तुम बताईद अपनी जवाबदेही के इस्तदलाल करना चाहते हो, पेश करो ।

मुत्तला रहो कि अगर ब रोज़ मज़कूर तुम हाज़िर न होगे, तो मुक़द्दमा तुम्हारी ग़ैरहाज़िरी में मसमूअ और फ़ैसल होगा ।

बहुक्म

द० राजनारायण भटनागर

मुंसरिम

(नमूना क़ाबिल फ़रोख़्त)

सम्मन बिनाबर इनफ़िसाल मुक़द्दमा

(आर्डर ५ क़ायदा १ व ५)

नंबर मुक़द्दमा २२५ सन् १९२७ ई० ।

बअदालत जज ख़फ़ीफा बाँदा ज़िला कानपुर जजी

सिद्धेश्वर मुद्दई

बनाम

बिसाहू वल्द फदाली मुराई साकिन मौज़ा काइल परगना बबेरू ज़िला बाँदा मुद्दाअलेह ।

हरगाह कि मुद्दई ने तुम्हारे नाम एक नालिश बाबत क़र्ज़ा के दायर की है । लिहाज़ा तुमको हुक्म होता है कि तुम बतारीख़ अठारा माह अक्टूबर सन् १९२७ ई० बवक़्त १० बजे दिन के असालतन या मारफ़त वकील के जो मुक़द्दमे के हालात से क़रार वाक़ई वाक़िफ़ किया गया हो और जो कुल अमूर अहम मुतअल्लिक़ै मुक़द्दमा का जवाब दे सके या जिसके साथ कोई और शख़्स हो कि जवाब ऐसे सवालात का दे सके हाज़िर हो और जवाबदेही दावा की करो । और हरगाह वही तारीख़ जो तुम्हारे इहज़ार के लिये मुक़र्रर है, वास्ते इनफ़िसाल क़तई मुक़द्दमा के तजवीज़ हुई है । पस तुमको लाज़िम है कि उसी रोज़ अपने जुमला गवाहों को जिनको शहादत पर वो नीज़ तमाम दस्तावेज़ात जिन पर तुम अपनी जवाबदेही के ताईद में इस्तदलाल करना चाहते हो, उसी रोज़ पेश करो—तुमको इत्तिला दी जाती है कि अगर बरोज़ मज़कूर तुम हाज़िर न होगे, तो मुक़द्दमा बग़ैर हाज़िरी तुम्हारे मसमूअ और फ़ैसल होगा ।

ब-सब्त मेरे दस्तख़त और मोहर अदालत के आज ब तारीख़ १५ माह सितंबर सन् १९२७ ई० जारी किया गया ।

हुक्म

द० हरदयाल

मुंसरिम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१४. निवेदन (कविता)—[लेखक, बाबू जगन्नाथदास "रत्नाकर" बी० ए० ... १६४

१५. साहित्य और उसकी पाठ-प्रणाली—[लेखक, श्रीयुत अवधकिशोरसहाय वर्मा "बाण" एम्० ए०, बी० एड० ... १६४

१६. अभिभाषण (उत्तरार्द्ध, गुरुकुल की रजत-जयंती के शुभ अवसर पर, युक्त-प्रांतीय सप्तम हिंदी-साहित्य-सम्मेलन के सभापति-पद से दिया गया)—[लेखक, श्रीदुलारेलाल भार्गव (सुधा-संपादक) १६६

१७. उत्तेजिता (कविता)—[लेखक, पं० अयोध्यासिंह उपाध्याय "हरिऔध" ... १७२

१८. कलरव (कविता)—[लेखक, पं० सुमित्रानंदन पंत १७२

१९. अशृंगारी बिहारी (गत संख्या से सम्मिलित)—[लेखक, पं० परशुराम चतुर्वेदी एम्० ए०, एल्-एल्० बी० १७३

२०. करुण क्रंदन (कविता)—[लेखक, श्रीयुत मोहनलाल महतो गयावाल "वियोगी" साहित्यालंकार १७६

२१. संबलपुर (उड़ीसा) के चौहान राजों के हिंदी-ताम्रपत्र—[लेखक, पं० लोचनप्रसाद पांडेय १७७

२२. चित्रकार (सचित्र कहानी)—[लेखक, पं० विनोदशंकर व्यास ... १८१

२३. "छायावाद" (रहस्यवाद का रहस्य)—[लेखक, श्रीयुत अवध उपाध्याय (प्रो० हिंदी-विद्यापीठ, प्रयाग) ... १८४

२४. उषा (कविता)—[लेखक, श्रीयुत "गुलाब" १८६

२५. आदर्श गुरु (व्यंग्य-चित्र)—[चित्रकार, श्रीयुत उत्तमसिंह तोमर बी० ए० ... १९०

२६. संगीत-साधना—[शब्दकार, अज्ञात; स्वरलिपिकार, श्रीहेतलाल शर्मा बी० एस्-सी० ... ... १९१

२७. कुसुम-कुंज—[लेखकगण, श्रीयुत दयाशंकर दुबे एम्० ए०, एल्-एल्० बी०, श्रीयुत जगदंबाप्रसाद मिश्र "हितैषी", (स्व०) पं० ईश्वरीप्रसाद शर्मा, श्रीयुत जगन्नाथप्रसाद खत्री "मिलिंद", राय साहब प्रिंसिपल रघुवरप्रसाद द्विवेदी बी० ए०, साहित्य-रत्न, श्रीयुत भगवतीचरण वर्मा बी० ए० ... ... १९३

हिंदी-साहित्य का सर्वोत्तम गार्हस्थ्य-उपन्यास

हृदय की प्यास

[लेखक—हिंदी के सुप्रसिद्ध, सिद्ध-हस्त लेखक आयुर्वेदाचार्य श्रीचतुरसेन शास्त्री]

हिंदी में मौलिक उपन्यास-लेखक इने-गिने ही हैं, और उनमें शास्त्रीजी का स्थान किसी से कम नहीं। गद्य-काव्य लिखने में आप आचार्य माने जाते हैं। बड़े-बड़े साहित्य-सेवी आपकी लेखन-शैली के क़ायल हैं। नवयुवकों के लिये तो यह आदर्श ही है। यह उपन्यास भी उनकी पूर्ण प्रतिभा का परिचायक है। भावमयी भाषा, सुंदर शैली, सरल और सुबोध रचना का यह सर्वोत्तम नमूना है। मित्रता के लक्षण, सौंदर्य की विषमता, शंका की सत्यता, तज्जनित द्वेष और दाह, उसका दुष्परिणाम ही नहीं, वरन् आधुनिक शिक्षा से उत्पन्न सौंदर्योपासना, अविवेक और मतिभ्रम यथा पूर्व-संस्कार के कारण कर्तव्य-परायणता और पश्चात्ताप इसमें पढ़ते ही बनता है। गार्हस्थ्य-जीवन क्योंकर सुखी हो सकता है, आजकल के नवयुवक क्यों उसे नरक-तुल्य समझते हैं, घर की लक्ष्मी को छोड़कर कूड़े-कर्कट की कौड़ी पर क्यों दृष्टि गड़ाए रहते हैं—आदि जीवन के कतिपय जटिल प्रश्नों का शास्त्रीजी ने बड़ी ख़ूबी और योग्यता के साथ निराकरण किया है। इन सब बातों के होते हुए भी इसका प्लॉट ऐसी ख़ूबी से रचा गया है कि उपन्यास को एक बार हाथ में लेने पर क्या मजाल कि आप खाना-पीना न भूल जायँ, और उसे समाप्त किए बिना ही छोड़ दें। सती की सत्यता और कुलटा की कायरता तो ग़ज़ब ढाती है। एक बार इसको मँगाइए, स्वयं पढ़िए और अपनी गृहिणी को भी पढ़ाइए। ६ रंगीन और सादे चित्रों से सुशोभित इस अमूल्य पुस्तक का मूल्य केवल १॥) ; सजिल्द २)

मिलने का पता—संचालक गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२८. विज्ञान-वैचित्र्य—[लेखक, श्रीयुत रमेशप्रसाद बी० एस्-सी०, केमिस्ट ... २०१

२९. चित्रकला—[लेखक, पं० हेमचंद्र जोशी बी० ए० (बर्लिन से) ... २०६

३०. स्त्री-समाज—[लेखकगण, श्रीयुत गोपीनाथ वर्मा, श्रीयुत पांडेय देवेंद्रनारायण-सिंह, कुमारी कौशल्यादेवी गोरोवाला और कुमारी सत्यवती (डलहौज़ी) ... २११

३१. व्यंग्य-विनोद—[लेखकगण, श्रीयुत "सदानंद," श्रीयुत "बरक़ीजी," श्रीयुत जी० पी० श्रीवास्तव बी० ए०, एल्-एल्० बी० ... ... २१६

३२. समाज-सुधार—[लेखक, श्रीयुत संतराम बी० ए० ... ... २१९

३३. साहित्य-सूची २२३

३४. पुस्तक-परीक्षा—[लेखक, प्रो० धर्मेंद्रनाथ शास्त्री, एम्० ए०, तर्कशिरोमणि, श्रीयुत जी० पी० श्रीवास्तव बी० ए०, एल्-एल्० बी०, रायबहादुर श्रीयुत हीरालाल बी० ए० (रिटायर्ड डिप्टी-कमिश्नर) ... २२४

३५. संपादकीय सम्मति ... २२८

चित्र-सूची

पृष्ठ

(क) रंगीन

१. वर्षा-विहार—[मियाँ बसंतसिंह जागीरदार की कृपा से प्राप्त १२१

२. महाकवि श्रीविहारीदास (४ रंग में) ... १२७

३. शिव की बरात—[श्रीदुलारेलाल भार्गव की चित्रशाला से १८५

(ख) व्यंग्य

१. बाजे का विरोध १२९

२. आदर्श गुरु १९०

(ग) सादे

१. मिस ग्लोरिया-स्वानसन के वस्त्राभूषण ... १३१

२. मिस ग्लोरिया-स्वानसन के नए फ़ैशन के वस्त्राभूषण १३१

३. मेरियन डेविस की ड्रेस का एक नमूना ... १३२

४. पोलानिग्री द्वारा 'स्पेन की नर्तकी'-नामक फ़िल्म में पहनी हुई पोशाक ... १३२

५. 'योलंदा'-नामक फ़िल्म में मेरियन डेविस की पोशाक १३१

६. नार्मा टालमेज़ १३२

७. कांस्टेंस टाल्मेज़ की, २५० वर्ष पुराने ज़माने

वेणी-संहार-नाटक

[लेखक, साहित्य-महारथी पं० महावीरप्रसाद द्विवेदी]

पांडवों के संग बन जाते समय द्रौपदी ने अपनी वेणी खोल दी थी। पुनः राज-प्राप्ति पर ही उसे बाँधने की प्रतिज्ञा की थी। भीमसेन ने भी एक बार दुखित होकर द्रौपदी से कहा था कि अपनी गदा के प्रचंड आघातों से दुर्योधन की दोनों जंघाओं को तोड़कर ख़ून से सने हुए अपने हाथों से तुम्हारे खुले हुए केश बाँधूँगा। वैसा ही हुआ भी। इसमें उसी का वर्णन है। आख्यायिका-रूप में। इसकी भाषा अति सरल और सरस है। इसके पढ़ने से लोग महाभारत के युद्ध की मुख्य-मुख्य घटनाओं से परिचित हो जायँगे। शिक्षा-विभाग से भी इनाम और पुस्तकालयों के लिये स्वीकृत है। मूल्य ॥=)

संचालक गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय, अमीनाबाद-पार्क, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की, स्वयं तैयार की हुई, ८००० पौंड लागत की पोशाक १३४
८. मिस ज़ीन टोली द्वारा 'अनइन्वाइटेड गैस्ट-' नामक फ़िल्म में पहनी हुई पोशाक ... १३४
९. सिनेमा-संसार की रानी मिस पर्ल व्हाइट ... १३५
१०. एंटोनियो मोरेनो १३५
११. लुई कॉडी १३५
१२. "ख़बरदार! जो पाँव आगे बढ़ाया, तो पाँव ही तोड़ दूँगी। यह ब्राह्मण का घर है, चमार का नहीं।" १५४
१३. एकाएक बिसाखी आकर गाड़ी के पास खड़ा हो गया, और बोला—"ज़रा ठहर जाइए। बाजा आ ले।" १५९
१४. चित्रकार ने "हाँ" कहते हुए उसके हाथ में चित्र दे दिया। तब उसने कहा—यह तो मेरी ही सूरत का चित्र मालूम पड़ता है। ... १८४
१५. डॉ० डेविड वेशलर चमड़े की वैद्युतिक अवरोध की मात्रा का पता लगाकर सच-झूठ का निर्णय कर रहे हैं २०२
१६. डॉ० आर० ई० हाउस की दवा की परीक्षा हो रही है २०३
१७. यदि तुम १५ वस्तुओं के नाम लिख सको, तो तुम्हारी स्मरण-शक्ति औसत मनुष्यों-जैसी है। २० याद रहने पर सबसे अच्छी स्मरण-शक्ति समझना। ... २०९
१८. कोरो, युवावस्था में २०९
१९. कोरो, वृद्धावस्था में २०७
२०. एक प्रातःकाल वनदेवियों का नृत्य ... २०८
२१. आचार्य रामदेव एम्० ए० (स्वागत-समिति के अध्यक्ष) २१०
२२. प्रो० सत्यव्रत सिद्धांतालंकार (उपाध्यक्ष) २३१
२३. प्रो० सत्यकेतु विद्यालंकार (प्रधान मंत्री) २३१
२४. स्वर्गीय पं० ईश्वरीप्रसाद शर्मा ... २३८
२५. स्मशान में पं० ईश्वरीप्रसाद शर्मा ... २३९

१,००,००० पैकेट मुफ्त!!!

"नमक पचलोना"

नमूना मुफ़्त। बिलकुल हाज़मा। स्वादिष्ट

चूर्ण

पता—

मेसर्स अमृत लहरी कंपनी

पो० कुरथा, ज़िला गया

कीचक

[लेखक, पं० भगवन्नारायण भार्गव, बी० ए० एम्० एल्० सी०]

द्रौपदी-सहित पाँचों पांडवों का नाम और वेष बदलकर विराट-देश के राजा के आश्रम में अज्ञात-वास का समय बिताना। राजा के सेनाध्यक्ष, दुराचारी, लंपट कीचक का सैरिंध्री-नामधारिणी द्रौपदी पर कुदृष्टि डालना। भीम का कीचक को यमालय पहुँचाना। कीचक की विषय-वासना और इंद्रिय-लोलुपता का खासा खाका। राजा का कीचक के हाथ का खिलौना होना। पागल और भिखारी प्रभृति द्वारा राज्य में अत्याचार, अन्याय और धरपकड़ का साम्राज्य। हास्य-रस का पुट तो ग़ज़ब ही ढाता है! नाटक रंग-मंच पर खेलने-योग्य है। मूल्य १।), सजिल्द १॥)

मिलने का पता—

संचालक गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय, लखनऊ

आर्डर देते समय सुधा का नाम अवश्य लिखने की कृपा करें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लीजिए ! शीघ्रता कीजिए !! नहीं तो पीछे पछताइएगा !!!

सर्वश्रेष्ठ और सर्वांगसुंदर

साहित्यिक और सामाजिक

सचित्र मासिक पत्रिका

"सुधा"

के स्वयं शीघ्र ग्राहक बन जायँ तथा अपने इष्ट-मित्रों को बनाएँ, और मातृभाषा तथा देश-भाषा हिंदी की सेवा में हमारा हाथ बटाएँ।

ग्राहक बनने में शीघ्रता क्यों करें ?

इसलिये कि—

(१) अगर आप अभी से इसके ग्राहक न बनेंगे, तो आपको शुरू के अंक फिर न मिल सकेंगे। इसकी ग्राहक-संख्या इस तेज़ी से बढ़ी है कि गत एक ही मास में इसके ३००० से ऊपर ग्राहक बन गए, और इसके पहले अंक का द्वितीय संस्करण फिर ४००० का निकालना पड़ा!

(२) सुधा सुंदर और स्थायी साहित्य का एक अनुपम संग्रह है, जो सदा और सर्वथा संग्रहनीय, पठनीय और मननीय है। कभी यह साहित्य पुराना नहीं हो सकता। जब कभी, २०-२५ वर्ष बाद भी, आप इसे पढ़ेंगे, आपको नित्य नया आनंद प्राप्त होगा। हरिश्चंद्र की "हरिश्चंद्र-चंद्रिका," पं० बालकृष्ण भट्ट का "हिंदी-प्रदीप", पं० प्रतापनारायण मिश्र का "ब्राह्मण" और पं० महावीर प्रसाद द्विवेदी की "सरस्वती," वर्षों पुरानी हो जाने पर भी, आज नई की तरह ही, पढ़ी जाती हैं। लोग इनके लिये तरसते रहते हैं। वही हाल कभी "सुधा" का भी होगा। इसलिये अपनी प्रतियों का आप अभी से संग्रह कर लीजिए।

(३) यह अवसर चूकने पर फिर ३)-३) और ४)-४) देने पर भी इसके अंकों का मिलना असंभव हो जायगा। कारण, शुरू की माधुरी में हमें इसका पूरा अनुभव हो गया है कि ग्राहकों को किस तरह निराश होना पड़ा था!

और, यह लिखने की तो आवश्यकता ही नहीं कि इसके लेख और चित्र किस कोटि के होते हैं। यह तो आप सुधा पर आई हुई सम्मतियाँ पढ़ने से जान ही जायँगे। अन्यत्र पढ़िए।

मैनेजर सुधा, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आपको विज्ञापन कहाँ देना चाहिए ?

हिंदी की सर्वश्रेष्ठ मासिक पत्रिका

"सुधा"

में।

क्यों ? किसलिये ?

इसलिये कि—

(१) राजे-महाराजे, रईस-ताल्लुक़ेदार, अमीर-उमराव, वकील-बैरिस्टर, डॉक्टर-वैद्य, मिलों के मालिक और दूकानदार, कोठीवाले और महाजन, अध्यापक और विद्यार्थी, सभी इसे पढ़ते हैं। इसमें विज्ञापन देने से घर बैठे आपकी तिजारत की ख़बर इन सबको मिल जायगी, और आप ही से ये लोग माल मँगाएँगे। देखिए, रोज़गार बढ़ाने का कैसा अच्छा और सस्ता तरीक़ा है!

(२) यह हिंदी की सर्वश्रेष्ठ मासिक पत्रिका है। इसके प्रत्येक पृष्ठ को लोग बड़े चाव से देखते हैं, और सदा नई-नई वस्तुओं की खोज में रहते हैं। फिर बताइए, आपकी चीज़ अगर नई, बढ़िया, सुंदर और उपयोगी हुई, तो वे क्यों नहीं उसे ख़रीदेंगे ?

(३) सभी बड़े-बड़े व्यापारी अपना विज्ञापन इसमें छपवाकर काफ़ी लाभ उठा रहे हैं। इसके विज्ञापन के पृष्ठों को देखिए! फिर आप ही सुस्त क्यों बैठे हैं ?

(४) यह हिंदुस्थान के कोने-कोने में जाती है। कहीं भी आपकी वस्तु की आवश्यकता होगी, माँग आपके पास सीधी आएगी।

(५) इसकी ग्राहक-संख्या तेज़ी से बढ़ रही है। यह सबसे अधिक लोक-प्रिय हो रही है। लाखों स्त्री-पुरुष इसे पढ़ रहे हैं। इसीलिये हमें एक-एक अंक के दो-दो संस्करण करने पड़े हैं! हिंदी की मासिक पत्रिकाओं के इतिहास में यह एक बिलकुल नई घटना है!

(६) इसमें सभी विषय के लेख रहते हैं, अतएव सभी विचार और प्रकृति के लोग इसे पढ़ते हैं। सो अगर किसी भी चीज़ की किसी को आवश्यकता हुई, तो वह इसी के विज्ञापन-पृष्ठों में पहले उसका विज्ञापन खोजेगा, फिर और किसी से पूछेगा!

(७) अधिक प्रचार होते हुए भी इसके विज्ञापन-छपाई के रेट भी सोच-विचारकर रक्खे गए हैं, जिसमें सभी श्रेणी के लोग विज्ञापन छपा सकें। ऐसा मौक़ा क्यों चूकते हैं ? क्या अभी आपको और कुछ जानना है ? यदि हो, तो पत्र लिखकर पूछिए।

शीघ्रता कीजिए। कंट्रैक्ट कर लीजिए। नहीं तो संभव है, आगे चलकर इसके विज्ञापन-रेट बढ़ाने पड़ें। क्योंकि कोई क्या कह सकता है कि सुधा की ग्राहक-संख्या आगे कितनी हो जायगी!

मैनेजर 'सुधा', लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुधा के नियम

मूल्य

सुधा का डाक-व्यय-सहित वार्षिक मूल्य ६॥), छः मास का ३॥) और प्रति संख्या का ।॥) है। वी० पी० से मँगाने में =) रजिस्ट्री के और देने पड़ेंगे। इसलिये ग्राहकों को मनीआर्डर से ही चंदा भेज देना चाहिए। भारत के बाहर सर्वत्र वार्षिक मूल्य ७॥), छः महीने का ४) और प्रति संख्या का ।॥=) है। वर्षारंभ श्रावण से होता है, और प्रति मास शुक्ल-पक्ष की सप्तमी को पत्रिका प्रकाशित हो जाती है। लेकिन ग्राहक चाहे जिस संख्या से ग्राहक बन सकते हैं।

अप्राप्त संख्या

अगर कोई संख्या किसी ग्राहक के पास न पहुँचे, तो अगले महीने के कृष्ण-पक्ष की सप्तमी तक कार्यालय को सूचना मिलनी चाहिए। लेकिन हमें सूचना देने के पहले स्थानीय पोस्ट-ऑफ़िस में उसकी जाँच करके डाकख़ाने का दिया हुआ उत्तर सूचना के साथ आना चाहिए। उनको उस संख्या की दूसरी प्रति भेज दी जायगी। लेकिन उक्त तिथि के बाद सूचना मिलने से उस पर ध्यान नहीं दिया जायगा, और उस संख्या को ग्राहक ।॥) के टिकट भेजने पर ही पा सकेंगे।

पत्र-व्यवहार

उत्तर के लिये जवाबी कार्ड या टिकट आना चाहिए। अन्यथा पत्र का उत्तर नहीं दिया जा सकेगा। पत्र के साथ ग्राहक-नंबर का भी उल्लेख होना चाहिए। मूल्य या ग्राहक होने की सूचना मैनेजर सुधा, लखनऊ या मैनेजर गंगा-पुस्तकमाला, लखनऊ के पते से आनी चाहिए।

पता

ग्राहक होते समय अपना नाम और पता बहुत साफ़ अक्षरों में लिखना चाहिए। दो-एक महीने के लिये पता बदलवाना हो, तो उसका प्रबंध डाक-घर से ही कर लेना ठीक होगा। अधिक दिन के लिये बदलवाना हो, तो संख्या निकलने के १५ दिन पेश्तर उसकी सूचना देनी चाहिए।

लेख आदि

लेख या कविता स्पष्ट अक्षरों में, काग़ज़ की एक ओर, संशोधन के लिये इधर-उधर जगह छोड़कर, लिखी होनी चाहिए। क्रमशः प्रकाशित होने लायक़ बड़े लेख संपूर्ण आने चाहिए। किसी लेख अथवा कविता के प्रकाशित करने या न करने का, उसे घटाने-बढ़ाने का, तथा उसे लौटाने या न लौटाने का सारा अधिकार संपादक को है। जो नापसंद लेख संपादक लौटाना मंज़ूर करें, वे टिकट भेजने पर ही वापस किए जा सकते हैं। यदि लेखक लेना स्वीकार करते हैं, तो उपयोगी और उत्तम लेखों पर पुरस्कार भी दिया जाता है। सुधा में प्रकाशित पुरस्कृत लेखों और कविताओं को पुस्तकाकार या किसी संग्रह में निकालने का अधिकार सुधा के अध्यक्ष को रहेगा। अपुरस्कृत रचनाओं पर लेखकों और सुधा-अध्यक्ष, दोनों का अधिकार होगा। सचित्र लेखों के चित्रों का प्रबंध लेखकों को करना चाहिए। चित्र प्राप्त करने के लिये आवश्यक ख़र्च प्रकाशक देंगे।

लेख, कविता, समालोचना के लिये पुस्तकें और बदले के पत्र इस पते से भेजने चाहिए—

पं० दुलारेलाल भार्गव
गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय,
२९-३०, अमीनाबाद-पार्क, लखनऊ

विज्ञापन

किसी महीने में विज्ञापन बंद करना या बदलवाना हो, तो एक महीने पहले सूचना देनी चाहिए।

अश्लील विज्ञापन नहीं छपते। छपाई पेशगी ली जाती है। विज्ञापन की दर नीचे प्रकाशित है—

साधारण १ पृष्ठ या २ कालम की छपाई	४०)	प्रति मास
,, ½ ,, या १ ,, ,, ,,	२२)	,, ,,
,, ¼ ,, या ½ ,, ,, ,,	१२)	,, ,,
,, ⅛ ,, या ¼ ,, ,, ,,	७)	,, ,,

कम-से-कम आधा कालम विज्ञापन छपानेवालों को सुधा मुफ़्त मिलती है। साल-भर के विज्ञापनों पर =) रुपया कमीशन दे दिया जाता है।

सुधा में विज्ञापन छपाने से बड़ा लाभ रहता है। कारण, इसका प्रत्येक विज्ञापन लाखों पढ़े-लिखे, धनी-मानी और सभ्य स्त्री-पुरुषों की नज़रों से गुज़र जाता है। सब बातों में हिंदी की सर्वश्रेष्ठ पत्रिका होने के कारण इसका प्रचार उत्तरोत्तर बढ़ रहा है।

कृपया शीघ्र ही अपना विज्ञापन सुधा में छपाकर लाभ उठाइए। कम-से-कम एक बार परीक्षा तो कर लीजिए।

मैनेजर सुधा, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

IT WILL 'PAY' YOU !

- - - ADVERTISE YOUR GOODS - - -

IN

THE PREMIER HINDI MONTHLY

"SUDHA"

Send your Advertisement matter and book your space now.

Rajas, Maharajas, Raises, Businessmen, Taluqdars and Educationists read it.

THEY ARE THE BEST CUSTOMERS OF YOUR GOODS

Advertising in the "SUDHA" is to talk about Your Goods to every cultured man and woman and it means

MORE BUSINESS AND MORE MONEY.

RATES:—Full page Rs. 40 0 0 in advance.

½ „ „ 22 0 0 „

¼ „ „ 12 0 0 „

FOR FURTHER PARTICULARS PLEASE WRITE TO:—

Manager "SUDHA", LUCKNOW.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

76023

"कीन्हेहु सुलभ सुधा बसुधा हू।"
(गो० तुलसीदास)

वर्ष १ खंड १ | भाद्रपद, ३०५ तुलसी-संवत् (१९८४ वि०)— सितंबर, १९२७ | संख्या २ पूर्ण संख्या २

बाँसुरी

वह बाँसुरी ही बाँस की
हे साक्षिणी तेरा सरस—
संजीवनी-सी साँस की।
क्या मंत्र फूँका कान में,
बस, बज उठी वह आन में!
उस गान में, उस तान में,
मानो गमक थी गाँस की।
कैसी करारी कूक थी!
आह्वान-युक्ति अचूक थी;
उठती हृदय में हूक थी—
फिर-फिर उसी की फाँस की।

मृदु अँगुलियाँ बचती रहीं,
ध्वनि-भार पर नचती रहीं,
श्रुति-पथि-सी रचती रहीं,
क्या है दुरालता काँस की?
निस्सारता हरकर हरे,
वे छिद्र सब तूने भरे।
क्या स्वर-सुधा-निर्झर झरे!
मैं बलि गई उस आँस की।

मैथिलीशरण गुप्त

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

IT WILL 'PAY' YOU !

ADVERTISE YOUR GOODS . . .

IN

THE PREMIER HINDI MONTHLY

"SUDHA"

Send your Advertisement matter and book your space now.

Rajas, Maharajas, Raises, Businessmen, Talookdars and Educationists read it.

THEY ARE THE BEST CUSTOMERS OF YOUR GOODS

Advertising in the "SUDHA" is to talk about Your Goods to every educated man and woman and it means

MORE BUSINESS AND MORE MONEY.

RATES—Full page Rs. 40 0 0 in advance.

½ „ „ „ 25 0 0 „

¼ „ „ „ 15 0 0 „

FOR FURTHER PARTICULARS PLEASE WRITE TO :—

Manager "SUDHA", LUCKNOW.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"कीन्हेहु सुलभ सुधा बसुधा हू।"

(गो० तुलसीदास)

वर्ष १ खंड १ | भाद्रपद, ३०५ तुलसी-संवत् (१९८४ वि०)— सितंबर, १९२७ | संख्या २ पूर्ण संख्या २

बाँसुरी

वह बाँसुरी ही बाँस की
है साक्षिणी तेरा सरस—
संजीवनी-सी साँस की।
क्या मंत्र फूँका कान में,
बस, बज उठी वह आन में!
उस गान में, उस तान में,
मानो गमक थी गाँस की।
कैसी करारी कूक थी!
आह्वान-युक्ति अचूक थी;
उठती हृदय में हूक थी—
फिर-फिर उसी की फाँस की।

मृदु अँगुलियाँ बचती रहीं,
ध्वनि-धार पर नचती रहीं,
श्रुति-सृष्टि-सी रचती रहीं,
क्या है कुशलता काँस की?
निस्सारता हरकर हरे,
वे छिद्र सब तूने भरे।
क्या स्वर-सुधा-निर्झर झरे!
मैं बलि गई उस आँस की।

मैथिलीशरण गुप्त

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अहिंसा का स्वरूप

[कृष्ण और गांधी—आलोचनात्मक विचार]

नव-भाषा के इतिहास में शायद ही किसी शब्द पर ऐसा अत्याचार हुआ होगा, जैसा 'अहिंसा'-शब्द पर हिंदुओं ने किया है। हमने 'अहिंसा'-शब्द को अपनी 'कायरता' और 'दीनता' की ढाल बनाया है। 'अहिंसा'-शब्द का परदा डालकर हम अपनी जघन्य कायरता को वीरता समझ बैठे हैं। पर सच तो यह है कि अहिंसा और कायरता में प्रकाश और अंधकार का-सा, सरदी और गरमी का-सा अंतर है—वही अंतर है, जो उत्तरी ध्रुव और दक्षिणी ध्रुव में है। अहिंसा निस्संदेह हिंदू-धर्म का—और संसार के सारे धर्मों का—सार है; क्योंकि अहिंसा विश्वप्रेम का ही दूसरा नाम है। और, विश्वप्रेम ही के द्वारा मनुष्य अपनी व्यक्तिगत संकीर्ण आत्मा से आगे बढ़कर विश्वात्मा में अपने को मिलाता है। इसलिये अहिंसा सत्य का परम रूप है। संसार में सबसे बड़ी वीरता अहिंसा ही है। पार्थिव मनुष्य के अंदर भी भगवान् की दिव्य झलक यदि किसी रूप में प्रकट होती है, तो अहिंसा के रूप में। जब पंचतत्वों के बने पार्थिव शरीर में अहिंसा की दिव्य ज्योति प्रकट होती है, तो मनुष्य भगवान् का रूप होता है। यह अहिंसा की दिव्य झलक राम, कृष्ण, बुद्ध और क्राइस्ट में प्रकट हुई थी, इसीलिये मनुष्यों ने उन्हें ईश्वर के अवतार के रूप में देखा।

इस दिव्य गुण अहिंसा को हम अपनी कायरता में देखने लगें, इससे बढ़कर आत्मविडंबना क्या हो सकती है? इससे बढ़कर भाषा का दुरुपयोग क्या हो सकता है? संसार में हम बड़ी-से-बड़ी बुराई को छोड़ सकते हैं, यदि उसे बुराई समझकर छोड़ने का प्रयत्न करें; परंतु यदि पाप को ही सदाचार का रूप दे दिया जाय, तो उस पाप से हमें कौन बचा सकता है? उस बीमार का इलाज कौन डॉक्टर करेगा, जो अपने रोग को ही स्वास्थ्य समझता है? भयानक-से-भयानक रोगी अच्छा हो सकता है; पर ऐसे अंधविश्वासी रोगी की मृत्यु निश्चित है। यदि हिंदू-समाज को एक जाति के रूप में जीवित रहना है, तो उसे अपने इस भ्रम को दूर करना होगा। संसार में कायरों के लिये जगह नहीं है। हिंदू-जाति को अपने अस्तित्व के लिये वीरता की दीक्षा लेनी पड़ेगी, और उसके पहले यह आवश्यक है कि वह 'अहिंसा'-शब्द का दुरुपयोग, अपनी कायरता के लिये, न करे। एक ताज़ा उदाहरण लीजिए, जो अच्छी तरह वस्तु-स्थिति प्रकट करनेवाला है—

हिंदू-मुसलमानों के सारे दंगों में हाल का लाहौर का दंगा एक ख़ास स्थान रखता है। वह अपने ढंग का अनूठा ही हुआ, और हिंदुओं को उससे कुछ सबक़ सीखना चाहिए। यह किसी से छिपा नहीं कि आज से पाँच साल पहले जहाँ कहीं दंगे होते थे, हिंदू ही, अधिक संख्या में होते हुए भी, पिट जाते थे। वे लड़ना जानते ही न थे; अपनी रक्षा भी नहीं कर सकते थे। किंतु मुल्तान और सहारनपुर के दंगों के बाद स्थिति बदल गई। जहाँ-जहाँ दंगे हुए, हिंदुओं ने अच्छी तरह मुक़ाबला किया। कई स्थानों पर हिंदुओं की संख्या थोड़ी थी; फिर भी मुसलमान उनके आगे ठहर न सके। अच्छी तरह पता चल गया कि मुसलमानों में क्रूरता है, पर वीरता नहीं। वे पहली चोट कर सकते हैं; परंतु यदि प्रतिद्वंद्वी मुक़ाबले में खड़ा हो जाय, तो उनके पैर उखड़ जाते हैं। जब-जब हिंदुओं ने मुक़ाबला किया, मुसलमानों की बुरी दशा हुई। लखनऊ और कलकत्ते की घटनाएँ मुसलमानों को बहुत दिन तक याद रहेंगी। जब मुसलमानों की वीरता का दिवाला निकल गया, तो उनके लिये कठिन समय उपस्थित हुआ। उनका एक-मात्र हथियार—दंगा खड़ा कर देना—व्यर्थ हो गया। अब लाहौर में उन्होंने एक नया तरीक़ा ईजाद किया है। मैं लाहौर के दंगे के समय वहीं था। समाचार-पत्र लाहौर के दंगे के बृहत् शीर्षकों से भरे होते थे; पर आश्चर्य यह था कि लाहौर में पहले दिन को छोड़कर, जिसमें सिख-मुसलमानों की मुठभेड़ हुई, और जिसमें सिखों ने तीन मुसलमानों को साफ़ कर दिया, एक भी दंगा या फ़साद ऐसा नहीं हुआ, जिसे क़ानून की दृष्टि से भी दंगा कहा जा सके। दूसरी जगह जहाँ-जहाँ दंगे हुए हैं, वहाँ दोनों पक्षों के सैकड़ों और हज़ारों लोग एक दूसरे से भिड़ गए। पर लाहौर में तो, पहले दिन को छोड़कर, पाँच हिंदू और पाँच मुसलमान भी आमने-सामने किसी जगह लड़े हों, इतना भी नहीं हुआ। फिर भी परिणाम रोमांचकारी और भयानक है! २५ से अधिक हिंदू मरे, और ३०० से अधिक घायल हुए! यह सब किस प्रकार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हुआ ? निर्जन स्थान में, गलियों में किसी अकेले, अनजान, अबोध आदमी पर एकसाथ आक्रमण करके, मुसलमान के ताँगे में जाते हुए किसी परदेसी हिंदू, को मुसलमानों की गलियों में ले जाकर उसकी हत्या करके, पीछे से जाकर पेट में छुरा भोंककर तथा बच्चों, स्त्रियों और बूढ़ों पर आक्रमण करके यह भयानक रक्तपात किया गया। इस बात को सरकारी तौर पर भी स्वीकार किया गया है कि लाहौर में आमने-सामने दोनों दलों की कहीं मुठभेड़ नहीं हुई, और सारे दंगे का रूप अकेले सड़क पर जाते हुए इक्के-दुक्के आदमियों पर आक्रमण करना ही था। कलकत्ते के दंगे में, तथा दूसरे स्थानों पर भी, ऐसे इक्के-दुक्के पर आक्रमण हुए थे अवश्य; पर वहाँ आमने-सामने की मुठभेड़ के साथ-साथ होनेवाली यह एक बात थी; किंतु लाहौर में तो इसके सिवा और कोई लड़ाई ही न थी। और, मुसलमानों का यह ढंग उनके लिये फलीभूत भी हुआ। पहले दिन को छोड़कर, जब कि तीन मुसलमान मरे, बाक़ी सारे दिनों में पचीस हिंदुओं के मुक़ाबले में कुल दो-तीन मुसलमान मरे, और उनके घायलों की संख्या भी हिंदुओं की अपेक्षा तिहाई अथवा चौथाई कठिनता से होगी। इस प्रकार की लड़ाई में—यदि इसे लड़ाई कहा जा सके—हिंदुओं को सर्वथा पराजित होना पड़ा। कारण स्पष्ट है। रास्ते में जाते हुए दस हिंदुओं को भी यदि एक मुसलमान मिल जाय, तो उनके लिये उस पर आक्रमण करना असंभव था। वे सोच ही न सकते थे कि वे उस पर क्यों चोट करें ? इसका कारण डर, कायरता, पारस्परिक अविश्वास, पापभीरुता या ऐसे निकृष्ट कार्य से घृणा, कुछ भी हो, इस प्रश्न को न छेड़कर हम यहाँ इतना बताना चाहते हैं कि लाहौर के दंगे में यह बात स्पष्ट दिखाई पड़ रही थी कि यदि कहीं भी चार मुसलमानों को एक हिंदू—चाहे वह परदेसी हो, बूढ़ा हो, जवान हो, कुछ हो—एक निर्जन कोने में मिल जाता, तो उसकी जान ख़तरे में थी। परंतु इसके विपरीत यदि एक मुसलमान दस हिंदुओं के बीच में फँस जाता, तो उसे कोई खटका या ख़तरा न था। इसका साफ़-साफ़ परिणाम यह हुआ कि उन सड़कों पर, जहाँ हिंदू-मुसलमानों की एक-सी आबादी थी, या दोनों की आबादी न थी, मुसलमान तो दंगे के दिनों में स्वच्छंद घूमते थे, पर हिंदुओं को उन सड़कों पर चलने का साहस न होता था। कारण स्पष्ट है। एक मुसलमान अपने को दस हिंदुओं के बीच में सुरक्षित समझता था; परंतु एक हिंदू चार मुसलमानों के बीच में बिना किसी झगड़े के भी मृत्यु के द्वार पर था।

इस बात में दो सम्मतियाँ नहीं हो सकतीं कि इस प्रकार अकेले चलनेवाले पथिकों पर आक्रमण करना बड़ी नीचता और जघन्य क्रूरता है। इसके लिये मुसलमानों को गर्व न करना चाहिए, प्रत्युत लज्जित ही होना चाहिए। परंतु हिंदुओं पर इसका क्या परिणाम हुआ ? सारे हिंदुओं में एक विभीषिका, डर की लहर, छाई हुई थी। जिन सड़कों पर मुसलमान स्वच्छंदता से घूम रहे थे, उन्हें हिंदुओं से शून्य देखकर सहसा आत्मग्लानि और लज्जा उत्पन्न होती थी। कोई कुछ भी कहे, परंतु यह सत्य है कि लाहौर के पिछले दंगे से पंजाब के हिंदुओं का जो नैतिक पतन (Demoralisation) हुआ, उसका प्रतीकार बहुत कठिनता से हो सकेगा। जब वहाँ के हिंदुओं से कोई प्रश्न करता था कि "भाई, यह क्या हो रहा है ?", तो हृष्ट-पुष्ट, वीरता का अभिमान करनेवाले, परंतु वास्तव में कायर, हिंदुओं की ओर से उत्तर मिलता था—"भला यह भी कोई वीरता है कि चलते-फिरते पर चोट की जाय, अकेले पर कई हाथ उठावें ! छिः-छिः ! हम अहिंसावादी कभी ऐसी क्रूरता कर सकते हैं ? कदापि नहीं। आमने-सामने लड़ें, तो पता चल जाय।" कैसा सुंदर समाधान है ! कितनी आत्मविडंबना है ! आत्मसंतोष का क्या ही सरल उपाय है ! काश हिंदू इस वीरता के पात्र होते, और सचमुच अपने हृदय में इन उच्च भावों के अनुभव की शक्ति रखते ! पर यह सब तो केवल झूठा आत्मसंतोष था। अहिंसा का शब्द केवल अपनी कायरता को छिपाने का पर्दा था। यदि सचमुच हिंदुओं ने वीरता और अहिंसा के भावों के कारण ही मुसलमानों पर आक्रमण न किया होता, तो सड़कें हिंदुओं से ख़ाली न दिखाई देतीं, और उनके अंदर डर न छाया हुआ होता। हम हिंदुओं की अवस्था का थोड़ा-सा विश्लेषण करें, तो पता चल जायगा कि यदि हिंदू मुक़ाबले में चोट नहीं कर सकते, तो उसका कारण उनकी वीरता और अहिंसा नहीं, बल्कि उनकी कायरता ही है। प्रश्न यह है कि क्या हिंदुओं के अंदर अपने पर चोट करनेवाले मुसलमानों के लिये द्वेष और घृणा का भाव, उनसे बदला लेने की प्रतिहिंसा न थी ? थी, अवश्य थी। फिर अहिंसा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और प्रेम का नाम लेना तो दंभ ही है। बदला लेने में किसी पर चोट करने के लिये जहाँ क्रूरता चाहिए, वहाँ उसके साथ-साथ—गहराई के साथ मनोवैज्ञानिक विश्लेषण करने पर पता लगेगा कि—वीरता का भी एक अंश दरकार है; क्योंकि यद्यपि वीरता का वास्तविक स्वरूप दूसरे पर आक्रमण करना नहीं, बल्कि अपने को संकट में डालना और धैर्य के साथ कष्ट सहन करना है, तथापि दूसरे पर आक्रमण करने में भी मनुष्य अपने को संकट में डालता है, इस दृष्टि से उसमें भी वीरता का एक अंश विद्यमान है। पक्षांतर में मन में द्वेषभाव होते हुए भी आक्रमण करने की असमर्थता अहिंसा नहीं हो सकती, बल्कि वह कायरता ही है। यह असमर्थता तमोगुण से उत्पन्न होती है; पर भूल से इसी को सतोगुण समझ लिया जाता है। तामसिक अवस्था को सात्विक समझ लेना और कायरता को अहिंसा मान लेना एक ऐसा अंधविश्वास है, जो हिंदुओं में सर्वत्र व्यापक हो रहा है। इस प्रकार हम अहिंसा की ओट में अपनी कायरता और तमोगुण को बढ़ाते हुए मृत्यु के निकट जा रहे हैं। वह दिन धन्य होगा, जब हिंदू-जाति वास्तविक अहिंसा की दीक्षा लेगी—जब हिंदू अपने शत्रु के प्रति भी हृदय से प्रेम कर सकेंगे, और प्रहार करते हुए भी शत्रु से बदला लेने की इच्छा न करेंगे। परंतु प्रतिहिंसा के भाव होते हुए भी क्रियाक्षम न होना ऐसी अक्षम्य कायरता है, जो एक अधम पशु में ही पाई जा सकती है। हमारा पाप या अपराध यह है कि हम इस कायरता को अहिंसा मान रहे हैं। हमें अच्छी तरह समझ लेना चाहिए कि अहिंसा या वीरता—अर्थात् मन से भी किसी का अनिष्ट न सोचना, शत्रु के प्रति भी प्रेम रखना—एक सात्विक गुण है, जो कि राजस गुण—प्रतिहिंसा और प्रतिहिंसा की क्रियाक्षमता—से उच्चतर है; किंतु प्रतिहिंसा की अक्षमता या अयोग्यता केवल कायरता और निकृष्ट तमोगुण है। यदि कोई समाज या व्यक्ति अहिंसा का सात्विक आदर्श ग्रहण न कर सके, तो उसे तामसिक कायरता तक तो पतित न होना चाहिए।

इस संबंध में—अर्थात् कायरता को अहिंसा समझने में—सबसे अधिक दुरुपयोग तो महात्मा गांधी के नाम का हो रहा है। बहुधा यह समझ लिया गया है कि किसी को किसी भी दशा में तनिक-सी चोट पहुँचाने के भी महात्मा गांधी विरुद्ध हैं, और उनकी अहिंसा का यही आदर्श है कि मनुष्य खड़ा-खड़ा दूसरों से पिटा करे। बहुधा बाइबिल के इस वाक्य को उद्धृत करके कि "यदि कोई एक गाल में थप्पड़ मारे, तो दूसरा गाल भी सामने कर दो", उसका उपहास किया जाता है। परंतु लोग भूल जाते हैं कि "तनिक भी चोट न पहुँचाने" अथवा "दूसरा गाल सामने कर देने" का आदर्श कब और किसके लिये है? जिसके हृदय में तनिक भी द्वेष न हो, जो बलवान् होकर भी अपने निर्बल शत्रु पर, प्रेम के कारण आघात न करना चाहे, उसी के लिये यह आदर्श है। परंतु निर्बल, अशक्त, क्रियाशून्य व्यक्ति के लिये इन आदर्शों का बहाना करना जघन्य कायरता के सिवा और क्या हो सकता है? महात्मा गांधी ने कितनी ही बार इस विषय में अपने तात्पर्य को स्पष्ट कर दिया है। वह किसी दशा में भी कायरता के पोषक नहीं। कायरता-पूर्वक शत्रु के आगे से भाग जाना और सामने खड़े होकर उस पर आक्रमण करना, इन दोनों में से पिछली बात ही श्रेष्ठ है, ऐसी घोषणा महात्मा गांधी एक बार नहीं, अनेकबार कर चुके हैं। वह कई बार अपने लेखों में लिख चुके हैं कि यदि कोई अत्याचारी अनर्थ कर रहा हो, और उसे हम अपनी प्रेम-शक्ति से द्रवित न कर सकें, तो उसके आगे से भाग जाने की अपेक्षा उस पर आघात करके भी उस अत्याचार को रोकना श्रेष्ठ है। परंतु बहुधा एक ऐसी जाति में, जो अहिंसा के उच्च आदर्श को नहीं पा सकती और न समझ ही सकती है, अहिंसा को आदर्श कायरता की ओर ले जानेवाले हो जाते हैं। यह दुर्भाग्य आज हिंदू-जाति को प्राप्त है, और इस अनर्थ के शिकार आज हम लोग बन रहे हैं।

इतना तो ऊपर हमने देख लिया कि हिंदुओं की वर्तमान कायरता किसी प्रकार अहिंसा-वृत्ति नहीं समझी जा सकती। महात्मा गांधी-जैसे रक्त-पात के विरोधी महापुरुष इस जघन्य कायरता की अपेक्षा हिंसा को आंशिक-रूप से अधिक उत्तम स्वीकार करते हैं। परंतु हमें कुछ आगे बढ़कर अहिंसा के मूल-स्वरूप पर विचार करना चाहिए। क्या अहिंसा के आदर्श का रक्त-पात से ऐसा ही घोर विरोध है, जैसा कि समझा जाता है, और रक्त का एक बिंदु गिरते ही, या किसी को थोड़ी-सी चोट पहुँचाते ही, अहिंसा का वह आदर्श सर्वथा नष्ट हो जाता है? यदि हम कुछ गहरा दार्शनिक विचार करेंगे, तो पता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चल जायगा कि महात्मा गांधी जिस अहिंसा के आदर्श को उपस्थित करते हैं, वह बौद्ध और जैन भावों पर निर्भर है। हिंदू-धर्म और भगवद्गीता का अहिंसा-सिद्धांत उससे कुछ भिन्न है। जैन-बौद्ध-सिद्धांतों में अहिंसा के बाह्य रूप पर अधिक ज़ोर दिया गया है; परंतु भगवान् कृष्ण ने अहिंसा के आंतरिक और आध्यात्मिक आदर्श को बतलाया है। हिंदू-धर्म का अहिंसा-सिद्धांत न केवल अधिक गंभीर और अधिक दार्शनिक है, बल्कि अधिक क्रियात्मक भी है। अहिंसा का हिंदू-आदर्श ऐसा नहीं है, जो रक्त का एक बूँद गिरते ही समाप्त हो जाय। बल्कि सैकड़ों-हज़ारों नर-बलिदानों के होते हुए भी, रक्त की नदी बहने पर भी, वह आदर्श अक्षुण्ण बना रह सकता है। अहिंसा का रूप मनुष्य के बाह्य कार्य में—उसकी शरीर-चेष्टा में नहीं, बल्कि उसके हृदय में विद्यमान घृणा-द्वेष-रहित प्रेम की वृत्ति में है। हिंदू-सिद्धांत के अनुसार एक योगी, परमयोगी, जीवन्मुक्त संन्यासी, जो कि अहिंसा की परा काष्ठा को पहुँचा हुआ है, अपने हाथ में खड्ग लेकर एक नहीं, अनेक मनुष्यों के गले काट सकता है, और फिर भी यह संभव है कि वह परमहंस योगी—सर्वोच्च अहिंसक—बना रहे। प्रारंभ में यह बात हमें एक असंगत प्रलाप के समान प्रतीत होगी; परंतु गीता का आलोचनात्मक अध्ययन हमें बतलावेगा कि यह बात कितनी संगत और यथार्थ है। सोचने की बात है कि गीता में कृष्ण की अर्जुन के प्रति बारबार यह प्रेरणा कि "हे अर्जुन, योगी बन और रक्त की नदी बहा दे" क्या अर्थ रखती है। अध्यात्म योग का, ज्ञान-ध्यान का, युद्ध से क्या संबंध है?

गीता कृष्ण भगवान् का अर्जुन के प्रति उपदेश है, जो युद्धक्षेत्र में दिया गया था। इसलिये अहिंसा का हिंदू-सिद्धांत समझने के लिये गीता मार्गदर्शक है। गीता का उपदेश किस परिस्थिति में दिया गया, यह बात देखने योग्य है। कुरुक्षेत्र के संग्राम में अर्जुन अपने सामने ठीक महात्मा गांधी का आदर्श रखता है, और कृष्ण भगवान् उसे उस सिद्धांत से हटाते हैं। अर्जुन अपने बंधुओं को सामने देखकर अहिंसा और करुणा से द्रवित होकर पुकार उठता है—

यदि मामप्रतीकारमशस्त्रं शस्त्रपाणयः;
धार्त्तराष्ट्रा रणे हन्युस्तन्मे क्षेमतरं भवेत्।
(गी० अ० १। ४६)

अर्थात् यदि मैं हथियार छोड़कर धृतराष्ट्र के पुत्रों का मुक़ाबला न करूँ, और वे हथियार लेकर मुझे मार डालें, तो इसमें मेरा बड़ा कल्याण है—यही मेरे लिये बड़ा अच्छा है! शक्तिशाली अर्जुन, जिसके गांडीव की टंकार से बड़े-बड़े महारथियों के हृदय दहल जाते हैं, केवल इस-लिये कि हिंसा न हो, हथियार छोड़कर शत्रु के आगे अपनी गर्दन कर देना चाहता है। यह स्पष्ट है कि अर्जुन शत्रुओं को देखकर डरा नहीं, घबराया नहीं। उसे अपनी शक्ति में अविश्वास हो, यह भी नहीं। कायरता ने उसे स्पर्श भी नहीं किया। पर केवल हिंसा से बचने के लिये वह शत्रु के सामने आत्मसमर्पण करने को तैयार है! इस अर्जुन से बढ़कर महात्मा गांधी के अहिंसा-सिद्धांत को माननेवाला कौन होगा? वह उस सिद्धांत को मानता हो, यही नहीं, बल्कि उसका क्रियात्मक रूप से पालन करने के लिये विजय, राज्य, सुख, कुछ भी नहीं चाहता—

"न काङ्क्षे विजयं कृष्ण न च राज्यं सुखानि च।"
(गी० अ० १। ३२)

इतना ही नहीं, बल्कि ठीक महात्मा गांधी के ही शब्दों में कहता है—

"एतान्न हन्तुमिच्छामि घ्नतोऽपि मधुसूदन!"
(गी० अ० १। ३५)

अर्थात् ये मुझे मारने को तैयार हैं; तो भी हे मधुसूदन, मैं इन्हें नहीं मारना चाहता।

फिर कहता है—

"पापमेवाश्रयेदस्मान् हत्वैतानाततायिनः।"
(गी० अ० १। ३६)

अर्थात् यद्यपि ये आततायी हैं; पर इन्हें भी मारकर हमें पाप ही लगेगा।

ऐसी दशा में यदि भगवान् कृष्ण का भी अहिंसा-सिद्धांत महात्मा गांधी के समान होता, तो वह शायद अर्जुन को छाती से लगाकर कहते—"अर्जुन, तू धन्य है। तूने अहिंसा के आदर्श को ठीक समझ लिया।" परंतु कृष्ण अर्जुन से ठीक इसके विपरीत कहते हैं—

कुतस्त्वा कश्मलमिदं विषमे समुपस्थितम्;
अनार्यजुष्टमस्वर्ग्यमकीर्तिकरमर्जुन।
(गी० अ० २। २)

अर्थात् हे अर्जुन, ऐसे विकट अवसर पर तेरे अंदर यह मोह (अज्ञान) कहाँ से आया, जो कि 'अनार्यजुष्ट' है,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अर्थात् जिसे अनार्य लोग ग्रहण करते हैं, जो स्वर्ग से हटानेवाला और अपयश फैलानेवाला है। यहाँ 'अनार्यजुष्ट' शब्द बहुत ही महत्त्व-पूर्ण है। अर्जुन का आदर्श अनार्यों का—बौद्धों और जैनियों का—मार्ग है। वह आर्यों का—हिंदू-जाति का—आदर्श कदापि नहीं। हिंदू-जाति ऐसे झूठे अहिंसा के आदर्श को नहीं मानती।

इस थोड़ी-सी भूमिका से इतना स्पष्ट हो जाता है कि अर्जुन ठीक महात्मा गांधी के आदर्श को सामने रखता है, और कृष्ण भगवान् उस अहिंसा के आदर्श को 'अनार्य-जुष्ट' बतलाकर अर्जुन को उससे हटाते हैं। फिर इसके बाद गीता में अहिंसा के इस मिथ्या आदर्श का निराकरण बड़े सुंदर ढंग से किया गया है। प्रारंभ में ही बतलाया गया है—

"गतासूनगतासूंश्च नानुशोचन्ति पंडिताः।"

(गी० अ० २। ११)

अर्थात् मरे और जीवित, दोनों के लिये, बुद्धिमान् व्यक्ति शोक नहीं करते। मतलब यह कि एक विद्वान् की दृष्टि में प्राणों का बना रहना या न रहना, इन दोनों में कोई बड़ा अंतर नहीं। इसलिये वह मृत्यु पर रोता नहीं; क्योंकि वह जानता है—

देहिनोऽस्मिन्यथा देहे कौमारं यौवनं जरा;
तथा देहान्तरप्राप्तिर्धीरस्तत्र न मुह्यति।

(गी० अ० २। १३)

"जैसे प्राणी के वर्तमान शरीर में कौमार, यौवन और वृद्ध अवस्था आती-जाती हैं, उसी प्रकार मरकर दूसरे शरीर को प्राप्त करना भी है। बुद्धिमान् को इस अवस्था-परिवर्तन के विषय में शोक नहीं होता।"

इतना ही नहीं, प्रत्युत आगे चलकर बतलाया है—

"य एनं वेत्ति हन्तारं यश्चैनं मन्यते हतम्;
उभौ तौ न विजानीतो नायं हन्ति न हन्यते।"

(गी० अ० २। १९)

अर्थात् जो इस पुरुष को (आत्मा को) मारनेवाला समझता है या मरा हुआ मानता है, वह दोनों तत्त्व नहीं जानता; क्योंकि यह आत्मा न मारता है, न मरता है। गीता के अंतिम भाग में इसी भाव को और भी स्पष्ट करके कहा है—

"यस्य नाहङ्कृतो भावो बुद्धिर्यस्य न लिप्यते;
हत्वाऽपि स इमाँल्लोकान् न हन्ति न निबध्यते।"

(गी० अ० १८। १७)

अर्थात् जिसे अपने कार्य में अहंकार का भाव नहीं, जो यह नहीं सोचता कि मैं कर्ता हूँ, और जिसकी बुद्धि निर्लिप्त है—उस कर्म के राग से अलग है—वह लोगों को यदि मार डाले, तो भी (ऐसा समझना चाहिए कि) उसने किसी को नहीं मारा, और न उसे उस काम का कोई दंड मिलता है।

गीता के ये शब्द अद्भुत हैं, आश्चर्यजनक हैं, और एक नई क्रांति उत्पन्न करनेवाले हैं! निष्काम भाव से कर्तव्य के वश योगी के लिये भी ऐसा अवसर आ सकता है कि वह एक मनुष्य की नहीं, प्रत्युत अनेकों की हिंसा कर डाले; परंतु फिर भी उस पर हिंसा का कुछ भी असर न होगा, मानो उसने मारा ही न हो। वह योगी, अहिंसा का मिथ्या आदर्श रखनेवालों की तरह, यह सोचकर नहीं घबराता कि रक्त की कुछ बूँदें गिरेंगी, और न वह यह सोचकर ही रोता है कि एक या अधिक मनुष्यों का प्राणांत हो जायगा। वह तो कृष्ण भगवान् की तरह मुसकिराता हुआ * सोचता है कि इस जीवन का छूट जाना, अर्थात् मनुष्य का मर जाना, कपड़े बदलने के समान है। उसकी दृष्टि में आवश्यकता पड़ने पर मनुष्य को प्राणों से वियुक्त कर देना कोई ऐसी बात नहीं, जिसके लिये रोना चाहिए। गीता बार-बार बतलाती है कि आत्मा नहीं मरता, केवल शरीर नष्ट होता है, और उस शरीर के विषय में गीता कहती है—

"अव्यक्तादीनि भूतानि व्यक्तमध्यानि भारत;
अव्यक्तनिधनान्येव तत्र का परिदेवना।"

अर्थात् सब भूत (प्राणी) पहले अव्यक्त (अप्रकट) रहते हैं; बीच में (थोड़ी देर के लिये) प्रकट होकर फिर अव्यक्त हो जाते हैं। फिर उनके विषय में रोना क्या? इसलिये शरीर का बना रहना या नष्ट हो जाना, इन दोनों में ज्ञानी की दृष्टि बहुत भेद नहीं रखती। उसके लिये दोनों ही जीवन की विशेष अवस्थाएँ हैं। जिसके आगे यह उच्च आत्मज्ञान की फ़िलासफ़ी है, उसे मृत्यु से क्या भय?

---

* जब अर्जुन ने हथियार छोड़ दिए, और कृष्ण से कहा कि मैं युद्ध नहीं करूँगा, तो गीता बतलाती है कि कृष्ण ने मुसकिराते हुए, अर्जुन को उपदेश दिया—

"तमुवाच हृषीकेशः प्रहसन्निव भारत।"

(गी० अ० २। १०)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गीता इस प्रकार मृत्यु के भय को दूर करनेवाली परम औषध और संग्राम-भूमि का कवच है। जो जातियाँ इस गहरी फ़िलासफ़ी को समझ लेती हैं, वे आवश्यकता पड़ने पर मुसकिराती हुई अपने जीवन को दे सकती हैं, और दूसरों का जीवन ले भी सकती हैं। आश्चर्य तो यह है कि हिंदू-जाति, जो गीता-जैसी पुस्तक को अपना आदर्श धर्म-ग्रंथ समझती हो, इस पार्थिव जीवन के विषय में इतनी कृपणता करे, अर्थात् इस भौतिक जीवन को ही सब कुछ समझ बैठे! खेद है, आज हिंदू कायरता-पूर्वक लोक-हँसाई करके भी अपने प्राणों की रक्षा करना चाहते हैं। हमें स्मरण रखना चाहिए कि संसार में वे ही जातियाँ सचमुच जीवित रहकर अपने सम्मान को क़ायम रख सकती हैं, जो अवसर आने पर अपने प्राण देना और दूसरों के प्राण लेना भी जानती हैं। सचमुच यह बड़ा भारी आश्चर्य है कि हम गीता का अभ्यास करनेवाले—याद रहे, गीता में प्राण-परित्याग को वस्त्र-परिवर्तन के समान बतलाया गया है—इस नश्वर पार्थिव जीवन के विषय में इतने कृपण हैं! लाहौर के दंगे के दिनों में मेरे एक मित्र मुझसे कहने लगे—"यह समझ में नहीं आता कि हिंदू-जैसी कायर, जीवनलोलुप जाति में गीता की फ़िलासफ़ी कैसे उत्पन्न हुई होगी? उस समय की हिंदू-जाति वर्तमान हिंदू-जाति से सर्वथा भिन्न होगी, जिसमें कृष्ण भगवान् का जन्म हुआ था। हिंदू-जाति को सदियों की लगातार ग़ुलामी का सबसे बड़ा प्रसाद यही मिला है कि वह इतनी जीवन-लोलुप हो गई है। प्रत्येक स्वतंत्र और आत्मसम्मान रखने-वाली जाति में पहला गुण यह होता है कि वह अवसर आने पर तत्काल प्राणों की आहुति दे सकती है। परंतु एक ग़ुलाम जाति अपना सर्वस्व और मान-मर्यादा खोकर भी प्राणों का मोह नहीं छोड़ती।" हृदय तब सचमुच लज्जा से विदीर्ण होने लगा, जब यह दृश्य सामने आया कि इस हमारी जाति में आज ऐसे पुरुष थे, जो अपनी बहनों और स्त्रियों पर अत्याचार की संभावना होने पर भी प्राण लेकर भाग निकले। यह क्यों? इसलिये कि हमने इस वर्तमान भौतिक जीवन को ही सब कुछ समझ रक्खा है। मुसलमानों और ईसाइयों में यही जीवन की लोलुपता क्षम्य हो सकती है; क्योंकि उनके धर्म के अनुसार यही एक जीवन हमें मिला है। इसके पहले और पीछे न हमारा कोई जीवन था, और न कोई जीवन होगा; परंतु हिंदू-धर्म के अनुसार, जिसमें पुनर्जन्म माना गया है, यह वर्तमान जीवन चीज़ ही क्या है? यह तो जीवन की निरंतरवाही अनंत धारा में एक बुद्बुद के समान है। इसके लिये क्या मोह! क्या रोना!!

परंतु जीवन-लोलुपता के पक्षपाती कहते हैं कि जीवन पवित्र वस्तु है; जीवन अनंत आध्यात्मिक संभावनाओं (Spiritual potentialities) का आधार है। उसका नाश करना जघन्यतम पाप है। एक प्रसिद्ध उदाहरण है, जो अहिंसा की व्याख्या में बहुधा आता है। यदि एक अत्याचारी किसी बहन पर बलात्कार करना चाहता हो, और हम उसके प्राण लेकर ही उस बलात्कार को रोक सकते हों, तो क्या उसके प्राण लेकर भी उस बलात्कार को न रोकना चाहिए? अहिंसावादी इसके उत्तर में कहते हैं कि हमें अपने को बीच में खड़ा करके उस अत्याचार को रोकना चाहिए, उस चेष्टा में अपने प्राणों को भी दे देना चाहिए; परंतु उस अत्याचारी का वध करना फिर भी पाप ही है। कारण, पतित के जीवन में भी उच्च-से-उच्च आध्या-त्मिक विकास की संभावना हो सकती है, और ऐसे पवित्र जीवन का नाश पाप ही है। मनुष्य-जीवन का महत्त्व, उस-की पवित्रता और उच्चता की महिमा बहुधा उच्च पुस्तकों और धर्म-ग्रंथों में भी आई है, और कदाचित् इसीलिये जीवन का नाश करनेवाले के लिये क़ानून सबसे बड़े दंड का विधान करता है। एक अंश में यह सब कुछ ठीक है। जहाँ तक हमारा जीवन आध्यात्मिक विकास का साधन है, इसकी पवित्रता और अनंत मूल्य यथार्थ है। किंतु यदि मनुष्य-जीवन आत्मिक या धार्मिक विकास की प्रगति में बाधक हो जाय, तो फिर उसके लिये इतनी कृपणता क्यों होनी चाहिए? भगवान् की प्रकृति के भांडार में जीवन की ऐसी कंजूसी नहीं है कि इस जीवन के सिवा दूसरा जीवन मिल ही न सकता हो। तत्काल हमें दूसरा जीवन मिल जाता है। इसीलिये तो गीता ने कहा है—"गतासूनगतासूंश्च नानुशोचन्ति पंडितः" (२।११)। यदि उसे अपने कर्मों के अनुसार दूसरी पशु-योनि भी मिल जाय, तो वह भी तो पाप-वृत्तियों को रोककर आत्मिक उन्नति में साधक ही होगी। ऐसी दशा में यदि बलात्कार करनेवाला अत्याचारी अपनी पाप-प्रवृत्ति को पूरा कर लेता है, तो मनुष्य-जाति के धार्मिक विकास में उसका जीवन अधिकतर बाधक बनता है, और ऐसे आततायी को मार डालना ही श्रेयस्कर है—सब प्रकार उचित है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कदाचित् यह शंका उपस्थित की जायगी कि उपर्युक्त सिद्धांत की दृष्टि से आत्मघात का भी समर्थन किया जा सकता है। परंतु वास्तव में आत्मघात की बात ही दूसरी है। मनुष्य का जीवन भगवान् की देन (भेंट) है, जो मनुष्य को इसलिये मिला है कि वह आत्मविकास करे। यदि मनुष्य की प्रवृत्ति पाप की ओर होने लगे, तो भी उसका यही कर्तव्य है कि जीवन को ठीक मार्ग पर लावे, न कि उसका अंत ही कर डाले। उदाहरणार्थ एक मनुष्य को कुछ द्रव्यराशि इसलिये सौंपी गई है कि वह उससे कोई सार्वजनिक कार्य करे ; पर वह मनुष्य देखता है कि उसकी प्रवृत्ति उस धन के द्वारा किसी स्वार्थ-पूर्ण पाप-कार्य की ओर जा रही है, इसलिये वह उस द्रव्य को नदी में फेंक देता है। क्या ऐसा मनुष्य अपराधी न होगा ? अवश्य होगा। इसलिये एक मनुष्य को अकारण आत्मघात करने का तो अधिकार नहीं; परंतु किसी धार्मिक सिद्धांत के लिये यदि वह अपने प्राणों की आहुति देता है, तो उसे आत्मघात नहीं, प्रत्युत आत्मबलिदान या आत्मसमर्पण कहा जाता है, जो संसार में सर्वोच्च पुण्य है।

एक बात रही जाती है, जिसे इस लेख के अंत में स्पष्ट कर देना आवश्यक है। यदि गीता के अहिंसा के आदर्श के अनुसार किसी मनुष्य की हिंसा या वध का भी औचित्य विशेष-विशेष दशाओं में हो सकता है, तो अहिंसा का स्वरूप क्या है ? दूसरे को पीड़ा पहुँचाना और, अहिंसा, इन दोनों को परस्पर संगत किस प्रकार किया जा सकता है? इसका उत्तर यही है कि अहिंसा या हिंसा बाह्य व्यापार पर निर्भर नहीं है। अहिंसा का वास्तविक रूप तो केवल मानसिक वृत्ति में है। यदि मन में दूसरे के लिये द्वेष है, क्रोध है, घृणा है, और उस द्वेष के आवेश से अभिभूत होकर यदि हम चोट पहुँचाते हैं, तो वह हिंसा है; और यदि उस आवेश से युक्त होकर हम उसे चोट न भी पहुँचावें या न पहुँचा सकें, तो भी वह हिंसा ही है; क्योंकि हिंसा का स्थान मन में है। इसी प्रकार यदि क्रोध-द्वेष के आवेश के विना ठीक वही काम किया जाय, तो उसे कोई हिंसा नहीं कहेगा। एक ही छुरी है, उसे शत्रु बदला लेने के लिये पेट में भोक देता है, और उसी से डॉक्टर ऑपरेशन करता है। बाह्य काम दोनों अवस्थाओं में एक ही है, और परिणाम भी, संभव है, एक ही हो; क्योंकि कदाचित् डॉक्टर के ऑपरेशन से भी मृत्यु हो जाय। परंतु उन दोनों कार्यों में कितना भेद है। क्या डॉक्टर के कार्य को कोई भी हिंसा कहेगा ? एक उच्च योगी आत्मिक संन्यासी भी ठीक उसी डॉक्टर के समान है। वह देखता है कि एक मनुष्य का जीवन उसके अपने लिये भी हानिकारक हो रहा है, और समाज को भी बिगाड़नेवाला है। वह उसे विना द्वेष और घृणा के, विना क्रोध के आवेश के, परलोक पहुँचा देता है। यह हिंसा नहीं है, यह गीता की अहिंसा का आदर्श है। ऐसे ही संन्यासी के लिये गीता कहती है कि "वह लोगों को यदि मार भी डाले, तो उसने किसी को नहीं मारा।" (अ० १८, श्लोक १७) ; क्योंकि वह निर्लेप है। यह उच्च आदर्श रखकर ही गीता में कृष्ण भगवान् ने अर्जुन से कहा है—

"मयि सर्वाणि कर्माणि संन्यस्याध्यात्मचेतसा ;
निराशीर्निर्ममो भूत्वा युध्यस्व विगतज्वरः।"
(गी० अ० ३ । ३०)

अर्थात् आध्यात्मिक दृष्टि के द्वारा मुझमें सब कर्मों को अर्पण करके, फल की आशा और ममता छोड़कर, तू 'ज्वर-रहित' (आवेश-रहित) होकर युद्ध कर। "ज्वर-रहित अर्थात् आवेश-रहित होकर युद्ध कर," ये शब्द अत्यंत महत्त्व-पूर्ण हैं। आवेश-रहित युद्ध ! यह भावना गीता के सिवा संसार में कहाँ मिलेगी ? यह तो सब कर्मों में निष्काम-भाव-रूप संन्यास और कर्तव्य की प्रेरणा से युद्ध की दीक्षा है। इसलिये गीता में कृष्ण भगवान् अर्जुन से बार-बार कहते हैं कि "संन्यासी बन", "योगी बन", और "युद्ध कर"। यह ठीक है कि इस प्रकार का उच्च आदर्श सर्वसाधारण में व्यावहारिक रूप से असंभव है। आवेश-रहित, विगतज्वर मनुष्य की हिंसा, जो कि अहिंसा के उच्च आदर्श के प्रतिकूल नहीं है, साधारण जीवन में सम्मत नहीं। परंतु हमारा प्रयोजन यह दिखलाना है कि रक्त की दो बूँदें गिरा देना या किसी का वध कर देना कोई ऐसी बात नहीं, जिसका गीता के अहिंसा-आदर्श से समन्वय न हो सकता हो।

स्वाभाविक रीति से बहुतों को यह शंका होगी कि इस प्रकार की हिंसा, जो कि विना क्रोध के आवेश के हो, क़ानून के शब्दों में "ठंडे दिल से किया गया ख़ून अर्थात् Cold-blood murder" समझा जायगा, जिसे बहुत ही जघन्य पाप समझा जाता है। इसके उत्तर में हमें अँगरेज़ी की यह कहावत याद आती है—'Two extremes

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

meet'', अर्थात् दो सर्वथा परस्पर विरुद्ध बातें एक बिंदु पर बहुधा मिल जाती हैं। एक मनुष्य को किसी ने चोट पहुँचाई या गाली दी; वह क्रोध से अंधा होकर अपने प्रतिपक्षी को तत्काल मार डालता है। क़ानून की दृष्टि में वह मनुष्य उतना अपराधी नहीं, जितना कि वह मनुष्य, जो उस घटना के कुछ समय पश्चात् सोच-समझकर और ठंडे दिल से, एक षड्यंत्र बनाकर, किसी आदमी को मार डालता है। मारते समय वह क्रोध से अंधा नहीं हो रहा है—उत्तेजना के आवेश में नहीं है। इसी को क़ानून ठंडे दिल से की हुई हत्या (Cold-blood murder) कहता है। वह मनुष्य भी तात्कालिक आवेश—रजोगुण के प्रभाव—के बिना वध करता है; परंतु उसके हृदय में द्वेष, बदला, प्रतिहिंसा, सब कुछ है। उसका काम रजोगुण की गरमी के बिना, निकृष्ट तमोगुण के द्वारा हुआ है, इसलिये वह आवेश-युक्त रजोगुण के कार्य से भी घृणित है। और, निर्लेप, 'विगत-ज्वर', संन्यासी का काम भी रजोगुण के आवेश से हीन है; किंतु वहाँ अंदर छिपे हुए द्वेष, क्रोध और प्रतिहिंसा के भाव नहीं हैं। उसका काम रजोगुण-रहित शुद्ध सात्त्विक है। इसलिये जहाँ आततायी का काम सर्वथा तामसिक है, वहाँ संन्यासी का काम सर्वथा सात्त्विक है, और रजोगुण का आवेश किंचिन्मात्र न होने से वे दोनों एक-से प्रतीत होते हैं।

और भी अनेक शंकाएँ हो सकती हैं, जिनका समाधान किया जा सकता है। परंतु हम लेख को अधिक न बढ़ाकर आशा करते हैं कि उपर्युक्त विवेचन से पाठकों को इतना स्पष्ट हो गया होगा कि गीता के अहिंसा-आदर्श में और जैन-बौद्ध-अहिंसा-सिद्धांत में कितना अंतर है। दुर्भाग्य से मध्य काल में हिंदू-जाति जैन-बौद्धों के इसी आदर्श पर चलने लगी, और अब इसी आदर्श को महात्मा गांधी ने देश के सामने रक्खा है! इसमें संदेह नहीं कि मूलतः महात्मा गांधी का विश्व-प्रेममय अहिंसा का सिद्धांत गीता से भिन्न नहीं है, और वही आदर्श हिंदू-धर्म का सार और सर्वस्व है। किंतु गीता की शिक्षा से उसमें बड़ा अंतर यही है कि जहाँ गीता में आंतरिक, आध्यात्मिक अहिंसा का तत्त्व बतलाया गया है, वहाँ वर्तमान आदर्श में बाह्य चेष्टा को—बाह्य दृष्टि से रक्त के दो बूँद गिराने को—ही हिंसा मान लिया गया है। अर्जुन को भी ऐसा ही मोह हुआ था; पर कृष्ण भगवान् ने उसे तत्काल सावधान कर दिया कि यह मार्ग 'अनार्यजुष्ट' है। इस मिथ्या अहिंसा के आदर्श के प्रचलित होने का परिणाम बड़ा घातक हुआ है! हिंदू-जाति रक्त की बूँदों से डरनेवाली, कायर, बुज़दिल और घृणित रूप से जीवन-लोलुप बन गई! एक कोढ़ी पड़ा-पड़ा सड़ रहा है; पर फिर भी निकम्मे प्राणों का मोह रखता है! शोक है, हम अपमान, तिरस्कार और घृणित अत्याचारों को सहकर भी जीवन का मोह नहीं छोड़ सकते! हमारी जीवन-लालसा कितनी लज्जास्पद है! जिस समाज में व्यक्ति इतने जीवन-लोलुप, प्राणों का मोह रखनेवाले हों, वह कभी जीवित नहीं रह सकता! अहिंसा के सिद्धांत को उलटा समझते-समझते हमने यहाँ तक बिगाड़ा कि हम उस अक्षम्य कायरता को, जिसे जैन, बौद्ध या महात्मा गांधी, किसी के भी सिद्धांत के अनुसार कायरता के सिवा कुछ नहीं कहा जा सकता, अहिंसा समझने का पाप कर रहे हैं! अहिंसा-शब्द का इससे बढ़कर घातक और घृणित दुरुपयोग क्या हो सकता है! फल यह है कि आज हिंदू-जाति अत्यंत दीन, हीन, डरपोक हो रही है; उसका हृदय दुर्बल है, उसमें नपुंसकता छाई हुई है! कब हिंदू-जाति गीता की इस घोषणा को सुनेगी—

"हे अर्जुन नपुंसक मत बन! यह तुझे शोभा नहीं देता। हे परंतप (शत्रु को संताप पहुँचानेवाले), अपने हृदय की इस नीच दुर्बलता को छोड़कर खड़ा हो जा!"*

क्या आर्य-जाति हृदय की दुर्बलता दूर करेगी? क्या हिंदू-जाति खड़ी हो जायगी?

धर्मेंद्रनाथ

सुधा

केवल मृत-संजीवनी सुधा स्वर्ग की सिद्ध;
जीवन्मृत-संजीवनी साहित-सुधा प्रसिद्ध।
स्वर्ग-सुधा कवि-कल्पना, है केवल अनुमान;
सत्य सुधा साहित्य, नर अमर होत करि पान।

रूपनारायण पांडेय

---

* "क्लैब्यं मा स्म गमः पार्थ नैतत्त्वय्युपपद्यते;
क्षुद्रं हृदयदौर्बल्यं त्यक्त्वोत्तिष्ठ परन्तप।"
(गी० २।३)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सिनेमा के वस्त्राभूषण

पुरुष, जो सिनेमा देखने के शौक़ीन हैं, बहुधा फ़िल्मों में पात्र-पात्रियों को आँखें चकाचौंध कर डालने वाले वस्त्राभूषण पहने देख चकित हो जाते हैं। वे इतना तो अवश्य समझ जाते हैं कि उन वस्त्रों के तैयार कराने में बहुत-सा धन व्यय हुआ होगा, पर उसका वास्तविक अंदाज़ लगाना उनकी समझ के बाहर ही रहता है। यदि उन वस्त्राभूषणों के तैयार कराने में व्यय हुए धन की ठीक रक़म मालूम हो जाय, तो इसमें संदेह नहीं कि हमें आश्चर्य-सागर में गहरे ग़ोते खाने पड़ें।

सिनेमा के लिये जो वस्त्राभूषण तैयार कराए जाते हैं, उनका व्यय सामान्य नहीं। सिनेमा की एक फ़िल्म के तैयार होने में ही लाखों रुपए लग जाते हैं। जितना धन एक फ़िल्म के तैयार होने में लगता है, उसमें सबसे अधिक ख़र्च इन वस्त्राभूषणों का ही है।

सिनेमा के प्रत्येक पात्र को जो 'वेतन', 'ठेके का रुपया', 'रॉयलटी' या 'बख़शीस' दी जाती है, वह भारतवर्ष के किसी कमिशनर के सालाना वेतन से भी कहीं अधिक होती है। पर जहाँ उन्हें अधिक वेतन मिलता है, वहाँ ख़र्च भी असाधारण करना पड़ता है। इस ख़र्च का अधिकांश उनके कपड़ों में ही लग जाता है। सिनेमा की प्रथमावस्था में फ़िल्म-कंपनियाँ ऐक्टर या ऐक्ट्रेसों को फ़िल्म में पहनने के लिये अपने पास से वस्त्राभूषण नहीं देती थीं। पात्रों को उपयुक्त वस्त्रादि स्वयं तैयार कराने पड़ते थे। किंतु इन दिनों प्रायः फ़िल्म-कंपनियाँ ही फ़िल्म में पहनने के लिये वस्त्राभूषण देती हैं।

यहाँ पर यह भ्रम उत्पन्न होगा कि जब फ़िल्म-कंपनियाँ ऐक्टरों या ऐक्ट्रेसों को स्वयं उपयुक्त वस्त्राभूषण दे देती हैं, तो उनका धन वस्त्रादि के तैयार कराने में इतना अधिक कैसे व्यय होता है? इसका उत्तर यही है कि प्रत्येक फ़िल्म-ऐक्टर या ऐक्ट्रेस अपने साधारण जीवन में भी उसी ठाट-बाट से रहती है, जैसा कि फ़िल्मों में देखा जाता है। ऐसा किए विना उससे स्वयं ही न रहा जायगा। अपनी 'शान-शौक़त' बनाए रखने की ग़रज़ से ही उसे ऐसा करना पड़ता है। बहुधा फ़िल्म-कंपनी के नियमों में एक नियम यह भी रहता है। इसी नियम के अनुसार उसे फ़िल्म लेते समय या अपने साधारण जीवन में भी उसी शान-शौक़त से रहने को बाध्य होना पड़ता है।

ग्लोरिया-स्वानसन नाम की ऐक्ट्रेस, जिसका चित्र आगे दिया गया है, जिस समय फ़िल्म-कंपनी में भर्ती हुई, उस समय उसे कंट्रैक्ट-फ़ार्म पर हस्ताक्षर करने पड़े। उस कंट्रैक्ट के नियमों में एक नियम यह भी था कि उसे हमेशा—फ़िल्म में या साधारण जीवन में—अच्छे क़ीमती, सोफ़ियाने और बढ़िया फ़ैशनों के वस्त्र पहनने पड़ेंगे।

सिनेमा की ऐक्ट्रेसों में ग्लोरिया प्रथम श्रेणी की ऐक्ट्रेस है। रूप-लावण्य तथा शरीर की बनावट में वह जितनी चुस्त-दुरुस्त है, उसकी भाव-भंगी भी उतनी ही स्वाभाविक और आकर्षित करनेवाली है। जिस समय वह नए फ़ैशन की नई तथा बेशक़ीमती पोशाक पहनकर ऐक्टिंग करने निकलती है उस समय दर्शकों की भीड़ लग जाती है। आगे दिए हुए चित्र में उसके नए ढंग के वस्त्राभूषण देखने ही योग्य हैं।

सिनेमा में जो ऐक्टर काम करते हैं, उनका ख़र्च और भी बढ़ा-चढ़ा है। फ़िल्म-कंपनी उन्हें पोशाकें नहीं देती; ऐक्टरों को फ़िल्म के उपयुक्त पोशाकें अपने आप तैयार करनी पड़ती हैं। अतएव प्रत्येक ऐक्टर को हर समय और आवश्यकता के अनुसार पहनने के लिये उपयुक्त पोशाकें बनवाकर रखनी पड़ती हैं। एक-एक प्रकार के दर्जनों कपड़े बनवाने पड़ते हैं। इसमें उन्हें एक सुबीता यह है कि वे एक कपड़े को दो या तीन फ़िल्मों में, आवश्यकतानुसार, पहन सकते हैं। पर ऐक्ट्रेसों को तो एक फ़िल्म की ड्रेस दूसरी फ़िल्म में पहनने का मौक़ा ही नहीं आता। उसके लिये तो दूसरे ही रंग-ढंग की पोशाक होगी।

ग्लोरिया, जिसके दो चित्र आगे दिए जा रहे हैं, सबसे सुंदर, क़ीमती और नए-नए फ़ैशन के कपड़े पहनने के लिये मशहूर है। उसके शौक़ और नए-नए फ़ैशन के बढ़िया कपड़े पहनने के प्रेम का पता केवल इसी बात से लगता है कि केवल एक ही फ़िल्म के लिये लगभग दस हज़ार पौंड कपड़ों में ही उठ जाते हैं। एक दूसरी फ़िल्म में, विवाह के दृश्य में, वधू के वेष में, उसने जो कपड़े पहने थे, उनमें उन्नीस हज़ार पौंड लगे थे। केवल मोज़े-दस्तानों का ही सालाना व्यय दो हज़ार पौंड है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तो पाँव ही तोड़ दूँगी। यह ब्राह्मण का घर है, चमार का नहीं।"

बिसाखी की आँखें सजल हो आईं। उसने बेबसी की अवस्था में पंडितजी की ओर देखा, और तब सिर झुकाकर बोला—"पंडितजी, आपकी कृपा मुझ पर पहले से कम नहीं। आप माताजी को नाराज़ न करें। इनको नाराज़ करके मेरा भला न होगा।"

यह कहते-कहते बिसाखी की आँखों से आँसू बहने लगे, जैसे पहाड़ी नाले में एकाएक बाढ़ आ जाय। उधर विद्या-बनी रो रही थी कि कैसे तोता-चश्म हैं। पराए बेटे का ख़याल करते हैं, मेरी परवा नहीं करते! क्या मैं ऐसी तुच्छ हो गई हूँ कि बिसाखी के सामने मुझे इस तरह डाँटें? स्त्री आख़िर स्त्री है, इतना भी नहीं सोचते।

मगर पंडितजी को इन दोनों की परवा न थी। आसपास नदियाँ फुंकार मारती थीं, मध्य में पहाड़ खड़ा था, और इस ढंग से कि उस पर पानी के इस आक्रमण का किंचिन्मात्र भी असर न होता था। थोड़ी देर बाद उन्होंने आग उगल रही-सी आँखों से विद्या की तरफ़ देखा; परंतु नम्र शब्दों में कहा—"विद्या, मुझे तंग न करो! यह बिसाखी का प्रश्न नहीं, मेरे सिद्धांत का प्रश्न है। मैं सच कहता हूँ, इससे मेरा दिल टूट जायगा।"

यह कहते-कहते उनकी आँखों में भी आँसू आ गए। क्रोध पानी होकर बहने लगा, जैसे लोहा आग में पड़कर पहले गरम होता है, फिर पिघल जाता है। उस समय उसमें कैसी जलन होती है, कैसी तरलता! वही दशा इन आँसुओं की थी। यह पानी न था, पिघली हुई आग थी। यह मीठे जल का सोता न था, लावे की नदी थी। इसके सामने ठहरने की शक्ति किसमें है? कम-से-कम स्त्री के प्रेम में तो नहीं। विद्या ने पति की बातों को सोचा, और तब सामने से हट गई। प्रभुदत्त बिसाखी को लिए हुए रसोई-घर में चले गए, और बैठकर खाने लगे। नौकर पकाता था, पंडितजी और बिसाखी खाते थे, और विद्या आहें भरती थी, जैसे साँप विष उगलता है।

इतने में ब्राह्मणी रोटी लेने आई। मगर बिसाखी को रसोई में बैठे देखकर चौंक पड़ी, और इस तरह कतराकर निकल गई, जैसे वहाँ आदमी नहीं, प्लेग के चूहे थे। विद्या ने पंडितजी की आँखों से अपनी आँखें मिलाईं, मानो कहा—अभी तो पहला ही दिन है, आगे-आगे देखना।

परंतु पंडितजी ने ब्राह्मणी के इस खुल्लमखुल्ला अपमान पर ज़रा भी ध्यान न दिया, और उठकर कचहरी चले गए। बिसाखी कुछ देर वहीं बैठा रहा। इसके बाद सिर झुकाए हुए धीरे-धीरे स्कूल चला गया। मगर विद्या उसी तरह चुपचाप बैठी रही, जैसे वह सजीव स्त्री न थी, मिट्टी की मूर्ति थी। आज वह कितनी उदास थी, कैसी परेशान! आज उसकी आन मर गई थी, आज उसकी मर्यादा टूट गई थी, आज उसके पति ने उसकी परवा न की थी।

दोपहर होते-होते यह घटना सारे मुहल्ले की ज़बान पर थी। स्त्रियों को बात मिल गई। कहती थीं—घोर कलजुग आ गया, ऐसा कभी न होता था; ज़रा ख़याल करो, मेघ ब्राह्मण की रसोई में जा बैठा, और ब्राह्मण उसे खिलाता रहा! एक और स्त्री ने कहा—अब दुनिया उलट जायगी, पृथ्वी से पाप का यह भार न उठाया जायगा। एक बुड्ढी स्त्री ने माला फेरते-फेरते कहा—सासतर में यह बखान है कि जब ऐसे-ऐसे पाप होंगे, तो निसकलंक उतार आवेगा। सो अब उसके आने में देर नहीं, सब लोग बरन-संकर होते जाते हैं।

ये बातें विद्या ने सुनीं, तो उसके दिल में तीर-सा चुभ गया। मगर उसे पति पर ग़ुस्सा न था, ग़ुस्सा बिसाखी पर था। ग़ुस्सा भी पानी के समान नीचे की तरफ़ बहता है। विद्या दिल में सोचती थी, यह कंबख़्त कहाँ से आ मरा! अब मुहल्ले में उठना-बैठना भी कठिन हो गया। यदि उसका बस चलता, तो बिसाखी की गर्दन मरोड़ देती। पहले स्त्री-पुरुष, दोनों कितने प्रेम से रहते थे। प्यार-मुहब्बत की वह चितवन आज वियोग के युग में कहीं दिखाई न देती थी, जिस तरह वसंत-ऋतु के मनोहर दृश्य पतझड़ के दिनों में नज़र नहीं आते। दोनों एक ही मकान में रहते थे, एक ही छत-तले सोते थे; मगर ठीक उसी तरह, जैसे दो परदेशी धर्मशाला में आकर ठहरे हों। आँखें वही थीं, लेकिन निगाहें वे न थीं। पुराना समय कितना दूर, कितना परे चला गया था!

(४)

एक महीना बीत गया। मुहल्ले के लोग पंडितजी से इस तरह मिलते थे, जैसे वह हिंदू न थे, मुसलमान थे। कोई उनके घर की चीज़ न लेता था, न उनसे हँसकर मिलता था। वह मुहल्ले के अंदर रहते हुए भी मुहल्ले से बाहर रहते थे। और स्त्रियाँ तो विद्या की छाया से भी भागती

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

थीं। पंडितजी दिन-भर घर के बाहर रहते थे। उनको इस व्यवहार की चिंता न थी। मगर विद्या की जान पर आ बनी। वह पंडितजी की अनुपस्थिति में प्रायः रोती रहती, और भगवान् से प्रार्थना किया करती कि यह संकट कटे। लेकिन भगवान् सुनते न थे।

रात का समय था, आसमान पर तारों का चमन खिला हुआ था। पंडितजी ने भोजन किया, और खाट पर लेट गए। विद्या आज बहुत उदास थी। पंडितजी को उसकी दशा पर दया आ गई। प्यार से बोले—"विद्या, आज तुम्हारा मन उदास है क्या?"

विद्या की आँखों में आँसू आ गए। यह तो वही आवाज़ है, वही शब्द, वही प्यार। उसे बिसरे हुए दिन याद आ गए, बीता समय आँखों-तले फिर गया। उसकी प्यार की सूखी हुई बेल इस तरह हरी हो गई, जिस तरह वर्षा के छींटों से फूल की कुम्हलाई हुई टहनी हरी हो जाती है। उसने अपने को सँभालकर उत्तर दिया—"नहीं।"

उत्तर साधारण था; परंतु इससे पंडित प्रभुदत्त का हृदय हिल गया। हमारा सोया हुआ प्यार प्रायः मामूली बात से जाग उठता है। पंडितजी लेटे थे, यह सुनकर उठ बैठे, और विद्या की ओर प्यार-भरी दृष्टि से देखकर बोले—"विद्या, क्या यह लड़ाई कभी समाप्त न होगी? आओ, अब हम, तुम सुलह कर लें। लड़ाई और लाल मिर्च, दोनों में स्वाद है; मगर उसी समय तक, जब तक इनकी मात्रा अधिक न हो। तुम स्त्री हो; स्त्रियाँ लाल मिर्च बहुत खाती हैं। परंतु मेरा तो मुँह जलने लगा। परमात्मा के लिये आज कोई मीठी चीज़ खिलाओ, तो मन शांत हो।"

प्यार की ये रँगीली और रसीली बातें सुनकर विद्यावती के हृदय-सागर में तरंगें उठने लगीं। परंतु वह नारी थी, और नारी-हृदय आसानी से विवश नहीं होता। उसने पति की ओर देखा, और होंठ चबाकर बोली—"मैं तो तुमसे कभी नहीं लड़ी। और, स्त्री लड़ ही क्या सकती है? पति बुला ले, तो रानी; न बुलावे, तो दासी। मालिक-नौकर की लड़ाई कैसी?"

प्रभु०—"बस, यही बातें तो लड़ाई की हैं। साफ़ मालूम होता है कि तुम ख़फ़ा हो। नहीं तो ऐसा रूखा-सूखा उत्तर कभी न देतीं! कितना अंधेर है! पति-परमेश्वर सुलह की बिनती करे, और स्त्री मुँह फुलाए खड़ी रहे! मगर क्यों न हो, कलियुग का ज़माना है।"

विद्या ने पति-परमेश्वर का शब्द सुना, तो हँस पड़ी। यह हँसी न थी, सुलह की दरख़्वास्त की मंज़ूरी थी। प्रभुदत्त अपने को रोक न सके। उन्होंने उठकर विद्यावती को गले से लगा लिया, और चारपाई पर अपने पास बिठाकर बोले—"प्रिये, तुम अपना मन साफ़ कर लो। आख़िर कब तक रूठी रहोगी? जो होना था, वह तो हो चुका। फिर अब घर की ख़ुशी ख़राब करने से क्या बनेगा?"

विद्या ने अपना सिर पति के कंधे पर रख दिया, और सिसकियाँ भरकर बोली—"तुम समझोगे, झूठ बोलती है। पर सची बात तो यह है कि मुझे दुनिया नहीं जीने देती। स्त्रियाँ ताने मारती हैं, तो कलेजा चलनी हो जाता है। कहती हैं, ये दोनों साहब-मेम बन गए हैं। तुम कचहरी चले जाते हो, मैं बैठी अपने भाग को रोया करती हूँ। कोई हाथ का छुआ पानी भी तो नहीं पीता।"

प्रभुदत्त—"बड़ी अच्छी बात है। हम किसी के यहाँ माँगने नहीं जाते। कोई बोले, बुला लो; न बोले, न बुलाओ। हमें किसी से कोई प्रयोजन नहीं। तुम हैरान क्यों होती हो? मैं तो ऐसी बातें हँसी में उड़ा देता हूँ।"

विद्या—"जी चाहता है, कुएँ में कूद पड़ूँ! तुम्हें शायद मालूम न होगा, रसोइएँ ने जवाब दे दिया है। कहता है, मेरी बिरादरी हुक्का-पानी बंद कर देगी, तो मैं क्या करूँगा। ग़रीब आदमी हूँ, मुफ़्त में मारा जाऊँगा।"

प्रभु०—"अरे! ज़रा उसे बुलाओ तो। मैंने उसके साथ जो सलूक किया है, वह मामूली नहीं। देखूँ, मेरे सामने आँखें कैसे उठाता है।"

विद्या०—"बुलाकर क्या करोगे? वह कभी न रहेगा। मैं बहुत समझा चुकी।"

प्रभु०—"तो जाने दो; और नौकर आ जायगा। शहर में नौकरों का अभाव नहीं।"

विद्या०—"पानी भरनेवाला भी कल से नहीं आवेगा। मुहल्ले के लोगों ने डरा दिया है। ग़रीब आदमी है, क्या करे। कहते हैं, पंडितजी का पानी भरो, या हमारा।"

प्रभु०—"तो मालूम होता है, हमें भूखों-प्यासों मारने पर तुल गए हैं!"

विद्या०—"मेरा तो लहू सूखा जाता है। भगवान् जाने, अब क्या होगा?"

प्रभु०—"नालिश न कर दूँ। आटे-दाल का भाव मालूम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हो जायगा। ये भी क्या कहेंगे कि किसी वकील को तंग किया था।"

विद्या०—(सिर हिलाकर) "इससे विरोध बढ़ेगा, कम न होगा।"

प्रभु०—"चलकर समझाऊँ, शायद समझ जायँ।"

विद्या०—"समझेंगे तो क्या! पर हाँ, खिल्ली ज़रूर उड़ावेंगे।"

प्रभु०—"तो फिर क्या करूँ। विद्या, मुझे कोई रास्ता नज़र नहीं आता।"

विद्या०—"रास्ता तो है, पर उसकी बात मुँह पर लाने का साहस नहीं होता। गया हुआ क्रोध फिर लौट आवेगा।"

यह कहते-कहते विद्या रोने लगी। प्रभुदत्त क्रोध की अग्नि देख सकते थे; परंतु प्रेम का पानी न देख सके। उनका दिल रुँध गया। ठंडी साँस भरकर बोले—"बहुत बुरे फँसे!"

(५)

एकाएक बाहर से बिसाखी ने पुकारकर कहा—"पंडितजी!"

पंडितजी तिलमलाकर खड़े हो गए। यह आवाज़ न थी, विष में बुझी हुई कटार थी। सोचने लगे, यह काँटे इसी के बोए हुए हैं। कैसी चैन से कटती थी। आज वे दिन स्वप्न हो गए। कड़ककर बोले—"क्या है बिसाखी?"

बिसाखी धीरे-धीरे अंदर आया, और हाथ जोड़कर बोला—"पंडितजी, मेरे कारण आपको बहुत दुःख हुआ। पर अब तो नहीं सहा जाता। आज्ञा दीजिए, साँदले चला जाऊँ। यहाँ सारा शहर ही आपके विरुद्ध हो गया है।"

पंडितजी ने बिसाखी को इस तरह देखा, जैसे खा ही जायँगे। क्रोध से बोले—"अगर जाना ही था, तो आए क्यों थे?"

बिसाखी ने कोई उत्तर न दिया, और गर्दन झुका ली।

प्रभु०—"मैं लोगों की धाँधलियों से नहीं डरता। समझते होंगे, डरा लेंगे। पर यहाँ भी ब्राह्मण का तेज है। एक बार आँखें खोल दूँगा।"

बिसाखी ने आँसुओं से भरी हुई आँखें ऊपर उठाईं, और कहा—"सारे मुहल्ले का मुक़ाबला करना बड़ा मुशकिल है।"

प्रभु०—(घूरकर) "देखो जी! तुम्हें मेरा कहना मानना होगा।"

बिसाखी—"मैं आपका ग़ुलाम हूँ। आपकी आज्ञा हो तो देह का मांस उतार दूँ। मगर....."

प्रभु०—"बिसाखी! तुम मेरा दिल चीर देखो। लो क्या कहेंगे?"

बिसाखी—मैं आप जाता हूँ। आप नहीं निकालते।"

प्रभु०—"अगर तुम्हारी यही इच्छा है कि मेरे पास रहो, तो मैं क्या कर सकता हूँ।"

बिसाखी—"मेरी इच्छा तो यह है कि सदा आपके चरणों से लिपटा रहूँ। आपके प्यार ने मेरा मन मोह लिया है। मुझे जो सुख यहाँ प्राप्त है, वह अपने घर में भी न था। मगर..."

बिसाखी ने अपने कथन को अधूरा ही छोड़ दिया, और पंडितजी के चरणों में गिर पड़ा। पंडितजी किंकर्तव्यविमूढ़ हो गए। उन्हें कुछ सूझता न था, न ज़बान से कोई शब्द निकलता था। वह जो चाहते थे, वह मुँह से कह न सकते थे। एक दिन पहले भी बिसाखी और विद्या, दोनों रोते थे। उस समय पंडितजी का मन ज़रा भी विचलित न हुआ था। मगर आज उनके दिल पर दोनों का असर हो गया। वह दृढ़ता, वह साहस कहीं नज़र न आता था। पंडितजी ने बिसाखी को ज़मीन से उठाया, और कहा—"तो तुम घबराते क्यों हो? कल देखा जायगा।"

मगर दूसरे दिन बिसाखी का पता न था। पंडितजी समझ गए, वह साँदेले चला गया। सोचने लगे, कितना बुद्धिमान् है, कैसा सज्जन! उसे मेरी चिंता है, अपनी नहीं। अपने भविष्य का ख़याल भी उसे नहीं रोक सका। कोई दूसरा होता, तो चुपचाप पड़ा रहता, और मुझे जलाया करता।

संध्या-समय पंडितजी कचहरी से लौटे, तो उनका दिल बहुत उदास था। परंतु विद्या का खिला हुआ चेहरा देखकर उनका मुँह भी चमकने लगा, जैसे जलता हुआ दीपक बुझे हुए दिए को जला देता है। मुसकिराकर बोले—"रसोइया तो नहीं गया?"

विद्या—"नहीं।"

प्रभु०—"पानी भरनेवाला आया था?"

विद्या—"हाँ। मुहल्लेवालों ने फ़ैसला कर दिया कि जब वह चला गया है, तो अब झगड़े की ज़रूरत नहीं।"

प्रभु०—"और तुम्हारी सखी-सहेलियों का क्या हाल है?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विद्या—"आज तो सभी हँस-हँसकर मिलती थीं। कल थीं घृणा नाम को नहीं। कहती हैं, सुबह का भूला शाम को घर आ जाय, तो उसे भूला नहीं कहते।"

पंडितजी के दिल पर तीर-सा लगा, मगर यह बात उन्होंने विद्या पर प्रकट न होने दी। फोड़े के अंदर पीब थी, परंतु घाव ऊपर से पुर चुका था। घाव की यह स्वास्थ्य-सूचक दशा कितनी हानिकारक है, कैसी भयानक! यों साधारण आदमी शायद धोका खा जाय, परंतु वैद्य की दृष्टि में यह स्वास्थ्य नहीं, मृत्यु का निमंत्रण है।

दो-तीन दिन बाद पंडितजी साँदले गए। बिसाखी वहाँ भी न था। पंडितजी के दिल पर दूसरा आघात पहुँचा। सोचने लगे, कहाँ चला गया? उसका तो कोई ठौर-ठिकाना भी नहीं। आदमी बाहर से निराश होता है, तो घर को दौड़ता है। वहाँ जाकर उसे वही सुख मिलता है, जो बालक को मा की गोद में। बिसाखी घर भी न गया। यह निराशा न थी, निराशा की परा काष्ठा थी। और, इसका मूल-कारण पंडितजी का हित-चिंतन था, वरना ग़रीब आदमी अपना घर सहज में नहीं छोड़ता। पंडितजी सिर झुकाकर शहर को लौट गए। मगर उस दिन के बाद से अछूतोद्धार के काम में तन्मय हो गए, जैसे कोई तपस्वी एक बार भूल करके अपने शरीर और आत्मा की संपूर्ण शक्तियाँ आत्म-संयम को अर्पण कर दे।

(६)

उधर बिसाखी भूखों मरता और अपने प्रारब्ध को रोता था। कभी यहाँ नौकरी करता, कभी वहाँ; परंतु कुछ ही दिनों बाद जवाब मिल जाता। तदबीर रूठी हुई तक़दीर को मनाने का प्रयत्न करती थी; मगर तक़दीर किसी हृदय-हीन महाजन के सदृश सीधे मुँह बात न करती थी। यहाँ तक कि कई-कई दिन बीत जाते, और बिसाखी को खाना भी नसीब न होता। ये दुनिया के धक्के न थे, भाग्य के धक्के थे। उसकी कौन सहायता करता? कौन उसकी बाँह पकड़ता? वह अनाथ था, ग़रीब था, और सबसे बढ़कर यह कि मेघ-बाप का बेटा था। हारकर उसने वज़ीराबाद-स्टेशन पर कुली का काम शुरू कर दिया।

दोपहर का समय था। बिसाखी एक लाला का असबाब स्यालकोट की गाड़ी में रख रहा था। सहसा एक बूढ़े-मेघ ने उसे देखा, और आश्चर्य से कहा—"अरे कौन, बिसाखी?"

बिसाखी ने चौंककर सिर उठाया, बूढ़े हाड़ीमल की ओर देखा, और तब उछलकर उसके निकट आ गया। हाड़ीमल ने उसे गले से लगा लिया, और प्यार से कहा—"बेटा बिसाखी, तू यहाँ कब से है?"

बिसाखी—"कोई छः महीने से! कहिए, गाँव में तो कुसल है न?"

हाड़ी०—"गाँव में कुसल कैसी? पंडितजी मुशकिल से बचेंगे।"

बिसाखी के मुँह का रंग उड़ गया, जैसे किसी आत्मीय की मृत्यु का समाचार सुन लिया हो। चौंककर बोला—"क्या बीमार हो गए?"

हाड़ी०—"बीमार तो नहीं हुए। साँदले से आ रहे थे, राह में साइकिल एक गाड़ी से टकरा गई। कुचल गए। डॉक्टरख़ाने में पड़े हैं।"

बिसाखी—"डॉक्टर क्या कहता है?"

हाड़ी०—"राम जाने, क्या कहता है? हम लोग दवा नहीं जानते, दुआ जानते हैं। वह भगवान् सुन लेगा, तो बच जायँगे, नहीं तो हमें ऐसा आदमी फिर न मिलेगा।"

बिसाखी—"आप उन्हें आदमी कहते हैं। वह आदमी नहीं, देवता हैं।"

हाड़ी०—"इसमें क्या शक है। तो आओ भाई, तुम भी चलो। यहाँ मजूरी क्या करोगे? तुम्हें बहुत याद करते थे।"

बिसाखी—"चलो, अब यहाँ न रहूँगा।"

तीसरे पहर दोनों आदमी अस्पताल पहुँचे। वहाँ साँदले के आधे से अधिक लोग उपस्थित थे। बिसाखी ने सेवा में दिन-रात एक कर दिया। उसे खाने-पीने की सुध न थी, न सोने का ख़याल। उसे केवल एक ही ख़याल था, वह यही कि पंडितजी बीमार हैं, और यह बीमारी भयानक है। वह दिलो-जान से सेवा करता था। और, यह सेवा, यह मुहब्बत केवल बिसाखी ही से संभव थी। गाँव के बहुत-से लोग वहीं रहते थे। पंडितजी के कई संबंधियों ने इस समय उनकी बात भी नहीं पूछी। वे उनके अपने थे! साँदलेवाले इस तरह तड़पते थे, जैसे उनका अपना आदमी बीमार हो। वे पराए थे। उनको कर्म-धर्म का ज्ञान न था। वे अछूत थे।

तीन महीने के बाद पंडितजी स्वस्थ हुए, और गाड़ी में बैठकर घर को चले। इस समय विद्या की आँखों में आनंद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

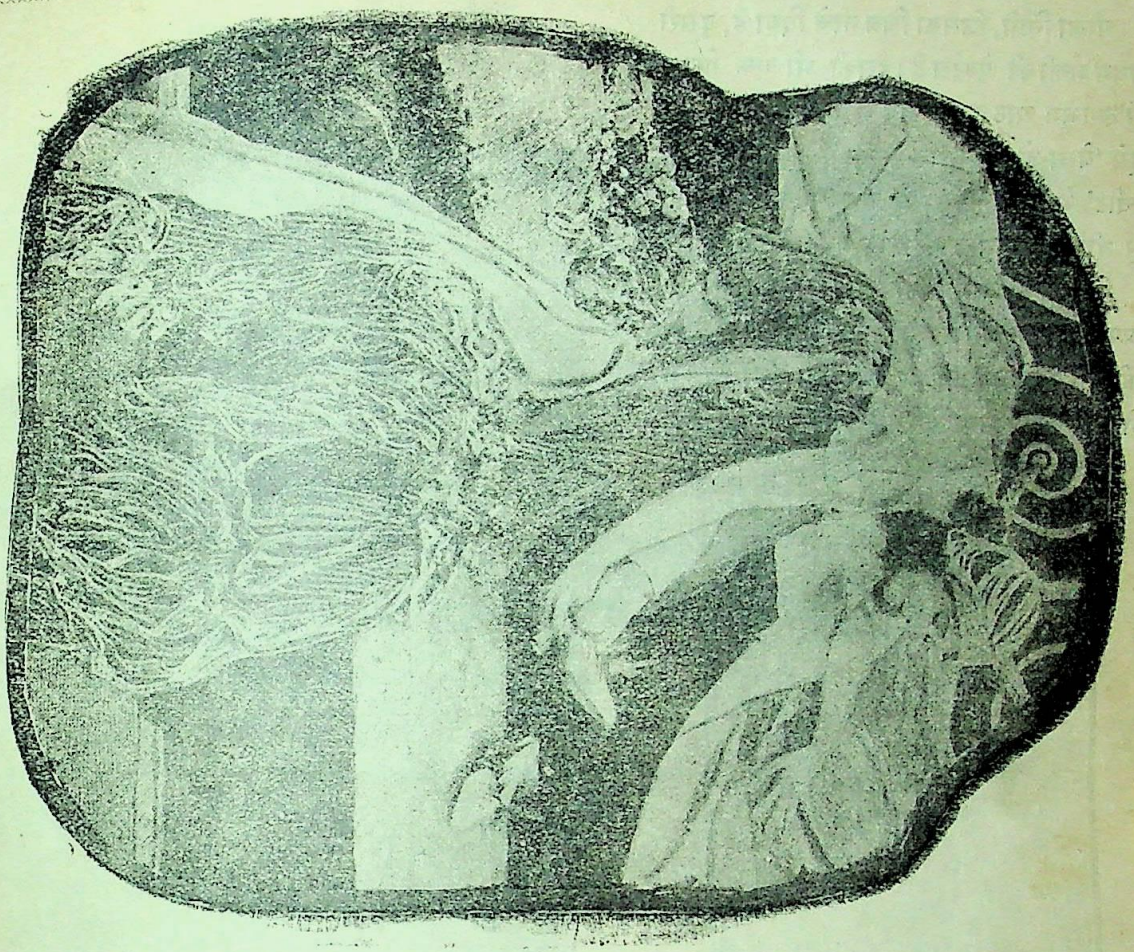

मिस ग्लोरिया-स्वानसन के वस्त्राभूषण

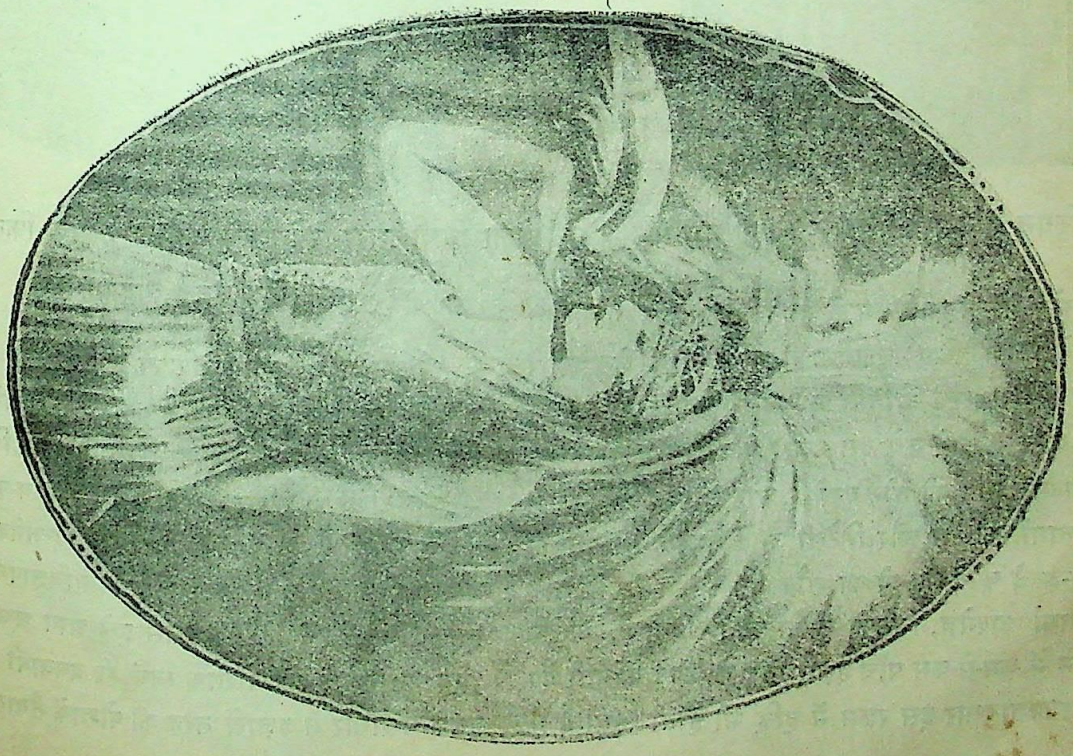

मिस ग्लोरिया-स्वानसन के नए फैशन के वस्त्राभूषण

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पोला निग्री, जिसका चित्र नीचे दिया है, दूसरी प्रथम श्रेणी की ऐक्ट्रेस है। इसकी भी एक फ़िल्म में लगभग आठ हज़ार पौंड के कपड़े लग जाते हैं। इसे 'बेला-डोना'-नामक फ़िल्म में ढाई हज़ार पौंड, 'चीट' में साढ़े बाईस सौ और 'स्पेन की नर्तकी' में तीन हज़ार पौंड के कपड़े बनवाने पड़े थे।

मेरियन डेविस का नंबर तीसरा है। इसे भी अपनी फ़िल्म या साधारण जीवन में अच्छे-अच्छे क़ीमती कपड़े पहनने का शौक़ है। नीचे चित्र में मेरियन की पोशाक देखिए—

मेरियन डेविस की ड्रेस का एक नमूना

पोला निग्री द्वारा 'स्पेन की नर्तकी'-नामक फ़िल्म में पहनी हुई पोशाक

'योलंदा'-नामक फ़िल्म में इसने जो पोशाक पहनी थी (आगे चित्र में देखिए), उसमें सच्ची सोने-चाँदी की लेस व ज़री लगी हुई थी, सच्चे मोतियों की झालरें लटकती थीं। केवल इसी ड्रेस के लिये उसे दस हज़ार पौंड ख़र्च करने पड़े थे।

टालमेज़ नाम की तीन बहनें हैं, और तीनों 'फ़िल्म-स्टार' हैं। नार्मा, कांस्टेंस और निटेली उनके नाम हैं। तीनों को अच्छे-अच्छे कपड़े पहनने का शौक़ है।

नार्मा टालमेज़, जिसका चित्र आगे दिया है, प्रत्येक फ़िल्म में कम-से-कम पाँच हज़ार पौंड के कपड़े पहनती है। आवश्यकतानुसार इस रक़म में वृद्धि भी होती रहती है।

कांस्टेंस टालमेज़ ने एक फ़िल्म में ढाई सौ वर्ष पुराने ज़माने की एक पोशाक स्वयं तैयार की थी। इसमें उसे लगभग आठ हज़ार पौंड ख़र्च करने पड़े थे। आगे चित्र देखिए।

ज़ील-टोली एक नवयौवना, रूप-लावण्य-पूर्ण ऐक्ट्रेस है। यह इतनी सुंदरी और सुंदर भाव दिखानेवाली है कि बहुधा बड़े-बड़े सौदागर व्यापारी अपने विज्ञापनों के लिये इसका चित्र खिंचवाते हैं। इससे इसे आय अच्छी है। पर आवश्यतानुसार इसे पोशाक स्वयं ही बनवानी पड़ती है। इसके वस्त्रागार में हज़ारों तरह की पोशाकें तैयार रहती हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

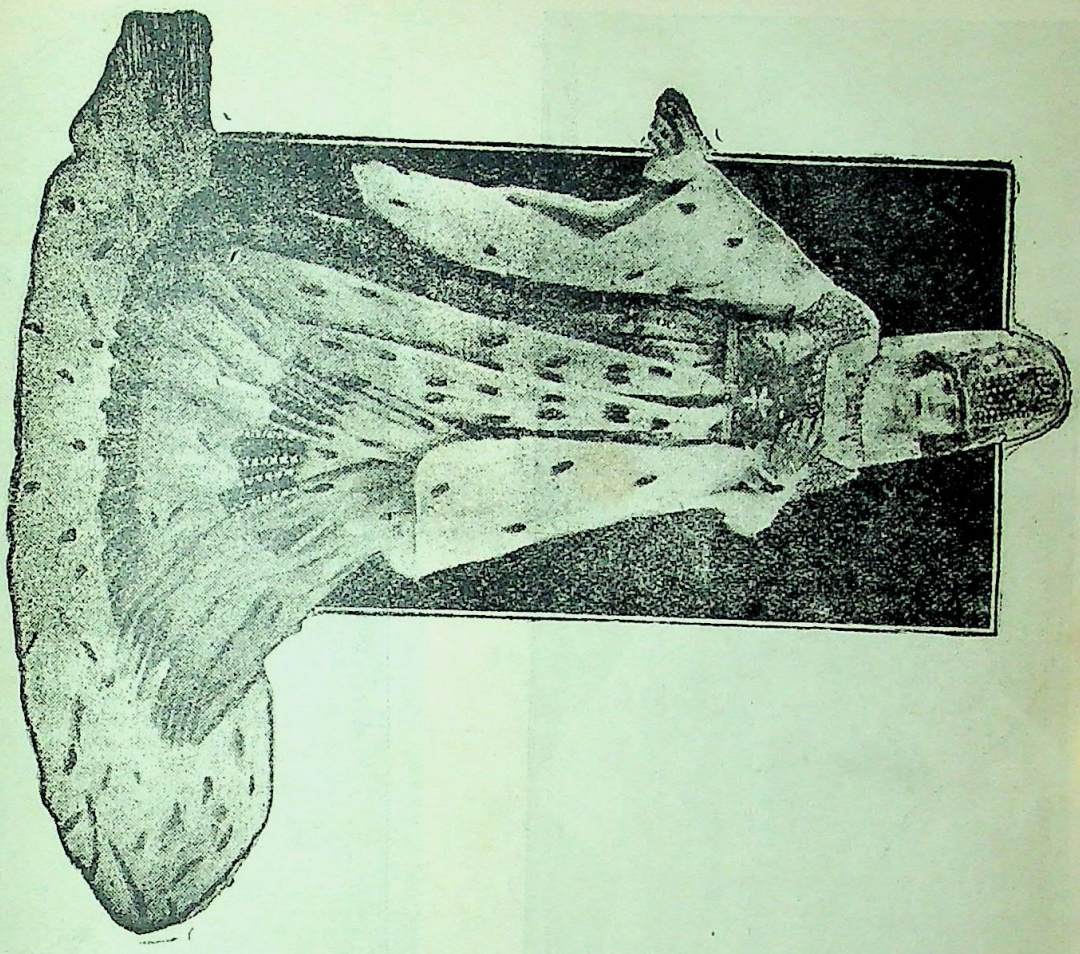

'योलंदा'-नामक फ़िल्म में मेरियन डेविस की पोशाक

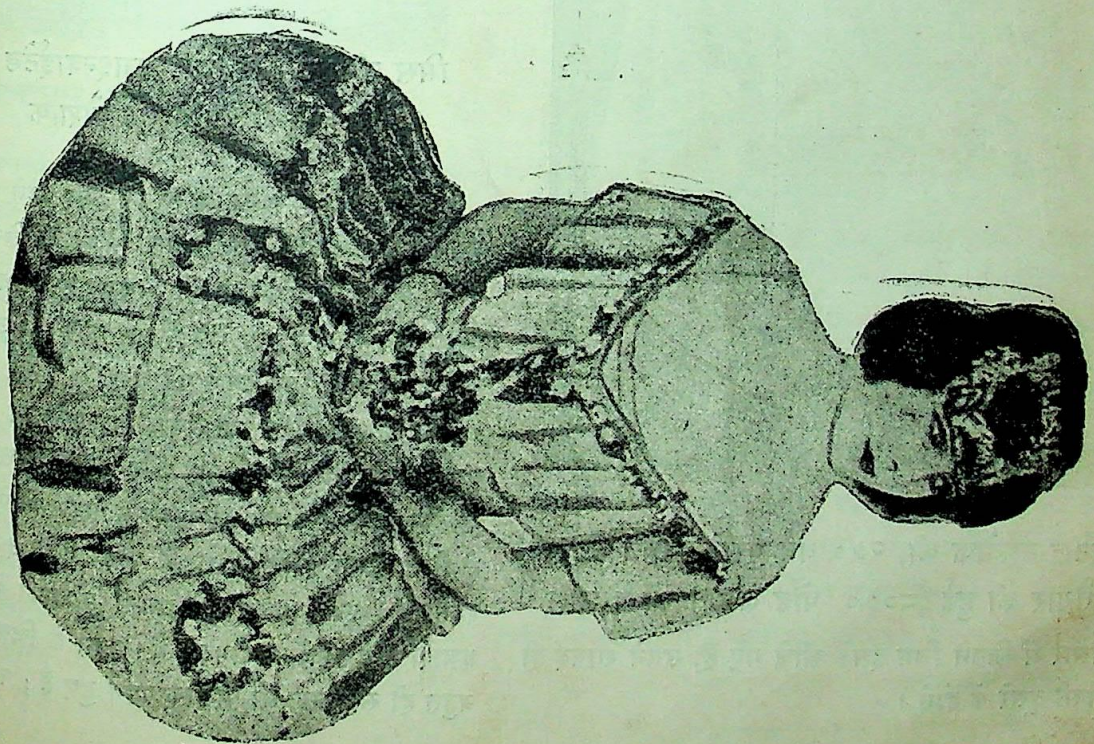

नार्मा टालमेज

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कांस्टेंस टाल्मेज की, २५० वर्ष पुराने ज़माने की, स्वयं तैयार की हुई ,८००० पौंड लागत की पोशाक

संसार में जितने चित्र इसके खींचे गए हैं, उतने शायद ही किसी दूसरे के होंगे।

मिस ज़ीन टोली द्वारा 'अनइन्वाईटेड गैस्ट' फ़िल्म में पहनी हुई पोशाक

ऊपर के चित्र में जिस ड्रेस को ज़ीन पहने हुए है, वह उसने 'अनइन्वाइटेड गैस्ट'-नामक फ़िल्म के लिये बनवाई थी। यह ड्रेस यद्यपि देखने में बहुत ही साधारण और अद्भुत फ़ैशन की है, पर इसे तैयार कराने में उसे लगभग ढाई हज़ार पौंड व्यय करने पड़े थे।

पर्ल व्हाइट तो सिनेमा-संसार की एकच्छत्र रानी है। सुंदरी, भावभंगी में निपुण और सुंदर वस्त्राभूषण की शौक़ीन होने के कारण इसे एक-एक फ़िल्म में ऐक्टिंग करने के लिये फ़िल्म-कंपनियाँ लाखों पौंड वेतन देने को तैयार रहती हैं। इसी प्रकार इसे अपनी पोशाकों के लिये भी हज़ारों पौंड ख़र्च करने पड़ते हैं। आगे के चित्र में यह एक बहुत ही साधारण-सी पोशाक पहने हुए है; पर वास्तव में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसमें लगभग साढ़े चार हज़ार पौंड व्यय हुए थे। 'टेरर'-नामक फ़िल्म में पर्ल व्हाइट ने यह पोशाक पहनी थी।

सिनेमा-संसार की रानी मिस पर्ल व्हाइट

जहाँ पोशाकों में ऐक्ट्रेसों का इतना व्यय होता है, वहाँ पुरुषों को भी अपने कपड़ों में कम नहीं ख़र्च करना पड़ता।

नार्मा टाल्मेज़ का पति जोज़ेफ़ शेंक, जो स्वयं ऐक्टर और फ़िल्म बनानेवाला है, साल में बारह हज़ार से लेकर सोलह हज़ार पौंड तक अपने कपड़े-लत्तों में ख़र्च कर देता है।

रुडाल्फ़ वालंटिनो, टामस मीगन, रिचर्ड बर्थलमस इत्यादि ऐक्टर साल में कम-से-कम दो हज़ार पौंड के कपड़े फाड़ डालते हैं।

एंटोनियो मोरेनो बढ़िया कपड़े पहनने का शौक़ीन है। इसके पास हज़ारों तरह के एक-से-एक बढ़कर कपड़े हैं। किसी-किसी कपड़े में तो दो-दो हज़ार पौंड तक लग चुके हैं।

एंटोनियो मोरेनो

लुई कॉडी भी एक शौक़ीन ऐक्टर है। अभी हाल ही में यह अमेरिका से लंदन आया था। जब यह लंदन की सैर करके अमेरिका वापस गया, तब अपने साथ तीस बड़ी-बड़ी पेटियाँ भरकर बढ़िया-बढ़िया कपड़े ले गया था। इन कपड़ों की क़ीमत लगभग बीस हज़ार पौंड थी।

लुई कॉडी

यद्यपि ऐक्टर और ऐक्ट्रेसें अपने कपड़ों में हज़ारों पौंड ख़र्च कर देती हैं, पर इनके बहुत-से कपड़े तो फ़िल्म की ऐक्टिंग में ही फट जाया करते हैं और बहुत-से ख़राब हो जाते हैं। ऐक्टिंग में ऐक्टर-ऐक्ट्रेस लड़ते-भिड़ते, दौड़ते-भागते और किसी बदमाश द्वारा सताए जाने पर भागने की चेष्टा में जंगल में घुसते हैं। लताओं में फँसने या पानी इत्यादि में कूदकर भाग निकलने में भी उनके क़ीमती कपड़े ख़राब हो जाते या फट जाते हैं। एक कपड़ा फटते या ख़राब होते ही दूसरी, उससे भी बढ़कर, पोशाक तैयार कराई जाती है। इन्हीं कई कारणों से ऐक्टर-ऐक्ट्रेसों को अपने कपड़ों में हज़ारों पौंड ख़र्च कर देने पड़ते हैं।

प्रद्युम्नकृष्ण कौल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बाजे का विरोध

[चित्रकार—श्रीयुत मोहनलाल महतो]

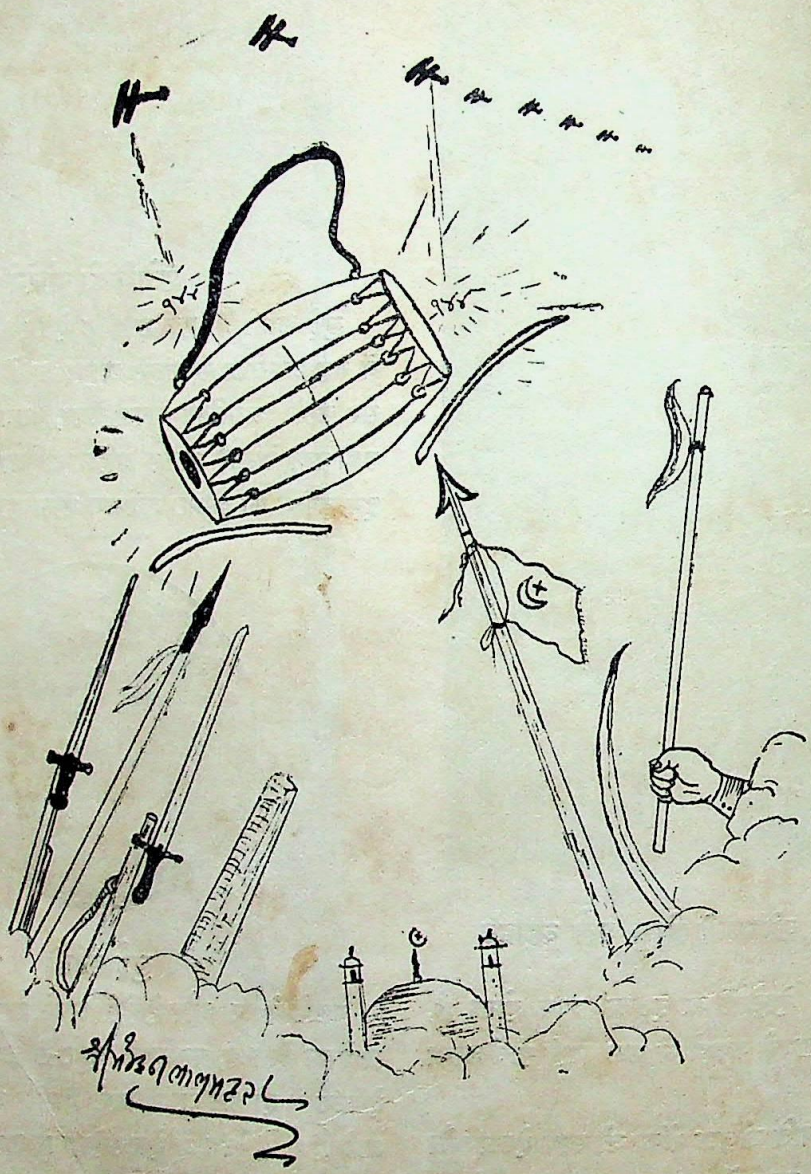

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

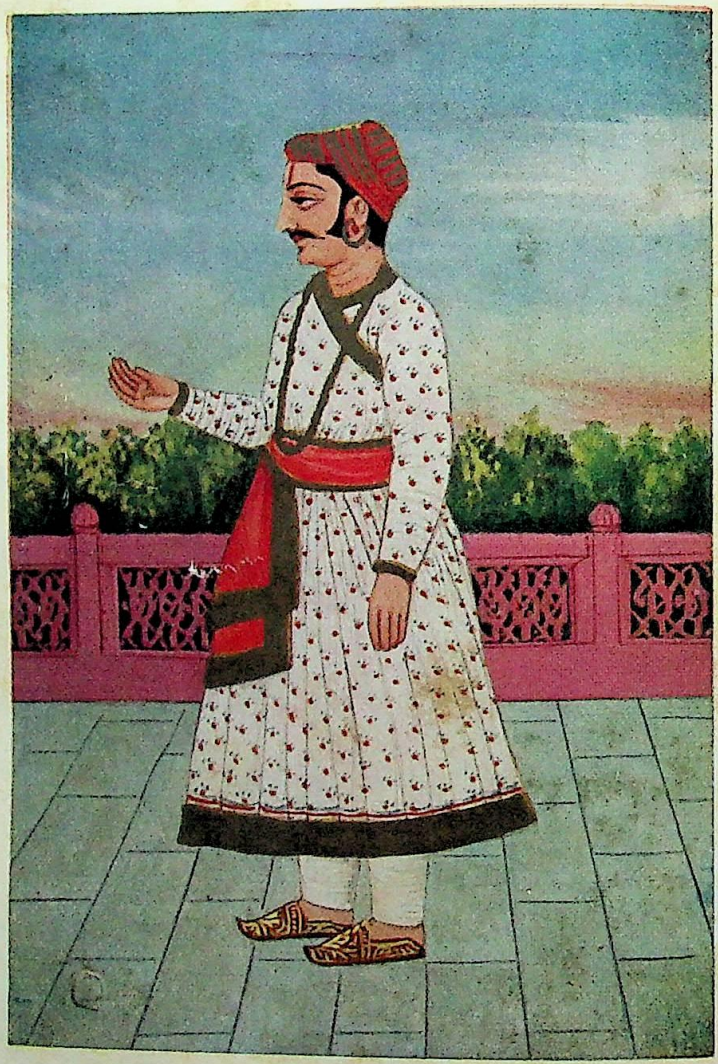

महाकवि श्रीविहारीदास

(सुप्रसिद्ध बिहारी-सतसई के रचयिता)

Ganga Fine Art Press, Lucknow.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"बिहारी-रत्नाकर" *

(आलोचना)

भिन्न श्रेणियों की टीकाओं-सहित बिहारी-सतसई के बहुत-से संस्करण भारतीय प्रेसों से प्रकाशित हुए हैं। उनमें सबसे अधिक प्रसिद्ध शायद लल्लूजीलाल की 'लालचंद्रिका' है। कहा जाता है, बिहारी ने अपने दोहे क्रम-बद्ध पुस्तक के रूप में नहीं बनाए। जब उसे धन की आवश्यकता होती थी, तो समय के अनुसार वह एक दोहा बनाकर अपने आश्रयदाता जयपुर के राजा मिर्ज़ा जयसिंह को अर्पण करता और पुरस्कार में एक अशर्फ़ी पाता था। बाद को इन दोहों को आज़मशाह (औरंगज़ेब के तृतीय पुत्र), नवाब अनवरखाँ, हरिप्रकाश इत्यादि बिहारी के प्रेमियों ने, अपने-अपने इच्छानुसार, क्रम-बद्ध किया। बिहारी की शैली संक्षिप्त है। इसका कारण यही है कि उसने, अपनी रचना के लिये, दोहा-छंद चुना है। उसके प्रत्येक दोहे में छोटा-सा, किंतु स्वयं-परिपूर्ण चित्र है। बिहारी की इसी विशेषता ने बहुतेरी टीकाओं को जन्म दिया है †। पर इनमें से किसी में भी इस बात के जानने की कोशिश नहीं की गई कि कभी दोहों का कोई मूल क्रम भी था। प्रत्येक टीकाकार ने कोई एक प्रति लेकर उस पर मनमानी टीका लिख डाली। कहने की ज़रूरत नहीं कि अभी तक आलोचना-पूर्वक दोहों का पाठ निर्द्धारित करने का कोई प्रयत्न नहीं किया गया था।

अभी, हाल में, 'सुकवि-माधुरी-माला' नाम से हिंदी के प्राचीन काव्य-ग्रंथों का प्रकाशन प्रारंभ हुआ है। इस माला के प्रकाशक का नाम इस लेख के फुटनोट में दिया गया है। माला के प्रधान संपादक श्रीदुलारेलाल भार्गव हैं, जो उत्तरीय भारत में 'सुधा'-जैसी उच्च कोटि की पत्रिका के संपादक की हैसियत से सुप्रसिद्ध हैं। इस माला में वह सावधानता के साथ, आलोचना-पूर्वक, संपादित और पूर्ण टीका-सहित हिंदी के अत्युत्तम ग्रंथ निकालना चाहते हैं। इस माला का प्रकाशन बिहारी-रत्नाकर से ही शुरू किया गया है। बाबू जगन्नाथदास (रत्नाकर) चिरकाल से व्रजभाषा के प्रामाणिक विद्वान् माने जाते हैं। तीस वर्ष हुए, लालचंद्रिका के संपादन में, उन्होंने मुझे बहुमूल्य सहायता दी थी। यह ग्रंथ उनकी अर्थ करने की पुरानी सूझ का, जो अब परिपक्व पांडित्य के कारण और भी बढ़ गई है, भली भाँति परिचय देता है।

यह ग्रंथ, जैसा कि अब पहलेपहल उनके द्वारा जाँचा जाकर संपादित हुआ है, किसी भी पूर्व क्रम का अनुसरण नहीं करता। बिहारी के समय में अथवा एक पुश्त बाद लिखी गई पाँच पुरानी प्रतियाँ इसका आधार हैं। इनमें से सबसे महत्त्व-

* बिहारी-रत्नाकर, अर्थात् बिहारी-सतसई पर रत्नाकरी टीका। प्रणेता, श्रीजगन्नाथदास (रत्नाकर) बी० ए०। पृष्ठ-संख्या ३२+२९६+४६। आकार सुधा का-सा। प्रकाशक, गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय, लखनऊ। सन् १९२६। मूल्य ५)

† शिवसिंह अपने 'सरोज' में लिखते हैं कि उन्होंने ऐसी १८ टीकाएँ पढ़ीं, पर वह उनसे संतुष्ट नहीं हुए। उन्होंने पुस्तक को 'अक्षर-कामधेनु' का उदाहरण बतलाया है। सतसई के एक-एक अक्षर से सब इच्छाओं की पूर्ति हो सकती है।—लेखक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पूर्ण, पर अभाग्यवश अपूर्ण, प्रति महाराजा जयपुर के निजी पुस्तकालय में पाई गई है। यह स्वयं बिहारी के निरीक्षण में, मिर्ज़ा जयसिंह के पुत्र रामसिंह के पढ़ने के लिये, संकलित की गई थी, और इसकी प्रामाणिकता इस पर की गई बालकों की-सी लीपापोती तथा स्वयं रामसिंह के लिखे वर्णमाला के कुछ अक्षरों से सिद्ध होती है। शेष चारों प्रतियाँ भी लगभग समकालीन हैं, और उनमें दोहे भी प्रायः एक ही क्रम से दिए हुए हैं। यह क्रम अन्यान्य सभी क्रमों से भिन्न है। इन प्राचीन प्रतियों पर निर्द्धारित होने के कारण रत्नाकरजी का दिया हुआ पाठ भी प्रायः वही है, जो ग्रंथकार का था। उनकी नई और मौलिक टीका का ढंग भी लाल-चंद्रिका आदि पुरानी टीकाओं का-सा नहीं, जिनमें प्रत्येक दोहे के अलंकार आदि पर ही विशेष ध्यान दिया गया है। रत्नाकरजी ने, इस काम को भविष्य के लिये छोड़कर, अपने को केवल प्रत्येक पद्य का अर्थ समझाने ही में संयत रक्खा है।

जिस किसी ने बिहारी के इस श्रेष्ठ ग्रंथ का पठन-पाठन किया है, वह समझ लेगा कि यह कोई सहज कार्य नहीं; क्योंकि पहले के टीकाकारों ने—प्रत्येक अलंकार पर अत्यधिक लिखते हुए भी—ठीक-ठीक अर्थ करने की कठिनाई से बचने की कोशिश की गई है। इस संबंध में रत्नाकरजी की टीका अपने पूर्ववर्ती टीकाकारों की टीकाओं से कहीं श्रेष्ठ है। उन्होंने किसी भी कठिन स्थल को नहीं छोड़ा, और उनके अर्थ, जहाँ तक मैंने देखे हैं, स्पष्ट तथा ठीक हैं। ऐसे बहुत-से दोहे थे, जिनके अर्थ के विषय में मैं कभी अपने को संतोष न दे सका था। जब उनका अर्थ मैंने इसमें देखा, तो प्रत्येक अवस्था में, पहलेपहल, स्पष्ट तथा संतोषप्रद अर्थ पाया।

भाषा की कठिनता के कारण बिहारी से प्रायः पाठकों का जी ऊब उठता है। इसी कारण उसके आलोचक इस निर्णय में प्रायः जल्दबाज़ी कर गए हैं कि वह किस कोटि का कवि था। कला अनेक प्रकार की होती है। अतः बिहारी के ललित तथा सूक्ष्म चित्रों की तुलना वाल्मीकि तथा तुलसीदास के सुविस्तृत चित्रों से नहीं की जा सकती। सर्वोपरि बिहारी में वह प्रतिभा थी, जिसके कारण वह उचित स्थान पर उपयुक्त शब्द रख सकता था। बिहारी का शब्द-भांडार विस्तृत है अवश्य, पर यह पाठकों का ही दोष है कि वे उसे समझ नहीं पाते। कारण, वह राजसभा का कवि था, और उसने अपने समय के शिक्षितों के लिये ही रचना की थी। जिस आकार के चौखटे में उसने अपने चित्र जड़े हैं, उसके लिये लेखन-शैली को बहुत ही संक्षिप्त करने की आवश्यकता थी। यह अवश्य ही दुष्कर कार्य है, पर इसके लिये वह दोषी नहीं कहा जा सकता। वह भारत-वासी था, और जिन विषयों के वर्णन में उसने अपनी अपूर्व कवित्व-शक्ति का उपयोग किया है, उनके लिये यही शैली भारतवासी, परंपरा से, पसंद करते आए हैं।

जो लोग सतसई को केवल अलंकारों के उदाहरणों की दृष्टि से पढ़ना चाहते हैं, उनके लिये, मेरी समझ में, लालचंद्रिका तथा हरिप्रकाश-टीका अब भी सर्वश्रेष्ठ हैं। किंतु उन लोगों से, जो इसकी ललित कल्पनाओं और सुंदर भावों का आनंद उठाना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चाहते हैं, अथवा जो इसे विशुद्ध हिंदी का प्रामाणिक ग्रंथ समझते हैं, आलोचना-पूर्वक संपादित तथा अत्युत्तम टीका से मंडित इस बिहारी-रत्नाकर को ही पढ़ने की मैं ज़ोरदार सिफ़ारिश करता हूँ। माला को इस शुभ पुस्तक से आरंभ करने के लिये प्रकाशक तथा प्रधान संपादक बधाई के पात्र हैं। आशा है, और ग्रंथ भी, जो इस माला में गूँथे जायँगे, विद्वत्ता में इसी दर्जे के होंगे।

अब मैं ग्रंथ के मुख-पृष्ठ पर रत्नाकरजी द्वारा दिए गए इस सुप्रसिद्ध दोहे को देकर अपना लेख समाप्त करता हूँ—

सतसैया के दोहरे, ज्यौं नावक के तीर;
देखत में छोटे लगैं, घाव करैं गंभीर।

ज्यॉर्ज ए० ग्रियर्सन

डाकू

रचे जाते थे बहु षड्यंत्र,
रह सकूँ जिसमें मैं न स्वतंत्र।
किंतु दीवारों में ही बंद
नहीं था मेरा घर निष्पंद।
खोह, गिरि, गुहा, विजन वन, खेत
बने थे मेरे विविध निकेत।
कभी इस ओर, कभी उस ओर,
हुआ था मैं चल-लक्ष्य कठोर!

डालना था डाका उस रोज;
हो चुका था संध्या का भोज।
ठीक कर-कर अपने हथियार
सभी हम बैठे थे तैयार।
तुम्हीं में से धर्मध्वज एक,
ख्यात था जिसका विपुल विवेक,
कह गया था कितना ही हाल—
कहाँ, किसके घर है क्या माल।
जोहते थे हम तम की बाट
कि कब छिपते हैं अब पथ-घाट।
हमारा निखिल जीवनाकाश
खो चुका था संपूर्ण प्रकाश।
इसी से थी तम की ही चाह;
उसी में दीख रही थी राह!
किंतु हा! रहने पर भी मौन
बोलता है यह भीतर कौन!
झींगुरों की झीनी झंकार
कर रही कैसी करुण पुकार?
आ रही किसकी, कैसी याद?
अरे, असमय का यह अवसाद!
नहीं, मैं भूल रहा हूँ आप;
जगत का पुंजीकृत उत्ताप
कर रहा मेरा करुणाह्वान!
अरे तो उठ रे भीरु।

निदान,
चल पड़े उठकर हम सब लोग।
आ गया था निश्चित निशि-योग।
कहीं पर सिकुड़, कहीं पर फैल,
गई थी उलटी-सीधी गैल।
उसी के-से बहु चक्कर काट,
विजन वन पद-शब्दों से पाट,
चले हम लोग। वहाँ सब ओर
अँधेरा छाया था अति घोर।
दूर पर पावक-शिखा कुछेक
दीख पड़ती थी, एकाएक
और फिर हो जाती थी ओट।
पहुँचकर उसी दिशा में चोट
हमें करनी थी। सुदृढ़-शरीर
हमारे साथी थे सब वीर।
चले जाते थे सब चुपचाप;
सभी से आगे था मैं आप।
अग्निगर्भा, इस उर-सी, मूक
लग्न थी कंधे पर बंदूक।
प्रखर शाणित थी जिसकी धार,
झूलती थी कटि में तलवार।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रुके जाकर उस पुर के पास।
किसी घर में से दीप-प्रकाश
ताकने लगा हमारी ओर;
छिपा तम में ज्यों कोई चोर!
निकट ही था वट-वृक्ष विशाल,
तिमिर से जिसका शाखाजाल
ज्ञात होता था सघन विशेष।
अचानक हमको आया देख
वहाँ से भागा कोई जीव।
पतित पत्रों का पुंज अतीव
खड़खड़ा उठा, उसी के संग
चौंक-से पड़े विमौन विहंग।
एक फ़ायर ऊपर की ओर
कर दिया तब मैंने घन-घोर।
फटा-सा नीरवता का वक्ष;
उड़े पक्षी फड़-फड़ कर पक्ष;
उन्हीं विहगों-जैसे बेहाल
गाँव के नर-नारी उस काल
त्वरित भागे होंगे जी तोड़,
कहीं छिप जाने को घर छोड़।

हमारे पहले ही वह नाद
ले गया हम सबका संवाद।
गाँव के घाट-बाट मैदान
मिले हमको निर्जन-सुनसान।
तिमिर में छिपा, पटों में बंद
धनी का घर भी था निष्पंद।
दाग फिर बंदूकें विकराल,
तोड़ अर्गल-कपाट तत्काल,
गेह में रक्खा हमने पैर।
नहीं थी आज किसी की ख़ैर,
हमें जो मिलता वहाँ समक्ष।
किंतु सुनसान पड़ा था कक्ष।
हमारे साथी सत्वर छूट
घुसे भीतर करने को लूट।
तेल की कर नीचे तक कीच,
एक आले के बीचोबीच,
जल रहा था जो मंद प्रदीप,
उसे उसकाया पहुँच समीप।
और फिर देखी मैंने पौर,
लिपी थी गोबर से सब ठौर।
धोतियों के थानों के चित्र
भीत पर चिपके थे सुविचित्र।
एक रस्सी के ऊपर म्लान
सूखते थे गीले परिधान।
निकट ही खूँटी पर निष्प्राण
टँगा था निश्चल एक कृपाण।
अँगीठी करके धूम्रोद्गार
जनाती थी अपने में सार।
वहीं रक्खा था एक तुरंग
काठ का, सुंदर, शोभन-रंग।
अरे किसने, करुणा के साथ,
फेरकर तुझ पर कोमल हाथ,
दिया है यह रोटी का कौर
यहाँ तेरे मुँह में! यह और
धर दिया हुक्का भी यों पास
कि खा चुकने पर मुँह का ग्रास
करेगा अभी धूम्र भी पान!
जड़ों को भी ममत्व का दान!
अरे तो क्या करुणा का लेश
कहीं है कुछ-कुछ अब भी शेष?

हमारे साथी बारंबार
कर रहे थे भीतर हुंकार।
चीख़कर, मानो निज स्वार्थ
झंझनाते थे पतित पदार्थ।
किंतु था उधर न मेरा ध्यान,
न-जाने कहाँ, किधर थे कान!
कर रहा था पुलकित यह देह
न-जाने किसका सरल-स्नेह!

स्वप्न-सा हुआ अचानक भंग;
थम गई निखिल विचार-तरंग।
रुदन वह किसका करुणा-सिक्त
सुनाई पड़ा मृदुल, मृदु, तिक्त।
भेड़ियों से हिरनी-सी ग्रस्त

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक छोटी लड़की संत्रस्त,
घसीटी जाकर मेरे पास
खड़ी की गई। प्रदीप प्रकाश
बढ़ा-सा सहसा किसी प्रकार!
कपोलों पर लोचन-जल-धार
हुई झलमल विकीर्ण कर कांति;
रुदन में भी थी कैसी शांति!
कूदकर घर पर से चुपचाप,
छोड़ उसको उसके मा-बाप
न-जाने कहाँ गए थे भाग।
अचानक घन-निद्रा से जाग।
बालिका ने देखा यह हाल—
"बता तू कहाँ गड़ा है माल?"
कौन ये पूछ रहे, क्या बात;
डरा-धमकाकर, कर आघात?
पीड़कों को ही दे निज भार,
खड़ी थी हा! वह किसी प्रकार।
सिकुड़कर, छोटा कर निज गात
सह रही थी गुरुतर उत्पात!

अचानक बहुत दिनों की बात
हुई मेरे मन में प्रतिभात।
एक दिन उठकर प्रातःकाल
कुर्क होते देखा निज माल।
अधारी की हँसली तक छीन,
डरा-धमकाकर उसे अमीन,
पूछता था हो-होकर लाल—
"बता, यदि कहीं छिपा हो माल!"

उड़ाकर मेरे ऊपर कीच
मुझे कहते फिरते जो नीच,
ज़रा देखें वे अपनी ओर—
सुधार्मिकता वह अपनी घोर।
हड़पकर औरों के घर-द्वार
नहीं लेता जो कभी डकार,
कपट है जिसका कौशल कार्य,
असत् है जिसे सदा अनिवार्य,
एक ही जिसकी छोटी बात
छिपा रखती सौ-सौ आघात,
निरन्नों, हतभागों का ख़ून
पिलाता है जिसको क़ानून,
धान्य-धन तिजारियों में डाल
बद्ध रखता जो शांति-सुकाल,
वचन से बनकर ऊपर वर्म
घातकायुध का करता कर्म,
उसी के घर में एकाएक
हुआ यह कैसा भावोद्रेक!

विकल उस बच्ची को अवलोक
हृदय को नहीं सका मैं रोक।
अरी बेटी, इतने दिन बाद
तुझे क्या आई मेरी याद?
यहीं तो थी तू, तेरे अर्थ
भटकता रहा कहाँ मैं व्यर्थ!

छीनकर उन लोगों से गोद
लिया लड़की को। इतना मोद
अभी तक है इस उर में, आह!
कठिनता से ही अश्रु-प्रवाह
रुक सका।

कुछ क्षण के उपरांत
हुआ जब मेरा मन कुछ शांत,
बजाकर सीटी एक विशेष
दिया मैंने संकेत निदेश।
खड़े थे जो जैसे उस काल,
लूट का माल वहीं पर डाल
दौड़कर आए मेरे पास।
छोड़कर झट वह धनिक-निवास
चल पड़े हम सब वन की ओर।
वहाँ था वैसा ही तम घोर।
उसी तम में करके दल-भंग
छिप गए, जल में यथा तरंग।

गए थे जो-जो मेरे साथ,
रहे उस दिन रीते ही हाथ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हुआ पर मुझको जो कुछ प्राप्त,
हो गया रोम-रोम में व्याप्त!

सियारामशरण गुप्त

हमारे सामने सबसे बड़ा सवाल

हिंदोस्तान में रहनेवालों की संख्या ३१ करोड़ है। पर इन ३१ करोड़ में कितने आदमी ऐसे मिलेंगे, जिन्हें साल के ३६५ दिनों में एक दिन तो दूर रहा, एक मिनट के लिये भी कभी यह ख़याल आता हो कि हम ग़ुलामी की हालत में हैं, हमारी क़ौम गिरी हुई है, और हम दुनिया के सबसे गए-गुज़रे लोगों में हैं? मेरी समझ में तो हिंदोस्तान की इतनी बड़ी आबादी में ऐसे आदमियों की संख्या बहुत ही थोड़ी निकलेगी, जिनके दिल में इस बात की चोट हो कि हमारी हालत बुरी है, और हमें अपने को इस हालत से उठाना है। यही नहीं, जिस ढंग पर हम लोग अपनी ज़िंदगी बिताते हैं, जिस लापरवाही के साथ हर साल हज़ारों की तादाद में दुधमुहे बालक-बालिकाओं को विवाह की बेड़ी में जकड़कर आँखों का सुख देखते हैं, और उससे भी अधिक जिस लापरवाही के साथ हम प्रति वर्ष लाखों की संख्या में कच्चे-बच्चे पैदा करके हिंदोस्तान की आबादी बढ़ा रहे हैं, उससे तो यही पता चलता है कि हमें अपनी इस स्थिति से तनिक भी असंतोष नहीं है—हम अपनी वर्तमान अवस्था में भी ख़ुश हैं।

इससे आप-ही-आप यह सवाल उठता है कि क्या सचमुच हमारी हालत गिरी हुई है? इस सवाल का जवाब पाने के लिये हमें दूसरे देशों की हालतों से अपनी हालत का मुक़ाबला करना होगा; तभी हमको पता लगेगा कि हम कहाँ हैं और दूसरे देश कहाँ! आइए, दूसरे देशों की हालत से ज़रा अपनी हालत का मुक़ाबला करिए, और तब अपनी दशा का अंदाज़ा लगाइए।

हमारी शिक्षा की हालत तो यह है कि जहाँ इँगलैंड, अमेरिका, कनाडा, जर्मनी और जापान आदि में प्रायः सौ में सौ पढ़े-लिखे लोग मिलेंगे, वहाँ हिंदोस्तान में सिर्फ़ १०० में ६ ही आदमी पढ़े-लिखे पाए जायँगे। इन छः में वे लोग भी शामिल हैं, जो केवल अपना नाम लिख-पढ़ सकते हैं।

हिंदोस्तान में ख़ुशहाली कितनी है, इसका अंदाज़ा इसी बात से लग सकता है कि यहाँ की आधी आबादी—अर्थात् १५ करोड़ आदमी—यह नहीं जानती कि भर-पेट भोजन किसे कहते हैं। इस समय अमेरिका के लोगों की सालाना औसत आमदनी १,११७), इँगलैंडवालों की ६९६), जर्मनीवालों की ४६८), फ़्रांसवालों की ५४६) और इटलीवालों की ३३३) है; परंतु भारतवासियों की वार्षिक औसत आय केवल ३०)—अर्थात् साल में ४८० आने अथवा एक दिन में ६ पैसे—है। शहर के लोगों को छोड़ दीजिए; गाँव के किसानों को देखिए। इनकी दशा तो उनसे भी ख़राब है। इन्हें भर-पेट अन्न भी नहीं मिलता, कपड़े-लत्ते की कौन कहे। इसी छः पैसे की आमदनी में ये स्वयं खाते हैं, गृहस्थी चलाते हैं, और शादी-ब्याह भी करते हैं। इस दरिद्रता का ही यह परिणाम है कि इँगलैंडवालों की औसत उम्र ५१ साल, अमेरिकावालों की ५० साल, फ़्रांसवालों की ४८ साल, जर्मनी और इटलीवालों की ४७ साल और जापानवालों की ४४ साल है; परंतु यहाँ के लोगों की औसत उम्र केवल २४ साल है—अर्थात् औसत के हिसाब से २४ साल की उम्र में ही यहाँ के लोग दुनिया से कूच कर देते हैं।

यहाँ के लोगों की जन्म और मृत्यु की संख्या भी और देशों के लोगों से कहीं अधिक है। इँगलैंड में अगर एक हज़ार की आबादी में २७ आदमी पैदा होते हैं, तो १५ मरते हैं; जर्मनी में ३२ आदमी पैदा होते हैं, तो १८ मरते हैं; इटली में ३२ पैदा होते हैं, तो २१ मरते हैं; जापान में ३२ पैदा होते हैं, तो २० मरते हैं; पर हिंदोस्तान में ३८ पैदा होते हैं, और ३३ मर जाते हैं। जिस तरह कीड़े-मकोड़ों के समान यहाँ लोग पैदा होते हैं, उसी तरह, कीड़े-मकोड़ों के समान ही, मर भी जाते हैं। अगर प्लेग, हैज़ा और इन्फ़्लुएंज़ा से होनेवाली मौतों का हिसाब लगावें, तो पता लगेगा कि ३० वर्षों के अंदर इन तीनों बीमारियों से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ही क़रीब ३ करोड़ आदमी मौत के शिकार हो चुके। अकेले इन्फ़्लुएंज़ा में ही, सन् १९१८ के ऑक्टोबर, नवंबर और दिसंबर में, ७० लाख आदमी स्वाहा हो गए! छोटे-छोटे बच्चों की मृत्यु-संख्या तो और भी भयंकर है। प्रति वर्ष २० लाख बच्चे पैदा होते ही मृत्यु के मुख में चले जाते हैं। जो मौत के मुख से बच भी जाते हैं, वे अधिकतर निर्बल और रोगी रहकर अपाहिजों की ज़िंदगी बिताते हैं। और देशों के मुक़ाबले में यहाँ बच्चों की मौत कितनी अधिक होती है, यह पढ़कर रोंगटे खड़े होते हैं। मानो यहाँ के बच्चे मरने ही के लिये पैदा होते हैं। अच्छा, दूसरे देशों में बच्चों की मौत का क्या औसत है, इसे भी देखिए, और उससे अपने देश के औसत का मुक़ाबला करिए। इँगलैंड में हर साल जितने बच्चे पैदा होते हैं, उनमें ७ फ़ी सदी मर जाते हैं। फ़्रांस में ८ फ़ी सदी बच्चे मौत के शिकार होते हैं। जर्मनी में १० फ़ी सदी, इटली में १६ फ़ी सदी तथा जापान में १६ फ़ी सदी बच्चे जन्म लेने के बाद मर जाते हैं। पर हिंदोस्तान में २० फ़ी सदी बच्चे मौत के मुख में चले जाते हैं। इनमें उन बच्चों की गणना नहीं है, जो गर्भ से ही मरे पैदा होते हैं। बाल-विवाह की कृपा से न-जाने कितने बच्चे मरे ही पैदा होते हैं, और अपने साथ अपनी माताओं को भी ले जाते हैं। यह हमारी धन-संपत्ति और जन-संपत्ति का हाल है।

अब हमारे मान और प्रतिष्ठा का भी हाल सुनिए। अपने देश में हमारी इज़्ज़त यही है कि हम विदेशियों के ग़ुलाम हैं; राज्य का अधिकार हमारे हाथ में नहीं है; अस्त्र-शस्त्रों से हम वंचित हैं; हमारा बड़े-से-बड़ा आदमी राजद्रोह के अपराध में जेल में ठूँस दिया जाता है; हमारे यहाँ के होनहार नवयुवक—जो किसी भी देश के लिये गौरव और गर्व का कारण हो सकते हैं—बिना मुक़दमा चलाए नज़रबंद कर दिए जाते हैं, और सालों तक जेल में सड़ा करते हैं। यह तो अपने देश में हमारी इज़्ज़त का हाल है। विदेशों में हम जंगली और क़ुली समझे जाते हैं। अमेरिका में हम जा नहीं सकते; कनाडा में प्रवेश नहीं कर सकते; आस्ट्रेलिया में घुस नहीं सकते; दक्षिण-आफ़्रिका में घँस नहीं सकते। हरएक देशवाले अपने देश में स्वतंत्र हैं; पर हम अपने देश में परतंत्र! सब देशवाले जहाँ जाते हैं, अपना सिर ऊँचा करके चलते हैं; पर हम जहाँ जाते हैं, हमें अपना सिर नीचा करना पड़ता है।

अस्तु, ऊपर जो कुछ लिखा गया, उससे यह सिद्ध हो गया कि हमारी दशा भयंकर अधःपतन की स्थिति में है, जैसी कि इतिहास में आज तक कभी नहीं देखी गई। अब ज़रा इस बात पर ग़ौर करिए कि इस अधःपतन का कारण क्या है?

बहुत-से पढ़े-लिखे लोग—जिनकी संख्या आबादी के हिसाब से थोड़ी है, और जिनमें देश के राजनीतिक अगुआ और पिछलगुआ सभी शामिल हैं—हमारे अधः-पतन का एक-मात्र कारण वर्तमान सरकार को बतलाते हैं। वे सारा दोष सरकार के मत्थे मढ़ते हैं। सरकार अवश्य दोषी है; पर देखना तो यह है कि यह सरकार यहाँ आई ही क्यों, और हम पर राज्य ही क्यों कर रही है। सरकार हमारी कमज़ोरी से यहाँ आई, और हमारी कमज़ोरी से ही वह हम पर हुकूमत कर रही है। यह राजनीति का पहला सिद्धांत है कि एक जाति दूसरी जाति पर अपना अधिकार तभी जमा सकती है, जब दूसरी जाति कमज़ोर होती है। राजनीति का दूसरा सिद्धांत यह है कि एक जाति दूसरी जाति पर उसकी भलाई के लिये हुकूमत नहीं करती, बल्कि अपनी भलाई के लिये। हमारी कमज़ोरी से, हमारी फूट से, हमारे आपस के ईर्षा-द्वेष से, हमारे जाति-पाँति के भेद से ग्रीक लोग यहाँ आए और उन्होंने हम पर राज्य किया; शक और सीथियन आए और हम पर हुकूमत की; हूण आए और हमको बरबाद किया; मुसलमान आए और हमको ग़ुलाम बनाया; अंत में अँगरेज़ आए और अब तक हम पर हुकूमत कर रहे हैं। दो हज़ार वर्ष से लेकर अब तक का हमारा इतिहास पुकार-पुकारकर कह रहा है कि हमारे भयंकर जातीय पतन का एक-मात्र कारण हमारी निर्बलता, हमारा आपस का द्वेष, हमारी फूट और हमारा जाति-पाँति का भेद है। अब भी यह सरकार एक दिन नहीं टिक सकती, अगर हम उसके साथ अनुचित सहयोग करना छोड़ दें। सरकार की पुलीस को कौन चलाता है? हमीं चलाते हैं। सरकार की फ़ौज में कौन भर्ती होता है? हमीं भर्ती होते हैं। सरकार की अदालतों में मुक़दमे कौन ले जाता है? हमीं ले जाते हैं। सरकार को टैक्स और लगान कौन देता है, और कौन वसूल करता है? हमीं देते और हमीं वसूल करते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसलिये अपनी कमज़ोरी को दोष न देकर मौक़े-बे-मौक़े सरकार को दोष देना फ़िज़ूल मालूम पड़ता है। जब तक हम अपनी सामाजिक कमज़ोरियों को दूर न करेंगे, और जो लोग हम पर राज्य कर रहे हैं, उनके मुक़ाबले का अपने को न बनावेंगे, तब तक केवल सरकार को दोष देना अपनी शक्ति का व्यर्थ दुरुपयोग करना है। हम सरकार को दोष देने में जितनी शक्ति लगाते हैं, उतनी यदि अपने सुधार में लगावें, तो हमारी कमज़ोरी बहुत कुछ दूर हो सकती है।

यह तो उन लोगों का हाल है, जो पढ़े-लिखे हैं, और देश की बातों में दिलचस्पी लेते हैं। पर देश की आबादी का बहुत बड़ा हिस्सा ऐसे लोग हैं, जो अपने अधःपतन का एक-मात्र कारण भाग्य को मानते हैं। अगर अकाल पड़ता है, तो उसका कारण हमारा भाग्य समझा जाता है। अगर प्लेग आता है, तो दैव का प्रकोप माना जाता है। अगर १२ वर्ष की लड़की के गर्भ से पैदा हुआ बालक मौत का शिकार हो जाता है, तो सारा दोष भाग्य के सिर मढ़ा जाता है। अगर ८-१० वर्ष की लड़की विधवा हो जाती है, तो भाग्य को कोसकर धीरज धर लिया जाता है। जितनी भी विपत्तियाँ हैं, सबका एक-मात्र कारण भाग्य या दैव का कोप माना जाता है। आम लोगों में एक दूसरा ख़याल यह भी फैला हुआ है कि अब तो कलियुग है, दिन-पर-दिन धर्म का ह्रास होगा, हम दिन-पर-दिन गिरते जायँगे; पुराणों में लिखा है कि कलियुग में धर्म-कर्म सबका लोप हो जायगा, दिन-पर-दिन अधर्म का साम्राज्य बढ़ेगा, सुख-संपत्ति का नाश होगा, और अंत में एक दिन प्रलय हो जायगा। जिस जाति की मानसिक वृत्ति ऐसी बन जाय—जो जाति कुल-की-कुल इस बात पर विश्वास करने लगे कि अब कलियुग का समय है, हम दिन-पर-दिन गिरते ही जायँगे, संसार में कोई शक्ति गिरने से हमें नहीं रोक सकती—उस जाति के अधःपतन की कोई हद नहीं हो सकती। ब्रह्मा भी अगर उस जाति को उठाना चाहें, तो नहीं उठा सकते। जब हमारे भाग्य में गिरना ही लिखा है, तो किसकी ताक़त है कि हमें उठा सके!

भाग्य का यह सिद्धांत हमारी जाति की नस-नस में व्याप्त हो गया है। हमारी जाति का बच्चा-बच्चा इस भाग्य के सिद्धांत का क़ायल है। जब तक हम इस झूठे विश्वास को जाति के हृदय से उखाड़कर न फेंक दें, तब तक उन्नति और सुधार की बातें करना कोरी बकवास है। भाग्य और कलियुग-संबंधी मिथ्या विश्वास का कितना प्रभाव हम लोगों पर है, इसका एक प्रत्यक्ष उदाहरण मैं आपके सामने रखता हूँ। जिस समय मालवीयजी महाराज हिंदू-युनिवर्सिटी की स्कीम बनाकर सबों में उसका प्रचार कर रहे थे, उस समय काशी के पंडितों से भी वह, उनकी सम्मति लेने के लिये, मिले। मालवीयजी अपनी स्वाभाविक शैली के अनुसार स्कीम को समझाते हुए कहने लगे कि दस हज़ार विद्यार्थी विश्वविद्यालय में अध्ययन करेंगे; जिस तरह प्राचीन ऋषियों के आश्रमों में होता था, दस सहस्र विद्यार्थियों के दस सहस्र कंठों से निकली हुई वेद-ध्वनि वायुमंडल को पवित्र करेगी, और फिर वही प्राचीन ऋषियों के आश्रम का दृश्य साक्षात् होने लगेगा। इस पर काशी के दिग्गज पंडित स्वर्गीय महामहोपाध्याय गंगाधरजी शास्त्री ने कहा—"मालवीयजी महाराज! यह आप क्या कहते हैं? क्या आप शास्त्रों के वाक्यों पर हड़ताल फेरना चाहते हैं? पुराणों में लिखा है कि कलियुग में दिन-पर-दिन धर्म का ह्रास होगा; दिन-पर-दिन हमारा पतन होगा। आप क्या पुराणों के इस वाक्य को झूठ साबित करना चाहते हैं?" अकेले पंडित गंगाधर शास्त्री ही इस विचार के नहीं थे। करोड़ों आदमी इस विचार में पंडित गंगाधर शास्त्री हैं। एक गंगाधर शास्त्री हों, तो आप उनको किसी तरह अपनी बात बतला सकते हैं; लेकिन जब करोड़ों आदमी गंगाधर शास्त्री हों—कुल जाति-की-जाति भाग्य और कलियुग के सिद्धांत की क़ायल हो—तब आप क्या कर सकते हैं? जिस रोगी के हृदय में इस विश्वास ने जड़ जमा ली हो कि मैं अब नहीं बच सकता, उसे साक्षात् धन्वंतरि भी चाहें, तो नहीं बचा सकते।

इससे सिद्ध हुआ कि हमारे अधःपतन का कारण न तो ब्रिटिश सरकार है, और न हमारा भाग्य। तो फिर है क्या? इसका उत्तर पाने के लिये फिर हमें आजकल की स्वाधीन जातियों से अपना मुक़ाबला करना चाहिए। हमें यह देखना है कि वह कौन-सी बात है, जिससे अमेरिका स्वतंत्र है, इँगलैंड स्वाधीन है, जर्मनी आज़ाद है, फ़्रांस ख़ुदमुख़्तार है, जापान अपने देश का स्वयंप्रभु है, और अब टर्की भी पूर्ण रूप से अकुतोभय है, तथा जिसके न

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होने से हम पराधीन, पतित और अपाहिज हैं। अगर हम सोच विचारकर देखें, तो हमें पता लगेगा कि केवल एक गुण है, जो अमेरिका, योरप और एशिया की उन्नत जातियों को स्वतंत्र बनाए हुए है, और जिसके न होने से हम परतंत्र बने हुए हैं। वह गुण है राष्ट्रीयता का भाव। हम भी वैसे ही सभ्य हैं, जैसी कि स्वतंत्र जातियाँ। हमारा साहित्य उनके साहित्य से फीका नहीं। हमारा इतिहास उनके इतिहास से कम गौरवमय नहीं। हमारा बुद्धिबल भी उनके बुद्धिबल से हेठा नहीं। इस गए-बीते ज़माने में भी महात्मा गांधी, रवींद्रनाथ ठाकुर और तिलक-जैसे लोग हमारे यहाँ पैदा हो सकते हैं। शारीरिक बल में भी हमारे यहाँ के सिपाही किसी भी दूसरी जाति के सिपाहियों से लोहा ले सकते हैं। अगर हममें कोई कमी है, तो यही कि हम राष्ट्रीयता के भाव से शून्य हैं। आजकल संसार के जितने स्वतंत्र और उन्नत देश हैं, सब राष्ट्रीयता के पुजारी हैं। सबों में राष्ट्रीयता की लहर बह रही है। अगर कोई राष्ट्रीयता से ख़ाली है, तो हमारा देश। जितनी स्वतंत्र जातियाँ हैं, सब देश और राष्ट्र को आगे रखती हैं, तथा धर्म और संप्रदाय को पीछे। जापानियों की नज़र में देश या राष्ट्र के आगे धर्म की कोई क़दर नहीं। टर्की ने भी राष्ट्रीयता की रक्षा के लिये ख़लीफ़ा को निकाल बाहर किया, और मज़हब को ताक़ पर उठाकर रख दिया। इसी राष्ट्रीयता के भाव की बदौलत आज तुर्क योरप के स्वतंत्र देशवालों के सामने अपना सिर ऊँचा करके चल सकता है। उधर जापान, टर्की और चीन राष्ट्रीयता की लहर में बह रहे हैं, और इधर हमारा देश सांप्रदायिकता का शिकार और मज़हबी लड़ाइयों का अड्डा हो रहा है। राष्ट्रीयता, देश-भक्ति या नैशनलिटी किस चिड़िया का नाम है, यह हम लोग जानते भी नहीं। यहाँ धर्म के आगे राष्ट्रीयता या देश-भक्ति की कोई इज़्ज़त नहीं। जिस देश के लोग मज़हब की छोटी-छोटी-सी बातों के लिये एक दूसरे का सिर फोड़ते हों, जो इस बात के लिये एक दूसरे का ख़ून बहाते हों कि किसी जगह के सामने बाजा न बजाया जाय, वहाँ राष्ट्रीयता या स्वतंत्रता की कल्पना करना दिमाग़ को ख़राब करना है। यदि हम चाहते हैं कि हम भी जापान की तरह स्वतंत्र हों, तुर्कों की तरह आज़ाद बनें, तो हमें भी राष्ट्रीयता को अपने हृदय की अधिष्ठात्री देवी बनाना होगा। परंतु राष्ट्रीयता आसमान से टपक नहीं पड़ेगी। हमें उसके लिये भयानक परिश्रम करना पड़ेगा, अनंत स्वार्थत्याग दिखाना होगा। जिस तरह तुर्कों ने उसके लिये अपने मज़हब और ख़लीफ़ा तक को छोड़ दिया, उसी तरह हमको भी धर्म के बहुत से तंग और गंदे वसूलों को तर्क करना होगा। राष्ट्रीयता के रास्ते में जितनी रुकावटें थीं, उन्हें तुर्कों ने एक-एक करके निकाल बाहर किया है। उसी तरह हमें भी राष्ट्रीयता के रास्ते में जितनी रुकावटें हैं, उन्हें एकदम दूर करना होगा। अब देखना यह है कि हज़ार चेष्टा करने पर भी हममें राष्ट्रीयता का भाव क्यों नहीं पैदा होता। अगर हम ग़ौर करके देखें, तो पता लगेगा कि हमारी राष्ट्रीयता के रास्ते में दो सबसे बड़ी रुकावटें हैं—(१) हमारी वैराग्य की प्रवृत्ति या संसार को असार और मिथ्या समझने की ओर हमारा झुकाव, (२) जाति-पाँति का भेद।

हमारा यह विश्वास कि "संसार असार और मिथ्या है" हमारे रक्त और मांस के साथ बिंध गया है। "मनुष्य-जीवन दुःखमय है। इस दुःखमय जीवन से छुटकारा पाना मोक्ष है। मोक्ष ही मनुष्य-जीवन का परमोच्च उद्देश्य है, और इस उद्देश्य को पाने का सबसे उत्तम साधन त्याग और वैराग्य है"—यह शिक्षा हमें माता के दूध के साथ मिलती है। हमारे यहाँ के उपदेशक, विद्वान् और साधु-संन्यासी, सब यही शिक्षा देते हैं कि संसार असार और मिथ्या है। हमारे यहाँ के अधिकतर कवियों ने इसी पर कविताएँ की हैं; सारे मत-प्रचारकों और आचार्यों ने अपने शिष्यों को यही सिखाया है; ग्रंथकारों ने बड़े-बड़े ग्रंथ इसी पर रचे हैं। जिस पोथी को उठाइए, उसमें यही राग गाया गया है। सब एक स्वर से कह रहे हैं—"संसार असार और मिथ्या है।" आप रेलगाड़ी के तीसरे दर्जे में सफ़र कर रहे हैं। गाड़ी खचाखच भरी हुई है, तिल रखने को भी जगह नहीं। इतने में दस आदमी उसमें और चढ़ आए। आप उनसे कहते हैं—"साहब, गाड़ी में तिल रखने को भी जगह नहीं है; आप कहाँ बैठिएगा?" फ़ौरन् जवाब मिलता है—"बाबू साहब, खड़ा-खड़ा चला चलूँगा; किसी तरह समय काट दूँगा; किसको इसमें रहना है, सबको एक-न-एक स्टेशन पर उतर जाना है।" यह किसी के मुँह से मैंने कभी नहीं सुना कि मैंने टिकट के दाम दिए हैं; मैं तो आराम के साथ सफ़र करूँगा। रेलवेवालों ने टिकट मेरे हाथ बेचा है, तो उन्हें मेरे बैठने का प्रबंध भी करना होगा; वर्ना गाड़ी आगे नहीं बढ़ सकती। पर यह कहने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का साहस किसको हो? हृदय में तो वैराग्य का भाव धँसा हुआ है। इसी वैराग्य की शिक्षा के कारण हमारे सामने सबसे बड़ा आदर्श यह नहीं है कि हम अपने जीवन को उन्नत करें, दुनियावी तरक़्क़ी के द्वारा जीवन को आनंदमय बनावें, रहें तो अच्छी तरह से रहें; जिएँ तो मर्द की तरह जिएँ; बल्कि हमारे सामने जीवन का आदर्श यह रक्खा जाता है कि सुख के साथ अथवा दुःख के साथ, जिस तरह से हो येन केन प्रकारेण, जीवन को काट देना चाहिए। यह दुनिया एक सराय है; इसमें किसको हमेशा के लिये टिकना है। "गुज़र गई गुज़रान, क्या झोपड़ी क्या मैदान!" बहुत कट गई है, थोड़ी और कट जायगी। सबों को यहाँ से एक दिन चले जाना है। जैसे हो, वैसे किसी तरह दिन काट देना चाहिए—यह आदर्श कुल जाति के सामने प्रति दिन रक्खा जाता है। घर और बाहर, सभा और समाज, स्कूल और पाठशाला, मंदिर और मसजिद, हाट और बाज़ार, सब जगह हम छोटे और बड़े, ब्राह्मण और शूद्र, विद्वान् और मूर्ख, ग़रीब और अमीर, सब श्रेणी के लोगों से जब यही सुनते हैं कि "संसार असार और मिथ्या है," तब अवश्य ही हमारे मन में यह विश्वास घर कर लेता है। इस विश्वास के आते ही स्वभावतः अकर्मण्यता, आलस्य तथा उत्साहहीनता हमारे साथी बन जाते हैं। जीवन हमें बोझ मालूम होने लगता है। हमारे हृदय में वैराग्य बस जाता है। हम दुनियावी तरक़्क़ी से मुँह मोड़ लेते हैं। जब हम संसार को तुच्छ और मिथ्या समझने लगे, तब हमारी दुनियावी तरक़्क़ी हो ही कैसे सकती है? जिस जाति के आबाल-वृद्ध-वनिता यह समझते हों कि यह संसार असार और मिथ्या है, तथा समस्त सांसारिक पदार्थ तुच्छ और हेय, उसकी दुर्दशा होना कोई आश्चर्य की बात नहीं। ऐसी हालत में राष्ट्रीयता का पैदा होना वैसा ही असंभव है, जैसा बालू से तेल निकलना। इसलिये राष्ट्रीयता की पहली सीढ़ी यह है कि "संसार असार और मिथ्या है"—यह भाव हमारे हृदय से दूर किया जाय।

हममें राष्ट्रीयता का भाव आने में दूसरी सबसे बड़ी बाधा हमारा जाति-पाँति का भेद है। दुनिया-भर का इतिहास देख डालिए, कहीं भी आपको ऐसा देश या जाति न दिखाई पड़ेगी, जहाँ जाति-पाँति का भेद इतने ज़ोर के साथ क़ायम हो। पुराने ज़माने में, या इस ज़माने में, कोई भी ऐसी जाति न मिलेगी, जो हज़ारों टुकड़ियों में बँटी हो। योरप के देश आपके सामने हैं। अमेरिका का उदाहरण मौजूद है। एशिया की क़ौमें—चीन, जापान और टर्की—आपसे दूर नहीं हैं। कहीं भी जाइए, आपको जाति-पाँति का यह भेद न दिखाई पड़ेगा। जो कुछ थोड़ा-बहुत भेद था, वह भी अब तेज़ी के साथ ग़ायब हो रहा है। पर हिंदोस्तान में जाति-बंधन अब भी वैसे ही ज़ोर के साथ जारी है, जैसे कि हज़ारों वर्ष पहले था। इस जाति-बंधन से हमारी जाति का प्रत्येक अंग ऐसी मज़बूती के साथ जकड़ा हुआ है कि वह अपने हाथ-पैर नहीं हिला सकती। जो जाति छोटी-छोटी हज़ारों टुकड़ियों में बँटी हो, उससे क्या कभी यह आशा हो सकती है कि वह एक राष्ट्र बन सकेगी—उसमें राष्ट्रीयता का पवित्र भाव पैदा हो सकेगा?

पहले तो हमारा देश हिंदू और मुसलमान, इन दो बड़े टुकड़ों में बँटा हुआ है, जिनमें एक उत्तरी ध्रुव है, तो दूसरा दक्षिणी ध्रुव, एक पूरब की ओर जाता है, तो दूसरा पश्चिम की ओर। दोनों जब तक न मिलेंगे, और उसी तरह एक न हो जायँगे, जिस तरह जापान में बौद्ध और ईसाई एक हैं—चाहे इसमें शताब्दियाँ क्यों न लग जायँ—तब तक एक राष्ट्र नहीं बन सकता। अस्तु, मुसलमानों के नाम से आप चिढ़ते हों, तो उन्हें जाने दीजिए, हिंदुओं को ही लीजिए। वे भी एक नहीं हैं। उनमें भी चार भेद हैं—ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र। ख़ैर, अगर चार ही भेद होते, तो भी ग़नीमत थी। पर ब्राह्मण एक नहीं, अनेक जातियों में बँटे हैं। क्षत्रिय जाति एक नहीं, अनेक जातियों में बिखरी हुई है। वैश्य एक नहीं, अनेक टुकड़ियों में विभक्त हैं। और, शूद्र भी एक नहीं, अनगिनती टुकड़ों में बँटे हुए हैं। इस समय अगर गिनती की जाय, तो इन सब टुकड़ियों की संख्या हज़ारों तक पहुँचेगी। कोई-कोई बिरादरी या टुकड़ी—मसलन मालवीय ब्राह्मणों की बिरादरी—इतनी छोटी है कि उसमें दो या तीन सौ से अधिक घर न होंगे। इन टुकड़ियों के अंदर भी सब एक हों, सो नहीं। उनमें भी आपस में ऊँच और नीच का भेद है। जैसे ऊँचे मालवीय और नीच मालवीय। ऊँचे मालवीय—मसलन् पं० मदनमोहन मालवीय—नीच मालवीय के यहाँ भोजन न करेंगे, विवाह-संबंध करना तो दूर रहा। अभी मालवीयों का एक मामला अदालत में इस बात पर चल रहा है कि एक मालवीय ने किसी अन्य मालवीय को अपने यहाँ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खिलाया या स्वयं उसके यहाँ खाया। जब एक ही टुकड़ी या बिरादरी के लोग एक नहीं हो सकते, तब ऊँची जाति का हिंदू और नीची जाति का हिंदू, दोनों एक कैसे हो सकते हैं? ऐसी हालत में क्या आप सचमुच विश्वास करते हैं कि देश में राष्ट्रीयता का भाव पैदा हो सकेगा? अगर आप ऐसा समझते हैं, तो वास्तव में भारी भ्रम में पड़े हुए हैं, और दिन में स्वप्न देख रहे हैं।

लोग अछूत जातियों के प्रश्न को हिंदू-जाति का एक बड़ा भारी रोग बताकर उसका इलाज करना चाहते हैं। पर जिसे आप रोग समझे हुए हैं, वह स्वयं रोग नहीं, एक दूसरे भयंकर रोग का केवल चिह्न-मात्र है। वह भयंकर रोग हमारा जाति-पाँति का पचड़ा है। ऊपरी उपायों के द्वारा केवल इन चिह्नों को हटा या मिटा देने से हिंदू-जाति की बीमारी दूर नहीं हो सकती। आप कहाँ तक अछूतों का उद्धार करेंगे? जिन्हें आप अछूत समझते हैं, उनमें भी ऊँच और नीच का भेद है—उनमें भी जाति-पाँति का दौरदौरा है। ऊँची जाति का अछूत नीची जाति के अछूतों को कभी स्पर्श न करेगा। उन नीची जाति के अछूतों में भी क्रम से ऊँच और नीच का भेद है, जिसकी कोई हद नहीं। अभी थोड़े दिनों की बात है, पबना में बंगाल-प्रांतीय हिंदू-सभा का अधिवेशन हुआ था। उसमें एक प्रस्ताव यह भी पास हुआ कि अछूत जातियों के हाथ से जल-ग्रहण करने में ऊँची जातिवालों को भी परहेज़ न होना चाहिए। इस प्रस्ताव को कार्य-रूप में परिणत करने के लिये उक्त अवसर पर कुछ ऊँची जाति के हिंदुओं ने अछूत जातियों के हाथ से जल और मिठाई ग्रहण की। पर नमःशूद्र आदि ऊँची जाति के अछूतों ने अपने से नीच डोम और मोची आदि को छूने से इनकार कर दिया। इसलिये अछूत जातियों का प्रश्न तब तक हल नहीं हो सकता, जब तक हिंदुओं में यह जाति-पाँति का झगड़ा ज़रा भी क़ायम है। यह जाति-पाँति का भेद हिंदू-जाति को घुन की तरह खोखला बना रहा है। यही जाति-पाँति का भेद हमारी सब उन्नतियों में बाधा डाल रहा है। यही एक हिंदू को दूसरे हिंदू से अलग किए हुए है। और यही हिंदुओं के मुसलमानों से मिलने में भी बड़ी भारी रुकावट डाल रहा है। याद रहे, भिन्न-भिन्न जातियाँ एक होकर तब तक देश का उद्धार नहीं कर सकतीं, जब तक हिंदू-मुसलमानों में सच्ची और टिकाऊ एकता नहीं होती, और तब तक भारतवर्ष में एक राष्ट्र का निर्माण नहीं हो सकता, जब तक हम इन जाति-पाँति के बंधनों को काटकर अपने विचारों को सदा के लिये स्वतंत्र न बना लें।

इसलिये हमारे सामने सबसे बड़ा सवाल यह है कि हम किस तरह अपने में राष्ट्रीयता का भाव पैदा करें। इसके लिये हमें अपने तंग मज़हबी ख़यालों को छोड़ना होगा, जाति-पाँति के भेदों को हमेशा के लिये दूर करना होगा, और "संसार असार और मिथ्या है," यह भाव सदा के लिये तर्क करना होगा। इसी मार्ग पर चलकर जापान ने तरक़्क़ी की है, टर्की ने आज़ादी हासिल की है, और चीन विदेशियों के पंजे से छुटकारा पा रहा है। इसी मार्ग पर चलकर हम भी राष्ट्रीयता और स्वतंत्रता के अधिकारी हो सकते हैं। हमने मार्ग दिखा दिया—

"ग्रेनेष्टं तेन गम्यताम्"

जनार्दन भट्ट

परलोक

(२) परान्वेषण-परिषत्

दैवी ह्येषा गुणमयी मम माया दुरत्यया;
मामेव ये प्रपद्यन्ते मायामेतां तरन्ति ते।
(भ० गी०)

(क) अद्भुत प्रयोग

होम की सहायता से क्रुक्स ने एक और भी अचंभे का प्रयोग अपनी मित्र-मंडली को दिखाया था। उसकी चर्चा यहाँ कर देना आवश्यक है।

बोझ उठानेवाले प्रयोग के बाद क्रुक्स ने एक बार और अपनी मित्र-मंडली के समक्ष होम की परीक्षा करने का निश्चय किया। उन्होंने एक बड़े कमरे को बिलकुल ख़ाली करके बीच में एक पियानो बाजा रक्खा। उस कमरे में दीवार से लगी हुई ख़ाली कुरसियाँ चारों ओर रखवा दीं। मित्रों को निमंत्रण दिया। समय पर मित्र लोग आए। पहले सब मित्रों ने कमरे की पूरी जाँच करके देख लिया कि किसी तरह की कोई संदेह-जनक कारर्वाई तो नहीं है। यह मित्र-मंडली भारी-भारी विद्वानों, वैज्ञानिकों और खोजियों की थी। लोग बाल की खाल खींचनेवाले तार्किक थे। इनमें कई विलायत की जगत्प्रसिद्ध रॉयल सोसाइटी के सदस्य थे। इन लोगों ने जब अपना मन भर लिया, तब बैठे। अब होम उसी कमरे में दरवाज़े के पास की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक चौकी पर बैठाए गए। पास ही क्रुक्स की कुरसी थी। कार्यारंभ के पहले क्रुक्स ने होम के शरीर की भी जाँच कर ली। फिर उनके हाथ-पैरों को अपने क़ब्ज़े में करके बैठे, और उनसे प्रार्थना की कि अब आप अपना काम शुरू कीजिए।

पहले तो पियानो आप-ही-आप अनेक रागों में, बड़ी उत्तम रीति से, कुछ देर तक बजता रहा। वे-वे सुर निकले, जिन्हें सुनकर नाद-विद्या के जानकार दंग रह गए। फिर एकाएक वही भारी पियानो अपनी जगह से उठा, कुछ ऊँचा हुआ, और बजता हुआ मंडली के प्रत्येक सदस्य के पास घूमा। वह ऐसा चौरस घूम रहा था कि यदि कई मनुष्य लगकर उसे घुमाते, तो भी बराबर चौरस नहीं रख सकते थे। यह एक भारी चमत्कार था। सभी दर्शक अत्यंत चकित थे। परंतु इससे भी अद्भुत तमाशा आगे आया।

पियानो घूमकर अपनी पहली जगह पर आ गया। बाजा बंद हो गया। इस विचित्र दृश्य से सब-के-सब सन्नाटे के आलम में थे। इतने में होम के पास से एक हाथ उठा। वह गुलाब का एक ताज़ा खिला फूल लिए हुए होम के बग़लवाले सज्जन से आरंभ करके सारी मंडली के प्रत्येक सज्जन के पास गया, और उसने फूल को नाक के पास ले जाकर सुँघाया। हाथ नंगा था; परंतु कुहनी से पहले ही सफ़ेद भाप में समाप्त हो जाता था। एक सज्जन ने इस विचित्र हाथ की कलाई अपनी मुट्ठी में पूरे ज़ोर से थाम ली। उन्हें मालूम हुआ कि हाथ बरफ़ से भी ज़्यादा ठंडा और रुई से भी अधिक नरम, दब जानेवाला, है। यहाँ तक कि उनकी मुट्ठी बँध गई। परंतु उन्होंने अचंभे की बात यह देखी कि इधर तो वह दबाते-दबाते मुट्ठी कस रहे थे, और उधर वही हाथ बग़लवाले सज्जन को फूल सुँघा रहा था। यह हाथ ठंडा तथा हवा की तरह नरम और लचीला सिद्ध हुआ। वह जब सबको फूल सुँघा चुका, तब ग़ायब हो गया।

प्रेतों के प्रयोग साधारणतः अँधेरे कमरे में किए जाते हैं; परंतु ये प्रयोग दिन-दहाड़े, उजाले कमरे में किए गए, जहाँ किसी तरह की धूर्तता की गुंजाइश नहीं थी। हाथ-वाला चमत्कार तो एकदम अपूर्व था। उस मंडली में उपस्थित अनेक विद्वानों के मन में यह बात जम गई कि विज्ञान की परिधि के बाहर भी जानने योग्य बातें हैं।

(ख) एक और अपूर्व चमत्कार

होम के इन चमत्कारिक दृश्यों के दो-तीन ही बरस बाद की, काशी की, एक घटना यहाँ लिखी जाती है, जिसकी चर्चा कर्नल आलकाट ने अपनी 'ओल्ड डायरी लीव्ज़' (Old Diary Leaves) नाम की पुस्तक में की है। उस समय बनारस के सरकारी कॉलेज के प्रिंसिपल डॉक्टर टीबो ❀ थे। एक दिन शाम को डॉक्टर टीबो के बँगले पर कई मित्र इकट्ठे हुए थे। उनमें मुख्य थे महर्षि स्वामी दयानंद सरस्वती, बा० प्रमदादास मित्र और मैडम ब्लावट्स्की। प्राच्य दार्शनिक साहित्य की चर्चा के साथ कई घटनाओं की स्वाभाविकता और अस्वाभाविकता पर बहस हो रही थी। डॉक्टर टीबो पक्के नास्तिक थे। परमात्मा की सत्ता को ही अस्वाभाविक मानते थे। स्वामीजी आस्तिक ज़बर्दस्त थे; पर योग-संबंधी कुछ सिद्धियों के सिवा पौराणिक असाधारण कथाओं को अस्वाभाविक ही मानते थे। बा० प्रमदादास मित्र सनातनधर्मी थे। मैडम थियासोफ़िकल सोसाइटी की जननी थीं; वह अनेक विचित्र घटनाओं को स्वाभाविक मानती थीं। मित्र महोदय भी उनसे सहमत थे। इस परिस्थिति में प्रसंगानुसार डॉक्टर टीबो ने मैडम से पूछा—"क्यों मैडम ब्लावट्स्की, जिस पुष्पवर्षा की हिंदू-दार्शनिक ग्रंथों में यत्र-तत्र चर्चा है, वह क्या कभी संभव है? क्या यह गप नहीं है?" इस पर मैडम ने गंभीरता-पूर्वक कहा—"संभव तो वह त्रिकाल में है, इसी घड़ी है, उसमें तो कोई अचरज की बात नहीं।" इतना कहकर उन्होंने एक बार ताली बजाई, और ताज़े खिले गुलाब के फूल ऊपर से उस मंडली पर झड़ पड़े। मंडली सकते में

❀ डॉक्टर टीबो एक प्रसिद्ध जर्मन विद्वान् हो गए हैं। इन पंक्तियों के लेखक ने डॉक्टर टीबो से पढ़ा था। संवत् १९५९ में Old Diary Leaves पुस्तकाकार छपी। छात्रों ने भी पुस्तक पढ़ी। डॉक्टर टीबो से पूछा गया कि क्या पुष्पवर्षा और दीप-शिखा बढ़ाने की घटनाएँ ठीक हैं? उत्तर मिला—"घटनाएँ ठीक हैं, परंतु चमत्कारवाला अंश तो मायाजाल था। मंडली-भर को मैडम ने मोहित कर दिया था। डॉक्टर साहब का अभिप्राय यह था कि मैडम ने सब पर मेस्मेरिज़म कर दिया था। वस्तुतः पुष्पवर्षा या दीप-शिखा के बढ़ने की घटना नहीं हुई थी; पर सबने मैडम की शक्ति के वश होकर, उन्हीं की इच्छानुकूल, देखना प्रतीत किया। समझा, हम ऐसा देख रहे हैं।"—लेखक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आ गई। डॉक्टर टीबो ने एक फूल उठा लिया, उसे ग़ौर से देखा, हाथ से जाँच की, सूँघा, फिर सूँघकर डाल दिया। उनकी आकृति से मैडम ने भाँपा कि उन (डॉक्टर टीबो) के मन में अभी संदेह है। कुछ देर सब लोग चुप रहे। संभवतः इस चमत्कार पर विचार में मग्न थे। समय अधिक हो गया था। मैडम जाने के लिये उठीं। एक आदमी ने लैंप उठाया कि उन्हें मार्ग दिखावे। मैडम ने कहा—ठहरो। आदमी रुक गया। उन्होंने दीप-शिखा से कहा—उठो। शिखा उठकर चिमनी तक लंबी हो गई। बोलीं—और। इस पर शिखा एक बिलस्त और ऊँची हुई। इस तरह वह 'और, और' कहती गईं। शिखा बढ़ती गई। यहाँ तक कि छत तक पहुँची। फिर उन्होंने कहा—थोड़ी घटो। थोड़ी घटी। फिर इसी तरह 'और, और' कहती गईं, और दीप-शिखा घटती गई, यहाँ तक कि पहले के स्थान पर पहुँच गई। फिर मैडम बिना अधिक बातचीत किए चली गईं।

(ग) परिषत् के उद्देश्य

खोजियों के मन में गुदगुदी पैदा करने को इस तरह की विचित्र घटनाएँ काफ़ी थीं। उस समय के प्रमुख विद्वानों ने मिलकर 'परान्वेषण-परिषत्' (सोसाइटी फ़ॉर सैकिकल रिसर्च) नाम की संस्था को जन्म दिया। इसका उद्देश्य यह ठहरा कि ऐसे अनेक प्रकार के वादग्रस्त तथ्यों की, जो स्पष्ट रूप से साधारणतः माने हुए सिद्धांतों से समझ में नहीं आते, खोज का सुसंगठित और सुव्यवस्थित उद्योग किया जाय। आरंभ में इस परिषत् ने ये काम अपने हाथ में लिए—

(१) साधारण, मान्य, करणोपकरणीय साधनों के अतिरिक्त एक व्यक्ति का मन दूसरे के मन पर जो प्रभाव डालता है, उसकी जाँच।

(२) निद्रित या मूर्च्छित करनेवाली विधि या मेस्मेरिज़म का परिशीलन और दिव्य दृष्टिवाले माने हुए तथ्य की जाँच।

(३) मरण आदि बाहरी घटनाओं के साथ-ही-साथ दो या अधिक अलग-अलग व्यक्तियों द्वारा किसी छाया-पुरुष का देख पड़ना, या अज्ञात बातों का अवगत होना। यदि वे स्वतंत्र और विश्वसनीय साक्षी पर अवलंबित हों, तो उनकी बारीकी से जाँच।

(४) ऐसी घटनाओं की जाँच, जिनकी व्याख्या साधारणतः मान्य वैज्ञानिक नियमों से नहीं हो सकती; परंतु जिन्हें परलोकवादी पारलौकिक प्राणियों की करतूत बताते हैं।

(५) इन विषयों के संबंध के इतिहास पर प्रकाश डालने के लिये जितनी सामग्री उपलब्ध हो, उसे एकत्र करके सुव्यवस्थित रीति से उसका संग्रह करना।

इसमें संदेह नहीं कि भू-मंडल के और देशों की तरह योरप में भी अनादि काल से भूत, प्रेत, राक्षस, देवता आदि की बातें बराबर चली आई थीं। आए दिन अलौकिक बातें देखने और सुनने में आती रहीं। कितने ही पढ़े-लिखे लोग अपनी विद्वत्ता की रक्षा के लिये और कितने ही हँसे जाने के डर से अलौकिक सत्ता में विश्वास रखते हुए भी उससे मुकर जाते थे। कुछ को विश्वास होता ही न था। कितने ही ऐसी घटनाओं को देखकर और जानकर भी छिपाते थे। जो प्रकट करते थे, उनका कोई विश्वास नहीं करता था। परंतु घटनाएँ सदा से घटित होती आई हैं, और यद्यपि सरस्वती सदा गुप्त रहना चाहती हैं, तथापि ज्ञान के खोजियों से कब रहा जाता है? विज्ञान तो सभी अनजाने क्षेत्रों का पता लगाने में सन्नद्ध रहता है। यदि अलौकिक घटनाएँ होती ही हैं, तो उनकी उपेक्षा से ज्ञान की वृद्धि नहीं हो सकती। यदि उनकी व्याख्या अब तक के ज्ञात और मान्य नियमों से नहीं हो सकती, तो अवश्य ही उन घटनाओं से संबंध रखनेवाले नियम जानने को बाक़ी हैं। अतः इस क्षेत्र में खोज करने की ज़रूरत जानकर ही विद्वानों ने परान्वेषण-परिषत् की स्थापना की।

अपनी गति-विधि को निश्चित करने में इस नवजात परिषत् को अनेक कठिनाइयों का सामना भी करना था। अलौकिक घटनाएँ अनेक कारणों से हो सकती हैं। वे सच्ची और झूठी भी हो सकती हैं। धूर्त और छली लोग अपना स्वार्थ साधने, रोब गाँठने, यश लूटने तथा हिंसा-प्रतिहिंसादि अनेक अकथित और अकल्पित उद्देश्यों को पूरा करने के लिये भी झूठी अलौकिकता प्रदर्शित करते आए हैं। गधे भी शेर की खाल ओढ़कर धोका दे सकते हैं। कौआ भी मोर के पर खोंसकर इतराकर चल सकता है। धूर्तों की चालों से बचना परिषत् का पहला काम था। किसी घटना की सचाई में पूरी प्रतीति हो जाने पर उसकी परिस्थिति का पूरा अनुशीलन करना परम कर्तव्य होता है। उस संबंध में जहाँ तक जानना संभव है, वहाँ तक जब जान लिया, तब तर्क-वितर्क-पूर्वक विचार करना पड़ेगा कि ये घटनाएँ प्रकृति के किन अज्ञात नियमों से होती हैं। कोई अलौकिक घटना, यदि सत्य है, तो अप्राकृतिक तो हो ही

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहीं सकती। प्रकृति से बाहर तो अखिल विश्व की कोई सत्ता नहीं है। ज्योतिष में भारी-भारी विद्वानों ने नवतनु के, केप्लर के, लाप्लास के सब नियमों को लगाकर भी देखा कि 'उरण'-ग्रह की गति में गड़बड़ पड़ ही जाती है। संवत् १९०३ विक्रमी में इँगलिस्तान के आदम और फ़्रांस के लेवेरियर ने जब एक अज्ञात ग्रह की कल्पना करके हिसाब लगाया, तो उरण-ग्रह की गति ठीक हो गई। इस अज्ञात ग्रह का स्थान हिसाब के सहारे निश्चित करके साधारण दूरबीन लगाई गई; न देख पड़ा। फिर भी लोग हिम्मत न हारे। बहुत बड़ी-बड़ी दूरबीनों से उरण(वरुण)-ग्रह आख़िर को पकड़ा गया। वैवस्वत सौर मंडल की बाहरी सीमा यही वरुण-ग्रह का यात्रा-पथ है। इसी तरह यदि हमारे जाने हुए विज्ञान के नियमों का उल्लंघन करके कोई अलौकिक घटना होती है, तो हमें उसकी वास्तविकता का निश्चय करने के बाद यह सोचना चाहिए कि इस अलौकिकता का कारण अवश्य कोई प्राकृतिक विधान है, जो अब तक हमारा समझा हुआ नहीं है। उसकी खोज करना जिज्ञासु के लिये उचित ही है। परान्वेषण-परिषत् ऐसे ही विचारों की भित्ति पर स्थापित हुई।

(घ) इन उद्देश्यों का महत्त्व

यद्यपि विद्वत्संसार ने आरंभ में इस परिषत् की अवहेलना की, तथापि इसकी महत्ता की वास्तविकता को देखिए, तो अनुचित उपेक्षा और अवहेलना से विद्वत्ता स्वयं उपहासास्पद होती है। यदि रासायनिकों का नए मौलिक हूँढ़ निकालना, नए यौगिक तैयार करना कुछ भी महत्त्व रखता है, यदि भौतिक विज्ञानियों का प्रकाश, ताप, तड़ित् आदि के नए गुण-धर्म जानना बड़ी बात समझी जाती है, यदि जीव-वैज्ञानिकों का नए प्रकार के जीव-जंतुओं की खोज करना ठोस काम समझा जाता है, यदि नए ग्रहों और नक्षत्रों का पता लगाना ज्योतिषियों की खोज का चमत्कार माना जाता है, तो परान्वेषियों का इस बात का पता लगाना कि मरे-पीछे प्राणी की क्या गति होती है, उससे सौगुने अधिक महत्त्व की बात है, अत्यधिक ठोस काम है, बहुत भारी चमत्कार है। उस समय के गंभीर विचारकों में से कुछ तो अवश्य ऐसा ही समझते थे। प्रसिद्ध मिस्टर ग्लैड्स्टन ने तो कहा था—"इस परिषत् ने जिस काम में हाथ लगाया है, वह संसार में सबसे अधिक महत्त्व का, अत्यंत महान् कार्य है।"

यह एकदम नया और अछूता कार्यक्षेत्र था। और कार्यक्षेत्रों का मार्ग सुगम था। पहले के काम करनेवालों ने उनके लिये राजमार्ग, सड़कें, गलियाँ, पगडंडियाँ बना रक्खी थीं। काँटे-कूसे उखाड़ रक्खे थे। गड्ढे भर रक्खे थे। ऊबड़ खाबड़ धरती साफ़ होकर सुगम मार्ग निकल आया था। किंतु परिषत् का कार्यक्षेत्र अत्यंत दुर्गम था। चारों ओर अलौकिकता का अंधकार था। कहीं कोई मार्ग बना न था। अदृष्ट-पूर्व के घने जंगल को किसी ने साफ़ नहीं किया था। अगोचरता के गर्त और अप्रतीति के पहाड़ जगह-जगह बाधक थे। सब-के-सब खोजी नए यात्री थे। धूर्त, छली, डाकुओं, लुटेरों और चोरों से बचना था। सीधे रास्ते से चलकर कोई इष्ट को पा गया, तो कौन-सी बड़ाई का काम किया? क्या विशेषता हुई? परिषत् के सामने खोज की जितनी ही अधिक और दुस्तर कठिनाइयाँ थीं, उतनी ही उसके कार्य की महत्ता और काम करनेवालों की उतनी ही बड़ी योग्यता भी समझी जानी चाहिए।

(ङ) परिषत् के खोजी

आरंभ ही में पाश्चात्य दर्शन के प्रसिद्ध आचार्य हेनरी सिजविक इसके सभापति हुए। पीछे प्रोफ़ेसर क्रुक्स भी इस परिषत् के सदस्य और सभापति हुए। इसके सदस्यों और सभापतियों में बालफ़ोर (जो पीछे इँगलिस्तान के प्रधान मंत्री हुए), अमेरिका के प्रसिद्ध दार्शनिक प्रोफ़ेसर विलियम जेम्स, भौतिक विज्ञान के आचार्य, प्रोफ़ेसर बालफ़ोर स्टीवर्ट, साहित्याचार्य प्रोफ़ेसर मैयर्स, भौतिक विज्ञान के आचार्य सर ऑलिवर लाज, प्रोफ़ेसर बैरेट, प्रोफ़ेसर रिचेट, जिराल्ड बालफ़ोर, आचार्य सिजविक की विदुषी धर्मपत्नी, प्रोफ़ेसर लांग्ले, लार्ड रेले, रिपन के बिशप, डॉक्टर ब्रामवेल, प्रोफ़ेसर हैस्लॉप, प्रोफ़ेसर जे० जे० टामसन, पाडमोर इत्यादि गण्य-मान्य विद्वान् थे। इस तरह के बीसों विद्वान् इसके कामों में न केवल सहायता देते थे, बरन् स्वयं बड़ी मेहनत करते और अन्वेषण में तन-मन-धन से तत्पर रहते थे। डॉक्टर हडसन, श्रीयुत पाडमोर आदि कई विद्वान् तो परिषत् के काम में इतने दत्तचित्त हुए कि अपना सारा जीवन इसी में बिता दिया, इसी काम से अमेरिका और भारतवर्ष की कई बार यात्राएँ कीं, बीस-बीस बरस तक एक-एक स्थान में प्रवास किया, अनेक कष्ट झेले, अनेक धूर्तों और छलियों की पोलें खोलीं, और उनसे घोर शत्रुता मोल ली। परंतु ये थे भी ऐसे साहसी और उत्साही काम करनेवाले

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कि कठिनाइयों से त्रस्त नहीं हुए, असफलताओं से बैठ नहीं गए, बारंबार के उद्योग और श्रम से थक नहीं गए, अपयश से हतोत्साह नहीं हुए। हँसे गए, पर परवा न की। गालियाँ खाईं, पर ध्यान न दिया। पाडमोर अपने कर्तव्य में इतने दृढ़ और छानबीन में इतने कट्टर थे कि सच्ची-से-सच्ची घटना को प्रायः अमिट संदेह की दृष्टि से देखते थे, हस्तामलकवत् करके अभूतपूर्व छानबीन करते थे। बरसों इतनी कड़ाई करके जब उन्हें निश्चय हो जाता कि घटना सच्ची है, तो उसका उनका-जैसा कोई दृढ़ पक्षपोषक भी नहीं होता था। डॉक्टर हडसन का नंबर इन बातों में पाडमोर साहब के बाद था। आरंभ में तो ऐसा समझ में आया कि इनकी संदेहशीलता परिषत् के कामों में सफलता न होने देगी। यह कोई बात सच्ची मानने को तैयार ही न होते थे। और लोग इनके ढंगों से बेतरह झुँझलाते थे। परिषत् ने जितने काम आरंभ के वर्षों में किए, उनमें कोई ऐसा न था, जिस पर इनके संदेह की छाप न हो, या जो विशेषतः धूर्तता की पोल खोलने की दृष्टि से न हुआ हो। और, यह बात परिषत् के लिये बड़ी ज़रूरी भी थी। उसका तो मुख्य काम था धूर्तता तथा दंभ से बचना, और शुद्ध, अमिश्रित सत्य की पूरी खोज करना। परिषत् ने जिस विषय को अनुशीलनार्थ उठाया था, उसका उसे तनिक भी पक्षपात न था। बात उलटी ही थी। उन-उन विषयों पर अविश्वास और विरोध ही उसका मुख्य भाव था। डॉक्टर एल्फ़्रेड रसेल वालेस एक भारी वैज्ञानिक थे। डार्विन की तरह उन्होंने भी स्वतंत्र रूप से योग्यतमावशेष के जीव-वैज्ञानिक नियम की खोज की थी। वह इस परिषत् के सदस्य थे। उन्होंने परिषत् के इस भाव से खिन्न होकर पद-त्याग कर दिया। कारण दरसाते हुए उन्होंने लिखा—"प्रत्येक विषय में प्रत्येक घटना के लिये यदि इतने कड़े प्रमाण माँगे जायँगे, जितने परिषत् माँगती है, तो प्रत्यक्ष दर्शन-मात्र पर अवलंबित एक भी अनुभव को सत्य माने जाने का अवसर नहीं मिलेगा।" कोई सोलह बरस हुए होंगे, टाइम्स के एक लेख में किसी ने लिखा था—"परान्वेषण-परिषत्वाले जिस कोटि का प्रमाण माँगते हैं, वह किसी को फाँसी दिलानेवाले प्रमाणों की अपेक्षा पँचगुनी ऊँची होती है। और, पाडमोर साहब की कोटि तो दो-चार हाथ उससे भी ऊँची दिखती है।" स्टेड महाशय जगत्प्रसिद्ध 'रिव्यू ऑफ़ रिव्यूज़' पत्र के जन्मदाता संपादक थे। इन्हें तो परिषत् से इसीलिये घृणा हो गई थी कि उसकी विधि में इतना व्यर्थ संदेह और निरर्थक अविश्वास है कि वह पारलौकिक तथ्यों की वास्तविकता के ज्ञान में साधक होने के बदले उलटे बाधक हो रही है। इन सब बातों पर ध्यान करके पाठकों को यह निस्संदेह रूप से समझ लेना चाहिए कि जिन पारलौकिक तथ्यों की सचाई इस परिषत् ने, इन सारी रुकावटों के होते हुए भी, मान ली है, और जिनका उल्लेख उसके कार्य-विवरण में है, वे तथ्य इतने पक्के-पोढ़े होंगे कि उनके लिये किसी और गवाही-साखी की ज़रूरत नहीं। उन्हें स्वतःप्रमाण मानना ही चाहिए।

(च) परिषत् की खोज में दोष

साक्षी की जिन कड़ाइयों के कारण हमने परिषत् के उल्लिखित तथ्यों को स्वतःप्रमाण मानने की सलाह दी है, उन्हीं कड़ाइयों के कारण परिषत् ने अपनी ज्ञातृत्व-वृद्धि के असंख्य अवसर भी खो दिए। यदि किसी पारलौकिक प्राणी ने अपने पूर्वजन्म की कथा कही, तो उसका विश्वास कैसे किया जाय; क्योंकि जब पारलौकिक प्राणी हमारी अनेक बेजानी बातें जानने की शक्ति रखते हैं, जब उनका दिमाग़ हमसे अधिक चतुर और कार्यशील पाया जाता है, तो वे अपने किसी स्वार्थ-साधन के लिये सहज में झूठी बातें बनाकर हमें धोका दे सकते हैं, और किसी अपने अच्छी तरह जाने हुए व्यक्ति की जीवनी की जानकारी के सहारे अपने पूर्व-जन्म की कथाएँ गढ़ सकते हैं। परिषत् की कड़ाई के परिमाण से जन्मांतर का प्रमाणित होना ही असंभव था। प्रेतलोक का जीवन कैसा है? आचार-विचार के नियम कैसे हैं? क्या कोई शासन है? है, तो कैसा है? जन्म-मरण, रोग, आहार-विहार, निद्रा आदि, जो मनुष्यों के लोक में सर्वत्र देख पड़ता है, उस लोक में कैसा है? इन सब बातों के विवरण के लिये पारलौकिक साक्षी का विश्वास करने के सिवा दूसरा उपाय ही नहीं है। जहाँ प्रत्यक्ष प्रमाण तक की कड़ी जाँच की जाती है, वहाँ आप्त वाक्य को भला कौन पूछता है? प्रो० मैयर्स ने जब मरने के बाद अपनी पूरी पहचान दी, तब परलोक-संबंधी उनकी बातें कुछ विश्वास-योग्य समझी गईं। परंतु उन्होंने अपने लोक की बातें अवर्णनीय बतलाईं। कुछ अधिक लाभ न हो सका। बात यह है कि इस लोक में देश-काल-वस्तु की जो हमारी कल्पना है, उसी के अनुसार हम किसी वर्णन को अपनी बुद्धि में ला सकते हैं। किसी ने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहा, मेज़ पर किताब रक्खी थी, तो इस वाक्य से ही अपनी-अपनी कल्पना के अनुसार सुननेवालों के मन में वस्तु की भिन्न-भिन्न कल्पना आई। तीन पाँव की गोल, चार पाँव की चौखूँटी, भिन्न-भिन्न लकड़ियों की बनी, बड़ी-छोटी इत्यादि सैकड़ों प्रकार की मेज़ों की कल्पना हो सकती है। पुस्तक की भी हज़ारों तरह की कल्पना हो सकती है। रखने की विधि और स्थिति की तो लाखों तरह की कल्पनाएँ संभव हैं। 'थी' से समय की कल्पना तो अनंत हो जाती है। यह तो एक उदाहरण हुआ, जब कि देश-काल-वस्तु की त्रिदिक्-कल्पना की सीमा से बाहर जाने की हमारे मनोदेव को शक्ति ही नहीं है। फिर जहाँ वस्तु की त्रिदिक् से कम या अधिक एवं भिन्न परिमाण की कल्पना हुई, वहाँ पहले तो वर्णन करनेवाला उस भिन्न कल्पना के लिये शब्द कहाँ से लावे? शब्द का अर्थ तो हमारे अनुभव ने स्थिर कर रक्खा है। जिस विषय का हमें अनुभव ही नहीं, उसके लिये यदि पारलौकिक प्राणी ने कोई हमारा जाना हुआ शब्द कहा, तो उसका अपना अनुभूत अर्थ लगाकर, जन्मांध की तरह, टेढ़ी खीर की कल्पना करने लगना हमारा स्वाभाविक और अनिवार्य भ्रम होगा। यदि कोई नया शब्द कहा भी, तो वह हमारे लिये निरर्थक है। व्याख्या की, तो हमारे जाने हुए शब्द फिर वही भ्रम उत्पन्न करेंगे। फलतः अपने से भिन्न लोकों की व्यवस्था इतनी भिन्न होनी संभव है कि उसकी कल्पना हमारे इहलौकिक साधनों से हो नहीं सकती। अतः परलोक हमारे लिये अतींद्रिय हैं। परान्वेषण-परिषत् ने परलोक के संबंध में जितना भारी साहित्य संकलित किया है, वह अवश्य ही उसके घोर परिश्रम, अतुल स्वार्थत्याग और सतत प्रयत्न का साक्षी है; परंतु उसके साक्षी-परिमाण की कड़ाई ने कल्पना की उड़ान की गुंजाइश भी नहीं रक्खी। उसका साहित्य अपने विस्तार के परिमाण से बहुत कम ज्ञान-संपादक हुआ।

भगवान् की अघटित-घटना पटीयसी-माया अत्यंत दुस्तर है। उसे जानने के लिये मनुष्य के सारे उद्योग बाबा आदम के ज्ञान-फल चखने की तिथि से आज तक बराबर होते आए हैं। कदली के पत्ते या प्याज़ के दल खुलते जाते हैं; फिर-फिर नए दल ही देख पड़ते हैं। प्रकृति की खोज में पाश्चात्य जगत् लगा हुआ है। उसकी भूलभुलैया में बड़े-बड़े प्रवीण पड़े हुए हैं। जहाँ जाते हैं, नया दृश्य देखते हैं; पर उसका अंत नहीं होता। प्रकृति अपने रहस्य-रूपी चीर को भारी-भारी वैज्ञानिक-दुःशासनों के हाथों खिंचते देख हँसती है। प्रत्येक दुःशासन खींचते-खींचते थकता जाता है; पर सारी है कि बढ़ती ही चली जाती है। उससे संसार के पुस्तकालय भरते चले जाते हैं, और विद्वान् चकित हो विचारते हैं—"नारी है कि सारी है, कि सारी-बीच नारी है, कि नारी-बीच सारी है"; कोई बात समझ में नहीं आती।

परिषत् की नास्तिक खोज से माया का आवरण हट नहीं सकता। जब तक उस मायाधीश की शरण में जाकर सच्चे जिज्ञासु की तरह—"जाना चहहिं गूढ़ गति जेऊ"—श्रद्धा-भक्ति की भेंट न करे, और जब तक "दिव्यं ददामि ते चक्षुः" कहनेवाला कृपा न करे, तब तक माया के पार कोई जा नहीं सकता। "मामेव ये प्रपद्यन्ते मायामेतां तरन्ति ते।" पर ज्ञान-लवदुर्विदग्ध असुरों को ब्रह्मा भी समझा नहीं सकते।

न मां दुष्कृतिनो मूढाः प्रपद्यन्ते नराधमाः;
माययापहृतज्ञाना आसुरं भावमाश्रिताः।

रामदास गौड़

मनुष्यत्व की कसौटी

(१)

लकोट के प्रसिद्ध वकील पं० प्रभुदत्तजी आधे तो आर्य-समाजी थे, और आधे सनातन-धर्मी। उनकी मित्र-मंडली में भी दोनों ख़याल के आदमी थे। उनको मूर्ति-पूजा पर बहुत श्रद्धा थी। कहते, इससे मन की चंचलता दूर हो जाती है; हम पत्थर को नहीं, परमात्मा को पूजते हैं। पंडितजी अवतारवादी भी थे। तीर्थ-यात्रा का तो उन्हें इतना ख़याल था कि प्रति वर्ष कहीं-न-कहीं ज़रूर हो आते। राम और कृष्ण का पवित्र नाम सुनते, तो उनका चेहरा खिल जाता, जैसे सूरज निकलने पर सूरजमुखी फूल खिल उठता है। प्रातःकाल उठकर गीता का पाठ किए बिना भोजन न करते। परंतु इसके साथ ही वह विधवा-विवाह के भी पूरे पक्षपाती और अछूतों के भी मित्र थे। वह इस पहलू में हिंदुओं को गुनहगार समझते और आर्य-समाज के सुधार और प्रचार की बहुत प्रशंसा करते थे। स्त्री-शिक्षा के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संबंध में आपका यह मत था कि इसके विना हिंदुओं की गति ही नहीं है। मगर उनकी अधिक श्रद्धा अछूतोद्धार में थी। कचहरी से आते, तो साइकिल लेकर साँदले चले जाते। यह गाँव स्यालकोट से कोई चार मील की दूरी पर है। यहाँ ब्राह्मण-क्षत्रिय नहीं रहते; मेघ बसते हैं। प्रभुदत्त को देखकर उनके मुख-मंडल पर रौनक़ आ जाती थी। वहाँ का बच्चा-बच्चा उनसे परिचित था, जैसे वह वहीं के निवासी हों। प्रेम में घृणा कहाँ? जहाँ कहीं बैठते, उनसे घर-बाहर की बातें करते; कहीं उपदेश करते, कहीं उनके झगड़े मिटाते, कहीं मुक़दमे सुनते। उन गँवारों की सीधी-सादी बातें सुनकर पंडितजी को आत्मिक प्रसन्नता होती थी। सोचते, ये लोग कैसे सच्चे हैं, कैसे पवित्र! इनको दुनिया के छल-कपट नहीं आते, न बात-बात में ये झूठ बोलते हैं। हार्दिक भावों को ये छिपाना नहीं जानते, साफ़ और खरी बात मुँह पर कह देते हैं। कोई प्रसन्न हो चाहे अप्रसन्न, इन्हें परवा नहीं। ये गाँव के आदमी थे, इन्हें शहर का पानी न लगा था, न इन्होंने झूठी दुनियादारी की झूठी नीति सीखी थी। पंडित प्रभुदत्त इनके इन सद्गुणों पर लट्टू थे। प्रायः अपने इष्ट-मित्रों से कहा करते, ये सच्चे साधु हैं; इनके दिलों में खुदाई नहीं है। धन-दौलत से ग़रीब हैं, तो क्या; परंतु इनके पास प्रेम और पवित्रता के धन का अभाव नहीं। मुझे तो हिंदुओं की बुद्धि पर रोना आता है, जो इन्हें दूर हटाते हैं। खरे सोने को पीतल समझना दुर्भाग्य नहीं, तो और क्या है?

इन मेघों में एक लड़का बिसाखी था, बहुत नेक और ख़ूबसूरत, जैसे गऊ का जवान बछड़ा हो। पंद्रह-सोलह साल की उमर होगी, उर्दू-हिंदी पढ़ सकता था। उसकी हार्दिक इच्छा थी कि अवसर मिले, तो अँगरेज़ी के चार अक्षर भी पढ़ लूँ। परंतु उसके माता-पिता ग़रीब थे; उनमें यह शक्ति न थी। पंडितजी ने सुना, तो उसके लिये महीना बाँध दिया। मगर अभी एक ही दो महीने गुज़रे थे कि गाँव में प्लेग फट पड़ा। बिसाखी के मा-बाप, दोनों चल बसे। अब बिसाखी इस असार संसार में अकेला हो गया। क्या करे, क्या न करे? उसकी सहायता करनेवाला कोई न था, न घर में रुपया-पैसा था। हारकर पंडितजी के पास जाकर रोने लगा। पंडितजी नरम दिल के आदमी थे। उनसे ग़रीब लड़के का रोना न देखा गया। बोले—"तेरे मा-बाप मर गए, तो क्या हुआ? हम तो जीते हैं, तुझे भूखों न मरने देंगे।"

दूसरे दिन से बिसाखी उन्हीं के यहाँ रहने लगा।

(२)

पंडित प्रभुदत्त की स्त्री का नाम विद्यावती था। वह पंडितजी पर प्राण देती थी। उन्हें दो-चार घंटे भी न देखती, तो बावली हो जाती। मगर इसे मूर्खता कहो, या बाल्यकाल के संस्कार, उसे पति की ये बातें पसंद न थीं। प्रायः सोचती, यह करते क्या हैं? क्या हमारे बाप-दादा सारे मूर्ख ही थे, जो इनको छूना भी पाप समझते थे? कलजुग का ज़माना है, लोग आर्यसमाजी हो गए हैं। पहले ऐसा अंधेर कभी न होता था। अब तो धरम-करम का दुनिया को ख़याल भी नहीं रहा। मेघ-चमार भी कहते हैं, हम आर्य हैं। कहा करें, यहाँ उनकी सुनता ही कौन है? एक दिन पंडितजी ने कहा—"विद्या! तुम यह बताओ, वे हिंदू क्यों नहीं? उनके सिर पर मुझसे लंबी शिखा है; उनके दिल में राम-कृष्ण के लिये श्रद्धा है। वे रामायण-महाभारत पढ़ते हैं; उनके ब्याह पुरोहित कराते हैं। फिर उनसें घृणा क्यों करती हो?"

विद्या ने उत्तर दिया—"अब इन बातों का क्या उत्तर दूँ? मगर इतना जानती हूँ कि वे हिंदू नहीं हो सकते। तुम मेरी जीभ पकड़ सकते हो, पर मन नहीं पकड़ सकते। और, क्या वेद-शास्त्र सब झूठे हैं?"

पंडितजी हँसकर बोले—"तो पंडितानीजी! वेद-शास्त्र क्या कहते हैं?"

विद्या—"जाओ, तुम तो मज़ाक करते हो।"

प्रभुदत्त—"नहीं विद्या, मैं मज़ाक नहीं करता! ज़रा समझ-सोचकर बताओ। बिसाखी में क्या कीड़े पड़े हैं, जो उसे हम घर में न घुसने दें? कितना पाक-साफ़ है, कितना नितनेम का ख़याल रखनेवाला! स्नान किए विना खाना नहीं खाता। अब अपने मुहल्ले में एक सिरे से दूसरे सिरे तक फिर आओ, और तब बताओ कि इसके मुक़ाबले में कौन-सा ब्राह्मण-खत्री है, जिसे पवित्रता का इतना ध्यान हो? मेरा ख़याल है, एक भी नहीं।"

विद्या—"परंतु उन्होंने अपना धर्म तो बचा रक्खा है। तुम्हारी तरह किरानी तो नहीं हो गए?"

प्रभुदत्त—"बस, बस, यही तो तुम्हारी मूर्खता है। तुम धर्म किसे समझती हो?"

विद्या—"धर्म वही, जो अपना धर्म हो।"

प्रभुदत्त—"मगर धर्म के लक्षण क्या हैं?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विद्या—(हाथ जोड़कर) "तुम मुझे क्षिमा करो, तुमसे बहस कौन करे ? चलो भोजन कर लो, कचहरी का समय हो गया है। फिर कहोगे, देर हो गई !"

प्रभुदत्त—"बिसाखी खा चुका या नहीं ?"

विद्या—"अभी नहीं। तुम्हारे बाद खायगा।"

प्रभुदत्त को कुछ संदेह हुआ। विद्या की आँखों से आँखें मिलाकर बोले—"तुम उससे नाराज़ तो नहीं रहती हो ? देखना, अनाथ बालक है। उसका दिल न दुखाना, पाप लगेगा।"

विद्या को तीर-सा चुभ गया। उसने क्रोध-पूर्ण स्वर से पूछा—"यह बिसाखी मेघ का लड़का है, या तुम्हारा देवता ?'

प्रभुदत्त—"देवता से भी बढ़कर।"

विद्या—"तुम्हारे लिये होगा। मेरे लिये तो साधारण अछूत है।"

प्रभु०—"परंतु आज से अछूत न रहेगा।"

विद्या—"कैसे न रहेगा ?"

प्रभु०—"अभी देख लोगी। आज से वह मेरे साथ चौके में बैठकर भोजन करेगा।"

(३)

विद्या चौंक पड़ी। उसे विश्वास न आता था कि पंडितजी का वास्तव में यही अभिप्राय है। वह समझती थी, मुझे बनाते हैं। अब यहाँ तक थोड़े बढ़ जायँगे ? इतने में पंडितजी ने ज़ोर से पुकारा—"बिसाखी !"

बिसाखी अपने कमरे में बैठा पुस्तकें सँभाल रहा था। आवाज़ सुनते ही बाहर आ गया।

प्रभु०—"चलो, खाना खा लें।"

बिसाखी ने इसका तत्त्व नहीं समझा। सोचने लगा, आज क्या है। वह कभी पंडितजी की तरफ़ देखता, कभी विद्या की तरफ़। कुछ समझा नहीं।

प्रभु०—"तुमने सुना या नहीं ? चलो, मेरे साथ बैठो।"

बिसाखी—"पहले आप खा लें। अभी स्कूल जाने में बहुत देर है।"

प्रभु०—"स्कूल जब जी चाहे, जाना ; खाना पहले खा लो। चलो।"

बिसाखी समझ गया, पंडितजी अब न मानेंगे। वह यह भी समझ गया कि आज कुछ-न-कुछ बखेड़ा खड़ा हो जायगा। मगर वह बोल न सकता था। ग़रीब की हर तरह मौत है। बिसाखी धीरे-धीरे रसोई घर की तरफ़

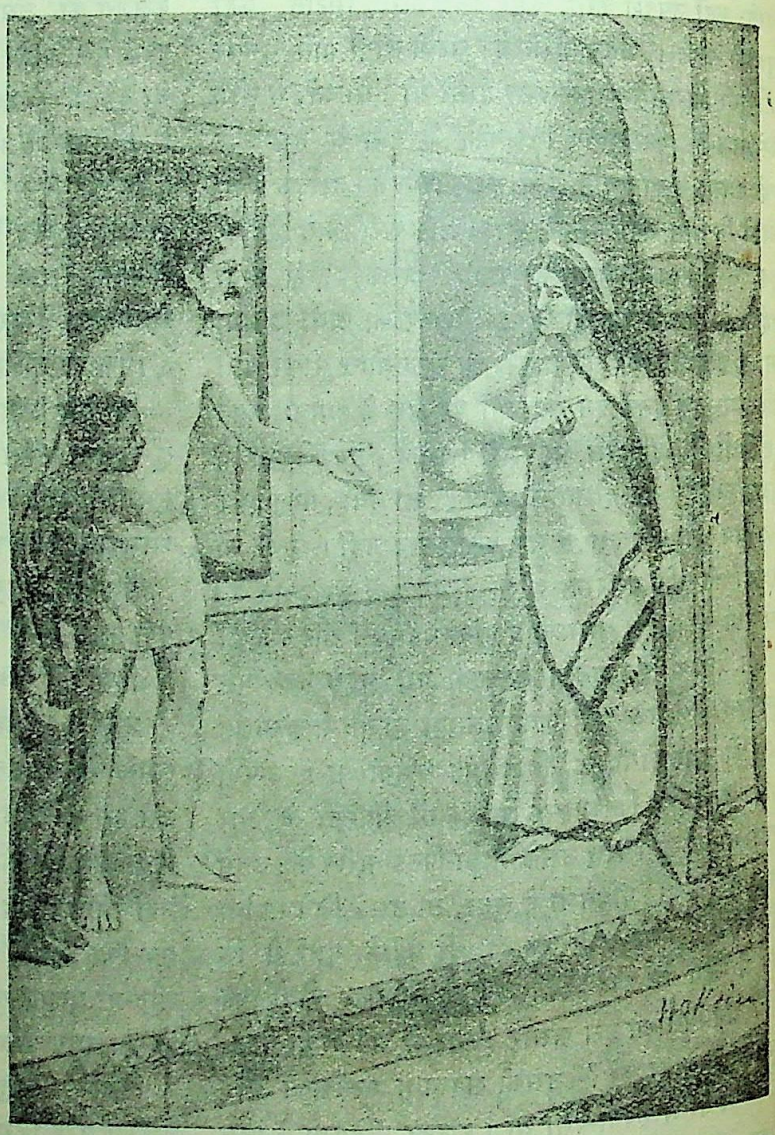

"ख़बरदार ! जो पाँव आगे बढ़ाया, तो पाँव ही तोड़ दूँगी। यह ब्राह्मण का घर है, चमार का नहीं।"

बढ़ा। सहसा विद्या ने उसका रास्ता रोक लिया, और कड़ककर बोली—"ख़बरदार ! जो पाँव आगे बढ़ाया,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खेलता था। वह बार-बार पति की ओर ताकती और झूमती थी। आज उसका पति अपने घर जा रहा है। आज उसकी आशाओं का उद्यान लहलहा रहा है।

एकाएक बिसाखी आकर गाड़ी के पास खड़ा हो गया, और बोला—'ज़रा ठहर जाइए। बाजा आ ले।"

विद्या०—(मुहब्बत से) "बाजा कैसा?"

बिसाखी—"हमने मँगवाया है। आपका जलूस निकलेगा।"

प्रभु०—"यह तुम लोगों को क्या सूझी? इस धूमधाम की ज़रा भी आवश्यकता न थी। जाओ, जाकर उन्हें रोक दो। नहीं मैं गाड़ी से उतर जाऊँगा।"

बिसाखी—"पंडितजी! आपकी आज्ञा सदा मानी है, और सदा मानेंगे। मगर आज तो हमारी ही मरज़ी चलेगी। आज हम प्रसन्नता से पागल हो रहे हैं। शायद आपको ज्ञान न हो, साँदले के सारे लोग आए हैं।"

प्रभु०—"मगर इस जलूस की ज़रूरत क्या है? लोग देखेंगे तो हँसेंगे।"

बिसाखी—"परमात्मा इसी तरह हँसाता रहे।"

प्रभु०—"यह तुम लोगों की सरासर ज़्यादती है। आख़िर सोचो तो सही।"

विद्या०—"चलो रहने दो, क्यों रोकते हो? इन ग़रीबों की यही ख़ुशी है, तो यही सही।"

इस समय विद्या को बिसाखी से किए हुए कटु व्यवहार पर पश्चात्ताप हो रहा था; रह-रहकर दिल में लज्जित हो रही थी। थोड़ी देर बाद गाड़ी चली। आगे-आगे बैंड बज रहा था, पीछे साँदले के मेघ भजन गा रहे थे, और सबके पीछे पंडितजी की गाड़ी चल रही थी, जैसे वर वधू को ब्याहकर लाया हो। इस समय उन सहृदय, प्रेमी, सच्चे देहातियों में कितना प्रेम था, कितना उद्गार! उनमें बनावट न थी, न दिखावे का भाव। उनम उच्च कोटि की श्रद्धा थी। यह लोकाचार न था, उनके हार्दिक भाव थे। यह स्वर्गीय दृश्य देखकर विद्या की आँखें खुल गइ। उसने पंडितजी की ओर देखा, और धीरे-धीरे कहा—"मुझ क्षमा

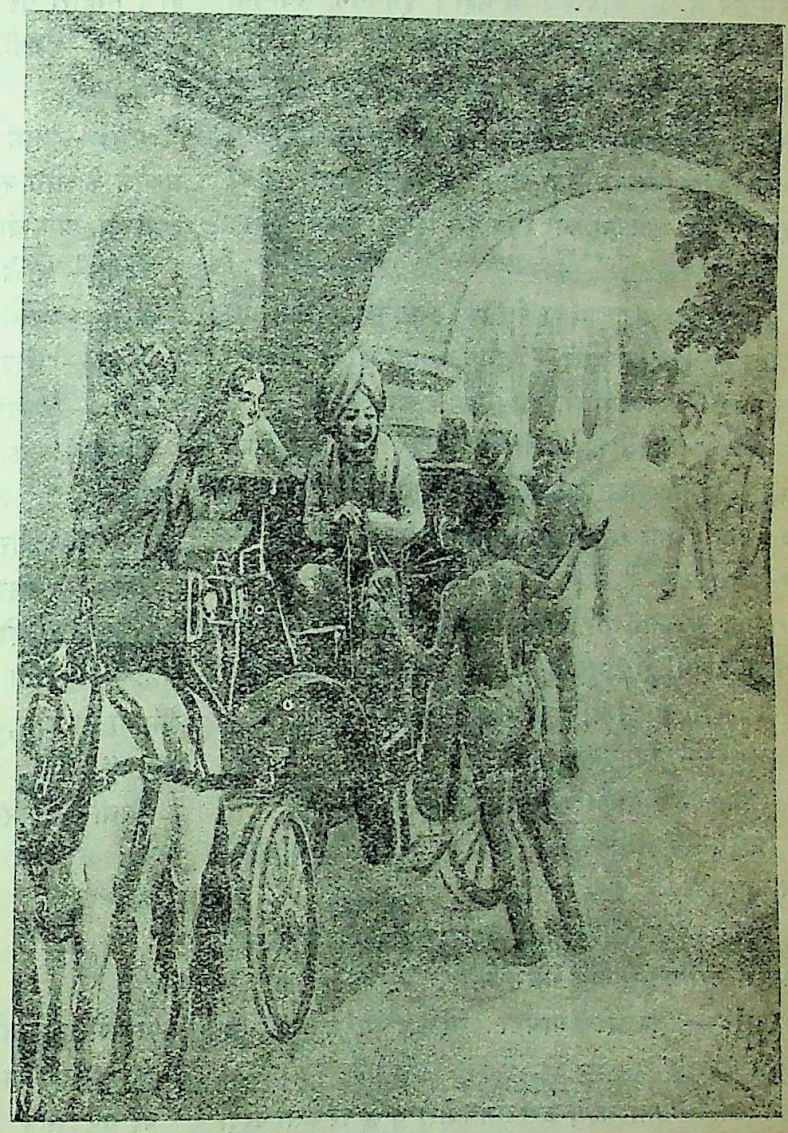

एकाएक बिसाखी आकर गाड़ी के पास खड़ा हो गया, और बोला—"ज़रा ठहर जाइए। बाजा आ ले।"

करना। इन लोगों की पवित्रता, सादगी और श्रद्धा ने मेरे विचार बदल दिए हैं। मैं समझती थी, ये पतित हैं, इनमें मनुष्यत्व न होगा; हमारे साथ मिलना चाहते हैं, पर इसके अधिकारी नहीं। मगर तुम्हारी बीमारी ने मेरा संदेह मिटा दिया। ये मनुष्यत्व की कसौटी पर पूरे उतरे हैं। हम इसी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शहर के रहनेवाले हैं, यहीं उत्पन्न हुए, यहीं पले। यहाँ हमारे मिलने-जुलनेवालों की कमी नहीं। ब्याह-शादी करें, तो सैकड़ों लोग आकर बधाई दें। मगर तुम्हारी बीमारी में यहाँ आनेवालों की संख्या इतनी थोड़ी थी कि उसकी कल्पना ही से लज्जा आती है। और, वह सहानुभूति भी वचन-रूप में थी, कार्य-रूप में नहीं। इने-गिने संबंधियों को छोड़कर एक आदमी भी ऐसा न निकला, जो तुम्हारी सेवा के लिये एक रात भी यहाँ रह जाता। और, ये आदमी, ये गिरे हुए लोग—इनको अपने काम भूल गए। इनको केवल तुम्हारी चिंता थी। इन्होंने दिन-रात एक कर दिए। इनमें कृतज्ञता का भाव हम हिंदुओं से भी अधिक है।"

यह सुनकर प्रभुदत्त का पीला मुँह आनंद से लाल हो गया। मुसकिराकर बोले—"तुम तो इन लोगों से घृणा करती थीं। अब बताओ, इनमें धर्म है या नहीं?"

विद्या—"इनमें धर्म हो या नहीं, लेकिन इनका धर्म सच्चा धर्म है। ये दिखावा नहीं करते, न आगे बढ़-बढ़कर बातें बनाते हैं। मगर समय पर अपनी लाज रख लेते हैं। मैंने इनको भी देखा है, और इनकी स्त्रियों को भी। उनकी सादगी, पवित्रता और धर्म-परायणता ने मेरे मन को मोह लिया है। ये सच्चे मनुष्य हैं। अब तुमसे एक प्रार्थना है। मुझे निराश न करना, मुझे बहुत दुःख होगा।"

प्रभु०—"क्या कहती हो?"

विद्या—"बिसाखी को घर बुला लो।"

प्रभु०—(मुसकिराकर) "मगर वह रसोई में खाना खायगा।"

विद्या—"अब यह मज़ाक छोड़ो। कहो, स्वीकार किया? अब मैं उसे अछूत नहीं समझती।"

प्रभु०—"तुम्हारी प्रार्थना स्वीकार न करूँगा, तो रहूँगा कहाँ!"

विद्या—"पता नहीं, उस समय मेरी बुद्धि पर कैसा परदा पड़ गया था। वह घटना आज याद आती है, तो लज्जा से सिर नहीं उठता।"

प्रभु०—"विद्या! आज मेरा शरीर ही स्वस्थ नहीं हुआ, मन भी नीरोग हो गया है। तुमने मुझे ख़ुश कर दिया। जी चाहता है, तुम्हें मुँह-माँगा इनाम दूँ। बोलो, क्या लोगी?"

विद्या—"जो चाहूँ माँग लूँ?"

प्रभु०—"हाँ, जो चाहो।"

विद्या—"इन सब भक्तों को अपने मकान पर बुलाकर खाना खिलाओ, ताकि सारे शहर को पता लगे कि हम इनसे घृणा नहीं करते।"

प्रभु०—(चौंककर) "विद्या! यह तुम क्या कह रही हो? तुम्हारा घर अपवित्र हो जायगा।"

विद्या—"नहीं, मेरा घर इन्हीं के चरणों से शुद्ध होगा।"

प्रभु०—"तुम तो एकदम दूसरे सिरे पर जा पहुँचीं। मुहल्ले के लोग क्या कहेंगे? यही कि पहले पति किरानी हुआ था, अब स्त्री भी क्रिस्टान हो गई।"

विद्या—"मुझे उनकी ज़रा भी परवा नहीं।"

प्रभु०—"रसोइया नौकरी छोड़ जायगा।"

विद्या—"छोड़ जाय। मैं खाना आप बना लूँगी।"

प्रभु०—"कहार पानी न भरेगा।"

विद्या—"एक पंप लगवा दो; कहार की ज़रूरत ही न रहेगी।"

प्रभु०—"और तुम्हारी सखियाँ?"

विद्या—"उनकी आँखें भी जल्द ही खुल जायँगी। अब तुम बहाने न ढूँढ़ो, दावत के लिये रुपए निकालो।"

प्रभु०—"जो चाहो, ले लो, तुमसे बाहर थोड़े हूँ। जुर्माना हो गया, अब माफ़ होने की कोई संभावना ही नहीं।"

विद्या मुसकिराने लगी।

सुदर्शन

अज्ञान

पान मैं न खाती कभी, तो भी ये अधर मेरे,
लाल-लाल होते जा रहे हैं क्यों प्रबाल-से?
बढ़ गए सत्य ही क्या मेरे ये विलोचन हैं;
लगते न-जानें क्यों वे मुझको विशाल-से?
ज़ोर-ज़ोर मुझसे चला है क्यों न जाता अब,
सीख-सी रही हूँ मंद चाल मैं मराल से;
सजनी, भला क्यों मुझे यह गुड़ियों का खेल,
खेलना न नेक भी है भाता कुछ काल से?

गोपालशरणसिंह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राष्ट्र-संघ

मुझे जिनेवा जाने का दो बार अवसर प्राप्त हुआ है। पहली बार केवल सैर करने के इरादे से वहाँ गया था। इस समय जिनेवा अंतर-राष्ट्रीय नगर है। वहाँ जाकर लोग राष्ट्र-संघ के कार्यालय को देखे बिना नहीं लौट सकते। अतएव पहली बार की जिनेवा-यात्रा में मैंने टुअरिस्ट (यात्री) की भाँति लीग के कार्यालय की सैर की, और उसका अध्ययन एक साधारण पढ़े-लिखे व्यक्ति की भाँति किया। दूसरी बार मुझे राष्ट्र-संघ की एज्युकेशनल एक्सपर्ट-कमेटी (शिक्षा-विशेषज्ञ-समिति) में भारतीय प्रतिनिधि की हैसियत से जाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। इस बार राष्ट्र-संघ को अंदर से देखने का अवसर मिला। उसकी आंतरिक अवस्था तथा कार्य-प्रणाली जानने की ज़रूरत पड़ी, उसके उद्देश्यों को समझना आवश्यक हो गया। अतएव मुझे उसका थोड़ा-बहुत अध्ययन करना पड़ा। इस लेख के पहले भाग में यात्री की दृष्टि से लीग का वर्णन होगा, और दूसरे में उसके उद्देश्यों और कार्य-प्रणाली पर विचार किया जायगा।

१. राष्ट्र-संघ का कार्यालय

जिनेवा स्विटज़रलैंड के एक कैंटन की राजधानी है। यह लेमाँ-झील (Lac Leman) के एक सिरे पर बसा हुआ है। इसका इतिहास बड़ा मनोरंजक है। स्वतंत्रता-प्रेम के लिये यह प्रसिद्ध है। प्रसिद्ध ख्रीस्ट-मत के सुधारक कैलविन और फ्रांस की राज्य-क्रांति के ऋषि रूसो के कारण इसकी बड़ी ख्याति है। अतएव ऐतिहासिक और राजनीतिक कारणों से, तथा उसके प्राकृतिक सौंदर्य के कारण भी, जिनेवा का राष्ट्र-संघ के कार्यालय के लिये चुना जाना कुछ आश्चर्य नहीं। राष्ट्र-संघ के दो कार्यालय इस नगर में हैं। एक है Secretariat of the League of Nations अर्थात् राष्ट्र-संघ का असली कार्यालय, और दूसरा है International Labour office अर्थात् अंतरराष्ट्रीय मज़दूर-कार्यालय। ये दोनों ही विशाल भवनों में स्थित हैं। अंतरराष्ट्रीय मज़दूर-कार्यालय का तो निज का मकान हाल ही में तैयार हो गया है, और अब वह उसमें चला गया है। वह नगर से बिलकुल बाहर—किंतु नगर की सीमा पर ही—झील के किनारे बना है। राष्ट्र-संघ का कार्यालय अभी अस्थायी रूप से एक विशाल भवन में है। यह भवन प्रेसीडेंट विलसन-'की' (Quai) पर झील के ऊपर ही है। पहले यह एक होटल था; किंतु थोड़ा-सा फेर-बदल करके वह काम के लायक़ हो गया है। इसमें कोई बड़ा 'हॉल' नहीं है। इसलिये जब 'एसेंबली' की बैठक होती है, तब नगर का 'केलविन-हॉल' लेना पड़ता है। कार्यालय का स्थायी भवन बनाने की तैयारी हो रही है।

स्टेशन से राष्ट्र-संघ के कार्यालय तक ट्राम गई है। वह उसके दरवाज़े पर ठहरती है। किराए की मोटर, टैक्सी या घोड़े-गाड़ियाँ भी बहुत मिल जाती हैं। यह मुख्य दरवाज़ा झील की ओर नहीं है। उतरते ही एक बंद दरवाज़ा मिलता है। इस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देशों में सर्दी के कारण दरवाज़े बंद ही रक्खे जाते हैं। वे इस तरह के बने होते हैं कि आप ही बंद हो जायँ। इस दरवाज़े को पार करते ही एक चौड़ा ज़ीना मिलता है। ज़ीने के पास ही कई एक चपरासी मिलते हैं। ज़ीने में होकर एक हॉल में पहुँचते हैं। इसमें बड़ी चहल-पहल रहती है। कार्यालय के पोर्टरों, अमेरिकन टुअरिस्टों, देश-देशांतर के यात्रियों, अख़बारों के रिपोर्टरों, कार्यालय के कर्मचारियों आदि की यहाँ भीड़ लगी रहती है। जिन दिनों किसी कमीशन या कमेटी की बैठक होती है, उन दिनों और भी अधिक भीड़ रहती है। यहाँ पहुँचते ही अंतरराष्ट्रीय वायुमंडल का आभास मिलने लगता है। किंतु यहाँ लोगों की राष्ट्रीयता पहचानना बड़ा कठिन है; क्योंकि सभी एक ही-सी पोशाक में रहते हैं। भाषा से भी अधिक पता नहीं लगता; क्योंकि लोग अधिकांश फ्रेंच-भाषा ही में बातचीत करते हैं। अँगरेज़ी बोलनेवालों की भी कमी नहीं; किंतु फ्रेंच-भाषा-भाषी ही अधिक मिलते हैं। फ्रेंच-भाषा का प्रताप यहाँ आकर मालूम पड़ने लगता है। अंतरराष्ट्रीय होने पर भी यहाँ लोगों में बाहरी आश्चर्य-जनक एकता है। खद्दर के आविर्भाव के पहले कांग्रेस में मराठी, मदरासी, पंजाबी, राजपूताना-शाही पगड़ियों और साफ़ों तथा रंग-बिरंगी एवं नाना प्रकार की पोशाकों का जो नेत्ररंजक दृश्य देखने में आता था, वह यहाँ नहीं है। हम लोग एक होकर भी बाहरी बातों तक में एक नहीं हो सके। यहाँ कम-से-कम बाहरी ऐक्य तो है। सभी एक-सी पोशाक में नज़र आते हैं। कहा जाता है, एसेंबली-भर में केवल हिंदोस्तानी महाराज का साफ़ा ही इस ऐक्य में निराला नज़र आता है। कहने का तात्पर्य यह कि राष्ट्र-संघ के अधिकांश सदस्यों में जो ऐक्य है, वह यहाँ बाह्य रूप से प्रत्यक्ष दिखलाई पड़ता है।

इस हॉल में बहुत-सी कुर्सियाँ और 'दीवान' पड़े हैं। कई एक नोटिस भी लगे रहते हैं। बिकनेवाले फ़ोटो-चित्रों के नमूने भी कभी-कभी लगा दिए जाते हैं। दाहनी ओर लिफ़्ट है। उसमें लाल मख़मल से मढ़ी हुई 'बेंच' पड़ी है। यह चौथे मंज़िल तक जाती है। एक बहुत चौड़ा ज़ीना भी ऊपर तक इसी 'हॉल' से चला गया है। हॉल के दाहने और बाएँ 'कारिडोर' चले गए हैं, जिनके दोनों ओर कमरे हैं। दाहनी ओर के 'कारिडोर' में पोस्ट-ऑफ़िस है। कई एक कमेटी-रूम हैं। इन कमरों में बंद मीटिंगें हुआ करती हैं। बाईं ओर के कारिडोर में भी कमरे हैं। यहाँ से पिछले हिस्से को एक रास्ता गया है। पीछे के बरामदे में राष्ट्र-संघ के इतिहास से संबंध रखनेवाले लोगों के चित्र आदि क्रमानुसार लगे हैं, और संक्षिप्त वर्णन आदि दिया गया है। इन्हें देखने के लिये यात्रियों की भीड़ लगी रहती है। इसी बरामदे से एक रास्ता बाईं ओर चला गया है, जिसके अंत में काँच का एक बड़ा कमरा है। इसमें इतना स्थान है कि चार-पाँच सौ दर्शक बैठ सकते हैं। जब किसी कमेटी या कमीशन की सार्वजनिक मीटिंग करनी होती है, तो इसी कमरे में होती है।

पहली मंज़िल में पुस्तकालय है। इसमें अंतरराष्ट्रीय विषय-संबंधी पुस्तकों का अच्छा संग्रह है। प्रत्येक देश के ऊपर कुछ-न-कुछ पुस्तकें मौजूद हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारत के ऊपर भी थोड़ी-सी पुस्तकें हैं। उनमें सर सुरेंद्रनाथ की आत्मजीवनी भी नज़र पड़ी। भारत-संबंधी पुस्तकें नहीं के बराबर हैं। अभी इस पुस्तकालय की अवस्था ही बहुत कम है; किंतु समय पाकर अवश्य ही यह पुस्तकों का एक बड़ा संग्रहालय हो जायगा। इसके साथ ही एक रीडिंग-रूम—वाचनालय—भी है, जिसमें संसार के सभी देशों के कुछ-न-कुछ पत्र आते हैं। लीग प्रत्येक देश से कुछ पत्र ख़रीदती है। भारत से भी दो पत्र लिए जाते हैं; किंतु कई एक हिंदोस्तानी पत्र ऐसे उदार हैं कि विना मँगाए ही वहाँ दर्शन दिया करते हैं।

भिन्न-भिन्न मंज़िलों पर भिन्न-भिन्न दफ़्तर हैं। लीग में कई विभाग हैं। प्रत्येक विभाग का दफ़्तर अलग है। इन विभागों में अर्थ-विभाग, Economic विभाग, Transit-विभाग, स्वास्थ्य-विभाग, Intellectual Co-operation-विभाग, अफ़ीम-विभाग, Mandate-विभाग, फ़ौजी विषय-संबंधी विभाग, स्त्रियों और बालकों की रक्षा का विभाग तथा प्रचार-विभाग मुख्य हैं। हरएक विभाग का एक सेक्रेटरी है। उसके अधीन आवश्यकतानुसार कर्मचारी होते हैं। इन सबके ऊपर एक मुख्य सेक्रेटरी हैं, जिसे Secretary General कहते हैं। उसके नीचे दो-तीन Under-secretary General हैं। इन सबके दफ़्तर अलग हैं। हरएक दफ़्तर के दरवाज़े पर उसमें काम करनेवाले मुख्य कार्यकर्ताओं के नाम लिखे रहते हैं। उन नामों के पढ़ने से इस स्थान की अंतरराष्ट्रीयता का पता फ़ौरन् लग जाता है। अँगरेज, डच, फ्रेंच, रूमानियन, इटैलियन, अमेरिकन, डेन, स्पेनियर्ड, पोर्चुगीज़, ग्रीक, सर्वियन, पोल, जापानी आदि सभी, राष्ट्रीयता के नाम पर, नज़र आते हैं। लीग में काम करनेवाले लोगों की संख्या चार सौ से अधिक है। किंतु इनमें केवल दो ही भारतीय हैं। एक तो हैं मदरास के डॉक्टर पुरुषोत्तम-पद्मनाभ पिल्ले और दूसरे बंबई के श्रीयुत दलाल, जो प्रयाग-हाईकोर्ट के मिस्टर जस्टिस दलाल के पुत्र हैं। परसाल दिल्ली के श्रीयुत नौनिहालसिंहजी थे; किंतु वह चले गए। उनके बाद मिस्टर दलाल आए हैं। डॉक्टर पिल्ले इकनामिक विभाग में हैं। यह अपने विषय के अच्छे विद्वान् हैं, और इनका यहाँ अच्छा मान है। श्रीयुत दलाल अभी हाल ही में आए हैं, और क़ानून-विभाग में हैं। कोई भी हिंदुस्तानी किसी उत्तरदायी पद पर नहीं है। फिर भी इस स्थान में दो भारतीयों का होना ही क्या कम अचरज की बात है! श्रीयुत दलाल से हमारी केवल एक ही बार मुलाक़ात हुई; किंतु डॉक्टर पिल्ले से कई बार मिलने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। यह भारतवासियों की बड़ी ख़ातिर करते हैं, और बड़े मिलनसार हैं। फ्रेंच तो आप अँगरेज़ी ही की तरह फ़र्राटे के साथ बोलते हैं।

लीग के सेक्रेटरी जेनरल के पद पर इस समय सर ऐरिक जेम्स ड्रमंड सुशोभित हैं। यह अँगरेज़ हैं, और युद्ध तथा पेरिस की संधि के समय बालफ़ूर साहब के प्राइवेट सेक्रेटरी थे। लीग के प्रथम सेक्रेटरी जेनरल का काम बड़ा नाज़ुक और बड़े ही उत्तरदायित्व का था; किंतु आपने अपने कर्तव्यों का संपादन बड़ी ही सफलता के साथ किया है। सेक्रेटरी जेनरल के नीचे दो अंडर-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सेक्रेटरी जेनरल हैं। इनमें एक तो इटैलियन हैं, और दूसरे जर्मन। जर्मन की जगह अभी तक एक जापानी थे। किंतु हाल ही में उन्होंने अवसर ग्रहण कर लिया है। उनका नाम है डॉक्टर आई० नितोबी। यह पहले टोकियो के राष्ट्रीय विद्यालय के प्रिंसिपल थे। आप बड़े ही सरल स्वभाव के विद्वान् हैं। इन्फार्मेशन सेक्शन के अध्यक्ष श्रीयुत पियरे कोमेर (M. Pierre Comert) फ्रेंच हैं। यह लीग के बहुत ही प्रभावशाली अधिकारियों में हैं। आप बड़े यात्री हैं। इनके विचार बड़े ही उदार तथा उच्च हैं। काव्य, दर्शन, राजनीति, सभी में आपकी रुचि है। आप बड़े ही मार्मिक आलोचक तथा विद्वान् हैं।

(शेष फिर)

श्रीनारायण चतुर्वेदी

अनुरोध *

संसृति के वे सुंदरतम क्षण यों ही भूल नहीं जाना;
वह उच्छृंखलता थी अपनी, कहकर मन मत बहलाना।
मादकता-सी तरल हँसी के प्याले में उठती लहरी;
मेरे निश्वासों से उठकर अधर चूमने को ठहरी।
मैं व्याकुल परिरंभ-मुकुल में बंदी अलि-सा काँप रहा;
छलक उठा प्याला, लहरी में मेरे सुख का माप रहा।
सजग सुप्त सौंदर्य हुआ, हो चपल चलीं भौंहें मिलने;
लीन हो गई लहर, लगा मैं निज नख से छाती छिलने।
श्यामा का नखदान मनोहर मुक्ताओं से ग्रथित रहा;
जीवन के उस पार उड़ाता हँसी खड़ा, मैं चकित रहा।
तुम अपनी निष्ठुर क्रीड़ा के विभ्रम से, बहकाने से;
सुखी हुए, फिर लगे देखने मुझे पथिक पहचाने-से।
उस सुख का आलिंगन करने कभी भूलकर आ जाना;
मिलन-क्षितिज तट मधु-जलनिधि में मृदु हिलकोर उठा जाना।

जयशंकर "प्रसाद"

---

* अप्रकाशित 'श्रीस्कंदगुप्त-विक्रमादित्य' नाटक से।

निवेदन

स्वारथ कौ पथ, गथ गूढ़ परमारथ कौ,
पारथ हू जोयो ना तौ और कौन ज्वैहै जो;
कहै 'रतनाकर' न रंच यह जाँचि सकैं,
जाँचै कहा साँच हीं प्रपंच प्राँच ख्वैहै जो।
धारैं उर-अंतर निरंतर प्रतीति यहै,
याही मुख मंतर हूँ अंत दुख द्वैहै जो;
ह्वै है हठि सोई जो तिहारे मन भैहै नाथ,
भैहै तुम्हें सोई सौ हमारौ हित ह्वैहै जो॥ १॥
होत्यो पंचतत्त्व मैं न सत्त्व तव संचित जो,
तो पै बुधि तिनकैं प्रपंच पढ़ती कहा;
कहै 'रतनाकर' गुनाकर न होते तुम,
तो पै भेदभावना विभूति बढ़ती कहा।
पावती न साँचौ जौ तिहारी मनसा कौं रंच,
तो पै कृति प्रकृति बिचारी गढ़ती कहा;
पावती हुलास-पौन जौ न तव पाँयनि कौ,
तो पै धूरि धमकि अकास चढ़ती कहा॥ २॥

जगन्नाथदास "रत्नाकर"

साहित्य और उसकी पाठ-प्रणाली

उपक्रम

आजकल जहाँ देखो, साहित्य-सुधार का बाज़ार गरम है। चारों ओर से लोगों की निरंतर यही ध्वनि सुन पड़ती है कि साहित्य में सुधार की बड़ी भारी आवश्यकता है। विश्वविद्यालयों से लेकर साधारण-से-साधारण संस्थाओं की समस्या यही है कि साहित्य की पाठन-प्रणाली किस तरह सुधरे। आजकल हमारे अँगरेज़ प्रोफ़ेसरों का कहना है कि भारतवासी ग्रेजुएट साहित्य का मर्म ही नहीं समझते। हम लाख सिर पटकते हैं, पर सब व्यर्थ। वे तो किसी भाँति मर-पचकर रटते हैं, और परीक्षा-सागर पार कर लेते हैं। फिर मिल्टन और शेक्सपियर कहाँ? उनका अँगरेज़ी ज्ञान तो "I

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

have the honour to be Sir, Your Most Obedient Servant" ही तक परिमित रहता है। इसका कारण यही है कि उनमें साहित्य का अनुराग ही नहीं। डॉक्टर की कड़वी दवा की भाँति एक बार उसे पी गए, फिर दुबारा नाम नहीं लेते। वे तो मन-ही-मन हमारे शेक्सपियर और मिल्टन को कोसते रहते हैं कि यदि ये मनहूस जन्म ही न लेते, या जनमते ही मर जाते, तो हमें इतनी माथापच्ची क्यों करनी पड़ती।

यह तो कहने की आवश्यकता ही नहीं कि अँगरेज़ों का यह उपालंभ अक्षरशः ठीक है। हम ही एम्० ए० पास हैं; पर अँगरेज़ी में एक निबंध तक नहीं लिख सकते। और हम ही क्यों, हमारे-जैसे और भी तो बहुत-से हमारे भाई पढ़े हुए हैं। तब क्या अँगरेज़ों का यह कथन सत्य ही है कि हममें साहित्यिक बीज नहीं? तुलसी, केशव, सूर इत्यादि के रहते भला हम यह बात क्योंकर मान सकते हैं? हम यह तो मानने को तैयार हैं कि हममें साहित्यिक अनुराग नहीं है, पर इससे कभी सहमत नहीं कि हममें साहित्यिक बीज नहीं है। हमारा कहना है कि साहित्यिक बीज तो हमारे मस्तिष्क में भरा हुआ है, पर अनुकूल परिस्थिति का अभाव है, जिस कारण फल-फूल नहीं उगते, और हमें भ्रम होता है कि बीज ही नहीं है।

अब प्रश्न यह है कि साहित्यिक बीज रहते हुए भी फल-फूल क्यों नहीं उगते? इस प्रश्न का उत्तर देने के पहले हम यह बतला देना चाहते हैं कि हममें जितनी आसानी से अपने साहित्य से प्रेम हो सकता है, उतनी आसानी से विदेशी साहित्य पर अनुराग नहीं उत्पन्न होता; क्योंकि हम पराए साहित्य की अपेक्षा अपना साहित्य अधिक समझते हैं। हम शेक्सपियर, शेली, मिल्टन, बायरन इत्यादि की कृतियों से तो अपने विद्यार्थी-जीवन में परिचित हो जाते हैं; पर तुलसी, सूर, केशव, देव इत्यादि के नाम तक नहीं जानते, या केवल नाम-मात्र जानते हैं। जब हमारी जड़ ही खोखली है, तो फल-फूल कहाँ से लगें? यदि एक साहित्य से हम भली भाँति परिचित रहें, तो अन्य साहित्यों से परिचित होते देर न लगे। कारण, मनुष्य-मात्र के भाव समान होते हैं, अतएव साहित्यों में भी समानता रहती है। सब जानते हैं, प्रोफ़ेसर यदुनाथ सरकार किस आसानी से अरबी भाषा सीख गए थे। अतएव साहित्य-प्रेम के लिये हमें हिंदी-साहित्य-प्रेम की आवश्यकता आ पड़ती है। अतएव हम इस निबंध में साहित्य-पाठ के उद्देश्य, क्षेत्र और मार्ग पर विचार करेंगे।

उद्देश्य

हमारे जितने काम हैं, वे दो प्रकार के हो सकते हैं, एक सापेक्ष और दूसरा निरपेक्ष। साहित्य-पाठ सापेक्ष काम है। प्रश्न यह है कि इसका उद्देश्य क्या है 'ॐ सत्यं, शिवं, सुंदरम्'—उपनिषद् के इस वाक्य में ब्रह्म का पूरा वर्णन है। हम यह जानते हैं कि ब्रह्म कारण और जगत् कार्य है। सत्कार्यवाद में कारण और कार्य की समता अत्यंत आवश्यक है। अतएव जगत् भी सत्यं, शिवं, सुंदरम् है; परंतु है अपूर्ण! हमारा विकास अपूर्ण से पूर्ण की ओर है, असत् से सत् की ओर नहीं। मनोवैज्ञानिकों ने भी मन के तीन गुण मान रक्खे हैं। ये तीन गुण क्रमशः ज्ञान, अनुभव और आकांक्षा हैं। इनसे ब्रह्म के तीनों गुणों की प्राप्ति होती है। यथा ज्ञान से सत्य, अनुभव से सुंदर और आकांक्षा से शिव मिलते हैं। साधारण-से-साधारण कामों का मतलब सत्य, सुंदर और मंगल की प्राप्ति है। अब यह देखना है कि साहित्य से इन तीनों का आगम कैसे होता है? संसार-यात्रा में, ब्रह्म की प्राप्ति में, साहित्य-पाठ का क्या स्थान है?

सत्य की प्राप्ति में साहित्य की सहायता

साहित्य से हमें प्राचीन तथा अर्वाचीन, दोनों ही भाव मिलते हैं। भावों के विकास का भी पता इससे चलता है। समाज की असली अवस्थाओं से भी हम परिचित होते हैं। यदि हम रामायण पढ़ें, तो हमें तत्कालीन सभ्यता का बहुत कुछ आभास मिलता है। इस प्रकार हम देखते हैं कि साहित्य से इतिहास को ख़ासी सहायता मिलती है। साहित्य एक दर्पण है, जिसमें हम समाज का रूप प्रत्यक्ष देख सकते हैं। हमारा जीवन छोटा और हमारे सामने काम बहुत हैं। संसार में इतने पदार्थ हैं कि हम सबका प्रत्यक्ष अनुभव नहीं प्राप्त कर सकते। अतीत की तो बात ही जाने दीजिए, हम वर्तमान को भी भली भाँति नहीं जान सकते। हम यह नहीं जान सकते कि इस समय कलकत्ते में क्या हो रहा है। कलकत्ता ही क्यों, हम राँची, नहीं-नहीं इस कोठरी की भी बात नहीं जानते, और न तो इतना जानने का हमें समय ही है। हमें आवश्यकता है चुने हुए अनुभवों की, और वे हमें साहित्य से मिल सकते हैं। हमारे साहित्यिक व्यक्तियों ने संसार-सागर में ग़ोते लगाकर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारे लिये ये रत्न निकाल रक्खे हैं। फिर हम घोंघों के पीछे क्यों दौड़ते फिरें? इनसे हमारे मन की सभी शक्तियों (अनुभव, स्मृति, कल्पना, तर्क इत्यादि) की भली भाँति पुष्टि होती है।

सुंदरम्

किसी कवि ने क्या ख़ूब कहा है—"साहित्य-सङ्गीतकलाविहीनः साक्षात् पशुः पुच्छविषाणहीनः।" अर्थात् संगीत, साहित्य और कला से हीन मनुष्य विना सींग-पूँछ के पशु के समान है। हमारे साहित्यिक मालियों ने हमारे लिये क्या ही सुंदर माला तैयार कर रक्खी है। सुंदरता दो प्रकार की होती है, एक अमूर्त सुंदरता और दूसरी मूर्त सुंदरता। किसी स्त्री की सुंदरता मूर्त है, और किसी भाव की सुंदरता अमूर्त। मूर्त सुंदरता किसी कारण से बिगड़ भी सकती है; पर अमूर्त सुंदरता अत्यंत आनंद-दायिनी बनी रहती है। आपकी प्रेमिका, जो आज यौवन की उमंग में परियों को भी मात कर रही है, कल कुरूप हो सकती है; पर भाव की सुंदरता में ज़रा भी अंतर नहीं पड़ सकता। वर्षों बीत गए; पर पुराने कवियों के पदों की माधुरी आज भी वैसी ही बनी है। उदाहरण लीजिए—

अमिय-हलाहल-मद-भरे, स्वेत, स्याम, रतनार,
जियत,मरत, झुकि-झुकि परत, जिहि चितवत इकबार।
कानन लौं अँखियाँ हैं तिहारी,
हथेली हमारी कहाँ लगि फैलिहैं।
राधेजू, मानो भलो कि बुरो,
आखिमूँदनो संग तिहारे न खेलिहैं।

आहा! कितने दिनों की कविताएँ हैं; पर सुंदरता में ज़रा भी अंतर नहीं पड़ा। न-जाने कितने दिनों की कलियाँ हैं; पर आज भी वैसी ही सुगंध है। अनुभव करने की शक्ति प्राप्त करें, फिर तो आनंद-सागर में ग़ोते लगाते रहेंगे।

शिवम्

पूर्णजी ने ठीक कहा है—"मुर्दा है वह देश जहाँ साहित्य नहीं है।" वास्तव में मुर्दा है। दूर जाने की ज़रूरत ही क्या, इस भारत ही को देखिए। सदियों से ठोकरें खा रहा है; पर कानों पर जूँ तक नहीं रेंगती। इसका क्या कारण है? 'अद्यैवोक्तं न बुध्यते', कारण तो हम पहले ही कह चुके हैं; पर स्पष्ट नहीं हुआ। हम उन्नति दूसरे के भरोसे चाहते हैं। यह बात तो न हुई है, और न होगी। हमें अपने पैरों खड़ा होना पड़ेगा। हम अँगरेज़ी-साहित्य के भरोसे नहीं उठ सकते। हमें अपनी भाषा और जातीयता की आवश्यकता है। इसका मतलब यह नहीं कि हम किसी साहित्य को घृणा की दृष्टि से देखते हैं। नहीं, हमें तो सबसे एक-सा प्रेम है। पर हम यह समझते हैं कि सबकी जड़ हमारा अपना साहित्य है। हम इसे प्राप्त कर लें, तो औरों को पाने में बहुत ही आसानी हो। संक्षेप में मतलब यह कि हम अपना साहित्य समझकर और भी साहित्य भली भाँति समझ ले सकते हैं। साहित्य की शक्ति तो ज़रा देखिए। हमारे यहाँ लड़ाइयों में योद्धा जब जाते थे, तो कवि उनकी उत्तेजना के लिये कविता पढ़ते रहते थे। यदि भूषण न होते, तो शिवाजी का इतना नाम कदापि न होता। कहते हैं, भूषण एक बार औरंगज़ेब के दरबार में गए। बादशाह ने कविता सुनाने के लिये कहा। आप बोले—"जहाँपनाह, अपना हाथ आप धो लें, तो मैं कविता सुनाऊँ।" बादशाह ने इसका कारण पूछा। तब आपने कहा—"बराबर शृंगार-रस की कविताएँ सुनते-सुनते आपका हाथ ठाँव-कुठाँव पड़ता होगा। मेरी कविता सुनते ही आपका हाथ मूछ पर जा पड़ेगा। अतएव वह अपवित्र हो जायगा।" बादशाह ने मन में क्रुद्ध होकर कहा—'अच्छा, यदि ऐसा न हुआ, तो सिर काट लिया जायगा।" भूषण ने कविता पढ़कर सुनाई, और बादशाह मूछ पर ताव फेरने लगे। कविताओं में इसी प्रकार की शक्ति है। हाय! अब भूषण और चंद बरदाई के समान एक भी कवि इस भारत-वर्ष में न रहा। धर्म पर संकट है। बहू-बेटियों की लाज जा रही है। नाना प्रकार के अत्याचार हो रहे हैं। पर हम सुख की नींद सो रहे हैं। हमें जगानेवाला कोई नहीं दिखाई पड़ता। कुछ माई के लाल हैं भी, तो उनका काम हमें प्राचीन काल के सपने दिखाना-भर रह गया है। किसी अँगरेज़ी कवि ने क्या ही ख़ूब कहा है—

Trust not future however pleasant,
Let the dead past bury its dead.
Work Work in the living present,
Heart within and God overhead

अर्थात् भविष्य और भूतकाल की चिंता छोड़कर वर्तमान काल में मन लगाओ, और ईश्वर का ध्यान करके काम किया करो। आह! आज हम यह सत्य भूल गए हैं, इसीलिये हमारी ऐसी शोचनीय दशा हो रही है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्षेत्र

अब वह ज़माना नहीं रहा, जब लड़के शिक्षकों के हाथ के पुतले ही समझे जाते थे। अब लोग बालकों का अस्तित्व भी मानने लग गए हैं। उनकी प्रवृत्ति और अवस्था के अनुसार ही पढ़ाई होती है। यही बात साहित्य में भी लागू होती है। हम साहित्य की पढ़ाई लड़कों की अवस्थाओं के अनुसार ही करेंगे। आरंभ में तो हमारे लड़के ढेले-पत्ते की कहानी सुनने में मन लगाते हैं; क्योंकि उस समय उनकी कल्पना विशृंखल रहती है, और वे सभी पदार्थों में प्राण मानते हैं। इसके बाद पशु-पक्षियों की कहानियाँ सुनते हैं। धीरे-धीरे इसी प्रकार गल्प, उपन्यास, नाटक इत्यादि में उनका प्रवेश होता है।

साहित्य की प्रवेशिका भाषा है। बिना भाषा की जानकारी के साहित्य में हमारे सभी प्रयास व्यर्थ, अरण्य-रोदन के समान, हो जाते हैं। अतएव हमारे लड़कों को भाषा का ख़ासा अभ्यास होना चाहिए। प्रायः देखा जाता है कि साहित्य-पाठ भाषा-पाठ ही का रूप धारण करता है। शब्द और वाक्य के अर्थ बतला दिए गए। बस, साहित्य-पाठ समाप्त हुआ। हमें तो इस प्रकार का साहित्य-पाठ कुछ भी नहीं जचता। हमारे विचार में साहित्य-पाठ केवल अर्थ-पाठ नहीं है। जब तक बच्चे लेखकों की मानसिक स्थिति से भली भाँति परिचित न होंगे, तब तक वे न तो उनकी कृतियों पर अनुराग ही करेंगे, और न उन्हें सहानुभूति ही होगी। इसलिये हम अपने उस मार्ग की ओर झुकेंगे, जिससे चलकर अपने लक्ष्य तक पहुँच सकते हैं।

मार्ग

मार्ग बतलाने के पहले हम यहाँ यह बतला देना चाहते हैं कि हमारे यहाँ अंधे गुरु और बहरे चेले की कहावत चरितार्थ होती है। हमारे शिक्षकों को न तो साहित्य का ज्ञान होता है, और न प्रेम ही। शोक की बात है कि इन्हीं के हाथों में साहित्य-ज्ञान और प्रेम उत्पन्न कराने का काम है। अब प्रश्न यह है कि जिसमें हमें स्वयं प्रेम नहीं है, उस पर हम बालकों का प्रेम कैसे उत्पन्न कर सकते हैं। आजकल हिंदी-शिक्षा का भार तीन प्रकार के शिक्षकों पर है—(१) हिंदी जाननेवाले ग्रेजुएट, (२) संस्कृत के पंडित और (३) हिंदी-शिक्षक। पर इन तीनों में से किसी में इतनी योग्यता नहीं कि वह अपने काम का समुचित संपादन कर सके। पहले तो हिंदी जाननेवाले ग्रेजुएटों ही को लीजिए। विश्वविद्यालयों में हिंदी का कितना आदर है, यह किसी से छिपा नहीं। प्रायः हिंदी और संस्कृत के एक ही व्याख्याता रहते हैं। हम यह मानते हैं कि हिंदी संस्कृत की पुत्री है। पर हम यह कदापि नहीं मानते कि संस्कृत-साहित्य से परिचय रखने ही से हिंदी-साहित्य का परिचय हो जाता है। यह कहना तो बिलकुल ही मूर्खता है। अतएव कॉलेज के व्याख्याताओं में बहुत-से ऐसे हैं, जो हिंदी से बिलकुल कोरे हैं। फिर कोर्स में भी हिंदी की एकआध पुस्तक से अधिक नहीं रहती, और वह भी कभी पढ़ाई नहीं जाती। यह हम अपने अनुभव की बात कह रहे हैं। संस्कृत-विद्यालयों में तो हिंदी का नाम तक नहीं रहता। फिर हमारे पंडितजी यदि "एक समैया के बिखै में" कहें, तो आश्चर्य ही क्या! इन्हीं पंडितों के पढ़ाए ग्रेजुएट हैं। फिर ये हिंदी कहाँ तक जानें? बाक़ी बचे बी० ए० अथवा सी० टी०-पास हिंदी-शिक्षक। सो इनके पढ़ानेवाले भी संस्कृत-ग्रेजुएट या संस्कृत-पंडित ही हैं। पाठ्य पुस्तकों में समालोचना, तुलना, विकास इत्यादि का नाम तक नहीं रहता। प्रश्नों की फ़ाइल उलट डालिए। बस, अर्थ लिखो या सप्रसंग अर्थ लिखो—नहीं तो, किसी ओकारांत स्त्रीलिंगशब्द का रूप लिखो, और सी० टी० की उपाधि लो। रचना भी व्याकरण के अंतर्गत है। सफलता की संख्या बस, नाम ही भर की है।

अस्तु, मान लिया कि किसी प्रकार यथोचित शिक्षक मिल भी गया। अब प्रश्न यह है कि वह अपने विद्यार्थियों को किस मार्ग पर ले जायगा? ऊपर हम बतला चुके हैं कि केवल अर्थ बतलाना साहित्य-पाठ नहीं है। इसे तो हम और आप भाषा-पाठ कह सकते हैं। अतएव अर्थ लगाने का काम तो लड़कों ही को सौंप देना चाहिए। इसलिये लड़कों में कोष से अर्थ निकालने और प्रसंग के अनुसार उसे वाक्य में लगाने का अभ्यास डालना चाहिए। इससे बालकों में स्वतंत्रता आती है, और कोष देखने की कला भी वे सीख लेते हैं। कोष देखकर अर्थ लगाना साहित्य का एक मुख्य प्रवेशक है। यह भी एक कला है, और अन्य कलाओं की भाँति इसे भी अभ्यास से बहुत कुछ सहायता मिलती है। हम देखते हैं, हमारे कॉलेजों और स्कूलों का इस ओर ज़रा भी ध्यान नहीं। हमारे यहाँ चेंबर्स और ऑक्सफ़ोर्ड तो घर-घर दिखाई पड़ते हैं; पर हिंदी-शब्दसागर, शब्द-पारिजात आदि बिरले ही घर में मिलते हैं। जब हिंदी-कोष ही

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहीं, तो फिर उनका उपयोग कहाँ से हो ? इसलिये हमारे यहाँ के शिक्षक केवल कोष का काम देते हैं; अर्थ बतलाना ही उनका काम रह गया है। अतएव हमारे यहाँ साहित्य-पाठ में जो काम लड़कों को करना चाहिए था, वह शिक्षकों को करना पड़ता है। हमारा विचार है कि शिक्षक पाठ आरंभ करने के पहले ही विद्यार्थियों को घर से एक बार पढ़कर कोष के सहारे अर्थ लगाने के लिये आदेश करे। इस पर यदि कोई यह कह उठे कि तब शिक्षक का काम ही क्या रह गया, तो हमारा नम्र निवेदन है कि साहित्य-पाठ इतने ही से समाप्त नहीं होता। हम साहित्य की उपमा कली से दे चुके हैं। अब देखें, इस उपमा से कुछ सहायता मिलती है अथवा नहीं। हम कली का अध्ययन करना चाहते हैं। हमें यह देखना पड़ेगा कि इसकी उपज कैसी ज़मीन में हुई है ; इसमें और अन्य कलियों में क्या समानता है; इसका कहाँ तक विकास हुआ है ; इसकी पंखड़ियों में कैसा संबंध है इत्यादि-इत्यादि। इसी प्रकार साहित्य का विवरणात्मक, तुलनात्मक, विकासात्मक अध्ययन हमें करना पड़ेगा।

जैसा हम ऊपर बतला चुके हैं, हमारे लड़के कोष के सहारे पाठ का सरल अर्थ लगा चुके हैं। अब, हम पाठ इस ढंग से पढ़ते हैं कि संदर्भ का प्रभाव हमारे लड़कों पर पड़ता है। लेखक की मानसिक अवस्था का, जिसका फल हमारा प्रस्तुत पाठ है, लड़कों को हम अनुभव कराते हैं, जिससे हमारे लड़कों में सहानुभूति और उत्सुकता प्रकट होती है। कलिका की प्रत्येक पंखड़ी, पाठ का प्रत्येक भाव, हम भली भाँति जाँचते जाते हैं। साथ-ही-साथ वे भाव किस ख़ूबी के साथ सजे गए हैं, यह भी हम बतलाते जाते हैं। यह हमारा विवरणात्मक अध्ययन है।

पाठ के भाव क्यों ऐसे हुए ? ऐसे न रहकर ऐसे रहते तो क्या हानि थी ? भाव किस दरजे के हैं, और क्यों ? अलंकारों के प्रयोग कितने हुए हैं, कैसे हुए हैं और क्यों हुए हैं ? इन भावों और अलंकारों के बदले हम दूसरे रख सकते हैं अथवा नहीं ? उपमा, रूपक इत्यादि ठीक घटाए गए हैं अथवा नहीं ? इस प्रकार का अध्ययन हमारा समालोचनात्मक अध्ययन है।

इस भाव के समान और कोई भाव है अथवा नहीं ? यदि है, तो हम उसका उल्लेख करते हैं। इन दोनों समान भावों की तुलना कर देखते हैं कि किसमें विशेषता है ? किस लेखक ने भली भाँति भाव का निर्वाह किया है ? कौन लेखक अच्छा है, और क्यों ? इस प्रकार और भी कितनी ही समस्याएँ हम हल करते हैं। यही हमारा तुलनात्मक अध्ययन है।

विकासात्मक अध्ययन में हमारी समस्या साहित्य के विकास की है। हम देखते हैं कि हमारे साहित्य का कितना विकास हुआ है। हमारे लेखक का क्या स्थान है, इस बात का भी हम पता लगाते हैं। इसी अध्ययन में हम लेखक का समय भी नियत करते हैं। इसमें हमें हिंदी-साहित्य के इतिहास का आश्रित होना पड़ता है।

उपसंहार

"कर्म-प्रधान विश्व करि राखा।" गोस्वामीजी की इस चौपाई से कर्म की प्रधानता स्पष्ट है। ठीक ही है। संसार का जितना उपकार हम काम से कर सकते हैं, उतना और किसी प्रकार नहीं। साहित्य में भी जितना उपकार हम साहित्य-सेवा से कर सकते हैं, उतना निरा अध्ययन से नहीं हो सकता। अतएव रचना की प्रधानता सर्वमान्य है। इसलिये रचना के विषय में हम कुछ संक्षेप में कहेंगे।

रचना को हम तीन अवस्थाओं में बाँटते हैं। यथा परतंत्र, किंचित् स्वतंत्र, स्वतंत्र। प्रारंभिक अवस्था में हम अपने बालकों से अच्छे-अच्छे संदर्भों की प्रतिलिपि के लिये कहते हैं। इससे उन संदर्भों के भावों से वे परिचित हो जाते हैं। साथ-ही-साथ शैली का भी ज्ञान हो जाता है। प्रतिलिपि के पहले हम उक्त संदर्भों को भाव-पूर्ण रूप से पढ़ देते हैं। इसके उपरांत दूसरी अवस्था में हम विषय नियत कर देते हैं, शीर्षक लिखा देते हैं, और हमारे विद्यार्थी लेख लिखते हैं। यहाँ उन्हें स्वयं विचारने का अवसर मिलता है। आगे चलकर हम न तो शीर्षक लिखाते हैं, न समझाते हैं। विद्यार्थी उन पुस्तकों के सहारे निबंध तैयार करते हैं। फिर केवल मुख्य शीर्षक ही के सहारे निबंध तैयार करने लगते हैं।

बालकों की प्रवृत्तियाँ एक-सी नहीं रहतीं। कोई कुछ करना चाहते हैं, तो कोई कुछ। हम प्रवृत्तियों की अवहेलना करके बालकों की शिक्षा में कभी समर्थ नहीं हो सकते। आजकल की शिक्षा में सबको ठोक-पीटकर वैद्यराज बनाने का बड़ा भारी दोष आ गया है। भारतवर्ष की प्राचीन शिक्षा में लोगों का ध्यान इस ओर था। इसी कारण जातियों की सृष्टि हुई थी, और जाति

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ही के अनुसार शिक्षा दी जाती थी। रचना में भी हम इसी दोष के भागी हैं। सब बालकों को एक प्रकार की रचना लिखने के लिये कहना उनकी प्रवृत्तियों का निरादर करना है। सब एक प्रकार की रचना में आनंद नहीं उठा सकते। इसी विचार से हम बालकों की प्रवृत्तियों पर भी ध्यान देते हैं। जिसकी जैसी प्रवृत्ति रहती है, जैसा हम देखते हैं, उसे उसी प्रकार की रचना देते हैं। इस प्रकार हमारे विद्यार्थियों में से कुछ कहानी, कुछ कविता, कुछ गल्प, कुछ उपन्यास और कुछ नाटक इत्यादि लिखने में समर्थ होते हैं। ❀

"बाण"

अभिभाषण †

(उत्तरार्द्ध)

हाँ तक तो मैंने यथाशक्ति संक्षेप में हिंदी-साहित्य की वर्तमान स्थिति पर प्रकाश डालने का प्रयत्न किया है। अब मैं हिंदी-साहित्य के निर्माण, उन्नति और प्रचार के लिये कुछ उपायों का निर्देश करना—एक कार्यक्रम उपस्थित करना—चाहता हूँ।

इस समय सर्व-श्रेष्ठ, सार्वदेशिक, सर्वमान्य संस्था हिंदी-साहित्य-सम्मेलन ही है। उसी के द्वारा आसानी से, सुशृंखला के साथ, हिंदी-साहित्य की उन्नति और प्रगति से संबंध रखनेवाले सब कार्य सुसंपन्न हो सकते हैं। इसलिये मैं अपना कार्य-क्रम हिंदी-साहित्य-सम्मेलन के संचालकों की सेवा में ही समुपस्थित करूँगा।

हिंदी-साहित्य-सम्मेलन ने अपनी इतनी आयु में प्रचार का कार्य बहुत कुछ कर डाला है। उसने साहित्य के निर्माण और प्रचार के संबंध में भी उदासीनता नहीं दिखलाई। पर सत्य के अनुरोध से यह कहना ही पड़ता है कि इस दिशा में उसने अभी तक यथेष्ट कार्य नहीं कर पाया। इसका एक कारण यह भी है कि देश के प्रतिभाशाली साहित्यिक पुरुषों की शक्तियाँ अभी सम्मेलन के भीतर काम करने का अवसर नहीं पा रही हैं। यह सच है कि वे शक्तियाँ अलग से भी अपना काम कर सकती हैं, और कर भी रही हैं; किंतु यदि वे एक समूह के रूप में मिलकर काम करें, तो उनका काम सिलसिलेवार और अब से कहीं अच्छा हो। इसलिये, मेरी राय में, सम्मेलन को चाहिए कि वह अब सब काम, मिम्न-लिखित रूप से, अलग-अलग कई विभागो में बाँट दे। अब वह समय आ गया है कि सम्मेलन केवल नागरी-लिपि और हिंदी-भाषा के प्रचार में ही अपनी सारी शक्ति ख़र्च न करके, स्थायी साहित्य के निर्माण, प्रचार और संस्कार में प्रवृत्त होकर, अपने नाम को सार्थक करे। मेरी राय में वह निम्न-लिखित छः समितियाँ बनाकर उनके द्वारा इस प्रकार अपने कार्य को सुसंपन्न करावे—

१. नियामक समिति
२. संचालक समिति
३. प्रचारक समिति
४. साहित्यिक समिति
५. संपादक समिति
६. समालोचक समिति

१. नियामक समिति

सम्मेलन के जो सभापति होते हैं, वे अधिवेशन के समय सभापति के आसन को सुशोभित करने के सिवा शायद और कुछ काम नहीं करते। अधिक-से-अधिक साल-भर सभापति बने रहने का कष्ट उठाते हैं। आज तक के किसी सभापति ने, जहाँ तक मैं जानता हूँ, दूसरे वर्ष के अधिवेशन में साहित्यिक प्रगति पर अपना ऐसा कोई आलोचनात्मक वक्तव्य नहीं पेश किया, जिसमें यह दिखाया गया हो कि साल-भर क्या-क्या काम किए गए, किस हद तक प्रस्तावों को सफल करने की चेष्टा की गई, साहित्य की क्या स्थिति रही इत्यादि। यदि सभापति महोदय साल-भर की प्रगति पर ध्यान देकर ऐसे वक्तव्य लिखते, तो वे बहुमूल्य होते, और उनसे साहित्य का बड़ा उपकार होता। प्रत्येक सभापति एक वर्ष के बाद सम्मेलन से सभी संबंध तोड़कर तटस्थ हो बैठता है। ऐसा न होना चाहिए। मेरा कहना यह है कि सभी भूतपूर्व सभापतियों की एक समिति बना दी जाय, और उसका काम हो सम्मेलन पर कमांड रखना। हर साल उस साल का सभापति इस समिति का भी सभापति रहे। दूसरे वर्ष वह सभ्य-रूप से इसमें शामिल रह सके। इसके मेंबरों का कार्य होगा सम्मेलन के

---

* यह निबंध राँची-ज़िले के डिस्ट्रिक इंस्पेक्टरों की कानफ्रेंस में पढ़ा गया था।

† गुरुकुल की रजतजयंती के शुभ अवसर पर, युक्तप्रांतीय सप्तम हिंदी-साहित्य-सम्मेलन के सभापति-पद से, दिया गया अभिभाषण।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मार्ग का निर्णय करना, उसे उसके आवश्यक कर्तव्य सुझाना और उनके संपादन की रीति या उपाय बतलाना। यह समिति अपने सभ्यों से उत्तम ग्रंथ भी लिखा सकती है। विवादग्रस्त समस्याओं को हल करना भी इसका कर्तव्य हो सकता है। इससे बड़ा लाभ होगा। महानुभव, योग्यतम व्यक्तियों की सहायता से सम्मेलन का संचालन अच्छी तरह होगा। सभापति महोदय अपने को सदैव सम्मेलन का अंगीभूत समझने की ज़िम्मेदारी में बँधे रहेंगे, और कुछ कार्य करते रहने को बाध्य होंगे।

२. संचालक समिति

इस समिति का कर्तव्य होगा नियामक समिति से मिलकर, उसके परामर्श के अनुसार, सम्मेलन का संचालन करना; अर्थात् जो प्रस्ताव सम्मेलन के अधिवेशन में पास हों, उनकी पूर्ति के लिये कार्य-क्रम तैयार करना, उन्हें भिन्न-भिन्न विभागों में बाँटना और कार्यकर्ताओं में किसी तरह का मतभेद या वैमनस्य उत्पन्न होने पर उसका समीचीन समाधान करना।

३. प्रचारक समिति

इस समिति में परिश्रमी, कर्मवीर व्यक्तियों का चुनाव होना उचित होगा। ऐसे आदमी, जो तन्मय और तत्पर होकर अपने काम में जुट जाते हैं, इस समिति में रहने चाहिए। यह समिति देश में, बाहर उपनिवेशों में और यथासंभव विदेशों में भी, भारतीय समाज में, हिंदी का प्रचार करेगी, उनके हृदय में हिंदी और नागरी-लिपि के प्रति प्रेम उत्पन्न करेगी। इसका काम यह भी होगा कि सत्साहित्य के अधिकाधिक प्रचार का उद्योग करे।

दूसरी और तीसरी समितियाँ संभवतः सम्मेलन में विद्यमान हैं; पर उनका कार्य इस ढंग से नहीं हो रहा है।

४. साहित्यिक समिति

यह समिति बहुत ही आवश्यक और उपयोगी होगी। इसका घेरा बहुविस्तृत होना चाहिए। इसमें देश के चुने हुए साहित्यिक-मात्र को स्थान दिया जाय। कम-से-कम पहले हर प्रांत से कुछ चुने हुए साहित्यिकों को लेकर इसका संगठन किया जाय। साहित्यिक-मात्र इसके साधारण सभ्य बनाए जा सकें, और उनसे कुछ सालाना चंदा भी लिया जाय। हरएक साहित्यिक अपने साहित्य-संबंधी विचार इस समिति के आगे विचारार्थ उपस्थित कर सके। यह समिति हिंदी-साहित्य के सभी विभागों की पूर्ति करे। जो जिस विषय का विद्वान् साहित्यिक हो, वह उसी विषय की पुस्तक लिखने का प्रयत्न करे। लिखने के पहले वह अपने विचार इस समिति में उपस्थित करे। इससे लाभ यह होगा कि उसे उस विषय की अधिकाधिक सामग्री ज्ञात अथवा प्राप्त हो जायगी, और अन्य सहयोगी साहित्यिकों की सम्मति से वह बहुत कुछ लाभ उठा सकेगा। यह समिति विचार करके उसे बतलावेगी कि इस विषय पर लिखने की आवश्यकता है या नहीं, और अगर है, तो उस विषय पर किस रूप में, किस ढंग से, कितना बड़ा ग्रंथ लिखा जाय। इस समिति से एक यह सुविधा होगी कि तैयार होनेवाले साहित्य की सूचना सबको मिलती रहेगी। फिर, एक ही विषय पर कई अधूरी, अनुपयुक्त पुस्तकों की जगह एक विषय की सर्वांगपूर्ण, सांगोपांग, सुंदर पुस्तक लिखी जायगी। इस समिति की तैयार की हुई सभी पुस्तकें अगर सम्मेलन न प्रकाशित कर सके (अच्छी तरह काम चलने पर सम्मेलन सब पुस्तकें नहीं प्रकाशित कर सकेगा, यह निश्चित ही है), तो वह अन्य अच्छे प्रकाशकों को उन्हें दे देगा, इस तरह प्रकाशकों को भी यह लाभ होगा कि वे अच्छी पुस्तकें निकाल सकेंगे, उन्हें जँची हुई पुस्तकें मिल जायँगी। इधर साहित्यिकों को यह सुविधा होगी कि प्रकाशक ढूँढ़ने के झंझट में न पड़ना होगा। यही समिति पुस्तक का पुरस्कार भी निश्चित कर देगी। इस प्रकार यह समिति साहित्य-निर्माण का काम करेगी।

५. संपादक समिति

संपादक समिति की रचना दो-तीन बार हो चुकी है; पर सफलता नहीं हुई। इधर दो वर्षों से फिर उसके अधिवेशन करने का उद्योग हो रहा है। इस समिति की असफलता का प्रत्यक्ष कारण तो यही जान पड़ता है कि हिंदी-जगत् की संपादक-मंडली अपने ऊपर कोई दबाव या नियंत्रण नहीं मानना चाहती। जो संपादक की कुर्सी पर बैठ गया, वही अपने को स्वयंभू विद्वान् और स्वयं-सिद्ध सर्वज्ञ मानने लगा। वह चाहे तो शिष्टता या भलमंसी के सिर पर पदाघात करके अपने पत्र के कालमों को कलुषित, कटु वाक्यों की कालिमा से कलंकित कर सकता है, अपने प्रतिपक्षी को मनमाने कुवचनों से याद कर सकता है। कारण, उसके ऊपर किसी का अंकुश नहीं है। उसके ख़िलाफ़ चूँ करनेवाला घोर अपराध का अपराधी है; उसे वह अवश्य ही दंड देगा। ऐसे गंदे आक्रमण कभी-कभी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विनोद और हँसी-दिल्लगी की आड़ में भी किए जाते हैं। ऐसा न होना चाहिए। हास्य-रस लिखना सबसे कठिन काम है। विशुद्ध विनोद लिखना हरएक का काम नहीं। हास्य-रस की आड़ में भँड़ौआपन करना संपादकों के लिये गौरव की बात नहीं। अस्तु, मैं चाहता हूँ कि इस उच्छृंखलता को मिटाने का प्रयत्न भी सम्मेलन के ही नेतृत्व में हो। संपादक समिति भी सम्मेलन का ही एक विभाग समझी जाय। उसमें विशेष सभ्य और साधारण सभ्य, दो तरह के सभ्य हों। विशेष सभ्यों का चुनाव प्रांतों के हिसाब से किया जाय। हर प्रांत से प्रधान और प्रभावशाली हिंदी-पत्रों के संपादक विशेष सभ्य के रूप में लिए जायँ। हर प्रांत से हिंदी-पत्रों की संख्या के अनुसार दैनिक, साप्ताहिक, अर्द्ध-साप्ताहिक और मासिक पत्रों के संपादक चुने जायँ। इस तरह सब हिंदी-पत्रों के प्रतिनिधि-स्वरूप प्रधान, प्रतिष्ठित और प्रभावशाली पत्र-संपादकों की एक समिति या मंडली बनाई जाय। अँगरेज़ी आदि अन्य भाषाओं के पत्र-संपादक भी अगर इसमें साधारण सभ्य के रूप में सम्मिलित किए जा सकें, तो और भी अच्छा। अगर कोई हिंदी-पत्र-संपादक अपने पत्र में किसी सहयोगी या व्यक्ति-विशेष पर कोई अनुचित आक्रमण या आक्षेप करके कलह का सूत्रपात करे, तो वह रोका जाय। आवश्यक होने पर उसे बहिष्कार का दंड भी दिया जा सकता है। इसके अतिरिक्त सामयिक साहित्य की उन्नति पर विचार, सब संपादकों की समयानुसार सब तरह की सहायता, परस्पर के झगड़ों की मीमांसा आदि अन्य कार्य भी यह समिति करेगी। मेरी राय में सम्मेलन की सरपरस्ती में रहकर संपादक समिति बहुत कुछ काम कर सकेगी। उसका मान और प्रतिष्ठा भी बढ़ेगी, और वह चिरजीविनी भी होगी।

६. समालोचक समिति

मैं पहले कह चुका हूँ कि हिंदी-साहित्य का यह आवश्यक अंग अच्छी अवस्था में नहीं है। सत् और सत्य समालोचना तो बहुत कम देखने में आती है। जिनमें समालोचना करने की योग्यता है, जिनका अध्ययन और अनुशीलन यथेष्ट है, वे भी चुप हैं। शायद इसका एक कारण यह है कि आधुनिक लेखक और ग्रंथकार अपनी कृति की प्रतिकूल आलोचना को बरदाश्त नहीं कर सकते। आजकल यह चाल-सी चल पड़ी है कि प्रतिकूल समालोचना का उत्तर देने की अवश्य चेष्टा की जाय, चाहे वह कितनी ही यथार्थ क्यों न हो, और उसका कुछ उत्तर न भी दिया जा सकता हो। किंतु जो लेखक या ग्रंथकार अपनी उन्नति चाहते हैं, अपनी रचना के गुण-दोषों से परिचित होना चाहते हैं, वे सच्ची और खरी समालोचना से चिढ़ते नहीं। अस्तु। सत्समालोचकों के दर्शन दुर्लभ हैं, साधना करके सिद्धि प्राप्त करनेवाले, नीर-क्षीर-विवेचन-समर्थ, सुविज्ञ समालोचक अप्राप्य हो रहे हैं; किंतु पल्लवग्राही, अध्ययन-विमुख, स्वयं-सिद्ध समालोचकों की भरमार है। ऐसे समालोचक समालोचना करने के लिये किसी विशेष योग्यता या सूक्ष्म दृष्टि की आवश्यकता ही नहीं समझते। इनकी की हुई समालोचना भी वैसी ही बेसिर-पैर की हुआ करती है। इसीलिये मेरा प्रस्ताव है कि साहित्य-सम्मेलन एक समालोचक समिति की स्थापना करे। उसमें सभी विषयों के विशेषज्ञ विद्वान् सम्मिलित किए जायँ। वे, अपनी रुचि और योग्यता के अनुसार, हिंदी में प्रकाशित होनेवाली पुस्तकों की, पत्रों की, विस्तृत और निष्पक्ष आलोचना किया करें। उनकी भाषा संयत हो। वे समान रूप से ग्रंथों के गुणों और दोषों को पाठकों के आगे उपस्थित करें। ये समालोचनाएँ हिंदी के उच्च कोटि के पत्रों में प्रकाशित हुआ करें। सम्मेलन-पत्रिका में भी जितनी प्रकाशित हो सकें, की जायँ। इससे एक सुविधा यह भी होगी कि श्रीमंगलाप्रसाद-पारितोषिक के योग्य पुस्तक का निर्णय करने में भी बड़ी सहायता मिलेगी। हरएक प्रकाशक अपनी पुस्तकें समालोचना के लिये इस समिति के पास भी उसी तरह नियमित रूप से भेज दिया करे, जिस तरह वह डिप्टी कमिश्नर के यहाँ भेजता है।

अब मैं हिंदी-साहित्य के कुछ अभावों का उल्लेख करके अपने वक्तव्य को समाप्त करूँगा। एक पत्र-पत्रिकाओं का क्रमबद्ध सुलिखित इतिहास तैयार कराने की बड़ी आवश्यकता है। इस कार्य को काशी की नागरी-प्रचारिणी सभा अथवा सम्मेलन ही सुचारु रूप से कर सकता है। इसके सिवा अन्य भाषाओं के ऐसे ग्रंथों की एक सूची भी बन जानी चाहिए, जिनका अनुवाद हिंदी में होने की आवश्यकता है, जिनसे हिंदी-साहित्य का ज्ञान-भांडार समृद्धिशाली हो सकता है। मैं अनुवाद को हेय नहीं समझता। मेरी राय में अनुवाद करके अच्छे ग्रंथों को अपनी भाषा के साहित्य में स्थान देना कम आदरणीय और आवश्यक नहीं है। अँगरेज़ी-सरीखी उन्नत भाषाओं में भी जब बराबर अनुवाद का क्रम जारी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है, तब हिंदी-साहित्य तो अभी आरंभिक अवस्था में ही है। उसमें अनुवाद-ग्रंथों का समावेश होना कुछ आश्चर्य नहीं। हाँ, रद्दी और अनावश्यक पुस्तकों का अनुवाद अवश्य न होना चाहिए। मैं समझता हूँ, अँगरेज़ी, बँगला, मराठी, गुजराती, फ़ारसी, अरबी, फ्रेंच, जर्मन, इटैलियन, रशियन, जापानी, चीनी आदि भाषाओं के अनुवाद योग्य ग्रंथ-रत्नों की सूची बन जाने से एक बहुत बड़ा काम हो जायगा। इन भाषाओं के ग्रंथ-रत्नों का हिंदी-अनुवाद हो जाने से हिंदी का संबंध विश्व-साहित्य से स्थापित हो जायगा।

इसके अतिरिक्त विभक्ति-प्रत्ययों को हटाकर लिखें या सटाकर, इसका फ़ैसला हो जाना चाहिए। हुए-हुये-हुवे, लिये-लिए, चाहिये-चाहिए आदि जिन शब्दों के रूप कई तरह से लिखे जाते हैं, उनका एक रूप निश्चित हो जाने की बड़ी आवश्यकता है। भिन्न-भाषा-भाषी जो सज्जन हिंदी सीखना चाहते हैं, उन्हें इन झगड़ों से बड़ी कठिनाई का सामना करना पड़ता है।

अंत में मैं आप लोगों की सेवा में इसके लिये आंतरिक कृतज्ञता प्रकट करता हूँ, जो आप लोगों ने अपना अमूल्य समय देकर मेरे इस बाल-भाषित को धैर्य के साथ सुना। हिंदी-साहित्य की वर्तमान प्रगति को देखते हुए मुझे उसके उज्ज्वल भविष्य में अणु-मात्र भी संदेह नहीं। बहुत शीघ्र हिंदी का साहित्य सर्वांगपूर्ण हो जायगा। हमारे नवयुवक अपनी मातृभाषा और राष्ट्रभाषा हिंदी की सेवा करने लगे हैं। इससे निस्संशय होकर यह घोषणा की जा सकती है कि हिंदी-साहित्य की श्री-वृद्धि उत्तरोत्तर होती चली जायगी। मैं हिंदी-माता के सेवकों से यही अनुरोध करूँगा कि उनमें से हरएक व्यक्ति अपनी शक्ति और योग्यता के अनुसार मातृभाषा की सेवा करना अपना अवश्य कर्तव्य समझ ले। किसी भाषा के साहित्य की उन्नति एक व्यक्ति के द्वारा नहीं होती। उसके लिये जाति के प्रत्येक शिक्षित और प्रतिभा-शाली मनुष्य को चेष्टा करनी पड़ती है। देखिए, हमारे भाई मराठों, गुजरातियों अथवा बंगालियों ने कितनी जल्दी, किस अध्यवसाय के साथ, अपनी भाषाओं के साहित्य को समृद्धिशाली बना लिया है। इस विषय में हमको उनका अनुकरण करना चाहिए। फिर तो सफलता हमारे सामने हाथ जोड़े खड़ी होगी। तथास्तु।

दुलारेलाल भार्गव

उत्तेजिता

आदर न पैहैं तबौं, बाट जो बितैहैं खरे,
तबौं ना लुभैहैं, जो मनोभव-लौं लसिहैं;
सहज सनेह के न भाजन बनैंगे तबौं,
मंद-मंद मोहक मयंक लौं जो हँसिहैं।
"हरिऔध" अकस तजत ना अकसवारो,
कसे कहि कब लौं कसौटिन पै कसिहैं;
कबौं काहू कामिनी-नयन मैं बसे तो बसे,
नर अब नारि के नयन मैं न बसिहैं॥ १॥

आँखि दिखराइहैं तो दुगुनी दिखैहौं आँखि,
पर-चित-चोरन की कसरि निकारिहौं;
रारि जो मचैहैं तो तिगूनी तकरारि ह्वैहै,
पीछे परे बार-बार पकरि पछारिहौं।
"हरिऔध" मान किए बनिहौं गुमानिनी हौं,
कैसे भला नारी ह्वै अनारिन ते हारिहौं;
गारिहौं गरब सारे गोरे गातवारन कौ,
मरद निगोरन की गरमी निवारिहौं॥ २॥

मंद-मंद हँसि मंजु बैनन सुनैहैं नाहिं,
चितहू न चंचल चितौननि ते चोरिहैं;
लोल-लोल लोचन ते मानस लुभैहैं नाहिं,
भौंह हू न भाव साथ कबहूँ मरोरिहैं।
"हरिऔध" नर हैं नकारे तो नकारे रहैं,
नारि हू नरन ते तमाम नातो तोरिहैं;
अब चाव-साथ बैठि रुचिर अगारन मैं,
गोरे गातवारन को गोरी ना अगोरिहैं॥ ३॥

"हरिऔध"

कलरव

(१)

तेरा कैसा गान,
विहंगम, तेरा कैसा गान!
न गुरु से सीखे वेद-पुरान,
न षट्-दर्शन, न नीति, विज्ञान;
तुझे कुछ भाषा का भी ज्ञान,
काव्य, रस, छंदों की पहचान?—
न पिक-प्रतिभा का कर अभिमान;
मनन कर, मनन शकुनि, नादान!

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हँसते हैं विद्वान्,
गीत-खग ! तुझ पर सब विद्वान् !
दूर, छाया-तरुवन में वास,
न जग के हास-अश्रु ही पास;
अरे, दुस्तर जग का आकाश,
गूढ़ रे छाया ग्रथित प्रकाश !
छोड़ पंखों की शून्य उड़ान,
वन्य खग ! विजन-नीड़ के गान !

(२)

मेरा कैसा गान,
न-जाने, मेरा कैसा गान !
आज फैला वन-वन मधुमास,
मुग्ध कलियों में गंधोच्छ्वास;
दुलकता तृण-तृण में उल्लास,
डोलता पुलकाकुल वातास;—
फूटता नभ में स्वर्ण-बिहान,
गीत-खग के प्राणों में गान !
मुझे न अपना ध्यान,
कभी रे रहा न जग का ज्ञान !
सिहरते मेरे स्वर के साथ,
विश्व-पुलकावलि-से तरु-पात;
पार करते अनंत, अज्ञात,
गीत मेरे उठ सायं-प्रात—
गान ही में रे मेरे प्राण,
अखिल प्राणों में मेरे गान !

श्रीसुमित्रानंदन पंत

अशृंगारी बिहारी

(गत संख्या से सम्मिलित)

बिहारीलाल ने अपनी सतसई में पूर्ववर्ती कवियों (तुलसी, रहीम, कबीर आदि) की नीति पद्धति का अनुसरण करके कुछ नीति-विषयक दोहे भी कहे हैं, जो अधिकांश में उच्च श्रेणी के ही नहीं, अनूठे तक कहे जा सकते हैं। इनसे पता चलता है कि यह कवि कोरे शृंगार में ही मग्न रहनेवाला नहीं था; प्रत्युत देश, काल, समाज तथा दरबार आदि की गति का भी निरीक्षण करने में अपनी कुशाग्र बुद्धि का प्रयोग कर सकता था। इसके अनुभव की बातों के उदाहरण लीजिए—इसकी राय में बड़े लोगों को छोटों की अधिक प्रतिष्ठा नहीं करनी चाहिए; क्योंकि अंत में छोटे छोटे ही हैं, और उनसे बड़ा काम कभी नहीं निकाला जा सकता—चूहे के चमड़े से कभी बड़ा नगाड़ा नहीं मढ़ा जा सकता, और न सोने के समान 'कनक' कहलाने के ही कारण गुण-हीन धतूरा गहने गढ़ने के काम आ सकता है; या सूर्य के समान अर्क कहलानेवाला मदार प्रकाश दे सकता है। और, फिर बालों को तो आप कितना ही सिर चढ़ाए रहिए, अंत में बढ़कर आपके पीछे ही पड़े रहेंगे। नीच आकाश तक भी ऐंठकर क्यों न पहुँचा दिए जायँ, किंतु फिर भी अपनी शक्ति के बाहर की बात उनसे नहीं हो सकती—कहीं फाड़-फाड़कर देखने-भर ही से आँखें बड़ी तो नहीं हो जातीं, और न फुहारे का पानी नल के अवलंब से ऊपर उठने के कारण चढ़ता ही चला जा सकता है। इन दोनों को लौटकर अंततोगत्वा अपने स्वभाव पर ही आ जाना पड़ेगा। नीचों का तो यहाँ तक स्वभाव है कि वे ऊपर से नम्र देख पड़ने पर भी, सुयोग पाकर, काँटे के समान पैरों में लगकर भी, दुःखदायक हो जाते हैं, और यही कारण है कि बहुधा उनकी बुराई दूर हो जाने पर भी उनसे बड़ा भय मालूम होता है; क्योंकि यह देखने में आया है कि चंद्रमा को कलंक-रहित देखकर ज्योतिषी लोग किसी बड़े भारी उत्पात की संभावना किया करते हैं। इसलिये यदि किसी को कोई नीच कुछ देर के लिये अच्छा लगता-सा देख पड़े, तो भी यही समझना चाहिए कि वह कदाचित्, "भिन्नरुचिर्हि लोकः" की कहावत के अनुसार, अपने सीधेपन के कारण उस पर किसी प्रकार रीझ गया होगा; अन्यथा यह कौन नहीं जानता कि नीच का सम्मान यदि होता भी है, तो केवल घड़ी-क्षण का ही हुआ करता है—काक पक्षी का आदर श्राद्धपक्ष के अनंतर कहीं थोड़े सुना जाता है ! गोवर्द्धन-गिरि तक की पूजा थोड़ी ही देर के लिये होती है, और अंत में उसकी प्रतिमा को पशुओं के पैरों तले रौंदा जाना ही नसीब होता है। नीच को सदा निरादृत करना चाहिए। इसी में उसकी भलाई है; क्योंकि उसका तो यह स्वभाव ही है कि वह, गेंद के समान, जितनी सिर पर चोट लगे, उतना ही उछलकर, अपने को धन्य समझेगा इत्यादि।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दुष्ट प्रकृतिवाले स्वामी की भलाई के निमित्त अपने ही भाई-बंधुओं को कष्ट पहुँचानेवाले किसी उच्च-कुलोत्पन्न नौकर की ओर संकेत करके कवि ने एक बड़ी ही मार्मिक अन्योक्ति कही है, जो उसकी प्रतिभा का उत्कृष्ट निदर्शन है। देखिए—

स्वारथु, सुकृतु न, स्रमु बृथा, देखु बिहंग, बिचारि ;
बाज, पराएँ पानि परि, तूँ पच्छीनु न मारि ॥ ३०० ॥

इसका सरल अर्थ यह है कि हे आकाश-गामी पक्षी बाज़, तू दूसरे के हाथों पड़कर अपनी ही जातिवाले पक्षियों को मारने का इतना भारी अनर्थ क्यों कर रहा है? भला विचारकर देख तो सही, इसमें न तो तेरा कोई स्वार्थ है, न कोई पुण्य; बल्कि एकदम व्यर्थ का परिश्रम-ही-परिश्रम है। इस दोहे में कवि ने 'बिहंग,' 'बिचारि,' 'पराएँ पानि परि' तथा 'पच्छीनु' शब्दों अथवा वाक्यांशों के प्रयोग जान-बूझकर किए हैं; क्योंकि 'विहंग' उसी को कहते हैं, जो स्वच्छंद 'विहायसा' (अर्थात् आकाश में) विचरण करनेवाला हो, अर्थात् जिसका कुसमयानुसार दासत्व की शृंखला से जकड़ जाना उसकी उच्च-कुल-सुलभ प्रतिष्ठा से नीचे गिरना है। इस कारण इस दोहे की बात उसी को लग भी सकती है। जो स्वभावतः नीच प्रकृति का होगा, उस पर इसका प्रभाव नहीं पड़ सकता। 'बिचारि' शब्द इसलिये प्रयुक्त है कि बाज़ अथवा सेवक, कुछ दिनों तक दासवृत्ति में रहने के कारण, अपनी स्वाभाविक चाल की गुरुता भूल-सा गया होगा। यदि उससे सँभलकर सोच लेने के लिये न कहा जाय, तो संभव है, जैसा चाहिए वैसा प्रभाव ही न पड़ने पावे। 'बिचारि' शब्द की गंभीरता उसके साथ 'देखु' के लग जाने से और भी बढ़ जाती है, जिसके कारण 'बिचारि देखु' का अर्थ 'भला विचारकर देख तो सही' इतना हो जाता है। इसी प्रकार 'पराएँ पानि परि' वाक्यांश में 'पराएँ' शब्द 'पच्छीनु' अर्थात् स्वपक्षवालों से पार्थक्य अथवा दूर का संबंध बतलाने के लिये प्रयुक्त हुआ है, जिससे यह शीघ्र बोध हो सके कि करनेवाले का काम सचमुच अनर्थयुक्त है—भला दूसरे के हित के लिये अपने लोगों को पीड़ित करने का अस्वाभाविक काम कोई कैसे करना चाहेगा? फिर 'पानि परि' अर्थात् 'हाथों पड़कर' से बाज़ के पक्ष में अपने स्वामी के हाथ पर बैठने का भी बोध हो सकता है। 'पच्छीनु' शब्द भी, जैसा ऊपर कहा गया है, पक्षियों तथा स्वपक्षवाले, इन दोनों अर्थों का बोधक है। इसके सिवा इस दोहे में यह भी विशेषता है कि इसका प्रत्येक शब्द बड़ी सावधानी से रक्खा गया जान पड़ता है। किसी उद्धत प्रकृति-प्राप्त भलेमानुस को समझा-कर रोकने का जैसा ढंग हो सकता है, ठीक वैसा ही ढंग इस दोहे के शब्द-विन्यास से सूचित होता है—

स्वारथु, सुकृतु न, स्रमु बृथा, देखु बिहंग, बिचारि ;
बाज, पराएँ पानि परि, तू पच्छीनु न मारि।

अर्थात् जब कि सबसे प्रिय स्वार्थ का भाव अथवा उसके अनंतर सत्कार्य या पुण्य का भी कोई भाव नहीं देख पड़ता और सारा-का-सारा परिश्रम व्यर्थ ही है, तो ऐ भले आदमी, ज़रा विचारकर देख तो सही, दूसरे (और फिर भी दुष्ट स्वभाववाले) किसी के हाथ का खिलौना बनकर अपने भाई-बंधुओं को ही तंग करने का अनर्थ क्यों कर रहा है? ऐसा मत कर ; कम-से-कम तुझे तो ऐसा नहीं करना चाहिए। इस कथन-शैली के साथ ही क्लिष्ट शब्दों के न आने तथा थोड़े-से ही शब्दों में एक पूर्ण भाव की सामग्री एकत्रित हो जाने के कारण इस दोहे में प्रसाद-गुण और शीघ्र किसी चोट के समान हृदयंगम करा देनेवाली गंभीरता, दोनों बातें एक साथ ही आ गई हैं।

गुणग्राहकता के विषय में बिहारीलाल का कहना है—सबसे पहले तो गुणी कहलाकर प्रतिष्ठा पाने की इच्छा करनेवाले को ही चाहिए कि वह इस बात को भली भाँति समझ ले कि उसमें वास्तव में कोई गुण है कि नहीं; क्योंकि भ्रमवश अपनी बड़ाई से बहककर खिल उठनेवाले गुड़हल के फूल पर यदि भ्रमर नहीं बैठता, तो यह भ्रमर का अन्याय नहीं, बल्कि उस फूल की ही निर्गुणता है। प्रतिष्ठा जमाने के लिये गुणियों को भी कभी-कभी कष्ट उठाना पड़ता है ; क्योंकि विना पतझड़ हुए वृक्ष में नए फूल-फल नहीं आते। हाँ, गुण होने पर भी यदि गँवार लोग उनका समादर न करते हों, तो दूसरी बात है ; क्योंकि गाँव में जाने पर शिक्षित नागरिक तक की हँसी हो सकती है, और अपने गुणों को विकसित करके फूला हुआ गुलाब भी अनफूला रह जाने के बराबर ही हो जाता है। इसका कारण यह जान पड़ता है कि जिन लोगों को निकृष्ट वस्तुओं से ही प्रयोजन है, वे उत्तम वस्तु लेकर करेंगे ही क्या? गधों से काम चलानेवाले कहीं हाथी का व्यापार कर सकते हैं? और, यह भी तो सम-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

झना चाहिए कि गुणी का यदि निरादर भी हो जाय, तो उसके गुणों की महिमा नहीं घट सकती ; क्योंकि यदि पीनस-रोगवाले ने कपूर को शोरा समझकर त्याग दिया, तो क्या उसकी शीतलता अथवा सुगंध का मूल्य घट जायगा ? तात्पर्य यह कि आदरणीय मनुष्य का आदर न करने अथवा निरादर करने से उसके गुणों का कुछ मोल नहीं गिर जाता ! सिर पर धारण करने योग्य मुकुट को पाँव में पहननेवाला मनुष्य अपनी ही जड़ता प्रकट करता है, उस मुकुट की गुणहीनता नहीं ; और गुलाब के सुंदर-सुंदर फूलों के लिये कँटीली और सूखी डालों का होना विधाता की ही भूल का द्योतक है, इत्यादि ।

कवि ने कुबुद्धि, कृपणता और लोभ की घोर निंदा की है, और राज्य की द्वैध शासन-प्रणाली अथवा Dyarchy को प्रजाओं के लिये महाअनर्थकारिणी बतलाया है। उसका कहना है—

दुसह दुराज प्रजानु कौं, क्यौं न बढ़ै दुख-दंदु ;
अधिक अँधेरौ जग करत, मिलि मावस रवि-चंदु ॥३५७॥

अर्थात् सूर्य और चंद्रमा की दुअमली के ही कारण अमावस को अंधकार-ही-अंधकार देख पड़ता है। बिहारी-लाल ने साथ या संगति के विषय में लिखते हुए सब कहीं यही कहा है कि वह बराबरीवालों में ही ठीक होती है ; क्योंकि जो वस्तु जहाँ रहने के योग्य हो, उसका वहीं रहना समुचित अथवा न्यायसंगत है। हाँ, अपनी भलाई के लिये सौभाग्य से यदि किसी अपने से बड़े की मैत्री हो जाय, तो वह बात ही दूसरी है। बड़ों की संगति की यह विशेषता भी है कि वह दुरवस्था के प्राप्त होने पर भी "चोल रंग में रँगे हुए कपड़े" के समान कभी फीकी नहीं पड़ती, प्रत्युत चटकीली अर्थात् गहरी ही होती जाती है। मैत्री को स्थायी बनाए रखने के लिये रजोगुण से दूर रहना परमावश्यक है ; क्योंकि वह कितनी ही स्निग्ध अथवा चिकनी क्यों न हो, रजोगुण की धूल उसे अवश्य दूषित कर देगी।

इन्होंने नम्रता की प्रशंसा करते हुए भी अपने दृढ़ निश्चय पर डट जानेवाले की ओर संकेत करके चकोर पक्षी के ऊपर एक बड़ी अच्छी अन्योक्ति कही है—

चितु दै देखि चकोर-त्यौं, तीजैं भजै न भूख ;
चिनगी चुगै अँगार की, चुगै कि चंद-मयूख ॥५४७॥

अर्थात् अपने निश्चय पर तुले हुए चकोर की ओर तो देखिए। वह इतना हठधर्मी है कि भूखा रहने पर भी या तो चंद्रमा की किरणों का पान करेगा, अथवा आग की चिनगारियाँ ही चुगेगा ; किसी तीसरी वस्तु को वह नहीं भजता। इसी प्रकार दृढ़व्रत लोग या तो अपना उद्देश्य पूरा करके छोड़ेंगे या मर ही मिटेंगे।

समय के फेर से संबंध रखनेवाली नीचे लिखी कविता बहुत प्रसिद्ध है—

जिन दिन देखे वे कुसुम, गई सु बीति बहार ;
अब अलि, रही गुलाब मैं, अपत, कँटीली डार ॥२५५॥

इसका आशय यह है कि इस बुरे दिन में अब दुःख को छोड़ किसी सुख की संभावना नहीं देख पड़ती। परंतु एक दूसरी भ्रमरोक्ति द्वारा कवि ने आशा-वादिता की भी वैसी ही सुंदर झलक दिखलाई है—

इहीं आस अटक्यौं रहतु, अलि गुलाब कैं मूल ;
ह्वैहैं फेरि बसंत ऋतु, इन डारनु वे फूल ॥४३७॥

अर्थात् घोर निराशा के अवसर पर भी आशा की किरणों का दृष्टिगोचर होना स्वाभाविक है। फिर समय का प्रभाव दिखलाता हुआ कवि कहता है—

बढ़त-बढ़त संपति-सलिलु, मन-सरोज बढ़ि जाइ ;
घटत-घटत सु न फिर घटै, बरु समूल कुम्हिलाइ ॥३३१॥

अर्थात् जल-रूपी संपत्ति ज्यों-ज्यों बढ़ती जाती है, त्यों-त्यों कमल-रूपी मन भी बढ़ता जाता है ; किंतु फिर उस (संपत्ति) के घटने लगने पर वह (मन) घटना नहीं जानता, प्रत्युत सूखती हुई झील में उगे कमल की भाँति एकदम कुम्हलाकर नष्ट ही हो जाता है। परंतु ऐसी दशाओं में दैव-दैव-मात्र कहकर बैठ जानेवाले को कवि फिर आश्वासन भी देता है—

दीरघ साँस न लेहि दुख, सुख साँईंहिं न भूलि ;
दई-दई क्यौं करतु है, दइ दई सु कबूलि ॥५१॥

अर्थात् दुःख में लंबी साँसें न ले, और सुख में परमेश्वर को न भूल। इसी से सुख तथा दुःख, इन दोनों अवस्थाओं में मन की स्थिरता वर्तमान रह सकेगी। संपत्ति उसी ने दी है, और वही ले भी लेता है। वह यदि चाहेगा, तो विना किसी उद्योग के भी भरा-पुरा कर देगा। बिहारीलाल को इसी कारण संतोष पर पूरा विश्वास है। वह कहते हैं, धनोपार्जन के फेर में निरंतर फँसे रहना व्यर्थ है ; क्योंकि एक तो इसका फँसाव ही ऐसा है, जिसमें जितना ही सुलझना चाहे, उतनी ही नई उलझनें बढ़ती जाती हैं,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और लालची की दशा फंदे में फँसे हरिण की-सी हो जाती है ; दूसरे धतूरे से भी अधिक मादक द्रव्य को जितना ही तिरस्कृत किया जाय, उतना ही अच्छा । संपत्ति से निरपेक्षता दिखलानेवाले इस कवि ने यहाँ तक कह डाला है कि इस संसार में द्रव्य की आवश्यकता केवल अपनी लाज बचाए रखने के लिये ही है—इसलिये यदि ईश्वर यों ही इज़्ज़त रखता चले, तो इस अनेक दुर्गुणों से परिपूर्ण बला को भला कौन मोल लेना चाहेगा ? इसी कारण कवि ने आदर्श कुटुंब उसी को माना है, जिसे भोजन-वस्त्रादि-भर के उचित सामान समय पर, विना किसी झंझट के, मिलते जायँ, और धनोपार्जन के अनर्थकारी झमेले में नाहक़ फँसना न पड़े । इसी बात को वह एक सुंदर अन्योक्ति द्वारा स्पष्ट करता है—

पटु पाँखैं, भखु काँकरै, सपर परेई संग ;
सुखी, परेवा, पुहुमि मैं, एकै तुहीं, बिहंग ॥६१६॥

अर्थात् हे कबूतर, इस धरातल पर तेरे-जैसा सुखी मुझे कोई नहीं देख पड़ता ; क्योंकि एक गृहस्थ कुटुंब के लिये सबसे आवश्यक वस्तुएँ केवल वस्त्र, भोजन तथा एक सुशीला गृहिणी हुआ करती हैं, सो तुझे पर्याप्त रूप से प्राप्त हैं । वस्त्र की जगह तेरे शरीर पर सुंदर पंख हैं ; साधारण कंकड़ तू चुगा करता है, जो जहाँ तू बैठ जा, वहीं विना कष्ट मिल सकते हैं ; और परों से आच्छादित तेरी स्त्री सदा तेरे साथ ही रहा करती है । तुझे अब और क्या चाहिए ?

यह कवि एक सच्चा व्यवहारवादी है । इस कारण आदर्शवादिता के ऊँचे शिखर पर चढ़कर वह सारहीन मनोरथों की मनोरंजक मूर्ति गढ़ते रहना नहीं पसंद करता । वह तो स्पष्ट कह देता है कि संसार का ऐश्वर्य किसी काम का नहीं । प्रत्येक व्यक्ति के लिये उपयोगी वस्तु वही हो सकती है, जो उसके अवसर पर काम आवे । जेठ की दुपहरी में, पानी की खोज में, सारा मरुस्थल छान डालनेवाले प्यासे मारवाड़ी के लिये यदि अकस्मात् मिल जानेवाला तरबूज़ ही काम आ जाय, तो उस समय वह समुद्र से किसी प्रकार कम नहीं, चाहे समुद्र की अपारता की प्रशंसा करनेवाले कितना ही मूढ़ क्यों न मारते फिरें । बात यह है कि—

अति अगाधु, अति औथरौ नदी, कूपु, सरु बाइ ;
सो ताकौ सागरु, जहाँ जाकी प्यास बुझाइ ॥४११॥

और, जान पड़ता है, इसी सिद्धांत के आधार पर, उसने सृष्टि के सुंदर तथा कुरूप पदार्थों के विषय में भी निर्णय किया है । वह एक स्थल पर कहता है—

समै-समै सुंदर सबै, रूपु-कुरूपु न कोइ;
मन की रुचि जेती जितै, तित तेती रुचि होइ ॥४३२॥

अर्थात् वास्तव में यदि देखा जाय, तो यह कहना कि अमुक वस्तु सुंदर है और अमुक वस्तु कुरूप, एक भ्रम-मात्र देख पड़ेगा; क्योंकि वस्तुओं की सुंदरता अथवा कुरूपता प्रशंसा अथवा निंदा करनेवाले की मनोवृत्ति पर ही अवलंबित है, और यह मनोवृत्ति स्वयं वस्तु-स्थिति तथा अवसर द्वारा सदा प्रभावित होती रहती है । इसलिये इन दोनों, अर्थात् सौंदर्य तथा कुरूपता का, सापेक्ष (Relative) होना अनिवार्य है ।

इसी प्रकार बिहारीलाल के कई विचार, विशेषकर कविता वे, जो सामाजिक कुरीतियों अथवा व्यवहारों से अधिक संबंध रखते हैं, उनके प्राकृतिक वर्णन के तथा कुछ शृंगार-रसवाले दोहों में भी भरे पड़े हैं । परंतु इस लेख को और न बढ़ाकर उनके कवित्व-विषयक विचार को व्यक्त करनेवाला एक ही दोहा यहाँ और दिया जाता है—

तंत्री-नाद, कवित्त-रस, सरस राग, रति-रंग;
अनबूड़े बूड़े, तरे जे बूड़े सब अंग ॥६४॥

इसका भावार्थ यह है कि कविता और संगीत के महत्त्व को सर्व-साधारण नहीं समझ सकते; क्योंकि ये समुद्र-ऐसे हैं, जिनमें जितना ही डूबते जाइए, उतना ही आनंद मिलेगा । इनमें केवल ऊपर तैरते रहने-भर की इच्छा करनेवाले के ही कुछ हाथ नहीं लग सकता । रसिकता और भावुकता विरला ही मनुष्य प्राप्त कर सकता है ।

परशुराम चतुर्वेदी

करुणा क्रंदन

बैठी दुखिया अश्रु-कणों का सुंदर हार पिरोने ?
या जग के निर्ममता-मल को करुणा-जल से धोने ?
या कि स्नेह के विशद क्षेत्र में निर्मल मुक्ता बोने ?
या बैठी है हाय ! 'वियोगी' के वियोग में रोने ?
सूखा स्रोत दया का, तुम हो गए देव, बेपानी ;
पानी बरसाकर इसने रख लिया तुम्हारा पानी ।

श्रीमोहनलाल महतो गयावाल "वियोगी"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संबलपुर (उड़ीसा) के चौहान राजों के हिंदी-ताम्रपत्र

यह बात इतिहासज्ञों को कदाचित् मालूम नहीं कि छत्तीसगढ़ और उड़ीसे के संगम-स्थल पर अवस्थित संबलपुर तथा पटना-राज्यों में हिंदू-सम्राट् पृथ्वीराज के वंशज चौहान राजा गत ७००-८०० वर्षों तक शासन कर 'चौहान-चकत्ता,' 'हीराखंड का बादशाह' तथा 'कोसलेश्वर' आदि पदवियों से सुशोभित एवं सम्मानित होते रहे हैं। अब भी पटना (उड़ीसा) व सोनपुर (उड़ीसा)-राज्य चौहानवंशीय राजों के शासनाधीन हैं।

इस वंश को हम महाकोसल के 'चौहान' या 'उड़ीसा के चौहान' कह सकते हैं। इनके आदि पुरुष का नाम 'रमईदेव' या 'रमणीयदेव' था।

खरियार (ज़िला रायपुर) के राजा, सुकवि और नाट्यकार श्रीवीरविक्रमदेव अपने 'राजकुमार-शिक्षा'-नामक ग्रंथ के अंत में 'रचयिता का परिचय' के अंतर्गत लिखते हैं—

"जिस समय भारतवर्ष का सौभाग्य-सूर्य अस्ताचलगामी हुआ, जिस समय भारतवासियों ने अपनी स्वतंत्रता को जलांजलि दे दी, जिस समय भारत में यवनों का पहले-ही-पहल आधिपत्य हुआ, जिस ससय भारत के भूपतिशिरोमणि, राजराजेश्वर पृथ्वीराज शहाबुद्दीन ग़ोरी के हाथों युद्ध में पकड़े गए, जिस समय पृथ्वीराज के समस्त कुमार युवराज रैणसी के साथ स्वदेशोद्धार की चेष्टा में यवनों के सम्मुख समर-क्षेत्र में वीर-गति को प्राप्त हुए, उस समय पृथ्वीराज के पुत्र हटांबरदेव की रानी आशावती देवी गर्भवती थीं। इस कारण अन्य रानियों की भाँति अपने पति के साथ सहगमन करने से वह रोक दी गईं, और वंश की रक्षा के हेतु कुछ विश्वासपात्र सेवकों सहित अरण्यमय प्रदेश में भगा दी गईं। परमेश्वर की कृपा से यथासमय उनके पुत्र हुआ, और वह पाटने (या पटने) के राज्यासन पर सुशोभित हुआ। पटना-राज्य उस समय अराजक था। इसी राजा के वंशज वर्तमान पटना, खरियार, सोनपुर, बरपाली आदि संस्थानों का शासन कर रहे हैं। वे इन राज्यों के अधिपति हैं × × × इत्यादि।"

पहलाद कवि ने संवत् १८३८ में 'जयचंद्रिका'-नामक एक काव्य लिखा था। उसमें उन्होंने पटने के चौहान राजों को पृथ्वीराज का वंशज लिखा है। उनके काव्य की कुछ पंक्तियाँ यों हैं—

गढ़ संभरी चौहान को अस पूर्व को बिरतंत ;
पुर पाटना महँ आदि रमईदेव उत्तम पंत।
रमई नरिंद को पुत्र भो पुनि महालिंग भुआल ;
महालिंग को सुत भयो बैजलदेव नृप विकराल।
पुनि भयो बैजलदेव-नंदन भोजराज भुआल ;
भोजराज के सुत भए विक्रमदेव भूप बिसाल।
भे भूप विक्रमदेव के परतापमल्ल नरेश ;
परतापमल्ल नरेश-सुत भूपालदेव विशेष।
भूपालदेव नरिंद के सुत विक्रमाजित भूप ;
पुनि विक्रमाजितदेव-सुत बैजल्लदेव अनूप।
सुत भए बैजलदेव के श्रीहिराधर नरनाह ;
जिनके प्रताप प्रचंड भै नवखंड मेदिनि माँह।
नृप हिराधर के नंद भे दुइ मुरति में जस काम ;
श्रीरामदेव जु जेष्ठ, लघु बलरामदेव सुनाम।
सापत्नी को बांधव दुयो, रामदेव, बलराम ;
राम-लखन से अवतरे, करौ सु पूरन काम।

इति श्रीकौशलेश्वर चौहान, चकत्तानरेंद्र श्रीजयतसिंह-सुजसचंद्रिकायां "जयचंद्रिका" वंशावलीचरितवर्णनो नाम प्रथमोध्यायः।

संक्षेप में पटना (या पाटना)-राज्य के चौहान राजों की नामावली इस प्रकार है—

पृथ्वीराज (दिल्लीश्वर) के पुत्र हटांबरदेव
(पत्नी आशावती)

(१) रमईदेव (पटने के प्रथम राजा)
(२) महालिंग देव
(३) बैजलदेव
(४) भोजराजदेव
(५) विक्रमदेव
(६) प्रतापमल्लदेव
(७) भूपालदेव
(८) विक्रमदेव (द्वितीय)
(९) बैजलदेव (द्वितीय)
(१०) हिराधरदेव

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रामदेव (या नृसिंहदेव)। इनके वंशज अब तक पटने में राज्य कर रहे हैं। वे वहाँ के Ruling Chief हैं।

बलरामदेव। यह संबलपुर के आदि-राजा हुए, और हीराखंड के बादशाह कहलाए।

इन्होंने १८ गढ़ जीतकर संबलपुर का नाम अठारह गढ़ रक्खा।

पटने के नवें राजा बैजलदेव का लिखा प्रबोधचंद्रिका-नामक एक संस्कृत काव्य हमें, श्रीयुत पं० कपिलनाथ द्विवेदी (रत्नपुर) के निकट, प्राप्त हुआ है। उस काव्य का दूसरा श्लोक हम नीचे उद्धृत करते हैं—

चन्द्रावर्तावदनचन्द्रचकोरधीरः
श्रीविक्रमार्कतनयो नयतन्त्रवेत्ता ;
चौहानवंशतिलकः पटनाधिनाथो
राजा परं जयति बैजलदेवनामा।

ग्यारहवाँ श्लोक यों है—

चिन्तयान्नित निर्यातः क्रीडन्तं श्रीहिराधरम् ;
श्रीमान् बैजलभूपालो विलोक्य सुतमब्रवीत्।

ऊपर के श्लोकों से यह स्पष्ट है कि बैजलदेव के पिता का नाम विक्रमार्क (विक्रमादित्य) और पुत्र का नाम हिराधर था। वह चौहान-वंश के और पटने के राजा थे।

'पटना' कहाँ है, इसका संकेत उक्त काव्य के एक श्लोक में किया गया है। यथा—

उत्कलात्पश्चिमं ज्ञेयं पटनाराज्यमद्भुतम्।

इससे विदित है कि राजा बैजलदेव के समय में पटना-राज्य 'उड़ीसा' या 'उत्कल'-प्रांत के अंतर्गत नहीं था। अवश्य ही वह राज्य कोसल (छत्तीसगढ़)-देश में लगता रहा होगा, या उत्कल और कोसल के संधिस्थल पर अवस्थित था।

खेद है कि 'प्रबोधचंद्रिका' में कवि (बैजलदेव राजा) ने अपना समय (शासन-काल) नहीं दिया। इससे हम उनके शासन-काल के विषय में अंधकार में हैं। पर हमने कई प्रामाणिक लेखों से यह सिद्ध करने की चेष्टा की है कि संबलपुर के प्रथम राजा बलरामदेव का शासनारंभ संवत् १५२२ वि० से है। अन्य प्राचीन काग़ज़-पत्रों से पता लगता है कि बलरामदेव के पिता हिराधरदेव ने ३० वर्ष राज्य किया था, और हिराधर के पिता बैजलदेव ३९ वर्ष तक राज्य-सिंहासन पर स्थित रहे।

संवत् १५२२-(३० × ३९) = संवत् १४५३ के आसपास राजा बैजलदेव ने प्रबोधचंद्रिका की रचना की थी।

नरसिंहनाथ (ज़ि० संबलपुर) के एक मंदिर में, उड़िया अक्षरों में, एक संस्कृत-लेख, एक प्रस्तर पर लिखा हुआ, मिला है।

इस शिलालेख के विषय में संबलपुर के डिस्ट्रिक्ट गज़ेटियर के पृष्ठ २१० में लिखित है—

"The inscription is in transitional Oriya characters, very closely approaching modern Oriya. It mentions a Bachha Raja of Patna and Bijal Raja, his son and records the gift of the village *Loisinga*. It is dated but here is the puzzle."

डॉक्टर भांडारकर ने पुरातत्त्व-विभाग की रिपोर्ट (सन् १९०४-५ ई०) में इस शिलालेख और नरसिंहनाथ के मंदिरों का वर्णन दिया है। उनकी गणना के अनुसार इस शिलालेख का सन् १३५९-६० (अर्थात् विक्रम-संवत् १४१६) में लिखा जाना निर्द्धारित होता है। हमारी गणना और उनके समय-निर्णय में 'विकारी' संवत्सर को लेकर मत-भेद है। शिलालेख प्रथम बैजलदेव के राजत्व-काल में खोदा गया था या हिराधर के पिता बैजलदेव (द्वितीय) के शासन-काल में, इसका निर्णय अभी तक नहीं हो पाया है।

इतनी भूमिका के पश्चात् अब हम संबलपुर-राज्य का कुछ वर्णन करते हैं। हिराधर पटने में राज्य करते थे। उनके दो पत्नियों से दो पुत्र हुए। रामदेव (या नरसिंहदेव) और बलरामदेव। पिता की मृत्यु के पश्चात् रामदेव (नरसिंहदेव) पटना-राज्य के अधिपति हुए। बलरामदेव ने अपने ज्येष्ठ भ्राता की एक समय ऐसी सेवा की कि उन्होंने उन्हें मुँह माँगा वर देना चाहा। अपनी माता की आज्ञा से बलरामदेव ने अपने बड़े भाई पटनापति से 'हूमा-देश' (संबलपुर का राज्य) माँगा। वह देश चित्रोत्पला (महानदी) के तट और कोसल (दक्षिण-कोसल) की सीमा पर था। उसमें महानदी के तट पर हीरे और स्वर्ण मिला करते थे। पहलाद कवि लिखते हैं—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चित्रोत्पला बहत जहँ नंदा है कौसल के तीरा ;
पुन्य छेत्र सरिता-तट जामें उपजें कंचन-हीरा ।

इसी 'हूमा' देश का नाम पीछे से 'संबलपुर अठारह गढ़' पड़ा । 'हीरा' मिलने के कारण इस भूखंड का नाम 'हीराखंड' भी पड़ गया । इसी हीराखंड में संबलपुर के आदि-महाराजा हुए बलरामदेव ।

(१) बलरामदेव, सं० १५२२ से १५८४ तक
|
(२) हृदयनारायणदेव, ,, १५८४ ,, १६१७ ,,
|
(३) बालभद्र साय, ,, १६१७ ,, १६४७ ,,
|
(४) मधुकर साय, ,, १६४७ ,, १६७३ ,,
|
(५) बलियारसिंह, ,, १६७३ ,, १७१३ ,,
|
(६) रत्नसिंह, इन्होंने केवल चार महीने राज्य किया ।
|
(७) छत्रसाय, सं० १७१३ से १७५१ तक
|
(८) अजीतसिंह, ,, १७५१ ,, १८२३ ,,
|
(९) अभयसिंह, ,, १८२३ ,, १८३४ ,,
|
बलभद्रसिंह(बालक राजा) ,, १८३४ ,, १८३८ ,,
|
(१०) जैतसिंह, ,, १८३८ ,, १८७५ ,,
(अजीतसिंह के द्वितीय पुत्र)
|
(११) महाराज साय, सं० १८७५ ,, १८८२ ,,
|
रानी मोहनकुमारी, ,, १८८२ ,, १८८८ ,,
|
(१२) नारायणसिंह, ,, १८८८ ,, १९०४ ,,

नारायणसिंह के कोई संतान न थी । उनकी रानी ने किसी को गोद लेना पसंद नहीं किया । संबलपुर का बृहत् राज्य इस प्रकार अनायास सरकार के हाथ लग गया । अब वह राज्य संबलपुर ज़िला कहलाता है । पहले यह ज़िला मध्यप्रदेश की छत्तीसगढ़-कमिशनरी में लगता था । सन् १९०५ (वंगभंग के समय) से संबलपुर का ज़िला उड़ीसे में मिला दिया गया; क्योंकि वहाँ की जनता उड़िया-भाषा-भाषी है । पटना और संबलपुर के चौहान राजों की मातृभाषा हिंदी रही होगी, इसमें संदेह नहीं । पर उड़िया-भाषी राज्यों में सैकड़ों वर्षों से बस जाने के कारण वे हिंदी को भूलकर उड़िया-भाषा बोलने लग गए थे, और अब भी उन चौहान राजों की मातृ-भाषा उड़िया ही है ।

बहुत खोज करने पर भी अब तक हमें न तो पटना या संबलपुर के राजे-महाराजों की कोई ताम्र या स्वर्ण-मुद्रा प्राप्त हो सकी है, और न कोई महत्त्व-पूर्ण शिलालेख ही मिला है । यह भी ज्ञात नहीं कि वे लोग अपने नाम के सिक्के चलाते थे या नहीं । निकटवर्ती रतनपुर-राज्य के हैहयवंशीय राजों की कई स्वर्ण तथा ताम्र की मुद्राएँ प्राप्त हुई हैं । यथा—

(१) रतनपुर के पृथ्वीदेव की स्वर्ण और ताम्र-मुद्राएँ ।
(२) ,, रत्नदेव की स्वर्ण और ताम्र-मुद्राएँ ।
(३) ,, जाजल्लदेव की स्वर्ण और ताम्र-मुद्राएँ ।
(४) ,, प्रतापसिंहदेव की-ताम्र-मुद्राएँ आदि ।

वर्षों की खोज के पश्चात् हमें सारंगढ़ (छत्तीसगढ़) के गोंडवंशोद्भव नरेश राजाबहादुर जवाहिरसिंह (Ruling Chief) साहब के यहाँ संबलपुर के चौहान राजों के दो ताम्र-पत्र (Copper plates) प्राप्त हुए हैं, जिन पर हिंदी-भाषा में, नागरी अक्षरों में, लेख खुदे हुए हैं ।

पहला 'तामपट्टा' संवत् १७४७ साल का है, और संबलपुर के ७वें राजा छत्रसाय के शासन-काल में दिया गया था । दूसरा 'तामपट्टा' संवत् १८६८ साल का है । वह दसवें राजा जैतसिंह से संबंध रखता है । हम दोनों पट्टों के लेखों की प्रतिलिपि उद्धृत कर इस लेख को समाप्त करते हैं—

नीचे जो लेख पाठक पढ़ेंगे, वह छत्तीसगढ़ (संबलपुर) में प्राप्त हिंदी-गद्य लेखों का सबसे प्राचीन रूप है—

संवत् १७४७ का हिंदी-गद्य—

(ताम्र-पत्र की नक़ल)

ई आस देवान श्री उदोत साय को कबूल तामेपट्टा लिख दी है कारन ऐसा जो हमको दल ❀ लोग दहशत देकर संबलपुर से निकाल दिए सो यहाँ से सारंगढ़ में भाग गए वहाँ एक वर्ष तक रहे बाद हमको सारंगढ़ से दिवान उदोत साय फौज साथ में लेकर दल को मारकर हमको गादी में बैठा दिए सो हम अपने खुशी से किकीर्दा प्रगने सों एक बयालीस "सरसींवा" निकाल के दियो ।

❀ फौज के सिपाही लोग ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एमो अंतर नहीं। जौन देवान उदोत साय के कोई रहे सो पुस्तपुस्तान से भोग करै वो अपने जगह का डाँड़ कौड़ी ८१७॥=) देते रहो एके साखी दशो दिरग अष्ट लोकपाल चंद्रसूरज धर्मराज लिखितं साखी बैजनाथ दूसरे सोभासिंह बाबू वो पदुमन जमदार वो वीरोश्वर वहेदार मिती मार्गासिर वदी १ बुधवार सम्मत् १७४७ साल सही।

(२)

संवत् १८३८ का हिंदी-गद्य—

(ताम्र-पत्र की नक़ल)

स्वस्ती श्रीमहाराजधिराज श्रीमहाराज श्रीजैतसिंह देव ने राजा श्रीविश्वनाथ साही को कबूलत तामेपट्टा लिख दी है कारन ऐसा जो हमको अकबर देवान दहशत देके संबलपुर से निकाल दिए सो हम मँडिला मों भाग के रहे वहाँ से हमको विश्वनाथ साये राजा ने अपने फौज साज के संबलपुर के गादी मों बैठार दिए देवान अकबर और घमंडी लोग को मार के सो हम अपने खुसी से "सरिया" प्रगने वो नदी के आधे घाट वो सरिया प्रगने में जो सरेस्ता लगते हैं सो सब हम बगस दी हे। ये माँ अंतर नहीं है वो विश्वनाथ साय राजा के वंश में जो कोई रहे सो पुस्तपुस्तान से भोग करे ये माँ जो कोई उजूर करे तो उसको त्रीलाख है ये के साखी दशो दगपाल अष्ट लोकपाल और धर्मराज चंद्र सूर्ज वौर सुजनसिंह देवान दूसरे बिंबाधर बाबू वो जराब खान जमादार वो रघुनाथसिंह बाबू लिखितं साखी मोती बाबू मिती आसाढ़ वदी ६ मंगल सम्मत् १८३८ के साल पट्टा सही।

हमने सुना था कि मृत्यु के कुछ महीने पूर्व प्रसिद्ध इतिहासज्ञ मुंशी देवीप्रसादजी (जोधपुर) श्रीजगन्नाथपुरी की यात्रा के मार्ग में 'पटना'-राज्य की राजधानी वलाँगीर गए थे। वहाँ तथा संबलपुर में उन्होंने इन चौहानवंशीय राजों के विषय में ऐतिहासिक अनुसंधान भी अवश्य किया होगा। खेद है, हिंदी-संसार को उनके अनुसंधान का फल अविदित ही रहा।

इस लेख के लिख चुकने के बाद हमें रतनपुर (ज़िला बिलासपुर) के पं० कपिलनाथ द्विवेदी की कृपा से 'रतनपुर के हवाल'-नामक एक हस्त-लिखित पोथी की प्रतिलिपि प्राप्त हुई। मूल-पोथी पं० शिवदत्तराय शास्त्री, गौरहा की लिखी हुई है। उसमें 'पटना की वंशावली' के अंतर्गत ये नाम हैं—

पटना की वंशावली—

याद पृथ्वीराज संभर के चौहान क्षत्री राजा पदवी—तेके पुत्र—

(१) रमईदेव पटना के राजा भए
(२) महालिंग
(३) वत्सराज
(४) वीरमल्लदेव
(५) बड़े बैजलदेव
(६) भोजराजदेव
(७) विक्रमदेव
(८) छोटे (या शान) बैजलदेव
(९) हीराधरदेव
(१०) नृसिंहदेव

उड़ीसा गढ़जातों के गज़ेटियर के पृष्ठ २८४ में लिखित है—"Batsraj Deo, the Successor of Baijal Deo 1 was defeated by the Orissa Chief who seems to have overrun the Patna state and defeated the chief."

(Orissa Feudatory States Gazetteer)

उसी "गज़ेटियर" के पृष्ठ २८५ में यह लिखा हुआ है—

"It appears from the कोसलानंद, a local work on the history of the Patna Raj family that Baijal Deo, the 3rd chief from Ramai Deo was the most powerful chief and extended his dominions far and wide. He fought with Ramchandra and Mahaling Gajpatis of Orissa for six years. Bamra (state) was reduced to an annual tribute of 16 elephants, Gangpur (state), Bonai (state) and other neighbouring states submitted without a fight, and *Band* and Sirguza also Submitted. *It is said 72 chiefs were made tributary to Patna by Baijal Deo I.* Dhenkanal was also subdued and the temple of the golden Mahadeo at Sonepur was built by him."

संस्कृत-काव्य 'कोसलानंद' के रचयिता पं० गंगाधर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मिश्र नाम के एक पंडित थे। कोसलानंद काव्य आजकल अप्राप्य है। हमने उसकी हस्त-लिखित प्रति प्राप्त करने की वर्षों तक चेष्टा की; पर कुछ पता नहीं चला। उसके अनुसार बैजलदेव (प्रथम) तृतीय राजा थे। पहलाद कवि-कृत 'जयचंद्रिका' में भी वही बात लिखी हुई है। बैजलदेव (प्रथम) के पटना-राज्य के तृतीय राजा होने में दो ग्रंथ या पांडुलिपि एकमत हैं। पर दोनों में से एक ग्रंथ (कोसलानंद) अब लुप्त-सा हो रहा है। उधर रतनपुर-वाली नामावली में वत्सराज राजा का नाम आता है, और वह बैजलदेव (प्रथम) के पितामह माने गए हैं। इधर उड़ीसा गढ़जात के गज़ेटियर में वत्सराज को बैजलदेव (प्रथम) का पुत्र या उत्तराधिकारी बताया गया है। पहलाद कवि के काव्य जयचंद्रिका में वत्सराज का नाम तक नहीं दिया गया है। नृसिंहनाथ के शिलालेख में बैजलदेव के पिता का नाम 'बच्छराज' लिखित है। इस प्रकार जितने मुँह उतनी बातें-वाली कहावत चरितार्थ होती है। नृसिंहनाथ के शिलालेख के अक्षर उड़िया-लिपि में हैं; पर वे कई तरह से पढ़े जाते हैं। 'वत्सराज' शब्द को हमारे एक मित्र बइराज पढ़ते हैं। अन्य उसे बेकराज कहते हैं, और विक्रमार्क का विकृत रूप समझते हैं। जो हो, जब तक कोई प्रामाणिक आधार नहीं प्राप्त होगा, तब तक इन नामों का अभ्रांत क्रम स्थिर करना कठिन है। गज़ेटियरों में कोई बात लिखी गई है, इसलिये वह ठीक ही है, ऐसा नहीं है। 'रामचंद्र' तथा 'महालिंग'-नामक गजपति (उड़ीसा के महाराजों) से ६ वर्ष तक बैजलदेव ने युद्ध किया था, यह उड़ीसा गज़ेटियर में लिखा हुआ है। पर उड़ीसा गजपति राजों में 'महालिंग' नाम का कोई राजा ही नहीं हुआ। उल्टे पटने के राजों की वंशावली में 'महालिंग' रमईदेव के पुत्र तथा बैजलदेव (प्रथम) के पिता माने गए हैं। महालिंग का शासन-काल ६ वर्ष दिया गया है। इन सब प्रश्नों को हल करने का उद्योग अब तक संबलपुर या पटना-राज्य के किसी शिक्षित सज्जन ने नहीं किया है। हमारी समझ में तो यह आता है कि 'कोसलानंद' में यह बात लिखी गई होगी कि महालिंग, जो बैजलदेव के पिता थे, और जिन्होंने ६ वर्ष राज्य किया, रामचंद्रदेव गजपति से ६ वर्षों तक बराबर लड़ते रहे। इसको गज़ेटियर के संग्रहकर्ता ने भ्रम से वह रूप दे दिया होगा, जैसा उस ग्रंथ में छपा हुआ पाया जाता है। पर यह सब केवल अनुमान-मात्र है।

संबलपुर की गद्दी पर इस वंश के जो-जो राजे यथा-समय बैठे, उनकी नामावली वैद्यवर पं० गोपीनाथ षडंगी द्वारा संगृहीत 'चिकित्सामंजरी'-नामक वैद्यक-ग्रंथ में भी मिलती है। यह ग्रंथ महाराज छत्रसायदेव के राजत्व-काल में बना था। छत्रसायदेव का शासन-काल सन् ई० की १६वीं सदी है। इस नामावली में बलरामदेव के पुत्र हृदय-नारायणदेव का नाम नहीं मिलता। संभव है, प्रतिलिपि-कारों ने एक श्लोक प्रतिलिपि करते समय छोड़ दिया हो। श्लोक ये हैं—

चित्रोत्पलानदीतीरे या पुरी सोमलाऽभिधा ;
श्रीमता छत्रसायेन पालिता सुखदा सदा ॥ १ ॥
'वत्स' सान्वयसम्भूतः साम्भरीकनराधिपः ;
चौहान इति विख्यातश्चक्रधृक् यस्य रक्षकः ॥ २ ॥
बलराम इति ख्यातो भूपोऽभूत्तस्य सन्ततौ ;
येन विस्तारिता कीर्तिः सन्तप्ता दस्युभूमिपाः ॥ ३ ॥
बलभद्र इति ख्यातः तत्पुत्रोऽतीव कीर्तिमान् ;
येन निर्जित्य वैरीणां कुलं जह्रे बलिष्ठता ॥ ४ ॥

[बलभद्रदेव के पिता हृदयनारायणदेव के नामवाला श्लोक नं० ३ श्लोक के बाद छूट गया है, ऐसा ज्ञात होता है।]

तस्य पुत्रो मधुकरः क्षितिपः कुलमण्डनः ;
शुक्लक्षत्रकृता कीर्तिर्येन चक्रे नृपावसे ॥ ५ ॥
बलियारेति विख्यातः सिंहः तस्यात्मजः स्वयं ;
यन्नामश्रुतिमात्रेण मृगत्वमगमन्नृपाः ॥ ६ ॥
तत्पुत्रः **श्रीरत्नसिंहः** शत्रुवारणविक्रमः ;
यस्तेजसा वारितं शत्रु.....तमसं मुहुः ॥ ७ ॥
श्रीछत्रसाहिसुनयस्तनयस्तस्य ईरितः ;
यत्पालिता प्रजा चित्ते न गणयति नृपेतरान् ॥ ८ ॥

आगे चार श्लोकों में षडंगीजी का परिचय है। हमने अनेक प्रयत्न-पूर्वक भिन्न-भिन्न स्थानों से प्राप्त कर कोई १०-१२ तालपत्रों पर लिखित 'चिकित्सामंजरी' की पोथियाँ देखीं। पर उनमें से किसी में भी हृदयनारायण का नाम नहीं मिला। अस्तु।

छत्रसाय के समय में संबलपुर राज्य में १८ अठारह गढ़ (अधीनस्थ राजा) और तेरह दंडपाट (ज़मींदारियाँ) थीं। संबलपुर शहर में २०,०३२ घर थे; अर्थात् उसकी जन-संख्या २०,०३२ × ५ = १,००,१६० थी। संबलपुर शहर के निकट 'हीराकूद'-नामक कुंड में,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जो महानदी (चित्रोत्पला) के गर्भदेश में है, हीरे (diamonds) मिला करते थे। संबलपुर इन्हीं हीरों के लिये प्राचीन काल में ग्रीस और रोम में भी विख्यात था।

लोचनप्रसाद

चित्रकार

चित्रकार बैठा था। कोई काम उसके हाथ में न था। वह दानों के लिये तरसने की तैयारी कर रहा था; परंतु कलावंत था, उसे जैसे परवा न थी।

उसकी चटाई पर चित्र-लेखन की सामग्री बिखरी थी। वह सोचता था—कोई तो आवेगा ही। हुआ भी ऐसा ही। एक सुंदरी स्त्री आई। उसने पूछा—"घनश्याम चित्रकार तुम्हारा ही नाम है ?"

"हाँ"—कहकर चित्रकार उस रसभरी मेघमाला को देखने लगा।

"क्या मेरा एक चित्र बना दोगे ?"

"बन सकेगा ?—मुझे तो आशा नहीं।"

"चेष्टा कर देखो। परंतु मैं बैठकर शबीह न लगवाऊँगी।"

"नहीं, उसकी तो कोई आवश्यकता नहीं। परंतु मैं ऐसा सुंदर चित्र बना सकूँगा या नहीं, मुझे तो संदेह है।"

"तुम बना सकोगे"—कहकर सुंदरी ने मुसकिरा दिया। एक पत्र दिया, कहा—"बनाकर इसी पते से ले आना।"

वह चली गई।

दरिद्र चित्रकार ने, जिसके पास खाने को भी नहीं था, कुछ खर्च के लिये नहीं माँगा। वह चुपचाप कल्पना से क्षितिज पर सुंदरी का चित्र बनाने लगा।

❀ ❀ ❀

स्वर्णमयी उषा के आगमन के साथ ही चित्रकार अपनी शय्या छोड़ देता। वह एकांत स्थान में बैठकर प्रकृति के सौंदर्य को देखता। सूर्य का उदय, पूर्व दिशा की लालिमा, हरे-हरे वृक्ष और पर्वतों की श्रेणियों को देखता और पक्षियों का गान सुनता था।

वह ध्यान में लीन रहता। सूर्य आकाश में ऊपर चढ़ आता, सूर्य का प्रकाश उसके ऊपर पड़ता, वह सहन न कर सकता, उसका ध्यान टूट जाता। वह अपनी कुटिया में आकर कुछ बनाने लगता। कभी-कभी वसंत का पवन उसकी कुटिया में सूखी पत्तियाँ लाकर फेंक जाता। वह उन्हें उठाकर देखने लगता, फिर चित्र बनाने लगता। कभी-कभी वह गुनगुनाने लगता। विकल होकर कभी कुटिया के बाहर आकर आकाश की तरफ़ देखता, और कुछ सोचने लगता। अपने विचार से जब उसका ध्यान हटता, तब वह देखता, भगवान् भास्कर आकाश से बिदा हो रहे हैं। उनकी अंतिम किरणों की आभा आकाश में सफ़ेद-सफ़ेद बादलों के पंखों पर सुनहली चित्रकारी कर रही है। आकाश का रंग कभी नीला हो जाता, कभी लाल, और कभी सब रंग एक ही रूप में दिखलाई देते।

वह बैठ जाता। चुपचाप प्रकृति की लीला देखता जाता। गोधूलि का पहला तारा उसे दिखलाई देता।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वह कहता—"यह अपूर्व लीला है—सब तारे एकसाथ क्यों नहीं निकलते ?" वह बड़े ध्यान से ऊपर देखता—मानो तारा कह रहा हो—मेरा भी चित्र बना सकोगे ?

जो कुछ वह देखता, मानो सब कहते—"हमारा भी चित्र बना लो !" किंतु चित्रकार कहता—"नहीं, तुम्हें देखने से मेरे हृदय में कुछ शांति अवश्य मिलती है; किंतु तुम्हारा चित्र बनाकर मैं अपने हृदय में शांति का राज्य स्थापित नहीं कर सकूँगा। मेरे अतःपटल पर मेरे अतीत का जो दृश्य अंकित है—जिसके लिये मैं रुदन करता हूँ, विलाप करता हूँ—उसी का चित्र बनाऊँगा। तुम्हें तो सभी प्रत्यक्ष देखते हैं; पर मेरे अतीत को कौन देख रहा है। मैं चित्रों द्वारा उसे दिखाऊँगा ।"

❀ ❀ ❀

दिन-पर-दिन बीतने लगे। चित्रकार केवल चित्रकार ही न था, वह कुशल कवि भी था। कभी-कभी वायु के साथ वह गान भी करता।

चित्रकार का न कोई मित्र था, न साथी। उस निर्जन स्थान में वह एकांत-वास करता था। संसार के मायाजाल से वह अलग था। वह पुस्तकें पढ़ता, चित्र बनाता और विचार करता। इतने ही में उसका सारा समय बीत जाता। इसी में उसे शांति मिलती।

उसके पास एक अमूल्य वस्तु थी, वही उसकी संपत्ति थी। उसे वह बड़ी सावधानी से रखता था। वह था—उसका प्रेम-पत्र ! कभी-कभी रजनी में वह दीपक के प्रकाश में उसे पढ़ता था। पढ़कर रोता, फिर हृदय से लगा लेता।

❀ ❀ ❀

बहुत दिनों के बाद—

चित्रकार का चित्र बन चुका था। शीतल मलय पवन के एक झोंके ने कुटिया का द्वार खोल दिया। उसकी दृष्टि चारों तरफ़ दौड़ने लगी। उसने देखा, आकाश के मध्य में सूर्यदेव आ गए हैं। अब चित्रकार के मुख पर शांति और संतोष था। वह विकलता नहीं थी। करुणा ने अब ज्ञान का रूप धारण कर लिया था। वह चुपचाप बैठा था। चित्र तैयार था।

द्वार पर कुछ शब्द हुआ। चित्रकार आश्चर्य से उस तरफ़ देखने लगा। किसी ने पूछा—"मुझे पहचानते हो ?"

चित्रकार ने कहा—"न..... हाँ...।"

"क्या वे दिन भूल गए ?"

"कुछ-कुछ।"

"क्या रोने के दिन बीत गए ?"

"हाँ।"

"अब देखने से मालूम पड़ता है, तुम एकदम बदल गए !"

चित्रकार ने बड़े मधुर शब्दों में कहा—"जो पहले ग्लानि और चिंता थी, वही अब शांति के रूप में हृदय में वास करती है। जो प्रेम था, वह ज्ञान के रूप में परिणत हो गया है।"

दोनों एक दूसरे को देख रहे थे।

चित्रकार ने फिर कहा—"एक बोझ अभी तक हृदय पर है, आज वह भी दूर हो जायगा।"

इतना कहते हुए उसने वह चित्र और पत्र निकाला। वह एक बार चित्र की तरफ़ देखता, और एक बार उसकी तरफ़। दोनों चुपचाप खड़े थे। चित्रकार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ने पहले उसे पत्र दिया। उसने उसे देखकर कहा—"यह तो मेरा ही लिखा हुआ है।"

चित्रकार ने "हाँ" कहते हुए उसके हाथ में चित्र दे दिया। तब उसने कहा—यह तो मेरी ही सूरत का चित्र मालूम पड़ता है।

चित्रकार बड़े ध्यान से उसकी तरफ़ देखने लगा। उसने कहा—"हाँ। इसे बनाकर ही मुझे शांति मिली है। और अब अंतिम मिलन है। मैं जाता हूँ।"

इतना कहकर उत्तर की प्रतीक्षा किए विना ही चित्रकार देखते-ही-देखते न-जाने कहाँ चला गया!

विनोदशंकर व्यास

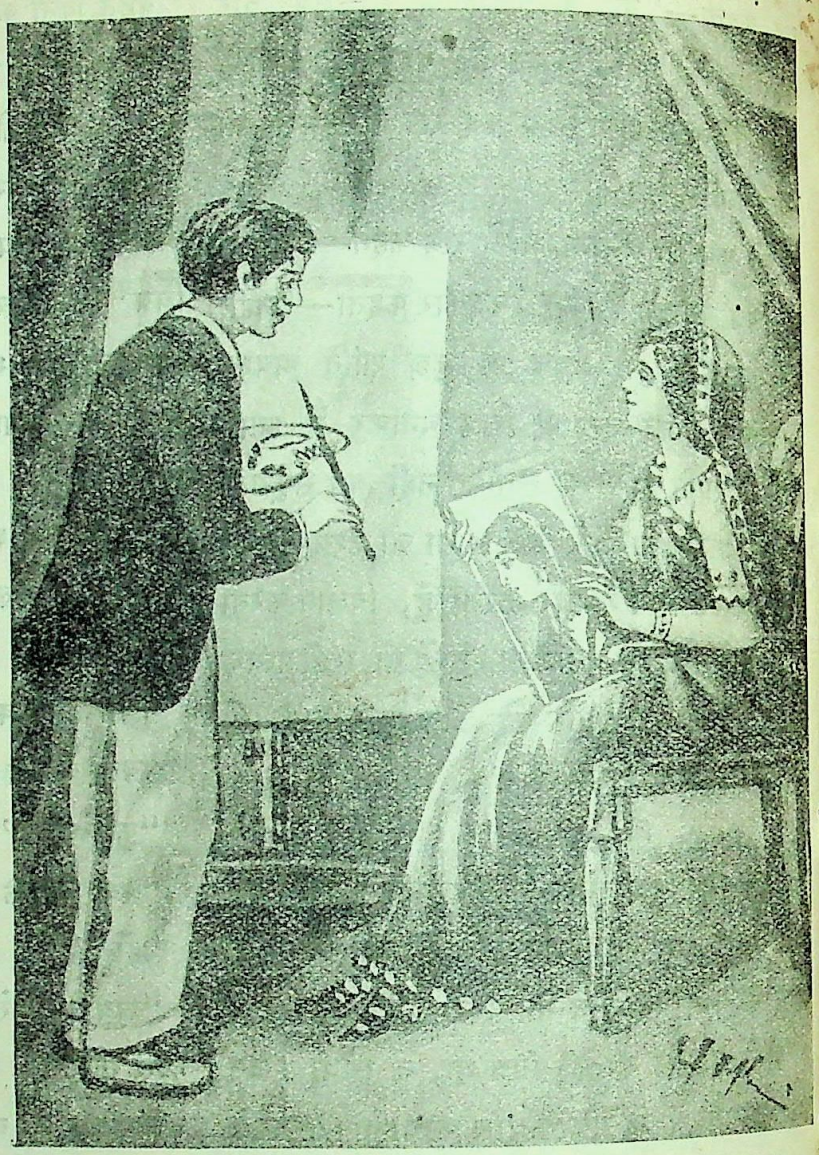

"छायावाद"

[रहस्यवाद का रहस्य]

[१]

त मई की 'सरस्वती' में किन्हीं सुकवि-किंकरजी ने 'आजकल के हिंदी-कवि और कविता'-शीर्षक एक लेख छपाया है। सुना है, वही लेख 'आज' की भी जून की तीन संख्याओं में उद्धृत किया गया है। इस लेख के उत्तर में मेरे मित्र श्रीकृष्णदेवप्रसादजी गौड़ ने 'छायावाद की छानबीन' नामक

चित्रकार ने "हाँ" कहते हुए उसके हाथ में चित्र दे दिया। तब उसने कहा—यह तो मेरी ही सूरत का चित्र मालूम पड़ता है।

एक लेख आषाढ़ की 'माधुरी' में लिखा है। सुकवि-किंकरजी के लेख में हमारे गौड़जी विद्वत्ता, काव्यमर्मज्ञता, बुद्धिमत्ता, एकदेशीयता तथा पक्षपात पाते हैं। पता नहीं, गौड़जी के लेख में सुकवि-किंकरजी क्या पाते हैं। उक्त दोनों लेख पढ़ने से मेरा हृदय आनंद से नाच उठा। इन लेखों से स्पष्ट मालूम होता है कि हिंदी-साहित्य का भविष्य बड़ा उज्ज्वल है। मेरा पूर्ण विश्वास है कि इस मतभेद से हिंदी-साहित्य का उपकार ही होगा। दोनों लेखों से स्पष्ट है कि बाबू श्यामसुंदरदासजी भी छायावादी कवियों के विरुद्ध हैं। सुकवि-किंकरजी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की लेख-शैली से कोई प्रसिद्ध लेखक ही जान पड़ते हैं।

सुकवि-किंकरजी अपने लेख में लिखते हैं—"एक बात और भी है। यदि ये लोग अपने ही लिये कविता करते हैं, तो अपनी कविताओं का प्रकाशन क्यों करते हैं? प्रकाशन भी कैसा? मनोहर टाइपों में, बहुमूल्य काग़ज़ पर, अनोखे-अनोखे चित्रों से सुसज्जित, टेढ़ी-मेढ़ी और ऊँची-नीची पंक्तियों में, रंग-बिरंगे बेल-बूटों से अलंकृत। यह इतना ठाट-बाट—यह इतना आडंबर—दूसरों ही को रिझाने के लिये हो सकता है, अपनी आत्मा की तृप्ति के लिये नहीं। परंतु सकवि के लिये इस आयोजन की क्या आवश्यकता है।"

सुकवि-किंकरजी की इन पंक्तियों से पता चलता है कि उनके पास किसी ने उक्त प्रकार की कोई कविता की पुस्तक भेजी है। सुकवि-किंकरजी की इन पंक्तियों को पढ़कर मैं सोचने लगा, हाल में ऐसी कौन पुस्तक छपी है? ध्यान में आया—'पल्लव'।

एक दूसरे स्थान पर सुकवि-किंकरजी ने लिखा है—"यहाँ पर यह कहा जा सकता है कि छायावादी कवि दूसरों को प्रसन्न करने के लिये, कविता-रचना नहीं करते। वे अपनी ही मनस्तुष्टि के लिये कविता लिखते हैं। इस पर प्रश्न हो सकता है कि फिर वे दूसरों से अपनी कविता की समालोचना के अभिलाषी क्यों होते हैं?"

सुकवि-किंकरजी के इस अंश से यही मालूम होता है कि 'पल्लव' के कवि—श्रीसुमित्रानंदनजी पंत—ने उनके पास उसकी एक प्रति समालोचना के लिये भेजी थी। परंतु पाठकों को भली भाँति स्मरण रखना चाहिए, ये सब बातें मैं इन अंशों के आधार पर ही लिख रहा हूँ। हाँ, तो सुकवि-किंकरजी ने प्रकट रूप से उसकी समालोचना नहीं की। श्रीसुमित्रानंदनजी पंत के समालोचना की अभिलाषा करने से प्रतीत होता है कि सुकवि-किंकरजी हिंदी के केवल प्रसिद्ध लेखक ही नहीं, किंतु एक उद्भट समालोचक भी हैं। इधर श्यामसुंदरदासजी भी हिंदी के स्तंभ ही हैं। इन दोनों धुरंधरों की अध्यक्षता तथा नेतृत्व में, ईश्वर करे, छायावाद की कड़ी समालोचना हो। तभी 'छायावादी'-नामधारी कवियों की आँखें खुलेंगी, और तभी हिंदी-भाषा का कल्याण होगा।

मैं पहले ही यह कह देना अपना प्रधान कर्तव्य समझता हूँ कि इन पंक्तियों का लेखक न तो कवि है, और न उसके जीवन का अधिक समय कविता के अध्ययन ही में बीता है। परंतु मतभेद की दशा में प्रत्येक व्यक्ति का अपनी-अपनी स्वतंत्र सम्मति प्रकाशित कर देना बहुत ही आवश्यक है। मैं पक्षपात-रहित होकर छायावाद के प्रश्न पर विचार करूँगा। मैं सत्य का तथा प्रकट रूप से कहने का पक्षपाती हूँ। इसी कारण सुकवि-किंकरजी का यह छद्म-वेश नहीं पसंद करता। मेरी राय में सुकवि-किंकरजी को अपना नाम प्रकट कर देना चाहिए था। मेरा विचार है कि सत्य के पक्ष में समालोचकों को गाली खाने के लिये तैयार रहना चाहिए। सत्साहित्य की वृद्धि के लिये स्पष्टवादिता की अत्यंत अधिक आवश्यकता है, चाहे उसे कोई बुरा माने या अच्छा। यदि सुकवि-किंकरजी को 'पल्लव' (यदि मेरा अनुमान सत्य है) अच्छा नहीं लगा, तो प्रकट रूप से उसका विरोध करना चाहिए था। मुझे हरप्रसादजी गौड़ तथा सुकवि-किंकरजी के लेख, रहस्यवाद-संबंधी उस विवाद का स्मरण दिलाते हैं, जिसका सूत्रपात कुस्तुंतुनिया (Constantinople) में हुआ था। रहस्यवाद-संबंधी यह विवाद संसार के रहस्यवाद के इतिहास में बड़ा ही विचित्र है। सन् ५३३ ई० का समय था। कुस्तुंतुनिया में एक बड़ी भारी धार्मिक सभा हो रही थी। इस सभा में धार्मिक विषय पर मतभेद उठ खड़ा हुआ; दो दल हो गए। एक दल का नेता इफ़ेसस (Ephesus) का बिशप था। इसका नाम था हिपेशियस (Hypatius)। दूसरे दल का नेता सेवेरस था। यही सेवेरस एंटीओच (Antioch) का मुखिया था। सेवेरस ने अपने पक्ष में डायोनिसियस (Dionysius) के लेखों का प्रमाण दिया। परंतु हिपेशियस बिशप ने इन प्रमाणों को मिथ्या कहकर टाल दिया। उसी समय से डायोनिसियस के लेखों के प्रति सब लोगों की उत्सुकता बढ़ने लगी। धीरे-धीरे डायोनिसियस के रहस्यवादात्मक लेखों का प्रचार सब लोगों में बहुत हो गया। पहले तो ईसाइयों ने इन लेखों की निंदा की, इस रहस्यवाद को असत्य कहा, नाक-भौं सिकोड़ी; परंतु अंत में इसका प्रचार ईसाइयों में भी होने लगा। सन् ५८० ई० में, इस संबंध में, अलेक्ज़ेंड्रिया (Alexandria) में, इन लोगों के बारे में ख़ूब चर्चा हुई। यहाँ तक कि पोप महान् ग्रीगरी (Pope Gregory the great) ने भी इसके संबंध में ख़ूब विचार किया। सन् ६०६ ई० में फिर एक बड़ी भारी सभा हुई। उस सभा में डायोनिसियस के लेखों के बारे में ख़ूब वाद-विवाद हुआ। आठवीं शताब्दी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ने पहले उसे पत्र दिया। उसने उसे देखकर कहा—"यह तो मेरा ही लिखा हुआ है।"

चित्रकार ने "हाँ" कहते हुए उसके हाथ में चित्र दे दिया। तब उसने कहा—यह तो मेरी ही सूरत का चित्र मालूम पड़ता है।

चित्रकार बड़े ध्यान से उसकी तरफ़ देखने लगा। उसने कहा—"हाँ। इसे बनाकर ही मुझे शांति मिली है। और अब अंतिम मिलन है। मैं जाता हूँ।"

इतना कहकर उत्तर की प्रतीक्षा किए बिना ही चित्रकार देखते-ही-देखते न-जाने कहाँ चला गया!

विनोदशंकर व्यास

चित्रकार ने "हाँ" कहते हुए उसके हाथ में चित्र दे दिया। तब उसने कहा—यह तो मेरी ही सूरत का चित्र मालूम पड़ता है।

"छायावाद"

[रहस्यवाद का रहस्य]

[१]

गत मई की 'सरस्वती' में किन्हीं सुकवि-किंकरजी ने 'आजकल के हिंदी-कवि और कविता'-शीर्षक एक लेख छपाया है। सुना है, वही लेख 'आज' की भी जून की तीन संख्याओं में उद्धृत किया गया है। इस लेख के उत्तर में मेरे मित्र [illegible]जी गौड़ ने 'छायावाद की [illegible]' [illegible] एक लेख आषाढ़ की 'माधुरी' में लिखा है। सुकवि-[illegible] जी के लेख में हमारे गौड़जी विद्वत्ता, काव्यमर्मज्ञता, [illegible] मत्ता, एकदेशीयता तथा पक्षपात पाते हैं। पता नहीं, [illegible] जी के लेख में सुकवि-किंकरजी क्या पाते हैं। उक्त [illegible] लेख पढ़ने से मेरा हृदय आनंद से नाच उठा। इन [illegible] से स्पष्ट मालूम होता है कि हिंदी-साहित्य का [illegible] बड़ा उज्ज्वल है। मेरा पूर्ण विश्वास है कि [illegible] मतभेद से हिंदी-साहित्य का उपकार ही [illegible] दोनों लेखों से स्पष्ट है कि बाबू श्यामसुंदर [illegible] भी [illegible] कवियों के विरुद्ध हैं। सुकवि-[illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भी लेख-शैली से कोई प्रसिद्ध लेखक ही जान पड़ते हैं।

सुकवि-किंकरजी अपने लेख में लिखते हैं—"एक बात और भी है। यदि ये लोग अपने ही लिये कविता करते हैं, तो अपनी कविताओं का प्रकाशन क्यों करते हैं? प्रकाशन भी कैसा? मनोहर टाइपों में, बहुमूल्य काग़ज़ पर, अनोखे-अनोखे चित्रों से सुसज्जित, टेढ़ी-मेढ़ी और ऊँची-नीची पंक्तियों में, रंग-विरंगे बेल-बूटों से अलंकृत। यह इतना ठाट-बाट—यह इतना आडंबर—दूसरों ही को रिझाने के लिये हो सकता है, अपनी आत्मा की तृप्ति के लिये नहीं। परंतु सत्कवि के लिये इस आयोजन की क्या आवश्यकता है।"

सुकवि-किंकरजी की इन पंक्तियों से पता चलता है कि उनके पास किसी ने उक्त प्रकार की कोई कविता की पुस्तक भेजी है। सुकवि-किंकरजी की इन पंक्तियों को पढ़कर मैं सोचने लगा, हाल में ऐसी कौन पुस्तक छपी है? ध्यान में आया—'पल्लव'।

एक दूसरे स्थान पर सुकवि-किंकरजी ने लिखा है—"यहाँ पर यह कहा जा सकता है कि छायावादी कवि दूसरों को प्रसन्न करने के लिये कविता-रचना नहीं करते। वे अपनी ही मनस्तुष्टि के लिये कविता लिखते हैं। इस पर प्रश्न हो सकता है कि फिर वे दूसरों से अपनी कविता की समालोचना के अभिलाषी क्यों होते हैं?"

सुकवि-किंकरजी के इस अंश से यही मालूम होता है कि 'पल्लव' के कवि—श्रीसुमित्रानंदनजी पंत—ने उनके पास उसकी एक प्रति समालोचना के लिये भेजी थी। परंतु पाठकों को भली भाँति स्मरण रखना चाहिए, ये सब बातें मैं इन अंशों के आधार पर ही लिख रहा हूँ। हाँ, तो सुकवि-किंकरजी ने प्रकट रूप से उसकी समालोचना नहीं की। श्रीसुमित्रानंदनजी पंत के समालोचना की अभिलाषा करने से प्रतीत होता है कि सुकवि-किंकरजी हिंदी के केवल प्रसिद्ध लेखक ही नहीं, किंतु एक उद्भट समालोचक भी हैं। इधर श्यामसुंदरदासजी भी हिंदी के स्तंभ ही हैं। इन दोनों धुरंधरों की अध्यक्षता तथा नेतृत्व में, ईश्वर करे, छायावाद की कड़ी समालोचना हो। तभी 'छायावादी'-नामधारी कवियों की आँखें खुलेंगी, और तभी हिंदी-भाषा का कल्याण होगा।

मैं पहले ही यह कह देना अपना प्रधान कर्तव्य समझता हूँ कि इन पंक्तियों का लेखक न तो कवि है, और न उसके जीवन का अधिक समय कविता के अध्ययन ही में बीता है। परंतु मतभेद की दशा में प्रत्येक व्यक्ति का अपनी-अपनी स्वतंत्र सम्मति प्रकाशित कर देना बहुत ही आवश्यक है। मैं पक्षपात-रहित होकर छायावाद के प्रश्न पर विचार करूँगा। मैं सत्य का तथा प्रकट रूप से कहने का पक्षपाती हूँ। इसी कारण सुकवि-किंकरजी का यह छद्म-वेश नहीं पसंद करता। मेरी राय में सुकवि-किंकरजी को अपना नाम प्रकट कर देना चाहिए था। मेरा विचार है कि सत्य के पक्ष में समालोचकों को गाली खाने के लिये तैयार रहना चाहिए। सत्साहित्य की वृद्धि के लिये स्पष्टवादिता की अत्यंत अधिक आवश्यकता है, चाहे उसे कोई बुरा माने या अच्छा। यदि सुकवि-किंकरजी को 'पल्लव' (यदि मेरा अनुमान सत्य है) अच्छा नहीं लगा, तो प्रकट रूप से उसका विरोध करना चाहिए था। मुझे कृष्णदेवप्रसादजी गौड़ तथा सुकवि-किंकरजी के लेख, रहस्यवाद-संबंधी उस विवाद का स्मरण दिलाते हैं, जिसका सूत्रपात कुस्तुंतुनिया (Constantinople) में हुआ था। रहस्यवाद-संबंधी यह विवाद संसार के रहस्यवाद के इतिहास में बड़ा ही विचित्र है। सन् ५३३ ई० का समय था। कुस्तुंतुनिया में एक बड़ी भारी धार्मिक सभा हो रही थी। इस सभा में धार्मिक विषय पर मतभेद उठ खड़ा हुआ; दो दल हो गए। एक दल का नेता इफ़ेसस (Ephesus) का बिशप था। इसका नाम था हिपेशियस (Hypatius)। दूसरे दल का नेता सेवेरस था। यही सेवेरस एंटीओच (Antioch) का मुखिया था। सेवेरस ने अपने पक्ष में डायोनिसियस (Dionysius) के लेखों का प्रमाण दिया। परंतु हिपेशियस बिशप ने इन प्रमाणों को मिथ्या कहकर टाल दिया। उसी समय से डायोनिसियस के लेखों के प्रति सब लोगों की उत्सुकता बढ़ने लगी। धीरे-धीरे डायोनिसियस के रहस्यवादात्मक लेखों का प्रचार सब लोगों में बहुत हो गया। पहले तो ईसाइयों ने इन लेखों की निंदा की, इस रहस्यवाद को असत्य कहा, नाक-भौं सिकोड़ी; परंतु अंत में इसका प्रचार ईसाइयों में भी होने लगा। सन् ५८० ई० में, इस संबंध में, अलेक्ज़ेंड्रिया (Alexandria) में, इन लोगों के बारे में ख़ूब चर्चा हुई। यहाँ तक कि पोप महान् ग्रीगरी (Pope Gregory the great) ने भी इसके संबंध में ख़ूब विचार किया। सन् ६४९ ई० में फिर एक बड़ी भारी सभा हुई। उस सभा में डायोनिसियस के लेखों के बारे में ख़ूब वाद-विवाद हुआ। आठवीं शताब्दी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में, फ्रांस में, जब डायोनिसियस के लेखों का प्रचार हुआ, तब फ्रांसवाले कहने लगे कि फ्रांस-देश के निवासी सेंट डेनिस ने ही डायोनिसियस के नाम से उन्हें लिखा है।

डायोनिसियस का रहस्यवाद क्या है, उसका प्रचार योरप में कैसे हुआ, संसार के रहस्यवाद के इतिहास में उसका क्या स्थान है, ये बातें मैं अपने एक दूसरे स्वतंत्र लेख में लिखूँगा।

❀ ❀ ❀

मैं ठीक-ठीक नहीं कह सकता कि सुकवि-किंकरजी ने अपने लेख में किन-किन कवियों की कविता उद्धृत की है। परंतु लेख के कई अंशों से पता चलता है कि आपका लक्ष्य श्रीसुमित्रानंदनजी पंत की कविता अवश्य ही है। सुकवि-किंकरजी के निम्न-लिखित अंश से यह अनुमान किया जा सकता है—"पर छायावादियों की रचना तो कभी-कभी समझ में नहीं आती। ये लोग बहुधा बड़े ही विलक्षण छंदों या वृत्तों का भी प्रयोग करते हैं। कोई चौपदे लिखते हैं, कोई छपदे, कोई ग्यारहपदे, कोई तेरहपदे! किसी की चार सतरें गज़-गज़-भर लंबी, तो दो सतरें दो-ही-दो अंगुल की! फिर ये लोग बेतुकी पद्यावली भी लिखने की बहुधा कृपा करते हैं। इस दशा में इनकी रचना एक अजीब गोरख-धंधा हो जाती है। न ये शास्त्र की आज्ञा के क़ायल, न ये पूर्ववर्ती कवियों की प्रणाली के अनुवर्ती, न ये सत्समालोचकों के परामर्श की परवा करनेवाले। इनका मूल मंत्र है—हम चुनाँ दीगरे नेस्त। इस हमादानी को दूर करने का क्या इलाज हो सकता है, कुछ समझ में नहीं आता।"

जब सुकवि-किंकरजी गज़, फुट और इंच लेकर कविता की नाप-जोख करने लगते हैं, तो पता चलता है कि आपका अभिप्राय श्रीनिरालाजी से है। श्रीकृष्णदेवप्रसादजी गौड़ ने वर्तमान छायावादी कवियों में निरालाजी और जयशंकरप्रसादजी का भी नाम लिया है। इस प्रकार यह स्पष्ट हो जाता है कि उक्त महानुभावों की सम्मति में इन लेखों का संबंध श्रीसुमित्रानंदनजी पंत, श्रीनिरालाजी तथा श्रीजयशंकरप्रसादजी से है, और ये लोग वर्तमान छायावादी कवि हैं। मैं अभी इस प्रश्न पर विचार नहीं करना चाहता कि छायावाद से इन कवियों का क्या संबंध है। परंतु इतना तो मैं निस्संकोच कह सकता हूँ कि ये तीनों ही कवि हिंदी-कविता-गगन के उज्ज्वल तारे हैं, और चाहे हम-आप इनकी कविता का आदर अभी न करें, ये यथा-समय अवश्य ही चमकेंगे, और इनकी उत्कृष्ट रचनाओं से हिंदी-भाषा का मुख उज्ज्वल होगा।

मैंने श्रीसुमित्रानंदनजी पंत के 'पल्लव' का अध्ययन नहीं किया; परंतु उनकी 'ग्रंथि' को कई बार पढ़ा है। मैं निस्संकोच कह सकता हूँ कि 'ग्रंथि' हिंदी-भाषा की अमर सामग्री है। मुझे ग्रंथि के पढ़ने से पंतजी की कवित्व-शक्ति का अच्छा परिचय मिला। यदि और नहीं, तो केवल इसी एक ग्रंथि के आधार पर मैं पंतजी को एक बड़ा कवि मानने को तैयार हूँ। मैं स्वीकार करता हूँ कि पंतजी पुरानी लकीर नहीं पीटते। परंतु केवल इसी कारण उनकी कविता बुरी नहीं कही जा सकती। इसमें संदेह नहीं कि पंतजी की कविता कठिन होती है। परंतु प्रसाद, ओज तथा माधुर्य के नाम की दुहाई देकर उसे हम बुरा नहीं कह सकते। मैं कहता हूँ, आप दो बार ध्यान-पूर्वक ग्रंथि पढ़ जाइए, और फिर देखिए, आपको आनंद आता है या नहीं।

यह बात सत्य है कि पंतजी की कविता में अलंकारों की ही प्रधानता नहीं है; परंतु उसमें खोजने से अलंकार भी मिलते हैं। हम लोगों को अब अलंकारों को ही सब कुछ न मान लेना चाहिए।

निरालाजी भी अपने ढंग के अच्छे कवि हैं। श्रीजयशंकरप्रसादजी तो ऊँचे दर्जे के कवि हैं। ये लोग व्याकरण की उतनी परवा चाहे न करते हों, परंतु इतना तो मैं कह सकता हूँ कि इन लोगों की कविता में जान है, और वह साहित्य की सामग्री है।

सुकवि-किंकरजी ने छायावाद की कुछ कविताओं का भी उल्लेख किया है। पता नहीं, आपने उन कविताओं को छायावाद की कविता कैसे स्वीकार कर लिया! मैं तो उनमें छायावाद की छाया भी नहीं पाता। सुकवि-किंकरजी से मेरा नम्र निवेदन है कि वास्तव में वे छायावाद की कविता हैं ही नहीं। मैं यह नहीं जानता कि ये सब किनकी कविताएँ हैं। यदि इन कविताओं के लेखक इन्हीं कविताओं के आधार पर अपने को छायावादी समझने लगे हैं, तो वे अवश्य ही भारी भ्रम में पड़े हैं। यदि वे अपने को छायावादी कहने का साहस करें, तो ऐसा प्रकाशित करा दें; मैं उनके दावे का खंडन करने को प्रस्तुत हूँ। ठीक-ठीक रहस्यवाद या छायावाद की कविता करना उतना सहज नहीं है। और, न कोई केवल नवीनता के आधार पर ही छायावादी कवि होने का दावा कर सकता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है। कविता में रस तथा भाव ही प्रधान वस्तु हैं, भाषा या शैली नहीं। रस और भाव ही कविता की अंतरात्मा हैं, कविता की जान हैं। भाषा और शैली उसके वस्त्र हैं। हम लोगों को इन नवीन कविताओं में पहले रस और भाव देखना चाहिए। यदि कोई कवि किसी भाव की प्रधानता में आकर, पूर्ववर्ती छंदों में न लिखकर, किसी नए ढंग से लिखता है, तो कोई चिंता नहीं। पिंगल में जितने छंद हैं, वे भी सब-के-सब एक साथ ही आकाश से नहीं गिर पड़े। उनका भी धीरे-धीरे विकास हुआ है। इसी प्रकार अब भी कविता में शैली, भाषा तथा छंद आदि की नवीनता हो सकती है। परंतु इसका आशय यह नहीं कि कवियों को उच्छृंखल हो जाना चाहिए। जब कोई कवि किसी नवीन शैली का आविष्कार या अनुसरण करे, तो उसमें कोई-न-कोई विशेषता—चाहे भाव तथा संगीत की हो या अन्य किसी विषय की—अवश्य होनी चाहिए। मैं सुकवि-किंकरजी के लेख से उनके हृदय की मार्मिक पीड़ा का स्पष्ट रूप से अनुभव कर रहा हूँ। मुझे भी कभी-कभी वास्तव में इसी प्रकार का हार्दिक दुःख हुआ है। मैं इस बात को स्वीकार करता हूँ कि कभी-कभी कोई-कोई कवि व्यर्थ ही, जान-बूझकर, अपनी कविता में केवल नवीनता-ही-नवीनता लाने का प्रयत्न करते हैं। जो बात कवि प्राचीन ढंग से भी उतनी ही ख़ूबी के साथ कह सकता था, उसी को वह शेख़ी के मारे, व्यर्थ ही, बिना किसी उद्देश्य के, नवीन ढंग से लिखने का व्यर्थ परिश्रम तथा असफल चेष्टा करता है। मैं स्पष्ट तथा प्रकट रूप से इसका शीघ्र ही विरोध करने का विचार कर रहा हूँ। भाषा, भाव, रस, शैली, कला तथा किसी अन्य उद्देश्य के लिये नवीनता कोई बुरी बात नहीं; परंतु बिना किसी उद्देश्य के ऐसा करना ढोंग है, अनुचित है, मिथ्याभिमान है।

परंतु पिंगल के पुराने छंदों से भिन्न हो जाने से ही कोई कविता ख़राब नहीं कही जा सकती। संस्कृत में, तथा हिंदी में भी, गद्य-काव्य भी होता ही है। यदि किसी कवि की कविता पिंगल के पद्य न होकर साधारण गद्य की तरह जान पड़े, तो यह कोई दोष नहीं। मैं नीचे श्रीदुलारेलालजी भार्गव की एक कविता उद्धृत करता हूँ। यह कविता 'कृष्णकुमारी'-नामक नाटक की भूमिका में लिखी गई है। यदि इसके स्थान पर यह भूमिका गद्य में लिखी गई होती, तो इसमें ऐसा आनंद कभी न आता, जैसा कि इसके पढ़ने से आता है। इसके साथ-ही-साथ इसका अर्थ तो ऐसा ही स्पष्ट है, जैसे यह गद्य हो। परंतु इस प्रकार लिखने से भूमिका का महत्त्व बहुत कुछ बढ़ गया है। इसलिये इस प्रकार की नवीनता एक उद्देश्य की पूर्ति करती है। इस प्रकार की नवीनता वांछनीय है, और इसे कोई दोष नहीं कह सकता। उक्त कविता यह है—

"कृष्णकुमारी काम-कामिनी-सी कमनीया, कंज-कली,
सुगुण-संयुता सुता प्राण-प्रिय राणा भीमसिंह की थी।
जयपुर एवं मारवाड़ के भूपति भारी बल-धारी,
पाणि-ग्रहण करने को उसका, दोनों ही लालायित थे।
इसी लालसा-पूर्ति-हेतु दोनों ने दूत उदयपुर को
भेजे थे। राणा के ऊपर भय, विषाद, असमंजस ने
था अधिकार जमाया—उनका हृदय फटा-सा जाता था।
"जिसकी इच्छा पर पानी फिरता है, वही शत्रु बनकर,
लेकर साथ मित्र-राज्यों को दल-बल से चढ़ आवेगा"—
यही सोचकर भीमसिंह राणा की अक्ल हुई गुम थी।
पर प्रिय जन्म-भूमि रखने को रक्त-पात से अलग, अहह!
कृष्णकुमारी ने निज तनु—विष-जड़—विष पीकर त्याग दिया,
और मृत्यु के साथ ब्याह-बंधन को कहीं मधुर समझा,
जिसके सुंदर सुयश-सुमन का सौरभ अब भी फैला है!"

❀ ❀ ❀

योरप के महाभारत से पहले वहाँ (योरप में) देहात्म-वाद का बोलबाला था। युद्ध के बाद से योरप के लोगों का ध्यान ईश्वर की ओर आकृष्ट होने लगा है। इस समय संसार में इसकी लहरें उठ रही हैं। भारत भी उससे अलग नहीं रह सकता। जहाँ तक मैं समझता हूँ, रहस्य-वाद की कविता में ही भारतीयता है। ईश्वर करे, भारत में भी, विशेषकर हिंदी में, अनेक रहस्यवादी और रहस्य-वादी कवि उत्पन्न हों।

❀ ❀ ❀

छायावाद के संबंध में हिंदी-भाषा-भाषियों के भिन्न-भिन्न विचार हैं। कोई-कोई इसे रहस्यवाद कहते हैं। वास्तव में ये शब्द अँगरेज़ी 'मिस्टिक' के ही द्योतक हैं। हाल ही में सुकवि-किंकरजी ने पंडित मथुराप्रसाद मिश्र के त्रैभाषिक कोश से इसका अर्थ ढूँढ़ निकाला है। सुकवि-किंकरजी ने लिखा है—"शायद उनका मतलब है कि किसी कविता के भावों की छाया यदि कहीं अन्यत्र जाकर पड़े, तो उसे छायावाद-कविता कहना चाहिए।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मिस्टिक-शब्द का अर्थ सुकवि-किंकरजी ने, मिश्रजी के कोश के अनुकूल, गूढ़ार्थ, गुह्य, गुप्त, गोप्य और रहस्य लिखा है। इस संबंध में मैं सुकवि-किंकरजी से निवेदन करूँगा कि मिस्टिक-शब्द का अर्थ यह नहीं है। रहीम पर कुछ कहना हो, तो राम का चरित गाने से, अथवा अशोक पर लिखना हो, तो सिकंदर के जीवन-चरित की चर्चा करने से ही छायावाद की कविता नहीं कहला सकती। सहोक्ति अलंकार तथा द्व्यर्थक कविता रहस्यवाद की कविता नहीं हो सकती।

बाबू श्यामसुंदरदासजी ने भी कायस्थ-पाठशाला-कॉलेज के बोर्डिंग-हाउस में, हिंदी-साहित्य के विकास के संबंध में, जो भाषण दिया था, उसमें छायावाद के विरुद्ध कहा था। पता नहीं, बाबू साहब ने छायावाद के अर्थ के संबंध में वहाँ कुछ कहा था या नहीं। परंतु उस भाषण का जितना अंश सुकवि-किंकरजी ने 'सरस्वती' में दिया है, उसमें तो बाबू साहब ने छायावाद की कोई व्याख्या नहीं की। इसमें संदेह नहीं कि उन्होंने ऐसे कवियों के विरुद्ध अवश्य लिखा है, जिनकी कविता कठिन होती है, और जो स्वयं ही अपनी कविता का अर्थ नहीं समझते। यह बात सच है कि छायावादी कवियों की कविता पर अर्थ-काठिन्य का दोष अवश्य मढ़ा जा सकता है। जब श्रीद्विजेंद्रलाल राय ने श्रीरवींद्रनाथजी की कविता की कड़ी समालोचना की थी, तो सबसे बड़ा दोष उनकी कविता में यही—अर्थ की कठिनता ही—निकाला था। द्विजेंद्रलाल राय ने कई पद्यों के अर्थ स्पष्ट कर देने के लिये उन्हें ललकारा भी था। परंतु इन सब बातों से यह न समझ लेना चाहिए कि किसी कविता का अर्थ कठिन हो गया हो, तो, बस, वह छायावाद की कविता हो गई।

मुझसे छायावाद के संबंध में और भी लोगों से बातें हुई हैं। कोई इसका कुछ अर्थ करता है, कोई कुछ। कोई-कोई छायावाद और रहस्यवाद को समानार्थक ही समझते हैं। वास्तव में बात यह है कि अभी तक छायावाद का अर्थ हिंदी में निश्चित नहीं हो पाया है। इस अर्थ के निश्चित न होने से ही हिंदी में गड़बड़ी फैली हुई है। इसका यह तात्पर्य नहीं कि छायावाद का अर्थ किसी सभा के प्रस्ताव द्वारा निश्चित करना चाहिए। मेरा कहना केवल यह है कि इसका प्रयोग उसी अर्थ में करना चाहिए, जिसमें उचित है। मैं पहले ही स्पष्ट रूप से कह देना चाहता हूँ कि वर्तमान काल में, अभी तक, हिंदी में रहस्यवाद की कोई कविता नहीं हुई। मन-मानी करने से कोई कवि रहस्यवादी नहीं हो सकता। यदि कोई कवि जान-बूझकर ऐसी कविता करे, जो कठिन हो, या जिसका कोई भी, यहाँ तक कि स्वयं कवि भी, अर्थ न कर सके, तो केवल इसी कारण वह रहस्यवादी कवि नहीं कहा जा सकता।

यदि कोई ऐसी कविता आपके सामने आवे, जिसका अर्थ, अच्छी तरह विचारने पर भी, समझ में न आवे, तो सहसा आप यह न समझ लीजिए कि बस, यह कविता रहस्यवाद-संबंधी है। कोई कविता इसीलिये रहस्यवाद की कविता नहीं कही जा सकती कि उसका अस्तित्व पिंगल के छंदों में नहीं है। कोई थोड़ी-सी अथवा अधिक नवीनता देखकर आप यह न समझ लें कि यह कविता रहस्यवाद की है। पहले आप रहस्यवाद के अर्थ का निश्चय करिए, तब उसी के अनुसार एक कसौटी तैयार करिए, तदनंतर उस कविता को उक्त कसौटी पर कसिए। यदि वह कविता खरी निकले, तो उसे रहस्यवाद की कविता मान लीजिए। यदि वह कविता उस कसौटी पर खरी न उतरे, और तब भी यदि उसका रचयिता उसे रहस्यवाद की कहे, तो उसकी ऐसी कड़ी समालोचना कीजिए कि कवि भी याद करे।

संगीत भी एक प्रकार की कविता है। आप चाहे जो गाइए, वह कविता * (बुरी अथवा अच्छी) अवश्य ही रहेगी। परंतु संगीत का गान-विद्या से अधिक संबंध है, और यह एक कला है। कला की कुछ-न-कुछ आवश्यकताएँ अवश्य हुआ करती हैं। संगीत उन्हीं आवश्यकताओं की पूर्ति करता है। ऐसा करने में वह, पिंगल के छंदो के रूप में न होकर, उनसे भिन्न भी रूप धारण कर लेता है। तो क्या ऐसी दशा में वह कविता नहीं रह जाती? इसलिये हम लोगों को यह स्वीकार करना पड़ेगा कि ऐसी कविता भी हो सकती है, जिसमें पिंगल के नियम न लगें। परंतु इसी कारण वह संगीत रहस्यवाद की कविता नहीं कहा जा सकता। यदि हिंदी-भाषा के कुछ ऐसे कवि हों, जो जान-बूझकर रहस्यवादी कवि बनने की व्यर्थ चेष्टा करते हों, और कोई हिंदी का विद्वान् उन्हें रहस्यवादी कवि न समझता हो, तो उसे स्पष्ट रूप से उनका नाम लेना चाहिए। तब उस पर विचार किया जा

* कविता नहीं, पद्य।—सु०-सं०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सकता है। जो लोग समझते हैं कि कुछ कवियों की कविताओं से वास्तव में साहित्य की हत्या हो रही है, तो स्पष्ट रूप से उन्हें चेतावनी देनी चाहिए।

रहस्यवाद के संबंध में श्रीरवींद्रनाथ ठाकुर का नाम प्रायः दोनों लेखों के लेखकों ने लिया है। प्रायः सब लोग कहते हैं, सुकवि-किंकरजी ने भी यही बात स्वीकार की है, और बाबू श्यामसुंदरदासजी ने भी एक प्रकार से स्वीकार किया है कि श्रीरवींद्रनाथ ठाकुर रहस्यवादी हैं। मेरा विश्वास है कि रवींद्रनाथ ठाकुर रहस्यवादी नहीं हैं। संभव है, रवींद्र बाबू रहस्यवादी कवि भी हों; किंतु वह छायावादी तथा छायावादी कवि अवश्य हैं। मैंने रहस्यवाद और छायावाद का प्रयोग भिन्न-भिन्न अर्थों में किया है, जैसा कि आगे पढ़ने से पता चलेगा। रहस्य-वाद तथा रहस्यज्ञ कवि, ये ऐसे पद हैं, जो श्रीरवींद्रनाथजी ठाकुर को नहीं दिए जा सकते। महात्मा कबीरदासजी वास्तव में रहस्यवादी थे, और वह रहस्यवाद की कविता करते थे। एक प्रकार से किसी व्यक्ति को रहस्यवादी तथा रहस्यवादी कवि कहना मेरी अनधिकार चर्चा है, और मैं इस बात को स्वीकार करता हूँ कि इस संबंध में मुझसे ग़लती हो जाना बहुत ही अधिक संभव है। परंतु इन दोनों महाकवियों (महात्मा कबीरदास और श्रीरवींद्रनाथ ठाकुर) के इतिहास, जीवन-चरित तथा कविता की भी तुलना करके मैंने निश्चय किया है कि रवींद्र बाबू रहस्यवादी तो हैं ही नहीं, चाहे वह रहस्यवादी कवि भले ही हों।

(आगामी संख्या में समाप्य)

अवध उपाध्याय

ऊषा

(१)

विश्व-विमोहन कर शृंगार,
झलका झलमल-झलमल हार,
मेघलोक-वासिनि बाला!
ले मृदु फूलों की माला,
नभ-सम्राट-स्वयंवर में तुम घूम रही हो किसे निहार?
विश्व-विमोहन कर शृंगार।

(२)

कुसुम सुगंधित मधुवन में,
तुम प्रसन्न मन-ही-मन में,
जपकर कोई जीवित जाप,
देकर अर्घ्यदान चुपचाप,
तपस्विनी-सी तन्मय हो किस प्राणनाथ के पूजन में?
कुसुम सुगंधित मधुवन में।

(३)

नलिन-नयन से विश्व विलोक,
चुपके-से अशांति-रथ रोक,
लुक-छिपकर हे मतवाली,
फूलों से भरकर डाली,
चुनती हो सफ़ेद हिम-मोती, क्यों जाग्रत् कर निद्रित लोक?
नलिन-नयन से विश्व विलोक।

(४)

गाकर दिव्य भैरवी एक,
विहगों को सिखलाकर टेक,
छवि की श्यामल छाया में,
भुवनमोहिनी माया में,
नित्य रसिक रवि का करती हो क्यों तुम अलबेली, अभिषेक?
गाकर दिव्य भैरवी एक।

(५)

नभ के उज्ज्वल आसन पर,
गौरव के अनुशासन पर।
खोल भक्ति का मोह-सदन,
चमकाकर सिंदूर बदन,
हँसती हो क्यों चित्रकार के चारु चित्र-सिंहासन पर?
नभ के उज्ज्वल आसन पर।

"गुलाब"

महिला-माला की मनोहर मणियाँ

(संपादिका, श्रीमती कृष्णकुमारी)

		सादी	सजिल्द
१. पत्रांजलि	मूल्य	॥),	॥=)
२. भारत की विदुषी नारियाँ	,,	॥),	॥=)
३. नारी-उपदेश	,,	॥),	॥=)
४. कमला-कुसुम	,,	१),	१॥)
५. देवी द्रौपदी	,,	॥),	॥=)
६. लक्ष्मी	,,	॥=),	॥)
७. महिला-मोद	,,	॥),	॥=)

गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आदर्श गुरु

[चित्रकार—श्रीयुत उत्तमसिंह तोमर बी० ए०]

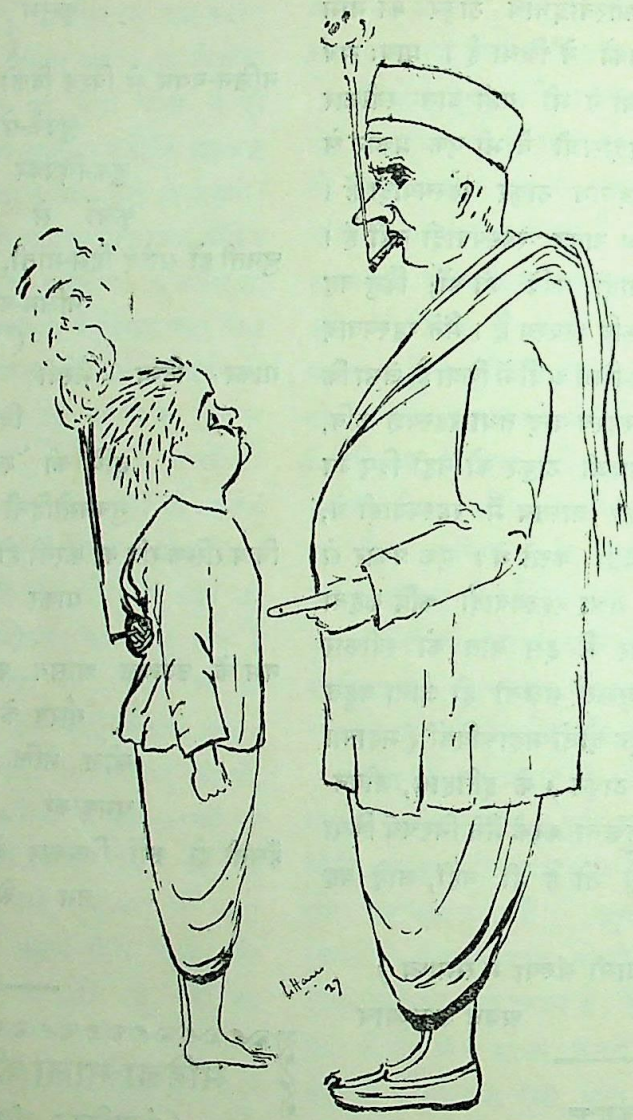

गुरु (विद्यार्थी से)—क्यों बे उल्लू, सिगरेट पीता है !

प्रचारिकाओं की आवश्यकता

हमें हिंदी की सर्वश्रेष्ठ साहित्यिक और सामाजिक पत्रिका "सुधा" का तथा अपने प्रकाशित किए हुए सुंदर स्त्रियोपयोगी साहित्य का स्त्रियों में प्रचार करने के लिये (पंजाब, यू० पी०, बिहार, सी० पी० आदि में) सुशिक्षिता प्रचारिकाओं की आवश्यकता है। केवल पढ़ी-लिखी महिलाएँ ही प्रार्थना-पत्र भेजें। साथ ही अपनी योग्यता, अनुभव और आयु के बारे में भी स्पष्ट लिखें।

संचालक गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय, अमीनाबाद-पार्क, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शब्दकार—अज्ञात] [स्वरलिपिकार—श्रीहेतलाल शर्मा बी० एस्-सी०

गौड़मलार-झपताल

गीत

पिया से सँदेसवा, कहो कोइ जाए।

अंतरा

बीते बरस जायँ, पिया नाहिं आए ;
बिरह-बिथा-बीच, कैसे जिया कल पाए।

स्थायी

×		२			०		३		
ग	म	ग	म	प	मग	ग	रे	सा	—
क	हो	को	—	इ	जा-	—	ए	—	—
नि	ध	म	प	मग	ग	रे	सा	—	—
पि	या	से	—	सँ-	दे	स	वा	—	—

अंतरा

ग	म	पा	नि	नि	सां	सां	सां	—	सां
बी	—	ते	—	ब	र	स	जा	—	यँ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नि	सां	नि	सां	रें	सं	नि	ध	प	—
पि	या	ना	—	हिं	आ	—	ए	—	—
म	म	म	—	म	पध	नि	ध	—	प
बि	र	ह	—	बि	था	—	बी	—	च
ग	म	ग	म	प	मग	ग	रे	—	सा
कै	से	जि	या	—	क	ल	पा	—	ए

संकेत

१. जिन स्वरों के नीचे बिंदु हो वे मंद सप्तक के, जिनमें कोई बिंदु न हो वे मध्य सप्तक के तथा जिनके शीर्ष में बिंदु हो वे तार सप्तक के हैं। जैसे—सा, सा, सां।

२. जिन स्वरों के नीचे लकीर हो वे कोमल हैं। जैसे रे, ग, ध, नि। जिन में कोई चिह्न न हो वे तीव्र हैं। जैसे — रे, ग, ध, नि।

३. शुद्ध मध्यम का चिह्न "म" और तीव्र मध्यम का चिह्न "म" है।

४. यह चिह्न ⌒ मींड का प्रदर्शक है।

५. सम का चिह्न ×, ताल के लिये अंक और ख़ाली का द्योतक ० है।

६. ⌣ इस चिह्न में जितने स्वर रहें, वे एक मात्रा में गाए या बजाए जायँगे। जैसे—सारे।

७. — यह दीर्घ मात्रा का चिह्न है।

विचित्र योगी

[लेखक, श्रीद्वारकाप्रसाद मौर्य बी० ए०, एल्-एल्० बी०]

बिलकुल नया मौलिक उपन्यास। वसुमती का अपनी सती साध्वी देवरानी से ईर्ष्या करना। देवर का चित्त अपनी ओर आकर्षित करने के लिये षड्यंत्र की रचना। देवर का घर छोड़कर कहीं चला जाना। उसकी मृत्यु की ख़बर। कमला के साथ दुर्व्यवहार। उसका पिता के घर चला जाना। पिता की अप्रसन्नता। काशी में किसी पंडा के घर उसका छोड़ा जाना। वहाँ से उसका निकल भागना। एक मियाँ के हाथ में पड़ना। वहाँ से भी एक हिंदू दाई की मदद से अपने सतीत्व की रक्षा करना और भाग निकलना। उषा का साठ वर्ष के बुड्ढे से विवाह। महेशसिंह की उषा से बलात्कार करने की इच्छा। उसके भाई का आ जाना और महेशसिंह की दुर्दशा। आदि-आदि एक-से-एक बढ़कर गार्हस्थ्य-जीवन की जटिल समस्याओं से भरपूर। पढ़ते जाइए और आनंद तथा आश्चर्य से खुश और चकित होते जाइए। पुस्तक हाथ में लेकर समाप्त किए बिना नहीं छोड़ सकते। मूल्य १), सजिल्द १॥)

संचालक गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

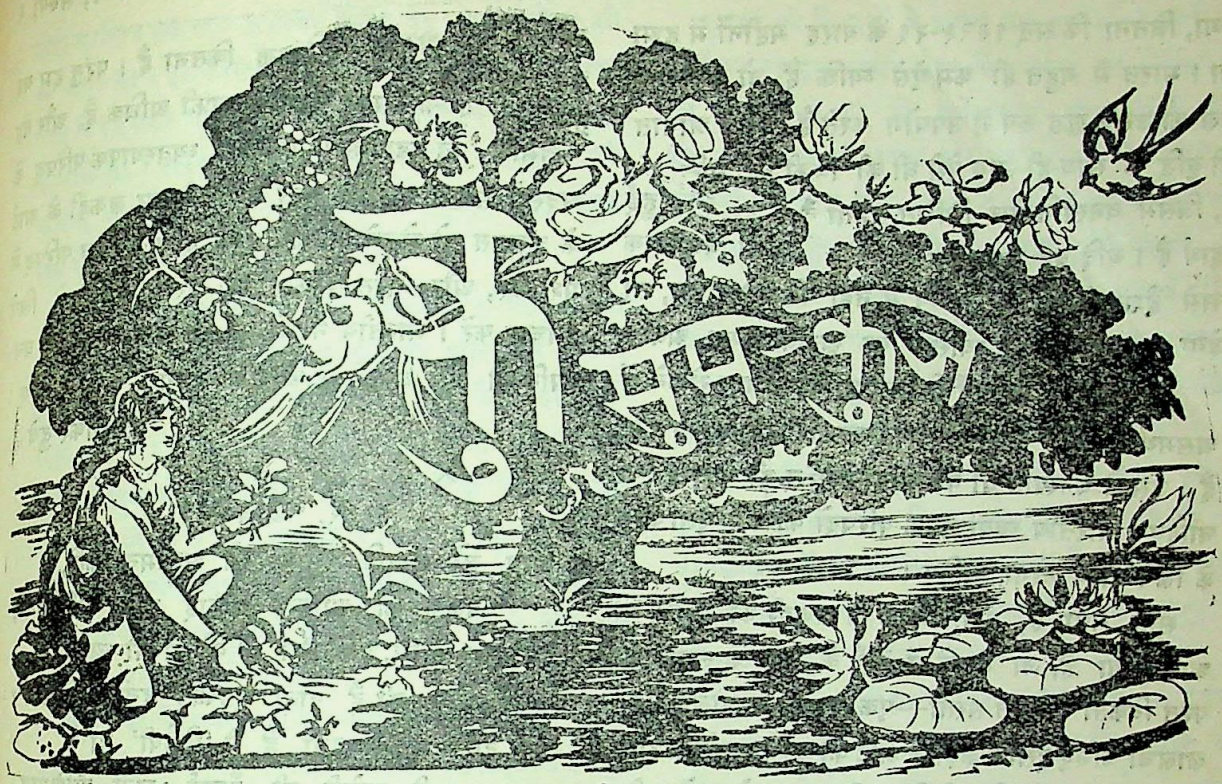

१. वनस्पति-घी और लकड़ी के आटे का आयात

जब से भारत में वनस्पति-घी का आयात होने लगा है, तब से नगरों में रहनेवाले व्यक्तियों को शुद्ध घी प्राप्त करना बहुत कठिन हो गया है। कहा जाता है, वनस्पति-घी में कुछ भी चर्बी नहीं है, और न उसके उपयोग से किसी प्रकार की हानि ही होती है। यदि वह शुद्ध वनस्पति-तेल के नाम से उसी रूप में बेचा जाय, तो किसी को विशेष आपत्ति न होगी। परंतु जब यह शुद्ध घी के साथ, व्यापारियों द्वारा, मिला दिया जाता है, और मिश्रित घी के नाम से बेचा जाता है, तो इससे देश और समाज को बड़ी हानि होती है। साधारण व्यक्तियों के लिये यह जान लेना बहुत ही कठिन है कि किसी घी में शुद्ध घी कितना है और वनस्पति-तेल कितना। म्युनिसिपलिटियों का यह कर्तव्य है कि वे मिश्रित घी का बेचा जाना रोकें, और ऐसा घी बेचनेवालों को उचित दंड दिलावें। परंतु कितनी म्युनिसिपलिटियाँ ऐसी हैं, जो इस कर्तव्य का पालन कर रही हैं? उनके लिये यह काम आसान भी नहीं है। वनस्पति-घी का आयात प्रतिमास बढ़ रहा है। भारत-सरकार द्वारा विदेशी वस्तुओं के आयात-संबंधी अंक जो प्रतिमास प्रकाशित होते हैं, उनमें वनस्पति-तेल के आयात का मूल्य या परिमाण दिया रहता है। इसका गत चार वर्षों का हिसाब नीचे लिखे अनुसार है—

सन्	वनस्पति-तेल के आयात का मूल्य	वनस्पति-तेल के आयात का परिमाण
१९२३-२४	२ लाख १२ हज़ार रु०	६६ हज़ार गैलन
१९२४-२५	२ ,, ९२ ,, ,,	७४ ,, ,,
१९२५-२६	१७ ,, ७५ ,, ,,	४ लाख ७१ ,, ,,
१९२६-२७ (केवल दस महीने)	१५ ,, ७५ ,, ,,	४ ,, ४१ ,, ,,

इस कोष्ठक से मालूम होता है कि सन् १९२५-२६ में इस वनस्पति-तेल के आयात का परिमाण बहुत बढ़ गया। वह पिछले वर्ष की अपेक्षा छगुने से अधिक, परिमाण और मूल्य में, बढ़ गया। सन् १९२६-२७ में भी इसका आयात पिछले वर्ष से कम नहीं है। ३१ जनवरी, सन् १९२७ तक, केवल दस महीनों में ही, इसका आयात क़रीब-क़रीब उतना ही हो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गया, जितना कि सन् १६२५-२६ के बारह महीनों में हुआ था। भारत में बहुत ही कम ऐसे व्यक्ति हैं, जो वनस्पति-तेल का उसके शुद्ध रूप में उपयोग करते हैं। इसके आयात की वृद्धि के साथ-ही-साथ ऐसे घी की बिक्री की वृद्धि है, जिसमें वनस्पति-तेल मिश्रित रहता है हुई पदार्थ है। यदि वह शुद्ध रूप घी बलकारक उससे देशवासियों म नहीं मिलने पाता, तो पड़ेगा के स्वास्थ्य पर ख़राब असर अवश्य म्युनिसिपलिटियाँ मिश्रित घी का बेचना रोकने में असमर्थ हैं। ऐसी दशा में भारत-सरकार का कर्तव्य स्पष्ट है। उसको वनस्पति-घी का आयात तुरंत ही बंद कर देना चाहिए। भारतीय व्यवस्थापक परिषदों को उसे ऐसा करने के लिये बाध्य करना चाहिए।

सुना गया है, अब विदेश से लकड़ी का आटा भी आने लगा है, जो देखने में गेहूँ के आटे के समान है; परंतु बिकता है बहुत सस्ता—एक रुपए का सोलह सेर। लालची बनिए इसी लकड़ी के आटे को अन्य आटों के साथ मिलाकर बेच रहे हैं। मिश्रित घी का उपयोग तो ग़रीब लोग अपनी ग़रीबी के कारण अधिक परिमाण में नहीं कर पाते, परंतु इस मिश्रित आटे से तो वे भी नहीं बच पावेंगे। इस लकड़ी के आटे के उपयोग से इन ग़रीबों के स्वास्थ्य पर कैसा बुरा असर पड़ेगा, यह पाठक स्वयं अनुमान कर सकते हैं। कुछ म्युनिसिपलिटियों ने तो अपनी हद के अंदर इस लकड़ी के आटे का आना बिलकुल बंद कर दिया है। अन्य म्युनिसिपलिटियों को भी इसका आयात रोक देना चाहिए। परंतु इससे इस आटे का प्रचार ग्रामों में तो नहीं रुक सकेगा। और, भारत की अधिकांश ग़रीब जनता ग्रामों में ही रहती है। ग्रामों के बनिए अपने ग्राम-भाइयों के स्वास्थ्य की कुछ भी परवा न कर अन्य आटों के साथ इस लकड़ी के आटे को मिलाकर मालामाल हो जायँगे, और उसके बुरे फल ग्रामीण जनता को भोगने पड़ेंगे। लकड़ी का आटा शुद्ध रूप में बहुत कम बेचा जायगा। जब इस लकड़ी के आटे का अन्य आटों के साथ मिश्रण सर्वत्र नहीं रोका जा सकता, तो जनता की हित की दृष्टि से भारत-सरकार का प्रधान कर्तव्य है कि वह तुरंत ही इस लकड़ी के आटे के आयात को रोक दे। भारत-सरकार द्वारा प्रतिमास जो विदेशी वस्तुओं के आयात के अंक प्रकाशित होते हैं, उनमें लकड़ी के आटे के आयात का परिमाण और मूल्य नहीं दिया रहता। इसलिये हम यह नहीं बता सकते कि इसके आयात का असली परिमाण कितना है। परंतु हम यह कह सकते हैं कि उसका परिमाण काफ़ी अधिक है, और वह प्रति मास बढ़ रहा है। भारतीय व्यवस्थापक-परिषद् के सदस्यों से हम अनुरोध करते हैं कि वे इस लकड़ी के आटे के आयात को रोकने के लिये तुरंत ही एक बिल परिषद् में पेश करें, और भारत-सरकार को उसके रोकने के लिये लाचार करें। भारतीय नरेशों को भी अपने राज्यों में वनस्पति-घी और लकड़ी के आटे को न आने देना चाहिए।

दयाशंकर दुबे

× × ×

२. "अँखियान"

आए जो छलकि अँसुआ सो आचमन करि,
पलक की आसनी बिछाई ऊनी अँखियान;
दया-दृष्टि त्यागी, प्रतिसोध ही को धार्‌यो ध्यान,
क्रोध की है दावा दहकाई दूनी अँखियान।
खून देखि खून उतर्‌यो है, ये 'हितैषी' या तें,
कफनी सफेदी की रँगाई खूनी अँखियान;
सूनी लखि देश-कुटी स्वामी श्रद्धानंदजी सों,
बरुनी के बन मैं रमाई धूनी अँखियान।

जगदंबाप्रसाद मिश्र "हितैषी"

× × ×

३. मुसलमान-बादशाहों की साहित्य-सेवा

बहुतों की यह धारणा है कि मुसलमान-बादशाहों में अधिकांश विद्या के शत्रु, शिक्षा के विरोधी और केवल लूट-मार करके मज़े उड़ानेवाले ही थे। पहले-पहल जो मुसलमान आक्रामक यहाँ आए, उनका तो एकमात्र उद्देश्य ही लूट-खसोट करना था। परंतु इतिहासों के देखने से पता चलता है कि मुसलमान-बादशाहों में सभी ऐसे न थे। उनमें कितने ही तो बड़े विद्या-व्यसनी, साहित्य-सेवी और शिक्षा-प्रचारक थे। कुछ का उल्लेख यहाँ किया जाता है—

बादशाह बाबर

बाबर के पूर्व-पुरुष तैमूरलंग का उद्देश्य लूट-पाट करना ही था। वह बड़ा ही कठोर, प्रजा-पीड़क और हृदय-हीन था। उसने किसी ज़माने में अपने नाम का सर्वत्र आतंक जमा दिया था। बाबर को ये सब कठोर गुण बहुत कुछ विरासत में मिले थे। तो भी अपने पूर्व-पुरुषों की अपेक्षा इसमें अधिक विद्यानुराग था। इसने अरबी, फ़ारसी और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिंदी-साहित्य का ख़ूब अध्ययन किया था। यह कविता भी कर लेता था। इसके लिखे हुए कई ग्रंथ उन दिनों ख़ूब प्रचलित थे। इसको गद्य-पद्य, दोनों ही लिखने का अच्छा अभ्यास था। इसने एक प्रकार की नवीन वर्णमाला की कल्पना भी की थी। इसी में क़ुरान की एक नक़ल करके मक्के भेजी थी।

बाबर को बैठकबाज़ी का बड़ा शौक़ था। वह हमेशा चार दोस्तों के साथ बैठकर गप लड़ाता और उन्हें अपनी रची हुई कविताएँ सुनाया करता था। कोई कैसा ही मुर्दा-दिल क्यों न हो रहा हो, इसके पास आते ही उसकी तबियत ख़ुश हो जाती थी। इसके दोस्तों में प्रायः सभी साहित्य-प्रेमी ही थे। बाबरनामे में लिखा है कि यह अकसर अपने साहित्यिक मित्रों के साथ नाव पर सवार हो झिझरी खेलने निकलता था। वहीं कविताएँ बना करती और एक दूसरे को सुनाई जाती थीं।

बाबर को चित्र-कला से भी बड़ा प्रेम था। उसने अपने कई ग्रंथों में विषय-संपर्कित चित्र बनवाए थे। इन सब चित्रों का भारतीय चित्र-शिल्प पर ख़ासा प्रभाव पड़ा है।

बाबर के मंत्री सैयद मुख़बिरअली की लिखी हुई तवारीख़ से पता चलता है कि उस समय राज्य की ओर से जो कर्म-विभाग हुआ था, यानी उस समय जितने मुहकमे जारी किए गए थे, वही प्रायः सब मुग़ल-बादशाहों की हुकूमत में जारी रहे। प्रजा के हित के लिये जितने काम किए गए थे, उनमें ख़ासकर शिक्षा-प्रचार का काम सरकार की विशेष दृष्टि में था। इस विभाग की ओर से विद्यालयों के लिये जगह-ज़मीन दी जाती, उनके लिये मकान बनवाए जाते तथा पंडितों और मौलवियों को वृत्ति मिलती थी।

बादशाह हुमायूँ

बाबर के बहुत-से गुण हुमायूँ को उत्तराधिकार में मिले थे। वह नाना प्रकार के आमोद-प्रमोद के सिवा पढ़ने-लिखने में भी बड़ी दिलचस्पी रखता था। उसको भूगोल और खगोल-विद्याओं से बड़ा प्रेम था। इन विषयों की चर्चा में उसका बहुत समय जाता था। उसे पंडितों, कवियों और दार्शनिकों की संगति अतिशय प्रिय थी। इनके साथ वह प्रायः प्रतिदिन पांडित्यपूर्ण तर्क-वितर्क किया करता था। अपने पिता की तरह हुमायूँ भी काव्य-रचना में प्रवीण था।

हुमायूँ को किताबों से इतना प्रेम था कि वह जहाँ जाता, वहाँ अपना पुस्तकालय साथ लिए जाता था। जिस समय वह शेरशाह के डर से इधर-उधर भागा-भागा फिरता था, उस समय भी उसके कुछ सहचर उसकी अत्यंत प्रिय पुस्तकों को साथ लिए चलते थे। जिस समय वह खंभात में डेरा डाले हुए था, उसी समय कुछ लुटेरे उसकी पुस्तकें चुरा ले गए थे। पीछे बड़ी मुश्किल से ये पुस्तकें मिलीं। जिस समय शेरशाह ने दिल्ली के क़िले पर क़ब्ज़ा कर लिया था, उस समय हुमायूँ का प्रिय पाठागार शेरशाह का आमोद-गृह बन गया था; पर दूसरी बार दिल्ली के तख़्त पर बैठते ही हुमायूँ ने फिर अपने पाठागार को पुराने पद पर प्रतिष्ठित कर दिया। हुमायूँ का बहुत-सा समय पुस्तकालय में ही बीतता था। अंत में जिन पुस्तकों से उसे इतना प्रेम था, उन्हीं के बीच में उसकी मृत्यु हुई। इतिहास-पाठकों को यह मालूम है कि एक दिन अपने पुस्तकालय की सीढ़ी पर से गिरकर ही वह बेहोश हुआ और बीमार पड़ गया था। इसके कुछ ही दिन बाद उसका शरीर-पात हो गया।

हुमायूँ ने दिल्ली में एक बहुत बड़ा मदरसा खोला था। उस ज़माने के प्रसिद्ध कवि और पंडित शेख़ ज़ैनुद्दीन कफ़ी की यादगार में आगरे के पास भी एक बहुत बड़ा विद्यालय खोला गया था। उस समय के ये दोनों प्रसिद्ध शिक्षा-केंद्र थे। शेख़ ज़ैनुद्दीन ने चुनार के पास ख़ुद भी एक मदरसा खोल रक्खा था। मरने पर शेख़ साहब का मक़बरा भी मदरसे के पास ही बनाया गया था। ऐतिहासकों के लेख से मालूम होता है कि नई दिल्ली में जहाँ हुमायूँ का मक़बरा है, वहीं हुमायूँ द्वारा प्रतिष्ठित सुप्रसिद्ध मदरसा था।

बादशाह अकबर

बादशाह अकबर मुग़ल-बादशाहों में सबसे अधिक चतुर, राजनीति-कुशल और राज्य-विस्तारक था। अँगरेज़ इतिहास-लेखक उसकी प्रशंसा करते हुए नहीं अघाते। इसका कारण "सौ सयाने एकमत"-वाली मसल के सिवा और कुछ नहीं। अपने नव-प्रतिष्ठित राज्य के विस्तार और दृढ़ीकरण में अंगरेज़ों को अकबर की नीति का अनुकरण ही अधिक कार्यकारी सिद्ध हुआ है। विलायत में रानी एलिज़बेथ का राज्य-काल जिस प्रकार अँगरेज़ी-साहित्य की उन्नति का युग था, उसी प्रकार अकबर का राज्य-काल भी भारतीय साहित्य की उन्नति का युग था। उसी समय सू

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और तुलसी-जैसे हिंदी के चाँद-सूरज उगे थे। बड़े-बड़े विद्वान् और कवि अकबरी दरबार की शोभा बढ़ाते थे। सम्राट् अकबर ने अपने राज्य में विद्या और शिक्षा के प्रचार के लिये अनेक चेष्टाएँ की थीं। उन दिनों थोड़ी अरबी, फ़ारसी और हिंदी पढ़ लेने से ही सरकारी दफ़्तरों में नौकरी मिल जाती थी। ऐसे मौलवियों और पंडितों की संख्या बहुत ही थोड़ी थी, जो विद्या के अगाध भांडार कहे जाते थे।

बादशाह ने शिक्षा का नया ढंग निकालकर उसकी विशेष उन्नति की थी। इस नए ढंग से शिक्षा देने से विद्यार्थियों की प्रारंभिक शिक्षा थोड़े ही समय में बहुत अच्छे ढंग से हो जाती थी। प्रारंभिक शिक्षा के बाद विद्यार्थियों को क्रम से इतनी विद्याएँ पढ़नी पड़ती थीं—

(१) अख़लाक़ (नीति), (२) हिसाब, (३) सबक़ (साहित्य), (४) फ़लाहत (कृषि-विद्या), (५) मसाहत (पैमाइश), (६) हिंदसा (गणित), (७) नजूम (ज्योतिष), (८) रमल, (९) तदबीर मंज़िल (गार्हस्थ्य-धर्म), (१०) सियासत मदन (राज्य-प्रबंध), (११) तिब्ब (वैद्यक),(१२) तबई (पदार्थ-विद्या), (१३) रियाज़ी (खगोल-विद्या), (१४) इलाही (ब्रह्म-विद्या), (१५) तवारीख़ (इतिहास)।

अरबी और फ़ारसी के विद्यार्थियों को इन सब विषयों की शिक्षा इन विद्याओं के पंडितों द्वारा दी जाती थी। संस्कृत की पढ़ाई का पूरा प्रबंध सरकार की ओर से था। संस्कृत पढ़नेवालों को (१) व्याकरण, (२) न्याय, (३) वेदांत और (४) पातंजल की शिक्षा अवश्य प्राप्त करनी पड़ती थी।

इस प्रकार हिंदू और मुसलमानों की शिक्षा का बड़ा अच्छा प्रबंध बादशाह ने किया था, और इसके नियमन और नियंत्रण के लिये क़ानून बना दिया था,जो आईने-अकबरी में आईने-आमोज़िश(शिक्षा का क़ानून) नाम से मशहूर है। हाँ, जिस प्रकार आजकल अँगरेज़ी सरकार ने अपने स्कूल-कॉलेजों में हिंदू-मुसलमानों की विशेष रूप से धार्मिक शिक्षा का कोई विधान नहीं किया है, वैसे ही अकबर बादशाह के क़ानून में भी इसके लिये गुंजाइश नहीं रक्खी गई थी।

शेरशाह

बादशाह हुमायूँ को पराजित कर इस बिहारी वीर ने थोड़े दिनों के लिये दिल्ली के तख़्त पर अधिकार कर लिया था। इसका राजत्व-काल अल्प-काल-व्यापी होने पर भी इसने जो कई प्रजा-हितैषी कार्य किए, उनके कारण वह समय बड़ा ही मूल्यवान् माना जाता है। तवारीख़-ई-शेरशाही में लिखा है कि शेरशाह को आलिमों का साथ बहुत पसंद था, और वह हर रोज़ उन्हीं लोगों के साथ बैठकर खाना भी खाता था।

पाठकों को शायद मालूम होगा कि शेरशाह बिहार-प्रांत के आरा-ज़िले के 'सासराम'-नामक स्थान का रहनेवाला था। उसके पिता का नाम हुसैन था। उसके आठ लड़के थे, जिनमें फ़रीद (इसी का नाम पीछे शेरशाह पड़ा) और निज़ाम तो एक पठानी के गर्भ से पैदा हुए थे, और बाक़ी ६ ग़ुलाम-ख़ानदान की औरतों के पेट से। हुसैन को अपने लड़कों से वैसी मुहब्बत नहीं थी, इसीलिये फ़रीद घर से भागकर जौनपुर के शासनकर्ता जमाल के अधीन सेना में नौकरी करने लगा। पीछे जब यह बात हुसैन को मालूम हुई, तो उसने जमाल को ख़त लिखा कि मेरे लड़के को भेज दो ; मैं यहाँ उसकी शिक्षा का प्रबंध करूँगा। फ़रीद ने जाना स्वीकार नहीं किया, और पिता को पत्र लिखा कि सासराम की अपेक्षा जौनपुर में शिक्षा का सुबीता अधिक है। वास्तव में फ़रीद ने थोड़े ही दिनों में लिखने-पढ़ने में अच्छी कुशलता प्राप्त कर ली। जमाल ने उसे इस विषय में पूरा उत्साह और साहाय्य दिया। उसने बहुत ही कम समय में गुलिस्ताँ, बोस्ताँ, सिकंदरनामा आदि ग्रंथ कंठस्थ कर लिए। उसने दर्शन-शास्त्र में भी अच्छी व्युत्पत्ति प्राप्त की। प्राचीन राजों की जीवनियों का भी उसने ख़ूब अध्ययन किया। अरबी का व्याकरण भी उसने पढ़ डाला, और उस भाषा में अच्छा दख़ल रखने लगा।

कहते हैं, जब कभी कोई पंडित शेरशाह के दरबार में कुछ माँगने आता, तो वह उससे दर्शन-शास्त्र-संबंधी प्रश्न किए बिना नहीं रहता था। इतिहास और प्राचीन राजों की जीवनियों के विषय में पूछ-ताछ करना उसे बहुत पसंद था। अपनी आध्यात्मिक शिक्षा के ही प्रभाव से वह हरदम दरगाहों और मदरसों का मुलाहिज़ा करना पसंद करता था, और अच्छे-अच्छे मौलवियों और शेख़ों के साथ धार्मिक चर्चा किया करता था। हिसार और जयपुर के बीच, नारनौल-नामक स्थान में, शेरशाह ने,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपनी बादशाही के समय, एक बड़ा भारी मदरसा क़ायम किया था। इसी जगह शेरशाह के परदादा की क़ब्र भी है। इस मक़बरे को बनवाने में बादशाह ने लाख रुपए ख़र्च किए थे। वहाँ मिली हुई एक प्रस्तर-लिपि से मालूम हुआ कि वहाँका मदरसा ६२७ हिजरी, यानी १५२२ ई०, में बनाया गया था।

शेरशाह का पुत्र भी बड़ा ही विद्यानुरागी था। वह झटपट कविता बना लेता था। वह हमेशा शेख़ अब्दुल हसन कंबू और शेख़ अब्दुल्ला सुलतानदुरी मख़दूम-उल-मुल्क के साथ रहा करता था। ये दोनों उस समय के विख्यात पंडितों में थे। शेख़ इलाही उसके समय के एक बहुत बड़े आलिम-फ़ाज़िल मौलवी थे।

ऊपर के विवरण से मालूम पड़ता है कि मुग़ल-बादशाह आप भी साहित्य-सेवा करते थे, और साहित्य-सेवियों को अपने पास रखते थे। बादशाह के पास रहने से विद्वानों को किसी बात का अभाव नहीं रहता था। पर आजकल की दशा ही कुछ विचित्र है। अँगरेज़ी-राजदरबार तो यहाँ से हज़ारों मील की दूरी पर है, और वहाँ भी अँगरेज़ी के 'पोएट लॉरिएट' (राजकवि) भले ही दरबार की शोभा बढ़ाते हों; पर हिंदी-संस्कृत या फ़ारसी-अरबी के पंडितों की उस दरबार में पूछ ही क्यों होने लगी? रहे यहाँ के देशी राजे-रजवाड़े, सो इन लोगों के यहाँ भी साहित्य-सेवियों का जो मान आज से पचास-साठ वर्ष पहले तक था, वह भी अब नहीं रहा। इसके अन्य कारणों में से एक यह भी है कि इन लोगों को स्वयं ही साहित्य से अनुराग नहीं रहा। फिर ये साहित्यानुरागियों का क्यों समादर करने लगे? कुछ दिन पहले तक हिंदी के कवियों का मान भिन्न-भिन्न राजदरबारों में इतना बढ़ा-चढ़ा था कि वे राजा के हार्दिक मित्र बने रहते थे। पर अब तो हिंदी-लेखकों और कवियों का आश्रय छापेख़ानों के सिवा और कोई नहीं रहा। इनके दिए हुए दान से इन बेचारों का कहाँ तक काम चलता है, यह भुक्तभोगी ही जान सकते हैं। और कौन जानेगा? हाँ, यह आश्रय किसी दिन के साग-नमक के दाम दिलवा देता है। यह भी ग़नीमत है!

(स्व०) ईश्वरीप्रसाद शर्मा

× × ×

४. आदर्श प्रेम

(१)

कैसे कोमल कुसुम प्रेम का, रहे स्वर्ण की झोली में?
कैसे सहूँ भार वैभव का, प्रियतम की मृदु बोली में?
कैसे कुटिया की भिखारिनी, महलों का देखे सपना?
सोते हो सुवर्ण-शय्या पर, कैसे तुम्हें कहूँ "अपना"?

(२)

दीन कृषक का वेश बनाकर, 'वन-बाला के प्रेमी' बन,
महलों का वैभव ठुकराकर, नंगे पाँवों, जीवन-धन,
मेरी जीर्ण कुटी तक आओ, अधरों पर मुरली साधे;
मैं कह दूँ "मेरे मनमोहन", तुम कह दो "मेरी राधे!"

जगन्नाथप्रसाद खत्री "मिलिंद"

× × ×

५. योरप में प्रलय के चिह्न

कोई २० वर्ष हुए होंगे, मैंने एक अँगरेज़ी उपन्यास पढ़ा था। उसे किसी मित्र को पढ़ने के लिये दिया था। उन्होंने वापस नहीं किया। इससे लेखक तथा प्रकाशक के नाम भी अब याद न रहे।

पुस्तक का विषय था "सन् १६८६ में योरप।" लेखक ने अपने काल की वैज्ञानिक प्रगति पर सूक्ष्म विचार करते हुए अनुमान द्वारा यह दिखलाने का प्रयत्न किया था कि वर्तमान वैज्ञानिक सभ्यता उन्नति करते-करते सन् १६८६ तक उच्चतम शिखर तक पहुँच जायगी, और साथ ही उसके नाश के बीज भी परिपक्व होते जायँगे। तब तक पूँजीपति लोग विज्ञानजनित सारी शक्ति का रहस्य अपने हाथ में रख श्रमजीवियों पर पूर्ण अधिकार जमाए रक्खेंगे। पर उन्हीं में से कोई-न-कोई किसी दिन अपने समाज से असंतुष्ट होकर, प्रतिशोध की तीव्र इच्छा से, उसके शत्रु श्रमजीवियों से मिल जायगा, और शक्ति का रहस्य उन पर प्रकट कर देगा। ये लोग पूँजीपतियों तथा उनके सहायकों के साथ भयंकर बदला लेंगे, अर्थात् उनका तथा उनके कल-कारख़ानों का नाश कर देंगे। इस लोमहर्षण हत्या-कांड के बाद मूर्ख श्रमजीवियों के सिवा विज्ञानवेत्ता आदि न रह जायँगे, और उनकी दशा आफ़्रिका के नीग्रो लोगों की दशा के समान हो जायगी।

मिसेज़ बेसेंट ने भी 'परिवर्तन-शील संसार' नाम की अपनी एक पुस्तक में यह दिखलाया है कि इस वैज्ञानिक युग में मनुष्य-जाति की जितनी कुछ उन्नति हो सकती है,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वह अब पूर्ण होने पर आ गई है। इसलिये उसके पूर्ण होते ही वर्तमान वैज्ञानिक सभ्यता का नाश होकर आध्यात्मिक सभ्यता का युग आवेगा।

यदि ध्यान-पूर्वक विचार करके पाश्चात्य सभ्यता के अंग-प्रत्यंगों को भली भाँति देखा जाय, तो ऐसा मालूम पड़ता है कि सन् १९८९ के बहुत पहले ही योरप के वर्तमान सभ्यता को भयंकर धक्का लगे, तो कोई आश्चर्य नहीं। खेद की बात है कि गत महायुद्ध से योरप के राजनीतिक नेताओं ने कोई शिक्षा नहीं ली। जिस तरह आपत्ति काल में भगवान्-ही-भगवान् दीखते हैं, उसी तरह युद्ध के समय महाशक्तियों को भी योरप की जड़-वादात्मक सभ्यता के फल बहुत ही कड़वे दिखाई देने लगे थे, और आपस की कलह दूर करके युद्ध को संसार से उठा देने के लिये राष्ट्र-संघ का निर्माण हुआ था। पर राष्ट्रपति विलसन के मस्तिष्क से निकले हुए इस विचार को मानकर भी अमेरिका तथा अन्य कई राष्ट्रों ने इस संघ में प्रवेश न किया। रूस के समान एक महाशक्ति संसार-भर को बोल्शेविक बनाने पर तुल गई। यह सब देख राष्ट्रसंघ में सम्मिलित शक्तियों को भी विश्वास नहीं है कि अब आगे युद्ध का होना रुक सकता है। जर्मनी की सैनिक शक्ति को नष्ट करने पर भी महाशक्तियों को परस्पर इतना विश्वास नहीं है कि वे अपनी युद्ध-सामग्री कम करें। यहाँ तो उस सामग्री के कम करने की बातचीत चल रही है, और वहाँ एक-से-एक बढ़कर विषैली गैसों की खोज में प्रत्येक देश के रासायनिक विद्वान् दिन और रात एक कर रहे हैं। ज्यों ही किसी भयंकर गैस का पता लगता है, त्यों ही उसे बना-बनाकर उसका असीम संचय किया जा रहा है। युद्ध के समय इस ज़हरीली गैस से भरे हुए बम जिस शहर पर बरसा दिए जायँगे, उसके सभी निवासी, आबाल-वृद्ध-बनिता, कुछ ही समय में तड़प-तड़पकर मर जायँगे।

आगामी युद्ध का रूप कैसा भीषण होगा, इसके विषय में अँगरेज़ी वायु-सेना के अध्यक्ष जनरल ग्रोव्ज़ इस प्रकार कहते हैं—"वायु-यानों पर से जिस हथियार का प्रयोग अधिक उपयोगी हो सकता है, वह ज़हरीली गैस का बम है। इसके द्वारा लंदन, पेरिस के समान बड़े-बड़े नगरों में कुछ ही घंटों के भीतर लाखों के प्राण लिए जा सकते हैं। इन बमों में जो ज़हरीला पदार्थ भरा जायगा, वह तरल या द्रव होगा। बम के ज़मीन पर गिरते ही यह पदार्थ बह निकलेगा, और गैस के रूप में परिवर्तित होता जायगा। यह तरल पदार्थ अपने मिक़दार से कई सौगुने अधिक स्थान में फैलेगा। इससे गैस के जो बादल बनेंगे, वे वायु की अपेक्षा भारी होने से नीची-से-नीची जगहों तक जा सकेंगे। ज़मीन खोदकर तहख़ानों में छिपने से भी कोई न बच सकेगा, और न चेहरे पर नक़ाब लगा लेने से। गैस-विद्या जाननेवाले सभी विद्वानों का मत है कि नगरों की जनता को इस बम-बाज़ी से बचाने का कोई उपाय नहीं है।"

गत महायुद्ध में जर्मनों ने जब गैस का प्रयोग किया था, तो अन्य सब जातियों ने पहले उनकी घोर निंदा की थी। पर धीरे-धीरे उन्हीं निंदकों ने गैस का प्रयोग बुरा नहीं समझा। और, अब तो आगामी युद्ध में सभी उसका उपयोग करेंगे। आगे के युद्धों में देश के शासक और उनकी सेना ही शत्रु समझी जाती थी, प्रजा से शत्रुता नहीं मानी जाती थी। इसी से प्रजा के उपयोग में आनेवाले कूप, तालाब, नदी आदि का जल नहीं बिगाड़ा या रोका जाता था; किसानों की फ़सलें नष्ट नहीं की जाती थीं। साधारण जनता की रक्षा के लिये युद्ध के नियम बना दिए गए थे। अब युद्ध का अर्थ ही दूसरा हो गया है। अब वह केवल शासकों के बीच में नहीं, दो राष्ट्रों के बीच में होता माना जाता है। यह है भी ठीक। आगे तो सैनिक लोग ही लड़ते थे, पर अब देश के सभी निवासियों को सैनिक शिक्षा मिलती और युद्ध के समय वे शस्त्र ग्रहण करते हैं। यहाँ तक कि स्त्रियाँ और बालक भी किसी-न-किसी रूप में भाग लेते हैं। हाल ही में फ़्रांसीसी सरकार ने ऐसे क़ानून बनाए हैं, जिनके अनुसार युद्ध के समय देश-भर को मिलकर युद्ध का कार्य करना पड़ेगा। सैनिक और असैनिक का भेद बिलकुल उठा दिया गया है। जर्मनों ने युद्ध के पूर्व अपने देश में जो सैनिक प्रबंध किया था, उससे फ़्रांसवाले बहुत आगे बढ़ गए हैं। यहाँ तक कि लोक-तंत्र (Republic) की डींग मारनेवाले ये लोग व्यक्तिगत स्वतंत्रता का नाश कर बैठे हैं। जब ऐसी दशा है, तो राष्ट्र-के-राष्ट्र का शत्रु या सैनिक समझा जाना और नगरों पर गैस के बम बरसाना योरप की दृष्टि में अनुचित नहीं कहा जा सकता।

इन सब बातों से स्पष्ट मालूम होता है कि योरप के राष्ट्र यद्यपि आगामी युद्ध की भयंकरता को भली भाँति

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जानते हैं, और चाहते भी हैं कि आगे युद्ध न होकर आपस के झगड़े राष्ट्र-संघ द्वारा तय किए जायँ ; पर किसी को एक दूसरे का विश्वास तनिक भी नहीं है। सभी ने अपने-अपने स्वार्थ भिन्न-भिन्न समझ लिए हैं, और राष्ट्रीयता के भावों ने अंतर-राष्ट्रीयता के भावों को दबा लिया है। राजनीतिक बातों में धर्म फटकने नहीं पाता। आचार-नीति भी बहुत शिथिल पड़ गई है। अपार धन और अधिकार की आकांक्षा ने स्वर्ग-वास या मोक्ष का स्थान ले लिया है। यह साधारण शिकायत है कि रविवार को भी गिरजे ख़ाली पड़े रहते हैं। सारांश यह कि पाश्चात्य देशों में प्रभु यीशु पर दुष्टात्मा शैतान ने विजय पाई है। इसका फल वही हो सकता है, जो ऐसी दशा में होता आया है। महाभारत होकर युगांतर होना ही चाहिए।

इँगलैंड के एक साप्ताहिक पत्र ने अभी उस दिन लिखा था कि ब्रिटिश सरकार लगातार वायु-सेना को बढ़ाती ही जाती है। सन् १९१९ में एरोप्लेनों के ३१ बेड़े रखने का विचार था ; पर सन् १९२१ में इनकी संख्या बढ़ाकर ४६, १९२५ में ५४ और १९२६ में ६१ कर दी गई। सन् १९२८ में यही संख्या ६९ करके आगे ८० तक बढ़ाने का निश्चय किया गया है। इस वृद्धि की कोई सीमा ही नहीं देख पड़ती। आकाश की यह दौड़ नरक की ओर लिए जा रही है। वायु-युद्ध का विचार करते ही रोंगटे खड़े हो जाते हैं। परस्पर घृणा की ज्वाला धधकते ही न तो दया का स्मरण रहेगा, और न सभ्यता पर उसके परिणाम का। प्रत्येक पक्ष इसी बात पर तुल जायगा कि शत्रु-पक्ष के जान-माल की सबसे अधिक हानि की जाय। योरप दूसरे महायुद्ध की ओर लगातार बढ़ रहा है। बाल्कन-राज्यों में तथा रूसी सीमाओं पर बड़ी हलचल फैली हुई है, और लोग चिंता-ग्रस्त हो रहे हैं।

अमेरिका के एक एलची ने अपने राष्ट्र-पति को रिपोर्ट भेजी है कि योरप के देशों की सीमाओं पर संगीनें-ही-संगीनें दिखाई दे रही हैं। प्रत्येक देश में वैज्ञानिक और रासायनिक इसी खोज में लगे हुए हैं कि सबसे अधिक नाशकारी पदार्थ कौन-सा है, जिससे थोड़े ही काल में शत्रु के नगर-के-नगर मृत्यु-निद्रा में सुला दिए जा सकें, और छोटे-छोटे बच्चे भी दम घोंटकर मार डाले जा सकें। जहाँ जाइए, वहीं क्षितिज पर युद्ध के बादल छाए हैं। कौन नहीं जानता कि इसका परिणाम क्या होगा ? गत महायुद्ध की अपेक्षा एक महा भयंकर युद्ध ही इस तैयारी का परिणाम हो सकता है। इस युद्ध में ज़हरीली गैस ही सबसे बड़ा हथियार होगी, रासायनिक नाश ही इस युद्ध का उद्देश्य होगा। इँगलैंड के प्रधान मंत्री ने सच कहा है कि जिस सभ्यता के निर्माण में कई शताब्दियाँ लगी हैं, वही सभ्यता, रोम की सभ्यता के समान, कुछ ही समय में भरभराकर गिर पड़ेगी।

इससे स्पष्ट है कि योरप के राज-नीतिज्ञ भविष्य से अनभिज्ञ नहीं हैं। पर, तो भी, योरप की रक्षा करने में वे नितांत असमर्थ-से देख पड़ते हैं। धन और अधिकार का भूत प्रत्येक राष्ट्र पर ऐसा सवार है कि वह इस नाशकारी मार्ग पर एक उन्मत्त जीव के समान बढ़ता ही जा रहा है—आगे-पीछे, दाहने-बाएँ नज़र तक नहीं उठाता। बस, वही बात है—

जाको विधि दारुण दुख देहीं,
ताकी बुधि पहिले हरि लेहीं।

यहाँ तो यह सब हो रहा है, ब्रिटिश आदि कई जातियाँ इस दुर्घटना को रोकने के लिये राष्ट्र-संघ का आश्रय ले रही हैं, और वहाँ रूस सारे संसार में राजनीतिक क्रांति करा देने पर तुला हुआ है, अपनी सब संपत्ति इसी कार्य में ख़र्च कर रहा है। चीन में उपद्रव उठवा देने के लिये उसने कितना धन ख़र्च किया, इसका कुछ पता उसके एलचीख़ाने की ज़ब्ती के समय लगा है। उसका तो यह उद्देश्य ही है कि प्रत्येक देश का शासन श्रमजीवियों के हाथ में आ जाय। यदि योरप में झगड़ा उठ खड़ा हुआ, तो रूसी बोलशेविक उसे ईश्वर की देन ही समझेंगे। इसमें संदेह नहीं कि उनके दूत सभी देशों में फिर रहे हैं, और नए-नए उपद्रव उठवाते हैं। इँगलैंड में कोयले की हड़ताल चलाने में उन लोगों ने कितना रुपया ख़र्च किया, इसका भी पता चल गया है।

इसी योरप की सभ्यता का कैसा बखान किया जाता और भारतवासी कैसे जंगली समझे जाते हैं! खेद है, कुछ भारतवासी भी पाश्चात्य सभ्यता की बाहरी चटक-मटक के दास बने हुए हैं, और पाश्चात्य संस्थाओं को इस धर्मक्षेत्र भारत में आरोपित करना चाहते हैं। बड़े-बड़े राष्ट्रवादी नेता राष्ट्र-परिषद् को पार्लियामेंट सभा के साँचे में ढालने के लिये इँगलैंड जाया करते हैं—यह नहीं कि भारतीय ढंग पर उसे संचालित करने का उद्योग करें।

रघुवरप्रसाद द्विवेदी

× × ×

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

६. पाप-कथा

(१)

किए हैं कौन-कौन-से पाप ?
क्षणिक जीवन का कलुषित पृष्ठ
पढ़ोगे पापों का आख्यान ?
वास्तविकता का उपसंहार
सुनोगे करुण व्यथा का गान ?
"परिस्थितियों का व्यापक चक्र
चलाया करती शक्ति अजान !"
विश्व का यह कैसा अभिशाप !
और वह व्यापक शक्ति अजान
—नहीं मिलती है जिसकी थाह—
फेंक देती है हमको वहाँ,
जहाँ तृष्णा का तीव्र प्रवाह,
झकोरे लेकर रव के साथ,
निगल जाता है हमको आह !
यही हैं मेरे सारे पाप !

(२)

किए हैं कौन-कौन-से पाप ?
अरे वह व्यापक शक्ति अजान
—जिसे हम कहते हैं भगवान—
प्रेम के नहीं, न्याय के साथ
देखती है ; यह विश्व महान
अमृत है, मदिरा है, विष है ;
कर्म है केवल एक प्रधान !
अरी असफलता ! व्यर्थ प्रलाप !
परिस्थितियों के हम हैं दास,
भयानक है पापों से रण !
कभी हैं सफल, कभी हैं विफल,
विजय है केवल संघर्षण !
उठें फिर गिरें, गिरें फिर उठें,
'समर्पण' न हो, यही है प्रण !
समर्पण ही है मेरा पाप !

भगवतीचरण वर्मा

तात्कालिक चिकित्सा

लेखक, श्रीलालबहादुरलाल। मनुष्यों की असावधानी तथा नियमों की अनभिज्ञता के कारण यह मनुष्य-शरीर टूटा-फूटा एवं अस्वस्थ रहता और विनाश को प्राप्त हुआ करता है। फलतः इसे प्रति-क्षण किसी सुयोग्य डॉक्टर अथवा वैद्य की आवश्यकता हुआ करती है, किंतु प्रत्येक स्थान पर और प्रत्येक समय उसकी सहायता प्राप्त करना कठिन होता है। इसलिये प्रत्येक मनुष्य को चाहिए कि वह अपनी शरीर-रचना तथा उसके स्वास्थ्य-नियमों का यथोचित ज्ञान रक्खे, ताकि समय-कुसमय, डॉक्टरों अथवा अनुभवी वैद्यों की अनुपस्थिति में भी, वह अपनी, अपने कुटुंबियों की, मित्र-मंडली और अन्य प्राणियों की यथार्थ तात्कालिक चिकित्सा कर सके। यह पुस्तक इसीलिये लिखी गई है। भाषा सरल है, और बीसों चित्रों से इसका आशय समझने में और भी सुगमता हो गई है। इसके लेखक एक अनुभवी बालचर-शिक्षक (Scout Master) और सहृदय देश-भक्त हैं। बालचरों के लिये तो यह पुस्तक अत्यंत उपयोगी है। साथ ही प्रत्येक छोटे-बड़े गृहस्थ को भी इसकी एक-एक प्रति अपने यहाँ रखकर लाभ उठाना चाहिए। इतने चित्रों के रहते हुए भी इस उपयोगी, १५२ पृष्ठों की, सचित्र पुस्तक का मूल्य १।) ; सजिल्द १॥)

गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय, २९-३०, अमीनाबाद-पार्क, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१. अपराधी और निरपराध की पहचान

दिन-दिन संसार में अपराधों की संख्या वृद्धि पर है। भारत में तो न मालूम कितने निरपराध व्यक्ति प्रतिवर्ष अपराधी माने जाकर फाँसी पर लटकाए जाते और कितने ही जेल के दारुण दुःख भोगते हैं। पाश्चात्य देशों में भी, जहाँ की पुलीस सब प्रकार से दक्ष है, जहाँ अपराधियों का पता लगाने के कितने ही यंत्र और साधन आविष्कृत हो चुके हैं, ऐसा होते देखा जाता है। किंतु इधर कई ऐसी मशीनों और साधनों का आविष्कार हुआ है, जिनसे अपराधी और निर्दोष व्यक्तियों का भेद साफ़ ज़ाहिर होने लगता है। इन साधनों द्वारा कई ऐसे व्यक्तियों को जाँचा गया, जो गत कई वर्षों से जेल में सड़ रहे थे। फल-स्वरूप उनमें कुछ निर्दोष प्रमाणित हुए, और छोड़ दिए गए।

व्यावहारिक मनोविज्ञान (Psychology) मानवीय मस्तिष्कों की आभ्यंतरिक कार्यवाहियों को प्रत्यक्ष करता है। मनोविज्ञान ने इधर कई वर्षों में बड़ी उन्नति की है। मनुष्यों के गुण-दोषों का पता लगाने के साधन आविष्कृत हुए हैं। किस व्यक्ति में कौन-कौन ख़ूबियाँ हैं, उसमें कौन-कौन कमज़ोरियाँ हैं, इसका पता आज जितनी आसानी से और कम समय में लगता है, वैसे पहले कभी नहीं लग सका था। मिथ्यावादियों के मस्तिष्कों का विशेष रूप से अध्ययन किया गया है। ये ही मनोवैज्ञानिक परीक्षाएँ अपराधियों की परीक्षा करने तथा गवाहों से सच्ची गवाही दिलाने के लिये भी व्यवहृत हो रही हैं। मनोविज्ञान दो प्रकार से अपराधियों का पता लगा सकता है—गवाही देते समय गवाहों की परीक्षा—अर्थात् उस समय वे झूठ बोलते हैं या सच, इसका निर्णय—करके तथा संदेह पर पकड़े गए व्यक्तियों में से उन व्यक्तियों को अलग करके, जो किसी ख़ास प्रकार का अपराध नहीं कर सकते।

सत्य-मिथ्या-निर्णायक यंत्रों द्वारा यह बात अब आसानी से जानी जा सकती है कि गवाह सच बोल रहा है या झूठ। इनमें से कुछ यंत्र गवाह के हृदय की धड़कन अंकित करते हैं। यंत्र मनुष्य की बाँह या छाती से लगाकर बाँध दिया जाता है। इसके बाद गवाह से मुक़दमा-संबंधी कोई प्रश्न पूछा जाता या कोई ऐसी वस्तु दिखाई जाती है, जिसका अपराध से किसी तरह का सरोकार होता है। झूठ बोलने की उत्तेजना तथा रक्त के दबाव से दिल जल्दी-जल्दी धड़कने लगता है, जिसे यह यंत्र अंकित कर लेता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

न्यूयार्क के डॉक्टर डब्लयू० एच्० वेट्स ने सच-झूठ जाननेवाला अपना एक यंत्र बनाया है। यह मनुष्यों की आँख की पुतली का असली आकार नापता है। डॉ० वेट्स का अनुभव है कि झूठ बोलते समय एक प्रकार का शारीरिक दबाव पड़ने से आँख की चारों ओर की रगें खिंच जाती हैं, जिससे आँख के आकार में परिवर्तन हो जाता है। आपका यंत्र इस आकार-परिवर्तन को नापता और तुरंत पता लगा देता है कि गवाह या अपराधी झूठ बोल रहा है या नहीं।

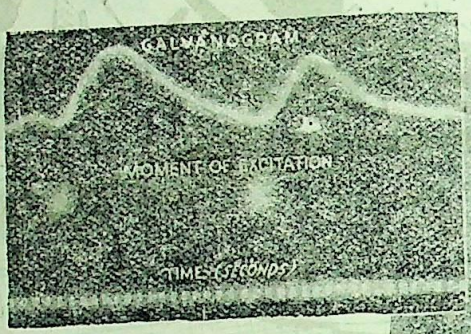

डॉ० डेविड वेशलर चमड़े की वैद्युतिक अवरोध की मात्रा का पता लगाकर सच-झूठ का निर्णय कर रहे हैं

इससे भी बढ़कर विश्वास-योग्य एक और यंत्र आविष्कृत हुआ है। यह अपराधी के चमड़े की विद्युत्-रोधक (Electric Resistance) शक्ति का पता लगा सकता है। यह ऐसा यंत्र है, जिसे कोई भी पेशेदार मिथ्यावादी या अपराधी धोका नहीं दे सकता। सन् १८८७ ईसवी में डॉ० चार्ल्स फेरे ने पता लगाया था कि किसी प्रकार की उत्तेजना का अनुभव करने से मनुष्य के चमड़े की विद्युत्-रोधक शक्ति प्रभावान्वित होती है। इस सिद्धांत पर झूठ का पता लगानेवाले बहुत-से यंत्र बने हैं। उनमें सबसे आधुनिक न्यूयार्क के डॉ० डेविड वेशलर का यंत्र है। यंत्र बड़ा ही सरल है। दो पोर्सलिन मिट्टी के बर्तनों में नमक मिला हुआ पानी रक्खा रहता है। इनसे एक विद्युत्-यंत्र का संबंध रहता है। जिस मनुष्य की परीक्षा करनी होती है, वह अपने किसी हाथ की दो उँगलियों को दोनों बर्तनों में डुबो देता है। इसी समय वैद्युतिक धारा प्रवाहित की जाती है। यह धारा इतनी साधारण होती है कि उसका वह मनुष्य अनुभव भी नहीं कर सकता। इस यंत्र के साथ जो 'मीटर' लगा रहता है, उससे वैद्युतिक अवरोध की मात्रा का पता लग जाता है। पर असली परीक्षा इसके बाद शुरू होती है। इस समय यदि कोई परीक्षणीय व्यक्ति के चिमटी काट ले, तो उससे उसे जो उत्तेजना होगी, वह वैद्युतिक अवरोधक मात्रा को बढ़ा देगी। यह मात्रा भी 'मीटर' देखने से जानी जा सकती है। चमड़े के वैद्युतिक अवरोध पर मन का कुछ भी असर नहीं होता। किसी अपराधी की परीक्षा करते समय किए गए प्रश्नों का जो प्रभाव उस पर पड़ेगा, उससे वैद्युतिक अवरोध की मात्रा बदलती रहेगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस चित्रागार में विख्यात इटैलियन चित्रकार लियो नार्दोद विंची की अद्भुत कृति 'मोना लीजा' है। इसके सामने सदा भीड़ लगी रहती है। कभी-कभी भारतवासी भी इन दर्शकों में दिखाई पड़ते हैं। किंतु वे वहाँ इसलिये खड़े रहते हैं कि वहाँ ज़्यादा भीड़ होती है। इस दशा में हमारे धनी भाई, राजे-महाराजे योरप की सैर से क्या लाभ उठा सकते हैं, सो परमात्मा जाने। एक भारतीय नेता और हिंदी-साहित्य के स्तंभ तीन महीने बर्लिन में रहे। वह डालर उड़ाने और उसका भाव करने घंटों फ़्रीडरिश स्ट्रासे के चक्कर काटा करते थे। किंतु उन्हें एक बार भी यह न सूझी कि कभी वहाँ के स्थापत्य-कला तथा साहित्य के भवनों की सैर करें। इसी अनुभव पर हम लोग 'लंदन और पेरिस की सैर' तथा 'मेरी जर्मनी-यात्रा' * लिखकर हिंदी-भाषा-भाषियों को संसार के दर्शन कराते हैं। साहित्य की ध्वजा उड़ानेवाले इन सरस्वती के पुत्रों से कोई पूछे भी तो कि हे वीणापाणि के अनन्य उपासक! कृपा कर यह तो बतलाइए कि आपने जिस देश की यात्रा की, वहाँ के वे कारख़ाने भी देखे, जहाँ मनीषी कला गढ़ते हैं? आप वहाँ किनसे मिले? क्या आपने उस देश की संस्कृति तथा वहाँ की जनता की आत्मा पहचानने के लिये वहाँ की देश-भाषा की सरसरी जानकारी भी हासिल की? यदि नहीं, तो फिर किसी अँगरेज़ पर्यटक की पुस्तक का अनुवाद क्यों न प्रकाशित कर दिया?

यह सब लिखने का तात्पर्य यह है कि योरप आकर हमारे भाइयों को यहाँ की कला और संस्कृति आदि से अवश्य परिचित होना चाहिए। अब वे दिन गए, जब मनु महाराज गर्व से कह सकते थे—"एतद्देशप्रसूतस्य सकाशादग्रजन्मनः; स्वं स्वं चरित्रं शिक्षेरन् पृथिव्यां सर्वमानवाः।" इस समय संसार के अन्य देशों से अपने को अलग रखकर कोई जाति उठ नहीं सकती। विश्व-संस्कृति में सबको भाग लेना पड़ेगा। यह तभी संभव है, जब जातियाँ एक दूसरे को जानें। जानने का अर्थ यह नहीं कि किसी देश में कुछ दिन रहा जाय; बल्कि उसकी संस्कृति की विशेषता हृदयंगम की जाय, फिर वह चाहे घर-बैठे पुस्तकों ही से क्यों न हो। बारह बरस दिल्ली में रहकर-भाड़ झोंकने से संस्कृति नहीं पहचानी जाती। इसका ज्ञान प्राप्त करने के लिये वहाँ के शिष्ट पुरुषों के विचार जानना अधिक आवश्यक है। यदि आपके आँखें हैं, तो वहाँ की कला आपके सामने वहाँ की जनता की आत्मा को उद्घाटित कर देगी। इसी उद्देश्य से ये पंक्तियाँ लिखी जाती हैं। आरंभ कोरो और फ़्रांस से किया जाता है।

कोरो, युवावस्था में

कोरो की माता की औरतों की पोशाक की दूकान थी। पेरिस में ऐसी दूकान का होना सुरुचि का पुष्ट प्रमाण है; क्योंकि पुराने ज़माने से ही यह नगर सुघड़ ज़नानी पोशाक के लिये संसार-भर में प्रसिद्ध है। स्त्रियों के नए-नए फ़ैशन आज भी 'प्यारी नगरी' ही आविष्कृत करती है। फिर मादम कोरो तो राजघराने तक में प्रसिद्ध थीं। कोरो के पिता लूई झाक कोरो इस दूकान का बही-खाता रखते थे। कोरो माता-पिता का बड़ा भक्त था। ऐसे आज्ञाकारी पुत्र बहुत कम मा-बापों को नसीब होते हैं। वह अपने पिता के सामने बात भी नहीं कर सकता था। शरमीला इतना था कि दूकान में जो लड़कियाँ काम करती थीं, उनसे भी शरमाता था। यह लज्जा योरप में, जहाँ पर्दा होता ही नहीं! छुटपन से ही कोरो का स्वभाव

* स्वा० सत्यदेव-कृत उक्त नाम की पुस्तक।—लेखक

* फ़्रेंच उच्चारण यही है। पेरिस अँगरेज़ कहते हैं।—संपादक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सरल, कोमल तथा भावुक था। इसका प्रभाव उसके चित्रों पर बहुत पड़ा है। उसके हृदय की ये वृत्तियाँ प्रकाशित करनेवाला भाव उसके चित्रों पर पतला कुहासा कहकर प्रसिद्ध है। उसके रंग उसके समसामयिक रूसो की भाँति आपकी दृष्टि पर आक्रमण नहीं करते। कोरो उषाकाल या गोधूलि की तरह सुकुमार और भावपूर्ण है। रूसो मध्याह्न-सूर्य के समान पूर्ण तेज से चमकता और, सुंदर तथा प्रतापी होने पर भी, असह्य हो उठता है। यह इन दोनों कला-कोविदों के स्वभाव का परिणाम है। गोतिये (Gautier) ने कहा है—"वह अप्सराओं की गोद में पला है।" इस पर कोरो ने एक स्थान पर लिखा है—"किंतु यह विशुद्ध सत्य है; क्योंकि तुम जानते हो, 'सुंदरी महिला की दूकान नाज़ो-अदा का सम्मिलन-स्थान थी।" कोरो अपनी माता को सदा belle dame (सुंदरी महिला) के नाम से पुकारता था। हम कह सकते हैं कि कोरो ने इस संसार में प्रथम वस्तु सुंदरता देखी, और उस अंधे की भाँति, जिसकी आँखें सावन में निकाल ली गई थीं, और जिसे उसके बाद हरा ही सूझता रहा, कोरो को भी सुंदरता ही सूझती रही। मादम कोरो के पास काम बहुत था, इसलिये वह पुत्र को स्वयं न पाल सकीं। वह लीलदादम के एक गाँव में एक दाई को सौंप दिया गया, जिसने उसे प्रेम से पाला-पोसा। कोरो उस घर को जीवन-भर न भूला। अपनी वृद्धावस्था में भी वह (विख्यात और धनी होने के बाद) अपनी सहपालित बहन से भेंट करने जाया करता था। और, जब वह पेरिस आती थी, तो अपने साथ भोजन करने के लिये उसे निमंत्रित करता था। सात वर्ष की आयु में वह रयूदवोजिराद (Ruede Vaugirard) में, एक बोर्डिंग स्कूल में, रक्खा गया। वहाँ वह चार साल रहा। सन् १८०७ में वह कॉलेज में भर्ती हुआ। यहाँ मो० सनेगो से उसकी मित्रता हुई। यह बालक भावुक, उदास, विरक्त तथा प्रकृति का प्रेमी था। गाँव से भागकर बहुधा नदी-तट या जंगल में बैठकर घंटों नैसर्गिक शोभा निहारने में तन्मय हो जाता था। कोरो इसके साथ जाता था। यहीं उसने प्राकृतिक रमणीयता का आंतरिक मर्म पहचाना। इसके बाद कुछ दिन वह प्वासी में रहा। जब १६ वर्ष की आयु में वह घर आया, तो उसके पिता ने देखा कि वह अब भी एक बालक ही है। उसे बात करने की हिम्मत नहीं थी। दूकान में औरतों के सामने उसके मुँह से आवाज़ नहीं निकलती थी। एक समय वह उत्तर देने के बदले उनके सामने से भाग गया। ऐसे पशु से क्या आशा की जाय!

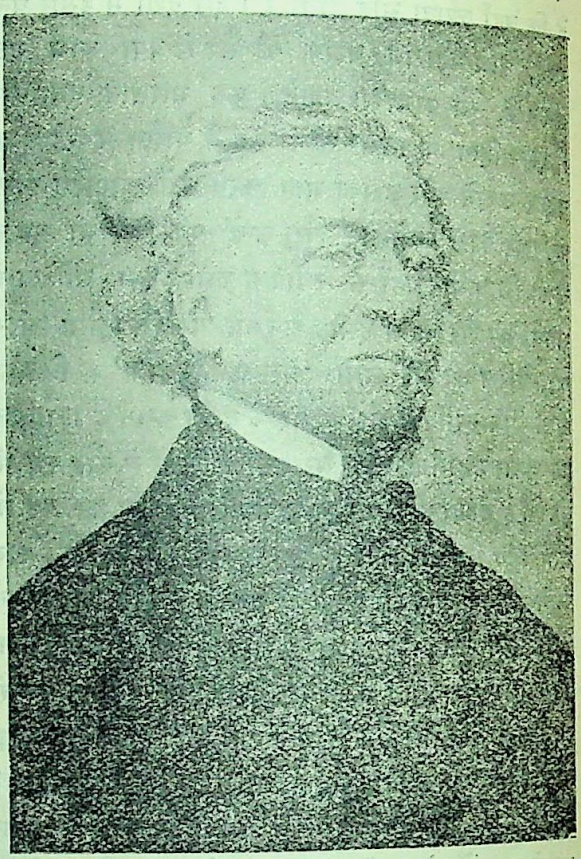

कोरो, वृद्धावस्था में

उसके पिता ने जब पूछा कि उसका क्या करने का इरादा है, तो उसे इतना साहस नहीं हुआ कि स्पष्ट उत्तर दे सकता। बार-बार पूछने पर एक बार उसने सारा साहस संचित किया और बोल ही तो उठा—"मेरी इच्छा चित्र खींचने की है।" पिता हँस पड़ा। उसने दिल में ख़याल किया होगा कि पगले को क्या सूझी है! उसने उसे कपड़े की एक दूकान में काम सीखने के लिये अप्रेंटिस रखवा दिया। इधर कोरो ने चित्र खींचने को एक कापी ख़रीदी। दूकान के मालिक मो० रातिए को शीघ्र ही मालूम हो गया कि कोई निकम्मा उसके पास आ गया है। कोरो बिके हुए कपड़े की तह कर उसे ख़ाने में रखता और दूसरा कपड़ा ग्राहक को थमाता था। बहुधा घाटे में माल बेच देता था। और, इस पर उसे यह देखकर महान् आश्चर्य होता था कि दूकान का अधि-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कारी उस पर नाराज़ होता है। बनिए रातिए को अपना माल लुटाना तो था नहीं; उसने कोरो को दूसरा काम दिया। उसे कंधे पर कपड़ों के थान लादकर शहर-भर के चक्कर काटने पड़ते। यह काम उसने नापसंद नहीं किया; क्योंकि अब उसे प्रकृति-पर्यवेक्षण का अवसर मिलने लगा। पीठ पर गट्ठर धरा है, और कोरो एकाग्र-चित्त आकाश तथा भागते हुए मेघों का निरीक्षण कर रहा है। ग्राहक के पास समय पर सामान नहीं पहुँचता; शिकायतें आती हैं; मो० रातिए चिड़चिड़ाते हैं; पर मस्त कोरो को इससे क्या! वह वहाँ अधिक दिन न रह सका। वह मो० दलालयाँ (Delalain) के पास काम करने लगा। इसकी सरल-हृदयता देख इस मोशिए को बालक से प्रेम हो गया। वह उसकी बुराई कम देखने लगा। साथ ही उसके भतीजे अलेक्ज़ांड्र क्लोरांबोल्ट से कोरो की मित्रता हो गई। वह घर का आदमी गिना जाने लगा। इस तरह उसने सात साल बिता दिए। उसकी उम्र २६ साल की हो गई। पिता अब गंभीर होकर बोला—"कामील, अब तुम्हें जमकर कोई काम करना चाहिए।" उसका मतलब व्यापार से था। कोरो ने कहा—"जी हाँ, मैं चित्रकार बनना चाहता हूँ।" अब तक पिता सुनी-अनसुनी कर देता था। किंतु अब उसे साफ़ मालूम हो गया कि बेटा यह धुन नहीं छोड़ने का। वह बोला—"तथास्तु। तू जो ठीक समझता है, वही कर। चूँकि तू विनोद करना चाहता है, अच्छी बात है, अपना दिल बहला।" पिता ने कामील को डेढ़ हज़ार पौंड दिए कि उसे आर्थिक स्वतंत्रता मिल जाय। इस स्वतंत्रता में यह २६ साल का शिशु पिता के गले में दोनों हाथ डालकर लटक गया, और पागलों की भाँति चिल्ला उठा—"मैं चित्रकार हूँ! मैं चित्रकार हूँ!!" हाँ, उसकी दृष्टि में इस एक पल में सारा जीवन प्रत्यक्ष हो गया। उसकी मुराद पूरी हो गई। अब उसे कौन रोक सकता है। इस आनंद को भारत के वे अभागे संपूर्ण रूप से हृदयंगम कर सकते हैं, जिन्हें इन पंक्तियों के लेखक की तरह दरिद्रता के कारण अपना जीवन-व्रत पूरा करने में पग-पग पर संग्राम करना पड़ रहा है। कितने भाग्यवान् इस संसार में हैं, जो अपना व्रत पूरा कर पाते हैं? कितने ऐसे हैं, जो इस पापी पेट की चिंता दूर करने में समर्थ हो लक्ष्य पर पहुँचते हैं? लाखों में एक। इसलिये जब एक लेखक कोरो के शब्द उद्धृत कर लिखता है कि यह शुभ समाचार सुनते ही उसे मालूम पड़ा कि उसकी टोपी से शोले लपक रहे हैं, तो हमें उसका अर्थ समझने में कठिनाई नहीं पड़ती। कोरो तुरत चित्रकार मिशालों (Michaleon) के पास दौड़ा गया, और उसका शिष्य बन गया। इसके मरने के बाद वह बर्त्याँ (Bertin) के साथ काम करने लगा। उसने पहला चित्र अपने घर के पास ही सेन-नदी के किनारे से पेरिस का दृश्य खींचा। कोरो की मा की दूकान की लड़कियाँ उसका काम देखने बहुधा जाया करती थीं। मादमवाज़ेल रोज़ (Mlle Rose) नाम की एक युवती सदा उसका काम देखने जाती थी। जब यह लड़की और कोरो, दोनों बुड्ढे हो गए, तो एक दिन उसने इस संबंध में क्या ही चुभते शब्द कहे—"उनमें एक मा० रोज़ मेरे काम में औरों से अधिक आनंद पाती थी। वह अक्सर मेरे पास आया करती थी। वह फिर-फिर आती रही, और उसने अब तक मो० कामील का काम देखने की आदत न छोड़ी। ××× गत सप्ताह, वह मेरे घर आई थी। प्रिय मित्रो, आह! संसार कितना बदल गया है। पर मेरा चित्र, मेरा छोटा-सा अभ्यास-चित्र नहीं मुरझाया। यह सदा दिन की वही घड़ी, वही समय बतलाता है, जब मैंने इसे खींचा था। किंतु हे परमात्मन्! मैं और मा० रोज़ कितना बदल गए हैं!" इस वाक्य में कवि ने कूट-कूटकर सत्य-कला का दर्प भर दिया है। आज भगवान् बुद्ध कहाँ हैं; किंतु वह घड़ी सदा जीवित है, और उसे जरा-मृत्यु छू नहीं सकतीं, जिसमें गौतम को बुद्धत्व प्राप्त हुआ था। कवि और कलाविद् करता क्या है? वह उस क्षण को अमर कर जाता है, जब सत्य, शिव, सुंदर की झाँकी उसे आत्मविस्मृत और स्तब्ध कर देती है, तथा यह आनंद अनायास मिलनेवाले आनंद का रूप प्राप्त कर लेता है। कवि शैशव, कौमार, यौवन, जरा तथा मरण के अधीन हो रूप-परिवर्तन करता रहता है; जिस उपादान-कारण में एक बार सत्य, शिव, सुंदर का आविर्भाव हुआ था, वह नियति के अधीन होकर जीर्ण-शीर्ण एवं नष्ट-भ्रष्ट हो जाता है; किंतु वह मुहूर्त अजर-अमर है, जिसमें कविता या कला मूर्तिमती हुई थी। सारांश यह कि "असारे खलु संसारे कला एकाहि निश्चला।"—इस परिवर्तनमय संसार में केवल कला ही शाश्वत है। यही बात कोरो ने ऊपर सीधी-सादी भाषा में प्रकट की है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक प्रातःकाल वनदेवियों का नृत्य

कोरो ने चार साल पेरिस में काम किया। उसने बीसियों चित्र खींचे। पेरिस के म्यूज़ियम घूमे; किंतु मौलिकता का ढंग देखिए! लूव्र की चित्रशाला में वह चित्र खींचता था। उस्तादों की नक़ल नहीं, बल्कि उन नक़्क़ालों के चित्र बनाता था, जो उस्तादों के चित्रों की नक़ल करते थे। देहात में भी उसने बहुत चित्र बनाए। उन चित्रों में उसकी कला पीछे अच्छी खुली। इसके बाद, उस समय की रीति के अनुसार, वह कला का अध्ययन करने रोम चला गया। वहाँ भी उसने नक़ल कम की, स्वतंत्र चित्र ही खींचे। उसने रोम से जो पत्र लिखे हैं, उनसे ज्ञात होता है कि उसके चित्रों के प्रति उसके सहाध्यायी विशेष आकृष्ट नहीं हुए थे। किंतु एक घटना ने उसका उत्साह बहुत बढ़ा दिया। एक दिन वह प्रातःकाल कोलोजियम का चित्र बना रहा था। आलिन्यी (Aligny) नाम का उसका सहपाठी उसके पीछे खड़ा हो गया। उसने कोरो का चित्र देखा। वह आश्चर्य तथा प्रसन्नता के मारे चिल्ला उठा। अब तक कोरो ने, काम में डूबे हुए रहने के कारण, उसका ख़याल न किया था। अब उसकी आवाज़ सुन उसने समझा, यह दिल्लगी कर रहा है। किंतु उसी दिन शाम को जब सब फ़्रेंच छात्र काफ़े में मिले, तो आलिन्यी ने कहा—"मित्रो, कोरो हमारा गुरु है।" इससे कोरो की प्रतिभा का पता चलता है। रोम में उसने बड़ा परिश्रम किया। उसे चित्र खींचने के सिवा किसी काम में आनंद ही न आता था। वह वहाँ घूमा, और उसने भिन्न-भिन्न स्थानों के चित्र बनाए। सन् १८२८ में वह पेरिस लौट आया। यहाँ भी उसने फ़्रांस के देहातों में घूम-घूमकर चित्र बनाए। अब कोरो पूरा चित्रकार बन गया था। अलेक्ज़ांद्र क्लोरांबोल्ट ने अपनी बहन को एक पत्र में लिखा था—"मैंने कोरो से भेंट की है। अब वह पूरा चित्रकार बन गया है। उसका पिता उसे दो हज़ार फ़्राँ प्रति वर्ष देता है, और उसने पाँचवें तले पर एक बड़ा कमरा इस काम के लिये किराए पर लिया है।" (५ नवंबर १८२६) इसका मतलब यह नहीं कि उसका नाम हो चुका था, या इस पेशे से वह अपना पेट पाल सकता था। इसके लिये तो उसे सन् १८४६ ई० तक ठहरना पड़ा।

(असमाप्त)

हेमचंद्र जोशी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१. जर्मनी में नारी-जागरण

हैं

बर्ग-विश्वविद्यालय में प्रोफ़ेसर डॉ० अगथा लैच (Dr. Agatha Lasch) नाम की एक विदुषी महिला हैं। जर्मनी में यही प्रथम महिला अध्यापिका हैं। अभी हाल ही में इन्होंने "जर्मनी में नारी-जागरण" विषय पर एक अत्युत्तम निबंध लिखा है। यहाँ पर मैं उसका सारांश दे रहा हूँ।

कुछ दिनों से जर्मन महिलाएँ राजनीतिक अधिकार प्राप्त करने की चेष्टा जी-जान से करती चली आ रही थीं; किंतु उनको विशेष सफलता नहीं प्राप्त हुई। स्वार्थी पुरुष उनकी उन्नति के पथ में रोड़े अटकाते रहे। इसके पश्चात् ईश्वरीय आशीर्वाद-स्वरूप महायुद्ध छिड़ गया। महासमर से चाहे और जितनी गहरी हानि हुई हो, किंतु जर्मनी के महिला-मंडल में एक विचित्र स्फूर्ति आ गई। जर्मन महिलाएँ आज घर के कोने में बैठने में अपना सम्मान नहीं मानतीं। उन्हें वोट देने का अधिकार मिल गया है। जर्मन राष्ट्र-महाविपत्ति (Reichstag) के समय में भी वे पुरुषों के साथ समान रूप से काम करती हैं। मंत्री-पद का पूर्ण भार ग्रहण करके भी दो-चार महिलाओं ने अपनी योग्यता का परिचय दिया है।

प्रायः तीस वर्ष पहले स्त्रियों के लिये विश्वविद्यालय के द्वार एक प्रकार से बंद थे। अनेक प्रयत्न तथा चेष्टा करने पर थोड़े दिनों के लिये वे किसी प्रकार विश्वविद्यालय में प्रवेश करने पाती थीं। अब वे दिन नहीं रहे। महिलाओं की उच्च शिक्षा का मार्ग बंद करने को कर्मवीर जर्मनी आज आत्महत्या के समान घातक मानने लग गया है। तरुण जर्मनी की अनेक विदुषी महिलाएँ विद्योपार्जन कर संसार में अपूर्व ख्याति प्राप्त कर चुकी हैं। जर्मन छात्र आजकल पुरुष-प्रोफ़ेसर की अपेक्षा स्त्री-प्रोफ़ेसर को अधिक पसंद करते हैं। हाल में जर्मन परिषद् महिला-धर्म शिक्षक(Woman pastor)-पद की सृष्टि करने के प्रयत्न में लगा हुआ है।

केवल अध्यापक का काम ही नहीं, क़ानून, चिकित्सा, दर्शन, अर्थनीति, कारख़ाने के काम आदि सभी में स्त्रियों ने अपनी अपूर्व प्रतिभा का परिचय दिया है। पाठशाला

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अजायब घर (Museum), और सरकारी रेकर्ड-कीपरी इत्यादि दायित्व-पूर्ण कामों में भी स्त्रियों ने कमाल कर दिखाया है। वैज्ञानिक लेबोरेटरी में मौलिक गवेषणा करके महिला-वैज्ञानिकों ने जिस अपूर्व शक्ति का परिचय दिया है, उससे तो यही मालूम होता है कि निकट-भविष्य में जर्मन महिलाओं के बीच दो-चार न्यूटन या गैलिली का पैदा हो जाना असंभव नहीं। जर्मन नारियाँ कैसी तेज़ी से उन्नति के पथ में अग्रसर हो रही हैं, यह निम्न-लिखित सूची से भली भाँति प्रकट हो जायगा—

सन् १९१३ ई० में जर्मनी में महिला-डॉक्टर १९५ थीं, और सन् १९२७ ई० में जर्मन लेडी-डॉक्टरों की संख्या १,९२६ हो गई है। सन् १९१४ ई० में छात्रियों की संख्या ४,१०० थी, और आज ७,२५९ जर्मन छात्रियाँ भिन्न-भिन्न विश्वविद्यालयों में अध्ययन कर रही हैं।

उपर्युक्त ७,२५९ छात्रियों में ३,०५० दर्शन, १,२०० प्राकृतिक विज्ञान, १,१५० क़ानून और अर्थनीति, १,२०० डॉक्टरी, २५० दंत-चिकित्सा, २७० औषध बनाने के काम (Pharmacy), और ५९ थियोलोजी तथा अन्यान्य विषयों का अध्ययन करती हैं।

टेकनिकल कॉलेज में, १९२३ ई० में, छात्रियों की संख्या ६२ थी, पर १९२५ ई० में ४७१ हो गई। सन् १९२० ई० में ६ करोड़ जर्मनी-निवासियों में ९५ लाख स्त्रियाँ भिन्न-भिन्न द्रव्योपार्जन के व्यवसायों में लगी हुई थीं।

जर्मन नारियाँ आज जगी हुई हैं। नवयुग के नव जीवन मंत्र से वे उद्बोधित हो उठी हैं। अपनी स्त्री-जाति को बड़ा करने तथा स्वदेश को सुंदर बनाने के लिये उन्होंने रात की नींद तथा दिन के आराम को हराम कर दिया है। संसार के रंगमंच पर वे अपना एक चिरस्थायी आसन प्रतिष्ठित कर जायँगी। भारतवर्ष की महिलाएँ भी उन्नति-पथ में धीरे-धीरे अग्रसर होने लगी हैं।

× × ×

२. जापानी महिलाओं की प्रतिभा

पुरुष द्रव्योपार्जन करें और स्त्रियाँ जीवन-पर्यंत उसी द्रव्य के द्वारा प्रतिपालित हों, यह बात हम चिरकाल से सुनते आ रहे हैं। कुसुम-कोमला नारियाँ कोई महान् कार्य संपन्न कर सकेंगी, और गृह-कार्य छोड़कर बाह्य संसार के कोलाहलमय कर्मक्षेत्र में अवतीर्ण हो सकेंगी, इस पर कोई विश्वास नहीं कर सकता था। किंतु वर्तमान युग की कर्मवीर महिलाएँ असंभव को संभव कर दिखलाती हैं। महिलाएँ केवल चहारदीवारी के भीतर बंद रहने के लिये नहीं हैं। आज उन्होंने इसे प्रत्यक्ष दिखला दिया है।

मैं यहाँ पर विश्व-विख्यात जापानी व्यवसायी महिला मैडम सुज़ूकी की बात लिखूँगा। इस अपूर्व-शक्तिशालिनी महिला की प्रतिभा तथा कार्य-कुशलता वास्तव में मनोमोहक है। वर्तमान समय में यह ३ करोड़ पौंड मूल्य की संपत्ति की अधिकारिणी है। इस विपुल संपत्ति को उसने उत्तराधिकार में नहीं पाया, स्वयं अपनी बुद्धि से पैदा किया है।

वर्षों पहले इसके पति ने, थोड़े कर्मचारियों के साथ, एक छोटा चीनी का कारख़ाना खोला था। इसके बाद १९०९ ई० में जब वह परलोक सिधार गए, तब इस कारबार को मैडम सुज़ूकी ने अपने हाथ में लिया। उस समय से इस छोटे कारख़ाने की उन्नति के लिये मैडम ने जी-जान से परिश्रम किया। उसी का फल है कि आज सुज़ूकी ऐंड को० विश्व-विख्यात कंपनी हो गई है।

इतनी बड़ी कंपनी इस व्यवसाय-वाणिज्य के उन्नत युग में भी संसार में बहुत कम देखने में आती है। इसकी शाखा-प्रशाखाएँ सभी देशों में खुल गई हैं। संसार के भिन्न-भिन्न देशों में इस कंपनी की ३० बड़ी-बड़ी एजेंसियाँ हैं। इन एजेंसियों के अधीन अनेक बड़े-बड़े जहाज़, जहाज़ बनाने के डक, इस्पात के कारख़ाने, मैदा-कलें, काटन-मिल, रबर-फ़ैक्टरी, बैंक और इंश्योरेंस कंपनियाँ हैं। चावल, गेहूँ, चीनी प्रभृति के बड़े-बड़े कारबार हैं। कपूर-व्यवसाय का तो संपूर्ण संसार में इसी कंपनी ने एकाधिपत्य (World monopoly) कर लिया है।

इतने बड़े विराट् व्यवसाय को चलानेवाली इस जापानी महिला की असाधारण प्रतिभा तथा अपूर्व कार्य-शक्ति की बात पर क्या हमारे देश की महिलाएँ विचार करेंगी ?

× × ×

३. विलायत में भारतीय महिलाएँ

अब भारतीय महिलाएँ भी उन्नति-मार्ग में अपना पैर आगे बढ़ाने लगी हैं। अब वे केवल प्रेम-पात्री होकर ही रहना नहीं चाहतीं। ज्ञान-पथ और कर्म-पथ में नवीन रूप से उनकी यात्रा आरंभ हुई है। इस देश की अनेक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महिलाएँ ज्ञान-पिपासा शांत करने के लिये अब विदेश जाने लगी हैं।

सन् १९२३ ई० में मिस सीताबाई नारायणएलफ़िन्स्टन कॉलेज से संस्कृत-भाषा में बी० ए० पास करके विलायत गईं। दूसरे ही वर्ष एक मौलिक निबंध (Thesis) लिखकर B. Litt की उपाधि प्राप्त की। इस रचना में उनकी विचार-प्रौढ़ता तथा विशेष प्रतिभा का परिचय मिला था, जिसे देखकर आक्सफ़ोर्ड के अध्यापक मुग्ध हो गए थे। गत दिसंबर मास में "महाभारत-काल की महिलाओं की अवस्था"-शीर्षक अत्युत्तम रचना के लिये आक्सफ़ोर्ड-विश्वविद्यालय ने उन्हें पी-एच्० डी० की उपाधि देकर सम्मानित किया है। इसके पूर्व किसी भारतीय महिला को यह उपाधि पाने का सौभाग्य नहीं प्राप्त हुआ। सबसे बढ़कर आपकी योग्यता का परिचय इससे अच्छी तरह जाना जा सकता है कि इनसे पहले केवल दो महिलाएँ ही इस उच्च उपाधि को प्राप्त कर सकी थीं।

बिहार से श्रीमती नयनादेवी, उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिये, सरकारी ख़र्च से, विलायत गई हैं। यह बनारस के हिंदू-विश्वविद्यालय की छात्री हैं। इसके पहले किसी महिला को बिहार-गवर्नमेंट ने विदेश में शिक्षा प्राप्त करने के लिये नहीं भेजा था।

लाहौर से कुमारी अपर्णादास गुप्ता बी० ए० इँगलैंड गई हैं। उनके शिक्षा-व्यय के लिये सरकार से छात्रवृत्ति मंज़ूर की गई है। यह लाहौर के प्रोफ़ेसर एस्० एन्० दास गुप्त की कन्या हैं।

आशा है, निकट-भविष्य में ये महिलाएँ भारतवर्ष का गौरव बढ़ावेंगी।

गोपीनाथ वर्मा

× × ×

४. आदर्श महिला

मिस एल्० वाई० पालमेन नाम की एक रूसी महिला ने रूस-सरकार के लाभार्थ, वायुयान की तरह उपयोगी, एक प्रकार की मोटर का आविष्कार किया है। इस मोटर की गति २० घोड़ों के बराबर है। रूस-सरकार ने इसकी उपयोगिता का अनुभव कर मोटर का आविष्कार करनेवाली महिला को यथोचित पारिश्रमिक और पुरस्कार दिया है। इस समय मिस पालमेन रूस-गवर्नमेंट के इंजीनियरिंग-विभाग में स्थायी रूप से, इंजीनियर के पद पर, नियुक्त हैं। यह सफलता नारी-समाज के लिये बड़े गौरव की बात है।

पांडेय देवेंद्रनारायणसिंह

× × ×

५. प्रेम

जिस प्रेम का अंत बलिदान में हो, जिससे सेवा और त्याग में एक अपूर्व आनंद का अनुभव होता हो, वही पवित्र प्रेम है। व्यक्ति-विशेष से एकांत में प्रेम करने की जो उत्कट इच्छा होती है, वह कामज है; उसे पवित्र नहीं कह सकते। प्रेम बातों में या बाहरी दिखाव में नहीं, बल्कि त्याग में, सेवा में है।

एक पुरुष के लिये कोई महत् आकांक्षा यही हो सकती है कि वह अपने मन, हृदय और आचार-व्यवहार को इतना सुंदर बनावे कि किसी रमणी-रत्न के प्रेम और श्रद्धा का पात्र बन सके। और, किसी स्त्री की महान् आकांक्षा यह होनी चाहिए कि वह किसी पुरुष-रत्न के प्रेम और पूजा के लायक़ बने।

कौशल्यादेवी गोरोवाला

× × ×

६. मुक्त कर दो

क्षते प्रहारा निपतन्त्यभीक्ष्णं
अन्नक्षये वर्धति जाठराग्निः ;
आपत्सु वैराणि समुल्लसन्ति
छिद्रेष्वनर्था बहुली भवन्ति ।

घाव पर निरंतर प्रहार होता है, अन्न के नाश हो जाने पर जठराग्नि बढ़ती है, विपत्तियों में वैर बढ़ जाते हैं, हानि की अवस्था में अन्य अनर्थ भी अधिक होने लग जाते हैं।

संसार की विचित्र माया है। आज जो संपूर्ण सुखी है, कल उस पर थोड़ा-सा दुःख आने पर क्रमबद्ध दुखों का पहाड़ गिर पड़ता है। उसके दुःख का विराम ही नहीं आता। कौन जानता था, जो भारतवर्ष सभ्यता तथा शिक्षा का शिक्षक रहा है, किसी समय दुःख-दावानल उसे भस्म कर डालेगा। कौन जानता था, संपत्तिशाली होते हुए भी उसे विदेशियों के द्वार-द्वार भटकना-सिसकना पड़ेगा। भारत से ही जिन्होंने सभ्यता और शिष्टाचार की शिक्षा प्राप्त की, उन्हीं के सामने सिर झुकाना पड़ता है। महाभारत-काल से वैमनस्य ने भारत-भूमि पर पदार्पण आरंभ किया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बस, तभी से तमाम सुख और शांति का दिवाला निकल गया; चारों ओर अशांति का राज्य हो गया; हाहाकार की ध्वनि ध्वनित हो उठी। भारत की पतनावस्था का आरंभ होते ही पर्दा, बाल-विवाह, जाति-पाँति आदि बुराइयाँ, जाति की जड़ों पर कुठाराघात करने के लिये, घुस आईं। यह प्रकृति का नियम है कि जिस समय देश, जाति या समाज में गिरावट आरंभ हो जाती है, उस समय समस्त बुराइयाँ उसके अंदर घर कर लेती हैं। बुद्ध-धर्म के इतिहास को देखें, उन्नति के किस शिखर पर था। बुद्ध के जीवन-काल में ही आधी दुनिया उनके चरणों पर सिर रख चुकी थी। महाराज अशोक के समय तक किसी अंश में उन्नति की यही अवस्था रही। पश्चात् छोटी-छोटी बातों के लिये बुद्ध के शिष्यों में मतभेद हो गया। उसके साथ आलस्य, प्रमाद तथा सिद्धांत-विरोध आ गया, जिससे बुद्ध-समाज में गिरावट आरंभ हो गई। अब भारतवर्ष में बुद्ध-धर्म का नाम-निशान भी नहीं रहा है।

वैदिक सभ्यता में कहीं भी पर्दे का वर्णन नहीं है। लेकिन सामाजिक गिरावट के साथ इस रोग का आना आवश्यक था। हमारी सभ्यता तथा धर्म में संयम और जितेंद्रियता का विशेष स्थान है। मगर जिन लोगों के हम पदानुगामी हो रहे हैं, उनके धर्म में संयम और जितेंद्रियता का मान्य स्थान नहीं है। उनको अपनी दृष्टि पर विश्वास नहीं। उन मज़हबों के बानी भी ऐसे मंद आचरण के थे कि अपनी पुत्र-वधू तक के रूप-लावण्य को देख अपने को संयम में न रख सके और उससे विवाह कर लिया। तभी से सेमीटिक मज़हबों में पर्दे की प्रथा स्थिर हो गई।

पर हमारे पूर्वज तो बड़े उच्च आचरणवाले थे। रामायण को पढ़ते हुए जब लक्ष्मण के शब्दों पर दृष्टि पड़ती है, तो मुख से धन्य-धन्य निकल पड़ता है। ये उन्होंने श्रीरामचंद्रजी से सीता-हरण के पश्चात्, सीताजी के मार्ग में फेके हुए भूषणों को पाकर, पहचान के लिये उनके दिखाए जाने पर कहे थे—"कुण्डले नैव जानामि नैव जानामि कङ्कणौ। नूपुराण्येव जानामि नित्यं पादाभिवन्दनात्।" अर्थात् मैं इन कुंडलों को नहीं जानता, और न इन कंकणों को ही जानता हूँ। मैं तो केवल इन नूपुरों को, सीता माता के चरणों में नित्य वंदना करने से, जानता हूँ। उच्च आचरण का कैसा चमकता उदाहरण है। इसी तरह महाभारत में भीष्म का उदाहरण देखिए। वह धीवर की कन्या सत्यवती पर अपने पिता को आसक्त देख, केवल पिता की इच्छा-पूर्ति के लिये, आजन्म अखंड ब्रह्मचर्य धारण करते हैं। इसी तरह सैकड़ों उदाहरण हैं, जो हमारे आचार की उच्चता प्रमाणित करते हैं।

हमारी पूर्वजा सीता, दमयंती, सावित्री आदि का नाम उनके आचरण की उच्चता के कारण ही इतिहास में सदा के लिये स्वर्णाक्षरों में लिखा रहेगा।

पवित्रता पर्दे से नहीं आ सकती। यह तो हृदय की वस्तु है, और हृदय वायुमंडल के अधीन है। जिस स्त्री को पर्दे की चहारदीवारी में बंद रक्खा जायगा, उसके हृदय में वीरता का भाव आना असंभव है। किसी विपत्ति के अवसर पर वह अपने धर्म की रक्षा करने में समर्थ नहीं हो सकेगी; क्योंकि आरंभ से ही वह निर्बलता के वायुमंडल में रहती है। पिंजड़े में बंद रहनेवाला कोई पालतू कबूतर, पिंजड़े से छूटने पर भी, उतनी ऊँची उड़ान से नहीं उड़ सकता, जितना कि स्वतंत्र वायुमंडल में रहनेवाला कबूतर।

आजकल आए दिन मेलों में, रेलगाड़ियों में, सरकार के नौकरों तथा गुंडों द्वारा, हमारी अनेकों बहनें अपमानित होती हैं। उन्हें गुंडों के हाथ में पड़ प्रतिष्ठा ही नहीं, धर्म भी गँवाना पड़ता है। यह लांछन हिंदू-समाज पर नहीं, तो किस पर है? और, इसका कारण पर्दे के अतिरिक्त और क्या है? जो लोग पर्दे को हिंदू-मान-मर्यादा की रक्षा का उपाय समझते हैं, वे ध्यान से देखें, उनकी यह कुप्रथा वास्तव में आर्य-मर्यादा को तहस-नहस करनेवाली है।

पर्दे की आड़ में भयंकर अत्याचार ही नहीं होते, बल्कि बालिकाओं की वृद्ध पुरुषों के साथ शादी भी कर दी जाती है। दूसरे शब्दों में पर्दे की आड़ में बरबादी की जाती है। इसके बाद वह पर्दे के जटिल बंधन में बाँध दी जाती है। अनमेल विवाह के कारण उन अभागिनियों को शीघ्र ही वैधव्य नसीब होता है। तब वे ही पर्दे के भीतर बंद रक्खी जानेवाली देवियाँ, संबंधियों से धिक्कारी जाने पर, अपने पवित्र आचरण को पापाचरण की अग्नि में भस्म कर डालती हैं। आज हमारी असंख्य बहू-बेटियाँ अपनी मान-मर्यादा को खुले मैदान, तुच्छ दामों पर, बेच रही हैं—उस सतीत्व को, जिसकी रक्षा के लिये पूर्व-कालीन रमणियों ने अनेकों दुःख सहे, कलुषित कर रही हैं। इसका कारण समाज का अत्याचार ही है। देश-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और जातियों का सर्वस्व सदाचार ही है। एक अँगरेज़ कवि ने भी कहा है—"If wealth is lost, nothing is lost. If health is lost, something is lost. If character is lost, all is lost."

यानी जिस देश, जाति अथवा व्यक्ति का धन नष्ट हो जाय, उसे अपना कुछ नुक़सान हुआ न समझना चाहिए। हाँ, जिसका स्वास्थ्य बिगड़ जाय, उसे अपना कुछ नुक़सान अवश्य समझना चाहिए। परंतु जिसका आचरण नष्ट हो जाय, उसे अपना सर्वनाश ही समझना चाहिए।

उच्च आचरण में ही भारत का महत्त्व था, और है। परंतु आज समाज की कुरीतियों के कारण वह नष्टप्राय हो गया है।

पर्दे से केवल सदाचार ही की नहीं, शारीरिक क्षति भी हो रही है। अच्छा भोजन, साफ़ हवा और उपयोगी शिक्षा, ये तीन वस्तुएँ शारीरिक और मानसिक विकास के लिये आवश्यक हैं। इस पर्दे के कारण स्वच्छ हवा न पाने से असमय में ही हमारी स्त्रियाँ, मृत्यु और बीमारी का शिकार हो जाती हैं। प्रायः देखा गया है, पुरुषों की अपेक्षा स्त्रियाँ तपेदिक़ या क्षय-रोग का शिकार अधिक होती हैं। जिस देश की आधी के लगभग आबादी इस तरह पर्दे की बेड़ी से जकड़ी हुई हो, अविद्या और सामाजिक कुरीतियाँ उसे भीतर-ही-भीतर खोखला कर रही हों, आप उससे उन्नति की क्या आशा कर सकते हैं?

जिस देश में आठ वर्ष की आयु में ही लड़कियाँ पत्नी बन जाती हों, बारह-तेरह वर्ष की आयु में माता कहलाने लगती हों, उस देश की रक्षा तो भगवान् भी नहीं कर सकते। १२-१३ वर्ष की माताओं की संतानों से क्या हिंदू-समाज यह आशा करता है कि वह भीम, अर्जुन, शिवाजी, गुरु गोविंदसिंह, गौतम, कणाद और कपिल होंगी? कदापि नहीं।

यदि यही अवस्था रही, तो कुछ ही काल में हिंदू-समाज से शारीरिक, मानसिक और आत्मिक उन्नति सदैव के लिये निर्वासित हो जायगी, और फिर इसका कोई उपाय न बन पड़ेगा।

अतः यदि इस भारत-वसुंधरा में फिर एक बार सदाचार तथा सभ्यता की सनातन झलक देखना चाहते हो, तो शीघ्र ही स्त्री-जगत् को पर्दे की कुरीति के कठिन कारागार से 'मुक्त कर दो।'

सत्यवती (डलहौज़ी)

अगर आप चाहते हैं

कि

"सुधा"

आपको बराबर हर महीने घर बैठे मिला करे,

तो

आज ही ६॥) वार्षिक मूल्य मनीआर्डर से भेज दें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

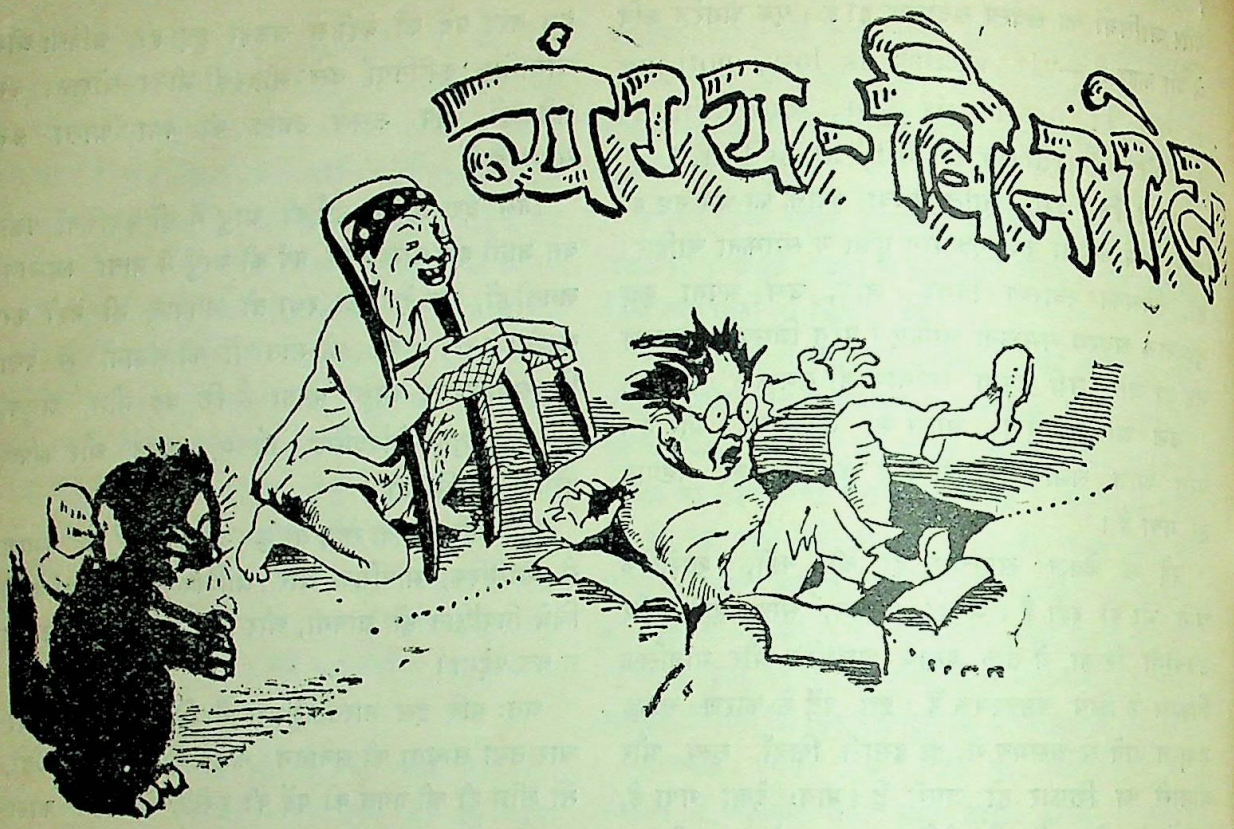

१. मसूरी की प्रभाती

उदित उषा छबि सुंदर धारे॥
उठहु तात, अब प्रात भयो है, बिसरे जगमग तारे;
चटक गुलाब, चहक चहुँ चिरई, प्रकृति शांत-रस वारे।
दम-घोटू भरि लई भवन में गैस उसासन मारे;
सुखद वायु के मारग रोके कमरा, बंद किंवारे।
परे लपिटि तुम विपुल गदेला मुँह ढाँके, तनु भारे;
निलज अपान विविध सुर सिरजत जनु गरजत घन कारे।
मुँह धोवन को नाम नहीं है, दाँत सकल मल धारे;
उठतहिं झपटत चाय-पियाला, चूसत अंडा चारे।
निगलि जात सब मल तुम छिन में दौरत चूतर झारे;
पाखाना पिघलावन काजैं लूक सिगार पजारे।
मिलत न विमल वायु तुव तन को, मन उज्ज्वल न विचारे;
असन-बसन सब तामस निसि-दिन; करत काम बिकरारे।
पौडर मलि-मलि मुँह उजरावत, मन मलीन अति कारे;
पढ़े न वेद पुरान सपन में, गुरू कलट्टर सारे।
स्नान-ध्यान को नाम नहीं है, पूजन-पाठ बिसारे;
कैसे फिरि ऋषि-मारग सूझैं भारत भारन मारे।

"सदानंद"

× × ×

२. छायावादी कवि

('बोरा' छंद)

है डटा छायावादी, लिए लेखनी—न पूछो,
ध्यान अज्ञात में, शरीर पृथ्वीतल पर;
बात कर रहा है खड़ा-खड़ा अपने आप ही,
ज्ञात नहीं होता है कि सिड़ी है कि औलिया!
हृदय की तंत्रियाँ बजा-बजा पाठकों की
अपनी तंत्री के तार तोड़े डालता है वह!
पैदा कर रहा है साहित्य कुछ ज़नानिया-सा,
ओज नहीं, बल नहीं, लुंज-मुंज शब्द-पुंज!
भाव की दशा न पूछो—अधर में लटकता कभी,
कभी जा लोटता है प्रभु के कमल-पद में,
कभी जा उलझता है सुंदरी की लट में,
अधमरा घूमता है इधड़-बिधड़ धक्के खाता,
रोता-बिलखता है, माँगता पनाह है।
हिंदी की जान को कहाँ से चले आए हैं
शेख़ सद्दो के ये चेले-से कवि लोग?
ढेर कर रहे हैं दिन-दहाड़े काव्य-रस का?
भागकर जग की कठोर वास्तविकता से
कल्पना के क़िले में लेते विश्राम हैं!

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

व्यर्थ दुर्भेद्य समझे हैं क़िला कल्पना का,
दीवारें जल्पना की निपट निकम्मी हैं।
भरी भंडार में बारूद भावुकता की,
आँखों की तोपों से आँसुओं की गोलियाँ,
आहों की ध्वनि घोर करती हुई क्या ख़ूब,
बरस रही हैं आज कविता के नाम से!
मरे हुए शृंगार-रस का प्रचार कर
ये वीरता प्रांतों को बंगाली बना रहे!
नहीं हम कहते हैं कि पहले न था छायावाद—
दाल में नमक था, न कि दाल थी नमक में।
कवि-सम्मेलनवाले रावणों ने पहले ही से
कविता-सीता की जान आफ़त में डाली है;
बची-खुची बुद्धि को बिगाड़ने का ठेका ले
आ डटे आप भी हैं निज रचनाएँ लिए,
जिनका न सिर है, न पूँछ है, न धड़ है!
रचना भी कोमल नहीं—लोहे की छड़ है!
बेसमझ संपादक, कालम भरने के लिये,
काला कर रहे हैं मुख प्यारी मातृभाषा का।
हे मित्रो, होता नहीं निर्वाह उचित सभी रसों का,
करुण-शृंगार दो तूँबियाँ बग़ल में दाब,
पार किया चाहते अगाध रस-सागर हो!
भंग की तरंग में कि पीनक अफ़ीम की में
की गई बकवाद, नहीं है कविता।
इसीलिये नशे में भावुकता के जो तुम
बकते अनर्गल और अस्फुट हो शब्द-पुंज,
कविता नहीं है वह—कविता की दुम है।
देखो रोम-ग्रीस का उठाकर इतिहास तुम,
ज्यों ही रची जाने लगी छायावादी कविता,
देश पराधीन हुए, चपतें पुरस्कार मिला,
जो थे पराक्रमी वे हुए नपुंसक-से सब,
खो बैठे देश की स्वतंत्रता-सी निधि को।
पहले से पराधीन भारत रोता है पड़ा,
और अधिक दुर्बल मत करो इसे, मान जाओ।
मिलेगा तुम्हें क्या, जब नष्ट होंगे हिंदवाले?
कौन पुल बाँधेगा प्रशंसा के कविता की?
मत पीछे पड़ो बंगाली कवियों के तुम,
कवि-सम्राट हों या बाप सम्राटों के—
चाहिए इनें न ढीली धोती-जैसी कविता।
कला की सुंदरता का ढोल पीटकर जो नित्य
बढ़ाते प्रचार अश्लील शृंगार का,
नहीं वे जानते हैं कला क्या है, क्या सौंदर्य—
किसका आधार कौन, किसकी शोभा है कहाँ—
मेनका अप्सरा के जूते-से गाँठते हैं,
और कहते हैं यह कला है लालित्य-भरी!
'कला'-'कला' चिल्लाकर कविता-कामिनी को वे
कोयलों के ढेर पर खिलाते कलामुंडी हैं।
लिखें यदि घर से निकाली हुई औरतें
अपने वियोग की दुख-भरी कहानियाँ,
लगा दें पहाड़ यदि भावुकता के वे ऊँचे,
बहा दें समुद्र आँसुओं से निज रो-रोकर,
तो वे अबलाएँ होने से कुछ चम्य हैं,
तुम हो पुरुष, फिर रोते-झीखते हो क्यों?
खोया पुरुषार्थ सब, तभी बने दास हो।
दास ही रहोगे यदि छायावादी बने रहे,
दुनिया कहेगी हिंद-देश पागल-ख़ाना है,
करते जहाँ के मर्द औरतों की-जैसी बातें,
हाथ मटकाते हैं, भौंहें चलाते हैं,
बात आ पड़ने पर आँसू बहाते हैं,
लूटते विदेशी धन-माल उनका हैं, पर
कल्पना-नदी में वे डूबते व उतराते,
स्वयं नहीं जानते कि मरते हैं कि जीते हैं!
किसी अज्ञात सुंदरी पर वे मुग्ध हैं!
किसी बहरे प्रभु को रो-रोकर रिझाते हैं!
करते प्रचार सखी-भाव का नचनिए बन,
कला व सुंदरता की लुटिया डुबाते हैं!
यारो, अब मान जाओ, बहुत हुआ, तौबा करो,
अपने को बख़्शो और बख़्शो मातृभाषा को।

"बख़्शीजी"

× × ×

३. बेतुकी बातें

(१)

"आजकल हिंदी-संसार में अख़बारों के इतने विशेषांक क्यों निकलते हैं?"

"इसलिये कि ग्राहकों को मूड़ने के लिये संपादकों ने अभी तक कोई दूसरा उपाय नहीं सोच पाया है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(२)

"हिंदी में सबसे उच्च कोटि की पुस्तकें कौन समझी जाती हैं ?"

"जिनको कोई पूरा पढ़ न सके।"

(३)

"हिंदू विधवा-विवाह से क्यों भड़कते हैं ?"

"क्या करें, बेचारे अपनी-अपनी स्त्रियों से डरते हैं।"

"क्यों ?"

"इसलिये कि कहीं उनकी स्त्रियाँ उन्हें मारते-मारते किसी दिन मार ही न डालें।"

(४)

"हिंदू-धर्म में इतनी छुआछूत क्यों है ?"

"क्योंकि इसने मसजिद और गिरजाघर बसाने का ठेका ले रक्खा है।"

"ठीक कहते हो, तभी यह सब धर्मों की जड़ कहलाता है।"

"और नहीं तो क्या। इसीलिये तो इसकी क़लई इतनी कच्ची रक्खी गई है कि छूते ही उतर जाय।"

(५)

"हिंदी-साहित्य में समालोचक अश्लील अंश किसे बताते हैं ?"

"हास्य-रस को।"

"क्यों ?"

"क्योंकि अंगूर खट्टे हैं।"

(६)

"हिंदू-औरतें ही ज़्यादातर क्यों मुसलमानों के हाथ लगती हैं ?"

"क्योंकि हिंदू लोग ज़रूरत से ज़्यादा धार्मिक होते हैं। वे घंटा हिलावें या अपनी औरतें रखाएँ ? दोनों काम भला कब मुमकिन हैं ?"

जी० पी० श्रीवास्तव

हिंदुस्थान-भर को आपके

माल

की ज़रूरत है।

१०,००० एजेंट आपका माल लेने और बेचने को तैयार हैं।

कैसे ?

मैनेजर 'सुधा', लखनऊ से पूछिए।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

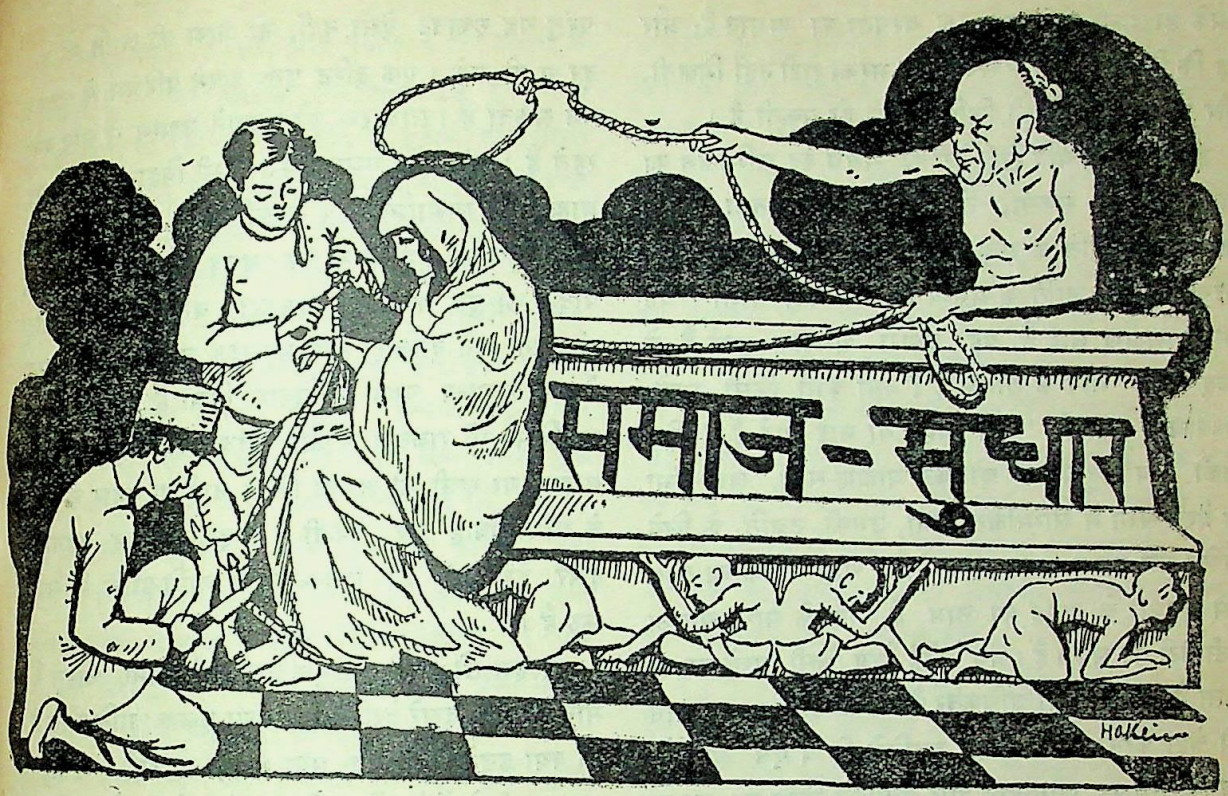

जाति-पाँति के दुष्परिणाम

सुधा की पहली संख्या में एक सज्जन ने स्वर्गीय बाबू भूदेव मुखोपाध्याय सी० आई० ई० के विचारों का उल्लेख करके जाति-भेद का समर्थन किया है। हमने उस लेख को अनेक बार पढ़ा, और यत्न किया कि हिंदुओं की वर्तमान जन्ममूलक जाति-पाँति की ख़ूबियाँ समझ में आ जायँ; परंतु हमारा प्रयत्न निष्फल रहा। श्रीयुत मुखोपाध्याय की युक्तियों की आलोचना करने के पूर्व हम एक बात कह देना आवश्यक समझते हैं। वह यह कि सचाई पर पहुँचने के लिये आवश्यक है कि हम किसी व्यक्ति-विशेष के नाम, उपाधि, सांसारिक मान-प्रतिष्ठा और राज-पदवी से प्रभावित न हों। तर्क की तुला पर जो पूरा उतरे, युक्ति की कसौटी पर जो सच्चा सिद्ध हो, उसी को स्वीकार करें। बाबू भूदेवजी ही एक ऐसे बड़े आदमी नहीं, जिन्होंने युक्ति का दिखावा करके अपने समय की बुराइयों को ठीक सिद्ध करने का यत्न किया हो। क्या अरस्तू-सा तत्त्वज्ञानी दास-प्रथा को एक नैसर्गिक बात कहकर दासता का समर्थन नहीं करता था? क्या उसका मत यह न था कि ग़ुलाम एक ऐसा यंत्र है, जिसमें आत्मा नहीं? जर्मनी का प्रसिद्ध दार्शनिक नीट्शे कहा करता था—"जब तू स्त्री के पास जा, तो अपने कोड़े को याद रख।" इसी प्रकार ओटो वीनिंगर का मत था कि स्त्रियों के आत्मा नहीं होती। गोस्वामी तुलसीदास स्त्री को पशु और ताड़ना का अधिकारी समझते थे। तो क्या इन बड़े आदमियों की बातें मानकर हम भी दास-प्रथा और स्त्री पर दंड-प्रहार को अच्छा समझने लगें? यह आर्य-धर्म की विशेषता है कि वह किसी भी पुरुष को, चाहे वह कितना ही बड़ा क्यों न हो, निर्भ्रांत नहीं मानता। निर्बल-बुद्धि मनुष्य ही लकीर के फ़क़ीर और दूसरों का आश्रय ढूँढ़नेवाले होते हैं। हमारे यहाँ तो तर्क को ही ऋषि माना गया है।

भूदेव बाबू ने तीन बातें कही हैं—

(१) हिंदुओं में दृढ़ सम्मिलन के अभाव का कारण रोटी-बेटी के संबंध का अभाव नहीं, बरन् वश्यता का अभाव है; और सबके साथ सबका रोटी-बेटी का व्यवहार किसी भी देश में प्रचलित नहीं, और न हो ही सकता है।

इसका अर्थ दूसरे शब्दों में यह है, कि जो मनुष्य भूख-प्यास के कारण मर रहा है, या जो गहरे घाव की वेदना से व्यथित होकर चिल्ला रहा है, उसे शांत करने के लिये रोटी-पानी देना या उसकी मरहम-पट्टी करना ठीक नहीं; क्योंकि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसके हाहाकार का मूल-कारण वश्यता का अभाव है; और यह कि किसी भी देश में सबको पेट भरकर रोटी नहीं मिलती, और न सबके घावों की चिकित्सा ही हो सकती है।

हम पूछते हैं, यदि रोटी-बेटी का संबंध दृढ़ सम्मिलन का कारण नहीं हो सकता, तो एक मनुष्य जितना अपनी बिरादरी या जाति के मनुष्य से मिलकर प्रसन्न होता है, उतना दूसरी जाति के मनुष्य से क्यों नहीं होता? यह हमारा ब्राह्मण भाई है, यह हमारा अग्रवाल भाई है, ये शब्द किस भाव के द्योतक हैं? क्या कभी किसी मुखोपाध्याय ने कहा कि "मेरा चमार या नाई भाई है।" फिर बाक़ी सब हिंदुओं को छोड़कर ब्राह्मण-सभा, खत्री-सभा या वैश्य-सभा में सम्मिलित होना, उनकी उन्नति के लिये विशेष यत्न करना किस कारण से है? यही न कि वह सभा ऐसे मनुष्यों के समूह का नाम है, जिनके साथ आपका रोटी-बेटी का संबंध है। जब कोई वैश्य किसी अच्छे पद पर होता है, तो वह क्यों अधिकतर वैश्यों को ही लाभ पहुँचाने की चेष्टा करता है? केवल इसलिये कि वे ऐसे लोग हैं, जिनके साथ वह खान-पान और वैवाहिक संबंध कर सकता है। क्या उनके परस्पर प्रेम और सम्मिलन का कारण उनमें वश्यता का भाव होता है? रोटी-बेटी के संबंध को सम्मिलन की दृढ़ भित्ति मानने में इनकार करना मानो दिन में दिनकर के अस्तित्व को न मानना है।

बाबू भूदेवजी कहते हैं कि किसी देश में भी सबका सबके साथ रोटी-बेटी का व्यवहार नहीं। हम पूछते हैं, भारत को छोड़कर और कौन-सा देश है, जिसमें सबका सबके साथ रोटी-बेटी का व्यवहार नहीं? दूर जाने की आवश्यकता नहीं, मध्य एशिया (यारकंद) में ही देखिए। एक भाई क़ाज़ी है, दूसरा मोची है, तीसरा किसान है, चौथा मेहतर है, पाँचवाँ अध्यापक है, और छठा कोतवाल। वे सब एक ही घर में रहते और परस्पर खान-पान करते हैं। क्या अँगरेज़ एक दूसरे का अन्न नहीं खाते? योरप के देशों में तो अधिकांश लोग रोटियाँ बाज़ार से ही ख़रीदते हैं। क्या किसी ने, हमारे यहाँ के कनौजियों के सदृश, आठ अँगरेज़ और नौ चूल्हे देखे हैं?

बाक़ी रही विवाह की बात। यह ठीक है कि हमारे यहाँ की तरह पाश्चात्य देशों में भी प्रायः अमीर अमीरों के साथ और मज़दूर मज़दूरों के साथ विवाह-संबंध करते हैं, लॉर्ड लोग सामान्य लोगों के यहाँ प्रायः कम ही बेटी देते हैं। परंतु यह रुकावट ऐसी नहीं, जो जन्म की जाति की तरह दूर न हो सके। एक दरिद्र पुरुष अपने परिश्रम से धनवान् बन सकता है। साधारण लोग अपने उद्योग से लॉर्ड बनते रहते हैं। परंतु कोई चमार, कितना भी विद्वान् हो जाने पर, ब्राह्मणों में सामाजिक रूप से सम्मिलित नहीं हो सकता। इसके विपरीत पश्चिम में एक बूचड़ का पुत्र पादरी और पादरी का पुत्र भारत का वायसराय बन सकता है। औरों की बात जाने दीजिए, स्वयं महाराज जॉर्ज की ज्येष्ठा कन्या ने एक सामान्य पुरुष से विवाह किया है। उस महाशय का किसी भी राजवंश से कोई संबंध नहीं। क्या यहाँ किसी ब्राह्मण या खत्री की लड़की किसी नाई या कहार के लड़के के साथ विवाह कर सकती है? इसलिये यह कहना कि दूसरे देशों में भी हिंदुओं-जैसी जाति-पाँति है, सर्वथा झूठ है।

पर हम तो इससे भी एक पग आगे जाना चाहते हैं। मान लीजिए, दूसरे देशों में भी जन्म-मूलक जाति-पाँति है। तो क्या इतने से ही वह प्रथा अच्छी हो गई? संसार के प्रायः सभी देशों में लोग मदिरा पीते, चोरी और व्यभिचार करते हैं। तो क्या भारत में इनको दूर करने का यत्न न होना चाहिए? वैदिक धर्म के अनुयायी सिवा भारत के और कहीं नहीं। तो क्या इससे यह परिणाम निकालें कि यह धर्म बुरा और त्याज्य है? ईरान का मुसलमान भारत में आता है। वह बिस्मिल्ला करके झट भारतीय मुसलमान के साथ खाने बैठ जाता है। उनमें प्रेम की एक लहर चल जाती है। इसके विपरीत जाति-पाँति के समर्थक मालवीयजी पं० लक्ष्मीकांत भट्ट को इसलिये बिरादरी से बहिष्कृत कर देते हैं कि भट्टजी ने अपनी पुत्री का विवाह दूसरी उपजाति के ब्राह्मण युवक के साथ कर दिया। इतना ही नहीं। पं० कपिलदेव मालवीय को भी बिरादरी से निकाल दिया जाता है; क्योंकि उन्होंने भट्टजी के साथ खा लिया है। क्या मालवीयजी और भट्टजी में वही प्रेम और सद्भाव रह सकता है, जो इकट्ठा खान-पान और परस्पर ब्याह-शादी करनेवाले मुसलमानों में है?

(२) जाति-पाँति के पक्ष में दूसरी बात भूदेवजी यह कहते हैं कि जाति-पाँति का भेद उड़ाकर साम्य लाने का यत्न करना निरर्थक है। कारण, पृथ्वी में सच्चा साम्य है ही नहीं; यदि विषमता जाती रहे, तो सृष्टि की शृंखला नष्ट हो जाय।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बाबूजी की बातों से ऐसा जान पड़ता है कि जनता के वास्तविक दुःख का कारण समझकर उसे दूर करने का यत्न करना आपका उद्देश्य नहीं; आप अपने हेत्वाभासों द्वारा केवल अपना बुद्धि-विलास प्रकट करना चाहते हैं। या अधिक-से-अधिक आप ख़याली पुलाव खिलाकर भूखों के क्षुधानल को शांत करना चाहते हैं। आप कैसे कहते हैं, संसार में साम्य नहीं? देखिए—अक्षन्तः कर्णवन्तः सखायो मनोजवेषूर्वसमा बभूवुः (ऋग्वेद)। सब मनुष्यों के दो हाथ, दो पैर, एक नाक, एक सिर और दो आँखें हैं। सब मातृ-गर्भ से उत्पन्न होते हैं। सब नाक के द्वारा साँस लेकर और मुख के द्वारा खाकर जीते हैं। सभी दुःख-सुख का अनुभव करते हैं। क्या कोई मनुष्य कभी पिता के कान से पैदा होता देखा गया? क्या किसी की नाक घुटने पर लगी हुई पाई गई? आप जाति-पाँति के विरोधियों का पक्ष ठीक नहीं दिखला रहे। वे यह नहीं कहते कि सभी मनुष्य पुरोहित बन जायँ, या सभी को डॉक्टर बना दिया जाय। इसको वे साम्य नहीं कहते। वे तो यह कहते हैं कि गुण, कर्म और स्वभाव के अनुसार जो मनुष्य जैसा है, उसके साथ वैसा व्यवहार किया जाय। दाल-आटा बेचनेवाले को सिपाही (क्षत्रिय), रोटी पकानेवाले को विद्वान् (ब्राह्मण), सेना के सूबेदार को दास (शूद्र), जज को सुनार, और वकील को नाई न कहा जाय। और, एक विदुषी कन्या (ब्राह्मणी) का विवाह एक फेरी बेचनेवाले निरक्षर (शूद्र) के साथ इसलिये न किया जाय कि दोनों ढाई घर खत्री या गौड़ ब्राह्मण हैं। गुण, कर्म और स्वभाव के अनुसार जो जिसके योग्य है, उसका उसी के साथ विवाह होना चाहिए। इसमें जन्म की जाति या बिरादरी की कुछ भी परवा न होनी चाहिए। जो लोग आज अपने को ब्राह्मण कहते हैं, केवल उन्हीं में विद्वान् नहीं हैं, दूसरी बिरादरियों में भी बड़े-बड़े विद्वान् हैं। केवल बनिए ही धनवान् नहीं, बहुतेरे पंडे भी धनाढ्य हैं। इसलिये यदि विद्वान् वर की ज़रूरत हो, तो यह न देखा जाय कि वह जन्मना ब्राह्मण है, या जन्मना वैश्य; बरन् देखा यह जाय कि वह विद्वान् है या मूर्ख। बी० ए० का प्रमाण-पत्र देने के लिये विश्वविद्यालय यह नहीं देखता कि प्रार्थी खत्री है या ब्राह्मण। वहाँ देखा यह जाता है कि उसने सब विषयों में पास होने-योग्य अंक प्राप्त किए हैं या नहीं। यदि जज का पुत्र होने के कारण ही किसी अयोग्य को जज और चपरासी का पुत्र होने के कारण ही किसी विद्वान् को चपरासी बना दिया जाय, तो सोचिए, संसार में कितना अनर्थ हो! जहाँ देशी रजवाड़ों में अयोग्यों को राजा बनाया जाता है, वहाँ कैसे-कैसे भयंकर परिणाम निकलते हैं!

साम्य से सृष्टि की शृंखला के नाश का डर तब हो सकता है, जब संसार में भिन्न-भिन्न जातियों के प्राणी (गाय, भैंस, हाथी, इत्यादि; क्योंकि जाति शब्द का लक्षण इन्हीं पर चरितार्थ होता है। ब्राह्मण, क्षत्रिय, शूद्र आदि जतियाँ नहीं, वे सब मनुष्य-जाति हैं) न रहकर सब एक ही जाति के हो जायँ—सब घोड़े-ही-घोड़े या गधे-ही-गधे हो जायँ। सब मनुष्यों को मनुष्य, मूर्खों को मूर्ख और धर्मात्माओं को धर्मात्मा समझने से सृष्टि की शृंखला के नाश का भय नहीं।

(३) भूदेवजी अपने तीसरे आक्षेप में कहते हैं कि वेदों में जाति-भेद को स्पष्ट उल्लेख न होने का कारण यह है कि "वैदिक ग्रंथों का प्रकाश ब्रह्मावर्त-देश में अथवा उसके भी पश्चिम छोर में हुआ था। इन देशों में अधिकतर आर्यों का ही निवास था। वहाँ विभिन्न वर्णों के लोग अधिक परिमाण में एकत्र नहीं हुए थे। अतएव ब्रह्मावर्त में उस समय ऐसी आशंका करने का कोई कारण न था कि अन्यान्य लोगों के साथ सम्मिश्रण होने से आर्य-रक्त दूषित हो जायगा। इसी कारण पहले वैदिक ग्रंथों में उतनी अधिकता के साथ जाति-भेद की चर्चा करने का कुछ प्रयोजन नहीं था।"

मुखोपाध्यायजी का ऊपर का लेख पढ़कर हमें बड़ा आश्चर्य हुआ। आप वेद को न मालूम क्या मानते हैं? आपके शब्दों से यह स्पष्ट जान पड़ता है कि आप वेद को भगवद्वाणी नहीं मानते। आप इसे आर्यों की आवश्यकता के लिये बनाया हुआ ग्रंथ मानते हैं। आश्चर्य है, जो लोग वेद को ईश्वरीय ज्ञान नहीं समझते, वे भी अपने को सनातनधर्मी और जाति-पाँति का पक्षपोषक प्रकट करते हैं। हमारा विश्वास है कि वेद आदि-सृष्टि में मनुष्य के कल्याण के लिये दिया हुआ परमेश्वर का ज्ञान है। यह केवल आर्यों के लिये नहीं, विश्व-जगद् के लिये है। इसका प्रकाश ब्रह्मावर्त में नहीं, बरन् त्रिविष्टप में—पृथ्वी के उस भाग में, जो सबसे पहले जल से बाहर निकला और जहाँ सबसे पहले आदि-सृष्टि हुई—अर्थात् तिब्बत में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हुआ। भारत के आदिम निवासियों को आर्यों ने बाहर से आकर जीता और मार भगाया—इसी झूठे ख़याल के प्रचार के कारण आज अछूत-जाति के लोग अपने को आदिम निवासी समझकर आर्य-विजेताओं को कोसने लगे हैं। जब आदि-सृष्टि ही एक जगह हुई, तो भारत में उससे पहले आदिम निवासी कहाँ से आ गए? अस्तु। भूदेवजी ने इतना तो स्वीकार कर लिया कि वर्णों (जाति-पाँति) का झगड़ा पुराना नहीं, ईश्वर-कृत नहीं, बरन् बहुत पीछे का और मनुष्य-कृत है। यदि वेदों के पीछे के काल में आर्य-रक्त को अनार्य-रक्त के साथ मिलकर दूषित होने से बचाने के उद्देश्य से जाति-पाँति बनाई गई थी, तो ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र तो सब आर्य ही हैं। इनके परस्पर विवाह करने से तो रक्त दूषित नहीं होगा। हम तो समझते हैं कि यदि आर्य-रक्त को दूसरों के साथ मिलने से बचाने के लिये भी यह प्रथा बनाई गई थी, तो भी यह निष्फल हुई है। शुक्ल वर्ण, लंबी नाक, उन्नत ललाट, सुडौल शरीर, ये ही आर्यों के लक्षण कहे गए हैं। तो क्या आजकल के द्विज कहलानेवाले लोगों में जितने मनुष्य काले-कलूटे, कुडौल और छोटी नाकवाले हैं, उन्हें हम आदिम निवासी या मिश्रित-रक्त समझें? भगवान् की दृष्टि में काले-गोरे का कोई भेद नहीं। वेद तो मनुष्य के केवल दो विभाग—आर्य (अच्छे) और दस्यु (बुरे)—करता है। संसार की समस्त जातियाँ उसी पिता की संतान हैं। विभिन्न जल-वायुओं में रहने के कारण उनके आकार तथा वर्ण में भेद उत्पन्न हो गया है। अच्छे बुरे बन सकते हैं, और बुरे अच्छे।

भूदेव बाबू लिखते हैं कि "भारत में जाति-भेद प्रथा नैसर्गिक मूल पर स्थित है।...और समान जाति में ही बेटी का व्यवहार शास्त्रोक्त है।" हमें आश्चर्य है कि आप जाति-भेद को नैसर्गिक कहने का साहस कैसे करते हैं? हम ऊपर कह आए हैं कि जो प्रथा मूर्खों को पंडित और कायरों को वीर कहलाने का अधिकार देती है, वह कभी नैसर्गिक नहीं हो सकती। क्या एक रोटी पकानेवाला अशिक्षित और एक हाईकोर्ट का जज एक ही वर्ण के कहला सकते हैं? फिर उनको समान-जाति मानकर आप परस्पर विवाह की आज्ञा क्यों देते हैं? वास्तव में देखा जाय, तो एक जाति दूसरी जाति से विवाह कर ही नहीं सकती। देखिए, घोड़ा एक जाति है, और गाय दूसरी जाति। क्या घोड़े से गाय में गर्भ रह सकता है? कदापि नहीं। शास्त्र ने जाति का यही लक्षण किया है। जिस एक चीज़ के देखने से बाक़ी उस तरह की सब चीज़ों का ज्ञान हो जाय, उसे जाति कहते हैं। जैसे एक वृक्ष देखने से शेष सब वृक्षों का पता लग जाता है। परंतु एक ब्राह्मण को देखकर हम सब ब्राह्मणों को नहीं पहचान सकते।

प्राचीन काल में सब आर्य लोग आपस में विवाह करते थे। आजकल के सदृश उन्हें वर्ण-संकरता का भय न लगा रहता था। इसके अनेक उदाहरण इतिहास में मिलते हैं। अनुलोम विवाहों को तो सब कोई स्वीकार करते ही हैं, परंतु प्रतिलोम विवाहों का भी उस समय प्रचार था। देखिए—(१) राजा प्रियव्रत क्षत्रिय ने विश्वकर्मा ब्राह्मण की पुत्री बर्हिष्मती से विवाह किया। (२) राजा नीप (क्षत्रिय) ने शुक्र ब्राह्मण की कन्या कृत्वी से विवाह किया। (३) राजा ययाति (क्षत्रिय) ने शुक्र ब्राह्मण की कन्या देवयानी से विवाह किया। (४) ब्राह्मण दीर्घ-तमा और शूद्र-कन्या के संबंध से कक्षीवान् उत्पन्न हुए, और कक्षीवान् ने क्षत्रिय राजा की पुत्री से विवाह किया। (५) प्रमत्ता ब्राह्मणी का संबंध नाई के साथ हुआ और महामुनि मतंग की उत्पत्ति हुई। (६) कर्दम क्षत्रिय की पुत्री अरुंधती और (गणिका-पुत्र) वशिष्ठ मुनि का विवाह हुआ। इस संबंध से शक्ति-नामक पुत्र जन्मा। शक्ति का विवाह चंडाल-कन्या अदृश्यंती से हुआ। उनके यहाँ पराशर मुनि का जन्म हुआ।

अंत में हमारा हिंदू-समाज के हितैषियों से नम्र निवेदन है कि इस देश-घातक, सारे अनिष्ट की जड़ जाति-पाँति को एकदम तोड़कर गुण, कर्म और स्वभाव के अनुसार विवाह का प्रचार कीजिए। ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र, गाय, भैंस और वृक्ष की तरह, कोई अलग-अलग जातियाँ नहीं हैं। इन प्राचीन संस्कृत नामों को यदि हम आजकल की भाषा में कहें, तो इनका नाम अध्यापक, सिपाही, व्यापारी और मज़दूर होगा। ये सब भाई हैं, एक ही जाति हैं। इनको जाति-पाँति के छोटे-छोटे टुकड़ों में बाँटकर हिंदू-समाज का सत्यानाश न कीजिए। अब पुराने दक़ियानूसी विचारों का युग नहीं। धर्म और वर्ण के सच्चे अर्थों को समझिए। लकीर के फ़क़ीर मत बनिए। भगवान् इस आर्य-वंश का कल्याण करेंगे!

संतराम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

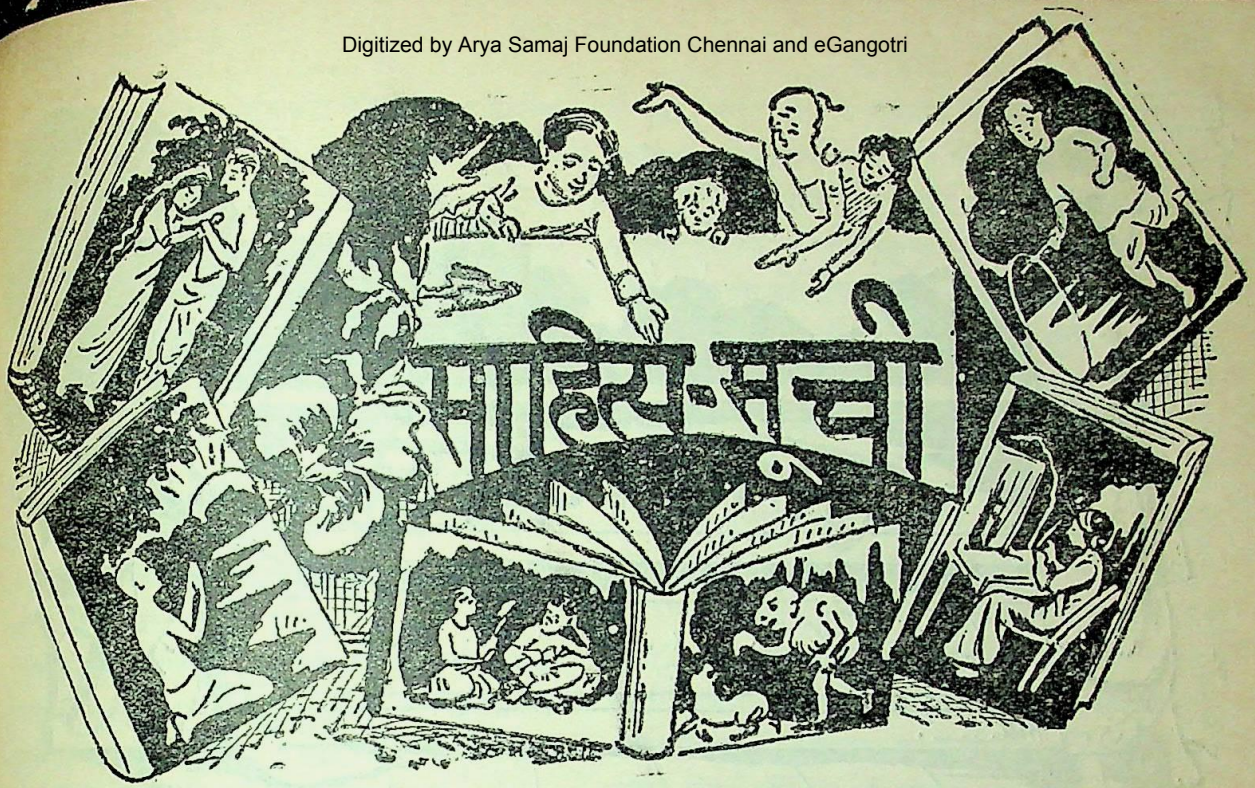

इस कॉलम में हम हिंदी-प्रेमियों की जानकारी और सुबीते के लिये प्रति-मास नई-नई उत्तमोत्तम पुस्तकों के नाम देते रहते हैं। गत मास नीचे-लिखी पुस्तकें प्रकाशित हुईं—

(१) प्रतिशोध (प्रथम भाग)—मेरी कॉरेली के 'बैंडेट्टा' का हिंदी-अनुवाद ; अनुवादक, श्रीबाबूराम शर्मा ; मूल्य १॥), सजिल्द २)

(२) हिंदी-भाषा-सार (गद्य-भाग)—संग्रहकर्ता, लाला भगवानदीन और बा० रामदास गौड़ एम्० ए० ; मूल्य ॥)

(३) योरप का इतिहास (तीन भाग)—लेखक, पं० रामकिशोर शर्मा बी० ए०, विशारद ; मूल्य २)

(४) चतुर जासूस (सचित्र जासूसी उपन्यास)—लेखक, पं० प्रद्युम्नकृष्ण कौल ; मूल्य ॥)

(५) गंगा-जमुनी (कहानियों का संग्रह, प्रथम भाग)—लेखक, श्रीयुत जी० पी० श्रीवास्तव ; मूल्य २)

(६) संक्षिप्त सूरसागर (द्वितीय संस्करण)—संपादक, प्रोफ़ेसर वेणीप्रसाद एम्० ए० ; मूल्य २॥)

(७) काव्यामृत-प्रवाह—भारतेंदु बाबू हरिश्चंद्र की कविताओं का संग्रह ; मूल्य २)

(८) एकतारा (कविताओं का संग्रह)—लेखक, श्रीमोहनलाल महतो गयावाल ; मूल्य १)

(९) वीरांगना (काव्य)—मूल-लेखक, श्रीमाइकेल मधुसूदनदत्त ; अनुवादक, श्री'मधुप' ; मूल्य १)

(१०) कुसुम-कुंज (कविताओं का संग्रह)—लेखक, बाबू शिवनंदनसहाय ; मूल्य ॥-)

(११) कामना (नाटक)—लेखक, श्रीजयशंकर 'प्रसाद' ; मूल्य १)

(१२) सौरभ (कविताओं का संग्रह)—लेखक, श्रीरामाज्ञा द्विवेदी ; 'समीर' ; मूल्य १)

(१३) मेघनाद-वध (काव्य)—मूल-लेखक, माइकेल मधुसूदनदत्त ; अनुवादक, श्री'मधुप' ; मूल्य ३॥)

(१४) परिचय (कविताओं का संग्रह)—संकलन-कर्ता श्रीशांतिप्रिय द्विवेदी ; मूल्य १)

(१५) राजकुमार कुणाल (उपन्यास)—मूल-लेखक, महामहोपाध्याय पं० हरप्रसाद शास्त्री ; अनुवादक, पं० लक्ष्मीधर वाजपेयी ; मूल्य १)

(१६) श्रीगौरांग महाप्रभु (जीवन-चरित्र)—लेखक, श्रीशिवनंदनसहाय ; मूल्य २)

(१७) हिंदी-महाभारत (नवाँ भाग) ; मूल्य १)

(१) मिश्रबंधु-विनोद अथवा हिंदी-साहित्य का इतिहास तथा कवि-कीर्तन (द्वितीय भाग, सुकवि-माधुरी-माला का चतुर्थ पुष्प)—लेखक, श्रीयुत मिश्रबंधु ; मूल्य अजिल्द ३), सजिल्द ३॥)

(२) देवी पार्वती—लेखक, मुंशी ज़हूरबख़्श ; संपादिका, श्रीमती कृष्णकुमारी ; मूल्य अजिल्द १), सजिल्द १॥)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

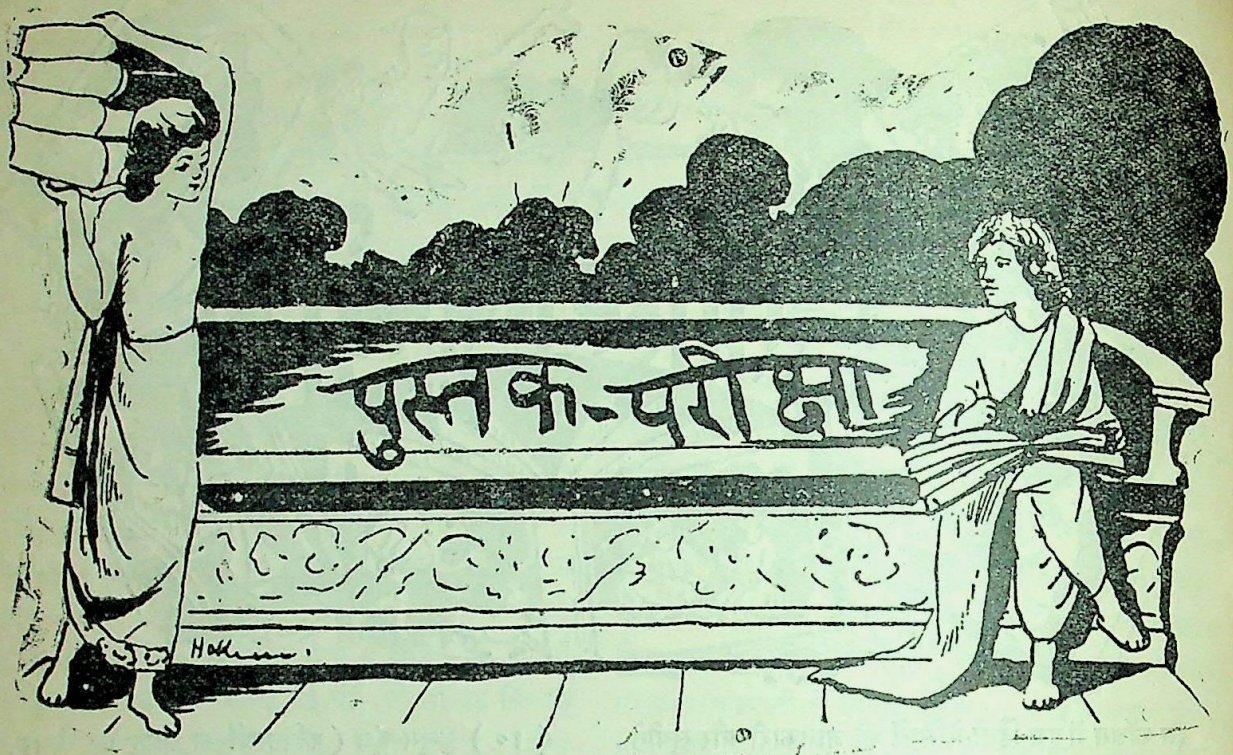

१. साहित्यानुशीलन

संस्कृत-साहित्य का इतिहास (प्रथम भाग, नाटक और काव्य)—लेखक, श्रीयुत वेदव्यास एम्० ए०, प्रोफ़ेसर डी० ए० वी० कॉलेज, लाहौर। दयानंद-कॉलेज के अनुसंधान-विभाग द्वारा प्रकाशित। पृष्ठ-संख्या ३४२ ; कागज़-छपाई प्रशंसनीय ; सुनहरी कपड़े की जिल्द। मूल्य अंकित नहीं।

भारत अपनी महत्त्वाकांक्षा के पुनर्युग में अपने प्राचीन गौरव की ओर उत्सुकता-भरी दृष्टि दौड़ाता है। एक जाति का 'भविष्य' उसके 'भूत' में अंकित है, यह ऐतिहासिक सचाई नवीन भारत के विषय में अक्षरशः घटती है। नवीन भारत का स्वरूप—पार्थिव, भौतिक रूप नहीं, अपितु यथार्थ आंतरिक आत्मरूप—उसका हृदय, आत्मा भारत के प्राचीन साहित्य में निहित है। भारत-माता की मूर्ति संस्कृत-सरस्वती के मंदिर में अधिष्ठित है। तरुण-भारत के पुजारियों को माता के दर्शनों के लिये उसमें प्रवेश कर पुजारी बनना होगा। परंतु दुर्भाग्य कि मंदिर के द्वार भारत-संतानों के लिये बंद हैं—मंदिर में प्रवेश का पासपोर्ट विदेश से, विदेशी भाषा अँगरेज़ी से, प्राप्त होता है। संस्कृत-साहित्य की गहरी अँधेरी खानों में कैसे-कैसे जाज्वल्यमान रत्न जगमगा रहे हैं ; पर उनकी झलक हिंदी-भाषा-भाषियों को विना अँगरेज़ी के नहीं मिल सकती। संस्कृत-साहित्य के विषय में अँगरेज़ी-भाषा में, उससे बढ़कर जर्मन-भाषा में और योरप की लगभग सभी भाषाओं में अनेक ग्रंथ लिखे जा चुके हैं, और नए-नए लिखे जा रहे हैं, परंतु देश की राष्ट्र-भाषा हिंदी में इस विषय की पस्तकों का सर्वथा अभाव देखकर बड़ी निराशा होती ह। संस्कृत-साहित्य का इतिहास वस्तुतः प्राचीन भारतीय सभ्यता और आर्य-जाति के गौरव का इतिहास है।

यह हर्ष की बात है कि प्रस्तुत ग्रंथ अपने विषय का नया और मौलिक प्रयत्न है। हिंदी में एक-दो प्रयत्न इस विषय में और भी हो चुके हैं ; परंतु आलोचनात्मक ऐतिहासिक दृष्टि से उनका उतना महत्त्व न था। उनमें केवल विषय का दिग्दर्शन-मात्र कराया गया था। प्रस्तुत पस्तक साहित्यिक और आलोचनात्मक दृष्टि से लिखी गई है। इसलिये न केवल सर्वसाधारण पाठकों के लिये, किंतु संस्कृत का अध्ययन करनेवाले विद्यार्थियों और पंडितों के लिये भी वह बहुत अधिक उपयोगी है। साहित्याचार्य और शास्त्री आदि परीक्षाओं में उच्च संस्कृत-साहित्य के ग्रंथों का अध्ययन करनेवालों को भी क्रमबद्ध संस्कृत-साहित्य के इतिहास का बोध नहीं हो पाता। ऐसे लोगों के लिये इसमें तनिक भी संदेह नहीं कि यह पुस्तक बहुत उपयोगी सिद्ध होगी। इस ग्रंथ के अध्ययन से उनका अध्ययन अधिक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रुचिकर, अधिक आलोचनात्मक और ऐतिहासिक दृष्टि-कोण से संयुक्त हो जायगा। पुस्तक के प्रारंभ में वैदिक युग से नाटक के बीज की खोज करते हुए उसके विकास को दिखलाया है; साथ ही संक्षिप्त आलोचनात्मक दृष्टि से भारतीय नाटक की पाश्चात्य प्रभावों से स्वतंत्र उत्पत्ति और विकास दिखलाया गया है। इसके पश्चात् भारत के बड़े-बड़े कवियों और नाटककारों के काव्यों और नाटकों पर, उनके समयानुसार, विचार किया गया है। अश्वघोष, भास, शूद्रक, दिङ्नाग, कालिदास, भवभूति आदि प्राचीन और नवीन कवियों पर आलोचनात्मक निबंध हैं। भास के विषय में जो सामग्री हिंदी-पाठकों को इस पुस्तक से मिल सकती है, वह दूसरी जगह मिलनी कठिन होगी।

इस पुस्तक के लेखक श्रीयुत वेदव्यास एम्० ए० पंजाब-युनिवर्सिटी के होनहार रत्न हैं। यह हर्ष की बात है कि अपने अनुसंधान-कार्य के साथ-साथ उनकी रुचि आर्यभाषा की सेवा के लिये हुई है। उनकी सराहनीय सफलता पर हम उन्हें बधाई देते हैं।

धर्मेंद्रनाथ शास्त्री

× × ×

प्राचीन पंडित और कवि (द्वितीय संस्करण)—लेखक, पं० महावीरप्रसादजी द्विवेदी; प्रकाशक, गंगा-पुस्तक-माला-कार्यालय; आकार डबल-क्राउन १६-पेजी; पृष्ठ-संख्या १३६; मूल्य ।।।=)

इस पुस्तक में महावीरप्रसादजी द्विवेदी के ८ निबंधों का संग्रह है, जिनको उन्होंने सन् १९०२ और १९१५ के बीच में लिखा था। इसमें पाँच संस्कृत के कवि, एक फ़ारसी के मुसलमान-कवि, एक हिंदी-कवि और एक गुजराती जैन महात्मा का वर्णन है। संस्कृत-पंडितों में हिंदू और बौद्ध-धर्म, दोनों के विद्वान् शामिल हैं। ये लेख ऐतिहासिक चर्चा से परिपूर्ण हैं। परंतु सभी बातें विवाद-शून्य नहीं हैं; क्योंकि यह खोज पर निर्भर है। जैसे-जैसे नई बातें प्रकटित होती जाती हैं, वैसे-वैसे, कालांतर में, अदल-बदल भी करना पड़ेगा। यथा, द्विवेदीजी ने भवभूति पर जब अपना पहला निबंध, सन् १९०२ में, लिखा था, उस समय यह नहीं ज्ञात था कि मालती-माधव में वर्णित पद्मावती-नगरी कहाँ पर है। परंतु जब आपने इस संग्रह की भूमिका, सन् १९१८ में, लिखी, तब पद्मावती का पता ग्वालियर-राजवाड़े में निश्चित रूप से लग गया था। इसलिये भूमिका में उन्हें विस्तृत रूप से बतलाने की आवश्यकता पड़ी कि पद्मावती वर्तमान पवाँया है। तब भी उन्हें भवभूति की जन्म-भूमि पद्मपुर का पता नहीं लगा। आप लिखते हैं—"यदि आठवीं शताब्दी में ग्वालियर के आसपास का प्रांत विदर्भ-देश कहलाता रहा हो, तो कुछ लोगों के अनुमान के अनुसार, पद्मावती ही भवभूति की जन्म-भूमि पद्मपुर हो सकता है। अन्यथा वह बरार में और किसी जगह रहा होगा।" ग्वालियर के आसपास के देश को विदर्भ में सम्मिलित करने के लिये कोई विश्वसनीय आधार नहीं है। केवल पद्मपुर का पद्मावती से मिलान करने के लिये यह कल्पना की गई है; क्योंकि विदर्भ-देश में उन्हें पद्मपुर का पता नहीं लगा। भवभूति ने स्वयं स्पष्ट रूप से लिखा है—"अस्ति दक्षिणापथे पद्मपुरं नाम नगरम्। तत्र ···पवित्र-कीर्तेर्नीलकंठस्यात्मसंभवः श्रीकंठपदलाञ्छनो भवभूतिर्नाम जातूकर्णीपुत्रः।" ग्वालियर कभी दक्षिणापथ में नहीं गिना गया; विदर्भ दक्षिणापथ में अवश्य था। इसलिये बरार के लोग इसकी स्थिति अभी तक बरार के दक्षिण भाग में, गोदावरी के निकट, बतलाते हैं। भारत-इतिहास-संशोधक मंडल के सभासद और मध्यप्रदेश की लेजिस्लेटिव कौंसिल के भूतपूर्व अध्यक्ष पं० यादव-माधव काले अपने 'व-हाड़ा चे इतिहास' में, जो सन् १९२४ में प्रस्तुत हुआ, लिखते हैं—"व-हाड़ातील जुन्या शास्त्री लोकाचे मतें हें गाँव दहीहांड्याचे जवल पास कोठे तरी होते," अर्थात् बरार के पुराने शास्त्रियों के अनुसार यह गाँव दहीहांड़ा के आस-पास था। अन्वेषकों के लिये इसमें बहुत-सा मसाला है।

हीरालाल

× × ×

२. हास्य

मिस्टर व्यास की कथा—लेखक, भू० पू० आनंद-संपादक स्व० पं० शिवनाथ शर्मा; प्रकाशक, गंगा-पुस्तक-माला-कार्यालय, लखनऊ; पृष्ठ-संख्या ४१६; मूल्य २॥)

प्रस्तुत पुस्तक को यदि हम 'व्यंग्य-पुराण' कहें, तो कोई अड़चन नहीं मालूम होती; क्योंकि इसमें लगभग सभी आधुनिक और प्रचलित विषयों पर लेखक महोदय ने छोटे-मोटे लेख या कहानी के रूप में हास्य-रस-मिश्रित व्यंग की वर्षा की है। इस तरह से इस पुस्तक में विविध विषयों पर पूरे एक सौ व्यंग लेख पढ़ने का आनंद प्राप्त होता है। लेखक महोदय जैसे सुविख्यात और सिद्धहस्त

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हास्य-रस-लेखक थे, उसके बतलाने की कोई आवश्यकता नहीं। हिंदी-संसार आपकी विनोद-पूर्ण लेखनी की बहार बहुत दिनों से आदर की दृष्टि से देखता आ रहा था। आपकी लेखनी की वर्णन-शैली बड़ी अच्छी और अनोखी थी। आप एक साधारण-सी बात को इस तरह से वर्णन करते हैं कि होठों पर एक हलकी-सी मुसकिराहट आ जाती है। और साथ ही उसमें व्यंग के छींटे दे-दे-कर उस बात की तह पर इस तरह पहुँचते हैं कि तबियत फड़क उठती है। आपके व्यंग में कटाक्ष, भद्दे आक्षेप, लट्ठमारी नहीं, बल्कि गंभीरता के साथ-साथ मधुर हास्य की हलकी-सी मात्रा है। आपने प्लॉट बाँधने और चरित्र-चित्रण में भी अच्छी योग्यता दिखाई है। आपके लेखों में कहीं-कहीं आपकी कविताएँ भी हैं। वे भी बड़ी मज़ेदार और दिल ख़ुश करनेवाली हैं। आशा है, हिंदी-संसार इस पुस्तक का अच्छा आदर करेगा।

× × ×

लबड़धोंधों (सचित्र)—लेखक, पंडित बदरीनाथ भट्ट बी० ए०; प्रकाशक, गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय, लखनऊ; पृष्ठ-संख्या ६०; मूल्य ।।।=) सादी, १।=) सजिल्द।

लेखक महोदय ने इस पुस्तक में अपने ६ मँझोले व छोटे एकांक मौलिक प्रहसनों का संग्रह किया है। इन प्रहसनों का परिचय लेखक ने स्वयं ही पुस्तक के नाम से प्रकट कर दिया है। इसलिये इनके संबंध में कुछ कहना अब बेकार है। जिनको हँसने की आदत पड़ गई है, उनको यह पुस्तक पढ़नी चाहिए।

जी० पी० श्रीवास्तव

× × ×

३. कृषि-विद्या

कृषि-विद्या—लेखक, श्रीअश्विनीकुमार शुक्ल बी० ए०, एल्-एल्० बी०, माल हाकिम-मेवाड़; मूल्य ।।।)

यह पुस्तक कृषि-विज्ञान पर लिखी गई है। ग्यारह प्रकरणों में भिन्न-भिन्न विषयों पर बहुत कुछ लिखा गया है। पैमाइश, को-ऑपरेशन, डेरी-फ़ार्म और कृषि के मुताल्लिक़ तथा 'अन्यान्य व्यापार'-शीर्षक परिच्छेद उपादेय और मनोरंजक हैं। उपोद्घात (Introduction) बहुत महत्त्व-पूर्ण है। इसमें कई उपयोगी विषयों पर अच्छा प्रकाश डाला गया है। लेखक का प्रयत्न प्रशंसनीय है। हिंदी-भाषा में कृषि की सभी शाखाओं पर प्रकाश डालनेवाली पुस्तकों का अभाव-सा है। यह पुस्तक इस कमी को कुछ अंश में पूरा करती है। ऐसी उत्तम पुस्तक में बेढंगी भूलों का होना बहुत खटकता है।

पृष्ठ ५ में लिखा है—"चंद लोगों का ख़याल है कि अगर भाप के हल भारतवर्ष में इस्तेमाल किए जाँय, तो यहाँ के बैल इतने मज़बूत नहीं हैं कि उन हलों को खींच सकें।" कितनी बेढंगी बात है! भाप के हल—शायद लेखक का मतलब ट्रैक्टर से है—बैलों से नहीं, एंजिन से चलते हैं। एंजिन से चलाए जानेवाले हलों में बैल कैसे जोते जा सकते हैं, लेखक ही जानें।

पृष्ठ ११ में हरी खाद पर अपने विचार प्रकट करते हुए लेखक कहते हैं—"अमेरिका के काश्तकारों ने ज़मीन को नाइट्रोजन मुहइया करने का एक अजीब तरीक़ा ईजाद किया है। × × × दूब, रजका, काऊपीज़, सायबींस, अंगूर आदि को खेती में बोकर मवेशी से चरा देना। × × × लेगूमक्राप से नाइट्रोजन ज़मीन में दाख़िल होता है। ऐसी फ़सल को न काटकर खेत में हल चला देते हैं।" लेखक की यह मनोवृत्ति पश्चिमी ज्ञान की बदौलत ही है। क्या भारतीय हरी खाद के लाभों से परिचित नहीं हैं? वैदिक काल में भी तो भारतवासी इसके लाभों से परिचित थे।

वराह-संहिता में लिखा है—

मृद्वी भूः सर्ववृक्षाणां हिता तस्यां तिलान्वपेत्;
पुष्पितांस्तांश्च गृह्णीयात् कर्मैतत्प्रथमं भुवि।

सफ़ा १३ में लिखा है—"अगर अमेरिका के बैल फ़ौलाद के हलों को खींच सकते हैं।" शायद लेखक यह नहीं जानते कि अमेरिका में हलों में घोड़े जोते जाते हैं, बैल नहीं।

सारी पुस्तक को पढ़ जाने पर यक़ीन हो जाता है कि लेखक कृषि-शास्त्र से एकदम अपरिचित हैं। कृषि-संबंधी अँगरेज़ी पुस्तकों द्वारा प्राप्त ज्ञान के बल पर ही उन्होंने यह साहस किया है। हम लेखक के इस साहस की प्रशंसा किए विना नहीं रह सकते। अगर छपाने के पहले लेखक इसे किसी कृषि-विद् से जँचवा लेते, और भाषा भी ठीक करा लेते, तो पुस्तक की उपयोगिता बहुत अधिक बढ़ जाती।

पुस्तक में इब्तिदाई, कंपिटीशन, आर्टीफ़िसल, इंडस्ट्री, बरक्स, ज़ीरो, मुसतह, पेक्स, इंपलायर आदि कई शब्द ऐसे हैं, जिन्हें सर्वसाधारण समझ नहीं सकते। यदि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इनकी जगह बोल-चाल के सरल शब्दों का प्रयोग किया जाता, तो बेहतर होता।

पृष्ठ ४ पर रोटेशन—फ़सल के हेर-फेर—का मतलब लेखक ने बतलाया है—एक ही खेत में, एक वर्ष में दो फ़सलें फ़ायदे के साथ बोना। यह बिलकुल ग़लत है। रोटेशन का असल मतलब है एक ही खेत में एक मौसम या साल में एक जाति की फ़सल बोना और दूसरे में दूसरी जाति की। यथा कपास, ज्वार, तिल आदि।

पृष्ठ ६७ पर लिखा है—"आलू का फल जो डाल पर होता है, पुख़्ता हुआ, उसे तोड़कर और धोकर..." अगर लेखक किसी किसान से पूछ लेते, तो मालूम हो जाता कि आलू का फल डाल पर नहीं, ज़मीन के अंदर लगता है। जिसे लेखक आलू का फल कहते हैं, वह फल नहीं परिवर्तित तना है।

इसी प्रकार बहुत-सी बेढंगी बातें लिखी गई हैं। किंतु इन दोषों के रहते हुए भी पुस्तक अच्छी और उपयोगी है। तीसरा, चौथा, पाँचवाँ आदि प्रकरण बहुत अच्छे और उपयोगी हैं। खेती करनेवालों के लिये ऐसी पुस्तकों का पढ़ना फ़ायदेमंद है।

× × ×

कृषि-मित्र—लेखक, पं० गंगाप्रसाद पांडेय एल्०ए-जी०, सुपरिंटेंडेंट ऑफ़ एग्रिकल्चर; प्रकाशक, गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय, लखनऊ; मूल्य ।-)

यह छोटी-सी पुस्तक अपने ढंग की अनोखी है। लेखक ने ऐसी उत्तम पुस्तक लिखकर बहुत अच्छा काम किया है। पाँसधूरा, खेत, सिंचाई, कटाई, बीज, रोगों का वर्णन आदि बहुत अच्छे हैं। क़रीब ६ सफ़े की छोटी-सी पुस्तिका में लेखक ने कृषि के सभी सिद्धांतों का, संक्षेप में, बड़ी ख़ूबी के साथ, विवेचन किया है। कहावतों ने सोने में सुगंध का काम किया है। ऐसी ही उत्तमोत्तम और सस्ती पुस्तकें कृषकों में कृषि-विज्ञान का प्रचार अच्छी तरह कर सकती हैं। देहाती शालाओं में इनाम और लाइब्रेरियों के लिये ऐसी ही पुस्तकों का चुना जाना फ़ायदेमंद है।

शंकरराव जोशी

× × ×

४. उपन्यास और कहानी

विचित्र योगी—लेखक, श्रीद्वारकाप्रसाद मौर्य बी० ए०, एल्-एल्० बी०; प्रकाशक, गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय, लखनऊ; पृष्ठ १६२; मूल्य १) सादी, १॥) सजिल्द।

प्रस्तुत पुस्तक में लेखक महोदय ने कथा के रूप में हिंदू-जाति की त्रुटियों का सजीव चित्र खींचकर संघटन की महिमा दिखलाई है। कहानी अति रोचक रीति से वर्णन की गई है, और घटना-क्रम का विकास भी सुंदर और उत्तम ढंग पर हुआ है। पाठकों का मन पुस्तक से कहीं पर उचटने नहीं पाता। बल्कि अंत तक क्रमशः उत्सुकता बढ़ती ही जाती है। कहानी का ब्योरा देकर चरित्रों पर आलोचना करने से घटना-कौतुक का रहस्य खुल जायगा, इसलिये इस पुस्तक के संबंध में इतना ही कहना काफ़ी है कि यह समयानुकूल, रोचक, कौतूहल-पूर्ण, शिक्षाप्रद, समाज की आवश्यकता के अनुसार और सभी के पढ़ने योग्य है।

× × ×

मंजरी (सचित्र)—अनुवादक, श्रीरूपनारायण पांडेय; प्रकाशक, गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय, लखनऊ; द्वितीय संस्करण; पृष्ठ-संख्या २५२; मूल्य १।) सादी, १॥।) सजिल्द।

इस पुस्तक में पांडेयजी ने ख़ास-ख़ास नामी और उच्च कोटि के बंगाली लेखकों की चुनी हुई गल्पों का रसास्वादन कराया है। इस तरह से पाठकों को श्रीरवींद्रनाथ ठाकुर, श्रीजलधर सेन, श्रीनरेंद्रमोहन चौधरी, श्रीसौरींद्रमोहन मुकरजी, श्रीउपेंद्रनाथ गांगुली, श्रीयोगींद्रनाथ समाद्दार, श्री-प्रभातकुमार मुकरजी, श्रीशरत्चंद्र घोषाल, श्रीशरच्चंद्र चट्टो-पाध्याय-जैसे प्रतिभाशाली लेखकों की रसमयी लेखनी का आनंद एक ही पुस्तक में मिल जाता है। गल्पें सभी एक-से-एक उत्तम, रहस्यपूर्ण, अनोखी, चुटीली और अपने मूल-लेखकों की प्रतिभा के अनुकूल ही हैं। उस पर पांडेयजी जैसे कुशल और प्रवीण अनुवादक हैं, वह हिंदी-संसार से छिपा नहीं। इसमें शक नहीं कि पुस्तक हर प्रकार से पढ़ने और संग्रह करने योग्य है।

जी० पी० श्रीवास्तव

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

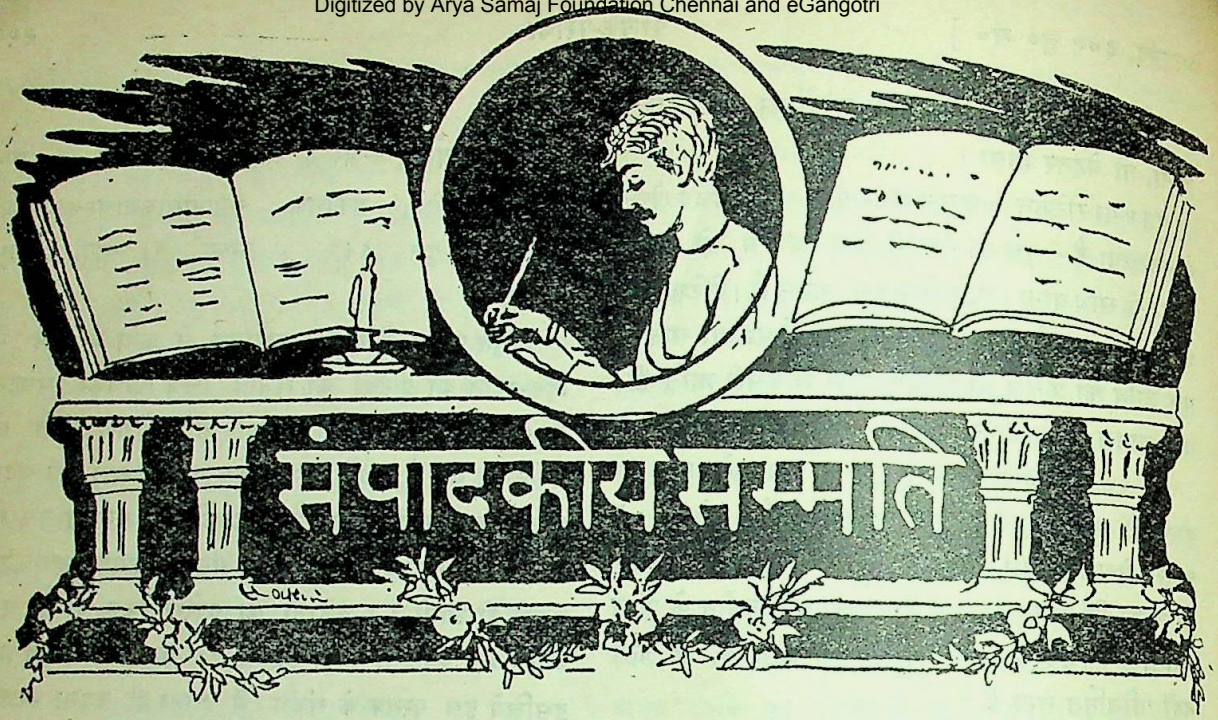

१. भारत में जल-प्रलय

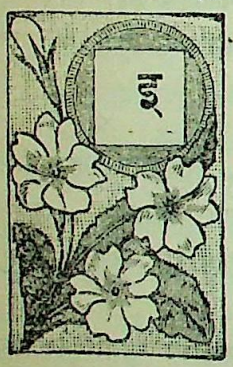

इस समय देश के कई स्थानों में अत्यधिक वर्षा होने के कारण नदियों में बाढ़ आ गई है, जिससे जान-माल की बड़ी भारी हानि हुई है। सबसे अधिक बुरी दशा पूर्व-काठियावाड़ और गुजरात-प्रांत की है। वहाँ ८० से १०० इंच तक वर्षा होने से खेड़ा, बोरसद, बरोदा, अहमदाबाद आदि स्थान और आसपास के देहात तबाह हो गए हैं। फ़सल बिलकुल नष्ट हो गई है। भड़ोंच की १० हज़ार एकड़ कपास पानी में डूब गई है। हज़ारों घर और झोपड़ियाँ गिर गई हैं। असंख्य पशुओं और मनुष्यों की जान पर बीती है। कल जो धनी थे, आज वे फ़क़ीर हो गए हैं। साबरमती में बाढ़ आ जाने के कारण अहमदाबाद की सभी मिलों में पानी भर गया था। अब जल घटने लगा है। मज़दूरों को बड़ा कष्ट है। संतोष की बात इतनी ही है कि गुजरात के लोगों ने इस समय अद्भुत धैर्य और स्वावलंब का परिचय दिया है। स्थान-स्थान पर लोग आप अपनी सहायता करने को तैयार हो गए हैं। बरोदे के श्रीमान् राजकुमार ख़ुद घूम-घूमकर प्रजा के कष्ट दूर कर रहे हैं। धनियों ने अपनी थैलियों के मुँह खोल दिए हैं। युवकों, वृद्धों और स्त्रियों तक में सेवा-भाव का प्राबल्य देख पड़ता।

एसेंबली के प्रेसीडेंट मि० पटेल और महात्मा गांधीजी ने देश के लोगों से सहायता करने की ज़ोरदार अपील की है। मि० पटेल ने १०,००० रुपए अपने पास से सहायता के लिये दिए हैं। क़रीब ५ लाख रुपए इकट्ठे हो गए हैं। पर इतने से क्या हो सकता है! लगभग एक करोड़ रुपयों की आवश्यकता है। सरकार से इतनी सहायता देनें के लिये कहा गया था। पर सरकार की ओर से गोल-मोल जवाब मिला है। ऐसी स्थिति में देश के समस्त ग़रीब और धनी-मानी लोगों को ही यह सहायता देनी होगी। इस समय अन्न, वस्त्र और धन की अत्यंत आवश्यकता है।

महात्माजी ने नवजीवन में लिखा है—"श्रीयुत वल्लभभाई पटेल पुराने सिपाही हैं, और सेवा के सिवा उनका दूसरा काम भी नहीं है। उनके अधीन योग्य कार्यकर्ताओं का दल है। इसलिये दाताओं को धन के बेकार ख़र्च किए जाने या चुराए जाने का डर नहीं होना चाहिए। वाजिब तौर से जाँचा गया हिसाब छापा जायगा, और हर रक़म की प्राप्ति-स्वीकार यंग इंडिया में, और ज़रूरत पड़ने पर नवजीवन में भी, की जायगी। दूसरी जो कोई सहायक समितियाँ होंगी, उनके सहकार से काम किया जायगा। असल बात तो मदद पहुँचाने की है। इसलिये दाता अपनी सबसे अधिक विश्वासी समिति को ही दान देवें, मगर यह ज़रूर निश्चय करें कि छोटे-से-छोटा नहीं, बल्कि हम भरसक बड़े-से-बड़ा दान भेजेंगे।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आशा है, हमारे पाठक महात्माजी की अपील पर अवश्य ध्यान देंगे। याद रहे, धनी गुजरात ने सदा देश का साथ दिया है—जब कभी किसी प्रांत को सहायता की ज़रूरत हुई है, तो गुजरात से उसे सहायता प्राप्त हुई है। सहायता का धन (१) गुजरात-प्रांतीय कांग्रेस-कमेटी के मंत्री, (२) सत्याग्रहाश्रम, साबरमती, अहमदाबाद, (३) सुधा-कार्यालय, लखनऊ या (४) अन्य किसी भी सार्वजनिक सेवा-संस्था अथवा पत्र-संपादक के पास भेजा जा सकता है।

देश के दुर्भाग्य से केवल गुजरात में ही नहीं, बिहार और उड़ीसे में भी खरकाई, सुवर्णरेखा, ब्राह्मणी और वैतरणी नदी बढ़ आई हैं। फल-स्वरूप जमशेदपुर, सिंहभूमि, कटक और बालेश्वर-ज़िले जलमग्न हो गए हैं। एक बार जल घट गया था; पर अब दुबारा बाढ़ आ गई है। सहायता की अत्यंत आवश्यकता है। ऐसे समय प्रत्येक मनुष्य का कर्तव्य है कि वह अपना पेट काटकर भी अपने भाइयों की सहायता करे। उड़ीसा-प्रांत यों ही ग़रीब है। उसे और भी अधिक सहायता की ज़रूरत है। इस ओर मारवाड़ी-रिलीफ़-सोसाइटी अच्छा काम कर रही है। इधर की सहायता या तो कलकत्ते के किसी पत्र-संपादक के पते से भेजनी चाहिए या सीधे मंत्री मारवाड़ी-रिलीफ़-सोसाइटी, नं० ७।१, जगमोहन-मल्लिकलेन, कलकत्ता के नाम।

शिमले में भी बाढ़ आने के समाचार मिले हैं। पीलीभीत में भी जल बढ़ आया था। दिल्ली में यमुना का जल ६ फ़ीट ऊपर चढ़ आने से नहाने के घाट डूब गए हैं। पर इन स्थानों से अभी हानि के समाचार नहीं मिले। जयपुर में भी बनास व चंबल नदी के बढ़ आने से हाहाकार मच गया है। शहर पानी में डूब गया है। बर्मा और चीन से भी बाढ़ के समाचार आ चुके हैं। चीन में तो २७ ज़िले बह गए, और हज़ारों के प्राण नष्ट हो गए! हिंदू-धर्मानुयायियों का विश्वास है, अग्निकांड, अतिवृष्टि, अनावृष्टि, भूकंप, वज्रपात आदि उत्पात दैवी कोप के सूचक होते हैं, और दैवी कोप तभी होता है, जब लोग ईश्वर को भूलकर अधर्म में प्रवृत्त होते हैं। इस समय भारतवर्ष की ऐसी ही स्थिति हो रही है। अतएव ऐसे उत्पातों का न होना ही आश्चर्य होता। हमारी यही प्रार्थना है कि ईश्वर हमें सुमति दे, जिसमें हम उसे न भूलें, अपने कर्तव्य को पहचानें, और ऐसे दैवी कोपों का शिकार न बनें।

× × ×

२. गुरुकुल का रजतजयंती महोत्सव

काँगड़ी का गुरुकुल भारतवर्ष का सबसे पुराना और सुप्रसिद्ध राष्ट्रीय विश्वविद्यालय है। इसे स्थापित हुए २५ साल हो चुके। इस वर्ष, मार्च महीने में, इसकी सिलवर-जुबिली (रजतजयंती) बड़े समारोह के साथ मनाई गई। इस महोत्सव में सम्मिलित होने के लिये कम-से-कम ५० हज़ार नर-नारी भारत के सुदूर प्रांतों से पधारे थे। इतना बड़ा जनसमूह किसी संस्था के उत्सव में सम्मिलित होने के लिये शायद ही कभी एकत्र हुआ हो। गुरुकुल ने सर्वसाधारण जनता के हृदय में कितना स्थान प्राप्त कर लिया है, इसका सर्वोत्तम प्रमाण यह महोत्सव था। गंगा के सुमनोहर रेतीले तट पर हज़ारों स्त्री-पुरुष फूस के झोपड़ों में निवास कर रहे थे। केवल पंजाब और युक्त-प्रांत से ही नहीं, बंगाल, गुजरात और मदरास तक से बहुत-से लोग आए थे। महात्मा गांधी, श्रीयुत श्रीनिवास आयंगर, पंडित मदनमोहन मालवीय, बाबू राजेंद्रप्रसाद, सेठ जमनालाल बजाज, डॉ० मुंजे, पंडित हृदयनाथ कुँजरू आदि सभी दलों के नेता, अपने राजनीतिक मतभेदों को भुलाकर, उक्त प्रसिद्ध राष्ट्रीय शिक्षा-केंद्र तथा उसके स्वर्गगत संस्थापक श्रीस्वामी श्रद्धानंदजी के प्रति सम्मान का भाव प्रकट करने के लिये, इस अवसर पर पधारे थे। हिंदू-विश्वविद्यालय के आचार्य प्रिंसिपल ध्रुव, कलकत्ता-विश्वविद्यालय के वेद-विभाग के अध्यक्ष डॉ० अविनाशचंद्र दास एम्० ए०, पी-एच्० डी०, श्रीभूपेंद्रनाथ मित्र एस्० ए०, पी-एच्० डी० आदि विद्वान् भी इस अनुपम शिक्षालय का अवलोकन करने के लिये आए थे। हिमालय की उपत्यका और भागीरथी के तट पर विराजमान इस नवीन ढंग के शिक्षालय में जनता भारत के उज्ज्वल भविष्य का स्वप्न देख रही थी। जिस तपोभूमि में हिंदू-जाति के हृदय-सम्राट्, अमर शहीद स्वामी श्रद्धानंदजी ने अपने जीवन के २० वर्ष व्यतीत किए थे, उसका दर्शन करने के लिये जनता अनंत उत्साह और श्रद्धा के साथ उत्सुक हो रही थी।

रजतजयंती-महोत्सव सात दिन तक मनाया गया। इस बीच में अनेक प्रसिद्ध विद्वानों और संन्यासी-महात्माओं के व्याख्यान हुए, अनेक सभा-सम्मेलन हुए, विद्वानों और साहित्य-सेवियों की गोष्ठियाँ हुईं, हॉकी का टूर्नामेंट हुआ, और इसी तरह अन्य अनेक समारोह हुए। सभा-सम्मेलनों की अधिकता से दो पंडाल बनाए गए थे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दोनों हर समय पूरी तरह भरे रहते थे। यहाँ हम कुछ मुख्य सभा-सम्मेलनों की ही चर्चा करेंगे—

दीक्षांत-संस्कार—इस वर्ष गुरुकुल से, शिक्षा समाप्त कर, १७ स्नातक निकले। प्राचीन भारतीय विधि से इनका दीक्षांत-संस्कार किया गया। आचार्य रामदेवजी ने स्नातकों को उपदेश दिया। बिहार के प्रसिद्ध नेता बा० राजेंद्रप्रसादजी ने दीक्षांत-अभिभाषण (कान्वोकेशन-ऐड्रेस) दिया। महात्मा गांधी, पंडित मदनमोहन मालवीय और प्रिंसिपल टी० एल्० वास्वानी ने नवीन स्नातकों को आशीर्वाद दिया। दीक्षांत-संस्कार के ही दिन, सायंकाल, आचार्य रामदेवजी ने जनता से धन के लिये अपील की। २½ लाख रुपयों के लगभग धन प्राप्त हुआ। जिस उत्साह से जनता गुरुकुल के लिये धन दे रही थी, वह दृश्य देखने योग्य था। स्वयंसेवक ख़ाली बालटियाँ लिए जनता में जाते थे, और रुपयों, नोटों तथा आभूषणों से भरी बालटी लेकर लौटते थे। निष्काम दान का यह अनुपम दृश्य और कहीं नहीं देखा जा सकता। इसे देखकर महात्मा गांधीजी आश्चर्य-चकित हो गए थे। वर्तमान अवस्था को देखते हुए २½ लाख रुपए जमा हो जाना कुछ कम आश्चर्य की बात नहीं!

सर्वधर्म-सम्मेलन—इस सम्मेलन के सभापति का आसन प्रिंसिपल ध्रुव ने ग्रहण किया था। इसमें हिंदू, ईसाई, मुसलमान, बौद्ध, जैन तथा आर्य-धर्मों के प्रतिनिधियों ने 'ईश्वरीय ज्ञान'-विषय पर निबंध पढ़े। वर्तमान सांप्रदायिक झगड़ों के युग में सब धर्मों के प्रतिनिधियों का एक प्लैटफ़ार्म पर जमा होकर शांति के साथ शास्त्रीय चर्चा करना वस्तुतः नवीन बात थी। इस सम्मेलन में सब लोगों ने बड़ी शांति के साथ सब धर्मों के मंतव्यों को सुना।

शुद्धि-सम्मेलन—यह सम्मेलन डॉ० मुंजे के सभापतित्व में हुआ। शुद्धि और संगठन पर हिंदू-जाति के अनेक नेताओं और कार्य-कर्ताओं के उपयोगी व्याख्यान हुए, और शुद्धि के वास्तविक उद्देश्य को जनता के सम्मुख उपस्थित करने का प्रयत्न किया गया। इसके साथ ही सेठ जमनालाल बजाज के सभापतित्व में अछूतोद्धार-सम्मेलन भी हुआ।

युवक-सम्मेलन—प्रिंसिपल वास्वानी ने जिस अखिल भारतीय युवक-संघ की नींव डाली है, उसका सूत्रपात रजतजयंती-महोत्सव के अवसर पर ही हुआ। इसके लिये एक सम्मेलन की योजना की गई थी। उसकी स्वागत-समिति के अध्यक्ष श्रीयुत पीयूषकांति घोष थे। सभापति का आसन प्रिंसिपल वास्वानी ने ग्रहण किया था। युवक-संघ के लिये नियमों तथा संगठन का निर्माण इस सम्मेलन में किया गया।

गुरुकुल-सम्मेलन—गुरुकुल-रजतजयंती का सबसे महत्त्वपूर्ण भाग 'गुरुकुल-सम्मेलन' था। इसके अध्यक्ष के आसन पर दिवंगत स्वामी श्रद्धानंदजी महाराज का तैल-चित्र विराजमान था। गुरुकुल की स्थापना किस प्रकार हुई, उसने किस तरह उन्नति की, इस विषय पर छोटे-छोटे व्याख्यान, इस सम्मेलन में, हुए। साथ ही स्वामीजी महाराज के अनेक संस्मरण भी वैयक्तिक अनुभवों द्वारा सुनाए गए। स्वामी श्रद्धानंदजी के मित्रों, अनुयायियों और शिष्यों के मुख से उनकी जीवन-कथा सुनकर जनता की आँखों से आँसुओं की धारा बह रही थी।

सरस्वती-सम्मेलन—यह सम्मेलन विद्वानों और साहित्य-सेवियों के लिये था। इसकी अनेक बैठकें हुईं, और बहुत-से विद्वानों ने वैदिक, दार्शनिक तथा ऐतिहासिक विषयों पर निबंध पढ़े।

गुरुकुल-रजतजयंती के अवसर पर जितने सभा-सम्मेलन हुए, उनका उल्लेख-मात्र भी करना कठिन है। इसमें संदेह नहीं कि यह महोत्सव बड़ी सफलता और धूम-धाम के साथ मनाया गया। इसके लिये हम गुरुकुल के मुख्याधिष्ठाता पं० विश्वंभरनाथजी तथा आचार्य रामदेवजी को बधाई देते हैं। हमने इस जीवन में इतना बड़ा उत्सव, इतनी सफलता के साथ, संपन्न होते कभी नहीं देखा। इसके देखने से पता चलता था कि आर्य-समाज ही हिंदुओं में एक जीती-जागती संस्था है।

× × ×

३. संयुक्त-प्रांतीय हिंदी-साहित्य-सम्मेलन

गुरुकुल-रजतजयंती के अवसर पर संयुक्त-प्रांतीय हिंदी-साहित्य-सम्मेलन का सप्तम वार्षिक अधिवेशन बड़ी धूमधाम के साथ गुरुकुल, काँगड़ी में हुआ। इसके लिये एक स्वागत-समिति का संगठन किया गया था। इसके अध्यक्ष आचार्य रामदेवजी, उपाध्यक्ष प्रो० विश्वनाथजी विद्यालंकार, प्रो० सत्यव्रत सिद्धांतालंकार और पं० वागीश्वर विद्यालंकार तथा प्रधान मंत्री प्रो० सत्यकेतु विद्यालंकार, पं० दीनदयालु सिद्धांतालंकार और पं० चंद्रगुप्त विद्यालंकार थे। स्वागत-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

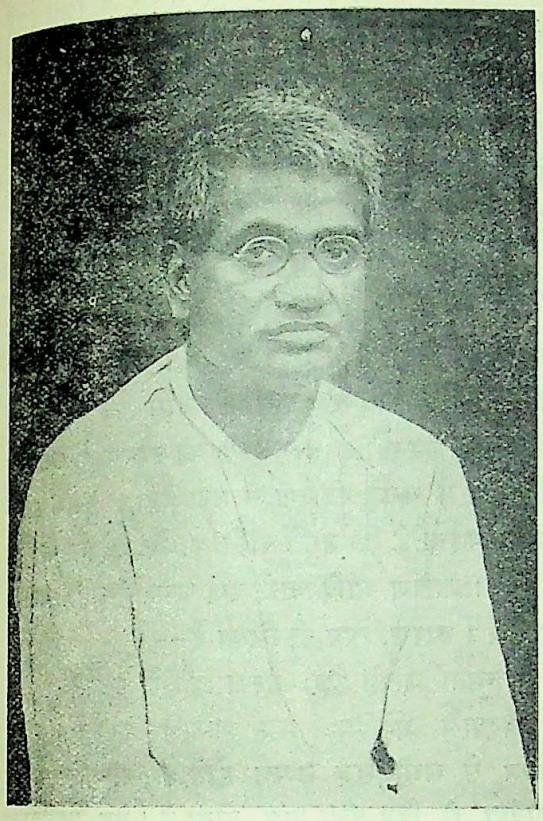

आचार्य रामदेवजी एम्० ए०
(स्वागत-समिति के अध्यक्ष)

समिति के सदस्यों की संख्या १५० से ऊपर थी। बिजनौर, सहारनपुर और देहरादून-ज़िलों के साहित्य-सेवी तथा हिंदी-प्रेमी बड़े उत्साह से स्वागत-समिति में सम्मिलित हुए थे। सम्मेलन को सफल बनाने के लिये पूर्ण उद्योग किया गया था। पहले दिन सभापति का आसन बिहार के प्रसिद्ध नेता और हिंदी-प्रेमी बाबू राजेंद्रप्रसाद ने ग्रहण किया था। पहले दिन का अधिवेशन राष्ट्रीय गान से आरंभ हुआ। इसके बाद कन्या-महाविद्यालय, जालंधर की छात्रियों ने स्वागत-गीत गाया। फिर आचार्य रामदेव ने स्वागत-समिति के अध्यक्ष के आसन से अपना लिखित स्वागत-भाषण पढ़ा। इस भाषण के कुछ अंश हम तीसरी संख्या में प्रकाशित करेंगे। भाषण वस्तुतः बहुत सारगर्भ तथा विद्वत्तापूर्ण था। आचार्य रामदेव हिंदी के प्रसिद्ध लेखक हैं; अनेक पुस्तकें हिंदी में लिख चुके हैं। राष्ट्रभाषा हिंदी को पंजाब में फैलाने के लिये उन्होंने बड़ा उद्योग किया है। गुरु-कुल-विश्वविद्यालय के आचार्य होने के कारण उन्होंने राष्ट्रभाषा हिंदी में उच्च-से-उच्च शिक्षा देने का क्रियात्मक उद्योग किया है। उनका अनुभवपूर्ण भाषण वस्तुतः हिंदी-जगत् के लिये बहुत उपयोगी है। आचार्य रामदेव के बाद बाबू राजेंद्रप्रसाद का भाषण हुआ। उन्होंने हिंदी के राष्ट्रभाषा होने पर बहुत ज़ोर दिया। पहले दिन का सम्मेलन 'प्रचार-विभाग' के रूप में था।

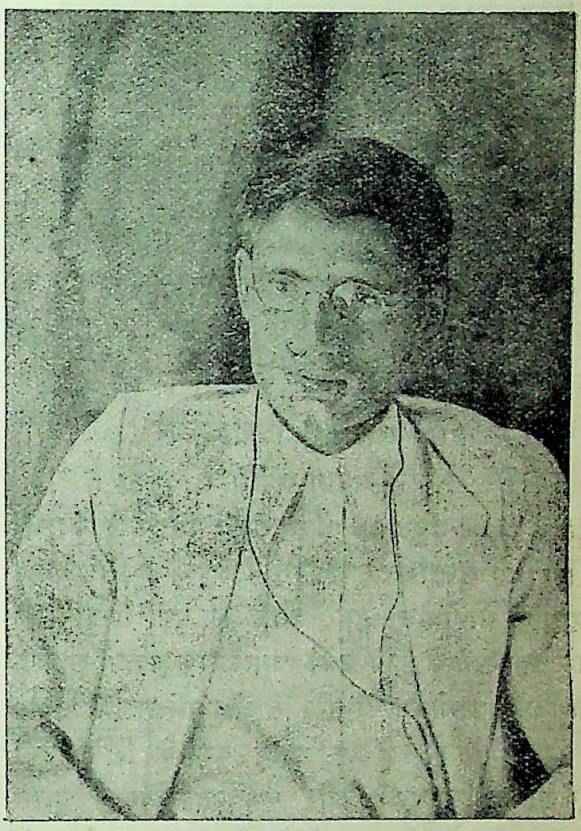

प्रो० सत्यव्रत सिद्धांतालंकार
(उपाध्यक्ष)

दूसरे दिन सभापति का आसन 'सुधा' के अन्यतम संपादक, प्रसिद्ध हिंदी-प्रेमी पं० दुलारेलाल भार्गव ने ग्रहण किया था। दूसरे दिन का अधिवेशन सम्मेलन के 'साहित्यिक विभाग' के रूप में था। इसका सभापति-पद किसी ऐसे महानुभाव को ही ग्रहण करना चाहिए था, जो स्वयं साहित्य-सेवी हों। इसके लिये श्रीदुलारेलालजी सर्वथा उपयुक्त थे। भार्गवजी का भाषण अविकल रूप से 'सुधा' में प्रकाशित हुआ है। इस अधिवेशन के लिये ३० के लगभग निबंध आए थे। परंतु समयाभाव के कारण केवल ५ ही पढ़े गए। इनमें पं० विद्यानिधि तथा पं० भगवानप्रसाद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

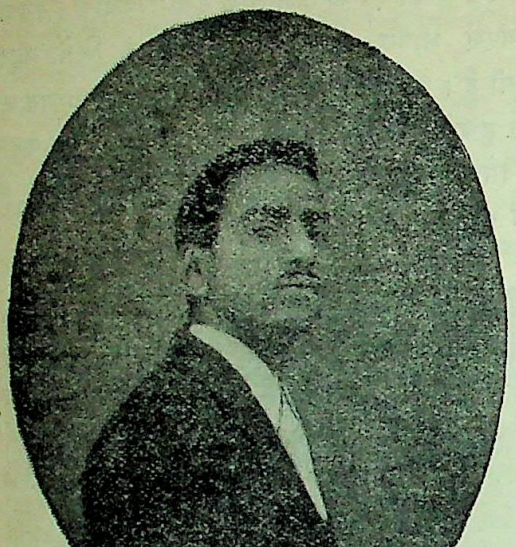

प्रो० सत्यकेतु विद्यालंकार
(प्रधान मंत्री)

रईस के निबंध बहुत पसंद किए गए। पं० गौरीशंकर भट्ट ने हिंदी को सुशोभित तथा विभूषित करने के लिये बनाए गए अनेक मोनोग्राम, तुग़रे आदि का तथा हिंदी-लिपि को उन्नत करने के लिये अनेक चमत्कारिक कृतियों का प्रदर्शन किया। सम्मेलन की तरफ़ से श्रीदुलारेलालजी भार्गव ने, भट्टजी की कृतियों का आदर करने के लिये, उन्हें 'सुलेखाचार्य' की पदवी और एक पदक दिया। दूसरा पदक अपनी ओर से भी उन्हें भेंट किया। रात को सम्मेलन की तरफ़ से एक विराट् कवि-सम्मेलन का भी आयोजन हुआ, जिसमें बहुत-से कवियों ने अपनी मनोरंजक कविताएँ सुनाईं। सर्वोत्तम कविता का पदक श्रीनिरंजनदेव आयुर्वेदालंकार को दिया गया।

इसी सम्मेलन के अंतर्गत ४-५ राष्ट्रीय विश्वविद्यालयों के छात्रों में वाद-विवाद हुआ। आरंभ में कुमारी गोपालदेवी ने, सुमधुर स्वर से, एक मनोहर गीत गाया। फिर विवादक छात्रों के व्याख्यान हुए। निर्णायक प्रिंसिपल ध्रुव, बाबू राजेंद्रप्रसाद और पं० दुलारेलाल भार्गव थे। निर्णायकों ने सर्वसम्मति से काशी-विद्यापीठ के एक छात्र का व्याख्यान सर्वश्रेष्ठ ठहराया।

यद्यपि इस सम्मेलन में पुरानी परिपाटी के अनुसार प्रस्ताव नहीं पेश किए गए, पर हिंदी-प्रचार के लिये इसने अपूर्व कार्य किया। सम्मेलन में हज़ारों नर-नारी उपस्थित होते थे। इनमें अधिक संख्या पंजाब, सिंध तथा सीमाप्रांत के लोगों की ही होती थी। उनको हिंदी का संदेश पहुँचाने के लिये जो अनुपम कार्य इस सम्मेलन ने किया, वह बहुमूल्य है।

× × ×

४. जाति-पाँति-तोड़क सम्मेलन

लाहौर में हिंदी के सुलेखक पं० संतरामजी बी० ए० के उद्योग से जाति-पाँति-तोड़क मंडल नाम की एक संस्था अरसे से काम कर रही है। इस संस्था का उद्देश्य है, वर्तमान जाति-पाँति के झगड़े को देश से उठा देना। इसके संचालकों का कहना है कि जाति-पाँति का भेद देश के लिये घातक है। ब्राह्मण आदि चारों वर्ण जन्म से नहीं, कर्म से माने जायँ। कारण, स्पष्ट ही लिखा है—

जन्मना जायते शूद्रः संस्काराद् द्विज उच्यते;
वेदपाठी भवेद्विप्रः ब्रह्म जानाति ब्राह्मणः।

जन्म से सभी शूद्र उत्पन्न होते हैं; संस्कार अर्थात् यज्ञोपवीत से द्विज-संज्ञा प्राप्त होती है। वेद पढ़नेवाला विप्र कहलाता है, और जो ब्रह्म को जानता है, वही ब्राह्मण है। अस्तु, इस बार जालंधर के कन्या-महाविद्यालय के वार्षिकोत्सव पर, १६ एप्रिल को, सायंकाल में, विशेष समारोह के साथ, इस संस्था का उत्सव मनाया गया। सभापति पं० दुलारेलालजी भार्गव (सुधा-संपादक) थे। पं० संतरामजी ने उक्त मंडल का संक्षिप्त परिचय दिया। उसमें उन्होंने मंडल के महत्त्व और उपयोगिता को दिखाते हुए कहा कि जाति-पाँति के पचड़े ने ही हिंदू-जाति की यह दुर्दशा की है कि वह सभ्य-समाज में मुँह नहीं दिखा सकती। स्वामी दयानंद सरस्वतीजी ने भारत की इस अधोगति का अनुभव किया था। उन्होंने आर्य-समाज की स्थापना इसलिये की कि आर्य लोग जाति-पाँति के इस बंधन को तोड़कर गुण-कर्मानुसार खान-पान और विवाह-संबंध करें। पर दुःख की बात है कि आर्य-समाज भी उसी जाति-पाँति के गढ़े में जा गिरा, जिससे वह हिंदू-समाज को निकालना चाहता था। यही कारण है कि आज चारों ओर से आवाज़ें आ रही हैं कि आर्य-समाज की उन्नति की लहर रुक रही है। अतः यदि आर्य भाई चाहते हैं कि वैदिक धर्म का झंडा चारों ओर लहराय, तो जाति-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पाँति के इस ढोंग को नष्ट कर दें। आपने इस कार्य की पूर्ति के लिये कन्याओं से विशेष रूप से अपील की।

इसके बाद कुमारी रामप्यारीजी विशारदा ने प्रथम प्रस्ताव उपस्थित करते हुए कन्याओं से कहा कि प्रत्येक युवती कन्या का कर्तव्य है कि वह देश, जाति तथा धर्म की उन्नति के लिये आगे बढ़े, और अपने विवाह में जाति-पाँति के बंधनों को तोड़ने का पूरा यत्न करे। कुमारी सत्यवती (डलहौज़ी) ने अनुमोदन करते हुए कहा कि जब तक आर्य-बहनें कार्य-रूप में इस जाति-पाँति के बंधन को तोड़ने के लिये आगे न बढ़ेंगी, तब तक समाज इस भयंकर रोग से मुक्त न होगा। यह प्रस्ताव बहुसम्मति से स्वीकृत हुआ।

दूसरा प्रस्ताव कुमारी सुशीलादेवी स्नातिका ने उपस्थित किया। आपने मंडल से पूर्ण सहानुभूति प्रकट की, और स्त्री-समाज से ज़ोरदार शब्दों में प्रार्थना की कि स्त्री-जाति की स्वतंत्रता तब तक स्थिर नहीं रह सकती, जब तक जाति-पाँति के बंधनों को तोड़ा नहीं जाता। इसके बाद विद्यालय ही के दो अध्यापकों ने जाति-पाँति के पक्ष में बोलते हुए इस प्रस्ताव का विरोध किया। इस विरोध का उत्तर देते हुए उक्त कुमारीजी ने कहा कि यद्यपि मैं जन्म से ब्राह्मण हूँ, परंतु यह जानती और मानती हूँ कि जाति-पाँति केवल एक ढकोसला है। मेरे चाचा आदि ने अपनी सुयोग्य पुत्रियों को ऐसे नालायक़ मनुष्यों के हाथ में सौंप दिया है, जो केवल जन्म से ब्राह्मण होने के कारण ही इस योग्य समझे गए। यह सर्वथा अनुचित और कन्याओं पर अत्याचार है कि पढ़ी-लिखी सुशीला कन्याओं का विवाह मूर्ख, दुश्चरित्र वरों के साथ, केवल जाति-पाँति की रक्षा के लिये, कर दिया जाय। यह प्रस्ताव भी बहुसम्मति से स्वीकृत हुआ।

इसमें संदेह नहीं कि इस समय हिंदुओं में सहस्रों जातियों की उपजातियाँ बन गई हैं। उनमें ऐसा देखा जाता है कि कहीं लड़कियाँ लड़कों की अपेक्षा अधिक हैं, तो कहीं लड़कों की संख्या लड़कियों से अधिक है। अब केवल अपनी-अपनी उपजाति या जाति में ही लड़की-लड़कों का संबंध करने से फल यह हो रहा है कि उपयुक्त वर को उपयुक्त स्त्री नहीं मिलती, या योग्य स्त्री को उपयुक्त वर नहीं मिलता। अतएव यदि यह जाति-पाँति का बंधन एकदम तोड़ दिया जाय या बहुत कुछ ढीला कर दिया जाय, तो उससे देश और जाति का उपकार ही होगा। समाज के चिंताशील पुरुषों को इस जटिल प्रश्न पर शीघ्र और अवश्य विचार करना चाहिए।

× × ×

५. क्रू-सिस्टम

ई० आई० रेलवे-बोर्ड ने अभी हाल में, मिस्टर ग़ुलाम-मोहम्मद की अध्यक्षता में, क्रू-सिस्टम जारी किया है। पहले प्रायः यात्री लोग विना टिकट लिए ही यात्रा किया करते थे, और स्टेशन पर उतरते समय किसी प्रकार निकल जाया करते थे। उसी की रोक के लिये यह सिस्टम जारी किया गया है। इस सिस्टम में हर ट्रेन के साथ १५-१६ क्रू टिकट चेक करने के लिये जाते हैं। वे मुसाफ़िरों को बराबर चेक करते रहते हैं। मुसाफ़िर को जिस स्टेशन पर उतरना होता है, उसके पहले स्टेशन पर ही ये लोग टिकट ले लिया करते हैं। ऐसा करने से अब प्रत्येक स्टेशन पर जो टिकट-कलेक्टर रहा करते थे, उनकी आवश्यकता नहीं रही। हाँ, बड़े-बड़े स्टेशनों पर एक या दो टिकट-कलेक्टर रहते हैं, जो प्लेटफ़ार्म पर जाने से जनसाधारण को रोकते और प्लेटफ़ार्म का निरीक्षण करते हैं।

रेलवे-बोर्ड ने अपने लाभ के लिये ऐसा किया है। पर उसे जितने लाभ की आशा है, उतना होना हमें तो असंभव-सा जान पड़ता है। दूसरे उन यात्रियों को, जो टिकट लेकर ही हमेशा यात्रा किया करते हैं, बड़ी असुविधाएँ होती हैं। जो काम गुंडों और चोरों की हरकतें रोकने के लिये किया गया है, उससे भले आदमी कष्ट उठाते हैं। हमें तो इस सिस्टम को प्रारंभ करते देख यह आशा हुई थी कि थर्ड क्लास की गाड़ियों में मेले आदि के अवसरों पर एवं साधारण भीड़ के समय भी जो ८ आदमियों के बैठने की जगह १०-१२ आदमी पशुओं की तरह ठूँस दिए जाते हैं, वह बात न होगी, और साधारण जनता को उस कष्ट से छुटकारा मिल जायगा। पर अब हम देखते हैं कि उसके विपरीत आचरण हो रहा है।

इस क्रू-सिस्टम में कुछ तो कलकत्ते से क्लर्क भेजे गए हैं, कुछ टिकट-कलेक्टर शामिल कर दिए गए हैं, और शेष नवीन भर्ती किए गए हैं। नवीन आदमियों में मुसलमानों की ही संख्या अधिक है। होना भी यही चाहिए; क्योंकि जहाँ मुसलमान अधिकारी हो, वहाँ हिंदुओं की भर्ती हो कैसे! हिंदू तो सिर्फ़ इसी दृष्टि से लिए गए मालूम होते हैं कि कोई यह न कह सके कि पक्षपात किया गया है। पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यदि हिंदू-मुसलमानों की जन-संख्या को देखते हुए इस पर विचार किया जाय, तो भली भाँति विदित हो सकता है कि पक्षपात किया गया है या नहीं। साथ ही मुसलमानों में भी ऐसे मुसलमानों की संख्या अधिक है, जो सहृदयता आदि गुणों से शून्य एवं अशिक्षित हैं। यदि शिक्षित और सहृदय मुसलमानों की संख्या ही अधिक होती, तो भी हमें शिकायत का मौक़ा कम होता।

सुनने में आया है कि इन क्रू लोगों एवं इनके इंचार्ज की हरकतों के कारण इनके ख़िलाफ़ रायबरेली के एक ताल्लुक़दार ने मान-हानि का दावा भी कोर्ट में दायर कर दिया है। प्रतापगढ़ में भी ऐसी ही कुछ अवांछनीय घटना हो गई है। इन बातों को देखते हुए जनसाधारण में इनके प्रति अविश्वास की मात्रा बढ़ती ही जाती है। प्रतापगढ़ के केस को सुनकर तो हमें अपनी माताओं और बहनों की इज़्ज़त की और भी अधिक चिंता हो गई है।

एक बात और है, इस सिस्टम में काम करनेवाले जो टिकट लाकर सार्टिंग-सेक्शन में देते हैं, उसका ऑफ़िस लखनऊ-स्टेशन पर ही एक बिल्डिंग में रक्खा गया है। इस ऑफ़िस में काम करनेवाले मुसलमान-क्रूकों को अब तक, मुसलमानी त्योहारों पर, ३-४ दिन का अवकाश मिल चुका है। पर हिंदुओं को, अर्ज़ी देने पर भी, रक्षा-बंधन और जन्माष्टमी को अवकाश नहीं दिया गया। रक्षा-बंधन के पहले दिन रात को १२ बजे तक काम करने पर और रक्षा-बंधन के दिन ११ बजे दिन तक काम करने पर हिंदुओं को ६ घंटे की छुट्टी दी गई थी। हम नहीं समझ सकते कि जब पहले दिन ६ घंटे अधिक काम कर लेने पर उस दिन ६ घंटे की छुट्टी हिंदुओं को दी गई, तो फिर क्योंकर वह दिन छुट्टी में समझा जा सकता है। जन्माष्टमी की छुट्टी के लिये, हिंदू-सार्टरों के अर्ज़ी देने एवं प्रतिनिधि भेजने पर भी, हिंदुओं की छुट्टीवाली प्रार्थना पर मुसलमानों को चेहल्लुम की छुट्टी का आर्डर देना और हिंदुओं की प्रार्थना पर कुछ भी ध्यान न देना स्पष्ट रूप से बतलाता है कि इस क्रू-सिस्टम में मुसलमान अधिकारियों एवं कार्यकर्ताओं की अधिकता के कारण पक्षपात तो किया ही जा रहा है, पर साथ-ही-साथ हिंदुओं के साथ अन्याय भी किया जा रहा है। हमें आशा है, रेलवे-बोर्ड इस प्रकार के पक्षपात एवं अन्याय को अवश्य दूर करने की चेष्टा करेगा।

× × ×

६. मिसर के महापुरुष का स्वर्गवास

मिसर के महापुरुष महात्मा जगलुल पाशा अब इस संसार में नहीं हैं। आप एक कर्मवीर और निडर देश-प्रेमी थे। आप संसार-प्रसिद्ध नेता थे, और अपने देश मिसर को प्राणों से बढ़कर चाहते थे। भारत में जैसे महात्मा गांधी हैं, तुर्की में कमाल पाशा हैं, रूस में लेनिन थे, आयरलैंड में डीवेलरा हैं, चीन में सन-याट-सेन थे, इटली में मुसोलिनी हैं, वैसे ही मिसर में श्रीयुत जगलुल पाशा थे। देश का बच्चा-बच्चा आपको जानता और आपके प्रति अगाध श्रद्धा तथा प्रेम का भाव रखता था। आप पर जनता का प्रेम ऐसा अथाह क्यों न होता, जब कि आप जनता के हित के लिये अपना सर्वस्व न्योछावर करने को तैयार रहते थे। आप केवल नामधारी नेता न थे। आप उन नेताओं में नहीं थे, जो केवल वाक्य-वीर होते हैं मुँह से बड़ी-बड़ी बातें करते हैं, पर संकट के अवसर पर, कष्ट का सामना करने के समय, दुम दबाकर अलग जा खड़े होते हैं। मिसर के वह सुपुत्र थे, मिसर उनके-जैसे बहुमूल्य लाल को पाकर वास्तव में सौभाग्यशाली था। वह मिसर के लिये गौरव और गर्व की सामग्री थे। जगलुल पाशा को गँवाकर आज मिसर आठ-आठ आँसू रो रहा है। मृत्यु के समय जगलुल पाशा की अवस्था ७७ वर्ष की थी।

आपका जन्म इबियान-नामक स्थान में हुआ था। आपने अलअज़हर-विश्वविद्यालय में शिक्षा पाई थी। पढ़ना-लिखना समाप्त करके मि० जगलुल पाशा सन् १८८० ई० में एक सरकारी अख़बार के संपादक हो गए। सन् १८८२ में जब ब्रिटिश सेना ने मिसर पर अधिकार कर लिया, तब अरबी-विद्रोह में शामिल होने के अपराध में आपको अन्य कई आदमियों के साथ नज़रबंद कर दिया गया। सन् १८८४ में नज़रबंदी से मुक्त होकर आप वकालत करने लगे। सन् १८९२ में आप मिसर की अपील-अदालत के एक मेंबर बनाए गए। आप न्याय-निपुण और फ़्रेंच भाषा के विद्वान् थे, इसलिये आपको क़ानून में डिप्लोमा मिला। सन् १९०६ में आपने शिक्षा-मंत्री के पद को सुशोभित किया। १९१३ में मिसर में लेजिस्लेटिव कौंसिलों की स्थापना हुई। सर्व-प्रथम आप ही लेजिस्लेटिव एसेंबली के उप-सभापति बनाए गए। योरप के महासमर का आरंभ होने के पहले तक आप यह काम करते रहे। योरप का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महायुद्ध समाप्त होने पर आपने मिसर को स्वाधीन करने का आंदोलन शुरू कर दिया। अकेले आप ही ने अथक परिश्रम करके इस आंदोलन को ऐसा ज़ोरदार बना दिया कि ब्रिटिश गवर्नमेंट शंकित हो उठी। मिसर में एक छोर से दूसरे छोर तक लोग आज़ादी पाने के लिये दीवाने-से हो उठे। आप मिसर के बेताज के बादशाह समझे जानें लगे, जैसे कि किसी समय भारत में लोकमान्य तिलक थे, और अब महात्मा गांधी हैं। बस, सरकार की नज़र आप पर पड़ी, और जैसा सलूक लोकमान्य तथा महात्माजी के साथ किया गया था, वैसा ही आपके साथ भी किया गया। सन् १९१९ में आपको निर्वासन-दंड मिला। आप माल्टा-द्वीप भेज दिए गए। मगर दो ही महीने बाद आपको छोड़ दिया गया। किंतु आप मिसर में नहीं रहने पाए, पेरिस भेज दिए गए। सन् १९२३ में मिसर से मार्शल-लॉ उठा दिया गया, और आप स्वदेश लौट आए।

इन्हीं दिनों मिसर को शासन-सुधार मिले; पार्लियामेंट की भी रचना हुई। आप उस पार्लियामेंट के प्रधान मंत्री—निर्वाचकों द्वारा—चुने गए। परंतु आपके काम में अड़ंगे लगाए गए, जिससे, स्वदेश की भलाई सोचकर, आपने ख़ुद इस्तीफ़ा दे दिया। फिर भी देश की जनता पर आपका जादू बना ही रहा। आपका देश पर जो प्रभाव था, वह किसी ऊँचे-से-ऊँचे सरकारी कर्मचारी को नहीं नसीब हुआ, और न कभी होगा। गत वर्ष जो मिसर में चुनाव हुआ था, उसमें भी स्थान-स्थान से आप ही के दल के लोगों को चुना गया था। मिसर का यह दुर्भाग्य है कि उसका ऐसा असाधारण नेता उसके स्वतंत्र होने के पहले ही चल बसा। ऐसे दृढ़, संयमी, कर्मनिष्ठ, दूरदर्शी नेता बहुत कम होते हैं, जो युग-प्रवर्तक हों। जगलुल पाशा ऐसे ही नेता थे। आपने मिसर के लिये अपने जीवन में बहुत कुछ किया है। मिसर उनका सदैव कृतज्ञ रहेगा। संसार के सभी स्वतंत्रता-प्रेमी लोग आपका नाम श्रद्धा के साथ लेंगे। परंतु हाँ, मिसर को ऐसा नेता शायद अब शीघ्र न मिलेगा। हम जगलुल पाशा की आत्मा के लिये सद्गति की प्रार्थना करते हुए उक्त महापुरुष के प्रति अपनी हार्दिक श्रद्धा और भक्ति प्रकट करते हैं।

× × ×

७. स्वर्गीय दानवीर सर गंगाराम

भारत का एक सुपुत्र और चल बसा! लाला सर गंगाराम सरकारी कृषि-कमीशन के मेंबर होकर विलायत गए थे, और वहीं अचानक आपकी मृत्यु हो गई। लालाजी ने अपनी संपत्ति का बहुत बड़ा भाग दान कर दिया है। सन् १८५१ में आपका जन्म हुआ था। मृत्यु के समय ७७ वर्ष की अवस्था होने पर भी आप शरीर और मन से शिथिल नहीं हुए थे। आप अभी इस समय के अनेक हट्टे-कट्टे नौजवानों से अधिक कार्यक्षम और उत्साही थे। आपके पिता कोर्ट-इंस्पेक्टर थे। उनकी ईमानदारी और सचाई के कारण उन्हें लोग बहुत मानते थे। लाला गंगाराम ने लाखों रुपए दान किए हैं, और यह सब उन्होंने आप ही कमाया था। वह गुप्त रूप से बहुत कुछ दान किया करते थे। सन् १९२३ में आपने सर गंगाराम-ट्रस्ट की रजिस्ट्री करा दी थी। इस ट्रस्ट को वह बहुत-सी संपत्ति दान कर गए हैं, और उसी की आमदनी से उनके द्वारा स्थापित बहुत-सी संस्थाओं का ख़र्च चलता है। ट्रस्ट को जो मकानात या इमारतें आपने सौंपी हैं, उनका मूल्य अंदाज़न् ३० लाख रुपए होंगे। उनसे सवा लाख रुपए सालाना आमदनी होती है। इस ट्रस्ट की देख-रेख में सात संस्थाएँ हैं। उनका काम चलाने के लिये अलग-अलग कमेटियाँ बना दी गई हैं। हम यहाँ पर अपने पाठकों की जानकारी के लिये, प्रवासी से, उक्त संस्थाओं का संक्षिप्त विवरण देते हैं—

१—विधवा-विवाह-सहायक सभा। लाहौर में, सन् १९१४ में, इसकी स्थापना की गई थी। यह सभा लाला साहब की बहुत प्रिय वस्तु थी। इस सभा के प्रत्यक्ष और परोक्ष उद्योग से अब तक ११,८१५ विधवाओं के विवाह हुए हैं। सारे भारत में इसकी ६९१ शाखाएँ हैं। हरद्वार, लाहौर, मथुरा और जयपुर में विधवाओं के रहने के लिये आश्रम भी हैं। इन आश्रमों में अब तक १४५ विधवाओं को रखकर उनके ब्याह कर दिए गए हैं। लालाजी का ख़याल था कि विधवाओं के आशीर्वाद से ही उनकी इतनी बढ़ती हो रही है। इस संस्था के, १९२७ ई० के ख़र्च के लिये २६०००) मंज़ूर हुए हैं।

२—ख़ैराती अस्पताल। सन् १९२१ में इसकी इमारत बनी थी। उसमें १ लाख ३१½ हज़ार रुपए ख़र्च हुए थे। ३१ दिसंबर, सन् १९२६ तक इसमें ५,७४,८९ बाहर के रोगियों का इलाज किया गया, और २,७९ रोगियों ने अस्पताल में ही रहकर अपनी चिकि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कराई । रोगियों में अधिकतर मुसलमान ही थे। इस साल इसके ख़र्च के लिये ३,३५,००० रुपए मंज़ूर हुए हैं।

३—हिंदू-छात्रों के लिये वृत्ति-शिक्षा-समिति । इसमें वकालत को छोड़कर अन्य जीविकाओं की शिक्षा प्राप्त करनेवाले हिंदू-छात्रों को वृत्ति दी जाती है । इसमें यह व्यवस्था भी है कि इस समिति से सहायता लेकर शिक्षा पानेवाले छात्र जब धनोपार्जन करने लगें, तो सहायता के रुपए वापस कर दें। इंजीनियरी, पशु-चिकित्सा, खेती, वन-विद्या, वाणिज्य, खनिज पदार्थों को निकालने आदि की विद्याएँ सीखनेवालों को वृत्तियाँ दी जाती हैं। ३१ दिसंबर, १९२६ तक इस संस्था से २४,६१६॥-) की वृत्तियाँ दी गई हैं। इसमें ३,३८४) उपार्जनक्षम विद्यार्थियों से वापस मिला है। इस साल अब तक वृत्ति पाए हुए पाँच छात्रों ने सिविल इंजीनियरिंग में, तीन ने जल-सिंचाई के विभाग में, एक ने रेलवे में और एक ने पूर्त-विभाग में नौकरी पाई है। एक एम्० बी० पास करके चिकित्सा कर रहा है । इस साल इसके ख़र्च के लिये ११,२००) रुपए मंज़ूर किए गए हैं।

४—व्यवसाय-वाणिज्य-शिल्प आदि के लिये ऑफ़िस और लाइब्रेरी। उक्त विषयों की खोज करनेवाले लोग इस ऑफ़िस और लाइब्रेरी में व्यवसाय, वाणिज्य, शिल्प के संबंध की ख़बरें और ज्ञान प्राप्त करते हैं। इसमें इस समय तरह-तरह के शिल्प, कारीगरी और व्यवसाय-वाणिज्य के विषय की २,५०० पुस्तकें हैं । यहाँ इन विषयों के ७० सामयिक पत्र आते हैं, और उनकी फ़ाइलें सुरक्षित हैं। भारत, विलायत, अमेरिका आदि देशों में शिल्प आदि की शिक्षा देनेवाली संस्थाओं के प्रॉस्पेक्टस (अनुष्ठान-पत्र) भी यहाँ रक्खे रहते हैं। यहाँ सरकारी प्रतियोगिता-मूलक परीक्षाओं और नौकरियों की ख़बर भी मिल सकती है। अब तक ४७ मनुष्यों ने इस ऑफ़िस के साथ परामर्श करके अथवा इस लाइब्रेरी की पुस्तकों और पत्रों की सहायता लेकर रोज़गार या जीविका प्राप्त की है। नित्य ३०-४० आदमी यहाँ आते हैं। इस संस्था के इस साल के ख़र्च के लिये ७,०००) रुपए मंज़ूर हुए हैं।

५—अपाहिज-आश्रम। डेढ़ लाख रुपए ख़र्च करके इस आश्रम की इमारत बनाई गई है। जो बच्चे, बालक-बालिका, स्त्री या पुरुष किसी दुरारोग्य रोग से, बहुत बुढ़ापे के कारण अथवा किसी अंग की कमी से अपाहिज हो गए हैं, अपने भरण-पोषण में असमर्थ और आश्रय-हीन हैं, उनको आश्रय देने के लिये इस आश्रम की स्थापना की गई है। इसमें १४४ आदमियों के रहने को स्थान है। इसका सारा प्रबंध नए ढंग का है। इस समय यहाँ २० मर्द, ४ औरतें और १ बच्चा है। इनमें सात अंधे हैं, एक गूँगा-बहरा और एक लँगड़ा । यहाँ राह-राह भीख माँगनेवालों को नहीं रक्खा जाता। प्रत्येक व्यक्ति को कपड़े, बिछौने और अन्य आवश्यक सामान दिया जाता है। साधारण भोजन के अलावा रोज़ दूध, कभी-कभी मिठाई और हर ऋतु के फल भी दिए जाते हैं। इस साल के ख़र्च के लिये ९,०००) रुपए मंज़ूर किए गए हैं।

६—श्रम-शिल्प की बनी चीज़ों की दूकान। यह मई, १९२६ में खोली गई थी। लाला गंगाराम जानते थे कि बहुत-सी ग़रीब बेवाएँ घर में बैठे-बैठे अनेक चीज़ें तैयार करती हैं। लेकिन उन चीज़ों को मुनासिब मुनाफ़े पर बाज़ार में बेचने का कुछ बंदोबस्त वे नहीं कर पातीं। इस कारण वे, आप अपना पेट पालने की शक्ति रखने पर भी, पराया मुँह ताकने को विवश रहती हैं। इसके लिये १०,०००) रु० का दान करके गंगारामजी ने उक्त दूकान खोली थी। यहाँ श्रम-शिल्प-विद्यालय में बनी हुई चीज़ें और ग़रीब विधवाओं की बनाई हुई सामग्री बाज़ार-दर पर बिकती हैं। विधवाएँ और श्रम-शिल्प-विद्यालय के कारीगर इस दूकान से कच्चा माल और कलें वग़ैरह ख़रीद सकते हैं। इसके अधीन एक कारख़ाना भी है। उसमें कच्चा माल और कलें वग़ैरह रक्खी रहती हैं, और ग़रीब औरतें वहाँ आकर मज़दूरी पर सामान तैयार करती हैं। पहले इस तरह की दूकान फ़ेल हो जाने के कारण अब की ख़रीदारों को आकृष्ट करने के लिये इस दूकान में साधारण बाज़ारू सामान भी, बिक्री के लिये, रक्खा रहता है। इससे एक लाभ और है। विलायती और देशी, दोनों तरह की सामग्री देखकर लोग जान सकते हैं कि कारीगरों की तुलना में भारत की स्त्रियाँ कैसी उत्तम सामग्री बना सकती हैं।

७—एक संस्था ऐसी है, जिससे वे ग़रीब विधवाएँ अन्य ग़रीब लोग तथा मुसीबतज़दा, परिवार मासिक वृत्ति पाते हैं, जो कि अपाहिज-आश्रम में नहीं आ सकते । इस मद में सन् १९२७ के लिये ५,०००) रुपए का दान मंज़ूर किया गया है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इन मुख्य संस्थाओं के अलावा लाला गंगारामजी और कई संस्थाओं को भी चलाते थे, और उनके बराबर चलते रहने की व्यवस्था वह कर गए हैं—

(क) लाहौर का हिंदू-विधवा-आश्रम। सन् १९२१ में १,८८,२००) रुपए की लागत से एक इमारत उन्होंने बनवाई थी। यह बड़ी इमारत वह हिंदू-विधवा-आश्रम और शिल्प-विद्यालय के संचालनार्थ पंजाब-गवर्नमेंट को सौंप गए हैं। ८३ विधवाएँ यहाँ शिक्षा पाती हैं। हर एक विधवा अपने ख़र्च के लिये १२) महीना वृत्ति पाती है। अब तक ८७ विधवाएँ यहाँ शिक्षा समाप्त करके सरकारी या ग़ैरसरकारी स्कूलों में ३०) से लेकर ८०) तक के वेतन पर नौकर हो चुकी हैं।

(ख) हिंदू और सिख स्त्रियों तथा लड़कियों के लिये लेडी मेनार्ड-शिल्प-विद्यालय। ७७,०००) रुपए की लागत की एक इमारत बनवाकर, उसे, उक्त शिल्प-विद्यालय चलाने के लिये, लालाजी पंजाब-सरकार को सौंप गए हैं। इस विद्यालय में काम सिखलाने में यथेष्ट निपुण अनेक शिक्षक और बढ़िया मशीनरी है। इस विद्यालय में सभी उमर की स्त्रियों और लड़कियों को बनयायन और मोज़े बुनने, दर्ज़ी का काम करने, कपड़े पर फूल-पत्ती बनाने आदि की शिक्षा दी जाती है। यह शिक्षा गिरिस्ती में उनके बड़े काम आती है। इस शिक्षा से वे अपनी जीविका भी चला सकती हैं। किसी-किसी को नौकरी भी मिली है। १२० स्त्रियाँ व लड़कियाँ आजकल यहाँ शिक्षा पाती हैं। शिक्षा मुफ़्त ही दी जाती है।

(ग) लाहौर का हेली-वाणिज्य-कॉलेज। इसकी इमारत में ही १ लाख ६० हज़ार रुपए लग गए हैं।

[लालाजी यह व्यवस्था कर गए हैं कि ये तीनों इमारतें जिस काम के लिये बनवाई गई हैं, उस काम में अगर इनका व्यवहार न हो, तो सर गंगाराम ट्रस्ट के ट्रस्टियों का इन पर अधिकार हो जायगा, और वे उनके उद्देश की पूर्ति का प्रबंध करेंगे।]

(घ) इनके अलावा अनेक प्रकार की विज्ञान और कृषि के संबंध की खोज के काम के लिये तथा ग़रीब जनता के उपकार के लिये लाला गंगाराम ने बहुत रुपए ख़र्च किए हैं। खेती-संबंधी खोज के लिये २५,०००) रुपयों का दान करके वह मेनार्ड-गंगाराम-गवेषणा-वृत्ति स्थापित कर गए हैं।

इन बड़े दानों के सिवा वह हर साल सैकड़ों ग़रीब छात्रों और भद्र-परिवारों को गुप्त रूप से कंबल, लिहाफ़, लोई, गरम कपड़े, रुपए आदि दिया करते थे। उनकी मृत्यु के बाद गत अगस्त मास में उनका वसीयतनामा खोला गया था। उससे मालूम हुआ कि उक्त दानों के अलावा और भी १४ लाख रुपए वह सर्व-साधारण के हितकर कार्यों के वास्ते दे गए हैं। वह अपने ट्रस्ट की संपत्ति १० वर्ष के भीतर, ३० लाख से बढ़ाकर, एक करोड़ रुपए कर देने की इच्छा रखते थे। सर गंगाराम धन्य हैं! वह अपनी कीर्ति अमर कर गए। धनी तो देश में और भी बहुत-से होंगे—शायद सर गंगाराम से कहीं अधिक धनी होंगे—पर लालाजी के समान अपनी गाढ़ी कमाई को इस तरह सुंदर प्रबंध के साथ, स्थायी रूप से, लोकोपयोगी कामों में लगानेवाले, दान का सदुपयोग करनेवाले, बहुत कम देख पड़ते हैं। पंजाब ने लालाजी के प्रति यथेष्ट श्रद्धा दिखलाई है, और सारे देश के सभी श्रेष्ठ पुरुषों ने आपके प्रति आदर-भाव प्रकट किया है। हम भी ईश्वर से लाला गंगारामजी की आत्मा के लिये श्रेष्ठ लोक की प्रार्थना करते हुए उनके प्रति श्रद्धा प्रकट करते हैं।

× × ×

८. स्वर्गीय पं० ईश्वरीप्रसाद शर्मा

आज अपने स्नेहास्पद मित्र, हिंदू-पंच के संपादक, पं० ईश्वरीप्रसाद शर्मा के लिये 'स्वर्गीय' शब्द लिखते हृदय विदीर्ण हो रहा है! हिंदी का और हम लोगों का यह दुर्भाग्य ही है कि ऐसे-ऐसे होनहार उत्कृष्ट लेखक असमय में ही स्वर्ग सिधार रहे हैं। गत संख्या में हम दो प्राचीन और नवीन हिंदी-लेखकों के स्वर्गवास का समाचार अपने पाठकों को दे चुके हैं। आज पं० ईश्वरीप्रसादजी मिश्र की मृत्यु का समाचार देना पड़ रहा है। इनके अलावा 'प्रेम' के संपादक बाबू देवीप्रसादजी सक्सेना और 'जयाजीप्रताप' के संपादक माथुर बाबू की मृत्यु से भी हिंदी की कुछ कम हानि नहीं हुई है। पं० ईश्वरीप्रसादजी हमारे घनिष्ठ मित्रों में थे। उन्होंने जब 'हिंदी-मनोरंजन' निकाला था, उसके भी पहले से हमारा उनका परिचय था। आप बड़े ही सौम्य, शिष्ट और परिहास-रसिक थे। खरी कहनेवाले भी अद्वितीय ही थे। बिहार के आरा-शहर में, मिश्रटोला नाम के मुहल्ले में, आपका निवास था। आप शाकद्वीपी ब्राह्मण और हिंदी के प्राचीन प्रसिद्ध लेखक पं० सदल मिश्र के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वर्गीय पं० ईश्वरीप्रसाद शर्मा

वंश के रत्न थे । आप अपने वंश की मान-मर्यादा के अनुरूप ही सद्गुणों से विभूषित और स्वाभिमानी थे। आपका जन्म संवत् १९५० वि० में आषाढ़ी पूर्णिमा के दिन हुआ था। आपको लिखने-पढ़ने का व्यसन लड़कपन से ही था। आप छोटी उमर में भी खेलते-कूदते कम, पर पुस्तकावलोकन अधिक करते थे। आप केवल १४ वर्ष की अवस्था में ही काशी के 'भारतजीवन' पत्र में लेख लिखने लगे थे। उसके बाद से अब तक, ३४ वर्ष की ही अवस्था में, आपने अनेक पत्रों में सैकड़ों लेख लिखे, और अस्सी के लगभग पुस्तकों का अनुवाद कर डाला। आपने 'हिंदी-मनोरंजन' का संपादन और संचालन बहुत अच्छे ढंग से किया था। उसके अलावा 'पाटलिपुत्र', 'शिक्षा', 'लक्ष्मी' और 'धर्माभ्युदय' पत्रों के भी आप संपादक रहे। आपकी पुस्तकों में श्रीरामचरित्र और सिपाही-विद्रोह का अच्छा आदर हुआ है। आपने इधर २-३ मौलिक नाटक भी लिखे थे, जो शायद प्रकाशित हो चुके हैं। चना-चबेना भी आपकी हास्य-रस की सुंदर रचना है। शर्माजी हिंदू-जाति के अनन्य सेवक और उच्च कोटि के देश-प्रेमी थे, यह बात हिंदू-पंच के पढ़नेवाले अच्छी तरह जानते हैं। दो बार हिंदू-पंच पर सरकार ने मुक़दमा चलाया; दोनों बार आप निर्दोष समझकर छोड़ दिए गए। इस बार हाईकोर्ट से आपका छुटकारा हुआ ही था कि सप्ताह के भीतर ही आप अपने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

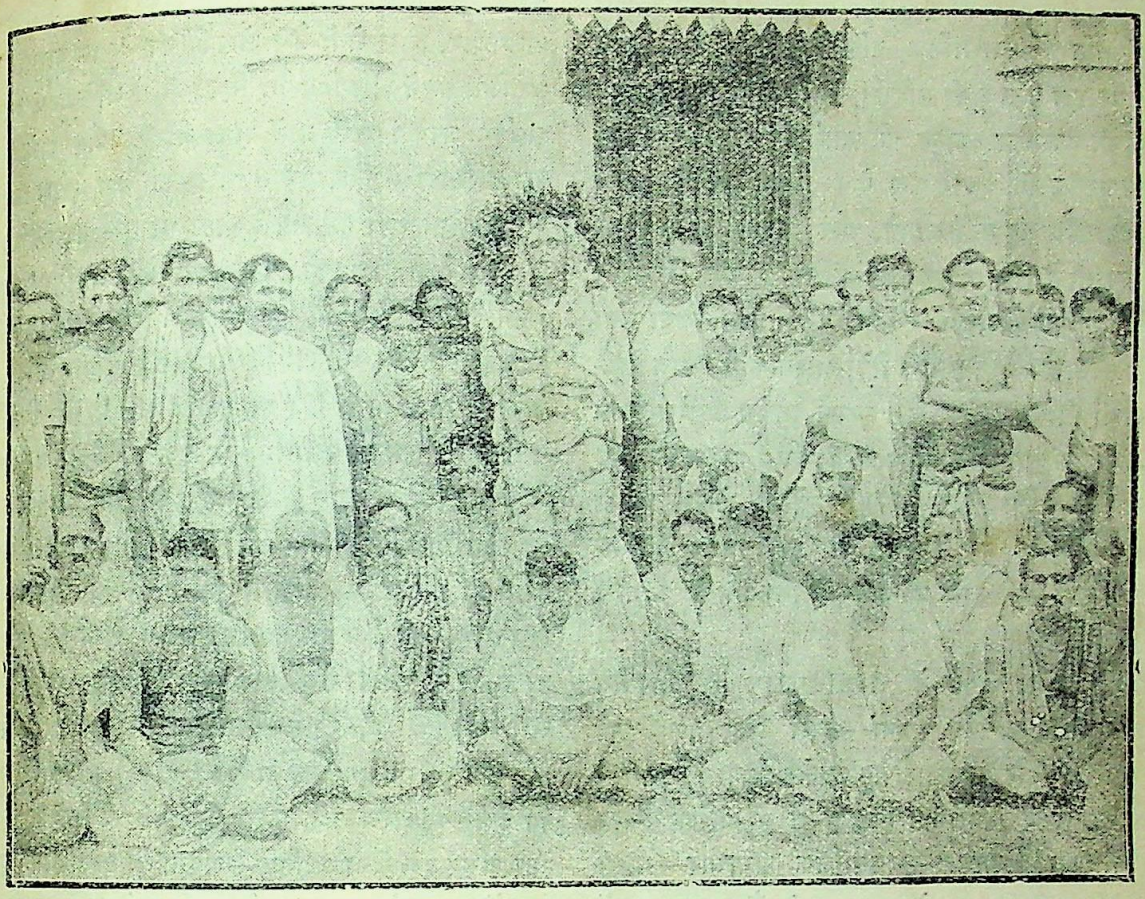

श्मशान में पं० ईश्वरीप्रसाद शर्मा

मित्रों को शोक-सागर में डुबाकर अचानक चल बसे। मिश्रजी की मृत्यु भी योगियों की-सी हुई। दिन को काम करते रहे। रात को ११-१२ बजे तक लेख लिखते रहे। उसके बाद घंटे-दो घंटे में ही स्वर्गवासी हो गए! मिश्रजी की विधवा और पुत्रियाँ हैं; पुत्र कोई नहीं। हम इन लोगों के प्रति समवेदना प्रकट करते हुए मिश्रजी की आत्मा के लिये शांति की प्रार्थना करते हैं। हमें आशा है, हिंदू-पंच के अध्यक्ष वर्मन्‌जी भी मिश्रजी के परिवार के लिये अवश्य ऐसा प्रबंध कर देंगे, जिसमें उन्हें कोई कष्ट या असुविधा न हो। हम आगामी किसी संख्या में स्वर्गीय मिश्रजी के संबंध में एक विस्तृत लेख प्रकाशित करेंगे।

× × ×

९. "भारत-माता"

सुधा की पिछली संख्या में हमने योरप और अमेरिका में होनेवाली दुर्नीति पर कुछ प्रकाश डाला था। योरप और अमेरिका आज वर्तमान सभ्यता के सूत्रधार और ठेकेदार कहे जाते हैं। उनकी सभ्यता का एक अंग यह भी है कि नारी-विक्रय का व्यापार वहाँ ज़ोरों पर होता है। किंतु यह केवल नैतिक दिशा है। योरप और अमेरिका में और भी इतनी कमज़ोरियाँ हैं कि उन्हें देख और सुनकर मनुष्य कहलानेवाले व्यक्ति का मस्तक लज्जा से झुक जाता है। आज हम वहाँ के निवासियों की मानसिक दुर्बलता अथवा मिथ्या की उपासना का एक उदाहरण देते हैं।

आज तक कई पुस्तकें अँगरेज़ लेखकों की लिखी हुई ऐसी निकली हैं, जिनमें भारतवासियों को संसार के सामने अमानुषिक बर्बर रूप में चित्रित किया गया है। इसी तरह की एक पुस्तक अभी हाल ही में और प्रकाशित हुई है, और उसे भारत की सैर के लिये आनेवाली एक अमेरिकन महिला ने लिखा है। उसका नाम है "Mother India" (भारत-माता)। "लकड़ी-पानी ढोनेवाले" भारतवर्ष के निवासियों के संबंध में इस पुस्तक में जैसे विचार प्रकट किए गए हैं, वे उन विचारों से किसी भी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हालत में कम नहीं ; बरन् अधिक ही कहे जा सकते हैं, जो अँगरेज़-जाति का स्वाभाविक दृष्टिकोण हैं, और जिनकी कसौटी पर इस पुस्तक की महिला लेखिका कुमारी कैथरीन मेयो ने भी भारतीय समाज को कसने का दुःसाहस किया है। इस पुस्तक में यद्यपि कुछ ऐसे विषय भी हैं, जिन्हें हम एकदम मिथ्या नहीं मानते, और जिनके सुधार के भी हम पक्षपाती हैं ; पर वे बहुत अतिरंजित हैं, और निस्संशय राजनीतिक स्वार्थ-साधन के उद्देश्य से ऐसा किया गया है। हम तो समझते हैं, कुमारी मेयो भारत के हित-शत्रु सिड-नहम-पार्टी की अनुयायिनी हैं। हमारा आक्षेप अँगरेज़-जाति की बहुसंख्यक मानसिक प्रवृत्ति पर है, जिसे हम कभी क्षम्य नहीं समझते। ऐसे ही अनुभवहीन कुटिल लेखक अपनी मर्मांतक बातों से मनुष्य-जाति के एक विशेष अंग—भारतवासियों—को चोट पहुँचाकर मानव-प्रेम के मार्ग में काँटे बिछाते हैं।

कुमारी कैथरीन मेयो ने अपनी पुस्तक में भारतीय समाज—विशेषकर हिंदू पुरुषों—द्वारा किए जानेवाले जिन अपराधों और अत्याचारों का उल्लेख किया है, उनमें से कुछ के हम ज़रूर क़ायल हैं। किंतु इनसे भी अधिक भयंकर एवं रोमांचकारी अत्याचार—सामाजिक अनाचार—योरप और अमेरिका में दिन-दहाड़े हुआ करते हैं। क्या उन्हें मिस कैथरीन अथवा योरप और अमेरिका के समझदार महापुरुष नहीं जानते ? वे तो हमारे देश की अपेक्षा वहाँ के समाज के लिये कहीं अधिक कलंक-रूप हैं। फिर आज 'योरप-पिता' और 'अमेरिका-माता' किस बूते पर इतनी शेख़ी बघारती है ? नारी-विक्रय की बढ़ती हुई "कला", वेश्या-वृत्ति का सोलहवीं सदी से आज तक का "खुल्लमखुल्ला, सभ्यतापूर्ण" व्यवसाय, पूँजीवाद के अत्याचार, मिस मेयो-जैसे लेखकों का 'काम-वासना' को उत्तेजित करने और विपरीत दिशा में ले जानेवाला साहित्य आदि-न-जाने कितनी बातें आज योरप और अमेरिका में इस परिमाण में विद्यमान हैं, जिसका हम लोग स्वप्न में भी अनुमान नहीं कर सकते। इस पर तुर्रा यह कि यह सब स्वतंत्रता-प्रेमी देशों की "स्वतंत्रता की मर्यादा" क़ायम रखने के लिये होता है, जो परतंत्र 'भारत-माता' के दरबार में सदा निंदनीय स्वीकार किया गया है, और आज तक वैसा ही माना जाता है। यह दूसरी बात है कि विदेशियों के संसर्ग के कारण, लगभग एक हज़ार वर्ष से, हमारे देश में कुछ कुरीतियाँ, कुछ कुसंस्कार उत्पन्न हो गए हैं। यह तो सामाजिक विपर्यय है। जब समाज पतन की ओर अग्रसर होता है, तब उसमें कमज़ोरियाँ आप-से-आप उत्पन्न होने लगती हैं। पर वे आगे चलकर, समय आने पर, दूर भी हो जाती हैं। मिस कैथरीन के इन आक्षेपों में तो कोई सार नहीं है। हाँ, गालियाँ देने का तरीक़ा ज़रूर 'सभ्य' है, भले ही गालियाँ नई न हों। हमारी समझ में मनुष्य को दूसरे की आँख की फूली निहारने के पहले अपना टेंटर ज़रूर देख लेना चाहिए—अपना घर देखकर फिर दूसरों के घरों पर आक्षेप करना चाहिए। मिस मेयो ने इतनी भूल कर दी। यदि समझ से काम लेतीं, तो उन्हें मालूम हो जाता कि योरप-पिता और अमेरिका-माता इस दिशा में आज भी, भारत-माता से कहीं ज़्यादा, गए-गुज़रे हैं। हमारा ख़याल है कि ऐसी पुस्तक लिखकर मिस मेयो ने अपना ही उपहास कराया है। ऐसी बातों का सामूहिक प्रतिवाद किया जाना चाहिए।

साहित्य-सुमन

[लेखक—स्व० पं० बालकृष्ण भट्ट]

भट्टजी उन थोड़े-से प्रतिभाशाली लेखकों में से थे, जिन्होंने आधुनिक हिंदी-भाषा के गद्य की नींव डाली है। इसमें उन्हीं के साहित्यिक और नीति-संबंधी चुने हुए लेखों का संग्रह है। भट्टजी की भाषा हिंदी-साहित्य में अपना विशेष स्थान रखती है। संस्कृत-उर्दू की खिचड़ी से इन्हें पूरी नफ़रत थी। सभी विषयों पर इन्होंने क़लम चलाई है, और जिस किसी विषय को इन्होंने उठाया है, उसके लिखने में कमाल कर दिखाया है। आप इनके हास्य-रस के लेख पढ़िए, और लोटन-कबूतर हो जाइए; शृंगार-रस के लेख पढ़िए, और आनंद से शराबोर हो जाइए; गंभीर विषय के लेख पढ़िए और पूरे तत्त्व-ज्ञानी बन बैठिए। यही लिखने की ख़ूबी है और भट्टजी ने ऐसी ही लेखन-शैली का आदर्श उपस्थित किया है। यही कारण है कि कितने स्थानों पर यह साहित्य-सुमन पाठ्य-पुस्तक बना ली गई है। इनके लेखों में उपन्यास और कहानियों का पूरा मज़ा आता है। जी कभी नहीं ऊबता। निरंतर नई-नई ज्ञातव्य बातों का पता लगता जाता है। निछावर केवल ॥=)

संचालक गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

व्यंग्य और विनोद की अनुपम पुस्तकें

रावबहादुर

[लेखक—फ्रांस के सर्वश्रेष्ठ नाटककार मिस्टर मोलियर]

मोलियर संसार-भर में, हास्य-रस की रचना में, अपना सानी नहीं रखते। यों तो मोलियर के और भी छोटे-छोटे कई ग्रंथों का हिंदी में अनुवाद हो चुका है, कितने ही उनके आधार पर भी लिखे गए हैं, पर रावबहादुर का स्थान उन सबसे ऊँचा है। इसमें ख़िताब की लालच में मर मिटनेवाले, उपाधि के लोभ में किसी भी उपद्रव से बाज़ न आनेवाले, स्वल्प-शिक्षित पर सर्वज्ञता का दम भरनेवाले, मनचले मूर्ख—घरफूँकबहादुर—का ख़ाका ख़ासी तौर से खींचा गया है। फ्रांस, महाराष्ट्र, अवध, आगरा आदि कई देशों की नोक-झोंक, फ़ैशन, चाल-चलन, ठाट-बाट और चालाकी का मज़ा उठाना हो, तो इस पुस्तक को आरंभ कीजिए, फिर क्या मजाल कि आप उसे ख़त्म किए विना छोड़ें। जिसने हँसने की क़सम खाली हो, वह भी इसे पढ़कर खिलखिला उठेगा। बस, पुस्तक मँगाकर पढ़िए, और रावबहादुर की कारगुज़ारी पर हँसिए। मोलियर का चित्र भी है। २०० पृष्ठ की पुस्तक का मूल्य केवल ॥), सुंदर रेशमी जिल्द १)

अचलायतन

[मूल लेखक—कवींद्र रवींद्र]

अनुवादक, पं० रूपनारायणजी पांडेय कविरत्न। मूल-लेखक रवींद्र बाबू ने इसमें वर्तमान हिंदू-धर्म की छुआछूत और आडंबर की कट्टरता पर बहुत अच्छा प्रकाश डाला और उसका खंडन किया है। यह छोटा-सा नाटक पढ़ने ही योग्य है। जिन्होंने रवींद्र बाबू की रचनाओं को देखा है, वे स्वयं समझ लेंगे कि यह नाटक किस कोटि का होगा। इसके गीत भी एक-से-एक अच्छे हैं। अनुवाद भी ऐसी सरस, सरल, सुंदर भाषा में किया गया है कि यह एक स्वतंत्र रचना मालूम होती है। मूल्य ॥), सजिल्द १)

ईश्वरीय न्याय

[लेखक, अध्यापक श्रीरामदास गौड़ एम्० ए०]

यह व्यंग्य-नाटक है। गौड़जी काशी-स्युनिसिपैलिटी में शिक्षा-विभाग के अध्यक्ष रह चुके हैं। इस नाटक में आपने अत्यंत मार्मिक ढंग से दिखाया है कि अछूतों के उद्धार और राष्ट्रीय शिक्षा-सुधार में किन-किन कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है, और अछूतों के प्रति बहुत प्रेम दिखानेवाला हिंदू-सभ्य-समाज, अवसर पड़ने पर, कैसे बग़लें झाँकने लगता है। मूल्य ॥), सजिल्द १)

संचालक गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection. Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हास्य-रस की अलौकिक पुस्तक

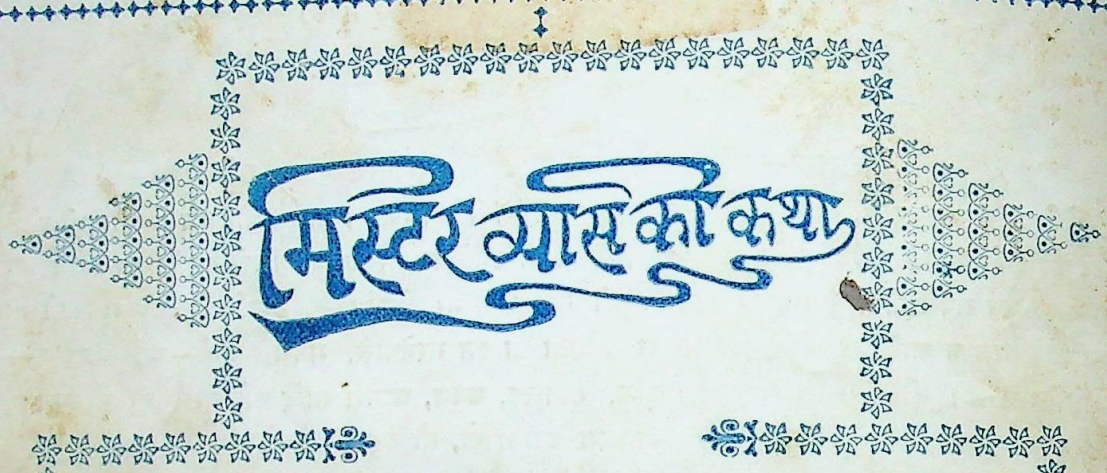

[लेखक—भूतपूर्व आनंद-संपादक स्वर्गीय श्रीशिवनाथ शर्मा बी० ए०]

अन्य रसों की तरह हास्य-रस पर क़लम चलाना सहज नहीं। बिरले ही प्रतिभा-शाली, सिद्ध-हस्त लेखक इसमें सफलता पाते हैं। व्यंग्य और विनोद द्वारा समाज की बुराइयों का चित्र खींचना साधारण लेखक की क़लम से बाहर है। लक्ष्य-हीन, उद्देश्य-हीन हँसी के चुटकुले लिख लेना मामूली बात है। यही कारण है कि संसार की सभी भाषाओं में हास्य-रस का साहित्य बहुत ही कम है। हिंदी में तो इस प्रकार की मौलिक रचनाएँ नहीं के बराबर हैं। शर्माजी उच्चकोटि के हास्य-लेखक हैं। आपकी इस पुस्तक में व्यंग्य और विनोद द्वारा बड़े ही अच्छे ढंग से समाज की बुराइयों का चित्र खींचा गया है। पुस्तक की पंक्ति-पंक्ति और अक्षर-अक्षर में व्यंग्य और विनोद कूट-कूटकर भरे हुए हैं। हास्य-रस की प्रधानता के साथ-साथ भाषा की सजीवता और ओज ने सोने में सुगंध का काम किया है। सभ्य हँसी, लच्छेदार भाषा में, स्थान-स्थान पर भर दी गई है। क्या मजाल कि रोनी सूरतवाले भी इसकी एक-एक पंक्ति पढ़कर हँसते-हँसते लोट-पोट न हो जायँ। एक बार पुस्तक को हाथ में लेकर फिर समाप्त किए बिना उसे छोड़ने को जी नहीं चाहता। अपने ढंग के इस नए और निराले, हास्य-रस-पूर्ण, सचित्र ४३२ पृष्ठ के ग्रंथ का मूल्य केवल २॥) रक्खा गया है।

संचालक गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रधान संपादक
श्रीदुलारेलाल भार्गव
श्रीरूपनारायण पांडेय

वार्षिक मूल्य ६॥)
छमाही मूल्य ३॥)
तिमाही मूल्य २)
विदेश के लिये ७॥)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मनोविज्ञान का एक अद्भुत उपन्यास

पर्दा अलाक

सुप्रसिद्ध रूसी लेखक डॉस्टॉय फ़िस्की का एक उपन्यास

पृष्ठ-संख्या ५०० : मूल्य केवल ३), ३॥)

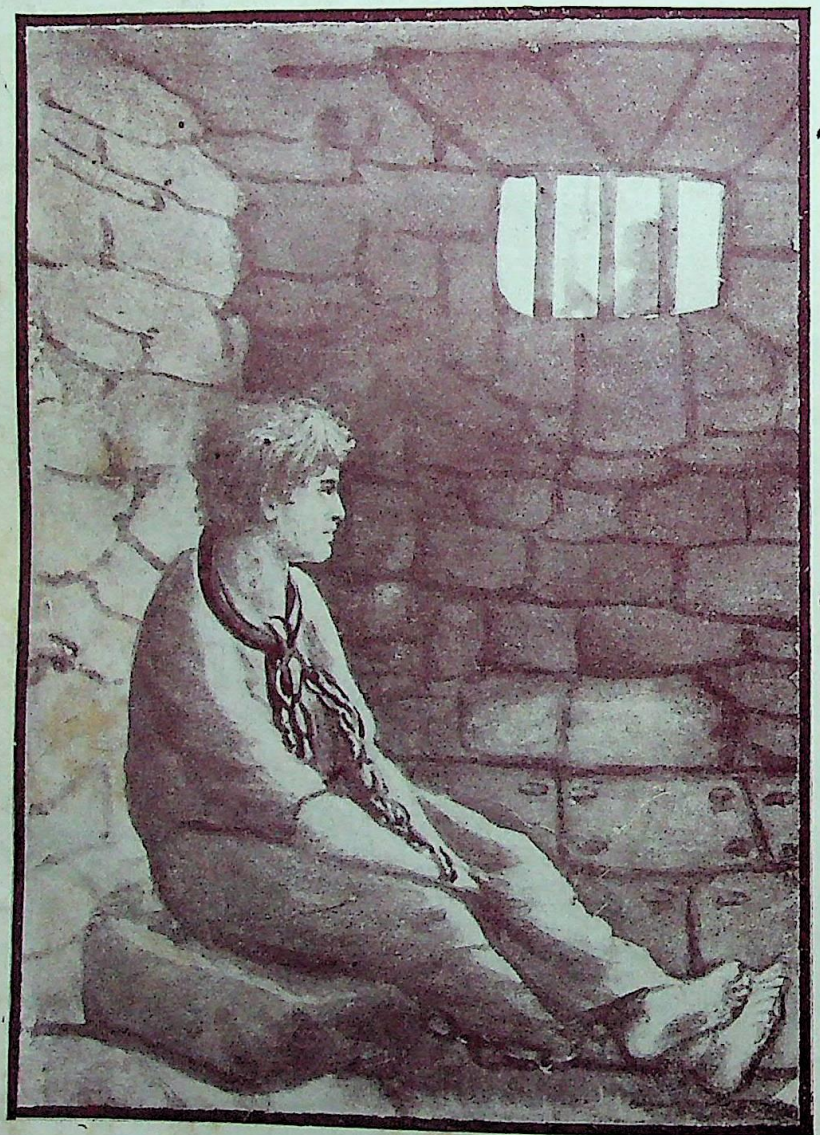

डॉस्टॉय फ़िस्की रूस के एक क्रांतिकारी उपन्यास-लेखक हैं। आप प्रसिद्ध उपन्यास-लेखक टॉलसटाय के समकक्ष हैं। सन् १८४९ ई० में आप पर यह अपराध लगाया गया कि तुम साम्यवाद के प्रवर्तकों में हो। वह पकड़े गए, और अन्य २१ अपराधियों के साथ उन्हें फाँसी की सज़ा का हुक्म दिया गया। यह ज़ारशाही के ज़माने की बात है। अस्तु, फाँसी के लिये वह चौक में खड़े करा दिए गए थे। उनकी आँखें बंद कर दी गईं, और गोला चलाने की आज्ञा भी दी ही जा चुकी थी कि इतने में एक अफ़सर ने आकर कहा कि तुम्हें साइबेरिया में देशनिकाले का दंड दिया गया है। ऐसी स्थिति में मनुष्य-मात्र के हृदय में क्या भावनाएँ उत्पन्न हो सकती हैं, इनका उन्होंने स्वयं अनुभव किया, और लौटकर इसमें वही अंकित किया है। पाठक जिस प्रसंग को पढ़ता है, उसी का एक पात्र अपने को समझने लगता है। रंगीन और सादे चित्र तो सोने में सुगंध का काम करते हैं।

पुस्तक मिलने का पता—**संचालक गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय, लखनऊ**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

न्यू फ़ैशन बनारसी साड़ी

सात रुपया में

सस्तेपन का कमाल

लंबाई ५ गज़, चौड़ाई १। गज़

नया आविष्कार, अत्यंत सुंदर, आम-पसंद बनावट, सुशिक्षित गृह-देवियों के बर्तने और उपहार में देने योग्य, टिकाऊ, पक्का रंग, काडी रेशम या ज़री के कामवाली जिस रंग की दरकार हो मँगाइए !

Rs. 7.

देखने में १००) की साड़ी जँचती है। मशहूर करने की ग़रज़ से लागत से भी कम दाम (Sample Price) केवल ७), डाक-ख़र्च ॥-), व्यापारियों का ज़्यादा तादाद का आर्डर न लिया जायगा। नापसंद होने से पूरे ख़र्च सहित दाम फेरकर वापिस लेने की गारंटी !

पता—स्वदेशी सिल्क साड़ी स्टोर

२५२, बलदेव-बिल्डिंग, झाँसी JHANSI, U. P.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेख-सूची

	पृष्ठ
१. आशा (कविता)—[लेखक, श्रीयुत रामकिशोर शर्मा "किशोर"	६०१
२. संगठन-समस्या—[लेखक, भाई परमानंद एम्० ए०	६०२
३. कला और नीति का संबंध—[लेखक, पं० हेमचंद्र जोशी बी० ए० और पं० इलाचंद्र जोशी	६०७
४. विवाह-विज्ञापन (प्रहसन)—[लेखक, पं० बदरीनाथ भट्ट बी० ए०	६१२
५. डॉक्टर (कविता)—[लेखक, बाबू सियारामशरण गुप्त	६२२
६. आधुनिक अफ़ग़ानिस्तान—[लेखक, श्रीयुत सुरेंद्र शर्मा	६२३
७. श्रीवीर-तत्त्व-प्रकाशक मंडल—[लेखक, लाला कन्नोमल एम्० ए०	६२८
८. स्मृति (कविता)—[लेखक, ठाकुर गोपालशरणसिंह	६३१
९. चंपतिराय—[लेखक, श्रीयुत ब्रजरत्नदास बी० ए०	६३१

हिंदू-धर्म की चार सुंदर तस्वीरें

चतुर चित्रकारों द्वारा चित्रित। चित्र-कला को चकित करनेवाला चमत्कार। अनेक नेत्र-रंजक रंगोंवाली। साइज़ "३०×२०", और "२०×१५"। सुंदर बहुमूल्य चिकने काग़ज़ पर छपी हुई। फिर भी ख़ूब सस्ती।

डाक-ख़र्च के लिये एक आने का टिकट भेजकर कई सुंदर हाफ़टोन चित्रों से सुशोभित कैटलॉग मुफ़्त मँगाइए!

पत्र-व्यवहार कृपया अँगरेज़ी में करें।

मिलने का पता—

The Caxton Publishing Co.,
Post Box 562, CALCUTTA

हताश न हूजिए? अब भी आपके लिये एकमात्र आशा है
अगर आप शरीर की कमज़ोरी के कारण संसार-सुख से निराश हैं तो—
गवर्नमेंट से रजिस्टर्ड
शृंगार-कार्यालय, मथुरा की बनाई

* ख़रीदिए, तत्काल फल मिलेगा *

संसार का सुख भोगने के लिये मनुष्य का शरीर को आरोग्य रखना ही मुख्य कर्तव्य है। आजकल ऐसे मनुष्य कम हैं कि जिनको प्रमेह का मर्ज़ न हो इसलिये हमारी "धातुपुष्टवटिका" कुछ रोज़ सेवन करने से पानी के समान पतली धातु पारा-जैसी गाढ़ी और अत्यंत पुष्ट हो जाती है। कमर का दर्द, पिंडलियों की मड़कन, आँखों की कमज़ोरी के कारण पीले-पीले पतंगे-से उड़ते दिखाई देना, मूत्र के साथ पहले या पीछे धातु जाना सिर में दर्द, बीसियों प्रकार के प्रमेह, नपुंसकता, स्वप्नदोष, भूदन में सुस्ती रहना, नसों की कमज़ोरी, इंद्रियों की शिथिलता इत्यादि बीमारियों को यह धातुपुष्टवटिका दूरकर जवानी का हौसला पैदा करती है। क़ा० ४० ख़ुराक की २।)

पता—ला० रामचंद्रदास शृंगार-कार्यालय, विश्रामघाट, नं० ६, मथुरा।

आगे पृष्ठ का उल्लेख अवश्य करें।

CC-0. In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection. Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१०. हस्तरेखा और मनोविद्या—[लेखक, श्रीयुत अवधकिशोरसहाय वर्मा "बाण" एम्० ए०, बी० एड्० ... ... ६३५

११. सुंदरी (कविता)—[लेखक, श्रीयुत "गुलाब" ६३९

१२. अरुणोदय (कविता)—[लेखक, श्रीयुत जगन्नाथप्रसाद खत्री "मिलिंद" ... ६४०

१३. पाश्चात्य सभ्यता के कुछ गुण—[लेखक, डॉक्टर देवीदत्त पंत बी० ए० (डबलिन से) ६४०

१४. उम्मेदवार (व्यंग्य-चित्र)—[लेखक, श्रीयुत "हितैषी" ६४३

१५. परलोक—[लेखक, अध्या० रामदास गौड़ एम्० ए० ... ... ६४४

१६. समाज का डर (सचित्र कहानी)—[लेखक, श्रीयुत पं० मोहनलाल नेहरू ... ६५२

१७. खुली चिट्ठी—[लेखक, श्रीयुत रामावतार साहित्याचार्य, एम्० ए० ... ... ६६२

१८. विनिमय (कविता)—[लेखक, श्रीमोहनलाल महतो "वियोगी" साहित्यालंकार ... ६६९

१९. सहयोग-संस्था और उसका उद्देश—[लेखक, श्रीयुत शंकरराव जोशी डी-पी०, ए-जी०, एफ़्० आर० एच्० एस्० ... ६६९

बाजे की पेटियाँ

तबले, डुग्गी वग़ैरह गाने-बजाने और नाटक का सामान आला दर्जे का हमारे यहाँ से मँगवाइए !

विशेष जानकारी के लिये नया कैटलॉग (सूचीपत्र) मुफ़्त मँगवाइए ।

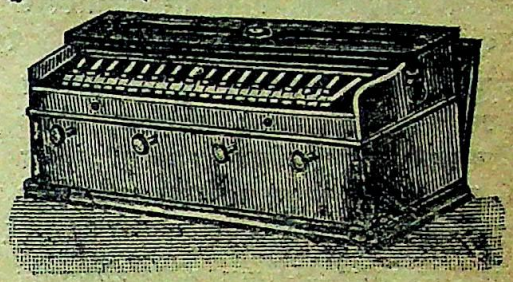

हिंदी हार्मोनियम गाइड

अर्थात् हार्मोनियम आसानी से सिखलानेवाली पुस्तक ! इस पुस्तक में स्वर-व्यवस्था, ताल का स्वरूप, प्रचलित ३६ रागों के लक्षण, स्वरूप और विस्तार आदि जानकारी के साथ, उन रागों की प्रसिद्ध चीज़ों (गायनों) का सशास्त्र नोटेशन भी दिया गया है । पृष्ठ-संख्या २००; क़ीमत १॥); डाक-महसूल ।=) आना

पता:—गोपाल सखाराम ऐंड कंपनी, विट्ठलवाड़ी के सामने, कालबादेवी रोड, बंबई नं० २

दो मास के लिये !

केवल आठ रुपयों में १० वर्ष की गारंटी

साथ ही बीस क़ीमती चीज़ें मुफ़्त !

Registered रजिस्टर्ड पेटेंट लीवर रेडियम रिस्टवाच

इन घड़ियों से रेडियम ऐसा चमकीला लगता है जैसा कि दिन में देखिए वैसे ही रात में भी । इसके साथ नीचे लिखी २० चीज़ें ग्राहकों को मुफ़्त दी जाती हैं :—

१—पॉकेट लैंप (बिजली नई); २—फ़ाउनटेन पेन (अपने आप लिखनेवाली क़लम); ३—दावात; ४—फ़ोल्डिंग; ५—पेंसिल बनाने की कल; ६—हीरे की अँगूठी; ७—कान के लटकन; ८—सेफ़्टी पिन; ९—चाक़ू; १०—चश्मा; ११—हाथ की घड़ियों के लिये पट्टा; १२—बढ़िया ताश; १३—सिगार लाइटर; १४—क़मीज़ का सेट; १५—कोट के बटन; १६—रूमाल; १७—इत्र की शीशी; १८—एक सुंदर प्याला; १९—लाकेट; २०—क़ैंची । नोट—केवल वी० पी० से भेजा जायगा । पोस्टेज १) रु० (२) क़ीमत ८) गारंटी १० वर्ष ।

मिलने का पता:—

दी मास्टर वाच कं०, नं० ६६ भुलेश्वर, बंबई, नं० २

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पृष्ठ

२०. हमसे क्या मतलब ! (व्यंग्य-चित्र)—[लेखक, श्रीयुत रसिकरंजन रतूड़ी ... ६७४

२१. संगीत-साधना—[शब्दकार, श्रीगोविंदवल्लभ पंत तथा संगीत-शास्त्री, श्रीमान् नारायण-मोरेश्वर खरे ६७५

२२. कुसुम-कुंज—[लेखकगण, कुमारी सत्यवती (डलहौज़ी), श्रीकृष्णलाल लवानिया, श्रीयुत शिवराम विशारद, श्रीयुत "रसिकेंद्र", श्रीयुत शिवनंदनसहाय, श्रीयुत गोपीनाथ वर्मा, श्रीयुत सभामोहन अवधिया विशारद ... ६७७

२३. विज्ञान-वैचित्र्य—[लेखक, श्रीयुत रमेशप्रसाद बी० एस्-सी०, केमिस्ट ६८५

२४. चित्रकला—[लेखक, श्रीप्रफुल्लकुमार सरकार एम्० ए० ... ... ६८६

२५. स्त्री-समाज—[लेखकगण, श्रीयुत वेणी-माधव मेहरोत्रा बी० काम्०, श्रीयुत दुर्गादत्त राय, पांडेय देवेंद्रनारायणसिंह ६९४

२६. व्यंग्य-विनोद—[लेखक, श्रीयुत "मायावादी" ६९९

२७. समाज-सुधार—[लेखक, पं० लज्जाराम मेहता ७०२

२८. साहित्य-सूची ७०५

२९. पुस्तक-परीक्षा—[लेखक, पं० भवानीशंकर याज्ञिक एम्०, बी० बी०-एस् ... ७०६

३०. संपादकीय सम्मति ७०९

रजिस्टर्ड **'कामधेनु'** रजिस्टर्ड

आपके स्वास्थ्य, जीवन और धन की रक्षिका है।

:o:

आरोग्यता के लिये सदा पास रखिए।

कोई बाल-बच्चोंवाला घर इससे ख़ाली न रहना चाहिए। न-जाने कौन समय कष्ट हो जावे। उस समय पूरी रक्षा करेगी।

मूल्य बड़ी शीशी २॥), आधी १), नमूना ॥) में वी० पी० ख़र्चा कारख़ाने से दिया जाता है। विवरण पुस्तक बिना मूल्य मँगाइए।

पत्र तथा तार का पता:—

'कामधेनु' दवाख़ाना

ईश्वरीय संदेश

जिनके औलाद नहीं होती, होकर भी नहीं रहती अथवा लड़की ही पैदा होती हैं, उनके लिये है। ४० वर्ष के भीतर उम्रवाले ही -) टिकट भेजकर पत्र-व्यवहार करें।

पता—एस्० % सुधा-कार्यालय, लखनऊ

सचित्र रत्नाकर-ग्रंथ-माला

चित्रमय-सती-संसार ! सचित्र-बाल-तरुण-साहित्य !!

हिंदी में युगांतर।

सर्वांग-सुंदर ! सर्वसुलभ मूल्य !

हिंदी में सर्वसुलभ और सर्वांग-सुंदर सचित्र सती-साहित्य एवं बाल और तरुण-साहित्य का अभाव था। उसी की पूर्ति के लिये नीचे लिखे प्रसिद्ध पौराणिक एवं ऐतिहासिक सर्वांग-सुंदर सचित्र उपाख्यान प्रकाशित किए गए हैं। बढ़िया छपाई, ऐंटिक पेपर और एक सौ से अधिक नयनाभिराम रंग-बिरंगे चित्र। सभी प्रमुख समाचारपत्रों ने मुक्तकंठ से प्रशंसा की है। देश के नेताओं ने इस सर्वांग-सुंदर तथा सर्वसुलभ साहित्य की तारीफ़ की है। कन्याओं, बहनों, बालकों और प्रियजनों को उपहार में देने के लिये सर्वश्रेष्ठ। कन्या-विद्यालयों तथा बालक-पाठशाला स्कूलों में देने के लिये गवर्नमेंट के शिक्षा-विभागों द्वारा स्वीकृत। भाषा सरल और ओजस्विनी। ऐसा बढ़िया और सस्ता सचित्र सर्वांग-सुंदर साहित्य आज तक कहीं से प्रकाशित नहीं हुआ। पुस्तकों को देखते ही आप मोहित हो जायँगे।

चित्रमय सती-संसार

१ सावित्री-सत्यवान ॥) २ नल-दमयंती ॥) ३ शैव्या-हरिश्चंद्र ॥) ४ सीतादेवी ॥=) ५ सतीपार्वती ॥) ६ शकुंतला ॥=) ७ देवी द्रौपदी ॥=) ८ शर्मिष्ठा-देवयानी ॥) ९ सुभद्रा ॥-) १० संयुक्ता ॥=)

सचित्र बाल-तरुण-साहित्य।

११ भक्त ध्रुव ॥=) १२ भक्त प्रह्लाद ॥=) १३ वीर अभिमन्यु ॥=) १४ वीर बालक लव कुश ॥=) १५ भीष्म ॥=) १६ पृथ्वीराज १) १७ महाराणा प्रताप १) १८ छत्रपति शिवाजी १॥) १९ श्रीशंकराचार्य १॥) २० श्रीकृष्ण १॥) २१ सेनापति [illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चित्र-सूची

पृष्ठ

(क) रंगीन

१. शकुंतला की विदा—[श्रीदुलारेलाल भार्गव की चित्रशाला से ६०१

२. दीवान बहादुर ६३३

३. बलिप्रदान—[श्रीदुलारेलाल भार्गव की चित्रशाला से ६६५

(ख) व्यंग्य

१. उम्मेदवार ६४३

२. हमसे क्या मतलब ! ६७४

(ग) सादे

१. "क्या काबुल में गधे नहीं रहते हैं ?" ... ६१७

२. पूज्यपाद श्रीधर्मविजयजी सूरि ... ६२८

३. वीर-जैन-तत्त्व-मंडल का बाग़, जिसमें छात्र काम कर रहे हैं ६२६

अत्युत्तम वैद्यक पुस्तकें

१. भैषज्य रत्नावली—भाषाटीका-सहित। बढ़िया संस्करण १४०० पृष्ठ में संपूर्ण। मूल्य ८)

२. नवनायर्नातक—१७०० वर्ष का प्राचीन वैद्यक-ग्रंथ। यह वैद्यक-शास्त्र का मक्खन है। त्रुटित अंश सब पूर्ण कर दिए गए हैं। भाषा-टीका-सहित मूल्य ३)

३. रसेंद्रसार-संग्रह—अनेक चित्रों-सहित। भाषा-टीका-सहित। बढ़िया संस्करण मूल्य ४)

४. रसहृदयतंत्र—श्रीगोविंदपाद-विरचित मुग्धाव-बोधिनी संस्कृत-टीका-सहित। द्वितीयावृत्ति मूल्य २)

५. चक्रदत्त—शिवदास-कृत संस्कृत-व्याख्या-सहित मूल्य ५)

६. माधवनिदान—मधुकोषव्याख्या-सहित मूल्य २)

वैद्यक-पुस्तकों का संपूर्ण सूचीपत्र विना मूल्य भेजते हैं—

मोतीलाल-बनारसीदास

बुकसेलर्स, सैदमिट्ठा-बाज़ार, लाहौर

❀ श्रीः ❀

ज्योतिषीजी की भविष्यवाणी स्वादिष्ट,

नवजीवनविहार सुगंधित

दवा खाने से पहले बदन को तोल लो

एक महीने में दो पौंड ख़ून बढ़ता है

यह विचित्र महौषधि केवल जड़ी-बूटियों द्वारा शरबत रूप में तैयार की गई है। किसी तरह की नशीली चीज़ या रस-भस्म आदि नहीं डाली गई। इसलिये प्रत्येक मौसम में लड़का, जवान, बूढ़ा, स्त्री, सभी इसका सेवन कर सकते हैं। यह इतनी शक्ति-शाली है कि एक ही ख़ूराक में असर दिखाती है, थोड़े ही समय में विशाल शक्ति पैदा कर देती है। प्रमेह, धातु-क्षीणता आदि समस्त वीर्य-संबंधी शिकायतें दूर हो जाती हैं। ख़ून साफ़ होकर धातु पुष्ट होती है, ख़ूराक बढ़ती, भूख ख़ूब लगती है। दस्त बिलकुल साफ़ होता है, अजीर्ण दूर होता है; स्त्रियों के मासिक धर्म की ख़राबी, लाल अथवा सफ़ेद पानी का जाना, भूख की चक्कर आना, बदन में दर्द आदि दूर करके नया जीवन देती है। बच्चों को थोड़े ही दिनों में मोटा-ताज़ा लालोलाल बनाती है। ज़्यादा प्रशंसा व्यर्थ, २४ ख़ूराक के डब्बे का दाम २) डा० ख० ।।=) चार लेने से एक मुफ़्त।

नोट—श्रीमान् रामविलासजी ज्योतिषी सदर महंत हैदराबाद दक्षिण से लिखते हैं कि हमारे एक मेहमान संगमलाल जैन ने हमसे नवजीवनविहार के बारे में मँगाने से पहले पूछा यह दवा सच्ची है या झूठी। हमने रमल द्वारा मालूम करके बतलाया आप मँगाइए, ज़रूर फ़ायदा होगा। उन्होंने दो डब्बे मँगाए और उनको वैसा ही फ़ायदा हुआ।

श्रीजगदीश-औषधालय, लखनऊ कोठी नं० २८६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

		पृष्ठ
४.	वीर जैन-तत्त्व-मंडल का मंदिर और विद्यालय	६३०
५.	जर्मन-महिला (जिन्होंने जैन-धर्म में दीक्षा ली है, और जिनका नाम सुभद्रादेवी रक्खा गया है)	६३१
६.	"सौ रुपए भी हों, तो मैं कारबार में लग जाऊँ।"	६५७
७.	दोनों मा-बेटियाँ केवल एक दीवार का व्यवधान होने पर भी आपस में न मिलीं	६६२
८.	पं० भोलानाथ झा आई० सी० एस्० ...	६७८
९.	प्रोफ़ेसर डब्ल्यू० एच्० एडी ...	६८६
१०.	चीटियों का नाच	६८७
११.	चीटियाँ मृत चीटी को क़ब्र देने के लिये ले जा रही हैं	६८८
१२	सौ० राजकिशोरी मेहरोत्रा	६९४
१३.	बा० श्यामबिहारी मेहरोत्रा (इन्हीं की सहायता से सौ० राजकिशोरी को इच्छित वर प्राप्त हुआ)	६९५

हर प्रकार के ज्वर के लिये

नवशक्ति पिल्स

यही संसार में एक सुप्रसिद्ध दवा है, जो सब प्रकार के ज्वरों का नाश कर देती है। ज्वर कैसा ही हो, कितने दिनों का क्यों न हो, ५ या ६ गोलियाँ खाने से शर्तिया ग़ायब हो जायगा। हरएक घर में रहने लायक़ दवा है। यदि एक शीशी अपने घर में रक्खे, तो वैद्य के यहाँ दौड़ने की ज़रूरत नहीं पड़ेगी। इस दवा का न तो अनुपान है, न पथ्य। एक शीशी मँगाकर आज़मा लेंगे तो आप ही मुक्तकंठ से इसकी प्रशंसा करेंगे।

१०० पिल्स की शीशी का दाम केवल १।)
डाक-ख़र्च अलग

मिलने का पता—

राजवैद्य के० पी० आर० वर्मा

स्थापना १९२० ई०, महात्मा गांधी आयुर्वेदाश्रम

गवर्नर पेट, बेज़वादा, आंध्रदेश

३६ साल का परीक्षित

भारत-सरकार तथा जर्मन गवर्नमेंट से रजिस्टर्ड

९३,००० एजेंटों द्वारा बिकना दवा की सफलता का सबसे बड़ा प्रमाण है।

सुधासिंधु

बिना अनुपान की दवा

यह एक स्वादिष्ट और सुगंधित दवा है, जिसके सेवन करने से कफ, खाँसी, हैज़ा, दमा, शूल, संग्रहणी, अतिसार, पेट का दर्द, बालकों के हरे-पीले दस्त, इन्फ़्लुएंज़ा इत्यादि रोगों को शर्तिया फ़ायदा होता है। मूल्य ॥) ; डाक-ख़र्च १ से २ तक ।=)

दद्रुगजकेशरी

दाद की दवा

बिना जलन और तकलीफ़ के दाद को २४ घंटे में आराम दिखानेवाली सिर्फ़ यही एक दवा है। मूल्य फ़ी शीशी ।) ; डाक-ख़र्च १ से २ तक ।=), १२ लेने से २।) में घर बैठे देंगे।

बालसुधा

दुबले-पतले और सदैव रोगी रहनेवाले बच्चों को मोटा और तंदुरुस्त बनाना हो, तो इस मीठी दवा को मँगाकर पिलाइए। बच्चे इसे ख़ुशी से पीते हैं। दाम फ़ी शीशी ॥) ; डाक-ख़र्च ॥)

पूरा हाल जानने के लिये सूचीपत्र मँगाकर देखिए। मुफ़्त मिलेगा।

ये दवाइयाँ सब दवा बेचनेवालों के पास भी मिलती हैं।

सुख-संचारक कंपनी, मथुरा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फ़्रेंसी कटार स्टील का लोहा

हरएक मनुष्य को इस समय अपनी रक्षा के हितार्थ रखनी चाहिए। कटार खटकेदार का म्यान मख़मल का है पेटी का दाम १।) गुप्ती का दाम ४) रु० कटार सीप के मूठ की लंबाई इंच ११ का ३।) रु० कटार सादा निकिल की मूठ की लंबाई इंच १५ का ३) इंच १२ का २।) इंच ६ का १।।) रु० डा० ख़० ।) १) रु० टिकट लिफ़ाफ़ा में भेजिएगा।

बिजली की (तांत्रिक) अँगूठी

सुनहरी जालीदार पहनने से रोग व दरिद्रनाश शरीर हृष्ट-पुष्ट होकर लक्ष्मी आगमन व वशीकरण व दिल की कमज़ोरी व बवासीरवालों को फ़ायदा होता है। दाम ३ का ।।।) ८ का १।) १४ का २।) खर्चा ।=)

पता—जे० डी० मूंदड़ा बी ७, मथुरा

बच्चों की ताक़त बढ़ानेवाला
सारे हिंदुस्थान में मशहूर

जेन्स बालामृत

यह बच्चों को मोटा-ताज़ा और तंदुरुस्त बनाता है। बदन भरकर वज़न बढ़ाता है। हाज़मा बहुत अच्छा करता है। मीठी होने से बच्चे इसे बड़े चाव से पीते हैं। बच्चों को मज़बूत बनाने के लिये इससे बढ़कर अन्य कोई दवा नहीं है। मूल्य एक शीशी ।।।); डाक-महसूल अलग।

विशेष हाल जानने और अन्य दवाओं के लिये सूचीपत्र मँगाकर देखिए।

पी० एस्० जेन्स ऐंड को,
नं० ४, चाहचंद, इलाहाबाद

एजेंट—मल्लिक ऐंड संस,
नं० १, अमीनाबाद-पार्क, लखनऊ

हिंदी क़ानून की पुस्तकें

क़ानून दीवानी ॥=), क़ानून फ़ौजदारी १), ताजीरातहिंद १॥), बृहत् क़ानून-दर्पण ५५ क़ानूनों का सार १), क़ानून रेलवे १), क़ानून पुलिस ॥), डाकख़ाना ॥), गोद ॥), क़ानून शहादत १), रजिस्ट्री ॥), ख़ानदान मुशतर्की ॥), मियाद समाअत ॥), पंचायत ऐक्ट ॥), तार ।), जुआ ।), प्रेस ॥), नया क़ानून ज़ाप्ता आराज़ी १) रु०।

विना उस्ताद के पढ़ानेवाली किताब इँगलिश-टीचर १), उर्दू-टीचर ॥), टेलीग्राफ़-टीचर ॥), बंगाल का सच्चा जादू १)

हर तरह के ताले और मुहरें भी बनते हैं।

पता—आर० एल० जैन कंपनी
नं० ११, जैन स्ट्रीट, अलीगढ़ (यू० पी०)

मुफ़्त! मुफ़्त !! मुफ़्त !!!

सिर्फ़ एक महीने के लिये!

एक रिस्टवाच के ख़रीदार को एक जर्मन बी टाइमपीस मुफ़्त। क़ीमत ६) मात्र। गारंटी चार साल की। रेशमी, मख़मल या लास्टिक का एक पट्टा भी मुफ़्त।

डाक-ख़र्च ।) अलग।

मिलने का पता—

The Honesty Watch & Co.
Jakaria Masjid
English Market,
Bombay No. 3.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दुश्मन, दग़ाबाज़, चोर और हिंसक
जानवरों से बचाव करने का
बढ़िया साधक

'एयर' पिस्तौल

लैसंस (परवाने) की ज़रूरत नहीं। क़ीमत सिर्फ़ ४) रुपए। ४० गोलियाँ साथ। वी० पी० खर्च ६ आने अलग। गोलियाँ ४० का मूल्य १ रुपया।

THE NOVELTY STORE,
No. 31, BOMBAY. 2

स्नान करने ही से शक्ति आती है!
(Bath Tonic)

"ओ ही ओ"

मुसाफ़िरी में विविध प्रकार के जल-वायु के सेवन से तथा बड़े-बड़े शहरों में ऊँचे-ऊँचे मकान की सीढ़ियों पर चढ़ने-उतरने से या और कोई काम करने से आई हुई थकावट को "ओ ही ओ" दूर करता है। कमज़ोर नवयुवकों को नया जीवन देता है, शरीर के रग-रग में नई ताक़त और जोश भर देता है, समय पड़ने पर इससे बड़ा आनंद मिलता है, ज़िंदगी का पूरा मज़ा आता है।

न दवा की ज़रूरत न बूटी की आवश्यकता। केवल 'ओ ही ओ' से स्नान करने से ही सब बातें होती हैं। मूल्य फ़ी बोतल १॥), डाक-महसूल अलग।

MAKE OF:—O, LAND. A.

Sole Indian Representative
BHALL & KIT.

Dhandhuka
&
Kalbadevi Post
Bombay, 2.

अवसर हाथ से जाने न दें

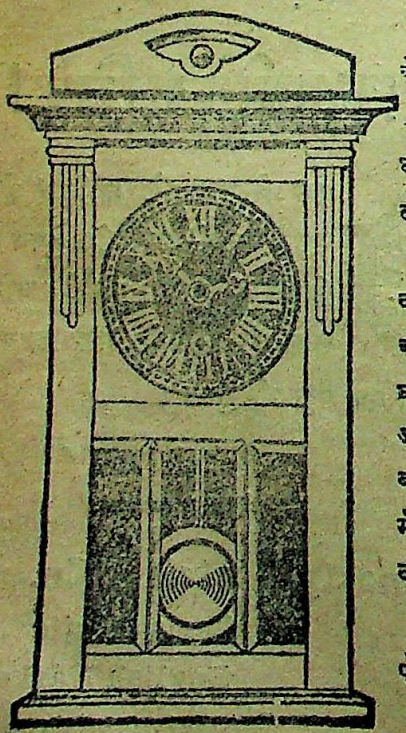

केवल कुछ दिनों के लिये हमारी नई ग्रेनाइट की दीवाल-घड़ी सिर्फ़ ३) में दी जायगी।

पेंडुलम से चलने-वाली है। ३ साल की गारंटी हरएक घड़ी के साथ दी जाती है। कुछ ही बची हैं। फ़ौरन् मँगाइए।

वी० एस० वाच
ऐंड कंपनी,
पो० बॉ० १०१,
मदरास.

उपहार ! उपहार !! उपहार !!!

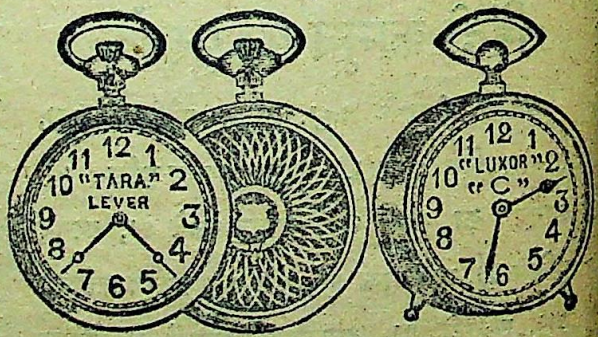

"C" Regd; टाइमपीस मुफ़्त

"तारा" लीवर पॉकेटवाच (रजिस्टर्ड), मूल्य ५) सिर्फ़ पर गारंटी ५ वर्ष के ख़रीददार को १ (रजिस्टर्ड) टाइमपीस बिलकुल मुफ़्त। अनमोल मौक़ा है। अभी ऑर्डर दीजिए और फ़ायदा उठाइए। तादाद मुक़र्रर है। सच्चा टाइम देती है। मूल्य उपहार के सहित केवल ५)

आज ही पत्र लिखिए—

कैप्टेन वाच कंपनी
पो० बॉ० नं० २६५,
मदरास।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

५००) पाँच सौ रुपए नक़द इनाम अगर नक़ली हो !

असली ! सचित्र !! प्राचीन !!!

काश्मीरी कोकशास्त्र

श्रीमान् पंडित कोकाजी महामंत्री महाराज काश्मीर-रचित, जिसमें पद्मिनी, चित्रिणी, शंखिनी और हस्तिनी चारों प्रकार की स्त्री व पुरुषों ८४ रंगीन तस्वीरें (फोटो) तथा ८४ आसनों का मनोहर (दिलचस्प) हाल, गर्भ में पुत्र और पुत्री की पहचान, बाँझ स्त्री का इलाज, अपनी स्त्री तथा अपने आपको आयु भर सुंदर तंदुरुस्त और जवान बनाए रखना, तमाम क़िस्म की नामर्दियों का इलाज, संतान न होती हो तो ज़रूर हो, स्त्री और पुरुषों की गुप्त बीमारियाँ और उनका इलाज, वशीकरण मंत्र आदि बहुत-सी बातें हमारी असली किताब काश्मीरी कोकशास्त्र में दर्ज हैं, जिनका यहाँ लिखना उचित नहीं। यह वही किताब है, जो १००० रु० ख़र्च करने पर भी नहीं मिल सकती थी। बहुत परिश्रम के साथ हमने इसको संस्कृत से हिंदी में छपवाया है। एक प्रति पुस्तक मँगाकर परीक्षा करें। क़ीमत सिर्फ़ तीन रुपए, अगर असली न हो तो दाम वापिस लो।

मिलने का पता—मैनेजर—असली कोकशास्त्र हाउस, (S.) लुधियाना (पंजाब)

१०००) रुपया माहवार शर्तिया कमा लो !

व्यापार-संग्रह

इस पुस्तक में ५२८ हुनर ऐसे छपे हैं जिनमें से एक भी अपने मतलब का चुन लिया जाय, तो १०००) रुपए महीना कमाए जा सकते हैं। मसलन दंदानसाज़ी, कुश्ते बनाना, बाल उड़ाने का तेल, पाउडर साबुन बाल काले करने का अँगरेज़ी ढंग का ख़िज़ाब, और बाल उमर भर न पैदा होने का नुस्ख़ा, मूछ बढ़ाने का तेल, हीरा मूंगे बनाना, शीशा साफ़ करना, पत्थर जोड़ना, मोम-बत्ती, शोरा गंधक के गिलास आतशबाज़ी, हर तरह के साबुन इत्र तेल फुलेल, सब रंगों के कपड़े रँगना, अँगरेज़ी ढग के खाने डबल रोटी बिस्कुट मिठाई, विलायती पानी, अचार, मुरब्बे, चट-नियाँ तरह-तरह की बीमारियों के इलाज और नुस्ख़े १०८ बीमारियों की एक दवा का नुस्ख़ा, सुरमे दियासलाई बनाना, गुलकंद शर्बत सत तेज़ाब बनाना, सिगरट रबड़ की मुहरें, कपूर रंग, रोशनाई, मृतक दर्शनी अँगूठी, तांबूल बिहार केशर कस्तूरी, पिपरमेंट अर्क कपूर, भीमसेनी कपूर, अगरबत्ती सब प्रकार के सुगंधित तेल व अर्क सोडावाटर बर्फ़ आदि सैकड़ों प्रकार की दस्तकारी सिखाने की तरकीबें और मेस्मरेज़म विद्या की विधि भली भाँति लिखी हैं। इस पुस्तक द्वारा अनेक हुनर प्राप्त कर हज़ारों रुपया पैदा कर सकते हो। ऐसी पुस्तक अभी तक कहीं नहीं छपी है अवश्य मँगाइए। क़ी० ३)

पता—सर्वहितकारक कंपनी (S.) लुधियाना (पंजाब)

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

SANYASI ASHRAM SARGODHA'S

चंद्रावली

रजिस्टर्ड

यह भारत के प्राचीन गौरव की एक स्मारक तथा आश्रम की प्राचीन ऋषियों की मौरूसी संपत्ति है, जो स्त्रियों के भिन्न-भिन्न प्रकार के मासिकधर्म-संबंधी तथा अन्य व्यतिक्रमों से उत्पन्न हुए बंध्यात्व (बाँझपने) को समूल नाश कर देती है। इसका व्यवहार उस उन्नति की आशा की एक शर्तिया झलक दिखाता है, जो भारत के गौरव के दिनों में देशी औषधियों से प्राप्त थी। नीचे लिखे हुए प्रशंसा-पत्रों से हमें आशा है, आप यह मालूम कर सकेंगे कि व्यवहार-कर्ताओं को इसका गुण कहाँ तक प्रतीत हुआ है—

डॉ० प्रतापसिंह एम्० बी०, बी० एस्०, नौशहरा *Via Khusab, N. W. Ry.* लिखते हैं कि—"जैसा कि आपको मालूम है, मेरे ब्याह के १३ वर्ष बाद तक मेरी स्त्री के मासिकधर्म ठीक नहीं होता था। कभी होता ही न था, और होता भी था, तो असह्य वेदना के साथ। इसी के फल-स्वरूप उसके कोई बच्चा भी नहीं हुआ। इतना अधिक समय हो जाने का मुझे दुःख न था; परंतु सोच था अपने भविष्य के अंधकार का। मेरी स्त्री की बेचैनी की बाबत तो कहना ही व्यर्थ है। ख़ैर, दैव-प्रेषित आपकी चंद्रावली मुझे मिली। पहली बोतल के पीने से ही उसकी मासिकधर्म-संबंधी सभी बीमारियाँ दूर हो गईं, और आश्चर्य तो यह हुआ कि उसके गर्भ के भी लक्षण प्रतीत होने लगे। मैंने इसी सिलसिले में एक बोतल और भी पिलाई, जिससे गर्भ पक्का हो गया।

मैं इसके लिये आपका बड़ा कृतज्ञ हूँ, क्योंकि मैंने अपनी स्त्री की दवा-दारू में कोई बात उठा न रक्खी थी। और, यहाँ तक कि उसके गर्भाशय का ऑपरेशन भी करवाया था। परंतु उससे रत्ती-भर भी फ़ायदा न हुआ। अब तो मैं यही कहता हूँ कि चंद्रावली ने ही मुझे पुत्र-रत्न प्रदान किया है।"

डॉ० ज्ञानसिंह एम्० बी०, बी० एस्०, *Incharge Guru Ram Das Hospital* अमृतसर लिखते हैं कि—"सन् १९२४ तक, अर्थात् सन् १९१५ से मेरी शादी के ९ वर्ष बाद, मेरी स्त्री के कोई बच्चा नहीं हुआ। इसका कारण जो हम लोगों को मालूम होता था, मेरी स्त्री की मासिकधर्म की ख़राबी थी। मैंने इसको ठीक करने के लिये अपनी कोई दवा उठा न रक्खी। बाहरी दवाओं का भी ख़ासा प्रयोग किया गया, और यहाँ तक कि लाहौर के सुप्रसिद्ध डॉक्टर कर्नल टेट Col. Godfrey Tate, M. B., Ch. B. (Dub. Univ.), I. M. S., से ऑपरेशन भी करवाया। इससे भी कोई लाभ नहीं हुआ, और दो वर्ष व्यतीत हो गए।

इसी अवसर में आपकी चंद्रावली की प्रशंसा एक मित्र द्वारा मेरे सुनने में आई। मैंने तीन बोतलें मँगाकर सन् १९२३ की अंतिम तिमाही में अपनी स्त्री को इस्तेमाल कराईं। दैव-कृपा से उसी से उसके गर्भ रह गया, और इस समय एक पूर्ण स्वस्थ और सुंदर बालक उत्पन्न हुआ है। मैं चंद्रावली की भूरि-भूरि प्रशंसा करते हुए अपने हताश भाइयों से इसकी सिफ़ारिश करता हूँ।"

[श्रीयुत जे० एस्० बतरा, बैंकर, बख़रबार (शाहपुर) से लिखते हैं]

"मेरा प्रथम ब्याह २० वर्ष की अवस्था में, संवत् १९५२ में, हुआ था। मेरी स्त्री ब्याह के उपरांत १९ वर्ष तक जीवित रही। उसके एक बच्चा हुआ था, जो केवल ७ मास तक जीवित रहा। इसके बाद मेरा दूसरा ब्याह संवत् १९६७ में हुआ; लेकिन मेरी यह स्त्री कदल ४ वर्ष तक ही जीवित रहकर संवत् १९७१ में उसका भी प्राणांत हो गया। ४ वर्ष बाद मैंने तीसरी शादी की। इस समय मेरी अवस्था ४४ वर्ष की थी, और मेरी स्त्री युवा होने के साथ ही पूर्णतः स्वस्थ और सुंदर थी। ४ वर्ष आशा करते-करते व्यतीत हो गए, परंतु कोई बच्चा न हुआ। अब मुझे यह शंका हुई कि शायद मेरी स्त्री कोई अंदरूनी मर्ज़ से बीमार है, और तदनुसार हमने उसे दो दाइयों को दिखलाया। अंतिम वर्ष जब भलवाल (*Bhalwal*) के हकीम पंजाबसिंह की दवाइयों से भी कोई लाभ न हुआ, तो हमारी सभी आशाओं पर पानी फिर गया। इसी निराशा की अवस्था में मुझे ख़बर मिली कि आपकी चंद्रावली अनेक स्त्रियों के बाँझपने को नाश कर चुकी है। हमने जहाँ तक जल्दी हो सका, उसकी दो बोतलें ख़रीदीं। मेरी स्त्री एक ही बोतल व्यवहार में लाई थी कि उसके गर्भ रह गया। दूसरी आज भी मेरी अलमारी में उसी तरह रक्षित है। आश्रम के प्रति मेरी तथा मेरी स्त्री की कृतज्ञता का भाव, जिसने चंद्रावली के द्वारा ४१ वर्ष की आयु में पुत्र-रत्न-लाभ कराया है, और फिर भी तीसरी स्त्री से, समझा ही जा सकता है, लिखा नहीं जा सकता।"

मूल्य १ बोतल ५), २ बोतलें ९), तीन बोतलें १३) और ४ बोतलों का दाम १६) है। पैकिंग और वी० पी० ख़र्च अलग। बड़ा सूचीपत्र लिखने पर मुफ़्त भेजा जाता है।

मिलने का पता—संन्यासी आश्रम (S.) Sargodha (India)

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रचारकों की आवश्यकता

हमें हिंदी की सर्वश्रेष्ठ साहित्यिक और सामाजिक पत्रिका 'सुधा' तथा अपने प्रकाशित किए हुए सुंदर साहित्य का प्रचार करने के लिये (पंजाब, यू० पी०, बिहार, सी० पी० आदि में) सुशिक्षित स्त्री-पुरुषों की आवश्यकता है। आवेदन-पत्र में योग्यता, अनुभव और आयु का स्पष्ट उल्लेख होना चाहिए।

पत्र-व्यवहार करने का पता—

संचालक सुधा, अमीनाबाद-पार्क, लखनऊ

शीघ्रता कीजिए नहीं तो पछताइएगा

केवल विवाहिता स्त्रियों के लिये !

सोहागरात या बहूरानी को सीख

लाला लाजपत रायजी

लिखित भूमिका सहित

लेखक—पंडित कृष्णकांतजी मालवीय

दर्शनीय एक रंग और एक तिरंगे चित्र से सुशोभित। पृष्ठ-संख्या प्रायः ५००। पुस्तक को पंडितजी ने अपनी पुत्र-वधू के लिये लिखा है, और पत्र-वधू को ही पुस्तक समर्पित भी की गई है। वैवाहिक जीवन को सुखमय बनाने के लिये जितनी बातें हो सकती हैं, प्रायः सब ही का इसमें समावेश है, साथ ही वैवाहिक जीवन में जिन बातों का ज्ञान नितांत आवश्यक है, उनका भी इस पुस्तक में समावेश है। पुस्तक के सर्व-श्रेष्ठ होने के संबंध में हमारी समझ में इतना ही कह देना काफी है। पुस्तक की विषय-सूची इस प्रकार से है:—[१] विवाह-संबंधी बातें [२] सोहागरात [३] पुरुष और स्त्री [४] पुरुष हैं क्या ? [५] अधिकार का रहस्य [६] जड़-मनुष्य पर अधिकार [७] शरीर आकर्षक कैसे हो [८] शरीर का सफाई [९] भोजन कैसा हो [१०] वसन कैसा हो [११] शृंगार [१२] रजोधर्म [१३] हृदय पर अधिकार [१४] मानव-मस्तिष्क पर अधिकार तथा स्त्री-जीवन का उद्देश्य [१५] प्रेम की ग्रंथि [१६] लड़का या लड़की [१७] संतान-निग्रह [१८] बच्चों को बचाओ [१९] मित्रों का चुनाव [२०] समाज में व्यवहार [२१] सतीत्व [२२] आदि-शक्ति।

परिशिष्ट भाग में

[१] पतिव्रता-चरित्र (काम-सूत्र से) [२] लक्ष्मी किन स्त्रियों के पास निवास करती हैं (महाभारत से) [३] स्त्रियों के नाश के कारण (रति-रहस्य तथा अनंग-रंग से) [४] गर्भ में लड़का या लड़की (सुश्रुत से) [५] रजस्वला के नियम [६] व्यायाम-शिक्षा [७] स्त्री की महत्ता—(शकुंतला-दुष्यंत की बात-चीत, महाभारत से) [८] रानी कलावती की सोहागरात की कथा स्कंद-पुराण से आदि-आदि।

पुस्तक में "काम-सूत्र," "रति-रहस्य," "अनंग-रंग," "कंदर्प-चूड़ामणि" तथा पश्चिमीय विशेषज्ञों के उपदेश भरे पड़े हैं। मूल्य सादे कवर की पुस्तक का ३), सजिल्द ३।)

सात दिसंबर तक जो ग्राहक-श्रेणी में नाम लिखा लेंगे और वी० पी० भेजने का आर्डर भेज देंगे उनको पुस्तक पौन-मूल्य में ही दी जायगी। प्रत्येक गृह में पुस्तक होनी चाहिए, प्रत्येक विवाहिता स्त्री को इस पुस्तक को पढ़ना चाहिए और प्रत्येक पति को, जो अपने वैवाहिक जीवन को स्वर्गीय बनाना चाहता हो, इस पुस्तक को अपनी सह-धर्मिणी को पढ़ा देना चाहिए। पुस्तक डबल क्राउन १६ पेजी में बहुत ही सुंदर छापी जा रही है और दस दिन में प्रकाशित हो जायगी।

मैनेजर अभ्युदय प्रेस, प्रयाग

आर्डर में सुधा का उल्लेख अवश्य करें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फ़ायदा न हो तो दाम वापस

हम इससे अधिक और क्या आपको विश्वास दिला सकते हैं कि अगर फ़ायदा न हो, दाम वापस देंगे।

ताक़त की अनुपम दवा

इस औषधि के सेवन से शरीर में अपूर्व ताक़त पैदा होती है। पानी के सदृश पतली धातु को भी दही की तरह गाढ़ा कर देती है, जिसके कारण बलहीन पुरुषों में स्वाभाविक युवावस्था की शक्ति उत्पन्न होती है। सुस्ती स्वप्नदोष, धातुछिजता, दुबलापन, वीर्य का कम उत्पन्न होना और उसका पानी की तरह पतला होना, वर्षों का पुराना प्रमेह, पेशाब के साथ गोंद की भाँति चिकना व रक्त की हड्डी का खार गिरना, पाख़ाना फिरते समय वीर्य का निकल जाना, पेशाब लाल, गँदला, कभी-कभी चूने की तरह सफ़ेद होना, दिमाग़ की कमज़ोरी, शिर का घूमना तथा दर्द करना, बात शीघ्र ही भूल जाना, कमर और पिंडलियों में दर्द, मन में चिंता व शोक होना, भूख कम लगना, बदहज़मी, खट्टी डकारों का आना, उठते-बैठते आँखों के सामने पीली-पीली चिनगारियाँ-सी उड़ती दिखाई पड़ना इत्यादि सर्व रोग तथा उठती हुई जवानी के जोश में अपने हाथों जवानी का सत्यानाश करने से पैदा की हुई सब ख़राबियाँ कुछ ही दिनों के सेवन से दूर होकर शरीर में नया ख़ून, नई ताक़त और हर काम को पूरा करने के लिये पूर्ण उत्साह और संतानोत्पत्ति की पूरी योग्यता पैदा होती है। इस दवा में कोई कुश्ता नहीं है, परंतु ताक़तवर इतनी है कि कोई दवा, कोई माजून इसके बराबर लाभदायक नहीं हो सकती। जिन मनुष्यों को वैद्यों तथा हकीमों और डॉक्टरों ने जवाब दे दिया था, वह भी इसकी बदौलत आज युवावस्था का सच्चा आनंद प्राप्त कर रहे हैं —२१ ख़ूराक का मूल्य सिर्फ़ २॥) ढाई रुपया।

स्त्री-संजीवन चूर्ण

यह अनुपम दवा स्त्रियों के मासिकधर्म-संबंधी सब ख़राबियों को दूर करने और प्रदर, वायुगोला, भूख कम लगना, शरीर दुबला, पीला तथा निर्बल होना, शिर, कमर, रीढ़ और पिंडलियों में दर्द का होना, हथेली और पैरों के तलवों में झंझनाहट, दिल की उदासी, मासिकधर्म का कष्ट से होना, गर्भ न ठहरना, सिर्फ़ लड़कियाँ ही पैदा होना आदि सब दोषों को दूर करता है। मासिकधर्म ठीक समय और ठीक मात्रा में होता है। बुढ़ापे में युवावस्था प्राप्त कराता है। इसके सेवन से अवश्य पहले महीने में गर्भ ठहरता है। सैकड़ों निराश रोगी स्त्रियाँ नीरोग और पुत्रवती हो चुकी हैं। मूल्य ३), डाक-महसूल ।=)

कोकिला-कंठ

इस दवा का नाम है जो लेक्चरार, स्पीकर, रामायण तथा अन्य कथावाचकों के लिये अत्यंत लाभदायक है। थोड़े-से पान में खाइए, आवाज़ सुरीली होकर कोयल के सदृश मनोहर, मधुर, रसीली, रँगीली और मनमोहनी हो जाती है। खाते ही गला साफ़ करती है। कफ़ को दूर करती है। नाटक-मंडलियों, रामलीला, रासलीला, आल्हा कहनेवालों या थिएटर करनेवालों को अपने पास रखना चाहिए। मूल्य २) डाक-महसूल ।=)

गुल्शन-बहार तेल

इस तेल के शिर में लगाते ही ख़ुशबू से आपकी तबियत मस्त हो जायगी और भीनी-भीनी ख़ुशबू से पास बैठनेवालों का दिल ख़ुश और लोट-पोट हो जायगा। तेल लगाकर आप जिस रास्ते निकल जायँगे, वहाँ के बैठनेवालों को आश्चर्य होगा कि यह अजीब बहारदार, मनोहर ख़ुशबू किस बग़ीचे से आ रही है। इसके सेवन से शिर घूमना, दिमाग़ की कमज़ोरी, दर्द सिर, बाल झड़ना, कमसिनी में बाल पकना, ख़ुश्की रहना आदि रोग जल्द अच्छे होते हैं। बालों को बढ़ाकर घुँघरवाले व लच्छेदार बनाता और दिमाग़ में तरावट लाता है। दो-एक महीने बराबर लगाने से स्त्रियों के बाल कमर तक बढ़ जाते हैं। सबसे बड़ा गुण यह है कि बुढ़ापे से पहले जो बाल सफ़ेद हो जाते हैं, उनको भी स्याह करता है। मूल्य फ़ी शीशी १॥)

सुंदरता की दवा

दो ही तीन सप्ताह यह दवा मलने के बाद चेहरा गुलाब के सदृश सुंदर, कमल की तरह प्रफुल्लित होकर कुंदन की भाँति चमकने लगता है। चेहरे के तमाम दाग़, धब्बे, झाइयाँ, मुँहासे, खाल फटना, रूखी ख़ुश्की, चुरचुरापन आदि सब मिट जायँगे। अगर काली और बदसूरत स्त्री भी लगा ले, तो सेवन के बाद पहचाननेवाले धोखा खायँगे। रानी-महारानियों ने पसंद किया है। मूल्य फ़ी शीशी २), डाक-महसूल ।=)

मिलने का पता—मैनेजर अज़मतुल-इलाज औषधालय, (सु) लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection. Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रोग शत्रु पर विजय का डंका

हिन्दुस्तान और विदेशों की रिपोर्ट से साबित

सरकार से रजिस्टर्ड

पीयूषसिन्धु

कफ, खांसी, हैज़ा, दमा पोंचश, पेटदर्द, नज़ला बुख़ार, बालकोंके हरे पीले दस्त, आदि रोगों की स्वादिष्ट और बिना अनोपान की अचूक दवा है। क़ीमत फ़ी शीशी ॥) आठ आ. वी. पी. ख़रच एक से ३ तक ।≠) आना १२ शीशी का दाम सिर्फ़ ४≠) चार रु. तीन आना डांक ख़रच माफ़

हाय! खुजाते खुजाते मर चले

तो हम क्या करें हमने तो पहिले ही कहा था कि दादपर 'दादका काल' लगादो वरना रोओगे।

दाद का काल

पुरानेसे पुराने व कठिनसे कठिन दादको बिना किसी कष्ट व जलन के २४ घंटे में जड़से खोने वाली मशहूर दवा है क़ी. फ़ी शी. ।) ख़र्च १से३ तक ।≠) १२ शी.का मू. १॥।-) ख़र्च माफ़

पता ☛ सुन्दर शृङ्गार महौषधालय मथुरा।

शीत-काल में सेवन होगा!

काम रत्न पुष्टई

अतीव पौष्टिक, बलवर्द्धक, वीर्यजनक, शरीर को तय्यार करने में अमोघ है। एक बार अवश्य परीक्षा करें। स्वादिष्ट और जाड़े में जलपान योग्य है। मूल्य प्रति सेर ४) ख़र्च माफ़।

पता—

मेसर्स अमृत लहरी कंपनी

पोस्ट कुरथा, (गया)

विधारा जंगल की जड़ी है!

रेचक और बलकारक है। दमा, बवासीर तथा धातुपुष्टि की एक ही औषधि है। विधारा और अश्वगंधा यदि नित्य सेवन किया जाय, तो मनुष्य अपने सब रोगों को दूर कर सकता है। और, किसी समय में बलवान् हो जायगा।

मूल्य २ पैसे की एक ख़ूराक

साँवलदास खन्ना चौक, प्रयाग

गवर्नमेंट से रजिस्टर्ड ट्रेडमार्क जौहर शिलाजीत।

पानी के समान पतली और मलीन धातु को श्वेत तथा गाढ़ा करके बीसों प्रकार के प्रमेह अर्थात् पेशाब के पहले या पीछे धातु जाना, धधरा लगना, पथरी, सुज़ाक, मूत्र-रोग, स्वप्नदोष, शीघ्रपतन, धातुक्षीणता, निर्बलता आदि वीर्य संबंधी समस्त रोगों के दूर करने में रसायन है। तथा मंदाग्नि, जीर्णज्वर, दर्द, गुर्दा, चोट, गठिया, खाँसी, दमा, कफ, क्षय, क्रमी, पांडु, मृगी, उन्माद, वात, बवासीर, कुष्ट आदि भयंकर रोगों में परम लाभदायक है। एवं स्त्रियों के मासिक दोष प्रदर, प्रसूत संबंधी रोगों को नष्ट करती है। मूल्य ४० दिन की ख़राक ५ तोला ४) रु०, १० तो० ७॥) रु० डाक-ख़र्च पृथक्।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बाज़ार से आधा दाम ! एजेंटों को भरपूर कमीशन !!
आदर्श औषधालय मथुरा का बनाया—गवर्नमेंट से रजिस्ट्री किया हुआ

आनंदसिंधु मू० ।) आ०

शी.शी. का नाप एक खुराक ३२ दवा वह गुण विशेष

लेबिल तिरंगा, मोल आधा,

मूल्य फ्री० शी० ।) आ०, ६ शीशी १।) डाक-खर्च १ से ६ शीशी तक ।।) आ०, १ दर्जन २।) २ दर्जन ४।) ३ दर्जन ६) ६ दर्जन ११) और १२ दर्जन २०) रु०

डाक व रेल खर्च सब माफ़

यह वही दवा है—जो स्वादिष्ट व सुगंधित बिना अनुपान की व असली है। जिसकी केवल पानी में बूँदें डालकर देने से—कफ, खांसा, हैज़ा, दमा, पेचिश, पेट-दर्द, संग्रहणी, इन्फ़्लूएंज़ा, बच्चों के हरे और पीले दस्त, दूध पटकना, क़ै करना आदि रोगों का अचूक और तत्काल गुण होता है।

मौक़ा न चूकिए! आजही एजेंट बनिए!! और लाभ उठाइए!!!

नोट—एजेंट को नोटिस, बोर्ड, उपहार दश के साथ ही मुफ़्त भेजे जाते हैं।

मँगाने का पता:—

मैनेजर आदर्श औषधालय, मथुरा

कर्मवीर

संपादक—पं० माखनलाल चतुर्वेदी।

राष्ट्रभाषा का, राष्ट्रीय भावों से भरा हुआ साप्ताहिक पत्र।

साहित्य, राजनीति, काव्य, आलोचना, समाज-सुधार एवं ऐतिहासिक-आर्थिक प्रश्नों की तर्कशुद्ध कड़ी आलोचना करनेवाला कर्मवीर

मध्यभारत—मध्यप्रांत के कोने-कोने में पहुँचता है। राष्ट्रभाषा हिंदी का वह गौरवपूर्ण, श्रेष्ठ साप्ताहिक पत्र है।

लगभग १०,००० पाठकों द्वारा प्रति सप्ताह पढ़ा जाता है।

वार्षिक मूल्य ३॥), प्रति शनिवार को प्रकाशित। जन्म के ६वें तथा खंडवा-संस्करण के ३रे वर्ष में इसकी पृष्ठ-संख्या रायल १६-पेजी कर दी गई है।

अकेले कर्मवीर के पढ़ने से आपको संसार की सभी बातें ज्ञात होती रहेंगी।

नमूना मँगवाइए—

मैनेजर, कर्मवीर खंडवा, सी० पी०

आपको परमात्मा की क़सम मुझको ज़रूर पढ़िए

"बरको वैदिक मुहम्मदशाही तिला"

यह वही नुस्ख़ा है, जिसे देहली के रँगीले बादशाह मुहम्मदशाह के लिये उस समय के नामी हकीमों और वैद्यों ने मिलकर बनाया था। सौभाग्य से वह नुस्ख़ा हमारे हाथ आ गया। यह तिला इस क़दर निकल रहा है कि लखनऊ में जो यूनानी हिकमत का सेंटर हो रहा है, इस दवा को छोड़कर और दवा नहीं बिकती। बड़े-बड़े वैद्य, डॉक्टर और हकीम इस दवा को अपने बीमारों पर इस्तेमाल करके नेकनामी और शुहरत उठा रहे हैं, और बाज़ लोग ५०) एक शीशी का दाम वसूल करते हैं। यह दवा बिलकुल सच्ची है कि इससे बेहतर दुनिया में और कोई दवा नहीं है। २०-२०, ३०-३० बरस के नाउम्मेद सुस्ती, कमज़ोरी, हर क़िस्म की नाताक़ती, नामरदी वग़ैरह के मरीज़ आज चैन कर रहे हैं। विशेष इंद्रिय की कुल ख़राबियाँ जाती रहती हैं। बिजली की ताक़त होने की वजह से चंद घंटों में अपना असर दिखाता है। और, यहाँ तक ताक़त पैदा करता है कि आदमी ख़ुद हैरान रह जाता है। २१ रोज़ तक स्त्री से परहेज़ रखिए, चाहे दवा का असर आपको कितना ही मजबूर करे। क़ीमत एक शीशी २॥), महसूल ।=)। अगर इस तिला से फ़ायदा न हो, या १० साल के बाद बीमारी लौट आए, तो क़ीमत वापस या दुबारा, तिबारा मुफ़्त भेजने की शर्त करते हैं। क्योंकि झूठे दवाफ़रोशों ने भरोसा खो दिया है।

मैनेजर—अज़मतुल-इलाज दवाख़ाना (सु) लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

केवल बतलाने के दाम लेते हैं—खेल मुफ़्त ही दे देते हैं।

इन खेलों का आनंद मँगाकर देखने ही से आवेगा, खिलाड़ी इनको दिखाकर अमीरों से सैकड़ों रुपए क्षण-भर में बटोर लेते हैं और धनी लोग सभा में स्वयं खेल करके सबको मोहित कर सकते हैं। छपा हुआ विधिपत्र हर खेल के साथ भेजेंगे। २) से कम का पार्सल न भेजेंगे। १०) के खेल मँगाने से डा० खर्च माफ़, सब एकदम मँगाने से १०) सैकड़ा कमीशन। तमाम खेलों के आर्डर के साथ १०) पेशगी भेजें।

बैठिए जड़ा शाफाई शे

खेल नं० १—यह ताश के पत्ते पहली बार हाथ फेरने से इक्के, दूसरी बार बाली, तीसरी बार पंजे बन जाते हैं; ॥)

नं० २—ख़ाली पत्ते दिखाकर हाथ फेरो अट्ठे बन जायँगे, फिर हाथ फेरो तो ख़ाली; ॥)

नं० ३—इस ताश को सबके सामने छोटो और फिर खींच लो बाजा बन जायगा ॥)

नं० ४—ताश के पत्ते दिखाकर हाथ फेरो, छोटे हो जायँगे, फिर और छोटे, फिर और छोटे, फिर गुम हो जायँगे। २)

खेल नं० ५—एक रंग की बेगम है, जो सबके सामने दूसरे रंग की हो जायगी, फिर वही हो जायगी; ॥)

खेल नं० ६—ताश हाथ में रक्खो, कोई आदमी एक पत्ता देखकर बीच में मिला दे, उसी के आवाज़ देने पर पत्ता कूदकर बाहर आ जायगा अत्युत्तम खेल है। १)

खेल नं० ७—पहले कुछ पत्ते दिखाकर ताश में रखकर ग्लास में रख दें आवाज़ देने से यह बारी-बारी निकलेंगे। २॥)

नं० ८—ताश का एक पत्ता बोतल के मुँह पर खड़ा करके ऊपर ग्लास रख दें। १)

खेल नं० ९—ताश फेंटते-फेंटते बीच में से फूल या मेवा निकल आता है। १॥)

खेल नं० १०—ताश का नहला है, सबको दिखा दो पंजा बन जायगा। ॥)

खेल नं० ११—यह एक थैला है सबके सामने इसमें ग्लास रक्खें, जो झटका देने से गुम हो जायगा और फिर उसी में से निकलेगा। १॥)

खेल नं० १२—एक टीन की मेज़ है, सबके सामने एक पत्ता जलाकर या फाड़कर रक्खें, साबित हो जायगा। १॥)

खेल नं० १३—ख़ाली डिब्बे में अंडा डालो। अंडे के बदले कबूतर निकलेगा। २)

खेल नं० १४—सुर्मेदानी की-सी एक डिबिया है, इसमें एक गोला है, यह गोला आज्ञा पाते ही कभी अंदर से गुम होगा और कभी बीच ही से निकल आता है। १॥)

खेल नं० १५—इस डिबिया में पूरे ताश रक्खें, लेकिन उसी समय रूमाल बनकर निकलेंगे। १॥)

खेल नं० १६—एक रंग के दो जुड़े हुए रेशमी रूमाल हैं हाथ फेरने से रंग बदल जायँगे। ५)

खेल नं० १७—रूमाल में रुपया लपेटकर किसी के हाथ में दें रूमाल ख़ाली हो जायगा। और फिर रूमाल पकड़नेवाले की जेब से रुपया निकलेगा जिस पर बड़ा मज़ाक़ होगा। १)

खेल नं० १८—एक बैल है जो क्षण-भर में कई शक्लें बदलता है। १॥)

खेल नं० १९—लकड़ी का गेंद धागे में पिरोया हुआ आज्ञानुसार चलता और खड़ा होता है। ॥)

खेल नं० २—कपड़े की थैली है कोई चीज़ डालो गुम हो जायगी फिर आज्ञा पाने पर अंदर से ही निकलेगी। ॥)

खेल नं० २१—दियासलाई की डिबिया सबको भरी हुई दिखाओ और फिर उसी समय ख़ाली। ॥)

खेल नं० २२—एक चक्कर फूँक मारने से चलता है लेकिन दूसरा फूँक मारे तो आप की आज्ञा से मुँह उसका काला कर दे। २॥)

खेल नं० २३—एक ताश का पत्ता दिखावें जो उसी समय दियासलाई की डिबिया बन जायगा। ॥)

खेल नं० २४—एक ख़ाली बक्स सबको दिखा दो और झटका मारो तो रूमाल, काग़ज़ आदि निकल आवें। २)

खेल नं० २५—किसी की टोपी सबको ख़ाली दिखाओ और फिर लंबी-लंबी बेलें निकालते जाओ। १॥)

खेल नं० २६—सबके सामने ख़ाली मुँह दिखाकर छोटे-छोटे टुकड़े काग़ज़ के मुँह में डालो जो लंबे होकर निकलेंगे। ॥)

खेल नं० २७—किसी की टोपी ख़ाली दिखाओ फिर मनीबेग निकाल-निकालकर ढेर लगा दो। १॥)

खेल नं० २८—किसी की टोपी लेकर सबको ख़ाली दिखाएँ फिर बहुत लंबा हंटर निकालकर दिखा दें। मू० ॥)

खेल नं० २९—किसी की टोपी लेकर कहो कि तुम्हारी टोपी फटी है वह कहेगा नहीं, फ़ौरन् उँगली मारकर फाड़ दो, उँगली निकालो तो फिर साबित ॥)

खेल नं० ३०—सबके सामने रुपया हाथ पर नाचने लगता है। लोग दंग होते हैं। १)

खेल नं ३१—यह लकड़ी के गोले हैं पहले एक होता फिर उसी के दो बनते हैं फिर ३ व ४ बनकर फिर घटते-घटते एक रह जाता है। २)

खेल नं ३२—रूमाल में अँगूठी लपेट कर दूसरे के हाथ में दें, रूमाल ख़ाली हो जायगा और अँगूठी उसी दर्शक की जेब में से निकल आवेगी। बड़ा पुर-मज़ाक़ खेल है। १)

खेल नं० ३३—सबको दिखाकर पूरा ताश का बंडल रखकर खड़े हो जिस-जिस पत्ते को आवाज़ दोगे वह कूदकर बाहर आजायगा; ३॥)

खेल नं० ३४—किसी के हाथ से पानी के ग्लास में ताश का पत्ता डुबवा दें, रूमाल उठावें पत्ता ग़ायब। १)

खेल नं० ३५—किसी के देखे हुए पत्ते ताश में से कूदकर दूसरे हाथ की ओर दौड़ते हैं। २)

खेल नं० ३६—पूरे ताश फैलाकर एक पत्ता किसी से खिंचवाओ और अपने हाथ के पत्ते सूँघकर बता दो कि तुम्हारे हाथ में फ़लाँ पत्ता है। १॥)

खेल नं० ३७—आँखों पर पट्टी बँधवा कर किसी से पत्ता खिंचवाओ और बता दो कि फ़लाँ पत्ता है। १)

खेल नं० ३८—अंडे से रूमाल और रूमाल से फिर अंडा बन जाता है। २)

खेल नं० ३९—एक पीक है, इसमें पानी भरकर फिर ख़ाली करके सबको दिखा दें फिर आपकी आज्ञा से कभी पानी निकलेगा कभी ख़ाली होगी। २)

खेल नं० ४०—एक लोटा है जो आप की आज्ञानुसार भर भी जायगा और ख़ाली भी हो जायगा। मूल्य ३)

खेल नं० ४१—सबके सामने सादा काग़ज़ डालें और मशीन घुमावें, नोट बनकर निकलेगा मू० ५)

खेल नं० ४२—जादू का ताश, दर्शक मंडली में सबके सामने इस ताश को फेंट कर दो-चार आठ-दस आदमियों से १-१ पत्ता खिंचवाकर उसी ताश में रखते जायँ और कहें कि अपना-अपना पत्ता सब याद रक्खें फिर ताश को फेंट-फेंटकर बारी से सबका पत्ता निकालकर दिखाते जावें। सबका अपना-अपना पत्ता ही निकलेगा, बड़ा मज़ेदार खेल है जिसको बच्चा भी कर सकता है। २)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ग़ज़बनाक रिआयत—केवल १०) में चार घड़ियाँ

इस अद्वितीय सुअवसर से चूकनेवालों को केवल पछताना ही हाथ लगेगा! प्रिय मित्र महोदय! निम्न घड़ियाँ अत्यंत सुंदर, फ़ैंसी और बिलकुल सच्चा टाइम देनेवाली मय निम्नांकित दूसरे क़ीमती सामान के एकदम बड़ी भारी संख्या में मँगवाने के कारण सस्ती आ पड़ी हैं, जिससे हम भी अपने ग्राहकों के लाभार्थ सस्ते दामों अर्थात् आधे से भी कम दामों पर बेच रहे हैं। अस्तु, मँगाने में शीघ्रता करें और अपने इष्ट-मित्रों को भी इस विज्ञापन की सूचना दे दें क्योंकि इनकी रोज़ाना धड़ाधड़ बिक्री के कारण यह सुअवसर जल्दी ही समाप्त हो जायगा और फिर दुगने दामों पर भी इसके साथ का माल कहीं न मिल सकेगा।

२५) की घड़ी से अकेली ही मुक़ाबला करेगी

नं० १

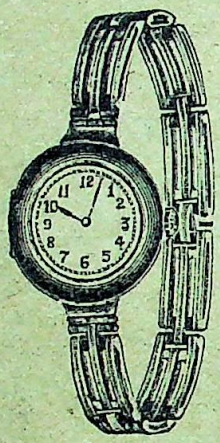

नं० २

५ साल की गारंटी का पर्चा इन घड़ियों के साथ हम भेजते हैं। लेकिन १०-२० साल तक चल जाना इनके लिये मामूली बात है। तीन सेट एक साथ मँगाने से डाक-ख़र्च भी माफ़।

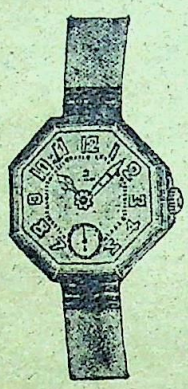

नं० ३

नं० ४

१—रेल्वे रेगुलेटर लीवर, पाकेट वाच, एंजिन मार्क, चाबी ३६ घंटा, २—अत्यंत सुंदर बढ़िया फ़ैंसी रिस्टवाच चाबी ३० घंटा, ३—बच्चों के लिये निहायत ख़ुशनुमा बेबीज़ टायरिस्टवाच ४—बढ़िया क्वालिटी की सुंदर जर्मन बी टाइमपीस,

केवल ६॥।) में असली पाकेट फ़ैंसी लीवरवाच या ९) में बढ़िया रिस्टवाच

मय महसूल डाक और साथ में ४५-४५ निम्न-लिखित वस्तुएँ मुफ़्त।

श्रीमन् महोदय! यह वही असली घड़ियाँ हैं, जो इससे पहले केवल घड़ियाँ ही ८) और १२) में बिकती थीं और जो इस समय हम ४५-४५ वस्तुओं-सहित केवल ६॥।) और ९) में मुफ़्त बराबर लुटा रहे हैं। और वह भी महसूल डाक सहित। ख़ूबी यह कि तीन सेट एक साथ मँगाने से पाकेटवाच के साथ १९॥) और रिस्टवाच के साथ २६।) ही डा० ख़० सहित लिए जायँगे। घड़ियों की प्रशंसा करना हमारा काम नहीं है, आप स्वयं ही माल देखकर तारीफ़ न करने लगें तो हमारा ज़िम्मा।

इनाम में ४५ वस्तुएँ क्या-क्या मिलेंगी

(१) घड़ी की सुंदर चेन या तस्मा (२) घड़ी रखने का फ़ैंसी बक्स (३) क़मीज़ के बटनों का उत्तम मुकम्मिल सेट (४) अत्युत्तम सोने के मुलम्मे की नगदार अँगूठी (५-६) अत्युत्तम सोने के मुलम्मे की डायमंड चूड़ियाँ १ जोड़ा (७) बढ़िया फ़ैंसी कंघा विलायती (८) अमृत सुर्मा जिसको लगाने से आँख सदैव नीरोग रहती है (९) सुर्मा लगाने की सलाई (१०) मुँह हाथ धोने का सुगंधित साबुन (११) बाल उड़ाने का सुगंधित साबुन (१२) मुँह देखने का सुंदर विलायती शीशा (१३ से २२) १० अदद सुंदर लिफ़ाफ़े (२३ से ३२) १० अदद उत्तम लेटर पेपर (३३) फ़ैंसी चाकू (३४) बढ़िया पेंसिल (३५) बढ़िया विलायती होल्डर मय निब (३६) पेंसिल क्लिप (३७) शीशे की दावात (३८) असली स्याही (३९) रंगदार ४ शीशों का बढ़िया चश्मा (४०) उमदा सेफ़्टी पिन (४१) आलपीनों का पूरा सेट (४२) रेशमी इज़ारबंद (४३) बढ़िया पाकेट रुमाल (४४) विलायती इतर की शीशी (४५) रबड़ का गेंद। यह सब बढ़िया लाभदायक वस्तुएँ घड़ियों के साथ मुफ़्त मिलती हैं, इससे बढ़कर नफ़े का सौदा और क्या होगा? इसलिये यह सुअवसर हर्गिज़ हाथ से न छोड़ें।

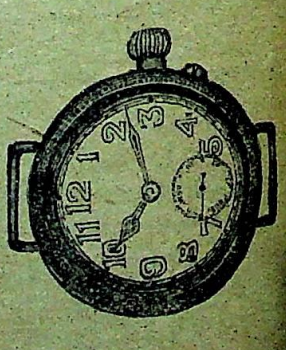

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बहुत सावधानी से ख़रीदें कम क़ीमत में बढ़िया माल; ५) सैकड़ा कमीशन

पसंद न हो तो वापिस दाम।

अच्छा व मज़बूत बक्स मुफ़्त] सच्चाई मुक़ाबला करने से ही प्रकट होगी [हार्मोनियम सीखने की बड़ी पुस्तक साथ

आजकल हारमोनियम की बहुत-सी दुकानें हो गई हैं, लेकिन "जी० सी० आहूजा के कारख़ाने का बना बाजा उन सबमें श्रेष्ठ है"— यह जिन लोगों ने हमारा बाजा बजाया है, उनका मत है। इसका कारण यह है कि सुंदरता, पायदारी व सुरीलेपन में संसार-भर के बाजे इन से हेच हैं। इसलिये सभा-सोसाइटी, राग-विद्यालय, देवालय, नाटक, क्लब इत्यादि स्थान हमारे ही बाजों से सुशोभित हैं। और अनेकों प्रशंसापत्र प्राप्त हो चुके हैं।

१. सिंगल स्वर जर्मन रीड्स ४ स्टाप ३५), ३०), २५), २३); कैसरील रीड्स ३७), ४०), ३५), ५०),

२. डबल स्वर सिर्फ़ हाथ से बजानेवाला ६ स्टाप ५०), ४५), ४३), ४०), ३५),

३. डबल स्वर कैसरील रीड्स १००),९५), ९०), ८५), ८०); पेरिस रीड्स ९०), ८०), ७५), ७०), ६५), ६०),

४. डबल रीड्स हाथ व पैर से बजानेवाला जर्मन रीड्स ६ स्टाप ८०), ७५), ७०); पेरिस रीड्स ११०), १००), ९५), ९०),८५); कैसरील रीड्स १२५), १२०), ११०) १००), ९५)

५. डबल रीड्स नालीदार पेटी ८ स्टाप जर्मन रीड्स सिर्फ़ पैर से बजानेवाली १२५), १२०), ११०), १००), ९०), ८५), ८०),

६. डबल रीड्स नालीदार पेटी सिर्फ़ पैर से बजानेवाला ८ स्टाप पेरिस रीड्स १५०), १४०), १३०);कैसरील १७५), १६५), १६०),

७. कैपलर हार्मोनियम सिर्फ़ एक हाथ से बजाने पर ही। चार स्वरों की आवाज़ देनेवाला ६ स्टाप ८०), ७०), ६५), ६०); पेरिस रीड्स १००), ९०); कैसरील रीड्स १३०), १२०), ११०), १००), ८०)

देखिए सफ़री हारमोनियम कितनी आसानी से बजा रही है।

८. सफ़री हार्मोनियम ज़ाहिरा हैंड बैग की शक्ल, आवाज़ बढ़िया पेटी भी अधिक। वज़न ८ सेर, सफ़र के लिये अत्युत्तम है। दाम १००), ९०), ८०), ७५), ७०), ६५), ६०), ५५); पेरिस रीड्स १३०), १२०), ११०); कैसरील १४०), १३०), १२०)

नोट—१०) मनीआर्डर द्वारा पेशगी भेजें, अपना नाम, पता, रेलवे स्टेशन आदि साफ़ लिखिए। पूरी क़ीमत पेशगी आने पर रेल-भाड़ा माफ़। १००) से अधिक के बाजे के साथ बढ़िया सुनहरी घड़ी मय पट्टा मुफ़्त इनाम।

यह घड़ियाँ बदल भी सकती हैं!

गारंटी ५० वर्ष

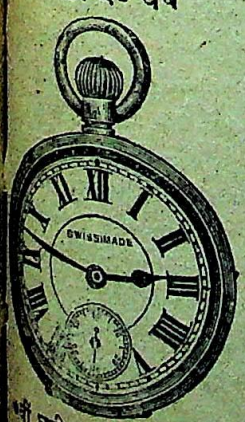

यह असली antimagnatic इंपीरियल रेगुलेटर फ़ुलजूल लीवरवाच जो ३६ घंटे की चाभी लेती है, हाल ही में निकल केस और उम्दा मज़बूत मैटीरियल से फ़िटिंग कराकर हमने स्पेशली आर्डर पर बनवाकर मँगवाई हैं, बहुत ही सुंदर तथा सराहनीय हैं। इसकी सुइयाँ स्टील की, डायल चीनी का और बिजली का असर क़बूल न करनेवाले गिल्ट किए हुए पुर्ज़े हैं। ख़ूबी यह है कि घड़ी गिर जाने पर भी नहीं टूटती। ५० वर्ष की गारंटी का पर्चा हम घड़ी के साथ देते हैं; परंतु इसको ज़रा सावधानी के साथ बर्ता जावे, तो पोतों तक काम देती है। इसीलिये इस बात का इक़रारनामा हम इसके साथ देते हैं कि यदि किसी कारण से ५० साल के अंदर यह घड़ी टूट जावे, तो चाहे जिस हालत में हो ७॥) साथ लेकर हम नई घड़ी से बदल देंगे। क़ीमत डाक-महसूल-सहित केवल ११॥); ६ मँगाने से एक घड़ी मय इक़रारनामा के मुफ़्त देंगे। धड़ाधड़ बिक रही हैं। आप भी शीघ्र मँगावें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक हज़ार पौंड इनाम !

यदि कोई विज्ञापनदाता अपने "कोकशास्त्र कश्मीरी" को स्वर्गवासी श्रीपंडित कोकाजी महामंत्री महाराजा कश्मीर-रचित असली साबित कर दें। अन्यथा किसी पत्र-संपादक अथवा बैंक में १५ हज़ार तो नहीं, केवल १०० जमा करा दें। हम अपनी पुस्तक को असली साबित करते हैं।

सचित्र ! [श्रीमान् कोका पंडित-रचित का हिंदी-अनुवाद] पुराना !!!

(असली कश्मिरी कामशास्त्र अर्थात् कोकशास्त्र)

कश्मीरी कोकशास्त्र

पद्मिनी, चित्रिणी, शंखिनी, हस्तिनी, और शशक, वृषभ, मृग, अश्व

इन चारों प्रकार की स्त्री तथा पुरुषों की पहिचान। उनका वर्णन, स्त्री को आयु-भर स्वस्थ, सुंदर, सौंदर्य अर्थात् हुस्नो इश्क़ की देवी बनाए रहना। मनचाही सुंदर बलिष्ठ संतान उत्पन्न करना, गर्भ में पुत्र-पुत्री की पहिचान। स्त्री-पुरुष के जोड़े-जोड़ी का मिलान। संतान उत्पन्न न होती हो तो ज़रूर हो। स्वयं पूरे सौ वर्ष तक हृष्ट-पुष्ट सुंदर और स्वस्थ बने रहना। कुमारी-भेद और लक्षण-प्रेम-प्रीति स्त्री-पुरुष का पारस्परिक संबंध स्त्रियों का रजोदर्शन, ऋतु और उसका सामयिक प्रभाव, सहवास-विलासियों के लिये सहवास के नियम। गर्भाधान *चौरासी आसन* गर्भ-परीक्षा, गर्भोत्पत्ति, गर्भ-वृद्धि, प्रसव और शिशुपालन, स्त्रियों के शृंगार, उनके संबंध में समस्त यौवन-वर्द्धक, आनंद-दायक मसाले। स्त्री-पुरुषों के कोकशास्त्र-संबंधी गुप्त रोग और उनका अद्भुत इलाज कामोपदायक औषधियाँ तथा मसाले। वशीकरण, स्त्री-पुरुषों की चौरासी रंग-बिरंगी तसवीरें, तथा आसनों के दिलचस्प हाल दर्ज हैं। क़ीमत केवल ३)

पता—श्रीगोकुलपुरी भवन, नं० १२, लुधियाना (पंजाब)

घर बैठे **सौ रुपए मासिक** कमाइए

इसमें कोई संदेह नहीं कि आप हकीम तुलसीप्रसाद अग्रवाल की बनाई हुई "तुलसी अनुभवसार" पुस्तक पढ़कर अपनी और दूसरों की प्रत्येक बीमारी का इलाज बड़ी उत्तमता के साथ कर सकते और इससे अनेक रोगों की चमत्कारी औषधियाँ बनाकर बड़ी सुगमता के साथ सैकड़ों रुपया कमा सकते हैं। मूल्य प्रति पुस्तक सजिल्द १।), चार पुस्तक का ४), डा०-व्य० पृथक्।

बाल जीवन घुट्टी

हकीम तुलसीप्रसाद अग्रवाल की भारतसरकार द्वारा रजिस्टर्ड। बालकों के बुख़ार, खाँसी, अजीर्ण, दूध डालना, पेट फूलना, दस्त होना आदि प्रत्येक रोग को दूर कर और दुबले-पतले बालकों को मोटा-ताज़ा बलवान् बनाने के लिये प्रसिद्ध महौषधि है। मीठी होने से बालक इसको प्रसन्न होकर पी लेते हैं। सब जगह सौदागरों के यहाँ मिलती है। मूल्य प्रति शीशी ।-), डाक-व्यय ४ शीशी तक ।); सौदागरों से १२ शीशी अर्थात् एक दर्जन का मूल्य २॥), १२ दर्जन २४), महसूल अलग।

मुफ्त लो

जो सज्जन दस हिंदी पढ़े प्रतिष्ठित लोगों के नाम पूरे पते-सहित लिखकर भेजेंगे उनको "आरोग्यदीपक" पुस्तक मुफ़्त भेजी जावेगी।

पता—बाल जीवन कार्यालय, नं० १५, अलीगढ़।

श्वेत-कुष्ठ की असली फ़क़ीरी औषधि

यह औषधि १ मास से कम में छुड़ा देनेवाली छूमंत्र नहीं है। बल्कि खाने और लगाने से १ मास में श्वेत-कुष्ठ जड़ से नष्ट हो जाता है। परंतु गुण प्रथम ही दिन से मालूम होने लगता है। आराम न हो, तो कुल दाम वापस। विश्वास न हो, तो शर्त लिखा लें। दोनों औषधियों का एक साथ मूल्य ५) रु०।

फ़क़ीरी फ़ार्मेसी, नं० ४३, लहेरियासराय

सुधा की सत्यता का प्रमाण

हमने हिंदी के हित-निमित्त सुधा के ग्राहकों को एक आना डाक-व्यय भेजने पर मानविजय आदि पुस्तकें भेंट में भेजने की प्रतिज्ञा की थी। तदनुसार ग्राहक नं० ८८२ से लेकर ३२५० तक के ग्राहकों में अनेकों के पत्र आए तथा आ रहे हैं और उनको मानविजय आदि पाँच-पाँच पुस्तकें भेजी जा रही हैं। केवल तीन महीने में अथवा तीसरा अंक निकलने तक सुधा का ४००० ग्राहक हो जाना, उसके समुचित संचालन—संदर स्वरूप; समुन्नत अवस्था और अतीव सुंदरता आदि—का द्योतक है। अन्य पत्रों के ३ वर्ष में जितने ग्राहक नहीं होते; उतने सुधा के तीन महीने में हो जाना, उसकी लोक-प्रियता का नमूना है।

"प्रेमी"

चौमू, (जयपुर)

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्या आपको बौद्ध धर्म से कुछ भी दिल चस्पी है ?

तो

सचित्र और अंतर्राष्ट्रीय बौद्ध संघ की मासिक पत्रिका

महाबोधी

के

अवश्य ग्राहक होइए ।

संपादक

श्रीअनागरिका धर्मपाल

(संस्थापक महाबोधी संघ और शिकागो की धार्मिक पॉर्लियामेंट में दक्षिणी बौद्धों के प्रतिनिधि)

इसकी विशेषताएँ

१. बौद्ध-धर्म पर विविध दृष्टि से लिखे गए मौलिक लेख
२. अप्रकाशित धार्मिक ग्रंथों का अनुवाद
३. बौद्ध-आंदोलन संबंधी भारतवर्ष और देशांतरोंके समाचार
४. विद्वत्तापूर्ण नोट और समालोचनाएँ इत्यादि

हमारे कुछ लेखक

ले० एफ़० मेंकज़ी (भिक्षु शिलाकार)	श्री ए० डी० जयसुंदर
डॉ० जॉर्ज ग्रिम	पं० शिवनारायण
प्रो० ए० आर० ज़ॉर्न	रेव० इ० हंट
डॉ० बी० सी० ला, एम्०ए०,पी०एच्०डी०, बी०एल्०	रेव० लूई ग्रीव

वार्षिक मूल्य ४), योरप ६ शिलिंग, अमेरिका २ डालर, प्र० सं० ।=)

मिलने का पता—महाबोधी,(४ ए,) कालेज स्क्वॉयर, कलकत्ता

मुफ़्त ! मुफ़्त !! मुफ़्त !!!

धूप का चश्मा और फ़ौंटेनपेन

अपने पैसे का सदुपयोग कीजिए । पढ़िए, विचारिए और लाभ उठाइए ।

थोड़ी-सी और रह गईं ! अवसर न चूकिए !!

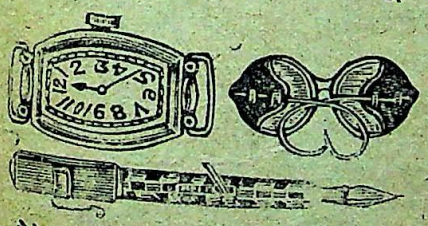

२५ कैरेट रोल्ड गोल्ड । सुनहला डायल ।

हाथ की घड़ी

(Wrist Watch)

हमारी सब हाथ की घड़ियों की गारंटी १० वर्ष की है । केस के अंदर खुदा हुआ है । पहनने में हल्की, देखने में सुंदर, चलने में मज़बूत और बिलकुल नई तर्ज़ की बनी हुई है । जो कोई हमारी रिस्टवाच को ख़रीदेगा, उसे धूप का चश्मा और फ़ौंटेनपेन मुफ़्त दी जायगी ।

एक घड़ी का मूल्य केवल ७) सात रुपए ।

मिलने का पता—

Overseas Swiss Watch Co.,
P. B. No. 371, Mount Road
Madras.

Telegrams: "BHOLA NATH COY." Phone Nos, 6 & 6A

BHOLA NATH & Co.,

Hardware & Paints Merchants, Stationers & Rubber Stamp Makers

30, Aminabad Park, LUCKNOW.

Dealers in—

General Hardware, Paints, Oils, Glass, Panes, Printing Inks, Cement, Phenyle, Coir Ropes, Wire Nettings, Buckets, Shaving Requisites, Stoves, Cookers, Fountain Pens, Paper, Stationery, etc.

Makers of—

Iron and Brass Locks, Rubber & Metal Stamps, Brass Seals, Badges, Shoulder Titles & numerals, Tags, Medals, Thumb Impression Outfits, Stamping & Writing Inks, Brass Fittings, etc.

Agents to—

THE UPPER INDIA COUPER PAPER MILLS Co., Ltd.,

LUCKNOW

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्मन बग़ारज़ इनफ़िसाल मुक़द्दमा

मुक़द्दमा नंबर ३७५४ सन् १९२७ ई०

बअदालत जनाब बाबू गंगाशंकर साहब बहादुर सेकिंड अडीशनल जज ख़फ़ीफ़ा लखनऊ

केदारनाथ वल्द प्रभूदयाल क़ौम रस्तोगी साकिन रस्तोगी-टोला थाना चौक, शहर लखनऊ मुद्दई बनाम

अबदुलरहमान वग़ैरह मुद्दाअलेह

बनाम अबदुलरहिमान वल्द दिलावर भिश्ती साकिन इरादतनगर गोमती पार, शहर लखनऊ

हरगाह मुद्दई ने तुम्हारे नाम एक नालिश बाबत ६३) रु० के दायर की है, लिहाज़ा तुमको हुक्म होता है कि तुम बतारीख़ ६ माह जनवरी सन् १९२८ ई० बवक्त १० बजे दिन के असालतन या मारफ़त वकील के जो मुक़द्दमा के हाल से क़रार वाक़ई वाक़िफ़ किया गया हो और जो कुल उमूर अहम मुताल्लिक़ा मुक़द्दमा का जवाब दे सके या जिसके साथ कोई और शख़्स हो जो जवाब ऐसे सवालात का दे सके हाज़िर हो और जवाबदेही दावा मुद्दई मज़कूर की करो और हरगाह वही तारीख़ जो तुम्हारे एहज़ार के लिये मुक़र्रर है वास्ते इनफ़िसाल क़तई मुक़द्दमा के तजवीज़ हुई है। पस तुम को लाज़िम है कि अपने जवाबदावा की ताईद में जिन गवाहों की शहादत पर या जिन दस्तावेज़ात पर तुम इस्तदलाल करना चाहते हो उसी रोज़ उनको पेश करो।

मुत्तला रहो कि अगर बरोज़ मज़कूर तुम हाज़िर न होगे तो मुक़द्दमा बग़ैर हाज़िरी तुम्हारे मसमूआ और फ़ैसल होगा।

आज बतारीख़ १७ माह दिसंबर सन् १९२७ ई० मेरे दस्तख़त और मोहर अदालत से जारी किया गया।

बहुक्म द० नामालूम मुंसरिम

नोटिस निस्बत दिखाने वजह के (नमूना समेत)

बअदालत जनाब पंडित प्यारेलाल भार्गव साहेब बहादुर मुंसिफ़ जनूबी हर्दोई मुक़ाम हर्दोई

मुक़द्दमा नंबर १०३५ सन् १९२७ ई०

द्वारिकाप्रसाद वल्द जोखेप्रसाद क़ौम ब्राह्मण साकिन कोरौंद परगना गोंडवा तहसील संडीला ज़िला हर्दोई डिगरीदार बनाम

लालताप्रसाद मदयून

बनाम लालताप्रसाद वल्द दाताराम क़ौम ब्राह्मण साकिन महसुवा परगना गोंडवा तहसील संडीला, ज़िला हर्दोई

हरगाह मुसम्मै द्वारिकाप्रसाद ने दरख़्वास्त इस अदालत में गुज़रानी है कि जायदाद नीलाम तलब तुम्हारी मौरूसी है या मक़सूबा। लिहाज़ा जो कुछ तुमको उज़र हो बतारीख़ मुआइना पेश करो।

लिहाज़ा तुमको इत्तिला दी जाती है कि तुम असालतन् या मार्फ़त किसी वकील के जो हालात मुक़द्दमे से बख़ूबी वाक़िफ़ है बवक्त १० बजे बतारीख़ १३ जनवरी सन् १९२८ ई० इस अदालत में हाज़िर होकर दरख़्वास्त के ख़िलाफ़ वजह दिखाओ अगर ऐसा न करोगे तो दरख़्वास्त मज़कूर तुम्हारी ग़ैर हाज़िरी में समाअत की जावेगी।

आज बतारीख़ १२ माह दिसंबर सन् १९२७ ई० मेरे दस्तख़त और मुहर अदालत से जारी किया गया।

सम्मन बिनावर इनफ़िसाल मुक़द्दमा

(आर्डर ५ क़ायदा १ व ५)

नंबर मुक़द्दमा ४८६ सन् १९२७ ई०

बअदालत ख़फ़ीफ़ा कैराना, ज़िला मेरठ

लाला ईश्वरीप्रसाद पिसर लाला परमानंद, क़ौम वैश्य साकिन जनजहाना मुद्दई

मक़ज़र, पिसर ऊदा, क़ौम गूजर मुसलमान, मौज़ा पावई कलां, परगना कैराना मुद्दाअलेह

हरगाह मुद्दई ने तुम्हारे नाम एक नालिश बाबत १००) के दायर की है। लिहाज़ा तुमको हुक्म होता है कि तुम बतारीख़ १० माह जनवरी सन् १९२८ ई० बवक्त १० बजे दिन के असालतन या मार्फ़त वकील के जो मुक़द्दमे के हाल से क़रार वाक़ई वाक़िफ़ किया गया हो और जो कुल उमूर अहम मुतअल्लिक़ा मुक़द्दमा का जवाब दे सके या जिसके साथ कोई और शख़्स हो जो जवाब ऐसे सवालात का दे सके हाज़िर हो और जवाबदिही दावा की करो और हरगाह वही तारीख़ जो तुम्हारे अहज़ार के लिये मुक़र्रर है वास्ते इनफ़िसाल क़तई मुक़द्दमा के तजवीज़ हुई है। पस तुमको लाज़िम है कि उसी रोज़ अपने जुमला गवाहों को जिनकी शहादत पर नीज़ तमाम दस्तावेज़ात जिन पर तुम अपनी जवाबदिही के ताईद में इस्तदलाल करना चाहते हो उसी रोज़ पेश करो, तुमको इत्तला दी जाती है कि अगर बरोज़ मज़कूर तुम हाज़िर न होगे तो मुक़द्दमा बग़ैर हाज़िरी तुम्हारे मसमूआ और फ़ैसल होगा।

यह सबत मेरे दस्तख़त और मोहर अदालत के आज बतारीख़ ७ माह दिसंबर सन् १९२७ ई० जारी किया गया।

बहुक्म द० नामालूल मुंसरिम

सम्मन बग़ारज़ इनफ़िसाल मुक़द्दमा

मुक़द्दमा नं० ३७६ सन् १९२७ ई०

बअदालत जनाब मुंसिफ़ साहब बहादुर फ़तेहपुर मुक़ाम बाराबंकी

रामनाथराय वल्द पं० मथुराप्रसाद ब्राह्मण साकिन शहर कानपुर मुलाज़िम इंसपेक्टर आबकारी कानपुर मुद्दई

हरीशचंद्रसिंह बनाम मुद्दाअलेह

बनाम हरीशचंद्रसिंह वल्द हरदयालसिंह क़ौम ठाकुर साकिन साहपुर परगना व तहसील फ़तेहपुर, ज़िला बाराबंकी

हरगाह मुद्दई ने तुम्हारे नाम एक नालिश बाबत ६८१॥) के दायर की है। लिहाज़ा तुमको हुक्म होता है कि तुम बतारीख़ २३ माह जनवरी सन् १९२८ ई० बवक्त १० बजे दिन असालतन या मारफ़त वकील के जो मुक़द्दमा के हाल से क़रार वाक़ई वाक़िफ़ किया गया हो और जो कुल उमूर अहम मुताल्लिक़ा मुक़द्दमे का जवाब दे सके या जिसके साथ कोई और शख़्स हो जो जवाब ऐसे सवालात का दे सके हाज़िर हो और जवाबदिही दावा मुद्दई मज़कूर की करो और हरगाह वही तारीख़ जो तुम्हारे अहज़ार के लिये मुक़र्रर है वास्ते इनफ़िसाल क़तई मुक़द्दमा के तजवीज़ हुई है। पस तुमको लाज़िम है कि अपने जवाबदावा की ताईद में जिन गवाहों की शहादत पर या जिन दस्तावेज़ात पर तुम इस्तदलाल करना चाहते हो उसी रोज़ पेश करो।

मुत्तला रहो कि अगर बरोज़ मज़कूर तुम हाज़िर न होगे तो मुक़द्दमा बग़ैर हाज़िरी तुम्हारे मसमूआ और फ़ैसल होगा।

आज बतारीख़ १५ माह दिसंबर सन् १९२७ ई० मेरे दस्तख़त और मोहर अदालत से जारी किया गया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इत्तलानामा हस्ब दफ़ा १० ऐक्ट ५ सन् १९२० ई०
बहुक्म पंडित राजराजेश्वरीसहाय साहब बहादुर सबजज मुज़फ़्फ़रपुर
नं० ३६ सन् १९२७ ई०
अबदुलयहिया वल्द अबदुलसत्तार क़ौम शेख़ साकिन क़स्बा बघेरा ज़िला मुज़फ़्फ़रनगर सायल

जो कि सायल ने दरख़्वास्त अदालत हाज़ा में तारीख़ १६ नवंबर सन् १९२७ ई० को वास्ते क़रार दिए जाने दीवालिया पेश की है और १४ जनवरी सन् १९२८ ई० वास्ते समात उज़्रदारी बतजवीज़ के मुक़र्रर हुई है, लिहाज़ा जुमला कर्ज़ख़्वाहा को बज़रिये इशाअत हाज़ा मुत्तला किया जाता है कि जिस किसी को कोई उज़्र निस्बत दरख़्वास्त सायल हो बतारीख़ मुक़र्ररा ख़्वाह असालतन या वकालतन पेश करे। बसूरत न होने जवाबदही के हुक्म मुनासिब एकतरफ़ा सादिर किया जावेगा।

बहुक्म
रघुनाथशरण
मुंसरिम

बहुक्म ठाकुर हरदेवसिंह साहब बहादुर मुंसिफ़ फ़तेहपुर
(नमूना क़ाबिल फ़रोख़्त)
सम्मन बिनाबर इनफ़िसाल मुक़द्दमा
(आर्डर ५ क़ायदा १,५)
नंबर मुक़द्दमा ३६७ सन् १९२७ ई०

बअदालत ख़फ़ीफ़ा मुंसफ़ी फ़तेहपुर ज़िला कानपुर जुगुलकिशोर वल्द छदुम्मीलाल क़ौम ब्राह्मण उपाध्याय साकिन बजोली परगना बेंदुकी, ज़िला फ़तेहपुर मुद्दई

बनाम

अवतलसिंह वल्द देवऊ क़ौम ठाकुर साकिन वधारा, तहसील खजुहा, ज़िला फ़तेहपुर

हरगाह मुद्दई ने तुम्हारे नाम एक नालिश बाबत रुक़्क़ा अतदुलतलब तादादी ६४॥≡) के दायर की है; लिहाज़ा तुमको हुक्म होता है कि तुम बतारीख़ १७ माह जनवरी सन् १९२८ ई० वक्त १० बजे दिन के असालतन या मारफ़त वकील के जो मुक़द्दमा के हाल से क़रार वाक़ई वाक़िफ़ किया गया हो और जो कुल अमूर अहम मुताल्लिक़ा मुक़द्दमे का जवाब दे सके या जिनके साथ कोई और शख़्स हो कि जवाब ऐसे सवालात का दे सके हाज़िर हो और जवाबदिही दावा की करो और हरगाह वही तारीख़ जो तुम्हारे अहज़ार के लिये मुक़र्रर है वास्ते इनफ़िसाल क़तई मुक़द्दमा के तजवीज़ हुई है। पस तुमको लाज़िम है कि उसी रोज़ अपने जुमला गवाहों को जिनकी शहादत पर नीज़ तमाम दस्तावेज़ात जिनपर तुम अपनी जवाबदिही के ताईद में इस्तदलाल करना चाहते हो उसी रोज़ पेश करो। तुमको इत्तला दी जाती है कि अगर बरोज़ मज़कूर तुम हाज़िर न होगे तो मुक़द्दमा बग़ैर हाज़िरी तुम्हारे मसमूआ और फ़ैसल होगा।

यह सबत मेरे दस्तख़त और मोहर अदालत के आज बतारीख़ १६ माह दिसंबर सन् १९२७ ई० जारी किया गया।

बहुक्म
द० नामालूम

(नमूना क़ाबिल फ़रोख़्त)
सम्मन बिनाबर इनफ़िसाल मुक़द्दमा
(आर्डर ५ क़ायदा १ व ५)
नंबर मुक़द्दमा ४१२ सन् १९२७ ई०।

बअदालत मुंसिफ महमूदाबाद ज़िला ग़ाज़ीपुर
बलराम रस्तोगी, वल्द भूजावत साहू साकिन कन्नोत परगना महमूदाबाद मुद्दई

बनाम

जगदीस मिश्र वल्द रासप्रसाद मिश्र साकिन ग़ाज़ीपुर महल्ला रुई की मंडी मुद्दाअलेह।

हरगाह कि मुद्दई निस्बाँ ने तुम्हारे नाम एक नालिश बाबत निकास कायालात? के दायर की है। लिहाज़ा तुमको हुक्म होता है कि तुम बतारीख़ २३ माह जनवरी सन् १९२८ ई० बवक्त १० बजे दिन के असालतन या मारफ़त वकील के जो मुक़द्दमे के हालात से क़रार वाक़ई वाक़िफ़ किया गया हो और जो कुल अमूर अहम मुतअल्लिक़ै का जवाब दे सके या जिसके साथ कोई और शख़्स हो कि जवाब ऐसे सवालात का दे सके हाज़िर हो और जवाबदेही दावा की करो। और हरगाह वही तारीख़ जो तुम्हारे इहज़ार के लिये मुक़र्रर है, वास्ते इनफ़िसाल क़तई मुक़द्दमा के तजवीज़ हुई है। पस तुमको लाज़िम है कि उसी रोज़ अपने जुमला गवाहों को जिनकी शहादत पर वो नीज़ तमाम दस्तावेज़ात जिन पर तुम अपनी जवाबदेही के ताईद में इस्तदलाल करना चाहते हो, उसी रोज़ पेश करो—तुमको इत्तिला दी जाती है कि अगर बरोज़ मज़कूर तुम हाज़िर न होगे, तो मुक़द्दमा बग़ैर हाज़िरी तुम्हारे मसमूआ और फ़ैसल होगा।

बसबत मेरे दस्तख़त और मोहर अदालत के आज बतारीख़ २१ माह दिसंबर सन् १९२७ ई० जारी किया गया।

हुक्म द० नरायनसिंह साहू मुंसरिम

इत्तिलानामा हस्बदफ़ा ६ ऐक्ट ५ सन् १९२०
नं० २० सन् १९२७ मुंसिफ़ी मुज़फ़्फ़रनगर

सादुल्ला पिसर सोंधी क़ौम लुहार मुसलमान साकिन मौज़ा दुहड़ू कलां, परगना चरनावल—ज़िला मुज़फ़्फ़रनगर —सायल

बनाम

लीलाधारी क़ौम बरहमन बरकोठी चौधरी ब्रजलाल मुरादाबाद क़र्ज़ख़्वाह

जोकि सादुल्लासायल ने दरख़्वास्त इंसालवेंसी ता० ३ मई सन् २७ अदालत हाज़ा में पेश की है और ता० ७ जनवरी सन् १९२८ वास्ते तजवीज़ के मुक़र्रर है लिहाज़ा बज़रिये इशाअतहाज़ा तुमको इत्तिला दी जाती है कि जो कुछ उज़्र निस्बत दरख़्वास्त मज़कूर के हो तारीख़ मुऐयना पर हाज़िर अदालत होकर असालतन ख़्वाह मारफ़त वकील पेश करो।

आज ता० २१ दिसंबर सन् १९२७ बसबत मेरे दस्तख़त और मुहर अदालत से जारी किया गया।

बहुक्म
द० रघुनाथ शर्मा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्मन बिनावर इनफ़िसाल मुक़द्दमा
(आर्डर ५ क़ायदा १,५)

नंबर मुक़द्दमा ५९५ सन् १९२७ ई०

बअदालत अडीशनल मुंसिफ़ आज़मगढ़ ज़िला आज़मगढ़ बइजलास जनाब बाबूराम वर्मा साहब बहादुर एम्० ए० एल्-एल्० बी० अडीशनल मुंसिफ़ आज़मगढ़ ।

बनारसीदास रामानुजदास मौक़ूआ क़स्बा ज़िला आज़मगढ़ मुद्दई

बनाम

रामनारायणसिंह वल्द मालूम नहीं व वीरबहादुरसिंह वल्द रामनारायणसिंह, मज़कूर साकिन मौज़ा औराई परगना सिकदरपुर, मुंसफ़ी रसड़ा, ज़िला बलिया मुद्दाअलेह

हरगाह कि मुद्दई ने तुम्हारे नाम एक नालिश बाबत बहीखाता के दायर की है, लिहाज़ा तुमको हुक्म होता है कि तुम बतारीख़ दस म ह जनवरी सन् १९२८ ई० वक्त दस बजे दिन के असालतन या मारफ़त वकील के जो मुक़द्दमा के हाल से क़रार वाक़ई वाक़िफ़ किया गया हो और जो कुल अमूर अहमसुतल्लिक़ा मुक़द्दमे का जवाब दे सके या जिसके साथ कोई और शख़्स हो कि जवाब ऐसे सवालात का दे सके हाज़िर हो और जवाबदिही दावा की करो और हरगाह वही तारीख़ जो तुम्हारे अडज़ार के लिये मुक़र्रर है वास्ते इनफ़िसाल क़तई मुक़द्दमा के तजवीज़ हुई है । पस तुमको लाज़िम है कि उसी रोज़ अपने जुमला गवाहों को जिनकी शहादत पर नीज़ तमाम दस्तावेज़ात जिन पर तुम अपनी जवाबदिही के ताईद में इस्तदलाल करना चाहते हो उसी रोज़ पेश करो । तुमको इत्तला दी जाती है कि अगर बरोज़ मज़कूर तुम हाज़िर न होगे तो मुक़द्दमा बग़ैर हाज़िरी तुम्हारे मसमूआ और फ़ैसल होगा ।

यह सबत मेरे दस्तख़त और मोहर अदालत के आज बतारीख़ १९ माह दिसंबर सन् १९२७ ई० जारी किया गया ।

बहुक्म द० राजाराम मुंसरिम

सम्मन बगरज़ करारदाद अमूर तनक़ीह तलब

मुक़द्दमा नंबर १९५ सन् १९२७ ई०

अदालत दीवानी मुंसफ़ी शुमाली मुक़ाम हरदोई

बनाम भुवनसिंह वल्द बलदेवसिंह व मोजासिंह वल्द खिमानीसिंह व साबिक़ बवलायत भवानीसिंह

ठाकुर साकिनान पंदरसीपूर, परगना हरदोई, ज़िला हरदोई मुद्दई ।

मुद्दैया मुसम्मात रामकली शौहर सुधरसिंह

बनाम मुसम्मात रामकली बेवा सुधरसिंह ठाकुर पता साकिन मौज़ा कनारी परगना व तहसील ख़लीलाबाद जिला शाहजहानपूर मुद्दैया ।

वाज़ै हो कि फिदवीयान ने तुम्हारे नाम एक नालिश बाबत अलसराना के दायर की है, लिहाज़ा तुमको हुक्म

(नमूना क़ाबिल फ़रोख़्त)

समन बिनावर इनफ़िसाल मुक़द्दमा
(आर्डर ५ क़ायदा १ व ५)

नंबर मुक़द्दमा ३५९ सन् १९२७ ई०

बअदालत मुंसफ़ी चंदौसी ज़िला मुरादाबाद मु० नरायनी जौज़े इंदरमन क़ौम जाट साकिन मौज़ा बिकरमपुर परगना बिलारी मुद्दई ।

बनाम

अबदुलअज़ीज़ वल्द अबदुलमजीद क़ौम शेख़ मौज़ा सोंधा परगना बिलारी मुद्दाअलेह

हरगाह मुद्दैया ने तुम्हारे नाम एक नालिश बाबत तंमस्सुक के दायर की है लिहाज़ा तुमको हुक्म होता है कि तुम बतारीख़ १६ माह जनवरी सन् १९२८ ई० बवक्त १० बजे दिन के असालतन या मारफ़त वकील के जो मुक़द्दमे के हालात से क़रार वाक़ई वाक़िफ़ किया गया हो और जो कुल अमूर अहम मुतअल्लिक़ै मुक़द्दमा का जवाब दे सके या जिसके साथ कोई और शख़्स हो कि जवाब ऐसे सवालात का दे सके हाज़िर हो और जवाबदिही दावा की करो । और हरगाह वही तारीख़ जो तुम्हारे इहज़ार के लिये मुक़र्रर है वास्ते इनफ़िसाल क़तई मुक़द्दमा के तजवीज़ हुई है, पस तुमको लाज़िम है कि उसी रोज़ अपने जुमला गवाहों को जिनकी शहादत पर वो नीज़ तमाम दस्तावेज़ात जिन पर तुम अपनी जवाबदेही के ताईद में इस्तदलाल करना चाहते हो उसी रोज़ पेश करो—तुमको इत्तिला दी जाती है कि अगर बरोज़ मज़कूर तुम हाज़िर न होगे तो मुक़द्दमा बग़ैर हाज़िरी तुम्हारे मसमू और फ़ैसल होगा ।

बसब्त मेरे दस्तख़त और मोहर अदालत के आज बतारीख़ २३ माह दिसंबर सन् १९२७ ई० जारी किया गया ।

बहुक्म
द० रामगोपाल
मुंसरिम

होता है कि तुम बतारीख़ ३ फ़रवरी सन् १९२८ ई० बवक्त दस पर असालतन या मारफ़त वकील के जो मुक़द्दमा के हाल से क़रार वाक़ई वाकिफ़ किया गया हो और जो कुल अमूरात अदम मुतालक़ा मुक़दमा का जवाब देसके या जिसके साथ कोई और शख़्स हो जो जवाब ऐसे सवालात का देसके हाज़िर हो और जवाबदिही दावा मुद्दई मज़कूर की करो और तुमको हिदायत की जाती है कि जुमला दस्तावेज़ को जिन पर कि बताईद अपनी जवाबदिही के इब्तिदाब करना चाहते हो पेश करो ।

मुत्तला रहो कि अगर बरोज़ मज़कूर तुम हाज़िर न होगे तो मुक़द्दमा तुम्हारी ग़ैरहाज़िरी मेंमस मुआ और फैसल होगा आज बतारीख़ २३ माह १२ सन् १९२९ ई० मेरे दस्तख़त और मुहर अदालत से जारी किया गया ।

बहुक्म, द० नामालूम, मुंसरिम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुछ चुनी हुई पुस्तकें

व्यापारी-मुनीम

अथवा

हिसाब का पंडित

[लेखक—पं० विश्वंभरनाथ चतुर्वेदी]

मुनीमों के उपयोग की यह एक ही पुस्तक है। थोड़ी-सी प्रतियाँ ही बच रही हैं। इसे पढ़कर बड़े-बड़े हिसाबी के कान काटे जा सकते हैं। मूल्य व्यापारी भाइयों के लिये ४॥) है।

श्री गोविंद-निबंधावली

हिंदी-साहित्य में भला ऐसा कौन है, जो पं० गोविंद-नारायण मिश्र से परिचित न हो। इसमें स्व० पंडित-जी के लिखे हुए कवि और चित्रकार, प्राकृत-विचार, सारस्वत—सर्वस्व, विभक्ति विचार, द्वि० हिं० सा० स० का भाषण, आत्माराम की टें-टें आदि एक-से-एक बढ़कर निबंध दिए हुए है। ये सभी हिंदी-साहित्य के अमूल्य रत्न हैं। सभी साहित्य-सेवियों को इसकी एक प्रति अवश्य मँगाकर संग्रहीत करनी चाहिए। इसमें श्रीमान् पंडितजी का एक परिचयात्मक निबंध भी है। मूल्य ३)

रुई और उसका मिश्रण

सुधा के पाठक श्री कस्तूरीमलजी बाँठिया से अच्छी तरह परिचित हैं। भारत में रुई की खेती दक्षिण-पश्चिम में काफ़ी होती है। इस समय रुई की खेती पर ज़ोर दिया जाता है। पर अभी तक लोगों को यह नहीं मालूम है कि किस प्रकार की रुई उत्पन्न करने से अधिक लाभ हो सकता है। उनमें किस-किस का मिश्रण करने से उसका मूल्य बढ़ सकता है। इस पुस्तक में रुई का प्राकृतिक स्वरूप, रुई और रुई की खेती, रुई का उद्भिज विषयक स्वरूप, रुई के साधारण प्राकृतिक गुण और परिशिष्ट-नामक अध्याय हैं। जिसमें सभी उपयोगी और जानने योग्य बातें आ गई हैं। कृषक और व्यापारियों को इसकी एक प्रति मँगाकर अवश्य पढ़नी चाहिए। मूल्य केवल १॥) है।

स्टॉक-एक्सचेंज

[लेखक—पं० गौरीशंकर शुक्ल 'पथिक']

वर्तमान युग की व्यापारिक नीति कुछ भिन्न ही रीति से चलती है। इस में सूझ का विशेष स्थान है। इसलिये वर्तमान व्यावसायिक नीति से सचेत करने के लिये व्यावसायिक साहित्य अत्यंत आवश्यक है। वर्तमान समय का सब से प्रधान व्यवसाय शेअर का व्यवसाय हो रहा है। परंतु इस संस्था का औद्योगिक उन्नति के सच्चे उद्देश्य से संगठन होता है। परंतु पूरी जानकारी न होने से वैषम्यता के कारण ग़रीब लोगों को अक्सर नुक़सान उठाना पड़ता है। बड़े-बड़े औद्योगिक कारख़ाने बर्बाद हो जाते हैं। इसका कारण केवल यही है कि सभी लोग संसार की भिन्न-भिन्न संस्थाओं के संगठन से परिचित नहीं है। अपने संगठन की उन्नति के संसार के कतिपय शेअर बाज़ारों का ज्ञान प्राप्त करना आवश्यक है। इस पुस्तक में संसार के शेअर बाज़ारों का अच्छा वर्णन किया गया है। इसे पढ़कर हमारे व्यवसायी भाई भी काफ़ी लाभ उठा सकते हैं। उन्हें इसकी एक-एक प्रति अवश्य मँगाकर रखनी चाहिए। मूल्य १)

भारतीय सभ्यता

और

उसका विश्व व्यापी प्रभाव

[लेखक—श्रीसुखसंपतिराम भंडारी]

भारतीय सभ्यता सब से पुरानी सभ्यता है। इसका अन्य देशों पर क्या-क्या असर किस क्रम से पड़ा है। इसका इस पुस्तक में वर्णन बड़ी उत्तमता से किया गया है। प्रत्येक हिंदी-प्रेमी को इसे अवश्य पढ़ना चाहिए। मूल्य केवल १)

पुष्पकुमारी

[लेखक—पं० टीकाराम तिवारी]

यह पुस्तक भी अपने ढंग की एक अनूठी है। जिसमें एक बालिका व बालक का आदर्श प्रेम, धर्मोपासना, नीति, सदाचार, शिक्षा आदि विषय कूट-कूटकर भर दिए गए हैं। पुस्तक विविध विषयों से विभूषित है। याने बालिका पुष्पकुमारी का धर्म-प्रेम, बालक्रीड़ा, शिक्षा, गृहशिक्षा, गृहकलह, ललिता की धूर्तता, तारा, सरयू मालिन का प्रेम से भाषण, नर्मदाघाट, मृगनाथ पर्वत की यात्रा, उसका मनोहर दृश्य तथा छटा का वर्णन, पुष्पकुमारी का अकस्मात् उस पर से पतन, उसकी दैवी रक्षा, प्रणय-मिलाप, उनका दृढ़ तथा अटल परस्पर प्रतिज्ञा-बंधन, स्त्रियों का परस्पर हास्य-विनोद, कुमारीकी मूर्च्छना तथा उसका कराल भाग्योल्लेख, नारायण स्वामी, बदिराभान, ललिता का कुमंत्रणवश हानि उठाकर सुचाल होना, आशा, समाज-यंत्रणा, राधा व गंगा की कुटिलता, स्त्री-समाज की सांप्रत में घोर दुर्दशा का पूरा-पूरा चित्र, श्मशान तथा राजघाट का अर्धरात्रि समय का चित्र और उसका वर्णन, अंतिम परीक्षा, पुनः सुख-प्राप्ति आदि-आदि घटनाओं से अलंकृत है।

इतनी उत्तम पुस्तक का मूल्य भी सर्वसाधारण के हितार्थ सिर्फ़ १॥) रु० रक्खा गया है।

मिलने का पता—गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय, लखनऊ

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection. Digitized by eGangotri

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रंग-बिरंगे चित्रों का अपूर्व संग्रह

रमेश-चित्रावली

रचयिता—

सुप्रसिद्ध चित्रकार बाबू रामेश्वरप्रसाद वर्मा

इस चित्रावली में पंद्रह बढ़िया मनोमोहक रंगीन चित्र हैं। सभी सुंदर आर्ट-पेपर पर बड़ी सफ़ाई से छापे गए हैं। साथ में चित्रों का परिचय भी सरस, ओजस्विनी और भाव-पूर्ण हिंदी-कविता में है, जिससे चित्र के भाव को दर्शक अच्छी तरह हृदयंगम कर सके। कुछ चित्र ये हैं—ललिता, कमल-कुमारी, दीपक, व्यास का शुकदेव को समझाना, व्यास के विनय करने पर इंद्र का रंभा को बुलाकर शुकदेव को अपनी ओर आकर्षित करने के लिये भेजना, रंभा का अपने विचित्र हाव-भाव से शुक को मोहने का प्रयत्न करना तथा निराश रंभा के मुख की उदासी, इत्यादि-इत्यादि। इन चित्रों की प्रशंसा करना व्यर्थ है। जो देखता है, मुग्ध हो जाता है। वह स्वयं तो ग्राहक होता ही है, दूसरों से भी ग्राहक होने के लिये अनुरोध करता है। चीज़ ही ऐसी है।

पुस्तक हर तरह से उपादेय बना दी गई है। इतने पर भी मूल्य सिर्फ़ २), डाक-ख़र्च आदि अलग। हमारे पास अब बहुत ही कम प्रतियाँ रह गई हैं, इसलिये यदि आपको चित्र-कला से तनिक भी प्रेम है, तो इसकी एक प्रति आज ही पत्र डालकर मँगा लीजिए। नहीं तो पीछे हाथ मलकर पछताना पड़ेगा, क्योंकि इतने कम दामों में ऐसा चित्र-संग्रह कहीं मिलने का नहीं।

गृहस्थों के लिये अमूल्य रत्न

गोरस और गोवर्द्धन-शास्त्र

हिंदी-भाषा में डेअरी-विषयक ऐसा सर्वांग-पूर्ण दूसरा ग्रंथ नहीं है। यह गृहस्थों का सहायक और डेअरी-फ़ार्मों के संचालकों का सच्चा मार्ग-दर्शक है। इसके द्वारा गोशालाओं के प्रबंधक भी अपनी उन्नति आसानी से कर सकते हैं। इसमें गोशाला, चारा-दाना, गऊ की रक्षा, दूध और उसके गुण, दही, मक्खन, घी, क्रीम, दूध की परीक्षा, पशुओं के साधारण रोग, पशुओं की उत्पत्ति का वर्णन, दूध देनेवाले पशुओं की प्रसिद्ध जातियाँ, डेअरी का हिसाब-किताब रखने की रीति आदि-आदि कई उपयोगी अध्याय हैं। दूध और क्रीम-संबंधी तथा जानवरों के चित्र भी दिए गए हैं। डेअरी-फ़ार्म तथा गोशाला से संबंध रखनेवाले और गऊ पालनेवाले प्रत्येक गृहस्थ को इसे मँगाकर पढ़ना चाहिए। मूल्य केवल २), हमारे पास थोड़ी-सी प्रतियाँ शेष बच रही हैं।

बिलकुल नया, बड़ा सूचीपत्र) का टिकट भेजकर मुफ़्त मँगाइए!

संचालक गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय, २९-३०, अमीनाबाद-पार्क, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दुनिया-भर की सर्व ज्योतिष की पुस्तकों का मुकुटशिरोमणि

चश्मा ज्योतिष

या ख़ुफ़िया राज़दान, अर्थात् ज्योतिष-सागर तथा गुप्त प्रश्नप्रदीपिका

इसे पुस्तक नहीं बल्कि दुनिया की क़िस्मत का ख़ज़ाना समझें, क्योंकि इसमें आदि से अंत तक ज्योतिष के वह गुप्त भेद संपूर्णतया अंकित कर दिए हैं, जो भारी रक़म लेकर भी ज्योतिषी लोग नहीं बताते। चश्मा ज्योतिष का कर्ता ख़ानदानी ज्योतिषी है जिसकी मशहूरी दूर देशांतरों में हो चुकी है, भला इसकी रची पुस्तक जो इसकी ज़ाती क़ाबलियत का फ़ोटो है, क्यों माननीय न होगी? ज्योतिष विद्या के माननेवाले सज्जनों से हम अनुरोध करते हैं कि इस अनुपम पुस्तक को शीघ्र ही मँगाकर लाभ उठावें; क्योंकि इससे पूर्व की सर्व पुस्तकें अधूरी हैं। इस पुस्तक को पढ़नेवाले सब सज्जन केवल १ मास में पूरे ज्योतिषी बनकर सर्व गुप्त भेद बता सकते हैं, और हर स्त्री पुरुष की तक़दीर आपके सुख-दुःख का हाल, ग्रहों की चाल, जन्मकुंडली, लग्न बनाकर फलादेश बताना, हर प्रकार के सच्चे मुहूर्त तथा सट्टा का ठीक परिणाम बताना, जन्मपत्री बनाना, नजूम व प्रश्न, और सर्व प्रकार की ज्योतिष विद्याएँ इसमें दर्ज हैं। हम डंके की चोट से कहते हैं कि यदि इसके पढ़नेवाले सच्चे हालात व प्रश्नों के जवाबात न बता सकें तो हम इसकी १०गुनी क़ीमत लौटावेंगे। हमने इसके रचयिता को बड़ी मुश्किल से रज़ामंद किया है कि वह अपने कमालात को पुस्तक रूप में लाकर जनता को लाभ पहुँचावें बड़े आकार के सफ़ों की संख्या २२० काग़ज़ व छपाई उत्तम और अति सुंदर जिल्द बँधी हुई दाम केवल डाक ख़र्च समेत ३)

बहुत सावधानी से ख़रीदें कम क़ीमत में बढ़िया माल; पसंद न हो तो वापिस दाम। १०) सैकड़ा कमाशन

उम्दा व मज़बूत बक्स मुफ़्त] सच्चाई मुक़ाबला करने से ही प्रकट होगी [हार्मोनियम सीखने की बड़ी पुस्तक साथ

आजकल हारमोनियम की बहुत-सी दुकानें हो गई हैं, लेकिन "एल्० डी० आहूजा लाहौर के कारख़ाने का बना बाजा उन सबमें श्रेष्ठ है"— यह जिन लोगों ने हमारा बाजा बजाया है, उनका मत है। इसका कारण यह है कि सुंदरता, पायदारी व सुरीलेपन में संसार-भर के बाजे इनसे हेच हैं। सर्व सभा-सोसाइटी, राग-विद्यालय, देवालय, नाटक, क्लब इत्यादि स्थान हमारे ही बाजों से सुशोभित हैं। और अनेकों प्रशंसापत्र प्राप्त हो चुके हैं।

१. डबल रीड्स नालीदार पेटी ६ यह जर्मन रीड्स सिर्फ़ । पैर से बजानेवाली १२५), ११०), १००), ९०), ८५), ८०), ७५), ७०)

२. डबल स्वर सिर्फ़ हाथ से बजानेवाला ५-६ स्टाप ५०), ४५), ४३), ४०), ३५), ३२)

३. डबल स्वर कैसरील रीड्स ९५), ९०), ८५), ८०), ७५); पेरिस रीड्स ७५), ७०), ६५), ६०),

४. डबल रीड्स हाथ व पैर से बजानेवाला जर्मन रीड्स ६ स्टाप ७५), ७०), ६५), पेरिस रीड्स ११०), १००), ९५), कैसरील रीड्स १२५), १२०), १००)

५. डबल रीड्स नालीदार पेटी सिर्फ़ पैर से बजानेवाला ६ स्टाप पेरिस रीड्स १५०), १४०), १३०), कैसरील रीड्स १७५) १६०), १५५)

६. कैपलर हार्मोनियम सिर्फ़ एक हाथ से बजाने से दोहरे स्वरों की आवाज़ देनेवाली ६ स्टाप ६०),५५),५०),पेरिस रीड्स ६०) ८५),८०)कैसरील रीड्स १२०),११५),११०) दूसरी जगह रद्दी माल पर पैसा बरबाद न करें।

७. सफ़री हार्मोनियम ज़ाहिरा बक्स की शक्ल, आवाज़ बढ़िया पेटी भी अधिक। वज़न ८ सेर, सफ़र के लिये अत्युत्तम है। दाम ८०), ७५), ७०), ६५) ६०), ५५), ५०), पेरिस रीड्स १२०), ११०) कैसरील १४०), १३०), नक़ालों से सदा सावधान रहें।

नोट—१०) मनीआर्डर द्वारा पेशगी भेजें, अपना नाम, पता, रेलवे स्टेशन आदि साफ़ लिखिए। पूरी क़ीमत पेशगी आने पर रेल-भाड़ा माफ़। १००) से अधिक के बाजे के साथ बढ़िया सुनहरी घड़ी मुफ़्त इनाम।

मँगाने का पता—एल० डी० आहूजा ऐंड संस आहूजा बिल्डिंग्ज (S. L.) सौंदर्य रोड, लाहौर.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(यदि इसमें १३२ सातरंगी सुंदर चित्रें असली न हों तो क़ीमत वापस देंगे)

असली पुराना

काश्मीरी कोकशास्त्र

रंगीन १३२ चित्रों सहित संपूर्ण

(श्रीमान् कोका पं० महामंत्री काश्मीर की असली पुस्तक का अनुवाद)

नक़ली पुस्तक को लोग भारी दामों पर बेचकर लूट रहे हैं। उनकी चिकनी-चुपड़ी बातों में पड़कर धोखे में न पड़ें।

पद्मिनी, चित्रिणी, शांखिनी और हस्तिनी तथा शशक, वृषभ, मृग और अश्व इन चारों प्रकार की स्त्रियों तथा पुरुषों की पहिचान, उनका वर्णन, स्त्री-पुरुष का जोड़ा, स्त्री को आयु-भर स्वस्थ, सुंदर, सौंदर्य की देवी और अपनी आज्ञा माननेवाली बनाए रखना, मन-चाही सुंदर तथा बलिष्ठ संतान उत्पन्न करना, गर्भ में पुत्र-पुत्री की अथवा नेक व बद की पहचान, स्त्री-पुरुषों के जोड़ों का मिलान, संतान उत्पन्न न होती हो तो ज़रूर हो, पूरे सौ वर्ष तक हृष्ट-पुष्ट, सुंदर और स्वस्थ बने रहना, कुमारी भेद और लक्षण, प्रेम, प्रीति, परदा, स्त्री-पुरुष का परस्पर संबंध, स्त्रियों का रजोदर्शन अर्थात् ऋतु, उसका सामयिक प्रभाव, सहवास, विलासियों के लिये सहवास के नियम, गर्भाधान, चौरासी आसन, गर्भ-परीक्षा, गर्भोत्पत्ति, गर्भ-वृद्धि, गर्भ रोकना, प्रसव और शिशुपालन, स्त्रियों के शृंगार, उनके संबंध में समस्त यौवन-वर्द्धक आनंद-दायक मसाले, स्त्री-पुरुषों के कोकशास्त्र-संबंधी रोग और उनकी अद्भुत गुणकारी औषधियाँ, कामोद्दीपक दवाएँ, वशीकरण, स्त्री-पुरुषों की १३२ तसवीरें तथा ८४ आसनों के दिल-चस्प हालात दर्ज हैं। यही नहीं, स्त्री तथा पुरुषों की गुप्त बीमारियाँ आदि कई एक ऐसी दर्ज हैं, जो यहाँ लिखना उचित नहीं; पाठक समझ लें। इसके १३२ चित्र कानपुर, कलकत्ता वग़ैरह के मशहूर कारीगरों से बनवाए हुए हैं। क़ीमत उत्तम सुनहरी जिल्द, डाक-ख़र्च सहित २॥), रेशमी सुंदर जिल्द ३)

रबड़ की तिलस्मी थैलियाँ असली

शारीरिक रक्षा और आनंद प्राप्त करने की सरल और सुंदर युक्ति और कई प्रकार की शारीरिक व्याधियों से बचानेवाली यह वस्तु है। इनको धारण कर...से आतशक, सुज़ाक आदि रोग नहीं होते। १ थैली मुद्दतों काम देती है। बड़े मज़े की चीज़ है। दाम मरदानी थैली ३), २॥), २), १॥) नक़ली थैली १॥), १), ॥), ॥) ज़नानी थैलियाँ जिनको धारण करने से बढ़ती औलाद पर क़ाबू रहता है और न होगी ३), ४), ५)

सफ़ाई का ठेकेदार—नाज़ुक-से-नाज़ुक गुप्त जगह पर इस तेल को लगाने से वहाँ उमर-भर बाल पैदा न होंगे, दाग़-धब्बा न पड़ेगा, सबके काम की वस्तु है। फ़ी औंस ३)

आईनए-सिकंदरी—यह आइना हिंदुस्तान के मैस्मरेज़रों के दिमाग़ का निचोड़ है, जिसे हर शख़्स बिना क़ैद उमर देख सकता है। इसके ज़रिए ग़ायब और गुमशुदा का पता, बीमार के सेहतयाब होने व न होने का हाल, आनेवाले और गुज़रे हुए हालात, किसी मुश्किल का हल होना या न होना, मरे हुए दरवेशों और शहीदों, अज़ीज़ों व दोस्तों की रूहों से मुलाक़ात हो सकती है। जिसे कभी न देखा हो उसे आइना में देख सकेंगे। ग़रज़े कि यह आइना अपने असर से सब कुछ बता सकता है। क़ीमत मय परचा तरक़ीब बड़ा साइज़ १॥), डाक-ख़र्च-सहित।

गर्ज़ की रियायत—केवल ६॥) में ४ बढ़िया घड़ियाँ

१—जर्मनी बी० टाइमपीस, २—रेलवे रैगूलेटर वाच ३—बढ़िया फ़ैंसी सुंदर रिस्टवाच, ४ बच्चों के लिये अति सुंदर बेबी टाइम रिस्ट मय चेन व तस्मों के।

२०) की घड़ी से अकेली का मुक़ाबिला करेगा

रिस्टवाच दादा ख़रीदें पोता बरतें

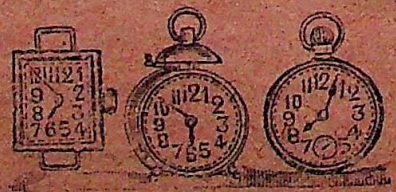

पाकेटवाच डायल पर एंजिन का चित्र है

यह घड़ियाँ अति सुंदर मज़बूत फ़ैंसी और सच्चा समय देनेवाली हैं इनकी असली क़ीमत ३०) है, मगर विलायत से ६ हज़ार की तादाद में इकट्ठी मँगाने की वजह से सस्ती पड़ी हैं इस कारण हम भी सस्ते दामों बेच रहे हैं। इसलिये मँगाने में शीघ्रता करें और अपने इष्ट-मित्रों को भी इस विज्ञापन की सूचना दे दें, देर करने से यह सुअवसर जाता रहेगा, बिक जाने पर ३०) में भी ऐसी उत्तम घड़ियाँ न मिलेंगी ८ वर्ष की गारंटी का फ़ारम हर घड़ी के साथ मिलेगा। यह घड़ियाँ ३६ घंटे की चाबीवाली हैं। डाक-ख़र्च ॥=) अलग।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रोतों को हँसाने और मुरदादिलों को ज़िंदादिल बनानेवाली अद्वितीय पुस्तक

यदि हँसते-हँसते पेट में बल न पड़ जायँ तो कहना

हँसी का गोलगप्पा

यह अनुपम पुस्तक चटकीले, चुलबुले मज़मून से भरी हुई है। इसकी एक कहानी पढ़ने से हँसते-हँसते पेट में बल पड़ जाते हैं। आदमी ख़्वाह कितना ही उदास क्यों न हो, इसकी एक ही मनोरंजक कथा पढ़ने से दुःख दूर हो जाते हैं। इस पुस्तक में कई प्रकार की हास्य-रस से भरपूर कहावतें, पहेलियाँ और विचित्र-विचित्र दोहे-श्लोक आदि-आदि हर प्रकार के लोगों के लिये ऐसे अनोखे, अनूठे लतीफ़े बड़े परिश्रम से संपादन करके अंकित किए गए हैं, जिनसे पढ़नेवालों के दिल-दिमाग़ के कपाट खुल जाते हैं। इस पुस्तक ने इस विषय की सब पुस्तकों को मात कर दिया है। अर्थात् इस पुस्तक को अद्वितीय बनाने में कोई न्यूनता बाक़ी नहीं छोड़ी। शीघ्र मँगवाकर आनंद उठाइए। बड़े आकार के २०४ सफ़े। मूल्य उत्तम जिल्दवाली १॥), डाक-ख़र्च ॥) अलग।

यक्षिणी-भैरव-साधनम्—इस पुस्तक में नाना प्रकार के चमत्कार यंत्र-मंत्र आदि विषय सरल हिंदी भाषा में लिखे गए हैं। जिनसे विद्वान् तथा अल्पपठित पुरुष भी अपनी मनोकामना पूर्ण कर सकते हैं। योग-विद्यावर्णन, यक्षिणी तथा शिव, विष्णु, ब्रह्मा, सूर्य, चंद्र, भैरव, महावीर देवतों की सिद्धि प्राप्त करके अपनी आशाएँ पूर्ण होती हैं। क़ीमत २॥), डाक-ख़र्च-सहित।

बंगाल देश का जादू—बंगाल देश जादू में बड़ा मशहूर है। आपने कहानियों में पढ़ा होगा कि एक आदमी बंगाल देश में चला गया और उस देश की स्त्रियों ने उसको पकड़कर भेड़ या बकरी बनाकर अपने पास रख लिया। यह बातें बिलकुल ठीक हैं और उन्हीं कहानियों को पढ़कर कई महाशयों का जी यही चाहता है कि हम भी वैसे ही जादूगर बन जावें। इसी वास्ते यह पुस्तक तैयार की है। इसमें सब प्रकार के सहज रीतिवाले तंत्र, मंत्र, यंत्र अंकित कर दिए हैं कि सर्व साधारण इसे पढ़कर अपनी इच्छा पूर्ण कर लें। कई रोगों के यंत्र, सर्प आदि जीवों को वश करना, आमदनी बढ़ाने के मंत्र, भूत-प्रेत को दूर करना आदि विषय भी दर्ज हैं। मूल्य १), डाक-ख़र्च-सहित।

फ़रंगी और हिंदुस्तानी मदारी अर्थात् भानमती का पिटारा

यह पुस्तक योरप और हिंदुस्तानी मदारियों का पिटारा है। इसमें अंडे, बोतल, गिलास, फुलझड़ी, रुपया, ताश के हर प्रकार के खेल, भूत-प्रेत, जिन्न उतारना, अँधेरे में रोशनी कर देना, मुँह से आग निकालना, हाथ पर आग रक्खें तो हाथ न जले, मनुष्य को क़त्ल करके ज़िंदा-कर देना, आम का बूटा, सरसों हाथ पर जमाना, बिना भट्ठा जुआर-चने भून लेना, आग पर खाना न पके, बँधे मनुष्य को छुड़ाना, क़ैदी की बेड़ी खुल जावें, काग़ज़ की कढ़ाई में पकौड़ी तलना, कमरे में हर रंग की रोशनी कर देना, जादू की स्याहियों के नुस्ख़े जिनसे लिखा हुआ अन्य मनुष्य पढ़ न सके और सैकड़ों तमाशे बहुत ही सरल रीति से लिखे हैं। मूल्य १॥), डाक-महसूल-सहित।

असली पुराना मिस्र का जादू सचित्र रंगीन संपूर्ण (दसवाँ एडीशन)

(मिस्र-देश के प्रचलित जादू-विद्या की एक हस्त लिखित पुस्तक का तर्जुमा)। अपनी छाया, सूर्य, शनि, चंद्रमा, मंगल आदि ग्रहों को सिद्ध करना (मूसा फ़रऊन के समय की विचित्र बातें आप मँगा करके देख लो)। (१) वशीकरण, (२) सूर्यवशीकरण, (३) चंद्रवशीकरण, (४) मंगलवशीकरण, (५) शनिवशीकरण, आदि प्रत्येक ग्रह का वशीकरण और इसके सिवा अन्य कई चीज़ों के वशीकरण करने के लिये पूर्ण विधियों से युक्त चकित करनेवाले नुस्ख़े दर्ज किए हैं। इसके सिवा हर तरह के साधन रोगों पर करना, घर बैठे और देशों की सैर करना, हवा में उड़ते फिरना, जिसको चाहना वश कर लेना, दृष्टि से गुप्त हो जाना, दूसरे रूप में प्रकट होना, दूर दराज़ की वस्तु मँगवा लेना, देव, परी, जिन्नों को अपने अधिकार में रखना और इच्छानुसार उनसे काम लेना इत्यादि—यदि यह पुस्तक लिखे-अनुसार न हो तो वापस कर दो। क़ीमत सजिल्द सिर्फ़ २), डाक-महसूल-सहित।

१,०००) रुपया माहवार शर्तिया कमा लो (चौथा एडीशन)

इस पुस्तक में ५२८ हुनर ऐसे छपे हैं, जिनमें से एक भी अपने मतलब का चुन लिया जाय, तो १,०००) रु० महीना कमाए जा सकते हैं। मसलन् गिलटसाज़ी, फ़ोटोग्राफ़ी, दंदानसाज़ी कुश्ते बनाना, बाल उड़ाने का तेल, पाउडर, साबुन, बाल काले करने का अँगरेज़ी ढंग का ख़िज़ाब और बाल उम्र-भर न पैदा होने का नुस्ख़ा मूछ बढ़ाने का तेल, हीरा-मूँगे बनाना, शीशा साफ़ करना, पत्थर जोड़ना, मामबत्ती, शोरा-गंधक के गिलास आतशबाज़ी, हर तरह के साबुन, इत्र, तेल, फुलेल, सब रंगों के कपड़े रँगना, अँगरेज़ी ढंग के खाने, डबल रोटी, बिस्कुट, मिठाई, विलायती सोडावाटर, अचार मुरब्बे, चटनियाँ, तरह-तरह की बीमारियों के इलाज और नुस्ख़े, १०८ बीमारियों की एक दवा का नुस्ख़ा, आदि ५२८ हुनर दर्ज हैं। मूल्य डाक-महसूल-सहित सजिल्द १॥) ४७४

पता—लक्ष्मणदास आहूजा ऐंड सन्स, आहूजा बिल्डिंग्स S.L-2 ब्रांडर्थ रोड, लाहौर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुंदर, सस्ती और मज़बूत

रबर की मुहरें

अथवा

पीतल की सील, मुहरें और चपरास

आपको जब कभी चाहिए तुरंत नीचे लिखे पते पर नमूना लिख भेजें। अब इधर-उधर भटकने की ज़रूरत नहीं रही। आपके आर्डर के मुताबिक मुहरें या चपरास बहुत शीघ्र तैयार करके सेवा में भेज दी जायँगी।

मुफ़्त मँगाइए—हमारा सब प्रकार की मुहरों और चपरास का कैटलॉग।

सब प्रकार की रबर और पीतल की मुहरें और चपरास आदि बनाने का कारख़ाना।

भोलानाथ कंपनी

२६, अमीनाबाद-पार्क, लखनऊ

RAMLAL

DENTIST

27, AMINABAD PARK, LUCKNOW.

All Sorts of Dental Works

ARE EXECUTED PROMPTLY

- AT -

Reasonable Rates.

हिंदुस्थान-भर को आपके

माल

की ज़रूरत है।

१०,००० एजेंट आपका माल लेने और बेचने को तैयार है।

कैसे ?

मैनेजर 'सुधा', लखनऊ से पूछिए।

THE

GANGA FINE ART PRESS,

LUCKNOW.

Telegrams: GANGA, LUCKNOW. Telephone No. 6.

All kinds of Job Work

and

Designs for advertisement

in

Vernacular and English.

TERMS: Moderate Execution: Excellent.

Delivery: Prompt.

Payment: Part in Advance,

Balance on delivery.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्वेतकुष्ठ की अद्भुत जड़ी

प्रिय पाठकगण! औरों की भाँति मैं प्रशंसा करना नहीं चाहता। यदि इसके तीन बार के लेप से इस रोग की सफ़ेदी जड़ से आराम न हो, तो दूना मूल्य वापस दूँगा, जो चाहें =) का टिकट भेजकर प्रतिज्ञापत्र लिखा लें। मूल्य ३)

वैद्यराज पं० महावीर पाठक, नं० ३०, दरभंगा।

साहित्य-रत्नाकर

गंग, अकबर, अनन्य, केशव, किशोर, जमाल, जसु, नवनीति, नाथ, बिहारी, बीरबल आदि ३०० कवियों की मनोरंजक काव्य-माला। कवि-परिचय-सहित। सुनहरी जिल्द। पृष्ठ ६००। मूल्य डाक-व्यय-सहित ४॥)

चौरासी आसन (हठयोग)

मंत्र-प्रक्रियादि-युक्त। ६८ चित्रों से सुशोभित। सरल विवरण-सहित। मूल्य १॥)

मिलने का पता—

कवि कहानजी-धर्मसिंह, राजकोट, काठियावाड़

हमारे मंत्र-भंडार का विषय पढ़कर विश्वास नहीं होता, परंतु सर्वथा सत्य है!

सचित्र मंत्र-भंडार

कौड़ी उड़ाकर या थाली सटकर साँप, बिच्छू, गीदड़ादि समस्त विषैले जीवों के विष तथा डाइन की नज़र झाड़ने के २०० मंत्र, बात-की-बात में स्त्री-पुरुषों को वश करने के ४० मंत्र, विलासिता और स्तंभन आदि के, आज़माई औषधियों के, सैकड़ों नुसख़े सरल भाषा में इसमें दिए हुए हैं। कोई भी आसानी से लाभ उठा सकता है। इसे पुस्तक नहीं, कल्पतरु जानिए। फिर भी प्रचारार्थ इसका मूल्य केवल १॥) ही रक्खा गया है।

मिलने का पता—

रामप्रसाद गुप्त, वैद्यनाथधाम

सच्चे गोटे-पट्टे की नामी दूकान

हमारे यहाँ हर क़िस्म का गोटा पट्टा गोखरू सलमा सितारा व सूती व मख़मली कामदार फ़ीते व मख़मली कामदार टोपियाँ, साड़ी, हार हर क़िस्म के तैयार रहते हैं, ज़रदोज़ी व कामदानी का काम हर क़िस्म का आर्डर पर जल्द तैयार हो सकता है।

इसके अलावा चाँदी सोने का ज़ेवर व चाँदी के बर्तन वग़ैरह का भी काम बहुत सुबीते से होता है। एक मर्तबा अवश्य आर्डर भेजकर परीक्षा कीजिए, आपको ख़ुद परीक्षा हो जायगी कि और देसावरों अथवा दूसरी दूकानों से सस्ता व सच्चा काम है या नहीं। इसके अलावा लखनऊ की मशहूर चीज़ें बाज़ार भाव पर भेजी जाती हैं।

जानकीप्रसाद अग्रवाल, गोटा मरचेंट,
चौक, लखनऊ.

मुफ़्त! मुफ़्त!! मुफ़्त!!!

जो सज्जन सुधा के नए

ग्राहक होंगे, उनको एक प्रति मान-विजय नाटक और एक प्रति गीता भाषा-वार्तिक भेंट में भेजी जायगी। डाक-व्यय के लिये एक आना का टिकट भेजें।

मिलने का पता—

श्रीयुत प्रेमी

पो० चौमू, (जयपूर)

ज़रूरत है

ऐसे उम्मेदवारों की जो टेलीग्राफ़ व स्टेशन-मास्टरी का काम सीखकर गवर्नमेंट रेलवे और महकमा नहर में नौकरी करना चाहें। किराया रेल कालेज देगा। पूरे हालात =) का टिकट भेजकर मालूम करें।

इंपीरियल टेलीग्राफ़ कालेज—
देहली

FOUNTAIN PENS

of various makes and qualities
STOCKED BY
BHOLA NATH & CO.,
Hardware, Paint & General Merchants,
Stationers & Rubber Stamp Makers,
30, Aminabad Park, LUCKNOW.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तात्कालिक चिकित्सा

लेखक, श्रीलालबहादुरलाल। मनुष्यों की असावधानी तथा नियमों की अनभिज्ञता के कारण यह मनुष्य-शरीर टूटा-फूटा एवं अस्वस्थ रहता और विनाश को प्राप्त हुआ करता है। फलतः इसे प्रति-क्षण किसी सुयोग्य डॉक्टर अथवा वैद्य की आवश्यकता हुआ करती है। किंतु प्रत्येक स्थान पर और प्रत्येक समय उसकी सहायता प्राप्त करना कठिन होता है। इसलिये प्रत्येक मनुष्य को चाहिए कि वह अपनी शरीर-रचना तथा उसके स्वास्थ्य-नियमों का यथोचित ज्ञान रक्खे, ताकि समय-कुसमय, डॉक्टरों अथवा अनुभवी वैद्यों की अनुपस्थिति में भी, वह अपनी, अपने कुटुंबियों की, मित्र-मंडली और अन्य प्राणियों की यथार्थ तात्कालिक चिकित्सा कर सके। यह पुस्तक इसीलिये लिखी गई है। भाषा सरल है, और बीसों चित्रों से इसका आशय समझने में और भी सुगमता हो गई है। इसके लेखक एक अनुभवी बालचर-शिक्षक (Scout Master) और सहृदय देश-भक्त हैं। बालचरों के लिये तो यह पुस्तक अत्यंत उपयोगी है। साथ ही प्रत्येक छोटे-बड़े गृहस्थ को भी इसकी एक-एक प्रति अपने यहाँ रखकर लाभ उठाना चाहिए। इतने चित्रों के रहते हुए भी इस उपयोगी, १५२ पृष्ठों की, सचित्र पुस्तक का मूल्य १) ; सजिल्द १।।।)

संचालक गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय, लखनऊ

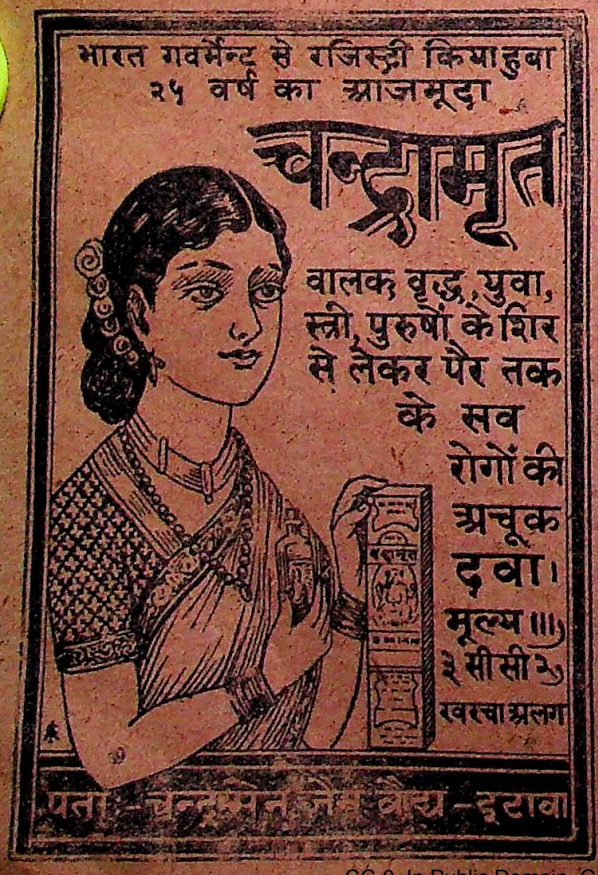

सीधी लाइन की सादी मुहर (केवल अक्षरों की २ लाइनें, २ इंच लंबी, और आधा इंच चौड़ी तक) छापने का सामान-सहित। मूल्य १), डाक-खर्च ।≡) ; बड़ी होने से दाम अधिक होगा। हिंदी, अँगरेज़ी, उर्दू तथा बँगला, कोई भाषा हो। अंडाकार मुहर, जैसा ऊपर नमूना है, २।) भय सामान। डाक-खर्च एक मुहर ।≡), दो का ।) और तीन का ।।≡); काम देखकर खुश होंगे।

पता—जी० सी० खत्री, रबर-स्टांप-मेकर
बनारस (सिटी)

Selecteio.s from Hindi Litrature
(छ खंड)
संग्रहकर्ता
रायबहादुर लाला सीताराम बी० ए०
मूल्य ३०)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

WHY YOU SHOULD

ADVERTISE IN

Sudha ?

you require two things to look in to your advertising medium.

1. CIRCULATION.

The standing circulation of SUDHA is 7200 copies which we are ready to prove: This is more than the combined circulation of any two magazines in Hindi.

2. READERS.

The Interest of the advertisers lies in publications whose circulation extends more to BUYING PUBLIC and big men. "Sudha" is read by the manufacturers, the businessmen, the tradespeople, the middleclass men —by all the progressive men.

7,200 Copies among Largest Buyers

AND THE RATE OF CHARGES IS ANOTHER PRIME CONSIDERATION.

WE CLAIM

OUR CHARGES TO BE THE LOWEST

WE GUARANTEE OUR CIRCULATION, WE PROVE IT TO THE SATISFACTION OF OUR ADVERTISERS.

SEE THE MARVELLOUS RESULT.

सुधा की सत्यता का प्रमाण

हमने हिंदी के हित-निमित्त सुधा के ग्राहकों को एक आना डाक-व्यय भेजने पर मान-विजय आदि पुस्तकें भेंट में भेजने की प्रतिज्ञा की थी। तदनुसार ग्राहक नं० ८८२ से लेकर ३२५० तक के ग्राहकों में अनेकों के पत्र आए तथा आ रहे हैं और उनको मान-विजय आदि पाँच-पाँच पुस्तकें भेजी जा रही हैं। केवल तीन महीने में अथवा तीसरा अंक निकलने तक सुधा का ४००० ग्राहक हो जाना, उसके समुचित संचालन—सुंदर स्वरूप, समुन्नत अवस्था और अतीव सुंदरता आदि—का द्योतक है। अन्य पत्रों के ३ वर्ष में जितने ग्राहक नहीं होते, उतने सुधा के तीन महीने में हो जाना, उसकी लोक-प्रियता का नमूना है।

"प्रेमी"

चौमू (जयपुर)

WE QUOTE ONLY ONE FROM SCORES OF SUCH LETTERS AND LEAVE YOU FREE TO JUDGE & DECIDE.

We fix our rates just in accordance with our circulation—and the figure we quote is at a rate lower than that of any paper in India. We do not insist upon every contract and assure you good result in one insertion only so that you can try and judge for yourself upon any engagement.

Advt. Manager, "Sudha", Lucknow.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परिणाम में मीठा फल

"हील-एक"

यह प्रभावपूर्ण औषध चर्म-रोगों के लिये संजीवनी है। इस एक ही दवा से सब प्रकार के घाव-वेदना, बात, मोच, गाँठ (गिल्टी), झाईं, मुँहासे, फुंसी, चकत्ते, आग से जलने का घाव, दर्द, खून का बहना आदि सभी तरह के चर्म-रोग व चमड़े पर होनेवाली व्याधियों के लिये "हील-एक" रत रूप दवा है।

ति डिब्बी ॥=) डा० म० ।=)

तीन डिब्बी १॥।) डा० म० ॥)

कफ खाँसी की दवा

जब सब दवा खाके आराम न हो तो एकबार डॉ० एस्० के० बर्मन की यह दवा खाइए। आज ४४ वर्षों से हज़ारों रोगियों द्वारा परीक्षित होकर दुनिया-भर में अमर नाम पा रही है। एकबार परीक्षा कर देखिए। अवश्य संतुष्ट होंगे।

प्रति शीशी (बड़ी) १) डा० म० ॥)

तीन शीशी (बड़ी) ३॥=) डा० म० ।॥=)

प्रति शीशी (छोटी) ॥=) डा० म० ॥)

तीन शीशी (छोटी) २) डा० म० ॥=)

बहुमूल्य सम्मति

भारत की राष्ट्र पताका

"..... ...श्रीमती सरोजनी नायडू लिखती हैं —

डॉक्टर एस्० के० बर्मन की बनाई सभी ओषधियाँ गुणकारी होती हैं।

इनकी दवाइयों के प्रति मुझे अपना अनुभव व विश्वास प्रकट करने में बड़ी प्रसन्नता होती है।

मुझे यह विश्वास है कि वे अपने उपयोग में देशवासियों द्वारा अवश्य उत्साहित किए जायँगे। ..... ।"

पता— डॉक्टर एस्० के० बर्मन, (विभाग नं० ४६) पोस्ट बक्स नं० ५५४, कलकत्ता।

एजेंटः—लखनऊ (चौक) में डॉक्टर गंगाराम जैतली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"कीन्हेहु सुलभ सुधा बसुधा हू।"
(गो० तुलसीदास)

वर्ष १ खंड १ | पौष, ३०५ तुलसी-संवत् (१९८४ वि०)— जनवरी, १९२८ | संख्या ६ पूर्ण संख्या ६

आशा*

(१)

कहा किसी ने—"रम्य प्रकृति, क्यों करती नित्य अथक नर्तन?
पल-पल पर होता है तुझमें क्यों नित-नूतन परिवर्तन?"
कहा प्रकृति ने—"यह प्रियतम को, किया रिझाने का उपचार,
इसीलिये मैं सजती हूँ नित, पल-पल नए-नए शृंगार।
नृत्य दिखा निःसीम अवधि तक
यों ही उन्हें रिझाऊँगी,
आशा है, इस भाँति किसी दिन
प्रियतम से मिल जाऊँगी!"

(२)

कहा भ्रमर ने—"वन्य कुसुम, क्यों आकर खिले यहाँ एकांत;
छोड़ अमित उद्यान मनोहर क्यों भाया दुर्गम वनप्रांत?"
कहा कुसुम ने—"क्यों बनता मैं किसी देव-मस्तक का भार,
अथवा अपना हृदय छिदाकर होता किसी हृदय का हार!
यहाँ मिली है मुझे मनोहर
प्रकृति-प्रिया की प्यारी गोद;
आशा है, झड़कर अनंत में
मिल जाऊँगा कभी समोद!"

रामकिशोर शर्मा "किशोर"

* भरतपुर के हिंदी-साहित्य-सम्मेलन के अवसर पर, कवि-सम्मेलन में, यह कविता पढ़ी गई थी। इस पर सुधा-संपादक पं० दुलारेलाल भार्गव ने लेखक को स्वर्णपदक दिया था।—सु०-सं०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संगठन-समस्या

मी श्रद्धानंद हिंदू-जाति के लिये, विशेषकर आर्य-समाज के लिये, एक रत्न थे। यदि उनकी मृत्यु ऐसे उन्नत बलिदान के रूप में न भी होती, तो भी उनका जीवन ऐसा था कि सारे हिंदू उनकी मृत्यु पर अफ़सोस करते और उनकी यादगार का दिन मनाते। परंतु एक मुसलमान की गोली ने इतना काम किया कि स्वामीजी को एक ऊँचे दर्जे का शहीद बना दिया! स्वामी श्रद्धानंदजी के बलिदान का हम पर क्या प्रभाव पड़ा है, और उस प्रभाव में आकर हमने अपनी जाति के लिये क्या किया है, यह प्रश्न मैं पाठकों के लिये छोड़ता हूँ। यहाँ पर मैं आपके सामने दूसरा दृश्य लाना चाहता हूँ। स्वामी श्रद्धानंद का क़ातिल अब्दुलरशीद नाम का एक मुसलमान था। क़त्ल की ख़बर सुनने पर बहुतेरे मुसलमान नेताओं ने उसके कार्य को बुरा कहा। परंतु ये केवल ऊपर की बातें थीं। दो-चार दिन में ही मुसलमानों के भीतरी भाव प्रकट हो गए, जब वे सब मिलकर उसे बचाने और बेगुनाह साबित करने का प्रयत्न करने लगे। यहाँ तक कि उसके कुटुंब के लिये चंदे होने आरंभ हुए, और एक अवसर पर तो दिल्ली के चार-पाँच सौ मुसलमान यह झूठी गवाही देने को तैयार हो गए कि अब्दुलरशीद पागल था। जब पागल न बन सका, तो उसे ग़ाज़ी का पद दिया गया, और इस ग़ाज़ी की जान बचाने के लिये एड़ी-चोटी का ज़ोर लगाया गया, सहस्रों रुपए चंदा करके लंदन की प्रिवी कौंसिल में उसकी रिहाई के लिये अपील की गई। और, जब किसी ओर से कुछ न बना और उसको फाँसी मिल ही गई, तो फाँसी के दिन दिल्ली के चालीस-पचास सहस्र मुसलमानों ने, जो हिंदू सामने आया, उसे ज़ख़्मी करना या लूटना आरंभ किया। दो दृश्य हमारे सामने हैं—एक तो हिंदुओं की मनोवृत्ति का, जिसके कारण उन्होंने अपने एक पूज्य नेता के वध हो जाने पर भी अपने हृदय में कुछ दुःख अनुभव नहीं किया; दूसरा मुसलमानों की मनोवृत्ति का, जिसके कारण उन्होंने एक क़ातिल की मुक्ति के लिये इतनी कोशिशें कीं, और अब वे हिंदुओं को धमकियाँ देते हैं कि यदि तुम स्वामी श्रद्धानंद की शहादत का दिन मनाओगे, तो हम दूसरे हिंदू-कार्यकर्ताओं का वध करेंगे।

समस्या हमारे सामने यह है कि ऐसी दो मनोवृत्तियाँ क्योंकर और कितनी देर तक इकट्ठी चलती रहेंगी। एक भाई तो मुझे झट उत्तर देता मालूम देता है—"बस, हिंदुओं के अंत के दिन समीप आ रहे हैं। शूरवीर और कार्यकर्ता हिंदुओं का वध किया जा रहा है, और कायर तथा भीरु हिंदुओं को डरा-धमकाकर मुसलमान बनाया जा रहा है। जब पाँचवाँ हिस्सा मुसलमानों का इस प्रकार हिंदुओं के पीछे पड़ा है, तो ज्यों-ज्यों इनकी संख्या अधिक होती जायगी, हिंदू आप-से-आप कम होते और मिटते चले जायँगे। हिंदू मुसलमानों का प्रतीकार इसलिये नहीं कर सकते कि हिंदू-जाति एक वृद्ध जाति है, और बावजूद गीता के इस उपदेश के कि 'जो धर्म-युद्ध में मारा जाता है, वह स्वर्ग भोगता है, और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जो वैरियों को इस युद्ध में मार देता है, वह पृथ्वी पर राज्य करता है', हिंदू लोग लड़ने-मरने के लिये तैयार नहीं हो सकते।" यह बात देखने में तो ठीक प्रतीत होती है, परंतु वास्तव में ऐसा नहीं है। क्योंकि यदि हिंदू-जाति वृद्ध होकर लड़ने-मरने के अयोग्य है, तो भारतवर्षीय मुसलमान क्यों लड़ने-मरने पर तैयार रहते हैं—वे भी तो हिंदू-जाति के एक भाग हैं। ज्यों ही कोई हिंदू मुसलमान होता है, उसके हृदय में हिंदुओं के विरुद्ध द्वेष-भाव इतना बढ़ जाता है कि उसका मरने-मारने का भय दूर हो जाता है। इसलिये वृद्धावस्था की 'थ्योरी', जिसे हम Physiological theory कह सकते हैं, ठहर नहीं सकती।

दूसरा भाई कहता है—"हिंदुओं के पतन का कारण तो उनके 'भोजन' (Food) में पाया जाता है। हिंदुओं के हृदयों में अहिंसा ने अपना घर कर लिया है। वे केवल घास-पात और दाल खाते हैं; ऐसा भोजन न उनमें कोई उत्साह (Energy) उत्पन्न करता है, न दूसरों को मारने की हिम्मत। पुराने आर्य-पुरुष सच्चे क्षत्रिय थे। वे मरने-मारने से नहीं घबराते थे। आजकल की हिंदू-जाति में वैश्यपन प्रधान है, और उन्हें मरने-मारने के नाम से भय लगता है। यद्यपि बौद्ध-धर्म का नाम-मात्र भी अब भारतवर्ष में नहीं, परंतु इसी धर्म के अहिंसावाद ने हिंदुओं के हृदयों को इस प्रकार पराजित कर रक्खा है कि हिंदू-जाति आर्यों के समान नहीं कही जा सकती।" वह भाई मुझे एक स्थान का दृष्टांत बतलाता है, जहाँ सेठों के मुसलमान नौकरों ने उनके गृहों में आग लगवाई, और उन्हें लुटवाया। और, जब वे मुसलमान नौकर पकड़े गए, तो उन्हीं सेठों ने उनकी जमानतें दीं, और छुड़वाकर, वापस लाकर, उन्हें फिर नौकर रख लिया। इस अंधेर का कारण उसने यह बताया कि वे सेठ लोग न तो हाथ से कोई महत् काम करते थे, और न कोई शक्ति-वर्द्धक भोजन खाते थे, उनकी स्त्रियाँ उन्हें नपुंसक समझती थीं, और उनका प्रेम उन्हीं नमकहराम नौकरों से था, जो उनके घरों को बरबाद करनेवाले थे। यही बात तो हमने लाहौर में भी देखी। हिंदुओं के क़ातिल अधिक करके क़साई लोग थे, जिनके लिये किसी पशु अथवा मनुष्य पर शस्त्र चलाना एक स्वाभाविक बात थी। क़साई का कर्म निंदनीय हो; परंतु इन छुरियों ने सब हिंदुओं के हृदयों में ऐसा भय उत्पन्न किया कि वे गृह से बाहर निकलते काँपने लगे। दूसरे शब्दों में, इन छुरियों ने हिंदुओं की स्वच्छंदता से घूमने-फिरने की स्वतंत्रता छीन ली। वह भाई कहता है—"हिंदुओं को पहले पशु-वध करना सीखना चाहिए। इसीलिये तो यज्ञों में पशुघात किया जाता था। तब हिंदू भी मुसलमानों के अत्याचार का वैसा ही उत्तर दे सकेंगे, और तभी हिंदुओं की रक्षा हो सकेगी। इसलाम के मज़हब में न अहिंसा का भाव है, न दया का। और, आजकल के संसार में उसी की वृद्धि होती है, जिसके हाथ में शक्ति है—चाहे तोप की, बंदूक़ की अथवा चाकू की।" मैं उस भाई से कहता हूँ, तुम्हारी बातें तो ठीक-सी प्रतीत होती हैं; परंतु इन पर चलने का परिणाम क्या होगा? हिंदू और मुसलमान एक दूसरे को क़त्ल करने की घात में रहेंगे, और सारे देश में अराजकता फैल जायगी।

मुझे एक कांग्रेसी भाई मिला। उससे मैंने इस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समस्या का वर्णन किया। उसने झट उत्तर दिया—"बस, मैं तो यह चाहता हूँ कि कोई ऐसी विधि निकल आवे, जिससे हम संसार से मज़हब का नाम-निशान मिटा दें। इस मज़हब ने संसार में बड़े-बड़े खून किए। इस मज़हब पर ज़ोर देने से ही तो भारतवर्ष चार-पाँच वर्ष से मज़हबी दंगों का शिकार हो रहा है। इससे ब्रिटिश सरकार की अब चाँदी है। तुम भी तो हिंदुओं को संगठित करते हुए इन मज़हबी झगड़ों की वृद्धि कराकर गवर्नमेंट की जड़ें मज़बूत कर रहे हो।"

मैं इस बेचारे कांग्रेसी भाई को क्षमा करता हूँ। कांग्रेसी भाइयों के दिमाग़ की बनावट ही इस प्रकार की बन गई है। उन्होंने दो-चार सिद्धांत सीख लिए हैं, और तोते के समान उन्हें दुहरा देना ही अपना बड़ा कर्तव्य समझते हैं। मैंने उससे कहा—मैं तो आपसे इस बात में सर्वथा सहमत हूँ कि हम मज़हब के प्रभाव को संसार से हटा दें। मैं तो देश-भक्ति और मनुष्य-भक्ति को ही बड़ा मज़हब मानता हूँ। आप कृपा करके बताएँ कि वह कौन है, जो इस देश में मज़हबी पक्षपात फैलाने का ज़िम्मेवार है? ४० वर्ष तक कांग्रेस ने यह यत्न किया कि हिंदू-मुसलिम झगड़े मिटाने के लिये इंडियन (Indian) नाम की एक जातीयता इस देश के लिये बनाई जाय। ४० वर्ष तक हिंदुओं ने कांग्रेस के इस मत का साथ दिया और प्रचार किया। वह कौन था, जिसने इस जातीयता का आरंभ से विरोध किया? क्या इस बात के बताने की आवश्यकता है कि मुसलमान बराबर चालीस वर्ष कांग्रेस के विरोधी रहे हैं, और अब भी इस देश में ऐसा कोई मुसलमान नहीं, जो अपने आपको पहले भारतवासी और पीछे मुसलमान मानता हो। अब तक मुसलमानों ने इस देश में अपने आपको एक मज़हबी जमायत नहीं समझा, परंतु एक पृथक् राजनीतिक जाति (Political Community) बनाए रक्खा है, और अब भी वे वैसा ही करने के यत्न में लगे हुए हैं। जहाँ हिंदू इस देश में चाँद के समान एक-जातीयता स्थापित करना चाहते हैं, वहाँ मुसलमान लोग ग्रहण के समान इस जातीयता का नाश करके देश को अँधेरे में रखना चाहते हैं।

मुझे आश्चर्य होता है कि कांग्रेसी लोग ये दो-मानी बातें क्यों करते हैं? वे स्पष्ट क्यों नहीं कहते कि कौन लोग हिंदोस्तान की राजनीतिक उन्नति में बाधा डाल रहे हैं? यदि वे केवल मुसलमान ही हैं, तो मज़हब को बुरा कहकर हिंदुओं और मुसलमानों को क्यों एक ही रस्सी से बाँधा जाता है? यदि आप क़ातिलों और मक़तूलों, दोनों को एक-सा दोषी ठहराएँगे, तो क्या इसका यह परिणाम न होगा कि क़ातिल अपना कार्य करते चले जायँगे? कांग्रेसी लोगों की चाल ही ऐसी है। उन पर हिंदू-मुसलिम-एकता का ऐसा ख़ब्त सवार है कि वे मुसलमानों के मुँह के सामने सत्य कहने का साहस नहीं रखते, और ऐसी-ऐसी दोमानी बातें कहकर हिंदुओं को कमज़ोर करते हैं। इन कांग्रेसी नेताओं में अधिक हिंदू ही हैं। अतएव इनके सिद्धांतों का प्रभाव अधिकतर हिंदुओं पर ही पड़ता है। इनकी एकता की पुकार और कान्फ्रेंसें केवल हिंदुओं को ही अपनी ओर आकर्षित करती हैं। मुसलमान नेता न तो एकता की बातें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करते हैं, न उन्हें स्वराज्य की ही अधिक चिंता है। हर समय वे इसलाम और उसे फैलाने की ही चर्चा करते हैं। इसलिये, उनका चित्त केवल एक ही ओर रहने से, वे अपने रास्ते पर दृढ़ रहते हैं। जब कभी उन्होंने कांग्रेस में भाग लिया, तो उसके द्वारा अपने अधिकार ही बढ़ाने की चेष्टा की। आज महात्मा गांधी कहते हैं, वह इसलिये देश का काम नहीं कर सकते कि हिंदू-मुसलमान, दोनों की बुद्धि उलटी ओर लगी हुई है। मैं पूछता हूँ, इसके लिये कौन जिम्मेवार है? क्या महात्माजी ने, देश के कोने-कोने में खिलाफ़त का प्रचार करके, हिंदुओं के लिये एक अज़दहा उत्पन्न नहीं कर दिया? दोनों मनोवृत्तियों को समान ठहराना भी अजीब बात है! क्या महात्माजी नहीं जानते कि उनका ही खड़ा किया हुआ अज़दहा हिंदुओं को खाने के लिये दौड़ता है, और हिंदू बेचारे इससे जान बचाने में लगे हैं? दोनों वृत्तियों को बुरा कहने का अर्थ तो यही है कि भेड़िया और भेड़, दोनों ही एक-से बुरे हैं। और, क्या यह बात जानते हुए महात्माजी के लिये यह उचित नहीं कि वह हिंदुओं की रक्षा के लिये क्षेत्र में उतरें? जब तक कांग्रेसी भाइयों की इस मनोवृत्ति को मिटा नहीं दिया जायगा, मुझे हिंदू-जाति और इस देश के भविष्य की कोई आशा नहीं दिखलाई देती।

एक दूसरा भाई आया और कहने लगा—"अब तो आपकी समस्या हल हो गई, अब तो बड़े-बड़े राजनीतिज्ञों का ध्यान हिंदू-संगठन की ओर लग गया है, अब तो आपका प्रयोजन सिद्ध हो जायगा।" निस्संदेह प्रयोजन सिद्ध हो जाता, यदि हमारे नेताओं का जी इधर लग जाता। मुझे यह देखते हुए तीन-चार वर्ष हो गए हैं। मुझे इससे निराशा नहीं होती कि हिंदुओं में उनकी कमज़ोरियों के कारण संगठन होना कठिन है। मुझे यह देखकर निराशा होती है कि हम जो हिंदू-संगठन का काम करना चाहते हैं, उसकी ओर पूरा ध्यान नहीं देते। इसका कारण यह है कि अभी तक हमारा दिमाग़ पुराने विचारों का ग़ुलाम है, और अभी कांग्रेस के भरे हुए भूसे से ख़ाली नहीं हुआ है। मेरी समझ में नहीं आता कि जो पुरुष हिंदू-संगठन का महत्त्व समझता है, उसे क्या पड़ी है कि कांग्रेस क्या करती है, क्या नहीं। मैं तो समझता हूँ कि हिंदू-संगठन कांग्रेस के पैदा किए हुए विष का एक-मात्र इलाज है। जो पुरुष कांग्रेस की मनोवृत्ति को हटाना नहीं चाहता, वह हिंदू-संगठन के महत्त्व को अभी तक नहीं समझा।

केवल कांग्रेसी विचार ही नहीं, और भी कई बातें ऐसी हैं, जो हमें हिंदू-समाज से दूर करती हैं। परंतु हमारे नेता तो कहते हैं अभी देखो आहिस्ता-आहिस्ता सब ठीक हो जायगा, हमें जल्दी नहीं करनी चाहिए, कहीं हमारा पुराना धर्म ही न नष्ट हो जाय। मैं हैरान हूँ, हमारे भाई किस वस्तु को हिंदू-धर्म मान बैठे हैं? क्या धर्मशास्त्र के नियम धर्म हैं, जिसके बदलने से हिंदू-जाति या धर्म का नाश हो जायगा? क्या हमारे रस्म-रिवाज धर्म हैं, जिनके बदलने से हमारी जाति का धर्म मिट जायगा? मुझे क्षमा किया जाय, मैं कहता हूँ, धर्मशास्त्र क़ानून है, जिसे जाति के धर्माध्यक्ष बनाते और समय अथवा आवश्यकता के अनुसार जिसमें परिवर्तन करते रहते हैं। हमारे रीति-रिवाज, समाज के लोगों ने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वयं बनाए, और अब समय के अनुसार उनमें परिवर्तन करने का हमें पूरा अधिकार है। वह जाति मुरदा है, जो अपने ही बनाए हुए क़ानून की और उत्पन्न किए हुए रस्मोरिवाज की ग़ुलाम बन जाती है। ऐसी ग़ुलाम जाति के बचने की कोई आशा मुझे नहीं, और न मैं उसके जीते रहने से ही कोई लाभ समझता हूँ। हमें अपनी बुद्धि ठीक करके विचारने की आवश्यकता है। जिन लोगों ने हमारे धर्मशास्त्र या रस्मोरिवाज बनाए, उनके चित्त और दिमाग़ का इतना विस्तार और उद्धार होने की संभावना नहीं थी, जितना कि आज हमारे चित्त और बुद्धि के होने की। वे हमसे १००० या १२०० वर्ष पहले हुए। और, आज यह काल न केवल इस देश में, परंतु सारे संसार में बड़े परिवर्तन का है! इसी समय में योरप की तमाम जातियों की उन्नति हुई, और इस उन्नति के ऐसे बड़े-बड़े परिणाम निकले, जिन्हें देखकर हम चकित हो जाते हैं! इसी समय में इस देश में मुसलमान आए और उनका राज्य हुआ, जिसके साथ इतना और हुआ कि उसके बताने की यहाँ आवश्यकता नहीं। इसी समय में इस देश में अँगरेज़ों का राज्य हुआ, और ईसाई मज़हब और पश्चिमी सभ्यता की लहर चली। इसी समय में इस देश के अंतर्गत ऐसी शक्तियाँ (Forces) काम करने लगी हैं, जो हमारी जाति को मिटा देना चाहती हैं, और कई ऐसे साधन उत्पन्न हुए हैं, जिनका ठीक प्रयोग करके हम अपनी जाति को संगठित और चिरायु कर सकते हैं। उस पुरुष का दिमाग़ क्या ही विचित्र बना होगा, जो इन सब बातों को देखता हुआ भी यह कहता है कि मैं तो हिंदुओं को उन्हीं रस्मोरिवाज और नियमों का ग़ुलाम रक्खूँगा, जो एक सहस्र वर्ष पहले बनाए गए थे। मैं मानता हूँ कि धर्म का एक वह भाग है, जिसे हम सदैव ही एकरस कह सकते हैं। परंतु धर्म का शेष भाग सब ऐसा है, जो कि जाति के भले के लिये बनाया जाता है। ये सब जो धर्म के नियम हैं, केवल जाति की उन्नति के लिये साधन-रूप हैं, न कि ऐसे कि उन्हें ही लक्ष्य बनाकर उनके लिये जाति को नष्ट कर दिया जाय। हमारा लक्ष्य जाति की रक्षा और उन्नति होना चाहिए, और जो नियम हमारे इस काम आवेगा, वही हमारे लिये धर्म कहलावेगा।

जाति-पाँति का उदाहरण हम ले लेते हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि जब इस देश पर बाहरी आक्रमण हुए, तो यहाँ के लोगों ने परस्पर सहायता और रक्षा के लिये अपने आपको छोटे-छोटे जत्थों में बना लिया। इन जत्थों के मेंबर परस्पर सामाजिक प्रेम और बंधनों में बँध गए। जब कभी इनमें से कोई भी अपने जत्थे को त्यागकर पृथक् होना चाहता, तो उसे साथियों की सहानुभूति बिछुड़ने से रोक देती। कुछ इन्हीं जत्थों के संबंध ने उन लोगों में अभिमान-सा उत्पन्न कर दिया। यह अभिमान उन्हें पतित होकर दूसरे मज़हब में जाने से रोकता रहा। इन लाभों को अपनी दृष्टि में रखते हुए भी हमें यह स्मरण रखना है कि जाति-पाँति का यह जाल उस समय के समाज ने ही अपने लिये बनाया था। और, यदि एक सहस्र वर्ष पहले का समाज अपनी रक्षा के लिये एक ताना-बाना रच सकता था, तो क्या आज के समाज को यह अधिकार नहीं कि वह उसी प्रयोजन के लिये इस पुराने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ताने-बाने के स्थान में कोई ऐसे नियम बनाए, जो लोहे की ज़ंजीरों का काम दें। मैं देखता हूँ कि आज हमारी पुरानी जाति-पाँति और बिरादरियों में न कोई सहानुभूति है, न परस्पर प्रेम। आजकल अदालतों, रेलों, नलों, स्कूलों आदि ने सबको यह सिखा दिया है कि मनुष्य सब एक हैं। जन्म से कोई छोटा-बड़ा नहीं हो सकता। इन सब बातों के होते हुए हमारा नीच-ऊँच की पुरानी प्रथा को क़ायम रखना हिंदू-जाति को नाश की ओर ले जाना है। इसलिये मैं चाहता हूँ कि देश के प्रत्येक प्रांत तथा कोने में हिंदू-साम्यवाद के इन दो बड़े नियमों का प्रचार हो—सब हिंदू भाई हैं, और सब हिंदू बराबर हैं। हममें से हरएक इस उद्देश्य को लेकर अपने आचरण से, अथवा छूत-छात, खान-पान, विवाह आदि में, यह साबित करे कि वह प्रत्येक हिंदू को भाई समझता है।

यह एक नया विचार (Idea) है, जिससे हिंदू-जाति नए सिरे से संगठित हो सकती है। केवल समता और भ्रातृ-भाव के प्रचार से ही हिंदू-जाति का पुनर्जीवन होगा। इस नई सामाजिक क्रांति के द्वारा ही हिंदू-जाति बच सकेगी। काल्विन (Calvin) योरप का एक बड़ा भारी सुधारक हुआ है। उसके बड़े शत्रु पोप ने यह कहा है कि काल्विन की शक्ति का रहस्य इसमें है कि वह रुपए से बेपरवाह था। संसार में ऐसे पुरुषों की संख्या भी न्यून नहीं, जो रुपए से बेपरवाह हैं; परंतु उनमें शक्ति नहीं होती। काल्विन की शक्ति इसमें थी कि उसे एक 'विचार' की लगन थी। तमाम शक्ति एक 'विचार' की लगन में पाई जाती है। ज्यों ही एक गिरा हुआ और नीच हिंदू मुसलमान होता है, उसके सामने यह 'विचार' रख दिया जाता है—इसलाम से तुम्हारी निजात होगी, इसे फैलाना तुम्हारा कर्तव्य है। बस, यह विचार उसके भीतर अग्नि प्रज्वलित करता है। हिंदुओं की कमज़ोरी यह है कि उनमें एक 'विचार' काम नहीं करता। उनमें कोई सनातनी है, तो कोई समाजी; कोई कांग्रेसी है, तो कोई संगठनी! कोई-कोई दो-दो विचारों के ग़ुलाम हैं, एक विचार को जानते ही नहीं। उनके अंदर अग्नि कैसे प्रज्वलित हो? मैं तो हिंदुओं के सामने एक Idea रखना चाहता हूँ। इस समय संगठित होकर ही वे बच सकते हैं, और इनका संगठन सब जाति-पाँतियों और मत-मतांतरों को परे रखकर, Equality (समता) और Brotherhood (भ्रातृ-भाव) के नियमों पर, क़ायम किया जाना चाहिए। यही हिंदू-साम्यवाद का उद्देश्य है।

भाई परमानंद

कला और नीति का संबंध

त्रैगुण्य विषया वेदा, निस्त्रैगुण्यो भवार्जुन;
किं कर्म किमकर्मेति कवयोप्यत्र मोहिताः। (गीता)

पिछले लेख में हम कह आए हैं कि कला का मूल उत्स आनंद है। आनंद प्रयोजनातीत है। सुंदर फूल देखने से हमें आनंद प्राप्त होता है; पर उससे हमारा कोई स्वार्थ या प्रयोजन सिद्ध नहीं होता। प्रभात की उज्ज्वलता और संध्या की स्निग्धता देखकर चित्त को एक अपूर्व शांति प्राप्त होती है; पर उससे हमें कोई शिक्षा नहीं मिलती, और न कोई सांसारिक लाभ ही होता है। कारण, आनंद का भाव समस्त लौकिक शिक्षा तथा व्यवहार से अतीत है। उसमें कोई बहस नहीं चल सकती। हमें आनंद क्यों मिलता है,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसका कोई कारण नहीं बताया जा सकता। वह केवल अनुभव ही किया जा सकता है। "ज्यों गूँगे मीठे फल को रस अंतर्गत ही भावै।" आनंद का भाव वाणी और मन की पहुँच के बिलकुल अतीत है। "यतो वाचो निवर्तन्ते अप्राप्य मनसा सह।" पर नीति का संबंध मन के साथ है। मन विना आलोचना के आनंद के सहज भाव को ग्रहण नहीं करना चाहता। वह पोथी पढ़-पढ़कर 'पंडिताई' में मस्त रहता है। सहज प्रेम तथा आनंद के 'एकै अच्छर' से उसकी तृप्ति नहीं होती। वह कविता पढ़कर इस बात की खोज में लग जाता है कि इसमें अर्थनीति, राजनीति, राष्ट्रतत्त्व, भूतत्त्व, जीवतत्त्व अथवा और कोई तत्त्व है या नहीं। वह यह नहीं समझना चाहता कि इस कविता में आनंद का जो अमिश्रित रस है, उसके सामने किसी भी तत्त्व का कोई मूल्य नहीं। पर जो लोग इस दुष्ट समालोचक मन का दमन करने में समर्थ होते हैं, वे कला के 'आनन्दरूपममृतम्' का अनुभव कर लेते हैं। उपनिषदों में हमारे भीतर पाँच पृथक्-पृथक् कोषों का अवस्थान बतलाया गया है—अन्नमय कोष, प्राणमय कोष, मनोमय कोष, विज्ञानमय कोष और आनंदमय कोष। अन्नमय कोष के संस्थान के लिये हमें अर्थनीति की आवश्यकता होती है, प्राणमय कोष की पुष्टि के लिये धर्मनीति की, मनोमय कोष के लिये कामनीति की, और विज्ञानमय कोष के लिये वैज्ञानिक नीति की। पर जब इन सब कोषों की स्थिति पार करके मनुष्य आनंदमय कोष के द्वार खटखटाता है, तो वहाँ सब प्रकार की नीति तथा नियमों के गठ्ठर को फेंककर भीतर प्रवेश करना पड़ता है। वहाँ बुद्धि का काम नहीं, वहाँ आनंदमयी इच्छा का राज्य है। वहाँ यदि नीति किसी उपाय से घुस भी गई, तो उसे इच्छा के शासन में भेस बदलकर दुबके हुए बैठना पड़ता है। लौकिक तथा प्राकृतिक बंधनों की अवज्ञा करनेवाली इस सर्वजयी इच्छा महारानी के आनंदमय दरबार में नैतिक शासन का काम नहीं है, वहाँ सहज प्रेम का कारबार है। वहाँ इस प्रेम के बंधन में बँधकर पाप और पुण्य भाई-भाई की तरह एक दूसरे के गले मिलते हैं।

नीति? इस विपुल सृष्टि के मूल में क्या नीति है? क्या प्रयोजन है? क्या तत्त्व है? अहन्यहनि असंख्य प्राणी विनाश को प्राप्त हो रहे हैं, असंख्य प्राणी उत्पन्न होते जाते हैं। उत्पन्न होकर फिर अपने स्नेह-प्रेम, सुख-दुःख, हँसी-रुलाई का चक्र पूरा करके अनंत में विलीन हो रहे हैं। इस समस्त चक्र का अर्थ ही क्या है? अर्थ कुछ भी नहीं, यह केवल भगवान् के सहज आनंद की लीलामय रचना है।

विश्व की इस अनंत सृष्टि की तरह कला भी आनंद का ही प्रकाश है। उसके भीतर नीति, तत्त्व अथवा शिक्षा का स्थान नहीं। उसके अलौकिक मायाचक्र से हमारे हृदय की तंत्री आनंद की झंकार से बज उठती है, यही हमारे लिये परम लाभ है। उच्च अंग की कला के भीतर किसी तत्त्व की खोज करना सौंदर्य देवी के मंदिर को कलुषित करना है।

हिंदी-साहित्य के वर्तमान समालोचक जब तक कला की किसी रचना में कोई तत्त्व नहीं पाते, तब तक उसकी श्रेष्ठता स्वीकार करने में अपना अपमान समझते हैं। जिन रचनाओं की वे प्रशंसा करते हैं, उनकी विशेषता के संबंध में यदि उनसे पूछा जाय, तो वे उत्तर देते हैं, अमुक रचना में किसानों की दुर्दशा का प्रश्न हल किया गया है, अमुक ग्रंथ में राष्ट्र-तत्त्व की व्याख्या बहुत अच्छी तरह की गई है, अमुक ग्रंथ में हमारे सामाजिक पतन पर विचार किया गया है। यह हमारे समालोचकों के कला-संबंधी विचारों के आदर्शों का नमूना है! इन आदर्शों के आधार पर कला की श्रेष्ठता का विचार करने से साहित्य में हीनता उपस्थित होती है।

रामायण के मूल आदर्श के भीतर हमको कौन-सा नैतिक तत्त्व प्राप्त होता है? कुछ भी नहीं। उसके भीतर केवल राम की विपुल प्रतिभा की स्वाधीन इच्छा का लीलामय चक्र, विस्तृत रूप से, अत्यंत सुंदरता के साथ, चित्रित हुआ है। रामायण निस्संदेह वृहत् ग्रंथ है, और उसके विस्तृत क्षेत्र में सहस्रों प्रकार के नैतिक उपदेश स्थान-स्थान पर ढूँढ़ने से मिल सकते हैं। पर इस प्रकार खंड-खंड रूप से इस महाकाव्य को विभक्त करने से उसकी अखंड, वास्तविक तथा मूल सत्ता का नाश हो जाता है। यदि उसकी वास्तविक श्रेष्ठता का कारण हमें मालूम करना है, तो हमें उसकी समग्रता पर ध्यान देना होगा। उसके मूल आदर्श पर विचार करना पड़ेगा। रामायण से यदि हमें केवल यही तत्त्व पाकर संतोष करना पड़े कि उसमें पितृ-भक्ति, भ्रातृ-स्नेह तथा पातिव्रत्य का उपदेश दिया गया है, तो यह महाकाव्य अपनी आनंदोत्पादिनी महत्ता को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होकर एक अत्यंत क्षुद्र नीति-ग्रंथ में परिणत हो जाता है। ऐसे उपदेश हमें सहस्रों साधारण नैतिक श्लोकों तथा प्रवचनों से रात-दिन मिलते रहते हैं। तब इस काव्य में विशेषता क्या है? इसकी कथा सहस्रों वर्षों से जनता के हृदय में अखंड रूप से क्यों विराजती आई है? कारण वही है, जो हम ऊपर बतला आए हैं। अनादि पुरुष की "एकोऽहं बहुस्याम्, प्रजायेय" की इच्छा की तरह प्रतिभा भी सृजन का कार्य करती है। जिस प्रकार सृष्टि-कर्ता के उपदेश का रहस्य कुछ न जानने पर भी हमें उसकी ईश्वरीय माया के खेल में आनंद आता है, उसी प्रकार प्रतिभा की स्वाधीन इच्छामयी उद्दाम प्रवृत्ति की सर्जना का अभिनव विलास देखकर, उसका मूल आदर्श न समझने पर भी, हमें सुख प्राप्त होता है। राम की प्रतिभा अपूर्व तथा सुविस्तृत थी। राम एकदम वन-गमन के लिये क्यों तत्पर हो गए? पिता की आज्ञा का पालन करने के लिये उन्होंने ऐसा नहीं किया। वह पिता की इच्छा भली भाँति जानते थे। वह जानते थे, पिता उन्हें वन भेजना नहीं चाहते और यथाशक्ति उन्हें उनके ऐसा करने से रोकेंगे। पर प्रतिभा किसी भी बात पर सूक्ष्मातिसूक्ष्म रूप से विचार करके बाल की खाल निकालना नहीं चाहती। इसीलिये लोग उसका इतना सम्मान करते हैं। वह एक झलक में समस्त स्थिति को समझकर अपना कर्तव्य निर्धारण कर लेती है। अँगरेज़ी में जिसे exalted state of mind कहते हैं, राम की मानसिक स्थिति सर्वदा, सब समय वैसी ही रहती थी। उनकी प्रतिभा की विपुलता अपने आप में आबद्ध न होकर, प्रतिक्षण नाना रूपों में, नाना क्षेत्रों में, अपने को विस्तारित करने के लिये उन्मुख रहा करती थी। उसकी गति प्रतिक्षण वर्तमान को भेदकर सुदूर भविष्य की ओर प्रवाहित होती रहती थी। स्वामी-स्त्री, पिता-पुत्र तथा भाई-भाई के बीच तुच्छ स्वार्थ की छीना-झपटी की अत्यंत हास्यकर तथा नीच प्रवृत्ति के प्राबल्य तथा विस्तृति की आशंका करके उन्होंने अत्यंत प्रसन्नता तथा वज्रा-कठिन दृढ़ता के साथ महत् त्याग स्वीकार किया और अपने गृह में घनीभूत स्वार्थ के भाव को, त्याग के करुणा-विगलित रस से बहाकर, साफ़ कर दिया। उन्होंने पिता का प्रण निभाया, इस बात पर हमें उतनी श्रद्धा नहीं होती, जितनी इस बात पर विचार करने से कि उन्होंने इस स्वार्थ-मग्न संसार के प्रतिदिन के व्यवहार की यवनिका भेदकर सुदूर अनंत की ओर अपनी प्रतिभा की सुतीक्ष्ण दृष्टि प्रेरित की। उनकी इस इच्छा-शक्ति के वेग की प्रबलता के कारण ही हमें इतना आनंद प्राप्त होता है, और हृदय बारंबार संभ्रम तथा श्रद्धा के साथ उनके पैरों-तले पतित होना चाहता है।

यदि कोरी नीति के आधार पर ही समस्त कार्यों का निर्धारण करना हो, तो राम का वन-गमन अनीति-मूलक भी कहा जा सकता है। उनके वन-गमन से उनकी प्रजा को चौदह वर्ष तक कितना कष्ट उठाना पड़ा, इसका उल्लेख रामायण में ही है। उनके पिता की मृत्यु का कारण भी यही था। भरत को सुख-भोग की जगह तपस्या करनी पड़ी। यह सब परिणाम समझकर ही राम वन गए थे। वन में उन्हें जाबालि मुनि मिले थे। जाबालि ने उनके वनवास को व्यर्थ साधना बतलाया। उन्होंने कहा कि तुम्हारी इस साधना की कुछ भी उपयोगिता नहीं। तुम समझते हो कि पिता का प्रण निभाकर मैंने महत् कार्य किया है; पर यदि वास्तव में देखा जाय तो कौन किसका पिता है, कौन किसका भाई? जब तक जीवित रहना है, तब तक मौज करते चले जाओ, इस भस्मीभूत देह का पुनरागमन कहाँ है? मरने के बाद कौन पिता है, और कौन पुत्र? केवल दुर्बल भावुकता के कारण ही तुमने वन-गमन स्वीकार किया है, और मोहांधता के कारण इस त्याग को तुम श्रेष्ठ आदर्श समझ बैठे हो। यदि केवल नीति के ही पीछे लगा जाय, तो जाबालि की यह उक्ति वास्तव में यथार्थ जान पड़ती है। परलोक की कौन जानता है, इसी जीवन में प्रत्यक्ष में जो निश्चित लाभ होता है, चाणक्य की "यो ध्रुवाणि परित्यज्य" की नीति के अनुसार वही श्रेष्ठ है। और "आत्मानं सततं रक्षेत् दारैरपि"-वाली उक्ति सभी जानते हैं। अपना स्वार्थ ही, कोरी नीति की दृष्टि से, सबसे बड़ी बात है। पर हम पहले ही कह आए हैं कि प्रबल प्रतिभा का सप्लवन (overflow) नैतिक तथा नैयायिक उक्तियों को ग्रहण नहीं करता। अकारण ही अपने को प्लावित करने में उसे आनंद मिलता है। राम जानते थे कि उनके वन-वास की कोई सार्थकता नहीं है; पर उनकी प्रतिभा ने यही दिखलाना चाहा कि उनकी आत्मा अनंत की विपुलता से पागल है, और अपने क्षुद्र परिवेष्टन के भीतर बंद नहीं रहना चाहती। आत्म-प्रकाश का आनंद इसे ही कहते हैं। यदि नैतिक उपयोगिता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का विचार करके उन्होंने वन-गमन किया होता, तो यह घटना आज मानव-हृदय को करुणा से इतना द्रवीभूत न करती। कवि के तीव्र आत्मानुभव तथा उसकी कल्पना की वास्तविकता का परिचय हमें यहीं पर मिलता है।

यदि नीति की छोटी-मोटी बातों पर ध्यान देना आवश्यक होता, तो हम आज महाभारत के समान विपुल काव्य से वंचित रहते। उसे बात-बात पर सफ़ाई देनी होती कि द्रौपदी के पाँच पति क्यों थे? वेदव्यास-जैसे महात्मा का जन्म घृणित व्यभिचार से क्यों हुआ? धृतराष्ट्र और पांडु क्षेत्रज पुत्र होने पर भी महाशाली क्यों हुए? कुंती कौमार्यावस्था में ही गर्भवती होने पर भी पांडवों की सर्व-जन-प्रशंसिता माता क्यों हुई? (सूर्य की दुहाई देना वृथा है; विवेचक पाठक जानते हैं कि सूर्य के समान किसी तेजस्वी पुरुष के औरस से ही कर्ण का जन्म हुआ था—सूर्य रूपक-मात्र है) इत्यादि असंख्य ऐसे ही उदाहरण दिए जा सकते हैं। पर महाभारतकार की क़लम लेश-मात्र भी इन कारणों से नहीं हिचकी। कारण स्पष्ट है। कवि यही दिखलाना चाहता है कि इन तुच्छ नैतिक उल्लंघनों से उनके महत् आदर्श पर किंचिन्मात्र भी आँच नहीं आ सकती। इस संबंध में हम विस्तृत रूप से आगे किसी लेख में विचार करेंगे। यहाँ पर हम केवल यह दिखलाना चाहते हैं कि कला का आदर्श नीति से बहुत ऊपर उठा हुआ होता है।

कालिदास का मेघदूत क्या नीति सिखाता है? विरह-जन्य आनंद की इस रचना का लक्ष्य यदि नीति की ओर होता, तो वह असह्य हो उठती। अलकापुरी के जिस आनंदमय देश की ओर कवि हमें आकर्षित करके ले चलता है, उसके संबंध में हमारे मन में यह प्रश्न बिलकुल ही नहीं उठता कि वहाँ जाकर क्या होगा? किसी नैतिक लाभ के लिये हम अलकापुरी को नहीं जाते; हम जाते हैं आनंद की विपुलता अनुभव करने के लिये। वहाँ जिस आनंद का हम अनुभव करते हैं, वह तुच्छ सुख-दुःख, क्षुधा-तृष्णा तथा पाप-पुण्य से अतीत है।

केवल हमारे ही देश में नहीं, पाश्चात्य देशों में भी बहुत-से लोग नीति के उपासक हैं। ग्येटे की रचनाओं में नीति की अवहेलना देखकर कई लोग उन पर बरस पड़े हैं। शेक्सपियर के नाटकों में से कई समालोचक अपने इच्छानुसार नीति निकालने में व्यस्त रहते हैं। प्रकृति के सच्चे उपासक, प्रसिद्ध फ्रांसीसी चित्रकार मिले (Millet) की कला के बहुत-से आलोचकों ने उसकी राजनीतिक व्याख्या करने की चेष्टा की थी। यह बात इस प्रकृति के चतुर चितेरे को बहुत बुरी लगी। प्रसिद्ध क्रांतिकारी प्रूधों (Proudhon) ने उन्हें चित्रों के ज़रिए राजनीतिक प्रश्न हल करने के लिये उसकाया, पर वह इस अयुक्त प्रस्ताव पर सम्मत नहीं हुए। इससे यह न समझना चाहिए कि वह देशद्रोही थे। राजनीति से देश-प्रेम का कोई संबंध नहीं। सहज प्रेम के साथ नीति का क्या संबंध हो सकता है? मिले स्वयं कृषक के पुत्र थे, और किसानों के प्रति उनकी इतनी सहानुभूति थी कि उनके प्रायः सभी चित्रों से कृषक-जीवन की सरलता का सुमधुर परिचय मिलता है। उनके चित्रों की सरलता से मानवात्मा की यातनाओं का आभास अत्यंत सुंदर रूप से आँखों में झलकता है, और हृदय में किसानों के प्रति आंतरिक सहानुभूति उमड़ी पड़ती है। पर उनका उद्देश्य किसानों की दुर्दशा का चित्र खींचकर तात्कालिक साम्यवाद की राजनीतिक महत्ता 'प्रचार' करने का नहीं था। यही कारण है कि उनके चित्रों ने अमरत्व प्राप्त कर लिया है।

महाकवि ग्येटे को जर्मनी के कई समालोचकों ने इस बात के लिये कोसा था कि वे सदा राजनीति से विमुख रहे हैं। इस पर उन्होंने लूडेन से कहा था—"जर्मनी मुझे प्राणों से प्यारी है। मुझे बहुधा इस बात पर दुःख होता है कि जर्मन लोग व्यक्तिगत रूप से इतने उन्नत होने पर भी समष्टि के विचार से इतने ओछे हैं। अन्य जाति के लोगों के साथ जर्मन लोगों की तुलना करने से हृदय में व्यथा का भाव उत्पन्न होता है, और इस भाव को मैं किसी भी उपाय से भूलना चाहता हूँ। कला और विज्ञान में मैं इस व्यथाजनक भाव से त्राण पाता हूँ, क्योंकि उनका संबंध समस्त विश्व से है, और उनके आगे राष्ट्रीयता की सीमा तिरोहित हो जाती है।" पाठकों को मालूम होगा कि रवींद्रनाथ का भी यही मत है। ग्येटे ने किसी अन्य स्थान पर कहा है—"सत्य की इस सरल उक्ति पर लोग विश्वास नहीं करना चाहते कि कला का एक-मात्र उन्नत ध्येय उच्च भाव को प्रतिबिंबित करना है।" इँगलैंड के प्रसिद्ध साहित्यालोचक कार्लाइल जब एक बार बर्लिन गए थे, तो किसी भोज के अवसर पर कुछ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लोगों ने ग्येटे पर यह दोष लगाना आरंभ किया कि इतने बड़े प्रतिभाशाली कवि होने पर भी उन्होंने धर्म-संबंधी बातों की अवहेलना की है। कार्लाइल ने उनकी संकीर्णता से कुढ़कर कहा—"Meine Herren, did you never hear the story of that man who vilified the sun because it would not light his cigar ?" यह मुँह-तोड़ जवाब सुनकर किसी के मुँह से एक शब्द न निकला !

सभी जानते हैं कि रूसो नीति के कितने पक्षपाती थे। पर जब वह कला की रचना करने बैठते थे, तब नीति-वीति सब भूल जाते थे। उनके प्रसिद्ध उपन्यास La Nouvelle Heloise में उनके हृदय की क्षुब्ध वेदना प्रतिबिंबित हुई है। उनके इस आत्म-प्रकाश की मनोहरता के कारण ही यह ग्रंथ इतना आदरणीय है। सच्चा कलावित् हृदय की प्रेरणा से ही चित्र खींचता है, न कि बाह्य आवश्यकता के अनुसार।

टॉल्सटॉय को नीति की छोटी-छोटी बातों का भी बड़ा ख़याल रहता था। यहाँ तक कि अपने 'What is Art ?'-शीर्षक पुस्तक में उन्होंने अनीति-मूलक ग्रंथों की तीव्र निंदा करके यह मत प्रतिष्ठित किया है कि कला के भीतर नीति का होना परमावश्यक है। उन्होंने जिस समय यह मत प्रचारित किया था, उस समय उन्होंने यह भी लिखा था कि मेरी इस समय से पहले की रचनाएँ दोष-पूर्ण समझी जानी चाहिए। पर उनका सर्वश्रेष्ठ उपन्यास Anna Karenin इसके बाद लिखा गया था। इसके प्रकाशित होने पर लोगों को यह आशंका हुई थी कि उसमें नीति भरी पड़ी होगी। पर उनकी यह आशंका निर्मूल निकली। टॉल्सटॉय सच्चे कलावित् तथा शिल्पी थे। उनका व्यक्ति-गत मत चाहे कुछ भी हो, पर उनकी आत्मा में कवि-स्वभाव का राज होने के कारण कला की रचना में वह नीति की संकीर्णता घुसेड़कर कला के आदर्श को खर्व नहीं कर सकते थे।* Anna Karenin में Kitty के गार्हस्थ्य-जीवन की शांत, सुखमय छवि अवश्य हृदय को आराम पहुँचाती है, पर अभागिनी अन्ना के संघर्षण-क्लिष्ट 'दुर्नीति-मूलक' जीवन के प्रति प्रत्येक पाठक की आंतरिक समवेदना उमड़ी पड़ती है। और तो क्या, स्वयं ग्रंथकार ने, अपनी इच्छा के प्रतिकूल, अपने अनजान में, अंत तक अन्ना के जीवन की 'ट्रेजेडी' के प्रति अपनी सहानुभूति प्रदर्शित की है। आरंभ में ग्रंथकार का ज़ाहिरा मकसद किटी के गार्हस्थ्य तथा नीति-अनुमोदित जीवन की स्निग्धता और अन्ना के जटिल तथा नीति-विरुद्ध जीवन के बीच भेद (Contrast) प्रदर्शित करके एक निश्चित नैतिक सिद्धांत प्रतिष्ठित करने का रहा है। पर थोड़ी ही दूर जाकर, दुःखिनी अन्ना के उन्नत चरित्र की जटिलता का विचार करके, उसका यह उद्देश्य शिथिल हो जाता है, और अंत को जाकर मानव-चरित्र की अंतर्गत दुर्बलता की समस्या का कोई समाधान ही कवि नहीं करने पाया है। कहाँ वह कठिन नीतिज्ञ का निष्ठुर दंड लेकर 'दुर्नीति' को शासित करने चला था, कहाँ शासित व्यक्ति के साथ मानवत्व के समान सूत्र में ग्रथित होकर उसे भी रोना पड़ा है। सच्चे कलावित् की श्रेष्ठता का प्रमाण इसी से मिलता है। वह अपने प्राण की प्रेरणा से चरित्र चित्रित करता है, और अपने प्राण ही में वह उन चरित्रों की यातनाओं का अनुभव करता है। धर्मध्वजी लेखक की तरह, अपने चरित्रों से अपने को बिलकुल अलग समझकर, वह शासक नहीं बनना चाहता।

जहाँ किसी नीति को प्रतिष्ठित करना ही लेखक का मूल उद्देश्य रहता है, वहाँ वह संकीर्णता का प्रचार करता है; पर जहाँ सत्य, सौंदर्य तथा मंगल से पूर्ण स्वाभाविक छवि चित्रित करके ही चित्रकार अपना काम पूरा हुआ समझता है, वहाँ उस आदर्शमय चित्र की स्वाभाविक सरलता हृदय को उन्नत बनाने में सहायक होती है।

हेमचंद्र जोशी
इलाचंद्र जोशी

---

* टॉल्सटॉय कट्टर नीतिवादी थे, उनके प्रबंधों में इसकी ही महिमा गाई गई है; लेकिन वे कला-प्राण थे, इसलिये उनके उपन्यासों और कहानियों में अज्ञात रूप से यह क्षुद्र नीति खर्व हो गई है। उनके दुर्नीति-विरोध के बारे में वे ही कलामय शब्द कहे जा सकते हैं, जो उन्होंने चेकाफ़ की कहानी 'डार्लिंग' के बारे में कहे हैं—"He intended to curse, but the god of poesy forbade it him and commanded him to bless; and he blessed, and unwillingly he arrayed in such a wonderful light that darling creature, that she will for ever remain the model of what a woman can be * * *. The story is so beautiful just because it came forth unconsciously.

(Tchekhov by Kotelievski, p. 48.)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विवाह-विज्ञापन

तीसरा दृश्य

स्थान—विक्टोरिया-पार्क

(बेचैनीराम अकेले घूम रहे हैं)

बेचैनी०—देख लिया, ख़ूब देख लिया ! हे विचित्र संसार, मैंने तुझे अच्छी तरह समझ लिया । तू केवल धोखे से भरा हुआ है धोखे से । दूर न जाकर इस दुष्ट अख़बारबहादुर को ही देखो ! बड़ा संपादक की दुम बना फिरता है ! मैं तो करना नहीं चाहता था ; अपने आप ही तो विवाह के लिये पीछे पड़-पड़कर विज्ञापन लिखा लिया और कतर-ब्योंतकर अपने पत्र में छाप दिया, और अब दुष्ट बार-बार सुट्ट खींच जाता है ! कल साँझ को सात बजे आया ; बातें मार-मूरकर आठ बजे चला गया ! उसके बाद साढ़े आठ बजे तक सूरत नहीं दिखाई । सबेरा हुए तीन घंटे हो चुके हैं, तो भी आपने अभी तक केवल दो ही बार दर्शन दिए हैं ! और सो भी एक-एक घंटे के ही लिये ! इधर यहाँ चिंता के मारे ढेर हुआ जाता है, उधर आप यों ईद के चाँद हो रहे हैं, मानो मैं आपकी ख़ुशामद करता और हा हा खाता हूँ कि आप मेरा यह काम करा ही दीजिए ! उन विज्ञापनों के जो उत्तर आए होंगे, उन्हें लेने के लिये आप न-जाने कितनी देर से गए हुए हैं ! तीन-चार घंटे तो शायद हो गए होंगे ? न-जाने समुद्र-पार गए हुए हैं या स्वर्ग में ! 'ऐडीटरी !' 'ऐडीटरी !' धूल करेगा ऐडीटरी ! आने दो अब की बार, मैं भी कैसा लताड़ता हूँ । (हाँफते हुए संपादक का, पत्र लिए हुए, प्रवेश) ओहो, आ गए ! तुम, यार, मेरी जान लोगे, और कुछ न होगा । भला, कब का मुझे खड़ा कर गए हो , सोचो तो ? (हाथ बढ़ाकर) लाओ, जल्दी लाओ, देखूँ—

संपादक—अरे भई, ठहरो, खोलने दो, छीने क्यों लेते हो ! अभी पंद्रह मिनट हुए तभी तो गया था ; ऐसी कितनी देर हो गई जो व्यर्थ उलाहना दे रहे हो ! दौड़ता हुआ दफ़्तर गया, संदूक़ खोली, तब वहाँ से यह सब लेकर सरपट दौड़ा चला आ रहा हूँ, और फिर भी कहते हो कि देर हो गई ! कौंसिल की मेम्बरी के उम्मेदवारों की भाँति क्या विवाहार्थी भी सिड़ी हो जाते हैं ?

बेचैनी०—अच्छा तो अब व्यर्थ की बहस न करो, जल्दी-जल्दी आया करो ; जल्दी से खोलो चिट्ठियाँ । (ऊपर देख कर हाथ जोड़ता हुआ) हे भगवान, तू ही है !

संपादक—(बंडल से बुरी तरह झगड़ता हुआ) साला, खुलता ही नहीं है, न-जानें कैसी गाँठ लग गई है !

बेचैनी०—तुम तो हो सिड़ी, जो छदाम की रस्सी की ख़ुशामद-सी कर रहे हो, तोड़कर अलग करो । (अधखुले बंडल में से कई पत्र खींच लेता और पढ़ने लगता है)

"अज़ दफ़्तर जनाब ज़िला मजिस्ट्रेट साहब ।

१५ तारीख़ के 'बाँगड़ू-समाचार' में हिंदू-मुसलिम-फ़साद पर जो आपने अपनी राय ज़ाहिर की है, उसके बारे में आप कल २० तारीख़, माह सितंबर, को दोपहर के १२ बजे साहब मजिस्ट्रेट की कोठी पर हाज़िर हूजिए ।

बहुक्म जनाब ज़िला मजिस्ट्रेट साहब बहादुर ।"

संपादक—(घबड़ाकर) अरे ! २० ता० तो आज ही है ! क्या आज ही जाना होगा ? देखूँ तो ! (पत्र लकरे पढ़ता है)

बेचैनी०—(दूसरा पत्र खोलकर पढ़ता है)

"अज़ दफ़्तर बाबू बुभुक्षाप्रसाद साहब एम्० ए०, एल्-एल्० बी०, वकील हाई कोर्ट ।

हस्ब हिदायत अपने मवक्किल दारोग़ा कचूमर-निकाल सिंह साहब, थाना लूटगंज, आपको इत्तिला दी जाती है कि आपने अपने अख़बार के ८ तारीख़वाले परचे में जो चंद बातें मेरे मवक्किल की निस्बत छापी हैं, वे क़तई बेबुनियाद हैं और उनसे मेरे मवक्किल की सख़्त तौहीन हुई है व उसको ज़ाती नुक़सान भी काफ़ी पहुँचा है । अब आप आज से एक हफ़्ते के अंदर या तो चार हज़ार रुपए बतौर हर्जाना वास्ते मेरे मवक्किल मेरे दफ़्तर में जमा कराइए वरना आप पर दीवानी व फ़ौजदारी में क़ानूनी कार्रवाई की जायगी ।"

(झुँझलाकर पत्र फेंकता और संपादक जल्दी से उठाकर पढ़ने लगता है) विवाह-विज्ञापन के ऐसे-ऐसे जवाब ! यह सब तुम्हारी शैतानी है ।

संपादक—(घबड़ाकर) यह दूसरी बला और भी लग गई ! संपादक बनने में यह झगड़ा है ; आए दिन कोई-न-कोई विपत्ति सिर पर सवार रहती है ।

बेचैनी०—इतनी देर में तो लौटे और न-जाने क्या ईंट-पत्थर ले आए ! तुम्हारा तो बाल-विवाह हुआ था, सो तुम क्या जानो कि मुझ पर क्या बीत रही है !

संपादक—मैं पूछता हूँ कि कलक्टर साहब तो कलक्टर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साहब, दारोग़ाजी भी जान को आ गए ! क्या कहूँ, कहीं दूसरी जगह दस की भी मिले तो ऐसी ऐडीटरी को धता भेज दूँ। खोमचा तो मुझसे अब बेचा नहीं जायगा। क्या करूँ!

बेचैनी०—मैंने माना कि मेरे भी दो बाल-विवाह हो चुके हैं, पर इससे क्या ! जब मुझे उनकी याद ही भूल चुकी है तो क्यों न मैं अपने को बाल-ब्रह्मचारी समझूँ ! इस बात पर भले ही कोई बहस कर ले; मैं तैयार हूँ।

संपादक—अब किसी झूठों के बादशाह की ख़ुशामद करके इस नोटिस का उत्तर भी दिलाना ही पड़ेगा। (सोचकर) जो हार गए तो गए जेल ! अब की बार पीछा छूटे तो इस झगड़े को साष्टांग प्रणाम करके—और कुछ न मिले तो—फाँवड़ा और डलिया ही सँभालूँ। अपना मन मारकर खोमचा भी बेच लूँगा, पर संपादकी अब न करूँगा।

बेचैनी०—बारात में कितने आदमी जायँगे, कितना रुपया ख़र्च होगा—इन सब बातों का, और लेन-देन का झगड़ा, पीछे से, लड़की के पिता की इच्छा के अनुसार भी तय हो सकता है। तुम पत्र तो लाते ! तुम बड़े ही लापरवाह हो।

संपादक—लापरवाही की इसमें क्या बात है ? तुम्हीं सोचो ; हिंदू-मुस्लिम-झगड़े के संबंध में सच-सच बात लिख देने पर भी मुझे तो यों बुलाकर धमकाते हैं, और मियाँ ग़ाज़ी-ग़ुलाम से कुछ नहीं कहते, जो सदा अपने पत्र में हिंदुओं के विरुद्ध विष उगला करता है !

बेचैनी०—कोई भले ही किसी के विरुद्ध विष उगले ; मैं तो स्पष्ट कहे देता हूँ कि समाज-सुधार का पक्षपाती हूँ ; बहुत-सी इधर-उधर की बातें मुझे पसंद नहीं हैं। यदि न बनी तो मेरे लिये लड़कियाँ बहुत, उसके लिये लड़के बहुत, बस।

संपादक—गया था विवाह-विज्ञापन के उत्तर लेने, और ले आया यह ऊट-पटाँग ! तो चलो, मेरे दफ़्तर ही में चलो न ? वहीं पढ़ लेना।

बेचैनी०—तुम्हारी बुद्धि पर भी अजीब पाला पड़ा है ! वहाँ इतने सारे आदमियों में मेरी हँसी कराओगे ? सब कोई जान लेंगे कि यह विवाह करना चाहता है।

संपादक—अजी तनिक से अपराध पर जान-वान तो लेंगे क्या, यों ही डाट-फटकारकर छोड़ देंगे। बहुत करेंगे कुछ दिनों के लिये जेलख़ाने भेज देंगे। मेरा दुर्भाग्य !

बेचैनी०—मैं अपनी ही कह रहा हूँ, तुम अपनी ही बक रहे हो—'कहे खेत की, सुने खलियान की।'

संपादक—हाँ, क्या कहा था तुमने ? तो इसमें लज्जा की क्या बात है ! आख़िर आदमी ही तो ब्याह करते हैं।

बेचैनी०—तुम भी ख़ूब हो ! 'सूत न कपास, कोलिया से लठालठी'—अभी कहीं हुआ है ही नहीं, और, लोग सो जान ही लें ! मैं तो चाहता हूँ कि विवाह के बाद भी बहुतों को ज्ञात न हो कि मैंने विवाह किया है। कम-से-कम मेरे सामने वे इस विषय की चर्चा न करें।

संपादक—और फिर मुझे आज ही मजिस्ट्रेट के यहाँ भी जाना है। चलो-चलो, वहीं कमरे में बैठकर अकेले में सलाह कर लेंगे। एक आदमी को बाहर बैठा देंगे जिसमें कोई अंदर न आने पावे। या फिर यहीं चले आएँगे।

बेचैनी०—नहीं मानते हो तो चलो। (दोनों गए)

(दूसरी ओर से दीवान बहादुर व तहसीलदार का प्रवेश)

तहसील०—हाँ, तो इसीलिये कल मैंने वह पत्र आदमी के हाथों न भेजकर डाक द्वारा भेजना उचित समझा कि कहीं आदमी को दो-चार आने देकर वह सारा भेद न लेले। पत्र तो वैसे भी उसको इस समय मिल ही गया होगा। उसकी हज़ार-बार गौं होगी तो आवेगा आप उतावले क्यों होते हैं ?

दीवान०—(एक ओर संकेत करके) आपने शायद उन्हें देखा नहीं ?

तहसील०—किन्हें ?

दीवान०—अभी जो ये दो जने इधर से गए हैं, कहीं यही न हों ? उनसे पूछा जाय।

तहसील०—भला सोचिए, किसी रास्ते-चलते से यह पूछना कहाँ तक उचित है कि क्यों साहब, आप क्या किसी लड़की की, या उसके बाप की, या बाप के दोस्त की, या बाप और दोस्त दोनों की तलाश में हैं ? जो सुनेगा वही हँसेगा।

दीवान०—किसी से न पूछना भी तो उचित नहीं। बिना पूछ-ताछ किए दुनिया में काम चल ही नहीं सकता। (एक ओर देखकर, हर्षपूर्वक) वह देखिए ! वह देखिए !

तहसील०—कौन है वह ?

दीवान०—मुझे तो वही दीखता है। देखिए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

न, कितनी जल्दी-जल्दी पैर उठाता है ! बस इसी से साबित होता है कि यह अभी अविवाहित है ; इसके पैरों में अभी बेड़ियाँ नहीं पड़ीं। विवाह हो जाने पर तो खाट पर से उठना कठिन हो जाता है, जल्दी-जल्दी चलना तो दर किनार !

तहसील०—न-जाने वह बेचारा कौन है और किस काम से जा रहा है।

दीवान०—मेरा पचास बरस का अनुभव तो यह कहता है कि अवश्य यह अपने लिये धर्मपत्नी खोजने जा रहा है। दूसरे किसी भी काम से आदमी इतनी जल्दी-जल्दी नहीं चल सकता। मैं आप से शर्त बदता हूँ, यह अवश्य विवाह के पीछे सिड़ी हुआ नवयुवक है।

तहसील०—(ध्यान से देखकर) सिड़ी तो नहीं दीखता।

दीवान०—तो आधा सिड़ी ज़रूर है। इससे पूछा जाय। मैं कहता हूँ, यह शर्तिया किसी के फंदे में पड़ गया है।

तहसील०—कौन जाने ? संभव है, उसकी आदत ही जल्दी चलने की हो ?

दीवान०—अजी आप चलने को मत देखिए, बल्कि चलने के ढंग को देखिए, ढंग को।

तहसील०—इसके चलने के ढंग से तो यह सूचित होता है कि यह देश की उन्नति चाहता है, और झटपट स्वराज ले लेने के लिये बेचैन है। देखिए न, बाइसिकिल को मात कर रहा है। यह लीजिए, आ पहुँचा।

(युवक का प्रवेश)

तहसील०—(युवक से) क्यों महाशय, क्या मैं कुछ धृष्टता कर सकता हूँ ?

(युवक खड़ा होकर इधर-उधर देखता है)

दीवान०—(युवक से) आप विश्वास रखिए, मेरे बाल जंगल में सफ़ेद नहीं हुए हैं। मैं ख़ूब समझ गया हूँ कि आप क्या चाहते हैं। (तहसीलदार से चुप रहने का संकेत करता हुआ) भले आदमी कभी आधी बात नहीं कहा करते। (युवक से) हम लोग आपकी पूरी-पूरी सहायता करने में समर्थ हैं। 'ख़त का मज़मूँ भाँप लेते हैं लिफ़ाफ़ा देखकर।'

(युवक घबड़ाकर चारों ओर देखता है)

तहसील०—बल्कि—

दीवान०—(तहसीलदार को चुप रहने का संकेत करता हुआ) हाँ, यदि आपके हृदय या मस्तिष्क में कुछ विकार हो तो उसे भी दूर करने में हम समर्थ हैं। हमारा ख़ूब अनुभव है कि इस अवस्था में नवयुवक क्या चाहते हैं कि जिसके न मिलने पर उनको न-जाने क्या-क्या हो जाता है।

(युवक कातरता-भरी दृष्टि से दोनों की ओर देखता है)

तहसील०—आप बेधड़क अपना परिचय हमें दे सकते हैं। हम किसी को आपका नाम-गाम नहीं बतावेंगे।

दीवान०—(तहसीलदार से) परिचय ! सूरत ही कहे देती है।

युवक—(दीवान के हाथ जोड़कर) मुझे बचाइए, अब कभी नहीं करूँगा।

दीवान०—देखिए, हम लोग समाज में सुप्रतिष्ठित और सभ्य समझे जाते हैं, और इसमें संदेह नहीं कि हैं भी, पर आपको जल्दी-जल्दी चलते देखकर हमें दया आती है, क्योंकि हम जानते हैं कि यदि हम चाहें तो आपकी इच्छा दमभर में पूरी कर सकते हैं।

तहसील०—आप हमसे कोई बात छिपाइए मत।

युवक—(हाथ जोड़कर) मेरी रक्षा कीजिए। समाज-सुधार और देश-प्रेम के कारण ही आज मुझे तंग किया जा रहा है। मेरा कोई भी दोष नहीं।

दीवान०—(गर्व के साथ तहसीलदार से) मैंने कहा न था कि यह बेचारा किसी के फंदे में पड़ गया है ?

युवक—आपका उपकार कभी न भूलूँगा।

तहसील०—(दीवान से) सचमुच बेचारे के हृदय पर कड़ी चोट लगी दीखती है। (युवक से) आपको अपने मन पर क़ाबू रखना चाहिए। (एक ओर से कुछ पुलिस-वाले सहसा आकर युवक को पकड़ लेते हैं; तहसीलदार और दीवान बहादुर भौचक्के होकर एक दूसरे की ओर देखते हैं)

युवक—(तहसीलदार व दीवान की ओर) देखिए, हैं ! हैं ! मुझे व्यर्थ—

पुलिस का जमादार—(चपत मारता हुआ) अबे चल उधर, साले, ऊपर से भला आदमी बनकर बाइसिकलें चुराता फिरता है !

(दीवान व तहसीलदार अचरज से एक दूसरे की ओर देखते हैं)

युवक—(दीवान और तहसीलदार की ओर संकेत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करता हुआ) इन्हीं के कहने से चुराई थी। ये दोनों मेरे उस्ताद हैं। (दोनों अचरज में डूब जाते और कुछ कहना चाहते हैं)

जमादार—(दोनों को पहचानकर सलाम करता हुआ, युवक से) अबे बदमाश, चल उधर। (इन दोनों से) बड़ी मुशकिल से बदमाश पकड़ा गया है। हूज़ूर, रोज़ कुछ-न-कुछ वारदात करके हम लोगों की आँखों में धूल झोंकता था।

युवक—मेरा कोई दोष नहीं, इन्हीं दोनों बुड्ढे खूसटों ने चोरी करने की लत डलवा दी है, और आप चोरी का माल बेच-बेचकर बड़े आदमी बन गए हैं।

दीवान०—(तहसीलदार से) हद हो गई !

तहसील०—सूरत-हराम है, सूरत-हराम।

जमादार—(दोनों से) यह कंबख़्त बेफ़ायदे आपको बदनाम कर रहा है। मैं चाहता हूँ कि आप थोड़ी-सी तकलीफ़ करके दारोग़ाज़ी से सब बात कह दें, ताकि साले का जहन्नुम तक पता न चले।

दीवान०—(तहसीलदार से) चलो दस क़दम चले भी चलें।

तहसील०—क्या हर्ज है। (सब गए ; दूसरी ओर से बेचैनीराम व संपादक का प्रवेश)

संपादक—मैं कहता हूँ कि आख़िर मजिस्ट्रेट कुछ मुझे खा थोड़ही जायगा।

बेचैनी०—यद्यपि बड़े-बड़े वकीलों, बैरिस्टरों, डॉक्टरों, रायबहादुरों, कारीगरों, ताल्लुक़ेदारों आदि के पत्र हैं पर मेरा हृदय यही कहता है कि—क्यों जी सुना है वह तो कोई दीवान-बहादुर का मकान है न—टिड्ढा-निवास ?

संपादक—तुमने ठीक कहा, पर मैं पूछता हूँ कि मान-हानि के दावे के घेरे में से निकलने के लिये जो बीस लंबे-चौड़े द्वार हैं, सो वे क्या सबके सभी मेरे लिये बंद हो जायँगे ? मकान है तो हुआ करे।

बेचैनी०—हँसी नहीं, मैं तुमसे सच कहता हूँ कि सब बातों को सोचते हुए मैं फिर भी इसी परिणाम पर पहुँचता हूँ कि उसको मुझसे बढ़कर वर, और मुझको उससे बढ़कर कन्या नहीं मिलेगी।

संपादक—यदि वैसे पिंड न छूटा तो ख़ुशामद ही कर लूँगा। अंत में यदि गिड़गिड़ाकर क्षमा माँगने से भी पीछा छूटे तो निस्संकोच ऐसा कर लेना चाहिए। संपादकीय नीति तो यही कहती है।

बेचैनी०—हाँ, वैसे और तो कोई बात नहीं है, पर थोड़ा-सा संदेह है तो यही कि उसका विवाह कहीं दूसरी जगह पक्का न हो गया हो, क्योंकि पत्र कल का डाला हुआ है। यदि ऐसा हुआ तो—(ठंडी साँसें लेता है)

संपादक—संपादन-कला के आचार्यों का यही विना लिखा नियम है कि पहले तो ग्राहक-संख्या बढ़ाने के लिये कड़ी-से-कड़ी बातें लिखे, और फिर जब सरकार अपना क़ानूनी सोंटा सँभाले तो जहाँ तक हो सके शीघ्र ही गिड़गिड़ाकर क्षमा माँगने के लिये उतावला हो जाय। यों अपनी जान बचावे, क्योंकि कहा है कि "जीवित नर हो तो भद्र शैतानि पश्यति।" *

बेचैनी०—हे भगवन्, क्या मैंने सदा पाप-ही-पाप किए हैं, कभी पुण्य किए ही नहीं जो तू मेरी नहीं सुन रहा ? मैं कहता हूँ, और ज़ोर के साथ कहता हूँ कि इससे अच्छी लड़की मुझे न मिलेगी, और न घराना। जब तुझे स्वयं उस लड़की से नहीं करना है तो क्यों नहीं तू मेरा विवाह उसी से करा देता ? यदि कभी भी सच्चे हृदय से मैंने तेरी भक्ति की हो, यदि पूर्व-जन्मों के मेरे कुछ भी पुण्य इकट्ठे हों तो उस भक्ति के और उन पुण्यों के बदले में तू मुझे वही लड़की दिला दे जो टिड्ढा-निवास में बिजली की बत्ती की भाँति प्रकाशमान है। बस, और मुझे कुछ न चाहिए।

संपादक—तो मैं क्या जेल जाने से डरता हूँ ? वाह, यह तुमने ख़ूब सोची ! मैं तो केवल यही सोचता था कि पाँच-छः वर्ष पहले जब असहयोग का दौरदौरा था तब जेल जाने का भी फ़ैशन ख़ूब चला था ; क्या बड़े और क्या छोटे सब कोई उसी प्रकार जेल जाते थे जिस प्रकार रामलीला देखने जाते हैं। पर अब यह बात फ़ैशन में नहीं रही; इसलिये जो कोई अब जायगा वही नक्कू बनेगा और पुरानी चाल का समझा जायगा।

बेचैनी०—अरे बाबा तो मैं पुरानी चाल से भी करने को तैयार हूँ। यों ही सही। यह मामला किसी प्रकार हो भी तय।

संपादक—तो अब देर न करके तुरंत किसी वकील से सलाह लेनी चाहिए।

बेचैनी०—मेरी भी यही राय है; झटपट उनके घरके नौकर-

---

* "जीवन्नरो भद्रशतानि पश्यति"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चाकर या किसी नौकरनी-चाकरनी को कुछ दे-लेकर लड़की के विषय में सब बातें पहले अलग जान ली जायँ, तब उनके यहाँ चला जाय। देर करने से लाभ न होकर हानि ही होगी, क्योंकि तब तक वहाँ कोई दूसरा आ मरेगा।

संपादक—तो कलक्टर साहब क्या कोई मुझे फाँसी दे देंगे? (एक ओर देखकर) यह देखो! मैंने पहले ही कहा था कि जासूस मेरा पीछा करते हैं; तुम मानते ही न थे, अब प्रत्यक्ष अपनी आँखों से देख लो।

बेचैनी०—(उस ओर देखकर) अवश्य इस आदमी की कोई कन्या है जिसका कि विवाह नहीं हो रहा है, यद्यपि, इसकी सूरत से टपकता है कि वह पढ़ी-लिखी है, और अच्छी है। (संपादक से) ऐं क्या कहा? हाँ, पुत्री अविवाहिता है तभी तो यह इतना धीरे-धीरे चलता है, मानो इसकी पीठ पर अनुचित बोझा लदा हो। एक-एक पग चलने के बाद उत्सुकता भरी दृष्टि से इधर-उधर देखता है कि कहीं इस बाग़ के पेड़ों में अच्छे लड़के लटक रहे हों तो अपनी कन्या के लिये भी एक तोड़ लूँ! यह जिस नवयुवक को देखता है उसी पर पैनी दृष्ट गड़ा देता है मानो उसके हृदय की सब बातें जानकर अपनी कन्या को उसे देने-न-देने के प्रश्न को अभी हाल हल कर डालना चाहता है। मैं तुमसे कहे देता हूँ, उसे ज्ञात नहीं है कि मैं यहाँ खड़ा हूँ, वरना अभी मेरी जान को आ जाय और कह दे कि 'बेटा, मेरी देवी-स्वरूपा कन्या तुम्हारी भेंट है, इसे अच्छी तरह रखना।'

संपादक—पीछे-पीछे डोलते फिरें तो हमें कोई आपत्ति नहीं है; डर यही है कि कहीं मुझे गिरफ़्तार तो नहीं किया चाहते हैं।

बेचैनी०—तुम निश्चय मानो, इसकी कन्या की माता अब इस संसार में नहीं है, वह कभी की चल बसी। इसके चेहरे पर बूढ़ी विरह-वेदना साफ़ झलक रही है।

संपादक—मैं तुमसे सच कहता हूँ कि ये दोनों इधर ही आ रहे हैं। अवश्य कुछ-न-कुछ दाल में काला है। मैं तो इनसे साफ़ कह दूँगा कि क्यों मुझे व्यर्थ पकड़ते हो? मैं तो स्वयं मजिस्ट्रेट साहब की सेवा में उपस्थित होनेवाला हूँ। (सोचकर) आओ, इधर छिपकर देखें ये दोनों मेरे विषय में क्या बातें करते हैं।

बेचैनी०—तुमने सच कहा, यह अपने साथी से अवश्य ही अपनी कन्या के विवाह के संबंध में सलाह ले रहा है। पहले छिपकर सुनने में कोई हानि नहीं, बाद को, यदि आवश्यकता हुई तो, प्रकट हो जायँगे। (दोनों एक ओर छिपते हैं; दूसरी ओर से दीवान बहादुर व तहसीलदार का प्रवेश)

दीवान०—तहसीलदार साहब, रह-रहकर यही बात मेरे ध्यान में आ जाती है कि देखने में इतना भोला-भाला और ऐसा बेढब पुराना चोर!

(बेचैनीराम और संपादक चकित होकर एक दूसरे की ओर देखते हैं)

तहसील०—हम लोगों से बचाने की प्रार्थना किस प्रकार कर रहा था मानो दूध का धुला हो! बाइसिकिल की चोरी आजकल फ़ैशन हो रही है।

दीवान०—सच पूछो तो मैं अपनी लड़की के लिये मन-ही-मन उसे सोच चुका था, (बेचैनीराम संपादक की ओर गर्व के साथ देखता और संकेत करता है) पर इन दुष्ट नवयुवकों का कुछ भी ठीक नहीं। रियासतों का पचास वर्ष का अनुभव मुझे यह कहने के लिये बाध्य करता है कि अदालत से जिनको दंड मिला करता है उनमें कम-से-कम सत्तानबे फ़ीसदी नवयुवक होते हैं।

तहसील०—और ऊपर से भोले कितने बनते हैं! इनको दंड देता-देता मैं भी तंग आ गया हूँ।

दीवान०—कुछ पूछिए मत। इसीलिये कभी-कभी मैं सोचता हूँ कि कन्या का विवाह किसी नवयुवक से न करके किसी चालीस और पचास के भीतरवाले से कर दूँ—अधेड़ से।

(बेचैनीराम बेचैन होकर दीवान की ओर जाना चाहता है; संपादक उसे हाथ पकड़कर रोकता है)

तहसील०—और साहब, नवयुवकों के चरित्र का भी क्या ठीक?

(बेचैनीराम फिर उन लोगों की ओर लपकता है; संपादक रोकता है)

दीवान०—कुछ नहीं, और यदि उस चालीस और पचास के भीतरवाले की पहली बहू जीवित भी हो तो भी मेरी कन्या के सुख में उससे कोई बाधा नहीं पड़ सकती।

(बेचैनीराम फिर उधर जाना चाहता है, संपादक फिर रोकता है)

तहसील०—इन दुष्टों को तो बस साँप समझे। देखा न, हम लोग तो उस पर दया दिखाना—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साहित्य-संसार के दिग्गज विद्वानों द्वारा प्रशंसित

सुप्रसिद्ध

गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय, लखनऊ

की उत्कृष्ट और सचित्र पुस्तकें

गंगा-पुस्तकमाला की उत्तमोत्तम पुस्तकें

१. उपन्यास

हृदय की प्यास (सचित्र)—लेखक, हिंदी के सुप्रसिद्ध लेखक आयुर्वेदाचार्य पं० चतुरसेन शास्त्री; मूल्य १॥), २)

रंगभूमि (दो भाग)—लेखक, श्रीयुत प्रेमचंदजी मूल्य ५), ६)

विजया (सचित्र)—मूल-लेखक, श्री० शरच्चंद्र चट्टोपाध्याय; अनुवादक, सुधा-संपादक पं० रूपनारायण पांडेय कविरत्न; मूल्य १॥), २)

बहता हुआ फूल (सचित्र)—मूल लेखक, बाबू चारुचंद्र बंद्योपाध्याय बी० ए०; अनुवादक, सुधा-संपादक पं० रूपनारायण पांडेय कविरत्न; मूल्य २॥), ३)

पवित्र पापी (सचित्र) (एक रूसी उपन्यास का अनुवाद)—अनुवादक, पं० व्रजकृष्ण गुर्टू बी० ए०, एल्-एल्० बी० और कविराज विद्याधर विद्यालंकार; मूल्य ३), ३॥)

विचित्र योगी—लेखक, श्रीद्वारकाप्रसाद मौर्य बी० ए०, एल्-एल्० बी; मूल्य १), १॥)

मा—लेखक, पं० विश्वंभरनाथ शर्मा कौशिक; मूल्य लगभग ३)

संसार-रहस्य अथवा अधःपतन—लेखक, ठाकुर प्रसिद्धनारायणसिंह बी० ए०; मूल्य १॥), २)

सीधे पंडित—लेखक, ठाकुर प्रसिद्धनारायणसिंह बी० ए०; मूल्य १॥)

२. गल्प और कहानियाँ

चित्रशाला (सचित्र)—लेखक, विश्वंभरनाथ शर्मा कौशिक; मूल्य २), २॥)

अद्भुत आलाप—लेखक, हिंदी-साहित्य-संसार के सर्वमान्य महारथी पं० महावीरप्रसादजी द्विवेदी; मूल्य १), १॥)

जातक-कथा-माला—अनुवादक, बाबू रामचंद्र वर्मा; मूल्य १), १॥)

नंदन-निकुंज—लेखक, स्व० श्रीचंडीप्रसादजी बी० ए० 'हृदयेश'; मूल्य १), १॥)

अश्रुपात (सचित्र)—लेखक, ख्वाजा हसन निज़ामी; अनुवादक, पं० श्रीराम शर्मा बी० ए०; मूल्य १), १॥)

जासूस की डायरी (सचित्र)—लेखक, बाबू गोपालराम गहमरी, जासूस-संपादक; मूल्य १), १॥)

नाट्यकथाऽमृत—लेखक, प्रिंसिपल चंद्रमौलि सुकुल एम्० ए०, एल्० टी०; मूल्य १), १॥)

प्रेम-गंगा—अनुवादक, स्व० पं० ईश्वरीप्रसाद शर्मा, संपादक "हिंदूपंच"; मूल्य १), १॥)

प्रेम-प्रसून—लेखक, श्रीप्रेमचंदजी; मूल्य १=), १॥=)

प्रेम-द्वादशी (सचित्र)—लेखक, श्रीप्रेमचंदजी; मूल्य १), १॥)

मंजरी (सचित्र)—अनुवादक, सुधा-संपादक पं० रूपनारायणजी पांडेय कविरत्न; मूल्य १), १॥)

३. नाटक

कर्बला—लेखक, श्रीप्रेमचंदजी; मूल्य १॥), २)

कीचक—लेखक, श्रीभगवन्नारायण भार्गव बी० ए०, एम्० एल्० सी०; मूल्य १), १॥)

कृष्णकुमारी (सचित्र)—लेखक, सुधा-संपादक पं० रूपनारायणजी पांडेय कविरत्न; मूल्य १), १॥)

खाँजहाँ (सचित्र)—लेखक, सुधा-संपादक पं० रूपनारायणजी पांडेय कविरत्न; मूल्य १=), १॥=)

जयद्रथ-वध—लेखक, पं० गोकुलचंद्र शर्मा बी० ए०; मूल्य ॥।=), १=)

संचालक गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय, २९-३०, अमीनाबाद-पार्क, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दुर्गावती (सचित्र)—लेखक, लखनऊ-युनिवर्सिटी के हिंदी-लेक्चरार पं० बदरीनाथजी भट्ट बी० ए०; मूल्य १), १॥)

बुद्धचरित्र (सचित्र)—अनुवादक, सुधा-संपादक पं० रूपनारायणजी पांडेय कविरत्न; मूल्य ॥), १)

वीर भारत—लेखक, पं० भवानीदत्त जोशी बी० ए०, एल्-एल्० बी०; मूल्य ॥), १)

वेणी-संहार नाटक—लेखक, पं० महावीरप्रसादजी द्विवेदी; मूल्य ॥=), १=)

वरमाला (सचित्र)—लेखक, श्रीयुत गोविंदवल्लभ पंत; मूल्य ॥), १)

पूर्व-भारत—लेखक, हिंदी के धुरंधर विद्वान् "मिश्रबंधु"; मूल्य ॥=), १=)

४. व्यंग्य, हास्य और प्रहसन

अचलायतन—मूल-लेखक, श्रीरवींद्रनाथ ठाकुर; अनुवादक, सुधा-संपादक पं० रूपनारायण पांडेय कविरत्न; मूल्य ॥)

ईश्वरीय न्याय—लेखक, प्रोफ़ेसर श्रीरामदास गौड़ एम्० ए०; मूल्य ॥)

मूर्ख-मंडली—लेखक, सुधा-संपादक पं० रूपनारायण पांडेय कविरत्न; मूल्य ॥=), १=)

मिस्टर व्यास की कथा—लेखक, स्वर्गीय पंडित शिवनाथजी शर्मा बी० ए०; मूल्य २॥), ३)

रावबहादुर—मूल-लेखक, मौ० मौलियर; अनुवादक, पं० लल्लीप्रसाद पांडेय; मूल्य ॥), १)

लबड़धोंधों—लेखक, लखनऊ-युनिवर्सिटी के हिंदी-लेक्चरार पं० बदरीनाथ भट्ट बी० ए०; मूल्य ॥), १॥=)

५. काव्य

आत्मार्पण—लेखक, द्वारकाप्रसाद गुप्त "रसिकेंद्र"; मूल्य लगभग ॥)

उषा—लेखक, स्व० श्रीशिवदास गुप्त "कुसुम"; मूल्य ॥=)

पराग—लेखक, सुधा-संपादक पं० रूपनारायण पांडेय कविरत्न; मूल्य ॥), १)

पुष्पांजलि—लेखक, आनरेबुल श्यामविहारी मिश्र एम्० ए० और रायबहादुर पं० शुकदेवविहारी मिश्र बी० ए०; मूल्य १॥॥)

भारत-गीत—लेखक, कवि-सम्राट् पं० श्रीधर पाठक; मूल्य ॥), १)

मानस-मुक्तावली—संग्रहकर्ता, रायबहादुर बाबू मुकुंदलालजी गुप्त; मूल्य ।=)

६. गद्य-साहित्य

निबंध-निचय—लेखक, हिंदी के उत्कृष्ट समालोचक पं० जगन्नाथप्रसाद चतुर्वेदी; मूल्य १), १॥)

विश्व-साहित्य—लेखक, सरस्वती-संपादक श्रीपदुमलाल-पुन्नालाल बख़्शी बी० ए०; मूल्य १॥), २)

साहित्य-सुमन—लेखक, स्व० पं० बालकृष्ण भट्ट; मूल्य ॥=), १=)

हिंदी—लेखक, लखनऊ-विश्वविद्यालय के हिंदी-लेक्चरार पं० बदरीनाथ भट्ट बी० ए०; मूल्य ॥=), १=)

७. समालोचनाएँ

देव और बिहारी—लेखक, पं० कृष्णविहारी मिश्र बी० ए०, एल्-एल्० बी०; १॥), २)

भवभूति—अनुवादक, हिंदी-संसार के सुप्रसिद्ध विद्वान् पं० ज्वालादत्त शर्मा; मूल्य ॥=), १=)

हिंदी-नवरत्न—लेखक, हिंदी-संसार के धुरंधर समालोचक "मिश्रबंधु"; मूल्य ४॥)

८. जीवन-चरित्र

कारनेगी और उसके विचार—लेखक, श्रीउमरावसिंह कारुणिक; मूल्य ॥=)

केशवचंद्र सेन—लेखक, भारतीय हृदय; मूल्य १), १॥)

प्रभु-चरित्र—लेखक, पं० शिवराम शुक्ल; मूल्य ॥)

प्राचीन पंडित और कवि—लेखक, आचार्य पं० महावीर-प्रसाद द्विवेदी; मूल्य ॥=), १=)

बंकिमचंद्र चटर्जी—लेखक, सुधा-संपादक पं० रूपनारायण पांडेय कविरत्न; मूल्य १), १॥)

सुकवि-संकीर्तन (सचित्र)—लेखक, साहित्य-महारथी पं० महावीरप्रसादजी द्विवेदी; मूल्य १), १॥)

९. इतिहास

इँगलैंड का इतिहास (तीन भाग)—लेखक, डॉ० प्राणनाथजी विद्यालंकार पी०-एच्० डी०; मूल्य ३), ४)

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जापान का इतिहास—लेखक, ऑनरेबुल पं० श्यामविहारी मिश्र एम्० ए०, रायबहादुर पं० शुकदेवविहारी मिश्र बी० ए० ; मूल्य ॥।=)

स्पेन का इतिहास—लेखक, ऑनरेबुल पं० श्यामविहारी मिश्र एम्० ए०, रायबहादुर पं० शुकदेवविहारी मिश्र बी० ए० ; मूल्य ॥।=)

१०. अर्थशास्त्र और व्यापार

भारतीय अर्थशास्त्र—लेखक, भूतपूर्व प्रेम-संपादक बाबू भगवान्दासजी केला ; मूल्य २॥), ३॥)

विदेशी विनिमय—लेखक, प्रयाग-विश्वविद्यालय के अर्थशास्त्र अध्यापक श्रीदयाशंकर दुबे एम्० ए०, एल्-एल्० बी० ; मूल्य १), १॥)

११. कृषि

उद्यान (सचित्र)—लेखक, श्रीशंकरराव जोशी एग्रिकल्चरल ऑफ़िसर ; मूल्य १=), १॥=)

किसानों की कामधेनु (सचित्र)—लेखक, हिंदी के सुप्रसिद्ध लेखक पं० गंगाप्रसाद अग्निहोत्री ; मूल्य ।=)

कृषि-मित्र—लेखक, पं० गंगाप्रसाद पांडेय L. A. G. सुपरिटेंडेंट एग्रिकल्चर ; मूल्य ।-)

कृषि-विद्या—लेखक, पं० अश्विनीकुमार शुक्ल; मूल्य ॥), १)

तरु-जीवन—लेखक, पं० गंगाशंकर पंचोली; छप रहा है।

१२. स्वास्थ्य और चिकित्सा

तात्कालिक चिकित्सा (सचित्र)—लेखक, बाबू लालबहादुरलाल; मूल्य १), १॥)

संक्षिप्त शरीर-विज्ञान—लेखिका, श्रीमती हेमंतकुमारी भट्टाचार्य; मूल्य ॥=)

संक्षिप्त स्वास्थ्य-रक्षा—लेखिका, श्रीमती हेमंतकुमारी भट्टाचार्य; मूल्य ॥=)

स्वास्थ्य की कुंजी—लेखक, डॉ० बाबूराम गर्ग ; मूल्य १), १॥)

१३. वैज्ञानिक

भूकंप—लेखक, सुप्रसिद्ध विद्वान् बाबू रामचंद्र वर्मा; मूल्य १)

मनोविज्ञान—लेखक, प्रिंसिपल पं० चंद्रमौलि सुकुल एम्० ए०, एल्० टी० ; मूल्य ॥), १)

१४. नवयुवकोपयोगी

जीवन का सदुपयोग—अनुवादक, श्रीहरिभाऊ उपाध्याय, संपादक हिंदी नवजीवन ; मूल्य १), १॥)

एशिया में प्रभात—मूल लेखक, पाल रिचर्ड ; अनुवादक, श्रीठाकुर कल्याणसिंह शेखावत बी० ए० ; मूल्य ॥), १)

भिखारी से भगवान्—अनुवादक, ठाकुर बाबू नंदनसिंह बी० ए० ; मूल्य १), १॥)

सुख तथा सफलता मूल्य १)

१५. योग

प्राणायाम—लेखक, ठाकुर प्रसिद्धनारायणसिंह बी० ए० ; मूल्य ॥।=), १।=)

कर्मयोग—लेखक, श्रीसंतराम बी० ए ; मूल्य ॥), १)

हठयोग—लेखक, ठाकुर प्रसिद्धनारायणसिंह बी० ए० ; मूल्य लगभग २)

योग-शास्त्रांतर्गत धर्म—लेखक, ठाकुर प्रसिद्धनारायणसिंह बी० ए० ; मूल्य ॥)

योगत्रयी—लेखक, ठा० प्रसिद्धनारायणसिंह बी०ए०; मूल्य॥)

राजयोग—लेखक, ठा० प्रसिद्धनारायणसिंह बी०ए०; मूल्य १॥)

योग की कुछ विभूतियाँ—लेखक, ठाकुर प्रसिद्धनारायणसिंह बी० ए० ; मूल्य ॥)

जीवन-मरण-रहस्य—लेखक, ठाकुर प्रसिद्धनारायणसिंह बी० ए० ; मूल्य ।=)

योग-दर्पण—लेखक लाला कन्नोमल एम्० ए० ; मूल्य लगभग १)

१६. महिला-माला की मनोहर मणियाँ

कमला-कुसुम (सचित्र)—लेखिका, श्रीमती गिरिजा देवी; मूल्य १)

श्रद्धा लेखक, कविराज श्रीप्रतापसिंह वैद्य, हिंदू-विश्वविद्यालय के आयुर्वेद विभाग के सुपरिटेंडेंट ; मूल्य ॥।=)

गुप्त-संदेश (दो भाग)—लेखक, श्री डॉक्टर युद्धवीरसिंह ; मूल्य १=)

देवी पार्वती (सचित्र)—लेखक, मुं० जहूरबख़्श मूल्य १)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देवी द्रौपदी (सचित्र)—लेखक, कविवर श्रीरामचरितजी उपाध्याय ; मूल्य ॥)

नारी-उपदेश—लेखक, श्रीगिरिजाकुमार घोष ; मूल्य ॥)

पत्रांजलि—मूल-लेखक, श्रीसतीशचंद्र चक्रवर्ती ; अनुवादक पं० कात्यायनीदत्त त्रिवेदी ; मूल्य ॥)

भारत की विदुषी नारियाँ—संपादिका, श्रीमती कृष्णाकुमारी; मूल्य ॥)

भारतीय स्त्रियाँ—अनुवादक, बाबू रामचंद्र वर्मा; मूल्य १॥), २)

महिला-मोद—लेखक, साहित्य-महारथी पं० महावीरप्रसादजी द्विवेदी ; मूल्य ॥)

लक्ष्मी (सचित्र) – लेखक, श्रीगिरिजाकुमार घोष; मूल्य ॥=)

वनिता-विलास (सचित्र)—लेखक, भूतपूर्व सरस्वती-संपादक पं० महावीरप्रसादजी द्विवेदी ; मूल्य ॥)

१७. बालविनोद-वाटिका के सुंदर सुमन

इतिहास की कहानियाँ (सचित्र)—लेखक, मुं० जहूरबख़्श हिंदी-कोविद ; मूल्य ॥=)

कीड़े-मकोड़े (सचित्र)—लेखक, पं० भूपनारायणजी दीक्षित बी० ए०, एल्० टी० ; मूल्य ॥=)

खिलवाड़—लेखक, पं० भूपनारायणजी दीक्षित बी० ए०, एल्० टी० ; मूल्य ।)

खेल-पचीसी—लेखक, श्रीप्रतिपालसिंहजी ; मूल्य ।=)

गधे की कहानी (सचित्र)—लेखक, पं० भूपनारायणजी दीक्षित बी० ए०, एल्० टी० ; मूल्य ॥), १)

नटखट पौदे (सचित्र)—लेखक, श्री पं० भूपनारायणजी दीक्षित बी० ए०, एल्० टी० ; मूल्य १॥), २)

परोपकारी हातिम (सचित्र)—लेखक, मुं० जहूरबख़्श हिंदी-कोविद ; मूल्य १), १॥)

बालनीति-कथा (दो भाग)—मूल-लेखक, हिंदू-विश्वविद्यालय, काशी के प्रिंसिपल और प्रो-वाइस-चांसलर श्रीयुत ए० बी० ध्रुव एम्० ए०, एल्-एल्० बी०; अनुवादक, लखनऊ-विश्वविद्यालय के हिंदी-लेक्चरार श्रीपं० बदरीनाथभट्ट बी० ए०; मूल्य २॥), ३॥)

भगिनी-भूषण—लेखक, स्व० श्री बा० गोपालनारायणसेनसिंह बी० ए० ; मूल्य =)

भारत के सपूत (सचित्र)—लेखक, मुं० जहूरबख़्श हिंदी-कोविद ; मूल्य ॥=)

लड़कियों का खेल (सचित्र)—लेखक, स्व० श्रीगिरिजाकुमार घोष ; मूल्य ॥)

सुघड़ चमेली—लेखक, श्रीयुत रामजीदास भार्गव ; मूल्य=)

हँसी-खेल—लेखक, श्रीजगमोहन 'विकसित'; मूल्य लगभग ॥)

१८. सुकवि-माधुरी-माला के अनुपम रत्न

बिहारी-रत्नाकर—प्रणेता, व्रजभाषा-साहित्य के पारदर्शी विद्वान् बाबू जगन्नाथदास "रत्नाकर" बी० ए०; मूल्य ५)

मतिराम-ग्रंथावली—संपादक, पं० कृष्णविहारी मिश्र बी० ए०, एल्-एल्० बी ; मूल्य २॥), ३)

मिश्रबंधु-विनोद (दो खंड)—लेखक, पं० गणेशविहारी मिश्र, माननीय पं० श्यामविहारी मिश्र एम्० ए० और रा० ब० पं० शुकदेवविहारी मिश्र बी० ए० ; मूल्य

प्रथम खंड २), २॥)

द्वितीय खंड ३), ३॥)

१९. प्रकीर्णक पुस्तकें

अयोध्यासिंह उपाध्याय— मूल्य =)

देशहितैषी श्रीकृष्ण—लेखक, स्वर्गीय स्वनाम-धन्य पं० राधाचरण गोस्वामी ; मूल्य =)

द्विजेंद्रलाल राय—लेखक, सुधा-संपादक पं० दुलारेलाल भार्गव और पं० रूपनारायण पांडेय कविरत्न ; मूल्य =)

पूर्ण-संग्रह—संपादक, पं० कृष्णविहारी मिश्र बी० ए०, एल्-एल्० बी० ; मूल्य १॥), २)

प्रायश्चित्त-प्रहसन—लेखक, सुधा-संपादक पं० रूपनारायण पांडेय कविरत्न ; मूल्य ।)

मध्यम व्यायोग—लेखिका, श्रीमती सुशीलादेवी जायसवाल; मूल्य =)

स्काउट-मार्चिंग (सचित्र)—लेखक, पं० मनोहरप्रसाद त्रिपाठी ; मूल्य ॥)

सम्राट्-चंद्रगुप्त—लेखक, पं० बालमुकुंद वाजपेयी भूतपूर्व लक्ष्मण-संपादक ; मूल्य ।)

Hindi in Thirty days—लेखक, श्रीरामस्वरूप कौशल एम्० ए०, एम्० आर० ए० एस्० विद्याभूषण; मूल्य ॥)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

सुधा

के

६ विशेषांक

१ अछूत-संख्या—संपादक, महात्मा गांधीजी

२ हिंदू-संगठन-संख्या—संपादक, पं० मदनमोहनजी मालवीय

३ समाज-संख्या—संपादक, भाई परमानंदजी

४ सुर-संख्या—संपादक, बा० जगन्नाथदासजी 'रत्नाकर'

५ साहित्य-संख्या—संपादक, पं० पद्मसिंहजी शर्मा

६ स्वाधीनता-संख्या—संपादक, बाबू पुरुषोत्तमदास टंडन

हमने ऊपर लिखे ६ विशेषांक, उल्लिखित ६ विशेष विषय-विशेषज्ञ विज्ञ विद्वानों द्वारा संपादित कराकर, निकालने का विचार कर लिया है। ये अंक यथासमय, संपादकों की सुविधा के अनुसार, प्रकाशित होंगे। ये सब हिंदी के स्थायी साहित्य की बहुमूल्य वस्तु होंगे। इनके विषय में विशेष बातें किसी अगली संख्या में लिखी जायँगी। इनमें से दो विशेषांकों में तो—

२२५ पृष्ठ, ८ रंगीन चित्र, ८ व्यंग्य-चित्र रहेंगे।

शीघ्र ग्राहक बननेवालों को ये अंक मुफ्त में मिलेंगे।

मैनेजर सुधा, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आपको विज्ञापन कहाँ देना चाहिए ?

हिंदी की सर्वश्रेष्ठ मासिक पत्रिका

में।

क्यों ? किसलिये ?

इसलिये कि—

(१) राजे-महाराजे, रईस-ताल्लुक़ेदार, अमीर-उमराव, वकील-बैरिस्टर, डॉक्टर-वैद्य, मिलों के मालिक और दूकानदार, कोठीवाले और महाजन, अध्यापक और विद्यार्थी, सभी इसे पढ़ते हैं। इसमें विज्ञापन देने से घर बैठे आपकी तिजारत की ख़बर इन सबको मिल जायगी, और आप ही से ये लोग माल मँगाएँगे। देखिए, रोज़गार बढ़ाने का कैसा अच्छा और सस्ता तरीक़ा है!

(२) यह हिंदी की सर्वश्रेष्ठ मासिक पत्रिका है। इसके प्रत्येक पृष्ठ को लोग बड़े चाव से देखते हैं, और सदा नई-नई वस्तुओं की खोज में रहते हैं। फिर बताइए, आपकी चीज़ अगर नई, बढ़िया, सुंदर और उपयोगी हुई, तो वे क्यों नहीं उसे ख़रीदेंगे ?

(३) सभी बड़े-बड़े व्यापारी अपना विज्ञापन इसमें छपवाकर काफ़ी लाभ उठा रहे हैं। इसके विज्ञापन के पृष्ठों को देखिए! फिर आप ही सुस्त क्यों बैठे हैं ?

(४) यह हिंदुस्थान के कोने-कोने में जाती है। कहीं भी आपकी वस्तु की आवश्यकता होगी, माँग आपके पास सीधी आएगी।

(५) इसकी ग्राहक-संख्या तेज़ी से बढ़ रही है। यह सबसे अधिक लोक-प्रिय हो रही है। लाखों स्त्री-पुरुष इसे पढ़ रहे हैं। इसीलिये हमें एक-एक अंक के दो-दो संस्करण करने पड़े हैं! हिंदी की मासिक पत्रिकाओं के इतिहास में यह एक बिलकुल नई घटना है!

(६) इसमें सभी विषय के लेख रहते हैं, अतएव सभी विचार और प्रकृति के लोग इसे पढ़ते हैं। सो अगर किसी भी चीज़ की किसी को आवश्यकता हुई, तो वह इसी के विज्ञापन-पृष्ठों में पहले उसका विज्ञापन खोजेगा, फिर और किसी से पूछेगा!

(७) अधिक प्रचार होते हुए भी इसके विज्ञापन-छपाई के रेट भी सोच-विचारकर रक्खे गए हैं, जिसमें सभी श्रेणी के लोग विज्ञापन छपा सकें। ऐसा मौक़ा क्यों चूकते हैं ? क्या अभी आपको और कुछ जानना है ? यदि हो, तो पत्र लिखकर पूछिए।

शीघ्रता कीजिए। कंट्रैक्ट कर लीजिए। नहीं तो संभव है, आगे चलकर इसके विज्ञापन-रेट बढ़ाने पड़ें। क्योंकि कोई क्या कह सकता है कि सुधा की ग्राहक-संख्या आगे कितनी हो जायगी ?

मैनेजर 'सुधा', लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लीजिए ! शीघ्रता कीजिए !! नहीं तो पीछे पछताइएगा !!!

सर्वश्रेष्ठ और सर्वांगसुंदर

साहित्यिक और सामाजिक

सचित्र मासिक पत्रिका

"सुधा"

के स्वयं शीघ्र ग्राहक बन जायँ तथा अपने इष्ट-मित्रों को बनाएँ, और मातृभाषा तथा देश भाषा हिंदी की सेवा में हमारा हाथ बटाएँ।

ग्राहक बनने में शीघ्रता क्यों करें ?

इसलिये कि—

(१) अगर आप अभी से इसके ग्राहक न बनेंगे, तो आपको शुरू के अंक फिर न मिल सकेंगे। इसकी ग्राहक-संख्या इस तेज़ी से बढ़ी है कि गत २ ही मास में इसके ४००० से ऊपर ग्राहक बन गए, और इसके पहले २ अंको के द्वितीत संस्करण फिर क्रमशः ४००० और ३२०० प्रतियों के निकालने पड़े ! सुधा अब ७२०० छप रही है। किंतु नवंबर के बाद हमारे पास ज़्यादा प्रतियाँ नहीं बचेंगी। कारण, प्रति मास १००० ग्राहक इस समय बन रहे हैं।

(२) सुधा सुंदर और स्थायी साहित्य का एक अनुपम संग्रह है, जो सदा और सर्वथा संग्रहनीय, पठनीय और मननीय है। कभी यह साहित्य पुराना नहीं हो सकता। जब कभी, २०-२५ वर्ष बाद भी, आप इसे पढ़ेंगे, आपको नित्य नया आनंद प्राप्त होगा। हरिश्चंद्र की "हरिश्चंद्र-चंद्रिका", पं० बालकृष्ण भट्ट का "हिंदी-प्रदीप", पं० प्रतापनारायण मिश्र का "ब्राह्मण" और पं० महावीरप्रसाद द्विवेदी की "सरस्वती," वर्षों पुरानी हो जाने पर भी, आज नई की तरह ही, पढ़ी जाती हैं। लोग इनके लिये तरसते रहते हैं। वही हाल कभी "सुधा" का भी होगा। इसलिये अपनी प्रतियों का आप अभी से संग्रह कर लीजिए।

(३) यह अवसर चूकने पर फिर ३)-३) और ४)-४) देने पर भी इसके अंकों का मिलना असंभव हो जायगा। कारण, शुरू की माधुरी में हमें इसका पूरा अनुभव हो गया है कि ग्राहकों को किस तरह निराश होना पड़ा था !

और, यह लिखने की तो आवश्यकता ही नहीं कि इसके लेख और चित्र किस कोटि के होते हैं। यह तो आप सुधा पर आई हुई सम्मतियाँ पढ़ने से जान ही जायँगे। अन्यत्र पढ़िए।

मैनेजर सुधा, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भलमनसाहत की पहचान

पोशाक से होती है। शीत ऋतु में प्रायः सभी लोग कुछ-न-कुछ अपने ओढ़ने के वास्ते अपनी स्थिति के माफ़िक़ रखते हैं। आज कल प्रायः मिलों के बने हुए ऊनी चादरों की ज़्यादा भरमार है। ऊँच-नीच प्रायः सभी जाति के लोगों के पास इसकी पहुँच हो जाने के कारण यह प्रतिष्ठा की वस्तु नहीं रही। इसी वजह से भले आदमियों ने इसका व्यवहार छोड़ दिया। साथ में इनके बनानेवाले कारख़ानों के मालिकों के विदेशी होने के कारण देशभक्तों ने भी इनका अपनाना छोड़ दिया। अब रह गए दुशाले, वह बहुमूल्य और जल्दी ख़राब होने-वाले व वर्तमान सभ्यता के अनुकूल न होने के कारण व्यवहारोपयोगी वस्तु न रही। आसाम अँडी सिल्क यह अवश्य ऐसी वस्तु है जो प्रतिष्ठा और देशभक्ति का चिह्न है क्योंकि इसका व्यवहार प्रायः सभी परिस्थिति के ही लोगों में होता है। नीची श्रेणी के लोगों में इसका नाम भी नहीं सुना जाता। दूसरे यह देश की बनी हुई होने के कारण देशभक्तों के प्रेम की वस्तु है। अतः इसका व्यवहार करना सभ्यता और देशभक्ति का चिह्न है। इस बात में कोई संदेह नहीं। दूसरे यह कि इसके व्यवहार करनेवाले आर्थिक लाभ भी काफ़ी उठाते हैं। क्योंकि यह चाहे कैसी वे एतिहाती से बर्ती जावे। तब भी २०-२५ वर्ष से कम नहीं चलती। यह बात हमसे नहीं आप चाहे जिस आसाम, अँडी सिल्क व्यवहार करनेवाले से पूछकर जान सकते हैं। तीसरे यह कि जब आप कई वर्ष ओढ़ने के बाद अगर चाहें तो इसके कोट सूट वग़ैरह कपड़े भी बन सकते हैं। जो कि बहुत सुंदर और टिकाऊ होते हैं। अगर नए के बनवाए जायँ तो और भी सुंदर रहेंगे—फिर भी ऐसी उपयोगी वस्तु जो कि सर्वोपयोगी है। ६ गज़ लंबी ६२ इंच चौड़ी चादर का २८) रु०, ३ गज़ लंबी ६२ इंच की चादर का १४) रु० इसकी ३ गज़ की १ चादर में १ सूट या दो कोट तैयार होते हैं। नापसंद होने से मूल्य वापिस।

पता— दी स्वदेशी क्लाथ सप्लाई स्टोर नं० २७, इटावा (U. P.)

आवश्यकता है!

असली सीलोन के ख़ूब चमक ते हुए, हीरे बेचनेवाले ट्रैवलिंग एजेंटों की। नमूने के लिये साथ में रखनेवाले हीरों का दाम जो जमा करेंगे, उनके पत्र पर पहले ध्यान दिया जायगा। वेतन और कमीशन १००) जो बिक्री के अनुसार न्यूनाधिक होता रहेगा। पत्र-व्यवहार अँगरेज़ी में करें। पता—

The Gemming Syndicate-Leading Gems Experts in Ceylon, *Ambalangoda, CEYLON.*

हिंदी-संसार में बिलकुल नई चीज़

शीघ्रता कीजिए! शीघ्रता कीजिए!!

तीन महीने में ३००० प्रतियाँ बिक गईं

लो० तिलक का चरित्र

(सचित्र)

भूमिका-लेखक, पं० मदनमोहन मालवीय

(लेखक)

श्रीयुत नरसिंहचिंतामणि केलकर एम्० एल०ए०

(मराठी केशी-संपादक)

(अनुवादक)

श्रीसिद्धिनाथ माधव लोंढे

पृष्ठ-संख्या ८५० मूल्य ४)

पुस्तक का विषय, लेखक और भूमिका लेखक के नाम ही पुस्तक की उपयोगिता और महत्व के काफ़ी प्रमाण हैं।

मिलने का पता—धोंडो काशीनाथ फडके

अरुणोदय प्रेस, थाना (बंबई)

घर बैठे लीजिए

सच्चा बनारसी माल

काशी-सिल्क की धोतियाँ, डुपट्टे, साफ़े, कोट-कमीच के रेशमी कपड़े, सच्ची परी की साड़ियाँ, साफ़े डुपट्टे और हर तरह के बना-रसी जरीदार कपड़े। आपके शहर के भाव से फ़ी रुपया चार आना किफ़ायत गारंटी। विशष जानकारी के लिये हमसे लिखा-पढ़ी कीजिए।

बनारसी-शिल्प-व्यापार कार्यालय

नं० १०१ (५) बनारस-सीटी

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दीवान०—बल्कि उसका विवाह कराना चाहते थे—

तहसील०—और उसने पुलिस से उलटा हमारा ही नाम ले दिया !

(बेचैनीराम व संपादक चकित होकर एक दूसरे की ओर देखते हैं)

दीवान०—और (हाथ से कुछ संकेत करता हुआ) उन बातों को सोचते हुए लड़की को किसी बड़ी उम्र-वाले से ब्याह देना वैसे भी बुरा नहीं है।

(बेचैनीराम झपटकर वहाँ आ कूदता है ; पीछे-पीछे संपादक भी आता है ; दीवान बहादुर व तहसीलदार चौंक पड़ते और हैरानी के साथ एक दूसरे की, और इन दोनों की, ओर देखते हैं)

बेचैनी०—(नम्रतापूर्वक) श्रीमन्, जय रामजी की अथवा नमस्ते—यदि आप आर्य-समाजी हों तो। भगवन्, नवयुवकों पर जो हाल में आपने आक्षेप किए हैं, उनके उत्तर में इस समय तो मुझे केवल इतना ही निवेदन करना है कि क्या काबुल में गधे नहीं रहते ? भो भगवन्, एक मछली सारे तालाब को गंदा कर देती है, परंतु आप सुविज्ञ हैं, सब समझते हैं, किमधिकम् विद्वद्वरेषु ?

(दीवान बहादुर और तहसीलदार एक दूसरे की ओर देखकर कुछ संकेत करते हैं, और दोनों जल्दी-जल्दी चल देते हैं; बेचैनीराम उनके पीछे-पीछे जाने लगता है)

संपादक—(बेचैनी० से) मैं यहीं खड़ा हूँ, विवाह की पक्की करके यहीं आ जाना। (बेचैनी० गया) 'तबेले की बला बंदर के सिर !' चलो अच्छा ही हुआ। अनी टली। पुलिस पकड़ने आई थी मुझे, और पकड़ ले गई न-जाने किसे ! अपराध था जातिगत द्वेष फैलाना, और वह हो गया बाइसिकिल की चोरी ! और गुस-पुलिसवाले निकले वर-खोजी ! यह खूब तमाशा हुआ ! चलो, कुछ देर के लिये तो पिंड छूटा। (इधर-उधर देखकर) डर यही है कि कहीं फिर न आ जायँ। (इधर-उधर देखता है ; हाँफते हुए बेचैनीराम का प्रवेश)

बेचैनी०—इतनी दौड़-धूप की, पर वे दोनों तो तीर हो गए। उनके जाने का मुझे उतना खेद नहीं है, जितना इस बात का है कि नवयुवकों के विषय में वे अपने हृदय में बहुत बुरी धारणा लेकर गए हैं, जिसका दूर किया जाना, देश के हित के लिये, आवश्यक था।

संपादक—तुम व्यर्थ उनकी मृग-तृष्णा में मारे फिरे ; तुम्हें तो यही जानकर संतोष कर लेना चाहिए था कि वे जासूस नहीं हैं।

"क्या काबुल में गधे नहीं रहते ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बेचैनी०—मेरा दृढ़ विश्वास है कि जैसे एक और एक दो होते हैं वैसे ही इसकी कन्या भी अत्यंत सुंदरी है।

संपादक—यदि वे सरकारी जासूस होते तो तुम्हें भी व्यर्थ गवाही में घिसटना पड़ता।

बेचैनी०—बड़े आश्चर्य की बात है कि न मैंने इसकी कन्या को देखा न भाला, फिर भी मुझे उससे प्रेम हो चला है। बल्कि ऐसा लग रहा है कि मैं उसके प्रेम में अधिकाधिक फँसता चला जा रहा हूँ।

संपादक—मजिस्ट्रेट साहब व किसी वकील से मिलने की चिंता के कारण—ओह—मेरा हृदय धड़क रहा है!

बेचैनी०—मेरे दिल के धड़कने का कारण यह है कि मैं यही सोच रहा हूँ कि इससे करूँ या उससे? विना देखे-सुने किसी से प्रेम करना एक ऐसी बीमारी है, जिसका कोई इलाज ही नहीं; यदि इलाज है तो केवल मौत। हमारे देश की न-जाने कितने या कितनी सुशील लड़के या सुशीला कन्याएँ नित्य इस प्रकार के प्रेम का शिकार हो रहे हैं या हो रही हैं। मुझे दीखता है कि अब यह रोग मुझे भी लगा!

संपादक—तुमने सच कहा कि न-जाने कितने बेचारे संपादक सरकार की इस पक्षपात-पूर्ण नीति का शिकार हो रहे हैं। मुझे दीखता है कि इस रोग ने अबके मुझ पर भी हमला किया! चलो, जल्दी किसी वकील को खटखटावें।

बेचैनी०—यदि उसने एक बार भी मुझे देख लिया तो अवश्य मुझसे प्रेम करने लगेगी। मैं किसी से प्रेम करूँ, यह तो बीमारी है ही, मेरे विना जाने कोई कहीं कोने में बैठी-बैठी मुझसे प्रेम करती हो, यह और भी बुरी बीमारी है, क्योंकि इसका अप्रत्यक्ष प्रभाव हृदय पर बेढब पड़ता है। इसलिये मैं कभी उसे छिपकर प्रेम न करने दूँगा, बल्कि साफ़ कह दूँगा कि प्रेम करना है, तो खुलकर करो, जैसे बीच बाज़ार में खरा रुपया भुनाया जाता है। अच्छे काम में बदनामी या नेकनामी का विचार करना कायरता है।

संपादक—तुम्हारी बुद्धि पर पत्थर पड़ गए हैं, जो तुम यह समझ रहे हो कि मैं अच्छे काम में बदनामी या नेकनामी से रत्ती-भर भी डरता हूँ या कायर हूँ।

बेचैनी०—मुझसे न होने पर वह जन्म-भर क्वारी भले ही रह जाय, पर दूसरे का नाम न लेगी।

संपादक—(सोचता हुआ) अच्छा तो तुम्हारी इच्छा, चलो किसी नए वकील के ही पास चलो, जो तुम कहते हो कि वह दाम भी न लेगा और अपने ही पास से रजिस्ट्री का ख़र्च भी दे देगा।

बेचैनी०—(घड़ी देखता हुआ) पहले टिड्ढा-निवास चलो। अब समय हो गया है।

संपादक—जल्दी चलो, वरना वकील लोग कचहरी में ही मिलेंगे।

(दोनों गए)

चौथा दृश्य

स्थान—दीवान बहादुर का कमरा

(दीवान साहब अकेले आराम-कुर्सी पर बैठे-बैठे गुन-गुना रहे हैं)

दीवान०—

सोई है सुबुद्धि और जाग्रत कुबुद्धि हुई,
इसको सुलाओ और उसको जगाओ नाथ;
भटक भ्रमर-मन कंटकों में गया हाय,
इसे सुलझाओ पद-कंज में लगाओ नाथ!
घट-पट-ज्ञान-मठ मलिन हुआ है, द्वैत
मल को हटाओ, आत्म-रंग में रँगाओ नाथ;
मेरा अनुभव-धन छीन मौज मारती,
कुवासना-निशाचरी को शीघ्र ही भगाओ नाथ!

ओफ़्! हो, कैसा विकट समय आया है! होम करते में हाथ जलता है! क्या ठिकाना है! मैंने उस युवक को लड़की के योग्य समझकर उसकी सहायता करनी चाही, और उसने मुझे ही 'चोर का साथी गँठकटा' बताकर मेरे भावी उपकार का पेशगी बदला तुरंत दे दिया! और, उसके बाद, उधर वे दोनों दुष्ट युवक जोंक की तरह चिपट गए कि जिनसे पीछा छुड़ाने के लिये ऐसे-ऐसे लंबे डग रखने पड़े कि वामन को भी न रखने पड़े होंगे, जब कि बलि को छला था। अभी तक टाँगें दुख रही हैं। (घंटी बजाता है; नौकर का प्रवेश) देखो लपकुआ, कोई नवयुवक आवे तो भीतर मत घुसने देना।

लपकुआ—सरकार, सो कौन होय है? कहीं मुझे काट खाया तौ?

दीवान०—नहीं, तुमको नहीं काट सकता; वह जानवर तो नवयुवतियों को ही काटता है, सो भी ऐसे स्थान पर जहाँ जर्राह के हाथ की पहुँच नहीं है—

लपकुआ—क्या बात कही है सरकार ने! कि जहाँ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जलाके हाथ की पहुँची है ही नहीं ! वाह सरकार क्या बात कही है हजूर ने !

दीवान०—बस यही कि कोई नौजवान आदमी आवे, यानी लड़का-सा, तो भीतर न आने देना। पहले उसका नाम पूछकर हमें बतला देना।

लपकुआ—भौत अच्छा। (गया)

दीवान०—बस, मैं अघाया ऐसे नवयुवक-रूपी अँधेरे कोठे से। (तहसीलदार का प्रवेश)

तहसील०—दीवान साहब, देख लीजिए मैं तो आ गया ; पर वे लोग अभी नहीं आए।

दीवान०—अजी अब मेरा जी तो नवयुवकों की ओर से सचमुच ही हट गया है। न आवें सो ही अच्छा।

तहसील०—हिंदुस्थानी ताहम के अनुसार आए तो अभी दो घंटे की देर समझिए। (लपकुआ का प्रवेश)

लपकुआ—हजूर, वो जो आपने, क्या नाम बताया था विनका—दो नाऊजूवक-से आए हैं। वैसे बाहर से तो आदमी दीखैं हैं, भीतर से जानवर होयँ तो खबर नहीं। मैंने पूछा कै भाई तुम नाऊजूवक तो नहीं हौ तो विनों ने 'हाँ' कही !

दीवान०—तहसीलदार साहब, वही होंगे। अब आ गए हैं, तो मिल ही लें। अब लपकुआ, जल्दी से काग़ज़-पत्र एक ओर कर। आइए तहसीलदार साहब, बैठक की थोड़ी-सी सफ़ाई कर लें, नहीं तो वे समझेंगे कि मेरी लड़की गंदी रहती है। (तीनों मिलकर काग़ज-पत्र हटाने लगते हैं) वैसे तो मुझे अब नवयुवक के लिये विशेष इच्छा नहीं है, पर यदि वे काम के हों, तो बात दूसरी है।

तहसील०—आप तो अभी से इतनी उत्सुकता दिखाने लगे ! यह न करके ख़ूब गंभीर बनकर बैठिए, जैसे कि अथाह सागर। जब वे चार बातें करें, तब आप एक का जवाब दीजिए—सो भी अधूरा। जल्दी से रुखाई को अपनी सहचरी बना लीजिए। जल्दी से, वरना वे लोग समझ लेंगे कि आप विवाह के लिये उत्सुक हैं, और सब काम बिगड़ जायगा।

दीवान०—तहसीलदार साहब, अब आप ही से क्या छिपाया जाय ? सच तो यह है कि वह मेरी अधेड़-पसंदी न-जाने क्यों और कहाँ खिसक रही है। मेरे हृदय में न-जाने काहे का सागर उमड़ रहा है, जिसने उस अधेड़-पसंदी की नाव को विचित्र भावों के भँवर में डालकर डुबा दिया है। ऐसी दशा में, मैं प्रयत्न करूँगा, पर कह नहीं सकता कि रुखाई दिखाने में कहाँ तक सफल हूँगा, क्योंकि मैं यह भी सोच रहा हूँ कि जो कहीं उन्होंने मुझे रूखा और नीरस समझ लिया तो भी—

तहसील०—उनकी सब बातों का उत्तर मैं दे लूँगा, आप कुछ न कहिएगा, चुप बैठे रहिएगा। आप तो अभी से इतने उत्सुक हो रहे हैं ! लपकुआ जा भेज दे।

दीवान०—(सुनी-अनसुनी करके, ऊपर देखकर हाथ जोड़ता हुआ) हे भगवान, बस तू ही है जो कुछ है सो।

(दोनों युवकों का प्रवेश; उन्हें देखकर इनका और इन्हें देखकर उनका चौंकना)

दीवान०—हैं ! क्यों बे लपकुआ ! बेईमान ! (उन दोनों से) आप लोग किसके कहने से भीतर घुस आए हैं ? मैंने आपको नहीं बुलाया था। क्यों आप मेरा पीछा कर रहे हैं ? बस, भागिए यहाँ से, हम लोगों से किसी भी प्रकार की सहायता की रत्ती-भर भी आशा कदापि न कीजिए। निकलिए !

संपादक—क्षमा कीजिए, वह जो—

दीवान०—'वह जो' 'वह जो' क्या ? मैं क्या जानूँ कि पुलिस ने आपके साथी का क्या किया ?

बेचैनी०—वह जो—

दीवान०—मैंने आपसे कह दिया कि रास्ता नापिए।

संपादक—हम लोग कोई—

दीवान०—जी, आप कोई ऐसे-ही-वैसे थोड़े ही हैं। जाइए-जाइए, खद्दर-प्रचार करके दिलदर दूर कीजिए—अपना और देश का ख़ूब चंदा हज़म करने को मिलेगा।

बेचैनी०—इस समय गो—

दीवान०—मैं गोशाला में झंजी कौड़ी न दूँगा। तहसीलदार साहब, कैसी-कैसी नई तरकीबें निकाली हैं, लोगों ने रुपया कमाने की।

संपादक—विचार करने की बात है—

दीवान०—नहीं-नहीं, यहाँ प्रचार-वचार की कुछ ज़रूरत नहीं है। निगोड़ी-प्रचारिणी का मेरे सामने नाम न लीजिए; उसमें भी सब खाऊ-ही-खाऊ भरे हैं, जो आप ख़ूब खाते हैं और जब अपने पेट में जगह नहीं रहती, तो पिट्ठुओं को खिलाते हैं। मैं ख़ूब जानता हूँ। टरकिए यहाँ से।

बेचैनी०—आपने शायद हमें पहचाना नहीं।

दीवान०—जी, मैंने ख़ूब पहचान लिया है। आप

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कोई लाट साहब हैं न जो मैं आपको नहीं पहचानता हूँ।

तहसील०—आपसे हमें बात करनी होती, तो पार्क में ही न कर लेते ?

संपादक—फिर आप पछताइएगा।

दीवान०—आप क्या कोई राजनैतिक डाकू हैं, जो हमारी राज-भक्ति के कारण हमें खा जायँगे ? आप सीधी तरह से जाते हैं या बुलाऊँ पुलिस को ?

बेचैनी०—क्या दीवान बहादुर साहब आप ही हैं ?

दीवान०—(अचरज के साथ तहसीलदार से) दुष्टों ने सब पता लगा लिया है !

संपादक—आपकी पुत्री—

दीवान०—मैं मारे जूतों के चाँद हत्तरा कर दूँगा, अगर अब की बार लड़की का नाम लिया तो। (तहसीलदार से) मैं कहता हूँ, यह साला लपकुआ भी आधा सिड़ी है, जो इन्हें भीतर लिवा लाया।

बेचैनी०—मैं आपके हाथ जोड़ता हूँ—

दीवान०—बस बहुत हुआ, अब मैं आपको पुलिस के हवाले करता हूँ।

संपादक—(बेचैनीराम से) चलो, चलो, जल्दी चलो। कहीं सचमुच ही पुलिस न आ जाय। और सैकड़ों मिल जायँगी।

(बेचैनीराम कुछ कहना चाहता है, पर संपादक हाथ पकड़कर उसको बाहर खींच ले जाता है)

दीवान०—तहसीलदार साहब, आज सवेरे-ही-सवेरे न-जाने किस दुष्ट का मुँह देखा है जो—

तहसील०—अजी कुछ पूछिए मत।

दीवान०—पर मैं आपसे यह पूछता हूँ कि आखिर यह बात थी क्या जो कि इनके मन में थी।

तहसील०—तबसे इसी उधेड़-बुन में मैं भी लगा हुआ हूँ। (सोचता हुआ) मैं यह कहता हूँ कि यदि सचमुच ही ये दोनों धूर्त होते तो हम लोगों की अभी और खुशामद करते ; यों समझदारों की तरह, चले न जाते।

दीवान०—(सोचता हुआ) हो सकता है।

तहसील०—(सोचता हुआ) यदि सोचा जाय तो पार्क में भी इन्होंने हमसे कोई ऐसी बात तो कही नहीं थी, व्यर्थ ही हमने इन्हें चोर या उचक्का समझ लिया था। और, सच पूछिए, तो हमारा भी कोई दोष नहीं, दूध का जला छाछ को फूँक-फूँककर पीता है।

दीवान०—मैं कहता हूँ, चोर और उचक्कों में असली आत्माभिमान नहीं होता—दिखावटी होता है। इनमें कहीं कुछ असली की झलक तो नहीं थी ? (सोचता हुआ) एक ने तो 'पुत्री' शब्द भी कहा था जिस पर कि मैंने उसे मारा होता।

तहसील०—सचमुच कहीं वही लोग तो नहीं थे ?

दीवान०—तब तो बड़ा अनर्थ हुआ ! अबे लपकुआ ! ओ लपकुआ ! (लपकुआ आया) ज़रा जल्दी से लपक तो जा, देख तो वे लोग किधर गए। बुला ला ! बुला ला ! (लपकुआ गया) यदि चोर उचक्के न हों, तो लड़के दोनों अच्छे हैं। इतनी बुरी-भली सुनकर भी, सच पूछो तो, वे शांत बने रहे।

तहसील०—लड़के तो सचमुच अच्छे हैं, बस एक ही बात है।

दीवान०—वह क्या ?

तहसील०—देश-भक्त दीखते हैं।

दीवान०—लड़की सब सुधार लेगी।

तहसील०—लपकुआ मूर्ख उन्हें क्या लावेगा ? संभव है, उसके साथ आने में वे अपनी मान-हानि समझें। इस-लिये मैं ही जाऊँ !

दीवान०—आपने बहुत ठीक कहा। (तहसीलदार का जाना) हे भगवान, बस, तू ही है। संसार में बड़े-बड़े धोखे होते हैं ; अमृत के रूप में विष और विष के रूप में अमृत भरा पड़ा है। मनुष्य की बुद्धि कहाँ तक काम दे सकती है ? (लपकुआ का प्रवेश) क्यों बे ?

लपकुआ—सरकार वो तो चले गए ; नहीं आए।

दीवान०—तुझे मिले भी ?

लपकुआ—सरकार, (हाथ से संकेत करता हुआ) वो विधर गए और मैं इधर।

दीवान०—(घबड़ाकर) अबे तू बड़ा उल्लू है, अच्छा तो मैं ही जाता हूँ। यदि सचमुच ही ये लोग विवाह के लिये आए थे तो—(झटपट उलटे-सीधे कपड़े पहनने का यत्न करता है ; तहसीलदार के साथ दोनों का प्रवेश)

दीवान०—मैं आपसे क्षमा चाहता हूँ कि मैंने—

संपादक—(बीच ही में) अब आप हमें व्याहों में न घसीटिए, जो होना था सो हो गया।

बेचैनी०—आप बड़े हैं, सौ जूते भी मार लीजिए, तो हमारा क्या बिगड़ता है। हम तो आपके नहीं, आप तो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारे—पिता-तुल्य हैं ; नहीं-नहीं पुत्र-तुल्य, पुत्र-तुल्य, बल्कि पौत्र-तुल्य हैं हम तो आपके।

दीवान०—(तहसीलदार की ओर देखता हुआ, उन दोनों से) भला यह मैं क्यों करूँगा ? आपकी जो कुछ भी सहायता मुझसे बन पड़ेगी करूँगा।

संपादक—हमें आपसे केवल यही कहना था कि वह जो मेरे मित्र का एक विज्ञापन निकला था उसके लिये आपने हमें बुलाया था।

दीवान०—(हर्ष से उछलकर) अच्छा, वही तो मैं सोच रहा था—(तहसीलदार की ओर देखता है ; तहसीलदार गंभीर बने रहने के लिये संकेत करता है)

तहसील०—जी.....ई। तो उसके विषय में आप क्या चाहते हैं ?

संपादक—मेरे ये मित्र जो आपके सामने बैठे हैं, जहाँ तक हो सके, ये इस बात पर विचार करना चाहते हैं कि जहाँ तक हो सके आपकी कन्या से ही हो। आगे फिर जैसा हो।

दीवान०—तो आप यह बताइए—

तहसील०—(उसे रोककर) इस विषय में पहली बात तो यह है कि कन्या के विवाह की अभी हमें कोई जल्दी नहीं है—

दीवान०—जल्दी तो क्यों नहीं है—

तहसील०—(बीच में रोककर) क्योंकि हमारी कन्या सातवीं कक्षा में पढ़ रही है, और वह विवाह करना भी नहीं चाहती, उसने जन्म-भर विवाह न करने का ही प्रण-सा कर लिया है। अब वह बड़ी है, समझदार है, उसकी इच्छा के विरुद्ध कोई काम करके हम भी उसके दिल को दुखाया नहीं चाहते, पर यदि आपसे बातें पक्की हो गईं, तो संभव है, कुछ हो जाय।

दीवान०—वैसे बात तो यह है—

तहसील०—(उसे रोककर) दीवान बहादुर साहब ठीक कहते हैं कि वैसे बात तो यह है कि हमारे यहाँ अनगिनती नवयुवक इसलिये आए, पर हमें कोई जँचा ही नहीं।

संपादक—ओ हो ! अब याद आई !

दीवान०—क्या ?

संपादक—मुझे भी तो उस काम से कलक्टर साहब के यहाँ जाना है !

तहसील०—क्या मैं यह पूछने की ढिठाई कर सकता हूँ कि आपके भी भाग्य में किस शुभ काम से कलक्टर साहब बहादुर के यहाँ जाना बदा है ?

संपादक—मैंने अपने समाचार-पत्र में कुछ—

दीवान०—(घबड़ाकर) क्या आप राजद्रोही हैं ? (तहसीलदार की ओर संकेत करता है कि विवाह करना ठीक न होगा)

संपादक—जी नहीं, हिंदू-मुसलमानों के झगड़े—

दीवान०—आपको किसी के झगड़े में पड़ने से क्या मतलब ? दूसरे लोग भले ही लाठी और छुरे चलावें, आप अपने क़लम-कुल्हाड़े से क्यों किसी को चोट पहुँचावें ?

संपादक—जी, चोट-वोट नहीं, यों ही कुछ थोड़ा-सा लिख दिया था।

तहसील०—तो शीघ्र ही आप उसके लिये शोक प्रकट करके क्षमा माँग लीजिए—कहा मानिए।

दीवान०—क्योंकि यह भी तो फ़ैशन के विरुद्ध नहीं है।

संपादक—जी, मैं तो इसके लिये भी अब तैयार हूँ।

तहसील०—तैयार हैं तो बस, निश्चित रहिए। दीवान बहादुर साहब स्वयं आपको अपने साथ ले जायँगे और सब ठीक करा देंगे।

दीवान०—हाँ, इसमें क्या है ? मेरी बात को कलक्टर साहब कभी भी नहीं टाल सकते।

संपादक—(हर्ष के मारे उछलकर दीवान के पैर छूता हुआ) नदी का एक तट मैं हूँ, दूसरे कलक्टर साहब ; आप हम दोनों को मिलानेवाला पापों का पुल हैं। (तहसीलदार के पैर छूकर) आप उस पुल की ज़ंजीर।

बेचैनी०—(हर्ष से) और मैं भी प्रतिज्ञा करता हूँ कि आपकी कन्या से विवाह हो जाने पर फिर कभी भी स्वदेशी और स्वराज के झगड़े में न पड़ूँगा, और गधे से आदमी बनूँगा। मेरे मामाजी तो पहले भी यही सलाह दिया करते थे।

दीवान०—(बेचैनी० से) आप विश्वास रखिए, मेरी लड़की बड़ी सुशीला है, उसमें दैवी गुण कूट-कूटकर भरे हैं ; वह पूर्व जन्म की अप्सरा है। आपका अहोभाग्य है कि आप उससे प्रेम करते हैं। (तहसीलदार की ओर देखता है)

तहसील०—आज यहीं आपका निमंत्रण है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दोनों—इसके लिये बहुत-बहुत धन्यवाद। भला हम—

दीवान०—आइए आप तब तक हमारा मकान, उद्यान, चित्रशाला, पशुशाला आदि तो देख लीजिए। (तहसीलदार के कान में) लड़की का आधे से अधिक काम तो मैंने ही कर दिया—अर्थात् लड़के को सुधारना।

तहसील०—जी हाँ, (उन दोनों से) आइए इधर—

दोनों—हमारे अहोभाग्य हैं! (दीवान० व तहसीलदार का जाना)

संपादक—मैं तुम्हारी ओर से विवाह पक्का करने के लिये बहुत-सी रूखी-रूखी बातें करना चाहता था, परंतु पहले तो कलक्टर साहब के डर ने बुद्धि पर परदा डाल रक्खा था, और अब उनसे क्षमा माँगकर पिंड छुड़ाने की आशा के हर्ष ने मेरी बोलती बंद कर दी है। पर घबड़ाओ मत, काम वैसे ही हो जाता दीखता है; यदि न होता दीखा तो वे बातें सुना दूँगा रूखी। विश्वास रक्खो, मुझे ऐसा स्वार्थी न समझना। (दोनों हर्ष के साथ हाथ मिलाते हैं, और जाते हैं)

बदरीनाथ भट्ट

डॉक्टर

(१)

बैठे-बैठे ऊब उठे थे डॉक्टर साहब बड़ी देर से। उलट-पलट विज्ञापन भी सब देख चुके जब, वहीं मेज़ पर मुँह बिगाड़कर पटक दिया अख़बार। हाथ से धूल झाड़कर ली फिर एक किताब। खोलकर इधर-उधर से, लौट-पलटकर, उसे बंद कर, कुरसी पर से तिरछे होकर, देह उठाकर झाँके बाहर; फिर ज्यों-के-त्यों बैठ गए मस्तक कुंचित कर। नौकर जाता हुआ सामने देख अचानक बोले उससे—"कहाँ मर गया था तू अब तक? कमरा झाड़ा नहीं अरे क्यों?" ठहर, ठिठककर बोला वह आश्चर्य-चकित—"मैंने तो वह घर बड़ी देर का साफ़ कर दिया।" डॉक्टर साहब फिर भी झुँझला पड़े—"अरे तो क्या कुछ भी अब काम नहीं; क्यों यहीं खड़ा है?" सिर नीचाकर धीरे-से वह खिसक गया चुपचाप—निरुत्तर।

वहीं आठ-दस कोस दूर पर किसी नगर में, डॉक्टर के सन्निकट कुटुंबी जन के घर में था कुछ उत्सव। वहीं गई थी पत्नी प्यारी, निज घर की भी तरल-कलोत्सव-धारा सारी लेकर अपने साथ। यहाँ सूने में प्रति पल डॉक्टर का मन विमन हो रहा था—अति विह्वल।

(२)

करके हर-हर नाद बेतवा की खर धारा बड़े वेग से बही जा रही थी; तट सारा वही एक ही गान सुन रहा था निर्जन में तन्मय होकर; सांध्य-समीरण के सन-सन में गूँज रही थी गूँज उसी की। चारु चपलतर लहरावलियाँ खेल रही थीं उछल-उछलकर—क्रीड़ा में जल एक दूसरे पर उछालकर, थिरक-थिरककर थाप लगाकर असम ताल पर। डॉक्टर साहब एक स्वच्छ पत्थर पर बैठे, नदी किनारे भाव-नदी में-से थे पैठे। रेखाएँ कुछ खींच रहे थे बालू पर वह। चौंके सहसा शब्द किसी जन का सुनकर वह। सम्मुख एक 'गँवार' देखकर नाक सिकोड़ी; अरे, यहाँ भी शांति नहीं मिल सकती थोड़ी! बोले—"कह क्या काम, यहाँ तू कैसे आया?" आगंतुक ने समाचार कह उन्हें सुनाया।

आध कोस ही दूर, खेत पर, नदी-किनारे करता था वह काम; विकल तृष्णा के मारे पानी पीने गया; हाथ-मुँह जल में धोकर अंजलि उसने भरी, हुई त्यों ही दृगोचर बीच धार में देह किसी की बहती जाती; कभी डूबती और कभी ऊपर उतराती। पहले तो जब उसे अलक ही दिए दिखाई, भ्रम सिवार का हुआ, दृष्टि फिर से दौड़ाई तब निश्चय कर सका—अरे यह कोई नारी पड़ प्रवाह में बही जा रही है बेचारी! किस घर की सुख-शांति लूट कर दिया अँधेरा, हत्यारी, अब कौन पिए यह पानी तेरा? बिना हिचक वह कूद पड़ा वैसे ही धम-से!

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऊपर छींटे उड़े ; शक्ति सब अंतरतम से
संग्रह कर वह चला, काटकर वह खर धारा।
लौटा जब उस देह-सहित तब श्रम का मारा
बालू पर गिर पड़ा हाँफकर । इधर-उधर से
लोग वहाँ आ जुड़े दौड़कर खेतों पर से।
नारी थी निष्पंद, नहीं चलती थी नाड़ी।
चुआ रही थी नीर देह पर चिपकी साड़ी ;
वह भी हिलती न थी समीरण के स्पंदन से।
छिटक रही थी किंतु ज्योति-सी उसके तन से।

वैसी ही तब उसे छोड़ वह दौड़ा आया ;
बड़ी देर में पता वहाँ डॉक्टर का पाया।
पर डॉक्टर सुन सके न उससे पूरा विवरण ;
थोड़े में सब समझ, टोककर बोले तत्क्षण—
"जीती तेरे लिये अभी तक होगी क्या वह ?
जा थाने में, वहीं सुनाना सब ब्यौरा यह।"

आने का उत्साह-वेग निज खोकर सारा
लौटा वह चुपचाप, जुए में हो ज्यों हारा।
पर तुरंत ही नए दाँव रखने के बल पर
पीछे वह फिर मुड़ा, चार-छै ही पद चलकर।
बोला—"मुझको नहीं मरी-सी लगती है वह ;
सोने को हो, किंतु अभी कुछ जगती है वह।
हूँ ग़रीब मैं, किंतु भेट कुछ कर ही दूँगा ;
चलें आप, उपकार जन्म-भर मैं मानूँगा।"
"तू देगा कुछ हमें ?"—बिगड़कर डॉक्टर बोले—
"दे सकने के योग्य अरे ! पहले हो तो ले।"

एक दाँव पर लगा शेष धन अपना सारा,
धीरे से हो गया ओट में वह बेचारा।

(३)

टेबुल पर था लैंप, रोशनी उसकी तीखी
आँखों को हो रही ज्ञात थी शत्रु-सरीखी।
डॉक्टर ने निज ओर एक अख़बार लगाया—
अपने ऊपर स्वयं डालकर तम की छाया !
इसी समय वह तिमिर अचानक दुगुना करके
नौकर आया वहाँ, कक्ष क्रंदन से भरके।
डॉक्टर घबरा उठे—"हुआ रे क्या, कुछ कह तो?"
"सर्वनाश हो गया, कहूँ क्या!"—कहकर वह तो
और अधिक रो उठा, किंतु पूछा फिर-फिर जब,
बता सका वह हाल पीटकर अपना सिर तब—
"डूब मालकिन गईं, नाव से सहसा गिरकर !"
वज्रपात-सा हुआ अचानक ही डॉक्टर पर।
"अरी निष्ठुरे, किया मुझी से यह छल कैसा ?
खेल-खेल में दिया मुझी को धोका ऐसा !
छद्म-वेश वह कहाँ समझ पाता मैं तेरा,
तो तुझ पर ही घनाघात होता क्यों मेरा ?"

निर्दयता से पीट उठे विक्षिप्त हृदय वह ;
दौड़ पड़े झट नदी-ओर को उसी समय वह।
कहीं अभी मिल जाय वहीं उसका जीवित शव !
दब पैरों से पतित पत्र कर उठे करुण रव !

सियारामशरण गुप्त

आधुनिक अफ़ग़ानिस्तान

गत १० वर्षों में अनेक देशों के सामाजिक और राजनीतिक ढाँचे में आश्चर्यजनक परिवर्तन हुए हैं। संसार की प्रगतिशील वायु के झोंकों से आख़िर मुसलिम देश भी अछूते न बच सके। बहुत-से देशों की तो एकदम काया ही पलट गई। टर्की में १,३०० वर्ष की पुरानी ख़िलाफ़त का ख़ातमा कर दिया गया, और उन दक़ियानूसी विचारों और संस्कारों का सुदृढ़ दुर्ग ढा दिया गया, जिससे उस देश की आधार-शिला में दीमक लग रही थी, और वह पनपने नहीं पाता था। आज तो टर्की की भव्य भूमि पर सर्वत्र प्रजा-सत्ता के सूर्य की सुनहली तेजोमय रश्मियाँ छिटक रही हैं। ख़लीफ़ा के महल और उसकी ख़िलाफ़ती गद्दी केवल दूर से देखने की चीज़ें रह गई हैं। मामूली-से-मामूली आदमी भी वहाँ के बड़े-से-बड़े आदमी के कंधे से कंधा मिलाकर चल सकता है, अपनी और अपने देश की हीन अवस्था पर विचार करने की उसे पूरी आज़ादी है। टर्की का शासन-विधान किसी ख़ास दीन के दायरे में महदूद नहीं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वहाँ की वर्तमान अदालतों के सामने मुसलमान, ईसाई, हिंदू, यहूदी आदि सब बराबर हैं। उनके भाग्य का फ़ैसला करने में किसी जाति-विशेष का लिहाज़ नहीं किया जाता। मौलवी-मुल्ला ख़िलाफ़त और दीन के नाम पर शासन के कामों में टाँग नहीं अड़ाने पाते। हर जगह, हर जाति के लोगों में जीवन की ज्योति जगती हुई दिखाई देती है। इन्हीं सब बातों को देखकर कहना पड़ता है कि देखते-देखते टर्की की एकदम काया ही पलट गई।

इधर ८-९ वर्षों से अफ़ग़ानिस्तान में भी परिवर्तन हो रहे हैं। हर दिशा में सुधारों की धूम है। ऐसा मालूम पड़ता है कि टर्की की तरह अफ़ग़ानिस्तान भी संसार के पैर पर पैर रखकर चलना चाहता है, और दुनिया की किसी भी अच्छी बात में वह पीछे नहीं रहना चाहता। यहाँ हमें अफ़ग़ानिस्तान की वर्तमान अवस्था पर प्रकाश डालना है, जिससे वहाँ के संबंध में बहुत-सी आवश्यक और ज्ञातव्य बातों का पता चलेगा।

अफ़ग़ानिस्तान के शासक अभी पिछले कुछ दिनों तक अमीर के नाम से पुकारे जाते रहे हैं। परंतु हाल ही में वहाँ के वर्तमान शासक अमानुल्लाख़ाँ ने 'अमीर' की उपाधि को 'बादशाह' के रूप में परिणत कर लिया है। अतः अब वह बादशाह के नाम से पुकारे जाते हैं। परंतु इस लेख में हमने उन्हें अमीर ही के नाम से संबोधित किया है।

वर्तमान शासक

सन् १९१९ में अफ़ग़ानिस्तान के शासन की बागडोर अमीर अमानुल्लाख़ाँ के हाथ में आई। तब से वहाँ की दशा बहुत कुछ सुधर गई है। वर्तमान शासक अमानुल्लाख़ाँ बहुत उन्नत विचारों के आदमी हैं। उनकी अवस्था इस समय ३४ वर्ष की है। अपनी मातृभाषा फ़ारसी के अलावा वह अँगरेज़ी और फ़्रेंच भी जानते हैं। अमानुल्लाख़ाँ भूतपूर्व अमीर हबीबुल्लाख़ाँ के तीसरे लड़के हैं। उनके चचा नसरुल्लाख़ाँ के बाद उन्हीं को गद्दी मिली है। वह अपने देश को हर तरह से उन्नत बनाने में जी-जान से कोशिश कर रहे हैं। उन्हें यह अच्छी तरह मालूम है कि यदि अपने देश को समय की रफ़्तार के साथ आगे बढ़ाकर दुनिया के अन्य स्वाधीन देशों की पंक्ति में खड़ा नहीं किया, तो अफ़ग़ानिस्तान की नवजात स्वतंत्रता अधिक दिनों तक सुरक्षित नहीं रह सकती। इसी कारण उन्होंने अपनी सल्तनत के हर महकमे में सुधार किया है। सुधार के कामों में वह विदेशियों से सलाह लेना बुरा नहीं समझते। अमीर के गद्दी पर बैठने के समय अफ़ग़ानिस्तान में पाश्चात्य लोगों का नाम भी नहीं था, परंतु अब वहाँ उनकी संख्या दिन-दिन बढ़ रही है। सन् १९२२ से उन्होंने अनियंत्रित शासन-विधान का अंत कर प्रजा-सत्तात्मक शासन-प्रणाली की ओर क़दम बढ़ाया है। साथ ही उन्होंने ग़ैर-मुसलिम जातियों के संबंध में सहिष्णुता और सहानुभूति की नीति अख़्तियार कर रक्खी है। बाहर के आदमी दूसरों की आज़ादी में बाधा न डालकर वहाँ रह सकते हैं। उन्हें कर देना पड़ता है। परंतु उन्हें अपना मज़हब फैलाने की इजाज़त नहीं है। पाश्चात्य मिशनरी प्रचारक पहले इस देश में नहीं आने पाते थे; किंतु अब उन्हें दवा-दारू के काम से इस देश में घुसने की इजाज़त मिल गई है।

शासन-व्यवस्था

शासन के लिहाज़ से अफ़ग़ानिस्तान पाँच मुख्य सूबों में बटा हुआ है। काबुल, कंधार, हेरात, मज़ारेशरीफ़, और क़तग़नबदकशाँ मुख्य सूबों के नाम हैं। इनके अलावा जलालाबाद, ख़ोस्त, फरेह और मैमेना नाम के चार छोटे सूबे हैं। प्रत्येक सूबा एक गवर्नर के अधिकार में है। युद्ध, शिक्षा, व्यापार, न्याय, अर्थ, सार्वजनिक रक्षा आदि विभिन्न विभाग अलग-अलग मिनिस्टरों के नियंत्रण में हैं। मंत्रिमंडल के प्रेसिडेंट स्वयं अमीर हैं। दस्तूर शाही (स्टेट एसेंबली) और ख़रवानीन मुल्की (लेजिस्लेटिव एसेंबली) नाम की दो व्यवस्थापिका सभाएँ हैं। शरअ क़ानून (क़ुरानी कानून) ही अफ़ग़ान का क़ानून है। झगड़े फ़ैसल करने के लिये छोटी और बड़ी, दो तरह की अदालतें हैं। छोटी अदालतों द्वारा फ़ैसल किए हुए मुक़दमों की अपील बड़ी अदालतों में होती है। ये अदालतें देश-भर में हैं। काबुल में हाईकोर्ट है, जो सल्तनत-भर में न्याय की मुख्य अदालत है। मुग़ल तथा अन्य पुराने बादशाहों की तरह, सप्ताह में एक दिन, अमीर ख़ुद प्रजा के छोटे-से-छोटे आदमियों की शिकायतें सुनते हैं। मुक़दमों की कार्रवाई बहुत संक्षिप्त रूप में होती है, और फ़ैसले के बाद तुरंत ही सज़ा दे दी जाती है। एक प्रसिद्ध फ़रासीसी ग्रंथकार—मोशिए रेमाँ फ़्यूरों (M. Raymond Furon)—गत दो वर्ष से अफ़ग़ानिस्तान में रहते हैं। उनका कहना है कि एक मामले में एक अभियुक्त तीसरे पहर ४

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बजे गिरफ़्तार किया गया, ६ बजे उस पर मुक़दमा चलाया गया, और तुरंत ही फाँसी दे दी गई।

फ़ौजी ताक़त

अफ़ग़ानिस्तान की वार्षिक आमदनी ५ करोड़ रुपए है। यह आमदनी मालगुज़ारी और आयात-निर्यात करों से होती है। बढ़ते हुए सरकारी ख़र्च को देखते यह आमदनी काफ़ी नहीं है। परंतु अमीर महोदय विदेशी राष्ट्रों से क़र्ज़ लेने में हिचकते हैं। उन्हें डर है कि यदि बाहरी राष्ट्रों से क़र्ज़ लिया, तो वे अफ़ग़ानिस्तान में हर तरह की रिआयतें चाहेंगे, जिससे इस देश की स्वतंत्रता में बाधा पड़ेगी। प्रत्येक २० वर्ष के युवक को अफ़ग़ानिस्तान की वर्तमान सेना में भर्ती होकर दो वर्ष तक काम करना पड़ता है। गद्दी पर बैठते ही अमीर ने अपनी सेना को पुनस्संगठित करने के लिये तुर्की अफ़सरों को नियुक्त किया था। किंतु अब तुर्की अफ़सरों की जगह जर्मन अफ़सर नियुक्त किए गए हैं। तमाम बड़े-बड़े क़स्बों में सैनिक स्कूल खोल दिए गए हैं। युवराज तथा कुछ अफ़सरों के लड़के, सैनिक-शिक्षा प्राप्त करने के लिये, फ़्रांस भेजे गए हैं। युद्ध के समय अमीर महोदय अपनी वर्तमान सेना के अलावा सरहदी आदमियों से भी मदद लेते हैं। आजकल हवाई ताक़त (Air Force) भी ख़ूब बढ़ाई जा रही है। इस समय अफ़ग़ानिस्तान के पास १२ हवाई जहाज़ हैं। ये जहाज़ रूस की सोवियट सरकार से ख़रीदे गए हैं। अफ़ग़ानी हवाई ताक़त का ढाँचा रूसी और जर्मन ढंग का है। कुछ जर्मन अफ़सरों ने काबुल में हवाई जहाज़ का काम सिखाने के लिये एक स्कूल खोल रक्खा है। कुछ अफ़ग़ानी हवाई जहाज़ का काम सीखने के लिये मास्को भेजे गए हैं।

विदेशों के साथ व्यापार

अफ़ग़ानिस्तान का व्यापारिक संबंध मुख्यतः रूस और हिंदोस्तान से है। सन् १९२२ में अँगरेज़ों और अफ़ग़ानों के बीच एक व्यापारिक संधि हो चुकी है। हिंदोस्तान से अफ़ग़ानिस्तान रेशम, रुई, चाय, पेट्रोल, काग़ज़, मोमबत्ती, लोहा, ताँबा, चमड़ा और कपड़ा सीने की मशीनें लेता है, और घोड़े, ग़लीचे, ऊन, भेड़ की खाल, मेवा आदि चीज़ें देता है। सन् १९२१ में अफ़ग़ानिस्तान के साथ रूस की व्यापारिक संधि हुई। रूस से वह चमड़ा और शक्कर मँगाता तथा फल, पोस्तीन आदि चीज़ें उसे भेजता है। अँगरेज़ी राजदूत जलालाबाद और कंधार में रहता है, और रूसी राजदूत हेरात और मज़ारे-शरीफ़ में।

उद्योग-धंधे

अभी तक अफ़ग़ानिस्तान में उद्योग-धंधों का विस्तार अधिक नहीं है। हाँ, हथियारों के छोटे-छोटे कारख़ाने देश-भर में फैले हुए हैं। उनमें तलवार, बर्छी, भाले और पिस्तौलें तैयार होती हैं। बड़ी-बड़ी बंदूक़ें जर्मनी से मँगाई जाती हैं। हथौड़े तथा लोहे की और चीज़ें भी इस देश में बनाई जाती हैं। परंतु बढ़िया नमूने की चीज़ें जर्मनी और जापान से ही मँगाई जाती हैं। अमीर साहब घरेलू उद्योग-धंधों को प्रोत्साहन देने में ख़ूब दिलचस्पी लेते हैं। वह केवल अफ़ग़ानिस्तान ही के बने हुए कपड़े और जूते इस्तेमाल करते हैं। उन्होंने आज्ञा दे रक्खी है कि सब सरकारी नौकर भी देसी कपड़ों और देसी जूतों का इस्तेमाल किया करें। अमीर साहब ने धार्मिक पुस्तकें और लड़ाई के सामान को छोड़कर समस्त विदेशी वस्तुओं पर भारी कर लगा रक्खे हैं। कुछ विदेशी माल पर तो दो सौ फ़ी सदी तक कर लगता है। पेशावर, पारचिनार और क्वेटा में अफ़ग़ान व्यापार की एजेंसियाँ हैं। अफ़ग़ान सरकार की ओर से योरप और एशिया में इस बात का अध्ययन करने के लिये कि अफ़ग़ान व्यापार किन-किन साधनों से उन्नत बनाया जा सकता है, व्यापारिक एजेंट रक्खे गए हैं। अफ़ग़ानिस्तान में बैंक नहीं हैं, इसलिये कि वे ब्याज लेंगे। ब्याज लेना क़ुरान के आदेशों के विरुद्ध है। व्यापार और उद्योग-धंधों की शिक्षा के लिये वहाँ स्कूल नहीं हैं। परंतु सरकारी कारख़ाने सर्वसाधारण के लिये खुले हुए हैं, जिससे वे उनमें जाकर चीज़ों का बनाना देख सकते हैं।

इस देश के खनिज पदार्थों की ओर अभी तक विशेष ध्यान नहीं दिया गया। यहाँ की खानों में तेल, सोना, लोहा, कोयला, सीसा आदि खनिज पदार्थ पाए जाते हैं।

राजदूत और उसके दफ़्तर के मुलाज़िमों के अतिरिक्त यहाँ अधिक अँगरेज़ नहीं हैं। काबुल में एक जर्मन व्यापारिक कंपनी है। वह छोटे-छोटे ट्रैक्ट निकालकर ख़ूब विज्ञापनबाज़ी करती है। उसके ट्रैक्टों में प्रकाशित किया जाता है कि जर्मनी इसलाम का सच्चा मित्र है, उसके कल-पुर्ज़े दुनिया-भर में सबसे अच्छे होते हैं। इस प्रकार के विज्ञापन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फ़ारसी में छपे होते और अफ़ग़ान लोगों में मुफ़्त बाँटे जाते हैं। उक्त कंपनी जर्मनी से सीमेंट, कल-पुर्ज़े और रँगाई का सामान मँगाती और चमड़ा ख़रीदती है। अफ़ग़ानिस्तान में आजकल बहुत-से जर्मन इंजीनियर, डॉक्टर और कारीगर हैं। ३ मार्च, सन् १९२६ को बर्लिन में जर्मनी और अफ़ग़ानिस्तान के बीच पारस्परिक मित्रता बनाए रखने के लिये एक संधि हो चुकी है, और अब एक आर्थिक संधि शीघ्र ही और होनेवाली है।

अफ़ग़ानिस्तान में बहुत-से रूसी बिजली के कारीगर, ओवरसियर और अख़बारनवीस हैं, जो अपने पेशे का काम करने के अलावा अँगरेज़ों के ख़िलाफ़ वायु-मंडल तैयार करने में लगे हुए हैं। रूस ने अपनी रेलवे का विस्तार रूसी तुर्किस्तान में, अफ़ग़ान सरहद पर तरमेज़ तक, कर लिया है। सन् १९२१ में जो रूसी-अफ़ग़ान संधि हुई थी, उसे बरक़रार रखते हुए ३१ अगस्त, १९२६ को पधना में एक दूसरी संधि की गई। उन दोनों संधियों में तय हुआ कि दोनों देश परस्पर मित्र बनकर रहेंगे, किसी तीसरी शक्ति से युद्ध छिड़ने पर एक दूसरे के ख़िलाफ़ उसकी सहायता और एक दूसरे के भीतरी मामलों में कोई हस्तक्षेप न करेंगे।

अनेक फ़रासीसी शिक्षा-विभाग में काम करते हैं। फ़्रांस इस देश को मोटरकार, हथियार, बिजली के कल-पुर्ज़े और बिना तार की तार-बर्की का सामान भेजता और यहाँ से खाल, ऊन, ग़लीचा आदि मँगाता है। इटली का भी अफ़ग़ानिस्तान के साथ व्यापारिक संबंध है। अफ़ग़ान-सरकार ने एक इटालियन रेशम का विशेषज्ञ रेशम के कीड़े पालने और रेशम पैदा करने के लिये रक्खा है। कुछ तुर्की अफ़सर जंगलात और सिंचाई के महकमों में काम करने के लिये नियुक्त किए गए हैं।

इस देश में रेलें नहीं हैं। रेल निकालने की दो स्कीमें विचाराधीन हैं। पहली स्कीम में मेरव, हेरात और चमन के दर्म्यान रेल जारी किए जाने की बात है, और दूसरी स्कीम में बलख़, काबुल और पेशावर के बीच रेल जारी किए जाने की बात उठाई जा रही है। सन् १९२२ में एक अमेरिकन ने इन स्कीमों को अमल में लाने का प्रयत्न किया था; परंतु, कुछ कठिनाइयों के कारण, वह काम शुरू नहीं कर सका। कुछ रूसी और जर्मन लोग इन स्कीमों के मुताबिक़ काम शुरू करने की बात सोच रहे हैं। इस देश में अच्छी सड़कें भी बहुत कम हैं। अधिकांश माल ऊँटों पर लाया और ले जाया जाता है। अब पुरानी सड़कों की मरम्मत कराने का आयोजन किया जा रहा है। उत्तर से दक्षिण को एक नई सड़क शीघ्र ही निकलनेवाली है।

स्वातंत्र्य-दिवस

अफ़ग़ानों को अपनी स्वतंत्रता पर बड़ा गर्व है। वे प्रति वर्ष स्वातंत्र्य-दिवस बड़ी धूमधाम से मनाते हैं। यह दिवस जुलाई के अंत में पड़ता है। स्वातंत्र्य-उत्सव लगभग एक सप्ताह में समाप्त होता है। सन् १९१९ में अँगरेज़ों और अफ़ग़ानों के बीच एक भारी युद्ध हुआ था। यह युद्ध सचमुच अफ़ग़ानों का स्वातंत्र्य-युद्ध था। उक्त उत्सव के पहले दिन अमीर महोदय इस स्वातंत्र्य-युद्ध के रण-बाँकुरे योद्धाओं के बीच एक भाषण देकर अपने अफ़ग़ान-वीरों की प्रशंसा करते हैं, और उनके सामने एक महान् उज्ज्वल भविष्य का चित्र खींचते हैं। उत्सव के अन्य दिनों में हाथी-दौड़, घुड़दौड़, ख़र-दौड़, कुश्ती, तलवार चलाना, आतिशबाज़ी आदि के खेल होते हैं। इन खेलों में अधिक-से-अधिक आदमी भाग लेते हैं। बाहरी लोगों का ख़याल है कि वर्तमान अमीर मुसलमानों के ख़लीफ़ा बनना चाहते हैं। परंतु अमीर का ख़याल है कि ऐसा करने से अफ़ग़ानिस्तान के शिया और सुन्नी लोगों में झगड़ा हो जायगा, इसलिये उन्होंने ख़लीफ़ा बन जाने का इरादा नहीं किया। अमीर साहब इसलाम धर्म के कट्टर पोषक और प्रचारक (Pan-Islamist) हैं। वह नहीं चाहते कि इसलामी ऐक्य पश्चिमी राष्ट्रों द्वारा छिन्न-भिन्न कर दिया जाय। उन्होंने टर्किश-अफ़ग़ान संधि के समय टर्की को इसलाम का 'आदर्श वीर' कहकर पुकारा था। इस संधि पर सन् १९२१ में दस्तख़त हुए थे। सन् १९२२ में ग्रीस के ऊपर टर्की की विजय पर संसार के अन्य मुसलमानों के साथ अमीर महोदय ने भी बड़ा हर्ष मनाया था। अमीर साहब एशियाई देशों की उन्नति के हामी हैं। टर्किश-अफ़ग़ान संधि में दोनों पक्षों की ओर से एक शर्त यह भी स्वीकृत हुई थी कि विदेशियों के पंजे से एशियाई देशों को स्वतंत्र करने का भरसक प्रयत्न करेंगे।

शिक्षा-विस्तार

अमीर अमानुल्लाख़ाँ ने अपने देश की अपढ़ जनता में आधुनिक शिक्षा का प्रचार करने की उपयोगिता का अच्छी तरह अनुभव कर लिया है। इसलिये अधिकाधिक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लोगों में शिक्षा-विस्तार करनें का वह भरसक प्रयत्न कर रहे हैं। हर जगह विज्ञापन लगाकर आम लोगों से अनुरोध किया गया है कि वे अपने लड़कों को स्कूल भेजें। सरकारी नौकर अपने लड़कों को स्कूल में भेजने के लिये बाध्य हैं। जो लोग ऐसा नहीं करते, उन पर जुर्माना होता है, और यहाँ तक कि नौकरी से भी बरख़ास्त कर दिए जाते हैं। देश-भर में प्राथमिक और माध्यमिक शिक्षा के लिये स्कूल खुले हुए हैं। काबुल में तीन कॉलेज हैं। पुराना हबीबुल्ला-कॉलेज भूतपूर्व अमीर हबीबुल्ला ने स्थापित किया था, और शेष दो कॉलेज वर्तमान अमीर ने खुलवाए हैं। सरकारी मुलाज़िमों के लिये भी स्कूल खोले गए हैं। उनमें और लोगों के अलावा काबुल के गवर्नर भी शासन-संबंधी बातों पर भाषण देते हैं। ऊँची शिक्षा के लिये विद्यार्थी प्रति वर्ष फ़्रांस और जर्मनी भेजे जाते हैं। स्त्री-शिक्षा के लिये भी उद्योग हो रहा है। उस कन्या-पाठशाला में, जिसे अमीर की माता ने स्थापित किया था, आजकल २,००० लड़कियाँ पढ़ती हैं। अमीर इस बात के पक्ष में हैं कि लड़कियों को अपना पति स्वयं चुनने दिया जाय।

अन्य आवश्यक सुधार

अफ़ग़ानिस्तान में इस समय और भी बहुत-सी नई-नई बातें प्रचलित की जा रही हैं। स्त्री और पुरुषों के लिये अस्पताल खुले हुए हैं। किसानी के काम को प्रोत्साहन देने के लिये आधुनिक ढंग की कृषि-शालाएँ खुली हुई हैं। अफ़ग़ान-सरकार कला-कौशल की ओर भी विशेष ध्यान दे रही है। प्रायः सभी बड़े-बड़े शहरों में कला-कौशल की शिक्षा के लिये स्कूल खोले गए हैं। काबुल में एक अजायबघर है। काबुल और पेशावर के बीच तार भी लग गया है, और प्रायः सभी बड़े-बड़े क़स्बों में टेलीफ़ोन लगा हुआ है। अभी तक विदेशों से अफ़ग़ानिस्तान को सीधी डाक नहीं आती। विदेशी डाक पहले पेशावर आती और वहाँ से भारतीय डाक-विभाग द्वारा अफ़ग़ान-सरहद पर भेज दी जाती है। काबुल के शाही महलों तथा कुछ अधिकारियों के महलों में बिजली की रोशनी लगी हुई है। वहाँ तैमूरशाह के स्तंभ के पासवाले बाग़ में लोगों को सिनेमा देखने का भी सुभीता है। अख़बारों पर सरकारी नियंत्रण है, तो भी उनकी संख्या बढ़ रही है। 'अमानी अफ़ग़ान' और 'इत्तिहादे मशरक़ी' नाम के दो सरकारी अख़बार निकलते हैं। सिक्कों और नाप-तौल की प्रणाली में भी परिवर्तन हो रहा है। नई राजधानी का नक़्शा एक भवन-निर्माण-कला-विशारद फ़रासीसी—मि० गोडार्ड—ने बनाया है। यह शहर बिलकुल पाश्चात्य ढंग का होगा, जिसमें चौड़ी सड़कें, पार्क और बड़ी-बड़ी शानदार इमारतें होंगी।

मुल्लापन का ज़ोर

इस देश में मुल्लापन का ज़ोर है। यहाँ के मौलवी-मुल्ला वैसे ही दक़ियानूसी विचारों के हैं, जैसे कि संसार के अन्य देशों में। वे अमीर अमानुल्लाख़ाँ के नए परिवर्तनकारी विचारों के ख़िलाफ़ साधारण आदमियों को उभाड़ते हैं। परंतु वे बेचारे कुछ कर-धर नहीं पाते। इसमें शक नहीं कि वर्तमान अमीर इसलाम के कट्टर पक्षपाती हैं; किंतु तो भी, वह मुल्लापन से समाज और देश का अहित होता नहीं देख सकते, इसलिये उसे दबा देनें के लिये सदा सतर्क रहते हैं। दक़ियानूसी विचारों के मौलवी-मुल्ला दीन की रक्षा के नाम पर शासन के कामों में टाँग अड़ाने का प्रयत्न करते हैं, और लोगों को उत्तेजित भी करते हैं; किंतु अमीर के सामने उनकी एक नहीं चलनें पाती। अफ़ग़ानिस्तान के शरई क़ानून से मुल्लापन को और भी प्रोत्साहन मिलता है। हमारा ख़याल है कि शासन-व्यवस्था और क़ानून किसी ख़ास दीन के दायरे में परिमित नहीं होने चाहिए। वे तो, समय की ज़रूरतों के अनुसार, प्रजा के सब धर्मों के लोगों के हित की दृष्टि से, प्रजा-सत्ता के सिद्धांतों की सुदृढ़ नींव पर आधारित होने चाहिए। तभी शासन-विधान लोकोपयोगी हो सकेगा, अन्यथा नहीं। वर्तमान अमीर के उन्नतिशील विचारों को देखकर यह आशा होती है कि अफ़ग़ानिस्तान की शासन-प्रणाली में अभी यथोचित परिवर्तन होगा, जिससे वहाँ का शासन दिन-दिन लोकप्रिय बनता जायगा। ❀

सुरेंद्र शर्मा

---

* अफ़ग़ानिस्तान के बादशाह अमीर अमानुल्लाख़ाँ ९ दिसंबर को इस देश में, ब्रिटिश सरकार के अतिथि होकर, पदार्पण कर रहे हैं। अतः उनके और उनके देश के संबंध में जानकारी हासिल करने को सुधा के पाठक उत्सुक होंगे। उनकी इसी उत्सुकता की निवृत्ति के लिये ही यह सामयिक लेख हम दे रहे हैं। जब तक यह संख्या प्रकाशित होगी, तब तक अमीर अमानुल्लाख़ाँ योरप के लिये रवाना हो चुके होंगे।—सुधा-संपादक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीवीर-तत्त्व-प्रकाशक मंडल

त जनवरी-महीने में मैं एक मित्र के पुत्र की बारात में शिवपुरी (ग्वालियर) गया। शिवपुरी महाराजा सिंधिया का ग्रीष्म-ऋतु का निवास-स्थान है। यहाँ पर महाराजा साहब ने प्रचुर धन-व्यय करके जंगल में मंगल कर दिया है—एक बहु-विस्तृत जंगल को रमणीय पार्क में परिवर्तित कर दिया है, और कृत्रिम बाँधों के द्वारा जल-राशि को जलाशय, झरने तथा मंदगामिनी नदी के रूप में प्रवाहित किया है। यहाँ पर विविध प्रकार की सुंदर नावें, दर्शनीय स्टीमर, बोट तथा डोंगियाँ दिखाई देती हैं। पार्क के भीतर चारों तरफ़ अच्छी सुंदर सड़कें हैं। उचित स्थानों पर सुसज्जित बँगले और कोठियाँ शोभायमान हैं।

महाराजा साहब की माताजी की स्मृति में एक विशाल मंदिर बना है, जिसमें उनकी शांतिमयी मूर्ति स्थापित है। इसकी उसी प्रकार पूजा और मानता होती है, जैसे देव-मूर्ति की। यह माता के प्रति पुत्र का जीता-जागता प्रेम और सम्मान का प्रमाण है।

महाराजा माधोजीराय सिंधिया, जिनकी अकालमृत्यु ने इस दिव्य स्थान को वैधव्य-रूप दे दिया, माता के मंदिर में सदैव जाकर सविनय और श्रद्धा-पूर्ण पूजा करते थे। इसी मंदिर के सामने आपकी स्मृति में भी एक विशाल और दिव्य मंदिर बन रहा है, जिसकी लागत १०-१२ लाख रुपयों की होगी। भारतवर्ष में मूर्ति-पूजा कब और कैसे चली, इस प्रश्न के उत्तराभिलाषी पुरुष इस स्थान पर आकर स्वयं देख लें।

शिवपुरी में राज-महल भी बड़े ठाट का है, और यहाँ पर कचहरियों तथा अनेक मनोविनोद के स्थानों की इमारतें बड़ी शानदार हैं।

शिवपुरी रेलवे-स्टेशन के निकट एक अतीव सुंदर और दिव्य जैन-संस्था है, जिसका विस्तृत वर्णन इस लेख का विषय है।

इस संस्था का नाम श्रीवीर-तत्त्व-प्रकाशक मंडल है। इसका अस्तित्व सात वर्ष से है। इसके जन्मदाता स्वर्गीय शास्त्र-विशारद, जैनाचार्य श्रीविजयधर्मजी सूरि हैं। इसका उद्देश्य संस्कृत के धुरंधर विद्वान्, त्यागी, सच्चरित्रशाली, उच्चाशय तथा धर्म-परायण उपदेशक और संचालक उत्पन्न करना है। पहले यह संस्था बंबई में थी, इसके पश्चात् बनारस चली गई। वहाँ से आगरे आई,

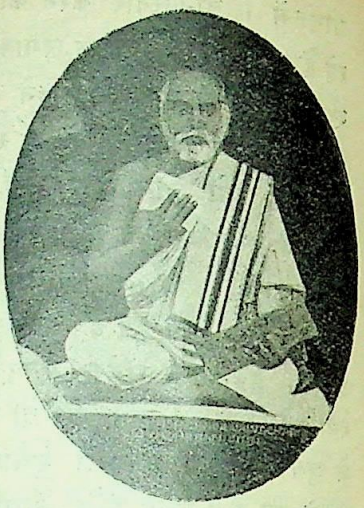

पूज्यपाद श्रीधर्मविजयजी सूरि

और अब तीन वर्षों से शिवपुरी में है। यह संस्था जैन-समाज की सहायता से ही स्थापित हुई है, और प्रधानतः जैनों की सहायता से चल रही है, इसलिये यह जैन-संस्था ही कही जाती है। लेकिन इसमें अन्य जातियों के विद्यार्थी भी अल्प संख्या में हैं। इस समय इसमें ४५ विद्यार्थी हैं। शिक्षा-क्रम से ६ कक्षाएँ रक्खी गई हैं—६ कक्षाएँ विद्यालय की, ३ महाविद्यालय की। विद्यालय-विभाग में संस्कृत, अँगरेज़ी, धार्मिक शिक्षा, गणित, हिंदी आदि विषय हैं, और महाविद्यालय-विभाग में संस्कृत और अँगरेज़ी। शारीरिक व्यायाम दोनों विभागों में आवश्यक है। चरित्र-सुधार मुख्य विषय है। चार अध्यापक वैतनिक हैं। दो-एक इसी संस्था के उत्तीर्ण विद्यार्थी और कई जैन-साधु, जो यहाँ रहते हैं, इस कार्य में दत्तचित्त होकर सहायता करते हैं। जैन-साधुओं के साथ रहने से विद्यार्थियों के चरित्र पर बड़ा प्रभाव पड़ता है।

पाठशाला के साथ-ही-साथ बोर्डिंग हाउस भी है, जिसमें विद्यार्थियों का रहन-सहन, खान-पान प्राचीन गुरुकुल-पद्धति के अनुसार है, और एक प्राचीन आदर्श की याद दिलाता है। शिक्षण में तथा अन्य विषयों में भी प्राचीन और नवीन आदर्शों का मिश्रण है।

विद्यार्थियों को खान-पान, कपड़े-पुस्तक आदि इसी संस्था की ओर से दिए जाते हैं। इस संबंध में मासिक ख़र्च दस-ग्यारह हज़ार रुपए के क़रीब है। स्थान रमणीय है तथा हवा-पानी उत्तम है, इसलिये विद्यार्थियों की तंदुरुस्ती अच्छी रहती है। देसी खेलों द्वारा इनसे पूरी कसरत कराई जाती है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विद्यार्थियों की व्यवस्था के लिये विद्यार्थियों में से ही ७ नियंता निश्चित किए गए हैं। इनमें से प्रत्येक को छः-छः सात-सात विद्यार्थी सुपुर्द किए गए हैं। उन विद्यार्थियों के कपड़ों तथा अन्यान्य बातों का ख़्याल ये ही नियंता रखते हैं। यदि कोई विशेष आवश्यकता हो, तो नियंता सुपरिंटेंडेंट को सूचित करे। विद्यार्थियों को स्वावलंबी बनाने की पूरी चेष्टा की जाती है। संस्था के मंदिर की सफ़ाई, देव-मंदिर तथा गुरु-मंदिर की सफ़ाई, शाक लाना आदि बहुत-से काम विद्यार्थी स्वयं करते हैं। जब रसोइया नहीं आता, तो वे अपनी रसोई भी बना लेते हैं। वे स्वयं-पाक के आदी हो गए हैं।

इन्हें प्रति रविवार को वक्तृता-संबंधी शिक्षा भी दी जाती है। यह कार्य प्रसिद्ध वक्ता श्रीमुनि विद्याविजयजी ने अपने हाथ में लिया है। ४-५ विद्यार्थी तो इस विषय में अच्छी तरक्की कर गए हैं।

ये विद्यार्थी 'धर्म-पताक'-नामक एक हस्त-लिखित मासिक पत्र भी निकालते हैं, जिसमें इनके हिंदी, गुजराती, संस्कृत आदि में लेख रहते हैं। इस प्रकार इनकी लेखन-शक्ति का विकास होता है।

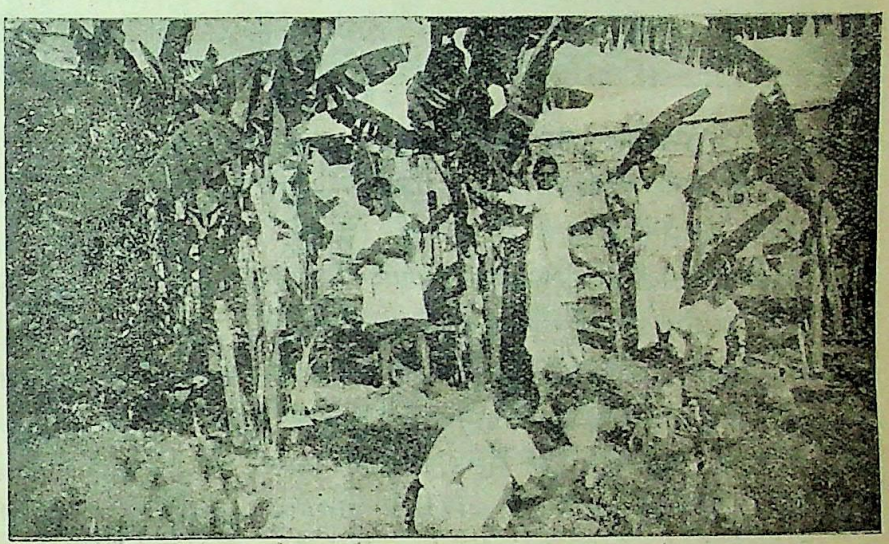

वीर-जैन-तत्त्व-मंडल का बाग़, जिसमें छात्र काम कर रहे

विद्यार्थी केवल स्थानीय ही नहीं, बल्कि बड़ी दूर-दूर से आते हैं। बहुत-से विद्यार्थी तो गुजरात-प्रांत से आए हुए हैं।

अभी दो वर्षों से इस संस्था में कलकत्ता-विश्वविद्यालय की संस्कृत परीक्षाएँ भी दिलवाई जाती हैं, गत वर्ष ९ विद्यार्थियों में से ८ न्याय-व्याकरण की परीक्षा में उत्तीर्ण हुए थे। इस साल इस परीक्षा के लिये १७-१८ विद्यार्थी जानेवाले हैं। इस संस्था के साथ एक अच्छा पुस्तकालय भी है। अध्यापक और विद्यार्थी इससे अच्छा लाभ उठाते हैं। इसके सिवा संस्था के हाते में एक सुंदर वाटिका है; जो हरी-भरी और फूली-फली रहती है। इसमें विद्यार्थी उद्यान-संबंधी कला की शिक्षा भी प्राप्त कर लेते हैं।

इस संस्था की व्यवस्था दो कमेटियों द्वारा होती है। एक कमेटी शिवपुरी में है, जिसके सदस्य कुछ विद्वान् राज-अफ़सर हैं और कुछ नगर के गृहस्थ सज्जन। दूसरी कमेटी बंबई में एडवाइज़री बोर्ड के नाम से है।

इस संस्था को ग्वालियर-राज्य से भी समय-समय पर सहायता मिलती रहती है। गत वर्ष संस्था को राज्य की ओर से २,०००) का दान दिया गया था। संस्था के बोर्डिंग हाउस के लिये ज़मीन भी अभी हाल में दी गई है। इससे स्पष्ट है कि इस ओर राज्य की दृष्टि अच्छी है।

इस संस्था के स्थापक श्रीविजयधर्मजी सूरि थे, जैसा कि ऊपर उल्लेख हो चुका है। आप जैन-धर्म के पारंगत पंडित और प्रसिद्ध धर्माचार्य थे। आपका नाम दूर-दूर देशों में विख्यात है। योरप और अमेरिका के विद्वान्, जिन्हें जैन-धर्म से परिचय है, प्रायः आपको लिखा करते थे, और जैन-धर्म और दर्शन-संबंधी प्रश्नों को इस प्रकार आपकी सहायता से हल करते थे। इन्हीं स्वनाम-धन्य धर्माचार्यजी का स्वर्गवास शिवपुरी में, संवत् १९७९ में, हुआ। इनकी पावन स्मृति सुरक्षित रखने के लिये जैनों ने एक समाधि-मंदिर बनवाया है। इस मंदिर की ज़मीन शिवपुरी स्टेशन के पास, जो बड़े मौक़े की है, सिंधिया-सरकार ने दी थी। मंदिर बड़ा सुंदर है। इसमें उक्त आचार्य महाराज की दिव्य मूर्ति स्थापित है। इसी मंदिर के साथ पूर्वोक्त संस्था संबद्ध है।

श्रीविजयधर्मजी सूरि के स्वर्गवास के पश्चात् आचार्य के आसन पर उनके सुप्रसिद्ध शिष्य श्रीविजयेंद्रजी सूरि विराजमान हुए, जो इस संस्था में रहते और यहीं से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वीर-जैन-तत्त्व-मंडल का मंदिर और विद्यालय

भिन्न-भिन्न स्थानों में जाकर धर्मोपदेश करते हैं। आप संस्कृत, हिंदी, गुजराती के अच्छे विद्वान् और अँगरेज़ी भाषा और साहित्य से भी सुपरिचित हैं। आपके साथ मुनि-विद्या-विजयजी, जैन-दर्शन और साहित्य के प्रकांड विद्वान् और सुविख्यात वक्ता तथा अन्य तपस्वी साधु रहते हैं, जिनके पवित्र चरित्र का प्रभाव इस संस्था के विद्यार्थियों पर अच्छा पड़ता है। इस संस्था की जान मुनि-विद्या-विजयजी को कह सकते हैं। यह आप ही हैं, जो रात-दिन परिश्रम करके संस्था की सब देख-भाल करते और अपना अधिक समय विद्यार्थियों को शिक्षा तथा उपदेश देने में लगाते हैं। आप कई विषयों के प्रकांड और पूर्ण विद्वान् तो हैं ही, इसके अतिरिक्त सरलता, सच्चरित्रता और सज्जनता में भी एक ही हैं। श्रीविजयेंद्रजी सूरि महाराज, जो इस समय आचार्य-पदवी पर हैं, जैन-धर्म के एक आदर्श साधु हैं। इतनी उच्च पदवी पर होने पर भी आपको अभिमान और अहंकार छू नहीं गया। ऐसा कौन मनुष्य है, जो आपसे मिलकर प्रसन्न और प्रफुल्लित न हो जाय। दर्शन करते ही इनकी पवित्र, प्रसन्न तथा दिव्य मूर्ति का दूसरे पर प्रभाव पड़ जाता है। आप मिलनसार अव्वल दर्जे के हैं। केवल जैनों पर ही इनका प्रभाव नहीं है, बल्कि हिंदू, मुसलमान, ईसाई आदि सभी धर्मों के लोगों पर है। आपका सम्मान सभी करते हैं। आपकी धर्म और लोक-संबंधी जानकारी इतनी बढ़ी हुई और ऐसी 'अप-टू-डेट' है कि आप किसी विषय पर बात-चीत कीजिए, आपको उसी समय ठीक उत्तर मिलेगा। मैं जैन नहीं हूँ, पर मुझे जैन-साधुओं और गृहस्थों से मिलने का बहुत अवसर मिला है। जैन-साधुओं के विषय में मैं बिना किसी संकोच के कह सकता हूँ कि उनमें शायद ही कोई ऐसा साधु हो, जो अपने प्राचीन पवित्र आदर्श से गिरा हो। मैंने तो जितने साधु देखे, उनसे मिलने पर चित्त में यही प्रभाव पड़ा कि वे धर्म, त्याग, अहिंसा तथा सदुपदेश की मूर्ति हैं। उनसे मिलकर बड़ी प्रसन्नता होती है। जिन साधु महाराजों का यहाँ उल्लेख किया है, वे तो असाधारण व्यक्ति हैं—केवल तपस्वी साधु नहीं हैं, बल्कि प्रकांड विद्वान् और अनुभवी हैं।

इस संस्था में एक नई बात देखने में आई। क़रीब डेढ़ साल हुआ, जर्मनी से एक विदुषी महिला यहाँ आकर रही है। इसका असली नाम डॉ० चार्लोट क्रौसो है। भारतीय नाम सुभद्रादेवी है। आप पी-एच्० डी० की उपाधि से विभूषित और लिपज़िग युनिवर्सिटी की असिस्टेंट प्रोफ़ेसर हैं। आप भारतवर्ष की कई भाषाओं से परिचित हैं—संस्कृत, प्राकृत, गुजराती, मराठी, हिंदी, पहलवी आदि। योरप की तो सभी भाषाएँ जानती हैं। इसी संस्था में आप जैन-तत्त्व-ज्ञान, जैन-आगम, पुरानी गुजराती आदि का अभ्यास कर रही हैं। कुछ समय हुआ, आपने आचार्य श्रीविजयेंद्र सूरि महाराज के पास जैन-दीक्षा ली है। मांसाहारादि का इन्होंने सर्वथा त्याग कर दिया है। यह हिंदोस्तानी रीति से दाल, भात, रोटी, शाकादि का भोजन करती हैं। हिंदू-सभ्यता पर आपका बड़ा अनुराग है। 'धर्मध्वज'-नामक गुजराती मासिक पत्रिका में आपके गुजराती लेख प्रायः प्रकाशित होते रहते हैं। आप उच्च कक्षा के विद्यार्थियों को अँगरेज़ी भी पढ़ाती हैं। आपने भाषा-विज्ञान के संबंध में अच्छी खोज की है। आपकी दो-एक पुस्तकें भी छप चुकी हैं। मैं इन विदुषीजी से मिला, और मिलकर चित्त बड़ा प्रसन्न हुआ। आप बड़ी सरल स्वभाववाली, विनयी और शीलसंपन्ना हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आपकी जैन-धर्म तथा अन्य भारतीय धर्मों पर श्रद्धा देखकर मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई।

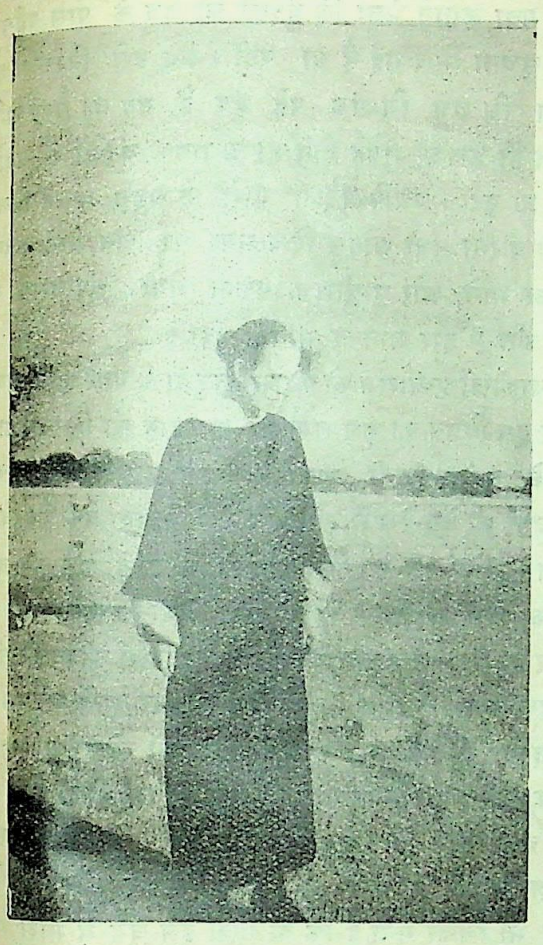

जर्मन-महिला

(जिन्होंने जैन-धर्म में दीक्षा ली है, और जिनका नाम सुभद्रादेवी रक्खा गया है)

यह संस्था दिन-प्रति-दिन उन्नति करती रहे, और जिस उद्देश्य से उसका स्थापन हुआ है, उसकी शीघ्र ही पूर्ण रीति से पूर्ति हो, यही मेरी हार्दिक शुभाकांक्षा है।

कन्नोमल

स्मृति

प्रात-प्रयाण-कथा सुनके उसके मुख-पंकज का मुरझाना ;
और ज़रा हँस के उसका अपने मन का वह भाव छिपाना।
किंतु अचानक ही उसके वर लोचन में जल का भर आना ;
संभव है न कभी मुझको इस जीवन में वह दृश्य भुलाना।

गोपालशरणसिंह

चंपतिराय

चंपति के परताप तें पानिप गयो ससाइ ;
पौसेरी भर रहि गए नौसेरी उमराइ।
प्रलय-पयोधि उमंड में ज्यों गोकुल जदुराइ ;
त्यों बूड़त बुंदेल-कुल राख्यो चंपतिराइ।

(लाल कवि)

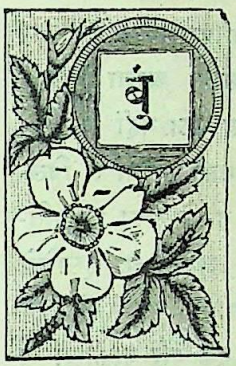

बुंदेलखंड के प्रसिद्ध राज्य ओड़छे के संस्थापक महाराज प्रतापरुद्र बुंदेला-नरेशों में अत्यंत प्रतापशाली हो गए हैं। इनके बारह पुत्र थे, जिनमें प्रथम तीन के नाम उस प्रांत के इतिहास में नक्षत्रों के समान प्रकाशमान हैं। ये भारतीचंद, मधुकरसाह और उदयजीत थे। प्रथम दोनों भाई क्रमशः ओड़छे की गद्दी पर सुशोभित हुए। पर तीसरे भाई उदयजीत ने महेवे में जाकर एक छोटा-सा राज्य स्थापित किया। इनके पुत्र प्रेमचंद युद्धप्रिय वीर थे। उनके तीन पुत्र—कुँअरसाह, मानसाह और भागवतराय—थे। भागवतराय के चार पुत्र हुए—खड्गराय, चंद्ररराय, सुजानराय और चंपतिराय। यही अंतिम पुत्र चंपतिराय इस लेख के चरितनायक हैं। इन्हीं के पुत्र पन्ना-राज्य के संस्थापक वीर-शिरोमणि छत्रसाल थे।

संवत् १६८४ में जब शाहजहाँ दिल्ली की गद्दी पर बैठे, उसी वर्ष ओड़छा-नरेश जुझारसिंह ने अपने राज्य में बादशाह के विरुद्ध स्वतंत्रता का झंडा खड़ा किया। अन्य बुंदेला सर्दारों ने भी इनका साथ दिया। जुझारसिंह ने कई युद्धों के अनंतर बादशाह की अधीनता स्वीकार कर ली; पर संवत् १६९२ में पुनः विद्रोह किया। उसी युद्ध में यह अपने बड़े पुत्र विक्रमाजीत जुगराज के साथ मारे गए। चंपतिराय ने इन युद्धों में ओड़छा-नरेश का बराबर साथ दिया, और उनकी मृत्यु पर उनके द्वितीय पुत्र पृथ्वीराज को बुंदेलों का राजा बनाया। शाहजहाँ ने जुझारसिंह के मारे जाने पर इनके राज्य के एक अंश को ख़ालसा करके उसका नाम इसलामाबाद रक्खा। इसमें ९०० ग्राम थे, तथा इसकी तहसील ८ लाख थी। यह परगना अत्यंत उपजाऊ और जेत्रा नाम से प्रसिद्ध था। बादशाह ने बाक़ीख़ाँ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क़लमाक़ को इस परगने का फ़ौजदार नियुक्त कर चंपतिराय का दमन करने के लिये भेजा। ओड़छा तथा उसके आस-पास के परगने चंदेरी के राजा देवीसिंह बुंदेले के अधीन किए गए। यह राजा रामसाह का पौत्र और भारथसाह का पुत्र था।

संवत् १६६३ में चंपतिराय ने पृथ्वीराज को राजा मानकर बुंदेलों की एक बड़ी सेना एकत्र की, और इसलामाबाद तथा उसके आस-पास के परगनों में लूट-मार शुरू कर दी। बाक़ीख़ाँ ने भी बादशाही आज्ञा के अनुसार उनका दमन करने में कोई प्रयत्न उठा नहीं रक्खा। पर वह उस प्रांत के पहाड़ी तथा जंगली स्थानों से बिलकुल अनभिज्ञ था, इसलिये सफल न हो सका। चंपतिराय उन स्थानों को अच्छी तरह जानते थे, इसलिये उन्होंने चारों ओर के गाँवों तथा शाही थानों को ख़ूब लूटा। परंतु इसी प्रकार के धावों में एक बार बाक़ीख़ाँ ने एकाएक चंपतिराय के बड़े पुत्र सारवाहन को घेर लिया। घोर युद्ध के अनंतर उस चतुर्दशवर्षीय वीर बालक ने वीर गति प्राप्त की। यद्यपि चंपतिराय को इस कुसमाचार के सुनने पर अत्यंत शोक हुआ, पर उन्होंने अपने कर्मपथ से पैर तनिक भी न डिगाया। वह पहले से अधिक दृढ़ता तथा साहस के साथ शत्रु को पद-दलित करने में दत्तचित्त हुए*।

संवत् १६६५ के फाल्गुन मास में शाहजहाँ आगरे आए। यहाँ उन्हें समाचार मिला कि बुंदेलों का दमन करना बाक़ीख़ाँ की शक्ति के बाहर है। तब बादशाह ने पटना के सूबेदार अब्दुल्लाख़ाँ बहादुर फ़ीरोज़जंग को इस कार्य पर नियुक्त किया। उसे बहुत-सी सेना के साथ इसलामाबाद की जागीर देकर वहाँ भेजा†। इन्हें अपनी जागीर पर पहुँचने में भी कई महीने लग गए। अंत में कई प्रयत्नों के अनंतर, सं० १६६७ के वैशाख मास में, अब्दुल्ला को पता लगा कि ओड़छे और झाँसी के बीच में पृथ्वीराज और चंपतिराय ससैन्य ठहरे हुए हैं, तथा झाँसी के ग्रामों में लूट-मार मचा रहे हैं। इस समाचार के मिलते ही अब्दुल्ला ने बाक़ीख़ाँ को कुछ सेना देकर इन पर चढ़ाई करने को भेजा। बाक़ीख़ाँ रातोरात कूच करता हुआ बुंदेलों के पड़ाव के पास पहुँचा। वहाँ से कुछ मनुष्यों को यह पता लगाने भेजा कि बुंदेलों को शत्रु के पास पहुँचने की सूचना मिल गई है या नहीं। जब उसे निश्चय हो गया कि शत्रु निःशंक पड़े हुए हैं, तब वह पहर रात्रि रहते ही कूचकर सुबह होते ही अचानक बुंदेलों के पड़ाव पर जा टूटा। यद्यपि बुंदेला वीरों ने बहुत प्रयत्न किया, बड़ी वीरता तथा साहस दिखलाया, पर अंत में वे परास्त होकर भागे, और पृथ्वीराज पकड़ा गया। चंपतिराय को भी अंत में हार मानकर भागना पड़ा।

बाक़ीख़ाँ पृथ्वीराज को क़ैदकर अब्दुल्ला के पास लौट आया, और इस विजय का कुल समाचार बादशाह को लिख भेजा। इसके अनंतर शाही आज्ञा के अनुसार पृथ्वीराज सैय ख़ाँजहाँ की देख-रेख में ग्वालियर भेजा जाकर वहीं क़ैद किया गया। शाहजहाँ ने चंपतिराय के न पकड़े जाने पर क्रुद्ध होकर अब्दुल्लाख़ाँ को वहाँ से बुला लिया। उसके स्थान पर चार हज़ारी चार हज़ार मंसबवाले बहादुरख़ाँ रुहेला को तीन सहस्र सवारों के साथ नियुक्त किया‡। पर कुछ मनुष्यों ने बादशाह को यह सुझाया कि बुंदेलखंड को रुहेलखंड बनाना ठीक नहीं। इससे वह शीघ्र ही यहाँ से हटा दिया गया।

छत्र-प्रकाश के अनुसार बाक़ीख़ाँ के साथ शहबाज़ख़ाँ और फ़तेहख़ाँ नाम के दो सर्दार और भी थे। यह भी लिखा गया है कि बाक़ीख़ाँ इस युद्ध में मारा गया था। पर यह ठीक नहीं। वह इस घटना के लगभग बारह वर्ष बाद अपनी जागीर बारो में रोग से मरा था†। इस ग्रंथ में अब्दुल्लाख़ाँ के साथ आए हुए सर्दारों में दो का नाम अधिक दिया है—सैयद मुहम्मद और नौशेरख़ाँ। बहादुरख़ाँ का नाम उसी के अधीनस्थ सेनानियों में दिया गया है, जो अब्दुल्लाख़ाँ के बुला लिए जाने पर प्रधान सेनापति नियत हुआ था‡।

---

* छत्र-प्रकाश (लाल-कृत)।

† अब्दुलहमीद-कृत बादशाहनामा, जि० २ (फ़ारसी) पृ० १३६।

* अब्दुलहमीद-कृत बादशाहनामा जि० २, (फ़ारसी) पृ० १६३-६४।

† मआसिरुल उमरा, बेवरिज-कृत अनु० पृ० ३८१।

‡ छत्र-प्रकाश पृष्ठ ३०-३३। बुंदेलखंड गज़ेटियर जि० १ पृ० २३ में चंपतिराय का वृत्तांत पोगसन-कृत छत्रप्रकाश के अनुवाद के आधार पर दिया गया है। पर उसमें कई अशुद्धियाँ रह गई हैं। जुझारसिंह पर चढ़ाई करनेवाले सर्दार चंपतिराय पर चढ़ाई करनेवाली सेना के अध्यक्ष बतलाए गए हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुधा

दीवान बहादुर

पत्र को पृथ्वी पर पटककर जूते से पीटता है।

(सुधा-पृष्ठ २४७, 'विवाह विज्ञापन'-व्यंग्य)

Designed and Printed at
The Ganga Fine Art Press, Lucknow.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसमाद को इस परास्त करने के लिए सरदार नियुक्त कर चंपतिराय का दमन करने के लिये भेजा। ओरछा तथा उसके आस-पास के इलाके बुंदेलों के राजा हेमकरण बुंदेले के अधीन थे। यह राजा मलखान का पौत्र और आपसाद का पुत्र था।

संवत् १६१३ में चंपतिराय ने पृथ्वीराज को राजा मानकर बुंदेलों की एक बड़ी सेना एकत्र की, और इलाहाबाद तथा उसके आस-पास के परगनों में खूब मार धाड़ की। बाक़ीख़ाँ ने भी बादशाही आज्ञा के अनुसार उसका दमन करने में कोई प्रबल दृष्टि नहीं रक्खी। पर वह उस ओर के पहाड़ी तथा जंगली स्थानों से बिलकुल परिचित था, इसलिये सफल न हो सका। चंपतिराय उन स्थानों को अच्छी तरह जानते थे, इसलिये उन्होंने सारे और के राँवों तथा शाही थानों को लूट लिया। परंतु इसी प्रकार के भावों में एक बार बाक़ीख़ाँ ने एकाएक चंपतिराय के बड़े पुत्र सारंगधर को घेर लिया। घोर युद्ध के अनंतर उस चतुर्दशवर्षीय वीर बालक ने वीर गति पाई की। यद्यपि चंपतिराय को इस दुःसमाचार के सुनने पर अत्यंत शोक हुआ, पर उन्होंने अपने कर्तव्य से ज़रा भी न डिगाया। वह पहले से अधिक दृढ़ता तथा साहस के साथ शत्रु को पद-दलित करने में तत्पर हुए।

संवत् १६१४ के फागुन मास में शाहजहाँ आगरे आए। यहाँ उन्हें समाचार मिला कि बुंदेलों का दमन करना बाक़ीख़ाँ की शक्ति के बाहर है। उस बादशाह ने पटना के सूबेदार अब्दुल्लाख़ाँ बहादुर फ़ीरोज़जंग को इस कार्य पर नियुक्त किया। उसे अपनी सेना के साथ इलाहाबाद की जागीर देकर वहाँ भेजा। इन्हें अपनी जागीर में पहुँचने में जो कष्ट उठाने पड़े वह ऊपर कह गए। अब में यहाँ लिखते हैं कि संवत्, सं० १६१५ के कार्तिक मास में, अब्दुल्ला को इस आशय की आज्ञा भेजी गई कि वह ओरछे के राजा पृथ्वीराज और चंपतिराय को अपने हाथों से पकड़कर भेजे। इस समाचार के मिलते ही अब्दुल्ला ने बाक़ीख़ाँ को कुछ सेना देकर इस पर चढ़ाई करने को भेजा। बाक़ीख़ाँ रातोरात कूच करता हुआ बुंदेलों के पड़ाव के पास पहुँचा। वहाँ से कुछ मनुष्यों को यह पता लगाने भेजा कि बुंदेलों को शत्रु के पास पहुँचने की सूचना मिल गई है या नहीं। जब उसे निश्चय हो गया कि शत्रु निश्शंक पड़े हुए हैं, तब वह रात्रि रहते ही कूचकर सुबह होते ही अचानक बुंदेलों के ऊपर जा टूटा। यद्यपि बुंदेला वीरों ने बहुत प्रबल किंतु वीरता तथा साहस दिखलाया, पर अंत में वे परास्त होकर भागे, और पृथ्वीराज पकड़ा गया। चंपतिराय को भी अंत में हार मानकर भागना पड़ा।

बाक़ीख़ाँ पृथ्वीराज को क़ैदकर अब्दुल्ला के पास लौट आया, और इस विजय का कुल समाचार बादशाह को लिख भेजा। इसके अनंतर शाही आज्ञा के अनुसार पृथ्वीराज और झाँसी की देख-रेख में स्थापित कर वहाँ क़ैद किया गया। शाहजहाँ ने चंपतिराय के न पकड़े जाने पर क्रुद्ध होकर अब्दुल्लाख़ाँ को बड़ी से बुरा लिखा। उसके स्थान पर चार हज़ारी चार हज़ार असवारवाले बहादुरख़ाँ रोहिला को सहस्र सवारों के साथ नियुक्त किया। पर जब बादशाह को यह सूचना मिली कि बुंदेलखंड का झंझट ठीक नहीं। इसमें यह ओरछा ही नहीं से हटा दिया गया।

सर-प्रभाव के अनुसार बाक़ीख़ाँ के [illegible] बाज़ख़ाँ और क़तेहख़ाँ नाम के दो सरदार और [illegible] यह भी लिखा गया है कि बाक़ीख़ाँ इस युद्ध में [illegible] था। पर यह ठीक नहीं। यह इस घटना के [illegible] वर्ष बाद अपनी जागीर करने में लेगा ने अपने ग्रंथ में अब्दुल्लाख़ाँ के साथ आए हुए सरदारों में दो का अधिक दिया है—सैयद मुहम्मद और मीरक़ासिम तुरानी का साथ उसी के अधीनस्थ सेनानियों में दिया है, जो अब्दुल्लाख़ाँ के बुला लिए जाने पर अपने [illegible] नियत हुए थे।

---

* [illegible] बादशाहनामा लि० २, पृ० १२३-२४।

† [illegible] पृ० १२१।

‡ सन-तारीख़ हो० पृ० २१। बुंदेलखंड [illegible] पृ० २१ में चंपतिराय का दुर्ग पटनकुंडार के आधार पर लिखा गया है; पर [illegible] नहीं है। मुनासरात पर आधार [illegible] अधिक [illegible] के अनुसार [illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

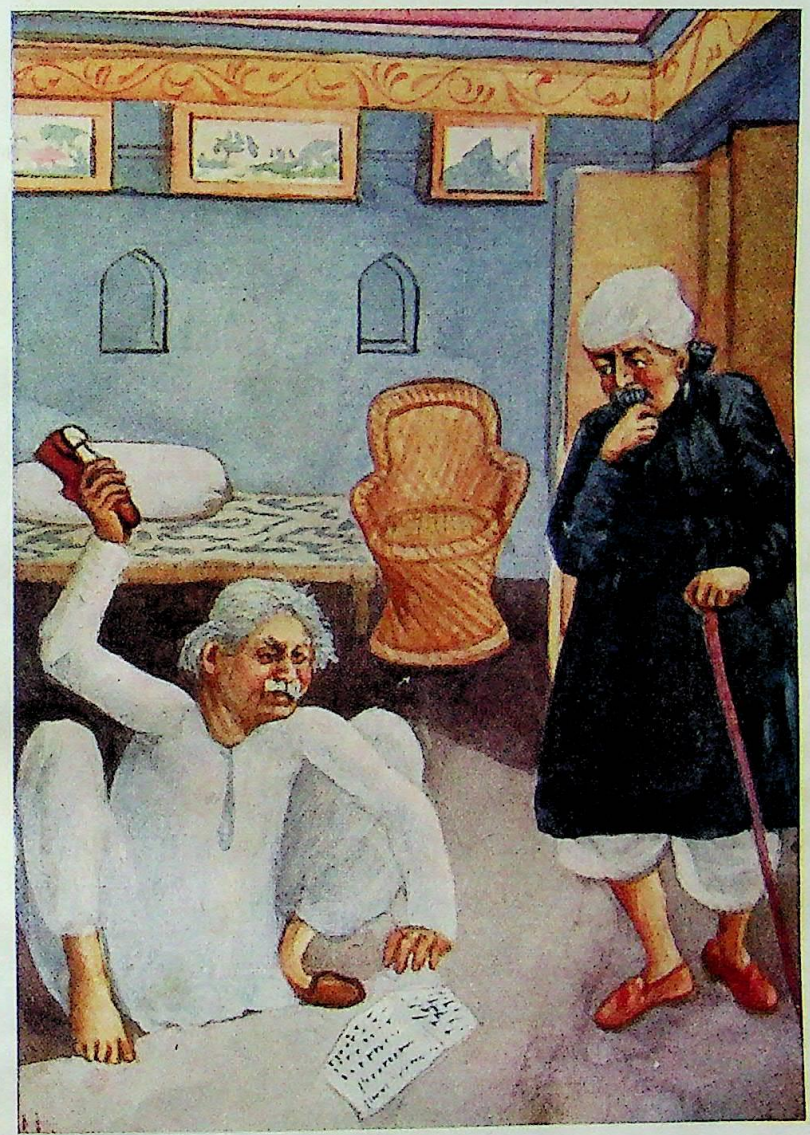

दीवान बहादुर

पत्र को पृथ्वी पर पटककर जूते से पीटता है।

(सुधा-पृष्ठ ५४४, 'विवाह-विज्ञापन'-प्रहसन)

Designed and Printed at
The Ganga Fine Art Press, Lucknow.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बहादुरख़ाँ की नियुक्ति तथा पृथ्वीराज के क़ैद होने के अनंतर दो वर्ष तक चंपतिराय बराबर लूट-मार करते रहे, और बादशाही थानों के नाकों दम कर दिया। अंत में शाहजहाँ ने, 'जाति का बैरी जाति' की नीति के अनुसार, जुझारसिंह के छोटे भाई पहाड़सिंह को, सं० १६६६ के ज्येष्ठ मास के अंत में, विद्रोह-दमन के लिये नियुक्त किया, और एक हज़ार सवार बढ़ाकर, तीन हज़ारी तीन हज़ार सवार का मंसब देकर, ओड़छे भेज दिया। शाहजहाँ ने ऐसा प्रबंध कर एक प्रकार विद्रोह का वहीं दमन कर दिया; क्योंकि चंपतिराय तथा उनके अनुयायियों ने ओड़छे के सिंहासन पर अपने राजा के भाई पहाड़सिंह को सुशोभित देखकर अपने सात वर्ष के निरंतर प्रयत्नों को सफल मान लिया, और उन्होंने उसकी अधीनता स्वीकार कर ली।

राजा पहाड़सिंह का वह पत्र, जिसमें चंपतिराय के अधीनता स्वीकार कर लेने का सुसमाचार था, आषाढ़-सुदि ८, सं० १६६६ (५ रबीउस्सानी, सन् १०५२ हि०) को शाहजहाँ के पास पहुँचा। उसके उत्तर में बादशाह ने आज्ञा भेजी कि चंपतिराय उसके पिता तथा बड़े भाई का पुराना सेवक है, इसलिये उसे क्षमा करके अपनी सेवा में ले लें। इस प्रकार चंपतिराय का दिल्ली-सम्राट् के विरुद्ध प्रथम विद्रोह समाप्त हुआ।

इसके अनंतर चंपतिराय राजा पहाड़सिंह से मिलने गए, जो संबंध में उनके चाचा लगते थे। यद्यपि एक प्रकार से चंपतिराय के ही उपद्रवों के कारण पहाड़सिंह को ओड़छे का राज्य मिला था, पर उस देश के बुंदेले वीरों के मुख से चंपतिराय ही की अधिक प्रशंसा सुनकर इनके हृदय में द्वेषाग्नि प्रज्वलित हो उठी। वह उन्हें गुप्त रूप से नष्ट करने का उपाय सोचने लगे; क्योंकि प्रत्येक बुंदेले वीर के प्रिय नायक चंपतिराय का प्रकाश्य रूप में वध करना अपना ही अनिष्ट करना था। इन्होंने चंपतिराय का बड़ा आदर-सत्कार किया, और गुप्त रूप से विष देने का निश्चय कर इन्हें भोजन करने का निमंत्रण दिया। भोजन के समय चंपतिराय के छोटे भाई भीमसिंह ने थालों की अदला-बदली कर ली, जिससे विष-पूरित भोजन भीमसिंह के उदरस्थ हो गया। भीमसिंह अपने वास-स्थान पर पहुँचकर मृत्यु-मुख में समा गए। इस प्रकार पहाड़-सिंह का प्रथम वार निष्फल गया। तब उन्होंने कुछ घातकों को इन्हें मारने के लिये नियुक्त किया। पर उनमें से एक के चंपतिराय के तीर से मारे जाने पर अन्य सब भाग गए।

जब चंपतिराय ने देखा कि राजा पहाड़सिंह उसके प्राण लेने पर ही तुले हुए हैं, तब उन्होंने, अपने शुभचिंतकों की सम्मति से, बादशाह शाहजहाँ के दरबार में प्रवेश करने का प्रबंध किया। सं० १६६६ (जून, १६४२) में यह पहले सुलतान दारा शिकोह के दरबार में गए, और उनके साथ बादशाह के दरबार में प्रवेश किया। बादशाह ने इन्हें दारा के साथ खंगारगढ़ पर चढ़ाई करने को भेजा, जो शीघ्र ही जीता गया। यह दरबार में लौट गए।

पहाड़सिंह अपनी कृतघ्नता का परिचय देने के लिये वहाँ भी पहुँचे, और इन्हें हानि पहुँचाने के अनेक उपाय किए; पर सफल नहीं हुए। तब इन्होंने दारा शिकोह से प्रार्थना की कि कोंच का परगना, जिसे चंपतिराय को बादशाह ने तीन लाख के मुनाफ़े पर दिया था, यदि उन्हें दिया जाय, तो वह नौ लाख मुनाफ़ा दे सकते हैं। दारा ने यह प्रार्थना स्वीकार कर ली, और चंपतिराय से उसे इन्हें सौंप देने को कहा। इस पर चंपतिराय को क्रोध चढ़ आया। पर हाड़ा-नरेश राव छत्रसाल के मध्यस्थ होने से यह शांतिपूर्वक दरबार से चले गए, और उसी समय बादशाही सेवा त्याग कर अपने देश लौट गए।

इस घटना के अनंतर ही शाहजहाँ के रुग्ण होने पर उसके चारों पुत्रों—दाराशिकोह, शुजाअ, औरंगज़ेब और मुराद—में राज्य के लिये युद्ध आरंभ हो गया। धर्मतपुर के युद्ध में जोधपुर-नरेश महाराज जसवंतसिंह को परास्त कर औरंगज़ेब आगरे की ओर बढ़ा। पर धौलपुर के पास दारा ने चंबल नदी के सब घाटों को रोक रक्खा था, दृढ़ मोरचे बाँध लिए गए थे, और बड़ी-बड़ी तोपें चढ़ा दी गई थीं। औरंगज़ेब की सेना यहाँ पहुँचकर रुक गई। ऐसी रुकावट के रहते चंबल उतरना प्राण खोना था। इसलिये औरंगज़ेब ने कुछ हट-बढ़कर गुप्त तथा सुरक्षित उतारे की खोज कराई। चंपतिराय दारा से क्रुद्ध ही थे, इससे वह औरंगज़ेब की सेना में धर्मतपुर के युद्ध के बाद (एप्रिल, १६५८ में) आ मिले थे। इन्होंने धौलपुर से बीस कोस पूर्व एक छिपे हुए अन्य मार्ग से दूर पर के उतारे का पता बतलाया, और दक्षिण की सेना को उस पार कर देने का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वादा किया*। २१ मई को आगे सेना भेजकर २३ को औरंगज़ेब ससैन्य पार उतर गया। इसके अनंतर सामूगढ़-युद्ध में विजय प्राप्त कर औरंगज़ेब दिल्ली के तख़्त पर जा बैठा। छत्रप्रकाश में लिखा है कि औरंगज़ेब ने इन्हें बारह हज़ारी मंसब और कई परगने—ऐरछ, शाहज़ादपुर, कोंच और कनार—जागीर में दिए। इसके उपरांत चंपतिराय अपने पुत्र अंगदराय के साथ पंजाब की सेना में नियुक्त किए गए।

जब शुजाअ़ औरंगज़ेब से सिंहासन के लिये युद्ध करने को बड़ी सेना लेकर दिल्ली की ओर बढ़ा, तब औरंगज़ेब की सेना में बहुत घबराहट फैली। उसी समय चंपतिराय ने औरंगज़ेब का साथ छोड़ दिया, और अपने देश लौट आए। खजवा-युद्ध होने और दारा के अजमेर ससैन्य आने तक यह बराबर लूट-मार मचाते रहे। इन्होंने मालवे के मार्ग को एक प्रकार से रोक दिया था। औरंगज़ेब ने १० फ़रवरी, सन् १६५९ को राजा शुभकरण बुंदेले के अधीन कई सरदारों तथा सेना को इनका दमन करने के लिये भेजा। इसने बड़ी तैयारी की, और बड़े उत्साह के साथ युद्ध आरंभ किया। कई दुर्गों पर भी इसने अधिकार कर लिया; पर अंत तक यह चंपतिराय को पूर्णतया दमन करने में असमर्थ ही रहा। तब औरंगज़ेब ने राजा देवी-सिंह बुंदेले को ससैन्य सहायतार्थ भेजा, और मालवे के जागीरदारों को भी सहायता करने के लिये आज्ञा भेजी। इस प्रकार चंपतिराय के विरुद्ध बुंदेलखंड का प्रत्येक मनुष्य हो गया। इनके सगे संबंधी भी इन्हें पकड़कर बादशाह को प्रसन्न करने की चेष्टा करने लगे। ओड़छे की रानी हीरादेवी इनसे वैमनस्य रखकर बादशाही सेना की बराबर सहायता करती रहीं। इन्हीं ने चंपतिराय के भाई तथा सहायक सुजानराय के दुर्ग—वेर—पदपुर अधिकार कर लिया, जिससे अंत में बहुत युद्ध करने पर भी, पकड़े जाने के डर से, सुजानराय ने कटार मारकर जान दे दी।

चंपतिराय अवस्था तथा रोगों के कारण बहुत क्षीण हो रहे थे। वह केवल पचीस सवारों के साथ ओड़छे के पास जैतारह में तीन दिन तक रहे। पर रानी हीरादेवी की सेना के साथ शत्रु के यहाँ पहुँचने पर यह सहरा गए। मालवे के अंतर्गत, सारंगपुर ज़िले में, सहरा एक राज्य है, जिसे बादशाही दफ़्तर में 'सहार-बाबा हाजी' लिखा जाता था। यहाँ का राजा इंद्रमणि ❀ धंधेरः जाति का राजपूत था।

* आलमगीरनामा और आक़िलख़ाँ इस उतारे का नाम भदौरिया या भदावर बतलाते हैं। ईश्वरदास इसे कनीरा, भीम-सेन गोर्का और सैरुलमुताख़िरीन भिंड लिखता है। गोर्का धौलपुर से तीन ही कोस है, इससे यह ठीक नहीं। भदौली २० कोस पूर्व है, और कनीरा उसके पास डेढ़ ही कोस पर है। भिंड भी उसी के पास है; पर चंबल से कुछ हटकर दक्षिण ओर है। छत्रप्रकाश, मनूसी और भीमसेन चंपतिराय को, ईश्वरदास गोहद के ज़मींदार हाथीराज जाट को और आक़िलख़ाँ भदावर के राजा को यह उतारा दिखलानेवाला लिखते हैं।

* प्रो० यदुनाथ सरकार-कृत 'औरंगज़ेब' जि० ३, पृ० ३३ पर एक नोट यों है—उस सरदार के विषय में छत्रप्रकाश ने अवश्य ग़लती की है, जिसे वह सहरा का राजा इंद्रमणि लिखता है; क्योंकि फ़ारसी लेखों से स्पष्ट है कि (१) इंद्रमणि सन् १६५७ में औरंगज़ेब द्वारा मुक्त हुआ था, चंपतिराय द्वारा नहीं, और (२) वह चंपति के पहले नहीं मरा, प्रत्युत कई वर्ष बाद तक जीवित रहा। (म० आ० उमरा जि० २, पृ० २६५)

जिस फ़ारसी ग्रंथ का प्रोफ़ेसर साहब ने हवाला दिया है, उसी से कुछ अंश उद्धृत किया जाता है—"तब दसवें वर्ष (सन् १६३७ ई०) उसी बादशाह (शाहजहाँ) के सरदार मोतमिद-ख़ाँ और राजा विट्ठलदास गौड़ शिक्षित सेना के साथ उसे (राजा इंद्रमणि को) दंड देने को नियुक्त हुए, और जाकर सहरा-दुर्ग घेर लिया। पूर्वोक्त राजा क्षमा माँगकर उनके साथ दरबार गया, और आज्ञानुसार जुनेर-दुर्ग में क़ैद हुआ। उस वर्ष (जब औरंगज़ेब सन् १६५७ में आगरे को जा रहा था) इनका मंसब तीन हज़ारी २,००० सवार तक बढ़ाकर शाहज़ादा मुहम्मद सुलतान के साथ इन्हें आगे उत्तरी भारत को भेजा। ××× शाहज़ादा शुजाअ़ के युद्ध के बाद इसकी बंगाल में नियुक्त हुई, जहाँ अपने मृत्यु-काल तक यह बादशाही कामों में लगा रहा।"

प्रो० साहब की पहली युक्ति उन्हीं के आधार के अनुसार ठीक नहीं। औरंगज़ेब केवल मंसब बढ़ाता है, जैसा कि उसने उन सभी सरदारों के साथ किया था, जिन्होंने राज्य लेने में उसकी सहायता की थी। औरंगज़ेब द्वारा मुक्त किया जाना लिखा भी नहीं है। दूसरी युक्ति भी इस हवाले में कहीं नहीं लिखी है। ५ जनवरी, १६५९ को खजवा-युद्ध हुआ था, और चंपतिराय सन् १६६१ के ऑक्टोबर के लगभग ढाई वर्ष बाद मारे गए थे। बंगाल में दो वर्ष रहकर इंद्रमणि देश लौट आ सकते थे। छत्र-प्रकाश का लेख केवल इतना ही लिख देने से अशुद्ध नहीं माना जा सकता।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सन् १६३७ ईसवी में यह जुनेर-दुर्ग में बादशाही आज्ञा से क़ैद हुआ था। इसके अनंतर चंपतिराय की प्रार्थना पर बादशाह ने इसे मुक्त कर दिया था और इसका राज्य इसे लौटा दिया था। चंपतिराय ने ऐसे कुअवसर पर इसी मित्र से सहायता लेने का विचार कर उसके राज्य की ओर प्रयाण किया। शत्रु भी पीछा करता हुआ चला। चंपतिराय बहुत थके हुए थे। रास्ते में एक पहाड़ी नाला मिला। वह घोड़ा फँदाकर निकल गए। राजा इंद्रमणि ने यहीं शत्रु को रोका, और यद्यपि वह युद्ध में मारा गया, पर चंपतिराय को किसी ग्राम तक पहुँचने के लिये काफ़ी समय मिल गया।

साहबसिंह धंधेरः ने, जो अब राजा हुआ, संबंध के विचार से चंपतिराय की मदद करना उचित समझ दो सौ सवार दौवा शिवराम और गोपाल बारी की मातहती में उन्हें लिवा लाने को भेजे। यह सहरा गए, और कुछ दिन वहाँ रहे। शत्रु की सेना भी वहाँ पहुँची, और युद्ध होने लगा। चंपतिराय यहाँ से भी भागे, और अपने बहनोई ज्ञानसाह के ग्राम को गए। पर "समौ परे सब करैं रुखाई।" बहन और बहनोई, कोई भी सहायक न हुआ।

इसी समय सहरा-दुर्ग पर बादशाही सेना की चढ़ाइयों से तंग आकर साहिबराय धंधेरः ने दौवा शिवराम और गोपाल बारी को पत्र लिखा—

जब लौं चंपतिराय कों जियत सुनै सब कोइ;
तब लौं अरि की फौज की दौरैं हम पर होइ।

इन नीचों ने स्वामी के इस पत्र का यही तात्पर्य समझा कि वह चंपतिराय का सिर चाहते हैं। इन्होंने वैसा ही किया। जब ग्राम से सात कोस पर ये लोग पहुँचे, तब धंधेरों के सवारों ने एकमत हो चंपतिराय को घेर लिया। रानी कालीकुँअरि ने, जो सर्वदा पति के साथ-साथ रहती थीं, यह देखकर तुरंत कटार पेट में मारकर सती-लोक को प्रस्थान किया। चंपतिराय भी रोग, निर्बलता आदि से व्यथित हो रहे थे। इन्होंने भी, शत्रु के हाथ क़ैद होने से मृत्यु को अच्छा समझकर, कटार से आत्महत्या कर ली, तथा अपनी चिरसंगिनी पतिव्रता रानी का साथ दिया। धंधेरों ने चंपतिराय का सिर औरंगज़ेब की ख़िदमत में भेजकर शांति-लाभ किया। इस प्रकार एक भारतीय वीर दंपति का भारतीय तथा स्वजातीय मनुष्य कहलानेवाले जीवों के हाथ नाश हुआ!

ऊपर का वृत्तांत देखते यही पहले-पहल भान होता है कि चंपतिराय का सब प्रयत्न व्यर्थ गया। जिस कार्य के लिये उन्होंने आजन्म रक्त बहाया, तथा अंत में बलिदान हुए, वह सफल नहीं हुआ। वास्तव में वह अपने पुत्र वीर केसरी छत्रसाल के लिये एक इंच भूमि भी नहीं छोड़ गए थे। पर वस्तुतः ऐसा नहीं था। इनका रक्त बुंदेलखंड की भूमि ही पर गिरा था, और कुछ ही दिनों में वह अपना रंग लाया। इनकी देश-भक्ति और इनका देश के लिये बलिदान होना प्रत्येक बुंदेले वीर के हृदय पर अंकित हो गया था। इसी का यह फल था कि जब कुछ वर्षों के अनंतर छत्रसाल ने स्वातंत्र्य का झंडा खड़ा किया, तब सभी बुंदेले वीरों तथा नरेशों ने इनकी अधीनता निस्संकोच ही मान ली। यह इन्हीं के सतत प्रयत्न का फल था कि—

रैया राय चंपति को चढ़ो छत्रसालसिंह,
'भूषन' भनत समसेर जोर जमकैं;
भादौं की घटा-सी उठी गरदैं गगन घेरैं,
सेलैं, समसेरैं फेरैं दामिनि-सी दमकैं।
खान, उमरावन के, आन राजा रावन के,
सुनि-सुनि उर लागैं घन की-सी घमकैं;
बैहर-बगारन की अरि के अगारन की,
नाँघती पगारन नगारन की धमकैं।

ब्रजरत्नदास

हस्तरेखा और मनोविद्या

ठकगण शीर्षक पढ़कर कदाचित् हँस पड़ेंगे। आजकल पाश्चात्य शिक्षा के हिमायती हमारी सभी प्राचीन रीतियों की हँसी उड़ाते हैं। हस्तरेखा और मनोविद्या का संबंध, यह तो और भी विचित्र बात है। सबसे विचित्र तो यह है कि यह हमारी लेखनी का फल है। कारण, हम भी एम्० ए० का महासागर पार कर चुके हैं। अस्तु, आज चाहे कोई कुछ कहे, पर किसी समय भारतवर्ष में हस्तरेखा की बहुत भारी चर्चा थी। प्रश्न यह है कि हस्तरेखा देखने की उत्पत्ति कैसे हुई? हमारे जितने काम होते हैं, सभी कुछ-न-कुछ उद्देश्य

उपक्रम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लिए अवश्य होते हैं। अतएव इसका भी कुछ-न-कुछ लक्ष्य तो अवश्य होगा। हम लोगों को समाज में रहना पड़ता है। समाज से अलग हमारे कर्तव्य और धर्म के कोई अर्थ ही नहीं होते। समाज में नाना प्रकार के मनुष्य हैं! हमें सभी से काम पड़ता है। मनुष्य के दो अंग हैं—मन और शरीर। शरीर तो हमारे सामने है; पर मन के विषय में हम कुछ नहीं जानते। हमें यह मालूम है कि हमारे मित्र देखने में कैसे हैं; पर हमें इसका पता नहीं कि उनके मन में क्या है। अपने 'बाल-विज्ञान'*-शीर्षक लेख में हम मन का अध्ययन करने के तरीक़े बतलावेंगे। हम दूसरे की मन की बात उसकी भाव-भंगियों से जान सकते हैं। हम देखते हैं, जब हम प्रसन्न रहते हैं, तब हमारी भाव-भंगियाँ कुछ रहती हैं, और जब क्रुद्ध रहते हैं, तब कुछ और ही रहती हैं। इस प्रकार ये हमें दूसरे के मन की बात बतलाने में सहायता देती हैं। पर देखने में आता है कि मनुष्य अपनी भाव-भंगियाँ छिपाने में भी समर्थ होते हैं। हम क्रोध में आनंद का भाव प्रकट कर सकते हैं। इससे हमारे अध्ययन में और भी असुविधा होती है। हमें और किसी का सहारा लेना पड़ता है। मनोवैज्ञानिकों का कथन है कि शरीर और मन में अत्यंत घनिष्ठ संबंध है। इस विषय पर अपने 'शरीर और मन'-शीर्षक लेख में हम यथा-शक्ति विवेचना करेंगे। यहाँ पर इतना ही बतला देना यथेष्ट होगा कि मन और शरीर का संबंध पारस्परिक है। स्वस्थ मन केवल स्वस्थ ही शरीर में रह सकता है। इसीलिये हमारे यहाँ के आचार्यों ने लिखा है—"शरीरमाद्यं खलु धर्मसाधनम्", अर्थात् शरीर ही धर्म का पहला साधन है। यदि शरीर नीरोग है, तो हम धर्मात्मा हो सकते हैं, अन्यथा नहीं। इसी प्रकार यदि हमारा शरीर स्वस्थ है, तो मन भी अवश्य ही स्वस्थ है। यदि हमारे मन में चिंता है, तो हमारे शरीर में मानो घुन लग जाता है। किसी कवि ने सच कहा है—"चिंता ज्वाल शरीर बन उर अंतर धधकाय।" फिर यदि हम रोगी हैं, तो ज़रा-सा विचारने से हमारे मस्तिष्क में पीड़ा होने लगती है। यहाँ पर हमारे पाठकगण प्रोफ़ेसर राममूर्ति का उदाहरण देकर इस तथ्य का निराकरण कर सकते हैं। प्रत्युत्तर में कहा जा सकता है कि यद्यपि प्रोफ़ेसर राममूर्ति का मस्तिष्क प्रौढ़ है, तथापि उससे उचित काम नहीं लिया गया। अतएव उसका विकास न हो सका। इसलिये मन और शरीर का संबंध तो निर्विवाद रूप से सिद्ध है। इस प्रकार शरीर के संगठन से मन का पता चलता है। यही हमारा और आप का सामुद्रिक शास्त्र है। आज भी पुलीस के महकमे में इसका अध्ययन आवश्यक समझा जाता है। प्रत्येक दारोग़ा को मनुष्य की पहचान का अभ्यास आवश्यक है। उसके लिये अपराधियों के फ़ोटो का अध्ययन अनिवार्य है। इस विषय में हमारे यहाँ प्राचीन काल में बहुत कुछ उन्नति हो चुकी थी। इसका प्रमाण हमें संस्कृत के नाटकों से मिलता है। समय पाकर इस विषय पर एक स्वतंत्र निबंध आप लोगों के सामने रखने का विचार है। यूनान में सुक़रात नाम का हकीम हो गया है। उसकी आकृति ऐसी थी कि एक सामुद्रिक शास्त्रज्ञ ने कहा था—तुम बहुत ही दुष्ट मनुष्य हो। इस पर सुक़रात ने कहा—"हाँ, मैं दुष्ट तो अवश्य होता। पर बहुत परिश्रम से मैंने अपनी स्वाभाविक प्रवृत्तियों का दमन कर लिया है।" इस प्रकार हमें मालूम होता है कि यूनान में भी सामुद्रिक शास्त्र की चर्चा थी। हमारी हस्तविद्या भी इसी सामुद्रिक शास्त्र के अंतर्गत है। पर धीरे-धीरे इसका एक और भी लक्ष्य आ उपस्थित हुआ। हम जानते हैं, मनुष्य विचारशील जीव हैं। पशु को खाने के लिये दीजिए। वह पेट-भर खा लेगा; पर उसके बाद भोजन की कुछ भी चिंता नहीं करेगा। पर मनुष्यों की बात कुछ और है। वे भर-पेट खाकर आगे के लिये भी संचय करते हैं। मधुमक्खी-जैसे कुछ छोटे जीवों में भी संचय की प्रवृत्ति देखी जाती है। फिर हम लोगों की बात ही क्या? हम लोगों को भविष्य की बहुत कुछ आशा रहती है। भूत और वर्तमान, दोनों ही से हमें भविष्य अधिक अच्छा मालूम होता है। कारण, हम भविष्य को अपने मन के मुताबिक़ गढ़ ले सकते हैं; पर वर्तमान और भूतकाल हमारे मन के परे रहते हैं। इसीलिये हम देखते हैं, सभी के सामने भविष्य ही का प्रश्न प्रधान है। कोई पूछता है, मेरे बेटा कब होगा, तो कोई पूछता है, मेरी नौकरी कब लगेगी। इसी प्रकार भविष्य का कुछ-न-कुछ प्रश्न सभी के मन को डावाँडोल कर रहा है। अतएव हस्तविद्या का दूसरा लक्ष्य भविष्य जानना भी हो गया है। क्रमशः यही लक्ष्य प्रधान हो उठा, और पहला गौण ही रह गया। पर शोक की बात है कि ऐसा प्रधान काम भड़ुरियों के हाथों में जा पड़ा

* यह लेख अगली किसी संख्या में छपेगा।—सु० सं०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है, जो इस शास्त्र के विषय में बिलकुल कोरे हैं, और जिनका काम झूठ-सच बोलकर लोगों को प्रसन्न करना ही है। अब यहाँ पर कुछ लोग यह प्रश्न कर सकते हैं कि भविष्य जानने से क्या लाभ है, जो हम इस शास्त्र के उद्धार के पीछे पड़ें ? प्रत्युत्तर में हमारा निवेदन है कि हम उन मनुष्यों में नहीं हैं, जो अपने को भाग्य का दास समझते हैं। हमारा तो विचार है कि हम भाग्य के विधाता हैं। हम जो काम करते हैं, उसका प्रतिफल हमें अवश्य ही मिलता है। हम यदि आग में उँगली डालते हैं, तो हमारी उँगली अवश्य ही जलेगी। हाँ. यदि हम जान जायँ, तो इसका उपचार कर सकते हैं। यदि हम-को यह मालूम है कि हमें कलकत्ते जाना है, तो वहाँ पहुँचने का उचित मार्ग ग्रहण कर सकते हैं। पर यदि हमें यह मालूम ही नहीं कि हमें कहाँ जाना है, तो हम कौन-सी तैयारी कर सकते हैं ? हम ऊपर बतला चुके हैं कि हमारे पूर्व जन्मों का फल इस जन्म में हमें मिलता है। इसे हम और आप संस्कार कहते हैं। हमारे यहाँ के दर्शनकार इसे संचित कर्म कहते हैं। हमारा शास्त्र इसी के विषय में बतला सकता है। हम इससे इतना ही जान सकते हैं कि किस समय हमारी शक्ति किस ओर सफल या कृतकार्य होगी। जब यह मालूम हो गया, तो हम इसके अनुसार काम कर सफलता पा सकते हैं। अवसर सदा नहीं आते रहते। यदि समय पर उनसे काम लिया जाय, तो सफलता नहीं मिल सकती। फिर "समय चूकि पुनि का पछिताने; का वरषा जब कृषी सुखाने।" की कहावत ही चरितार्थ होती है।

हस्तविद्या के रूप-रंग

ऊपर हम बतला चुके हैं कि हस्तविद्या का प्रादुर्भाव कैसे हुआ। अब यहाँ यह बतलाना है कि उसका रूप क्या है। बालक के जन्म ही के समय हम देखते हैं कि उसके हाथ में बहुत-सी रेखाएँ रहती हैं। हम इन्हीं रेखाओं का अध्ययन करते हैं। यही हमारी हस्तविद्या है। कुछ लोगों का कहना है कि गर्भावस्था में हाथ मोड़े रहने के कारण उनमें रेखाएँ पड़ जाती हैं, और इनका कोई अर्थ नहीं हो सकता। इसके उत्तर में हमारा कहना है कि ये सार्थक हैं, और इनके अध्ययन से हमें विशेष लाभ भी है। आप डॉक्टर के पास जाते हैं। वह आपके शरीर की परीक्षा कर आपके स्वास्थ्य और वयस के विषय में सार्टिफिकेट दे देता है। शीतला के दाग़ देखकर बतला देता है कि अमुक वर्ष में आप को शीतला का रोग हुआ था। ऊपर हम बतला चुके हैं कि शरीर और मन में अत्यंत घनिष्ठ संबंध है। अतएव इन रेखाओं का कुछ-न-कुछ मन से तो अवश्य ही संबंध है। कुछ तत्त्वज्ञों का कहना है कि हमारे हाथों में ग्रहों के भी स्थान हैं। जो बातें हमें फलित ज्योतिष से मालूम होती हैं, वे ही हस्त विद्या से भी मालूम हो सकती हैं। आप लोग भली भाँति जानते हैं कि हमारे जन्म-समय कहाँ तक ठीक होते हैं। प्रायः जन्म-समय बतलाने का काम अपढ़ दासियों के हाथ में पड़ता है। ये समय के विषय में कहाँ तक जानती हैं, सो तो सभी को भली भाँति मालूम ही है। इस प्रकार हमारी जन्म-कुंडलियाँ झूठी होती हैं। इसीलिये हमारी ज्योतिष की गणनाएँ निष्फल हो जाती हैं। पर हमारी हस्तरेखाओं में यह असुविधा नहीं है। यदि आप सावधानी से देखें, तो आपको पता चलेगा कि आप की हस्तरेखाएँ समय-समय पर बदलती रहती हैं। इस प्रकार फलित ज्योतिष का अध्ययन कुंडली की अपेक्षा कहीं अधिक अच्छा है। हमारी हस्त-रेखाओं में प्रधान आयुष्य, स्वास्थ्य, धन, भाग्य, संतान, भाई, बहन इत्यादि की रेखाएँ हैं। सबसे पहले हमें आयु देखनी है। कारण, यदि कम आयुवाले हैं, तो आगे देखना बिलकुल व्यर्थ ही है। यह रेखा तर्जनी और मध्यमा के बीच से लेकर कनिष्ठिका के नीचे तक फैली हुई रहती है। पाश्चात्य मत के अनुसार यह अंगुष्ठ और तर्जनी के बीच से पहुँचे के बीच तक फैली हुई रहती है। अस्तु, हम लोगों की जीवनी १०० वर्ष की है। अतएव आयु की रेखा को २०० भागों में बाँटकर हम आयु का पता लगा सकते हैं। बीच-बीच में यह रेखा कटी भी मालूम होती है। ये ही हमारे जीवन के ग्रह हैं। और भी बहुत-सी रेखाएँ हैं, जिनका हमें इस विषय में अध्ययन करना पड़ेगा। अस्तु, हमारा लक्ष्य हस्तविद्या की पुस्तक लिखने का नहीं है। कुछ मोटी-मोटी बातें ही यहाँ पर लिखी जाती हैं। कुछ लोगों का मत है कि पुरुष का दाहना और स्त्री का बायाँ हाथ देखना चाहिए। पर यह निरा भ्रम है। हमें दोनों हाथों का अध्ययन करना चाहिए। तब हम तथ्य तक पहुँच सकते हैं। स्पष्ट रेखाएँ अच्छी होती हैं।

अब प्रश्न यह है कि हस्तविद्या विज्ञान है अथवा कला। इस विषय में लोगों का मतभेद है। कुछ लोगों का

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहना है कि बहुत मनुष्यों के हाथों की परीक्षा कर कुछ तथ्य निकाले गए हैं। ये तथ्य विज्ञान नहीं कहे जा सकते। कारण, इनमें कार्य-कारण की परंपरा नियत नहीं की गई। केवल पूर्वापर नियत कर लेने से विज्ञान नहीं हो सकता। इस प्रकार इसका मूल्य कुछ भी नहीं है। इससे हम कुछ नियत और निश्चय नहीं बतला सकते। हम केवल इतना ही बतला सकते हैं कि संभव है, ऐसा हो। इसी संभाव्य ज्ञान को हम काम में लाते हैं। अतएव यह हस्त-विद्या अधूरी कला कहला सकती है। इसके प्रत्युत्तर में कुछ लोगों का कहना है कि इसमें कार्य-कारण-प्रणाली नियत है, और इससे हमें निश्चित ज्ञान हो सकता है। अतएव यह पूर्ण कला है।

हस्तविद्या का आधार

हमारे देखने में जितनी कलाएँ हैं, सबका आधार कोई-न-कोई विज्ञान ही है। शिक्षा एक कला है, इसका आधार है बाल-विज्ञान। वैद्यक एक कला है, इसके आधार हैं पदार्थ-शास्त्र और उद्भिद्-शास्त्र। इसी प्रकार सभी कलाओं का आधार विज्ञान है। हम लोगों के जीवन में कुछ समस्याएँ उठती हैं। उनके हल करने के लिये हम कुछ काम करते हैं। यही हमारी अधूरी कला होती है। आगे बढ़कर अपने काम के लिये हम कुछ नियम बना लेते हैं, और यही नियमबद्ध काम कला के नाम से पुकारा जाता है। एक उदाहरण देकर इसे स्पष्ट करते हैं। मनुष्य स्वभाव ही से अनुप्रास चाहता है। बालक जब पहले-पहल बोलता है, तो एक ही अक्षर के दोहराने में उसका मन बहुत कुछ लगता है। जैसे बाबा, काका, मामा इत्यादि शब्दों की व्युत्पत्ति होती है। आगे बढ़कर "बबुआ रे बबुआ लाल ढेबुआ" इत्यादि तुकबंदियों का प्रादुर्भाव होता है। क्रमशः पिंगल के नियम बनने लगते हैं, और ये तुकबंदियाँ पिंगल से जकड़ी जाकर पद्य के रूप में परिणत हो जाती हैं। इसी प्रकार हमारी हस्तविद्या की भी कहानी है। पहले भविष्य जानने की उत्सुकता से लोग हाथ देखने में लग गए। आगे बढ़कर कुछ नियम निकाले गए, और क्रमशः यही हाथ देखना हस्तविद्या की कला के रूप में परिणत हो गया। अब देखना है कि हस्तरेखा और भविष्य-ज्ञान में कोई कारण-कार्य-संबंध है या नहीं। यह नियत करने के पहले हम मनोविद्या के कुछ तथ्यों का पर्यवेक्षण करेंगे। पहला तथ्य तो हम ऊपर ही बतला चुके हैं कि हम मन की बात भाव-भंगियों द्वारा जान सकते हैं। इसी तथ्य पर हमारी हस्तविद्या निर्भर है। हम यह जानते हैं कि हमारे मन के भावों का संस्कार मस्तिष्क पर अवश्य ही पड़ता है। जिस प्रकार काग़ज़ को एक-दो बार एक ही प्रकार से मोड़ने पर उसमें कुछ संस्कार हो जाते हैं कि फिर उसी प्रकार मुड़ता है, ठीक उसी प्रकार हमारे मस्तिष्क में भी भावों के संस्कार पड़ जाते हैं। हमारे शरीर में नाड़ियों का अंतर्जाल फैला हुआ है। क्रियात्मिका और ज्ञानात्मिका, दो प्रकार की नाड़ियाँ हमारे लिये दिन-रात काम कर रही हैं। अब देखना है कि ये नाड़ियाँ वास्तव में क्या हैं, और किस प्रकार अपना-अपना काम करती हैं। यहाँ पर हम यह बतला देना ठीक समझते हैं कि हमारे शरीर में ग्यारह इंद्रियाँ मौजूद हैं। इनमें आँख, कान इत्यादि पाँच ज्ञानेंद्रियाँ; मुख, हाथ इत्यादि पाँच कर्मेंद्रियाँ और मन उभयेंद्रिय है। कल्पना कीजिए, हमारी आँखों के सामने एक गुलाब का फूल है। गुलाब के फूल की कलियों में गुलाबी रंग है। इस रंग में छोटे-छोटे कण हैं। इन कणों से वायु-मंडल में तरंगें उठती हैं। ये तरंगें जाकर आँखों की नाड़ियों से टकराती हैं। नाड़ियाँ मस्तिष्क से लगी हुई हैं, जिससे मस्तिष्क को इस खड़खड़ाहट की ख़बर मालूम होती है। यह काम ज्ञानात्मिका नाड़ियों का है। अब मन उसे गुलाब का रूप देता है। कारण, उसने पहले ऐसे पदार्थ देखे हैं, और वह जानता है कि ऐसे पदार्थ को गुलाब कहते हैं। यह उभयेंद्रिय का काम है। अब यह ख़बर क्रियात्मिका नाड़ी से मुख को मिलती है, और वह बोल उठता है—"वह कैसा सुंदर फूल है! परमात्मा की कैसी लीला है!" यह हमारी क्रियात्मिका नाड़ी का काम है। क्रियात्मिका नाड़ियों में हाथ की बड़ी भारी प्रधानता है। एक दर्शनकार का कहना है कि मन के सभी भाव हाथों के द्वारा बतलाए जा सकते हैं। हम देखते हैं, प्रायः सभी गूँगे अपने भाव हाथों के इशारों ही से प्रकट करते हैं। यही नहीं, हम लोग भी बोलने के पहले यंत्रवत् अपने हाथों के इशारे बतला देते हैं। इसका क्या कारण है। यह जानने के लिये हमें शरीरविद्या का आश्रय लेना पड़ेगा। यदि आप अपनी हथेलियों की भली भाँति परीक्षा करें, तो आप को मालूम होगा कि आप की हथेलियाँ नाड़ियों से भरी हुई हैं। इन नाड़ियों का संबंध हमारे मस्तिष्क से है। इस प्रकार हम देखते हैं कि मस्तिष्क की सभी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नाड़ियाँ हथेलियों से मिली हुई हैं। अतएव मस्तिष्क के सभी संस्कार हथेलियों पर साफ़-साफ़ प्रकट होते हैं। इस प्रकार यदि हम इन चिह्नों का पढ़ना जान जायँ, तो हम मन की सभी बातों का पता लगा सकते हैं। पुलीस-महकमे को अँगूठे की छापों पर बहुत कुछ विश्वास है। लोगों का कहना है कि चाहे और किसी में जालसाज़ी भले हो जाय, पर अँगूठे की छापों में जालसाज़ी कभी नहीं हो सकती। यह बात सभी कोई जानते हैं। पर इसका रहस्य क्या है, इस पर बिरले ही मनुष्यों ने विचार किया होगा। यहाँ तक कि यदि पुलीसवालों से भी इस विषय में पूछा जाय, तो कदाचित् वे यही कहेंगे कि ऐसा होता आया है, इसीलिये हम भी ऐसा करते हैं। भारतवर्ष की अंध-परंपरा का एक यह भी प्रमाण है। वास्तव में कारण यह है कि मस्तिष्क का प्रभाव हथेलियों पर पड़ता है। भिन्न-भिन्न मनुष्यों के मन भिन्न-भिन्न होते हैं। किन्हीं दो मनुष्यों का मन एक-सा नहीं होता। अतएव उनकी हथेलियों में भी कुछ-न-कुछ विभिन्नता अवश्य ही पाई जाती है। इसलिये अँगूठे की छापों में जालसाज़ी नहीं चल सकती। इस प्रकार यह तो जान चुके कि हस्तरेखा से हम मन की बात जान सकते हैं; पर आपत्ति तो यह है कि हस्तरेखाओं से हम तीनों काल की बात कैसे जान सकते हैं? इसके प्रत्युत्तर में हमें यही कहना है कि मनुष्य की उपचेतना में तानों काल वर्तमान रहते हैं। यद्यपि हमें केवल वर्तमान का सचेतन ज्ञान है, तथापि उपचेतना में हमें मन और भविष्य, दोनों ही का ज्ञान होता है। यही कारण है कि हम सपने में भूत और भविष्य भी प्रत्यक्ष करते हैं। इसे पूर्ण रूप से समझाने के लिये यहाँ स्थान नहीं है। समय पाकर 'उपचेतना और त्रिकाल के ज्ञान'-शीर्षक लेख में हम इस विषय की चर्चा करेंगे। विषय बड़ा ही रोचक है। योग, मानसिक तार इत्यादि करिश्मे इसी के अंतर्गत हैं। आजकल मनोवैज्ञानिकों का इस ओर बहुत कुछ ध्यान है। इस प्रकार हम देख चुके कि हमारी हस्तविद्या का आधार मनोविद्या है। अतएव यह पूर्ण कला कहला सकती है। हमें इसकी उपेक्षा नहीं, इसका आदर करना चाहिए।

उपसंहार

हमारे यहाँ की बहुत-सी प्राचीन विद्याएँ लुप्त होती जाती हैं। हमें इसका कारण जानना चाहिए। साथ-ही-साथ उन लुप्त विद्याओं के उद्धार के उपाय भी निकालने का यत्न करना उचित मालूम होता है। प्राचीन काल में आज-कल की-सी छपी पुस्तकें न थीं। विद्या का ज्ञान गुरुओं की सेवा से प्राप्त होता था। गुरु भी हम मास्टरों के समान दो-चार रुपए के ट्यूशन के लिये टके कोस नहीं दौड़ते रहते थे। विद्या बेचना उस समय पाप समझा जाता था। केवल अधिकारियों ही को विद्या दी जाती थी, जिसमें विद्या कलुषित न हो जाय। अधिकारी जाँचने के लिये भी कड़ी-से-कड़ी परीक्षाएँ होती थीं। यह बात तो बहुत ही अच्छी थी। पर क्रमशः रंग-ढंग बदलते गए, और अधिकारी नियत करना बंद हो गया। गुरु अपनी विद्या अपने ही पास रखने लगे, जिसमें विद्या में किसी प्रकार का दोष न आ जाय। इस प्रकार धीरे-धीरे हमारी विद्याएँ लुप्त होती गईं। यही हालत हमारी हस्तविद्या की भी हुई। अब तो यह कुछ थोड़े गुरुओं ही के पास रह गई है। हमारा काम है कि इन गुरुओं से विद्या प्राप्त कर हम इसका चारों ओर प्रचार करें। अन्यथा इसका नाम तक न रहेगा।

"बाण"

सुंदरी

(१)

अयि विमुक्त-कुंतले ! तुम्हारी,
अति सुंदर यह चंपक-मूर्ति,
सुप्त प्राण में संजीवनि-सी,
रह-रह देती स्नेह-स्फूर्ति।
चिर-सुवर्ण, जीवन यौवन का—
प्रेम-पल्लवित बाल-वसंत,
भरता है सुकुमार हृदय में,
कवि-कौशल के भाव अनंत।

(२)

तुम लज्जा-विनोद से मुख पर,
जब ढक लेती हो घूँघट,
मैं बहता हूँ मोह-स्रोत में,
पाता हूँ न मुक्ति का तट।
किंतु फेरती हो करुणामयि,
जब सुंदर उन्मत्त नयन,
मैं अनंग-सा कर लेता हूँ,
शत आकर्षण-आलिंगन।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(३)

देवि, तुम्हारी चंचलता से,
सभी ओर है मेरी जय ;
सुंदर स्वप्न, मुक्त तव जीवन,
अति रमणीक रहस्य-निलय।
चित्रकार के चित्रित पथ पर,
तुम मुसकाती हो सत्वर ;
यह है कौन मंत्र, मायाविनि !
यह कैसी लावण्य-लहर।

(४)

सुरबाला-सी घूम रही हो,
केलि-कला-उत्सव में झूम ;
विहँस रही है वसुंधरा यह,
गजगामिनि, तव पद-रज चूम।
सती, तुम्हारी रूप-राशि पर,
सहसा शिव-समाधि भी भंग ;
फैल रहे हैं गात-गगन में—
कोटि-कोटि मनमोहक रंग।

(५)

आओ मेरी कुसुम-कुटी में,
सुंदर सुधा-पात्र भरकर ;
मैं बैठा हूँ भक्त-साधु-सा,
इस दुनिया में मौन अमर।
भूल गया हूँ विश्व, युगांतर,
भूल गया हूँ तन-मन-धन ;
आज तुम्हारे हाथ बिका है,
यह मेरा समस्त यौवन।

"गुलाब"

अरुणोदय

राधा है प्राची दिशा, कृष्ण मनो रवि बाल ;
आवत, ताके बदन पै फेकत उषा-गुलाल।

जगन्नाथप्रसाद खत्री "मिलिंद"

पाश्चात्य सभ्यता के कुछ गुण

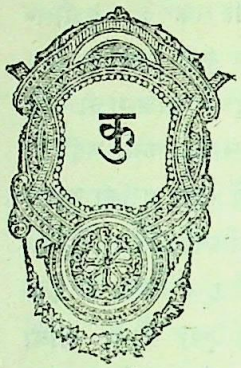

छ बातों का, जो पाश्चात्य सभ्यता में भारतवर्ष के वास्ते अच्छी हैं, मैं आज यहाँ पर उल्लेख करता हूँ।

पाश्चात्य देशों में मनुष्य-मनुष्य में कोई भेद-भाव नहीं, सब एक समान माने जाते हैं। कुछ महीने हुए, जब मैं लंदन में 'रीजेंट स्ट्रीट' की सैर कर रहा था, तो मैंने देखा कि भीड़ के साथ फ़ुट-पाथ में लायड जॉर्ज साहब तशरीफ़ ले जा रहे थे। जैसे और ग़रीब लोग चल रहे थे, वैसे ही उनको भी चलना पड़ रहा था। यह नहीं कि लोग उनके वास्ते रास्ता छोड़ दें, या कोई हड़बड़ी मचे। "बड़े साहब आ रहे हैं, हटो-हटो" की आवाज़ कहीं भी नहीं सुनाई पड़ी।

एक रोज़ 'टाटनहाम कोर्ट' के 'लिफ़्ट' से हम लोग नीचे उतर रहे थे। ट्यूब रेलवे में सफ़र करने के लिये 'लिफ़्ट' के आदमी ने 'लिफ़्ट' का आधा दर्वाज़ा बंद किया ही था कि इतने में एक अँगरेज़ अपनी मेम को लिए आ पहुँचा। लिफ़्टवाले ने कहा—"ठहर जाओ, दूसरी मर्तबे के 'लिफ़्ट' में जाना।" उसने कहा—"इसी में क्यों नहीं ले जाते?" उत्तर मिला—"बहस मत करो।" और 'लिफ़्ट' नीचे चला दिया गया। 'साहब बहादुर' अपनी मेम को लिए ताकते रहे। शायद दिल में सोचते होंगे कि भारत न हुआ। छः महीने की फाँसी तो कम-से-कम 'लिफ़्टमैन' को देते।

कुछ दिनों की बात है, मैं यहाँ सिनेमा देखने गया। यहाँ का यह क़ायदा है कि जब टिकट लेने जाते हो—रेल, सिनेमा, थिएटर या और किसी चीज़ का—और भीड़ होती है, तो धक्कमधक्का शुरू नहीं कर सकते। जैसे लोग आते-जाते हैं, वैसे ही एक के पीछे एक खड़े हो जाते हैं, और ज्यों-ज्यों आगे जगह ख़ाली होती जाती है, वैसे आगे बढ़ते जाते हैं। इसको कहते हैं 'क्यू' (Queue)। मान लीजिए, आपका नौकर आपसे एक क़दम आगे की पंक्ति में है। जब तक वह टिकट न

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ख़रीद लेगा, तब तक आप नहीं ख़रीद सकते। उसके पीछे-पीछे आपको चलना होगा। मेरे पीछे एक आई० सी० एस्० (रिटायर्ड) थे। उनको कुछ जल्दी थी। मुझसे कहने लगे—"मैं आगे आ जाऊँ, कोई उज़्र तो नहीं है?" मैंने कहा—"मुझे तो बड़ा उज़्र होगा, अगर आप ऐसा कीजिएगा।" ताव में आकर उन्होंने अपनी जगह छोड़ दी, और आगे लपके। चपरासी ने डाँट बतलाई, और सबसे पीछे खड़ा कर दिया।

भारत में 'क्यू' की बड़ी ज़रूरत है। तीसरे दर्जे के टिकट-घर में और थिएटरों में तो इसकी बड़ी ज़रूरत है। बड़ी आसानी से लोग 'क्यू' बनना सीख सकते हैं और इससे सबको बड़ा सुबीता होगा।

यहाँ पर ट्राम के पीछे भद्र पुरुषों की दौड़ (मर्द और औरत दोनों) का अच्छा नज़ारा रहता है। क्या मजाल कि ट्राम किसी के वास्ते रुके। सिर्फ़ अपनी जगह में रुकेगी, वरना चलती जायगी। तीन-चार रोज़ हुए, मेरे एक मित्र लंदन से यहाँ आए थे। कहते थे कि 'बार-रूम' में हिंदुस्तानी बारिस्टर और अँगरेज़ी बारिस्टर बिलकुल भाई-भाई की तरह मिलते हैं। सर जॉर्ज लायड्स भी, जो गवर्नर-जनरल की 'इक्ज़ीक्युटिव कौंसिल' के 'लॉ' मेंबर रह चुके हैं, 'बार-रूम' के मेंबर हैं। हम लोग उन्हें 'लाऊनदिस' कहकर पुकारते हैं, भारत में अगर यह बात होती, तो शायद १४४ धारा लग जाती। यहाँ असल में बात यह है कि लोग जानते हैं, जब तक मनुष्य-मनुष्य में भेद रहेगा, तब तक ग़ुलामी रहेगी। अगर एक मनुष्य रुपए-पैसे में ताता है, दूसरा अक़्ल में बोस है, तीसरा आत्मिक बल में गांधी है, और चौथा ताक़त में राममूर्ति है, तो वे उनकी इन शक्तियों को मानेंगे। कहेंगे, वास्तव में ये शक्तियाँ तारीफ़ के लायक़ हैं। लेकिन उनके बच्चों की, या उनके रिश्तेदारों की कभी तारीफ़ नहीं करेंगे। भृगु महर्षि की तारीफ़ करेंगे, लेकिन भृगु महर्षि की तमाम संतान की तारीफ़ नहीं करेंगे।

हमारे यहाँ के प्राचीन ब्राह्मणों में अनेक गुण थे, इसलिये वे बड़े माने गए। आज उनकी संतान में कोई गुण नहीं है, फिर भी उसको यह घमंड है कि हम बड़े हैं। इससे हमारे समाज में बड़ी बुराइयाँ आ गई हैं। अगर आप अपने को बड़ा समझते हैं, तो दूसरा अपने को सबसे बड़ा समझता है। बस, इसी 'बड़प्पन' की लड़ाई ने सारे हिंदू-समाज को ख़ाक कर दिया है। अगर आप किसी को दबाइएगा, तो आपको कोई दूसरा दबावेगा। इसी तरह से दबाने की ज़ंजीर लंबी और दृढ़ होती जायगी। पटवारी ने गाँववालों को दबाया, तहसीलदार ने पटवारी को दबाया, डिपुटी कलेक्टर ने तहसीलदार को दबाया, डिपुटी कमिश्नर ने डिपुटी कलेक्टर को दबाया, कमिश्नर ने डिपुटी कमिश्नर को, गवर्नर ने कमिश्नर को, गवर्नर-जनरल ने गवर्नर को, भारत-मंत्री ने गवर्नर-जनरल को, प्रधान मंत्री (Prime Minister) ने भारत-मंत्री को, पार्लियामेंट ने प्रधान मंत्री को, और विलायत के वोटरों ने पार्लियामेंट को। बस, आप लोगों का 'बड़प्पन' और इज़्ज़त सब विलायत के चपरकनातियों के हाथ में है। अब अगर यह क़ायदा बना दिया जाय कि मनुष्य-मनुष्य में कोई भेद नहीं है, तो क्या ही अच्छा हो। न पटवारी गाँववालों को दबावेगा और न विलायतवाले आपको दबा सकेंगे। पटवारी और मंत्री, मनुष्य के नाते से, एक हो जायँगे। अपने काम की ज़िम्मेदारी पटवारी के ऊपर है और अपने काम की मंत्री के ऊपर। मज़े में काम चलता जायगा, और फिर भारतवासियों का घरेलू बड़प्पन ख़तम हो जायगा। बाहरवाले तो भारतवासियों को सिर्फ़ 'निगर' (हबशी) समझते हैं, और भारतवासियों को 'डेढ़ घर' 'और ढाई घर' से फ़ुरसत नहीं! जब तक मनुष्य के नाते से एकता नहीं होती, तब तक स्वराज्य वग़ैरह की कोई ज़रूरत नहीं। न स्वराज्य मिल सकता है और न यह धोके की टट्टी स्वराज्य चाहिए ही। आपस में तो ऊँच-नीच का ख़्याल, और अँगरेज़ों से बराबरी, जिन्होंने चार समुद्र पार करके अपना सिक्का चलाया है! जब तक हम पश्चिम से यह न सीखेंगे कि मनुष्य और मनुष्य में कोई फ़र्क़ नहीं है, तब तक हम लोगों के उद्धार की कोई आशा नहीं।

दूसरी बात यहाँ पर जो ग़ौर करने की है, वह 'स्त्रियों की स्वतंत्रता' है। यहाँ यह कहावत मशहूर है कि "समाज की उन्नति या अवनति तुम स्त्रियों की स्वतंत्रता से जान सकते हो।" स्वतंत्रता जितनी अधिक होगी, उतना ही समाज ऊँचा होगा। यहाँ की स्त्रियों ने स्वतंत्रता के माने ग़लत लगाए हैं। बाल कटाना, घुटनों के ऊपर तक का लहँगा पहनना, छाती खोल के चलना, नाचना, शराब और सिगरेट पीना, ये सब स्वतंत्रता के चिह्न समझे जाते हैं। कुछ समझदार औरतें इसके ख़िलाफ़ लिख रही

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हैं; लेकिन नक़ारख़ाने में तूती की आवाज़ की तरह उनकी बात सुनता कौन है! स्त्रियों का राज्य पूरा है, जो चाहती हैं, सो करती हैं। लेकिन तब भी यह मानना पड़ेगा कि व्यभिचार इनमें कुछ ज़्यादा नहीं है। भारत में इनके बारे में बहुत ग़लत ख़्याल है। यहाँ पर आने से सब बातें ठीक-ठीक मालूम पड़ती हैं। यहाँ की स्त्रियाँ हमारे यहाँ की औरतों से ज़्यादा काम करती हैं, और जब फ़ुरसत मिलती है, तब अख़बार या किताब पढ़ा करती हैं। हमारे यहाँ की औरतों का तो हाल ही न्यारा है। बेचारियाँ एक से दूसरी शादी नहीं कर सकती हैं, मर्द चाहे जितनी शादियाँ कर लें। औरतों के वास्ते पातिव्रत धर्म है, लेकिन मर्दों के वास्ते कोई पत्नीव्रत धर्म नहीं। यहाँ की औरतें हम लोगों को 'जंगली' कहती हैं। और, अगर सोचिए, तो हम लोग सचमुच ही जंगली हैं, अपने वास्ते तो कोई रोक-टोक नहीं, लेकिन औरतों के वास्ते एक हज़ार एक श्लोक इसीलिये रचे गए कि वे यह न करें और वह न करें। बहुत-सी औरतें यहाँ ख़ुद कमाती हैं। कोई नर्स है, तो कोई टाइपिस्ट। और-और भी बहुत तरह के रोज़गारों में वे लगी हुई रहती हैं। अपाहिजों की तरह हाथ-पर-हाथ नहीं धरे रहतीं। अगर मर्द ने एक बार भी ज़्यादती की, तो एक धमकी में मिज़ाज दुरुस्त। जब तक औरतों की इज़्ज़त न होगी, तब तक हम लोगों की पूरी जागृति भी न होगी। तीसरी बात यहाँ ग़ौर करने की यह है कि औरत हो या मर्द, ये लोग बच्चों को बड़ा प्यार करते हैं। जितना पाश्चात्य देशों के लोग बच्चों को प्यार करते हैं, उतना संसार में और कोई क़ौम नहीं करती। सुबह-शाम गाड़ियों (Perambulators) में बिठालकर 'फ़ुट-पाथों' में घुमाया करते हैं और ऐसे अच्छे बना रखते हैं कि प्यार करने के वास्ते दिल मचल उठता है। एक सज्जन पुरुष से मैंने इसका सबब पूछा। कहने लगे, हम लोग मानते हैं कि ईश्वर का सबसे अधिक अंश बच्चों में है; क्योंकि उनको पाप का ज्ञान नहीं है। ईश्वर के रिश्ते से हम उनको सबसे अधिक प्यार करते हैं।

चौथी बात यह है कि यहाँ के पुरुषों का प्रेम जानवरों पर भी कुछ कम नहीं है। उन्हें वे अपने से ज़्यादा प्यार करते हैं। उनके वास्ते ख़ास क़ानून बने हुए हैं। आप एक आदमी की नाक तोड़ दीजिए। बहुत होगा, डेढ़-दो रुपया जुर्माना हो जायगा। पर एक बिल्ली को मार डालिए, या उसका कान काट डालिए, तो ७५) का जुर्माना ठुक जावेगा। भारत में जितने लोग गउएँ पालते हैं, उनमें से ९० फ़ी सदी को यहाँ जुर्माना हो जाय। यहाँ के लोग कहते हैं, जानवर मनुष्य के शरण हैं, इसलिये उनकी रक्षा करना मनुष्य का धर्म है। मारकर खा जाने में कोई दोष नहीं मानते। कहते हैं, इसमें जानवर को कोई कष्ट नहीं होता। हलाल करना यहाँ क़ानून के ख़िलाफ़ समझा जाता है।

यहाँ के मामूली कुली-कबाड़ी को देखिए, 'पाइप' लगाए हुए काम में जुटा है। इंजीनियर आवे या गवर्नर, 'पाइप' मुँह में है, और बातें हो रही हैं। क्या मजाल कि इंजीनियर के मुँह से कोई सख़्त अलफ़ाज़ निकल जायँ। एक रोज़ मैं अपने बैंक में गया। खिड़की के पास खड़ा हुआ क्या देखता हूँ कि बुड्ढा मैनेजर, जो कोई ६० वर्ष का होगा, एक २० वर्ष की लड़की (जो उसी बैंक में क्लर्क है) के साथ नाच रहा है। मुझे देखते ही काम में आ डटा। किसी दफ़्तर में जाइए, 'बड़े साहब' का पता ही नहीं चलता। सब 'बड़े साहब' हैं। कोई मज़ाक़ कर रहा है, कोई 'पाइप' पी रहा है, चाहे 'बड़े साहब' वहीं बैठे हों। काम सामने आया कि जुट गए, 'बंदगी', 'माई-बाप' की यहाँ ज़रूरत नहीं। अकड़ के साथ चलिए, और अकड़ के साथ बात कीजिए। बीच-बीच में 'प्लीज़' और 'थैंक' काम में ले आइए। कोई दिक़्क़त नहीं। कुछ अर्सा हुआ, एक संयुक्त-प्रांत का बड़ा अफ़सर (काला यानी भारतीय) यहाँ आया। उसने सबको सलाम झुकाई और 'सर' की रट से डबलिन का नातक़ा बंद कर दिया। लोग पूछने लगे, यह बिना दुम का जानवर कहाँ से आया? लाख समझाया कि यहाँ का यह क़ायदा नहीं है, सबको अपने बराबर साथ समझकर उनसे पेश आओ। कहने लगे—"बाल सफ़ेद हो गए हैं, सरकार की नौकरी में हज़ार से ऊपर की जगह में पहुँच गए हैं, आज हमसे कहते हो इनकी बराबरी करो? अरे भाई, यह सरकार है, और हम हैं रिआया। भाड़ में जायँ दोनों, मेरी तो यह राय है।"

डबलिन
१० जनवरी, २७ } देवीदत्त पंत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उम्मेदवार

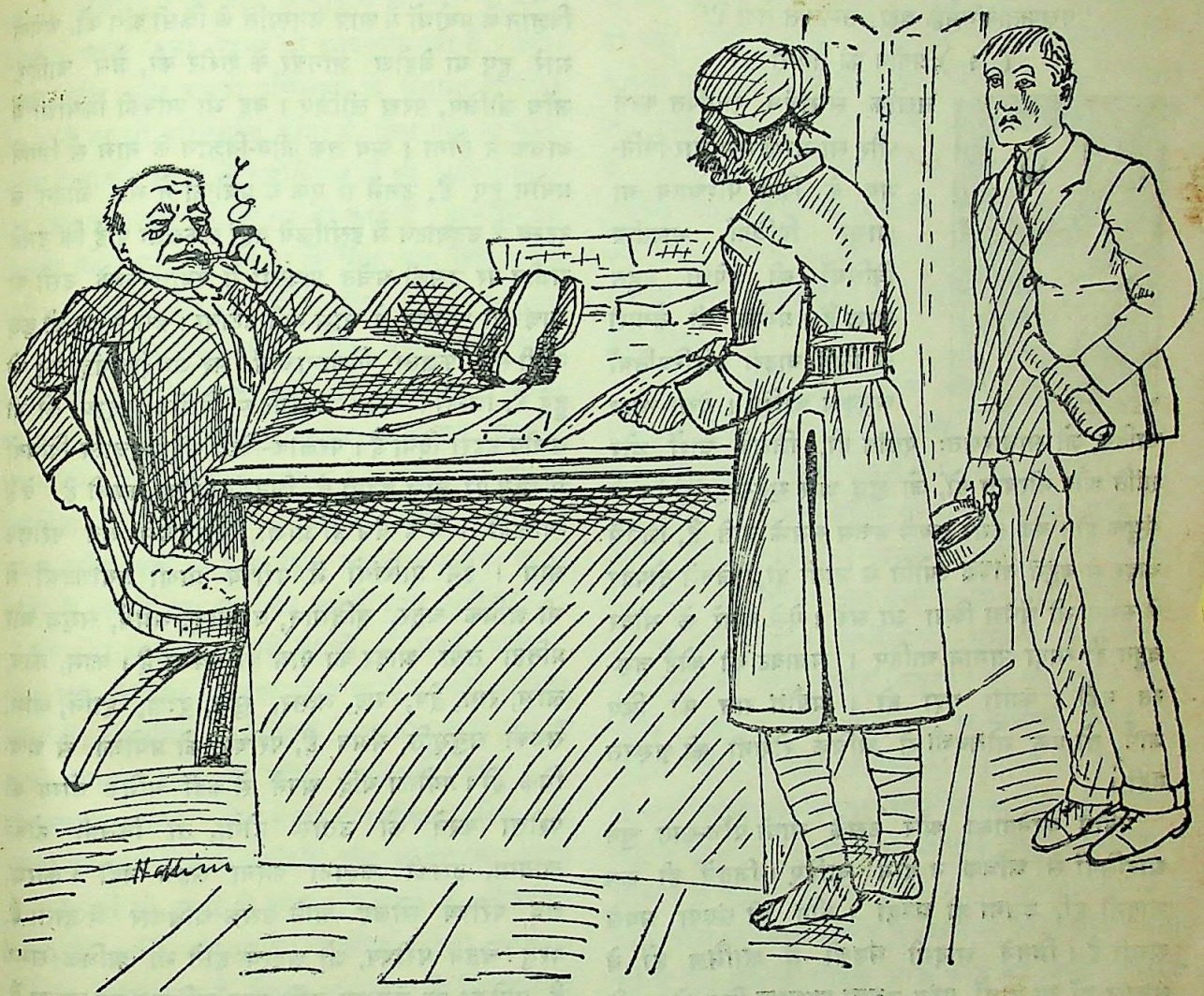

मोस्ट रिलैबिल सोर्स से जान के पोस्ट, लिखा एक ऐपलीकेशन ;
प्यून को पूजा औ' पैरों पड़े, तब पेश कराया निकाल रिलेशन ।
ये कहा साहब ने—करो वेट, है मैटर अंडर कंसीडरेशन ;
झाँकते आड़ ही से हैं खड़े-खड़े, ताकते हैं इन ऐंटीसिपेशन ।

"हितैषी"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परलोक

५. पाश्चात्य प्रयोग-विधियों का विवरण

"पक्षपातविनिर्मुक्तं ब्रह्म सम्पद्यते तदा।"

(१) प्रयोग की तैयारी

परलोक से संबंध स्थापित करने और साधारण समाचार-विनिमय के लिये पाश्चात्य या आसुर विधियाँ भारतीय विधियों की अपेक्षा बहुत सरल हैं। प्रयोग की तैयारी के लिये बाहरी परिस्थितियाँ अनुकूल चाहिए। ऐसा स्थान चाहिए, जो साधारणतः एकांत हो, जिसके चारों ओर शांति और नीरवता हो, जो शुद्ध और मृदु-मधुर सुगंध से संयुक्त हो। बंद कमरे सबसे उत्तम समझे जाते हैं, जिनमें बाहर से बहुत तीक्ष्ण ज्योति न जाती हो, जिनमें दोपहर के समय भी अँधेरा किया जा सके। ऐसे कमरे के भीतर बहुत ही सादा सामान चाहिए। सजावट की कोई ज़रूरत नहीं। कमरा बड़ा हो। प्रयोग रात को किए जायँ, तो एक मोमबत्ती से अधिक रोशनी की ज़रूरत नहीं।

प्रयोग करनेवाला और उसके साथी पाँच-सात चुने आदमियों से अधिक न होने चाहिए। जितने ही कम आदमी हों, उतना ही अच्छा। तीन की संख्या सबसे अच्छी है। जितने आदमी मंडली में शामिल हों, वे श्रद्धालु हों या न हों, परंतु उनका आचरण शिष्ट हो। यदि कोई परीक्षा करनी हो, तो परीक्षा या यंत्र की सामग्री बहुत थोड़ी होनी चाहिए।

प्रयोक्ताओं को यह बराबर ध्यान रहे कि हम इस प्रयोग-विधि में पारलौकिक व्यक्तियों से काम ले रहे हैं। रसायन, भौतिक आदि विज्ञानों के प्रयोग निर्जीव पदार्थों पर होते हैं। उन्हें जैसे चाहिए, वैसे काम में लाइए; एक शीशी से दूसरी में रखिए। तराज़ू पर रखकर तोल डालिए। पानी में घोल दीजिए। उबाल डालिए। आँच में तपाइए। खरल कर डालिए। पीस डालिए। निदान निर्जीव पदार्थों का आप जो चाहें, कर सकते हैं। ताप, शब्द, प्रकाश, चुंबकत्व, तड़ित् आदि के प्रभाव की जाँच कर लीजिए। अणुवीक्षण-यंत्र के सहारे बारीक निगाह से देख लीजिए। दूरबीन से दूर से भी देख सकते हैं। निर्जीव पदार्थ आपकी किसी क्रिया में बाधक न होगा। जीव-विज्ञान के प्रयोगों में आप वनस्पति के किसी अंग को, अथवा मारे हुए या बेहोश जानवर के शरीर को, जैसे चाहिए, जाँच लीजिए, परख लीजिए। वह भी आपकी क्रियाओं में बाधक न होगा। अब तक जीव-विज्ञान के नाम से जितने प्रयोग हुए हैं, उनमें से एक के प्रयोक्ता ने भी 'जीवन' के रहस्य के उद्घाटन में इसीलिये नहीं सफलता पाई कि उसने सजीव पर उसकी सचेत अवस्था में प्रयोग करके उसी की साक्षी या अनुभव से लाभ नहीं उठाया। इस प्रकार की कुछ थोड़ी-सी सफलता विज्ञानाचार्य सर जगदीशचंद्र वसु को हुई है, जिन्होंने अपने प्रयोगों से निर्जीव पदार्थों को भी सजीव ठहरा दिया है। परलोक-विद्या की पाश्चात्य विधियों में जिन पर जाँच करनी है, जिनकी परीक्षा करनी है, वे हैं व्यक्तियाँ। वे हैं वैसे ही प्राणी, जैसे हम सब परीक्षक लोग। इन प्राणियों में परीक्ष्य प्राणी प्रयोक्ताओं से भी अधिक चतुर, बुद्धिमान्, बलवान्, समर्थ, समृद्ध और प्रतिष्ठा तथा आदर का पात्र हो सकता है। काम, क्रोध, लोभ, राग, द्वेष, मद, मत्सर, सुख, दुःख, हानि, लाभ, सबकी अनुभूति, संभव है, परीक्ष्य को प्रयोक्ता से अत्यधिक हो। प्रयोक्ता यदि अपने से कहीं अधिक योग्य की परीक्षा करने को उतारू होगा, तो कितनी ठोकरें खायगा, इसकी कल्पना करना सहज नहीं। कारण, जड़ परीक्ष्य सोलह आने उसके अधिकार में होता है, परंतु चेतन परीक्ष्य, जो अदृश्य होते भी अधिक समर्थ है, प्रयोक्ता पर लगभग उसी तरह अधिकार कर सकता है, जिस तरह प्रयोक्ता जड़ पदार्थों पर अधिकार रख सकता है। यह परीक्ष्य चाहे तो संबंध उलट दे, और प्रयोक्ता को ही अपना परीक्ष्य बना ले। इसी हाड़-मांस के संसार में किसी भले-मानुस को बुलाकर आप अपनी परीक्षाओं का पात्र बनाना चाहें, तो वह क्यों राज़ी होगा, वह क्यों अपमान स्वीकार करेगा? यदि आप अपनी यह इच्छा उसे जता दें, तो वह आपके निमंत्रण पर आना ही स्वीकार न करेगा। ऐसा अपमान स्वीकार भी करे, तो शायद किसी भारी स्वार्थ के लोभ से। परंतु इस तरह रिशवत देकर परीक्षा करने में सत्य ज्ञान की उपलब्धि नहीं हो सकती। परलोक-संबंधी ज्ञान पाने के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लिये परलोकगत किसी ऐसे मित्र, बंधु या गुरु की सहायता चाहिए, जो निःस्वार्थ भाव से मर्त्यलोकी को ज्ञान-संपादन कराने में सच्चा रस (या शौक़) रखता हो। फिर उसके साथ यह भी कठिनाई है कि मरने के बाद के स्वभाव का मरने के पूर्व के सदृश बना रहना भी आवश्यक नहीं है। मनोविकार शरीर और उसकी परिस्थिति के अनुसार ही होते हैं। मरने पर जो परिस्थिति होती है, जिस तरह के सूक्ष्म शरीर में प्राणी रहता है, मनोविकार में भी उसी के अनुसार तारतम्य और विभेद पड़ ही जाते हैं। इसलिये यह निश्चय नहीं कहा जा सकता कि मित्र, बंधु, हितैषी, गुरु आदि का भी स्वभाव या बर्ताव ठीक मृत्यु के पूर्व का-सा ही बना होगा। मनुष्य के पार्थिव जीवन में ही लोगों में बराबर बनती-बिगड़ती रहती है। बर्ताव सदा एकरस नहीं रहता। इन बातों का विचार करके इस तरह के प्रयोगों में बड़ी सावधानी चाहिए। परान्वेषण-परिषत् की आरंभिक परीक्षाओं में इन बातों पर विचार न करने के कारण अनेक भूलें हुईं और बहुत काल तक परीक्षा करते-करते भी पारलौकिक ज्ञान की कमाई बहुत थोड़ी रही।

जो लोग प्रयोग करने की तैयारी करें, उनमें पक्षपात-रहित शुद्ध जिज्ञासा का भाव होना चाहिए। कोरे मौखिक शास्त्रार्थी, काल्पनिक तर्क-वितर्क के वाग्मी, बाज़ी लगाकर ज्ञान संपादन करने का दावा रखनेवाले "स्वयं धीराः पण्डितम्मन्यमानाः," लोग न तो वास्तविक प्रयोग और परीक्षा की स्वयं योग्यता रखते हैं, और न वैज्ञानिक विषय के जानकारों की कमाई से लाभ उठा सकते हैं। वैज्ञानिक खोजी की प्रवृत्ति और ही है। वैज्ञानिक खोजी लगातार परिश्रम करता रहता है, विफल हो-होकर भी हिम्मत नहीं हारता, ठंडे दिल से अपने काम में लगा रहता है। अपनी और अपने करणों और उपकरणों की योग्यता और अयोग्यता की ठीक मर्यादा समझता है, अपने निरीक्षणों की परिस्थिति पर ख़ूब विचार करके अपने निष्कर्ष स्थिर करता है। निष्कर्ष स्थिर करने में उसे न तो किसी स्थिर तत्त्व का खंडन इष्ट होता है, न मंडन। उसे किसी स्थिर तत्त्व के बनने-बिगड़ने, प्रमाणित या अप्रमाणित होने की परवा नहीं होती। धर्म के विरुद्ध निष्कर्ष निकला, या उसके अनुकूल, उसे इस बात का ख़याल भी नहीं होता। वह यह नहीं सोचता कि इस निष्कर्ष से प्रोटेस्टेंट मत का समर्थन होगा या कैथलिक का, आर्य-समाज पुष्ट होगा या सनातनधर्म, धन मिलेगा या ऋण देना पड़ेगा, वेदवादी जीतेंगे वा नास्तिक। इस प्रवृत्ति का कारण यही है कि सच्चा वैज्ञानिक सत्य का खोजी है, और सत्य के मिलने में उसे ऐहिक या पारलौकिक किसी अनिष्ट की आशंका ही नहीं होती। उसके लिये सच्चा ज्ञान ही परमार्थ है। तर्कणा और विचार-शक्ति से काम लेनेवाला उससे बढ़कर कोई नहीं होता; क्योंकि उसका तर्क 'कोरा तर्क' नहीं है। उसके तर्क का आधार परीक्षा और प्रयोग है। कोरे तार्किक 'पारमार्थिक व्याहतवादी' उसका लाख उपहास करें, उसके सहवर्गी उसकी गति-विधियों की मनमानी निंदा करें या मनचाही प्रशंसा; परंतु वह इन बातों से विचलित नहीं होता।

सफलता काम करनेवाले की उसके करणों की और उपकरणों की योग्यता और परिस्थिति की अनुकूलता पर निर्भर है। किसी विशेष विषय के पारंगत गलियों में मारे-मारे नहीं फिरते, और उनकी संख्या हज़ारों और लाखों में गिनाई नहीं जा सकती। साधारण ओझे और सर ऑलिवर लॉज की समता भूत बुलाने-मात्र में हो सकती है। सेब का पेड़ से गिरना सभी देखते आते थे; परंतु आकर्षण शक्ति की खोज नवतनु (न्यूटन) ही कर सका। सभी लड़के साबुन के बुल्ले खेलते हैं, पर प्रोफ़ेसर बोयज़ का खेलना वैज्ञानिक गंभीर रहस्यों का उद्घाटन है। साधारण में असाधारण को देखना वैज्ञानिक का काम है। प्रत्येक मनुष्य हर विषय की योग्यता का दावा नहीं कर सकता। गणित से चतुर्थ-परिमाण (Fourth Dimension) सिद्ध करने को किसी डॉक्टर गणेशप्रसाद की ही आवश्यकता पड़ती है। लोहे में जीवन सिद्ध करने को किसी जगदीश वसु-जैसे आचार्य की ही योग्यता काम दे सकती है। प्रत्येक गणितज्ञ या प्रत्येक वैज्ञानिक इन विषयों को पढ़कर यथावत् समझने का भी दावा नहीं कर सकता, इनके संबंध में खोज करने की बात तो दूर रही। इसी तरह सभी कौतूहली परलोक-विद्या की खोज करने में सक्षम नहीं हो सकते। इसकी आंतरिक योग्यता की परख सूक्ष्म विषय है, जो नाड़ी-विज्ञान या गान-विद्या की तरह अनुभव का सब तरह से मोहताज है। यदि कोई बेसुरा, बेताला स-रि-ग-म का अभ्यास न कर सके और गान-कला का सौंदर्य न समझ सके, तो उसे अपनी विफलता से यह निश्चय कर लेने का अधिकार है कि स्वर-ताल आदि में कोई सौंदर्य

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

या कला नहीं है और कोई मनुष्य इनके समझने या अभ्यास करने में सक्षम नहीं हो सकता। परंतु उसके इस निश्चय से न उसे बुद्धिमान्, उचित वक्ता और विवेकी समझा जा सकता है, और न उसकी इस पैनी समझ से नाद-विद्या की कोई क्षति है।

इसलिये जो लोग इस तरह के प्रयोग करने को तैयार हों, वे अपनी विफलता से यह न समझें कि बताई हुई विधि में सफलता हो ही नहीं सकती। अपनी मंडली के सदस्य बदलते रहें और नए सदस्यों के साथ बराबर प्रयत्न जारी रक्खें। कोई-न-कोई योग्य निकल ही आवेगा।

(२) माध्यम की खोज

जिस चित्त की वृत्ति की इस कार्य में आवश्यकता है, उसका वर्णन इसीलिये किया गया है कि माध्यम की खोज में बहुत दिन बीत जाने से खोजी हताश न हो जाय। साधारणतः कमज़ोर और अविकसित दिमाग़वाले स्त्री-पुरुष माध्यम का काम दे सकते हैं। प्राच्य विधि, जिसका वर्णन अलग किया जायगा, बहुधा मज़बूत दिमाग़वाले को भी अभ्यास से माध्यम बनाने में समर्थ है। परंतु पाश्चात्य या आसुरी विधि में ऐसी कोई क्रिया नहीं है, जिससे पुष्ट मस्तिष्कवाले मनुष्य भी माध्यम बन सकें। इँगलिस्तान में परान्वेषण-परिषत् के माध्यम गिने-चुने लोग हुए। उनका भी बड़ी कठिनाई से पता लगाया गया। प्रयोग करनेवाले माध्यम के लिये इँगलिस्तान से अमेरिका गए। हज़ारों रुपए ख़र्च किए। बीसों बरस विदेशों में प्रयोग की ख़ातिर रह गए। माध्यम गली-गली फिरते नहीं मिलते। उनकी खोज में भी बहुत समय, शक्ति और धन लगता है। कोई योग्य माध्यम मिला भी, तो उससे सभी प्रयोक्ता समान लाभ नहीं उठा सकते। इसलिये माध्यम की बड़ी ख़ुशामदें भी करनी पड़ती हैं।

माध्यम का काम प्रायः सभी विधियों में लगता है। माध्यम का सबसे अधिक महत्त्व का और उपयोगी काम पूर्ण आवेश है। इसका अर्थ यह है कि माध्यम स्वयं बिल-कुल बेसुध हो जाता है, और उसके सारे शरीर में किसी प्रेतात्मा का प्रवेश होता है। उसका मस्तिष्क और पूर्ण नाड़ी-मंडल, विशेषतः कर्म की नाड़ियाँ आवेशक प्रेतात्मा के अधिकार में हो जाती हैं। माध्यम की बेहोशी में उसी की जिह्वा से वह प्रयोक्ता और दर्शकों या जिज्ञासुओं से बातचीत करता है, और कभी-कभी हाथ को भी लिखने आदि के काम में ला सकता है। कभी-कभी किसी माध्यम को पूर्ण आवेश के बदले आंशिक आवेश होता है। यह आंशिक आवेश केवल हाथ की कर्म-नाड़ियों में हो, तो सबसे अधिक उपयोगी होता है। हाथ में आवेश होने पर माध्यम को अचेत होने की आवश्यकता नहीं पड़ती। हाथ को प्रेतात्मा उसी तरह काम में लाता है, जैसे लिखने-वाला क़लम को। माध्यम को यह पता पहले से नहीं रहता कि प्रेतात्मा क्या लिखेगा। भिन्न-भिन्न प्रेतात्माओं की लिखावट भिन्न होती है। भाषा और अक्षर भी ऐसे लिखे जा सकते हैं, जिससे माध्यम पूर्णतया अन-भिज्ञ हो। इस अंशावेश को अँगरेज़ी में Automatic Writing (अपने आप लिखना) कहते हैं; परंतु मेरी राय में इसे आविष्ट लेखन कहना अधिक उपयुक्त होगा।

कमज़ोर दिमाग़वाले मनुष्य की पहचान कठिन नहीं है। अपस्मार, योषापस्मार, उन्माद आदि रोग दिमाग़ की कमज़ोरी के लक्षण हैं। जिनको प्रेत बहुधा दिखलाई देते हैं, उनका दिमाग़ कमज़ोर समझना चाहिए। जिन्हें किसी प्रकार का उन्माद कभी-कभी हो जाया करता है, या हो चुका है, जिनको किसी प्रकार की मूर्च्छा आया करती थी या आया करती है, वे माध्यम हो सकते हैं। जिनका कर्म-नाड़ियों का मंडल विशेष रूप से दुर्बल है उन्हें चाहे नाड़ी-जाल के ये रोग न भी हुए हों, तो भी—वे अभ्यास द्वारा माध्यम बनने में समर्थ समझे जाने चाहिए।

(३) तिपाया तख़्ता या तख़्ती

इस अध्याय के पहले प्रकरण में इन प्रयोगों के लिये उपयुक्त कमरे का वर्णन हो चुका है। इसी कमरे के बीचो-बीच एक गोल तख़्तेवाली मेज़ लो, जिसके बीच नीचे एक डंडा हो, जिसके नीचे से तीन ओर तीन पाए फूटे हों। यही तिपाया तख़्ता है, जिसके चारों ओर बिना बाज़ू की कुर्सियाँ या साधारण तिपाई बैठनेवालों के लिये लगी हों। कुछ लोगों की राय में एक गिलास निर्मल जल का भी इस मेज़ के नीचे होना ही चाहिए। परंतु यह कोई अनि-वार्य वस्तु नहीं है। हाँ, मोमबत्ती और दियासलाई की डिबिया इसलिये चाहिए कि बत्ती बुझ जाय, तो जला लेने का सुबीता रहे। ये प्रयोग दिन के ग्यारह बजे से लेकर एक बजे तक या रात के दस बजे से लेकर तीन बजे तक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किए जाते हैं। इस काम के लिये यही काल सबसे उत्तम है। इस कमरे में दिन को एक मोमबत्ती के बराबर प्रकाश रहना चाहिए। रात को एक मोमबत्ती जलनी चाहिए। इसके सिवा एक-दो अच्छी धूपबत्ती भी जलनी चाहिए। प्रयोग करने में तीन से अधिक मनुष्य नहीं चाहिए। दर्शक-रूप से जो लोग मौजूद हों, वे अलग बैठें। इस कमरे के भीतर आनेवाले सभी सज्जन स्नानादि द्वारा पवित्र हों, शुद्ध और स्वच्छ कपड़े पहने हों। प्रयोक्ता इस तरह बैठे कि उसका मुँह उत्तर की ओर पड़े। तीनों अपने दोनों पंजे मेज़ पर पट फैलाकर रक्खें, इस तरह पर कि हरएक के दाहने पंजे की कनिष्ठिका उसके दहने बैठे हुए के बाएँ पंजे की कनिष्ठिका को छूती रहे और प्रत्येक बैठनेवाले के दोनों हाथों के अँगूठों के सिरे भी आपस में एक दूसरे को छूते रहें। इस तरह पूरा 'स्पर्श-चक्र' बन जायगा। इस चक्र का केंद्र उस गोल तख़्ते का केंद्र होगा। तीनों चक्रियों की दृष्टि मेज़ के केंद्र पर डटी रहनी चाहिए, और मन में तीनों के समान भाव से जाने हुए किसी मृत व्यक्ति का ध्यान होना चाहिए। यदि तख़्ते का केंद्र निश्चित न हो, तो एक फूल, एक पत्ती या और कोई छोटी चीज़ रखकर उसी पर दृष्टि जमानी चाहिए। इस तरह दस-पंद्रह मिनट तक के नीरव ध्यान के साथ-साथ यह भी ख़्याल रक्खे कि कोई किसी तरह का बोझ तख़्ते पर न डाले और न दबावे। तात्पर्य यह कि मेज़ के किसी पाए के उठने में किसी तरह की रुकावट न हो। यदि इस ध्यान के समय कोई पाया उठे, तो प्रयोक्ता उस समय कहे—"यदि कोई महाशय आ गए हों, तो पाया फिर धरती को टक्कर मारे।" टक्करों की गिनती निश्चित करके बारंबार इसी क्रिया से अनेक बातें पूछी जा सकती हैं। जैसे "अगर अमुक सज्जन हों, तो तीन टक्करें मारें।" मान लो कि तीन टक्करें लगीं। अब यह निश्चय हो गया कि वही सज्जन हैं। अगर मेज़ का पाया उठकर रुका रहा, तो समझना चाहिए कि वह सज्जन नहीं हैं। अक्षरों के लिये संकेत नियुक्त कर लिए जाते हैं। जैसे, क आदि वर्गों के लिये एक से लेकर पाँच तक के अंक और स्वरों के लिये आठ और अवांतर क्रमों के लिये भी एक-दो आदि अंक नियत कर लिए जाते हैं। इस तरह तीन पाए के तख़्ते के द्वारा प्रेतात्माओं का आवाहन आरंभ होता है।

प्रयोक्ता को एक बार सफलता न हो, तो बारंबार इस क्रिया को दोहराते। बारंबार करने से भी सफलता न हो तो चक्रियों को बदल-बदलकर देखे, और अपनी परीक्षाओं का विवरण लिखता जाय। इस प्रकार उसे ऐसे चक्री मिल जायँगे, जिनसे जल्दी सफलता होगी। अब इन दो चक्रियों में से कम-से-कम एक को माध्यम बनाने में कठिनाई न होगी। स्वयं प्रयोक्ता के माध्यम बन सकने की भी संभावना है। इसकी भी जाँच की जानी चाहिए।

इस प्रकार की किसी बैठक में आनेवाली किसी प्रेतात्मा से कहना चाहिए—"क्या आप कृपा कर मेज़ से उठकर अमुक के शरीर में आवेश करेंगे?" इस तरह प्रत्येक चक्री के संबंध में पूछे। फिर 'हाँ' उत्तर मिलने पर "कृपया, आवेश कीजिए" इन शब्दों में प्रार्थना करे, और माध्यम की भौहों के बीच माथे पर अपनी दृष्टि गड़ावे। माध्यम बराबर मेज़ के केंद्र की ओर दृष्टि रक्खे। पहले तो कुछ जी सनसनायगा, चक्कर आवेगा, फिर मूर्च्छा। प्रथम आवेश में माध्यम को प्रायः कुछ कष्ट के साथ मूर्च्छा आती है, फिर आवेश जताने को वह खेलने लगता है। अब आप उससे बातचीत कीजिए। संभवतः कुछ देर बाद प्रेत कहेगा—"अब मैं जाता हूँ" और माध्यम मूर्च्छा से जग जायगा। यदि प्रयोक्ता बैठक समाप्त करना चाहता है, तो वह स्वयं आवेशक से प्रार्थना करे कि आवेशक हटकर मेज़ पर आ जाय। यदि मेज़ से भी आत्मा का विसर्जन करना हो, तो उसी तरह प्रार्थना करे। यदि आवेश हटाने पर प्रेतात्मा राज़ी न हो, तो समझना चाहिए कि आवेशक नीच वृत्ति का प्राणी है, उसकी नियत अच्छी नहीं। इसलिये उसे हटाने को उग्र उपाय करने होंगे। भगवान् के नाम के स्मरण-संकीर्तन से वह हट जाता है। परंतु यह कुछ देर तक करना होगा। तेज़ स्मेलिंग साल्ट को सुँघाने से भी हट जाता है। इन उपायों से न हटे, तो देवालयों में ले जाने से अवश्य ही छोड़ देता है। परंतु फिर से आकर लग जाने में उसे इन उपायों से किसी में भी रुकावट नहीं होती।

कभी-कभी मोमबत्ती बुझ जाती है, और अँधेरे में मंद ज्योतिर्मय वातावर्त्त-सा एक ओर से दूसरी ओर हटता दीखता है। यह प्रेत-शरीर है। इसे देखकर घबराना नहीं चाहिए। प्रयोग-शाला में ऐसी घटनाएँ असाधारण नहीं हैं। परिशीलन का वे भी अंग हैं। कुछ काल तक अभ्यास करने से माध्यम इन छाया-पुरुषों से बातचीत तक कर ले सकेगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तिपाए तख़्ते का एक छोटा रूप अधिक सुबीते से काम में आता है। वह एक तख़्ती होती है, पान के आकार की। उसमें भी एक तरह से तीन पाए होते हैं। एक पाया अगला तो पेंसिल को समझिए जो खड़ी लगी रहती है। पिछले दो पाए वास्तव में पहिए होते हैं। ये पहिए ताँबे की पाई छेदकर बनाए जा सकते हैं। जिस पत्ती में ये पहिए लगे रहते हैं, वह ताँबे की होती है, और लकड़ी में जड़ी होती है। लकड़ी के भीतर-ही-भीतर चलता हुआ ताँबे का तार दोनों पहियों और पेंसिल के होल्डर में धातव संबंध स्थापित करता है। दोनों पहियों को जोड़नेवाली रेखा के बीच से उसी पर लंब के रूप में जो काल्पनिक रेखा पेंसिल तक पहुँच जाती है, उसी सीध में लकड़ी के भीतर-ही-भीतर ताँबे का तार भी जाता है। इसी रेखा के मध्य में चाँदी की दुअन्नी के बैठाए जाने-भर थोड़ी लकड़ी सफ़ाई से खुरच ली जाती है कि ताँबे का तार दीखने लग जाय। उस पर लाख गलाकर भर दी जाती है। उस तख़्ती पर यह चिकना मध्य बिंदु-सा लगता है। इस प्रकार यह तख़्ती (Planchette) तैयार कर ली जाती है। इसमें पहिए इसलिये लगे हैं कि तख़्ती काग़ज़ पर सहज में चल सके, और पेंसिल लिख सके। यदि आपने तिपाए तख़्ते की विधि से माध्यम का निश्चय कर लिया, तो उसी माध्यम से इस तख़्ती पर काम ले सकते हैं। यदि माध्यम का निश्चय नहीं हुआ है, तो दो-दो आदमी इस पर कार्यारंभ कर सकते हैं। प्रयोगशाला में जहाँ मेज़ या तिपाया तख़्ता था, वहीं धरती पर फ़र्श बिछाकर एक लंबा-चौड़ा कार्ड-बोर्ड या जत्ते का तख़्ता बिछाकर उस पर सादा काग़ज़ बिछा दीजिए। उस पर यह तख़्ती रख दीजिए। अब दो आदमी पास-ही-पास बैठकर, बायाँ आदमी दाहना, और दाहना आदमी बायाँ, हाथ रक्खे, इस तरह पर कि दोनों की कनिष्ठिकाएँ छूती रहें। मध्य-बिंदु पर हाथ या कोई उँगली न पड़े। यही मध्य-बिंदु प्रेरकात्मा के लिये आसन है। किसी प्रेतात्मा का ध्यान पहले की तरह करना और अपनी दृष्टि आसन पर जमाना चाहिए। इस विधि से थोड़ी देर में तख़्ती रेखाएँ खींचने लगेगी। रेखाओं का अभ्यास करते-करते प्रेरकात्मा अपना परिचय देगा। फिर प्रश्नों के उत्तर इसी तरह पर तख़्ती लिखती जायगी।

माध्यम जब अभ्यस्त हो जाता है, तब बहुत-सी शर्तों के विना ही काम होने लगता है। परंतु आरंभ में सब विधियों का बारीकी के साथ पालन करना ज़रूरी है। इसी तख़्ती का नाम अँगरेज़ी में प्लैन्चेट है। इस शब्द का अर्थ है 'तख़्ती'।

माध्यम अकेले भी अभ्यास करे, तो इस तख़्ती को चला सकेगा। अकेले चलाने में आसानी होगी।

इस तख़्ती का चलानेवाला यदि पेंसिल लेकर अभ्यास करे, तो धीरे-धीरे 'आविष्ट लेखन' भी संभव हो जायगा। ऊपर लिखी सारी क्रियाएँ इसी आविष्ट लेखन में आकर समाप्त होनी चाहिए; क्योंकि परलोक से संबंध स्थापित करने की सबसे सीधी और सुबीते की विधि यही है।

(४) और-और विधियाँ

एक बार जब माध्यम निश्चित हो चुका, तो उस पर और-और क्रियाओं की भी परीक्षा की जा सकती है। उसके हाथ में स्फटिक का गोल नग दो, जिस पर किसी इत्र का एक बूँद टपकाया हुआ हो। उससे कहो कि देर तक उसमें देखता रहे। वह इस अभ्यास में बहुत-से अद्भुत दृश्य देखेगा। एक तरह की सुषुप्ति की अवस्था में होकर उसका सूक्ष्म शरीर तत्तद्देशों में पहुँचकर विविध अनुभव करता है, और अपने स्थूल शरीर द्वारा वह अनुभव बतलाता जाता है।

इसी माध्यम पर मेस्मरिज़्म भी किया जा सकता है। मेस्मरिज़्म एक प्रकार की मूर्च्छा है, जो प्रयोक्ता की संकल्प-शक्ति के बल पर, सूक्ष्म स्पर्श द्वारा, आती है। इस मूर्च्छा वा सुषुप्ति की अवस्था में माध्यम का सूक्ष्म शरीर निर्दिष्ट दशा में रक्खा जा सकता है। प्रयोक्ता जो सुझावे, वही वह सोचता है, जो दिखावे, वही देखता है। वह सर्वथा प्रयोक्ता के वश में हो जाता है। प्रयोक्ता यदि आज्ञा दे कि अमुक के शरीर में प्रवेश करके देखो, क्या रोग है, तो माध्यम का सूक्ष्म शरीर प्रवेश करके सारा हाल बता देगा। परंतु स्फटिक-दर्शन और मेस्मरिज़्म, दोनों ही पारलौकिक नहीं हैं। इनसे इसी लोक से और प्रयुक्त तथा प्रयोक्ता से ही संबंध है। हमने यहाँ इसलिये इसकी चर्चा की है कि आसुर विधियों में इनका भी समावेश है, और पाश्चात्य परान्वेषी भूल से इन्हें परलोक-विद्या का अंग समझते हैं।

(५) आवेशकों की परीक्षा

जो प्रेत-शरीर आकर माध्यम के स्थूल शरीर में आविष्ट

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होते हैं, उनको हम स्थूल दृष्टि से तो देख नहीं पाते, और न यह सहज में निश्चय कर सकते हैं कि वह वही व्यक्ति हैं, जिसके नाम और पते से हमें परिचय देते हैं। जिस तरह इस पार्थिव जगत् में लोग धूर्तता करते हैं, दंभ और पाखंड से काम लेते हैं, विविध वेष बनाकर लोगों को ठगते फिरते हैं, उसी तरह परलोक में पहुँचकर भी धूर्त अपनी चालाकियाँ नहीं छोड़ते। जब वे माध्यम द्वारा मर्त्यलोकी प्राणी से व्यवहार बाँधते हैं, तब तो उन्हें धूर्तता का भारी सुबीता हो जाता है। वे दिखाई नहीं देते, इसलिये जो चाहें, सो बन जा सकते हैं। घर के भीतर प्रेत-रूप से अवश्य रह सकते हैं, दस-बीस बरस तक नाजायज़ फ़ायदे उठाते छिपे रह सकते हैं, और अंत में उसी घर के रहनेवाले प्रयोक्ता या माध्यम के कोई मृत स्वजन बनकर अपनी मुद्दत की जानकारी से लाभ उठा सकते और सबको गहरा धोका दे सकते हैं। वे ईर्षा, द्वेष, काम, क्रोध, लोभ, मान, मद, मत्सर आदि विकारों से प्रेरित होकर कल्पनातीत हानि पहुँचा सकते हैं। इसलिये आवेशक की कड़ी परीक्षा लेनी उचित है कि वह कोई धूर्त तो नहीं है।

साथ ही यह भी न भूलना चाहिए कि हम जिसको माध्यम द्वारा निमंत्रित करते हैं, वह किस दरजे का प्राणी है। जीवित अवस्था में हम उसका जितना आदर-सम्मान करते हैं, उससे अधिक आदर-सम्मान करना हमारा अनिवार्य कर्तव्य है। शिष्टाचार के कठोर नियम उल्लंघनीय नहीं हैं। पिता का वेष बनाकर धूर्त भी आया हो, तो जब तक उसकी धूर्तता अकाट्य प्रमाणों से पूर्णतया प्रमाणित न हो जाय, तब तक उसका सम्मान पिता से अधिक करते रहना चाहिए। धूर्तता के पूर्णतया सिद्ध हो जाने पर भी सज्जनोचित व्यवहार और शिष्टाचार तो धूर्त से भी जारी रहना ही चाहिए। अपना व्यवहार अपने चरित्र का द्योतक है, उसका व्यवहार उसकी धूर्तता का। सज्जन लोग धूर्त से भी सज्जनता का ही व्यवहार करते हैं।

बहुत आदरणीय प्रेरकात्मा से भी नम्रतापूर्वक यह प्रार्थना की जा सकती है कि परलोक में भी आसुरी प्रकृतिवालों की कोई कमी नहीं है, जो धोका देकर अपना मतलब साधने में कोई बात उठा न रक्खेंगे; इसलिये पहले अपनी पूरी परीक्षा देने में आप कृपा कर अपमान न समझें; किंतु हमारी लाचारी और नेक-नियती देखकर हमें क्षमा करें। प्रेतात्मा यदि प्रयोक्ता से कोई समीपी संबंध रखनेवाला प्राणी है, तो परस्पर संबंध की ऐसी योग्य बातें बता सकेगा, जिन्हें प्रयोक्ता को छोड़ दूसरा न जानता हो; अथवा प्रेरक ऐसी कोई बात लिखा सकता है, जो माध्यम और प्रयोक्ता, दोनों की कल्पना में न आ सकती हो। अपनी पुत्री को माध्यम बनाकर मैंने अपने चचेरे भाई को बुलवाया। मेरे विवाह के एक साल पहले ही भाई की मृत्यु हो चुकी थी। परिवार में मेरे भाई के संबंध की बातें जाननेवाला मेरे सिवा मेरे विवाह के समय भी कोई नहीं रह गया था। मैंने उनके संबंध की कोई बात कभी अपने परिवार में कही भी न थी। पुत्री के हाथ से उन्होंने परस्पर की अनेक पुरानी बातों की याद दिलाई। मैंने भी अनेक इसी तरह के प्रश्न किए। कभी-कभी कोई बात ऐसी भी प्रसंगतः आ पड़ी, जो मुझे या उन्हें याद न थी। परंतु जो बातें याद थीं, उनसे पूरा निश्चय हो गया कि वही हैं। कोई और उनकी जगह पर धूर्तता नहीं कर रहा है। बातचीत का ढंग, स्वभाव और बर्ताव वही था। जीवित अवस्था में हम लोग विविध विषयों पर आलोचना-प्रत्यालोचना करते थे। बातचीत में हिंदी, संस्कृत, फ़ारसी, अँगरेज़ी तक के पद्य भी प्रसंगानुसार आ जाते थे। हम दोनों अच्छी फ़ारसी जानते थे। भाई साहब उम्र में मुझसे पंद्रह बरस बड़े थे। परंतु मेरी पुत्री, जिसके हाथ से वह लिखा रहे थे, फ़ारसी भाषा से नितांत अनभिज्ञ थी, और है। परंतु उसके हाथ से वह शेरो-सख़ुन भी लिखते थे। कभी-कभी ऐसा प्रसंग भी आया कि फ़ारसी की द्विपदी का अंतिम पद मैंने कहा; किंतु वही मैंने कहीं उद्धृत रूप में पढ़ा था, उसका पूर्व पद न पढ़ा था न याद था। परंतु भाई साहब ने झट उसका पूर्व-पद लिख दिया। न तो मुझे वह मालूम था कि मेरे विचार का संक्रमण समझा जाय, और न लड़की को मालूम था कि उसकी धूर्तता समझी जाय। यह भी नहीं कहा जा सकता कि मेरे घर में निरंतर हम लोगों के साथ रहनेवाले किसी धूर्त प्रेतात्मा की यह करतूत होगी। जिस तरह जीवितावस्था में उनसे बातें होती थीं, ठीक उसी तरह अब भी, जब कई दिनों तक अनेक प्रसंगों पर बातें और कई विषयों में परामर्श हुए, तब, मुझे तो ऐसी किसी संभावना की अपेक्षा कि कोई धूर्तात्मा इतनी बारीकी और इतनी योग्यता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से उनका अभिनय कर सके, उनकी ही व्यक्तित्व के संभावना अत्यधिक विश्वसनीय प्रतीत हुई। इतनी परीक्षा के अनंतर हम दोनों ने एक चिह्न स्थिर कर लिया कि जब-जब वह पधारें, तब-तब इतनी विस्तृत जाँच की ज़रूरत न पड़े। केवल चिह्न से काम चल जाय। इसे माध्यम और मेरे-उनके सिवा चौथा कोई नहीं जानता।

भिन्न-भिन्न माध्यमों के हाथों में आवेश करके यदि एक ही माध्यम पद्य या गद्य के ऐसे टुकड़े लिखावे, जिनका अलग-अलग कोई अर्थ न हो, परंतु मिलाने से सार्थक हो जाय, अथवा ऐसी रचनाएँ लिखावे, जो प्रयोक्ता और माध्यम, दोनों की योग्यता के बाहर की हों। इस तरह की अनेक युक्तियाँ सोची जा सकती हैं, जिनसें प्रेरकात्मा का निश्चय हो सके। इसी को अँगरेज़ी में 'क्रॉस करेस्पांडेंस' या कूट-लेखन कहते हैं। परान्वेषण-परिषत् के प्रोफ़ेसर मैयर्स बड़े प्रसिद्ध सदस्य थे। मरने के पूर्व उन्होंने यह प्रतिज्ञा की थी कि मरूँगा, तो पारलौकिक ज्ञान देने के लिये परिषत् के सदस्यों पर माध्यमों के द्वारा अपना व्यक्तित्व प्रकट करूँगा। संवत् १९५८ के लगभग प्रोफ़ेसर मैयर्स मर गए। दो ही बरसों बाद उन्होंने अपनी प्रतिज्ञा पूरी की। एक ही काल में नगर के एक माध्यम द्वारा कुछ अस्फुट वाक्य लिखाए, और दूसरे नगर के माध्यम द्वारा कुछ और। दोनों के मिलाने पर ही अर्थ समझ में आया। उसी दम तार द्वारा ही जाँच की गई, जिसमें किसी चालाकी की गुंजाइश न रहे। प्रोफ़ेसर मैयर्स ने इसी तरह मरणानंतर की अपनी रचनाएँ लिखवाईं, जो उनके सिवा दूसरे के वश की न थीं—कम-से-कम प्रयोक्ताओं, दर्शकों और माध्यमों के बूते के बाहर की थीं।

सर ऑलिवर लॉज अपनी एक पुस्तक में कूट-लेखन की व्याख्या इस प्रकार करते हैं*—

Cross correspondence—that is, the reception of part of message through one medium and part through another,—is a good evidence of one intelligence dominating both automatists especially if the parts separately are unintelligible, so that they can not be rationally signalled either bey normal or supernormal means. And if the message is characteristic of some one particular deceased person, and is received through people to whom he was not intimately known, then it is fair proof of the continued intellectual activity of that personality. If further we get from him a piece of literary criticism which is, eminently in his vein and has not occurred to ordinary people,—not to either of the mediums, and not even to the literary world,—but which on consideration is appreciated as sound as well as characteristic criticism, showing a familiar and wide knowledge of the poetry of many ages, and unifying apparently disconnected passages in some definite way, then I say the proof, already striking, would tend to become crucial.

From Lodge's "The Survival of Man," p. 147, ninth edition.

(६) विधि पर आपत्तियाँ

परान्वेषण-परिषत् ने इस संबंध की खोजों में जाँच की इतनी कड़ाई की, विचार-संक्रमणवाद की इतनी परीक्षा की और मरणांतर अस्तित्व की सिद्धि ऐसे प्रबल और अखंडनीय प्रमाणों से की कि कट्टर वैज्ञानिक बननेवालों के बहुत-से ब्रह्मास्त्र भी व्यर्थ हो गए। जो लोग कहते हैं कि प्रेत-संबंधी घटनाएँ भीतरी मन के खेल हैं, उसी के संकल्प-विकल्प के फल हैं, नज़रबंदी, भूल, भ्रम या माया-मात्र हैं, उनके लिये ढेरों प्रमाण परिषत् ने एकत्र किए हैं। जो लोग उन्हें स्वप्न की प्रगाढ़ स्मृति अथवा शरीर की असंकल्पित गति कहते हैं, उनकी कल्पना की गढ़ी को उड़ाने के लिये चालीस बरस से ऊपर का प्रकाशित और अप्रकाशित साहित्य मौजूद है। कोई वैज्ञानिक यह आपत्ति नहीं कर सकता कि तुम तो परलोक के

* इस अवतरण का मर्म ऊपर आ चुका है। उल्थे की आवश्यकता नहीं जान पड़ती।—लेखक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अस्तित्व की कल्पना करके परीक्षा आरंभ करते हो, इसलिये पक्षपात से विमुक्त नहीं समझे जा सकते। पहले तो परान्वेषण-परिषत् ने परलोक की कल्पना से खोज का आरंभ किया ही नहीं। उसे तो विचार-संक्रमण की भ्रमात्मक कल्पना के स्वयं उच्छेदन से और प्रमाण-पर-प्रमाण के लाचार करने से परलोक का अस्तित्व मानना पड़ा। आज उसके निकट परलोक का अस्तित्व एक सिद्ध विषय है। परंतु वह यदि इस निगमन से चलता कि "मान लो, परलोक है, तो अमुक-अमुक तथ्य प्रमाणित होने चाहिए। अब इन तथ्यों की जाँच होनी चाहिए। जाँच की। तथ्य प्रमाणित हुए। अतएव परलोक अवश्य है।", तो भी क्या हानि थी? यह तो शुद्ध वैज्ञानिक रीति है। हम नहीं जानते कि व्याहतवादी इस विषय को विज्ञान की बिरादरी से किस अपराध पर निकाल बाहर करना चाहते हैं। विज्ञान के प्रायः सभी विषय अंत में जाकर प्रत्यक्ष परीक्षा के लिये अव्याहत हो जाते हैं। बहुत ऊँचे वैज्ञानिक सिद्धांत तो हमारी इंद्रियों से ही नहीं, हमारी कल्पना से भी ऊँचे चले जाते हैं। सर जे० जे० टॉमसन आज तक यह समझ नहीं सके कि बिजली क्या है। वायु और ताप का गत्यात्मक सिद्धांत, तड़ित्, चुंबकत्व, रासायनिक योग-प्रवृत्ति और आकाश-तत्व की कल्पना आदि अनेक विषय इंद्रियों से अतीत हैं। ये सभी अव्याहत हैं। इन सबके संबंध में जितनी खोज हुई है, सभी उस निगमन की विधि से हुई है, जिसका उदाहरण ऊपर दिया गया है। भौतिक विज्ञान के अगाध पंडित सर ऑलिवर लॉज चालीस बरस से ऊपर की खोज और अनुभव के बाद यह स्वीकार करते हैं कि "मनुष्येतर कोई और लोक है या नहीं, इसकी तो बात ही क्या है, मैं तो मनुष्येतर अनेक लोकों और प्राणियों के अस्तित्व को अपने निकट प्रमाणित कर चुका हूँ।" लॉज महोदय, सर विलियम क्रुक्स की तरह, जगत् के प्रसिद्ध वैज्ञानिकों में गिने जाते हैं, और परान्वेषण-परिषत् के इस समय प्रायः सबसे पुराने सदस्य हैं। उनकी पुस्तक 'Raymend of 'Life and Death' से, इस प्रसंग में, अँगरेज़ी पढ़े वैज्ञानिकों के लिये, वह अवतरण देना मैं आवश्यक समझता हूँ, जिसका मर्म ऊपर दे चुका हूँ। यह तीसरे भाग के सोलहवें अध्याय के पृ० ३७५-३७६ से लिया गया है—

"I am as convinced of continued existence, on the other side of death, as I am of existence here. It may be said, you cannot be as sure as you are of sensory experience. I say I can. A physicist is never limited to direct sensory impressions, he has to deal with a multitude of conceptions and things for which he has no physical organ: the dynamical theory of heat, for instance, and of gases, the theories of electricity, of magnetism, of chemical affinity, of cohesion, aye and his apprehension of the Ether itself, lead him into regions where sight and hearing and touch are impotent as direct witnesses, where they are no longer efficient guides. In such regions everything has to be interpreted in terms of the unsensible, the apparently unsubstantial, and in a definite sense the imaginary. Yet these regions of knowledge are as clear and vivid to him as are any of those encountered in every day occupations; indeed most common place phenomena themselves require interpretation in terms of ideas more subtle,—the apparent solidity of matter itself demands explanation,—and the underlying non-material entities of a physicist's conception become gradually as real and substantial as any thing he knows. As Lord Kelvin used to say, when in a paradoxical mood, we really now more about electricity than we know about matter.

That being so, I shall go further and say that I am reasonably convinced of the existence of grades of being, not only lower in the scale than man but

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

higher also, grades of every order of magnitude from zero to infinity. And I know by experience that among these beings are some who care for and help and guide humanity not dis daining to enter even into what must seem petty details, if by so doing they can assist souls striving on their upward course. And further it is my faith,—however humbly it may be held,—that among these lofty beings, highest of those who concern themselves directly with this earth of all the myriads of worlds in infinite space, is one on whom the right instinct of christianity has always lavished heartfelt reverence and devotion."

यद्यपि परलोक विज्ञान का आरंभ नास्तिकता और अविश्वास में हुआ है, तथापि उसके विकास में अनेक बातें ऐसी दिखाई दे रही हैं, जिनसे नास्तिकता का दुर्ग ढह जाता है, अनीश्वरवाद को सहारा नहीं मिलता और संसार के धर्मों, मतों और संप्रदायों की जो बातें केवल विश्वास के आधार पर मानी जाती थीं, उनमें से अनेक को वैज्ञानिक खोज से पुष्ट समर्थन मिल गया।

रामदास गौड़

समाज का डर

(१)

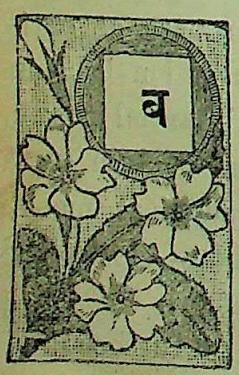

बदरीनाथ दुबे ग़रीब मा-बाप के घर में पैदा हुए। पढ़ने-लिखने में भी तो पैसे की बहुत आवश्यकता होती है, इस वास्ते उनकी शिक्षा भी अच्छी न हो सकी। पिताजी का यह ख़याल था कि यदि बेटा बी० ए० पास हो जायगा, तो कहीं-न-कहीं सौ-सवा सौ तो मिल ही रहेंगे। वह यह समझते थे कि वकालत शुरू करने में, उसके वास्ते ठाट-बाट बनाने में और साल-दो-साल गाउन फटकारकर कचहरी-कचहरी की ख़ाक छानने में पैसे की बहुत ज़रूरत होगी, इस वजह से वह यह कहा करते थे कि बदरीनाथ अगर परमेश्वर की कृपा से बी० ए० पास हो गया, तो लॉ क्लास न भेजकर कहीं-न-कहीं नौकरी का उपाय कर दूँगा। पर बी० ए० तक पढ़े कैसे ! तीस रुपए में कैसे अपना गुज़र करें, कैसे स्त्री के वस्त्राच्छादन का प्रबंध करें, कैसे लड़के की फ़ीस दें ! महँगी का यह हाल है कि जो कपड़ा ख़रीदते हैं—मोटा-झोटा, देसी या विलायती—दस-ग्यारह आने गज़ से कम नहीं मिलता। घी खाना तो कभी नसीब नहीं होता। तेल तक रुपए में डेढ़ ही सेर मिलता है ; जान अजाब में है ; फिर भी लड़के को बी० ए० तक पास कराने का इरादा कर रहे हैं।

फ़र्रुख़ाबाद के कलेक्टर साहब के दफ़्तर में अहलमद को यों भी रिशवत मिलने का मौक़ा कम है, उस पर यह बीस बरस से कुछ लेते भी नहीं थे। अब आर्थिक दशा बिलकुल ख़राब होने से इरादा भी किया, तो कोई देता नहीं ; इनकी ईमानदारी मशहूर हो चुकी थी। लोग देते भी डरते थे कि कहीं पकड़वा न दें। किंतु आर्थिक दशा अच्छी भी होती, तो इस विषय में कुछ फ़ायदा न होता। उनके ख़याली पुलाव केवल ख़याली ही रह जाते ; क्योंकि बदरीनाथ को पढ़ने का शौक़ बहुत ही कम था, और इसकी ख़ास वजह यह थी कि जल्दी एंट्रेंस पास कराने के शौक़ में पिताजी ने उसे उसकी लियाक़त से ऊँचे दर्जे में भर्ती करा दिया था। हर साल वह फ़ेल होता और हर साल हेडमास्टर की ख़ुशामद करके उसे एक दर्जा ऊपर चढ़वा देते ! न-मालूम कितने लड़के हर साल इसी तरह ऊपर चढ़ाए जाते और आख़िर को एंट्रेंस-फ़ेल लड़कों की संख्या बढ़ाते हैं। मास्टरों के समझाने से लड़कों के मा-बाप कभी नहीं मानते कि लड़का कमज़ोर है, और, साल-भर ठहरने से वह न सिर्फ़ उस दर्जे की परीक्षा पास कर लेगा, जिसमें पढ़ता है, बरन् आगे की कक्षाओं में भी उसे आसानी होगी। बदरीनाथ के पिता भी उन्हीं लोगों में थे। ग़रज़ यह कि यह भी लुढ़कते-पुढ़कते एंट्रेंस में पहुँच गए ; किंतु लियाक़त आठ दर्जे तक की भी न थी। नतीजा साफ़ था।

एंट्रेंस के पर्चे उस साल ख़ास तौर पर आसान थे। बदरीनाथ रोज़ घर लौटकर अपने पिता से कहते कि बहुत अच्छे पर्चे किए, ज़रूर पास हो जाऊँगा। नतीजा निकला,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तो फ़ेल । पिता से कहने लगे, एक नंबर से फ़ेल हो गया । युनिवर्सिटीवाले बड़े सख़्त हैं, एक नंबर तक नहीं देते। बहुधा लड़के एक ही नंबर से अपना फ़ेल होना बताया करते हैं । न-मालूम वे नंबर मालूम कैसे करते हैं! हमारी युनिवर्सिटी की भी तो अजब हालत है । न-मालूम छिपाती क्यों है ! इम्तहान लेनेवालों के नाम छिपाए जाते हैं, इम्तहान के नतीजे, जहाँ तक मुमकिन होता है, छिपाए जाते हैं। लड़के के नंबर छिपाए जाते हैं। बता देने से लड़कों और उनके बड़ों को उनकी कमज़ोरी मालूम हो सकती है। मगर अजब हालत है कि हर बात पर्दे में होती है। पर्दे का बुरा प्रभाव पढ़े-लिखे विद्वानों पर कैसा बुरा पड़ रहा है ! यही हाल गवर्नमेंट का है ।

चाहे जो हो, बदरीनाथ फ़ेल हो गए । पिता से बोले, अब मैं न पढ़ूँगा । पिता तो बड़ी आशाएँ लेकर बैठे थे। बहुत समझाया, पर वह न माने। बोले, "जब इसी साल मेरे नंबर काट लिए, तो आगे कौन जाने ?" उनकी सब उम्मीदें जाती रहीं। उदास हो गए; मगर करते क्या ? कहने लगे, "अच्छा, साहब से कहूँगा, तुम्हें भी शायद कोई अहलमदी मिल जाय। मैं तो कुछ और ही सोचे बैठा था; कुछ का कुछ हो गया ।"

माताजी को ख़बर हो गई। उनको इसका असर भी न हुआ । बोलीं, "सुनते हो, लल्ला ने पढ़ाई तो ख़तम की, अब उसकी शादी करनी चाहिए । इतना बड़ा हो गया है । मुझे सखी-सहेलियों के सामने झेपना पड़ता है । देखो, मुहल्ले में इसके बराबर के कितने लड़के हैं । नथुआ की दुलहिन के तो कल लड़की तक हो गई । भागीरथ का लड़का महीने-भर का हो गया । इनकी मा मेरे लड़के पर ऐब लगाती होंगी । तुम परवा ही नहीं करते ।"

पिताजी ने पूछा, "तुम्हें कैसे मालूम हुआ कि वह तुम पर हँसती हैं, या तुम्हारे लड़के पर ऐब लगाती हैं ?"

"दुनिया की रीति यही है । वह क्या निराली हैं । इसी से मैं जानती हूँ कि मुझ पर हँसती हैं ।"

"उन्होंने, या किसी ने, कभी तुमसे कहा कि इसकी शादी क्यों नहीं करतीं ।"

"रोज़ ही कहती हैं, मैं क्या जवाब दे सकती हूँ !"

(२)

बदरीनाथ बदन के भारी थे और सूरत-शकल भी अच्छी न थी । पढ़े-लिखे तो इतने थे कि जितने एंट्रेंस-फ़ेल हो सकते हैं । लियाक़त ज़रा भी न थी । बोल-चाल भी बदन ही की तरह भद्दी थी । फिर भी लड़की मिलने में देर न लगी । ज़रा मालूम होने की देर थी कि पिताजी पुत्र-वधू ढूँढ रहे हैं, बिरादरी के कितने ही पैग़ाम आ धमके । किसी लड़की की मा-बाप ने यह न पूछा कि जिस लड़के से वे अपनी लड़की का संबंध कर रहे हैं, उसकी स्वयं क्या दशा है । वह रोटी-कपड़ा तक दे सकेगा या नहीं । पिता को तो मालूम था कि जन्म-भर तीस रुपए महीने पर पड़े रहे हैं। बस, इतना काफ़ी था कि एक लड़का शादी करने को ख़ाली है । और, लड़की की शादी होना भी तो ज़रूरी है । अविवाहित वह रह नहीं सकती । बस, पैग़ाम-पर-पैग़ाम आने लगे । चुनना लड़केवालों का काम था ।

कितने अफ़सोस की बात है कि इस तरह आँखें बंद करके लड़कियाँ समाज के डर की वजह से समाज के चूल्हे में झोकी जाती हैं । क्या लड़की का अविवाहित रहना इससे अच्छा नहीं कि ऐसे आदमी से उसकी शादी की जाय, जो खिला-पिला तक न सके ? अविवाहित रहकर अगर वह अपना पेट पालने का इंतिज़ाम इज़्ज़त से कर सके, तो क्या वह इससे ज़्यादा अच्छा नहीं कि विवाहित होकर रोज़ फ़ज़ीहत हो । ख़ैर, मैं भूल गया । मुझे बदरीनाथ का हाल बताना है ।

जन्म-पत्रों का मिलान हुआ । एक अभागी की जन्म-पत्री बदरीनाथ की जन्म-पत्री से बिलकुल मिल गई । माता-पिता संतुष्ट हो गए । इस लड़की का नाम था सरस्वती; पर शिक्षा के अभाव से यह साड़सूती कहलाती थी । इसकी माता लक्ष्मी विधवा थी; किंतु इसने साड़सूती के विवाह का प्रबंध अपने पति के जीते-जी ही कर लिया था । उसके पास भी बस, वाजबी ही धन था । साड़सूती के विवाह के बाद वह क्या करेगी या कहाँ जायगी, यह वह स्वयं नहीं जानती थी ।

विवाह हो गया । साड़सूती और बदरी दुबे स्त्री-पुरुष हो गए । एक की अवस्था १४ वर्ष की, दूसरे की २० की । गौना भी साथ-साथ हो गया; क्योंकि दोनों बहुत दिनों पहले से जवान समझे जा रहे थे । विवाह के दिन ही समधी नाराज़ हो गए; क्योंकि धन के अभाव से लक्ष्मी पूरी तौर से बदरी के पिता और नातेदारों की ख़ातिर न कर सकी ।

बदरीनाथ के पिता यह इरादा कर चुके थे कि जन्म-भर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वह सरस्वती को मा से न मिलने देंगे, और इस इरादे को उन्होंने अपनी ज़िंदगी-भर पूरा भी किया। विवाह के बाद छः वर्ष तक वह अपनी दुःख-मय ज़िंदगी को खींच ले गए; किंतु अपने दुःख से उन्होंने ज़रा भी सबक़ न सीखा, लड़की से न मिलने देकर लक्ष्मी को कितना दुःख देते रहे, यह बात कभी ध्यान में भी न लाए। चिट्ठी-पत्री न मा ही भेज सकती थी, न बेटी; क्योंकि वे बिलकुल अपढ़ थीं। एक दूसरे का हाल तक किसी को छः वर्ष से मालूम नहीं हुआ। बाप के डर से कभी बदरी भी सास से मिलने न गया। जो लोग संतानवाले हैं, वे समझ सकते हैं कि मा से बेटी को न मिलने देने से कितना दुःख दो प्राणियों को हो सकता है। मगर समाज ने कुछ ऐसा कर रक्खा है कि इस तरह दुःख देनेवालों को किसी प्रकार का दंड नहीं मिलता। यह भी तो नहीं कि खुल्लम-खुल्ला ऐसा दुःख देनेवालों की ले-दे करे, उँह! औरत की ज़ात है, सब सह लेगी।

सरस्वती तक को मा से 'फ़्रूंट' कर दिया। उससे कह दिया कि तेरी मा अपनी स्वर्गीया बहन के पति के साथ खुले-ख़ज़ाने रहती है। यह बात आधी सच थी। वह बेचारी वहाँ रहती थीं; क्योंकि उनको उस पर दया आ गई थी। वह साली का भूखों मरना न देख सके। जिस स्त्री को वह एक दिन बहन कहते थे, और जो उनसे कम-से-कम दस वर्ष बड़ी थी, उसे उन्होंने यदि बड़ी बहन की तरह साथ रक्खा, तो क्या हर्ज था! किंतु सीधी बात को टेढ़ा करने से लक्ष्मी पर कलंक का टीका लग गया। धर्मात्मा पुरुष सत्यव्रत (यह उनका नाम था) को जो लोग जानते थे, उन्होंने तो उनके कहने से मान लिया कि बहन-भाई का-सा ही नाता है, वरना और सारा समाज उस दुखिया को पतित ही कहता रहा। उस पर मज़ा यह कि सत्यव्रत का मान समाज में फिर भी वैसा ही बना रहा, जैसा पहले था। पतित तो केवल औरत ही होती है। वाह, क्या सामाजिक न्याय है!

किसी तरह छः वर्ष बीत गए। बदरीनाथ दो लड़कियों के बाप हो चुके थे। एक लगभग पाँच साल की होगी, और दूसरी दो साल की। इसकी ख़बर लक्ष्मी को पहुँच चुकी थी। सत्यव्रत ने उसे यह भी बता रक्खा था कि सरस्वती स्वयं उससे मिलने से इनकार करती है। सत्यव्रत की बदनामी बचाने को कई बार लक्ष्मी ने उनके यहाँ से चले जाने की इच्छा प्रकट की; किंतु उन्होंने और उनकी वृद्धा माता ने, जिनकी वह रात-दिन सेवा करती थी, न जाने दिया। अपनी बदनामी का तो यह हाल हो गया था कि वह मिट नहीं सकती। औरत की बदनामी कहीं मिटती है? छः वर्ष बाद एक दिन जब वह चले जाने की फिर से बातचीत कर रही थी कि ख़बर आई, बदरी के पिता का स्वर्गवास हो गया।

कहा यही गया कि उनका स्वर्गवास हो गया। न-मालूम कहाँ तक यह बात ठीक थी। बिरादरी की औरतें बदरी की मा से मिलने गईं। लक्ष्मी भी सत्यव्रत की सलाह से गई। इस वक़्त तो कम-से-कम कोई ताने-तिहाने न करेगा। मगर बिरादरी की औरतें कब मौक़ा छोड़नेवाली थीं? कितनों ही ने उसकी तरफ़ उँगली उठाकर दिखाई, और यह देखकर उसे ख़याल हुआ कि उसकी ही निंदा कर रही हैं। फिर भी चारों तरफ़ देखे बिना रह न सकी। असली या फ़र्ज़िया बुराई अगर किसी औरत में हो, तो चाहे पुरुष माफ़ भी कर दे, किंतु स्त्री-समाज क्षमा का नाम तक नहीं जानता। हाँ, पुरुष के सैकड़ों असली दोष भुला देने को वे तैयार रहती हैं। इसके लिये समाज ने उनको मजबूर कर रक्खा है, और वे समाज के सामने अपनी बड़ाई दिखाने को ऐसा करती हैं।

रोने-धोने की जगह थी। असल में रोना था तो बदरी की मा को आ रहा था, या उसकी सास को। एक को अपने विधवा होने के दुःख पर, और दूसरी को समाज के उस अत्याचार पर, जो उस पर हो रहा था। बस, मातम करनेवाली यही दो महिलाएँ उस सभा में थीं, बाक़ी कोई कुछ बात करती, कोई कुछ। मगर सबने थोड़ी-थोड़ी देर लक्ष्मी और सत्यव्रत का ज़िक्र ज़रूर किया। बाज़-बाज़ ने तो साफ़ सुना भी दिया।

भीड़ छट गई। सरस्वती और लक्ष्मी की चार आँखें हो गईं। सरस्वती क्रोध से भरी थी, मगर मा को रोते और अपनी तरफ़ हाथ फैलाकर आते देख, भाग न सकी। मा-बेटी लिपटकर ख़ूब रोईं। एक घंटे की बातचीत के बाद दोनों में सफ़ाई हो गई। बेटी को यक़ीन हो गया कि मा पर झूठा इलज़ाम है। मा भी संतुष्ट हो गई। सत्यव्रत ने बदरी को भी समझा दिया था। सब राज़ी हो गए। कभी-कभी मिलना होने लगा।

(३)

काल-चक्र चलता ही गया। बदरी दुबे पिता के मरने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पर कलेक्टर साहब के दफ़्तर में नौकर हो गए। पिता ने तो कभी तीस रुपए महीने से अधिक तनख़्वाह न पाई; किंतु थोड़ी अँगरेज़ी जानने के कारण इन्हें जल्दी तरक्की मिल गई और वह ज़िलेदार नियत हो गए। पिता ईमानदारी के अवतार थे, और पैसा किसी से नहीं लेते थे। बदरी को पैसा छोड़ना मूर्खता जान पड़ती थी। जो पैसा देता, उसका काम यह दिल लगाकर करते, और बहुधा वह ख़ुश हो जाता। पचास रुपए वेतन के अलावा, इन्हें उतना ही ऊपर से मिल जाता, और वह अपना और कुटुंब का पालन अच्छी तरह करते थे। सास को भी साथ ही ले आए थे; किंतु जब तक इनकी माता जीती रहीं, वह घर में न आने पाई। उन्होंने हर्गिज़ न माना कि उसकी बाबत झूठी बातें कही जाती थीं। वह यह ही कहतीं कि कुछ-न-कुछ बात ज़रूर होगी, तभी तो वह बहनोई के घर में रही, नहीं तो हिंदू बेवा को किसी पराए मर्द के साथ रहने की क्या ज़रूरत! यह उनकी समझ में नहीं आता था कि उसके पास खाने का सहारा नहीं था। "वह एक पैसे रोज़ के चने खाकर रह सकती थीं। पैसा कहाँ से आता?" इसका उत्तर यों होता कि "एक पैसा सब ही के पास होता है।" यह उत्तर कोई ग़ैर-मामूली बात नहीं थी। जिन लोगों को पैसे की तंगी नहीं रहती, वे समझते हैं कि एक हद तक किसी और को तंगी हो ही नहीं सकती। रोज़ ही देखा जाता है कि अमीर आदमी दो-दो आने के वास्ते ग़रीबों को दो-दो चार-चार दफ़े दौड़ाते हैं। यह नहीं कि उनके पास दो आने देने को नहीं, बल्कि यह समझकर कि उसे जल्दी क्या है, वे टाल देते हैं। स्वयं तो आराम-कुर्सी से उठकर कमरे तक जाने में कष्ट दिखाई देता है, और उसे कोस दो कोस बुलाना आसान मालूम होता है। कभी-कभी इतना कहकर टाल दिया जाता है कि दो आने के वास्ते इतने तक़ाज़े! वे यह नहीं जानते कि दो आने के अभाव से कभी-कभी ग़रीब परिवार भूखा ही सो रहता है। जब समझदार पुरुषों का यह हाल है, तो मूर्ख स्त्रियों के यों कहने में कौन आश्चर्य की बात थी? जब काल-चक्र बदरी की मा को भी पति-लोक को ले गया, तब लक्ष्मी बेटी के घर में आने पाई।

इस समय तक सरस्वती तीन बेटी की मा हो चुकी थी। सबसे बड़ी मालती सात वर्ष की थी, मँझली कांति चार वर्ष की, और छोटी सीता एक वर्ष की। तीनों लड़कियाँ नानी से ख़ूब हिल गईं, और बहुधा उसी के साथ कभी-कभी दोनों बड़ी गंगाजी नहाने चली जाया करतीं। लक्ष्मी कान से ज़रा ऊँचा सुनने लगी थी, और आँखों में भी कुछ नुक़्स आ चला था। पति के मरने के बाद से वह पूजा बहुत करती थी, और अब तो अपनी आँखों के अच्छे होने और कान से सुनाई देने के वास्ते महा-मृत्युंजय का जप भी करने लगी थी। इसमें संदेह नहीं कि पूजा और जप से, यदि वह श्रद्धा से किए जायँ, पूजा करनेवाले को बड़ी शांति मिलती है, चाहे उसका फल दिखाई दे या नहीं। और, वृद्धावस्था में तो शायद इससे बढ़कर शांति देनेवाली कोई चीज़ नहीं है।

लक्ष्मी के साथ एक दिन केवल मालती ही गंगाजी नहाने गई। बहुत सबेरे पौ फटते-फटते नानी और नवासी गंगा-तट पर पहुँचीं। नानी नहाकर जप करने लगी और मामूली तौर पर मालती खेलती रही। घाट पर सन्नाटा था। घाटवाले ने पैरों में पायज़ेब के लालच से मालती को फुसलाकर ज़रा दूर भेजा, और वहाँ पर जाकर उसे गोद में उठाकर ले भागा। मालती चिल्लाई, और उसने चीख़ मारी। दो-चार आदमी मिले भी, उनसे घाटवाले ने कहा—"मेरी लड़की मचल गई है।" उन्होंने अपना रास्ता पकड़ा। लक्ष्मी डेढ़-दो घंटे जप करती थी। उस वक़्त तक घाटवाला लौट आया, और ज़ोर से कान में कहने लगा—

"माजी, हाय! हाय! बिटिया डूब गई, हाय! मैं तुम्हें या इसके बाप को क्या जवाब दूँगा!"

महा-मृत्युंजय का जप बंद हो गया। कहते हैं, जब जप समाप्ति पर आता है, तो कोई-न-कोई ऐसी घटना अवश्य होती है, जिससे जप-भंग होने का भय होता है। अगर जप करनेवाला सह गया, तो उसका जप सफल होता है, नहीं तो काम में बाधा पड़ती है। लक्ष्मी का जप-भंग हो गया। लड़की उसकी समझ में डूब गई होगी। हाय-तोबा मचाने लगी। जप समाप्त कौन करता। मल्लाहों को इनाम देने को कहा। उन्होंने ग़ोते लगाए, मगर लाश का पता नहीं चला।

घर में भी रोना-पीटना मचा; बदरी ने भी जाकर गंगा-जी में ग़ोते-ख़ोरों को उतारा। दस-पाँच रुपए ख़र्च किए; किंतु पता न लगा कि लाश कहाँ गई। गंगाजी की धारा में घंटों बाद पता भी क्या चलता, और वहाँ पता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चलता भी किसका, मालती तो दूसरी ही गंगा में ग़ोते खा रही थी।

(४)

घाटवाला मालती को अपने घर में बंद करके जल्दी से चला आया था, और अपनी स्त्री को ताक़ीद कर आया था कि चिल्लाने न पावे। गहना उतारकर घाटवाली ने ले लिया, और डराने को दो-एक तमाचे उसे लगा दिए। वह यों ही डरी हुई थी, और चीख़ने की हिम्मत न थी, छोटी लड़की सहम गई थी।

जब उसे यक़ीन हो गया कि लड़की के डूब जाने का पूरा यक़ीन उसके मा-बाप को हो गया, तब वह इतमीनान से घर आया। स्त्री भी डरी बैठी थी! उसे भी इतमीनान दिलाया। दूसरा प्रश्न यह उठा कि अब इस लड़की को क्या किया जाय। लड़की सुंदर थी, फिर ब्राह्मण की। घाटवाली के कोई बच्चा न था। उमर ढल चली थी। स्त्री ने कहा—"इसे मैं अपनी बेटी बनाकर पालूँगी।" घाटवाले ने कई कारणों से उसका विरोध किया। सबमें पहला तो धर्म नष्ट होने का था। गोद लेने के वास्ते अपनी ही जाति का बच्चा होना चाहिए। वह छोटी है, खाना छुएगी, परलोक बिगड़ जायगा। चोरी करने में जिसे संकोच नहीं, उसे खाने-पीने की छूत-छात का इतना ख़याल! चोरी से धर्म थोड़े ही जाता है, मगर खाना छू लो और धर्म ग़ायब। वाह! क्या धम की क़दर की। चोर को जाति से उठाने की किसी को नहीं सूझती। दूसरी जाति के हाथ का छुआ खाया नहीं और बेधर्म हुए।

स्त्री की बात न मानने का दूसरा कारण ज़्यादा ज़ोरदार था। उसके पास रहने से वह शहर में रहेगी, और संभव है, किसी तरह दुबेजी तक ख़बर पहुँच जाय। फिर तो सीधे जेलख़ाने में दोनों स्त्री-पुरुष चले जायँगे, और वहाँ एक दूसरे से मिलने न पावेंगे।

जेल का नाम सुनते ही स्त्री बहुत डरी और बोली,—"इसे अभी निकालो।"

"यही तो मैं सोचता हूँ। कहाँ ले जाऊँ। जहाँ छोड़ूँगा, वहीं से घर पहुँच जायगी। सबसे अच्छा यह है कि इसे गंगाजी में डुबो दिया जाय।"

"चाहे जो करो, मेरे घर से निकालो। मैं जेल जाने को तैयार नहीं।"

लड़की सुन रही थी, उसने रो-रोकर आँसू के ढेर लगा दिए—"मुझे डुबाओ मत, घर पहुँचा दो। मैं किसी से कुछ न कहूँगी।"

"चुप, नहीं तो गला घोट दूँगा।"

घाटवाले ने कभी ख़ून नहीं किया था, डर मालूम हुआ। बोला—"अच्छा, मारूँगा नहीं। किसी दूसरे शहर में ले जाकर इसे छोड़े आता हूँ।" उसी वक़्त स्टेशन को रवाना हुआ। रेल जाने को तैयार थी, टिकट लेकर देहली के लिये रवाना हुआ। मालती को डरा रक्खा था कि अगर ज़रा भी बोली, तो गला ही घोट दूँगा, चाहे फाँसी ही क्यों न हो। इन दोनों के जाने के बाद घाटवाले की स्त्री ने ठंडी साँस ली।

घाटवाला देहली पहुँचा। अभी तक वह यह न तय कर पाया था कि मालती को लेकर क्या करे। कभी सोचता कि रेल पर ही छोड़कर भाग जाऊँ, फिर इस डर से कि उसके हटते ही वह किसी मुसाफ़िर से न कह दे, रुक जाता। यह सोचा कि देहली में किसी बाज़ार में छोड़कर भाग आऊँगा, कोई-न-कोई ले ही जायगा। इस इरादे को भी यह सोचकर बदलना पड़ा कि लड़की समझदार है, बाप का नाम बता देगी, तो मुसीबत ही आ जायगी। अब गला घोटने के सिवा कोई चारा नहीं। वह मन-ही-मन कहने लगा—"हे राम! क्या करूँ, तेरा ही आसरा है।"

रात-भर रेल पर नींद नहीं आई, सुबह होते-होते एक बात ध्यान में आई थी। रामजी ने बड़ी कृपा की, देहली में किसी वेश्या के हाथ बेचकर कौड़े क्यों न करे। मुसाफ़िरों से बातचीत में मालूम हुआ कि वहाँ एक प्रसिद्ध हिंदू वेश्या अच्छो बाई के नाम से है, जो अपने फ़न में उस्ताद समझी जाती है। यह भी सुना कि उसके कोई औलाद नहीं है। बस, उसका नाम कंठ कर लिया। देहली पहुँचकर धर्मशाले में उतरा, और कुछ जल-पान कर मालती को लेकर अच्छो बाई के दरवाज़े पर पहुँचा। ख़बर होने पर बाईजी ने सामने बुलाया, और पूछा "क्यों आए हो?" उसने कहा—"हुज़ूर, मैं मुसाफ़िर हूँ। मैं और मेरी पुत्री रेल पर आ रहे थे, कुल माल-असबाब चोरी हो गया। अब मेरे पास घर पहुँचने को पैसा नहीं। घर में भी खाने का ठिकाना नहीं है। हुज़ूर का नाम सुना, तो यह सोचकर कि कम-से-कम लड़की का तो पालन हो जायगा, हुज़ूर के पास आया हूँ। सौ रुपए भी हों तो मैं कारबार में लग जाऊँ।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

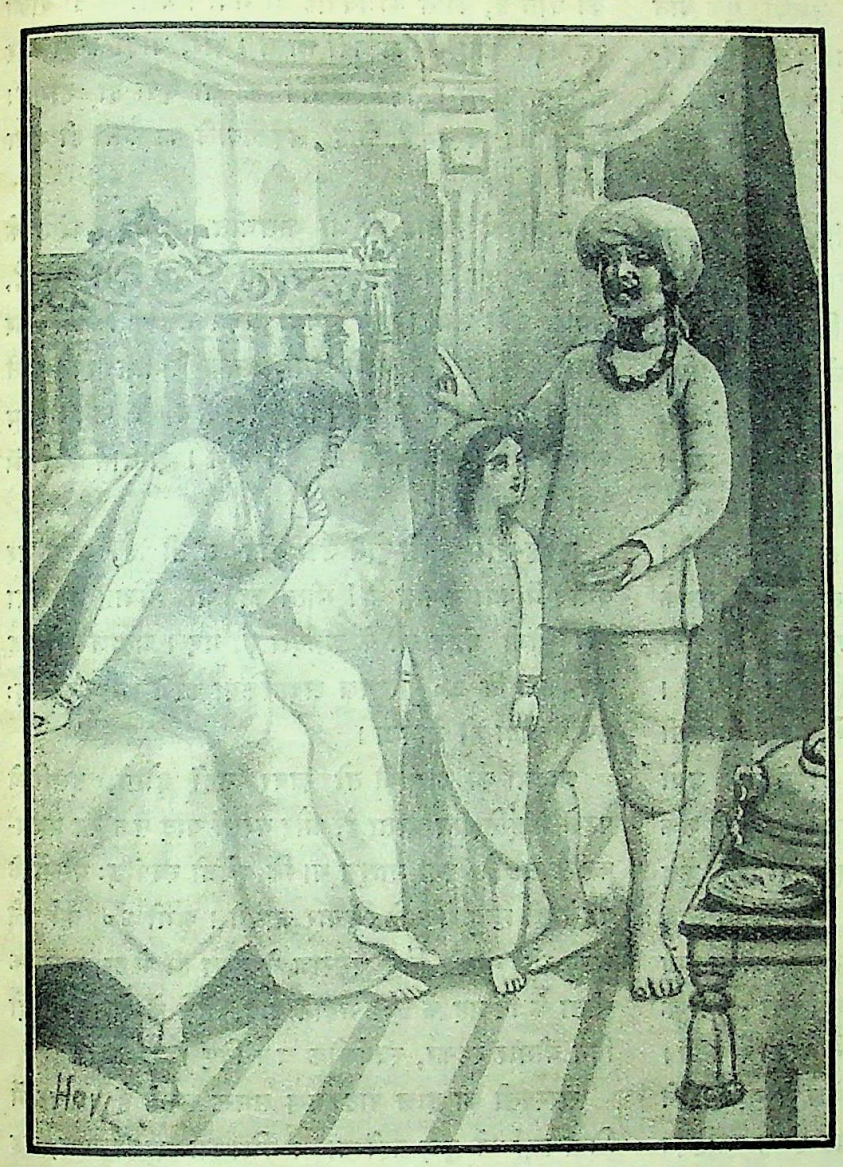

"सौ रुपए भी हों, तो मैं कारबार में लग जाऊँ।"

अच्छो बाई बड़ी ही चतुर स्त्री थी। पेशा उसका अच्छा न था; किंतु दिल की बुरी न थी। घाटवाले की बात का तो यक़ीन न किया; किंतु लड़की पर बड़ा ही तरस आया। उसका रोना और बिलखना देख, वह समझ गई कि कुछ दाल में काला है। मगर कोई सबूत नहीं था। फिर उसने यह सोचा कि अगर इस लड़की को हाथ से निकल जाने दिया, तो न मालूम उसकी क्या दुर्दशा होगी। बोली—"तुम्हारी बात का तो कोई सबूत मिल नहीं सकता; परंतु अगर यह लड़की मेरे पास रहे, तो मैं इसे बेटी की तरह रक्खूँगी।" इतना कहकर उसने मालती को प्यार किया, और पूछा—"कुछ खायगी?" उसने घाटवाले की तरफ़ देखा। वह बोला—"हज़ूर, कल से भूखी है।" अच्छो बाई ने घाटवाले को सौ रुपए देकर रुख़सत किया। मालती को नहला-धुलाकर अपनी गोद में बिठाकर प्यार किया। वह दो दिन से सहमी थी। उससे लिपटकर रोने और दरवाज़े की तरफ़ देखने लगी।

अच्छो ने कहा—"डरो मत बेटी, वह गया, तुम कौन हो और किसकी बेटी हो? तुम्हारा घर कहाँ है, बतलाओ, मैं तुम्हें पहुँचा दूँगी। उसने उत्तर दिया—"मैं दुबेजी की बेटी हूँ। घर तो मालूम नहीं, कहाँ है, बाबा को सब बदरी दुबे कहते हैं। घर में अम्मा हैं, नानी हैं, छोटी बहन है।

"तुम कैसे आईं?"

"वह आदमी पकड़ लाया।"

"कहाँ से?"

"गंगाजी से।"

"लाया कैसे?"

"रेल पर।"

अच्छो ने समझ लिया कि पता चलना मुशकिल है। फिर भी दिलासा देकर बोली—"अच्छा, मैं ढूँढ़ूँगी। तुम घबराओ मत।" बात की सच्ची थी। अपने आदमियों को आज्ञा दी कि हो सके, तो उस आदमी से, शहर का पता लगाओ। किंतु घाटवाला बेवक़ूफ़ न था।

(५)

लक्ष्मी का जप भंग हो गया। इससे न तो उसकी आँख ही अच्छी हुई, और न कान ही। रोज़-बरोज़ बहरी होती गई, और आँखों में भी धुंध बढ़ता गया। लड़की के मरने का दोष वह अपने को ही देती रही। तीन-चार वर्ष में वह बिलकुल बहरी और अंधी हो गई। दामाद और बेटी उससे तंग आ गए। वह स्वयं अपने से तंग आ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गई। लड़कियाँ यद्यपि छोटी थीं, मगर उसकी एक बात भी न सुनतीं। ज़रा-ज़रा-सी बात को वह दूसरों की मुहताज हो गई। एक वर्ष यों भी भोगा। फिर इन कष्टों से छुटकारा पाया। सब ख़ुश हुए। वह स्वयं भी मरते समय बड़ी प्रसन्न थी।

घाटवाले ने मालती के द्वारा कोई तीन-चार सौ रुपए पाए। जब स्त्री ने पूछा, तो बोले—"अजी जान बची, लाखों पाए। पुराना पुर्खों का मकान गिरा पड़ता था, उसकी मरम्मत में लग गए। कान पकड़े कि कभी फिर ऐसी चोरी न करूँगा।" तिलक जितना बड़ा लगाते थे, उसका दुगना कर दिया, और भगतजी कहलाने लगे। मगर कभी-कभी रात को जब मालती का ध्यान आ जाता, तो थोड़ी देर बेचैनी से कटती। छः वर्ष इसी तरह काटे। फिर वह भी काल का ग्रास बन गए; उनका भेद उनके साथ चला गया। स्त्री को कभी उनके पाप से दुःख नहीं होता। वह यही कहती कि अपनी करनी अपने साथ है।

केवल सत्यव्रत ही एक ऐसे आदमी थे, जिन्हें मालती के डूबने पर शक था; किंतु जब दुनिया ही ने उसे डुबो दिया, तो वह क्या करते! घाटवाले पर उनको सदा ही शक बना रहा; किंतु कुछ कर न सके। सबूत हो, तो कुछ करें। यों ही बकने से क्या फ़ायदा।

बदरी दुबे की रिश्वत का हाल कलक्टर साहब को मालूम हो गया, सबूत कोई ख़िलाफ़ न मिला; क्योंकि देनेवाले उनसे बहुत ख़ुश रहते थे। उन्होंने तरक्की रोक दी। महँगी रोज़ बढ़ती जाती थी। अब मुशकिल से गुज़र होने लगी। लड़कियाँ भी बड़ी हो गईं। विवाह होना चाहिए। बड़ी तो १४ वर्ष की और छोटी ११ की हो चली थी। दोनों का साथ कर डालें, तो सस्ते में हो जाय। कहीं मालती जीवित होती, तो अब तक क़र्ज़दार हो गए होते। परमेश्वर ने बड़ी कृपा की, जो उसे उठा लिया। उसे स्वर्ग मिले। मुहल्लेवालियाँ तो उसके डूबने के ही दिन से उन्हें बधाई दे रही थीं—"चलो, अच्छा हुआ, एक ही कम सही।" उस वक़्त सरस्वती को बुरा मालूम होता था। अब स्वयं वह भी यही बात कह रही है।

सरस्वती कितनी ही मूर्ख क्यों न हो, लड़कियों के विवाह का प्रबंध दस वर्ष से कर रही थी, थोड़ा-थोड़ा सामान इकट्ठा करती ही जाती थी। अधिकतर हिंदू-स्त्रियाँ यही करती हैं; क्योंकि विवाह तो करना ही है, देर-सबेर की बात है, कांति का विवाह हो गया। बस, सीता बाक़ी रह गई। कोई लड़का नहीं मिला। ख़ैर, थोड़ा क़र्ज़ और ले लेना पड़ेगा। लड़के के बाप को तो देना ही होगा। समाज का दस्तूर है, चाहे लड़कीवाले की कैसी ही दशा क्यों न हो।

सीता के विवाह की भी बातचीत हो गई। कांति के विवाह के एक वर्ष बाद उसका भी विवाह होने को है, तैयारी होने लगी। अब दुबेजी क़र्ज़ भी अदा नहीं कर सकते। सूद-पर-सूद चढ़ने लगा, साल समाप्त होते-होते एक हज़ार का क़र्ज़ हो गया, और पाँच सौ कम-से-कम और लेने हैं। कुल पंद्रह सौ देने होंगे। दो-तीन वर्ष में अदा हो जायँगे।

सुबह-शाम होते-होते उम्र बीत जाती है, साल-भर बीतने में क्या लगता है! सीता का भी विवाह हो गया और दुबेजी पंद्रह सौ के क़र्ज़दार हो गए। महाजन ने यह तय किया कि ३००) साल अदा किया करेंगे। मय सूद छः वर्ष में अदा हो जायगा।

आदमी को कल की तो ख़बर नहीं होती, इसलिये पहले से इंतिज़ाम करता है, और बरसों बाद तक का प्रबंध-कर रखता है। क्या मालूम था कि दुबेजी स्वयं छः बरसों के पहले ही मृत्युलोक से सिधार जायँगे। अभी ४० वर्ष की आयु भी न थी; किंतु यमराज ने बुला ही भेजा, एकाएक सीता के विवाह के छः महीने बाद, हैज़े के रोग से दो दिन बीमार रहकर, स्वर्गलोक चल दिए।

सरस्वती का हाल पाठकगण समझ सकते हैं। घर में सिवा क़र्ज़ के कुछ नहीं था। सिरधरा चला गया, यह बेवा बेचारी क्या करे, ऊपर से शोक मनाने को कांति और सीता और उन दोनों के पति भी आ धमके। खिलावे कहाँ से? वह अपने रंज में फँसी थी, ऊपर से अतिथि-सत्कार का बखेड़ा आ उपस्थित हुआ, सौभाग्य से सत्यव्रत जीवित थे। वह बेचारे आड़े समय में सबके काम आते थे। सरस्वती के घर में अतिथि-सत्कार का भार उन्होंने अपने हाथ में ले लिया। किसी तरह से काम हो गया।

दोनों लड़कियाँ छोटी थीं। अपने साथ मा को कोई ले न जा सकती थीं; क्योंकि किसी का पति स्वाधीन न था। सत्यव्रत ने एक दिन कहा—"बेटी मैं, अमीर हूँ, मेरे आगे-पीछे कोई नहीं। तुम मेरे साथ रहो। तुम मेरी बेटी के तुल्य हो, कोई डर नहीं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सरस्वती ने कहा—"मेरी तो कुछ समझ में नहीं आता कि क्या करूँ। क़र्ज़दार अलग जान आफ़त में किए हैं, क्या करूँ, कहाँ जाऊँ। आप बड़े हैं, जैसी आज्ञा देंगे, करूँगी।" सत्यव्रत ने कहा—"बेटी, तुम फ़िक्र न करो। परमेश्वर की कृपा से मेरे पास धन काफ़ी है। तुम न दे सकोगी, तो मैं दूँगा।"

उन्होंने इस तरह से कहा कि अभिमान का भाव प्रकट न हो। इरादा तो उनका यही था कि कुल रुपया अदा कर देंगे, और जो सरस्वती के पास जो रहेगा, वह उसी की गुज़र को छोड़ देंगे।

सरस्वती सत्यव्रत के घर में रहने लगी। फिर उसे ख़बर न हुई कि क़र्ज़ अदा भी हुआ या नहीं, रहती तो वह थी; किंतु हर वक़्त माता का उनके साथ रहना याद आ जाता, और यह सोचकर कि जैसे माता को लोग बदनाम करते थे, वैसे ही उसे भी करते होंगे, वह बहुत उदास रहती। उस वक़्त तो सत्यव्रत की माता भी जीवित थीं, अब तो कोई भी नहीं है। सिर्फ़ इतनी बात ज़रूर है कि वह बूढ़े हैं।

(६)

अच्छो बाई ने बरसों तक कोशिश की कि मालती के बाप का पता चलाकर उनकी लड़की उनके सुपुर्द कर दें; किंतु इस कार्य में वह सफल न हुई। वह यह ख़ूब जानती थी कि अगर लड़की दस बरस की हो गई, तो हिंदू-समाज के डर से उसके मा-बाप उसे घर में भी न घुसने देंगे। ख़ासकर जब उन्हें यह मालूम होगा कि उस लड़की का पालन-पोषण एक वेश्या के घर में हुआ। उसे यह भी अच्छी तरह मालूम था कि पेशेवर वेश्या, चाहे कितनी ही उदार, कितनी ही पवित्र विचारवाली, कितनी ही सच्ची क्यों न हो, फिर भी नीच समझी जाती है, और उसकी बात का कोई एतबार नहीं करता। वेश्या बनानेवाले या बनाकर उनकी परवरिश करनेवाले पुरुषों को समाज का डर भले ही न हो, और समाज को भले ही उनको दंड देने की चाहना या अधिकार न हो; पर उन स्त्रियों पर, जिन्हें वे पतित बना देते हैं, समाज का भयंकर कोप पड़ता है। समाज के इस अत्याचार से ही न मालूम कितनी स्त्रियों को पेशा करने की नौबत आती है। जब आप किसी भूली-भटकी लड़की को, या उसे, जिस पर बलात्कार किया गया हो, सँभलने का मौक़ा देने को तैयार नहीं, तो वह क्या करेगी?

एक बरस दो बरस तीन बरस बीत चले, पर दुबे-परिवार का पता न चला। मालती को अच्छो से बहुत प्रेम हो गया था। और होता कैसे नहीं, मा की तरह वह उसे पालती, अन्न-वस्त्र देती और पढ़ना-लिखना सिखाती थी। ऊपर से बाप का पता चलाने का यत्न करती। तीन वर्ष जब पता न चला, तो उसने आशा छोड़ दी। फिर उसके भविष्य को सोचने लगी—"हिंदू-समाज अब इस अनजान बच्ची को तो ग्रहण करेगा नहीं, उसके मा-बाप का पता भी चल जाय, तो वे भी कभी उसे पास न फटकने देंगे। वह तो अब पतित हो चुकी। एक तो स्त्री की जाति, उस पर ब्राह्मण की लड़की। दस बरस की है, तो क्या हुआ! है तो आख़िर लड़की ही! लड़की एक दिन भी घर से बाहर किसी भी वजह से क्यों न रहे, वह फिर क्या घर में घुसने योग्य रह जाती है? फिर यह तो तीन बरस से एक वेश्या के घर में है। इसे कैसे हिंदू-समाज अपने में मिला सकता है? कोई इसकी छोटी उम्र पर तरस खानेवाला नहीं है, और न यह पूछनेवाला ही होगा कि जिसके घर में रही, उसने कैसे प्रेम से इसे पाला! फिर अगर मैं इसकी उम्र यों ही ज़ाया करूँ, तो क्या लाभ। इसके पतित होने का कारण हिंदू-समाज होगा, मैं नहीं।"

इस प्रकार के विचार अच्छो बाई के मन में रोज़ उठते। लड़की को भी अब उसके पास से जाने की चाह नहीं रही थी। वह अभी समाज के अत्याचारों को न तो जानती थी, और न समझती थी। धीरे-धीरे बाईजी की शिक्षा से सब बातें सीखती जाती थी।

जब से उसके मा-बाप की तलाश बंद हुई, तब से बाईजी ने उसे गाना सिखाना आरंभ किया। गाना-नाचना सीखने में उसने जल्दी सफलता पाई। दस ही वर्ष में वह अच्छी नाचनेवाली मशहूर हो गई। युवावस्था थी ही, आँख-नाक सुडौल थी, रंग भी काला नहीं था, बदन गठा हुआ था, बातचीत में भी चटाख़-पटाख़ की कमी न थी। फिर क्या था, रोज़ रईसों के यहाँ मुजरे में बुलावे होने लगे। फिर पैसे की क्या कमी थी।

अच्छो बाई की भी वृद्धावस्था आ पहुँची थी। उसका पेशा ऐसा अवश्य था, जिसमें बदनामी है; किंतु वह बुरी तबीयत की औरत न थी। अच्छे और बुरे तो हर पेशे में होते हैं। वह बीमार रहती थी, और मालती उसकी सेवा बड़ी श्रद्धा तथा प्रेम से करती थी। मरते समय उसने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहा—"बेटी, मैं तो दो-चार दिन की मेहमान हूँ। तुम जवान हो, अभी सारी उम्र तुम्हें मुसीबतें काटनी हैं। पेशा तुम्हारा ऐसा है कि तुम्हें लोग बुरा कहेंगे; किंतु लोगों के बुरा कहने से बुरा बन जाना अच्छा नहीं। तुम्हें हर तरह के आदमी मिलेंगे। तरह-तरह के लालचों का सामना करना होगा। अगर तुम मज़बूत हो, तो इस पेशे में रहते भी किसी जाल में न फँसोगी। अपनी तबीयत की मज़बूती चाहिए।

"देखो, जहाँ तक हो, सिवा बड़ी महफ़िलों के और कहीं नाचने न जाना, और हो सके, तो किसी थिएटर में नौकरी कर लेना। घर-घर घूमने से वह बहुत अच्छा है। जीविका का और सहारा होता, तो मैं तुम्हें कभी यह सलाह न देती; किंतु तुम्हारे पास कोई और हुनर नहीं। जो हुनर तुम्हारे पास है, उसी से तुम्हें जीविका चलानी है। हिंदू-समाज ने तुम्हें छोड़ दिया है। तुम कितनी ही नेक-चलन क्यों न हो, सब बुरा ही कहेंगे। किंतु तुम हिंदू-समाज को न छोड़ना। कभी तो इनकी आँखें खुलेंगी। तब अत्याचारों को देखेंगे। तुम्हारे मा-बाप का पता चल जाय, तो उनका आदर ज़रूर करना, चाहे वे तुम्हारे साथ कैसा ही बर्ताव क्यों न करें।"

अच्छोबाईको मरे भी एक साल बीत गया। मालती को बड़ा ही दुःख हुआ; क्योंकि वही उसकी 'मा-बाप' थी। साल-भर उसने अपना काम बंद रक्खा। देहली में एक बंबई का थिएटर आया। उसके मालिक रुस्तमजी ने मालती की आवाज़ और नाचने की बड़ी प्रशंसा सुनी। कहनेवाले ने यह भी कहा कि वह साल-भर से घर से बाहर निकलती नहीं; कितना ही बुलाया जाय, इनकार करती है। रुस्तमजी की अवस्था यथेष्ट हो गई थी। उसके घर गए, मामला तय हो गया। उन्होंने वादा किया कि मालती की हिफ़ाज़त वह उसी तरह करेंगे, जिस तरह उसके पिता करते थे, और २५०) महीना देंगे। उसका कुल हाल भी मालूम हो गया।

दो वर्ष बाद रुस्तमजी का थिएटर घूमता-फिरता लखनऊ आया। वहाँ मालती के नाचने और गाने की बड़ी धूम हुई। जब वह स्टेज पर आती, तो लोग यही चाहते कि यह यहीं खड़ी रहे। एक तो यों ही परमेश्वर ने उसकी सूरत अच्छी बनाई थी, फिर रंग-रौग़न उस पर और भी चमक ला देता था। "एंकोर" की ध्वनि बार-बार उठती, और उसे बार-बार बाहर आना पड़ता। उसका स्टेज का नाम मिस फ़ाख़्ता रक्खा गया था।

सत्यव्रत भी उसी समय किसी काम से लखनऊ आए हुए थे। उनके मित्रों ने कहा—चलो, थिएटर देख आवें। मिस फ़ाख़्ता के गाने की बड़ी तारीफ़ है। वह गाना सुनने के शौक़ीन थे; राज़ी हो गए। पर्दा उठा। पूछा, फ़ाख़्ता कौन है? इस पर उनकी बग़ल में जो आदमी बैठा था, वह हँस पड़ा; और बोला—"फ़ाख़्ता उड़ गई।"

यह सीधे आदमी थे, समझे नहीं; पूछने लगे—"क्या उसने नौकरी छोड़ दी?"

लखनऊवाले हँस पड़े, इनके साथी ने कहा—"वह अभी स्टेज पर नहीं आई है।"

जब दो तीन बार पर्दा उठ चुका, तो मिस फ़ाख़्ता आई। सारा मंडप गूँज उठा। तालियाँ बजाकर सभा ने उसका स्वागत किया। गाना समाप्त होने के बाद, वह फिर बुलाई गई, और फिर बुलाई गई। बहुतेरे दिलचलों ने तो गुल-दस्ते और हार उसके ऊपर फेंके। उनमें कुछ ज़ेवर या रुपया था या नहीं, हमें मालूम नहीं; किंतु रुस्तमजी की ज़बानी यह मालूम हुआ कि कुछ रईसों ने उसके नाम पत्र लिखे थे, और ऐसे-ऐसे घृणित प्रस्ताव पेश किए थे कि वह पढ़कर रोने लगी।

रुस्तमजी पर्दा गिरने के बाद स्टेज पर आ खड़े हुए, और बोले—"साहबो, आपमें से कुछ लोगों ने मिस फ़ाख़्ता के वास्ते ख़त लिखकर फेंके थे। वे ख़त मेरे हाथ में हैं (जिन लोगों ने ख़त भेजे थे, उनका दिल बल्लियों उछलने लगा); पर मैं उनके नाम इस वक़्त न लूँगा (वे शांत हो गए, ठंडी साँस ली)। अगर अब से कोई साहब ऐसी गुस्ताख़ी करेंगे, तो मिस फ़ाख़्ता उन पर मुक़द्दमा चलावेंगी। आप लोगों के फ़ायदे के वास्ते यह कह देना चाहता हूँ कि मिस फ़ाख़्ता बड़ी ही मुअ़ज़्ज़िज़ औरत हैं, और जिन साहबों ने बेहूदा ख़त उन्हें लिखे हैं, वे उनकी जूतियाँ साफ़ करने के लायक़ नहीं।"

सारी सभा में ख़त लिखनेवालों को गालियाँ पड़ने लगीं। जिन लोगों ने ख़त लिखे थे, वे सबसे ज़्यादा गालियाँ देते थे, बोले—"ऐसे आदमियों को तो फ़ौरन् फाँसी दे देनी चाहिए।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सत्यव्रत के पास एक आदमी बैठा था। उसने दूसरे से कहा—"सुना है, फ़ाख़्ता हिंदू-औरत है।"

"कौन कहता है?"

"रुस्तमजी कहता था कि बचपन में कोई पकड़कर अच्छो के हाथ बेच गया था, कोई दुबे थे, यह नहीं मालूम कि कहाँ के। उस बेचारी ने बहुत तलाश कराई; पर पता न चला। अब भी वह मुसलमान नहीं हुई है।"

सत्यव्रत के कान खड़े हुए। जब वह दूसरे दफ़े स्टेज पर आई, वह बड़े ग़ौर से उसे देखने लगे। उसने भी देखा, एक बूढ़ा उसे घूर रहा है। इनके बराबरवाले साहब बोले—"अरे मियाँ देखो, यह फ़ाख़्ता तो बूढ़ों को जवान बनाए है।"

सत्यव्रत को शंका पैदा हुई, सोच में पड़ गए। "है तो कुछ कांति का-सा भाव, नक़्शा भी वही है। दुबे-परिवार की ही लड़की है। मान लो, वही है, तो मैं क्या कर सकता हूँ? मेरी हिम्मत नहीं कि अब उसे घर में ले जाकर रक्खूँ। पर फिर भी है तो हमारे ही ख़ानदान की। हाय, समाज! तू कैसा अत्याचार करता है। कुछ भी हो, मिलूँगा ज़रूर।"

दूसरे रोज़ रुस्तमजी को इत्तिला मिली कि एक वृद्ध मिलने आए हैं। वह जब बाहर निकले, तो सत्यव्रत खड़े थे। नाम और काम बताया, रुस्तमजी ने कहा—"मैं पूछ लूँ, अगर वह मिलना चाहे, तो मुझे क्या एतराज़ है।" कहने-सुनने से वह राज़ी हो गई। रुस्तमजी के साथ बाहर आई।

सत्यव्रत ने कहा—"क्षमा कीजिए, कुछ शंका उत्पन्न होने के कारण आप के पास उपस्थित हुआ हूँ।"

उसने कहा—"मैंने तो कल आप को देखा कि आप मेरी तरफ़ घूर रहे हैं। मुझे बहुत ग़ुस्सा आया, पर मैं चुप हो गई।"

सत्यव्रत—"आप ने बड़ी कृपा की। मैं आप के बाप से शायद उम्र में बड़ा होऊँगा। फिर आप को मेरी नीयत पर शंका न होनी चाहिए थी।"

मालती—"बेशक आप सच कहते हैं; पर दुनिया जहाँ तक मैंने देखी है, यही देखा कि बूढ़े बाबा अपनी पोती से छोटी लड़कियों पर बुरी दृष्टि डालते हैं। माफ़ कीजिए मेरी भूल।"

सत्यव्रत—"क्या आप कृपा कर अपने बाप का नाम बता सकती हैं। मैंने कुछ उड़ती ख़बर सुनी है; इसवास्ते पूछता हूँ।"

रुस्तमजी और मालती ने एक दूसरे को देखा, मानो मालती ने कहा कि आप बता दीजिए। उन्होंने कुल हाल सुना दिया। सत्यव्रत का कलेजा धड़क रहा था और आँखों से भी आँसू टपक पड़े। मालती ने देखा, समझी, कोई दयावान् वृद्ध है।

सत्यव्रत—"आपका नाम फ़ाख़्ता शायद फ़र्ज़िया है?"

मालती—"जी हाँ।"

सत्यव्रत—"आपको लोग बचपन में मालती तो नहीं कहते थे?"

मालती जवाब न देकर रो पड़ी। सत्यव्रत भी रो पड़े। मालती ने पूछा—"मा-बाप तो सकुशल हैं?"

सत्यव्रत—"तुम्हारे पिता का तो, बहुत दिन हुए, देहांत हो गया। माता मेरे पास रहती हैं। बहनें अपने घरों में हैं।"

"तो क्या मैं मा से मिल सकती हूँ?"

"मेरी राय में कोई हर्ज नहीं। डरता तो समाज से मैं भी हूँ, पर मिलने में क्या हर्ज। तुम छुट्टी लेकर दो रोज़ के लिये फ़रुंख़ाबाद चली आओ।"

सत्यव्रत ने सरस्वती से दो दिन बाद कहा।

"तुम्हारी मालती मिल गई।"

"नहीं तो? सच कहते हो कहाँ? कैसे? पर वह अब हमारे किस काम की होगी?"

"बाहर खड़ी है, मिलना चाहती है, कोई हर्ज तो है नहीं।" फिर उसका कुल हाल कहा।

"न-मालूम कमबख़्त झूठ कहती है या सच। मैं न मिलूँगी, कह दो, चली जाय।"

मालती ने सुना। पहले तो क्रोध आया किंतु अच्छो-बाई की बात याद आई। सत्यव्रत ने बाहर आकर जब कहा, तो वह बोली—"आप फिर समझावें, आख़िर मुसलमान, चमार भंगी की स्त्रियों से मिलती हैं या नहीं। मैं तो फिर भी उन्हीं की संतान हूँ।" सरस्वती ने उस समय सत्यव्रत की एक न सुनी। दिल में तो मिलने की बड़ी ही चाह थी; किंतु इस डर से कि लोग क्या कहेंगे, वह इनकार ही करती रही।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दोनों मा-बेटियाँ केवल एक दीवार का व्यवधान होने पर भी आपस में न मिलीं।

मालती उदास होकर चली गई। दोनों मा-बेटियाँ केवल एक दीवार का व्यवधान होने पर भी आपस में न मिलीं। उनके आँसुओं ने एक दूसरे से सहानुभूति प्रकट की, मालती मिलने की अब भी आशा रखती है। सरस्वती को तैयार होना बाक़ी है।

मोहनलाल नेहरू

खुली-चिट्ठी*

प्रिय संपादकजी,

मैं ने 'माधुरी' के विशेषांक में भूत-रहस्य और पुनर्जन्म पर लेख देखे। देश में सुधा तथा अन्य पत्रों में भी ऐसे सुरोचक लेख निकल रहे हैं। अभी असली शिक्षा का अभाव है। यहाँ अशिक्षितों तथा शिक्षा-भारवाहियों पर भूत, कलि, दैव, पुनर्जन्म (पूर्व और पर-जन्म), अकारण या विरुद्ध कारणों से कार्योत्पत्ति आदि बातों का प्रभाव चिरकाल से जकड़ा है। 'ऐसे विश्वास अभी-अभी जागरित हो रहे हैं, पहले से लोग इन बातों को नहीं मानते थे'—ऐसा कहना असंगत है। असली शिक्षावाले इँगलैंड, जर्मनी, अमेरिका, फ़्रांस, जापान आदि देशों में पहले ऐसे ही भ्रांत थे। अब ये हज़ार में एक से भी कम मनुष्यों में पाए जाते हैं। इंडिया (आधुनिक हिंदोस्तान या भारत) में जिसे अब पुराने नामों से पुकारना केवल नक़ल करना है)† कदाचित् करोड़ में एक ही मनुष्य होगा, जिसे इन बातों में विश्वास नहीं, और लोगों में इनका प्रचार करने में संकोच है। ये भी दस-पाँच अब सर ऑलिवर आदि वैदेशिक तथा यहाँ के एम्० ए० आदि उपाधिधारियों के दृष्टांत से, शीघ्र ही इन विश्वासों पर

---

* इसे छापने, प्रकाशित करने तथा भाषांतर करने का सबको अधिकार है। पटना—आश्विन-शु० १५-१९८४

† जैसे नेहेमिया (Nehemia) नीलकंठ शास्त्री को नीलकंठ शास्त्री कहना केवल विडंबना है। उन्हें तो रेवरेंड नेहेमिया ही कहना ठीक है। नीलकंठजी एक बापूदेवजी के समय के विद्वान् थे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आजायँगे। इसी आशा से कितने ही लोग ख़याली पुलाव खाया और कहा करते हैं—'मैं भी पहले * नास्तिक था। पर हिमालय और तिब्बत के महात्माओं से बातचीत कर तथा भूत, प्रेत, जादू आदि की करामात अपनी आँखों से देखकर आस्तिक होगया' †। असल में ये बेचारे सदा से ऐसे भ्रमों के भक्त हैं। और भक्ति ही की, न कि परीक्षा की दृष्टि से इन बातों को देखकर इनके जाल में फँस जाते हैं। इसीलिये बी० ए०, एस्० ए०, बी० एल्० आदि लोग हलफ़ लेकर ऐसी बातें लिखते हैं, और हम-सरीखे नास्तिकों को दबाने के लिये वे आई० सी० एस्०, जज, बारिस्टर, डॉक्टर, राजे-महाराजे, ज़मींदार आदि की भी गवाही खींच-खाँचकर अपनी बातों पर लिख दिया करते हैं। इज़हार के समय कुछ गड़बड़ न हो, इसलिये साथ-ही-साथ वे यह भी सूचना पहले ही दे देते हैं कि गवाहों में से कई लोग घटना देखने से पहले ही खिसक गए, और अन्य कितने ही घटना देखकर भी उसकी सचाई पर विश्वास नहीं करते। उदाहरण के लिये, वकील साहब बाबू कैकेयीनंदनजी का (माधुरी के विशेषांक में) बयान देखिए। आपके जातिस्मर पुत्र के अपने पूर्व-पिता पंडाजी के यहाँ पहुँचते-ही-पहुँचते श्रीमान् और श्रीमती मेहता लौट गए। और, पंडाजी ने तो अपने पुनर्जात पुत्र की एक बात न मानी। आशा तो इस करामातवालों को हुई होगी कि बालक को देखते ही पंडाजी उठकर आँसू बहाते हुए इसे गले लगावेंगे, और अपनी लाखों की संपत्ति इसे लिख देंगे। पर करामातियों को हाथ मलकर रह जाना पड़ा ‡।

बड़े-बड़े गवाहों के नाम की धारा जब निकाली जाती है, तब बच्चों का दिल धड़क जाता है। ख़ासकर उन्हीं के बाप-दादों के नाम उनमें हों, तो वे और भी काँप उठते हैं। वस्तुतः ऐसी बातों के लिये सफ़ाई के गवाहों की कभी कमी नहीं रही। मैंने तो ऋक्संहिता में जो पति-वशीकरण आदि के औषध आदि लिखे हैं, या छांदोग्य में जो पतंजलि की पुत्री पर दध्यभव के प्रेत की सवारी लिखी है, तथा महाभारत आदि में जो सुद्युम्न का इला हो जाना, तथा शिखंडी का स्त्री से पुरुष हो जाना, या गीता आदि में कृष्णजी के पूर्व जन्म में विवस्वान् से अपने योगोपदेश आदि की बातें लिखी हैं, उन्हें भी विचार से देखा। इसके अतिरिक्त सांप्रतिक हाईकोर्ट के जज और राजे-महाराजे, बारिस्टर आदि से ऐसे विषयों पर मेरी ख़ूब बातचीत हुई। एक स्थानीय बारिस्टर जज ने मुझसे कहा कि वैद्यनाथ धाम में उनके सामने ही एक साधु ने पाँच सेर हलवा बनाया, और उसमें से पाव-पाव-भर पाँच सौ स्त्री-पुरुषों को बाँटा, तथा उसी धाम के एक संत ने एक अँगरेज़ जज की भावी उन्नति की ठीक तारीख़ बता दी †। एक बारिस्टर ने मुझसे कहा है कि एक दूसरे मरे हुए बारिस्टर का भूत आता

---

* अमर ने लिखा है—"मिथ्यादृष्टिर्नास्तिकता" इसलिये अंधविश्वासी ही असली नास्तिक हैं। तथापि आजकल आस्तिकता और अंधविश्वास पर्याय-से हो रहे हैं। इसलिये नास्तिक पदवी उत्तम है। खोए को कोई गोबर कहे तो खोया छोड़कर गोबर नहीं खाना चाहिए। वैसे ही अंधविश्वास के अभाव को कोई नास्तिकता कहे, तो अंधविश्वास सिर पर ढोने का प्रयत्न नहीं करना चाहिए। मुग्ध लोग जिसे आस्तिकता कहते हैं, वह बचने की चीज़ हैं, और जिसे नास्तिकता कहते हैं, वह प्रायः श्लाघ्य है। "या निशा सर्वभूतानां तस्यां जागर्ति संयमी। यस्यां जागर्ति भूतानि सा निशा पश्यतो मुनेः।"

† एक स्थानीय वकील (जिनकी उम्र उन्हीं के मुख से पचपन बरस की जान पड़ी) मुझसे यही अपनी आस्तिकता का कारण बताते थे। एक सज्जन अपने व्यामोह में कहने लगे कि वकील साहब पचहत्तर बरस के हैं; पर देखिए, कैसी सिद्धि इनको है। अभी हाल में इनके बाल काले हो गए हैं। ऐसे ही व्यामोहों से यह देश गिरा जा रहा है।

* काशी के कुछ लोग मुझसे कहते हैं कि यह सारा फ़साद यहाँ के एक वकील साहब का था। सिखा-पढ़ाकर लाया हुआ बच्चा भी न ठीक किसी को पहचान सका, न कुछ कह सका। यह कैसा व्याहत है कि बच्चों का तो दिमाग़ जन्म से तीन-चार बरस तक की इस जन्म की बातों का स्मरण नहीं रख सकता, पूर्व-जन्म की क्या यादगारी रख सकता है। कहते हैं, यह शक्ति थोड़े दिनों में नष्ट हो जाती है! यह छल इसलिये रक्खा गया है कि कोई बेवकूफ़ इसके पीछे पड़े और लड़के से फिर कुछ काल्पित पूर्व-जन्म की बात पूछे, तो उसके हिमायती कहेंगे कि अब यह कुछ नहीं कह सकता। जाँच से भागने की ये अच्छी तरकीबें हैं।

† जब जज साहब ने मुझसे पूछा कि उस संत ने यह करामात कैसे की, मैंने तो यह सब अपनी आँखों से देखा है, तब मैंने उत्तर दिया—'मेरे मत से तो यह मज़े का क़िस्सा है।' इस पर जज साहब बहुत बिगड़े, और काँपने लगे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

था जिसके आवेश में उन्होंने उसकी एक अँगूठी का ठीक-ठीक पता बताया, जिसे और कोई नहीं जानता था। एक एम्० ए० प्रिंसिपल साहब मुझसे कहा करते हैं कि उनकी स्त्री (जिसकी मृत्यु दस-बारह वर्ष पहले हो चुकी है) लोकांतर से उनके यहाँ पत्र भेजा करती है, जो पत्र एक अठारह वर्ष का सीधा लड़का लिखा करता है। प्रिंसिपल महाशय ने यह भी कहा कि जब इस लड़के पर आवेश आता है, तो कल कलकत्ते से आनेवाले यात्रियों की बातें भी वह कह देता है, और जिनके आने की बातें वह कहता है, वे आ भी जाते हैं। जब मैंने इनसे कहा कि जब वह आवेश में आवे, तो एक बड़ी पुस्तक में कहीं काग़ज लगाकर उससे पूछिए कि वह काग़ज़ किस पृष्ठ में है*, तो महाशयजी ने इस पर मुझसे कहा कि पंडितजी, प्रेतों में भक्ति कीजिए, उनकी परीक्षा नहीं की जाती। ऐसे ही एक स्थानीय सज्जन के यहाँ बँसुरिया बाबा आए थे, जो अपने अंगों से लड्डू, रसगुल्ले आदि निकालकर लोगों को खिलाया करते थे। मुझसे इन सज्जन ने कहला भेजा कि वह मेरे घर से मेरी लिखी हुई पुस्तक मँगा दे सकते हैं। जब मैंने इन सज्जन के बहुत आग्रह पर पत्र लिखा कि यदि मेरी टोपी मेरे सामने से थोड़ी ही दूर, बिना छुए, अपनी अलौकिक शक्ति से, यह खींच लें, तो मैं १०० से ५००० तक रुपए उन्हें दूँ, यदि वह या उनके पक्षवाले भी उनके यह कार्य न करने पर इतना ही द्रव्य देने का वादा करें। यह पत्र संध्या को मिलते ही प्रातःकाल महात्मा यहाँ से चले गए। मैंने उनके आदमियों से पहले ही यह बात कह रक्खी थी। यह ठीक भी है। जब भूत, पुनर्जन्म, मंत्र आदि से द्रव्य उत्पन्न करना या खींचना आदि की गप्पें चलें, तो परीक्षा के अखाड़े में नहीं उतरना चाहिए। क्रोध, गप्प, गाली आदि से या दुर्बल को मौन आदि से काम लेते रहना चाहिए। इसी से 'सिद्धसिक्थकमूर्तीनां परीक्षाग्नेर्महद्भयम्' और 'क्रोधकथाबलात्कारादम्भस्य' तथा 'मौनसाधनाभावो रहस्यं वा' इत्यादि परमार्थ वार्तिकों में परमार्थ भाष्य तथा परमार्थ-सूत्रों में लिखा है * ?

भूत आदि की बातों में सफ़ाई की गवाही देते रहना ही ठीक है; क्योंकि इस देश में यह विश्वास अभी ख़ूब है, और यह जायगा भी बड़ी कठिनता से। काम, लोभ, मोह, इन तीन कारणों से मनुष्य अद्भुत घटनाओं की बातें किया करते हैं। 'देवास' आदि की तथा 'ब्रह्म' आदि की बातें निकालने से या 'प्लांचेट', 'मीडियम' आदि की प्रथा चलाने से लोगों की भीड़ लग जाती है। ऐसी भीड़ों में भस्म आदि या आशीर्वाद आदि से पुत्र, पति-वशीकरण आदि के लिये या अपने पुनर्जन्म की कथा कहते हुए बालकों को देखने के लिये, प्रायः स्त्रियाँ आती हैं, और उनका सहवास सुलभ होता है। बहुतेरे इन लोगों से धन भी कमाते हैं और कभी-कभी स्वयं भी ऐसे भ्रमों में पड़े रह जाते हैं †। ऐसे कारणों से इस देश में, तथा अन्यत्र, ऐसी बातों में बहकाकर या मीडियम बनाकर लोग तरुणियों के साथ रहने का स्वतंत्र अवसर पाते हैं। यहाँ यह अवसर पहले मूर्ख प्रेतवादियों को ही मिलता था। कहार, कुर्मी, जुलाहे, निपढ़ ब्राह्मण तथा भंगी आदि मेरे बाल्य में बहुधा अपने ऊपर भूत बुलाना, या देवता बुलाना, या दूसरों का भूत झाड़ना, या उनका मनोरथ कहना, तथा भभूत (विभूति) देना, या फूल आदि अपने देह-रंध्रों से निकालना इत्यादि काम किया करते थे। पर पढ़े-लिखे पंडित, वकील आदि के घरों में

* इस प्रश्न के उत्तर के लिये मैंने कितनी बार कितनों को बाज़ी रखकर ललकारा और भारतमित्र आदि में सूचना दी। मेरे मित्रों ने भी कितनों को सूचना दी; पर 'कहता तो बहुता मिला करता मिला न कोय।' वंचक लोग कैसे आ डटें। अखाड़े में वे कभी न आवेंगे। आ जायँ तो बाज़ी जीतकर पारमार्थिक लोग मालामाल हो जायँ। वे बाज़ी लगाए बिना हमारे प्रश्न और परीक्षा-प्रकारों के सहारे Clairvoyance, Telepathy, Mysteryman, Astrologer, Magician आदि के पास कभी न जाइए।

* सुधा के गतांक में जिन लोगों के द्वारा फूल बरसाने का तमाशा और पियानो स्वयं बजने और उठने के तमाशे की मज़ेदार कहानी लिखी है, और जिसे बाल्य में गौड़जी ने तरुण डॉ० टीबो के साथ भक्तिपूर्वक देखा था, वे लोग उस समय से कुछ पहले यहाँ बाबू पूर्णेंदुनारायण के सौध में आए थे, तब चैलेंज देते हुए मि० एस्० सी०-घोष बेचारे इसी नीति के अनुसार निकाले गए थे।

† हाल में छपरे से बी० डी० ऋषिजी के टेबुल हिलाकर चले आने पर एक बाबाजी तथा अन्य लोग टेबुल, प्लांचेट आदि पर प्रेत बुलाकर स्त्रियों की बड़ी भीड़ अपने चारों ओर जमाते थे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऐसे ओझा आदि नहीं जाने पाते थे। न उनकी स्त्रियाँ ही इधर-उधर जाने पाती थीं। इससे बेचारे स्त्री-पुरुषों के आनंद में बड़ी विघ्न-बाधाएँ पड़ती थीं। पर इधर कुछ वर्षों से हमारे उद्धार के लिये बरांडी, चुरुट, चर्बी का घी, पत्थर या काठ का आटा, मेहतर के बधने के पानी में अलकोहल से बनी हुई दवा आदि के साथ थिआँसफ़ी, स्पिरिचुअलिज़्म आदि का भी प्रवाह पश्चिम से ऐसा आने लगा कि इनका बयान पढ़कर अँगरेज़ी पढ़े-लिखे लोग ख़ूब ऐसी बातों में फँसे; क्योंकि जिन बेचारों को शब्द-प्रमाणों के सहारे अत्यंत व्याहत बातों में विश्वास करने का अभ्यास है *, उनकी, अँगरेज़ी में जो कुछ लिखा हो, उसे क़ानून या विज्ञान, और संस्कृत में जो लिखा हो उसे दर्शन या धर्म, समझने की प्रवृत्ति रहती है † हाल में केमिस्ट्री (रसायन-शास्त्र) के एम्० ए०, रामदासजी गौड़ हरसू-ब्रह्म की ख़ूब पूजा करते-कराते हैं, और तीन अनाथ लड़के कहीं से उठा लाए हैं, जिन्हें वह अपने पूर्व-पुत्र बतलाते हैं। उनके एक साथी से पूछने पर उन लड़कों का मुझे ठीक पता लगा कि ये अनाथ बालक हैं, उनके अपने लड़के नहीं। इन्हें वह अपने पूर्व-जन्म के पुत्र बतलाते हैं। एक वैदिक विद्वान् भी एक नाई की विधवा को रखकर कहा करते थे कि वह पूर्व-जन्म की उनकी पत्नी है, और उनके मरने पर सती हो गई थी ‡। अब कहिए, यदि इसी प्रकार स्त्रियाँ अपना-अपना पति छोड़कर अपने बेटे-भतीजे * आदि में अपने पूर्व-जन्म के पति पहचान लिया करें, तो संसार की क्या अवस्था होगी! शासक लोग बुद्धिमान् हैं, नहीं तो कितने ही दूसरी स्त्रियों से इस प्रकार जोरू का नाता लगा लिया करते, या दूसरों के लड़कों को अपनाकर असली हक़दारों का हक़ इन लड़कों को दे दिया करते और क़ानून, नीति तथा धर्म, सब चूल्हे में चला जाता †।

वस्तुतः किसी को कभी सच्ची रीति से भूत-प्रेत या पुनर्जन्म आदि व्याहत बातों पर विश्वास नहीं हुआ, और न हो सकता है। अधिकतर लोग काम या लोभ ही से ऐसे विश्वास फैलाने पर उद्यत होते हैं। केवल कभी-कभी कुछ लोगों की मोहवश इस ओर प्रवृत्ति हो जाती है। पर यह भ्रम ठहरता नहीं। होते ही इधर-उधर बिखर जाता है। ऐसा पुरुष या ऐसी स्त्री कौन है, जो स्थिरता से दूसरे को अपनी पुनर्जात पत्नी, पति आदि समझता या समझती रहे, पाँच सेर हलवे को पाँच मन बनवाने का यत्न किया करे, या राम-राम कहते हुए आग में घुसकर जले? ऐसी व्याहत व अयुक्त बातें क्षण ही भर किसी के मन को मोहित कर सकती हैं, सदा के लिये नहीं। मनुष्य स्वभावतः ऐसी झूठी बातों से हटकर पारमार्थिक बातों की तरफ़ झुकता औ 'स्व' तथा 'पर' कार्यों में लगता है। इसी से संसार चलरहा है। आश्चर्य यह है कि लोग दूसरों को ऐसा मूर्ख समझ लेते हैं कि ऐसी गप्पें हाँकने में हिचकने पर भी बड़े-बड़े गवाहों के नाम के बल पर उन्हें हाँक ही देते हैं। यह नहीं समझते कि ऐसी अयुक्त बातें गवाही से नहीं मानी जातीं। ऐसी बातों का प्रत्यक्ष या अनुमान तो हो ही नहीं सकता। फिर बरेली के वकील साहब तथा उनके समान विश्वास-वाले या विश्वास प्रकाशित करनेवाले इन बातों की वैज्ञानिक जाँच करने के लिये क्यों दूसरों का आह्वान करते हैं? किसी के कहने पर जो परीक्षक-नामधारी नाक के

---

* मेरे मित्र एक बूढ़े भट्टाचार्य बीबी वसंती के बड़े उपासक थे, और मेरे साथ उनके कॉलेज में नौकरी भी करते थे। यद्यपि मैं तो नास्तिक और पैसे का भक्त था, पर यह महाशय बेख़रीदे गुलाम थे। Myer's Personality आदि में लिखी हुई प्रेत-वार्ता पर बड़ी श्रद्धा रखते थे। प्रणवोच्चारण का बड़ा माहात्म्य मानते थे। मेरी एक नहीं सुनते थे। बीस बरस बाद मुझसे, बीबी के अनुचरण से अलग होने के कारण, यह स्वयं कहने लगे कि मनुष्य मूर्तिया म अवतार के प्रवाद से यह घबरा गए थे। इस पर मैंने इनको समझाया कि जो टोकरी यह पहले ही से ढो रहे थे, उसमें एक बालटी अपनी भी मेम साहब ने उझल दी, तो यह क्यों घबरा उठे?

† सुधा की गत किसी संख्या में जाति के दुष्परिणाम पर जो लेख है, उसमें भी लिखित सभी बातें न मानने की राय दी गई है।

‡ मुद्गरदूत-काव्य (संस्कृत शारदा में प्रकाशित) में उसके नायक मूर्खदेवजी ने कहा है—"आसं पूर्वं रजकभवने रासभः साधुवृत्तो यैषा प्रेष्ठा मम च विधवा रासभी मे सती सा।" पूर्वमुद्गर।

* बाबू केकयीनंदजी ने लिखा है कि एक लड़का अपने को अपना पुनर्जात पिता बताता है।

† सौभाग्य से गौड़जी को इस जन्म में भी अभी एक चिरंजीव हुआ है। मेरे पाँच सेर (माधुरी, विशेषांक) के पाँच मन हलवे-वाले जज यू०पी० में होते, तो इस बालक का तीन-चतुर्थांश धन इसके पूर्व-जन्म के भाइयों को अवश्य दिलाते।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सूराख़ों से छींककर * उत्तर निकालने की शक्ति रखनेवाले बालक की परीक्षा करे, वह न तो दार्शनिक है, न वैज्ञानिक। ऐसे ही किसी बड़े-से-बड़े आधुनिक या प्राचीन गल्पकार या ग्रंथकार की बात मानकर जो आशीर्वाद से भक्तों को सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान् बनानेवाले स्वामी सुवर्ण-जिह्व की खोज में प्रत्यक्षैकवादी चार्वाक के अनुसार प्रत्येक व्यक्ति को बड़ी बारीकी से देखने लगे † कि न-जाने किस की जीभ सोने की है, उसे, या जो पूर्व जन्म स्मर्ता बालक-बालिका की खोज की मृग-तृष्णा में अपनी वकालत आदि धन-तृष्णा-शांति-क्षम कार्यों के योग्य समय को खोवे, उसे कैसे दार्शनिक या वैज्ञानिक कहा जा सकता है। और, उसके पीछे लगकर तथा उसके बताए हुए बालक-बालिकाओं की जाँच में जो मर मिटे, उसे भला क्या कहा जा सकता है। दर्शन, विज्ञान, धर्मशास्त्र और नीति-शास्त्र तो पाठकों के दिल में यही असर पैदा करते हैं कि जब कोई रिपोर्ट करे कि 'एक मनुष्य ने मंत्र-शक्ति से गधे के सींग पैदाकर तंत्र-शक्ति से उस सींग को बिना घूमे अपने हाथ से खींचकर उसी से मुझे खोदा, और मैं ख़ून से शराबोर हो गया', और ख़ून दिखलाता हुआ इसकी गवाही में प्रत्यक्ष देखनेवाले राजा, महाराजा, हाईकोर्ट के जज, बारिस्टर आदि का नाम ले, तो याज्ञवल्क्य आदि के अनुसार इस मुक़दमे को व्याहत समझकर, बड़े-बड़े नामों का कुछ ख़याल किए बिना, चट 'डिसमिस' कर देना चाहिए। न तो कोई जाँच करनी चाहिए, न गवाहों को समन भेजना चाहिए। ऐसा जो न करे, वह स्वयं धूर्त, मूर्ख या पागल है। नहीं तो कम-से-कम या ज़्यादा-से-ज़्यादा अलिफ़-लैला या बृहत्कथा का कवि है।

हाँ, ऐसी बातों को मानने के लिये लोगों को मजबूर करना हो, तो केवल हाका के साथ मुँह-तोड़ परीक्षा-निकषों (Crucial Experiment) की शरण लेनी चाहिए। मैं ऐसे परीक्षा-निकषों के थोड़े-से उदाहरण और इस परीक्षा का प्रकार यहाँ लिखता हूँ, जिससे लोग वंचना में न पड़ें। अद्भुत बातें दिखानेवाले परीक्षा में नहीं आते। कभी आते भी हैं, तो नाहक़ दूसरों का समय नष्ट करते हुए छल से काम लेते और हार जाने पर भी बात बनाया करते हैं *, जिससे वैज्ञानिकों का संतोष भी नहीं हो सकता। इसलिये परीक्षा के तीन नियमों का स्मरण रखना चाहिए।

नियम १—परीक्षकों को बिना शुल्क (फ़ीस) लिए परीक्षा लेने का कार्य न करना चाहिए, नहीं तो परीक्षकों का समय व्यर्थ नष्ट होगा, और परीक्षक बेचारा वंचकों का भक्त समझा जायगा। परीक्षा में उत्तीर्ण होने पर परीक्षा के पारितोषिक के लिये फ़ीस से कम, बराबर या अधिक भी द्रव्य आदि रखना चाहिए। परीक्ष्य के अनुत्तीर्ण होने पर फ़ीस और पारितोषिक, दोनों उठा लेना चाहिए। ऐसी बातों में उसके उत्तीर्ण होने की तो शंका ही नहीं है; इसलिये परीक्षक की हानि कभी संभव नहीं। ऐसी कुश्ती में बाज़ी रहे, तो पारमार्थिक को लाभ-ही-लाभ है।

---

* "सुनि आचरज करै जनि कोई"! "क्षुवतश्च मनोरिच्छवाकुर्व्राणतो जज्ञे" ऐसा विष्णुपुराण में लिखा है। यह पुराण-वाक्य, पचीस वर्ष हुए, हयजिह्वपुरीय श्री १००८ मुद्गरानंदजी ने, मेरा नास्तिक्य हटाने के प्रयत्न में, मुझे दिखाया था। आपका विस्तृत चरित काशी की ना० प्र० पत्रिका में प्रकाशित हुआ है। संक्षेप से इसकी सूचना मुद्गरदूत में भी मिलती है। आप दीन क्विक्सोट (Don Quixote) के बड़े भाई जान पड़ते हैं; क्योंकि अपनी उम्र ११८४९ बरस के लगभग बताते हैं। कितने ही इनकी गप्पों को सत्य भी मानते हैं। धन्य मीझलकी! (Mediæval India)

† श्री १००८ मुद्गरानंदजी कहा करते हैं कि कितने ही स्त्री-पुरुषों की जीभ या और कई स्पृहणीय सुकुमार अंग सुनहरे होते हैं। ऐसे लोग बड़े सुभग होते हैं। उनके "दरस, परस, मज्जन अरु पाना" आदि से स्वर्ग, स्वराज्य आदि कुछ भी दुर्लभ नहीं है। यह भी कहते हैं कि भ्रष्ट युग का सामुद्रिक ही बदल गया है—श्यामा पद्मिनी के बदले में अब नामधारी राजा लोग श्वेत हस्तिनी का शिकार अच्छा समझते हैं; काली आँखों और बालों की अपेक्षा पीली आँखों और बालों में अधिक राज्यश्री बसती है। नहीं तो लोग सुवर्णजिह्व और सुवर्णवरांगी की खोज अवश्य किया करते। रेखांकित शब्दों के अनेक अर्थ भी श्रीजी बताते हैं।

* परीक्षक होने के लिये सावधान तर्क हो अत्यंत अपेक्ष्य है। विशेष शास्त्रों की ऐसी ज़रूरत नहीं। मैं प्राणायाम से उड़ना या इंजीनियरी विद्या स्वयं चाहे न जानूँ पर बेचारा काना ब्रह्मचारी उड़े, ते आँख से देखना कठिन नहीं है, एवं एंजिन कोई छींककर निकाले तो उस पर चढ़कर सफ़र करना दुस्तर नहीं। सुतार्किक तो बिना देखे ही समझ जाता है कि ऐसी बातें व्याहत हैं और कभी हो ही नहीं सकती। इसी से व्याहतवादी लोग बीस बरस भक्ति पहले ही करा लेते हैं। यह भक्ति वकील और डॉक्टर की फ़ीस है। हारने या मरने के बाद तो मिलेगी नहीं; नक़द ले लेनी चाहिए।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नियम २—प्रश्न बदल देना चाहिए। परीक्षा देनेवाला जो कुछ कह या कर सकने का दावा करता हो, उसे उससे कहीं सरल कोई बात कहने या करने का प्रस्ताव करना चाहिए। किंतु परिवर्तन बहुत सापेक्ष्य है। नहीं तो परीक्ष्य कुछ ऐसे छल सीखे रहता है कि परीक्षक धोके में आ जाता है *।

नियम ३—यह भी ख़याल रखना चाहिए कि न्यायतः जितना अपेक्षित है, उससे अधिक या कम, कुछ भी परीक्ष्य को नहीं दिया जाय, नहीं तो परीक्ष्य अपनी जादू की ऐसी सोहनलाली † सफ़ाई दिखलावेगा कि परीक्षक की सब सावधानी व्यर्थ हो जायगी।

आगे के उदाहरणों से इन तीनों नियमों का उपयोग स्पष्ट हो जायगा। कोई कहे कि मैं ध्यान, मेस्मेरिज़्म, प्रेत, कर्ण-पिशाची आदि के बल से भूत, भविष्य, वर्तमान, व्यवहित, अव्यवहित, सब बातें प्रत्यक्ष देखता और यहाँ से कलकत्ता, अमेरिका आदि की बातें बतला सकता हूँ, तो अपने सामने किसी पुस्तक में कहीं काग़ज़ रखकर उससे पूछना चाहिए कि यह काग़ज़ किस पृष्ठ में है, कहिए। वह कितना ही कहे कि पुस्तक दूसरी कोठरी में रखवा दीजिए इत्यादि, तो उसकी एक नहीं सुननी चाहिए। यदि कोई कहे कि मैं कुएँ में फेकी हुई घड़ी यहाँ मँगवा ले सकता हूँ, तो, अपने सामने घड़ी, टोपी या और कोई वस्तु रखकर, उससे कहना चाहिए कि इसे थोड़ी ही दूर, विना छुए-छाए, हटा दो, तो तुम्हें परीक्षोत्तीर्ण समझूँ, कुएँ से खींचने का कष्ट क्यों उठाते हो? जो बड़े-बड़े लाट आदि का प्रशंसा-पत्र दिखाता है कि वह बकस में बैठकर, ऊपर से रस्सा बँधवाकर, ताला लगवाकर, मुहर ठीक कर, कोठरी में बंद होकर, बाहर ज़ंजीर तथा दोहरा ताला लगा देने पर भी बकस कोठरी से ग़ायब हो जाता है, या टेबिल पर सुलाकर यदि टेबिल हटा लिया जाय, तो भी वह नहीं गिरता, निरालंब आकाश में पड़ा ही रह जाता है, तो उसे विना बकस आदि के, अपने सामने ही, हवा में ग़ायब हो जाने को या ज़मीन छोड़कर ऊपर खड़े, बैठे या पड़े रहने को कहना चाहिए। जादू-वाले रुपए-अशर्फ़ी आदि, या साँप, फल आदि अपने या अपने आस-पास के लोगों के अंगों से, या वस्त्रों से ऐसी सफ़ाई से निकालते हैं कि * देखनेवाले यही समझते हैं कि ये सब चीज़ें मंत्र या तंत्र की शक्ति के द्वारा हवा से आ रही हैं। भोले-भाले लोग कहते हैं कि यह मंतर, तंतर, भूत, प्रेत करन-पिसाची आदि की करतूत है। देशांतरों में १८ बरस की लड़की को मीडियम बनाकर उसके साथ एकांत में रहने का व्याज खोजते हुए कुछ पुरुषों या तरुण बच्चों को अवतार आदि बनाकर अपने साथ रखने का यत्न करती हुई स्त्रियों के सिवा प्रायः सभी ऐसी अद्भुत बातों को गप्प या हाथ आदि की सफ़ाई समझते और स्वयं करते भी हैं †

* परीक्षक अपने-अपने विषय में समझ सकता है कि कौन किस परीक्षा का पाठ्य जानता है, परंतु झूठे सार्टिफ़िकेटवाला अगर पूछे कि यदि तुम्हारी दृष्टि में मैं योग्य हूँ, तो मैंने घूस देकर या कॉपी बदलकर किस प्रकार परीक्षा में उत्तीर्ण हुआ, यह बताओ, तो परीक्षक को ऐसे दुष्ट के सामने से हट जाना चाहिए। उसके अनुष्ठित छल का जानना परीक्षक का काम नहीं है। अगर चोर कहे कि 'प्रेत लोटा ले गया होगा। अगर ऐसा नहीं, तो आप ही चोर का नाम बतलाइए।' अगर विधवा कहे कि जार का नाम कहिए, नहीं तो मेरा पुत्र देवज है, तो इसकी बात कौन मानेगा।

† सोहनलालजी बकस में लड़का पारसल कर देते थे, जो बाहर डबल तालेवाली गाड़ी के भीतर ही अपने बकस में से निकल-कर चाँदी, सोने, जवाहिर आदि के छोटे पारसल लेकर बकस में घुस जाता था और भीतर से बकस की पिछाड़ी बंद कर लेता था।

* पटने क चीलर मियाँ (बेचारे मर गए) बड़ी सफ़ाई से रुपए, अशर्फ़ी, कोहड़े के बराबर सरदों आदि फल इसी प्रकार निकालते थे। रुपए-अशर्फ़ी तो कुर्ता-मात्र से मेरे सामने निकालते थे। पर लाट आदि के दरबार में मोटे पाजामे, आबे आदि पहन-कर सरदा निकालते थे। मैंने उन्हें अंटसंट कपड़े हटाकर रुपए निकालने को कहा, तो नहीं राज़ी हुए। साँप निकालनेवाले पिछुए के भीतर दो साँप लगाए रहते हैं। वे कच्छ-बँधी दशरथी धोती से समय पर इन्हें झाड़ देते हैं। ऐसे ही छली लोग फ़ासफ़ोरस मुँह से निकालकर आग दिखलाते या ऐस्बेस्ट से आग रोकते हैं।

† मेम पाइपर लावेस्टकी (Piper Blavatsky) आदि के छल कैसे खुले, इन बातों के लिये मास्केलीन की पुस्तकें या Cyclopedias, देखिए। ताला-मुहर आदि लगे हुए बकस से निकलने आदि के छल विलायत में रोज़ पकड़े जाते हैं। छल पकड़ जाने पर दूसरा छल बना लिया जाता है। हाल में एक ग़रीब नंदन-नगर में अपनी बहन का प्रेत दिखाता हुआ आप ही पकड़ा गया है। प्रकाश कम कर स्वयं स्त्री के सफ़ेद गाउन पहने यह कमरे में दूर खड़ा था। तब तक किसी ने पाकेट-लैंप जलाई और इसे पकड़ा। यह बेचारा बेहोश गिर गया, और क्षमा माँगने लगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और उसमें कोई दिव्य शक्ति नहीं समझते। इसीलिये वहाँ देश की विशेष हानि नहीं होती। असत्य प्रेम और मृगतृष्णानुसरण में लोग नहीं पड़ते; पर इस देश में लोग बातों द्वारा अपूर्व असत्यों को फैलाना चाहते हैं, इसी से बातों के द्वारा ज्ञान, विज्ञान, धर्म, नीति, न्याय, सभी के विकास में बड़ी बाधा पड़ रही है। ठीक ही है, बाधा तो पड़ेगी ही। भला अपने पूर्व-जन्म के पचास वर्ष के साथी पति को जो पहचानेगी, वह अपने नए सद्यः-परिणीत अपरिचित पति के साथ कैसे रहेगी। और, एक से अधिक पूर्व-पतियों को पहचान ले, तो और ग़ज़ब हो। जिसको पूर्व-जन्म के लड़के तक मिल जाया करेंगे, वह अपना धन अपने असली दामादों को क्यों लेने देगा, इन्हीं को न देगा। जो भूत, भविष्य, वर्तमान यों ही जान जायगा, उसे पढ़-लिखकर 'ग्रहण कब लगेगा!' यह जानने की क्या ज़रूरत है। जिसके रोग किसी के शरीर की भस्म ही से या एक अस्पृश्यांग के रोम ही से, या ब्रह्माजी की दुआ ही से अच्छे हो जायँगे, उसे आयुर्वेद की क्या अपेक्षा है? जिसे घास-पात के ज़रिए सोना-चाँदी बना लेने की विद्या में विश्वास है, वह श्रम-जीवी क्यों होगा, या केमिस्ट्री (रसायन-शास्त्र) क्यों पढ़ेगा, या पढ़कर भी उसका अनुसरण क्यों करेगा? जो प्राणायाम ही से उड़ सकता है, उसे व्योम-यान की क्या परवा? जो पवित्रातिपवित्र (His Supreme Holiness) श्री १००८ स्वामिवर मुद्गरानंदजी के नासाग्राह (Nasograph) से ही संवाद पा जाता है, उसे रदीय, दूरग्राह या दूरस्वन (Radio, Telegraph, Telephone) की क्या अपेक्षा है? जो काशी के काना ब्रह्मचारी * के समान योग-यष्टि ही से (या प्राणायाम ही के ब्याज से) तहख़ानों की गच से उड़ता हुआ अपने को दिखा सकता है, उसके अनुयायी रेल, व्योम-यान आदि में क्या श्रद्धा रख सकते हैं तथा संपूर्णानंदजी की ध्वनि-शक्ति-विभूति से जो डिनामाइट का काम कर पहाड़ फोड़ने की गप्प हाँकता है, उसके समान लोग नोबेल आदि की क्या पूजा कर सकते हैं? 'जैसा पूर्व जन्म का कर्म है, वैसा फल होगा' ऐसा माननेवाले को तो यह विश्वास है कि लड़के को अंधा, कोढ़ी, लँगड़ा, धनी, ग़रीब, पुण्यात्मा, पापी, जो कुछ होना है, सो होगा ही, तो ऐसे आदमी को चरकाद्युपदिष्ट गर्भरक्षा के प्रकार से या धर्मशास्त्र-नीतिशास्त्रादि-वर्णित आयुर्धनादि-पोषक सदाचार तथा सदुद्योग आदि से क्या प्रयोजन?

रामावतार

---

* यह काशी में रहते हैं, मेरे गुरु-भाई पं० हरिशंकरजी महाराज से पढ़ते थे, और इन्हें उड़ना दिखाने की गुरुदक्षिणा क़रार की थी; पर इसकी पूर्ति से बेचारे गुरुजी वंचित ही रहे। मैं इनका नाम नहीं जानता, इससे इनके अंग-विकार का नाम देना पड़ता है, जिसका मुझे खेद है। बाबू ललनजी और मेरे प्रिय मित्र पं० अयोध्यानाथजी को आपने तहख़ाने में उड़ना दिखाया था। आप पैर में काली पट्टी बाँधकर सफ़ेद बुर्क़ा ओढ़कर बंद तहख़ाने आदि में लाठी से बुर्क़ा उठाते हैं; लोग समझते हैं बुर्क़ा स्वयं आपको लिए हुए उठ रहा है। मेरे समझाने पर पंडितजी ने यह रहस्य समझा। लोग आपको उड़ते हुए किंवाड़ के सूराख़ों ही से देखते हैं।

* हाल में 'आज' पत्र में आपने सर ऑलिवर लॉज आदि की गवाही से सुधा में प्रकाशित मेरे पुराण-तत्त्व का बड़े आयोजन से खंडन करने की स्पृहणीय चेष्टा की है। लोग यह नहीं समझते कि जिन नास्तिकों को श्रौत स्मार्त शब्दों से प्रत्यक्षानुमान-विरुद्ध बातों पर श्रद्धा न हुई, वे पाश्चात्य पंचों के ओग प्रेत फ़ोटो आदि की गप्पों पर क्या भक्ति कर सकते हैं। एक दिन ललकारे पर बाज़ी रखकर पहाड़ फोड़िए तो नास्तिकता का पहाड़ आप ही गिर पड़े। कथानकों से तो आपके चित्त के साथ नास्तिकों का भी चित्त विनोद कल्लोलों में पड़ ही जाता है। एक योगी का नंद के मुर्दे में घुसकर अंतःपुर में रासलीला करना या श्रीशंकर का आकाश-मार्ग से मंडनजी के घर जाना इत्यादि कथाएँ क्या हम लोगों को नहीं रुचती हैं। पर शाम को दादीजी या नानीजी से उड़नखटोले की कथा सुनना या रामदासजी गौड़ आदि की हास्यजनक लेखावली में हरसू ब्रह्म भूत-प्रेत आदि की या वी०डी० ऋषि की टेबुल हिलाने की बातें पढ़ना या ताजी शिरीष बाबू आदि थियोसोफ़िस्टों की शेख़ीचल्ली की कहानियाँ या और ताजे कृष्णमूर्ति के अवतार होने की ख़बरें पढ़ना या पुराने सहस्र-रजनी आदि को बाँचना मनोरंजक अवश्य है पर कार्य तो दिन-रात रस्सी के खटोले और सिद्धि विभूत्यनभिज्ञों के क्षुद्र आविष्कार रेल-तार आदि ही से करना पड़ता है। नेउरा भैया की अशर्फ़ी शौच करती हुई कानी गधी के लिये अपने घोड़े मत फेंको।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विनिमय

'जय हो'—कहकर जब मैं जा उस सिंहपौर पर खड़ा हुआ,
देखा, रत्नखचित रथ पर तू आया राजन्, चढ़ा हुआ।
मैं दो पग पीछे भय से हट गया, निकट स्यंदन आया,
किंकर्तव्य-विमूढ़ बना मैं, अटल रहा—धक्का खाया।
तूने मेरी ओर निहारा—पूछा, "बोलो क्या लोगे ?
भिक्षा ले उसके बदले में, कहो, मुझे तुम क्या दोगे ?"
कंठ रुद्ध हो गया, पैर के नीचे से भू खिसक गई,
खड़ी रह गई सम्मुख तेरी मूर्ति मनोहर प्रेममयी।
साहस कर बोला—"क्या दूँ मैं देव ! दीन हूँ, दया करो,
मेरे अंतर की दरिद्रता को करुणाकर ! शीघ्र हरो।"
तूने हँसकर कहा—"भीख मैं दूँगा, दो 'कर', विनिमय हो,"
मैं बोला—"देकर बस ले ले, दानवीर ! तेरी जय हो।"

श्रीमोहनलाल महतो "वियोगी"

सहयोग-संस्था और उसका उद्देश

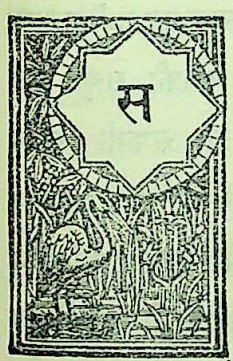

सहयोग या सहकार शब्द का सीधा-सादा अर्थ है मिलकर काम करने की प्रवृत्ति। किंतु जब 'सहकार-प्रवृत्ति' (Co-operative movement)-शब्द का उपयोग किया जाता है, तब उसका अर्थ बहुत संकुचित हो जाता है। सहयोग या सहकार का संबंध अर्थशास्त्र से है। 'सहकार-प्रवृत्ति'-शब्द से व्यापार या लेन-देन की एक विशेष पद्धति का बोध होता है। यह ईमानदारी और समानता पर स्थित है। सहकार-सभाएँ छल-कपट, स्वार्थ-परता, और बेईमानी से कोसों दूर रहती हैं। प्रामाणिकता, मितव्ययिता, स्वावलंबन, पारस्परिक सौहार्द, प्रबंध-कुशलता, उच्च प्रवृत्ति आदि सद्गुणों की अभिवृद्धि सहकारी सभाओं के विना हो ही नहीं सकती। सारांश यह कि चरित्र-गठन और स्वराज्य की योग्यता प्राप्त करने के लिये सहकारी संस्था एक सर्वोत्तम साधन है।

सहयोग-संस्था एक सभा है, जिसके द्वारा गरीब लोग मिलकर व्यापार या अन्य कोई कार्य करते हैं। असमर्थ और गरीब लोग ही इन सभाओं की स्थापना करते हैं, और इनका कारोबार निस्स्वार्थ भाव से चलाया जाता है। सहयोग-संस्थाएँ स्वेच्छापूर्वक स्थापित सभाएँ हैं, जिनमें कई व्यक्ति द्रव्योपार्जन के लिये सम्मिलित होते हैं, और कमाया हुआ द्रव्य सर्वसाधारण के हित-साधन में खर्च किया जाता है। इसका एक-मात्र आदर्श है Each for all and all for each. अर्थात् "व्यक्ति समष्टि के लिये और समष्टि व्यक्ति के लिये।"

सहकार-सभा दान देनेवाली संस्था नहीं है। यह तो एक प्रकार का वाणिज्य-संगठन है। यह दान देने की प्रवृत्ति के प्रतिकूल है। दान ग्रहण करनेवाले का नैतिक ह्रास करता है। किंतु सहकार उसका चरित्र-गठन करता है। सहकारी बैंक न तो दान में रुपया ही माँगती है, और न विना सूद पर पूँजी ही चाहती है। वह तो बाज़ार की दर से सूद पर रुपया उधार माँगती है, या अमानत रक़मों पर सूद देना स्वीकार करती है। सहकार-सभा के नौकरों को वेतन दिया जाता है, और जहाँ वेतन देने की प्रथा नहीं है, वहाँ अवैतनिक कार्य-कर्ता, जन-सेवा की दृष्टि से, निस्स्वार्थ भाव से, कार्य करते हैं। भारत में गरीब लोगों की सहायता करने के लिये अनेकों धार्मिक संस्थाएँ हैं, और हर साल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लाखों रुपए ख़ैरात में बाँटे जाते हैं; किंतु इससे भारतवासियों को कोई ठोस लाभ नहीं पहुँचता। हमारे मत से तो इससे उनका नैतिक ह्रास ही हुआ है। हमारी इस बेढंगी दान-पद्धति के कारण देश में अकर्मण्यता फैल गई है, और वर्तमान काल में कई करोड़ आदमियों की उपजीविका का एक-मात्र साधन भिक्षा-वृत्ति या दान-ग्रहण करना ही है। भारत धर्म-प्राण देश है; किंतु अपने धर्म पर आरूढ़ रहते हुए इस ढंग से दान दिया जाना चाहिए कि जिससे दान लेनेवाले का नैतिक पतन न हो। दान उस ओषधि के समान है, जो रोगी की बीमारी दूर करने के लिये दी जाती है; किंतु सहकारिता स्वास्थ्य-विज्ञान के समान है, जिसका अवलंबन करने से रोग के सब कारण जड़ से ही नष्ट हो जाते हैं। सहकारी संस्थाओं का संगठन करनेवाला जन-सेवा के भाव से प्रेरित होकर, अनेकों कष्ट झेलता हुआ, गाँव-गाँव भटकता फिरता और जनता को सहकार-सभाएँ स्थापित करने के लिये उत्साहित करता है। सभी प्रकार के उपदेशकों को यह दृढ़ विश्वास होता है कि अमुक सिद्धांत को अपनाने से व्यक्ति का, जन-समाज का या राष्ट्र का हित होगा। अन्य प्रकार के उपदेशक दान-ग्रहण कर उसके वितरण का काम भी करते हैं; किंतु सहकार के सिद्धांतों का प्रचारक या उपदेशक इन दोनों ही कामों से दूर रहता है। उसका एक-मात्र लक्ष्य जन-समाज के हित के लिये प्रयत्नशील रहना ही होता है।

सहयोग-संस्था और ज्वाइंट-स्टॉक कंपनी में बहुत भेद है। ज्वाइंट-स्टॉक कंपनी पूँजीपतियों द्वारा स्थापित संस्था है, जो प्रतियोगिता के तत्त्व पर खड़ी की जाती है, जिसमें समता और जनता के हित पर बिलकुल ही ध्यान नहीं दिया जाता। अधिक-से-अधिक लाभ प्राप्त करना ही इसका एक-मात्र लक्ष्य रहता है। हिस्सों (Shares) की संख्या मर्यादित होने के कारण एक निश्चित संख्या से अधिक मनुष्य उसमें शरीक नहीं हो सकते, और यही कारण है कि बाज़ार की माँग के अनुसार हिस्सों की क़ीमत घटती-बढ़ती रहती है। हिस्से बाज़ारों में ख़रीदे-बेचे जाते हैं। किसी व्यक्ति को हिस्सेदार बनाने या न बनाने का अधिकार डाइरेक्टर लोगों को नहीं होता, और न हिस्सेदार के चरित्र पर ही ध्यान दिया जाता है। परंतु सहकार-सभा सभासद के चरित्र पर ख़ूब नज़र रखती है। प्रबंधक-समिति की अनुमति प्राप्त किए बिना कोई व्यक्ति सभासद नहीं बनाया जा सकता, और सच्चरित्रता का काफ़ी सबूत पेश किए बिना अनुमति नहीं प्राप्त की जा सकती। सभ्य बननेवाले को सभासद का दायित्व भी स्वीकार करना पड़ता है। सहकार-सभा के हिस्से इतनी कम क़ीमत के होते हैं कि ग़रीब-से-ग़रीब भी सहूलियत से उन्हें ख़रीद सकता है, और हिस्से की क़ीमत छोटी-छोटी क़िस्तों में वसूल की जाती है।

सहकारिता प्रतियोगिता से कोसों दूर रहती है। प्रतियोगिता के तत्त्व पर स्थापित संस्थाओं में पूँजीपतियों की तूती बोलती है, जिससे ग़रीबों का रक्त चूसकर वे करोड़ों रुपए इकट्ठे कर लेते हैं। यही कारण है कि निर्बलों को सबलों का मुक़ाबला करने के लिये संगठित होकर अपने हितों की रक्षा करने के लिये कमर कसने को बाध्य होना पड़ता है। सबल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अत्यधिक बलशाली बनने के लिये ट्रस्ट या संघ स्थापित करते हैं, जिससे थोड़ी पूँजीवाले व्यापारियों, किसानों और मज़दूरों को घाटा सहना पड़ता है। किंतु सहकार-सभाएँ तो निर्बलों को सबल बनाने के लिये ही स्थापित होती हैं। उनका कारोबार निस्स्वार्थभाव से चलाया जाता है। मज़दूर-संघ पूँजीपतियों का सामना करने के लिये ही बनते हैं, और वे वाणिज्य-सिद्धांतों के अनुसार नहीं चलाए जाते। यद्यपि मित्र-मंडलों का मुख्य उद्देश मितव्ययिता और पारस्परिक सहायता ही है, किंतु वे वाणिज्य-सिद्धांतों के प्रतिकूल हैं, अतएव मज़दूर-संघ और मित्र-मंडल सहकारी-संस्थाएँ नहीं मानी जा सकतीं।

सैद्धांतिक दृष्टि से मानव-प्राणी के आर्थिक जीवन में सहकारिता की आवश्यकता पद-पद पर प्रतीत होती है। शहरों और गाँवों में, ज़रूरत आ पड़ने पर, सहकारी-सभाएँ लोगों को उत्पादक और कभी-कभी अनुत्पादक कामों के लिये रुपया उधार देती हैं। कृषि-सहयोग-सभाएँ, पशुओं की नस्ल सुधारने और बीज, खाद, औज़ार आदि ख़रीदने तथा ऐसे ही दूसरे कामों के लिये किसानों को रुपए उधार देती हैं। मोची, दरज़ी, जुलाहे आदि कारीगर लोगों की सभाएँ सभ्यों को कच्चा माल, औज़ार आदि आवश्यक पदार्थ ख़रीदने के लिये क़र्ज़ देती हैं। कुछ सभाएँ कच्चा माल थोकबंद ख़रीदकर सभासदों को बेचने और तैयार माल को उपयुक्त बाज़ारों में बेचने का काम भी करती हैं, जिससे दलालों और मध्यस्थों की ज़रूरत ही नहीं रहती। इससे लाभ यह होता है कि माल सस्ता ख़रीदा और महँगा बेचा जाता है। इस प्रकार दलालों की जेब गरम करनेवाला पैसा कारीगरों और किसानों के घर में ही रह जाता है। सैद्धांतिक दृष्टि से देखा जाय, तो सहकारिता का क्षेत्र अति विस्तीर्ण है। किंतु व्यावहारिक दृष्टि से वह कई अंशों में संकुचित है। खेती-बारी में सहकारिता का क्षेत्र विशाल है; किंतु उद्योग-धंधों में वह एक निश्चित सीमा तक मर्यादित है। कल-कारख़ाने सहकारिता के सर्वमान्य सिद्धांतों के अनुसार नहीं चलाए जा सकते; क्योंकि मज़दूरों में प्रबंधक, ख़ज़ांची, डाइरेक्टर आदि पदों के लिये उपयुक्त व्यक्तियों का मिलना संभव नहीं। छोटे-छोटे कारख़ाने अलबत्ता सहयोग-सिद्धांतों के अनुसार चलाए जा सकते हैं, और कहीं-कहीं चलाए भी जा रहे हैं। वर्तमान युग कल-कारख़ानों का युग है। धनी लोग व्यक्तिशः या कई मिलकर कारख़ाने खोलते हैं। ज़्यादा-से-ज़्यादा लाभ प्राप्त करना ही इनका एक-मात्र उद्देश रहता है। अतएव कारख़ानों के मालिक मज़दूरों की तकलीफ़ों और असुविधाओं पर बिलकुल ही ध्यान नहीं देते। कारख़ानेवाले हरसाल लाखों रुपयों का लाभ उठाते हैं; किंतु जान जोखों में डालकर प्रतिदिन पंद्रह-पंद्रह घंटे काम करनेवाले ग़रीब मज़दूरों को इस लाभ में से फूटी कौड़ी भी नहीं देते। उनके बीमार या अपंग हो जाने पर भी किसी प्रकार की सहायता नहीं दी जाती, जिससे वे भूक के मारे तड़प-तड़पकर मर जाते हैं। इन्हीं सब कारणों से मज़दूरवर्ग पूँजीपतियों के विरुद्ध उठ खड़ा हुआ है, और आए दिन ख़ून-ख़राबी तथा दंगे हो जाते हैं। अतएव अब विचारशील लोग कहने लगे हैं कि इस पद्धति को बंद कर गृह-शिल्प का प्रचार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करना हित-प्रद है। किंतु कल-कारख़ानों के सामने गृह-शिल्प का चल सकना कठिन है। कठिन इसलिये कि जब तक प्रत्येक व्यक्ति विदेशी वस्तुओं का त्याग करके स्वदेशी वस्तुओं को—चाहे फिर वे महँगी और भद्दी ही क्यों न हों—नहीं अपनावेगा, तब तक देशी चीज़ों की खपत न हो सकेगी। गाँवों को जीवनोपयोगी, आवश्यक पदार्थ बनानेवाले छोटे-छोटे कारख़ानों में परिणत करना ही भारत का आदर्श होना चाहिए। परंतु पाश्चात्यों के संसर्ग से हम इतने विलास-प्रिय, शौक़ीन और नाज़ुक-मिज़ाज बन गए हैं कि देश चाहे रसातल में क्यों न चला जाय, पर हमारी फ़ैशन-प्रियता को बट्टा न लगना चाहिए। इसीलिये हमने ऊपर गृह-शिल्प की उन्नति के प्रति आशंका प्रदर्शित की है। यह तो हम भी मानते हैं कि सहकारिता का अवलंबन करने से कल-कारख़ानों की कटुता बहुत कुछ कम हो सकती है; किंतु स्मरण रखना चाहिए कि वे ही कारख़ाने सहकारिता के सिद्धांतों के अनुसार चलाए जा सकते हैं, जिनके लिये थोड़ी पूँजी की ज़रूरत होती है, और जिनको चलाने के लिये उतने ऊँचे दरजे की प्रबंधक-शक्ति आवश्यक नहीं होती।

सहकारी-सभा एक प्रकार की प्रजासत्तात्मक-संस्था है, जिसका संचालन पंचायत-नामक प्रबंधक समिति द्वारा होता है। पंचायत में पाँच से पंद्रह तक निर्वाचित सदस्य रहते हैं। पंचायत को सभ्यों की मरज़ी के माफ़िक़ काम करना पड़ता है। हरएक सभासद को एक मत देने का अधिकार प्राप्त है, और प्रतिनिधि द्वारा मत-प्रदान करने की मुमानियत है। बड़ी-बड़ी सभाओं में एक निरीक्षक-समिति रहती है। कार्य-कर्ताओं को वेतन या अलौंस नहीं दिया जाता। कहीं-कहीं बड़ी-बड़ी सभाओं में अलौंस दिया भी जाता है।

प्रत्येक सहकारी सभा में एक सभापति, एक मंत्री और एक कोषाध्यक्ष नियुक्त किया जाता है। छोटी-छोटी सभाओं में सभापति या मंत्री को ही कोषाध्यक्ष का काम करना पड़ता है। बड़ी-बड़ी सभाओं में, कार्याधिक्य के कारण, वैतनिक मंत्री नियुक्त किए जाते हैं। वैतनिक मंत्री सभा का नौकर होता है। अतएव वह प्रबंधक समिति का सभ्य नहीं रह सकता।

सहकारिता के कुछ रूपांतरों का सिंहावलोकन करने से सहयोग के सिद्धांतों का ज्ञान प्राप्त हो सकता है। निर्बलों को सबल बनाने के लिये ही सहयोग-संस्थाएँ स्थापित की जाती हैं। सभासद लोग ग़रीब होते हैं, अतएव उनके पास ऐसी कोई चीज़ नहीं होती, जिसके ऊपर वे रुपए क़र्ज़ ले सकें। ग़रीबी के कारण बाज़ार में उनकी साख भी कम होती है, जिससे ज़्यादा सूद देना पड़ता है। इसलिये अपनी साख बढ़ाने के वास्ते वे संघ-शक्ति का सहारा लेते हैं। सभा का प्रत्येक सभ्य दूसरे सभ्य के क़र्ज़ का दायित्व अपने ऊपर लेता है। एकत्र मिल जाने से उनकी साख बढ़ जाती है, जिससे कम ब्याज पर रुपया उधार मिल जाता है। इसके अलावा ग़रीबों की आय भी थोड़ी ही होती है। वे प्रतिमास एक थोड़ी-सी रक़म बचा सकते हैं। अपने पास रख छोड़ने से यह रक़म कुछ भी उपयोग में नहीं आ सकती, और न उस पर सूद ही मिल सकता है। इस रक़म को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

घर में रख छोड़ने से निरुपयोगी और विलास की सामग्री ख़रीदने में भी उसके ख़र्च हो जाने की आशंका रहती है। परंतु यदि हर एक आदमी अपनी बचाई हुई छोटी-सी रक़म सहकारी सभा के कोष में जमा करा दे, तो उसको सूद भी मिल सकता है, और सभी सभासदों की छोटी-छोटी रक़में मिलाने से एक बड़ी रक़म बन जाती है, जो ज़रूरत पड़ने पर किसी को सूद पर उधार दी जा सकती है। कुछ सहकारी सभाएँ भोजन-सामग्री, कपड़ा, काग़ज़, पेंसिल आदि जीवनोपयोगी आवश्यक पदार्थ थोक-बंद ख़रीदकर सभासदों के हाथ सस्ते दामों पर बेचती हैं। थोकबंद माल ख़रीदने से क़ीमत कम लगती है, अतएव सहकारी सभाएँ सस्ते दामों में माल बेचकर भी लाभ उठा सकती हैं। दूकान चलाने में लगनेवाला ख़र्च और सूद वग़ैरह काटकर जितनी रक़म बच जाती है, वह ख़रीदे हुए माल की क़ीमत के अनुपात से सभासदों में बाँट दी जाती है। कहीं-कहीं लाभ की रक़म का कुछ अंश शिक्षा आदि सार्वजनिक हित के कामों में व्यय करने की भी प्रथा है। सहकारी सभाओं के अभाव में हमको खुदरा दूकानदारों से माल ख़रीदना पड़ता है, जो क़ीमत और वज़न, दोनों में ही ठग लेते हैं। दूध बेचने की दूकानें भी खोली जा सकती हैं। और भी कई ऐसे काम हैं, जो सहकारी सभाओं द्वारा किए जाने से सभासदों को बहुत लाभ हो सकता है। इनमें से कुछ का वर्णन ऊपर आ ही गया है।

शंकरराव जोशी

क्या आप

१००) प्रति मास

कमाना चाहते हैं ?

तो आइए, हमारे ट्रैवलिंग एजेंट बन जाइए।

गंगा-पुस्तकमाला का प्रचार कीजिए

प्रति मास ६०-७० सुधा के ग्राहक बना लेना और गंगा-पुस्तकमाला की २००) की पुस्तकें बेच लेना कोई मुश्किल बात नहीं।

एजेंटों के नियम मँगाइए।

मैनेजर सुधा, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमसे क्या मतलब !

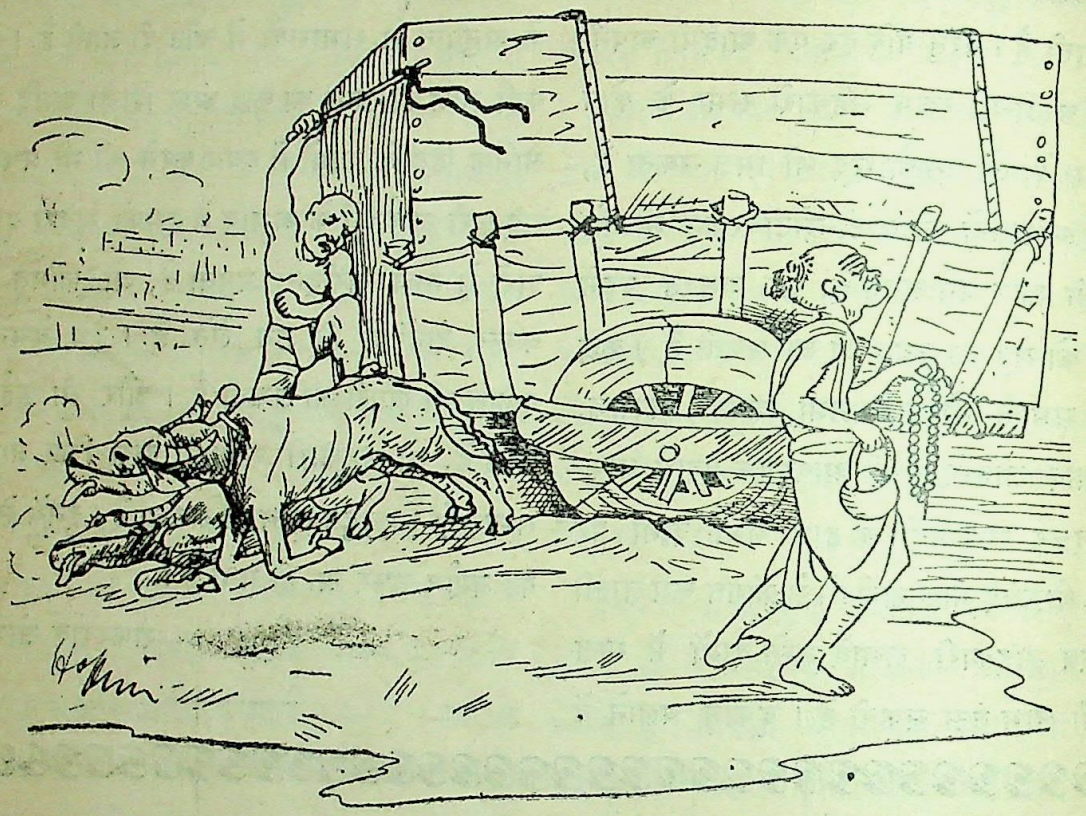

भारी भार लदा गाड़ी पर, ऊपर से चाबुक की मार ;
पशुओं की दयनीय दशा यह देख दया भी जाती हार।
पर पंडितजी धर्म-मूर्ति को ज़रा नहीं इसकी परवाह ;
रटते सुंदर ब्रह्म-वाक्य यह चले जा रहे अपनी राह—
"ढोल, गँवार, शूद्र, पशु, नारी ;
ये सब ताड़न के अधिकारी।"

रसिकरंजन रतूड़ी

शीघ्र आवश्यकता है !

सुधा-कार्यालय के प्रबंध और विज्ञापन-विभाग के लिये

हिंदी और अँगरेजी जाननेवाले क्लर्कों की। लिखावट सुंदर हो। हिंदी में पत्र-व्योहार कर सकें। अँगरेज़ी का भी साधारण ज्ञान अवश्य होना चाहिए। विज्ञापन-संबंधी कार्य किए हुए और ऑफ़िस के काम से पूरी जानकारी रखनेवालों के पत्र पर पहले ध्यान दिया जायगा। वेतन योग्यतानुसार। प्रार्थना-पत्र हिंदी और अँगरेज़ी दोनों भाषाओं में आने चाहिए।

मैनेजर सुधा, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[शब्दकार—श्रीगोविंदवल्लभ पंत **संगीत-शास्त्री**—श्रीमान् नारायण-मोरेश्वर खरे]

सोहनी-तीन ताल

गीत

चमक तारिके, तम में ।

(१)

भूल हुई जो, उसे भूल जा,
शूलों में रे सुमन, फूल जा;
ढल जा किसी नियम में।
चमक तारिके, तम में।

(२)

जिससे तूने भय पाया है,
यह तो तेरी ही छाया है;
न जा दूर विभ्रम में।
चमक तारिके, तम में।

(३)

पथ बिसरा है तो फिर से चल,
ठोकर से बच, देख, फिर सँभल;
आ जा सम से सम में।
चमक तारिके, तम में।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्थायी

०	३	×	२
नि सां नि धम	— ग म ध	नि नि सां —	— * मध निसां
च म क ता—	— रि के —	त म में —	— * — — —
नि सां नि धम	— ग म ध	नि सां सां —	— — — —
च म क ता—	— रि के —	त म में —	— — — —

अंतरे

	०	३	×	२
	ग — ग ग	म — ध —	नि सां — सां	— सां सां —
१.	भू — ल हु	ई — जो —	उ से — भू	— ल जा —
२.	जि स से —	तू — ने —	भ य पा —	या — है —
३.	प थ वि स	रा — है —	तो — फि र	से — व ल
	ध रें सां रें	रेंनि सां नि ध	म म ध मध	निसां सां नि —
१.	शू — लों —	में — रे —	सु म न फू—	— ल जा —
२.	य ह तो —	ते — री —	ही — छा —	या — है —
३.	ठो — क र	से — व च	दे — ख फि—	र— सँ भ ल
	रें रें ग —	मं मं गं रें	नि सां नि ध	मध निसां रेनि सां
१.	ढ ल जा —	कि सी — नि	य म में —	— — — —
२.	न जा — दू	— र वि —	भ्र म में —	— — — —
३.	आ — जा —	स म से —	स म में —	— — — —

संकेत

१. जिन स्वरों के नीचे बिंदु हो वे मंद सप्तक के, जिनमें कोई बिंदु न हो वे मध्य सप्तक के तथा जिनके शीर्ष में बिंदु हो वे तार सप्तक के हैं। जैसे—सा, सा, सां।

२. जिन स्वरों के नीचे लकीर हो वे कोमल हैं। जैसे रे, ग, ध, नि। जिनमें कोई चिह्न न हो वे तीव्र हैं। जैसे—रे, ग, ध, नि।

३. शुद्ध मध्यम का चिह्न " म" और तीव्र मध्यम का चिह्न "म" है।

४. यह चिह्न ⌒ मींड का प्रदर्शक है।

५. सम का चिह्न ×, ताल के लिये अंक और ख़ाली का द्योतक ० है।

६. ◡ इस चिह्न में जितने स्वर रहें, वे एक मात्रा में गाए या बजाए जायँगे। जैसे—सारे।

७.—यह दीर्घ मात्रा का चिह्न है।

यह ❀ विश्रांति का चिह्न है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

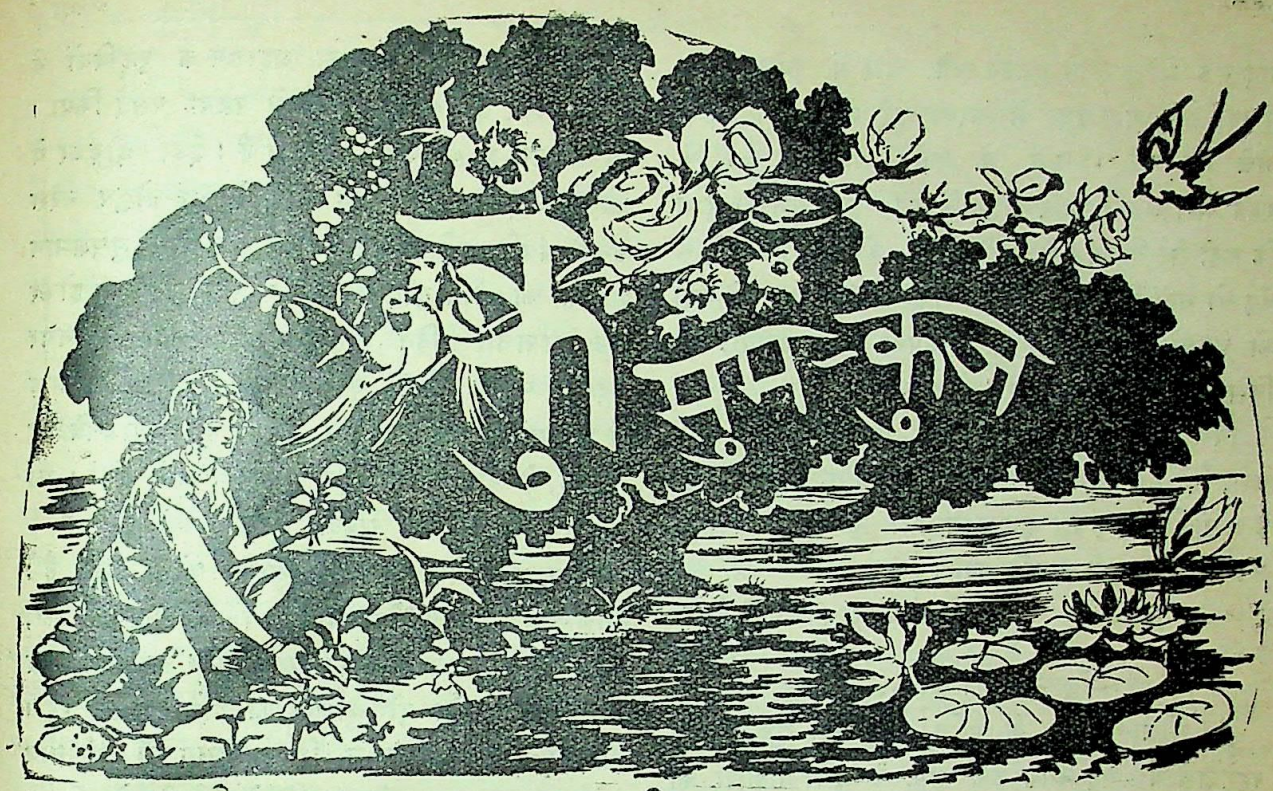

१. मिलन-उत्कंठा

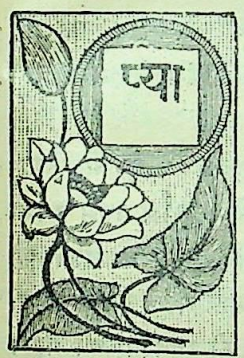

रे ! तेरे नित्य निराले खेल मुझे तव मिलनार्थ सहसा विह्वल कर देते हैं। तेरी असीम लीलाएँ देखकर मैं निस्तब्ध-सी रह जाती हूँ, और मन-ही-मन तेरे आकार-प्रकार की कल्पना कर अनेक संकल्प-विकल्पों के उतार-चढ़ाव में लीन हो जाती हूँ। किंतु इन उतार-चढ़ावों में मुझे शांति और निश्चितता नहीं मिलती। देव, तेरा वास्तविक रूप देखने तथा तुझे ढूँढने के लिये मैंने कई बार मौनमयी निशा का आश्रय लिया। तारों की टिमटिमाती ज्योति में, दबे पाँव, तुझे ढूँढने निकली। नदी-तट पर, घंटों ही, नदी-प्रवाह-रूप में, तेरा कल-कल गान सुना; मगर तू कहाँ छिपकर गा रहा है, कुछ पता न लगा। मैं बच्चों की तरह नदी के जल को हाथ से इधर-उधर करने लगी कि शायद तू जल की तह में छिपा हो; पर हाय ! सब निरर्थक हुआ !

इतने पर भी मैंने हिम्मत नहीं हारी, और तुझे ढूँढने के लिये घने जंगलों में निकल पड़ी। वहाँ मैंने सुकुमार मंजरियों पर, कोयल के गान में, तेरा अनुमान किया, और मैं अपनी भक्ति-माला सँभाल तेरी ओर दौड़ी। अपनी नन्ही-नन्ही भुजाओं को तेरे तक पहुँचने में असमर्थ जान मैंने नीचे ही खड़े स्नेह-सूत्र से ग्रथित भक्ति-माला तेरी ओर फेंकी। पर ओह ! क्षण-भर में, मेरे देखते-ही-देखते, तू न-जाने कहाँ विलीन हो गया, और तुच्छ अभागिन माला मेरे ही सामने आ गिरी। जिस माला को मेरे जीवन-स्वामी ने स्वीकार नहीं किया, मैं उसे भला वापस लेकर क्या करूँगी ? इसलिये वह अभागिन तेरी स्मृति में वहीं पड़ी-पड़ी सूख गई। हृदय दुःख से विक्षिप्त हो गया; पर लालसा न मिटी—फिर जगी और मिलन-उत्कंठा से आशा के भाव पोषित कर आगे बढ़ी। चलते-चलते मैं एक सुंदर वृक्ष-निकुंज के पास पहुँची। मेरी आँखों ने अकस्मात् एक काँटेदार झाड़ी में एक अपूर्व ज्योतिर्मय पदार्थ को चमकते देखा। निश्चय ही यही ज्योति, प्रकाश-स्वरूप भगवान् हैं, इसी प्रबल विचार से, काँटेदार झाड़ी में, शीघ्रता से हाथ डाला ; पर तू कहाँ ? वह तो गुलाब का पुष्प था, जिसकी सुंदरता ने मुझे तेरे भ्रम में डाल दिया। काँटेदार झाड़ी से हाथ छिल गए, खून बहने लगा, और मैं वहीं बैठ गई। वायु के झोंके एक के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बाद एक मेरे ऊपर से गुज़रने लगे, और मैं समस्त दुःख भूलकर तेरा ध्यान हृदय में करती हुई एक लता-कुंज के नीचे सो गई। वायु के प्रवाह से लता-कुंज के पल्लव मेरी आँखों को स्पर्श करने लगे। मुझे अनुभव हुआ कि कहीं मेरे प्रियतम ने मेरी आँखों को चुपचाप पीछे से बंद तो नहीं किया है! मैंने चौंककर शीघ्र ही उनके करों को पकड़ने की लालसा से अपना हाथ बढ़ाया; पर निराशा के अतिरिक्त और कुछ हाथ न आया।

विभो! यह क्या? मेरे साथ उपहास क्यों? क्षमा करो, मैंने हार मान ली। मेरा हृदय अति विह्वल हो रहा है। आओ, एक बार इस हृदय-रूपी कुटिया में पदार्पण कर मेरे जीवन को सार्थक करो।

सत्यवती (डलहौज़ी)

× × ×

२. पं० भोलानाथ झा आई० सी० एस्०

पं० भोलानाथ झा के पूर्वज बड़नगर (गुजरात) के रहनेवाले थे। यह नगर उच्च कोटि के गुर्जर-ब्राह्मणों का केंद्र था; परंतु मुसलमान-शासकों द्वारा पीड़ित, प्रताड़ित होने के कारण उन्होंने उसे छोड़ दिया। बहुत-से गुर्जर-ब्राह्मण यत्र-तत्र जा बसे। झा महाशय के कुटुंबियों ने भी बड़नगर छोड़कर ईडर-राज्य में रहना पसंद किया। यह लगभग ३०० वर्ष पूर्व की बात है। ईडर छोड़कर ये लोग राजपूताने आए; परंतु वहाँ के धन-लोलुप नरेश उनकी संपत्ति-शालिता सहन न कर सके, और मुसलमान शासकों की भाँति बुरी तरह तंग करने लगे। विवश होकर इस अत्याचार-पीड़ित ब्राह्मण-परिवार को कई नगर बदलने पड़े। कोटा, बूँदी, मथुरा और अलीगढ़ में अस्थायी रूप से बसते हुए, १८५७ ई० के राज-विद्रोह के बाद, ये लोग काशी पहुँचे और वहीं बस गए। झा महाशय का परिवार सर्वदा साहित्य-प्रेमी रहा है—उसमें सदा सरस्वतीदेवी की अर्चना होती आई है। भोलानाथजी के पिता, स्वर्गीय पं० गोपीनाथजी झा, संस्कृत तथा फ़ारसी के उद्भट विद्वान् थे। वह जीवन-भर साहित्य-सेवा और दीन-दुखियों का पालन करते रहे। पिता पं० रामनाथ झा ने शिक्षा-विभाग में प्रशंसनीय कार्य कर सहारनपुर-हाईस्कूल की हेडमास्टरी से १९१७ ई० में अवकाश प्राप्त किया। झा महोदय के दो ज्येष्ठ भ्राता श्रीबटुकनाथ झा तथा प्रो० भैरवनाथ झा हैं; तीसरे झा महाशय स्वयं हैं, जिनके संबंध में आज यहाँ हम कुछ पंक्तियाँ लिखना चाहते हैं।

पं० भोलानाथ झा आई० सी० एस्०

पं० भोलानाथ झा का जन्म मार्च, १९०२ ई० में, फ़ैज़ाबाद में, हुआ था। परिवार की प्रथा के अनुसार प्रथम इनका विद्यारंभ कराया गया। थोड़े ही दिनों में घरवालों को बालक के होनहार होने की आशा हो गई। फिर चरित-नायक महाशय को अँगरेज़ी पढ़ाने की व्यवस्था की गई। १९१६ ई० में, १४ वर्ष की ही आयु में, उन्होंने सीनियर लोकल केंब्रिज परीक्षा पास कर ली, और वह एफ़्० ए० में पढ़ने के अधिकारी हो गए। परंतु, विश्वविद्यालय के नियमानुसार, उस समय १६ वर्ष से पूर्व कोई विद्यार्थी कॉलेज में प्रवेश न कर सकता था। अतएव झा महाशय ने, समय बिताने के लिये, दो साल और 'धर्म-समाज हाई-स्कूल', अलीगढ़ में शिक्षा प्राप्त कर, वहाँ से प्रवेशिका-परीक्षा पास की। मैट्रिक्युलेशन पास कर झा महाशय इलाहाबाद के म्युअर सेंट्रल कॉलेज में भरती हुए, जहाँ से उन्होंने क्रमशः एफ़्० ए०, बी० ए० और एम्० ए० की परीक्षाएँ पास कीं। बी० ए० और एम्० ए० में आप युनिवर्सिटी-भर में प्रथम रहे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कॉलेज की पढ़ाई समाप्त कर पं० भोलानाथ कुछ दिनों के लिये 'असिस्टेंट इनकम-टैक्स ऑफ़िसर' हो गए। इन्हीं दिनों आपके हृदय में आई० सी० एस्० की प्रतियोगिता-परीक्षा में बैठने की अभिलाषा उत्पन्न हुई; परंतु नौकरी करते हुए नियमानुसार ऐसा न किया जा सकता था। अतएव झा महोदय को 'असिस्टेंट इनकम-टैक्स ऑफ़िसरी' से त्याग-पत्र देना पड़ा, और वह १९२४ ई० की प्रतियोगिता परीक्षा में बैठकर उसमें सफलतापूर्वक उत्तीर्ण हुए। इस परीक्षा के उत्तीर्ण छात्रों में उनका पाँचवाँ नंबर रहा। सितंबर, १९२४ ई० में आपने आई० सी० एस्० परीक्षा के अध्ययन के लिये विलायत-यात्रा की, और परीक्षोत्तीर्ण होकर (विलायत की परीक्षा में आपका तीसरा नंबर रहा) १९ नवंबर, १९२६ ई० को आप स्वदेश वापस आ गए। विलायत से लौटने पर बंबई, आगरा, प्रयाग और अन्य कई स्थानों में मित्रों ने आपका ख़ूब स्वागत किया। आजकल झा महाशय ग़ाज़ीपुर में ज्वाइंट मैजिस्ट्रेट हैं।

पाठकों को ऊपर के विवरण से ज्ञात हुआ होगा कि पं० भोलानाथ झा प्रारंभ से ही कितने परिश्रमी और कुशाग्र-बुद्धि थे, और उनका विद्यार्थी-जीवन कैसा सफलता-पूर्ण और आशाजनक रहा। वह अपने साथियों में सदैव सर्वोच्च रहे। वक्तृता देने में तो आप ख़ूब ही दक्ष हैं। छात्रावस्था में ही इस कला के लिये आपको 'आल इंडिया कॉलेज डिबेट' ने स्वर्ण-पदक प्रदान किया था। और भी कई पदक आपने प्राप्त किए हैं। म्युअर सेंट्रल कॉलेज, प्रयाग की प्रायः समस्त साहित्य-परिषदों के आप प्रधान या मंत्री रहते थे। विलायत में भी ऑक्सफ़ोर्ड मजलिस आफ़् इंडियन्स के आप सभापति थे।

भोलानाथजी सर्वांश में पाश्चात्य प्रणाली के अनुयायी नहीं हैं। वह अपने देश की पुरानी सभा-संस्थाओं में जीवन-संचार करने तथा उन्हें परिस्थिति के अनुसार बदल देने के पक्ष में हैं। बाल-विधवा-विवाह, दलितोद्धार और अंतर्जातीय भोज के आप प्रबल समर्थक हैं। प्राणिशास्त्र (Biology) के सिद्धांतानुसार झा महाशय अंतरजातीय विवाहों को अच्छा नहीं समझते। मतलब यह कि आप बड़े उदार व्यक्ति हैं। किसी बात में कट्टर होना आपको पसंद नहीं। सनातनधर्म और आर्य-समाज के मूल सिद्धांतों में आप कोई विशेष भेद नहीं समझते। आप धर्म की वैज्ञानिकता और बुद्धिवाद पर विश्वास रखते हैं।

सबसे अधिक महत्त्व की बात जिसे हम समझते हैं, वह झा महाशय का हिंदी-प्रेम है। आप बाल्य-काल से ही हिंदी के अनन्य भक्त और उपासक हैं। आई० सी० एस्० परीक्षा में आपका वैकल्पिक विषय हिंदी था। आपने चंदबरदाई से लेकर आधुनिक कवियों तक के काव्यों का अच्छी तरह अध्ययन किया है। झा महाशय बिहारी का काव्य देव की कविता से अच्छा समझते हैं। भक्ति की अपेक्षा शृंगार और वीर-रस को श्रेष्ठ मानते हुए भी आप गो० तुलसीदासजी की विनयपत्रिका को बड़े प्रेम से पढ़ते हैं। बिहारी, भूषण, मतिराम, जटाशंकर, रसखान आदि की कविताओं से आपको बड़ा प्रेम है। आपको इन कवियों की कितनी ही कविताएँ कंठाग्र हैं। खड़ी बोली की अपेक्षा ब्रजभाषा की कविताएँ आपको अधिक रुचिकर प्रतीत होती हैं।

विद्याध्ययन के साथ-साथ खेलों में भी झा महाशय ने ख़ूब दक्षता और अभिरुचि का परिचय दिया है। एक्ज़िटर कॉलेज के, जिससे आपने आई० सी० एस्० परीक्षा पास की, आप 'कॉलेज कलर्स' में थे, अर्थात् हॉकी के सर्वश्रेष्ठ ११ और टेनिस के प्रथम ६ खिलाड़ियों में से आप भी एक थे। इँगलैंड के भारतीय विद्यार्थियों ने एक 'टीम' बनाई थी, जो फ़्रांस, बेलजियम और जर्मनी आदि देशों में गई और वहाँ की 'चैंपियन टीम्स' को परास्त किया। हमारे झा महाशय इस 'टीम' के प्रमुख खिलाड़ियों में थे।

पं० भोलानाथजी बहुत ही मिलनसार और हँसमुख हैं। आपके सहवास से बड़ा आनंद आता है। उदासीनता तो कभी आपके पास ही नहीं फटकती। दयालुता की भी आपमें पर्याप्त मात्रा है। जो आपसे मिलता है, वही आपका प्रशंसक बन जाता है।

अभी पं० भोलानाथ झा ने एक प्रकार से विद्यार्थी-अवस्था समाप्त कर अपने सार्वजनिक जीवन में प्रवेश किया है। जिस जीवन का उषःकाल और प्रभात इतना उत्तम है, उसका मध्याह्न कितना सुंदर होगा, इसका पाठक स्वयं ही अनुमान कर सकते हैं। हमारा विश्वास है कि झा महाशय जहाँ रहेंगे, वहाँ वह अपने प्रशंसनीय गुणों के कारण समय ही लोक-प्रियता प्राप्त करेंगे; आपको सरकार ने

CC-0. Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जिस पद पर अधिष्ठित किया है, उसमें उन्नति करते हुए उत्तरोत्तर सफलता प्राप्त करेंगे। एक निवेदन जो हम झा महाशय से करना चाहते हैं, वह यह है कि वह अपने पद-संबंधी कार्यों में व्यापृत रहकर अपनी मातृभाषा हिंदी की भी सेवा करना कदापि न भूलें।

श्रीकृष्णलाल लवानिया

× × ×

३. गीता और अहिंसा

सुधा के भाद्रपद के अंक में धर्मेंद्रनाथ शास्त्रीजी का 'अहिंसा के स्वरूप' पर एक लेख निकला है। उसके दो विभाग किए जा सकते हैं। प्रथम भाग का यह आशय है कि लाहौर के दंगे में मुसलमानों ने हिंदुओं से खुल्लम-खुल्ला न लड़कर गलियों में जो अकेले-दुकेले हिंदू मिले, उन्हें मारा। इससे डरकर हिंदू लोगों ने गलियों में जाना ही छोड़ दिया। इस अपनी कायरता को वे अहिंसा की आड़ में छिपा डालते हैं। गांधीजी भी यह कभी नहीं कहते कि जो डरे, वह अहिंसावादी हो सकता है।

दूसरे भाग में गांधीजी की अहिंसा और श्रीकृष्णजी की अहिंसा की तुलना कर श्रीकृष्णजी की अहिंसा उत्तमतर ठहराई गई है।

प्रथम भाग में शास्त्रीजी ने जो कुछ कहा है, वह ठीक है। अहिंसा की आड़ में कायर हो बैठना सर्वथा निंदनीय है। किंतु शास्त्रीजी का दूसरा भाग—अहिंसा के मूल-तत्त्व पर विचार—कुछ विशेष युक्ति-युक्त नहीं प्रतीत होता।

मैं गांधीजी के अहिंसा-रूप-निर्णय को ही मान्य समझता हूँ। अब प्रश्न उठता है कि क्या मेरे विचार में श्रीकृष्णजी के निर्णय के मुक़ाबले में गांधीजी का निर्णय ही मान्य है? इसके समाधान में मैं कहना चाहता हूँ कि श्रीकृष्णजी को अहिंसा के स्वरूप का बोध नहीं कराना पड़ा। अर्जुन कुछ हिंसा से डरकर युद्ध से मुँह नहीं मोड़ने लगा था। शास्त्रीजी अर्जुन को जिस तरह का अहिंसावादी ठहराते हैं, अगर सचमुच वह वैसा ही था, तो पाशुपत अस्त्र पाने के पहले जब उसे सुअर मारने आया, तब वह उसे नहीं मारता। यह तो नहीं कहा जा सकता कि अर्जुन में अहिंसा का भाव युद्ध-भूमि पर एकदम जागरित हो उठा।

बात यह है कि युद्ध-भूमि पर अर्जुन अपने 'स्वजनों' को देखकर युद्ध से चिढ़-सा गया। अन्यथा न तो व्यासजी ही अर्जुन के "आचार्यान्मातुलान् भ्रातॄन् पुत्रान्पौत्रान्....." आदि का ब्योरा देते, और न अर्जुन ही उन सबको युद्ध में अपने प्राण देने को तैयार देखकर "दृष्ट्वेमं स्वजनं कृष्ण" ही पहले कहता। फिर अर्जुन के "न च श्रेयोऽनुपश्यामि हत्वा स्वजनमाहवे" में स्वजनों की हत्या का प्राधान्य है। और भी देखिए—

येषामर्थे कांक्षितं नो राज्यं भोगाः सुखानि च;
त इमेऽवस्थिता युद्धे प्राणांस्त्यक्त्वा धनानि च।
(गी० १, ३३)

इसमें अर्जुन साफ़ कहता है कि जिन लोगों के लिये राज्यादि भोगों की इच्छा की जाती है, वे ही इस युद्ध में अपनी जान देने को तैयार हैं (और फिर उनके इस युद्ध में काम आने पर मैं ही उन भोगों को लेकर क्या करूँगा)।

इससे विदित है कि उस धर्मक्षेत्र कुरुक्षेत्र में अर्जुन के मन में यह भाव नहीं उठा कि चलो, इस घोर हिंसामय कार्य से एकदम हटकर भिक्षुक-वृत्ति में प्रवृत्त हो जायँ। पाँचों पांडवों के गुणों का ख़याल रखते हुए अगर विचार किया जाय कि ऐसे अहिंसात्मक भाव किसमें पाया जाना संभव था, तो निस्संदेह इसी निर्णय पर पहुँचना होगा कि वह युधिष्ठिर ही थे। किंतु नहीं, युधिष्ठिर भी तो लड़ने को तैयार हो गए। फिर अर्जुन भला लड़ने से क्यों हिचकता? वह तो साफ़-साफ़ कहता है कि कुलक्षय से होनेवाली हानियों को न जाननेवाले ये कौरव तो लड़ने को तैयार हो गए हैं; किंतु उन हानियों को जाननेवाला मैं कैसे लड़ूँ? अतः उसके मन में यह संदेह नहीं हुआ कि जीव-मात्र की हत्या—या जीव-हिंसा कहिए—करके राज्य पाना उचित है या नहीं? किंतु संदेह यह था कि कुलक्षय से होनेवाली हानियों को मैं जानता हूँ। इस महायुद्ध में दोनों तरफ़ के हमारे गुरु, दादा, बाबा, काका, भाई आदि मारे जायँगे। इन सबके न रहने पर राज्यादि के भोग में कोई आनंद नहीं रहेगा। इन सब बातों के होते हुए भी मेरा लड़ने को तैयार होना ठीक है या नहीं?

सचमुच 'अनार्यजुष्टं' का अर्थ "आर्य अर्थात् श्रीकृष्ण और अर्जुन के ही समधर्मावलंबी न कि बौद्ध या जैन" करना हँसी-सा मालूम पड़ता है। 'आर्य' का अर्थ जहाँ सत्पुरुष, भद्रपुरुष किया जा सकता है, वहाँ हिंदू अर्थ लगाना असंगत मालूम पड़ता है।

मतलब यह कि 'गीता' अहिंसा का मार्ग बतलानेवाली नहीं है। इस संसार में जन्म लेने पर अपने श्रेय के लिये,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अनंत आनंद भोगने के लिये, परम शांति को पाने के लिये—संक्षेप में परमेश्वर को पहचानने के लिये—मनुष्य को किस मार्ग का अवलंबन करना चाहिए, यही गीता का प्रतिपाद्य विषय है।

रही अहिंसा की बात। जिस तरह की अहिंसा का प्रचार आजकल गांधीजी कर रहे हैं, और पूर्व काल में महात्मा ईसा, बुद्ध और जैन तीर्थंकरों ने किया था, वह मनुष्य के इस संसार में सुखमय जीवन बिताने का, परमेश्वर को पहचानने का, मार्गस्थ होने का मार्ग है। संसार में सब कोई 'स्थितप्रज्ञ' नहीं है। बुद्धादि की अहिंसा का अवलंबन कर ही मनुष्य 'नाहंकृतभाव' और 'अलिप्त बुद्धि' युक्त हो सकता है। ऐसा होने पर ही मारने पर भी वह मारने के पाप का भागी नहीं होगा।

जैसा कि मैं ऊपर लिख चुका हूँ, अहिंसा का रूप-निर्णय करना तो मुझ अज्ञानी के वश की बात नहीं।

शिवराम

× × ×

४. "विजय-बधू को वीरो, वर लो"

(१)

मेल करना है तो ख़ुशी से करो सच्चा मेल,
खेल खेलने में फ़ेल होती आशा मन की ;
ख्याति-रत्न चाहते तो यत्न करो साहस का,
जाति को सँभालो जाती और जो पतन की।
बाँधो मज़बूत छुआछूत का अपूत भूत,
एकता का दूत भरे शक्ति संगठन की ;
सुख-सुधा चखना, तो बकना दो छोड़ वीरो,
रखना जो साख, रक्खो नाक हिंदूपन की।

(२)

मोद भरना तो भरो प्रेम के पुजारी होके,
धरना ध्वजा है तो स्व-धर्मवाली धर लो ;
हरना अभीष्ट है तो हर लो स्वदेश-दुःख,
'रसिकेंद्र' डरना तो पातकों से डर लो।
करना है काम, तो कमर कस बढ़ो, बंधु,
सत्य के समर में अमर नाम कर लो ;
वरना है विमल-बधू, तो बल-विक्रम से,
बाजे बजा विजय-बधू को वीरो, वर लो।

"रसिकेंद्र"

× × ×

५. अमेरिका का पता किसने लगाया ?

मैक्सिको नगर से जैक स्टारहंट ने 'मैक्सिको में बौद्धों के अवशिष्ट चिह्न'-शीर्षक एक लेख लिखा है। उससे ज्ञात होता है कि कोलंबस से बहुत दिन पहले चीन-देशीय बौद्ध-साधुओं ने इस भूखंड का पता लगाया और वहाँ बौद्ध धर्म का प्रचार किया था। यह जानकर कि यह विषय बहुत-से पाठकों को रोचक प्रतीत होगा, हम उक्त लेख का सारांश यहाँ देते हैं।

लेखक महाशय लिखते हैं कि मैक्सिको, मध्य-अमेरिका तथा युकेटन में विज्ञानवेत्ताओं के आधुनिक अनुसंधानों से जाना गया है कि कोलंबस के इस महाद्वीप का भूभाग देखने के समय से लगभग एक सहस्र वर्ष पूर्व ही इसका पता लग चुका था। मैक्सिको के प्रामाणिक इतिहास-लेखक जान फ़ायर (Fryer) का विश्वास है कि हुई शेन (Hui shan)-नामक एक बौद्ध साधु ने सर्वप्रथम इस नवीन भूखंड का वृत्तांत लेख-बद्ध किया था।

यह शेन काबुल का रहनेवाला और विश्व-परिव्राजक तथा धर्मोपदेशक था। बौद्ध धर्म-प्रचार के हेतु इसने पहले अमेरिका की यात्रा की थी। यह बात उन काग़ज़ों से प्रमाणित होती है, जो 'लियंग' वंश के पुराने काग़ज़-पत्रों के दफ़्तरख़ाने में सुरक्षित रक्खे हुए और चीनी लोगों को प्राप्त हुए हैं। सुप्रसिद्ध इतिहासवेत्ता 'माडुअन-लिंग' शेन के कथनों की पुष्टि करते हैं।

फ़ायर साहब कहते हैं कि साधारण छोटी-छोटी डोंगियों में बैठकर भी कियुराइल तथा एलियुशियन प्रायद्वीपों से होकर एशिया से अमेरिका जाना चीन देश के निवासियों को सुगम था। पाँचवीं शताब्दि में पूर्वीय जातियाँ इन टापुओं से पूरी परिचित थीं, और बौद्ध धर्म-प्रचारकों के लिये ख़ुश्की की लंबी राह से यात्रा करने की अपेक्षा सामुद्रिक सफ़र करने में अधिक आसानी थी। उन्हें हिंदोस्तान और चीन में समुद्र से आने-जाने का अभ्यास था। पूर्वोक्त उभय प्रायद्वीपसमूहों के निवासियों से परिव्राजकों को उत्तरीय अमेरिका के महाद्वीप का कदाचित् पता लगा होगा।

चीन के ऐतिहासिक काग़ज़-पत्रों तथा दंत-कथाओं के सिवा मैक्सिको के शांति-सागर के किनारे और कहीं-कहीं देश के दूरस्थ भीतरी प्रांतों में जो पुराकालीन वस्तुएँ हस्तगत हुई हैं, वे भी चीन से बीस हज़ार या छः हज़ार मील पूर्व एक महाद्वीप की स्थिति का निर्देश करती

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हैं, जो स्पष्टतः अमेरिका है। देश की पूर्वीय सीमा के पार जो बृहत् सागर का वर्णन है, वह निस्संदेह अटलांटिक सागर है। चीनी लोग इस महाद्वीप को 'फुसांग' कहते थे।

हुई शेन के वर्णनानुसार, उसने सम्राट् 'यंग युआन' के शासन-काल में, ४९९ ईसवी में, वहाँ की यात्रा की थी। उसके देश से बाहर रहने के समय एक राज-विप्लव हुआ, और उसने ५०३ ई० में शासनकर्ता के लिये भेंट लेकर देश में प्रत्यागमन किया। उनमें रेशम के सदृश कपड़े और मैक्सिको में उस समय व्यवहृत होनेवाले शीशे थे। कपड़े निश्चय मैक्सिको के 'अगेव' के रेशे थे।

हुई शेन ने अपनी सरकारी रिपोर्ट में कहा था कि नए देश के निवासी पहले बौद्ध धर्म से अनभिज्ञ थे। पाँच बौद्ध भिक्षुकों ने काबुल से जाकर ४५८ ईसवी में उसका पता लगाया, और वहाँ बौद्ध सिद्धांतों, बौद्ध ग्रंथों तथा धर्म प्रतिमाओं का प्रचार किया। इन आदिम अनुसंधानकों ने वहाँ के अधिवासियों को बौद्ध भिक्षुक बनाया, एवं उनकी रीति-रस्मों और आचार-व्यवहारों का संशोधन किया।

हुई शेन ने मैक्सिको के 'अगेव'-वृक्ष के रेशों से कपड़ा बुनने की प्रक्रियाओं और उसके फलों का वर्णन किया था। उसने अपनी रिपोर्ट में कहा था कि उस देश में बहुत-सा ताँबा है, परंतु लोहा नहीं है। और, सोने-चाँदी का कुछ मूल्य नियत नहीं है। वहाँ के बाज़ारों को स्वतंत्रता है, और मूल्य की दर का कोई नियमित हिसाब नहीं है।

वहाँ के लोगों की रीति-रिवाजों, सामाजिक व्यवहारों एवं वहाँ नगरों और क़िलों के न होने के विषय की रिपोर्ट में वर्णित सब बातें मैक्सिको की वैज्ञानिक-मंडलियों के आधुनिक अन्वेषणों के निर्णयों से मिल जाती हैं।

हुई शेन के मैक्सिको में सचमुच जाने के प्रमाण में वहाँ यह किंवदंती प्रसिद्ध है कि वहाँ एक गौरवर्ण अपूर्व व्यक्ति का आगमन हुआ था, जो बड़ा लंबा झुल्ल या उत्तरीय धारण किए हुए था और जिसने लोगों को कुकर्मों से विरक्त होने एवं धार्मिक, संयमी तथा शांतिमय जीवन व्यतीत करने की शिक्षा दी थी। कुछ वर्षों के बाद लोग उसे बहुत सताने लगे, और जब उसकी जान जोखिम में हुई, तब वह एकाएक अदृश्य हो गया। पीछे उसका पद-चिह्न मगदेलेन गाँव के पास, जो अब लोअर कैलिफ़ोर्निया में स्थित है, एक ऊँची चट्टान पर पाया गया, जहाँ पर, दंत-कथा के अनुसार, एक मूर्ति स्थापित की गई। कुएट्ज़ालकोल (Quetzalcoatt)-नामक एक दूसरा धर्म-प्रचारक, कई एक अनुयायियों के साथ, 'पनुको' (Panuco) की राह से, उत्तर से मैक्सिको में आया था। कदाचित् वे बौद्ध साधुओं की आदिम मंडली के लोग थे।

आदमियों तथा वस्तुओं के पुराने नामों की छान-बीन से बौद्ध लोगों के मैक्सिको में होने का प्रमाण पाया जाता है। एशिया में बुद्धदेव को साधारणतः इस नाम से नहीं पुकारते। उन्हें लोग गौतम या शाक्य मुनि कहते हैं।

मैक्सिको के 'गातेमल मोतज़िन' (Guatamala Motzin) स्थान के नाम की तथा कई एक अन्य शब्दों की उत्पत्ति का संबंध, जिनका लेखक महाशय ने उल्लेख किया है, गौतम-शाक्य से परिलक्षित होता है। उन नामों तथा शब्दों के ठीक उच्चारण से जानकारी न होने के कारण हम उन्हें यहाँ पर उद्धृत नहीं करते। 'गातेमल' तथा दो-एक नीचे आए हुए शब्द ही उदाहरणार्थ यथेष्ट हैं।

प्लेनकू (Palenqua) के निकट बुद्धदेव की जो एक मूर्ति पाई गई है, उस पर शाकमल (Chaacmol) शब्द खुदा हुआ है, जिसकी उत्पत्ति कदाचित् शाक्य मुनि से हुई है।

चीन के उत्तरीय भाग के बौद्ध साधु आज 'लामा' नाम से प्रसिद्ध हैं, और प्राचीन मैक्सिको के धर्मोपदेशक 'टलामा' (Tlama) कहलाते थे।

फ़ायर साहब का ख़्याल है कि प्रस्तर की नक़्क़ाशियाँ, मूर्तियाँ, मंदिर और मीनारें सभी यह प्रमाणित करते हैं कि पहले इस महाद्वीप में बौद्ध धर्म का प्रचार था। कैंपेक (Campeche) में एक बृहत् मूर्ति पाई गई थी, जो पूर्ण धर्म-वस्त्र धारण किए बुद्धदेव की छवि दरसा रही थी। प्लेनकू में दो सिंहों की पीठ पर पलथी लगाए एक बौद्ध संन्यासी की अन्य मूर्ति मिली थी।

अक्सम, प्लेनकू तथा अन्य स्थानों के पुरातन मंदिरों के आलों में बेढंगी खुदी हुई बुद्धदेव की मूर्तियाँ पाई जाती हैं। पेरिस के नृवंश-संस्था (Ethnographical Societies) के अजायबघर में बुद्धदेव की मैक्सिको से लाई गई एक प्रतिमा विराजमान है।

यों तो भारतवासी और महाभारतपाठी पहले ही अर्जुन और आर्यों का संपर्क पाताल-पुरी (अमेरिका) से जानते और मानते आते थे, अब उपर्युक्त गौरांगगण की कही बातों से किसी को यह मानने में हिचक नहीं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होगी कि इस युग में बौद्ध साधुओं ही ने पहलेपहल अमेरिका का पता लगाया और उसके अनुसंधान का सेहरा उन्हीं को पहनाना धर्मतः उचित है। योरप के लिये कोलंबस ने इसका पता लगाया। उनके इतिहासों में चाहे उसका नाम लिखा जाय; पर भारतवर्ष के इतिहास में, पूर्वीय देशों के इतिहास तथा सारे जगत् के इतिहास में तो बौद्ध साधुओं ही के नाम का उल्लेख और उन्हीं का यशोगान होना चाहिए।

शिवनंदनसहाय

× × ×

६. सरसों के तेल की उपयोगिता

सरसों के तेल के विषय में कुछ लिखना व्यर्थ है। भारतवर्ष में शायद ही कोई ऐसी जगह हो, जहाँ पर सरसों के तेल का व्यवहार न किया जाता हो। इसे लोग प्रतिदिन सिर में तथा शरीर में लगाते तथा दवा के काम में भी इसका व्यवहार करते हैं। सरसों का तेल दुर्गंध-नाशक, लघुपाक और अनेक रोगों का नाशक है। यह आँखों के लिये भी विशेष उपकारी है। सरसों का कच्चा तेल खाने से दृष्टि-शक्ति की वृद्धि होती है। शरीर में लगाने से शरीर का दर्द दूर होता तथा उसकी शोभा बढ़ती है।

सरसों के जनमते ही इसकी उपयोगिता देखने में आने लगती है। इसकी पत्तियों का शाक बनाया जाता है, जो खाने में स्वादिष्ठ और गुण में अपूर्व होता है। इसका शाक पित्त-नाशक, मधुर, विरेचक तथा पाचन-शक्ति को बढ़ानेवाला होता है।

सरसों के फूल से मधुमक्खियाँ जो मधु संग्रह करती हैं, वह अत्यंत मीठा और लाभदायक होता है। यह शहद जल्दी ख़राब नहीं होता, अनेक दिनों तक ताज़ा ही बना रहता है, और अधिकतर आयुर्वैदिक ओषधि के अनुपान में व्यवहृत होता है। सरसों को पीसकर तरकारी आदि में डालने से उसका स्वाद अच्छा और फ़ायदेमंद होता है। सरसों का उबटन शरीर में लगाने से शरीर की कांति बढ़ती तथा मैल दूर होता है, और चमड़ा मुलायम होता है। भारतवर्ष के प्रायः सभी प्रांतों में प्रकारांतर से विवाह के कुछ दिन पूर्व वर और कन्या को सरसों का उबटन लगाया जाता है। अचार, चटनी आदि के बनाने में भी सरसों का विशेष भाग होता है। सरसों का चूर्ण 'मस्टर्ड' के नाम से डॉक्टरी चिकित्सा में भी बहुधा व्यवहार किया जाता है। इसके चूर्ण को योरपियन लोग भी भोजन के साथ इस्तेमाल करते हैं।

आयुर्वैदिक ग्रंथों में सरसों के गुणों के वर्णन में लिखा है—

सर्षपस्तु रसे पाके कटुः स्निग्धः सतिक्तकः;
तीक्ष्णोष्णकफवातघ्नः रक्तपित्ताग्निवर्द्धनः।
स नाशयति वै कण्डुं कुष्ठकीटाक्रिमिग्रहान्;
यथा रक्तस्तथा गौरः किन्तु गौरो वरो मतः।

अर्थात् सरसों तिक्त, कड़वा, स्निग्ध, तीक्ष्ण, उष्णवीर्य, कफ तथा वात का नाशक, रक्त, पित्त और अग्नि का वर्द्धक, कुष्ठ, कृमि तथा ग्रह-दोष का नाशक है। सरसों काला और पीला, दो प्रकार का होता है, किंतु पीला सरसों अच्छा है।

हमारे देश में सरसों का तेल सिर और शरीर में लगाने, खाने आदि अनेक कामों में आता है। संतान के भूमिष्ठ होते ही उसके समूचे शरीर में सरसों का तेल भली भाँति लगाया जाता है, जिससे बच्चे का शरीर पुष्ट हो तथा उसे कोई संक्रामक रोग न होने पावे। स्नान करने के पहले तेल भली भाँति लगा लेने से ख़ून की गति तेज़ होती और चमड़ा मुलायम रहता है। जो बराबर तेल मलकर नहाते हैं, उन्हें चर्म-रोग बहुत कम होता है। शरीर में तेल भली भाँति मर्दन करने से जाड़ा, गर्मी और वर्षा, सभी ऋतुओं को समान रूप से सहन करने की शक्ति शरीर में आ जाती है। जो लोग खुली जगह में रात को सोते हैं, उनके हक़ में सरसों का तेल लगाना अत्यंत हित है। मलेरिया के मच्छड़ों का भय भी इससे अनेकांशों में जाता रहता है। स्नान के पहले थोड़ी देर तक तेल मलने से तेल देह के भीतर प्रवेश करता और दुर्बल शरीर को सबल बनाता है। बहुत दूर चलने से जो थकावट होती है, उसके दूर करने की शक्ति भी तैल-मर्दन में है। वात-व्याधि का दर्द सरसों का तेल लगाने से दूर हो जाता है। न्युमोनिया, प्लूरिसी तथा यक्ष्मा आदि रोगों में सरसों का तेल विशेष लाभदायक होता है। खाज, खुजली आदि चर्म-रोग भी सरसों के तेल के लगाने से अच्छे हो जाते हैं। ग्रीष्मकाल की अपेक्षा शीतकाल में सरसों का तेल लगाने से अधिक लाभ होता है। इससे जाड़ा कम मालूम होता है और शरीर का चमड़ा फटने नहीं पाता।

वैद्यक-शास्त्र में लिखा है—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अन्नादष्टगुणं पिष्टं पिष्टादष्टगुणं पयः ;
पयसोऽष्टगुणं मांसं मांसादष्टगुणं घृतम् ।
घृतादष्टगुणं तैलं मर्दनान्नतु भक्षणात् ।

अर्थात् चावल से आठ गुण आटा, आटे से आठ गुण दूध, दूध से आठ गुण मांस, मांस से आठ गुण घी, और घी से आठ गुण अधिक तेल पुष्टिकर है; किंतु यह पुष्टि-कारक गुण तेल के खाने में नहीं, बल्कि लगाने में है।

स्नान करने के पूर्व एक बूँद सरसों का तेल आँख में डालने से आँख की ज्योति तेज़ होती है।

सरसों का तेल अनेक दवाओं के काम में आता है। कटे हुए घाव में ख़ालिस सरसों का तेल लगाने से ख़ून का निकलना बंद होता है, दर्द दूर हो जाता है और घाव आराम हो जाता है। कार्बोलिक एसिड तथा आइडोफ़ार्म की तरह इसका विषयुक्त प्रभाव घाव के ऊपर नहीं रहने पाता।

छोटे-छोटे बच्चों के पेट में सूत की नाईं पतले-पतले क्रिमि हो जाते और गुह्य द्वार से बाहर निकलने लगते हैं। इस रोग में सरसों का तेल बहुत लाभदायक होता है। सरसों का तेल पिचकारी से मलद्वार द्वारा पेट में देने से क्रिमि नष्ट हो जाते हैं।

पेट में मल जम जाने पर जब दस्त साफ़ नहीं होता, उस समय सरसों का गरम तेल मलद्वार द्वारा पिचकारी से देने से मल ढीला होकर बाहर निकल आता है।

सरसों के तेल से दाँत माँजने से दाँतों के अनेक रोग आराम हो जाते हैं; दाँत मज़बूत हो जाते हैं और मुख की दुर्गंध जाती रहती है।

नए तथा पुराने सूज़ाक में सरसों के तेल की पिचकारी देने से स्राव बंद होता तथा घाव आराम हो जाता है। कान में दर्द हो या कान बहता हो, इन दोनों प्रकार के रोगों में सरसों का तेल डालना बहुत लाभदायक होता है।

सरसों की खली भी अनेक कामों में काम आती है। गाय-भैंस को खिलाने से वे अधिक दूध देती और हृष्ट-पुष्ट बनी रहती हैं।

सरसों का तेल किसी चीज़ को सड़ने तथा ख़राब होने नहीं देता और बराबर ताज़ा बनाए रखता है। इसीलिये अचार आदि को तेल में डुबाए रखते हैं। कच्चा मांस तथा मछली भी सरसों के तेल में रखने पर जल्दी नहीं बिगड़ती।

दुःख का विषय है कि ऐसी महोपकारी तथा प्रतिदिन काम में आनेवाली वस्तु भी अब शुद्ध नहीं मिलती। अतः इस धोकेबाज़ी से उपकार के बदले अनेकांशों में अपकार ही अधिक होता है। देहातों में तेली कम मूल्य पर बिकनेवाली अनेक प्रकार की चीज़ों को ख़रीदकर सरसों में मिला देते हैं, जिसके व्यवहार से कितने ही प्रकार के रोग आ घेरते हैं।

तेलियों के लिये कोई क़ानून नहीं है। उन पर किसी का शासन नहीं चलता। वे मिर्च, चीना-बादाम (मूँग-फली) तथा और भी इसी प्रकार के तैलीय पदार्थों को सरसों के साथ मिलाकर बेचा करते हैं। शहरों में जो तेल पेरनेवाली कलें हैं, उनमें भी मिलावट बहुत होती है। देश में कितने ही आंदोलन उठते और मिटते रहते हैं; किंतु स्वास्थ्योपयोगी वस्तुओं की ओर कोई भी विशेष रूप से लक्ष्य नहीं करता। स्वास्थ्योपयोगी प्रत्येक वस्तु का निरीक्षण उनके विषयों में पारंगत विद्वानों द्वारा कराने का प्रबंध करना चाहिए।

गोपीनाथ वर्मा

× × ×

७. कृतघ्न

विधना की सृष्टि के समस्त प्राणियों में कोई,
करने लगेगा पतितों की यदि छान-बीन ;
तो उसे मिलेंगे पापी सैकड़ों, हज़ारों दुष्ट,
लाखों बेईमान औ' करोड़ों मन के मलीन।
त्यों ही 'सभामोहन' अनेक देख लेगा वह,
निंद्य, नीच, लाज-हीन, एक एक से नवीन ;
किंतु वह पावेगा कृतघ्न-सा न जीव कहीं,
हृदय-विहीन, नीच, पातकी, चरित्र-हीन।

सभामोहन अवधिया

असली कस्तूरी, केसर और बरास

नीचे-लिखे पते से मँगाइए। थोक तथा पेटेंट माल लेनेवालों और एजेंटों को पूरा कमीशन दिया जाता है।

हरिशंकरलाल नैपाली (के ५६) चौखंबा, बनारस सिटी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१. वाइटामाइन

इटामाइन को हिंदी में जीव-रसायन कहते हैं। यह एक ऐसा पदार्थ है, जिसके विना जीवन-धारण करना असंभव है। पहले के वैज्ञानिकों की धारणा थी कि प्राण-धारण के लिये तीन प्रकार के खाद्य पदार्थों की आवश्यकता है—(१) मॉंड-जातीय पदार्थ. (२) नाइट्रोजन-जनित खाद्य पदार्थ, (३) चर्बी-जातीय पदार्थ। पहली श्रेणी में आँटा, चावल आदि हैं, दूसरी में मांस, दाल आदि, और तीसरी में तेल, घी, मक्खन आदि। डॉ० मैक-कालम इन तीन जातियों के पदार्थों के गुणागुण की परीक्षा चूहों पर कर रहे थे। उन्हें पता लगा कि किसी भी जाति के शुद्ध पदार्थों से चूहों का शरीर पुष्ट नहीं होता, प्रत्युत वे क्षीण-काय और कमज़ोर होते जाते हैं। इस परीक्षा में कितने ही चूहों ने अपने प्राण गँवाए। जब डॉ० मैक-कालम ने देखा कि ये पदार्थ चूहों के शरीर-गठन के उपयोगी नहीं हैं, तब वह उन्हें दूध और ताज़े फल देने लगे। इस बार चूहे अपनी पूर्वावस्था को ही नहीं प्राप्त हुए, किंतु पहले से अधिक बलिष्ठ और स्वास्थ्यवान् हो गए। इस प्रकार सर्व-प्रथम दूध, फल और सब्ज़ी की उपयोगिता सिद्ध हुई, यद्यपि लोग बहुत दिनों से इन्हें खाद्य पदार्थों में सबसे श्रेष्ठ पदार्थ मानते आए हैं। इस प्रकार डॉक्टर साहब ने वाइटामाइन का आविष्कार किया।

वाइटामाइन की उपयोगिता और गुणों के सभी वैज्ञानिक क़ायल हैं; किंतु अभी तक किसी ने उन्हें देखा नहीं। अब तक पाँच प्रकार के वाइटामाइन आविष्कृत हो चुके हैं। उन्हें A, B, C, D और E कहते हैं। कोलंबिया-विश्वविद्यालय के प्रोफ़ेसर डब्ल्यू० एच्० एडी इस क्षेत्र में बहुत दिनों से काम कर रहे हैं। कहा जाता है, सिर्फ़ उन्हीं के वाइटामाइनों को देखने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। अभी तक ये पदार्थ स्वतंत्र रूप में पाए भी नहीं गए थे; किंतु डॉ० एडी ने इन्हें स्वतंत्र रूप में निकाला है। ये बरफ़ के टुकड़े के समान सफ़ेद होते हैं।

डॉ० मैक-कालम के प्रथम आविष्कार के बाद के बीस वर्षों में वाइटामाइन-संबंधी जो ज्ञान संसार को प्राप्त हुआ है, वह थोड़े में यों है—(१) वाइटामाइन A या Anti-xerophthalmic की आवश्यकता शरीर की बाढ़ के लिये होती है। इसकी कमी आँखों की बीमारी पैदा करती है। यह दूध, अंडे, जानवरों की चर्बी, मछली के तेल आदि में पाया जाता है। फल, सब्ज़ी—विशेषतः मूली, गोभी, ककड़ी,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बाजरा, गाजर, शकरकंद, चुकंदर, आम, मटर, केला, सेब और टमाटो—में यह पदार्थ अधिकता से रहता है। बालकों को, जिनकी शारीरिक पुष्टि में खाद्य पदार्थों का विशेष हाथ रहता है, वाइटामाइन की बड़ी आवश्यकता होती है।

वाइटामाइन B बेरीबेरी-नामक रोग को रोकता है। बेरीबेरी एक स्नायविक बीमारी है। रूस-जापान-युद्ध के समय यह पहलेपहल आविष्कृत हुई थी। उस समय जापानी सेना के बहुत-से जवानों को छँटा हुआ चावल खाने से बेरीबेरी हो गई थी; किंतु फिर उन्हें बे-छँटे चावल का भात खिलाने से यह रोग जाता रहा। यह वाइटामाइन बिना छँटे हुए चावल, गेहूँ के चोकर, अनेक बीज, सब्ज़ी, फल, पनीर, मक्खन आदि में पाया जाता है।

वाइटामाइन C को Antiscorbutic कहते हैं। इसमें स्कर्वी-नामक रोग को दूर करने की शक्ति होती है। बहुत दिनों तक शाकसब्ज़ी या ताज़ा फल न खाने से चमड़े की एक प्रकार की बीमारी होती है, जिसे स्कर्वी कहते हैं। इस रोग को दूर करने के लिये ताज़े फल, तरकारी—विशेषतः नींबू, संतरा, टमाटो, मूली, सेब, जामुन, केला आदि खाना चाहिए। यदि गऊ को हरी घास खिलाई जाय, तो उस के दूध में भी यह वाइटामाइन पाया जाता है। जहाज़ पर दूर देश की यात्रा करते समय लोग खट्टे या तुर्श फलों को साथ ले लेते हैं; क्योंकि वे स्कर्वी दूर करते हैं।

वाइटामाइन D या Antirachitic, अर्थात् रिकेट्स का शत्रु हड्डी में तथा चूने के संचय पर अपना अधिकार रखता है। यह मछली के तेल में, अंडे के पीले हिस्से में, दूध और कुछ तरकारियों में पाया जाता है। लड़कों को जब कभी रिकेट्स होता है, तब उन्हें मछली का तेल पिलाने से फ़ायदा होता है। रिकेट्स से आक्रांत लड़कों के पैर की हड्डी टेढ़ी, छाती की हड्डियाँ कमज़ोर और झुकी हुई होती हैं। सूर्य-रश्मि में भी रिकेट्स दूर करने की शक्ति है।

वाइटामाइन E का आविष्कार अभी हाल में हुआ है। इसे Antisterility भी कहते हैं। यह बहुत प्रकार का होता है, और गेहूँ, उद्भिज्ज तेल, ताज़े मांस, साग आदि में पाया जाता है।

आज तक इतने ही प्रकार से वाइटामाइन पाए गए हैं। किंतु जिस हिसाब से उनका आविष्कार हो रहा है, उससे अनुमान किया जाता है कि भविष्य में अन्य प्रकार के वाइटामाइन भी आविष्कृत होंगे। इनके आविष्कार से वैज्ञानिक यह पता चला सकेंगे कि कोई रोग किस खाद्य पदार्थ की कमी के कारण हुआ, और रोगी को कौन-सा

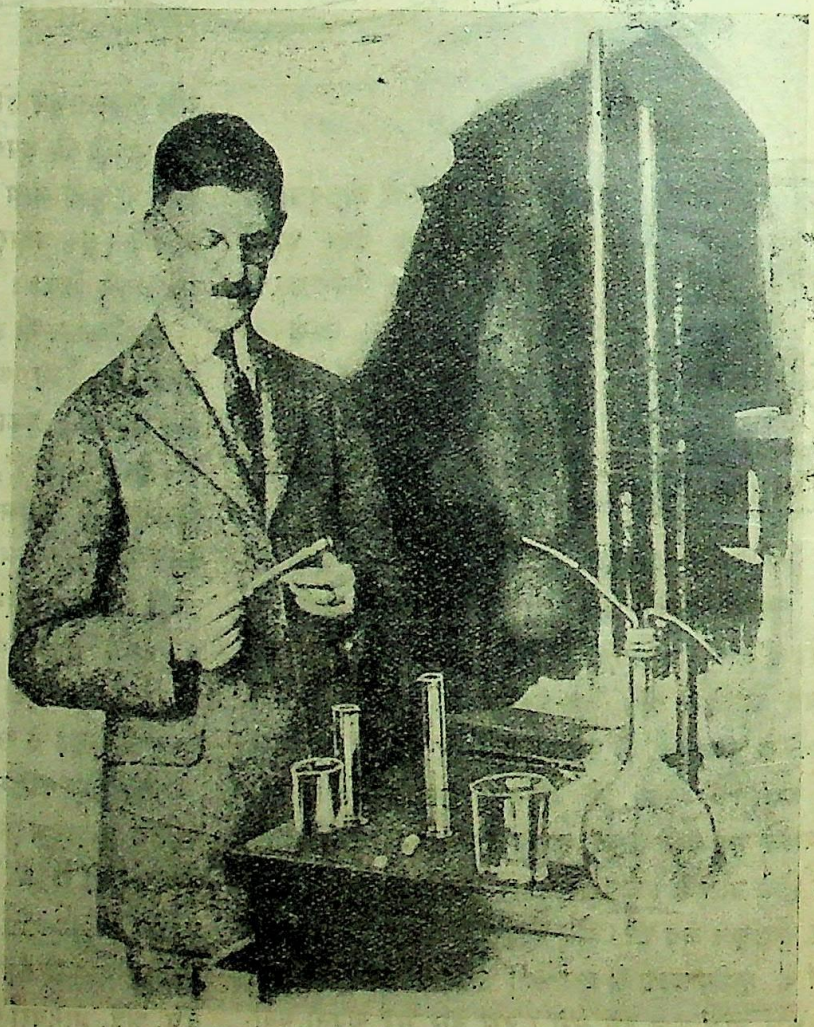

प्रोफ़ेसर डब्ल्यू० एच० एडी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भोजन देकर रोग दूर किया जा सकता है। मनुष्य का शरीर-धारण उसके भोजन पर ही निर्भर है। यदि भोजन में किसी प्रकार की गड़बड़ी न हो, तो रोग भी पास न फटकेंगे। भोजन देर तक पकाने से वाइटामाइन नष्ट हो जाते हैं। इसलिये जहाँ तक हो सके, भोजन प्राकृतिक अवस्था में ही खाया जाना चाहिए। फलों का व्यवहार शरीर-धारण के लिये एकांत आवश्यक है। दूध को छोड़ देना भी बुद्धिमानी नहीं है।

× × ×

२. चींटियों का विचित्र जीवन

बुद्धिमानी में मनुष्यों के बाद छोटी-छोटी चींटियों का ही स्थान है। चींटियाँ मनुष्यों की-सी खेती करती हैं, और लाज पैदा करती हैं, ये बातें बहुत दिनों से मनुष्यों को ज्ञात हैं; किंतु इससे भी आश्चर्यजनक बातों का पता लगा है, जिन्हें सुनकर दंग रह जाना पड़ता है। चींटियाँ लाजों से आटा बनाती और रोटी पकाकर खाती हैं। वे आनंद मनाते समय मनुष्यों की तरह बाल डांस (नाच) भी किया करती हैं, बाजा बजाती हैं, अपने मुर्दों को क़ब्र में गाड़ती हैं इत्यादि और भी ऐसे ही काम करती हैं। जर्मन वैज्ञानिक डॉ० हैंस हिज़ यूयर्स ने संसार की चींटियों के दैनिक जीवन का अध्ययन कर इन बातों को प्रतिपादित किया है। आपकी पुस्तक The Ant People में चींटी-विषयक ऐसी-ऐसी मनोरंजक कहानियाँ भरी पड़ी हैं, जो सिर्फ़ कहानियाँ ही नहीं किंतु ज्ञानवर्द्धन की अच्छी सामग्री हैं।

डॉक्टर साहब का कहना है कि भिड़-जैसे किसी कीड़े से चींटियों की उत्पत्ति हुई है। इस समय मनुष्यों को ५-६ हज़ार तरह की चींटियाँ ज्ञात हैं। उनमें इंजीनियर, बढ़ई, किसान, योद्धा, गृह-रक्षक, ग्वाले आदि जातियाँ पाई जाती हैं। उनके प्रायः सभी कार्य मनुष्य के-जैसे होते हैं। ईश्वर न करें, किंतु यदि किसी कारणवश इस पृथ्वी से मनुष्यों का नाम-निशान मिट जाय, तो यहाँ चींटियों का ही अखंड राज्य स्थापित हो जायगा।

आफ्रिका में कुछ चींटियाँ रहती हैं, जिनकी पीठ पर कूबड़ उठा रहता है। ये पेड़ों पर मिट्टी का घर बनाकर रहती हैं। नदियों में बाढ़ आने से इनका कोई नुक़सान नहीं होता। इसके अलावा, वर्षा चाहे जितनी पड़े, ये घर नष्ट नहीं होते। बलिहारी है बनानेवालों की बुद्धि की। इन मकानों में घर के अलावा बाग़ भी रहते हैं, जिनमें फूल-पत्तियाँ लगाई जाती हैं। हम लोग झूलते हुए बग़ीचे (Hanging garden) को संसार के आठ आश्चर्य-मय पदार्थों में एक मानते हैं; किंतु उसे आधुनिक मनुष्यों में से किसी ने देखा नहीं है। ये चींटियाँ उसे प्रत्यक्ष दिखा

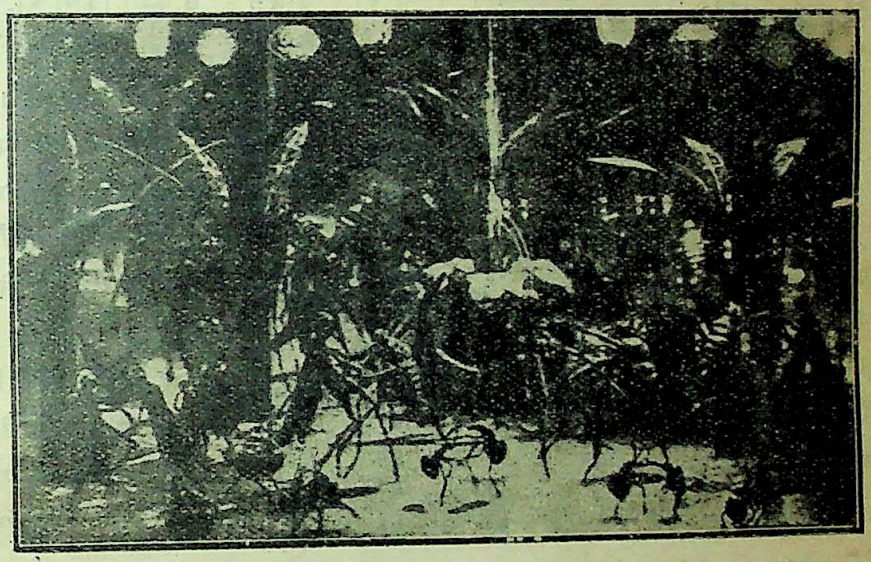

चींटियों का नाच

रही हैं। अनुसंधान द्वारा जाना गया है कि चींटियाँ फूलों के बीजों को बोती हैं। ये सूक्ष्म-काय पौदे स्वयं नहीं पैदा होते। जैसे साधारण फूलों के चारों ओर की मिट्टी गोड़नी पड़ती है, उन्हें सींचना पड़ता है, उसी प्रकार चींटियों को भी पौदों की सावधानी करनी पड़ती है। इनके बग़ीचे के कुछ पौदे संसार में कहीं भी नहीं मिलते। इस पर भी तारीफ़ यह कि हरएक जाति की कूबड़वाली चींटियाँ भिन्न-भिन्न प्रकार के फूल लगाती हैं। इससे यही अनुमान निकाला जा सकता है कि चींटियाँ फूलों के बीजों को बोती हैं; क्योंकि यदि फूलों का पैदा होना आकस्मिक होता, तो सभी बग़ीचों में एक-से ही फूल पैदा होते।

चींटियों की बलवान् जातियाँ कमज़ोर जातियों को ग़ुलाम बनाकर रखती और उनसे अपने घर के धंधों को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कराती हैं। किसी-किसी घोंसले में एक-एक चीटी के पंद्रह-पद्रह ग़ुलाम तक पाए गए हैं। आश्चर्य तो इस बात का है कि लड़ाई के समय में ग़ुलाम कमज़ोर चीटियाँ साहसी बन जाती हैं, और अपने स्वामी के लिये मरने-मारने को तैयार हो जाती हैं। लड़ाई के पहले लड़ाकू चीटियाँ अपने शरीर पर एक प्रकार की 'पालिश' चढ़ा लेती हैं। इस हालत में वे बड़ी भयावनी देख पड़ती हैं।

चीटियों में सबसे विचित्र चीटियाँ हैं मधु जमा करनेवाली। इनका स्वार्थ-त्याग प्रशंसनीय है। पाठकों ने ख़याल किया होगा कि कुछ चीटियाँ चिड़ियों के समान दूसरी चीटियों के मुँह में भोजन डाल दिया करती हैं; किंतु कुछ चीटियाँ ऐसी हैं, जिनके शरीर में मधु के भरे बड़े-बड़े थैले

चीटियाँ मृत चीटी को क़ब्र देने के लिये ले जा रही हैं

होते हैं। इन थैलों से अन्य चीटियाँ आवश्यकतानुसार मधु चूस लिया करती हैं। मधु की थैली ख़ाली हो जाने पर अन्य मधु-संचय करनेवाली चीटियाँ मधु लाकर उस चीटी के थैले में रख जाती हैं। इस प्रकार मधु पिलानेवाली चीटी अपनी सारी ज़िंदगी दूसरी चीटियों को मधु खिलाने में ही बिता देती है।

योरप की किसान-चीटियाँ सिर्फ़ खेती करके फ़सल ही नहीं काटतीं, किंतु नाजों का आटा बनाती हैं, उसे गूँदकर भूरी-भूरी रोटियाँ बनाती हैं और धूप में पकाती हैं। इसके अलावा उक्त पुस्तक में ग्वाले चीटियों का भी वर्णन है, जो दूध देनेवाली चीटियों को पालती हैं, उन्हें चराती और दूध दुहती हैं। दूध देनेवाली चीटियाँ आस्ट्रेलिया के आदिम निवासियों का बड़ा प्रिय खाद्य हैं। डॉ० यूयर्स ख़ानाबदोश चीटियों को देखकर आश्चर्य-चकित हो गए। ये एक प्रकार के गेंद के आकार में जमा होकर रहती हैं। यह गेंद कभी-कभी तरबूज़ में एक घन-गज़ होता है। रानी एकदम भीतर रहती है। भीतर जाने का रास्ता बड़े ढंग से बना होता है। उसमें ज़रा भी पानी प्रवेश नहीं कर सकता। नदियों में बाढ़ आने पर गेंद तैरने लगता है। चीटियाँ एक दूसरे के बदन पर चढ़कर भीतर और बाहर आती-जाती हैं। ये चीटियाँ अपने शरीर को मज़बूत बनाए रखने के लिये कुश्ती लड़ती हैं, और कभी-कभी कृत्रिम युद्ध भी करती हैं। इस युद्ध में वे कभी किसी को चोट नहीं पहुँचातीं और न अपने शक्तिशाली जबड़ों से ही काम लेती हैं, न विषैली गैसों का ही व्यवहार करती हैं।

डॉक्टर साहब का कहना है कि चीटियाँ दीर्घ-जीवी होती हैं, और बुढ़ापे में भी उनकी शक्ति का ह्रास नहीं होता। कोई-कोई रानियाँ साठ-साठ वर्ष तक जीती हैं। एक अमेरिकन खोजी ने कुछ चीटियों को पानी में डालकर उसे बरफ़ बना दिया। आठ दिन के बाद बरफ़ घुलाकर पानी बना देने पर वे चीटियाँ जीती हुई निकलीं। एक दूसरे खोजी ने कुछ चीटियों को पानी में आठ दिन तक रक्खा। वहाँ से निकालने पर वे पुनर्जीवित हो गईं। चीटियों का शरीर इतना हलका होता है कि यदि उस अनुपात से मनुष्य का शरीर हलका होता, तो संसार के ऊँचे-से-ऊँचे पहाड़ से कूदने पर भी उनका पैर न टूटता। कई विषयों में हम लोगों से उनका ज्ञान बढ़ा-चढ़ा हुआ है। चीटियाँ तीव्र बैंगनी रंग का अनुभव कर सकती हैं, जिसे हम देख भी नहीं सकते।

क्या चीटियाँ मनुष्यों के किसी काम की हैं? जर्मनी ने ऐसा क़ानून बनाया है, जिसके द्वारा चीटियों को नष्ट करना जुर्म माना जाता है। वहाँ की चीटियाँ जंगलों को हानिकारक कीड़ों से बचाती हैं। दक्षिणी चीन में संतरों के पेड़ों से लगाकर बाँस बाँध दिए जाते हैं, जिससे चीटियाँ इन बाँसों पर चढ़-चढ़कर संतरों को नुक़सान पहुँचानेवाले कीड़ों को नष्ट कर डालें। इटली में फलों की और अमेरिका में रुई की रक्षा चीटियाँ ही करती हैं।

रमेशप्रसाद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

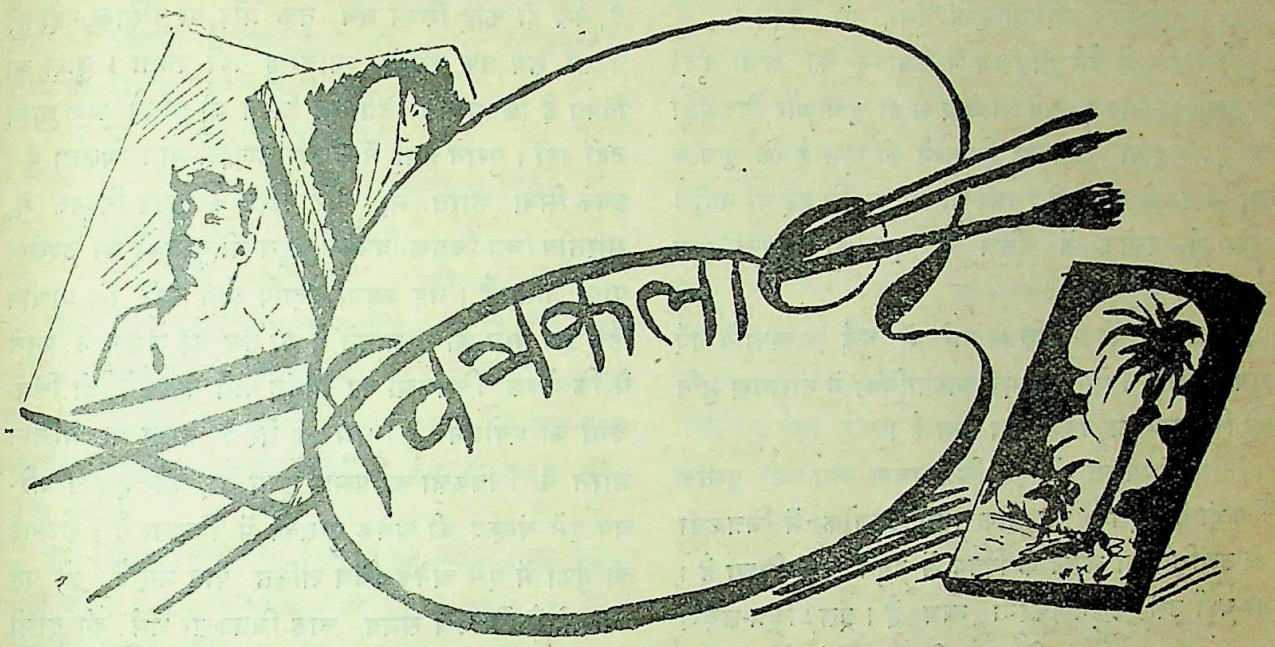

भारतीय चित्र-परिचय

गुप्तवंशी और पालवंशी राजों के समय में भारत की सभ्यता उन्नति के शिखर पर पहुँचकर सब ओर अपना प्रकाश फैला रही थी। इस समय के स्मृति-चिह्न या भग्नावशेष अभी तक देखने में आते हैं—वे दुर्लभ नहीं हैं। उस समय की सुंदर शोभा-श्री से युक्त, ध्यान-निरत पाषाण-मूर्तियों की चर्चा न करके हम इस लेख में केवल, वर्तमान समय में अत्यंत दुर्लभ, भारतीय चारु चित्र की ही चर्चा करेंगे। उस समय की पत्थर की मूर्तियाँ बहुत मिलती हैं; किंतु चित्रों का नमूना कोई नहीं मिलता, यह कहना भी कुछ मिथ्या न होगा। तत्कालीन श्रेष्ठ श्रेणी के चित्रों का पता इस समय नहीं लगता। हाँ, दीवारों में बने हुए अथवा पुस्तकों में अंकित चित्र जो कुछ देख पड़ते हैं, वे ही उस समय की चित्रकला के निदर्शन हैं। चित्र-चित्रण के नमूने अनेक कारणों से नष्ट हो गए हैं। अजंता-गुफा की दीवारों में मिट्टी और फूस के लेप के ऊपर उस समय के जो चित्र अंकित हैं, वे अब नष्टप्राय हो चले हैं। अच्छे चित्रों के दर्शन इस समय केवल प्राचीन साहित्य में ही होते हैं। प्राचीन साहित्य में जगह-जगह चित्रों का विवरण लिखा हुआ है, और उसके अनुसार, उस वर्णन के आधार पर, इस समय भी कुशल चित्रकार अच्छे चित्र बना सकता है। मेघदूत आदि ग्रंथों के आधार पर चित्र बनाकर यह चेष्टा शुरू भी कर दी गई है। पट पर अंकित चित्र चिरस्थायी नहीं होते, शायद इसी कारण प्राचीन चित्रों का अस्तित्व अब नहीं मिलता। केवल पत्थर की प्रतिमा आदि और दीवारों में अंकित चित्र देखकर, तथा प्राचीन साहित्य में वर्णित चारु चित्रों को छोड़कर, अगर चित्र-समालोचना की जाय, तो वह वास्तव में असंपूर्ण ही रहेगी। इस लेख में हम केवल साहित्य और चित्र-शास्त्र के आधार पर ही इस विषय पर दृष्टिपात करेंगे।

पहले यह देखा जाय कि भारत के चित्र-शिल्प का कोई स्वतंत्र चित्र-सूत्र था कि नहीं। मधुकैटभ दानव जब वेदों को हर ले गया, तब ब्रह्माजी विष्णु की शरण में गए। असुर-निषूदन नारायण की अंगभंगी देखकर उस समय लक्ष्मीजी इतनी मुग्ध हो गईं कि उन्हें वह अंगभंगी नृत्य के समान सुंदर जान पड़ी। तीनों लोकों में जिसका अनुकरण किया गया, उस अंगभंगी को ग्रहण करके (सीखकर) ब्रह्मा ने शिव को सिखलाया। नारायण की इस सुलक्षित अंगभंगी के पुनरभिनय को देखने की इच्छा ही नृत्य-कला के चलन का मूल है—यह बात विष्णुधर्मोत्तर ग्रंथ में लिखी है। यथा—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यथा नृत्ये तथा चित्रे त्रैलोक्यानुकृतिः स्मृता ;

... ...

त एव चित्रे विज्ञेया नृत्यं चित्रं परं मतम्।

जैसे नृत्य में वैसे ही चित्र में त्रैलोक्य की सभी सुंदर वस्तुओं को आवद्ध रखने की चेष्टा से ही नृत्य और चित्रकला का उद्भव हुआ। अब यह विचारने की बात है कि नृत्य के आविष्कार के बाद ही चित्रकला की उत्पत्ति हुई या नहीं। ऊपर के श्लोक में चित्र के सूत्र की सूचना प्राप्त होती है।

चित्रकला की उत्पत्ति के बारे में कई आख्यायिकाएँ सुन पड़ती हैं। ऐसी ही एक आख्यायिका में नारायण मुनि को चित्र-सूत्र का जनक कहा गया है।

ताजुर-ग्रंथमाला में एक चित्र-लक्षण नाम की पुस्तक निकली है। इसमें इस लोक तथा देवलोक में चित्रकला की उत्पत्ति तथा चलन के विषय में बहुत कुछ लिखा है। पर यहाँ उसे उद्धृत करना व्यर्थ है। इस चित्र-लक्षण पुस्तक का मसाला अधिकतर चित्र-शास्त्र के पुराने बड़े-बड़े ग्रंथों से संग्रह किया गया है। वे ग्रंथ अब लुप्त हो गए हैं। चित्र-चर्चा के जो कुछ ग्रंथ हमारे पूर्वजों ने लिखे थे, उन मूल-ग्रंथों का अब पता नहीं है, यह कम दुःख की बात नहीं ; पर किया क्या जाय, लाचारी है ! इस समय जो कुछ इस विषय की पुरानी सामग्री मिलती है, वह बहुत थोड़ी है। ऐसे कुछ श्लोक या श्लोकांश वास्तुशास्त्र की पुस्तकों या पुराणों में इधर-उधर बिखरे पड़े हैं। वे लुप्त हुए इस विषय के पुराने ग्रंथों से ही उद्धृत किए गए थे। भारतीय चित्र-शास्त्र का परिचय इस समय इसी तरह, इसी सूत्र से प्राप्त होता है।

स्मिथ साहब की राय में भारतीय चित्रकला धर्म की क्रीत दासी थी। केवल चित्रकला के आनंद का उपभोग ही चित्रकला का उद्देश्य है, यह बात प्राचीन हिंदू नहीं जानते थे *। हमारी राय में स्मिथ साहब का यह कहना ठीक नहीं। चित्र-सूत्र के अनुसार कहना पड़ता है कि भारतीय चित्रकला का एक स्वतंत्र मौलिक सूत्र (Theory) था। और, उसके व्याकरण (या नियम) की आलोचना तो पहले भी हो चुकी है, और अब भी होती है। परिपक्व भाषा का ही जैसे सूत्र-समेत व्याकरण होता है, वैसे ही कोई शिल्प जब तक प्रौढ़ या परिपक्व नहीं हो उठता, तब तक उसका व्याकरण नहीं बनता। दुःख का विषय है कि प्राचीन चित्र-सूत्र विषय की पुस्तकें अब प्राप्य नहीं रहीं। पुराने ग्रंथों में उनका उल्लेख-मात्र मिलता है। इनके सिवा भारत में, और भारत के बाहर तिब्बत में, भारतीय चित्र-चित्रण-विषयक बहुत-सी पुस्तकों का उल्लेख पाया जाता है। यह कहना कदापि सत्य नहीं कि प्राचीन हिंदू इस बात को न जानते थे या इस पर अमल न करते थे कि केवल चित्रकला का आनंद पाने के लिये ही चित्र-चर्चा का प्रयोजन है। धर्म के घेरे के बाहर भी प्राचीन भारत में चित्रकला का पसार हुआ था, और इसका परिचय हमें संस्कृत की अनेक पुस्तकों में मिलता है। रामगढ़ की गुफा में ऐसे अनेक चित्र अंकित पाए गए हैं, जो यह बतलाते हैं कि उस समय चारु चित्रकला धर्म की दासी नहीं थी। वहाँ (उस पर्वत की गुफा में) देव-देवियों के नहीं, नर-नारियों के प्रेम-संबंधी चित्र. नाटक के पात्रों के रूप में, खोदे गए हैं। अब हम यहाँ प्राचीन साहित्य से चित्र-चर्चा के बहुल प्रचार के प्रमाण देते हैं। इस प्रसंग में एक प्रमाण यह भी है कि स्वर्ग की एक अप्सरा का नाम ही चित्रलेखा था। रत्नावली, विद्धशालभंजिका, रघुवंश, उत्तररामचरित, अभिज्ञानशाकुंतल आदि नाटक-नाटिका-काव्य आदि में चित्र-संबंधी बहुत-से तथ्यों का उल्लेख है। रत्नावली नाटिका से हमें मालूम होता है कि उस समय एक साधारण दासी भी चित्र अंकित कर सकती थी। रत्नावली की सखी सुसंगता, सागरिका और कांचनमाला के वार्तालाप का कुछ अंश प्रमाण-स्वरूप यहाँ उद्धृत किया जाता है—

"चित्रसालिया दुयारे उपविट्ठ वसन्तउ"

(चित्रशाला के द्वार पर बैठे हुए वसंतक)

"को एसो तुये आलिहिदो"

(तुमने यह किसे चित्र में अंकित किया है ?)

"इय सा चित्रसालिया ता इधज्जेव चिट्ठ"

(यही वह चित्रशाला है ; यहीं बैठो)

"जह तुए मदनो आलिहिदो तह मुए रति आलिहिदा"

(जैसे तुमने कामदेव को अंकित किया है, वैसे ही मैंने रति को अंकित किया है)

* "Indian art on the whole is the slave of religions. ... ... Art for its own sake did not and does not interest the Hindu." (History of Fine Art in India and Ceylon—V. Smith.)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विद्धशालभंजिका नाटिका में हम चित्रशाला का विशेष वर्णन पाते हैं। उसमें ख़ूब पके हुए प्रवीण हाथ से अंकित चित्र का उल्लेख मिलता है। यथा—राजा नायिका के चित्र को देखकर वयस्य से कहते हैं—

कन्येति सूचयति वेशविशेष एव
यन्नीलचोलकवती लिखिताऽत्र चित्रे ;
पाणिग्रहात्प्रभृति तु प्रमदाजनस्य
नीवीविशेषसुभगः परिधानमार्गः।

अर्थात् यह जो नीली सारी पहने हुए स्त्री चित्र में लिखी गई है, इसका विशेष प्रकार का वेष इसे कुमारी बतला रहा है। विवाह के उपरांत स्त्रियों के कमर के वस्त्र-बंधन की विशेषता उनके कपड़े पहनने के ढंग को बहुत सुंदर बना देती है।

इस चित्र का चित्रकार ऐसा निपुण है कि उसने केवल वस्त्र बाँधने के ढंग से नायिका की कुमारी-अवस्था प्रदर्शित कर दी है। और देखिए—

क्रमपरिणतरेखामांसलैरङ्गभङ्गै-
र्लघुरपि लिखितेयं दृश्यते पूर्णमूर्तिः ;
अयमपि सुकुमारः सात्त्विकानां निवेश-
श्चतुरमसृणमुग्धं भावमाविष्करोति।

अर्थात् मांसल अंग-रचना दिखाकर क्रमशः पुष्ट रेखाओं से छोटी करके अंकित होने पर भी इसका पूर्ण आकार व्यक्त होता है। और, इसमें सात्विक भावों का समावेश निपुण, स्निग्ध और मनोहर भाव प्रकट कर रहा है।

नायिका का चित्र देखकर राजा फिर कहते हैं—

सुतनुरियमितस्ततश्च चित्रे
गुणगुरुरत्न च शालिभञ्जिकेयम् ;
स्थितमिह सुतनोर्वपुश्चतुर्धा
स्मरशरतापरुजं विभज्य सोढुम्।

रानी के भय से राजा अपनी प्रेयसी नायिका को घर में नहीं ला सके, इसी से उन्होंने चित्रशाला में उसका चित्र रख छोड़ा है। उसे इस तरह रक्खा है कि वहाँ रक्खे हुए चार बड़े-बड़े दर्पणों में चित्र के चार प्रतिबिंब देख पड़ते हैं। राजा बैठे-बैठे जिधर दृष्टिपात करते हैं उधर ही उन्हें नायिका देख पड़ती है। इस पर वह कहते हैं—आहा, मदन-ताप को भाग करके वहन करने के लिये ही मानो नायिका ने चार रूप धारण कर लिए हैं! (कारण, एक मूर्ति से वह सुकुमारी इस ताप को सह नहीं सकती)

यह तो हुआ साधारण भाव से प्राचीन भारत में चित्र-चर्चा के विषय का उल्लेख। लगभग चार साल हुए, योरपियन विदुषी महिला स्टेला कामरिश ने कलकत्ता-विश्वविद्यालय में भारतीय चित्रकला पर एक वक्तृता दी थी। यह महिला भारतीय चित्रों के संबंध में विशेषज्ञ मानी जाती हैं। इन्होंने अपने व्याख्यान में कहा था—भारत में प्राकृतिक सौंदर्य का चित्र अंकित करने का चलन नहीं था। हम उक्त महिला के इस कथन को ठीक नहीं समझते। उसके खंडन के लिये हम संस्कृत-साहित्य से कुछ स्थल उद्धृत करेंगे। आइए, अपने प्राचीन साहित्य में देखें, प्राकृतिक दृश्य अंकित करने की चाल उस समय थी या नहीं। रघुवंश के १४वें सर्ग में यह श्लोक है—

तयोर्यथाप्रार्थितमिन्द्रियार्था-
नासेदुषोः सद्मसु चित्रवत्सु ;
प्राप्तानि दुःखान्यपि दण्डकेषु
संचिन्त्यमानानि सुखान्यभूवन्।

अर्थात् दंडकारण्य के विविध-चित्र-भूषित महल में रहकर यथेष्ट इंद्रिय-विषयों का भोग करते-करते दंडकवन में प्राप्त विगत दुःख की बातें राम और सीता के मन में उदय हो आने से उन्हें सुख हुआ।

अयोध्या के राजभवन में श्रीरामचंद्र के चित्र-संपन्न भवन में दंडकारण्य के अनेक दृश्य देख पड़ते थे, यह बात इस श्लोक से प्रकट होती है। अब आइए, उत्तररामचरित के जिस स्थल पर चित्रदर्शन का वर्णन है, उसकी आलोचना करें—

सीता—वच्छ एसो कुसुमितकअंबरतरुतंडविदवरहिणो किनामहेउ गिरीजत्थ अनुभाव सोग्गमेत्तपरिसेसधूसरासरीमुहूत्तं मुच्छेन्तो तुए परुएणेण अवलंविदो तरुअले अज्जउत्तो आलिहिदो।

अर्थात—वत्स, यह कौन पर्वत है, जिसमें कदंब के वृक्ष में फूल खिले हुए हैं, मयूर नाचते हुए विचर रहे हैं। वह देखो, उस वृक्ष के नीचे आर्यपुत्र चित्रित हैं। वह घड़ी-घड़ी-भर पर मूर्च्छित हो जाते हैं, और तुम रोते-रोते उन्हें पकड़कर वृक्ष के तले खड़े हो जाते हो। आह! उनका मुख मलिन हो गया है, केवल आगे का तेज-मात्र अवशिष्ट है।

राम—एतानि तानि गिरिनिर्झरिणीतटेषु
वैखानसा श्रिततरूणि तपोवनानि ;

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ये आतिथेयपरमा शमिनो भजन्ते
नीवारमुष्टिपचना गृहिणो गृहाणि ।

अर्थात् यही वह तपोवन है, जहाँ पर्वत-नदी के किनारे वृक्षों की छाया में वानप्रस्थ मुनि लोग रहते हैं। ये गृहस्थ सज्जन संसार से विरक्त होकर सब त्याग कर यहाँ रहते और परम धर्म आतिथ्य का पालन करते हुए मुट्ठी-भर नीवार धान्य से अपना पेट भरते हैं।

लक्ष्मण—अयमविरलानोकहानेवहनिरन्तरस्निग्धनीलपरिसरारण्यपरिणद्धगोदावरीमुखरकन्दरः सततमभिष्यन्दमानमेघमेदुरितनीलिमा जनस्थानमध्यगो गिरिः प्रस्रवणः ।

अर्थात् यह जनस्थान के बीच में स्थित प्रस्रवण पर्वत दिखलाया गया है, जिसमें घने वृक्षों के झुंड से निरंतर स्निग्ध, नीलवर्ण जो वनभूमि है, उसके बीच में छिपी हुई गोदावरी के जलकल्लोल से कंदराएँ प्रतिध्वनित हो रही हैं, और निरंतर बरसनेवाले मेघों की शीतल छाया बनी रहती है।

राम—स्मरसि सुतनु तस्मिन्पर्वते लक्ष्मणेन
प्रतिविहितसपर्यास्वस्थयोस्तान्यहानि ;
स्मरसि सुरसनीरां तत्र गोदावरीं वा
स्मरसि च तदुपान्तेष्वावयोर्वर्तनानि ।

अर्थात् हे जानकी, इस पर्वत पर लक्ष्मण की सेवा के कारण सुख से बीतनेवाले अपने उन दिनों को स्मरण करती हो ? स्वादिष्ट जलवाली गोदावरी नदी को और उसके किनारे अपने और मेरे विचरने को भी याद करती हो ?

लक्ष्मण—अयमसौ जनस्थानपश्चिमः चित्रकुञ्जवान् नाम दनुकबन्धाधिष्ठितदण्डकारण्यभागं तदिदमृष्यमूकपर्वते मतङ्गस्याश्रमपदमियञ्च श्रमणा नाम सिद्धशबरीतदेतत्पम्पाभिधानं सरः ।

अर्थात् वह देखिए, जनस्थान के पश्चिम में नानाविध कुंजों से शोभित दनुकबंध का निवासस्थान दंडकारण्य का भूमि-भाग है। उसके बाद यह ऋष्यमूक पर्वत पर मतंग ऋषि का आश्रम है, और यह श्रमणा नाम की किरातजातीया सिद्ध स्त्री है। यह पंपा नाम का सरोवर है।

राम—देवि, रमणीयमेतत्सरः—

एतस्मिन्मदकलमाल्लिकाच्च पक्ष-
व्याधूतस्फुरदुरुदण्डपुण्डरीकाः ;
वाष्पान्तः परिपतनोद्गमान्तरालें
संदृष्टाः कुवलयिनो भुवो विभागाः ।

अर्थात् देवि, यह सरोवर रमणीय है। यहाँ माल्लिकाच्च नाम के शुक्लवर्ण हंसों से उनके पंखों की हवा लगने पर पद्म-वृक्षों की मोटी डंडियाँ हिलने लगती हैं, और जितने समय में आँखों में आँसू आते और गिरते हैं, उसी बीच में नीलकमल-समाकुल पृथ्वीखंड यहाँ दृष्टिगोचर होते हैं।

लक्ष्मण—सोऽयं शैलः ककुभसुरभिर्माल्यवान्नाम यस्मिन्
नीलस्निग्धः श्रयति शिखरं नूतनस्तोयवाहः ;

राम—वत्सैतस्माद्विरमविरमातःपरं न क्षमोऽस्मि
प्रत्यावृत्तः पुनरिव स मे जानकीविप्रयोगः ।

अर्थात् लक्ष्मण कहते हैं, यह वही अर्जुन-पुष्पों की महक से भरा हुआ माल्यवान् नाम का पहाड़ है, जिसके शिखर पर नील-स्निग्ध नवीन मेघ घिरे रहते हैं। इतना सुनकर रामचंद्र कह उठते हैं—वत्स, अब इस प्रसंग को बंद करो, बंद करो ; अब आगे मुझसे देखा न जायगा। मुझे जान पड़ता है, वही पुराना जानकी-वियोग का दुःख फिर लौटा आ रहा है।

ऊपर उद्धृत अंश को पढ़कर पाठकों ने समझ लिया होगा कि भारत में प्राकृतिक दृश्य अंकित करने की प्रथा अवश्य थी और उसकी अच्छी उन्नति भी हुई थी। इसके सिवा प्राचीन ग्रंथों में प्राकृतिक दृश्यावली अंकित करने के विशेष नियम और निर्देश भी मिलते हैं। विष्णुधर्मोत्तर ग्रंथ में आकाश, जल, वनभूमि, पर्वत, रात्रि, संध्या, प्रभात, ग्रीष्म, वर्षा, शरद्, वसंत आदि के प्राकृतिक दृश्य अंकित करने के नियम वर्णित हैं—

आकाशं दर्शयेद्विद्वान् विवर्णं खगमाकुलम् ;
तथैव दर्शयेद्राजंस्तारकामंडितं दिवम् ।
भूमिं च जाङ्गलानूपमिश्रां स्वैस्वैस्तथा गुणैः ;
पर्वतं तु शिलाजालैः शिखरैर्धातुभिर्द्रुमैः ;
निर्झरैर्भुजगैश्चैव दर्शयेन्नृपसत्तम ।
वनं नानाविधैर्वृक्षैः विहगैः श्वापदैस्तथा ;
तोयं च दर्शयेद्विद्वाननन्तैर्मत्स्यकच्छपैः ।
नगरं दर्शयेद्विद्वान् राजमार्गैश्च शोभनैः ;
सर्वेषामथ दुर्गाणां कर्तव्यं दर्शनं तथा ।
स्वभूमिविनिवेशेन वप्राट्टालकपर्वतैः ;
परयुक्तास्तु कर्तव्यास्तथैवापरयभूमयः ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आधानभूमिः कर्तव्या पानयुक्ता नराकुला ;
उत्तरीयविहीनांश्च द्यूतसत्कान्प्रदर्शयेत् ।
सचन्द्रग्रहनक्षत्रां तथादर्शितलौकिकाम् ;
आसन्नतस्करां रात्रिं दर्शयेत्सुप्तमानवाम् ।
प्राग्रात्रे दर्शयेत्तत्र तथा चैवाभिसारिकाम् ;
सारुणो म्लानदीपश्च प्रत्यूषो रुतकुक्कुटः ।
कर्मव्यग्रजनप्रायः कर्तव्यो वानरस्तथा ;
द्विजैर्नियतयायुक्तां रक्तां सन्ध्यां प्रदर्शयेत् ।
वृक्षैर्वसन्तजैः फुल्लैः कोकिलाभ्युपोत्कटैः ;
इत्यादि

लेख बहुत बढ़ जाने के भय से हम सब श्लोक या इन श्लोकों का अर्थ नहीं देते । यह सरल संस्कृत है, थोड़ी संस्कृत जाननेवाले भी अर्थ समझ लेंगे । अस्तु, पूर्वोल्लिखित श्लोकों को पढ़कर किसी को यह भ्रम नहीं रह सकता कि प्राचीन भारत में प्राकृतिक दृश्य अंकित करने की चाल न थी ।

स्मिथ साहब ने यह भी कहा है कि हिंदू चित्रकार लोग केवल पेड़-पत्ती और जानवरों की प्रतिकृति अंकित करने ही में उस्ताद थे । किंतु वास्तव में यह बात नहीं है । असल बात यह है कि भारतीय चारु शिल्प के दो भाग थे । एक भाग या श्रेणी है शास्त्रीय नियम के अनुगत या भावात्मक आकार की प्रतिमूर्ति और दूसरा भाग है वस्तुतंत्र-दलभुक्त आलेख्य या प्रतिमा * । जो वस्तुएँ साधारणतः दृष्टिगोचर नहीं होतीं, उन्हें शास्त्रीय नियम या निर्देश (Convention) के अनुसार अंकित किया जाता था । उनके लिये शास्त्र में ख़ास-ख़ास आकार-प्रकार निर्दिष्ट थे । सर्व साधारण लोगों के लिये सिंह, व्याघ्र आदि हिंस्र जंतुओं को देख पाना सहज अथवा सुलभ नहीं था, इसी से चारु शिल्प-शास्त्र में उनके आकार-प्रकार को अंकित करने के नियम लिखे थे । देवतों के रूप को मनुष्य इन चर्म-चक्षुओं से नहीं देख पाता, इसी कारण देव-मूर्ति का चित्र अंकित करने में शास्त्र का अनुशासन मानकर चलने की प्रथा थी । यह तो हुई नियमानुगत भावात्मक जातीय चित्र की बात । अब वस्तु-तंत्र चित्र की बात लीजिए । हाथी, घोड़ा आदि वस्तुएँ जो नित्यप्रति हरएक को देख पड़ती हैं, वे इसी श्रेणी की हैं । इन सबको अंकित करने के संबंध में शास्त्र लिखता है—"लोकान् दृष्ट्वा" अर्थात् चित्रकार देखकर स्वाभाविक रूप में ही उन्हें चित्रित करे । बहुत संभव है, इसी दूसरी श्रेणी की बहुत-सी प्रतिमाओं और आलेख्यों को देखकर शायद स्मिथ साहब की यह धारणा हुई हो कि हिंदू लोग केवल जानवरों, पेड़ों वग़ैरह के चित्र अच्छे अंकित करते थे । वस्तु-तंत्र-विभाग के अस्तित्व से यह धारणा होती है कि भारतीय चित्र-कला ने केवल भाव के गुरु भार से खिन्न या पीड़ित होना नहीं चाहा था ; उच्च भाव के वहन और धारणा के उपयोगी शारीरिक गठन के प्रति भारतीय चित्र-कला की वैसी अवहेलना नहीं जान पड़ती । भारतीय चित्र-कला के वस्तु-तंत्र विभाग में स्वभाव का अनुसरण करने की ही रीति थी । किंतु इसने ठीक क्रीतदास की तरह स्वभाव का अनुसरण क्यों नहीं किया, यह आगे चलकर हम बतलावेंगे । भारतीय चित्र-कला में वस्तु-तंत्र चित्र यदि किसी जगह सृष्टि से अनोखा देख पड़े, तो समझना चाहिए, उसका कुछ विशेष कारण है । ऐसी जगह पर शिल्पी की असमर्थता या असफलता भी एक कारण हो सकती है । कारण, सभी देशों में, सभी युगों में सफल प्रयासवाले शिल्पी बहुत कम हुए हैं । अतएव हमें चाहिए कि हम चित्र-समालोचना की विफलता को भाव के आवरण से ढकने का प्रयत्न न करें । हरएक काम के साथ विफलता लगी हुई है; इससे कार्य की धारा प्रतिहत नहीं होती, न आदर्श ही छोटा होता है ।

अब और आगे चलिए । वस्तु-तंत्र के बाहर भी, यहाँ तक कि भाव (Conventional Art) के राज्य में भी अंकित मूर्ति को एकदम सृष्टि-नियम-विरुद्ध होने देने का नियम नहीं है । अति सूक्ष्म या अतिस्थूल, विकृत देव-शरीर के गठन के विरुद्ध शास्त्र बारंबार शिल्पी को सावधान करता है । भारतीय चित्र को अंकित करने के ढंग और लक्ष्य में कुछ विशेषता थी, केवल इतना ही कह देना यहाँ पर यथेष्ट होगा ।

श्रीप्रफुल्लकुमार सरकार

---

* प्रतिमा अर्थात् प्रतिमूर्ति शब्द साधारणतः काठ पत्थर वग़ैरह को काटकर बनाई गई मूर्ति के अर्थ में ही व्यवहृत हुआ है । और, आलेख्य शब्द पट आदि में लिखे गए चित्र (तसवीर) के अर्थ में प्रयुक्त हुआ है ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

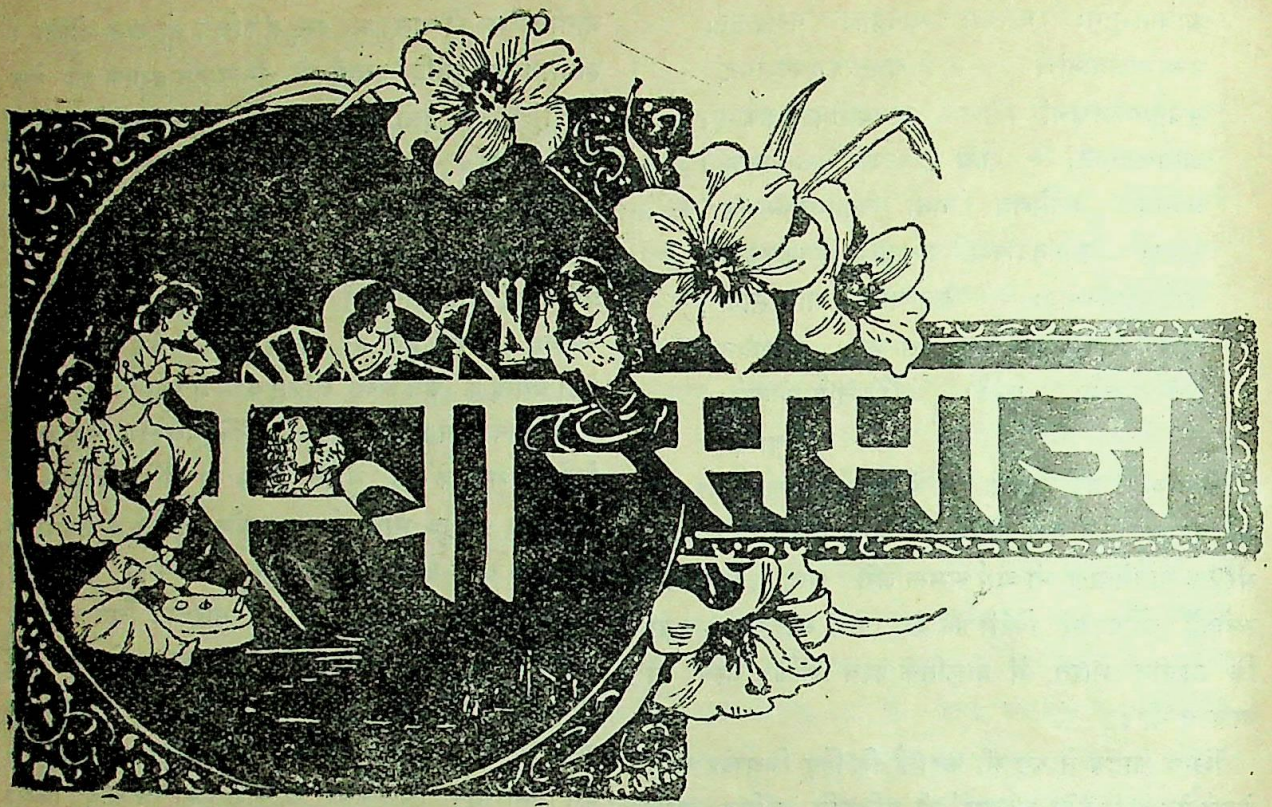

१. सौभाग्यवती राजकिशोरी मेहरोत्रा

भाग्यवती राजकिशोरी मेहरोत्रा का जन्म संवत् १९६३ विक्रमी में, इटावे के एक प्रसिद्ध खत्री-कुल में, हुआ था। उनके पूर्वज उस नगर के क़दीमी रईस हैं, और अब तक यह घराना ईश्वर की कृपा से हर प्रकार से संपन्न है। विशेष उल्लेखनीय उनके चाचा बा० श्यामलाल टंडन सीनियर गवर्नमेंट प्लीडर तथा भाई लेफ़्टिनेंट कैलासनारायण टंडन आई० एम्० एस्० (नेत्र-चिकित्सा के विशेषज्ञ) हैं। प्रसिद्ध देश-भक्त व हिंदी-सेवी बा० पुरुषोत्तमदास टंडन उनके एक बहनोई हैं। उनके जीवन के शुरू के १३ वर्ष फ़तेहगढ़ में व्यतीत हुए। जब विवाह के पश्चात् वह अपनी सुसराल गईं, तब उनकी अवस्था लगभग १४ वर्ष की थी। उसी अवसर पर उनके पति बी० ए० की परीक्षा में उत्तीर्ण हुए थे। १४ वर्ष की अवस्था से २१ वर्ष की आयु तक, अर्थात् मरणपर्यंत, उन्होंने जिस स्वार्थत्याग, आत्मबलिदान, सात्विकता, पतिभक्ति एवं देश-सेवा-भाव का परिचय दिया, वह सराहनीय ही नहीं, वरन् अनुकरणीय और आदरणीय भी है। यहाँ यह लिखना आवश्यक प्रतीत होता है कि उनके विवाह में अनेक अड़चनें सामने आईं, और वह अपनी तपश्चर्या से उन सबको दूर करके इच्छानुकूल पति पाने में सफल हुईं। बात यह थी कि जिन श्रीपरशुराम मेहरोत्रा के साथ वह अपना विवाह करना चाहती थीं, उनके गुरुजन इस संबंध को पसंद न करके, मेहरोत्राजी का विवाह लखनऊ के चाँदी-सोने के एक प्रतिष्ठित

सौ० राजकिशोरी मेहरोत्रा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

व्यापारी की कन्या से करना चाहते थे। कारण स्पष्ट था। लड़का उच्चकुल का तथा पढ़ा-लिखा, वर-पक्षवाले धनी और प्रभावशाली थे। लेकिन स्वयं परशुरामजी (जो उस समय म्योर कॉलेज, इलाहाबाद में बी० ए० श्रेणी में पढ़ रहे थे) इसी संबंध के पक्ष में थे; क्योंकि राजकिशोरी के गुणों पर वह मुग्ध थे। फलतः वर-कन्या, दोनों के घर तूफ़ान उठा, जैसा कि स्वाभाविक था। कई महीने के उद्योग के पश्चात् कन्या राजकिशोरी की पार्वती-पूजा सफल हुई, और उनके फुफेरे भाई श्री० श्यामबिहारी मेहरोत्रा की सहायता से श्री० परशुराम मेहरोत्रा ने दृढ़ता और साहस से काम लेकर गोस्वामीजी के इस वाक्य को यथार्थ सिद्ध किया—"जेहिकर जिहि पर सत्य सनेहू; सो तेहि मिलै, न कछु संदेहू।" यह वैचित्र्यपूर्ण विवाह होने के पश्चात् सब झगड़े शांत हो गए। दिसंबर, सन् १६२० ई० में जब इनके पति ने वकालत और एम्० ए० छः महीने पढ़कर असहयोग किया, तब सौ० किशोरी अपने पति के साथ नागपुर-कांग्रेस गईं। तत्पश्चात् इन्होंने सवा महीने तक महात्मा गांधी के साथ भ्रमण किया, तथा उनके आश्रम में रहीं। सरल तो वह जन्म से ही थीं। सात्त्विकता और आत्मबलिदान का पाठ उन्होंने जनवरी, सन् १६२१ में आश्रम में सीखा। यह सोने में सुगंध का काम कर गया। खत्री-कुल की सुकुमार वधू राजकिशोरी, जिनके वे दिन दांपत्य-जीवन के सुख भोगने और आनंद करने के थे, पति के साथ देश-सेवा में लग गईं। उन्होंने आभूषण का मोह त्याग दिया (सत्याग्रह आश्रम में कोई स्त्री आभूषण नहीं पहनती) मलमल, मख़मल और रेशम छोड़कर खद्दर स्वयं पहनने तथा नन्हे-नन्हे बच्चों को पहनाने लगीं। स्त्रियों के स्वभाव से परिचय रखनेवाले व्यक्ति इस आत्म-बलिदान का मूल्य समझ सकेंगे; क्योंकि Aristocratic family (अभिजात-कुल) में पालित तथा विवाहित बाला को नए-नए फ़ैशनों से रहनेवाली स्त्रियों के वायु-मंडल में, इस प्रकार का सात्त्विक जीवन बनाए रखने के लिये, कितने संयम और आत्म-नियंत्रण की आवश्यकता है। यह बात वे ही समझ सकते हैं। इतना ही नहीं, 'स्त्री-दर्पण' मासिक पत्र को चलाने तथा उसके द्वारा स्त्री-समाज की सेवा करने की धुन ने त्यागप्रतिमा किशोरी को तो और भी ग़रीब बना दिया था। उस पत्र को समय पर प्रकाशित करने का उन्हें बड़ा ख़याल रहता था। कभी-कभी कन्याओं के लाभार्थ मनोहर एवं उपदेशप्रद कविताएँ भी लिखकर अपने प्रिय पत्र स्त्री-दर्पण में दे दिया करती थीं। इन कविताओं की भाषा बहुत सरल, लेकिन प्रभावशालिनी होती थी। तुलसी-कृत रामायण के कुछ खंड तो उन्हें कंठाग्र थे। सत्याग्रह-आश्रम, साबरमती में, जहाँ कि महात्मा गांधी स्वयं १६२६ में आश्रम-वासियों को हिंदी और संस्कृत पढ़ाते थे, हिंदी-कक्षा में वह प्रथम श्रेणी में गिनी जाती थीं। मिस स्लेड (मीरा बहन) श्री० अनुसूया बहन, तथा श्रीमती जानकी बाई बजाज़ (धर्मपत्नी सेठ जमनालाल बजाज़) से तथा प्रयाग की श्री० कमला नेहरू (जिनके घर में अपने पति के साथ यह कुछ मास रही थीं) से इनकी ख़ासी मित्रता

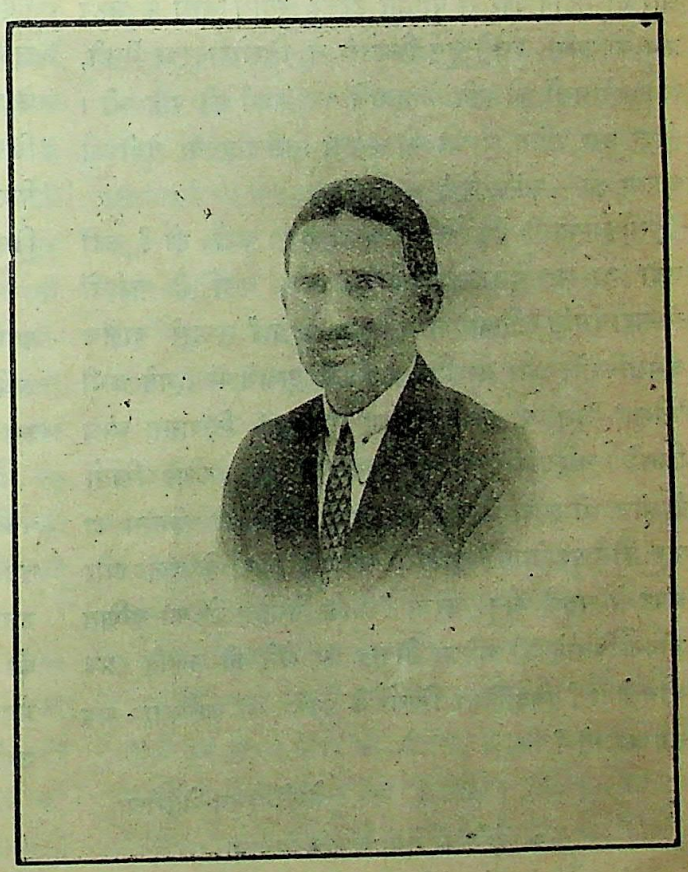

बा० श्यामविहारी मेहरोत्रा
(इन्हीं की सहायता से सौ० राजकिशोरी को इच्छित वर प्राप्त हुआ)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

थी। सभी इनके स्वभाव की निर्मलता की प्रशंसा करती थीं। उदारता और शांतिप्रियता तो जन्म से ही इनमें थी। क्षमा और अनुराग की वृद्धि आश्रम में दुबारा जाने पर हो गई। गत वर्ष आश्रम में ३०-४० लोगों को (मलेरिया की फ़सल में) ज्वर आया, लेकिन इनकी व्यवस्था इतनी अच्छी थी कि एक मिनट को भी मलेरिया आक्रमण न कर पाया। महात्माजी इस बात पर इनसे प्रसन्न हुए थे। वह अखिल भारतीय चरख़ा-संघ की 'अ' श्रेणी की सदस्या भी थीं। उन्हें शौक़ केवल वीणा बजाने तथा हारमोनियम पर अभ्यास करने का था।

त्रियाचरित्र, द्वेष या अकारण क्रोध, जो कि पुरानी चाल की स्त्रियों में बहुधा पाया जाता है, उन्हें छू तक न गया था। अतिशयोक्ति करने की अपेक्षा वह चुप रहना अधिक पसंद करती थीं। दूसरों के छिद्र ढूँढ़ने की आदत से उन्हें आंतरिक घृणा थी। पति के अनुकूल अपने को बनाए रखने की चेष्टा में उन्होंने अपना जीवन उत्सर्ग कर दिया, और दो महीने ज्वर से पीड़ित होकर स्वार्थ-त्याग के अटूट क्रम को जारी रखते हुए किशोरी ने किशोरावस्था में ही, बिलखते बच्चों को पति के हवाले कर, स्वर्ग की राह ली। ईश्वर उस पवित्र आत्मा को—उस निर्मल-हृदया देवी की आत्मा को—शांति दे!

सौभाग्यवती किशोरी! आज तुम कहाँ हो? कहाँ गया तुम्हारा देशाटन का प्रेम, और कहाँ है ग़रीबों से सहानुभूति दिखानेवाला वह हृदय? तुम्हारे बालक कमलकिशोर और काशीनाथ, जिन्हें पालने में तुमने कभी 'हौआ' 'जूजू' या 'सिपाही' का भय नहीं दिखाया, आज किसके चरित्र-बल के सहारे पनपेंगे? कर्कशा स्त्रियों के बीच भी काँटों में फल की तरह रहने की क्षमता का पाठ कौन पढ़ावेगा? तुम्हारे पति को दूसरों के छल और कपट से सतर्क कौन करेगा? बाल-विधवाओं को घृणित जीवन बिताने की अपेक्षा विवाह कर लेने की सलाह अब कौन देगा? विवाहिता स्त्रियों के पढ़ने की व्यवस्था अब कब करोगी?

वेणीमाधव मेहरोत्रा

२. बालिका तथा बालक-विद्यार्थी

कई वर्षों से मैंने कॉलेज, स्कूल तथा पाठशालाओं के परीक्षाओं का फल देखा और बहुधा परीक्षा-फल की सूची में प्रथम नाम अमुक कुमारी अथवा देवी का पाया है। जहाँ स्त्री-शिक्षा का नाम न था, वहाँ परीक्षाओं में उनका नाम देख बहुत ही आनंद होता है। यही देखने के लिये कि इस वर्ष परीक्षा में कोई लड़की प्रथम हुई या नहीं, परीक्षा-फल देखने की चाट-सी लग गई है। १९२५ ई० में चार-पाँच लड़कियों के साथ काशी-विश्वविद्यालय की प्रवेशिका (Admission) परीक्षा में बैठने का सौभाग्य मुझे प्राप्त हुआ। परीक्षा-फल की सूची हाथ में आते ही देखा, एक छोटी-सी लड़की—हमारी ही गुरु-बहन—प्रथम स्थान ग्रहण किए है, और मेरे लिये दूसरा स्थान है। शेष लड़कियों की यह कृपा समझिए कि उन्होंने दूसरा स्थान भी नहीं छीन लिया।

अनेकों बार इस बात को देखकर मेरे हृदय में एक धारणा-सी जम गई कि लड़कियाँ लड़कों से तीक्ष्ण-बुद्धि होती हैं यदि यह बात सत्य न भी मानी जाय, तो यह तो मानना ही होगा कि जिन लड़कियों की जाति कई शताब्दियों से अविद्यांधकार में थी, वे लड़कों से कम बुद्धि नहीं रखतीं। मेरा अनुभव है कि एक चौदह वर्ष की लड़की, जिसको काले अक्षर भैंस समान थे, एक महीने के अंदर ही लिखना-पढ़ना सीख, सुंदर अक्षरों में पत्र लिखने तथा रामायण कुछ-कुछ समझने लगी। मेरा विश्वास है कि कोई बालक शायद ही यह काम कर दिखावे।

मेरे मन में विचार उठा, क्या कारण है, जो लड़कियाँ पढ़ाई में लड़कों से अधिक सफल होती हैं। सफलता का अर्थ यहाँ आदर्श शिक्षा नहीं है, किंतु इसका प्रयोग साधारण अर्थ ही में किया गया है।

मानव-शरीर-शास्त्र-विशारद (Physiologists) बतलाते हैं कि स्त्रियों के मस्तिष्क का आकार और आयतन पुरुषों के मस्तिष्क से अनुपात से बड़ा होता है। किंतु उनके तीक्ष्ण-बुद्धि होने का मुख्य कारण अपनी शक्तियों को उचित रूप से काम में लाना है। इसके सामने ईश्वर-प्रदत्त शक्ति गौण पड़ जाती है; क्योंकि शक्ति को उचित उद्योग की आवश्यकता अनुपेक्षणीय होती है।

स्त्रियाँ पुरुषों से अधिक परिश्रमशील होती हैं। उनमें आलस्य से घृणा तथा परिश्रम से प्रेम सहज है। देहात की स्त्रियाँ अपने हिस्से से अधिक काम करती हैं। पढ़ने में भी लड़कियों का प्रयत्नशील परिश्रम देख लड़कों को दाँतों-तले उँगली दबाकर लज्जित होना पड़ता है। परिश्रम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के सहारे ही आजकल अनेक स्त्रियाँ अनेक क्षेत्रों में आश्चर्य-जनक कार्य दिखला रही हैं।

लड़कियों अथवा स्त्रियों के परिश्रम तथा सफलता की ओर अग्रसर होने का कारण उनकी कार्य में आसक्ति तथा एकाग्रता है। वे जिस काम को हाथ में लेती हैं, उसे पूर्ण रीति से पूरा करती हैं। यदि उनका हृदय हद दर्जे तक कोमल, त्यागी तथा दयालु है, तो उनमें किसी-किसी का वैसा ही कठोर, स्वार्थांध तथा निर्दय है। कहने का अर्थ यह कि वे जिन गुणों की अधिकारिणी हैं, उन पर उनका एकाधिपत्य है। पढ़नेवाली लड़कियों को देखा गया है कि उन्हें अपने काम के अतिरिक्त अनावश्यक कार्यों के अस्तित्व का ज्ञान ही नहीं। किंतु लड़कों को यदि अनावश्यक कार्यों का विधाता कहें, तो कोई अत्युक्ति न होगी।

चित्त की एकाग्रता का मूल शांति है। प्रकृति के प्रारंभ से ही उन्हें चिंताओं से दूर रहने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। इसका अर्थ यह नहीं कि उन्हें किसी प्रकार की चिंता नहीं होती; किंतु उनका कार्य-क्षेत्र ही ऐसा पवित्र है, जहाँ चिंताएँ भी पवित्र होती हैं। उनकी चिंता है पारिवारिक जीवन को मधुर बनाना। उन्होंने गृह के भीतर विपत्ति में भी सुख-शांति पाना सीखा है। इस प्रकार की शांति उनके स्वभाव की एक शोभा है। इस सहज, प्राकृतिक गुण की अधिकारिणी लड़कियाँ जब पाठशाला में प्रवेश करती हैं, तब पुस्तक-सागर में निमग्न हो जाती हैं। उन्हें छट-पटाने का अभ्यास नहीं। आजकल के स्कूलों के लड़के दो घंटे पढ़ने के पश्चात् व्याकुल हो उठते हैं। गोया सिर पर पहाड़ उठा लिया, जिससे उसमें थकावट आ गई, और वह थकावट विना थिएटर या सिनेमा-हॉल में दो-तीन घंटे की उपस्थिति के दूर होने की नहीं। मैंने लड़कियों को कई घंटों के परिश्रम के पश्चात् भी प्रसन्न-चित्त पाया है।

लड़कियों के पाठ्य-विषय में संगीत तथा सीने-पिरोने का काम अधिक है। संगीत कहीं-कहीं लड़कों के स्कूल में भी है। सीने-पिरोने, कसीदा काढ़ने का काम तो प्रत्येक लड़की सीखती है। संगीत तथा ड्रॉइंग लेनेवाली लड़कियों की भी संख्या कम नहीं होती। इन आवश्यक पाठ्य विषयों के जानने से लड़कियों के काम में बड़ी सुविधा आ जाती और बुद्धि प्रखर होती है। जो कन्या-पाठशाला इन विषयों को अपने पाठ्य क्रम में स्थान नहीं देती, वह बुद्धिहीनता का कार्य करती है। लड़कियों के कार्य में सुविधा तथा सहूलियत ला देने का श्रेय उनके ग़पशप तथा दिल्लगी से विमुख रहने को अधिक मिलता है। कहा है—"How is that women do not relish jest so much as men do? The reason seems to be that the essence of a jest is ill nature, and that women are better natured than men." अर्थात् क्या कारण है कि स्त्रियाँ दिल्लगी को उतना पसंद नहीं करतीं, जितना पुरुष? कारण स्पष्ट है। दिल्लगी का सार सर्वदा नीच प्रकृति का होता है, और स्त्रियाँ पुरुषों से उच्च चरित्रवाली होती हैं।

आँखों देखी बात कहते हैं। हम लोगों को स्कूल या कॉलेज में, अवकाश पाने पर, एकत्र जुटकर ग़प लड़ाने तथा दिल्लगी के अतिरिक्त कोई अन्य कार्य नहीं सूझता। दिल्लगी भी बहुधा गंदी। हमारे यहाँ के बालकों का बहुत समय ग़पशप में ग़ायब हो जाता है, और ऐसे मस्तिष्क, जो परिहास-प्रिय होते हैं, ग़प हाँकने में भाग लेते हैं, पाठ के समय पाठ को अच्छी रीति से नहीं पढ़ पाते। छोटे दिमाग़ में बड़ी बातें कब आने लगीं! किंतु लड़कियों की दशा इसके ठीक विपरीत है। उनको अव-काश के समय भी आवश्यक कामों ही की धुन रहती है। सखी-सहेलियों के साथ वे भी मिलती-जुलती तथा बैठती हैं; किंतु भगवान् ने लड़कों की तरह अमूल्य समय को व्यर्थ खोने की 'सुबुद्धि' उन्हें नहीं दी।

इस लेख का अभिप्राय केवल यही है कि लड़कियाँ तथा स्त्रियाँ इस बात का अनुभव करें कि भगवान् ने उन्हें ऐसी शक्तियाँ दी हैं, जो पुरुषों से कहीं अच्छी हैं। उन शक्तियों की उन्नति करना उनके हाथ में है। उन्हें अपने कार्य-क्षेत्र की परिधि के अंदर अपनी शक्तियों का उपयोग करना उचित ही नहीं, आवश्यक भी है।

अंतिम बात यह है कि प्रखर बुद्धिवाले विद्यार्थी को पढ़ाते हुए माता-पिता को असीम आनंद प्राप्त होता है। संस्थाएँ ऐसे विद्यार्थियों को छात्र-वृत्ति देती हैं। स्त्री-शिक्षा के लिये, इससे लाभ की आशा रखते हुए भी, क्यों नहीं काफ़ी ख़र्च किया जाता?

दुर्गादत्त राय

× × ×

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

३. स्त्रियों की पराधीनता

तुलसी हाय गरीब की कबहुँ न निहफल जाय ;
मरे चाम की फूँक से लोह भसम है जाय।

माता भगवती की प्रतिमाएँ स्त्रियों से घृणा करना भारत के उन महापापों में एक प्रधान महापाप है, जिनके कारण हमारा समाज, धर्म, पुरुषत्व और वैभव आदि आज रसातल की ओर बहे जा रहे हैं। जिस प्रकार एक पंख का पक्षी उड़ नहीं सकता, एक पैरवाला मनुष्य चल नहीं सकता, उसी प्रकार नारी-शक्ति को पंगु बनाकर पुरुष भी कुछ नहीं कर सकते।

शास्त्रों में जिस स्त्री-जाति को साक्षात् भगवती कहा गया है, उसी नारी-जाति को हमने अपने घर की दासी समझ लिया है। उनके लिये पढ़ना-लिखना पाप है, पर्दे की आड़ से एक पग आगे बढ़ना महापाप है। देश और समाज की सेवा का उन्हें अधिकार नहीं, देव-पूजा, वेद-वेदांत का पाठ, ओ३म् शब्द का उच्चारण करने का भी अधिकार नहीं। बाल्यावस्था में माता-पिता के अधीन, यौवन में स्वामी के अधीन और वृद्धावस्था में पुत्र के अधीन रहना पड़ता है—मानो उनके लिये स्वतंत्रता और स्वाधीनता है ही नहीं। इस अभागे देश में नारी-जीवन का कुछ मूल्य ही नहीं है। पग-पग पर उनकी अवहेलना और निरादर किया जाता है।

जो विवाह समाज में परम-पवित्र तथा गृहस्थाश्रम का मूल-मंत्र समझा जाता था, आज वही विवाह, कुछ स्वार्थियों की चलाई घृणित और जघन्य प्रथाओं के कारण, दुर्गति के गर्त में गिरता जा रहा है। प्राचीन समय में, विवाह में वर और कन्या, दोनों का ही समान प्रयोजन और मूल्य समझा जाता था—इस बात को समाज एकदम भूल गया है। एक तरफ़ वर-रत्न स्वर्ण तथा रजत मुद्रा से ख़रीदा जाता है, और दूसरी तरफ़ कन्या को दासी बनाकर घाते में दिया जाता है। पवित्र प्रणय-बंधन स्वार्थ-परता के कारण एक प्रकार से दूकान-दारी में परिणत हो गया है। उस पर दिन-रात हम सीता, सावित्री, दमयंती आदि की दुहाई देने से मुँह नहीं मोड़ते।

८० वर्ष के बूढ़े का विवाह करने की व्यवस्था तो हिंदू-समाज में है, पर बाल-विधवा-विवाह की व्यवस्था बिलकुल नहीं। कारण, बाल-विधवा-विवाह करने से परलोकगत स्वामी का अकल्याण होता है।

भारतवर्ष में स्त्रियाँ, विशेष कर बड़े घरों की स्त्रियाँ, द्रव्योपार्जन की विद्या नहीं जानतीं, और न उन्हें जानने का अवसर ही दिया जाता है। मुसलमान-महिलाओं की तरह हमारे यहाँ की स्त्रियों को पिता तथा स्वामी की संपत्ति से भी कुछ हिस्सा नहीं मिलता।

बड़ी-बड़ी सभा-सोसाइटियों में हमारे नेता समाज-सुधार-विषयक अनेक ओजस्वी व्याख्यान देते हैं, अनेक प्रस्ताव पास किए जाते हैं। समाज की अनुदारता पर गालियाँ देकर शोक प्रकट किया जाता है। पर जिस समय उनके ओजस्वी, युक्ति-पूर्ण व्याख्यानों और प्रस्तावों से प्रभावित होकर कोई साहसी व्यक्ति उनके अनुकूल कार्य करता है, तो उसे शीघ्र ही वे ही समाज-सुधारक और समाज के सदस्यगण, धर्म की दुहाई देते हुए, बहिष्कृत करने में तनिक भी आगा-पीछा नहीं करते। बरन् उन धर्मांध नागरिकों के बीच चिल्ला-चिल्लाकर कहते हैं—"भाइयो, डरो नहीं, इन मुट्ठी-भर नालायक़ों की तनिक भी परवा न करो। वे बहते जा रहे हैं, उन्हें बह जाने दो। ऐसे विशाल हिंदू-समाज से यदि ये मुट्ठी-भर मनुष्य निकल ही जायँ, तो अच्छा। इससे हमारा समाज पवित्र रहेगा।"

आज भारत को स्वाधीन बनाने के निमित्त, स्वराज्य लाभ करने के लिये, भारत के प्रत्येक कोने में गंभीर आंदोलन हो रहा है। बाजे आदि के सवालों को लेकर अनेक जगह ख़ून-ख़राबी हो रही है। बड़े-बड़े नेतागण तन, मन और धन से इन प्रश्नों को हल करने में व्यस्त हैं; किंतु उन अभागिनी माता, भगिनी, स्त्री और कन्याओं की, जिन्हें निर्दयता से पराधीनता की बेड़ी पहनाकर उन पर अमानुषिक अत्याचार किया जाता है, कोई सुध नहीं लेता। अतएव हे भारतीय युवकगण, भारतीय स्त्रियों के दुःख-विमोचनार्थ अग्रसर हो। इस महान् कार्य का भार तुम्हीं वहन कर सकते हो। बिना तुम्हारी सहायता के भारतीय स्त्रियों की पराधीनता दूर नहीं हो सकती।

पांडेय देवेंद्रनारायणसिंह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१. मायावादी का चिट्ठा

प्यारे संपादकजी,

कुछ कहते नहीं बनता, कुछ लिखते नहीं बनता। दुनिया को देख-कर मैं हैरान हूँ। प्रतिदिन नए-नए रंग देखने में आते हैं। ये सब रंग देखकर मेरी बुद्धि चकरा गई है। क्या कहूँ जनाब, मेरी बातें आप नहीं समझेंगे। कहाँ जाऊँ, किससे अपना दुखड़ा रोऊँ, कुछ समझ में नहीं आता। हैरत में हूँ साहब, हैरत में—इस मायामय सृष्टि का चक्र देखकर मैं हैरत में हूँ। हाय री माया! जिधर नज़र फेरिए, यही नाशकारी माया नज़र आती है।

जब देखता हूँ कि शाही कमीशन को लेकर देश में इतना हुल्लड़ मचा है, और सभी दलों के नेता लोग कमर कसकर खड़े हो गए हैं, ताकि उन्हें इस कमीशन की माया अपने प्रभाव से तंग न कर सके, जब देखता हूँ कि ब्रिटिश सरकार अपनी इस माया के कारण हमारे देश के हृदय के घाव में नोन छिड़क रही है, और उसका असर देखकर मज़े में ठट्ठा मारकर हँस रही है, तब मेरी बुद्धि चकरा जाती है। जब देखता हूँ कि हमारे नेता इस मायाविनी नटनी सरकार महाशया के नख़रों से विचलित न होने के लिये दृढ़ संयम का प्रण करके भी पद-पद पर विचलित तथा प्रतिभा-भ्रष्ट होते जाते और उसके चरख़े में फँसकर कई बार धोका खाने पर भी फिर-फिर यह आशा कर ही बैठते हैं कि वह उनकी गलेबाज़ी और व्याख्यान-वैचित्र्य पर मुग्ध होकर उन पर अवश्य ही आसक्त हो जायगी, तथा अपना भारत-रूपी हृदय उन्हें दे ही बैठेगी, तब जनाब, मैं हैरान होकर उनके असफल प्रेम के लिये और उनकी दूरदर्शिनी बुद्धि के लिये दुःखित होता हूँ।

जब मैं देखता हूँ कि शिमले और नैनीताल के कौंसिलर लोगों की नासिकाओं के दोनों छिद्रों में डोरियाँ बँधी हैं; एक डोरी श्रीमती गोरी सरकार महाशया पकड़े हैं और दूसरी डोरी मिस 'ग' (शिमले में) तथा मिस 'म' (नैनीताल में) पकड़े हैं, तो मेरी अक़्ल का चिराग़ गुल होने लगता है। जब देखता हूँ कि गोरी सरकार महाशया के अनिर्वचनीय नख़रों पर अपनी इच्छा के विरुद्ध मरकर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कौंसिलर लोग उसके साथ नाचकर तथा व्याख्यान-रूपी अलाप छोड़कर थक जाते और इसके बाद सभ्य नेटिव लेडियों के जंजालपूर्ण सुकोमल रेशमी जाल में फँस-फँसाकर तबाह रहते हैं, तब संपादकजी, क्या कहूँ, मैं इस विश्वव्यापी माया के चरख़ों का हाल देखकर दंग रह जाता हूँ।

जब देखता हूँ कि महामाया मिस मेयो की माया ने समस्त संसार में और कहीं अपने आश्रय का ठिकाना न देखकर इस असहाय, दीन, दुःखी देश के ऊपर ही अपना प्रकोप प्रदर्शित किया है, तब मेरा हृदय 'हाय ! हाय !' करके रह जाता है। जब देखता हूँ कि यह देश-विदेश भ्रमण करनेवाली अविवाहिता कुमारी रमणी असंख्य पुरुषों के साथ मित्रता करने पर भी अपनी 'संयमशीलता' पर स्वयं गर्व का अनुभव करके भारत में व्यभिचार का आधिक्य बतलाती है, और यहाँ के पुरुषों के २५ वर्ष की अवस्था से पहले ही नामर्द होने की बात लिखती है, तब इस 'आदर्श महिला' की नग्न निर्लज्जता के संबंध में विचार करके मेरा दिल दहलने लगता है।

जब देखता हूँ कि बर्नार्ड शॉ महाशय विना लेश-मात्र झिझक के हमारे देश को बर्बरतम तथा नीच बतला बैठते हैं, निरतिशय घृणा से उसे ठुकराकर उस पर थूकना चाहते हैं, और उनकी यह करतूत देखकर भी हमारे साहित्यिक उनके नाटकों की सहृदयता पर मर मिटते तथा 'निष्पक्षभाव' से अपनी गुण-ग्राहकता का परिचय देते हैं, तब मुझसे कुछ कहते नहीं बनता।

जब देखता हूँ कि हिंदी-साहित्य के पुराने और नए दलों के बीच में तनातनी थी ही, पर नए दल के पेट से भी कई नूतनतर दल फूट निकले हैं और एक दूसरे पर कीचड़ फेक रहे हैं, तो मज़ा भी आता है और होश-हवास भी गुम होते हैं। जब देखता हूँ कि व्रजभाषा के प्रचार का लोप होते देखकर हमारे प्राचीन परिपाटी के कवि हाय-तोबा मचाने भी न पाए थे कि 'मिस्टिक' कविता की विधवा कन्या और मेरी प्रियतमा सखी 'छायावादिनी' कविता ने अपनी अलौकिक माया, अपरूप रूप, असम साहस तथा अप्रत्याशित निर्लज्जता से समस्त हिंदी-साहित्य-समाज को चकित कर दिया है, तो महाशयजी, मेरे छक्के छूट जाते हैं।

जब देखता हूँ कि प्रेमचंदजी की सहायता के लिये मैदान में कूदकर साहित्यालोचक अपनी सारी शक्ति का (अप !) व्यय करने पर भी हारकर, मन मारकर बैठ गए हैं, और अब गोरी सरकार के नख़रों से पराहत, साहित्यिक रँगरूट-कौंसिलर बेचारे उन्हें दिलासा देने लगे हैं, तब जनाब, हँसी भी आती है और रुलाई भी। हाय री 'ठगनी' माया ! केवल इसी आशा पर टिका हूँ कि प्रेमचंदजी साधु-चरित्र तथा संयमी व्यक्ति हैं, वह अपने को 'माया-प्रूफ़' बनाने में समर्थ होंगे। वह कौंसिलरों के पंजे में नहीं आवेंगे।

और, महाशयजी, जब देखता हूँ कि मेरे-जैसे साहित्यिक एक तरफ़ से तो 'अनंत' की कल्पना में व्यस्त रहते हैं और दूसरी तरफ़ दो-चार रुपए पाकर ही जीवन-संग्राम में अपनी समस्त कल्पना-शक्ति का 'अंत' हुआ पाते हैं, तब आप ही बतलाइए मेरी क्या गति होती होगी ! त्रिशंकु जनाब, त्रिशंकु ! त्रिशंकु की-सी अवस्था हो जाती है। इसके अतिरिक्त जब मैं देखता हूँ कि हम साहित्यिक महारथियों को अपने दुबले-पतले शरीर के 'फ़्रेम' में बद्ध, दुःख तथा निराशा की प्रगाढ़ छाया से लिप्त अवर्णनीय रूप का गर्व भी रहता है, तब अपने आप पर मुझे हँसी आती है, और आश्चर्य भी होता है। जब देखता हूँ कि हमारे देश में जो दो-चार शिक्षा-प्राप्त सभ्य लेडियाँ हैं, उन्हें हम निर्धन साहित्यिक भी अपने रूप तथा गुणों से वश में करना चाहते हैं; पर यहाँ भी कौंसिलरों के ही पौ-बारह पड़ते हैं, तब संपादकजी, मैं ईर्ष्या की ज्वाला से जल उठता हूँ, और हैरान होकर काठ के उल्लू की तरह खड़ा रहता हूँ।

जब देखता हूँ कि पुष्पधन्वा की महती शक्ति के क़ायल होकर हमारे देश की वर्तमान राजनीति के भैरवी-चक्र में उस चक्र के सदस्य लोग काग़ज़ के धनुष में प्रस्ताव-रूपी बाण स्थापित करके गोरी महाशया का हृदय बिद्ध करने की चेष्टा करते हैं, तब मैं भौचक्का-सा ताकता रह जाता हूँ। जब देखता हूँ कि गोरी के इश्क़ के ख़रीदारों की राजनीतिक 'चालों' से तंग आकर महात्मा गांधी सिकुड़कर अलग बैठ गए हैं, तब दिमाग़ कुछ काम नहीं करता। जब देखता हूँ कि हमारे राष्ट्रीय नेता देश की भीतरी दुर्बलताओं को नष्ट करने से सभा-समितियों में व्यर्थ चिल्लाने तथा बकवाद करने को अधिक महत्त्व देते हैं, तब मुझसे कुछ कहते नहीं बनता। जब देखता हूँ कि जब तक महात्मा गांधी ज़ोर से चिल्लाते थे, तब तक सारे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देश में खलबली मची हुई थी और, जब अब वह शांत होकर रचनात्मक कार्य के लिये सब देशवासियों को उपदेश देते हैं, तो कोई उनकी नहीं सुनना चाहता, तब महोदयजी, मुझ आश्चर्य-चकित को बहुत-कुछ सोचने का मसाला मिला है।

कहाँ तक कहूँ, कहाँ तक? अपना रोना कहाँ तक सुनाऊँ? वर्तमान हुल्लड़शाही के नक़्क़ारख़ाने में मेरी तूती की आवाज़ आपको कैसे सुन पड़ेगी? हाय! हाय! मेरी तूती का बड़ा कोमल, बड़ा करुण कंठ था; पर अब नक़्क़ारख़ाने की 'धींगाधींगी' से तंग आकर उसे भी ज़ोर की चीं-चपड़ करनी पड़ेगी। इस ज़माने में मिठास कोई नहीं चाहता हुज़ूर, सभी को स्त्रियों के दोहद की तरह कटु और कषाय रस की इच्छा हुई है। इसलिये मुझे भी अब यही रस सबको पिलाना पड़ेगा। देखिए, अल्लाह-पाक की क्या मर्ज़ी है।

इस समय विदा होता हूँ। जीता रहा, तो फिर कभी लिखूँगा।

आपका दासानुदास
"मायावादी"

सम्मति

"सुधा" देख, पढ़कर अत्यंत प्रसन्नता हुई—"सुधा" सुधा ही जो ठहरी। लेख, कविताएँ, चित्र, छपाई, सफ़ाई, काग़ज़—कौन-सी बात इसकी मनोमोहक और प्रशंसनीय नहीं है? इसमें अनेक विशेषताएँ हैं और यह वास्तव में "संग्रहनीय, पठनीय और मननीय" है। अति उज्ज्वल भविष्य इस उत्कृष्ट और सुंदर पत्रिका की प्रतीक्षा कर रहा है। भगवान् से प्रार्थना है कि यह सुधा-स्रोत चिरकाल तक मातृ-भाषा-भाषियों को तृप्त करता रहे!

रामस्वरूप कौशल

यात्रियों के लिये ख़ास सुविधा!

हिंदी-संसार में हलचल मचा देनेवाली सर्वोत्तम साहित्यिक, सामाजिक और सचित्र मासिक पत्रिका

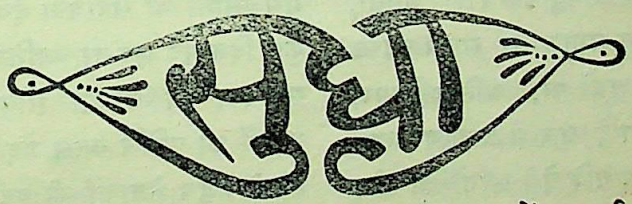

मेसर्स ए० एच्० ह्वीलर-कंपनी के रेलवे-बुक-स्टालों पर भी मिलती है।

हावड़ा, पटना, मोग़लसराय, इलाहाबाद, कानपुर, अलीगढ़, बनारस, प्रतापगढ़, फ़ैज़ाबाद, लखनऊ, कानपुर सिटी, बरेली, मुरादाबाद, हरद्वार, देहरादून, लखनऊ सिटी, काठगोदाम, ग़ाज़ियाबाद, दिल्ली, मेरठ छावनी, सहारनपुर आदि बड़े-बड़े स्टेशनों पर ख़ास प्रबंध किया गया है।

अगर आप सुधा का नमूना देखना चाहते हैं, तो अपने पास के बुक-स्टालों से ।।।) में ख़रीद सकते हैं। इस प्रकार वी० पी० के ख़र्च की बचत भी रहेगी।

मैनेजर सुधा, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

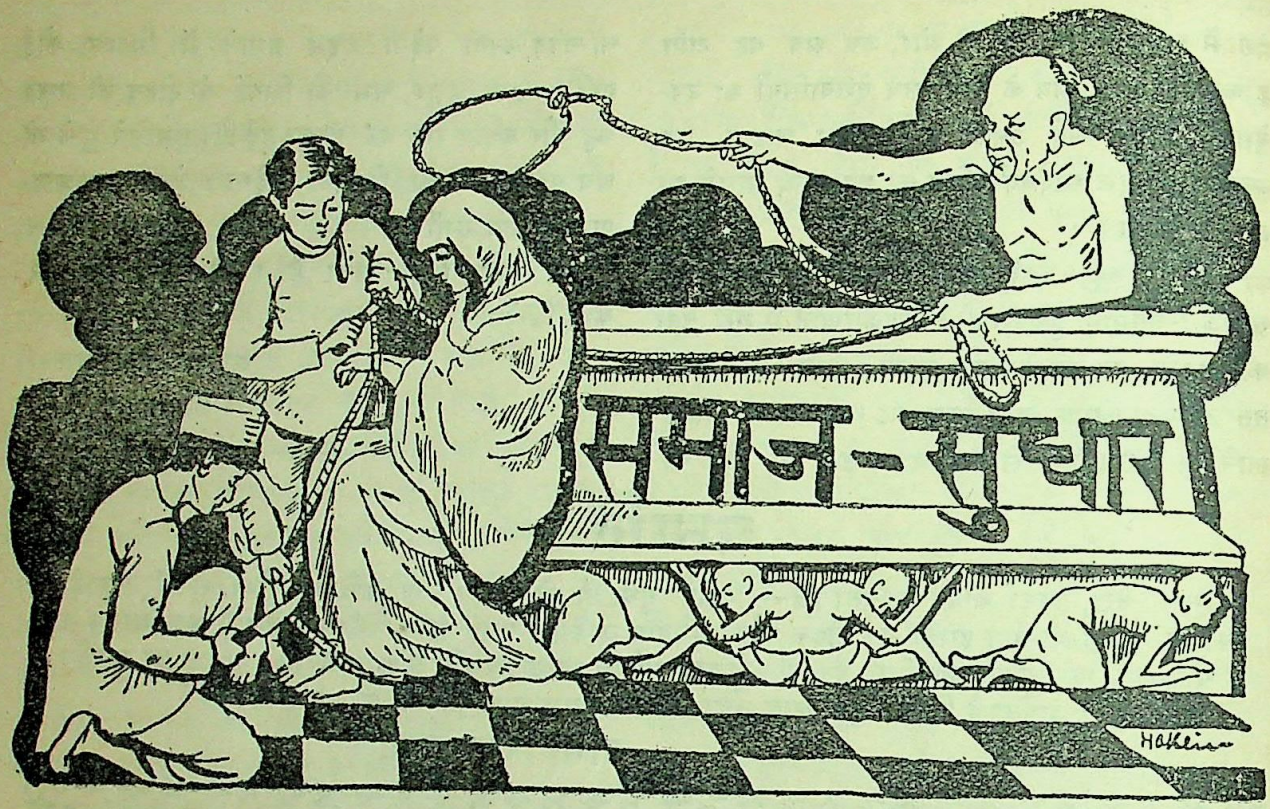

१. हिंदुओं में छुआछूत

जकल पाश्चात्य शिक्षा-दीक्षा के प्रभाव से, आर्य-शास्त्रों के अध्ययन-अध्यापन के नाम पर, जिन लोगों के लिये काला अक्षर भैंस बराबर है, वे विद्वान् और उनकी देखादेखी 'ज्ञानलवदुर्विदग्ध' जनता, हिंदू-समाज पर सबसे बढ़कर यह कलंक लगाती है कि वह शूद्रों पर, अतिशूद्रों पर, और विशेष कर अंत्यजों पर, अनादि काल से अन्याय-अत्याचार करता चला आ रहा है। यद्यपि ऐसे लोगों की ओर से कभी किसी जगह और किसी काल में इस अत्याचार की शिकायत सुनने में नहीं आई, और बराबर यही कहा गया है कि जो कर्म, कर्तव्य-पालन वे कर रहे हैं, उसी में संतुष्ट हैं; तथापि भारत के सुधारक-नामधारी जीव, दलितोद्धार के नाम पर, छुआछूत मेटने के लिये फेंट बाँधे तैयार हैं। यदि महात्मा गांधी ऐंड कंपनी की पीरी चल जाय, तो वे ब्राह्मण को भंगी और भंगी को ब्राह्मण बना देने में कभी आना-कानी न करेंगे। कलकत्ता-कांग्रेस के अधिवेशन के समय उन्होंने टट्टियाँ साफ़ करके इसका उदाहरण भी खड़ा कर दिया है। पंजाब का 'जाति-पाँति-तोड़क मंडल' हिंदुओं को पानी पी-पीकर कोस रहा है, और समाचारपत्रों को देखने से ऐसे लोगों का भी पता लगा है, जो अंत्यजों को 'आदि-हिंदू' के नाम से खड़ा-कर, हिंदू-समाज के 'एक चने की दो दालें' कर देने और इस तरह हिंदू-जाति का सर्वनाश करके प्रच्छन्न रूप से मुसलमानों को सहायता देने की चिंता में मरे मिटते हैं। कुछ दिन पूर्व एक-दो व्यक्तियों के मुसलमानों से आर्थिक सहायता लेने का भी ग़ौगा मचा था। पहले ऐसे-ऐसे झगड़ों की परिधि केवल मदरास-प्रांत ही था; किंतु अब, हमारे श्रद्धेय नेताओं की बदौलत, यह आग सारे भारत-वर्ष में फैलती जा रही है। और, स्थिति ऐसी होती जा रही है, जिसे देखकर यदि यह कह दिया जाय कि 'सनातन धर्म' का इस समय कोई धनी-धोरी नहीं है, तो अत्युक्ति नहीं। अभी भगवान् कल्कि के अवतार-ग्रहण करने में ४, २६, ९७२ वर्षों की देरी है।

इस कलंक का प्रधान दोष हमारे उन ऋषि-महर्षियों पर, जिनकी संतान होने का इन नेताओं को गर्व हो सकता है, जो वेद के श्रोता अथवा कर्ता मानकर वंदनीय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समझे जाते हैं, जिन्होंने संसार के उपकार के लिये अपने सर्वस्व को तिलांजलि देकर अनेक शास्त्रों की रचना की है, और जो पाश्चात्य जगत् में बड़े आदर की दृष्टि से देखे जाते हैं, माथे मढ़कर उन्हें मूर्ख और स्वार्थी बतलाया जाता है। यह ध्रुव सत्य है कि केवल परोपकार-वृत्ति से, उन्होंने शास्त्रों की रचना में अपने ख़ून का पसीना बहा-कर अपनी होनहार संतान की—ब्राह्मणों की—वृत्ति अन्य वर्णों के हाथ में दे दी है। वे नहीं जानते थे कि आगामी पीढ़ियाँ ऐसी कृतघ्न निकलेंगी, और सदा उप-कार में प्रवृत्त ब्राह्मण-जाति का निरादर करेंगी। किंतु अब ज़माना ऐसा आ गया है, जिसमें यदि सचमुच ब्राह्मण अपने ब्राह्मणत्व का गौरव सुरक्षित रखना चाहते हैं, तो उन्हें अन्य वर्णों के आगे हाथ फैलाने से मुँह मोड़ लेना और फिर अपने पूर्वजों का अनुकरण करने के लिये खड़े हो जाना चाहिए।

आजकल के विद्वानों का यह ढंग है कि वे प्रायः सब अपनी प्राचीन रीति-नीतियों को बुरा समझते हैं; जब योरपियन विद्वान् उनमें गुण बतलाते हैं, तब उनकी आँखें खुलती हैं। संभव है, कभी ऐसा भी दिन आवे। किंतु हाँ, कुछ समय से उन लोगों की भगवान् श्रीकृष्ण पर, चाहे अवतार के रूप में अथवा श्रेष्ठ पुरुष के रूप में श्रद्धा है, और दिन-दिन बढ़ती जाती है। उन्हीं का बर्ताव इन अंत्यजों के साथ कैसा था, यही दिखलाना इन पंक्तियों का उद्देश्य है। इसके लिये श्रीमद्भागवत, प्रथम स्कंध, अध्याय ११ के श्लोक २१ और २२ को देखना चाहिए। उनमें लिखा है—

"भगवांस्तत्र बन्धूनां पौराणामनुवर्तिनाम्;
यथाविध्युपसङ्गम्य सर्वेषां मानमादधे।
प्रह्वाभिवादनाश्लेषकरस्पर्शस्मितेक्षणैः;
आश्वास्य चाऽऽश्वपाकेभ्यो वरैश्चाभिमतैर्विभुः।"

भगवान् श्रीकृष्णचंद्र आनंदकंद जब कभी कहीं बाहर से द्वारका पधारते थे, और उस समय जब उनकी अभ्यर्थना के लिये, उनके दर्शन की लालसा से, वहाँ के छोटे-बड़े, आबाल-वृद्ध-वनिता, सब उनका स्वागत करने के लिये जाते थे, तब भगवान् इन श्लोकों के अनुसार अपने भाई-बंधुओं का, जनता का, उनके अनुवर्तियों का, सबका यथाविधि सत्कार करके उन्हें मान-प्रदान करते थे। सिर झुकाकर प्रणाम करते, अभिवादन करते, आलिंगन करते, हाथ मिलाते और मुसकिरा दिया करते थे। केवल इतना ही क्यों? श्वपाक (मेहतर) इत्यादि का आश्वासन भी करते, उन्हें अभय-प्रदान करते और अभीष्ट पदार्थ देकर उनका सत्कार करते थे। इतने पर ही समाप्ति न समझिए। यह केवल ज़बानी जमा-ख़र्च है, और इस पर कहा जा सकता है कि केवल बातें बना देने के अतिरिक्त दिया क्या? किंतु नहीं! उस समय यज्ञ-यागादि की भी समाप्ति अंत्यजों का सत्कार किए बिना नहीं होती थी। उसी भागवत के दशम स्कंध, अध्याय २४ के श्लोक २६-२७ इस बात की साक्षी देते हैं कि भगवान् श्रीकृष्णचंद्र ने जब सुरेश इंद्र का अभिमान-भंग करने के लिये इंद्रयाग के बदले गोवर्द्धन-पूजा का आयोजन किया, तब—

"हूयन्तामग्नयः सम्यक् ब्राह्मणैर्ब्रह्मवादिभिः;
अन्नं बहुगुणं तेभ्यो देयं वै धेनुदक्षिणाः।
अन्येभ्यश्चाश्वचाण्डालपतितेभ्यो यथार्हतः;
यवसं च गवां दत्वा गिरये दीयतां बलिः।"

अर्थात्—अग्नि में होम किया गया, ब्रह्मवादी ब्राह्मणों को नाना प्रकार का अन्न और धेनुएँ तथा दक्षिणा दी गई। औरों का, चांडालों तक का, पतितों का, (भोजनादि से) सत्कार किया गया, और गउओं को चारा दिया गया। इतना पढ़ने पर इसमें किसी प्रकार का संदेह नहीं रहता कि वह प्रत्येक अवसर पर सबके साथ इन लोगों का भी सत्कार करते थे, देश-काल-पात्र के अनुसार सबको समान समझते थे। सनातन-धर्म के अनुसार यही अंत्यजों के लिये विधि है, यही सद्गृहस्थों के यहाँ किया जाता है, और यही होना भी चाहिए।

धर्मशास्त्र के मत से—

"रजकश्चर्मकारश्च नटो, बुरुड एव च;
कैवर्तमेदभिल्लाश्च सप्तैते अन्त्यजाः स्मृताः।"

इनकी अंत्यज संज्ञा है, और ये केवल गर्हित कर्म करने ही से अंत्यज नहीं कहलाए हैं। हिंदू-समाज का यह आदि से सिद्धांत है कि पवित्र रज-वीर्य से जो संतान उत्पन्न होती है, और जो अपने वर्णाचार अथवा कुलाचार के अनुसार पवित्र आचरण करती है, वही पवित्र है। अवश्य ही शास्त्र-कारों ने, समान वर्ण में संतान उत्पन्न करने को सर्वश्रेष्ठ मानने पर भी, केवल काम-वासना की रियायत करने के लिये ही, अनुलोम और प्रतिलोम विवाह को व्यवस्था दी है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रतिलोम तो सर्वथा वर्ज्य है ही; किंतु अनुलोम में भी, जहाँ तक हो सका, पवित्रता की व्यवस्था करके उच्च वर्ण का उच्च वर्ण के साथ अनुलोम विवाह करने की व्यवस्था दी गई है और शूद्र तथा उनसे नीचे गए-बीते का अंत्यज के साथ। भगवान् मनु अपनी सर्वजनमान्य और सर्वकाल-मान्य स्मृति में स्पष्ट लिख गए हैं—

"क्षत्रियाद्विप्रकन्यायां सूतो भवति जातितः;
वैश्यान्मागधवैदेहौ राजविप्राङ्गनासुतौ ॥ १ ॥
शूद्रादायोगवःक्षत्ता चाण्डालश्चाधमो नृणाम्;
वैश्यराजन्यविप्रासु जायन्ते वर्णसंकराः ॥ २ ॥
जातो निषादाच्छुद्रायां जात्या भवति पुल्कसः;
शूद्राज्जातो निषाद्यान्तु स एव कुकुटः स्मृतः ॥ ३ ॥
क्षत्तुर्जातस्तथोग्रायां श्वपाक इति कीर्त्यते।"

बस, इसी तरह अन्यान्य अंत्यजों की सृष्टि हुई है। केवल इस प्रकार से इन जातियों की जन्म से ही अंत्यज संज्ञा हो, सो नहीं। सैकड़ों पीढ़ियों से, जन्म-जन्मांतरों से, उनसे गुण, कर्म तथा स्वभाव उन कर्मों को कराते हैं, जिनके कारण वे अस्पृश्य हैं। हिंदुओं की छुआछूत में सिद्धांत-रूप से घृणा का लेश-मात्र भी नहीं है। वे रजस्वला माता तक का स्पर्श नहीं करते। स्नान करने के अनंतर शूद्र तक बिना नहाए ब्राह्मण का स्पर्श नहीं करता। मृताशौच में प्रजा राजा को नहीं छूती, इस तरह छुआछूत पवित्रता की द्योतक है, घृणा की नहीं। इसके अतिरिक्त यह स्पर्शास्पर्श यदि विज्ञान-मूलक न होता, तो प्लेग के प्रकोप के दिनों में दस दिन का क्वारेंटाइन क्यों नियत किया जाता? इस जगह फिर दृढ़तापूर्वक कहा जाता है कि हिंदुओं की छुआछूत यदि घृणा-मूलक होती, तो कबीर, रैदास और इसी तरह के अन्यान्य भगवद्भक्त हिंदुओं में देवता के तुल्य आदर क्यों पाते—वे क्यों परम वैष्णव मानकर वंदनीय समझे जाते? जिस योरपियन समाज की दोहाई देकर हिंदुओं की छुआछूत के व्याज से ब्राह्मणों को गालियाँ दी जाती हैं, उसमें भी किसी पवित्र पादरी का एक पाख़ाना कमानेवाले भंगी के साथ एक मेज़ पर बैठकर खाना खाने का एक भी उदाहरण सुनने में नहीं आया।

इस जगह मुझे यह अवश्य स्वीकार करना पड़ता है कि छुआछूत पवित्रता-मूलक तथा विज्ञान-मूलक होने पर भी इस समय उसकी मात्रा बढ़ गई है। इन अंत्यजों की दशा अवश्य ख़राब है, और स्वराज्य-प्राप्ति के लिये, देश की दुर्दशा मिटाने के प्रयोजन से, विजातियों के आक्रमण से त्राण पाने के निमित्त, तथा इसी प्रकार के अनेक कारणों से, इनकी बिगड़ी हुई दशा सुधारकर इन्हें सहायता देने की आवश्यकता है। किंतु इसका मतलब यह कदापि न होना चाहिए कि दलितोद्धार का ढोल पीटकर उनके साथ सहभोज किया जाय, उन्हें जनेऊ पहनाया जाय, उनका रोटी-बेटी से संबंध किया जाय। अंत्यजों से उन्हीं का पेशा कराने में हमारा कल्याण है। यदि देशोद्धार के लिये मिथ्या आडंबर करनेवाले नेता निरंतर आजकल का-सा उद्योग करेंगे, तो अवश्य ही हिंदू-समाज में ग़दर मच जायगा। ऐसा होने से वे दिन अधिक दूर न समझना चाहिए, जब मेहतर झाड़ू-टोकरी श्रेष्ठ वर्णों के माथे डालकर अलग हो बैठेंगे, और जिस तरह आजकल धर्म के नाम पर हिंदू-मुसलमानों में मार-काट बढ़ती जा रही है, उसी तरह, नेताओं की कृपा से, हिंदुओं का इन 'आदि-हिंदुओं' से झगड़ा खड़ा हो जायगा। सच पूछो, तो आजकल के देश-हितैषी अपनी कम समझ से केवल स्वराज्य की मृगतृष्णा में शांति-पाठ का नाम लेकर एक प्रकार की अशांति, विप्लव खड़ा करने के ज़िम्मेदार हैं। ज़माने को देखते हुए केवल एकआध व्यक्ति से आशा थी। किंतु देखा यह जा रहा है कि या तो उनमें "मुनीनां च मति भ्रमः" के अनुसार मतिभ्रम उपस्थित हो गया है, अथवा सर्वप्रिय बनने की लालसा ने उनकी जिह्वा में ताला डाल दिया है। न महामना मालवीयजी का कहीं पता है, और न यह मालूम कि श्रद्धेय पंडितजी क्या कर रहे हैं?

ऊपर की पंक्तियों से यह स्पष्ट हो जाता है कि इन अंत्यजों को उठाना अवश्य चाहिए। उनके लिये मद्य-मांस का त्याग, पवित्राचरण, देवदर्शन, कुओं की स्वतंत्र व्यवस्था और आर्थिक सहायता से उनके व्यवसायों की उन्नति, उन लोगों में संगठन और व्यायाम तथा आवश्यक शिक्षा का आयोजन करना चाहिए। तथापि अंत में अत्यंज अंत्यज ही हैं, और जो देश उन्नति के शिखर पर पहुँच गए हैं, उनमें भी ऐसे लोगों की अभी तक स्थिति अच्छी नहीं, देश-काल का भेद भले ही हो। मज़दूर-संघ इसका उदाहरण है। सिर-तोड़ परिश्रम करने पर भी उन्हें समकक्ष बनाने के लिये कई शताब्दियाँ अपेक्षित हैं।

लज्जाराम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस कॉलम में हम हिंदी-प्रेमियों की जानकारी और सुबीते के लिये प्रति मास नई-नई उत्तमोत्तम पुस्तकों के नाम देते रहते हैं। पिछले महीने में नीचे-लिखी पुस्तकें प्रकाशित हुईं—

(१) 'आरोग्यता प्राप्त करने की नवीन विद्या'—अनुवादक, श्रोत्रिय कृष्णस्वरूप बी० ए० , एल्-एल्० बी० ; सादी ४॥), सजिल्द ५।)

(२) 'होमियोपैथिक मेटीरिया मेडिका'—लेखक, डॉ० एस्० जी० मुकर्जी ; मूल्य १५)

(३) 'व्यावहारिक ज्ञान'—लेखक, महात्मा गांधी ; मूल्य सजिल्द ३॥)

(४) 'चंद हसीनों के ख़ुतूत' (कहानियों का संग्रह)—लेखक, पांडेय श्रीबेचन शर्मा 'उग्र' ; मूल्य ॥।)

(५) 'हिंदी-शब्द-सागर' (कोष)—संपादक, श्रीश्यामसुंदरदासजी बी० ए०; ३७वाँ और ३८वाँ खंड ; मूल्य प्रत्येक खंड १)

(६) 'वाल्मीकीय रामायण' (भाषा-टीका)—अनुवादक, चतुर्वेदी द्वारकाप्रसाद शर्मा ; मूल्य पूरा सेट १६)

(७) 'सोहाग-रात' (स्त्रियोपयोगी)—लेखक, श्रीकृष्णकांत मालवीय बी० ए० ; मूल्य ३।), ३॥)

(८) 'चंद्रालोक' (भाषानुवाद-सहित)—पीयूषवर्ष जयदेव-कृत; अनुवादक, श्रीव्रजजीवनदास गुप्त ; मूल्य ॥=)

(९) 'सूर-पंचरत्न' (सटिप्पण और सचित्र)—संकलयिता, ला० भगवानदीन और मोहनवल्लभ पंत ; मूल्य १॥)

(१०) 'हास्य-मंजरी' (द्वितीय संस्करण)—संग्रहकर्ता, पं० गयादत्त त्रिपाठी बी० ए० ; मूल्य ॥)

(११) 'जेबी कोष'—रचयिता, रामचीज़सिंह 'वल्लभ' और हरदेवसिंह, 'देव' ; मूल्य ॥)

(१२) 'हिंदोस्तानी शिष्टाचार'—लेखक, श्रीकामताप्रसादजी गुरु ; मूल्य ॥=)

(१३) 'विवाह-विज्ञापन' (प्रहसन)—लेखक, श्रीबदरीनाथजी भट्ट बी० ए० ; संपादक, श्रीदुलारेलालजी भार्गव सुधा-संपादक ; मूल्य लगभग १)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१. कविता

हिंदू—रचयिता, श्रीमैथिलीशरण गुप्त ; मुद्रक, श्रीराम-किशोर गुप्त, साहित्य-प्रेस चिरगाँव (झाँसी) ; पृष्ठ-संख्या ३७५ ; मूल्य १) तथा विशिष्ट संस्करण का १।)

'संघे शक्तिः कलौ युगे' के अनुसार प्रायः निर्जीव हिंदू-जाति अपना संगठन करने के लिये अग्रसर हो रही है। यह नवीन जागृति केवल सामाजिक आंदोलन नहीं है, किंतु राजनीतिक तथा धार्मिक क्षेत्रों में भी इस हलचल का पूरा प्रभाव पड़ रहा है। साहित्य ही देश का जीता-जागता इतिहास है। तब हिंदू-जाति के इस विराट् आंदोलन से हिंदी-साहित्य भी विमुख नहीं रह सकता। ठीक इसी नियम के अनुसार हिंदू-संगठन-संबंधी साहित्य का निर्माण हो रहा है। कविवर गुप्तजी-रचित यह हिंदू-नामक पुस्तक भी इसी महाध्येय को सामने रखकर रची गई है। इसमें गुप्तजी की चिर-परिचित काव्य-रचना-चातुरी के साथ उनके हिंदू-समाज-सुधार-संबंधी उच्च विचारों का भी पूर्णतया दिग्दर्शन हो सकता है। अर्जुन का मोह नष्ट करने के लिये जिस प्रकार गीता का प्रादुर्भाव हुआ, उसी प्रकार सोई हुई हिंदू-जाति को जगाने की महत् आकांक्षा से यह पुस्तक रची गई है। आदर्श अवश्य उच्च है; परंतु लेखक की सफलता का अनुमान तो तभी हो सकेगा, जब हिंदू-जाति पुनः गौरवान्वित होगी। इस प्रकार की पुस्तक की आवश्यकता थी, और यह पुस्तक उस आवश्यकता को अनेकांश में पूर्ण करती है। भूमिका में जो रस है, वह वास्तव में सत्यं, शिवं, सुंदरम् का स्वर्गीय सम्मिश्रण है।

भवानीशंकर याज्ञिक

× × ×

२. फुटकल

संसार-सार-संग्रह (प्रथम भाग)—संग्रहकर्ता तथा प्रकाशक, श्रीगणपतिचंद्र केला ; मुद्रक, वैद्य बाँकेलाल गुप्त; धन्वंतरि-प्रेस, विजयगढ़ (अलीगढ़) ; पृष्ठ-संख्या ४०; मूल्य २)।

इसमें कुछ ज्ञातव्य अंकों का संग्रह किया गया है। संग्रह छोटा होने पर भी मनोरंजक है। यदि प्रत्येक विषय के अंकों का आधार दे दिया जाता, तो कुछ अंकों के संबंध में संदिग्धता का कारण दूर हो जाता।

× × ×

कॉलेज-होस्टल—लेखक, कुँअर श्रीचाँदकरण शारदा, बी० ए०, एल्-एल्० बी०; प्रकाशक, चौधरी श्रीचंद्रजी; महेश-पुस्तकालय, घसेटी-बाजार, अजमेर ; पृष्ठ-संख्या ८० ; मूल्य ।)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस छोटी-सी पुस्तक में विद्यार्थी-जीवन की घटनाओं का उपन्यास के रूप में चित्रण किया गया है। विद्यार्थियों की अद्भुत लीला तथा उनका स्वाभाविक नटखटपन बहुत मनोरंजक हैं। होस्टल में रहनेवाले विद्यार्थियों को ये घटनाएँ कल्पित नहीं प्रतीत होंगी। कारण, इस प्रकार की मनोरंजक घटनाएँ प्रायः प्रत्येक होस्टल में होती रहती हैं। उपन्यास रोचक है। हिंदी के विनोदपूर्ण साहित्य में इसका भी स्थान होना चाहिए।

× × ×

संजीवन-संदेश—मूल-लेखक, साधुश्रेष्ठ श्रीयुत टी० एल्० वास्वानी ; अनुवादक, बाबू वेणीमाधव अग्रवाल एम्० ए०, प्रोफ़ेसर, नालंद-कॉलेज, बिहार ; प्रकाशक, हिंदी-ग्रंथ-रत्नाकर कार्यालय (बंबई); पृष्ठ-संख्या १००; मूल्य ॥≡), सजिल्द का १=)

साधुवर वास्वानी के लेखों से अँगरेज़ी-शिक्षित समाज कई वर्षों से परिचित है। भारत में प्रकाशित प्रत्येक सम-सामयिक पत्र-पत्रिका में उनके लेख प्रकाशित होते रहते हैं। हिंदी में भी उनके लेखों का अनुवाद हो रहा है। प्रस्तुत पुस्तक में वास्वानी महाशय के तीन सुंदर ग्रंथों का अनुवाद है। अनुवाद अच्छा है, और छपाई-सफ़ाई भी मनोहर है। इस पुस्तक का जितना प्रचार होगा, उतना ही देश का कल्याण होगा। अनुवादक तथा प्रकाशक महाशयों को बधाई दी जाती है, और आशा की जाती है कि वे उनके अन्य लेखों का भी शीघ्र ही अनुवाद प्रकाशित करेंगे।

भवानीशंकर याज्ञिक

× × ×

३. गुजराती

कौमुदी (त्रैमासिक)—संपादक, श्रीयुत विजयराय-कल्याणराय ; मिलने का पता, आर० वनमालीदास ऐंड कंपनी नं० ३६०, कालबादेवी-रोड, बंबई ; वार्षिक मूल्य ४॥), एक प्रति का १)

कौमुदी चार वर्ष से गुजराती-साहित्य की अमूल्य सेवा कर रही है। यों तो गुजराती में पत्र-पत्रिकाओं की कमी नहीं ; सभी अपने-अपने ढंग से साहित्योन्नति में न्यूनाधिक योग दे रहे हैं ; पर स्थायी साहित्य की सुंदर सामग्री समुपस्थित करने का सौभाग्य कौमुदी को ही प्राप्त है। इसमें साहित्य और कला का ख़ासा विवेचन रहता है। हमारे सामने इस समय गुजरात के कवि-सम्राट् न्हानालाल का जन्म-सुवर्ण-महोत्सव-अंक है। इसमें कवि-सम्राट् के जीवन, साहित्य-सेवा, उनकी लेखन-कला, व्यवहार, निरंकुशता और वृत्तियों पर गुजरात के लब्धप्रतिष्ठ लेखकों और लेखिकाओं ने अनेक दृष्टि से विचार किया है। लेख प्रायः सभी अच्छे, सुंदर तथा सरल भाषा में लिखे गए हैं। सादगी और सुंदरता में कौमुदी किसी से कम नहीं। आडंबर और तड़क-भड़क की इसमें गुंजाइश नहीं।

आशा है, इस प्रकार हमारे हिंदी-पत्र-पत्रिकाओं के संपादक और अध्यक्ष भी हिंदी के धुरंधर और सर्वमान्य जगत्-प्रसिद्ध कवियों और लेखकों के नाम पर भी समय-समय पर विशेषांक प्रकाशित कर उनके प्रति श्रद्धा प्रकट करते रहेंगे।

× × ×

बंबई-समाचार (दैनिक और साप्ताहिक)—इस अंक का मूल्य २)। मिलने का पता है—मिस्टर नवरोजजी होरमसजी बेलग्रामवाला, ११७, फ़ीयर रोड, नई जनरल पोस्ट आफ़िस के सामने, बंबई।

सदा की भाँति इस बार भी बंबई-समाचार के दीवाली के ख़ास अंक में साहित्य और कला का अत्यंत सुंदर समावेश है। अनेक हिंदी-हितैषी योरपियन लेखक और लेखिकाओं के, सामयिक समस्याओं पर पूर्ण और प्रौढ़ विचार से परिपूर्ण, लेखों ने तो इस अंक का महत्त्व और भी बढ़ा दिया है। सभी लेख पढ़ने और मनन करने योग्य हैं। गुजराती के भी धी-धुरंधर, प्रकांड प्रतिभावाले लेखकों के लेखों ने इस अंक को स्थायी साहित्य में स्थान प्राप्त करने के लिये सर्वथा योग्य बना दिया है। चारु चित्रों का चुनाव भी प्रशंसनीय है। पर सुंदर, भावपूर्ण और कमनीय कविताओं के यथेष्ट समावेश का अभाव कुछ खटकता है। अन्यथा अंक को सर्वोत्तम कहने में अत्युक्ति नहीं। पर इस अंक में विज्ञापनों की भरमार ने इसकी काया-वृद्धि में काफ़ी कमाल कर दिखाया है।

× × ×

शारदा (सचित्र मासिक पत्र)—संपादक, श्रीयुत गोकुलदास-द्वारकादास रायचुरा, चोरवाड़ (काठियावाड़) ; वार्षिक मूल्य ६॥) ; प्रति संख्या ।॥) ; संपादक से प्राप्य।

गुजराती-साहित्य में शारदा भी अपना एक विशेष स्थान रखती है। काठियावाड़ के लोक-साहित्य और वहाँ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के रहन-सहन का यह अच्छा परिचय कराती है। विविध विषय-विभूषित साहित्य और कला का यह अच्छा नमूना है। छपाई-सफ़ाई और चित्रों की दृष्टि से भी यह किसी से कम नहीं है।

× × ×

नव-चेतन (सचित्र मासिक पत्रिका)—संपादक, श्रीयुत चापशी उद्देशी, नं० १४, अमरतल्ला स्ट्रीट, कलकत्ता ; वार्षिक मूल्य ६॥) ; प्रति संख्या ।॥) ; संपादक से प्राप्त।

अपने ढंग की यह भी पत्रिका अच्छी है। छपाई-सफ़ाई और मेकअप आदि में किसी से कम नहीं। चित्र भी सुंदर और भावपूर्ण रहते हैं। लेख और कविताएँ भी अच्छी हैं। इसके टाइटिल का चित्र बंगाल के किसी पत्र में प्रकाशित हो चुका है। ऐसे कला-प्रिय संपादक को इसके लिये कोई ख़ास और नया ही चित्र बनवाना था, न कि बँगला की शरण लेनी थी।

× × ×

समालोचक (मासिक पत्रिका)—संपादक और प्रकाशक, श्रीयुत रमणीयराम-गोवर्धनराम त्रिपाठी, नं० ३४०, डॉ० पाई बिल्डिंग, सैंडहर्स्ट-रोड, बंबई, नं० ४० ; वार्षिक मूल्य ६), एक प्रति ॥=)

गुजराती-साहित्य की यह कई वर्षों से सेवा कर रहा है। इसके लेख भी गंभीर और मननपूर्ण होते हैं। और पत्र-पत्रिकाओं की तरह इसमें तड़क-भड़क और नित्य नई नवीनता नहीं देखने को मिलेगी।

× × ×

समाज-जीवन (स्त्रियोपयोगी सचित्र मासिक पत्रिका)—संपादिका, श्रीयुत लक्ष्मी बहेन गो० डोसाणी, १२३, गुलाबवाड़ी गिरगाँव, बंबई ४ ; वार्षिक मूल्य ४), एक प्रति १)

स्त्रियों के लिये यह एक अच्छा पत्र है। कभी-कभी इसमें समाज की प्रचलित बुराइयों की भी अच्छी आलोचना रहती है। छपाई-सफ़ाई साधारण है।

आवश्यकता है !

हिंदी की सर्वश्रेष्ठ मासिक पत्रिका

सुधा

और

सुप्रसिद्ध गंगा-पुस्तकमाला

की सर्वोत्कृष्ट पुस्तकों का और भी अधिक प्रचार करने के लिये हमें और १०० स्थानीय और ट्रैवलिंग एजेंटों की आवश्यकता है। हमारे एजेंट १००)-२००) तक कमा रहे हैं। कारण, हमारी पत्रिका और किताबें हिंदुस्थान-भर में ख़ूब मशहूर हो चुकी हैं। लाखों मनुष्य उन्हें पढ़ रहे हैं। अतएव उनकी खपत एजेंट लोग आसानी के साथ—थोड़े-से परिश्रम से ही, अन्य मासिक पत्रिकाओं और पुस्तकों की अपेक्षा कहीं अधिक, कर लेते हैं। दिखलाते ही लोग उनके ग्राहक बन जाते हैं। फिर बाहरी—हिंदुस्थान-भर के प्रकाशकों की—हिंदी-पुस्तकें भी भर-पूर कमीशन पर हम उनको बेचने के लिये देते हैं। क्या ये सब सुविधाएँ और कहीं उन्हें मिल सकती हैं ? लेकिन ५०) या १००) की ज़मानत ज़रूरी है। जो सज्जन ज़मानत जमा करके हमारे एजेंट या ट्रैवलिंग एजेंट बनना चाहें वे कृपा करके हमसे एजेंटों के लिये नियम मँगा लें और फ़ौरन् एजेंट बनकर हिंदी-सेवा के पुनीत कार्य में हमारा हाथ बटाएँ और ख़ुद भी रुपया कमाएँ।

'समय चूकि पुनि का पछिताने ;
का बरषा जब कृषी सुखाने।'

इस समय हमारी पत्रिका और पुस्तकों की चारों ओर धूम मची हुई है। अतएव हिंदी-प्रेमी एजेंटों के लिये हिंदी-सेवा करने, आर्थिक लाभ उठाने और प्रचार-कार्य में अपना अनुभव और अभ्यास बढ़ाने के लिये यही सबसे उपयुक्त समय है।

मैनेजर सुधा, लखनऊ

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

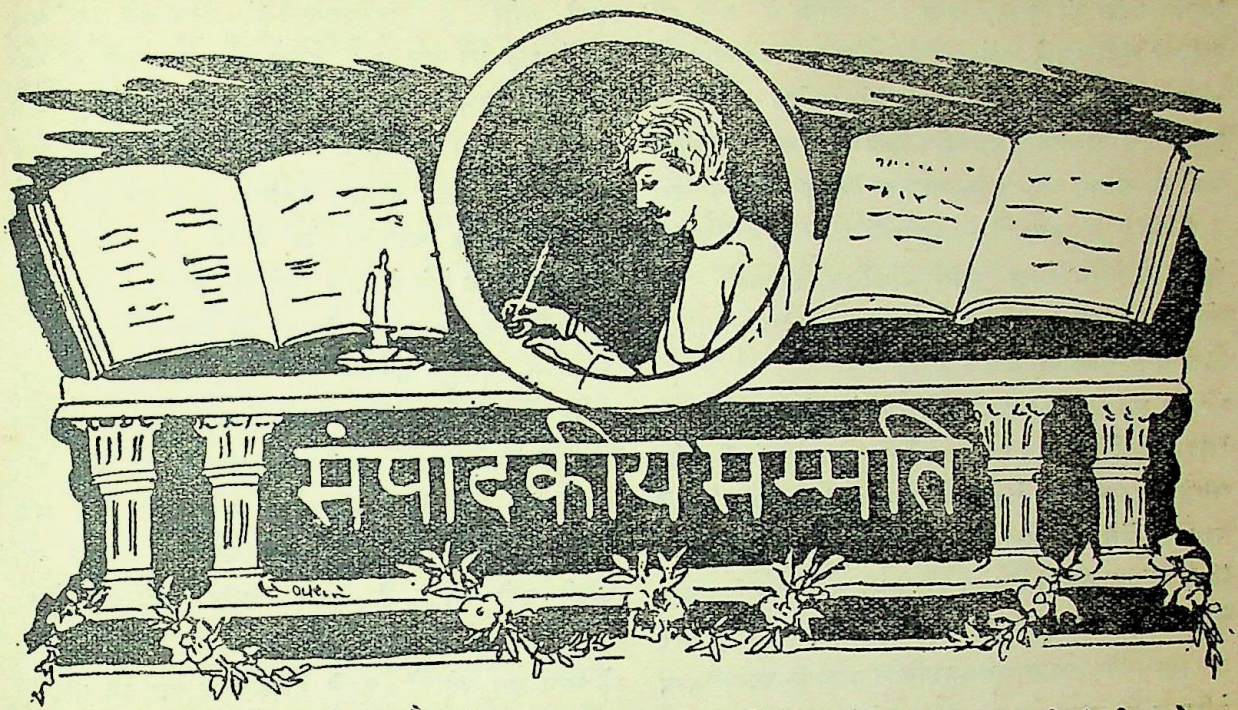

१. भारत की वर्तमान स्थिति और शिक्षा

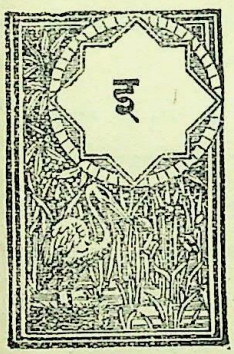

इस दीन, हीन, पद-दलित, दास-वृत्ति-परिचालित देश को हो क्या गया है ! अत्यंत कायर, क्षीण, तथा घृणित जीव भी इसे काट खाने का साहस करता है, मिस मेयो-जैसी तुच्छ, उपेक्षणीय नारी भी इसके मुँह पर थूकने का दम भरती है। तब भी यह पराधीन देश, जड़ता-ग्रस्त होने के कारण, मौन होकर सब बातें सह लेता है। इसीलिये कहते हैं, इस देश को हो क्या गया है ! कमीशन का इतना बड़ा जाल रचकर ब्रिटिश सरकार दिन-दहाड़े इसे उल्लू बनाने में लगी है; पर यह सिर्फ़ कराहने और चिल्लाने के अतिरिक्त अपनी निरुपायावस्था का कोई इलाज ही नहीं ढूँढ पाता। इसके चिल्लाने से असर क्या हो सकता है ! इससे सिर्फ़ उन लोगों को हँसने-हँसाने का अधिक मसाला मिलता है, जो इसकी करुण स्थिति का नाम-मात्र भी ख़याल न करके इसे बुरी तरह से उल्लू बनाने में लगे हैं।

अरे भैया, इतने दिनों तक चिल्लाते-चिल्लाते कुछ भी असर न हुआ, आज अनोखी बात क्या होगी ! सभा-समितियों के विरोध से, बॉयकाट के प्रस्ताव से तथा इसी प्रकार की दूसरी बातों से प्रहसन का मसाला ही संगृहीत होगा, लाभ कुछ नहीं। सिर्फ़ इस प्रकार चिल्लाकर ही जो नेता लोग अपना कर्तव्य पूरा हुआ समझते हैं, वे धन्य हैं। पर इतने वर्षों के कठोर अनुभव से लोगों को मालूम हो गया है कि देश को भीतर की तरफ़ से सुसंस्कृत किए बिना बाहरी आंदोलनों से कभी कुछ न होगा। उतना प्रबल असहयोग-आंदोलन भी जब असफल हो गया, तो अब हम लोगों की आँखें खुल जानी चाहिए। हमें देखना चाहिए कि इस असफलता की जड़ में क्या बात है। हमारे देखने में तो यही आता है कि हमारे नब्बे फ़ी सदी लोगों में अभी आत्मचेतना (Self-Consciousness) जागरित नहीं हुई। सामयिक उत्तेजना कभी स्थायी नहीं रह सकती। जब तक हमारे जन-साधारण (People) की नस-नस में शिक्षा द्वारा आत्मचेतना का भाव जागरित नहीं किया जायगा, तब तक सभा-समितियों तथा कौंसिलों के सब छायात्मक प्रस्ताव व्यर्थ हैं। श्रद्धेय मालवीयजी यह बात समझ गए थे। यही कारण था कि असहयोग-आंदोलन के जोश में आकर उन्होंने हिंदू-विश्वविद्यालय का अस्तित्व मिटा देना नहीं चाहा; बल्कि जी-जान से उसे सुरक्षित रखने की चेष्टा की। कई लोगों ने उन्हें गालियाँ सुनाईं, सत्याग्रह का भय दिखाया; पर वह अपने कर्तव्य-पथ पर डटे रहे। शिक्षा तथा संस्कृति का मूल नष्ट करके,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नितांत बर्बरों की तरह, क्षणिक उत्तेजना से, यदि हम राष्ट्र का झंडा उठाने चलें, तो वह झंडा हमारी मूर्खता को समस्त संसार के सामने घोषित करेगा। हम लोगों को तह तक जाना होगा। हम लोग जिस शक्ति को राजनीतिक चक्रों में लगाते हैं, उसे बटोरकर यदि समस्त देश में शिक्षा तथा संस्कृति के प्रचार में लगा दें, तो आत्म-चेतना से प्रेरित होकर हमारे अशिक्षित देशवासी राजनीति का वास्तविक स्वरूप देख सकेंगे और उसका वास्तविक अर्थ समझ पावेंगे।

हम यह नहीं कहना चाहते कि देश में राजनीति की आवश्यकता नहीं। इसकी ज़बर्दस्त आवश्यकता है, और जब तक इस संबंध में हमारे राष्ट्रीय नेता विशेषता नहीं प्राप्त कर लेंगे, तब तक देश की अन्य प्रकार की उन्नतियों में बाधा पड़ सकती है। पर इससे भी अधिक आवश्यकता देश की मूल-आत्मा—मूल-चेतना के विकास की है। जब तक स्वाभाविक रूप से प्रत्येक व्यक्ति के हृदय में आत्मचैतन्य प्रेरित न हो जाय, तब तक वह अपने राष्ट्र की पराधीनता का मूल-भाव ही समझ नहीं सकता। वर्तमान सरकार का निरतिशय कठिन शासन बाहरी चीख़ों से कभी नहीं दब सकता। जब तक हमारी समस्त आत्मा अपनी समस्त अंतरतम शक्ति से इसका विरोध नहीं करेगी, तब तक कुछ होने का नहीं। पर यह आत्मचेतना तो व्याख्यान-वैचित्र्य के जोश से नहीं प्राप्त हो सकती। बिना सुशिक्षा तथा भीतरी संस्कृति के ज़ोर के इसका उन्मेष कभी नहीं हो सकता। सभी पराधीन तथा अर्द्ध-पराधीन देश शिक्षा के मूल-महत्त्व को अब समझने लगे हैं। टर्की, चीन, मिसर आदि देशों में शिक्षा का भयंकर आंदोलन आरंभ हो गया है। हम लोगों को भी अब समस्त शक्ति इसी ओर लगानी होगी। बिना इसके भारत का कल्याण नहीं है, बिना इसके मिस मेयो-जैसी स्त्रियाँ अवश्य हम पर थूकने का साहस करेंगी।

× × ×

२. भारत के मज़दूरों की क्या दशा है?

कानपुर में अखिल भारतवर्षीय मज़दूर-कांग्रेस का वार्षिक अधिवेशन बड़े समारोह के साथ गत नवंबर-महीने के अंत में, समाप्त हो गया। कई प्रस्ताव पास हुए, जिनमें मज़दूरों की वर्तमान दशा के सुधार के संबंध में भी एक प्रस्ताव था। सभी जानते हैं कि भारत के मज़दूरों की हालत कितनी गिरी हुई है। दिन-भर काम करके अपने सारे शरीर से 'नारायण-तैल' निकालने के बाद उन्हें मुट्ठी-भर अन्न भी अच्छी तरह से खाने को नहीं मिलता। जितनी कम मज़दूरी में भारत के मज़दूर काम करते हैं, उतनी पर संसार के किसी अन्य देश में कोई मज़दूर राज़ी नहीं होता। अमेरिका में जाकर हमारे यहाँ के मज़दूर माल बटोरकर घर लौटते हैं। हमारे देश में मज़दूरी के पेशे से माल बटोरने की बात तो कोसों दूर रही, एक आदमी के पेट का भी निर्वाह नहीं होता। कलकत्ता, बंबई, अहमदाबाद, पूना, नागपुर, कानपुर, अमृतसर आदि स्थानों की मिलों में काम इतना ज़बर्दस्त होता है कि जिन्होंने वहाँ के मज़दूरों को एक बार काम करते देखा है, वे उस दृश्य को कभी नहीं भूल सकते। अविराम कठिन परिश्रम करने से उनकी नसें ढीली पड़ी जाती हैं, सारा शरीर संकुचित होकर ऐसी अवस्था को प्राप्त हो जाता है, जैसे वे मृत्यु के साथ लड़ रहे हों। इतने परिश्रम के बाद भी यदि दो रोटियाँ खाने को न मिल सकें, तो उनका पाशविक जीवन पाशविकता की दृष्टि से भी सार्थक नहीं; क्योंकि पशु भी भर-पेट खाना पा ही लेते हैं।

इसके अतिरिक्त एक मज़ा और है। भर-पेट खाना तो हमारे मज़दूरों को नहीं मिलता; पर कड़ी मिहनत करने के कारण उन्हें अपनी मज़दूरी का पैसा नशेबाज़ी में फूकना ही पड़ता है—अन्यथा वे काम ही नहीं कर सकते। इस कारण उन पर दुधारी तलवार की मार पड़ती है। पशुत्व की मात्रा उनमें इतनी अधिक हो जाती है कि वे लोग स्त्री-पुरुष के संबंध में बेहद ज़्यादती करने लगते हैं, और इन सब कारणों से उनका स्वास्थ्य तथा जीवन नष्ट-भ्रष्ट हो जाता है।

मिलों तथा अन्य प्रकार के कारख़ानों के मालिकों को चाहिए कि वे मज़दूरों को अधिक संख्या में नियुक्त करें, और साथ ही उनकी मज़दूरी भी बढ़ावें। मिल के कठिन चक्र में इतने मज़दूर रात-दिन कितने निर्मम भाव से पिसे जाते हैं, यह देखकर उन लोगों को तनिक दया आनी चाहिए।

मज़दूरों के संबंध में हमारे देश में एक बात और देखने में आती है। वह यह कि हमारे यहाँ स्त्री-मज़दूरों को गर्भ-धारण की अवस्था में भी काम करना पड़ता है, और बच्चा जनने पर उसकी देख-रेख तथा पालन-पोषण

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के लिये उन्हें तनिक भी फ़ुर्सत नहीं मिलती। इस कारण कितने ही बच्चे गर्भावस्था में, और कितने ही उत्पन्न होने के थोड़े दिनों के बाद ही, निर्वाण-गति को प्राप्त होते हैं। यह कितनी निष्ठुर प्रथा है, ज़रा ख़याल करने की बात है। विलायत में रात-दिन मज़दूरों की हड़ताल तथा असंतोष के ही समाचार सुनने में आते हैं। पर वहाँ हमारे यहाँ के मज़दूरों की अपेक्षा बहुत अच्छी मज़दूरी मिलती है, और स्त्री-मज़दूरों को सब प्रकार की सुविधाएँ हैं। इतना होने पर भी वहाँ असंतोष है, और मज़दूरों ने एक संघ संगठित कर लिया है, जिसकी धाक इतनी जम गई है कि उससे वहाँ की सरकार भी थर्राती है। पर हमारा देश सदियों से दुःख-कष्ट तथा पाशविक अत्याचार सहने का आदी हो गया है। इस कारण उदासीन-भाव से सब बातें सहे जाता है।

किंतु अब इस स्थिति में रहने से काम नहीं चलेगा। मज़दूरों का एक ज़बर्दस्त दल गठित करके उनमें असंतोष फैलाना होगा, और जिन शहरों में मज़दूरों की अधिकता है, उनमें भयंकर आंदोलन मचाकर भीषण अग्नि भड़कानी होगी। हमारे नेताओं को मज़दूरों के प्रति वास्तविक सहानुभूति प्रकट करके, मौखिक तथा सभा-संबंधी बाहरी बातों में नहीं, व्यावहारिक तथा आभ्यंतरिक बातों में सहायता देनी होगी।

× × ×

३. केनिया में भारतवासी

दक्षिण तथा पूर्व-आफ़्रिका में प्रवासी भारतवासियों के प्रति कैसा घोर अत्याचार किया जाता है, इस संबंध में कुछ कहना व्यर्थ है; क्योंकि कथा बहुत पुरानी है। पर इतने चिल्लाने-झल्लाने पर भी, नक़्क़ारख़ाने में तूती की आवाज़ की तरह, हमारे प्रवासी भाइयों की शिकायतों पर बिलकुल ही ध्यान नहीं दिया जाता। वहाँ के योरपियन अधिवासियों के अत्यंत नीचता-पूर्ण तथा पाशविक व्यवहार के चक्र में हमारे भाई वर्षों से पिसते आ रहे हैं। केनिया में तो यह नीचता हद दर्जे तक पहुँच गई है। वहाँ के योरपियन अधिवासी भारतीयों को उत्कट घृणा की दृष्टि से देखते हैं। भारतीय और योरपियन लोगों के बीच वहाँ जो भेद-भाव वर्तमान है, उसे बढ़ाने में सरकार भी अपनी चाल चलने से नहीं चूकती। महात्मा एंड्रूज़ ने लिखा है कि वहाँ रेलवे-कंपार्टमेंट, थिएटर, होटल, चाय व काफ़ी-घर, यहाँ तक कि रिक्शाएँ तक भी विलायती लोगों के लिये सुरक्षित रक्खी जाती हैं; पर भारतीयों के सिरों में जूतियाँ पड़ती हैं। आप ने केनिया की राजधानी नैरोबी में एक ऐसे डॉक्टर का उल्लेख किया है, जो इलाज के लिये भारतवासियों के यहाँ जाना नहीं चाहता। जब कोई भारतीय किसी योरपियन की दूकान में कुछ सौदा ख़रीदने के लिये जाता है, तो उसे पिछवाड़े के रास्ते से होकर भीतर जाना पड़ता है—बाहर का रास्ता योरपियनों के लिये 'रिज़र्व' रक्खा जाता है। जब तक दूकान में कोई योरपियन ग्राहक ख़रीद-फ़रोख़्त से निबट न ले, तब तक भारत के 'कला आदमी' को मुँह खोलने का अधिकार नहीं है। यद्यपि हमारे भारतीय भाइयों की सहायता के बिना वहाँ योरपियन अधिवासियों का मज़दूरी का या दफ़्तर का काम निभ नहीं सकता, तथापि वे कभी किसी उच्च पद पर भूलकर भी प्रतिष्ठित नहीं किए जाते। ग़रज़ यह कि किसी घृणित तथा जघन्य जीव के प्रति भी लोग इतनी घृणा तथा प्रतिहिंसा का भाव पोषित नहीं करते, जितना केनिया के भारतीयों के प्रति प्रदर्शित किया जाता है। इसमें संदेह नहीं कि ये गोरे चमड़ेवाले ख़ास ख़ुदा के ही बच्चे हैं; पर क्या काले हिंदोस्तानी शैतान के पोष्य पुत्र हैं?

× × ×

४. अमीर अमानुल्लाख़ाँ

अफ़ग़ानिस्तान के बादशाह अमानुल्लाख़ाँ ने भारत में पदार्पण करके भारतवासियों के प्रति जिस सौहार्द का परिचय दिया है, वह सर्वथा सराहनीय है। आप के विचारों से जान पड़ा कि आप के हृदय में हिंदुओं के प्रति विद्वेष का भाव किंचित् भी नहीं है। आप ने हमारे देश के प्रति आंतरिक प्रेम प्रकट किया है। श्रीमती गांधी-जैसी भारत-महिलाओं के प्रति आप ने सम्मान का भाव प्रदर्शित किया। मुसलमानों में साधारणतः जो तंगदिली देखने में आती है, उसका आपमें लेश भी नहीं है। कांग्रेस की तरफ़ से भी अमीर को अभिनंदन-सूचक तार दिया गया था। उसमें इस बात का उल्लेख था कि अमीर ने अफ़ग़ानिस्तान में हिंदू-मुसलमानों के ऐक्य के संबंध में पूरी चेष्टा की है। हमें आशा है, अमीर हिंदुओं के प्रति सदा इसी प्रकार की सहृदयता पोषित करेंगे। उनका भारत में पदार्पण भविष्य में ऐतिहासिक दृष्टि से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भी महत्त्वपूर्ण समझा जायगा। भारत के मुसलमान नेताओं को उनकी प्रकृति की उदारता से शिक्षा ग्रहण करनी चाहिए।

× × ×

५. प्रवासी भारतवासी

प्रवासी भारतवासियों की संख्या कुछ कम नहीं है। परंतु उनकी असुविधाओं पर देश के लोगों की दृष्टि बहुत कम जाती है। देश की एक-मात्र राष्ट्रीय संस्था कहलानेवाली कांग्रेस भी इन बेचारों की ख़बर नहीं लेती। प्रवासी में प्रतिमास इन लोगों के संबंध में लिखा जाता है। हम यहाँ पर अगहन के प्रवासी से इन भारतीयों के कुछ समाचार देते हैं। नेटाल-प्रवासी भारतीयों की शिक्षा-व्यवस्था की जाँच में सहायता करने के लिये युक्त-प्रांत के शिक्षा-विभाग के भूतपूर्व डाइरेक्टर मिस्टर जे० एम्० किचलू और मद्रास के अंतर्गत सैदापेट के ट्रेनिंग कॉलेज की शिक्षयित्री मिस गार्डन ने दक्षिण-आफ्रिका की यात्रा की है। नेटाल-प्रवासी भारतीयों ने इस कमीशन के नियोग पर आपत्ति की थी। कारण, इस कमीशन में ऐसा कोई सदस्य नहीं था, जिसे उनके स्वार्थ के संबंध में सहानुभूति हो। किंतु भारत-सरकार ने मिस्टर किचलू के समान अभिज्ञ व्यक्ति को कमीशन का सहकारी बनाकर उक्त प्रवासी भारतवासियों के मन में आशा का संचार कर दिया है। माननीय मि० श्रीनिवास शास्त्री भी दक्षिण-आफ्रिका के भारतीयों में शिक्षा-विस्तार के लिये भरसक कोशिश कर रहे हैं। उन्होंने भारतीयों को विभिन्न कला-शिल्प की शिक्षा देने के लिये नेटाल में एक कॉलेज खोलने का इरादा कर लिया है। इसी बीच में इस कार्य के लिये ७५ हज़ार रुपए का चंदा हो गया है। डरबन की व्यवस्थापक-सभा में एक आईन बनाकर एशियाइयों को नशीली चीज़ों की दूकानों की नौकरी से अलग करने की कोशिश की जा रही है। व्यवस्थापक-सभा के गत अधिवेशन में ऐसे एक आईन का मसविदा पेश किया गया है, जिसका मतलब यह है कि एक साल के भीतर सभी नशीली चीज़ों की दूकानों से एशियावासी नौकर छुड़ा दिए जायँगे। इसका फल यह होगा कि अनेक भारतवासी बेकार हो जायँगे। माननीय श्रीनिवास शास्त्री ने इस विषय में हस्तक्षेप किया है, और अभी से वह ऐसी चेष्टा कर रहे हैं, जिसमें यह आईन पास न हो। केनिया की व्यवस्थापक-सभा के भूतपूर्व सदस्य मिस्टर शम्सुद्दीन हाल में पूर्व-आफ्रिका-प्रवासी भारतवासियों के दुःख और दुर्दशा का समाचार भारत-सरकार से कहने के लिये शिमले आए थे। एसोसिएटेड प्रेस के एक प्रतिनिधि से उन्होंने दुःख प्रकट करते हुए कहा था कि भारत-सरकार को प्रवासी भारतवासियों के कष्टों का हाल अच्छी तरह मालूम नहीं। प्रवासी भारतवासियों के बारे में जाँच करने के लिये सरकार का अलग कोई ख़ास दफ़्तर नहीं है। यही कारण है कि भारत-सरकार को इस विषय की पूरी जानकारी नहीं हो पाती। केनिया-प्रवासी भारतवासी कुलियों की दुर्दशा के संबंध में उन्होंने कहा—वहाँ के योरपियन किसान और व्यापारी भारतीयों के परिश्रम से प्राप्त संपत्ति का पूर्ण उपभोग करते हुए भी दिन-दिन उनके साथ अधिक कठोर व्यवहार करते जा रहे हैं। सन् १९०८ में लॉर्ड डैलमियर के बहकाने से ये व्यापारी भारतीय श्रमिकों का रक्त-शोषण करना चाहते थे; पर उनका उद्योग सफल नहीं हुआ। किंतु सर एडवर्ड ग्रेग के शासनकाल में लॉर्ड डैलमियर का दल फिर शक्तिशाली हो उठा है। अब की भारतीय विद्वेषी योरपियन व्यापारियों की भारतीयों को निकाल भगाने की, उनका रक्त-शोषण करने की चेष्टा अवश्य सफल हो जायगी। अंत में श्रीयुत शम्सुद्दीन साहब ने कहा कि भारत-सरकार और भारतीय नेताओं का प्रथम और प्रधान कर्तव्य यही है कि वे प्रवासी भारतवासियों की—ख़ासकर पूर्व एवं मध्य-आफ्रिका तथा ज़ंजीबार के भारतीयों की—दुर्दशा दूर करने में तत्परता से काम लें। हाल में मिस्टर आर० डी० कर्वे ने केनिया के डिमोक्रेट पत्र में एक लेख लिखकर उसमें दिखलाया है कि वहाँ के किसी भी शहर में भारतवासियों का ऐसा कोई क्लब नहीं है, जिसमें वे कुछ समय के लिये एकत्र हों और अपने सुख-दुःख पर विचार करें। हाँ, विभिन्न धर्म और संप्रदाय के भारतवासियों के अलग-अलग अपने क्लब अवश्य हैं। किंतु उनसे कुछ विशेष लाभ नहीं हो रहा है। उन्होंने भारतीयों के रहने के घरों के संस्कार के बारे में भी बहुत कुछ लिखा है। गत मास में दक्षिण-आफ्रिका से ३४० भारतीय मज़दूर भारत लौट आए हैं। ब्रिटिश-गायना का हाल यह है कि वहाँ के फ़ी सदी ४० निवासी भारतीय हैं। ख़बर मिली है कि वहाँ की राष्ट्रीय व्यवस्था में परिवर्तन कराने के लिये एक कमीशन बैठाया जा रहा है। वहाँ की व्यवस्थापक-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सभा वग़ैरह में भारतीयों की क्षमता और अधिकारों को घटाने के उद्देश्य ही से यह कमीशन बैठाया जा रहा है। ऐसा समझने के लिये यथेष्ट कारण हैं। अब तक भारतीयों को यह अधिकार प्राप्त था कि वे अपनी लोक-संख्या के अनुपात से वहाँ की राष्ट्रीय परिषद् में अपने मेंबर या प्रतिनिधि भेज सकते थे। अब यदि इस अधिकार पर हाथ साफ़ किया गया, तो वहाँ भी दक्षिण और पूर्व-आफ़्रिका के समान भारतवासियों की स्थिति हो जायगी। इस विषय में वहाँ आंदोलन किया जा रहा है।

× × ×

६. रामायण की रचना का समय

रामायण की रचना किस समय हुई थी, इसके संबंध में बराबर खोज करके पाश्चात्य पंडितों ने जो कुछ सिद्धांत कर लिया है, उसी को आँख मूँदकर मान लेनेवाले अनेक भारतीय विद्वान् मिलेंगे। परंतु इस विषय पर स्वयं गवेषणा करनेवाले बहुत कम देख पड़ते हैं। स्वर्गीय केदारनाथ मजूमदार महाशय इन्हीं बहुत कम आदमियों में से थे। आप संस्कृत के बहुत बड़े विद्वान् थे। आप का अध्ययन बहुत बढ़ा-चढ़ा था। रामायण की रचना के समय के संबंध में आप का जो मत था, वह आप के ही द्वारा संस्थापित सौरभ पत्र की गत भाद्रपद की संख्या में प्रकाशित हुआ है। हम पाठकों की जानकारी के लिये उसका सारांश यहाँ देते हैं। आप लिखते हैं—वेद के समय का निर्णय नहीं हुआ। गत शताब्दि के शेष भाग तक किसी भी विदेशी पंडित ने वेद को ख्री० पू० १५००-२००० वर्ष से अधिक प्राचीन नहीं बतलाया था। वर्तमान शताब्दि में लोक० तिलक महाराज के वेद-समय-संबंधी मत की समालोचना करते हुए प्रो० जेकोबी, ओल्डेनबर्क आदि पंडितों ने वेद को ख्री० पू० ४५०० वर्ष तक का प्राचीन मान लिया। इसके बाद असीरिया में बागोचकोई स्थान की खुदाई होने के बाद और आधुनिक भारत के सीमा-प्रांत की आलोचना करने से वैदिक युग का फ़ासला क्रमशः बढ़ता ही चला जा रहा है। वेद के संबंध में जो अधिक श्रद्धा रखते हैं, वे वेद की रचना का समय आज से २०-२५ हज़ार वर्ष पहले मानते हैं। इस प्रकार के अनुमान का भी कुछ विशेष मूल्य नहीं है। हाँ, दशम मंडल (ऋग्वेद) की बहुत-सी ऋचाओं में इसका स्पष्ट प्रमाण मौजूद है कि किसी एक अंधकाराच्छन्न अतीत युग से वेद की रचना हो रही है, और प्राक्-बौद्ध-युग में संस्कृत-भाषा के प्रचलन के समय तक वह लिखा गया है। लोक० तिलक का मत है कि शतपथ-ब्राह्मण की रचना का समय ख्री० पू० २५०० वर्ष है। केदार बाबू लिखते हैं—किंतु हमारी राय में भारत में जब लिखने की कला या लिपि-विज्ञान का चलन हुआ, उसके बाद भिन्न-भिन्न वेदों का संग्रह जैसे लोगों की स्मृति (याददाश्त) के आधार पर किया गया, उसी तरह ब्राह्मण-ग्रंथों और उपनिषदों का भी संग्रह किया गया, और वे संग्रहकर्ताओं के नामानुसार भिन्न-भिन्न नामों से प्रसिद्ध हुए। यह लिपि-विज्ञान के प्रचार का युग ख्री० पू० दशम शताब्दि से छठी शताब्दि के बीच का कोई समय होगा। किंतु रामायण इस लिपि-युग के पहले ही रची जा चुकी थी। वैदिक युग के शेष भाग में, ब्राह्मण-ग्रंथों की रचना के समय, रामायण की भी रचना की गई थी। इसकी भाषा अत्यंत सहज संस्कृत है। इसका कारण यही है कि सर्वसाधारण में गीत के रूप में इसका प्रचार हुआ था। बौद्ध-युग में पाली-भाषा की उत्पत्ति हुई, और वही जनसाधारण की व्यावहारिक भाषा बन गई। अंत को अशोक के राज्यकाल में पाली-भाषा ही राजभाषा भी हो गई। रामायण में इस भाषा की कहीं चर्चा नहीं है। रामायण में अयोध्या-कांड के १८ और १९ सर्ग के सिवा अन्यत्र कहीं इस बौद्ध-युग का प्रभाव नहीं देख पड़ता। किंतु यह भी सर्ववाद-सम्मत है कि पूर्वोक्त दोनों सर्ग क्षेपक हैं। बौद्ध-युग में अयोध्या का नाम साकेत था। अयोध्या नाम बौद्ध-साहित्य में कहीं नहीं मिलता। इधर रामायण में साकेत नाम का कहीं ज़िक्र नहीं है। पाटलिपुत्र, श्रावस्ती, कपिलावस्तु, वाराणसी आदि स्थान बौद्ध-युग में चरम उन्नति को प्राप्त हो चुके थे। रामायण अगर बौद्ध-युग में या बौद्ध-युग के बाद रची गई होती, तो रामायण में पूर्व-भारत का जो विस्तृत वर्णन है, उसमें इन सब स्थानों के नामों का उल्लेख अथवा इनका वर्णन अवश्य देख पड़ता। रामायण का उत्तर-कांड बौद्ध-युग के बाद बना है। इसमें श्रावस्ती का उल्लेख है। राजकुमार लव ने इस नगरी को बसाया था। काशी का वाराणसी नाम बौद्ध-साहित्य में ही विशेष रूप से पाया जाता है। रामायण में काशी-राज्य का उल्लेख है; वाराणसी-नगरी का कोई उल्लेख नहीं है।। रामचंद्र जब मिथिला-नगरी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को गए हैं, उस समय रामायण में उस मार्ग और उस प्रांत का वर्णन दिया गया है। अगर उस समम पाटलिपुत्र, श्रावस्ती, कपिलावस्तु, वाराणसी आदि स्थानों के नाम देश में प्रसिद्ध होते, तो इस जगह रामायण में इनका उल्लेख अवश्य ही होता। रामायण में जिस विशाला-नगरी का वर्णन है, वह मिथिला के पास का एक राज्य था। बौद्ध-युग में मिथिला और विशाला, दोनों मिलकर वैशाली नाम से परिचित हुई थीं। इन सबके वर्णन से स्पष्ट प्रकट है कि इन स्थानों के अस्तित्व के पहले ही वाल्मीकीय रामायण की रचना की जा चुकी थी।

× × ×

७. धात्री-विद्या

कार्त्तिक के आयुर्विज्ञान-पत्र में डॉ० श्रीसुंदरीमोहन दास ने इस विषय पर बड़ा सुंदर लेख लिखा है। आजकल योरप में धात्री-विद्या की विशेष उन्नति हुई है। एक समय था, जब भारत में भी इस विद्या की अच्छी उन्नति हुई थी। इस संबंध में उक्त सज्जन लिखते हैं—आधुनिक पंडितों का कहना है कि धात्री-विद्या की उन्नति से किसी भी जाति की सभ्यता का अंदाज़ लगाया जा सकता है। धात्री-विद्या अगर सभ्यता का मान-दंड (तुला) है, तो फिर इसमें तनिक भी संदेह नहीं कि प्राचीन भारत सभ्यता के उच्च शिखर पर पहुँच चुका था। गर्भिणी के ऊपर आर्यों की विशेष दृष्टि थी। एथेंस और कार्थेज आदि देशों में भी गर्भिणी की बड़े यत्न के साथ रक्षा अवश्य की जाती थी, यहाँ तक कि प्राण-दंड की आज्ञा जिसे दी जा चुकी होती थी, ऐसा हत्यारा भी अगर गर्भिणी या प्रसूति (ज़च्चा) स्त्री के यहाँ पनाह लेता था, तो उसका पीछा नहीं किया जाता था, और उसकी सज़ा रद कर दी जाती थी। इस नियम का उल्लंघन करके पूर्वोक्त अपराधी का पीछा करनेवाले के लिये दंड का विधान था। किंतु भारतवर्ष में गर्भिणी की परिचर्या की व्यवस्था और भी उत्कृष्ट थी। अगर किसी की ग़लती या अत्याचार से गर्भिणी की घबराहट या चित्त-चांचल्य का कुछ कारण होता था, तो स्वयं भगवान् क्यों न हों, उनको दंड से छुटकारा नहीं मिलता था। भगवान् ने नृसिंह-रूप धारण करके जब हिरण्यकशिपु का वध किया था, तब उनके गर्जन से डरी हुई गर्भिणी स्त्रियों का गर्भपात होने के कारण उन्हें शाप स्वीकार करना पड़ा था, जिससे वैकुंठ छोड़कर मनुष्यलोक में उन्हें आना और स्त्री (सीता) के वियोग का कष्ट सहना पड़ा। इसी से आर्य लोगों ने कहा है—

"पूर्णामिव तैलपात्रमनसंक्षोभ्यान्तर्वत्नीं भवत्युपचर्या"

अर्थात् जैसे तेल से भरे बर्तन को बिना हिलाए-डुलाए सावधानी से रखते हैं, वैसे ही यत्न से गर्भिणी की परिचर्या करनी चाहिए। चरक के भ्रूण-तत्त्व और सुश्रुत के गर्भिणी-व्याकरण, मूढ़-गर्भ-निदान, सुसंतान-उत्पादन (Eugenics), हर महीने गर्भिणी के भिन्न-भिन्न आहार की व्यवस्था, उपर्युक्त धात्री-लक्षण, शिशु-परिचर्या, मंडलाग्र अंगुलि और युग्मशंकु आदि अस्त्रों के प्रयोग, कठिन प्रसव में शिशु के पैर को पकड़कर खींचने, उदरच्छेद-पूर्वक बच्चे को निकालने इत्यादि के वर्णन को पढ़ने से वास्तव में विस्मय होता है। इसी से तो Neuberger ने कहा है—

"Indian medicine was thus in possession of an imposing treasurer of knowledge and technical achievement and has found its way East and West along the path of commerce. Links can still be found uniting medicines of India with that of Greece. Through the instrumentality of the Arabs many Indian discoveries were carried far into the West."

अर्थात् भारतीय ओषधि-विज्ञान इस प्रकार अनुभव-जन्य ज्ञान तथा कौशल से भरा था। इसका प्रचार व्यापार के द्वारा प्राच्य तथा पाश्चात्य, सभी देशों में फैल गया है। जिन शृंखलाओं से भारतीय तथा ग्रीक ओषधि-विज्ञान जुड़े थे, उनके चिह्न अब भी वर्तमान हैं। अरब लोगों के कला-कौशल के साथ इस संबंध में भारतीय आविष्कार पाश्चात्य देशों में भी प्रचारित हो गए।

असल बात यह है कि भारत के सभी चिकित्सा-तत्त्व बनिज के लिये आने-जानेवाले लोगों द्वारा पश्चिम में पहुँचाए गए हैं। भारत से अरब में, अरब से ग्रीस में और ग्रीस से योरप में भारत का चिकित्सा-तत्त्व-संबंधी ज्ञान फैला है। सुश्रुत का युग्मशंकु और चेंबर्लेन की गर्भ-सँडसी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक ही चीज़ जान पड़ती हैं। विभिन्नता यही है कि सुश्रुत ने अपने शिष्यों के निकट उक्त यंत्र के आकार-प्रकार और व्यवहार का वर्णन किया था, और चेंबर्लेन ने सौ साल तक अपने यंत्र की व्यवहार-प्रणाली अपने ही परिवार के लोगों से गुप्त रक्खी। भारत के ऋषि-मुनि ज्ञान-दान में सदा मुक्तहस्त रहे हैं। योरप में संभवतः ईसा के जन्म के ४०० वर्ष पहले, हिपोक्रेटिस के समय में, धात्री-विद्या के ज्ञान का कुछ-कुछ उन्मेष हुआ था। उनके समय में धात्रियों (दाइयों) का विशेष कार्य कदाचित् बच्चे की 'नाल' काटना ही था। इसी से उनके नाम का अर्थ था नाल काटनेवाली। हमारे देश में भी शायद दाइयों का यही प्रधान काम समझा जाने लगा है। ग्रीस में 'हिपोक्रेटिक' सौगंद के नाम से एक प्रवाद का चलन है। हिपोक्रेटिस चिकित्सक से यह सौगंद ले लेते थे कि वह गर्भ गिराने की दवा का प्रयोग कभी न करेगा। ईसा के जन्म के १३० वर्ष बाद गैलेन नाम के एक ग्रीक सज्जन एशिया-माइनर में पैदा हुए। उन्होंने धात्री-विद्या और शरीर-विज्ञान का भी अच्छा अनुशीलन किया। इस विषय में अपने समय के अन्य लोगों की अपेक्षा उनको अधिक ज्ञान था, इसी अपराध के कारण वह अपने कार्य-क्षेत्र रोम-नगर से भगा दिए गए। योरप में इन्हीं के द्वारा पहलेपहल चिकित्सा-विज्ञान का प्रचार हुआ था। इस समय भारत में धात्री-विद्या की उन्नति यथेष्ट नहीं है। इस विषय में जनता के ध्यान देने की अत्यंत आवश्यकता है।

× × ×

८. अब्दुलरशीद को फाँसी

अब्दुलरशीद को फाँसी हो चुकी। फाँसी के बाद उसकी लाश जब जलूस के साथ निकली, तो मुसलमानों ने दंगा करके हिंदुओं पर जो आक्रमण किए, वे सभी को विदित हैं। जलूस निकालकर मुसलमानों ने गोया यह स्पष्ट दिखाना चाहा कि अब्दुलरशीद स्वामी श्रद्धानंद की हत्या करके वास्तव में एक बड़ा शहीद निकला है। ख़ैर, जलूस निकालने में भी उतना हर्ज नहीं था; पर जलूस के बहाने हिंदुओं पर वार करना कितना नीचता-पूर्ण कार्य था, यह सभी समझ सकते हैं। इसके अतिरिक्त यह बात किसी से छिपी नहीं कि घातक अब्दुलरशीद को निर्दोष प्रमाणित करने की मुसलमानों ने इतनी चेष्टा की कि प्रिवी कौंसिल तक मामले की पेशी कराई। इस चेष्टा का उत्तरदायित्व अब्दुलरशीद के रिश्तेदारों पर बतलाया जाता है। पर कोई कुछ भी कहे, यह निश्चित है कि इस कार्य में बड़े-बड़े मुसलमान नेताओं का हाथ भी पीछे से था। एक धूर्त हत्यारे को पीछे से इतनी सहायता देना न्याय की हामी भरनेवाले मुसलमान-नेताओं को किसी तरह शोभा नहीं देता।

स्वामीजी की हत्या के लिये अब्दुलरशीद को पिस्तौल किसने दी थी, यह कुछ मालूम नहीं हुआ। पर लोगों का अनुमान है कि इस मामले में कुछ मुसलिम कुचक्रियों का हाथ था। सरकार ने अब्दुलरशीद को फाँसी तो दिलवाई; पर जिस विशेष दल का कारिंदा होकर उसने स्वामीजी की हत्या का साहस किया था, उसके संबंध में उसने कुछ भी खोज करना उचित नहीं समझा। जब तक इस विशेष दल का पता नहीं लगाया जाता, तब तक सब व्यर्थ है।

× × ×

९. मिस मेयो का रवींद्रनाथ पर आक्षेप

महामहिम, मायावती मिस मेयो ने अपना जगद्विख्यात मायास्त्र रवींद्रनाथ पर भी छोड़ा है। इस विश्व-वंदनीय कवि को भी उसने अपनी निर्लज्ज तथा घृणित उक्तियों की बौछारों का लक्ष्य बनाया है। उसने लिखा है कि रवींद्रनाथ बाल-विवाह के पक्षपाती हैं, और वह बाल-युवतियों में व्यभिचार के निवारण के लिये इस प्रथा का प्रचलित होना अत्यंत आवश्यक समझते हैं। न मालूम इस निर्लज्ज मिथ्यापवाद का मसाला उसने कहाँ से संग्रह किया है। रवींद्रनाथ ने न्यूयार्क के 'नेशन' पत्र के संपादक को इस संबंध में एक पत्र प्रकाशनार्थ भेजा है। उसमें उन्होंने दिखलाया है कि 'महामाया' का यह अपवाद कितना बेबुनियाद है। जिन लोगों ने ठाकुर महाशय की देश तथा समाज-संबंधी रचनाओं का भली भाँति अध्ययन किया है, वे जानते हैं कि वह इस प्रथा के कितने विरोधी हैं। उन्होंने अपने घर की लड़कियों का विवाह उस अवस्था में किया है, जब वे पूर्णरूप से विवाह का मूल-भाव समझने में समर्थ हो चुकी थीं। ऐसी स्थिति में उन्हें बाल-विवाह-प्रथा का पोषक बतलाना कितने अन्याय तथा नीचता की बात है, यह विचारणीय है।

× × ×

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१०. मिस मेयो और नपुंसकता

मेयो महाशया ने एक और घृणित अपवाद भारतवासियों पर आरोपित किया है । वह यह कि उनकी सम्मति में हमारे अधिकांश युवक पचीस वर्ष की अवस्था से पहले ही पुरुषत्व-हीन हो जाते हैं, इसलिये उनकी स्त्रियाँ व्यभिचारिणी होती हैं । असल में तो यह अपवाद एकदम झूठा है । तिस पर किसी स्त्री का पुरुषों की पुंसकता अथवा नपुंसकता के संबंध में वाद-विवाद करना हम सभ्य-समाज के अयोग्य समझते हैं । वह 'ब्रह्मचारिणी', 'निष्ठावती' कुमारी कैसी, जो यौन-विज्ञान (Sex, Psychology) के संबंध में सत्य की खोज के नाम पर इन घृणित (साथ ही घोर मिथ्या) विषयों की चर्चा में लीन रहे ! समझ में नहीं आता कि अपने को 'व्यभिचार-प्रूफ़' बतलानेवाली इस प्रकार की स्त्रियाँ क्योंकर इस बात का पता लगा लेती हैं कि कोई पुरुष पुंसक है या नपुंसक ! इसमें संदेह नहीं कि हमारा देश आज तामसिक मोह से आच्छन्न होकर नपुंसक बना है । नहीं तो एक तुच्छ रमणी उसे गालियाँ देकर, उसके मुँह पर थूककर संसार में इतना हल्ला मचाने और 'प्रसिद्धि' पाने में समर्थ न होती । तथापि जिस दृष्टि से यह रमणी-कुल-रत्न यहाँ के लोगों को पुरुषत्व-हीन बतलाती है, वह सर्वथा मिथ्या है । किसी उसके ही देशवासी ने इस अपवाद के निराकरण में लिखा है कि यदि भारत के युवक पचीस वर्ष की अवस्था में ही पुरुषत्व खो बैठते, तो तेंतीस करोड़ भारतीयों की इतनी भयंकर आबादी (जो दिन-दिन बढ़ती जाती है) अपनी भीषणता से ब्रिटिश लोगों को आतंकित न करती ।

× × ×

११. श्रीयुत हरविलास शारदा का विवाह-बिल

श्रीयुत हरविलास शारदा ने बड़ी व्यवस्थापिका सभा में यह प्रस्ताव पेश किया है कि १२ वर्ष से नीचे की लड़की तथा १५ वर्ष से नीचे के लड़के का विवाह क़ानून के अनुसार दंडनीय समझा जाय । यद्यपि हमारे देश में आजकल भी १५ तथा १२ वर्ष से कम अवस्थावाले लड़के-लड़कियों के विवाह के दृष्टांत विरल नहीं हैं, तथापि अब स्थिति पहले से बहुत कुछ सुधर गई है । जो कुछ भी हो, शारदा महाशय ने यह प्रस्ताव पेश करके देश-वासियों की दृष्टि इस कुप्रथा के निवारण की ओर आकर्षित की है, इसलिये वह सबके धन्यवाद के पात्र हैं । हमारे जले दिलों पर मिस मेयो ने जो नमक छिड़का है, उसका असर सब पर हुआ है । आगे के लिये हमें ऐसे कठोर आक्रमणों का अवसर ही विदेशियों को नहीं देना चाहिए । समस्त संसार में राजनीतिक क्रांति के साथ ही सामाजिक क्रांति फैली हुई है । हमें भी पीछे न पड़े रहना चाहिए । देश की कुप्रथाओं के निवारण के संबंध में 'उत्तिष्ठत जाग्रत' का मंत्र समस्त देशवासियों के कान में फूँक देना चाहिए ।

यद्यपि समाज में बाल-विवाह की प्रथा धीरे-धीरे स्वयं स्वाभाविक रीति से दूर होती जाती है, तथापि हमारे शास्त्री लोगों ने शारदा महाशय के बिल का विरोध किया है । शेष नाग की तरह धार्मिक जगत् का भार इन्हीं लोगों के सिर पर है, इसलिये प्राचीन प्रथाओं के निवारण से देश को रसातल में जाने देना वे नहीं चाहते । इन धर्माधिराजों की कृपा से ही आज तक हमारा देश अपना धार्मिक अस्तित्व क़ायम रखने में समर्थ है । भगवान् इन लोगों का भला करें । पर इन्हें समझ लेना चाहिए कि अब वह ज़माना लद गया, जब उनकी धौंस का लोगों पर असर होता था । अब वे लोग हज़ार सिर पटकें, देश आगे को ही बढ़ेगा । पीछे को देखने की फ़ुर्सत उसे नहीं ।

× × ×

१२. शाही कमीशन और मुसलमान

भारतीय नेताओं के इतने चिल्लाने पर भी पार्लियामेंट ने उनकी बात पर ज़रा भी ध्यान नहीं दिया, और भारत-सचिव की गंभीरता में नाम को भी परिवर्तन नहीं दिखलाई दिया, इसका कुछ विशेष कारण अवश्य ही है । अन्यथा विना संकोच तथा झिझक के कमीशन भारत के लिये पैर बढ़ाने का इरादा कभी न करता । हिंदू-मुसलिम तनातनी के समाचार अतिरंजित होकर ही विलायत पहुँचे हैं । यार लोगों ने देखा, अच्छा मौक़ा हाथ लगा है । यदि हिंदू कमीशन का बॉयकाट करेंगे, तो मुसलमान उनके ख़िलाफ़ अवश्य ही चलेंगे । विलायत के 'टाइम्स' पत्र ने स्पष्ट ही मुसलमानों को यह सुझाया है कि कमीशन को अपनाने का उनके लिये यह अच्छा-ख़ासा मौक़ा है । ऐसा करने से उन्हें विशेष प्रकार के अधिकार प्राप्त हो सकते हैं, जो हिंदुओं को नहीं मिल सकते । इत्यादि और भी कई बातें उसने लिखी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हैं। कमीशनवालों को यह बात भी उसने सुझाई है कि मुसलमानों की संख्या कुछ कम नहीं है। लगभग सात करोड़ है। ऐसी हालत में उन्हें अपनाने से अच्छा काम निकाला जा सकता है। तथास्तु।

इधर यद्यपि मुसलिम लीग ने बॉयकाट की ठानी है, तथापि मुसलमानों के कुछ दलों में कमीशन के प्रति सहकारिता का भाव प्रकट करने के संबंध में कानाफूसी हो रही है। यदि मुसलमानों का रुख़ ऐसा रहा, तो वे दीन और दुनिया, दोनों ओर से हाथ धो बैठेंगे, यह निश्चित है। यह प्रश्न समस्त राष्ट्र का है, किसी विशेष संप्रदाय अथवा दल का नहीं। ऐसी हालत में हिंदुओं और मुसलमानों को मिलकर उसका विरोध करना चाहिए।

× × ×

१३. राष्ट्रीय महासभा

इस कांग्रेस में नेताओं के लिये सबसे अधिक महत्त्व का प्रश्न भिन्न-भिन्न दलों तथा संप्रदायों के बीच ऐक्य स्थापित करने का है। आपस की लड़ाई और झगड़े के कारण वर्तमान स्थिति कैसी शोचनीय हो उठी है, यह सभी को विदित है। अब कमीशन ने सबकी आँखें खोल दी हैं। इसलिये देश की समस्त भिन्न-भिन्न शक्तियों को एकत्र करके उन्हें एक रूप में मिलित करना होगा। अन्य सब प्रश्न गौण हैं। मुख्य प्रश्न एकता का ही हमारे सामने उपस्थित है।

× × ×

१४. रवींद्रनाथ का प्राच्य-भ्रमण

रवींद्रनाथ ज्यों-ज्यों अधिकाधिक वृद्ध होते जाते हैं, त्यों-त्यों उनकी कर्मशीलता बढ़ती जाती है। डॉक्टरों ने यद्यपि उन्हें यह राय दी है कि वह अपने स्वास्थ्य पर दृष्टि रखकर पूर्णतया विश्राम करें, अन्यथा उनके अधिक अस्वस्थ होने का डर है, तथापि उनसे कर्महीन होकर रहा नहीं जाता। यह जगद्वंदनीय कर्मयोगी हाल में अपना मैत्री का संदेश लेकर प्राच्य-भ्रमण के लिये निकले थे। मलय, श्याम, बाली, जावा आदि प्रदेशों में जाकर, वहाँ के अधिवासियों को भारत का प्रेम-संदेश सुनाकर अब वापस आए हैं। उनका कहना है कि इन सभी प्रदेशों ने उनका हार्दिक स्वागत किया। मलय और श्याम के अधिवासी तो भारत का पूर्वकृत ऋण अब भी स्वीकार करते हैं। सभी जानते हैं कि प्राचीन काल में भारतीयों ने श्याम, मलय, बाली, जावा आदि प्रदेशों में जाकर अपने उपनिवेश स्थापित किए थे, और अपनी सभ्यता तथा संस्कार का प्रचार किया था। इन प्रदेशों के साथ भारतवासियों का व्यापार-संबंधी आदान-प्रदान अच्छी तरह चला करता था। भारतवासी जहाज़ों में चढ़कर समुद्र पार करके वहाँ जाते थे। पर काल के विराट् व्यवधान से अब इन प्रदेशों के साथ हमारा नाता ही बिलकुल टूट गया था। श्याम और मलय के निवासी तो अब तक भारत का पूर्व-ऋण स्वीकार करते हैं, पर बाली और जावा-द्वीपों के निवासी हमें क़तई भूल गए हैं; यद्यपि उनका कहना है कि रामायण तथा महाभारत की घटनाएँ उन्हीं द्वीपों में घटित हुई थीं। रामायण और महाभारत की घटनाओं से वे लोग भली भाँति परिचित हैं; पर भारत को बिलकुल भूल गए हैं। भारतवासियों का कर्तव्य है कि वे फिर नए सिरे से उन लोगों के साथ संबंध स्थापित करने की चेष्टा करें। रवींद्रनाथ ने इस कार्य का श्रीगणेश किया है। अब आगे हम लोगों का कर्तव्य रह गया है।

× × ×

१५. हिंदी में विज्ञापनबाज़ी

'आज' के २ दिसंबर के अंक में 'एक आलोचक' महाशय का 'हिंदी में विज्ञापनबाज़ी'-शीर्षक एक लेख छपा है। 'आलोचक' जी की लेखन-शैली से विद्वेष की बू आती है। मालूम पड़ता है, वह किसी पत्र के कर्मचारी हैं, और अपने प्रतिपक्षी किसी पत्र की निंदा के लिये उन्होंने उक्त लेख लिखा है। कारण जो कुछ भी हो, यह सच है कि वह किसी पत्र-विशेष से रूठे हुए हैं।

'आलोचक' महाशय लिखते हैं, कोई पत्र विज्ञापनों द्वारा लाभ उठाने के लिये नहीं, परंतु परोपकार अथवा देशोपकार के लिये चलाया जाना चाहिए। पत्रों के लिये यह जो अनुपम आदर्श निर्देशित किया गया है, वह प्लेटो के Republic अथवा मूर की Utopia की भूमिका में ही शोभा पा सकता है, व्यावहारिक संसार में इसका उपयोग नहीं हो सकता। सभी जानते हैं, हिंदी में जो पत्र-पत्रिकाएँ चल रही हैं, उनमें एक की भी ऐसी स्थिति नहीं, जिसे चलाने से उसके संचालकों को कुछ लाभ होता हो। 'विज्ञापनबाज़ी' के होते हुए भी जब पत्र-संचालक इतना घाटा सहते हैं, तो विज्ञापन बंद होने से क्या गति होगी, यह सोचने की बात है। हाँ, पत्र-संचालकों का यह कर्तव्य

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अवश्य है कि वे अपने पत्रों में कुरुचि-पूर्ण और झूठे विज्ञापन न छापें। 'विज्ञापन-कला' भी वास्तव में एक कला है। लोगों को कुरुचि की ओर न खींचकर और झूठी बातें न लिखकर जो व्यवसायी अपने विज्ञापन को इतना आकर्षक बना सकता है कि सबका ध्यान उसकी ओर आकर्षित हो, तो, अगर उसकी यह चेष्टा प्रशंसनीय नहीं है, तो निंदनीय भी नहीं।

पत्र-संचालक का यह कर्तव्य तो ज़रूर है कि झूठे विज्ञापन न छपें; पर कौन विज्ञापन झूठा है, कौन सच, इस संबंध में ठीक-ठीक निर्णय करना किसी व्यक्ति के लिये असंभव है। और, यदि संचालक अपने कार्यालय के संबंध में, उसकी प्रशंसा पर, कोई विज्ञापन छपाता है, तो लोगों का एकदम यह अनुमान कर लेना कि यह झूठा है और 'आपस की होड़ाहोड़ में' छापा गया है, कितना अनुचित होगा, ज़रा समझने की बात है। या कोई प्रतिष्ठित लेखक किसी पत्र-संपादक के पास ऐसा लेख प्रकाशन के लिये भेजे, जिसमें सभी पत्रों के संबंध में साधारण विचारों के साथ-साथ विभिन्न रूप से भी विचार किया गया हो, और उसमें उसके निजी पत्र का भी उल्लेख हो, तो क्या इस कारण से वह अस्वीकृत कर दिया जाना चाहिए? इस तरह से तो वह लेख छपने ही नहीं पावेगा। (क्योंकि उसमें सभी संपादकों का उल्लेख होगा), और पाठक समाचार-पत्रों की प्रगति के संबंध में एक अनुभवी लेखक के विचारों से वंचित रह जायँगे। यदि इस प्रकार के लेख के प्रकाशन को 'विज्ञापनबाज़ी' बताया जाय, तो ज़ुल्म होने लगे।

हम पहले ही कह चुके हैं कि विना विज्ञापनबाज़ी के कोई पत्र नहीं चल सकता। जनता के उपकार के लिये बा० शिवप्रसाद गुप्त ने कितने रुपए नहीं लगाए? उन्होंने कई ऐसे पत्रों को सहायता दी, जिनसे उन्होंने लाभ की किंचिन्मात्र आशा न करके सार्वजनिक हित की ही आशा की थी। पर 'विज्ञापनबाज़ी' पर दृष्टि न होने से क्या वे पत्र चले? यदि 'विज्ञापनबाज़ी' का ख़याल और विज्ञापन-कला का उचित उपयोग किया जाता, तो आज उन पत्रों से देश को अधिक लाभ होता। आलोचकजी ने 'त्याग-भूमि' के मत का उल्लेख किया है। 'त्याग-भूमि' के संबंध में हम कुछ नहीं कह सकते। पर हिंदी में कई ऐसे पत्र तबाह होकर ग़ायब हो गए, जिन्हें विशेष-विशेष स्थाओं से रुपए मिले, पर जो 'सस्ते साहित्य' का ख़याल करने और विज्ञापन की ओर ध्यान न देने के कारण बंद हो गए। यदि आलोचकजी यह चाहते हैं कि सभी पत्र इसी तरह 'पर-लाभार्थ' विनाश को प्राप्त हो जायँ, तो उनका आदर्श अवश्य विचारणीय है।

पर असल बात हम पहले ही कह चुके हैं कि आलोचकजी ने किसी पत्र-संपादक पर व्यक्तिगत आक्षेप करना चाहा है। प्रतिपक्षी दल के कर्मचारियों को ऐसा करना ही पड़ता है, इसलिये हम उन्हें दोष नहीं देना चाहते।

कुछ पत्रों ने सुधा पर भी विज्ञापनबाज़ी का दोष आरोपित किया है। हमारी समझ में तो हमने यदि सत्-साहित्य के प्रचारार्थ ऐसा किया भी होता, तो कुछ अनुचित न था। पर हमने इस संबंध में कोई ज़्यादती नहीं की है। जितनी 'विज्ञापनबाज़ी' हिंदी तथा बँगाल के श्रेष्ठ पत्र-पत्रिकाओं में देखने में आती है, सुधा में उससे अधिक कुछ नहीं किया गया।

× × ×

१६. अपने संबंध में

हमारे सुयोग्य साहित्य-सेवियों तथा हितैषी ग्राहकों और पाठकों की असीम कृपा से 'सुधा' के पाँच अंक निर्विघ्न निकल चुके, और आज यह छठा अंक भी सेवा में उपस्थित है। पाठक जानते हैं, हमने सुधा को सर्वांगसुंदर तथा सर्वोपयोगी बनाने में कोई बात उठा नहीं रक्खी है। प्रथम संख्या में सुधा के जो उद्देश्य निर्देशित किए गए थे, उनकी हमने यथाशक्ति पूर्ति की है। इन छः अंकों में साहित्य-संबंधी उत्कृष्ट लेख छपे हैं; प्राचीन तथा नवीन, सभी सुलेखकों की रचनाएँ प्रकाशित हुई हैं; स्त्री-समाज की वर्तमान दुर्गति तथा भावी उन्नति के संबंध में यथेष्ट लेख छप चुके हैं; समाज-सुधार की ओर भी हमने विशेष ध्यान दिया है; चित्रकला तथा संगीत की भी यथोचित चर्चा की है। सारांश यह कि हर तरह से हमने इसे लोकप्रिय और उन्नत बनाने की चेष्टा की है। हमारी चेष्टा असफल नहीं हुई। हमारे ग्राहकों तथा पाठकों को सुधा बहुत पसंद आई है, और उन्होंने इसे अपनाया है। इसका प्रमाण इसी बात से मिलता है कि छः महीने के भीतर-ही-भीतर सुधा के लगभग सात हज़ार ग्राहक हो गए हैं। यह हिंदी के मासिक साहित्य में एक अभूतपूर्व घटना है। हम पहले अंक में लिख चुके हैं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कि इस ख़ुशी में हम सुधा के पाँच विशेषांक निकालेंगे। तीन विशेषांक तो बहुत शीघ्र निकल जायँगे।

कुछ लोगों ने सुधा पर कुछ आक्षेप भी किए हैं। उनका कहना है कि इसमें कुरुचि को प्रश्रय दिया जाता है, और राजनीतिक लेख नहीं छपते। हमारी समझ में नहीं आता कि 'कुरुचि' से हमारे आक्षेपकों का क्या मतलब है। हम तो सर्वदा ऐसे लेख और चित्र प्रकाशित करते हैं, जिनसे समाज में उन्नत आदर्श प्रतिष्ठित हो सकें, और उच्च विचारों का प्रचार हो सके। निस्संदेह शृंगार-रस-संबंधी चित्र तथा कहानियाँ कभी-कभी, अन्य पत्रों की तरह, हम भी छापते हैं। हमारी तुच्छ सम्मति में शृंगार-रस सुकुमार कला का प्रधान अंग है। कुछ संयतावस्था में उसका आभास देना, कला की दृष्टि से, कुछ अनुचित नहीं। यदि हम लोग इतने नपुंसक तथा हीनबल हैं, कि इतनी-इतनी-सी बात से भी हमारी रुचि में विकार उपस्थित हो जाता है, तो हमें कालिदास की सभी रचनाओं को ख़ाक में मिला देना चाहिए; सूरदास, विहारी, देव आदि कवियों की कमनीय कृतियों में मिट्टी का तेल डालकर उन्हें भाड़ में झोक देना चाहिए—फिर कभी सुकुमार कला का उल्लेख ही साहित्य-संसार में न होगा। हमें आशा है, हमारे सुयोग्य पाठक-वृंद कला तथा नीति-संबंधी रुचि के संबंध में हमारे पक्ष में होंगे। हम कुरुचि का प्रचार भी नहीं करना चाहते, साथ ही नीरस साहित्य की चर्चा भी हमें पसंद नहीं। हमारा विचार भविष्य में स्त्री-समाज तथा समाज-सुधार-संबंधी लेखों की ओर अधिक ध्यान देने का है। हम प्रतिमास इस संबंध में सुप्रसिद्ध तथा प्रतिभाशाली लेखकों के दो-एक लेख विशेष रूप से प्रकाशित करना चाहते हैं। अतएव प्रतिभाशाली तथा अनुभव-प्राप्त लेखकों से हमारी प्रार्थना है कि वे इस संबंध में हमारा हाथ बटावें, और अच्छे-अच्छे लेख लिखकर भेजें। हम उन्हें यथोचित पुरस्कार देंगे। हमारे देश का स्त्री-समाज कितनी हीनावस्था में है, यह बात सभी को विदित है। पर हमारे प्रांत में यह हीनता सबसे अधिक मात्रा में वर्तमान है। हमारे प्रांत में ऐसी अनेक कुप्रथाएँ वर्तमान हैं, जो हमारे समाज की संकीर्णता का परिचय देती हैं। इन्हीं सामाजिक कुप्रथाओं के कारण कई ऐसे विघ्न हमारे सामने उठ खड़े होते हैं, जो हमारी देवियों की शिक्षा की प्रगति को अवरुद्ध करते हैं। इन सब कारणों से हमने ख़याल किया है कि स्त्री-समाज तथा समाज-सुधार-संबंधी लेखों पर विशेष रूप से ज़ोर दिया जाना चाहिए। आशा है, हमारे कृपाशील लेखकगण इस संबंध में हमारी सहायता करेंगे।

राजनीतिक लेखों तथा टिप्पणियों के संबंध में हम पर जो आक्षेप किए जाते हैं, वे सर्वथा भित्तिहीन हैं। छः महीने के भीतर हमारे यहाँ कितने ही राजनीतिक लेख प्रकाशित हो चुके हैं। इसके अतिरिक्त प्रत्येक मास हम राजनीतिक विषयों पर संपादकीय टिप्पणियाँ देते हैं। बिना राजनीतिक चर्चा के मासिक साहित्य अधूरा रहता है, यह बात हम अच्छी तरह से समझते हैं। हम आशा करते हैं, हमारे प्रेमी पाठक इस प्रकार के निर्मूल आक्षेपों पर ध्यान न देकर, हमारे परिश्रम का ख़याल करके, हमारा उत्साह बढ़ावेंगे।

शारीरिक उत्कर्ष (Physical culture)-संबंधी लेखों पर भी हम विशेष ध्यान रखने का विचार कर रहे हैं। हमारे नवयुवक यौवन की प्रथमावस्था ही में किस प्रकार जीर्ण-शीर्ण स्थिति को प्राप्त हो जाते हैं, यह बात सभी को विदित है। केवल मानसिक तथा नैतिक उत्कर्ष से जीवन-संग्राम में काम नहीं चलता। जब तक शारीरिक स्थिति ठीक नहीं रहेगी, तब तक हम अपने नवयुवकों से किसी प्रकार की उन्नति की आशा नहीं कर सकते। अतएव हम अपने कृपाशील लेखकों को इस संबंध में भी विशेषता-पूर्ण लेख भेजने के लिये आमंत्रित करते हैं।

इसके अतिरिक्त हम कुछ नए स्तंभ खोलने का भी विचार कर रहे हैं। इनमें से एक स्तंभ तो ऐसा रहेगा, जिस में देश-विदेश के पत्रों के चुने हुए लेखों का मर्म दिया जायगा। हिंदी-पत्रों के लेखों का चयन विशेषरूप से रहेगा। इससे हमारे ग्राहकों तथा पाठकों को यह लाभ होगा कि उन्हें अन्य हिंदी अथवा अँगरेज़ी-पत्रों के पढ़ने की आवश्यकता नहीं रहेगी। केवल सुधा पढ़कर ही वे सभी पत्रों का आनद पा सकेंगे।

अंत में हम अपने लेखकों तथा ग्राहकों से प्रार्थना करते हैं कि वे सर्वदा सुधा पर अपनी कृपा बनाए रहें, और सदा की तरह आगे को भी हमारा श्रम सार्थक करके हमें कृतार्थ करें।

× × ×

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१७. आत्मार्पण

सुधा की गत कार्त्तिक की संख्या में आत्मार्पण नाम का जो चित्र प्रकाशित हुआ है, उसका परिचय इस प्रकार है—चित्तौर के राणा राजसिंहजी के पास रूपगढ़ की राजकुमारी प्रभावती ने एक पत्र भेजा कि आप आकर मेरी रक्षा कीजिए ; क्योंकि यवन बादशाह औरंगज़ेब मुझे ज़बरदस्ती हर ले जाना चाहता है । यह पत्र पाकर राणा राजसिंह ने शरणागत राजकुमारी की रक्षा के लिये सैन्य-सज्जा की आज्ञा दे दी । राणा के एक वीर चूड़ावत-सरदार थे । वह अभी नवयुवक ही थे । उनका विवाह भी शीघ्र ही हुआ था । उन्होंने ही राणा साहब को राजकुमारी की रक्षा करने के लिये उत्साहित किया था । जब राणा ने युद्ध-यात्रा की तैयारी की, तब चूड़ावत-सरदार भी अपनी नव-विवाहिता पत्नी से बिदा होने गए । पत्नी से बिदा होकर चले तो, पर मन उनका उसी में लगा रहा । उनकी बातचीत से पत्नी को यह हाल मालूम हो गया था । चूड़ावत-सरदार ने महल से बिदा होने के बाद रास्ते से फिर नौकर द्वारा एक संदेश कहला भेजा, जिसका आशय यही था कि मैं तो जा ही रहा हूँ ; पर मेरा मन तुममें लगा हुआ है । पतिव्रत की रक्षा करना ; क्योंकि मेरा अब लौटकर आना असंभव है । रानी ने सोचा, सरदार का मन जब तक मुझमें लगा रहेगा, तब तक वह मन लगाकर युद्ध नहीं कर सकेंगे । मैं अपना अंत ही कर डालूँ, तो फिर निश्चिंत होकर वह युद्ध करेंगे, और तब अवश्य विजयी होंगे । यह सोचकर उस वीरांगना ने अपने हाथ से अपना सिर काटकर पतिदेव के पास भेज दिया । यह चित्र उसी समय का है । सरदारजी की स्त्री अपना सिर अपने हाथों काट रही है, और पति का भेजा हुआ नौकर सहमा हुआ सामने खड़ा है । आशा है, पाठकों को यह चित्र रुचिकर हुआ होगा ।

× × ×

१८. चित्र-परिचय

इस संख्या से हम रंगीन चित्रों का परिचय भी दिया करेंगे । कारण, हमारे अनेक पाठकों ने ऐसी ही इच्छा प्रकट की है । इस संख्या का पहला रंगीन चित्र है शकुंतला की बिदा । जिन्होंने कालिदास का अभिज्ञान-शाकुंतल नाटक पढ़ा है, उन्हें इस चित्र का परिचय देने की आवश्यकता नहीं । अन्य पाठकों के लिये इसका संक्षिप्त परिचय इस प्रकार है—महाराज दुष्यंत शिकार के लिये वन में गए थे । रास्ते में महर्षि कण्व का आश्रम मिला । राजा ऋषि के दर्शनार्थ आश्रम में गए । ऋषि आश्रम में नहीं थे । राजा का सत्कार महर्षि की पालित कन्या शकुंतला ने किया । इसका जन्म विश्वामित्र ऋषि के औरस से, मेनका अप्सरा के गर्भ से, हुआ था । दोनों में प्रेम हो गया । राजा ने महर्षि की अनुपस्थिति ही में गांधर्व विवाह कर लिया । ऋषि ने, आश्रम में आने पर, विवाह का अनुमोदन किया, और अपने शार्ङ्गरव आदि शिष्यों तथा वृद्धा गौतमी के साथ शकुंतला को उसकी सुसराल भेज दिया । यह उसी बिदा के समय का चित्र है ।

दूसरा रंगीन चित्र विवाह-विज्ञापन (प्रहसन) से संबंध रखता है । उसका परिचय पाठकों को इस संख्या में प्रकाशित विवाह-विज्ञापन के अंश से ही मिल जायगा ।

तीसरा रंगीन चित्र है बलि-प्रदान । यह महाकवि भवभूति के मालती-माधव नाटक से संबंध रखता है । विदर्भ-राज के मंत्री देवरात का पुत्र माधव बड़ा विद्वान्, सुंदर और चित्र-कला में निपुण था । पद्मावती के राजा के मंत्री भूरिवसु के एक परम सुंदरी कन्या थी । मालती उसका नाम था । दोनों में गुप्त प्रेम हो गया था । पर पद्मावती के राजा अन्य किसी के साथ मंत्रिकन्या का विवाह करना चाहते थे । उसका नाम था नंदन । क़िस्सा बहुत बड़ा है । संक्षेप में भी उसका वर्णन असंभव है । माधव ने सुना, नंदन के साथ मालती का ब्याह होनेवाला है । जब प्रत्यक्ष में आशा न रही, तब माधव ने निश्चय कर लिया कि श्मशान में जाकर महामांस बेचना चाहिए, कदाचित् उसी से कार्य सिद्ध हो । वह श्मशान पहुँचा । इधर तांत्रिक अघोरघंट ने देवी के आगे बलि-प्रदान करने के लिये अपनी चेली कपालकुंडला को किसी बलि-पशु की खोज में नगर भेजा था । वह सोती हुई मालती को उठा लाई । मालती को जब बलिदान के लिये तांत्रिक के श्मशान में खड़ा किया, तो उसने अंत समय माधव को नाम लेकर पुकारा—अर्थात् उसका स्मरण किया । माधव तो श्मशान में था ही, उसने वह पुकार सुन ली । वह तांत्रिक मालती का सिर धड़ से जुदा करना ही चाहता था कि इतने में माधव ने फुर्ती से आकर उसे ढकेल दिया, और मालती की रक्षा की । इसी समय का यह चित्र है ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीः

सुधा

विविध विषय-विभूषित, साहित्य-संबंधी, सचित्र

मासिक पत्रिका

वर्ष १, खंड १

श्रावण-पौष, ३०५ तुलसी-संवत् (१९८४ वि०)

अगस्त-जनवरी, १९२७-२८ ई०

प्रधान संपादक

श्रीदुलारेलाल भार्गव

श्रीरूपनारायण पांडेय

प्रकाशक

गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय, लखनऊ

वार्षिक मूल्य ६॥)] [छमाही मूल्य ३॥)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुद्रक तथा प्रकाशक
श्रीदुलारेलाल भार्गव, अध्यक्ष गंगा-पुस्तकमाला-
कार्यालय और गंगा-फ़ाइनआर्ट-प्रेस,
लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेख-सूची

१—पद्य

संख्या	लेख	लेखक	पृष्ठ
१.	अग्नि-परीक्षा	बाबू सियारामशरण गुप्त	२२
२.	अनुरोध	श्रीयुत जयशंकर "प्रसाद"	१६४
३.	अबोध	बाबू सियारामशरण गुप्त	५४४
४.	अभिलाष	श्रीरामलोचन शर्मा	३६४
५.	अभिलाषा	श्रीयुत जगन्नाथप्रसाद खत्री "मिलिंद"	६२
६.	अरुणोदय	श्रीयुत जगन्नाथप्रसाद खत्री "मिलिंद"	६४०
७.	अज्ञान	ठाकुर गोपालशरणसिंह	१६०
८.	आत्म-संगीत	श्रीयुत श्रीरत्न शुक्ल एम्० ए०	४८१
९.	आशा	श्रीयुत रामकिशोर शर्मा "किशोर"	६०१
१०.	उत्तेजिता	पं० अयोध्यासिंह उपाध्याय "हरिऔध"	१७२
११.	उषा.	श्रीयुत "गुलाब"	१८९
१२.	एक अप्रकाशित पत्र	पं० श्रीधर पाठक	३९०
१३.	एक मित्र को	पं० श्रीधर पाठक	५५०
१४.	करुण क्रंदन	श्रीयुत मोहनलाल महतो गयावाल "वियोगी," साहित्यालंकार	१७६
१५.	कलरव	पं० सुमित्रानंदन पंत	१७२
१६.	कलरव	पं० सुमित्रानंदन पंत	४३
१७.	चित्त-चोर	ठाकुर गोपालशरणसिंह	३६१
१८.	छविमयी	ठाकुर गोपालशरणसिंह	२७९
१९.	डाकू	बाबू सियारामशरण गुप्त	१३९
२०.	डॉक्टर	बाबू सियारामशरण गुप्त	६२२
२१.	दुर्योधन-विलाप	श्रीयुत "सनेही"	५३
२२.	दो साहित्यिक मित्रों के पत्र ...	स्व० पं० बदरीनारायण चौधरी "प्रेमघन" और पं० श्रीधर पाठक	२४१
२३.	नयन	पं० जगदंबाप्रसाद मिश्र "हितैषी"	४०६
२४.	निवेदन	बाबू जगन्नाथदास "रत्नाकर" बी० ए०	१६४
२५.	परीक्षा	श्रीयुत गोकुलचंद्र शर्मा बी० ए०	५०४
२६.	प्यासा	ठाकुर गोपालशरणसिंह	४८
२७.	प्रयाणोन्मुखी	बाबू सियारामशरण गुप्त	४०४
२८.	बाँसुरी	बाबू मैथिलीशरण गुप्त	१२१

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संख्या	लेख	लेखक	पृष्ठ
२९.	भिखारी	श्रीयुत "कंटक"	३७८
३०.	भीष्म-प्रतिज्ञा	बाबू जगन्नाथदास "रत्नाकर" बी० ए०	२७९
३१.	मधुप	पं० अयोध्यासिंह उपाध्याय "हरिऔध"	४२
३२.	मधुवन का माली	पं० इलाचंद्र जोशी	४३०
३३.	मनुहार	श्रीयुत देवीप्रसाद गुप्त "कुसुमाकर" बी० ए०, एल्-एल्०बी०	५११
३४.	मायावती	पं० इलाचंद्र जोशी	५१०
३५.	मिलन	पं० सोहनलाल द्विवेदी विशारद	५५०
३६.	लोचन	ठाकुर गोपालशरणसिंह	५४०
३७.	वर्षा	श्रीयुत "श्रीकर"	४२४
३८.	वर्षा का प्रथम आसार ...	पं० इलाचंद्र जोशी	२८१
३९.	विचित्र मानव-समाज	पं० रामनरेश त्रिपाठी	९
४०.	विनिमय	श्रीयुत मोहनलाल महतो गयावाल "वियोगी" साहित्यालंकार	६६९
४१.	विलाप	श्रीयुत "सनेही"	२६०
४२.	शांति	पं० जगदंबाप्रसाद मिश्र "हितैषी"	५४३
४३.	श्रीगणेश	बाबू जगन्नाथदास "रत्नाकर" बी० ए०	१
४४.	सुधा	श्रीरूपनारायण पांडेय (सुधा-संपादक)	१२९
४५.	सुंदरी	श्रीयुत "गुलाब"	६३९
४६.	स्मृति	ठाकुर गोपालशरणसिंह	६३१
४७.	स्वतंत्रता का दीपक	पं० रामनरेश त्रिपाठी	३६१
४८.	हूक	बाबू सियारामशरण गुप्त	२९७

२—गद्य

१.	अभिभाषण (गुरुकुल की रजत-जयंती के शुभ अवसर पर, युक्तप्रांतीय सप्तम हिंदी-साहित्य-सम्मेलन के सभापति-पद से, दिया गया)	श्रीदुलारेलाल भार्गव (सुधा-संपादक) ३ और १६९
२.	अलंकार-शास्त्र	साहित्याचार्य पं० शालग्राम शास्त्री, विद्यावाचस्पति ... २४२
३.	अशोक की शासन-व्यवस्था ...	पं० सत्यकेतु विद्यालंकार (प्रोफ़ेसर गुरुकुल-विश्वविद्यालय) ३९४
४.	अश्रु गारी बिहारी	पं० परशुराम चतुर्वेदी एम्० ए०, एल्-एल्० बी० ६६ और १७३
५.	अहिंसा का स्वरूप (कृष्ण और गांधी—आलोचनात्मक विचार)	श्रीयुत धर्मेंद्रनाथ शास्त्री, एम्० ए०, तर्कशिरोमणि ... १२२
६.	आधुनिक अफ़ग़ानिस्तान ...	श्रीयुत सुरेंद्र शर्मा ६२३
७.	आयुर्वेद	पं० चंद्रमौलि सुकुल एम्० ए०, एल्० टी० ... ३९४

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संख्या	लेख	लेखक	पृष्ठ
८.	कपड़े की बनावट (सचित्र) ...	श्रीयुत मोहनलाल बड़जात्या	३६८
९.	कला और नीति का संबंध ...	पं० हेमचंद्र जोशी बी० ए० और पं० इलाचंद्र जोशी ...	६०७
१०.	कविता में रहस्यवाद	श्रीयुत अवध उपाध्याय (प्रोफ़ेसर हिंदी-विद्यापीठ, प्रयाग)	४२५ और ५३३
११.	कुसुम-कुंज	पं० दयाशंकर दुबे एम्० ए०, एल्-एल्० बी०, बाबू मैथिली-शरण गुप्त, पं० गोविंदवल्लभ पंत, पं० बनारसीदास चतुर्वेदी, पं० लज्जाराम मेहता, श्रीयुत "रसिकेंद्र", पांडेय सकलनारायण शर्मा तीर्थत्रय, पं० लोचनप्रसाद पांडेय, श्रीमोहनलाल महतो "वियोगी" साहित्यालंकार, श्रीयुत जगदंबाप्रसाद मिश्र "हितैषी", (स्व०) पं० ईश्वरी-प्रसाद शर्मा, श्रीयुत जगन्नाथप्रसाद खत्री "मिलिंद", राय साहब प्रिंसिपल रघुवरप्रसाद द्विवेदी बी० ए०, साहित्य-रत्न, श्रीयुत भगवतीचरण वर्मा बी० ए०, श्रीयुत विपिनविहारी श्रीवास्तव, श्रीयुत "कंटक", श्रीयुत ए० राय "भारत-हृदय" एम्० ए०, पं० श्रीनारायण चतुर्वेदी "श्रीवर" एम्० ए०, एल्० टी०, श्रीयुत कौशलेंद्र राठौर, पं० शिवदुलारे त्रिपाठी "नूतन", पं० अंबिकाप्रसाद भट्ट "अंबिकेश", श्रीयुत अवंतविहारी माथुर, श्रीयुत मौलवी महेशप्रसाद आलिम-फ़ाज़िल, श्रीयुत मुकुंदीलाल गुप्त, श्रीयुत गुरुभक्तसिंह "भक्त" एम्० ए०, एल्-एल्० बी०, श्रीयुत "शिलीमुख" एम्० ए०, कुमारी सत्यवती (डलहौज़ी), पं० किशोरीदास वाजपेयी, पं० जगमोहन-प्रसाद शुक्ल "मोहन", श्रीयुत नंदकिशोर अग्रवाल चौधरी, पं० केदारनाथ मिश्र "प्रभात", श्रीमती चंदाबाई जैन, श्रीयुत श्रीकृष्णलाल लवानिया, श्रीयुत शिवराम, श्रीयुत शिवनंदनसहाय, श्रीयुत गोपीनाथ वर्मा और श्रीयुत सभामोहन अवधिया	७४, १९३, ३१३, ४३४, ५५३ और ६७७
१२.	क्या हिंदू-मुसलिम एकता संभव है ?	कुमारी गोपालदेवी हिंदी-प्रभाकर	५४०
१३.	खुली चिट्ठी	श्रीयुत रामावतार साहित्याचार्य, एम्० ए०	९६२
१४.	गवर्नर साहब का एक सत्परामर्श ...	आचार्य पं० महावीरप्रसाद द्विवेदी	३४
१५.	गोस्वामी तुलसीदासजी का काव्य-ज्ञान	प्रिंसिपल चंद्रमौलि सुकुल एम्० ए०, एल्० टी० ...	५१३
१६.	ग्वालियर में पुरातत्त्व (सचित्र) ...	ठाकुर सूर्यकुमार वर्मा	२४९
१७.	चित्र-कला	पं० हेमचंद्र जोशी बी० ए० (बर्लिन से), पं० इलाचंद्र जोशी, श्रीप्रफुल्लकुमार सरकार एम्० ए०	८७, २०६, ३२६, ४४७, ५६५ और ६८९
१८.	चित्रकार (सचित्र कहानी) ...	पं० विनोदशंकर व्यास	१८२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संख्या	लेख	लेखक	पृष्ठ
१९.	चीन का 'कुओमिनटांग'-दल ...	पं० देवव्रत शास्त्री (सह० संपा० प्रताप)	३६२
२०.	चंपतिराय	श्रीयुत व्रजरत्नदास बी० ए०	६३१
२१.	छायावाद	श्रीयुत अवध उपाध्याय (प्रोफ़ेसर हिंदी-विद्यापीठ, प्रयाग)	१८४ और २६१
२२.	तस्लीन (सचित्र कहानी) ...	आयुर्वेदाचार्य श्रीयुत चतुरसेन शास्त्री	३०४
२३.	"दुखवा मैं कासे कहूँ मोरी सजनी ?" (सचित्र कहानी) ...	आयुर्वेदाचार्य श्रीचतुरसेन शास्त्री	२९
२४.	परमार्थ-सिद्धांत	श्रीरत्नावती देवी (धर्मपत्नी श्रीयुत रामावतारजी साहित्याचार्य, एम्० ए०)	३९२
२५.	परलोक	अध्यापक रामदास गौड़ एम्० ए०	४३, १४७, २६६, ४१३, ५२७ और ६४४
२६.	पाश्चात्य सभ्यता के कुछ गुण ...	डॉक्टर देवीदत्त पंत बी० ए० (डबलिन से) ...	६४०
२७.	पुराण-तत्त्व	श्रीयुत रामावतार साहित्याचार्य, एम्० ए० ...	५५
२८.	पुस्तक-परीक्षा	श्रीयुत "श्री", एक रामायण-प्रेमी, पं० पद्मसिंह शर्मा, श्रीयुत विनोद, श्रीयुत प्रेमी, श्रीयुत विंध्येश्वर, प्रो० धर्मेंद्रनाथ शास्त्री, एम्० ए०, तर्कशिरोमणि, श्रीयुत जी० पी० श्रीवास्तव बी० ए०, एल्-एल्० बी०, रायबहादुर श्रीयुत हीरालाल बी० ए०, एम्० आर० ए० एस्० (रिटायर्ड डिपुटी कमिश्नर), श्रीयुत वैद्यनाथ मिश्र "विह्वल", श्रीयुत "परिचित", श्रीयुत ज़हूरबख़्श हिंदी-कोविद, श्रीयुत रामेश्वर, पं० मातादीन शुक्ल साहित्य-शास्त्री, श्रीयुत शिवशंकर शर्मा, श्रीयुत शास्त्री, श्रीयुत "ज्योतिषी", संपादक, साहित्याचार्य पं० शालग्राम शास्त्री विद्यावाचस्पति, पं० भवानीशंकर याज्ञिक, बी० एस्-सी० एम्० बी० बी० एस्०, "स", "ह", "च", "ज्ञ", कुमारी कौशल्यादेवी गोरोबाला, पं० इलाचंद्र जोशी और संपादक	१०५, २२४, ३४५, ४६३, ५८३ और ७०६
२९.	पेरिस की सौंदर्य-कला प्रदर्शिनी (सचित्र)	पं० हेमचंद्र जोशी बी० ए० (बर्लिन से)	४९३
३०.	प्रतिध्वनि (सचित्र कहानी) ...	श्रीयुत जयशंकर "प्रसाद"	६२
३१.	प्रतीक्षा (सचित्र कहानी) ...	श्रीयुत विनोदशंकर व्यास	२५८
३२.	प्रो० खानखोजे (सचित्र) ...	श्रीयुत आनंदराव जोशी	५१९
३३.	"बिहारी-रत्नाकर" (आलोचना) ...	डॉक्टर सर ज्यार्ज ए० ग्रियर्सन के० सी० आई० ई०, पी-एच्० डी०, डी० लिट्०, एल्-एल्० डी०, वागीश इत्यादि ...	१३७
३४.	बौद्ध-दर्शन	लाला कन्नोमल एम्० ए०	२८१
३५.	भक्ति (सचित्र कहानी) ...	श्रीयुत भवानीशंकर चौधरी बी० एस्-सी०, एक्स्ट्रा असिस्टेंट कमिश्नर	५०५

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संख्या	लेख	लेखक	पृष्ठ
३६.	भारत में सनातन निरीश्वरवाद ...	पं० हेमचंद्र जोशी बी० ए० (बर्लिन से)	६
३७.	भारतीय साहित्य, संगीत और कला का प्राण	पं० हेमचंद्र जोशी बी० ए० और पं० इलाचंद्र जोशी ...	३७६
३८.	भाषण	प्रिंसिपल रामदेव एम्० ए०	२८८
३९.	मनुष्यत्व की कसौटी (सचित्र कहानी)	श्रीयुत सुदर्शन बी० ए०	१५२
४०.	"मानस-हंस" (आलोचना) ...	पं० लक्ष्मीधर वाजपेयी (साहित्य-मंत्री हिं० सा० सं०) ...	४०६
४१.	यज्ञोपवीत	साहित्याचार्य पं० शालग्राम शास्त्री, विद्यावाचस्पति ...	५६
४२.	रजत (चाँदी)	प्रोफ़ेसर कविराज प्रतापसिंह	३०७
४३.	रावण की लंका	रायबहादुर श्रीयुत हीरालाल बी० ए०, एम्० आर० ए० एस्० (रिटायर्ड डिपुटी कमिश्नर)	५०
४४.	राष्ट्र-संघ	प्रिंसिपल श्रीनारायण चतुर्वेदी एम्० ए०, एल्० टी० (लंदन से)	१६१
४५.	विवाह-विज्ञापन (सचित्र प्रहसन) ...	पं० बदरीनाथ भट्ट बी० ए० ... ३७८, ५४४ और	६१२
४६.	'विश्वास'	श्रीयुत "शिलीमुख" एम्० ए० और श्रीयुत प्रेमचंद बी० ए०	२६६
४७.	विज्ञान-वैचित्र्य	श्रीयुत रमेशप्रसाद बी० एस्-सी०, केमिस्ट ८२, २०१, ३८१, ४४२, ५६१ और	६८५
४८.	व्यंग्य-विनोद	ऑनरेबुल पं० श्यामविहारी मिश्र एम्० ए० और रायबहादुर पं० शुकदेवविहारी मिश्र बी०ए०, श्रीयुत "सदानंद", श्रीयुत "अलबेला" कानपुरी, श्रीयुत "बख़्शीजी", श्रीयुत जी० पी० श्रीवास्तव बी० ए०, एल्-एल्० बी०, श्रीयुत "झंझट", स्व०पं०शिवनाथ शर्मा बी०ए०, श्रीयुत "बलई", हिंदी-भूषण बाबू शिवपूजनसहाय और श्रीयुत "मायावादी" ९७, २१६, ३३८, ४५६, ५७५ और	६९९
४९.	शिवाजी का जन्म-दिन ...	रायबहादुर पं० गौरीशंकर-हीराचंद ओझा	२५
५०.	शिक्षितों की बेकारी	श्रीयुत देवव्रत शास्त्री (सह० सं० प्रताप) ...	४८२
५१.	श्रीवीर-तत्त्व-प्रकाशक मंडल (सचित्र)	लाला कन्नोमल एम्० ए०	६२८
५२.	समाज का डर (सचित्र कहानी) ...	श्रीयुत पं० मोहनलाल नेहरू	६५२
५३.	समाज-सुधार	श्रीयुत शिरोमणि शर्मा, श्रीयुत संतराम बी० ए०, श्रीयुत जीवनचंद्र, ठाकुर सूर्यकुमार वर्मा, भाई परमानंदजी एम्० ए०, रायसाहब पं० रघुवरप्रसाद द्विवेदी बी० ए०, साहित्य-रत्न और पं० लज्जाराम मेहता १००, २१६, ३४१, ४५६, ५७८ और	७०२
५४.	सहयोग-संस्था और उसका उद्देश...	श्रीयुत शंकरराव जोशी डी०पी०,ए०जी०,एफ़्०आर०एच्०एस्०	६६६
५५.	साहित्य और उसकी पाठ-प्रणाली ...	श्रीयुत अवधकिशोरसहाय वर्मा "बाण" एम्० ए०, बी० एड्०	१६४
५६.	साहित्य-सूची	१०३, २२३, ३४४, ४६२, ५८२ और	७०५
५७.	सिनेमा के वस्त्राभूषण (सचित्र) ...	श्रीयुत प्रद्युम्नकृष्ण कौल (हिंदूपंच-संपादक) ...	१३०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संख्या	लेख	लेखक	पृष्ठ
५८.	सुधा (गद्य-काव्य)	हिंदी-भूषण बाबू शिवपूजनसहाय	२
५९.	संगठन-समस्या	भाई परमानंद एम्० ए०	६०२
६०.	संगीत-साधना	श्रीगुरु नानक, संगीत-शास्त्री श्रीनारायण-मोरेश्वर खरे, अज्ञात, श्रीहेतलाल शर्मा बी० एस्-सी०, श्रीकबीर, श्रीलालबहादुर-सिंह और श्रीगोविंदवल्लभ पंत ...	७२, १९१, ३११, ४३२, ५५१ और ६७५
६१.	संदेह (सचित्र कहानी)	पं० विश्वंभरनाथ शर्मा कौशिक	४१५
६२.	संपादकीय सम्मति		१०९, २२८, ३५०, ४६७, ५८८ और ७०९
६३.	संबलपुर (उड़ीसा) के चौहान राजों के हिंदी-ताम्रपत्र	पं० लोचनप्रसाद पांडेय	१७७
६४.	संसार की सबसे बड़ी रेल-सुरंग ...	पं० रामेश्वर-गौरीशंकर ओझा बी० ए० (रायबहादुर पं० गौरी-शंकर-हीराचंदजी ओझा के सुपुत्र)	३६
६५.	स्त्री-समाज	पं० हेमचंद्र जोशी बी० ए० (बर्लिन से), कुमारी गोपालदेवी हिंदी-प्रभाकर, श्रीयुत गोपीनाथ वर्मा, श्रीयुत पांडेय देवेंद्रनारायणसिंह, श्रीमती कौशल्यादेवी गोरोबाला, कुमारी सत्यवती (डलहौजी), श्रीयुत ज़हूरबख़्श हिंदी-कोविद, श्रीयुत महेंद्रप्रताप शास्त्री एम्० ए०, एम्० ओ० एल्०, पं० आनंदीप्रसाद मिश्र "निर्द्वंद्व", पं० मोहनलाल नेहरू, श्रीयुत वेणीमाधव मेहरोत्रा बी० काम०, श्रीयुत दुर्गादत्तरायऔर पांडेय देवेंद्रनारायणसिंह	९२, २११, ३३३, ४५१, ५७० और ६९४
६६.	स्वर्गीय पं० ईश्वरीप्रसाद शर्मा (सचित्र)	हिंदी-भूषण बाबू शिवपूजनसहाय	२७५
६७.	हमारे सामने सबसे बड़ा सवाल ...	पं० जनार्दन भट्ट एम्० ए०	१४२
६८.	हस्तरेखा और मनोविद्या ...	श्रीयुत अवधकिशोरसहाय वर्मा "बाण" एम्० ए०, बी० एड्०	६३५
६९.	हिंदी किसकी मातृभाषा है ? ...	पं० चंद्रदत्त शास्त्री (प्रोफ़ेसर काशी-विद्यापीठ) ...	३८६
७०.	"हृदय की प्यास" (आलोचना) ...	श्रीयुत जी० पी० श्रीवास्तव बी० ए०, एल्-एल्० बी०	२९९

चित्र-सूची

क—रंगीन

संख्या	चित्र	चित्रकार	पृष्ठ
१.	आत्मार्पण		४४१
२.	दीवानबहादुर		६३३
३.	धनुर्विद्या-शिक्षण		४८१
४.	पत्र-लेखन		२८४
५.	पनघट		५४५
६.	पुष्प-माला ...	श्रीयुत काशिनाथ-गणेश खातू	४०१
७.	बलिप्रदान		६६५
८.	मदन-दहन		३६१

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संख्या	चित्र	चित्रकार	पृष्ठ
९.	मन की दौड़	... ...	८१
१०.	महाकवि श्रीविहारीदास (४ रंग में)	...	१३७
११.	मुरली	... ...	१
१२.	रात	... ...	५१३
१३.	राम-जन्म	... ...	४१
१४.	वर्षा-विहार	... ...	१२१
१५.	शकुंतला की बिदा	... ...	६०१
१६.	शतरंज (४ रंग में)	... ...	२४१
१७.	शिव की बरात	... ...	१८५
१८.	सेठजी	... ...	२५२

ख—व्यंग्य

१.	असमंजस	श्रीयुत मोहनलाल महतो ...	५१२
२.	आदर्श गुरु	... ...	१९०
३.	आधुनिक नेता	... ...	७१
४.	उम्मेदवार	... ...	६४३
५.	अंध-विश्वास	... ...	५३९
६	क़ैदी	... ...	४३१
७.	बाजे का विरोध	... ...	१३६
८.	बेकार बी०ए०	श्रीयुत उत्तमसिंह तोमर बी० ए०	३९१
९.	रॉयल कमीशन	... ...	२८०
१०.	विकास का युग	... ...	४९
११.	सीमा-प्रांत के हिंदू	... ...	३१०
१२.	हमसे क्या मतलब !	... ...	६७४

ग—सादे

१.	अनाम, स्याम और कंबोज-भवन का चित्रपट	५०२
२.	"……अरे कुछ पूछो मत !" ...	३८५
३.	'अलेक्ज़ेंडर तृतीय'-पुल पर प्रदर्शिनी का बाज़ार	४९९
४.	आचार्य रामदेव एम्० ए० (स्वागत-समिति के अध्यक्ष)	२३१
५.	आल्प्स-पर्वत को आर-पार करनेवाली मशीनें	४०
६.	उदयगिरि की गुफा	२५३
७.	उदयेश्वर महादेव का मंदिर, उदयपुर, ज़िला भेलसा	२५३
८.	"उसमें से बचे हुए दो पैसे प्रभा हरी को देने लगी।"	५०६
९.	"उसी खिड़की में, उसी चौकी पर बैठे हुए बादशाह उसी तरह सलीमा की क़ब्र दिन-रात देखा करते हैं।"	३४
१०.	"एक पगली गंगा के तट से ऊपर की ओर चढ़ रही थी।"	६५
११.	एक प्रातःकाल, वनदेवियों का नृत्य ...	३२७
१२.	एक मनुष्य का वायुयान	८६
१३.	एक यूनानी युवती	३२८
१४.	एकाएक बिसाखी आकर गाड़ी के पास खड़ा हो गया और बोला—"ज़रा ठहर जाइए। बाजा आ ले।"	१५९
१५.	एंटोनियो मोरेनो	१३५
१६.	कफ़न में घड़ी	५६४
१७.	कार्ड-रूम	३७१
१८.	कांस्टेंस टालमेज़ की, २५० वर्ष पुराने ज़माने की, स्वयं तैयार की हुई, ८,००० पौंड लागत की पोशाक	१३४
१९.	केदोर्जे-फाटक	४९७
२०.	कोमोडो-द्वीप का अद्भुत जानवर ...	३२३
२१.	कोयले से बननेवाली कुछ चीज़ें ...	४४२
२२.	कोरो, युवावस्था में	२०७
२३.	कोरो, वृद्धावस्था में	२०८
२४.	"क्या काबुल में गधे नहीं रहते हैं ?" ...	६१७
२५.	"क्या मैं तुम्हारा आँचल आँखों से लगा लूँ ?"	३०
२६.	"ख़बरदार ! जो पाँव आगे बढ़ाया, तो पाँव	

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संख्या	चित्र	पृष्ठ
	ही तोड़ दूँगी। यह ब्राह्मण का घर है, चमार का नहीं।"	१५४
२७.	खिलौनों की प्रदर्शिनी का भवन ...	५००
२८.	घोसले में रहनेवाली मछली ...	५६३
२९.	चट्टानों के तोड़ने पर प्रकट हुए उष्ण जल के एक सोते का दृश्य	४०
३०.	चित्रकार ने "हाँ" कहते हुए उसके हाथ में चित्र दे दिया। तब उसने कहा—यह तो मेरी ही सूरत का चित्र मालूम पड़ता है। ...	१८४
३१.	चीटियाँ मृत चीटी को क़ब्र देने के लिये ले जा रही हैं	६८८
३२.	चीटियों का नाच	६८७
३३.	चंदेरी की जुम्मा-मसजिद	२५४
३४.	जर्मन-महिला (जिन्होंने जैन-धर्म में दीक्षा ली है, और जिनका नाम सुभद्रादेवी रक्खा गया है)	६३१
३५.	ज्योतिर्मय स्रोत (रात को इसकी शोभा होती थी)	४९४
३६.	डॉ० आर० ई० हाउस की दवा की परीक्षा हो रही है	२०३
३७.	डॉ० कूलिज़ और उनका यंत्र ...	८३
३८.	डॉ० डेविड वेशलर चमड़े की वैद्युतिक अवरोध की मात्रा का पता लगाकर सच-झूठ का निर्णय कर रहे हैं	२०२
३९	ड्राइंग-फ्रेम	२७१
४०.	तेरही का तोरण	२५४
४१.	तेली का मंदिर, ग्वालियर का क़िला ...	२५५
४२.	"दोनों मा-बेटियाँ केवल एक दीवार का व्यवधान होने पर भी आपस में न मिलीं।"	६६२
४३.	दो फ़ीट चौड़ी मोटरकार ...	५६३
४४.	धन कमाने के लिये उपवास करनेवाला ...	४४३
४५.	नए तर्ज़ की मोटर-साइकिल ...	५६३
४६.	नलों द्वारा तप्त शिलाओं पर जल छिड़का जा रहा है। सिम्प्लन-दर्रा और सिम्प्लन-रोड...	४१
४७.	नार्मा-टालमेज़	१३३
४८.	पवियों पोमोन (फाटक पर रेखागणित के... आकारों की सुंदरता पर ध्यान दीजिए। यह अभिव्यक्तिवाद का एक चित्र है) ...	४९८
४९.	पूज्यपाद श्रीधर्मविजयजी सूरि ...	६२८
५०.	पोलानिग्री द्वारा 'स्पेन की नर्तकी'-नामक फ़िल्म में पहनी हुई पोशाक	१३२
५१.	पं० जगन्नाथप्रसाद शुक्ल	११८
५२.	पं. भोलानाथ झा आई० सी० एस्० ...	६७८
५३.	पं० शिवनाथ शर्मा बी० ए० ...	११५
५४.	प्रसिद्ध उड़ाका सर ऐलन कोबम ...	३२३
५५.	प्रो० खानखोजे	५१९
५६.	प्रो० खानखोजे के पिता	५२५
५७.	प्रो० डब्ल्यू० एच्० एडी	६८६
५८.	प्रो० सत्यकेतु विद्यालंकार (प्रधान मंत्री) ...	२३२
५९.	प्रो० सत्यव्रत सिद्धांतालंकार (उपाध्यक्ष)	२३१
६०.	फ़ारसी क़लम, १६वीं सदी (फ़ारस का फ़क़ीर)	८७
६१.	फ़ारसी क़लम, सोलहवीं सदी (मुग़ल बादशाह, चेहरे की बनावट देखिए, मंगोल है)	८९
६२.	फ़ारसी क़लम, हिजरी सन् १००० के बाद (चित्रकार रिज़ाख़ाँ का बनाया हुआ अपना चित्र)	८८
६३.	फ़ोल्डिंग-रूम और प्रेस (घड़ी-घर) ...	३७५
६४.	बाग़ की गुफ़ाएँ, ज़िला अमझेरा—सामने का दृश्य	२५२
६५.	बा० श्यामबिहारी मेहरोत्रा (इन्हीं की सहायता से सौ० राजाकिशोरी को इच्छित वर प्राप्त हुआ)	६९५
६६.	बेन डारबिन लोहे की ज़ंजीर दाँतों से काट रहा है	३२४
६७.	बेसनगर का स्तंभ	२५२
६८.	मगर के साथ युद्ध	८३
६९.	मजलिस (बादशाह, साक़ी और गाने-बजाने-वाले। बग़ीचे की बहार। सबके हृदय के भाव स्पष्ट दिखलाई पड़ रहे हैं)	९१
७०.	मान-मंदिर का पूर्वी भाग, ग्वालियर का क़िला	२५५
७१.	मिस ग्लोरिया-स्वानसन के नए फ़ैशन के वस्त्राभूषण	१३१
७२.	मिस ग्लोरिया-स्वानसन के वस्त्राभूषण ...	१३१
७३.	मिस ज़ीन-टोली द्वारा 'अन इनवाइटेड गैस्ट'-नामक फ़िल्म में पहनी हुई पोशाक ...	१३४

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संख्या	चित्र	पृष्ठ
७४.	मुहम्मद ग़ौस का मक़बरा, ग्वालियर ...	२५६
७५.	मेरियन डेविस की ड्रेस का एक नमूना ...	१३२
७६.	मैक्सिको में प्रो० खानखोजे का निवास-स्थान	५२१
७७.	मोशिए कौंत्यान की स्मृति... ...	२१०
७८.	"यदि तुम १५ वस्तुओं के नाम लिख सको, तो तुम्हारी स्मरण-शक्ति औसत मनुष्यों-जैसी है। २० याद रहने पर सबसे अच्छी स्मरण-शक्ति समझना।"	२०४
७९.	'योलंदा'-नामक फ़िल्म में मेरियन डेविस की पोशाक	१३३
८०.	रत्नों का प्रदर्शन-भवन	५०१
८१.	रेखाओं की रूप-विहीन सुंदरता ...	४९५
८२.	लीविड-शेड (कपड़ा-घर) ...	३७५
८३.	लुई कॉर्डा	१३५
८४.	'लूब्र पावियों', निरुद्देश्य रेखाओं का उद्देश्य (यह भी अभिव्यक्तिवाद का एक चित्र है)	४९९
८५.	"वह घुटने के बल बैठकर—बहुत धीरे-धीरे अपने आँचल से बेगम के मुँह का पसीना पोछने लगी।"	३१
८६.	"वह फिर से पानी में धँसा और इस बार पूरी शक्ति लगाकर उस युवती को साथ ले किनारे आ लगा।"	५१०
८७.	वार्पिंग-रूम (ताना-घर) (यहाँ पर बाबिनों से तार बीम पर आकर सिमटते हैं) ...	३७३
८८.	वायुयान से फ़ोटो लेने का कैमरा ...	५६४
८९.	वालों का दृश्य	३२८
९०.	विचित्र घड़ी	४४४
९१.	विज्ञापन की विचित्र मोटर	८५
९२.	वीर-जैन-तत्त्व-मंडल का बाग़, जिसमें छात्र काम कर रहे हैं	६२९
९३.	वीर-जैन-तत्त्व-मंडल का मंदिर और विद्यालय	६३०
९४.	"श्यामनाथ, तुमने मेरी नियत पर 'संदेह' करके अच्छा नहीं किया।" ...	४२४
९५.	"श्यामा अपने कच्चे घर के द्वार पर खड़ी हुई मेघ-संक्रांति का पर्व-स्नान करनेवालों को कगारे के नीचे देख रही थी।" ...	६३
९६.	श्रद्धांजलि की मूर्ति	५०३
९७	श्रीयुत मोरेश्वर-बलवंत गर्दे साहब बी० ए०	२५०
९८.	श्रीयुत रमाकांत गोड़ीकेरी	३६०
९९.	१७वीं सदी की हिंदी-फ़ारसी क़लम (मज़दूर महल बना रहे हैं। हिंदू-इंजीनियर देख-रेख कर रहे हैं)	८८
१००.	साइज़िंग-रूम (माड़ी-घर) (यहाँ पर माड़ी चढ़ती है)	३७३
१०१.	सिनेमा-संसार की रानी मिस पर्ल ह्वाइट ...	१३५
१०२.	सिंप्लन-दर्रा और सिंप्लन-रोड ...	३७
१०३.	सिंप्लन-सुरंग का प्रवेश-द्वार और इज़ेल-नामक क़स्बा	३९
१०४.	सिंप्लन-सुरंग के स्विट्ज़र्लैंड की ओर के प्रवेश-द्वार पर बसा हुआ ब्रिग-नगर ...	३९
१०५.	सौ० राजकिशोरी मेहरोत्रा ...	६९४
१०६.	"सौ रुपए भी हों, तो मैं कारबार में लग जाऊँ।"	६५७
१०७.	स्पिनिंग-रूम (सूत-घर) (यहाँ पर सूत कत रहा है)	३७२
१०८-१०९.	स्मरण-शक्ति की परीक्षा के दो चित्र	३२५
११०.	स्मशान में पं० ईश्वरीप्रसाद शर्मा	२३८
१११-११२.	स्वर्गीय पं० ईश्वरीप्रसाद शर्मा	२३८ और २७७
११३.	स्वर्गीय श्रीमती ज्योत्स्नादेवी ...	४५२
११४.	हवा से चलनेवाली मोटर	८५
११५.	"हाँ, यह वही राजकुमारी तारा है।" ...	२५९
११६.	"हाँ-हाँ, इसी शर्त पर दिया जायगा। आप घबराइए नहीं।"	४१८
११७.	हिंदी-ईरानी क़लम, १७वीं सदी (वन में मृग)	९०
११८.	हिंदी-ईरानी क़लम, १६वीं सदी (सिंह का शिकार)	८९
११९.	ह्विपेट	४४

११६५५५
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लीजिए ! शीघ्रता कीजिए !! नहीं तो पीछे पछताइएगा !!!

सर्वश्रेष्ठ और सर्वांगसुंदर

साहित्यिक और सामाजिक सचित्र मासिक पत्रिका

"सुधा"

के स्वयं शीघ्र ग्राहक बन जायँ तथा अपने इष्ट-मित्रों को बनाएँ, और मातृभाषा तथा देश भाष हिंदी की सेवा में हमारा हाथ बटाएँ।

ग्राहक बनने में शीघ्रता क्यों करें ?

इसलिये कि—

(१) अगर आप अभी से इसके ग्राहक न बनेंगे, तो आपको शुरू के अंक फिर न मिल सकेंगे। इसकी ग्राहक-संख्या इस तेज़ी से बढ़ी है कि गत २ ही मास में इसके ४००० से ऊपर ग्राहक बन गए, और इसके पहले २ अंको के द्वितीत संस्करण फिर क्रमशः ४००० और ३२०० प्रतियों के निकालने पड़े ! सुधा अब ७२०० छप रही है। किंतु नवंबर के बाद हमारे पास ज्यादा प्रतियाँ नहीं बचेंगी। कारण, प्रति मास १००० ग्राहक इस समय बन रहे हैं।

(२) सुधा सुंदर और स्थायी साहित्य का एक अनुपम संग्रह है, जो सदा और सर्वथा संग्रहनीय, पठनीय और मननीय है। कभी यह साहित्य पुराना नहीं हो सकता। जब कभी, २०-२५ वर्ष बाद भी, आप इसे पढ़ेंगे, आपको नित्य नया आनंद प्राप्त होगा। हरिश्चंद्र की "हरिश्चंद्र-चंद्रिका", पं० बालकृष्ण भट्ट का "हिंदी-प्रदीप", पं० प्रतापनारायण मिश्र का "ब्राह्मण" और पं० महावीरप्रसाद द्विवेदी की "सरस्वती," वर्षों पुरानी हो जाने पर भी, आज नई की तरह ही, पढ़ी जाती हैं। लोग इनके लिये तरसते रहते हैं। वही हाल कभी "सुधा" का भी होगा। इसलिये अपनी प्रतियों का आप अभी से संग्रह कर लीजिए।

(३) यह अवसर चूकने पर फिर ३)-३) और ४)-४) देने पर भी इसके अंकों का मिलना असंभव हो जायगा। कारण, शुरू की माधुरी में हमें इसका पूरा अनुभव हो गया है कि ग्राहकों को किस तरह निराश होना पड़ा था !

और, यह लिखने की तो आवश्यकता ही नहीं कि इसके लेख और चित्र किस कोटि के होते हैं। यह तो आप सुधा पर आई हुई सम्मतियाँ पढ़ने से जान ही जायँगे। अन्यत्र पढ़िए।

मैनेजर सुधा, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar